Nagari-Pracharini Granthamala Series No. 4.

THE PRITHVÍRÁJ RÁSO

OF

CHAND BARDÂI

Vol III.

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A.

WITH THE ASSISTANCE OF KUNWAR KANHIYA JU.

CANTOS XXIX TO LIV.

महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

तीसरा भाग

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए.

कुँवर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया।

पर्व्व २९ से ५४ तक

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, BENARES.

1907.

मूल्य ४) रु०]

सूचीपत्र।

(२९) घग्घर की लड़ाई समय।

(पृष्ठ ९४५ से ९१८ तक)

---

(३०) करनाटी पत्र समय ।

(पृष्ठ ९१९ से ९३६ तक)

---

(३१) पीपा युद्ध प्रस्ताव।

(पृष्ठ ९९७ से ९९३ तक।)

---

(३२) करहे रो जुद्ध प्रस्ताव।

(पृष्ठ ९९१ से १०११ तक)

---*---

(३१) इन्द्रावती व्याह प्रस्ताव।

(पृष्ठ १०१९ से १०२९ तक)

---

(३४) जैतराव युद्ध समय।

(पृष्ठ १०३१ से १०४३ तक।)

---

(३५) कांगुरा जुद्ध प्रस्ताव।

(पृष्ठ १०४५ से १०५४ तक।)

—:o:—

(३६) हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव

(पृष्ठ १०५५ से १०९७ तक।)

---

(३७) पहाड़राय समय।

(पृष्ठ १०९९ से १११८ तक।)

---

(३८) वरुण कथा।

(पृष्ठ १११९ से ११२८ तक।)

---

[३९] सोमवध समय।

(पृष्ठ ११२९ से पृष्ठ ११५२ तक)

---

[४०] पज्जून छोंगा नाम प्रस्ताव।

(पृष्ठ ११५३ से पृष्ठ ११५६ तक)

———

[४१] पज्जून चालुक नाम प्रस्ताव।

(पृष्ठ ११५६ से पृष्ठ ११६३ तक)

[४३] कैमास युद्ध ।

(पृष्ठ ११७९ से पृष्ठ ११९८ तक)

——:o:——

[४४] भीम वध समय।

(पृष्ठ ११९९ से पृष्ठ १२२७ तक)

(४५) संयोगिता पूर्व जन्म कथा।

(पृष्ठ १२२९ से पृष्ठ १२५८ तक)

[४६] विनय मंगल प्रस्ताव।

(पृष्ठ १२५९ से पृष्ठ १२७४ तक)

[४६] सुक वर्णन।

(पृष्ठ १२७५ से पृष्ठ १२९१ तक)

——:o:——

[४८] बालुकाराय समय।

(पृष्ठ १२६३ से पृष्ठ १३२९ तक)

---

(४९) पंग जग्य विध्वंस प्रस्ताव।

(उंचासवां समय ।)

---

(५०) संजोगिता नाम प्रस्ताव ।

(पचासवां समय ।)

(५१) हांसीपुर युद्ध।

(इक्यावनवां समय।)

---

(५२) द्वितीय हांसी युद्ध।

(बावनवां समय।)

---

(५३) पज्जून महुवा प्रस्ताव।

(तिरपनवां समय।)

---

(५४) पज्जून पातसाह युद्ध प्रस्ताव।

(चौवनवां समय।)

Nagari-Pracharini Granthmala Sries No. 4-

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

VOL IV.

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A.

With the assistance of Kunwar Kanhaiya Ju.

CANTO LV to LXI.
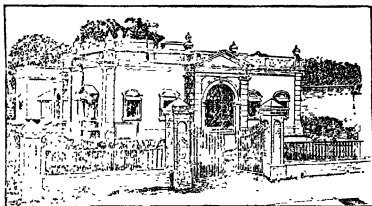
महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

भाग चौथा

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया।

पर्व्व ५५ से ६१ तक.

PRINTED BY THAKUR DAS, MANAGER, AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1910.

मूल्य ४)] [*Price Rs. 4/.*

सूचीपत्र ।

(५५) सामंत पंग युद्ध नाम प्रस्ताव ।

(पृष्ठ १४१७ से १४४७ तक)

---

(५६) समर पंग युद्ध नाम प्रस्ताव।

(पृष्ठ १४४९ से १४६३ तक)

---

(५७) कैमास बध नाम प्रस्ताव।

(पृष्ठ १४६५ से १५०९ तक)

(५८) दुर्गा केदार समय।

(१५११ से १५५१ तक)

---

(५९) दिल्ली वर्णन समय।

(पृष्ठ १५५३ से १५६४ तक)

---

(६०) जंगम कथा प्रस्ताव।

(पृष्ठ १५६५ से १५७५ तक)

---

(६१) कनवज्ज समय।

(पृष्ठ १५७७ से १९५१ तक)

पृथ्वीराज रासो।

तीसरा भाग।

अथ घघर की लड़ाई रो प्रस्ताव लिख्यते।

(उन्तीसवां समय।)

पृथ्वीराज साठ हज़ार सवार लेकर दिल्ली का प्रबन्ध कैमास को सौंप कर शिकार खेलने गया, यह समाचार ग़ज़नी में पहुंचा।

कवित्त ॥ दिल्लियपति प्रथिराज। अवनि आषेटक [1]षिल्लय ॥
साठ सहस असवार। जाइ लग्गा धर ढिल्लय ॥
धूनि धरा पतिसाह। रहे पेसोर [2]सुथनाय ॥
सथ्थ लिये सामंत। दिल्ली कैमास सु [3]जानय ॥
म्रगया सु रमय प्रथिराज बर। गज्जन वै धर धूसियै ॥
दूसरौ इंद्र दिल्लेस बर। सुभर सरस ढिग सुभ्भियै ॥ छं० ॥ १ ॥

दूतों ने जाकर ग़ज़नी में शाह को समाचार दिया कि पृथ्वीराज धूमधाम के साथ शिकार खेलने को निकला है।

दूहा ॥ गई षबर अम्मान की। उट्ठ चढ़े असवार ॥
ढिल्ली धर लिजै तषत। दिसि गज्जनै पुकार ॥ छं० ॥ २ ॥
प्रथीराज साजत पवँग। है गै नर भर भार ॥
दिल्लीपति आषेट चढ़ि। कुहकबान हयनारि ॥ छं० ॥ ३ ॥
डेरा करि पेसोर न्रप। सहस सट्ठि सुभ बाज ॥
सोन[4]पंथ विष पंथ दोइ। गल ग्रज्जै अग्राज ॥ छं० ॥ ४ ॥

---

(१) ए.-षिल्लिय, ढिल्लियं। (२) ए. कृ. को.-धरत्तिव (३) ए. कृ. को.-मत्तिय। (४) ए.-पंच।

शहाबुद्दीन के भेजे हुए गुप्त चर ने पृथ्वीराज के शिकार खेलने का समाचार लेकर ग़ज़नी में जाहिर किया।

कवित्त ॥ गोरी पठए दूत । चले च्यारों चतुरन्नर ॥
खीय षवरि प्रथिराज । चले पच्छे गज्जन धर ॥
किय सलाम जब दूत । तबहि तत्तार सु बुझ्झिय ॥
कहा करंत दिलेस । चढ़त गिरवर बर धुज्जिय ॥
सँग [1]सत्त षट्ठ सामंत बलि । तीन पाव लष्षह तुरी ॥
अनि सूर बीर नरवर सकल । उड़ी षेह धर उप्परी ॥ छं० ॥ ५ ॥
आषेटक दिन रमय । संग स्वानं घन चीते ॥
नायक पायक विपुल । जक्कि दिन जामह जीते ॥
सहस तुरी बष्षह सु । संत मेघा कलि कंठिय ॥
सौहगोस पुच्छिय सु । लंब सिरषां सिर [2]पुट्ठिय ॥
जुर्रा [3]ह बाज कूही गुहा । धानुक्की दारू धरा ॥
बहु काल भाल बदकं षिला । जम भय तब जित्तिय धरा ॥ छं० ॥ ६ ॥

सुलतान ने प्रतिज्ञा की कि जब मैं पृथ्वीराज को जीत लूंगा तभी हाथ में तसबीह (माला) लूंगा।

रमै राज आषेट । सत्त एकल बल भंजै ॥
पंच पथ्थ परिगाह । रंग अप्पन मन रंजै ॥
सहस एक बाजिय । सूर किरनह संपेषै ॥
सुनि गोरी साहाब । दाह दिल महन बिसेषै ॥
जित्तौंब जब्ब प्रथिराज कौं । तब तसबी कर मंडिहौं ॥
टामंक सह नद्दह करौं । जुगति साह तब [4]छंडिहौं ॥ छं० ॥ ७ ॥

खुरासान, रूम, हबश और बलख़ आदि देशों में सुलतान का सहायता के लिये पत्र भेजना।

---

(१) कृ. को. ए.-सित्त । (२) मो. को. कृ.-पुच्छिय ।
(३) ए. कृ. को.-जु । (४) मो.-ठंडिहौं ।

दूहा ॥ देस देस कग्गद फटे। पेसंगी षुरसान ॥
　　रोम हबस अरु बलक में। फट्टे पहु अप्पान ॥ छं० ॥ ८ ॥

पांच लाख सेना लिए सुलतान का पृथ्वीराज की ओर आना और दूत का यह समाचार पृथ्वीराज को देना।

कवित्त ॥ सिलह लोह सज्जंत। लष्ष पंचह मिलि पष्षर ॥
　　कूंच कूंच करि पैर। गुरज धारी सब गष्षर ॥
　　कोस दहं दह कूच। आइ गिरवान सपत्तौ ॥
　　दौरि दूत दिल्लेस। जाम कर चय दिन वित्तौ ॥
　　मुकाम कियौ प्रथिराज न्रप। तहां षबरि कहि दूत सब ॥
　　गोरी नरिंद है गै सुभर। सजि आयौ उप्पर सु अप ॥ छं० ॥ ९ ॥

चैत्र शुक्ल ३ रविवार को दो पहर के समय पृथ्वीराज ने कूच किया और वह घग्घर नदी पहुंचा।

　　चैत मास रवि तीज। सेत पष्षह कर्ल चंदह ॥
　　भयौ सुदिन मध्यान। चल्यौ प्रथिराज नरिंदह ॥
　　कटक सबर झिल्लोर। भार सेसह करि भग्गिय ॥
　　चढ़ि सामंत सकज्ज। नह सुर [1]अंमर जग्गिय ॥
　　गज रोर सोर बंधे घटा। सिलह बीज सिलकावलिय ॥
　　[2]पप्पीह चीह सहनाइ सुर। नदि घग्घर मेलान दिय ॥ छं० ॥ १० ॥

शहाबुद्दीन की सेना के कूच का वर्णन।

दूहा ॥ आयौ आतुर उप्परह। पैसंगी पतिसाह ॥
　　[3]पच्छांई बादल प्रबल। भग्गे राह विराह ॥ छं० ॥ ११ ॥
　　बरन बरन तहां देषिये। घंटा रव गजराज ॥
　　सन्नाहा सन्नाह रजि। पष्षर सष्षर साज ॥ छं० ॥ १२ ॥
　　भई हलोहल सेन सब। पान व्यूह बर षेत ॥
　　लष्ष एक भर अंग मैं। छच धर्‍यौ सिर जैत ॥ छं० ॥ १३ ॥

(१) मो.-अमर सु जग्गिय।　　(२) ए.-पापीह।　　(३) क.-पच्छाहीं।

हुअ टामंक सु दिसि बिदिसि। हुअ संनाह सनाह ॥
हुअ हलोहल सुब्भरन। दोऊ दिन इक राह ॥ छं० ॥ १४ ॥

सेना का वर्णन।

चोटक ॥ हुअ सद्द सु सद्दह नद्द भरं। घन घेरिक कीय सु फौज वरं ॥
लष लष्ष मिले दल संमिलयं। नर भद्दव बाद्दल संमिलयं ॥
छं० ॥ १५

सु अगें हयनारि अपार सजं। तिन देषत काइर दूरि भजं ॥
तिन पिट्ठ हजार उमत्त चले। छह रित्त [1]भरंत करी तिहलें ॥
छं० ॥ १६ ॥

तिन पिट्ठह फौज गहव्वरयं। धरि गोरिय मुट्ठ करं धरियं ॥
कमनेंत अभूल सु लष्ष लियं। तिन मध्य ततारह छष दियं ॥
छं० ॥ १७ ॥

लष दोय गुरज्ज स गष्षरियं। षुरसान दियं दल पष्षरियं ॥
बलकी उमराव सु सत्त सयं। निसुरत्तह लष्ष हुकम्म भयं ॥
छं० ॥ १८ ॥

षुरसान ततं दल उप्पटयं। मनुं साइर सत्त उलट्ठ भयं ॥
[2]जल बानिय [3]पानिय अह सरं। लोहानिय पानिय षेत षरं ॥
छं० ॥ १९ ॥

हबसी उजबक्क हमीर भरं। कलबानिय रुम्मिय अग्ग धरं ॥
सरबानि येराकि सुगक्ष कती। बहु जाति अनेक अनेक भती ॥
छं० ॥ २० ॥

मुसलमान सेना का व्यूहबद्ध होकर नदी पार करना।

कवित्त ॥ फौज बंधि सुरतान। मुष्ष अग्गो ततारिय ॥
मधि नायक सुरतान। नील षुरसान सु भारिय ॥
मोती निसुरति षान। लाल हबसी कोलंजर ॥
पाषि पीठि रुस्तंम। घना बहु भांति अवर नर ॥

(१) ए.-करंत। (२) ए.-जब। (३) ए.-ध्यानिय।

उत्तरिय मद्द गोरीस पहुं । बज्जा दस दिसि बज्जिया ॥
मानों कि भइ उलटी मही । साइर [1]अंबु गरज्जिया ॥ छं० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना को सज्जित कर चामण्डराव को आगे किया ।

दूहा ॥ दिल्लीपति फौजह रची । दियौ जैत सिर छच ॥
चामंड रा अग्गे भयौ । मनों सु गिरवर गत्त ॥ छं० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज ने अपनी सेना की गरुड़व्यूहाकार रचना की ।

कवित्त ॥ फौज रची सामंत । गरुड़व्यूहं रचि गड्डिय ॥
पंच भाग प्रथिराज । चंच चावंड सु गड्डिय ॥
गावरि अत्तताइ । पांइ गोइंद सु ठड्डिय ॥
पुच्छ कन्ह चौहान । पेट पम्मारह पड्डिय ॥
सुंडाल काल अग्गो धरे । [2]कढ्ढे दोइ कलहन्न किय ॥
चालंत बान गोरे प्रबल । मानहु अंधकि मार दिय ॥ छं० ॥ २३ ॥

दोनों सेनाओं का साम्हना होना । एक हजार मीरों का कैमास को घेरना ।

तत्तारह उप्परह । चित्त चावंड चलायौ ॥
दुहूं फौज अग्गंज । दुहूं भुज भार भलायौ ॥
मीर बान बरषंत । धार धारा हर लग्गौ ॥
बाही चामँडराइ । भूमि तत्तारह भग्गौ ॥
उत्तरे मीर सै पंच दुइ । दाहिम्मै किन्नौ दहन ॥
पहिलै जु झुझ्झ दिन पहिल कै । मच्यौ जुद्ध जानैं मदन ॥ छं० ॥ २४ ॥

तत्तार खां का घायल होना । मीरों की वीरता ।

भूमि पन्यौ तत्तार । मारि कमनेत प्रहारै ॥
एक घाव दोइ टूक । परे धारन मुहु धारै ॥

(१) ए.-अंबर ।   (२) ए.-कढ्ढे दोई कल किय ।

[1]धुर बज्जै धुरतार। चमकि चामंड चलायौ ॥
भरै बथ्थ सिर हथ्थ। एक बहु लष्षन धायौ ॥
जब परै बूंद तब बीर हुअ। सत्त घरी साहस धरै ॥
तिनमा [2]कटक चिविधी घड़ा। एक एक पग अनुसरै ॥ छं० ॥ २५ ॥

कैमास का घायल होना और जैतराव का आगे बढ़ कर उसे बचाना।

षान षान आघूंद। अट्ठ सहसं बहु गव्वर ॥
परिय पंति अवनेस। पारि बहु [3]अष्वर गव्वर ॥
[4]हयौ नेज चामंड। बीर दो सहस लरै भर ॥
हस्ति एक बिन दंत। तमह तिन मथौ सहस कर ॥
दाहिम्मराव मुरछ्यौ पऱ्यौ। दौऱ्यौ जैत महा बलिय ॥
मानों कि अग्ग जज्जर बही। कलि सभ्भै रिन बट कलिय ॥
छं० ॥ २६ ॥

चावंडराव ने ऐसा घोर युद्ध किया कि सुलतान की सेना में कहर मच गया।

धपी [5]सेन सुरतान। [6]मुट्ठि छुट्टी चावद्दिसि ॥
मनु कपाट उघऱ्यौ। कूह फुट्टिय दिसि बिद्दिसि ॥
मार मार मुष किन्न। लिन्न चावंड [7]उपारे ॥
परे सेन सुरतान। जाम दुअह परि धारे ॥
गल बथ्थ घत्त गाढ़ौ ग्रह्यौ। जानि सनेही भिंटयौ ॥
चामंडराइ करि वर कहर। गोरी दल बल [8]कुट्टयौ ॥ छं० ॥ २७ ॥

जैतराव के युद्ध का वर्णन।

जैत राइ जडधार। लियौ कर दंत मुष्ष कर ॥
परे बज्र सिर धार। मनों सेना सिर उप्पर ॥

---

(१) ए.-पुर। (२) ए.-कमंध।
(३) मो.-परिकर, क.-पष्षर। (४) क.-पयौ, ए.-भयौ। (५) मो.-मुष्टि।
(६) मो.-तुट्ठि। (७) ए.-उषारे। (८) ए.क.को.-छुट्टयौ।

षुरसानी बंगाल । मनहु [1]डंडूर रमावै ॥
भरै पत्र जोगिनी । डक्क नारद्द बजावै ॥
अपछरा गीत गावत इला । तुंबर तंत बजावहीं ॥
सुरतान सेन दिख्खिस बर । [2]मग्ग मग्ग जस गावहीं ॥ छं० ॥ २८ ॥

युद्ध का रङ्ग देख कर सुलतान सिर धुनने लगा, जैतराव और खुरासान खां का तुमुल युद्ध हुआ ।

सिर धूनत पतिसाह । धाइ सुनि सेना सथ्थिय ॥
लुथ्थि लुथ्थि मुह धार । परे बथ्थन सों बथ्थिय ॥
जम सों जम आहुरै । सूर जुट्टै दोइ घुट्टै ॥
नई गंठि तन जोग । सूर मुंडावलि घुट्टै ॥
षुरसान जैत अब्बुधनिय । धार धार मुह कट्टिया ॥
ऐसो न जुद्ध दिष्षौ सुन्यौ । दारुन मेछ दबट्टिया ॥ छं० ॥ २९ ॥
मनु द्वादस सूरज्ज । इथ्थ चंद्रमा मद्धा सर ॥
जिन उप्पर षलमली । ताहि धर गोरिय सुभ्भर ॥
कटक कूह किलकार । सार परमार बजायौ ॥
भिरि भंज्यौ सुरतान । एक एकह मुष धायौ ॥
सिर सार धार बुझ्यौ प्रहर । तब दौर्‍यौ पज्जून भर ॥
निसुरत्ति षान लष्षह बली । लष्ष एक पाइल सुभर ॥ छं० ॥ ३० ॥

घोर युद्ध हुआ । निसुरत खां मारा गया । दोपहर के समय पृथ्वीराज की विजय हुई ।

भुजंगी ॥ मचे [3]कूह कूहं, बहै सार [4]सारं । चमक्कै चमक्कैं, करारं सु [5]धारं ॥
भभक्कैं भभक्कैं, बहै रत्त धारं । सनक्कैं सनक्कैं, बहै बान [5]भारं ॥
छं० ॥ ३१ ॥
हबक्कैं हबक्कैं, बहैं सेल मेलं । हलक्कैं हलक्कैं मची ठेल ठेलं ॥
कुकैं कूक फूटी, सुरत्तान ठानं । बकी जोग माया, सुरं अप्प थानं ॥
छं० ॥ ३२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-दंडूक । (२) ए.-बग्ग ।
(३) ए. कृ. को.-हूक हूकं । (४) ए. कृ. को.-धारं । (५) मो.-धारं ।

बहै षट्ट पट्टं, उघट्टं उलट्टं । कुलट्टा ¹धरै अप्प, अप्पं उहट्टं ॥
दडक्कं बजै सथ्थ, मथ्थं सुटट्टं । कडक्कं बजै सैन, सेना सुघट्टं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

बहै हथ्थ परमार, सिरदार सारं । परे सेन गोरी, बहै रत्त ²धारं ॥
पऱ्यौ षान निसुरत्ति, सेना सहित्तं । हुऔ सूर मध्यान, दिक्खे स जित्तं ॥
छं० ॥ ३४॥

एक लाख कालंजरों का धावा, कान्ह चौहान के आंख की पट्टी का खुलना और उसका घोर युद्ध करना ।

कवित्त ॥ कालंजर इक लष्ष । सार सिंधुरह गुड़ावे ॥
मार मार मुष चवै । सिंघ सिंघा मुष धावे ॥
दौरि कन्ह नरनाह । पटी छुट्टी ³अंषिन पर ॥
हथ्थ लाइ ⁴किरवान । रुंड माला किन्निय हर ॥
बिहु बाह लष्ष लोहै परिय । जानि करिब्बर दाह किय ॥
उच्छारि पारि धरि उपरें । कलह कियौ कि उघान किय ॥
छं० ॥ ३५ ॥

भुजंगी ॥ छुटी अंषि पट्टी, मनो उग्गि सूरं । गिरे काइरं, सूर बड्ढे सनूरं ॥
लियं हथ्थ करि वार, भंजै कपारं । पियै जोगनी पच, कीयैं डकारं ॥
छं० ॥ ३६ ॥

बहै अच्छरी हथ्थ, अन्नेक सथ्थं । करं सूर संम्हालियै, घल्लि बथ्थं ॥
करै कज्ज साईं, समप्पै सुघट्टं । लियं कन्ह गोरी, तनं मारि थट्टं ॥
छं० ॥ ३७ ॥

कालञ्जर के टूटते ही सुलतान की सेना का भागना । कन्ह चौहान का कमान डाल कर सुलतान को पकड़ लेना ।

कवित्त ॥ कालंजर जब परिय । भगिय सेना पतिसाहिय ॥
पंच फौज एकट्ठ । कन्ह करवारि ⁵सम्हारिय ॥

(१) ए.-धरा । (२) मो.-धारं । (३) ए.-अंषनि ।
(४) ए. कृ. को.-करिवार । (५) कृ.-सम्माहिय ।

धर पारे बहु मीर । सथ्य जब सेना भग्गिय ॥
गर घत्ती कंमान । लियौ गोरीय उछंगिय ॥
उत्तरे मीर पच्छे फिरे । हाय हाय मुष हुंकर्‌यौ ॥
पज्जून प्रेषि मुष मीर कौ । कन्ह छेद्र गोरी बर्‌यौ ॥ छं० ॥ ३८ ॥

पज्जूनराव का मीरों को काट काट कर ढेर कर देना । कन्ह का सुलतान को पकड़ कर अपने घर ले आना ।

जनु उद्यान हथ्थाइ । पवन पल्लै ज्यौं बांधै ॥
त्यौं पज्जून नरिंद । मीर जमदड्ढै सांधै ॥
परे मीर सै सत्त । बिए रन छंडिय भज्जे ॥
चामर छत्र रषत्त । तषत लुट्टे ज्यौं सज्जे ॥
कन्हा नरिंद पतिसाह लै । गयौ धाम अप्पन बलिय ॥
पंमार सिंघ लग्यौ सु पय । चाव भाव कीरति चलिय ॥ छं० ॥ ३९ ॥

कन्ह का सुलतान को अजमेर लेजाना और उसे वहां किले में रखना ।

[1]रहे कन्ह अजमेर । *गयौ चहुआन जैत लिय ॥
धरि अग्गोरी नरिंद । दौरि प्रथिराज सुद्ध दिय ॥
गयौ अप्प अजमेर । †लिए पतिसाह नरिंदह ॥
दिन किज्जै महिमान । पास ठड्ढा रहै इंदह ॥
बैठारि तषत सिर छत्र दिय । सभा बिराजे सु पहुंभर ॥
सिर फेरि पैर दिज्जै दुनी । यौं रष्षै पतिसाह दर ॥ छं० ॥ ४० ॥

पृथ्वीराज की जीत होने का वर्णन और लूट के माल की संख्या ।

एक लष्ष बाजिच । सहस तीनह मय मत्तह ॥
लष्ष एक तोषार । तेज ऐराकी तत्तह ॥

(१) ए. को.-हरे । * ए. कृ. को.-लिए पतिसाह नरिंद हिय ।
† ए. कृ. को.-तहां चहुआन जैत किह ।

आराबा हथ्थिनी। सत्त सै सत्त सु भारिय ॥
चामर छत्र रषत्त। साहि लिन्निय धर सारिय ॥
सामंत सूर बहुविधि भरिग। पट्टे घाव सु बंधियै ॥
रन जीत सोधि संभर धनी। बज्जे अनत सु बज्जियै ॥छं०॥४१॥

पृथ्वीराज को सब सामंतों का सलाह देना कि अबकी बार शहाबुद्दीन को प्राण दंड दिया जाय।

[1]रचौ सभा प्रथिराज। सूर सामंत बुलाए ॥
गोयँद निढ्ढुर सलष। कन्ह पतिसाह पठाए ॥
करौ दंड सिर छत्र। राम प्रोहित पुंडीरह ॥
रा पज्जून प्रसंग। राव हाहुलि हंमीरह ॥
इत्तने मत्त मभ्भाइ मिले। हम मारैं छोरैं न अब ॥
छैहै न हास्य अबकें हमैं। फिर न आइहै इह सु कब ॥ छं० ॥४२॥

कन्ह का कहना कि अबकी पंजाब देश ले कर इसे छोड़ दिया जाय।

दिए देस पंधार। दिए पछिबानं सारं ॥
कासमीर कबिलास। दिए घरटिला पहारं ॥
गज्जन रष्षै देस। बियौ समपै प्रथिराजह ॥
ना तरु छुट्टै नाहिं। कर हम उप्पर काजह ॥
बोलयौ कन्ह नरनाह सुनि। अबकैं मारै कोइ वह ॥
पंजाब दियौ छुट्टै सु अब। यह हमीर दिज्जैं हमहि ॥ छं० ॥ ४३ ॥

पृथ्वीराज का कन्ह की बात मानकर कुछ फौज के साथ लोहाना को साथ दे कर शाह को घर भेज देना।

तब बुल्यौ प्रथिराज। कहै काका त्यौं किज्जिय ॥
जेता रंजक होइ। तिता सादा भरि लिज्जिय ॥
जग्य कियौ पंडवन। हेम काचौ [2]उन आन्यौ ॥

(१) ए. कृ. को.-करिब। (२) ए. कृ. को.-तुम।

त्यौं लभ्यौ पतिसाहि। लष्ष लोहा इम मान्यौ॥
करि दंड कन्ह पतिसाह को। लोहानौ सथ्थैं दियौ॥
असवार सहस सथ्थें चलें। कर सिर कन्ह इतौ कियौ॥छं०॥४४॥

कन्ह का अजमेर से बादशाह को दिल्ली लाना। शाह का कन्ह को एक मणि और राजा को अपनी तलवार नजर दे कर घर जाना।

करि जुहार नव कन्ह। गयौ अजमेर दुरग्गह॥
तज्यौ कन्ह पतिसाह। बत्त सब जंपी अप्पह॥
है पुसाल गजनेस। दई इक लाल सहित मनि॥
कन्ह लेइ पतिसाह। गयौ दिल्ली सु ततच्छन॥
मनुहार करिय सामंत सब। लेग दई दिल्लेस बर॥
दो अश्व करी दोइ देय करि। [1]साहि चलायौ अप्प घर॥
छं०॥४५॥

सुलतान का कुरान बीच में दे कर कसम खाना कि अब कभी आप से विग्रह न करूंगा।

करि सलाम गजनेस। करिय नव मिह दिल्लेसर॥
तम रषियो इम प्रीति। बरष मन सत्तह केसर॥
पेसंगी धर सीम। बीच पौरान कुरानं॥
जा तक्कौं तुम अबे। तबै तुम कढ़ियौ प्रानं॥
उत्तरौं अटक तौ मैं अवर। मुसलमान नाही धरौं॥
तुम हम सु प्रीत चलिहैं बहुत। हूंन अबै ऐसी करौं॥छं०॥४६॥

सुलतान के अटक पार पहुंचने पर उधर से तत्तार खां का आकर मिलना।

पछु चल्यौ सुरतान। दियौ लोहानौ सथ्थैं॥
दूत च्यारि अनुसार। काल छुट्यौ सें हथ्थै॥
गयौ बीस म्होलान। अटक उत्तरि इन पारं॥

(१) ए. को.-चाहि, चाह।

सोवन पत्र मेलान। सहस सम्है असवारं ॥
निसुरत्ति सुतन हरिया सुतन। आइ कियौ सल्लाम तहां ॥
आजान बाह महिमान किय। चल्यौ अप्पगज्जन रहां ॥छं०॥४७॥

रयसल को दूतों का समाचार देना उसका सेना ले कर अटक उतर रास्ते में रोकना।

रयसल्ल हरी नवट्ठ। सहस अट्ठारह सथ्थें ॥
हेरौ करि पतसाह। पुले लग्गा इन पथ्थें ॥
दूत च्यार अनुसार। कटक देष्यौ असवारह ॥
कह्यौ चरन सब सथ्थ। सहस दोइ सेना सारह ॥
तिन बार बज्जि चंबाल बहु। सिलह सज्जि सिरदार सहु ॥
उत्तऱ्यौ कटक छोरिय अटक। नहि हुऔ उग्गंत पहु ॥छं० ॥४८॥

गाथा ॥ बज्जै पुठि चंबालं। हथ्थिय नेजं सु उप्परं फहरं ॥
जानि समुद्द उहालं। किय गजनेस हुकमयं मीरं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

लोहाना का शहाबुद्दीन को आगे भेज कर आप रयसल का मुकाबला करना।

कवित्त ॥ कह्यौ साह लोहान। कौंन बज्जा बज्जाए ॥
दौरि दूत तिन बेर। धनी पछिवानह धाए ॥
कूच कूच पर कूच। कौन पछिवान धनी कहि ॥
तब आन्यौ रयसल्ल। सेन आजान कन्यौ सह ॥
पतिसाह चलौ हौं पछि रहौं। सहस डेढ़ असवार दिय ॥
बंधेव फौज लोहान बर। दुहूं फौज ठामंक किय ॥ छं० ॥ ५० ॥

सवेरा होते ही रयसल्ल आ पहुंचा, लोहाना से युद्ध होने लगा।

अरुन किरन परसंत। आइ पहुंच्यौ रयसल्लं ॥
बज्जै वान विहंग। आनि जुट्टा दोइ मल्लं ॥
संमाही आजान। तेग मानहु छबि दिट्ठिय ॥
जानि सिषर मझि बीज। कंध रैसल्लह बुट्ठिय ॥

लोहान तनी बज्जै लहरि। कोउ हल्लै कोउ उत्तरै॥
परनाल रुधिर चल्लै प्रबल। एक घाव एकह मरै॥ छं०॥ ५१॥
दूहा॥ मुह मुह चमकै दामिनी। लोह बज्यौ लोहान॥
इक उप्पर इक इक तर। लुथ्थें लुथ्थ समान॥ छं०॥ ५२॥

रयसल्ल का मारा जाना सुलतान का निर्भय ग़ज़नी पहुंचना।

पयौ लुथ्थि रयसल्ल तहं। ढुंढि षेत लोहान॥
सुबर साह गोरी न्निभय। गयौ सु गज्जन थान॥ छं०॥ ५३॥

तातार ख़ां ख़ुरासान ख़ां आदि मुसाहबों का सेना सहित सुलतान से आकर मिलना और बहुत कुछ न्योछावर करना।

कवित्त॥ तत्तारिय षुरसान। सुलन गोरी पय लग्गा॥
न्योछावर करि षैर। बहुत मनसा भय भग्गा॥
लष्ष एक असवार। मिल्यौ गोरी दल पष्षर॥
लष्ष भये दरवेस। आइ पइ लग्गे गष्षर॥
उच्छाह भयौ गज्जन इला। गयौ मझ्झि गोरी धनिय॥
दरबार भीर भीरन्न घन। मिलत आइ अप अप्पनिय॥छं०॥५४॥

दस दिन लोहाना वहां रहा, शाह ने सात हाथी और पचास घोड़े लोहाना को दिए और पृथ्वीराज का दण्ड दिया।

डेरा दिय लोहान। करिय मनुहारि रोज दस॥
करिय सत्त गाजान। तुरिय पंचास अप्प बस॥
इह दिन्नौ लोहान। बियौ भेज्यौ न्रप राजं॥
लाटे दाइ हजार। सत्त सै तोला साजं॥
इक इक्क तुरी हथ्थी सु इक। सामंतन दीनौं सबै॥
मुह करिय कित्ति अनेक विधि। सुबर हूर फेरिय जबै॥छं०॥५५॥

लोहाना बिदा होकर दिल्ली की ओर चला। पृथ्वीराज ने एक एक घोड़ा और एक एक हाथी एक एक सरदारों को दिया और सब सोना चित्तौर भेज दी।

सीष दई चोहान। चल्यौ दिल्लीय पंथानं ॥
संग सहस असवार। अप्प रिध वासव यानं ॥
दिल्लीपति सामंत। कली छत्तीसह दब्बै ॥
मिल्यौ बाह आजान। बत्त सुरतान सु अब्बै ॥
इक इक्क तुरिय हथ्थी सु इक। सामंतन पठए धरैं॥
सोव्रन्न रासि रंजक पहर। मुक्कलियैं चिचँगपुरैं ॥ छं० ॥ ५६ ॥

चन्द कवि ने चित्तौर में आकर सब सेना आदि रावल की भेट की, रावल ने चन्द का बड़ा सम्मान किया।

गढ़ [1]चीतौड़ [2]दुरग्ग। भट्ट पठयौ परिमानं ॥
लाद्दे सित्त सुरंग। सित्त लै [3]तुला प्रमानं ॥
दोइ हथ्थी मय मत्त। सत्त हैवर कुल राकिय ॥
छच लियौ पतिसाह। जड़ित मनि मानिक साकिय ॥
लै चंद चल्यौ चित्तोर गढ़। जाइ समप्पौ रावरह ॥
बहु दान दियौ रावर समर। चल्यौ भट्ट अप्पन घरह ॥छं०॥५७॥

इति श्री कविचन्द विरचिते प्रथिराज रासके घघर नदी की लड़ाई कन्ह पतिसाह ग्रहनं नाम ओगनतीसमो प्रस्ताव संपूरणम् ॥ २९ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-चित्रकोट। (२) ए. कृ. को.-दुरगा। (३) ए. कृ. को.-तोल, तोला।

अथ करनाटी पात्र समयौ लिख्यते ।

(तीसवां समय ।)

दूतों का दिल्ली का हाल समझ कर जैचंद से जाकर कहना ।

दूहा ॥ दूत चरित दिल्ली तनौ । देषि गयौ [1]कनवज्ज ॥
चढ़त पंग सम्हौ मिल्यौ । सुबर बीर कमधज्ज ॥ छं० ॥ १ ॥
करि घलबट सुरतान सौं । दल भग्गै सु विहान ॥
अब करनाटी देस पर । चढ़ि चल्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ २ ॥

यद्दव की सेना सहित पृथ्वीराज का दक्षिण पर चढ़ाई करना । करनाटक देश के राजा का कर्नाटकी नामक वेश्या का पृथ्वीराज को नज़र करके संधि करना ।

कवित्त ॥ चढ्यौ सुबर चहुआन । बीर क्रन्नाट देस पर ॥
मिलि जद्दव बर सेन । तारि कढ्यौ सु तुंग नर ॥
दष्षिन दछिन नरिंद । सबै प्रथिराज सु गाही ॥
तिन राजन इक पात्र । पठय नाइक घर थाही ॥
बर बीर जुद्ध कमधज्ज करि । भीर भगी बर बीर [2]अघि ॥
तिहि दिनां वीर पज्जून पर । षग्ग मार बोहिथ्थ [3]मचि ॥ छं० ॥ ३ ॥

करनाटकी को लेकर पृथ्वीराज का दिल्ली लौट आना ।

दूहा ॥ लै आयौ नाइक सथ । करनाटी प्रथिराज ॥
जब तब एकठ भये । [4]सबै साज संमाज ॥ छं० ॥ ४ ॥

संवत् ११४१ में दक्षिण विजय करके पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर करनाटकी को संगीतकला में अत्यंत विद्वान केल्हन नायक को सौंप देना ।

(१) ए.- कसवज्ज । (२) ए. कृ. को.-अगि ।
(३) ए. कृ. को.-मार्ग । (४) मो.-सब कमधजहि साज ।

कवित्त ॥ संवत इकताळीस। दिवस प्रथिराज राज भर ॥
अति सामंत उभार। आइ अति भ्रम्म छिछि धर ॥
दिय थानक नाइक। नाम केलहन गुन हेयं ॥
अति संगीत सु विद्य। कला संजुत्त सुमेयं ॥
ता सथ्थ चौय रतिरूव तन। वर चवइ चातुर सकल ॥
दुव तीस सु लच्छिन मति विमल। अति मति अगनित [1]विद्यबल ॥
छं० ॥ ५ ॥

करनाटकी के नृत्य गान की प्रशंशा सुन कर पृथ्वीराज का उस के लिये कामातुर होना।

गाथा ॥ संभलि बत्त सुयं प्रथिराजं। अति अंगनि विद्याबल साजं ॥
कला सपूरन पूरन चंदं। पूरन हाटक वरन विवंदं ॥ छं० ॥ ६ ॥
बानी केम बीन कल सारं। स्वर अनु पंचम मझझ गुँजारं ॥
नव सिष रूप रूपगति उत्तं। सुभ सामंत प्रसंस प्रभुत्तं ॥
छं० ॥ ७ ॥
दरसन ताहि अवर नन दिष्षै। बासन महल मंझ तन दिष्षै ॥
सुनि सुनि रूप कला गुन संदरि। जग्यौ काम न्रपति [2]उर अंदरि ॥
॥ छं० ॥ ८ ॥
अति सनमान सु नाइक दीनौ। बहुर प्रसंसन साधक कीनौ॥छं०॥९॥

पृथ्वीराज की अंतरंग सभा का वर्णन।

दुहा ॥ संझ समय अंदर महल। किय सुराज ग्रह धाम ॥
अप्प बयट्ठौ राज तहँ। अमत सजग्गिल काम ॥ छं० ॥ १० ॥

पृथ्वीराज के सभामंडप की प्रशंसा वर्णन।

नराज ॥ जयं सु अत्ति जग्गियं। सु धाम तेज तग्गियं॥
सजे सुभाल आसनं। अमोल रौहि वासनं ॥ छं० ॥ ११ ॥

(१) ए.-वैद्य। (२) मो.-अति।

सु दीय साम सोभयं। सुगंध गंध ओभयं ॥
कपूर पूर अंभरं। म्रगज्ज वास अंगरं ॥ छं० ॥ १२ ॥
सु सज्जि सिंघ आसनं। समोल रोहि पासनं ॥
कनक छच दंडयं। सु रंग रंग मंडयं ॥ छं० ॥ १३ ॥
अबीर [1]अघ्घ कर्दमं। सरोहि ग्रेह खर्दमं ॥
अभूत साघ ओभयं। अबीर भूर ओभयं ॥ छं० ॥ १४ ॥
अयास धूम धोमरं। प्रसार वास ओमरं ॥
प्रसून अन्न वन्नयं। स भूषनं स धम्मयं ॥ छं० ॥ १५ ॥
घनं सु सार सम्मरं। अभूत वास अम्मरं ॥
भुअं कुसम्म केसरं। सुरं अभूत जे सुरं ॥ छं० ॥ १६ ॥
तहां सु राज आसनं। सरोहि सिंघ सासनं ॥
सुपाय अंग रष्षियं। कला सु काम लष्षियं ॥ छं० ॥ १७ ॥
प्रवीन भाव पायसं। विचिच चिच पासयं ॥
भवंति क्रंति भूषनं। सुबुद्धियं विदूषनं ॥ छं० ॥ १८ ॥
प्रसन्न [2]विद्धि वासनं। अभूत [3]सिद्धि आसनं ॥
बरष्ष षोडसं समं। अदोस रूपयं [4]रमं ॥ छं० ॥ १९ ॥
कला विग्यान विद्धयं। सु पास भूप सिद्धयं ॥
सिंगार सार सारयं। अभूषनं स धारयं ॥ छं० ॥ २० ॥
ग्रहे विदून चामरं। सु विंझ राज सामरं ॥
धरंत बह्नि पन्नयं। सु कंठ थान सन्नयं ॥ छं० ॥ २१ ॥
सु घन्नसार पानयं। सुगंध विद्ध मानयं ॥
करें सु [5]द्रप्पकं करं। सु सघ्घि [6]आद्धि संभरं ॥ छं० ॥ २२ ॥
शृंगार ग्रेह सोमयं। अभूत दुत्ति ओमयं ॥
समोभ धामयं सजं। सुबास बासवं खजं ॥ छं० ॥ २३ ॥

पृथ्वीराज की उक्त सभा में उपस्थित सभासदों के नाम।

---

(१) क. ए.-दच्छ, कच्छ, कच्छ।
(२) मो.-विद्ध। (३) मो.-मद्धि। (४) को. ए.-समं।
(५) क.-दर्प, ए.-दप्प। (६) मो.-अद्ध।

कवित्त ॥ रचि धाम अभिराम । राज हरि आन बयट्ठौ ॥
दिपत [1]दीह सुभ लीह । तेज उब्भर तप जिट्ठौ ॥
बोलि [2]चंद चंडीस । बोलि अद्दव रा आमं ॥
निड्डर बोलि कमधज्ज । अत्ति आमनि बल सामं ॥
बलिभद्र बोलि कूरंभ भर । लोहानौ आजानभुअ ॥
बैठक्क बैठि आसन्न सजि । ताप सतप्पै तेज धुअ ॥ छं० ॥ २४ ॥

कल्हन नट का करनाटी सहित सभा में आना और पृथ्वीराज का उससे करनाटी की शिक्षा के विषय में पूछना।

बोल ताम नाइक्क । सथ्थ सथ्थह सब साजं ॥
बोलि पाच कर्नाटि । बैठि गानं बर वाजं ॥
नाटक भेद निबंध । बूझि राजन बर बत्तं ॥
कवन कला क्रत पाच । कहौ नाइक निज सत्तं ॥
नाइक कहै प्रथिराज सुनि । एह पाच देष्यो सु पय ॥
इह रूप रंग जोवन सु वय । कला मनोहर चिंति मय ॥ छं० ॥ २५ ॥

कविचंद का कहना कि ऐसा नाटक खेलो जिस में निढ्ढुर राय प्रसन्न हों।

पद्धरी ॥ उच्चर्‍यौ ताम कविचंद बानि । नायक्क अहोमति मरम आनि ॥
सो धरौ कला विचार साज । निढ्ढुरह बयट्ठौ पास राज ॥ छं० ॥ २६ ॥
नाटक्क बिबिध बुझ्झै बिमान । विचार चार सुर तान गान ॥

नाइक का पूछना कि राजा के पास बैठे हुए सुभट ये कौन हैं।

नाइक्क जंपि हो चंद भट्ट । नृप पास बयट्ठौ को सुभट्ट ॥ छं० ॥ २७ ॥

कविचंद का निढ्ढुरराय का इतिहास कहना।

उच्चर्‍यौ चंद नायक सरीस । कनवज्ज नाथ जैचंद जीस ॥
ता अनुज बंध बरसिंघ देव । ता सुअन कमध निड्ढुरह एव ॥ छं० ॥ २८ ॥

---

(१) मो.-देह । (२) कृ.-चंद पुंडिर ।

नायक कहै हय बत्त सच्च । आवन्न केम हुअ दिल्ली तच्च ॥
बरदाइ कहै नायक चिंत । आवन्न क्रित्त करन्नमित्त ॥ छं० ॥२९॥
अ सिंघ कियौ तहां उच्च काज । अति तेज अप्प जैचंद राज ॥
लघु बेस उभय बंधव सरूप । श्रुत थान उभय षेलंत भूप ॥ ३० ॥
आइयौ महल निढ्ढुर समेक । कहि कुमर राज सह्यौ सु एक ॥
उच्चर्यौ ताम निढ्ढुरह देव । कर कुमर हंम मिच्छंत सेव ॥३१॥
जयचंद समुष निरषेत ताम । कल [1]कलिय लग्ग चामड्ढ धाम ॥
करि सभा सु निढ्ढुर आइ ग्रेह । सुष धाम काम बिलसंत देह ॥
॥ छं० ॥ ३२ ॥

निढ्ढुर का शिकार खेलने जाना और प्रधान पुत्र सारंग के बगीचे में गोठ रचना।

कवित्त॥ समय एक निढ्ढुर । कमंध आषेट सपत्तौ ॥
बिधि कुरंग दुअ तीन । उभय एकल निज घत्तौ ॥
आइ बग्ग सारंग । सुवन सोवंत प्रधानह ॥
करिय गोठि उच्चार । सथ्थ संभरे सवानह ॥
ता अग्ग गोठि सारंग सजि । घन पकवान असान रस ॥
ग्रिह गये वाग आगम सकल । लइयौ निढ्ढुर भेव तस ॥छं०॥३३॥

यह खबर सुन कर उसी समय सारंग का वहां आकर निढ्ढुर के रंग में भंग करना।

मुरिल्ल ॥ निढ्ढुर ताम [2]गोठिलिय अप्पं । तर सेवक सारंग सु दप्पं ॥
घन पकवान सरस गति सारं । रच्चे मंस बिवह बिसवारं ॥छं० ॥३४॥
करि क्रीडा सो गोठि अहारे । [3]षपती सथ्थ सबै बिधि भारे ॥
सुमनह द्राव सुमन सब सोहै । कासमौर चंदन सुर रोहै ॥छं०॥३५॥
आहारे तंमोल [4]सुगंधं । मादक आइ अग्गि जहां जग्गं ॥
सुनौं श्रवन सारंग सुवत्तं । आयौ आतुर [5]वग्ग तुरत्तं ॥छं०॥३६॥

(१) ए. कृ. को.-मलिय । (२) ए.-गोगिय । (३) मो.-नृप तौ ।
(४) मो.-सुरंगं । (५) मो.-बेगि ।

[1]कठिन वाच निढ्ढुर सम बाचे। तरस्यौ निढ्ढुर तामँत राचे ॥
गयौ अग्र जैचंद सु रावं। कुट्ठी बस्त गोठि मनि सावं ॥छं०॥३७॥

निढ्ढुर का जैचंद से सारंग की बुराई करना और जैचंद का सारंग का पक्ष करना।

संभलि वचन कुप्यौ रा पंगं। कलमलि कोप रोस सब अंगं ॥
निसा महल निढ्ढुर सँपत्तौ। फेरे मुष जैचंद बिरत्तौ ॥छं०॥३८॥
न संग्रह्यौ रस बसि सिर नायौ। निढ्ढुर ताम अप्प ग्रह आयौ ॥
सजि सु सथ्थ जुग्गनिपुर आयौ। अति आदर करि पिंथ्थ बधायौ ॥
॥ छं० ॥ ३९ ॥

यह कथा सुन नायक का प्रसन्न होकर कहना कि मैं ऐसाही नाटय कौशल करूंगा जिससें राजा का चित्त प्रसन्न हो।

दुहा ॥ सुनि नाइक हरष्यौ सुमन। धनि धनि बैंन उचार ॥
लहै सुविद्या अर्थ गुन। जै जै अर्थ उचार ॥ छं० ॥ ४० ॥

गाथा ॥ राजनीति गति रुवं। गुन संपूर चौस एकंगं ॥
जे रंजे रज ध्यानं। सुनि कविराज सब्ब संपूरं ॥ छं० ॥ ४१ ॥

राजाओं के स्वभाविक गुणों का वर्णन।

साटक ॥ विद्या विनय विवेक [2]वानि विमलं वर्णो कुवेरप्रभा ॥
[3]सुविचारो सु विचक्षणो ह सुमनं सौजन्य सौदंर्य्यता ॥
[4]भाग्यं रूप अनूपयं रस रसं संजोग विभ्भोगयं ॥
मांगल्यं संपूर सौम्य कलसं आनंत केली कला ॥ छं० ॥ ४२ ॥
म्रदु तत्वं म्रदु गान कंच रसना मर्यादयं मंडनं ॥
[5]उद्दायं उद्दार दाव उछ्हं एते गुना राजयं ॥

---

(१) ए.-कानिक। (२) ए. क. को.-मार सल्यं, विव्वेक विच्चारयं।
(३) ए. क. को.-विचारं ससु तप्प सोष सुमनं सौजन्य सौभाग्ययं।
(४) ए. क. को.-भाग्यं।
(५) ए.-जद्दायं।

सोयं आन विचार चाव चतुरं विव्वेक विचारयं ॥
सोयं [1]नीति सनीत किति अतुलं प्राप्तं जयं [2]ओरयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥
दूहा ॥ फुनि नाइक जंपै सु नमि । अहो चंद वरदाइ ॥
राग विनोदह चौसषठ । कहौं सुनौ विधिसाय ॥ छं० ॥ ४४ ॥
* दंडमाली ॥ दरसन नाद विनोद्यं । सुरंबंध न्रत्य समोदयं ॥
गीताद्य अधि नव वाद्यं । अभिलाष अर्थ पदाद्यं ॥ छं० ॥ ४५ ॥
[3]बक्रात जग्यपवीतयं । प्रासन्न प्रभुत प्रनीतयं ॥
पंडीत पालक तल्पयं । ते पढ़य तर्क विजल्पयं ॥ छं० ॥ ४६ ॥
प्रमान सरन प्रमोदयं । प्रातापयंच प्रमोदयं ॥
प्रारंभ परिछद संग्रहं । निग्राह पुष्टित तुष्टिहं ॥ छं० ॥ ४७ ॥
प्रासंस प्रीति स प्रापयं । प्रातिग्र यासु प्रतिष्ठयं ॥
धीरज्ज धीर जुधं वरं । सो रज्जएव सतं नरं ॥ छं० ॥ ४८ ॥

राजा का करनाटी को आने की आज्ञा देना ।

दूहा ॥ सुनि नायक राजन्न मति । जंपहि दिल्ली नरेस ॥
पात्र प्रगट गुन सकल विधि । विद्या भाव विसेस ॥ छं० ॥ ४९ ॥

कर्नाटी का सुर अलाप करना और बाजे बजना ।

प्रथम गान सुरतान गुन । वादी नेक विनान ॥
पाछें न्रत्य प्रचार भर । प्रगट करहु परिमान ॥ छं० ॥ ५० ॥

नाटक का क्रम वर्णन ।

भुजंगी ॥ तबै बोलियं अप्प नाइकअ ग्गं । मुषं पात्र आरोह उच्चार जग्गं ॥
धरे आप बीना सुरंसाज सारे । सुरं पंच घोरं धरे थान भारे ॥
छं० ॥ ५१ ॥
धुनिं रूप रागं सुहानं उपाए । रचे च्यार रागं सुभा सुब्भ भाए ॥
गियं गान अप्पं सुरं तंति मानं । रचे मंडली राय आयास थानं ॥
छं० ॥ ५२ ॥

---

(१) मो.-तीन ।　　　　(२) ए.-को.-च्चोवरं ।
* ए. कृ. को.- में यह छंद गीता मालची नाम से लिखा है ।
(३) कृ. ए.-वक्यत, वक्मत ।

मनं सर्ब मोहे अतिं राग रूपं। तनं लग्गए तार आरंग भूपं॥
तनं षेद रोमंच उच्छाह अंगं। बयं विस्मयं बेपथं मोद रंगं॥ छं० ॥ ५३ ॥

दया दीन चित्तं अभिलाष जग्गं। गुनं रूप रागं जितें चित्त लग्गं॥
नषं सिष्ष जग्यौ तनं मीनकेतं। चढ़ी मत्त बेली चितं पच हेतं॥
छं० ॥ ५४ ॥

कर्नाटी के नाच गान पर प्रसन्न हो कर राजा का नाइक से मूल्य पूछना और नायक का कहना कि आपसे क्या मोल कहूं।

तबै बोलि नाइक राजन्न तामं। कहा मोल पाचं कहो द्रब्य नामं॥
कहै नाम नाइक पाचं सरीसं। कहा मोल पाचं न्रपं जोग ईसं॥
छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज का नाइक को १० मन स्वर्ण देकर वेश्या को महलों में रखना।

मनं सारधं हेम अप्पेव तासं। ग्रिहं रष्षियं अप्प पाचं सुभासं॥
बिसज्जे मिहल्लं करे अप्प उट्ठे। कला काम क्रत्यं निसा पाच तुट्ठे॥
छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज का कर्नाटकी के साथ क्रीड़ा करना और रात दिन सैकड़ों दासियों का उसके पहरे पर रहना।

दूहा ॥ काम कला तुट्ठिय न्रपति। सु ग्रह पवारी हार॥
तिन अवास दासी सघन। अह निस रह रषवार ॥ ५७ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके कर्नाटी पात्र वर्णनं नाम तीसमो प्रस्ताव संपूरणम् ॥ ३० ॥

अथ पीपा युद्ध प्रस्ताव लिख्यते ।

(एकतीसवां समय ।)

प्रातःकाल होतेही पृथ्वीराज का और चामुंडराय आदि सामंतों का अपने अपने स्थानों पर आकर बैठना और कैमास का आकर राजा के पास बैठना ।

कवित्त ॥ मद्दल भयौ न्टप प्रात । आइ सामंत सूर भर ॥
ठट्टा दिसि [1]उत्तरिय । राय चामंड बीर बर ॥
बंभन वास जु राज । [2]कोइ मुक्कलि इन काजं ॥
चावद्दिसि अरि नन्ह । सीम कट्टै नह आजं ॥
कैमास बोलि मंची तहां । मंच लाज जिहिं लाज भर ॥
सिर नाइ आइ बैठे ढिगह । मनो इंद्र ढिग इंद्र नर ॥छं०॥ १ ॥

सभा जम जाने पर राज्यकार्य्य के विषय में वार्तालाप होना और उज्जैन और देवास धार इत्यादि पर चढ़ाई होने का मंतव्य होना ।

पद्धरी ॥ बैठे सु राज आरंभ गुझ्झ । पद्धरी छंद बरनैति मझ्झ ॥
बुल्लिय नरिंद जै मत्त धीर । सब्बै सु जुद्ध संग्राम श्रीर ॥ छं० ॥ २ ॥
दिसि मत्त मत्त उज्जैन काम । बंचाइ राज कग्गद सु ताम ॥
सामंत सूर तपि तोन बंधि । आवर्त्त रोस चलि सेन संधि ॥छं०॥ ३ ॥
दिन सुद्ध राज चलियै सु आज । सम बैर बीर बंकान साज ॥
जैचंद सेन दुस्सह प्रमान । षुरसान सैन सुलतान भान ॥छं०॥ ४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-उत्तरिय । (२) ए. कृ. को.-कोदक ।

चालुक्क बीर गुज्जर नरेस। क्रित करै जुद्ध करनी बिसेस ॥
यल वटिय बीर मभ्भिभय हुआव। रष्यंति सूर तिन मध्य आव ॥
छं० ॥ ५ ॥

सब सवर अरी चहुँ दिस नरिंद। तिन मध्य दन्द पृथिराज इन्द॥
सो वरन बीर उज्जेन ठाम। महि मंड काल सुभथान ताम ॥
छं० ॥ ६ ॥

तिन बरन ठाम देवास तीय। संग्राम राज मंडन सु बीय ॥
बंध्यौ सु राज कग्गद प्रमान। धर धनुह धार अर्जुन समान ॥
छं० ॥ ७ ॥

पृथ्वीराज का क्रुद्ध होकर कहना कि इस तुच्छ जीवन में कीर्ति ही सार है।

द्रिग बारन धरन धर धरनि पाल। सामंत सूर तिन मध्य लाल॥
देवास धीय देवास ब्याह। मंगौ सु राज संभरि उछाह ॥छं०॥८॥
जैचंद करहु अप्पर निधान। कलि काल बत्त चलै प्रमान ॥
सा पुरस जीवतं विय प्रकार। संभरै एक कित्ती सँसार ॥छं०॥९॥
जीरन सु जुग्ग इह चलै बत्त। संसार सार गल्हां निरत्त ॥
इह काब पिंड [1]संची सु बत्त। जै है सुजोग जोगाधि तत्त ॥छं०॥१०॥
जै है सु भान सब ग्रह प्रकार। दिष्षिये मान सो बिनसि सार ॥
वापी विरष्य सर मठ प्रमान। मिखिहै सु सर्व जगतिक्क जान ॥
छं० ॥ ११ ॥

छंडो न बीर देवा सु मुष्य। रष्यौ सुमंत गल्हां [2]पुरुष्य ॥छं० ॥१२॥

राजा का कहना कि कीर्ति के ही लिये राजा दधीच ने अपनी अस्थि देवताओं को दी। दुर्योधन ने कीर्ति के लिये ही प्राण दिए।

कवित्त ॥ गल्हां काज सु देव। अस्ति दधीच दीय बर ॥
गल्हां काज सहष्ष। बज्ज किन्नौ सु इंद्र जुर ॥

(१) मो.-सच्ची, ए.-पंची। (२) ए. कृ. को.-पुरिष्य।

गल्हां काज नरिंद । वंस दुरजोध मान रषि ॥
गल्हां काज सु धात । मान अहुति भूमि लषि ॥
रष्षिहै नरन गल्हां सुवर । गल्हां रणो न्रपति उघ ॥
जयचंद बंध दल बल सकल । सबर 'साँइ किज्जै सरुघ ॥छं०॥१३॥

राजा की इस प्रतिज्ञा को सब सामंतों का सिरोधार्य करना ।

दूहा ॥ इह 'परतग्या नरिँद मन । करै बनै प्रथिराज ॥
सकल सूर सामंत ज्यौं । मुहि अग्या सिरताज ॥ छं० ॥ १४ ॥

सभा में उपस्थित सब सामंतों का बल पराक्रम वर्णन ।

चोटक ॥ इति सामँत सूर प्रमान धरं । दरबार विराजत राज भरं ॥
चढ़ि चब्बर चंद पुंडीर कियं । सोइ देह धरै फिरि आनँद्रियं ॥
छं० ॥ १५ ॥

न्रप लज्ज न्रपत्तिय सारँगयं । सभ पुज्जिन सामँत ता वरयं ॥
अततोइय अंग उतंग भरं । सिव सेव कियैं तन फेरि धरं ॥
छं० ॥ १६ ॥

नर निढ्ढुर एक नरिंद समं । कनवज्ज उपज्जिय जास जमं ॥
गहिलौत गरिष्ट गोइंद बली । प्रथिराज समान सु देह कली ॥
छं० ॥ १७ ॥

छिति रष्षन छित्ति पजून भरं । तिन पुत्र बली बलिभद्र नरं ॥
परमार सलष्ष अलष्ष गती । तिन पुज्ज न सामत सूर रती ॥
छं० ॥ १८ ॥

कयमास सु मंचिय राज दरं । अरि अंग 'उछाहन बीर बरं ॥
अचलेस उतंग नरिंद धरं । रन मझ्झ विराजत पंग भरं ॥
छं० ॥ १९ ॥

चावंड नरिंद सु षग्ग बली । नरसिंघ सु दंद अरिंद कली ॥
बर लंगरिराइ उतंग षलं । बय देहिय जानि सुबाहु बलं ॥छं०॥२०॥

(१) ए. कृ. को.-साइ । (२) ए. कृ. को.-परतं ग्यान । (३) ए. कृ. को. उछाहन ।

[1]इक रंग सु अंग करंत रनं। कर पाइ सु अंघय हथ्थ तनं ॥
लरि लोह लुहानय किति करं। अरि वाइव धूर ज्यों पत्त [2]ढरं ॥
छं० ॥ २१ ॥

भजि भौंह चंदेल सु पेल षगं। धर धूसन भुंमिय जंपि जगं ॥
दिवराज सु बग्गरि बंध वियं। जिन किति जित्ति अगत्त लियं ॥
छं० ॥ २२ ॥

उदि उद्दिग बाह पगार बली। हरि तेज ज्यों रोर फटंत षली ॥
नरनाह सु कन्ह का किति करौं। भर भीषम भारथ सुद्धि धरौं ॥
छं० ॥ २३ ॥

भय भट्टिय भान जिहान जपै। तिहि नाम सुने अरि अंग कपै ॥
सुत नाहर नाहर के क्रमयं। तिन कंकन बंक वियं अ्रमयं ॥
छं० ॥ २४ ॥

रज राम गुरं षग भ्रम्म बली। जिन किति दिसा दस वढ्ढि चली ॥
बड़ गुज्जर राम नरिंद समं। जिन [3]कंदल हढ्ढि उठंत श्रमं ॥
छं० ॥ २५ ॥

कविचंद हकारि सु अग्ग लियौ। भर भट्टिय भान भयंक वियौ ॥
रघुवंसिय राम सुरंग बली। कनक्क जिन नाम नरिंद कली ॥
छं० ॥ २६ ॥

वर राम नरिंद नरिंद समं। तिहि कंदल उट्ठि रुधं सु जमं ॥
जिहि वख्र सु सख्रय अंग करं। घरि है भर उठ्ठिज बूंद भरं ॥
छं० ॥ २७ ॥

भगवत्ति अराधन न्याय करै। रघुवंसिय किल्ह नरिंद वरै ॥
जिन जित्तिय जाइ पंजाब धरं। .... ॥
छं० ॥ २८ ॥

जिन [4]पंडिय रावर जुद्ध जित्यौ। धर मंडव मुंड चका वरत्यौ ॥
पांवार सलष्ष सु पुच बली। न्रप जैत सजैत कि किति कली ॥
छं० ॥ २९ ॥

(१) ए. कृ. को.-इक रंग सुरंग। (२) ए. कृ. को-धरं। (३) कृ.-कंकनि।
(४) ए.-मंडिप।

सु चलै बर भाइ '¹दुभाइ भरं । तिन सीस सु जंगल देस धरं ॥
धनवंत धनू न्रप '²धावरयं। जित तित्त नहीं मन सावरयं ॥
छं० ॥ ३० ॥

परताप प्रथीपति नाम बरं । उपज्यौ कुल पंडव जोति गुरं ॥
तन '³तूंअर नेत त्रिनेत बरं । परिहार पहार सु नाम धरं ॥
छं० ॥ ३१ ॥

सजयो जय सद्द पुंडीर बली । जिनके भुज जंगल देस कली ॥
परसंग सु षीचिय षग्ग बली । चमरालिय कित्ति नन्यंद छली ॥
छं० ॥ ३२ ॥

नव कित्ति नरिंद सु अल्हनयं । भजि भारथ कुंभज किल्हनयं ॥
सारंग सुरंगिय कित्ति बली । बर चालुक चार नक्षत्र छली ॥
छं० ॥ ३३ ॥

परि पारथ क्रन्न कुँवार न्रपं । तिहि पारथ पूजय जुद्ध जपं ॥
षग षंडिय '⁴छिचिय छित्त रनं । सब सामंत सूर समोह तनं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

हहकारि उभै न्रप पास लिए । समतम्मि सु मंचिय मंच बिए ॥
जित जोध विरोधत राज करै । तिन मैं मुष भारथ नाउ सरै ॥
छं० ॥ ३५ ॥

कविचंद सु नामय जाति क्रमी । तिनके गुन चंपि नरिंद भ्रमी ॥
सिर अंतय आतप छच धज्यौ । कनकावलि मंडिय मंडि छज्यौ ॥
छं० ॥ ३६ ॥

कवि कित्ति प्रमोधय राज चली । प्रथिराज विराजत देह बली ॥
बर मंगल बुद्ध गुरं सु धरं । सुक सक्रय बक्रय बुद्धि नरं ॥छं०॥३७॥
तिन माहि विराजत राज तरं । सु मनों छबि मेरय भान फिरं ॥
बर सेंगर सूर कल्यान नमं । जिहि भारथ कौं प्रथिराज समं ॥
छं० ॥ ३८ ॥

(१) मो.-सुभाइ । (२) मो.-धीवरयं । (३) ए. कृ. को.-तूँअर ।
(४) ए. कृ. को.-छत्रिय ।

जयचंद जँधारय नाहरयं। न्रप राज सु रष्षन साहरयं ॥
मकवान महीपति मीर बली। प्रथिराज सु आनत जोति छली ॥
छं० ॥ ३९ ॥

कठ हेरिय सारंग स्रूर बली। प्रथिसाहि न पुज्जत जोति कली ॥
जग जंबुअ राव हमीर बरं। छिति पत्ति कंगूरह स्रूर गुरं ॥
छं० ॥ ४० ॥

नर रूप नराइन राज भरं। भर भारथ जुग्गिनि पाच करं।
गुरराज सु कन्हय जम्म जिसौ। मग वेद चलंतह ब्रह्म इसौ ॥
छं० ॥ ४१ ॥

गुर ग्यारह से सकसैन बरं। प्रथिराज चढ़ंतह बाज धरं ॥
चलि सेन मिली करि एकठयं। बजि बंब कि अंबर घुम्मरयं ॥
छं० ॥ ४२ ॥

झलमंकत षग्ग फरी धरयं। भजि डंक ज्यौं डकत भूत भयं ॥
गहरात गजिंद सुरिंद समं। अनु छुट्टि जलह विहह भ्रमं ॥
छं० ॥ ४३ ॥

चलि मल्लन हल्ल ज्यों रोस रसै। जमजूथ मनों दल दंद ग्रसे ॥
हयनारि सुधारि कें कंक षगी। धरि सिष्ट सु दिष्ट कि इष्ट लगी ॥
छं० ॥ ४४ ॥

कमनैत बनैत कि नेत धरं। मँडि मुष्टि मही अनु रूप करं ॥
फहराति सु बैरष वाइ बरं। सु मनौं घन फुट्टिय अग्गि झरं ॥
छं ॥ ४५ ॥

सब सेन सभा इह ब्रन्न कहै। बरषा रुव संत ह छुट्टि लहै ॥
छं० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिए तैयारी करने को कहना।

दूहा ॥ जो बुलै सामंत सथ। तौ 'चल्लै प्रथिराज ॥
करि उप्पर जैचंद कौ। अरि बंधौ सिरताज ॥ छं ॥ ४७ ॥

सामंतों का राजाज्ञा मानना।

(१) मो.-भो।

कवित्त ॥ जो अग्या सामंत। स्वामि दीनी सु मानि लिय ॥
ज्यौ मंचह गुन ग्यान। धीय मानंत तंत लिय ॥
ज्यों सु अम्म [1]उबरत्त। बीर चट्टौ परिमानं ॥
ज्यों गुरु बलहुअ विदुष। तत्त सोई करजानं ॥
सा अम्म चिया अग्या न्रपति। मान मोह जानै न अँग ॥
सामंत सूर प्रथिराज सम। सबल बीर चल्लंत सँग ॥ छं० ॥ ४८ ॥

जैचंद के ऊपर चढ़ाई की तैयारी होना।

दूहा ॥ अति आतुर आरंभ वल। गिनी न तिन गति काज ॥
तिन उप्पर जैचंद कौ। सो सज्जिय प्रथिराज ॥ छं० ॥ ४९ ॥

कमधज्ज पर चढ़ाई करनेवाली सेना के वीर सेनापति सामंतों के नाम और सेना की तैयारी वर्णन।

चोटक ॥ सीइ सज्जिय सूर नरिंद बलं। छिति धारन को छिति छच कलं ॥
मति मंच बरघ्घय सूर बरं। धर पर्वत ज्यौं भर कन्ह करं ॥
छं० ॥ ५० ॥

आहत्त अहीर करै बलयं। सुरघ्यौ गिर एक हरी छलयं ॥
सु करै बलवीय अहत्त भरं। न्रप राज सु कंठिय कंठ गुरं ॥
छं० ॥ ५१ ॥

हरसिंघ महाबल बंधु वियौ। बरसिंघ बली अरि छच लियौ ॥
बर जद्दव जाम जुवान नरं। जिन [2]कंधय ढिल्लिय राज गुरं ॥
छं० ॥ ५२ ॥

नर नाहर टांक नरिंद नमं। तिहि कंठ अरी धर अम्म तमं ॥
[3]पंचम्म पवाँर सु पुंज बरं। मद मोष विछुट्टिय काल भरं ॥
छं० ॥ ५३ ॥

परघत्त सु पल्हन अल्हनयं। भुज रष्षिय भारथ ढिल्लनयं ॥
बर तूंअर रावति बान बली। जिन कित्ति कलाधर अम्म छली ॥
छं० ॥ ५४ ॥

(१) मो.-उरवत्त। (२) ए. कृ. को.-कंठय। (३) ए. कृ. को.-पंचमुम्मव बार।

बर बीर कँठी षुरसान ¹रनं। हय षीय अहुठ्ठपती सुभनं॥
कंठीर कसंडत जैत बली। जिहि ओटत अंगस देस भली॥छं०॥५५॥
नृप रूप नरिंदति वाहनयं। षुरसान दलं षिति सा हनयं॥
जसरत्ति सुरत्ति सुरत्त गुरं। षित कौं षित कंध परै न धरं॥
छं०॥५६॥
जनएस गुरेस सबंध बली। जिहि निड्डुर उप्पर पंच ²षुली॥
परसंग पविच पविच छती। षुरसान दलं जिन जुद्ध मती॥
छं०॥५७॥
अवनीस उमाइ तुरंग ³तुरं। जिहि बंधन वास उगाहि धरं॥
जिन गुज्जर ताप तिरं तिरनं। कयमासय उप्पर कीय घनं॥छं०॥५८॥
मइनंग महा मुर नैंन समं। तिन राज सु रष्षिय जित्ति क्रमं॥
बरदावलि चंद नरिंद पढ़ी। सु मनों कल जोति सरीर बढ़ी॥
छं०॥५९॥
सभ सोहत सित्त रु पंच इकं। जिन जानत ⁴मोद मयं करिकं॥
कवि नामति जित्तिय जानि तिनं। तिनकी विरदावलि जंपि फुनं॥
छं०॥६०॥
सत में षट राजत राज समं। तिनके जुव नाम कहोति क्रमं॥
छं०॥६१॥

उन छः सामंतों के नाम जो सब सामंतों में सब से अधिक मान्य थे।

कवित्त॥ निड्डुर सूर नरिंद। कन्ह चहुआन सपूरं॥
जिपड़ जैत जैसिंघ। सलष पावारति सूरं॥
जामदेव जदव जुवान। भारथ्थ पत्ति सिर॥
बर रघुबंसी राम। द्रुग्ग महिं कौन तास बर॥
बर बीय रत्त ⁵पच्छै सुनिय। रुधिर बूंद कंदल परहि॥
मधि मझ्झि मुह्हरत इक बर। अरि बर गन रुंधहि भिरहि॥छं०॥६२॥

(१) ए. कृ. को.-नरं। (२) मो.-हली। (३) मो.-मुरं।
(४) ए. कृ. को.-मोह। (५) ए. कृ. को.-परै।

उक्त छः सामतों का पराक्रम वर्णन।

सौ सामंत प्रमान। [1]उग्गि अंकूर बीर रस ॥
सज्जि भली नकपत्त। अंग लग्गे सुभंत तस ॥
[2]राजस तम सातुक। साष अग्गै अधिकारिय ॥
जथ्थ कथ्थ आरुहिय। रत्ति ढिल्लीपति धारिय ॥
जंगलू देस जंगल न्नपति। जग लेवै बर सूर घट ॥
षुरसान षान उप्पर चढ़िय। बर बीर रस बीर पट ॥ छं० ॥ ६३ ॥

सामंतों का जैचंद पर चढ़ाई करने का मुहूर्त शोधन करने के लिये कहना।

अनल दंग अरि लग्गि। उग्गि अगिवान बीर रस ॥
सामंता सतभाव। पंग उप्पर कीजै कस ॥
पंच घटी सौ कोस। राज अग्गं ढिल्ली तँह ॥
साम दान अरु भेद। दंड निर्नय[3]साधौ जँह ॥
मन बच क्रम कह कह कल्यौ। अलप न सुर सहय सुघट ॥
दुजराज संधि गुरराज कौ। सज्जि महूरत चट्टिपट ॥ छं० ॥ ६४ ॥

प्रत्येक सामंत पृथ्वीराज की इच्छा का प्रतिबिंब स्वरूप था।

चोटक ॥ प्रति प्रीति प्रत्यं प्रतिबिबं न्नपं। ससि राज इकं प्रति व्यंब पथं ॥
प्रतिव्यंबह मझ्झ इकंत उभै। चहुआनह सामंत सूर सुभै ॥
छं० ॥ ६५ ॥
द्रिस राकय अर्कय थान बियौ। तम भंजित तेज सु राज लियौ ॥
सोइ लष्षि हयग्गय मंत षुली। रवि की किरनावलि तेज डुली ॥
छं० ॥ ६६ ॥
पर पष्षर स्याह तुरंग रनं। सु मनों घन सोभत नैर तनं ॥
सु बिबें बिष राजत राज रती। सु मनों प्रतिबिंब किदेव किती ॥
छं० ॥ ६७ ॥

(१) ए. कृ. को.-"रौद्र भयानक रस"।
(२) मो.-राजत। (३) मो.-साधै।

पृथ्वीराज के सब सच्चे सेवकों का एकही मंत्र ठहरा।

दूहा ॥ इत्ते मंतन इक्क मुष। न्रप सेवक अरु इट्ठ ॥
एक मंच एकइ बुले। वियौ न जंपै जिट्ठ ॥ छं० ॥ ६८ ॥

चढ़ाई के लिये वैसाष सुदि ५ का सुदिन पक्का करके सब का अपने अपने घर जाना।

तिते स्तूर तिहि रत्ति बर। ग्रेह सपत्तें बीर ॥
पंचमि बर बैसाष धुर। लेजु वचन ते धीर ॥ छं० ॥ ६९ ॥

मरने के लिये मुहूर्त साध कर सब बीरों का आनन्द में मतवाला होना।

अरिल्ल ॥ अप्प अप्प गय ग्रेहे सहूरं। मरन महूरत मरन न पूरं ॥
चढ़े बीर चावद्दिसि रंगं। मनों [१]घलह लिय मेघ असंगं ॥छं०॥७०॥

प्रातःकाल सामंतों का बड़े बड़े मतवाले हाथियों पर चढ़ कर जुड़ना।

दूहा ॥ मेघ पंति वद्दल विषम। बल दंतिय सजि स्तूर ॥
चढ़ि जिहाज पर दिष्षियै। धर नहिं परै करूर ॥ छं० ॥ ७१ ॥
धरनौधर तिय गुननि बर। लिय कारन परिमान ॥
स्तूर उगै सत पच ज्यौ। ज्यौं भद्दव बल भान ॥ छं० ॥ ७२ ॥

पृथ्वीराज की सेना के जुटाव की पावस के मेघों से उपमा वर्णन।

चोटक ॥ सुभ्भं बर बीर सु चोटक छंद। छिती छिति मत्त हयग्गय इंद ॥
रनं किय बीर नफीर रवद्द। ढलक्किय ढाल सु ढिल्लिय भद्द ॥छं०॥७३॥
घनंकिय संकर ऋंदुन ऋंद। जग्यौ मनु भारत बीरय कंद ॥
छिती छितिपूर हयग्गय भार। दिसौ दिसि दिष्षहि ज्यौं जल धार ॥
छं० ॥ ७४ ॥
ढरै दिगपाल सु अट्ठय मेर। भये भयभीत भयानक भेर ॥
सुनै स्तुति छच्चिय सद्द निसान। दिसा षुरसान सु वढ्ढय पान ॥
छं० ॥ ७५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-घहह।

मंडे मय मत्त [1]गइमइराज। उठै वर अंकुर मुच्छ विराज॥
कहै कविचंद सु उप्पम ताहि। मनों सुर लग्गिय चंद कलाहि॥
छं० ॥ ७६ ॥

[2]अपें प्रथिराज समप्पय बाज। तिनें दिषि पंतिय प्रब्बत लाज॥
दुअं दुअ बंधि रकेबन ओर। चढ़े वर छिचिय छूर झकोर॥
छं० ॥ ७७ ॥

हयद्दल पंति सुभंतिय ठांनि। मनों बगपंति घनी घट बांनि॥
मयं मय रुद्र सु रुद्रय सार। भयौ जनु अंत प्रलै दुतिवार॥छं०॥७८॥
डहडुह बज्जय डक्कय मात। डलै तिन बीर गिरव्वर गात॥
सु दिष्षन वांम फुरक्कय नैन। चल्यौ जनु बीर परब्बत बैन॥छं०॥७९॥
इसे दोउ बीर विराजत रिंघ। गुफा इक मझ्झ मनों दुअ सिंघ॥
चले ग्रह छंडि ग्रहग्रह छूर। कही कविचंद सु उप्पम पूर॥
छं० ॥ ८० ॥

कहै करुना रस कंतहि चीर। उठ्यौ तहां जित्त भयानक बीर॥
खिंची लिष चिचय दंपति बैन। मनों पलटै दिन चाचिग नैन॥
छं० ॥ ८१ ॥

छिपा छिप होम प्रमान प्रमान। किधों चकई सुपमुक्कय मान॥
भयौ मन बीरन बीर प्रमान। भयौ करुना रस तीय प्रमान॥छं०॥८२॥
दुहूं दिसि चित्त अचित्त अलोल। मनों दुअ पास हलंत हिडोल॥
दोऊ मझ्झ रष्षय छूर सनूर। भजै करुना रस काइर पूर॥छं०॥८३॥
मिले न्त्रिप आइ सु छिल्लिय थान। कहै कविचंद बषान बषान॥
छं० ॥ ८४ ॥

सामंतों की सर्प से उपमा वर्णन।

दूहा॥ स्वामि भ्रम्म सों [3]सुद्ध मन। ज्यों [4]बांबी दिसि [5]सप्प॥
षग विषांन ज्यों अग्नि बर। जगि बीरा रस जप्प॥ छं०॥ ८५॥

सामंतों के क्रोध और तेज की प्रशंशा वर्णन।

(१) मो.-गहम्मग। (२) कृ. को.-अर्प। (३) ए. कृ. को.-शुद्ध।
(४) को.-बाबी। (५) ए. कृ. को.-सर्प।

कवित्त ॥ जगति जग्य जनु वीर। अग्गि जयचंद अग्गि लिय ॥
कै मचकुंद प्रमान। गुफा बाहन सु दैत्य किय ॥
कै [1]जग्यौ भसमास। दैत्य भग्गा गोरीसं ॥
इसे सूर सामंत। वीर चावद्दिसि दीसं ॥
दीनी न नृपति किन निरति वर। किहु न सुनी जैचंद क्रम ॥
वग्गं उपारि भार वलिय। अभिलाषइ भारथ्थ श्रम ॥ छं०॥८६॥

शूर वीर सामंतों का उत्साह वर्णन।

अभिलाषइ श्रम गर्व। भयौ किल किंचित सूरं ॥
ज्यों नल मति दमयंत। सेन सज्जी रन पूरं ॥
भवर सह सम सुमन। प्रेम रस छुट्टिय अंगं ॥
सुबर राज चहुआन। करन उप्पर वर पंगं ॥
माधुरत मधुर बानी तजी। रजिय सूर रंजित सुभर ॥
छिति मत्त [2]छिती छिचिय [3]छितिब। दिपति दीप दिवलोक धर ॥
छं० ॥ ८७ ॥

फौज की शोभा वर्णन।

मोतीदाम ॥ दसं दिसि पूरग [4]मत्तय भार। चढ्यौ जनु इंद्र धनुष्षय धार॥
तुरंगन तुंग हरष्षय हंस। परक्किय नारद सारद रीस ॥ छं० ॥ ८८
छहंमित छोहय शंकर हथ्थ। कहै कविचंद सु ओपम कथ्थ ॥
गए गजनेस सुसथ्थय वीर। रहै लगि भौंर तिनै लगि नीर ॥
छं० ॥ ८९ ॥
मनौं कुत कुंतय बारय पुज्जि। गए मनु नारद शंकर भुज्जि ॥
करुना रस केलि क्रमीनइ वीर। नच्यौ अदभुद्द स रुद्र डकीर ॥
छं० ॥ ९० ॥
इकं इक रस्स सु संतिय सूर। दिषे मुष मत्त महा मति नूर ॥
सुलतानह हिंदुअ बैर प्रमान। सुभादय जुब निदान निदान ॥
छं० ॥ ९१ ॥

(१) ए. कृ. को.-जग्या। (२) ए. कृ. को.-छित्त। (३) मो.-छिपग।
(४) ए. कृ. को.-मध्यय।

दया वर धीन सगप्पन नथ्थि । .... ॥
उमा भ्रात काज प्रजापति दच्छि । नज्यो मन मात उरग्गिय लच्छि ॥
छं० ॥ ९२ ॥

षिझे सिर ईस पटक्किय जट्ट । भयौ तहां जन्म सु वीरय भट्ट ॥
भिरौ भिरि नंदिय दंद्र प्रकार । पछे दक्षि दच्छिय दृष्पि उधार ॥
छं० ॥ ९३ ॥

हतं मिति मंत सु कंतिय राज । भयौ वर वीर भयानक साज ॥
दिसो दिसि पच्छिम हिंदुअ मेछ । बज्यौ रनतूर रवद्दय एछ ॥
छं० ॥ ९४ ॥

मलौ जनु जंगम जो गवरीस । दसकंधु डुलावत प्रव्वत रीस ॥
तज्यौ जहां मान लगी पिय कंध । भयौ रस संत सु मंतिय संध ॥
छं० ॥ ९५ ॥

सु जाति जरा वय हक्कि प्रमान । चख्यौ तिन बेर बली चहुआन ॥
छं० ॥ ९६ ॥

पृथ्वीराज का सेना को वर्ण प्रति वर्ण श्रेणीवद्ध करना ।

कवित्त ॥ चाहुआन वर बलिय । भार भारथ रस भिन्नौ ॥
मधुर सुधर सिंधुरस । अंग चावद्दिसि छिन्नौ ॥
सुवर सेन सामंत । सुवर बल वीर निनारे ॥
मझ मझझइ आहत । देव जनु जुद्ध हकारे ॥
कुसमित्त जुद्ध देवह करन । रथ सुरत्थ हय हयति नर ॥
सामंत सूर पुज्जै नहीं । वर कंदल [1]उट्ठंति धर ॥ छं० ॥ ९७ ॥

सामंतों की वीरता का वर्णन ।

उरग विंद रवि उठे । सीस हक्कँ धर कंपे ॥
देवासुर संग्राम । देव पूजा देर्षपे ॥
इंद्र जुद्ध तारक । सोइ ततह अधिकारी ॥
पंच पंच पंडव सु । भीम दुर्जोधन भारी ॥

(१) मो.-उठंति ।

गज मंत दंत कढ्ढै सु भ्रत। दैवत्त जुध सामंत रन ॥
उद्दयो जुद्ध आहत मिति। नहिन मेच्छ हिंदू छपन ॥छं०॥९८॥

युद्ध के लिये प्रस्तुत शूर वीर सामंतों के बीच में स्थित निढ्ढुढर का वीर-मत वर्णन।

मिले सूर सामंत। मंत सज्जिय निढ्ढुर बर ॥
कहां सु प्रान संग्रहै। पंच किहि जाइ मिलै धर ॥
कोन क्रम्म संग्रहै। क्रम्म को करै सु देहं ॥
कोन जीव संग्रहै। कोन न्त्रिमवै सु छेहं ॥
जैचंद आनि सुरतान बर। अधर राहु लग्यौ अवर ॥
चित्त मत्ति दान दिय विप्र बर। रहसि राह लग्यो सु धर ॥
छं० ॥ ९९ ॥

कह निढ्ढुर रट्ठौर। सुनहु सामंत प्रकारं ॥
कहौ देव कौ भ्रम्म। कित्ति संग्रहौ सु सारं ॥
वारि बूंद बुदबुद। इथ्थ वारी सु आव इत ॥
ज्यों बहलवे छांहि। घास अग्गी सु मत्ति भ्रिति ॥
इत्तनिय देह की गत्ति वर। तीय ठाम चिंतै सु नर ॥
मस्सान पुरान रु कामं के। अंत चित्त सद्गत्ति धर ॥छं०॥१००॥

अंत मत्ति सो गत्ति। अंतजा मत्ति अमत्तिय ॥
पुब्ब भ्रम्म संग्रहै। पुब्ब गत्तिय सुइ गत्तिय ॥
दैव भाव संग्रहै। काल केवल गुन वत्तिय ॥
सिंचिये वेलि अंजं बधै। ततं बुद्धि पुरान बर ॥
न्त्रिघात घात पत्तिय सु बर। सु हत काल निवारि सु नर ॥छं०॥१०१॥

स्वामि निंद जिन सुनौ। स्वामि निंदा न प्रगासौ ॥
अह निसि वंछौ मरन। भीर संकरैं निवासौ ॥
तब बुल्यौ महनंग। छंडि इह मंच सखगइ ॥
अत्ति काज दधीचि। दिए सुरपत्त मत्त बहु ॥
सुरपत्ति मत्त किन्नौ सु बर। निवर अंग को अंग मय ॥
जैचंद भूमि उब्बेखि कै। चढ़हु भूमि घर दुर्ग मय ॥छं०॥१०२॥

गाथा ॥ के के न गया गुर ग्रेहं। के के न काल संग्रहे हंतं ॥
मंची आ प्रथिराजं । रष्षे आ वीर सो सव्वं ॥ छं० ॥ १०३ ॥

साटक ॥ जाता जा मनसा समस्त गुरयं, मानस्य सा सुंदरी ॥
[1]ता भग्गा मन सूर काइर वरं, [2]किल किंचि किंचित रसी ॥
अभिलाषं छिति गर्व तारुन विधे, संसार सहकारयं ॥
वारं आ पारंग दिव्यत गुरं, दीसंति देवानयं ॥ छं० ॥ १०४ ॥

घुड़सवार शूरवीरों की चाल वर्णन।

भुजंगी ॥ प्रवाचंत वाइं उचारै पवंगा । तिनै धावतैं छोड़ मारुत पंगा ।
भमी भुंम अग्गे सुमं तीन संधै। मनों ब्रह्म विधि गंठि लै वाइ बंधै॥
छं० ॥ १०५ ॥

पुजै पंच अंषी मनं षीन धावै । तिनं उप्पमा कौन कविचंद लावै ॥
किधौं कैतपक्कं चलै चित्त भारी। किधौं चक्करी हथ्थ [3]आवत्त तारी॥
छं० ॥ १०६ ॥

किधौ वाय छुट्टै नहीं चाइ पावै । षगंराज कैसै उपम्माति लावै ॥
अगंपाइ दीसे सुषं मेह कारै । मनौं दिव्य वानी पढ़ै कव्वि भारै ॥
छं० ॥ १०७ ॥

धरे पाइ बाजी हदंतं निभारै । मनौं तार सौं तार बज्जै हकारै॥
तिनं दूरि तें अंग ओपंम ऐसे । मनौं तार छुट्टै अकासं सु जैसे ॥
छं० ॥ १०८ ॥

इसे वाजि सज्जे समप्पेति राजं। दिये सूर सामंत हथ्थें सुपाजं॥
छं० ॥ १०९ ॥

राजा का सामंतों को अच्छे अच्छे घोड़े देना।

दूहा ॥ बाज राज नृप [4]राज दिय । विलसि विधान विधान ॥
तिन उप्पम कविचंद कहि । का दिज्जै धपवान ॥ छं० ॥ ११० ॥

---

(१) मो.-ना । (२) ए. कृ. को.-कल ।
(३) ए. कृ. को.-दीसंत । (४) ए.-गज ।

घोड़ो की शोभा वर्णन।

रसावला ॥ धपै बान भारै, इकारे निनारै। दुरै अप्प छाया, तते अग्गि ताया॥
छं० ॥ १११ ॥

धवै ¹ष्यंठ भारी, मुकोटं निनारी। बरं नैन ऐसें, हरी देव जैसें ॥
छं० ॥ ११२ ॥

महा मत्त ग्रीवा, विना बाइ दीवा। उरं पुट्ठ भारी, ²सु मासं निनारी॥
छं० ॥ ११३ ॥

तुला आनि थंभं, पला आनि अंभं। नषं डंड इद्दं, मनो डंड सिद्दं॥
छं० ॥ ११४ ॥

द्रुमं बीर डुल्लं, कवी किति पुल्ले। मनों बाय कांडं, परी मभ्भ छोडं॥
छं० ॥ ११५ ॥

कपोलंत मीरं, पिय बाज जीरं। श्रवन्नं निनारे, मनों स्वामि सारे॥
छं० ॥ ११६ ॥

इसे राज राजी, दिए बाज राजी। सु है है रबेवं, चढ़े बीर ³बेवं ॥
सुरत्तान पासं, चल्यौ बीर भासं। .... छं० ॥ ११७ ॥

शहाबुद्दीन से निस्वार्थ युद्ध करने की पृथ्वीराज की प्रशंसा।

दूहा ॥ बिना हेत सगपन बिना। इष्टपना बिन राज ॥
धन्नि राज प्रथिराज कौ। षग गोरी किय साज ॥ छं० ॥ ११८ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज की राह छोड़ कर डट रहना।

कवित्त ॥ चल गोरी सुरतान। आइ रुंध्या रन अग्गैं ॥
हय गय रथ नर सज्जि। बीर पावस घट जग्गै ॥
महन रंभ आरंभ। रत्त अरुनोदय सारिय ॥
चाहुआन सुरतान। बीर जैपत्त करारिय ॥
डमरू डहक्कि जुग्गिनि हसै। जिम जिम बंबर धज लसै ॥
सामंत सूर चहुआन सौं। बीर बिहुरि सन्नाह कसै ॥ छं० ॥ ११९॥

---

(१) मो.-अम्बु। (२) मो.-समंसं। (३) ए. कृ. को.-बेवं।

राजा की आज्ञा बिना चावंडराय का आगे बढ़ जाना।

बेछ महूरति सत्ति। मत्ति कीनौ रत भारी॥
बीरा रस विढ्ढुरिय। लोह लग्गी अधिकारी॥
छित्ति भित्ति छिति सोभ। चंषि आवै न अंषि घिन॥
ज्यों नद्दव वन दिट्ठ। चंपि चूवंत मंत घन॥
रन हरषि वरष्षिय मुक्ति जिहि। धप्पि लोह कोहां करांस॥
चावंडराइ दाहर तनौ। न्रप अग्या विन अग्र धसि॥छं०॥१२०॥

चामंडराय जैतसी लोहाना आजानबाहु का पांच कोस आगे बढ़ कर तत्तार षां खुरसान षां पर आक्रमण करना।

रा चावंड जैतसी। लोह आजानबाहु वर॥
रष्षे रन सुरतान। [1]मत्त लग्गे सुबीर भर॥
पंच कोस न्रप छंडि। आप रंध्या सुरतानं॥
वज्र घाट वज्जीय। आइ लग्गा सु विहानं॥
छुट्टा कि सिंघ पल काज वर। उरसि लोह लग्गा लरन॥
तत्तार षान षुरसानपति। अप्प महूरति मरन मन॥छं० ॥१२१॥

उक्त सामंतों के आक्रमण करने पर मुसल्मानों का कमान पर बाण चढ़ा कर अपने शत्रुओं से युद्ध करने को प्रस्तुत होना।

भुजंगी॥ षुरासान षानं सु तत्तार बीरं। मनों वज्र देषे सु वज्रं सरीरं॥
महा बाहु बज्जी कढ़े वज्र हथ्थं। लगे अंग अंगं निरथ्थे निरथ्थं॥
छं० ॥ १२२॥
छुलिका सु बानं कमानेन साही। दुसे सूर वेगं बलंते [2]न्निबाही॥
उरं मत्त मत्ते विमत्ते निंमारे। मनौं देषियै बीर रत्तं प्रकारे॥
छं० ॥ १२३॥

(१) मो.-मनह। (२) मो. नैत्रिबाही।

उर काल कालो अमंदह कड्डी। किधौ दंदुह अम दड्डु अम कर विडड्डी ॥
उरं मत्त मतं विमत्तं सु मत्ती। परें रंग चंगं इक्के जानि गत्ती ॥
छं० ॥ १२४ ॥
दुवं हिंदु मेच्छं तसव्वीति नंषी। सरे सट्ठि इज्जार आहत लष्षी ॥
तिनें इथ्थ इथ्थं मुकत्ती प्रमानं। मनों देषि देवंत देवाधि थानं ॥
छं० ॥ १२५ ॥
विधं विद्धि रूपं प्रमानंत न्यारे। भए अंग अंगं तही तथ्य सारे ॥
नचे कंध बंधं कवंधं दुरंगी। मनों बीर आहत भारथ्थ रंगी ॥
छं० ॥ १२६ ॥
इतौ जुद्ध करि बीर भए द्वै निनारे। घुमै सार घुम्मैं मनो मत्तवारे॥
छं० ॥ १२७ ॥

पृथ्वीराज का ससैन्य उज्जैन पर आक्रमण करने को यात्रा करना और जयचंद की सहायता ले कर शहाबुद्दीन का राह छेकना।

*दूहा ॥ चल्यौ राज सब सेन सजि। दिसि उज्जैनिय रंग ॥
आइ साहि अग इजूरन। लये सहायक पंग ॥ छं० ॥ १२८ ॥
गही गैल देवास की। गहन उपज्यौ मिच्छ ॥
नर चित्तन इच्छे कछू। ईसर औरै इच्छ ॥ छं० ॥ १२९ ॥

मनुष्य की कल्पनाएं सब व्यर्थ हैं और हरीच्छा बलवती है।

कवित्त ॥ नर करनी कछु और। करै करता कछु औरै ॥
नर चिंतन कर ईस। जिय सु नर औरै दौरै ॥
रचे रचन नर कोटि। जोरि अम पाइ बत्त सइ ॥
छिनक मध्य हर हरै। केल फिर तथ्य भ्रम्म इइ ॥
प्रथिराज गमन देवास दिसि। व्याह विनोद सु मंडि जिय ॥
अनचिंत्ति जग्गि गज्जन बलिय। आनि उतंग सु कंक किय ॥
छं० ॥ १३० ॥

* मो. प्रति में पद नहीं है और पाठ के प्रसंग से क्षेपक भी ज्ञात होता है।

पृथ्वीराज का राजा बली से पटतर देकर कवि का उक्ति वर्णन।

ज्यों बावन बलि पास। आनि अनचिंत्य छलन किय॥
उन धर ले उन [1]दीन। [2]इन सु सुर बंधि छंडि जिय॥
दसों दिसा दल उमड़ि। घुमड़ि घनघोर आइ जनु॥
मीर मसंद ससंद। बान बहु बूंद बरषि घन॥
दोउ दीन दंद दनु देव सम। भ्रम लग्गे लग्गे लरन॥
प्रलैकाल हाल पिष्षिय निजरि। मनों मिच हत्ती करन॥
छं० ॥ १३१ ॥

युद्ध आरंभ होना।

रसावला॥ कोह लग्गे पलं, सार उड्डै पलं। अंत तुट्टै ढलं, पग्ग बेली तुलं॥
छं० ॥ १३२ ॥
नैन रत्ते झलं, जुट्टि आल पलं। मिट्टि मोहै मलं, कोह कै केवलं॥
छं० ॥ १३३ ॥
रुंड नच्चै दलं, मुंड वक्कै वलं। गिद्धि सिद्धी कालं, बज्जि कोलाहलं॥
छं० ॥ १३४ ॥
छिंछ उड्डै ललं, जानि तिंदू झलं। हथ्थ तुट्टै नलं, हथ्थ साषा ढलं॥
छं० ॥ १३५ ॥
पंष पंषी बलं, ईस आसावरं। माल सोभै गरं, रुद्धि बुंदै झरं॥
छं० ॥ १३६ ॥
जानि नग्गं परं, चंडि पत्तं [3]भरं। [4]मंति डकं डरं, भूत नच्चै परं॥
छं० ॥ १३७ ॥
उभ्भयं चिक्करं, बक्कि भैरु हरं। कंपि स्यारं नरं, सूर बहुै बरं॥
छं० ॥ १३८ ॥
झझ्झर झारै रूरं, ... छं० ॥ १३९ ॥

स्वामिधर्म रत शूर वीर मुक्ति के पथ पर पांव देने को उद्यत थे।

---

(१) ए. कृ.को.-दीय। (२) ए. कृ. को.-इन सुरन बंधि छंडिय प्रिय।
(३) ए. कृ. को.-वरं। (४) ए. कृ. को.-मत्ति।

दूहा ॥ सार मंत मत्त सुभट । षग छिल्लै गज ठट्ठ ॥
स्वामि ध्रम्म सबै रनह । मुकति सु भ्मारै वट्ठ ॥ छं० ॥ १४० ॥

दोनों ओर के शूर वीर सामंतों का पराक्रम और बल वर्णन।

कवित्त ॥ कोह छोह रस पान । बीर मत्ते चावद्दिसि ॥
बलि उतंग संजि अंग । अंग जनु पंग कपिप जिसि ॥
हय दल बल उच्छार । कढ्ढि गज दंत नडारै ॥
जनु माली मद्दि मध्य । कढ्ढि मूला करि धारै ॥
भय सीतभीत काइर कपहिं । बहत स्वर सामंत रिन ॥
कलि कहर कंक बक्कहि बिहसि । गहन गोम मत्तौ महन ॥
छं० ॥ १४१ ॥

कन्ह गोइन्द राय लंगरी राय और अतत्ताई की वीरता और उनके पराक्रम से मुस्लमानो की फौज का विचलाना, हासब खां खुरसान खां का मारा जाना।

भुजंगी ॥ परी भीर मेच्छं [१]तसब्बी तमच्छं। कले कंक बक हीन जीवं सु लच्छं॥
घलं कंन्ह गोइंद कोका प्रमानं। मनौ देषियै देवयं दुंद [२]थानं ॥
छं० ॥ १४२ ॥

बढ़े बीर रूपं प्रमानं निनारै। अरी अग्ग चेतं न चित्तं धरारै ॥
नचैं कंध बंधं असंधं धरंगी। मनों बीर भारथ्य आहत्त रंगी ॥
छं० ॥ १४३ ॥

लग्यौ लंगरी कोह लंगा प्रमानं। षगे षेत षंचौ षुरासान षानं ॥
उड़ै अत्तताई हयं पाइ तेजं। दलं दिष्षिये पेट पष्षे करेजं ॥
छं० ॥ १४४ ॥

हन्यौ हासबं षान सीसं गुरज्जं। गयं उड्डि गेनं सु षोपरि षुरज्जं॥
इतौ जुद्ध करि बीर भए है निनारे। घुमे सार घुम्मे मनों मत्त वारे॥
छं० ॥ १४५ ॥

---

(१) मो--तसब्बीनि। (२) मो.-पानं।

दूहा ॥ रत्त मत्तवारें सुभट । विधि विनान उनमान ॥
तइन सुष्ष दुष्षं निजहि । मोह कोह रस पान ॥ छं० ॥ १४६ ॥

शूरवीरों का रणरंग में मत्त होना शहाबुद्दीन का कुपित होना और पृथ्वीराज का उसे कैद करने की प्रतिज्ञा करना ।

कवित्त ॥ मोह कोह रस पान । वीर मत्ते चावहिसि ॥
तबल तुंग बजि जंग । वीर लग्गे सु वीर कसि ॥
जा दिष्षे सुरतान । नैंन बड़वानल धारी ॥
प्रलय करन करवान । प्रलय इन षग्ग हकारी ॥
सुभि लोह मोह अरुनय तनह । अति उदार चिन्हय रनह ॥
प्रथिराज राज राजिंद गुर । गहन गज्जि लीनों पनह ॥ छं०॥१४७॥

युद्ध की पावस से उपमा वर्णन ।

साइन वाइन बिरद । साह मोरी सयन्न सम ॥
हय गय दल विहछरहि । रोस उहछरहि वीर भ्रम ॥
बजहि षग्ग आहत्त । जूथ उड्डहि असमानं ॥
मनहु सिंघ गुर गज्ज । हक्कि कारिय सिर भानं ॥
दल जोरि विहसि साहाब भर । भर भर भिरि असिवर बजिय ॥
जानेकि मेघ मत्ते दिसा । निसा नभ्भ विज्जुल [1]लसिय ॥
छं० ॥ १४८ ॥

घोर युद्ध वर्णन ।

चोटक ॥ इति तोटक छंद प्रमान धरं । सुनि नागकला तिहि कित्ति गुरं ॥
भिरि भारथ पारथ से उचरे । मय मंत कला कलि से बिड़ुरे ॥
छं० ॥ १४९ ॥
रमनंकय नागय वीर सुरं । मनों वीर अगावत वीर उरं ॥
छिति छच दुहाइय छच धरं । सु मनों बरषा हवि वज्र भरं ॥
छं० ॥ १५० ॥

(१) ए. को.-लजिय ।

छिति सोहत श्रोन अपुब्ब रनं। मनों भारत पूर चली सुमनं॥
दोउ दीन विराजत दीन उभै। रँग रत्त रमै छिति छत्र सुभै॥
छं०॥ १५१॥

सुमनों मधु माधव रीति इलै। सुजनो इत कंकर बीर फुलै॥
इक अंग विभंगन हथ्थ चरै। सु मनों कल बीर कला दुसरै॥
छं०॥ १५२॥

मिलि मत्त अवत्तन घाइ घटं। सु नचै जनु पारथ बीर भटं॥
छं०॥ १५३॥

कवित्त॥ बरकि बीर भट सुभट। झुम्मि इकै चावद्दिसि॥
इक इक आहत्त। बीर बरषंत मंत असि॥
नचि नारद किलकंत। जग्गि जुग्गनि हकारिहि॥
सार ताल वेताल। नंचि रन बीर डकारहि॥
अंमरिय रहसि दल दुअ विहसि। करसि बीर लग्गे सु बर॥
चहुआन आन सुरतान दल। करहि केलि समरस अडर॥छं०॥१५४॥

चालुक्य की प्रशंसा वर्णन।

नव बाजी नव हथ्थ। रथ्थ नव नवति सुभ्र भर।
इन बज्जै असि बरह। सार बज्जै प्रहार धर॥
केक अंत जमकंत। कढ्ढी जमदाढ़ निनारी॥
मनु कढ्ढौ जम दढ्ढ। हथ्थ सामंत सुभारी॥
चालुक्क चंपि चच्चर कियौ। सार धार सम उत्तर्यौ॥
इह करी कोइ करिहै न कोइ। करी सु कोगुन विस्तर्यौ॥
छं०॥ १५५॥

दूहा॥ जंमति जमकिय जंम सम। जम प्रमना दोउ सेन॥
मिले बीर उत्तर दिसा। आहतह तिन नैन॥ छं०॥ १५६॥

जामदेव यादव का आध कोस आगे डटना और उसकी वीरता की प्रसंसा वर्णन।

कवित्त॥ अद्व कोस न्रप अग्ग। हूर रोपे पग गढ्ढै॥
सह मह गजराज। चंडि पढ्ढै बल चढ्ढै॥

लज्ज बंध संकरिय। बीर अंकुरिय दिष्ट रन॥
सार धार बज्जी कपाट। न्रिघात घुमत रन॥
कलमलिय कंक इम मिच्छ सह। जनु लुब्भ लग्गत भेठ महि॥
जइव सु जाम घरि इक्कलों। जनु बडवानल चंद कहि॥
छं० ॥ १५७ ॥

गाथा॥ दिष्षे मुष्षय मच्छरयं। अरज दुवं सन्नाम अवनयं॥
अच्छरि वर कर इच्छं। भ्रमत [1]फिरंत [2]गौन मग्गाइं॥छं०॥१५८॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना की मोरव्यूह रचना।

कवित्त॥ मोरव्यूह रचि राज। सज्जि सब सेन सुद्ध करि॥
चंच पीप परिहार। कन्ह गोइंद नयन सरि॥
कंठ चंद पुंडीर। पांव जुग जैत सलष सजि॥
निढ्ढुर भर बलिभद्र। पंष बजि बाय तेज गति॥
सम पुंछ और सम पुंछ मन। बरन बरन छबि सिलह तन॥
रन रोहि रच्यौ प्रथिराज महि। गिलन अप्प सुरतान रिन॥
छं० ॥ १५९ ॥

गाथा॥ सुच्छीजं वर मच्छरं। तं वटे अच्छरी अंगं॥
सोयं साध प्रमानं। सा पूजी सूर सामंतं॥ छं० ॥ १६० ॥

न्याजी खां, तत्तार खां और गोरी का उधर से आक्रमण करना और इधर से पीप (पड़िहार) नरिंद का हरावल सम्हालना।

कवित्त॥ कर बल षान ततार। षान न्याजी षां गोरी॥
हरवल [3]पीप नरिंद। साहि बंधी बिय जोरी॥
मोरव्यूह चहुआन। मार धारह संधारै॥
गिलन अप्प सुरतान। बोल बड्डा उच्चारै॥
छत अछत सीस धारन भिरवि। जै जै जै चारन सु धुअ॥
सुरतान सूर आहत्त वर। धन्नि सुबर सामंत भुअ॥ छं० ॥ १६१ ॥

(१) ए.-फरत। (२) ए. कृ. को.-गैन। (३) ए. कृ. को.-अप्प।

तन तरफत धर मिच्छ । वला छवि आनि नटक्कैं ॥
मत्त दन्ति चारुहैं । दंत सौ दंत कटक्कैं ॥
समर अमर करि वंदि । भये विस्मत पल'चारिय ॥
जहँ तहँ चंद पुडीर । चंद ज्यौं रेनि उजारिय ॥
तन ग्रेह नेह मन अंत सम । भ्रम छंडौ दल दलि सुभर ॥
संभरिय सूर सुरतान दल । मइन रंभ मची सु 'धर ॥ छं० ॥१६२॥

युद्ध होते होते रात्रि होजाना ।

हनूफाल ॥ इति हनूफालय छंद । कल विकल कल हत चंद ॥
भय निसा उदित प्रमान । चहुआन सेन सुथान ॥ छं० ॥ १६३ ॥
कर हथ्थ बथ्थन थाक । मनौं मंडि बंधि चिराक ॥ छं० ॥ १६४ ॥

छः हजार दीपक जला कर भारत की भांति युद्ध होना ।

कवित्त ॥ करि चिराक छह सहस । सेन उभ्भै चावद्दिस ॥
रत्तिवाह सम जुद्ध । बीर धावंत बीर रस ॥
तेज चिराक रु सस्त्र । रत्त द्रिग तेज प्रमानं ॥
सार धार निरधार । बेद छेदन गुन जानं ॥
सारूक्क करक्के रंक पल । निसा जुद्ध किन्नौ न किहिं ॥
सामंत सूर इम उच्चरैं । सुबर बीर भारथ्थ नहिं ॥ छं० ॥ १६५ ॥

आधी रात होजाने पर तोंअर और पड़िहार का शहाबुद्दीन आक्रमण करना और मुस्लमान फौज का पैर उखड़ना ।

अद्ध होत बर रत्ति । साहि गोरी धररुंध्यौ ॥
तोंअर बर पाहार । किति सा सिंधुह संध्यौ ॥
सेत बंध बंध्यौति । सूर बंध्यौ रिन पाजं ॥
जै जै जै उच्चार । धन्नि सामंत सु लाजं ॥
सुरतान सेन भग्गा सुभर । तीन बान पुंजान गय ॥
गज घंट न घंट न मत्त सुनि । सुनि जंपै बर हयति हय ॥छं०॥१६६॥

(१) ए. कृ. को. -हारिय । (२) ए. कृ. को.-भर ।

पीप पड़िहार का शहाबुद्दीन को पकड़ लेने का दृढ़ संकल्प करना।

दोत होत मध्यान। पीप नें पन मन मंध्यौ ॥
प्रबल पानि परचंड। साहि गोरी गहि बंध्यौ ॥
सेत बंधि ज्यों राम। चंद सुर भान सूर सधि ॥
यों लिन्नों परिहार। बालि दस कंध कंध मधि ॥
रन छंडि छंडि धर मच्छि हुच्च। लाजवंत के फिरि भरिय ॥
जय जय सु जपैं सुष धर अमर। सु कविचंद कवितह धरिय ॥
छं० ॥ १६७ ॥

प्रसंगराय खींची, पज्जूनराय के पुत्र, वीरभान, जामदेव, अत्ताताई के भाई और शहाबुद्दीन के भाई हुजाब खां का मारा जाना।

भुजंगी ॥ पऱ्यौ राव तिन वेर खीची प्रसंगं। जिनें षंडियं पित्तषल षग्ग षंगं॥
पऱ्यौ राव पज्जून पुत्तंति राजं। गयं सुर्ग लोगं करे देव गाजं॥
छं० ॥ १६८ ॥

धुकौ धार धक्कै अजंमेर राई। दुअं सेन जंपी सुपं कित्ति चाई ॥
बधं जामदेवं बधों वीरभानं। लरी अच्छरी मज्झ वीरं वरानं ॥
छं० ॥ १६९ ॥

पऱ्यौ घाइ षेतं अतत्ताइ तातं। मनो देषियै भूमि कंदर्प गातं ॥
पऱ्यौ सेन हुज्जाब गोरीस बंधं। हयं अट्ठ भग्गं सु उट्ठे कमंधं ॥
छं० ॥ १७० ॥

परे ताहि दीनै परे साहि भारे। दिषे थान थानं मिळं प्रात तारे॥
छं० ॥ १७१ ॥

शहाबुद्दीन का पकड़ा जाना।

दूहा ॥ इन परंत सुरतान गहि। ग्रह निग्रह घट बीर ॥
तिन जस जंपत का कवी। जिन करि जज्जर श्रीर ॥छं०॥१७२॥

कवित्त ॥ जज्जर पंजर प्रान। साहि गोरी गहि बंध्यौ ॥
बिन सेवा बिन दान। पान षग्गह षल संध्यौ ॥
फिरि ग्रह पत्तौ राज। लूटि चतुरंग विभूतिय ॥
डोला तेरह तीस। मद्धि साहाब सुभत्तिय ॥
ग्रह गयौ लिये सुरतान सँग। जै जै जै जस लह्यौ ॥
जयचंद कनाइत चिंति जिय। मान प्रसंसन सिह्यौ ॥छं०॥१७३॥

पीपा युद्ध का परिणाम और पृथ्वीराज की निर्मल कीर्ति का वर्णन।

कवित्त ॥ मान भंजि सुरतान। मान भंज्यौ सुरतानं ॥
उन उप्पर मन कियौ। हुतौ बर बैर निदानं ॥
पंग लज्ज उब्बरै। सुनौ मंची अधिकारिय ॥
करिय षेत चहुआन। इदं पहु पंथह वारिय ॥
मुह मुच्छ सुचछ सोमेस सुअ। भू अ समान संभरि धनिय ॥
पब्बरै दीह जस चढ्ढई। धर पब्बर करि अप्पनिय ॥ छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ धन्य राज अवसान मन। रन संध्यौ सुरतान ॥
लच्छि लई चतुरंग जिति। बर बज्जे नीसान ॥ छं० ॥ १७५ ॥

कवित्त ॥ छच मुजीक निसान। जीति लीने सुरतानं ॥
गो धर छिल्लिय ईस। बज्जि निरघात निसानं ॥
दिसा दिसा जय कित्ति। जित्ति गावै प्रथिराजं ॥
बाल वृद्ध भर जुवन। अंग अंपै धनि लाजं ॥
सा भ्रम्म धारि छची न्रपति। दिपति दीप भुअलोक पति ॥
पुज्जै न कोइ सुरतान कौं। सुष अयल पारथ्य गति ॥छं०॥१७६॥

दूहा ॥ हालाहल विसे सुभर। कोलाहल अरि गान ॥
सुबर राज प्रथिराज कौं। तपय बीर बहु आन ॥ छं० ॥ १७७ ॥

सुलतान का मुक्त होना, पृथ्वीराज का तेज वर्णन।

(१) ए- कृ. को.-अपार।

कवित्त ॥ छंडिदियौ सुरतान । सुजस पहु पीप मंडि सिर ॥
जित्ति जंग राजान । इच्छि पूजा इच्छी थिर ॥
भूमिय मिलि इक आइ । इक बंधे बस किज्जिय ॥
इक अप्प पहराइ । मान भजि रूमन दिज्जय ॥
आवै [1]न पार लच्छी सहज । षट्ट बरन सुष्षह लगन ॥
षहुआन सूर संभरि धनी । तपै तेज सोमह सुअन ॥छं०॥१७८॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके मोरव्यूह पीपा पातिसाह ग्रहनं नाम एकतीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥३१॥

अथ करहे रो जुद्ध प्रस्ताव लिख्यते ।

(बत्तीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का मालव (देश) में शिकार खेलने को जाना ।

दूहा ॥ [1]कितक दिवस वित्ते न्रप्रति । सारंगीपुर साज ॥
धर मालव मंड्यौ न्रपति । आषेटक प्रथिराज ॥ छं० ॥ १ ॥

पृथ्वीराज का ६४ सामंतों के साथ उज्जैन की तरफ जाना और वहां के राजा भीम प्रमार को जीत लेना ।

कवित्त ॥ चौअग्गानी सट्ठि । सूर सामंत [2]सु सथ्थं ॥
मालव धर प्रथिराज । सज्जि आषेटक तथ्थं ॥
बर उज्जेनी राव । जीति पांवार सु भीमं ॥
बल संमर जो गट्ठ । गाहि चहुआंन [3]सु सीमं ॥
सगपन सु जीति संभरि धनिय । ग्रहन जोग सम बर न्रपति ॥
संभाग समर सुनयौ समर । समर बीर मंडन दिपति ॥ छं० ॥ २ ॥

इन्द्रावती और पृथ्वीराज का योग्य दंपति होना ।

दूहा ॥ सुबर बीर चिंतै न्रपति । बर बरनी दुति काज ॥
बर इंद्रावति सुंदरी । बरन तकै प्रथिराज ॥ छं० ॥ ३ ॥

इन्द्रावती की छवि वर्णन ।

कवित्त ॥ इंद सुंदरी नाम । बीय इंद्रावति सोहै ॥
बर समुंद पांवार । धरिग अति सम संग सोभै ॥
मनमथ मथन नरिंद । छाइ करि भाइह गाढ़ी ॥
[4]रूप तरंग झंकुरित । तुंग दोऊ करि काढ़ी ॥

---

(१) कृ. ए. को.-कितेक, केनेत, फितेक । (२) मो.-जु ।
(३) मो.-सुसीमं । (४) ए. कृ. को.-रुअन अंग, अँग ।

ज्यों छिति काम जंप्यौ परित। अति सुदेह निम्मल भलकि।
संकुच सु काम कर [1]कलिय तिहि। [2]रिपु सुदेखि आयौ ललकि॥
छं० ॥ ४ ॥

पंचमी मंगलवार को ब्राह्मण का लग्न चढ़ाना।

दूहा ॥ श्रीफल दुजवर हथ्थ करि। दैन गयौ चहुआन॥
दिन पंचमि वर भोम दिन। लगन [3]करै परमान॥ छं० ॥ ५ ॥

पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इन्द्रावती के रूप, गुण और वय इत्यादि के विषय में प्रश्न करना।

दुज पुच्छै आतुर न्रपति। किहि वय किहि उनहार॥
किहि लच्छिनमति कौन [4]विधि। [5]कहि कहि सुमति विचार॥छं०॥६॥

ब्राह्मण का इन्द्रावती की प्रशंसा करना।

कुंडलिया ॥ वय लच्छन अरु रूप गुन। कहत न वनै सु वाम॥
सारद मुष उच्चारती। साषि भरै जो कांम॥
साषि भरै जो काम। कहै सारद मुष अप्पन॥
साषि चित्त नन [6]धरै। कहिय दिष्षियं सु अप्पन॥
वलि सरूप सज्जी मदन। सुभ सागर गुर मेव॥
सो सज्जिय भज्जिय दिवह। तकि प्रथिराज वलेव॥ छं० ॥ ७ ॥

ब्राह्मण के बचनों को पृथ्वीराज का चित्त देकर सुनना।

दूहा ॥ बाल सुनत प्रथिराज गुन। [7]दुरि दुरि श्रवन सु हित्त॥
जिम जिम दुजवर उच्चरत। तन मन तिम तिम रत्त॥ छं० ॥ ८ ॥

इन्द्रावती की अवस्था रूप गुण और सुलच्छनों का वर्णन।

---

(१) मो.-कर लीय। (२) ए. कृ. को.-फेरिपुं देख।
(३) मो.-करइ। (४) ए.-बुध।
(५) ए. को.-किहि किहि। (६) ए. कृ. को.-भरै।
(७) ए. कृ. को.-दुरि दुरि।

हनूफाल ॥ सुनि प्रथम बालिय रूप । बर बाल लच्छिन [1]नूप ॥
अहि संधि सैसव पाल । अजु अरक राका हाल ॥ छं० ॥ ९ ॥
सैसव सु सूर समान । वय चंद [2]चढ़न प्रमान ॥
सैसव जोवन एल । ज्यों पंथ पंथी मेल ॥ छं० ॥ १० ॥
परि भौंह भँवर प्रमान । वै बुद्धि अच्छरि आन ॥
द्रिग स्याम सेत सुभाग । सावक्क म्रग छुटि बाग ॥ छं० ॥ ११ ॥
बिय द्रिगन ओपम कोड़ । सिस भृंग षंजन होड़ ॥
बर बरन नासिक राज । मनि जोति दीपक लाज ॥ छं० ॥ १२ ॥
गति सिषा पतँग नसाव । ओपंम दे कवि आव ॥
नासिक्क दीपन साल । भाँप देत षंजन बाल ॥ छं० ॥ १३ ॥
बिय बाल जोवन सेव । ज्यों दंपती हथलेव ॥
वैसंधि संधि अचिंद । ज्यों मत्त जुरहि गुविंद ॥ छं० ॥ १४ ॥
* कहि ओपमा कविचंद । .... ॥
तुछ रोम राजि विसाल । मनों अग्गि उग्गिय बाल ॥ छं० ॥ १५ ॥
कुच तुच्छ तुच्छ समूर । मनों काम फल अंकूर ॥
वय रूप ओपम एह । मनों कामद्रप्पन देह ॥ छं० ॥ १६ ॥
वर छिन्न यक्कत तेह । जा जनक न्रप कर देह ॥
वैसंधि कविवर वंधि । ज्यों वृद्ध बाल बिबंधि ॥ छं० ॥ १७ ॥
वैसंधि संधि [3]समान । ज्यों सूर ग्रहन प्रमान ॥
वै राह ससि गिलि सूर । चव ग्रहन मत्त करूर ॥ छं० ॥ १८ ॥
वर बाल वैसंधि एह । सिक्कार काम करेह ॥
लज्ज को लज लजि छंडि । चित रंक दीन समंडि ॥ छं० १९ ॥
कहां लगि कहों बर नाइ । तो जंम अंत सु जाइ ॥
फल हथ्थ लिय परवान । तप तुंग तो चहुआन ॥ छं० ॥ २० ॥

उज्जैन में इन्द्रावती के व्याह की जब तयारी हो रही थी उसी समय गुज्जर राय का चित्तौर गढ़ घेर लेना ।

(१) ए.-रूप । (२) मो.-चढ़त ।
* यह पंक्ति मो.-प्रति के अतिरिक्त अन्य किसी प्रति में नहीं है । (३) ए. कृ. को.-प्रमान ।

कवित्त ॥ वर उज्जेनीराव। रंग बज्जे नीसानं ॥
इंद्रावति सुंदरी। वीर दीनी चहुआनं ॥
राज मंडि आषेट। समर कम्मार वर धाइय ॥
वर गुज्जरवै राव। चंपि चित्तौरै आइय ॥
उत्तरे वीर प्रव्वत गुहा। धर पक्खर मेलान किय ॥
जोगिंदराव जग हथ्थ वर। गढ़ उत्तरि [1]किरपान लिय ॥छं० ॥२१॥

पृथ्वीराज का रावल की सहायता के लिये चित्तौर जाना।

दूहा ॥ छंडि वीर आषेट वर। गो मेलान नरिंद ॥
छंडि ह्वर सिंगार रस। मंडि वीर वर नंद ॥ छं० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को अपना खड्ग बँधा कर उज्जैन को भेजना और आप चित्तौर की तरफ़ जाना।

कवित्त ॥ मतो मंडि चहुआन। सबै सामंत बुलाइय ॥
दै षंडो पज्जून। वीर उज्जेन चलाइय ॥
सथ्थ कन्ह चहुआन। सथ्थ बड़गुज्जर रामं ॥
सथ्थ चंदपुंडीर। सथ्थ दीनौं न्रप हामं ॥
आहत अत्ततांई सुबर। रा पज्जून सु मुक्कलिय ॥
मुक्कल्यौ गोर निढ्ढुर सुबर। मुक्कलि जैसिंघ परषलिय ।।छं० ॥२३॥

दूहा ।। मुक्कलयौ कविचंद सथ। [2]न्रिप मुक्कलि गुरराम ॥
मुक्कलयौ कैमास संग। दाहिम्मौं वर ताम ॥ छं० ॥ २४ ॥
सब सामंत सुसंग लै। लै चल्यौ चहुआन ॥
बरनि चिन्ह उर सल्लई। कहिग कविय [3]बष्षान ॥ छं० ॥ २५ ॥

ससैन्य पृथ्वीराज के पयान का वर्णन।

त्रोटक ॥ प्रथिराज चल्यौ सिर छत्र उपं। ससि कोटि रवी ज्यों नछित्र तपं ॥
गजराज विराजत पंति घनं। घनघोरि घटा जिम गर्जि [4]गनं ॥
छं० ॥ २६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-करपान। (२) ए. कृ. को.-नृप।
(३) ए. बयान। (४) ए. कृ. को.-मनं।

हय पष्वर बष्वर तेज [4]तुनं। किननंकहि [5]धक्कहि सेस धुनं॥
सद्दनाइ नफेरिय भेरि नदं। घुरवान निसानन मेघ [6]भदं॥छं०॥२७॥
घन टोप सु ओप अनेक सरं। मनु भद्दव बीज उपंम धरं॥
*किरवान कमानन तान करं। हयनारि हवाइ कुहक्क वरं॥
छं० ॥ २८ ॥
सुजयं प्रथिराज सु सारथयं। दुतियं कहि भारथ पारथ यं॥
छं० ॥ २९ ॥

(४) मो.-तुंमं। (५) ए.-धर्काहि। (६) मो.-नदं।
* यह पंक्ति मो.-प्रति में नहीं है।

मोतीदाम॥ चढ्यौ न्रप वीर अनंदिय चंद। सु मुत्तियदाम पयंपय छंद॥
दए न्रप कग्गद भृत्त सु हृद्द। मिले सब आइस जंग न रिष्ट॥
छं० ॥ ३० ॥
उड़ी षुर धूरि अछादिय भान। दिसा धरि अठ्ठ न सुभ्भय [1]सान॥
बजे घन सद्द निसान सुद्दह। लजे तिन सद्द समुद्दय रद्द॥
छं० ॥ ३१ ॥
[2]मुद्दे सतपत्त कमोदन षेत। करे चतुरंगय संकिय मेरु॥
द्रिगपाल पयाल पुरं सरसी। तिनकै वर कन्ह परे धुरसी॥
छं० ॥ ३२ ॥
जु अनंदिय चंद निसाचर यों। किल कंपहि तुंड असं वर यों॥
विफुरै वर छूर चिहूं दिसि यों। डरपै सुर पत्ति उरं बसि यों॥
छं० ॥ ३३ ॥
फन फूंक फनंपति को विसरी। धरकें पय बज्जि षुरं दुसरी॥
जु रहे रुकि चंपि धजा न धजं। तिनसों वर [3]पांति षगं उरभं॥
छं० ॥ ३४ ॥
वर बज्जि तंदूर तहां तबलं। मिसु नंन नवीनय वंस वलं॥
जु धरैं वर गौर [4]उछंग हरं। सु कहै वर कंतिन कंपि डरं॥
छं० ॥ ३५ ॥

(१) मो.-भान। (२) ए. कृ. को.-सुदे। (३) ए. कृ. को.-पंषियते।
(४) मो.-उबग्ग।

जु बजावत [1]डौंरुअ डक सुरं। रन मंकहि जोग जुगाधि हरं॥
सजियं चतुरंग [2]प्रथीपतियं। दुतियं कथि भारथ पारथयं॥
छं०॥ ३६॥

पृथ्वीराज का सैन सज कर चित्तौर की यात्रा करना और उधर से रावल के प्रधान का आना और पृथ्वीराज का रावल की कुशल पूछना।

दूहा॥ सजी सेन प्रथिराज बर। बीर बरन चहुआन॥
बरद सौर संभय मिल्यौ। चिचंगी परधान॥ छं०॥ ३७॥
उत रावर सम्हौ मिल्यौ। चिचंगी परधान॥
कहो समर रावल कहां। पुच्छि कुसल चहुआंन॥ छं०॥ ३८॥

कुंडलिया॥ मिलत राज प्रथिराज बर। समर कुसल पुछि तीर॥
कहां सेन चालुक की। कहां समरंगी बीर॥
कहां समरंगी बीर। दियौ उत्तर परधानं॥
करहेरा चिचंग। राज आहुट्ठ प्रमानं॥
गुज्जरवै गुरि[3]जंम। इक उत्तर पक्षर चलि॥
गढ़ इत्तं दस कोस। समर उभ्भौ समरं मिलि॥ छं०॥ ३९॥

प्रधान का उत्तर देना।

कवित्त॥ कहि चिचंगिय मंचि। चंपि आयौ चालुक्कह॥
तुम नन दीनौ भेद। आइ [4]मंडोवर ढुक्कह॥
चिचंगी चतुरंग। आइ अड्डो करहेरां॥
जुद्ध रुद्ध चालुक। हुए कोज दिन मेरां॥
हम देन षबर तुम मुक्कलिय। कही कहौ मुष मुष्य रुष॥
प्रथिराज राज अग्गैं विवरि। कही वत्त परधान मुष॥ छं०॥४०॥

पृथ्वीराज का कहना कि भीमदेव को जुड़ते ही परास्त करूंगा।

(१) मो.-मोरे।　　(२) ए. कृ. को.-मंडहि बर।
(३) मो.-प्राति पतियां।　　(४) ए. कृ. को.-अंग।

न्रप बुभझै चालुक । सेन कित्तक परमानं ॥
आइ ग्रह्यौ चिचंग । निरत दीनौ मन आनं ॥
सूर सुबर आहत्त । रीति रच्चौ विधि जानं ॥
इन अग्गै चालुक । बेर कित्ती भग्गानं ॥
जोगिंद राव जीयन बलिय । बलिय काल छप्पन बिरद ॥
समरंग बीर सम सिंघ बल । चंपि लैन चालुक दुरद ॥छं०॥४१॥

पृथ्वीराज का आगे बढ़ना ।

चौपाई ॥ करि अग्गे लीनौ परधानं । आतुर ह्वैं चल्यौ चहुआनं ॥
दै गढ़ दच्छिन तच्छिन आनं। समर सजन संमुह उठि धानं ॥छं०॥४२॥

रणभूमि की पावस ऋतु से उपमा वर्णन ।

कवित्त ॥ पावस रन प्रव्वाह । अभ्भ छायौ छिति छाइय ॥
छिची छित्ति प्रमान । अभ्भ बद्दरं उठि झांइय ॥
आलस [१]नींदय पोभ । सत्त राजस गहि तामस ॥
धर दुह रन बुठ्ठनह । करै उद्दिम रन हामस ॥
श्रंगार रंभ ग्रेहं बसह । औ कुलटा सुकवीय हुव ॥
कारन्न किप्पि औ काल मिसि । द्रवै इंद्र सूरह सुलव ॥छं०॥४३ ॥

चालुक्य सेन की सर्प से उपमा वर्णन ।

ज्यौं गुनाव गारडू । सेन चालुक मिसि साही ॥
विषम जोर फुंकयौ । सु फन ब्रह्मंडन बाही ॥
जीभ षग्ग झझ्झारि । सेन सज्जे चतुरंगी ॥
बान मंच मंनेन । रसन कुंमन आवग्गी ॥
मन धीर बीर तामस तमसि । निधि चल्लै मन मध्य दिसि ॥
भोरा भुवंग भंजन भिरन । पुन्न दई चिंतह सु बसि ॥ छं० ॥ ४४ ॥

पृथ्वीराज की सेना की पारधि से उपमा वर्णन ।

यह संभरि चहुआन । बीर पारधि धरि आइय ॥

(१) मो.-नीदरुपीज ।

दुहूं निसान बजि समुह । भूमि पुर कंपि हलाइय ॥
बीर सिंघ आहुट्ठ । बीर चालुक मुष साहिय ॥
पुच्छ मग्ग चहुआन । दुहुन बर बीर समाहिय ॥
उत्तरिय मनों सामुद्द तहि । उदित दीह मंगल अरक ॥
जोगिंद जेम जोगिंद कसि । अष्ट कुली बंद्धै मुरक ॥ छं० ॥ ४५ ॥

चहुआन और चालुक्य का परस्पर साम्हना होना ।

दूहा ॥ चालुक्कां चहुआन दल । भई सनाह सनाह ॥
दोऊ सेन कविचंद कहि । बरनि बीर गुन चाह ॥ छं० ॥ ४६ ॥

दोनों ओर से युद्ध के बाजे बजते हुए युद्धारंभ होना ।

मोतिदाम ॥ सजी बर सेन सु चालुकराइ । परे बर बीर निसानन घाइ ॥
भए दल सोर चिहूं दिसि वक्क । मनों मद पुत्त हकारहि हक्क ॥
छं० ॥ ४७ ॥

अछादि अरुन्न न छुट्टत भक्क । करैं किधौं सोर कपी बर गक्क ॥
गहक्कर बैंन उचारत श्रोन । हुई जुधकार प्रकारय द्रोन ॥
छं० ॥ ४८ ॥

धरं गज आगम नीम अउक्क । छुटे बर पाइक फूलय रुक्क ॥
सुसील अफूल बन्यो हयवान । विचैं गुथि मोति कुहक्क (१)अचान ॥
छं० ॥ ४९ ॥

दुहूं बिच नग्ग मगं नग पंति । परी तहां पट्टनराइ मपंत ॥
जु भाल अंकूर सु संदप बिंद । धरी हयनारि छतीसय चंद ॥
छं० ॥ ५० ॥

कसुंभिल डोरि सु पच्छिम संधि । तिठौहर बंध नरिंद सु बंध ॥
सरं मधि ब्रह्म सु चालुकराव । दिसं बुलि भट्टिय दक्खि न काव ॥
छं० ॥ ५१ ॥

दिसि वाम जवाहर मेर अराव । रच्यौ अरगंध नरिंदन चाव ॥
रंग स्याम सनेत कसे घन रूप । तिन मैं बर छीन सुरंग अनूप ॥
छं० ॥ ५२ ॥

---

(१) मो.-अन्नान ।

पसरी बर क्रन्न सनाह न तीर । अथवै उत कालिय के रुचि बीर ॥
सजी चतुरंगन बग्ग बनाइ । चढ़े अरि के उर चालुक राइ ॥
छं० ॥ ५३ ॥

इधर से पृथ्वीराज उधर से रावल समर सी जी का चालुक्य सेना पर आक्रमण करना ।

दूहा ॥ चालुक्कां चित्रंगपति । मिले दिष्टि दुअ दौरि ॥
मनों पुब्ब पच्छिमह तैं । उड़ि डंबर इल सौर ॥ छं० ॥ ५४ ॥
[1]इत चंप्यौ चित्रंगपति । उत चुहान प्रथिराव ॥
आइ राज उप्पर करन । बज्जि निसानन घाव ॥ छं० ॥ ५५ ॥

कुंडलिया ॥ ढाल ढलक्कि दुअ सेन बर । गज पंती इलि जुथ्थ ॥
मनों मल्ल आहुद दीउ । तारी दै दै हथ्थ ॥
तारी दै दै हथ्थ । राम अवनी अन पिष्षे ॥
दुहुन दिष्ट अंकुरिय । पाज बंधन बल दिष्षे ॥
चंपि सेन चालुक्क । बीर श्रम सों बर मिल्ले ॥
चाहुआन बर सेन । ढुरी पच्छिम दिसि ढिल्ले ॥ छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज और हुसैन का अपनी सेना की गज व्यूहरचना रचना ।

कवित्त ॥ [1]सब सामंत रु समर । बीर दच्छिन दिसि छंडिय ॥
चाहुआन [2]हुसेन । गज्ज व्यूहं रचि गड्डिय ॥
एक दंत हुसेन । दंत दच्छिनह ततारी ॥
सुंड गरुअ गोयंद । राज कुंभस्थल भारी ॥
दिसि वाम सबै आकार गज । मद्दन सीह मोरी सुबर ॥
[3]वह्नय अंग आहुट्टपति । मद्दन रंभ मच्यौ सुभर ॥ छं० ॥ ५७ ॥

युद्ध वर्णन ।

पद्धरी ॥ घन घाइ घाइ अघ्घाइ सूर । सिंधु औ राग बज्जै करूर ॥
हुंकार हक्क जोगिनिय डक्क । मुह मार मार [4]बज्जै बबक्क ॥ छं० ॥ ५८ ॥

(१) मो.-इन । (२) मो.-हुसेन । (३) को.-तव । (४) मो.-बुढ्ढे ।

नंचयौ ईस गौ दरिद सीस। पष्षर उपट्टि घुंटे घुरीस ॥
नाचंत नद्द नारद्द तुंब। अच्छरी अच्छनद जानि सुंव ॥छं०॥५८॥
गिद्धिनी सिद्ध बेताल फाल। षेचर षपाल कूदै कराल ॥
श्रोनित्त जानि सरिता प्रवाह। कड्‌कंत रुंड मुंडह सु वाह ॥
छं० ॥ ६० ॥

चमकंत दंत मध्यै क्रपान। मानौं कि ऊक लग्यौ गिरान ॥
पति चित्रकोट चहुआन सेन। चालुक्क चूर किन्नौ सुरेन ॥
छं० ॥ ६१ ॥

चालुक्य राय का अकेले रावल और पृथ्वीराज से ५ पहर संग्राम करना और उन के १००० वीरों का मारा जाना।

दूहा ॥ चालुक्कां परि छूर रन। सहस एक सुर सत्त ॥
चूक चिंत चूकौ चितन। कै अच्छिन्न विधि बत्त ॥ छं० ॥ ६२ ॥
पंच पहर वित्यौ समर। दिन अथवंत प्रमान ॥
उभै सत्त रावर [1]समर। प्रथीराज सत आन ॥ छं० ॥ ६३ ॥

दुसरे दिन तीन घटी रात्रि रहते से फिर युद्ध होना।

निस बर घटीति [1]सत्तरचि। सेष जाम पल तीन ॥
भिरि भोरा रावर समर। रत्तिवाह सो दीन ॥ छं० ॥ ६४ ॥

भोराराय का नदी उतर कर लड़ाई करना।

नदि उत्तरि चालुक्क बर। चिंपि सुभर प्रथिराज ॥
सुभर भीम उप्पर परे। मनो कुलींगन बाज ॥ छं० ॥ ६५ ॥

घमासान युद्ध वर्णन।

भुजंगी ॥ परे धाइ चहुआन चालुक्क मुष्षं। मनौं मोष मद मत्त जुट्टे क्ररष्षं॥
बजे कुंत कुंतं समं सेल साही। परी सार टोपं बजी तं चघाई ॥
छं० ॥ ६६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.- भर।

भरै सार अग्गी दभै टोप दभ्भं । मनों तं चनेतं प्रलै अग्गि सज्जं॥
फटै गज्ज सीसं सिरं मेदि लोही । धसी भारती कासमीरंति सोही ॥
छं० ॥ ६७ ॥
दिए नागमुष्षं गजे तं तबानं । ठनक्कंत घंटं फटै पीतवानं ॥
बजे बज्ज घाई उकत्तीति चिन्हं । बकै जानि भट्टं प्रसंस्ती इन्हं ॥
छं० ॥ ६८ ॥
गहै दंत सूरं चढ़ै कुंभ तंती । फिरै जोगिनी जोग उच्चारवंती ॥
लगी हथ्थ गोरी गई अंग भेदी । मनों राह सूरं बँटे माहि छेदी॥
छं० ॥ ६९ ॥
रुंधी धार मंती सुमंती उच्चारै । उतक्कंठ मेली जु रंभा विचारै ॥
परैं घुम्मि सूरं महा रोस भीनं । मनों वारुनी मद्द प्रथमं सु पीनं॥
छं० ॥ ७० ॥

समय पाकर रावल समर सिंह जी का तिरछा रुख देकर धावा करना ।

दूहा ॥ औसरि भर पिच्छें परे । समर तिरच्छौ आइ॥
मानहुं पल्ल हुत्तसनी । भई बीभछ निधाइ ॥ छं० ॥ ७१ ॥

युद्ध लीला कथन ।

त्रिभंगी ॥ तिय त्रिय अरि संतं, बहु बलवंतं, ग्यारह अंतं, अति रंगी ।
त्रिभंगी छंदं, कहि कविचंदं, पढ़त फनिंदं, बर रंगी ॥
त्रिय हुअ नय नालं, बज रिन तालं, असिवर झालं, रन रंगी ।
सामंत भर सूरं, दिट्ठ कदूरं, मिलि [1]अरिपूरं, अनभंगी ॥छं०॥७२ ॥
मनु भान पयानं, चढ़ि बर बानं, मिलि बथ्थानं, असिझारं ।
ओडन कर डारं, बेन करारं, तामस भारं, तन तारं ॥
जुट जुट्टिय जुद्धं, जोवति इद्धं, अरिनि अरुद्धं, अरि बक्कं ।
उर धरि चालुक्कं, सूर अडक्कं, [2]मुर आतक्कं, धक धक्कं ॥छं०॥७३॥
दल बल पर ओटं, सीस विघोटं, रन रस बोटं, परि उठ्ठं ।
दंतं उप्पारं, कंधय मारं, अरि उप्पारं, भ्रत छुट्टं ॥

(१) मो.-आसि ।　　　　(२) ए. कृ. को--सुर ।

जोगिन किलकारी, हसिहिं ततारी,दै दै भारी, हिलकारी।
अरि तन तन काल', परि वेहाल', चालुक झाल', बर सारी॥
छं० ॥ ७४ ॥

सामंतों का जोश में आकर प्रचार प्रचार युद्ध करना।

कवित्त ॥ वीर बीर आरब्ब। षत्रिय बीरं तन हक्के॥
चावहिसि बिहुरे। मोह माया न कसक्के॥
एक दिनां आहुरे। आदि जुद्ध' षिति लग्गे॥
कै छुट्टै मद मोष। जानि बीरन द्रग जग्गे॥
घन घाइनि घाइ आघाइ घन। मति सुभाइ विभ्भाइ परि॥
कविचंद बीर इम उच्चरै। प्रथम जुद्ध आदीत टरि॥ छं० ॥ ७५ ॥

भोलाराय के १०सेनानायक मारे गए, उन का नाम ग्राम कथन।

दूहा ॥ संझ सपट्टिय बीर भर। परिग सुभर दस राइ॥
तिय षवास परिगह न्रपति। सिर घुम्मे घट घाइ॥ छं० ॥ ७६ ॥

कवित्त ॥ पऱ्यौ समर षावास। जित्यौ जिन सम चालुक्किय॥
परि भट्टी महनंग। छच नष्यौ अरि सक्किय॥
पऱ्यौ गौर केहरी। रेह अजमेरी लग्गिय॥
परिग बीर पामार। धार धारह तन भग्गिय॥
रघुबंस पंच पंचौ मिले। बर पंचानन और कवि॥
चिचंग राव रावर लरत। टरय दीह अथवंत रवि॥ छं० ॥ ७७ ॥

आधी घड़ी दिन रहने पर पृथ्वीराज की तरफ से हुसैन खां का चालुक्य पर आक्रमण करना।

घरी अद्ध दिन रह्यौ। चलिग हुसेन षान भ्रम॥
चालुक्कां दिसि चल्यौ। मोह छंड्यौ जु क्रमंक्रम॥
असि प्रहार चढ़ि धार। मन न मोऱ्यौ तन तोऱ्यौ॥
अस्त वस्त वज्री कपाट। दधीच ज्यों जोऱ्यौ॥

बर रंभ बरन उतकंठती । हूर हूर उत कंठ मिलि ॥
ढिल्लीव ढोल जीरन जुगं । गल्ह बीर जुग जुग्ग चलि ॥छं०॥७८॥

एक दिन राति और सात घड़ी युद्ध होने पर पृथ्वीराज की जीत होना ।

दूहा ॥ निसि दिन घटिय तिसत्त बर । दल चहुआनन चीन्ह ॥
भिरि भोरा रावर रिनह । रत्तिवाह सो दीन ॥ छं० ॥ ७९ ॥

गुरजर राय भीम देव का भागना ।

भिरि भग्गौ सुत भुअंग कौ । गरुड़ समर गुर राज ॥
फिरि पच्छौ पुंछौ पटकि । बिन सु गरब तजि लाज ॥ छं० ॥ ८० ॥

कवित्त ॥ षेत जीति चित्रंग । हथ्थ चथ्यौ चहुआनं ॥
के भोरी भर सुभर । लीन अप्पह पर आनं ॥
केक किए परलोक । मुक्ति लभ्भौ [1]जुग जानं ॥
पंच तत्त मिलि पंच । सार धारह लग्गानं ॥
चहुआन समर इकतन्नि मह । तहां सेन उत्तरि सुभर ॥
चालुक्क भीम पट्टन गयौ । करी चंद कित्तिय अमर ॥छं०॥८१॥

कविचंद द्वारा पृथ्वीराज की कीर्ति अमर हुई ।

चौपाई ॥ अमर कित्ति कविचंद सु अष्षी । जा लगि ससि सूरज नभ सष्षी॥
इह काया माया जिन रष्षी । अंत काल सोई जम भष्षी ॥छं०॥८२॥

पृथ्वीराज की कीर्ति का उज्वल भेष धारण कर स्वप्न में पृथ्वीराज के पास आकर दर्शन देना ।

दूहा ॥ निसि सुपनंतर राज पै । कित्ति आइ कर जोर ॥
नौतन अति उज्जल तनह । नीद न्रपति मन चोर ॥ छं० ॥ ८३ ॥

कीर्ति का कहना की हे क्षत्री मैं तुझे दर्शन देने आई हूं ।

जपि जगाइ सोमेस सुअ । मदन भीम चहुआन ॥
देत रुप छची प्रक्रति । दरसन [2]तवही पान ॥ छं० ॥ ८४ ॥

(१) ए.-गुर । (२) ए. कृ. को.-छत्री ।

कोटि लछन सुंदरि सहज। भय सुंदरि तिन प्रेम॥
हूर सुभर उरपै रनह। तौ सुधीर कहि केम॥ छं०॥ ८५॥

कीर्ति का निज पराक्रम और प्रशंसा कथन।

कवित्त॥ तो कित्ती चहुआन। निद्दरि संसारह चल्लौं॥
तीन लोक में फिरौं। देव मानौ उर सल्लौं॥
थान थान द्रिगपाल। फिरिव चावद्दिसि रुंध्यो॥
तन विसाल उज्जल सुरंग। दुज्जन सिर धुंद्यो॥
हूं सार अडर डोरू कहन। जोग प्रमानह उत्तरी॥
चहुआन सुनौ सोमेस तन। भूत भविष्यत विस्तरी॥ छं०॥ ८६॥

दूहा॥ तो कित्ती चहुआन हौं। तीनौं लोक प्रसिद्ध॥
धीरज धीरं तन धरै। द्रवै भूमि नव निद्ध॥ छं०॥ ८७॥
हौं सु देवि सुंदरि सहज। तुम गुन गुंथित देह॥
पुव्व प्रेम अति आतुरह। लग्यौ प्रेमलह नेह॥ छं०॥ ८८॥

प्रातः काल पृथ्वीराज का उक्त स्वप्न कविचंद और गुरुराम को सुनाना और फल पूछना।

कवित्त॥ जु कछु लिख्यौ लिलाट। सुष्प अरु दुःष समंतह॥
धन विद्या सुंदरी। अंग आधार अनंतह॥
कलप कोटि टर आहि। मिटै नन घटै प्रमानह॥
जतन जोर जो करै। रंच नन मिटै विनानह॥
सुपनंत राज आचिज्ज दिषि। बुझिझ चंद गुरराम तह॥
बरनी विचित्र राजन बरहि। कही सत्ति मत्ती सु अह॥छं०॥८९॥

गुरुराम का कहना कि वह भोळाराये का परास्त करने वाली कीर्ति देवी थी।

दूहा॥ इह सुपनंतर चिंततह। कहि सु देव जिम कीम॥
रत्ति वाह वर नरिंद सों। दीनों भोरा भीम॥ छं०॥ ९०॥

रात के समय भोलाराय का ५००० सेना सहित पृथ्वीराज के सिविर पर सहसा आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ चौकी जैत पँवार । सलष नंदन रचि गड्डौ ॥
ता सत्थह चामंड । भीम भट्टी रचि ठड्डौ ॥
महन सीह बर लरन । मार मारन रन चौकी ॥
उठी दिष्ट अरि भोज । प्रात षिभिभय बर सौकी ॥
हज़ार पंच अरि टारि कैं । भोरा अरि उप्परि परिय ॥
जाने कि पुराने दंग में । अग्गि तिनक्का भरि परिय ॥ छं० ॥ ९१ ॥

रात का युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ अत्ति अच्छी रनं, तेग कड्डी घनं । रत्ति अड्डी मनं, बीज कुड्डी घनं ॥
बीर रस्सं तनं, सार भंजे घनं । हक्क मच्ची रनं, बाह बाहं तनं ॥
छं० ॥ ९२ ॥
रुंड मुंड घनं, ईस इच्छे चुनं । षग्ग भग्गं तनं, प्राह गंगं जनं ॥
संभ रुट्ठी मनं, तार चौसट्ठिनं । भूत प्रेतं तनं, भष्य दिन्नौं घनं ॥छं०॥९३॥
जानि सील रुधी, कब्बि ओपमसुधी । मंन भारथ जलं, मेदि उप्पर चलं ॥
छं० ॥ ९४ ॥

पृथ्वीराज के प्रधान प्रधान वीर काम आए, उनके नाम ।

कवित्त ॥ दै अरि पच्छौ जैत । पऱ्यौ पांवार रूपघन ॥
पऱ्यौ किल्ह चालुक्क । संधि चालुक्क हजूरन ॥
पऱ्यौ वीर बग्गरी । भयौ अग्गर चहुआनं ॥
परि मोरी जैसिंघ । सिंघ रष्यौ षिजवानं ॥
हलमल्यौ सबै प्रथिराज दल । दलमलि दल चालुक गयौ ॥
तिय सीत अग्गि अंधार पष । चंद तुच्छ उद्दित भयौ ॥छं०॥९५॥

दोनों तरफ के डेढ़ हजार सैनिकों का मारा जाना ।

दूहा ॥ चालुक्का चहुआन दल । लुथ्थि स डेढ़ हजार ॥
सब घाइल [1]ढौंढ़े परिय । तब मुरि भेर पहार ॥ छं० ॥ ९६ ॥

(१) मो.-दौढ़े ।

पृथ्वीराज का खेत को तिरछा देकर चालुक पर आक्रमण करना।

कवित्त ॥ जंगी सिर चहुआंन। लुथ्थि [1]ढुंढन उप्पारिय ॥
षेत तिरच्छौ मुक्कि। षिझ्झिय लग्गौ अरि भारिय ॥
यों आतुर लग्गयौ। जान चालुक्क न पायौ ॥
[2]कंन्ह बैन [3]संभलियं। फेर बर भीम धसायौ ॥
उच्छरिय पानि बर मह भिरि। संग लोह हक्कारि दुहुं ॥
गुज्जर नरिंद चहुआन दुहुं। परि पारस भारत्थ कहुं ॥छं०॥९७॥

प्रभात होते ही युद्ध आरंभ होना।

बर प्रभात वन होत। होड़ चौहान सु लग्गिय ॥
लरत सूर दिनमान। सिरह चालुक्क षत षग्गिय ॥
षह धरि बज्जि निसान। रत्ति आई सु भिरत्तां ॥
लोह किरन पसरंत। सूर विरुझत [4]वथ गत्तां ॥
बर सूर दिष्षि काइर विडुरि। ठठुक्कि सूर सामंत रन ॥
दिष्षनह सूर इन काम बर। चढ़ि दिष्षन गौ सूर तन ॥छं० ॥९८॥

दोनों सेनाओं का जी छोड़ कर लड़ना।

भुजंगी ॥ भिरे सूर चालुक्क चहुआन गत्तं। लरंते परंते उठे सूर तत्तं ॥
दिवं दच्छिनं भीम भिरि चित्रकोटं। परे मार ओटे चहुआन जोटं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

किए सूर कोटं न हल्लैं हलाए। अमी सेन दूनं रहे हथ्थ पाए ॥
रसं बीर आयौ चल्यौ मोह प्रानं। जिनैं छच बंसं धरौ ध्यान मानं ॥
छं० ॥ १०० ॥

भज्यौ चित्त [5]चाहं लजे सूर दिष्षं। तहां चंद कव्वी सु ओपम्म पिष्षं॥
पियं चास पिष्षं सषी पास लग्गी। मनों बाल बहू परे [6]पाइ अग्गी॥
छं० ॥ १०१ ॥

(१) ए.-ढुंढन। (२) मो.-कैन बैने संभलिय फेरि बर भीम धसायौ।
(३) ए.-सभंरिलिय। (४) ए. कृ. को.-वग रत्तां। (५) मो.-चाह। (६) को.-आइ।

असव्वार ऐसें सनाहंत कट्टं। मनों 'बीय सौकी दुषी भाग वट्टं ॥
उड़ै काइरं इक्क हरि जीव चासं।.उपंमा कहरं फुटै नैन पासं ॥
छं० ॥ १०२ ॥

मनों पुत्तली कंठ 'मद्धि चिच लाही। करं जान लग्गी टगं टग्ग चाही॥
फुटै फेफरं पेट तारंग भ्रुल्लै। मनौं नाभि तें कोल सारंग फुल्लै ॥
छं० ॥ १०३ ॥

दिए नाग मुष्षी गजं इक्क षग्गी।षितं तेज आयौ वरं जंत लग्गी ॥
उपंमा न पाई उपंमा न.बंची। मनौं इंद्र हथ्थं करं राम षंची ॥
छं० ॥ १०४ ॥

'करी फारि फट्टं करं ऐक कोरं। जकै सिंधु भारं जुरै जानु जोरं ॥
पयं जोर ऐसै प्रतंगं चलायौ। भगंदत्त 'छब्बी तहां सूर पायौ ॥
छं० ॥ १०५ ॥

गिरे कंध बंधं कमंधं निनारै। उपंमा तिनं की न ओपंम चारै ॥
इकै सीस नीचं धरं उंच धायौ। मनो भंगुरी रूप न्रपती दिषायौ ॥
छं० ॥ १०६ ॥

समं पाज घट्टै कितं साम काजं। तिते 'जपरे सूर चढ़ि किंत्ति पाजं ॥
बड़े सूर सिद्धं सिधं कोन जोगी। खिगं षल्ल की भंति ज्यों षाल ओगी॥
छं० ॥ १०७ ॥

दो पहर दिन चढ़ते चढ़ते ५ हजार सैनिकों का मारा जाना।

कवित्त ॥ चढ़त दीह विष्पहर। परिग हज्जार पंच लुथि ॥
बान बचन भरि नरिंद। भारि उधारि देव धपि ॥
षट छह बर हज्जार। रुक्कि मंझे चहुआनं ॥
बर कट्टन चालुक्क। मत्ति कीनी 'परिमानं ॥
सह सेन बीर आहुठि तहां। तौ पट्टनवै कढ्ढयौ ॥
उचयौ बंभ भट्टी बिहर। धार धार अपु चढ्ढयौ ॥ छं० ॥ १०८ ॥

(१) ए. कृ. को.-विंयं पियं, । (२) मो.-मद्दि । (३) ए. कृ. को.-गजं ।
(४) ए. कृ. को.-छब्बं । (५) ए. कृ. को.-उत्तरे । (६) मो.-परित्रानं ।

पृथ्वीराज की जीत होना और चालुक का भागना।

तब रा निंगर राव। झुझ्झ धर रावर मंडिय ॥
रक्ति सेन चहुआन। षग्ग मग्गह तन षंडिय ॥
परिगहिय सब सथ्थ। गयौ चालुक्क बजाइय ॥
षभर षेह षग मिलिय। निरति प्रथिराज न पाइय ॥
बीरंग बीर बज्जर बिहर। भिरत बज्जि निय विप्पहर ॥
बज्जरत बीय बंभन परत। गयौ भीम तन बर कुसर ॥ छं० ॥१०९॥

चालुक की सब सेना का मारा जाना।

दूहा ॥ तीस सहस बर तीस अग। गत चालुक रन मंडि॥
तिन में कोइ न ग्रह गयौ। सार धार तन षंडि ॥ छं० ॥ ११० ॥
बाव छूर कोइ न भयौ। धनि चालुक्की सेन ॥
सामि काज तन तुंग सौ। चिन करि जान्यौ जेन ॥ छं० ॥ १११ ॥

पृथ्वीराज का रणक्षेत्र ढुंढवा कर घायलों को उठवाना और मृतकों की दाह क्रिया करवाना।

कवित्त ॥ षेत ढूंढि चहुआन। समर उप्पारि समर में ॥
निठ पायौ चामंड। मिले सब मंस रुधिर में ॥
है गै बर विभ्भूत। रंक लुट्टी चालुक्की ॥
किन हय हथ्थिय लुट्टि। गयौ पति प्रव्वत [1]मुक्की ॥
दिन अठ्ठ राज चित्तौर रहि। बहुत भगति राजन करी ॥
जोगिनी न्त्रपति जुग्गिनि पुरह। जस बेली उर बर धरी ॥छं०॥११२॥

पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना।

दूहा ॥ ढिल्ली न्त्रप ढिल्ली गयौ। बजि न्त्रिघात सुदंद ॥
जिम जिम जस ग्रह राज करि। तिम तिम [2]रचित कविंद ॥छं०॥११३॥
जस धवलौ मन उज्जलौ। न्त्रिल्ली पहुमि न होइ ॥
भूत भविष्यति व्रित्त मन। चिषनहार न कोइ ॥ छं० ॥ ११४ ॥

(१) मो.-मुक्की। (२) ए. कृ. को.-साचित।

इसके पीछे पृथ्वीराज का इन्द्रावती को व्याहना।

पंडौ सुनि पठयौ सु न्नप। बंज्जि निसानन घाइ॥
बर इंद्रावति सुंदरी। बिय बर करि परनाइ॥ छं०॥ ११५॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके करहे रो रावर समरसी राजा प्राथिराज विजय नाम बत्तीसमो प्रस्तावः ॥३२॥

अथ इन्द्रावती व्याह।

(तेंतीसवां समय।)

उज्जैन के राजा भीम का चंद कवि से कहना कि पृथ्वीराज का हृदय नीरस है मैं उसको अपनी कन्या न विवाहूंगा।

कवित्त ॥ कहै भीम सुनि भट्ट। हूर बंध्यौ सुरही [1]रित ॥
[2]दीना सों प्रति प्रीति। सामि करिहै जु सामि [3]मित ॥
[4]अम्रुत रत्त विष होत। अम्रुत रस रत्त उपज्जै ॥
ग्राव ग्राव सों प्रीति। सार सों सार सपज्जै ॥
[5]कट्ठ सों कट्ठ बर बंधियै। नारि नरन सों वाहियै ॥
इह काज राज कविचंद सुनि। त्यों बरनी बर चाहियै ॥ छं० ॥ १ ॥

कवि चंद का कहना कि समय पाय सगों की सहायता करने गए तो क्या बुरा किया।

सुनि भीमंग पँवार। चढ़े प्रथिराज प्रपन्ने ॥
समर दिसा चालुक्क। [6]सजे चतुरंग सपत्ते ॥
धन्नि मगन तन आनि। कित्ति चहुआन सुनिज्जै ॥
साम दान अरु भेद। दंड सुंदरि ग्रह लिज्जै ॥
मो मत्त सुनौ [7]घर जाइ तौ। न्रप बर मंहि कलहत्त भय ॥
गुर गुरह सब्ब सामंत ए। लज्ज बंधि तुव हथ्थ [8]दिय ॥ छं० ॥ २ ॥

भीमदेव का प्रत्युत्तर देना।

---

(१) ए. कृ. को.-तत। (२) ए. कृ. को.-तदिनां। (३) ए. कृ. को.-मति।
(४) ए. कृ. को.-रत अरत्त विष होइ अमृत रत जुरत उपज्जै। (५) मो.-कंठ।
(६) मो.-सुजो। (७) ए. कृ. को.-पर। (८) एं. कृ. को.-दिप।

कहै ओइ वरदाइ। मंत कविचंद सु आमन॥
मन वासौं मन मिलत। जियत कै कंठ सामन॥
जो वासुर सुर पंच। [1]पग्ग मंडै चहुआनं॥
तौ भाविक जिह खेष। तिही हैहै परिमानं॥
भावी विगत्ति [2]भंजन गढ़न। दइय दुसंकइ जानि गति॥
लिषि बाल सीस दुष सुष्ष दुहु। सत्य होइ परमान मति॥छं०॥३॥

यह समाचार सुन कर इन्द्रावती का शोकातुर होना।

दूहा॥ सुनि इंद्रावति सुंदरी। धरनि सरन सिर लाइ॥
कै धरनी फट्टै कुहर। कै पावक जरि जाइ॥ छं०॥ ४॥
इन भव न्रप सोमेस सुअ। जुध बंधन सुरतान॥
कै जलद्धि बूड़वि मरै। अवर न [3]बंछौं प्रान॥ छं०॥ ५॥

सखियों का इन्द्रावती को समझाना।

कवित्त॥ सषी कहै सुनि बत्त। सुतौ दानव कुल कहियै॥
अवर जाति अनेक। राइ [4]गुर परनइ लहियै॥
करै कोन परसंग। पाइ म्रगमद घनसारं॥
कोन करै कुट्टीन। संग लहि कामवतारं॥
तो पित्त अवर वर जो दियै। तो नन जंपै अलिय वच॥
राचियै अप्प राचै तिनह। अनरचैं रचैं न सुच॥ छं०॥ ६॥

इन्द्रावती का उत्तर कि मैं राजकुमारी हूं मेरा कहा वचन कदापि पलट नहीं सकता।

दूहा॥ तुम दासी दासी सु मति। मो मति न्रप पुत्तीय॥
बोलि विंन चुक्कै न नर। जो वर मुक्कै जीय॥ छं०॥ ७॥

भीम का कविचंद से कहना कि तुम यहां फौज लेकर क्या पड़े हो, क्या मेरे प्रताप को नहीं जानते।

---

(१) ए. कृ. को.-मंद्धि आयौ। (२) ए. कृ. को.-भंजी।
(३) ए. कृ. को. छंडौ। (४) ए. कृ. को.-गुन।

कहै भीम कविचंद [1]सुन। स्वामि काम तुम अज्ज ॥
सेन सगप्पन रीत मइ। तुम दानव कुल चज्ज ॥ छं० ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ हौं सु भीम मालव नरिंद। मोहि घर बर अच्छिय ॥
सवा लाष मो ग्राम। ठाम संपति बहु लच्छिय ॥
विधि विधान न्त्रिम्मान। कीन मिट्टै इह वत्तिय ॥
होनहार होइहै पुरुष। जंपै गति मत्तिय ॥
तुम कहौ नाम बरदाइ बर। गुरूराज बंदै चरन ॥
ओछी सु बत्त कछ्छौ कथन। एह सगप्पन विधि बरन ॥ छं० ॥ ९ ॥

कविचन्द का कहना कि समय देख कर कार्य्य करना ही बुद्धिमत्ता है।

दूहा ॥ अहो भीम [2]सत्ताह सुमति। तुम मतिमान प्रमान ॥
औसर तकि कीजै [3]जुगत। औसर लहिजै दान ॥ छं० ॥ १० ॥

भीमदेव का पज्जून से कहना कि तुम्हें बादशाह के पकड़ने का बड़ा अभिमान है इसी से तुम और को शूरवीर ही नहीं जानते।

कवित्त ॥ कहै भीम पज्जून। सुनौ पामर मतिहीना ॥
[4]अमत कियौ तुम मंत। बरन बरनौ षग लीना ॥
तुम सहाब बलि बंधि। गर्व सिर उप्पर लीना ॥
गिनौं और तिण मत्त। कह्यौ न सुन्यौ तुम कीना ॥
छचीन बंस छत्तीस कुल। सम समान गिनियै अवर ॥
घर जाहु राज मुक्कौ बरन। करन व्याह उछ्छाह नर ॥ छं० ॥ ११ ॥

जैतराव का कहना कि भीमदेव तुम बात कह कर क्या पलटते हो।

(१) ए. कृ. को.-कहि। (२) ए. कृ. को.-सतिमात्ति।
(३) को. कृ. ए.-जु रत। (४) मो.-अमन।

जैतराव जम जैत। नैन लल्ले करि बोली ॥
¹अहो भीम करि नीम। बत्त पहली तुम भोली ॥
बल बलिष्ट केहरिय। स्यार क्यों मुष वर घल्ले ॥
लोक भाष बुझ्झी न। ज्योंत बैरी को मिल्ले ॥
इम अज्ज लज्ज सांई धरम। क्यों कहुय मुष बत्तरिय ॥
सु विहान बरन श्रप्पै मल्न। श्राज तुम्हारी रत्तरिय ॥छं०॥१२॥

भीम का गुरुराम से कहना कि स्वार्थ के लिये विग्रह करना कौन सा धर्म है।

दूहा ॥ तब कहि भीम नरिंद सुनि। अहो सु गुर दुज राम ॥
अमत मत्त मंडौ मरन। इह सु कोन ध्रम काम ॥ छं० ॥ १३ ॥

गुरुराम का ऐतिहासक घटनाओं के प्रमाण सहित उत्तर देना।

कवित्त ॥ त्रिया काज सुन भीम। मिल्यौ सुग्रीव राम जब ॥
¹कहिय बत्त पय लग्गि। नाथ मो बालि हत्यौ अब ॥
हरी नारि तारिका। मास षट जुद्ध सु मंड्यौ ॥
अस्ति वस्थ करि सिथल। म्रतक सम बर करि छंड्यौ ॥
तुम देव सेव रसनौ ग्रहिय। अब सहाय तुम सारयौ ॥
बंधियौ सात तारह सु जिय। बलिय बान इक मारियौ ॥छं०॥१४॥

भीम का गुरुराम को मूर्ख बना कर कविचन्द से कहना कि जैतराव को तुम समझाओ।

दूहा ॥ तुम बंभन बंभन सु मति। पढ़ि पुस्तक कहि सुत्त ॥
दो घर मंगल मंडियै। इह घर जानी बत्त ॥ छं० ॥ १५ ॥
अहो चंद दंद न करहु। तुम कुल दंद सुभाव ॥
जैतराव ²मिलि राम गुरु। लै काने समझाव ॥ छं० ॥ १६ ॥

कविचन्द का सप्रमाण उत्तर देना।

(१) ए. कृ. को.-कहा। (२) मो.-बलि।

कवित्त ॥ कहै चंद सुनि दंद । बीय कज रावन गंज्यौ ॥
[1]बैरोचन न्रप नंद । मारि अप्पन भ्रम भंज्यौ ॥
कंस कन्ह सिसुपाल । कज्ज रुकमनि जुध मंड्यौ ॥
[2]ता बंधव रुकमान । बंध मुंडवि सिर छंड्यौ ॥
सुर असुर नाग नर पंषि पसु । जीव जंत त्रिय कज भिरै ॥
रे भीम सीम चहुआन की । ता बरनी को बर बरै ॥ छं० ॥ १७ ॥

भीम का अपने प्रधान से मंत्र पूछना ।

दूहा ॥ भीम पूछ परधान [3]भर । कहौ सु कीजै काम ॥
जुड जुरै चहुआन सौं । ज्यों इल रष्षै नाम ॥ छं० ॥ १८ ॥

मंत्री का कहना कि इन्द्रावती पृथ्वीराज को व्याह दीजिए पर भीम का इस बात को न मानकर क्रोध करना ।

कवित्त ॥ इह सु नाम [4]अकाम । जेन नामह घर जाइय ॥
इहै नहीं घर जोग । अगनि दीपक दिष्षाइय ॥
पहलैं ही भज्जियै । छोड़ दुज्जना इसाई ॥
इंद्रावति सुंदरी । देहु चहुआन प्रथाई ॥
सुनि भीम राज तत्तौ तमकि । गई बत्त बुभ झी सु तुम ॥
हकारि जैत गुरुराम कवि । षग्ग व्याह न न करैं हम ॥ छं० ॥ १९ ॥

सामंतों का परस्पर विचार बांधना ।

दूहा ॥ उठि चल्ले सामंत सब । करन दंद मति ठाम ॥
जो बरनी बिन पछि फिरैं । न्रपति न मन्नै माम ॥ छं० ॥ २० ॥

रघुवंस रामपवार का वचन ।

कवित्त ॥ फिरि आनी पांवार । राम रघुबंस बिचारी ॥
जीवन जो उब्बरै । मरन केवल संचरी ॥

---

(१) ए.-वैरोचन, बैरोचन । (२) मो.-के बंधव रुकमना ।
(३) ए. कृ. को. बर । (४) ए. कृ. को.-सकाम ।

*महंकाल बर तिथ्थ। तिथ्थ धारा उद्धारी ॥
स्वामि ध्रम्म तिय तिथ्थ। मुकति संसो न बिचारी ॥
पांवार सुबल मालव न्टपति। बर समुंद जिम भारयौ ॥
बर नीति कित्ति सुर बर असुर। सुगति मथन संभारयौ ॥छं०॥२१॥
मतौ मंडि सब सथ्थ। मत्त को बित्त बिचारिय ॥
बर पट्टन दक्खिन है। धेन लैहै हक्कारिय ॥
बर बाहर पालिहै। स्वामि षिझिहै पांवारय ॥
बर आतुर धाइहै। अप्प संम्हौं हक्कारिय ॥
धर दहै कोस अधकोस बर। फिरि चावद्दिसि रुंधही ॥
करतार हथ्थ केतिय कला। तिहिं दुज्जन फिरि बंधही ॥छं०॥२२॥

चहुआन की फौज के भीमदेव की गौओं के घेर लेने पर पट्टनपुर में खलभल पड़ना।

दूहा ॥ पंच कोस मेलान करि। लिय न्टप पट्टन धेन ॥
कूक कहर बज्जिय बिषम। चढ़िय भीम न्टप सेन ॥ छं० ॥ २३ ॥
उंच क्रंन अनमिष नयन। प्रफुलित पुच्छ सिरेन ॥
रंग गंग गौ निजरि लषि। प्रज्जलि भीम उरेन ॥ छं० ॥ २४ ॥

चहुआन सेना का मालवा राज्य की प्रजा को दुःख देना और भीम का उसका साम्हना करना।

कवित्त ॥ औसरि [1]बसि सामंत। धेन लुट्टिय पट्टनवै ॥
बर मंडल उज्जेन। धाक बज्जिय बट्टनवै ॥
ग्राम ग्राम प्रज्जरहि। हूर मानव बर बज्जै ॥
सामंतारी धाक। धार मुक्किय बिधि भज्जै ॥
संभरिय बीर बाहर श्रवन। बाहर हर बाहर चढ़िय ॥
चतुरंग सज्जि पांवार बर। उगम हंकि उगपति बढ़िय ॥ छं० ॥ २५ ॥

---

* महंकाल=महाकाल "उज्जैन्याम् महाकाले" इति लिङ्गपुराणोक्त बारह जोतिर्लिङ्गों में से एक उज्जैन में महाकालेश्वर नाम से प्रसिद्ध शिवमूर्ति है।

(१) मो.-सब।

भीम का चतुरंगिनी सेना सजकर सन्नद्ध होना।

हय गय रथ चतुरंग। सज्जि साइक पाइक भर॥
आइ मिले मुषमेल। दुहून कढ्ढिय असि बर बर॥
'तेग मार सिर झार। धुंम धुम्मर हर लुक्किय॥
पर्‍यौ घोर अंधियार। बिज्जुरि निसि भ्रम चक चक्किय॥
को गिनै अपर पर को गिनै। लोह छोह छक्कै बरन॥
सामंत सूर जैतह बलिय। कहत चंद जुग्गति लरन॥ छं० ॥ २६॥

रघुवंसराय का नाका वांधना और पज्जून का भीम की गाएँ घेर कर हांकना।

बर सिप्रा नदि तट्ट। धाइ सामंत जु रुक्किय॥
रोकि मुष्ष रघुवंस। धेन पज्जून सु हक्किय॥
दुतिय बीर बर टिके। भीस भारथ जिम लग्गिय॥
सूर बिना प्रथिराज। धके जुरि षग्गन षग्गिय॥
मुकि धेन गंठिं बंधिय मिलवि। औसर षग कढ्ढिय लरन॥
झरि सार तिनंगा तुट्टि बर। तिरटू झर लग्यौ झरन॥छं०॥२७॥

जैतराव और भीम का युद्ध वर्णन।

मोतीदाम॥ तुरंगम आउ लहू गुर ठाउ। कला [२]ससि संषि जगन्नय पाउ॥
पयं पिय छंद सु मोतियदाम। कह्यौ धर नाग सु पिंगल नाम॥
छं० ॥ २८॥

मिले जुध जैतह भीम नरिंद। मच्यौ जुध जानि वृतासुर इंद्र॥
षगें षग मग्ग परे धर मुंड। परे भर बथ्थ मरोरत झुंड॥
छं० ॥ २६॥

कटक्कहि हड्डुहि गूद करक्क। बिछुट्टकि तुट्टहि लुंब लरक्क॥
भभक्कत बक्कत घाइल छक्क। उरझ्झत अंत सु पाइन तक्क॥छं०॥३०॥

---

(१) ए. कृ. को.-"मिले लोह सामंत धुम्म धुम्मर हर लुट्टिय।
(२) मो.-सति।

करकस केस मनों नट भंग। नचे सब सारद नारद संग॥
रनचिय बेस उलथ्थ पलथ्थ। परै धर लुथ्थि उनैं उन जथ्थ॥
छं० ॥ ३१ ॥
करें कर आवध टंड छतीस। तबै छल सांइय भ्रम्म मतीस॥
नचै भर षप्पर चौसठि नार। इसौ जुध रुद्र अनुद्र अपार ॥छं०॥३२॥
गए भगि सेन सँग्राम सियार। भिदै रवि मंडल सूर सुवार॥
छं० ॥ ३३ ॥
दूहा ॥ आदि सूर पांवार बर। भीम मरन तिन जान॥
हमसि हमसि संम्हौ भिरै। षग पन मोषन पान ॥ छं० ॥ ३४ ॥

युद्ध विषयक उपमा और अलंकारादि।

पद्धरी ॥ *अनिबद्ध जुद्ध आवद्ध सूर। बरि भिरत भंति दीसै करूर॥
झलमली संगि फुटि परदि तुच्छ। उप्पमा चंद जंपै सु अच्छ॥
छं० ॥ ३५ ॥
बद्दल सु माहि दीसै प्रमान। निकस्यौ पंचमो भाग भान॥
†बर सांग फोरि सिप्पर प्रमांन। छरि महत चंद सो भासमान॥
छं० ॥ ३६ ॥
मानौं कि राहु ससि ग्रहै धाइ। पैठयौ सरन बद्दलन जाइ॥
किरवान बंकि बहु बिसाल। मनुं ससिअ डोर कढ़ि चक्र लाल॥
छं० ॥ ३७ ॥
सिप्पर सुमंत करि तुट भमाइ। मानहु कि चक्र हरि धरि चलाइ॥
दुहुं सेन तीर छुट्टै सभूह। मानौं इपंति पंषिय सजूह ॥छं०॥३८॥
कढ़ि इसी तेग धाइय पहार। मनुं अमं इंद्र सज्जो संभारि॥
विरचै जु सूर बाहै विहथ्थ। दिषि दूर चढ़ि मनमथ्थ रथ्थ॥
छं० ॥ ३९ ॥
भरहरे सब्ब पाइल सुभार। रिन (१)रूप देव दिसि सूर पार॥
गुरहरी भेरि वर भार सार। बज्जे सु तबल आकास तार॥
छं० ॥ ४० ॥

* छन्द ३५ से ३८ तक का पाठ मो. प्रति में नहीं है।
† यह पंक्ति मो. को.-कृ. इत्यादि प्रतियों में नहीं है। (१) ए. कृ. को.-सूप राज।

झक झक उभक्क बद्दल दिवीव । ओपम्म चंद तिन कहत हीव ॥
कट छित्त सूर ओपाइ मुक्कि । कहुंत बाल ज्यों बाल रुक्कि ॥छं०॥४१॥
इह सार सुद्ध मिट्टिय डरेन । जानिये चौय वयसंधि तेन ॥
परि सहस सत्त दोउ सेन बीर । रवि गयौ सिंधु तीरह सु[1]तीर ॥
छं० ॥ ४२ ॥

सायंकाल के समय युद्ध बन्द होना ।

कवित्त ॥ संझ हेत बहि सार । मार [2]करि तुट्टि सनह रिझ ॥
सो ओपम कविचंद । भंग छुट्टै कि बाल षिझ ॥
टोप [3]ओप उत्तरै । परै विपरीत विराजै ॥
मनों सु भाजन भोम । हथ्थ जोगिनि रुध काजै ॥
यों भन्यौ सेन सम बर सुबर । नन हान्यौ जित्यौ न कोइ ॥
दोउ सेन बीच सरिता नदी । निस कट्ठी बर बीर होइ ॥
छं० ॥ ४३ ॥

दूसरें दिवस प्रातःकाल होते ही पुनः सामंतों का पान-व्यूह रचकर युद्ध करना ।

होत प्रात सामंत । पान व्यूहं [4]जुध रच्चिय ॥
मोती भर सामंत । पान कूरंभ रा सच्चिय ॥
बर हरिन्य उथ्थट्ट । पत्ति मंडी [5]गुन राजै ॥
[6]लाल रुप कविचंद । मद्धि कनइक दुति साजै ॥
[7]नालीव रुप लीनो बरन । राम सुबर रघुवंस भिरि ॥
कोदनि सुरंग पंती करिय । बीय सहस पुंडीर परि ॥ छं० ॥ ४४ ॥

युद्ध वर्णन ।

मालती ॥ तिय पंच गुरु, सत सत्ति चामर, बीय तीय, पयो हरे ॥
मालती छंद, सुचंद जंपय, नाग षग मिलि, चित हरै ॥

---

(१) ए. कृ. को.-नीर । (२) मो.-कढि ।
(३) मो.-ओट । (४) मो.-सुध । (५) ए. कृ. को.-गुर ।
(६) ए. कृ. को.-लाज । (७) मो.-नालीच ।

नव सूर सलि ललि, अरिन अल मिलि, लोह भिल मिल, निझरे॥
बर सूर तल छुटि, लजन नट्टय, वीर सवद्दन, बर भरे ॥ छं० ॥४५॥
मिलि सार सार, पहार बजि घट, उघटि [1]नट जिम, [2]तानयौ ॥
झलमलत तेक, सकत्ति बंकिय, ओपमा कवि, मानयौ ॥
मनों बिट्ट जिम, बेहार ग्रह पति, कुलट तन तिय, लोकियं ॥
धन सूर धार, अधार अन जिन, धार धार, अनेकियं ॥छं० ॥४६॥
चिहुं दिसा चाहं, सूर बह बह, जूट चल्लं, निहयं ॥
मनु रास मंडल, गोप कन्हं, दंप दंपति, बंधियं ॥
बर अरिर सेन, विडारि चिहु दिसि, करषि काइर, भज्जयं ॥
बर बीर धार, पंवार सेना, परे सोम, अलुझझयं ॥ छं० ॥ ४७ ॥

युद्ध होने होते उत्तरार्ध में सामंतों का उज्जैन मंत्री को घेर कर पकड़ लेना ओर इन्द्रावती का चहुआन के साथ व्याह करना स्वीकार करने पर कविचन्द का उसे छुड़ा देना।

कवित्त ॥ दिन पलट्यौ पांवार। सल्ल बाहै सल्लन पर ॥
चावद्दिसि सामंत। भीम बौध्यौ सुरंग नर ॥
तन सट्ट अरि सट्ट। बंधि लीने उज्जेनी ॥
बल छुट्यौ संग्रह्यौ। दई बर भंभर नैनी ॥
कविचंद छंडायौ बीच परि। बाल सुबर सुंदर बरी ॥
धनि सूर बीर सामंत हौ। [3]जुमर जुद्ध इत्तौ करी ॥ छं० ॥ ४८॥

भीम का सब सामंतों का आतिथ्य स्वीकार करके उनके घायलों को औषधि करना।

दूहा ॥ भीम भयानक भग्रह्यौ। सरन राम कविराज ॥
बर इंद्रावति सुंदरी। मे दीनी प्रथिराज ॥ छं० ॥ ४९ ॥

(१) मो. ए. कृ. को.-घट। (२) मो.-सौनयौ।
(३) मो.-सु बर।

जो मति पच्छैं उप्पजै। सो मति पहिले होइ॥
काज न विनसै अप्पनौ। दुज्जन हँसे न कोइ॥ छं०॥ ५०॥
आदर करि आने सु ग्रह। भगति जुगति बहु कीन॥
जे भर घाइल उप्परे। अतन जिवाइ सु दीन॥ छं०॥ ५१॥
घग विवाह भीमंग रचि। बाजे बज्जन लग्गि॥
मंगल मिलि अलि गावहीं। गौष गौष निस जग्गि॥ छं०॥ ५२॥

इन्द्रावती का विवाह उत्सव वर्णन और सामंतों का पृथ्वीराज को पत्र लिखना कि भीम देव ने विवाह स्वीकार कर लिया है।

भुजंगी॥ रची वेदिका बंस सोव्रन्न सोहै। जरे हेम में कुंभ देषंत मोहै॥
लगी वेद विप्रान सों [1]गान भांईं। रचे कुंड मंडप्प सेषं न सांईं॥
छं०॥ ५३॥
हसे तर्क वित्तर्क हासं सुरासं। घसे कुंकमं लाल गुल्लाल वासं॥
उड़ै बीर [2]गोधूरकं वास रेनं। करे भेरि भुंकार गज्जन्त गेनं॥
छं०॥ ५४॥
चवै छंद बंदी ननं पार आनं। करे दान हेमं सु विद्या विनानं॥
भई प्रीति जेतं सुरा कव्विरानं। तिनं लेषियं कग्गदं चाहुआनं॥
छं०॥ ५५॥
दूहा॥ लिषि कग्गद चहुआन दिसि। दिय पुत्री भीमानि॥
इंद्र घरनि सम सुंदरी। कलह कुसल वर बानि॥ छं०॥ ५६॥

इन्द्रावती का शृंगार वर्णन।

नाराच॥ कन्यौ सुन्हांन कामिनी। दिपंत मेघ दामिनी॥
सिंगार षोडसं करे। सु हस्त दर्पनं धरे॥ छं०॥ ५७॥
वसन्न बासि वासनं। तिलक्क भाल [3]भासनं॥
दुनैन ऐन अंजए। चलं चलंत षंजए॥ छं०॥ ५८॥

(१) मो.-मान। (२) मो.-केदासु। (३) मो.-तासने।

सुहंत स्रोन कुंडलं । ससी रवी कि मंडलं ॥
सु सुत्ति नास सोभई । दसन्न दुत्ति लोभई ॥ छं० ॥ ५९ ॥
अनेक भांति आखिलं । धरंत पुप्फ माखिलं ॥
भँकार हार नौपुरं । घमंकि घुंघरं घुरं ॥ छं० ॥ ६० ॥
विलेपि लेप चंदनं । कसी सु कंचुकी घनं ॥
सु छुद्र घंटि घंट्टिका । तमोल आप चंटिका ॥ छं० ॥ ६१ ॥
कनक्क नग्ग कंकनं । जरे जराइ अंकनं ॥
बिसाल बानि चातुरी । दिषन्न रंभ आतुरी ॥ छं० ॥ ६२ ॥
अनेक दुत्ति अंग की । कहंत जीभ भंग की ॥
सहस्स रूप सारदं । सरम्म रूप नारदं ॥ छं० ॥ ६३ ॥

इन्द्रावती का मंडप में सखियों सहित आना और पृथ्वीराज के साथ गठबंधन होना।

दूहा ॥ करि श्रृंगार अलि अलिन सँग । रिम झिम भुंडन मंझ ।
बसन रंग नवरँग रँगे । जानु कि फुल्लिय संझ ॥ छं० ॥ ६४ ॥
चौपाई ॥ कर गहि पग्ग मग्ग चहुआनं । बरन इंद्र सुंदरि बर बानं ॥
मन गंठे गंठिय प्रिय जानं । जानकि देव विहाह विवानं ॥ छं० ॥ ६५ ॥

भीम का चहुआन को भांवरी दान वर्णन।

दूहा ॥ सत हथ्थी हय सहस विय । साकति साजि अनूप ॥
हयलेवौ चहुआन कों । दियौ भीम बर भूप ॥ छं० ॥ ६६ ॥
नग्ग चरित चौंडोल सौ । सुर सत दासिय सथ्थ ॥
दै पहुंचाइय सुंदरीं । कही बनै बर गथ्थ ॥ छं० ॥ ६७ ॥

गमन समय इन्द्रावती की माता की इन्द्रावती के प्रति शिक्षा।

मात पुत्ति परठिय सुमति । विधि विवेक विनयान ॥
पतिव्रत सेवा मुष धरम । इहै तत्त मति ठान ॥ छं० ॥ ६८ ॥
पति सुष्षै (१)सुष्षै जनम । पति बंधे बंधाइ ॥
इहै सीष हम मन धरौ । ज्यों सुहाग सचवाइ ॥ छं० ॥ ६९ ॥

(१) मो.-छप्पे।

पृथ्वीराज का बंदियों को दान देना।

बंदिन दान प्रवाह दिय। लिय सुंदरि जुध जीति॥
कुहुं अस अम्मल छंद [1]गुन। पढ़न कविन इह रीति॥ छं०॥ ७०॥

सामंतों की प्रशंसा वर्णन।

कवित्त॥ धनि सामंत समथ्थ। जेन न्रप बिन जुध जित्तिय॥
धनि सामंत समथ्थ। जेन जस किद्धि बिदित्तिय॥
धनि सामंत समथ्थ। जेन बल्ली बर संध्यौ॥
धनि सामंत समथ्थ। जेन भीमंग [2]रन बंध्यौ॥
सामंत धन्नि जिन कित्ति बर। ढिल्ली दिस पायान कर॥
बैसाष मास अष्टमि सिलह। किन्नि संचरिय देस पर॥ छं०॥ ७१॥

विवाह के समय उज्जैन की शोभा वर्णन।

ढिल्लिय पति सिनगार। हट्ट पट्टन की सोभा॥
गौष गौष जारीन। दिष्षि तिय नर सुर लोभा॥
भूंगल [3]भेरि नफेरि। नह नीसान म्रदंगा॥
नाना करत संगीत। ताल सौं ताल उपंगा॥
गाजंत बब्भ गज्जिय बुहिर। न्रप प्रवेस सुंदरि करि॥
सामंत जैत पयलग्गि प्रय। प्रथक प्रथक परसंस करि॥ छं०॥ ७२॥

दहेज वर्णन।

च्यार अग्ग चालीस। सत्त कथ्थे गजराजिय॥
सौ तुरंग तिय अग्ग। बीस षव अप्पि सु पाजिय॥
इक अमोल सुंदरी। सत्त तिय दासिय बिंटिय॥
सबै सथ्थ सामंत। रहे भर करिय अभिंटिय॥
सामंत करी प्रथिराज बिल। करै न को रबि चक्क तर॥
सुंदरी सहित अरि जीति कै। गए बीर अष्टमि सु घर॥ छं०॥ ७३॥

शुक्ला अष्टमी को सामंतों का दिल्ली के निकट पड़ाव डालना।

(१) मो-गुर। (२) ए. कृ. को.-बर। (३) ए. कृ. को. फेरि न फेरि।

दूहा ॥ बर अष्टमि उज्जल पषह। तिथि अष्टमि रवि [1]भौर ॥
अष्ट कोस दिल्लीय तें। चिय मुक्किग तिन बीर ॥ छं० ॥ ७४ ॥

उसी समय लोहाना का पृथ्वीराज को शहाबुद्दीन का पत्र देना।

गय सुंदरि सम्हौ न्रपति। गवन करन चहुआन ॥
लोहानौ सम्हौ मिल्यौ। दै कग्गद [2]सुरतान ॥ छं० ॥ ७५ ॥

लोहाना का कहना कि सुरतान दंड देने से फिर कर दिल्ली पर आक्रमण करना चाहता है।

कवित्त ॥ मेघग्गाही सेन। दंड पलव्यौ सु विहानं ॥
अपुठौ भर चतुरंग। सजे दस गुनौ प्रमानं ॥
बर कमान षुरसान। रोहि रंगे रा गब्बर ॥
हवस हेल षंधार। सज्जि घल्ली फिर पब्बर ॥
पंजाब देस पंचौ नदी। बर मंगे मंग्गी सु बर ॥
चहुआन राइ मैं [3]मग्गिली। मते मच्छ कढ्ढन उगर ॥ छं० ॥ ७६ ॥

पृथ्वीराज का इन्द्रावती को घर पहुंचा कर युद्ध की तैयारी करना।

दूहा ॥ सुनिय साहि गोरी सु बर। बर भयौ चहुआन ॥
लै सुंदरि पच्छौ फिर्यौ। बर बज्जे नीसान ॥ छं० ॥ ७७ ॥

इन्द्रावती की रहाइस।

दिस दच्छिन तच्छिन महल। सुंदरि समुद समप्पि ॥
सकल सत्त दासी अनुप। न्रप इंद्रावति अप्पि ॥ छं० ॥ ७८ ॥

सुहागस्थान की शोभा वर्णन और इन्द्रावती का सखियों सहित पृथ्वीराज के पास आना।

---

(१) ए. कृ. को.-बीर। (२) ए. कृ. को.-चहुआन।
(३) मो.-निगळी।

कवित्त ॥ अगर कपूरति महल। सार घनसार सु रम्मिय ॥
धूप दीप सुग्गंध। दीप दस दिसि इत [1]जम्मिय ॥
सेज सुरंगति रंग। हेम नग जरे जरानं ॥
दिष भीम भूपाल। भोग साजं सु सबानं ॥
न्नप देषि अचंभ समानि मन। मुष आतुर देषन महल ॥
आनिय सु सेज चिय अलिन मिल। अलि गुंजत उप्पर चहिल ॥
छं० ॥ ७९ ॥

इन्द्रावती की लज्जामय मंद चाल का वर्णन।

दूहा ॥ हंस गवन हंसह सरन। गनि गति मति सारह ॥
रूप देषि भूल्यौ न्नपति। रचिय विरंचि विहह ॥ छं० ॥ ८० ॥

सुहाग रात्रि के सुख समाचार की सूचना।

कवित्त ॥ रस विलास उप्पज्यौ। सषी रस हार सुरत्तिय ॥
ठांम ठांम चढ़ि हरम। सह कहकह तह मत्तिय ॥
सुरत प्रथम संभोग। हंह हंहं मुष रट्टयि ॥
ना ना ना परि न्नवल। प्रीति संपति रत वट्टिय ॥
श्रृंगार हास्य करुणा सु रुद्र। बीर भयान विभाछ रस ॥
अदभूत संत उपज्यौ सहज। सेज रमत दंपति सरस ॥ छं० ॥ ८१ ॥
सुकी सरस सुक उच्चरिग। गंध्रव गति सो ग्यान ॥
दूह अपुब्ब गति संभरिय। कहि चरित्त चहुआन ॥ छं० ॥ ८२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके इन्द्रावती व्याह सामंत विजै नाम तेतीसमों प्रस्ताव संपूरणः ॥३३॥

(१) ए. कृ. को.-नम्मिय।

अथ जैतराव जुद्ध सम्यौ लिख्यते।

(चौंतीसवां समय।)

पृथ्वीराज का सप्रताप दिल्ली का राज्य करना।

कवित्त॥ किहि मेषत प्रथिराज। किहित मेषत चिहु पासं॥
किहि मेषत दिसि विदिसि। कहौ मनया उल्हासं॥
किहि उमाह उच्छाह। कोन ओपम द्रग राजै॥
सो उत्तर कविचंद। देव गुरुराज विराजै॥
सजि मान वीर चतुरंगिनी। कमल गहन सुरतान वर॥
नव रस विलास अस रस सकल। तपै तुंग चहुआन वर॥ छं० ॥ १ ॥

ढाई वर्ष पश्चात पृथ्वीराज का षट्टू बन में शिकार खेलने को जाना और नीतिराव कुटवार का शहाबुद्दीन को भेद देना।

नीतराव षिचीय। भेद लै ग्रह चहुआन॥
दिल्लि कौ [१]ग्रह भेद। लिष्यौ कग्गद सुरतानं॥
वरष उभै षट मास। फेरि सु विहान पलान्यौ॥
षट्टू बन प्रथिराज। बहुरि आषेटक जान्यौ॥
सामंत सूर सथ्थह न को। वर बराह वर चिल्लइय॥
दैवान जोध चहुआन वर। भिरि दुज्जन भर ढिल्लइय॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज के साथ में जाने वाले शिकारी जतुओं की गणना और षट्टू बन में शहाबुद्दीन के दूत का आना।

सत चीता द्वादसति। स्वांन अच्छे सु रंग दह॥
चीय अग्ग चालीस। सीह बर गोस कहंदह॥
सत्तं सत्त बग अच्छ। सत्त दह अग्गति [२]पाजी॥
आषेटक प्रथिराज। वीर ओपम अति राजी॥

---

(१) मो.-वर। (२) ए.-भाजी।

उप्परति राय पट्टूति बर। मिलि बसीठ गोरी सु बर॥
मंगे हुसेन साहाबदी। पंच देस बंटन सु धर॥ छं०॥ ३॥

पृथ्वीराज का सामतों से सलाह लेना।

सुनि राज आषेट। सूर सामंत [1]बुलाइय॥
सुबर साह गोरीस। आनि उप्पर घरि आइय॥
मंगे धर पंजाब। षान हुसेन सु मग्गे॥
इह भत्त अवसान। दिए कग्गद लिषि अग्गे॥
संमुहे सूर सामंत बर। दै मिलान संम्हौ परिय॥
षालंत जेम लग्गत दिवस। भुकि लग्यौ गोरी [2]गुरिय॥ छं०॥ ४॥

दूहा॥ बेगि सूर सामंत सह। मिले आइ चहुआन॥
सिंधु विहथ्थें दूत मिलि। गोरी वै सुरतान॥ छं०॥ ५॥
अनंगपाल तीरथ्थ गय। बंधव रष सुरतान॥
बैर बीर ढिल्लिय [3]तनह। बर मंगै चहुआन॥ छं०॥ ६॥

शहाबुद्दीन के दूत का वचन।

कवित्त॥ बर बसीठ उच्चरै। साहि आनौ पहिलौ ना॥
अप्पौ पहु हुसेन। साहि [4]आनौ दस गुंना॥
कंक बंक करतें। नरिंद कवहुक घर छिज्जै॥
भिर गोरी तिन भरह। रहट घट्टी घट भज्जै॥
दुप्परह छांह दोसै फिरत। भावी गति दिष्षी किनह॥
मिलि थप्पि मत्त प्रथिराज बर। करहु एक बुद्धी सुनह॥छं०॥७॥

पृथ्वीराज का कहना कि ऐ ढीठ बसीठ तू नही जानता कि अभी कौन जीता और कौन हारा राज्य सुख के लिये कर्तव्य छोडना परे है।

(१) मो.-बुलाये। (२) मो.-घुरिय।
(३) मो.-तिनह। (४) मो. आदौ।

अरे ढीठ वस्सीठ। कौन हार्‍यौ को जित्यौ ॥
[1]किन वित्तग वित्तयौ। कोन वित्तग अब वित्यौ ॥
पंच तत्त पुत्तरी। पंच इथ्थन कर नच्चै ॥
अजै विजै गुन बंधि। चित्त तामस रस रच्चै ॥
बंछै जु सुष्ष फल राजगति। वह करतार सु नन करै ॥
उच्चरै किति छल ना रहै। तब लग्गै गल बल परै ॥ छं० ॥ ८ ॥

कहां गजनी है और कहां दिल्ली और कै वार मैंने उसे वंदी किया।

दूहा ॥ कै कोसां ढिल्ली धरा। कै कोसां गज्जान ॥
षंडा सौ [2]कर बंधिया। चहुआना [3]सुरतान ॥ छं० ॥ ९ ॥
मैं रष्यौ *हुस्सेन बर। बर बंध्यौ सुरतान ॥
उठ्ठाए वस्सीठ बर। बर बज्जै नीसान ॥ छं० ॥ १० ॥

दोनों ओर की सेनाओं की सजावट की पावस ऋतु से उपमा वर्णन।

मोदक ॥ दसमत्त पयो लहु, पंच गुरं। षग पन्न हरे विष पत्त [4]बरं ॥
बर सुद्ध प्रयान हुलास छवी। कहि मोदक छंद प्रमान कवी ॥
छं० ॥ ११ ॥
जु सजी चतुरंगन दान दियं। कवि दोउअ सेन उपम्म कियं ॥
[5]सुत षंजन ज्यों बुधगत्ति पढ़ी। सति सीतल [6]बात प्रमान बढ़ी ॥
छं० ॥ १२ ॥
बर रत्त रपत्त सुरत्त बनं। तिन की छबि पावस सज्जि घनं ॥
सु बजे बर बीर निसान बजं। सु मनों घन पावस सज्जि गजं ॥
छं० ॥ १३ ॥

(१) ए. कृ. को.-विन। (२) ए. कृ. को.-बर। (३) ए. कृ. को.-षुरसान।
(४) मो.-हरं। (५) मो.-सत। (६) ए. कृ. को.- बाल।
* हुसेन शब्द से यहां मीर हुसेन से अभिप्राय नहीं है बरन उसके पुत्र से तात्पर्य है जैसा कि समय ११ में भी दिखाया जा चुका है।

बजावत बीर अंजीरन सूर। कँपे सुर बीर पयालमपूर ॥
उड़ि रेन चिहूं दिसि बिछुरियं। सुदरी दृग चठुल घुंघरियं ॥
छं० ॥ १४ ॥

तिह ठौर रसं अप बंधव से। तिनके सुष बाल भुअंग ग्रसे ॥
बर जग्गत नेन सु मेन सुषें। तहां क्रूर नसें नर आइ नचें ॥
छं० ॥ १५ ॥

श्रम सूर तिनं अभिलाष रिनं। बर ग्रह्म बलं बर बंसु तनं ॥
कल किंचित संकर सूर दियं। बर बीर अजादन लाज लियं ॥
छं० ॥ १६ ॥

सहनाइय सिंधुअ बहरियं। तिन ठौर भयानक संचरियं ॥
बर पंच सु दीह ससी चढ़ियं। बर बीर अवाज दिसं बढियं ॥
छं० ॥ १७ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज और पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना।

गाथा ॥ तं बीरं जल गंभीरं। आव यों उप्पटी सेनं ॥
गोरी दिसि चहुआनं। चहुआनं गोरीयं साहि ॥ छं० ॥ १८ ॥

इधर से चहुआन और उधर से शहाबुद्दीन का युद्ध के लिये उत्सुक होना।

कुंडलिया ॥ इह सु राज आतुर [१]परिय। सुरतानह प्रथिराज ॥
भूमि भार कछु [२]बहुयौ। सो उत्तारन [३]काज ॥
सो उत्तारन काज। परे आतुर दोउ दीनह ॥
तिन अर बस चर परे। को इन [४]छुट्टै मति हीनह ॥
अप्पन सुसिंह बहुरे [५]सुरह। चक्कई चक मुक्कै नहीं ॥
अप्पन सुहथ्थ भरही परे। दया न किज्जै मन इही ॥ छं० ॥ १९ ॥

(१) ए. कृ. को.-धरिय। (२) ए. कृ. को.-छंटयौ।
(३) मो.-पार। (४) मो.-छुट्टै।
(५) ए. कृ. को.-सुहर।

शहाबुद्दीन का सिंध नदी तक आना और चहुआन को दूतों द्वारा समाचार मिलना ।

दूहा ॥ चढ़त सिंध सुरतान [1]दल । दूत सपत्ते आइ ॥
 चर चरित्त चहुआन दल । कहै साह सों जाइ ॥ छं० ॥ २० ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना ।

कवित्त ॥ नष्हिन इंद्र प्रथिराज । सोम नंदन सिवरं दिसि ॥
 वर इंद्रह दीसै न । मद्दल मंड्यौ सु दुहु मिसि ॥
 जबहीं हम संचरे । काल तबहीं दिसि पासं ॥
 परत वाह लष्षंत । दिट्ठ देवन सुष वासं ॥
 लच्छीन [2]ग्रीव बस बीर रस । दह दिसि भिरि दानव मिलिय ॥
 मेलान कोस परपंच को । गौरी वै संम्हौ चलिय ॥ छं० ॥ २१ ॥

चहुआन सेना में सूरवीरों का उत्साह करना और कायरों का भय भीत होना ।

दूहा ॥ हुह अवाज चहुआन दल । बंठि सेन सु विहान ॥
 काइर भर सह उच्चरै । कहि बंधन सुरतान ॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ हाइ हाइ कहि साहि । चरनि बरज्यौ सु विहानं ॥
 झुझझ रहै कै [3]जाइ । जु कछु पत्तौ चहुआनं ॥
 बरन मेच्छ वर हिंदु । सुनत रन पन कर हेरी ॥
 जय जानी अन चंप । पंच चतुरंग सु भेरी ॥
 भुअ बीर रूप गोरी सु बर । मुक्कि भयानक [4]भट्ट जिम ॥
 पलटयौ भेष देषत सयन । बर बज्जै नीसान तिम ॥ छं० ॥ २३ ॥

चलते समय सेना का आतंक वर्णन ।

चंद्रायना ॥ बर बज्जिग नीसान, दिसान पयान हुअ ।
 उड्डि उड्डंगिय रेन, सु मेरन्हि भान भय ॥

---

(१) ए. कृ. को.-पुल । (२) ए. कृ. को.-ग्रीय ।
(३) मो.-नीय । (४) मो.-तट्ट ।

गोरी वै भौ राह रयन हर मिग्गई।
गज असवारन ह्वर निव्रत्त सु लग्गई॥ छं० ॥ २४ ॥

शाही सेन की सजावट की वर्णन ।

गीतामालवी ॥ गुर पंच सत्तति चामरे कवि, जोग नव गति संधयौ ॥
सब पाइ पिंगल सावरें लहु, बरन अछ्छिर बंधयौ ॥
लगि गीत मालति छंद चंदय, द्वरि साहित गोरियं ॥
गज मद्द नद्दय छिरइ भद्दय, अननि दिन दिन जोरयं ॥छं०॥२५॥
घन चल्यौ गिरि जनु चले दिस दिस, बीय बग्ग उरव्वरे ॥
तिन देषि मन गति होत पंगुर, दान छुट्टि घटे भरे ॥
गजदंत कंतिय झलकि उज्जल, पिष्षि पंतन रा इयं ॥
रवि किरनि बद्दल पसरि धावै, वाय पंकति सज्जयं ॥छं०॥२६॥
गज करत दंत सुमंत जरध चंद, उप्पम मंडिकै ॥
मनो बग्ग पंतिय वार, [1]उड़गन मोह दिसि सो छंडिकै ॥
धर मत्त दंतिय सेन बंधिय, इम्भ छबि [2]कवि तामयं ॥
मनों मेघ बरषत विज्ज कौंधत, अब्भ वुढ़ि गिरि स्यामयं॥छं०॥२७॥
गति नाग गिरवर गात दीसै, कूट कज्जल उज्जले ॥
धर चलत गिरबर बदन बारुन, स्याम बद्दल हलिचले ॥
[3]झटकंत सुंड दिपंत पाइक, बनि समय पसु पुज्जवै ॥
अति सेन सापरि कोन पुज्जै, जोग जुगति सु [4]लज्जवै ॥छं०॥२८॥
चय लष्ष मीरति साह गोरिय, भार भुब्भभ चलु भभवै ॥
षुरसान षान अरब्ब आरव, सज्जि सेन [5]सभांझवै ॥ छं० ॥ २९ ॥

शहाबुद्दीन का स्वयं सम्हल कर सेना को उत्कर्ष देना कि अब की पृथ्वीराज अवश्य पकड़ लिया जाय ।

भ्रमरावली ॥ सजे बर साह तुरंगम तुंग । लजै कविचंद उपंम कुरंग ॥
सितं सित चोर गुरै गज गाह । तिनं उपमा बरनी मन आइ ॥
छं० ॥ ३० ॥

(१) ए. कृ. को.-उड़न । (२) ए. कृ. को.-इम्भ छबिद्दुता, छविद्दु ।
(३) मो.-झलकंत । (४) ए. पुज्जवै । (५) ए. कृ. को.-अंवझवै ।

जु सजे हय गोरियसाहि घरे। तिन देषि रवी रथ के बिसरे ॥
दिषि सेन तिनं उपमा सु करी। सु मनों नदि पूर छिली दुसरी ॥
छं० ॥ ३१ ॥

[1]कहि चंद कविंद इदं कवितं। गुरु बंक पियं मन कै चढ़तं ॥
बजि बाज कुह्ल धर सद्द षुरं। सु मनों कठतार बजंत तुरं ॥
छं० ॥ ३२ ॥

गज गाह गुरं सित सोभ षगे। मनों सेत बेऊरन भान ढगे ॥
नभ कै तिमरं जित के समरं। मनु उट्ठि किरन्न सु पाल परं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

बिय ओपम चंद बनी बनिकैं। सु धसें मनु गंग तरंगनि कैं ॥
जग हथ्थ बनें हय के सिरयं। गलि प्रब्रत हेम द्रुमं बरयं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

बर पष्षर सोभ करै तनयं। मनु अर्क अरक्क बिचें घनयं ॥
तिनकी हर वाय फुलिंग सजै। सु कहैं कविचंद कुरंग लजै ॥
छं० ॥ ३५ ॥

बुहु रैनन आसन जी डरयं। [2]मग मत्त मनों बहरें बनयं ॥
मन मत्ति तिहां इत अत्ति पढ़ी। हय नष्षत रागन सांस कढ़ी ॥
छं० ॥ ३६ ॥

बिय बाय अरन्नन बंध चढ़ै। कविचंद पवन्नन बाद बढ़ै ॥
सु उडै नन धावत धूरि षुरं। गतिमान सुसील बिसाल उरं ॥
छं० ॥ ३७ ॥

पय मंझत अम्बत आतुरयं। बिरचे नच पातुर चातुरयं ॥
दुहु पार अपार अबद्ध घरी। मनुं गावहि इंदुन बंध धरी ॥
छं० ॥ ३८ ॥

हय अप्पिय षत्तन साहि बरं। जु गहो चहुआन पयाल पुरं ॥
छं० ॥ ३९ ॥

(१) मो.-कविचंद। (२) ए. कृ. को.-मन।

प्रातः काल होते ही जमसोजखां और नवरोजखां का युद्ध के लिये सेना तैयार करना।

दूहा ॥ सबै सेन गोरी सु बर। चढ़िग षान जमसोज ॥
प्रात सेन चतुरंग सजि। उट्ठि षान नवरोज ॥ छं० ॥ ४० ॥

चहुआन का सेना तैयार करना।

चौपाई ॥ ढल[1]मिली ढाल चिहुं दिसि बनाइ। [2]डम्मरी उड़ि आकास छाइ ॥
अचरनचरन गोरीस [3]साईं। सेंन चहुआन हथ्थें बनाईं ॥
छं० ॥ ४१ ॥

दोनों सेनाओं का मुंहजोड़ होना।

दूहा ॥ समर सउप्पर समर किय। चावद्दिसि अरुनग्ग ॥
मुष गोरी चहुआन भिरि। ज्यों रावन लगि अग्ग ॥ छं० ॥ ४२ ॥
चौपाई ॥ समझ्यौ रन चहुआन सपट्ठिय। वजिग वाय सुभिझन [4]नदि उठ्ठिय ॥
धुंधर अन बहर निसि भद्दों। सुभिझ न अंष कन्न सुनि नद्दों ॥
छं० ॥ ४३ ॥

युद्ध समय के नक्षत्र योगादि का वर्णन।

कवित्त ॥ अट्ठ अट्ठ जोगिनिय। सुक्र सम्हौ सुरतानं ॥
दिसा सूल दिसि बाम। बैर कम्हा चहुआनं ॥
सिंघ बाम भैरवी। गहक बोली गोरी दिसि ॥
गुर पंचम रवि नवों। राहु ग्यारमो सुरंग ससि ॥
ईसान मध्य देवी पहकि। गहक मझझ घूघू वहक ॥
आकास मद्धि गज्यौ गयन। परों बूंद बेबंग हक ॥ छं० ॥ ४४ ॥
दूहा ॥ ज्यौं जगदीसह कान दै। तकसौ रन किहुं कीन।
मिलि उत्तर पच्छिमहुं तें। भिरन भरन दोउ दीन ॥ छं० ॥ ४५ ॥

---

(१) मो.-मली। (२) मो.-मम्मरी।
(३) ए..समाई। (४) ए. कृ. को.-न दिट्ठिय।

दोनों सेनाओं में रन वाद्य वजना और उससे सूर वीर लोगों तथा घोड़े हाथी इत्यादि का भी प्रसन्न होकर सिंह नाद करना और क्रुद्ध हो युद्ध करना।

भुजंगी ॥ परे धाइ धीइ दीन हीनं न जुड़े। मुषं मार मारं तिनं मान सड्डे॥
परी आवधं छोड़ वज्जै निसानं। बजे छक्क छूरं दमामें न जानं॥
छं० ॥ ४६ ॥

वढ़ै आवधं हथ्थ सामंत छूरं। घुरैं वै निसानं बजै जैत 'पूरं॥
कढ़े वे सनाहं झनक्के उनंगी। मनों आवधं हथ्थ वज्जै चिनंगी॥
छं० ॥ ४७ ॥

परै पीलवानं मदं 'मरक दंती। ढली ढाल ढालं ढलक्कं तुरंती॥
फुरै हथ्थ जनं मुरक्की उरक्की। मुरै धार धारं सुधारं मुरक्की॥
छं० ॥ ४८ ॥

तुटै सिष्परं कोर फूलै समंती। ग्रस्यौ राह छूरं छटै नभ्भ छुंती॥
परै सार तीरं झनक्कंत बज्जै। सदं तीतरं जेम सों पष्षि गज्जै॥
छं० ॥ ४९ ॥

वहै सीर गोरी पछै दै सभानं। भगे पष्षिनी पंति पावै न आनं॥
तुटै सीस जुझ्झै कमंधंत नच्चैं। चलै रुद्रि धारं चिह्नं पास गच्छै॥
छं० ॥ ५० ॥

धरा भारती गंग पारथ्थ आई। मनों उपठि सो सिंध कों मिलन धाई॥
फुटी वारि धारं चली ईस सीसं। लगे धार धारं रजं रज्जकीसं॥
छं० ॥ ५१ ॥

मनो तप्त लोही परे बूंद पानी। ढुंढी लुथ्थि पावै न नहीं वहानी॥
मनं मोद ले सीस मुद्राइ कीनी। .... ॥ छं० ॥ ५२॥

---

(१) मो.-पूरं। (२) ए. कृ. को.-मरक दंती।

उठं उर्द्ध सीसं उपंमा समूलं। मनो पावकं प्रलय धौं श्रोन सूलं॥
दोऊ दीन धाए मनें कोपरीसं। तिनं क्रोध करि धार आकास सीसं॥
छं० ॥ ५३ ॥

परें लुथ्थि लुथ्थी अलुथ्थी जवै वै। इसौ जुद्ध देषौ न दानव्व देवै॥
छं० ॥ ५४ ॥

लड़ाई होते होते तीसरे पहर शहाबुद्दीन का साम्हने से पृथ्वीराज पर आक्रमण करना।

कवित्त ॥ चतिय पहर पर पहर। वीर घरियार ठनक्किय।
गोरी वै सो हथ्थ। चंपि चहुआन सु [1]तक्किय॥
घरिय इक्क बनि सेन। सूर सामंत परष्षिय॥
धरि ओड़न करि बग्ग। वैर सु विहान परक्किय॥
कर वार धारि सिष्पिर करह। एक होइ [2]उप्पर तरै॥
दिसि वाम चंपि दुज्जन दलह। उसरि सेन सम्हौ भिरै ॥छं०॥५५॥

पृथ्वीराज का अपनी वीरता से शत्रु सेना को विड़ार देना।

षिझ्झि नंष्यौ हूँ नरिंद। भूमि धुज्जिय धुरतारं॥
मनों बद्दर [3]गज्जयत। सद्द पर सद्द पहारं॥
उड्डिय नाल चमंकि। मझ्झ धुंधर छवि लग्गिय॥
रवि ओपम कविचंद। चंद मावस घन उग्गिय॥
अरि सेन भग्गि दिसि विड्डरिय। परे मध्य सेना घनिय॥
धनि धनि नरिंद सोमेस सुअ। इहु अरि तें तिन वर गनिय॥
छं० ॥ ५६ ॥

इस युद्ध में दोनों ओर के मृत सरदारों के नाम।

इत्त षान मारूफ। फिरत उसमान षान ढहि॥
इन दुज्जन हय नंषि। बाग आजान बाह गहि॥

(१) मो.-वक्किय। (२) ए. कृ. को.-सिष्षर।
(३) ए. कृ. को.-गज्जंत, गरजंत।

इतै दीह अथ्थम्यौ। सूर वर सिंधु 'सपत्तौ।
मुकत तट्ट मिलि सूर। स्याम रन अप्प अपत्तौ॥
साषला सूर 'सारंग ढहि। जुरि जुवान पंचाइनौ॥
केहरी गौर अजमेरपति। पऱ्यौ भुज्झि रन भाइनौ॥ छं० ॥५७॥

सूर्य्योदय के समय की शोभा वर्णन।

दूहा॥ निसि घट्टिय फट्टिय तिमिर। दिसि रत्ती धवलाइ॥
सैसव में जुव्वन कछू। तुच्छ तुच्छ दरसाइ॥ छं० ॥ ५८ ॥

दूसरे दिन प्रहर रात्रि रहने से दोनों सेनाओं की तैयारी होना।

कवित्त॥ जाम निसा पाछली। सेन सज्जिय दोउ बीरं॥
सामंता चहुआन। आनि गोरी कछमीरं॥
भान पयानन भयौ। करे द्रिग रत्तइ चट्टिय॥
ता पहिले पायान। जोध रन असुरन कट्टिय॥
चदिहार बीर गोरी सुबर। चाहुआन दिन सुदिन घन॥
करतार हथ्थ किर्त्ती कला। सरन मरन तकसीर नन॥ छं० ॥५९॥

दोनों सेनाओं का परस्पर घोर युद्ध वर्णन।

भुजंगप्रयात॥ पऱ्यौ साहि गोरी सुरत्तान गाजी। चपी 'गज्ज सेना क्रमं पंच भाजी॥
तहां बाहुऱ्यो बीर बीरं नरिंदं। लग्यौ धार धारं सची कित्ति चंदं॥
छं० ॥ ६० ॥

अनी एक मेकं घरी अद्ध पच्छी। फटी सेन गोरी मुरी सो तिरच्छी॥
दोऊ दीन बाहै दोऊ हथ्थ लोहं। पऱ्यौ आनि बाराह पारद्धि रोहं॥
छं० ॥ ६१ ॥

कटे कंध बंधं कमंधं निनारे। मनों पत्त रत्तं वसंतं सुढारे॥
मनं अश्व चल्लैं चलैं हथ्थ रोजं। मनं चित्त चल्ले रवी रथ्थ दोजं॥
छं० ॥ ६२ ॥

(१) मो.-सपत्ती। (२) मो.-सामंत। (३) ए. कृ. को.-राज।

घनं अश्व फेरें चले अश्ववाहं। तिनं की उपंमा कवीचंद गाहं ॥
ग्रहं पत्ति अग्गै रहै ज्यों कुलट्ठं। चितं हत्ति चल्लै अगै स्वामि घट्ठं॥
छं० ॥ ६३ ॥

वरं कज्ज माला ग्रहीं रंभ सथ्थं। चढ़ै धार धारं भिदै रव्वि रथ्थं॥
रही रंभ रंभी टगंटग्ग आई। मनौं पुत्तली कट्ठ करसौं लगाई ॥
छं० ॥ ६४ ॥

हहंकार बीरं हहंकार पाई। मनौं पातुरं चातुरं सो दिषाई ॥
दोऊ बाह सेना दोऊ बीर ठेलं। मनो डिंभूरू जानि [1]हड्डूड षेलं॥
छं० ॥ ६५ ॥

तजे आवधं सब्ब इक तेग साहं। करे भाग बिंबं अरी कोप वाहं॥
जबै विड्डुरी सेन गोरी नरिंदं। दिषे थान थानं मनौं प्रात चंदं॥
छं० ॥ ६६ ॥

परे षान चौसट्ठि दुहुं बाहु राई। दुहू मुक्कती रास कवि कित्ति गाई॥
छं० ॥ ६७ ॥

शहाबुद्दीन का हाथी पर से गिर पड़ना और चहुआन सेना का जोर पकड़ना।

दूहा ॥ परत साहि गोरी सुधर। है गै भूमि भयान ॥
रन रुंध्यौ सुरतान कों। परी बींटि चहुआन ॥ छं० ॥ ६८ ॥

शहाबुद्दीन के गिरने पर सलषराज का आक्रमण करना और यवन वीरों का शाह की रक्षा करना।

भुजंगी ॥ परी बींट गोरी मुरे मीर षानं। तबै साहि गोरी गह्यौ कोपि बानं॥
न को कंध कट्टै चाहुआन तिथ्थं। पर्यौ धाइ पावार भर सलष दिथ्थं॥
छं० ॥ ६९ ॥

लग्यौ सत्त वेनं सुलित्तान साध्यौ। तहां मीर मारुफ अग्गें गुरायौ॥
परी अब्ब भुम्भयौ करी छच धारं। बहै सब्ब सामंत विचि तौन धारं॥
छं० ॥ ७० ॥

---

(१) ए.-हड्डूडड्डूड।

तुटे आवधं सब्ब अरि हथ्थ लाजी । तबै आइ सीसं [1]गुरज्जं त वाजी॥
गजं गहन प्राहार निठ्ठं ढहायौ। तबै गज्जनी साह पावार साह्यौ ॥
छं० ॥ ७१ ॥

जैतराव (प्रमार) का शहाबुद्दीन को पकड़ कर पृथ्वीराज के सम्मुख प्रस्तुत करना।

कवित्त ॥ गहि गोरी सु विहान । हथ्थ आप्पौ चहुआनं ॥
चामर छत्त रषत्त । तषत लुट्टे सुरतानं ॥
गोरी वै हुस्सेन । वीर [2]तुट्टे आहुट्टिय ॥
मान तुगं चहुआन । साहि सुष के बल छुट्टिय ॥
मध्यान भान प्रथिराज तप । बर समूह दिन दिन [3]चढ़े ॥
जस जोति मंत संभर धनिय । चंद बीज जिम बर बढ़ै ॥छं०॥ ७२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके राजा आषेटक मध्ये गोरी पातसाह आगमन जैतराइ पातिसाह बंधन नाम चौतीसमो प्रस्ताव संपूर्णः ॥ ३४ ॥

(१) ए. कृ. को-गुरं गुरज । (२) ए. कृ. को.-षुटे । (३) मो.-बढ़े ।

अथ कांगुरा जुद्ध प्रस्ताव लिष्यते ।

(पैंतीसवां समय ।)

पृथ्वीराज से जालंधर रानी की माता का कहना कि मैं कांगड़ा दुर्ग को जाना चाहती हूं और आप इस का वचन भी दे चुके हैं ।

कवित्त ॥ कितक दिवस [1]निस मात । आइ जालंधर रानी ॥
कहै राज सों बचन । हूं सु कंगुर द्रुग जानी ॥
तो तुट्ठी कर पान । लेह मैं वाचा दष्षिय ॥
भोट भान धुर जीति । पल्ह पच्छैं फिरि चष्षिय ॥
हम्मीर भीर अग्गें करै । दल [2]भज्जै मति सत्ति करि ॥
बरनी सु लच्छ लच्छी सहज । परनि राज आवहु सु घर ॥छं०॥१॥

पृथ्वीराज का कांगड़े के राजा के पास दूत भेजना ।

दूहा ॥ चलिय राज कंगुर दिसा । [3]दयौ [4]भाट फुरमान ॥
कै आवै हम सेव पय । कै जीत्तौं न्रप भान ॥ छं० ॥ २ ॥

दूत के बचन सुनकर कांगड़े के राजा भान का क्रुद्ध होकर दूत को डपटना ।

कवित्त ॥ तब सुनि भान नरिंद । सबद उब्भार अतुर बर ॥
रे जंगली जुवान । मोहि पुज्जै अप्पन बर ॥
[5]जो षजूआ अति तेज । तोइ का दिनयर लोपै ॥
[6]जो इषना अति छूर । तोइ का [7]भाठी कोपै ।

---

(१) मो.-मिस । (२) मो.-भग्गे ।
(३) मो.-दिसौ । (४) ए. कृ. को.-भोट ।
(५) ए. कृ. को.-जौ षजुआ । (६) ए. कृ. को.-जौ इषदा । (७) मो.-भाषी ।

छूं नीति जानि अन्नित न करि। तूं लोभी आतुर अतुर ॥
इनि बात मोहि आगे अवन। आई फुनि जैहै सु तुर ॥ छं० ॥३॥

दूत का पीछे आकर पृथ्वीराज को वहां की बात निवेदन करना।

दूहा ॥ सुनि ह दूत पच्छौ फिऱ्यौ। कही राज सों बत्त ॥
तमकि तीन लीनौ न्रपति। मनों सुजोधन पथ्थ ॥ छं० ॥ ४ ॥

इधर से पृथ्वीराज का चढ़ाई करना उधर से भानराज का बढ़ना और दोनों में युद्ध छिड़ना।

कवित्त ॥ चढ़िग राज प्रथिराज। सथ्थ सामंत सूर भर ॥
है गै रथ चतुरंग। गोरि जंबूर नारि सर ॥
कूंच कूंच अरि भान। आइ अड्डो घग बज्यौ ॥
अनु कि मेघ में बीज। तमकि तातौ छोड़ रज्यौ ॥
आवत झरत झारत परत। श्रोन धार ¹धर पैर चलि ॥
इत उत्त सूर देषै सरत। घरी पंच रवि रथ न हलि ॥ छं० ॥ ५ ॥

युद्ध वर्णन और उस समय योगिनियों का प्रसन्न होकर नृत्य करना।

दूहा ॥ भिरत भान अति छोह करि। जन जन मुष मुष जानि ॥
घोर विछुट्टी दामिनी। सब चकचौंधिय आनि ॥ छं० ॥ ६ ॥
कवित्त ॥ घग वाहिय भिरि भान। अरिन अद्धर धर किन्नौ ॥
जय जय मुष उच्चार। सीस उम्मापति लिन्नौ ॥
रिझ्झह लिंग उत मंग। अमिय विष अंग सु ढरयौ ॥
ठंडौ मंडि अतंध। नहि भौ अंग जु परयौ ॥
बीभच्छ भयानक भय उमा। रुद्र रुद्र मुष हास हुअ ॥
सिंगार बीर अच्छर बरन। नव रस सुनहिं नरिंद दुअ ॥ छं० ॥ ७ ॥

(१) ए.-उर।

युद्ध से प्रसन्न हो गंधर्वों का गान करना।

दूहा ॥ सम भिलाष गंधर्व [1]हुअ। नारद तुम्मर गान ॥
संकर काल किंचित भयौ। चाहुआन प्रम्मान ॥ छं० ८ ॥

पृथ्वीराज का जय पाना ।

कवित्त ॥ जीति समर भिरिभान। परी अरि मग्ग अरिट्टह ॥
रन मुक्कि न ग्रह [2]गइय। बरत अच्छरि नन दिट्ठह ॥
कहुं त मंस कहुं अंस। हंस कहुं सस्त्र बस्त्र कह ॥
ब्रह्मथान शिवथान। थान देषिय न अम्म जह ॥
दीयौ न अगनि रवि भेद ननि। तत्व जोति जोतिह मिल्यौ ॥
इह दीष चरित प्रथिराज ने। कवित [3]एह जुग जुग चल्यौ ॥
छं० ९ ॥

सायंकाल के समय राजा भान की सेना का भागना ।

इह परंत चहुआन। मोष लभ्यौ सु रथं रवि ॥
दिन पूरन पुनि भयौ। मिटे झंकुरन भान छवि ॥
दिन पूरन पुनि भयौ। हरह भग्गी [4]उतकंठं ॥
भग्गि मनोरथ रंभ। [5]ब्रह्म भग्गी चित गंठं ॥
झल ढलत नीर काइर मुषन। प्रलय सुभर रनरत्त रह
दिन पति पतन्न सह तप्प तन। भान भान भेदंत [6]नह ॥छं० ॥१०॥

राजा भान का शोच वश होकर कंगुर देवी का ध्यान करना और देवी का कर कहना कि में होनहार नही मेट सकती ।

तब कंगुर पालहंन। चित्त चिंता उप्पन्नी ॥
सुनि भोटी भर मरन। सरन कोइ सुद्धि न मन्नी ॥

(१) मो.-भय । (२) मो.-नइय
(३) मो.-एक । (४) मो.-उप कंठं । (५) ए. कृ. को.-प्रतियों में "चतुराननन भगिंचत टारि रथ मग्ग मुर्म्मली" (सुगत्ती) अधिक पाठ है । (६) मो.-सह ।

निसि अंतर करि ध्यान। मात कंगुर आराधी ॥
सो आई न्रप सुपन। कहै सुनि बात अगाधी ॥
[1]सोभति अनेक आनै न को। मो सेवा को परि लहै।
भावी विगत्ति हौं प्रक्कति हौं। तो प्रधान झूठह कहै ॥ छं०॥ ११ ॥

सवेरा होतेही भोटी राजा का मंत्री को बुला कर स्वप्न का हाल सुनाना।

चौपाई ॥ वचनन मात कही समझाइय। निसि पल भूमित गमत बल आइय ॥
भोटी न्रप कन्हा [2]पै आइय। काली कन्ह कि हंकि अगाइय ॥
छं० ॥ १२ ॥
तब कन्हा परधान बुलाइय। मात वचन की जुगति सुनाइय ॥
दिल्लीपति दल लै चढ़ि आइय। करौ सुमति जिहि होइ भलाइय
छं० ॥ १३ ॥

प्रधान कन्ह का कहना कि मेरे रहते आप कुछ चिंता न करें मै शत्रु का मान मर्दन करूंगा।

अरिल्ल ॥ का चिंता सु विहानं। * कन्ह होइ जाकै परधानं ॥
स्वामि वचन किन्नौ परमानं। लरि भंजौ दुज्जन चहुआनं ॥
छं० ॥ १४ ॥

भोटी राजा भान का अपने स्वप्न का हाल कहना।

कवित्त ॥ सो सुपनंतर राज। रैन दिट्ठौ सु कह्यौ रचि ॥
बर बंसी [3]ससिपाल। पल्ह आयौ सु सेन सचि ॥
लष्ष एक असवार। लष्ष दह पाइल भारी ॥
अप्प सेन उप्परें। जुगं जुग गहि उचारी ॥
धरि अद्ध अद्ध अप सेन मुरि। पच्छि उररि दुज्जन परिय ॥
चढ़ि गयौ बीर परबत गुहा। सामंता कुंडल फिरिय ॥ छं० ॥१५॥

---

(१) ए. कृ. को. मो भति। (२) ए. कृ. को.-पै।
* राजा भानराय भोटी के प्रधान कर्मचारी का नाम "कन्ह" था।
(३) मो.-सिसुपाल।

पृथ्वीराज का रघुवंसराय और हाहुलीराय हम्मीर को कंगुर गढ़ पर आक्रमण करने की आज्ञा देना।

बर रघुबंस प्रधान। राज मंत्री बिचारिय ॥
बोलि बीर हम्मीर। भेद आनै धर सारिय ॥
बाट घाट बन जूह। धरा पब्बर नद घाटं ॥
अव्व जान न्त्रिमान। कोन पड्डर [1]बन बाटं ॥
अगवान देहु नारेन बर। कछुक मंत जंपौ सु तुम ॥
जालंधराज जंबू धनी। स्वामि भ्रम्म [2]मंडहित हम ॥ छं० ॥ १६ ॥

हाहुली राय का कहना कि इस दुर्गम बन प्रान्त को सहज ही जीतूंगा।

सुनि हाहुलि हम्मीर। हथ्थ जोरे न्त्रप अग्गं ॥
सकल भूमि को भेद। राज जानै ए भग्गं ॥
अति सु बिकट बन जूह। चढ़े संग्राम न होई ॥
अश्व पाय गज पाइ। चढ़न किहि ठौर न कोई ॥
बन बिकट जूह परबत गुहा। बर बेहर बंकम बिषम ॥
दारुन भयानक अति सरस। बर प्रस्तर नहिं जल सुषम ॥
छं० ॥ १७ ॥

कंगुर गढ़ के पहाड़ जंगल इत्यादि की सघनता और उसके विकटपन का वर्णन।

भुजंगी ॥ बनं जा विषंमं बिषं बाज कंटं ॥ घनं व्याघ्र आघातता नद घंटं ॥
षहं जा षजूरी घनं जूथ भोरं। जिनै बास आसं लगे पंक मोरं ॥
छं० ॥ १८ ॥

घनं पामरं जाति बंधे धमंकी। गिरं देखतें गत्ति भाजै ममंकी ॥
भरै भरनिं भोरं सु आघात सोरं। [3]जितें सहया सह ता अंग मोरं ॥
छं० ॥ १९ ॥

(१) मो.-बर। (२) मो.-मंडहि नं हम। (३) मो.-जिनें।

हयं तज्जि राजं चलै हथ्थ डोरं। दुवं दुक्क पच्छै विपं जन्न जोरं॥
बजै सद्द सद्दं परछंद उट्ठै। सुनै कन्न सोरं सु धीरज्ज छुट्टै॥
छं० ॥ २० ॥

दुवं छोड़ राजं पयं सत्त [1]रुद्धै। दियै हथ्थ तारी तिनं कोन [2]बद्धै॥
तबै मुक्कले राज नारेन वीरं। मनं मग्ग मग्गं सधै दुक्क तीरं॥
छं० ॥ २१ ॥

न्वपं काम नाही [3]प्रधानं प्रवानं। दोऊ सेन रघुवंस अरिसेन भानं॥
छं० ॥ २२ ॥

उक्त दोनों वीरों का घुड़चढ़ी सेना को हुसैन खां के सुपुर्द करके आप पैदल सेना सहित किले पर चढ़ाई करना।

दूहा ॥ मानि मंत चहुआन कौ। मुकलि दीय दोइ वीर॥
ताजी तुंग समप्पियै। [4]षां हुसेन दिय भीर॥ छं० ॥ २३ ॥

नारेन और नीति राव का घोड़ों पर सवार होकर चढ़ाई करना।

कवित्त ॥ तब लगि पान सु पान। हथ्थ नारेन मंडिलिय॥
नमि चरननि कर बाहि। रोस आरोहि अंषि विय॥
ताजी तुंग सु अप्पि। जेन रुक्के बर विय करि॥
नीतिराव कुटवार। संग दीनौ नरिंद बरि॥
बारंग वीर बज्जर बहिर। निधि निसान बज्जे सुभर॥
नेपुरह अप्प बरनी बरा। जस मुकट्ठ प्रथिराज बर॥ छं० ॥ २४ ॥

कंगुर द्रुग पर आक्रमण करने वाले वीरों की प्रशंसा वर्णन।

बर भरियं बर अप्प। लियौ फुरमान नरिंदं॥
लाज राज विंटयौ। जानि पारस विष चंदं॥
ज्यौं काज श्रीराम। सु छल हनमंतह तैसे॥

---

(१) ए. कृ. को.-रुंधै। (२) ए. कृ. को.-बंधै।
(३) ए. कृ. को-प्रथानं। (४) ए.-खान।

स्वामि काज सामंत। कियौ धर मझझझव जैसे ॥
अस तिलक हथ्थ चहुआन कौ। दुज्जन दल जित्तन चल्यौ ॥
रवि वार सुरंग सु सत्त में। गुन प्रमान जंबुअ षुल्यौ ॥ छं० ॥ २५ ॥

नारे (पीठ की सेना के नायक) के चढ़ाई करते ही शुभ शकुन होना।

पद्धरी ॥ नारेन जंबु गढ़ चढ्यौ काज। बोलहित वाम कौदहति ताज ॥
दाहिने म्रग्ग संमुह फुनिंद। मौरूप बोल बोलहित इंद ॥
छं० ॥ २६ ॥
हंकरै सिंह कोदहति वाम। उत्तरै [1]देवि दाहिन सु ताम ॥
दिसि वाम कोद घू घू टहक्क। फुनि करै हक केकी पहक्क ॥
छं० ॥ २७ ॥
उत्तरै [2]दार वाराह [3]सथ्थ। डहकरै सांड़ दिसि वाम तथ्थ ॥
[4]बन्नर विरूर दाहिनै सद्द। सुनियै न क्रन्न नंदनी नद्द ॥ छं० ॥२८॥
[5]कुरलंत वाम सारस समूह। मुक्कइ न गिद्धि पच्छै अजूह ॥
कुरलेत काग्ग चित्तहत हीन। हंसौय वाम आनंद कीन ॥छं० ॥२९॥
हां कहत हल्ल करि गढ्ढ मथ्थ। चहुआन पिथ्थ रिझझेव तथ्थ ॥
हाहुल्लराव दीनौ विरद्द। आनंद बज्जि नीसान नद्द ॥ छं० ॥ ३० ॥

सेना का हल्ला कर के क्रोध से धावा करना।

दूहा ॥ हां कहतें ढीलन करिय। हलकारिय अरि मथ्थ ॥
* तायें विरद हमीर को। हाहुलि राव सु कथ्थ ॥ छं० ॥ ३१ ॥
चढ़ि चल्ले बंदन [6]सुकन। भागह जे प्रथिराज ॥
बर प्रबत बैदेस सधि। बीर बजौ रन बाज ॥ छं० ॥ ३२ ॥

युद्ध और वीरों की वीरता वर्णन।

(१) मो.-देव। (२) ए. कृ. को.-डार।
(३) ए. कृ. को.-रत्थ, हथ्थ। (४) ए. कृ. को.-बंदर।
(५) कृ.-कुरलेत। (६) मो.-सगुन।
* छंद नं. ३० का आधा और ३१ संपूर्ण मो. प्रति में नहीं है।

पद्धरी ॥ आएस लीन जुग्गिन नरेस। सजि सिलह सुभर मंडी सु भेस ॥
सिंगिनी सुथ्थ गौ गंठि आल। धरि अंग पतंग भै पाति [1]काल ॥
छं० ॥ ३३ ॥

नेजा सुरंग बंबरि विपान। पट्टार टंक षंचे कमान ॥
धज सुरँग रत्त गजराज हालि। जानं कि भमि बद्दलति चालि ॥
छं० ॥ ३४ ॥

अति दुत्त दहकि धर धरकि हल्लि। चतुरंग सेन चिहुं पास चल्लि ॥
चासंत तीर सब तुंग मानि। गढ़ मुक्कि गढ़ ओछंडि थान ॥छं०॥३५॥

आवाज बज्जि दस दिसा मान। भूमियां संकि गय मुक्कि थान ॥
वल्लभ सु बाल गय बाल मुक्कि। रो रथ्थ नारि चकि नय सु चक्कि ॥
छं० ॥ ३६ ॥

पट्टे दुकूल नग नगन चट्टि। मंगलिक जानि वद्धौर कढ्ढि ॥
[2]फुटि अंसु वास रस गत दिषाहि। नौग्रह सु हेम गिरि मझ्झ गाहि ॥
छं० ॥ ३७ ॥

नंषैति हार कहुं बाल नारि। तिन की उपंम बरनी सुभार ॥
तुट्टंत मुत्ति पग पगन मान। नंषंत तीय पिय को निसान ॥
छं० ॥ ३८ ॥

के दुरत धाइ चित चित्तसाल। जानहिं सुचित्त पुत्तलिय बाल ॥
ता मध्य आइ रहै पंचि सास। मानहु कि रचि चित्तह विलास ॥
छं० ॥ ३९ ॥

सुर सुकी दीन भइ बाल बाम। अग्गै सुबाल दीसहि सु ताम ॥
कविचंद सु ओपम एक वार। उतन्यो राइ रूपह सवार ॥
छं० ॥ ४० ॥

चित्तहति साल रष्षौति बाल। भइ परहि बंदि ते तिहति काल ॥
दभ्भवे [3]वाहि मदिरत्ति रिझ्झि। चल्लै न पाइ मानं उलझ्झि ॥
छं० ॥ ४१ ॥

(१) ए. कृ. को.-षाल।
(२) ए. कृ. को.-फेटे, फेट्टे। (३) मो.-नाहि।

देषंत सुमन गति भई पंग। रुठ्ठई काम रति कोटि रंग॥
नठ्ठई उगति तिन देषि बाल। मानो कि रास मभझें गुपाल॥

अकेले रघुवंस राम का किले पर अधिकार कर लेना।

दूहा॥ बंस दुजन घर गाहि फिरि। तब लगि दुजति सपन्न॥
एकाकी रघुवंस ने। लै गढ़ सबर प्रपन्न॥ छं०॥ ४३॥

सब सामंतों का सलाह करके (रामरेन) रामनरिंद को गढ़ रक्षा पर छोड़ना और सब का गढ़ के नीचे पृथ्वी-राज के पास जाकर विजय का हाल कहना।

कवित्त॥ सबै सूर सामंत। पलह बंध्यौ गढ़ लिन्नौ॥
थप्यौ राम नरिंद। हथ्थ फुरमान सु [1]दिन्नौ॥
तुम रहियौ इन थान। जाइ कंगुर सँपत्तौ॥
मिलौ जाइ प्रथिराज। राज सम्हौ प्रापत्तौ॥
आनंद फते तप तुभ्भ बल। धन समूह आइय सु धर॥
सुभ्भर सुघाइ तेरह परे। बिय दाहिम्म नरिंद बर॥ छं०॥ ४४॥

सब भोटी भूमि पर चहुआन की आन फिर जाना और भान रघुवंस का हार मान कर पृथ्वीराज को अपनी पुत्री व्याहना।

सबै भूमि अरि गाहि। आन फेरी चहुआनं॥
पऱ्यौ भान रघुवंस। बीर बंधे फुरमानं॥
माल्हन वास नरिंद। राज रष्यौ तिन थानं॥
बर बंध्या अरि साहि। षून कढ्यौ परवानं॥
बर बरनि बीर प्रथिराज बर। बर रघुवंस बुलाइयौ॥
दिन देव दसमि बर भूमि बर। तदिन सु रंगन पाइयौ॥छं०॥४५॥

नियत तिथि पर व्याह होना।

(१) ए. कृ. को.-लिन्नौ।

दूहा ॥ परिनि वीर प्रथिराज बर। बर सुंदरी सु लच्छ ॥
देव व्याह दुज्जन दवन। दिन पद्धरी सु श्रच्छ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

भोटी राज की कन्या के रूप गुण का वर्णन।

कवित्त ॥ [1]दच्छिन हत्त सुनाभि। तुंग नासा गज गमनी।
सासनि गंध रु पंजु। कुटिल केसं रति तरनी ॥

(१) मो.-द्रिषत।

बर जंघन म्रदु पंथ। कुरँग लज्जे छबि हीनं॥
इह ओपम कविचंद। हथ्थ करतार सु कीनं ॥
बर बरनि वीर प्रथिराज बर। घन निसान बज्जै सुबर।
जंबूत्र राव हम्मीर ने। ध्रम्म काज दीनौ [1]सुधर ॥ छं० ॥ ४७ ॥

भोटी राज की तरफ से जो दहेज दिया गया उसका वर्णन और पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर नव दुलहिन के साथ भोग विलास करना।

बर बरनी दै हथ्थ। गुंट अप्पे जु एक सौ ॥
चौर म्रगंमद मधुर। च्रम्म दीनि सु सत्त सौ ॥
अठ्ठ सुरंग गजराज। बाज ताजी सौ दासी ॥
बर लच्छी चतुरंग। चंद [2]पिष्षिय सोभासी ॥
ढिल्लीव नाथ ढिल्ली दिसा। अरिन जीति बर परनि कै ॥
संजीव काम बोलिय सु लिंग। बर निसान बर बरनि कै ॥छं०॥४८॥
दूहा ॥ आयौ न्नप ढिल्ली पुरह। बर बज्जे न्रिघोस ॥
डोला पंच नरिंद सँग। मधि सुंदरी अदोष ॥ छं० ॥ ४९ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके कांगुरा विजे नाम पैंतीसमों प्रस्ताव संपूर्णः ॥ ३५ ॥

(१) ए. कृ. को.-जु कर। (२) ए.-दिप्पी।

अथ हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(छत्तीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का शिकार के लिये षट्टूपुर जाना।

दूहा ॥ इक तप पंग नरिंद कौ । सुनि अवाज सुरतान ॥
आषेटक प्रथिराज गय । षट्टूपुर चहुआन ॥ छं० ॥ १ ॥

रणथंभ में राजा भान राज्य करता था उसकी हंसावती नामक एक सुंदर कन्या थी, और चँदेरी में शिशुपाल वंसी पंचाइन नाम राजा राज करता था।

कवित्त ॥ रा जद्दव रिनथंभ । भान पंचाइन भारी ॥
हंसावति तिन नाम । हंसवति गत्ती सारी ॥
[1]अवनि रूप सुंदरी । काम करतार सु कीनी ॥
मन मनवै विचार । रूप सिंगार स लीनी ।
लष्यन वतीस लच्छी सहस । अति सुंदरि सोभा सु कवि ॥
अस्तम्म उदै वर [2]चक्र बिच । दिष्षि न कहुं चक्रंत रवि ॥छं०॥२॥

हंसावती की शोभा वर्णन।

नाग बेनि सुनि पीन । कंति दसनह [3]सोभत सम ॥
अंषि पदम पच मनु । भाल अष्टम रति प्रतिक्रम ॥
सिषा नाभि गज गत्ति । नाभि दछना द्रुत सोभै ॥
सिंघ सार कटि चारु । जंघ रंभा जुषि लोभै ॥
सुंदरी सीत सम वरि चरित । चतुर चित्त हरनी विदुष ॥
सत पच गंध सुष ससिय सम । नैन रंभ आरंभ रुष ॥ छं० ॥ ३ ॥

---

(१) मो.-अवरि । (२) को.-चक्र । (३) मो.-सोभतं ।

चँदेरी के राजा का हंसावती पर मोहित होकर रणथंभ को दूत भेजना।

गाथा ॥ बर बंसी [1]ससिपालं। चिंसं जस संभलं बालं ॥
मन बयनं तन [2]बड्डै। रिनथंभं [3]मुक्कवै दूतं ॥ छं० ॥ ४ ॥

चँदेरी के दूत का रणथंभ में जाकर पत्र देना।

अरिल्ल ॥ दूत आइ बर वीर सपत्ते। कग्गद हथ्थ दिए बर तत्ते ॥
हंसावति अप्पै बर [4]रंभं। तजौ वेग उभ्भौ रिन थंभं ॥ छं० ॥ ५ ॥

रणथंभ के राजा भानुराय का क्रुद्ध होकर उत्तर देना कि मैं चंदेरी पति से युद्ध करूंगा उसके घुड़कने से नहीं डरता।

कवित्त ॥ रा जहव रिन भान। तमकि कर चंपि सुहट्ठी ॥
बर रनथंभ उत्तरी। बीर बस्सी [5]अहुट्ठी ॥
बर कग्गद [6]कर फेरि। सुभ्रि करियै बर राजन ॥
मतै बैठि कुंडली। भ्रम्म छत्री जिन भाजन ॥
बुल्लइ न एन दुज्जन भिरन। तरन तार साधन मरन ॥
बर बीर जुद्ध चालुक रन। हकायौ दुज्जन भिरन ॥ छं० ॥ ६ ॥

कुंडलिया ॥ रिन थंभइ वर उप्परै। चढ़ि गट्ठौ करि साहि ॥
हंस मरत रा भान कौ। धसि उप्पर धर धाइ ॥
धसि उप्पर धर जाइ। सुजस जंपै सब कोई ॥
जोग मग्ग लभ्भनइ। षग्ग मग्गइ मत होई ॥
अलप आव संसार। सिद्ध साधकइ अथंभइ ॥
सब्ब जोग सइकम्म। सब्ब तीरथ रनथंभइ ॥ छं० ॥ ७ ॥

---

(१) मो.-शिशुपालं। (२) मो.-बढ्ढे।
(३) ए. कृ. को.-मुक्कले, मुकले। (४) ए. कृ. को.-उभ्मं।
(५) ए.-उहठी। (६) ए. कृ. को.-वर।

चँदेरीपति का कुपित होकर रणथंभ पर चढ़ाई करना।

कवित्त ॥ सुनि बंसी ससिपाल। बीर पंचाइन कोप्यौ।
सद्द मद्द गज जेमि। तमसि धीरज सम लोप्यौ ॥
रिनथंभह दिसि थंभ। दियौ बर बीर मिलानं ॥
गय हय दल चतुरंग। सजे तिन बेर प्रमानं ॥
बर बीर अग्ग बसीठ चलि। राजही संमुह दिसा ॥
परनाइ कुंअरि हंसावती। सु बर कोपि आयौ निसा ॥ छं० ॥ ८ ॥

चँदेरीपति का एक दूत राजा भान को समझाने को भेजना और एक शहाबुद्दीन के पास मदत के लिये।

दूहा ॥ जस बेली रिनथंभ न्रप। फल पच्छै न्रप आइ ॥
रा जद्दव सुरतान सौं। कहि बर जाइ सुधाइ ॥ छं० ॥ ९ ॥

स्त्री के पीछे रावण दुर्योधन इत्यादि का मान प्राण और राज्य गया।

कवित्त ॥ सीय [1]रष्षि रावनह। लंक तोरन कुल षोयौ ॥
कपट रष्षि दुरजोध। षग्ग षोहनि दल [2]गोयौ ॥
मंतहीन बर चंद। कियौ गुरवार सुहिल्लौ ॥
क्रम्म रष्षि रघुराइ। अजौ जान्यौ न पहिल्लौ ॥
रनथंभ मंडि छंडी [3]सरन। भिरन कहौ बर बीर सब ॥
ससिपाल बीर बंसी [4]बिलस। हम देषै आयौ सु अब ॥ छं० ॥ १० ॥

जीव रक्षा के लिये देव दानवादि सब उपाय करते हैं।

जीवन बलह विनोद। अलह लच्छी धन मंगहि ॥
जीवन बलह विनोद। आस आसन्न असुर गहि ॥

---

(१) ए.-रषी। (२) मो.-षोयौ।
(३) ए. कृ. को.-रसन। (४) मो.-विमल।

जा जीवन सुंदर। सुगंध बर बंधव लोकै ॥
जा जीवन काजें। कपूर पूरन प्रभु कोकै ॥
जा जियन देव दानव मिलन। किलमन कखि आवन गवन ॥
तिन भवन छंद छंडित गहर। तजित तुंग तन सो भवन ॥छं०॥११॥

भानुराय यद्धव का बसीठ की बात न मानना।

दूहा ॥ रा जद्दव बर भान नैं। बहु मंग्यौ बर दट्ट ॥
बाजी बार पयानरै। तुंगी तेरह ठट्ट ॥ छं० ॥ १२ ॥

बसीठ का लौट कर चँदेरीपति की फौज में जा पहुंचना।

इह सुनि बीर बसीठ उठि। भानह हल्यौ न हल्ल ॥
तीस कोस सम्हौ मिल्यौ। बर पंचाइन दल्ल ॥ छं० ॥ १३ ॥

पंचाइन की सहायता के लिये गजनी से नूरीखां हुजावखां आदि सरदारों का आना।

कवित्त ॥ अग्गिवान उजबक्क। धाइ भाई परवानिय ॥
ता पच्छैं साहाब। षान बंधे तुरकानिय ॥
ता पच्छैं नूरी हुजाब। सेई संचारिय ॥
केलीषान कुलाह। सब्ब सेनी कुटवारिय ॥
बानिक्क बीर दुसह सुजर। भाइ षान रन थंभ बर ॥
ससिपाल बीर बंसी विलस। बर आयो रनथंभ पर ॥ छं० ॥ १४ ॥

दोनों घनघोर सेनाओं सहित चँदेरी के राजा का आगे बढ़ना।

दूहा ॥ पंचाइन बल पष्वरै। [1]यह रनथंभह काज ॥
कंक बंक बर कट्टनह। चढ़ि चल्ल्यौ रन राज ॥ छं० ॥ १५ ॥

चँदेरी राज की चढ़ाई का वर्णन।

भुजंगी ॥ ससीपाल बंसी चढ्यौ कोपि रथ्थं। मनों बंक चक्रं धस्यौ आनि पथ्थं ॥
जलं जुब्बनं जूय धावै दुरंगा। करै कूंच उंचं [2]उरज्जैं तुरंगा ॥छं०॥१६॥

---

(१) ए. कृ. को.-हथ, हथ्थ। (२) मो.-उरझै, उरौ।

कहै बत्त रत्ती मुषं रत्त आही। कहैं अश्व आठू रनंथंभ ढाही॥
ससीपाल बंसी चंदेरीय रायं। उभौ छच सीसं कवी देषि गायं॥
छं०॥ १७॥

नगं पंति मुत्ती सिरं हेम दंडी। ग्रहं अट्ठ मानौं ससी मेच्छ मंडी॥
फिरी पंति राई रिनंथंभ घेऱ्यौ। मनौं भावरी भान सुम्मेर फेऱ्यौ॥
छं०॥ १८॥

रनथंभपति भान का पृथ्वीराज से सहायता मांगना।

दूहा॥ घन घेऱ्यौ रिनथंभ पर। लिषि ढिल्ली परवान॥
तब जद्दव रा भान ने। दिय कग्गद चहुआन॥ छं०॥ १९॥

भानराय का पृथ्वीराज को पत्र लिखना।

कवित्त॥ रा जद्दव बीराधि। बीर गुज्जह अनुसरयौ॥
हयदल पयदल गज। अरोहि रिनथँभ यौं अरयौ॥
धंधेरा धंधेल। चंद ससिपालह वंसिय॥
अध लष दलहि हिलोर। जोर गरुवंतं गंसिय॥
हम्मीर राव हाड़ा हठी। षीची राव प्रसंग दुह॥
प्रारंभ करै संभरि धनी। जौरै बंध षुमान सह॥ छं०॥ २०॥

उक्त पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का समर सिंहजी के पास कन्ह को भेजना।

दूहा॥ सुनि कग्गद चर चिंत कैं। तिथि सातैं चहुआन॥
समर सिंघ रावर दिसा। गुर जन मुक्यौ कान्ह॥ छं०॥ २१॥

कन्ह का समरसिंह के पास पहुंच कर समाचार कहना।

कवित्त॥ वर पंचाइन सबर। सबर बंसी ससिपालं॥
घेऱ्यौ तिन रनथंभ। सुबर जंपे बर कालं॥
भान बीर पुकार। धाइ आई ढिल्लीवै॥
अब अब पहु पंग। सथ्थ अबौ बर है वै॥

जोगिंदराव जग हथ्थ बर। मद्दन रंभ उप्पर सबर॥
कालंक राइ कप्पन बिरद। [1]तुम आवौ रचि सेन बर॥ छं०॥ २२॥

समर सिंह जी का सेना तैयार करके कन्ह से कहना कि हम अमुक स्थान पर आ मिलेंगे।

दूहा॥ चित्रंगी चतुरंग सजि। बर रनथंभ सु काज॥
बर सचेट रावर समर। आवन बंदि प्रथिराज॥ छं०॥ २३॥
चलत कन्ह चहुआन बर। कहि चतुरंगी राज॥
तुम अग्गैं हम आइहैं। आवन सुधि प्रथिराज॥ छं०॥ २४॥

तथा यहां से रनथंभ केवल ६५ कोस है इसलिये तुम से आगे जा पहुंचेंगे।

पंच कोस बर सठ्ठि अग। चीतौरह रनथंभ॥
तुम अग्गैं हम आइहैं। मद्दन रंभ आरंभ॥ छं०॥ २५॥

कन्ह का कहना कि पृथ्वीराज का दिल्ली से तेरस को चले हैं और राजा भान पर बड़ी बिपत्ति है।

कवित्त॥ मद्दन रंभ आरंभ। कन्ह चालत मन मंडिय॥
अठ्ठ दीह हम अग्ग। राज तेरसि ग्रह छंडिय॥
बर बंसी ससिपाल। गंज लग्गिय न्रप [2]भानं॥
धरति धवर [3]तह नाम। सेत मिसि देही दानं॥
अग्रहन ग्रहन रिनथंभ मति। इह सुमित्र आयौ पहन॥
कालंक राइ कप्पन बिरद। मद्दन रंभ बक्यो बदन॥ छं०॥ २६॥

समरसिंह का कहना कि हमारे कुल की यह रीति नहीं है कि शरणागत को त्यागें और बात कह के पलटें।

(१) मो.- तुम आओ सेना बरन।
(२) ए. कृ. को.-मान। (३) ए. कृ. को. नाहि।

सुनि कन्हा चहुआन। रीति आहुट्ठ ग्रेह कुल ॥
सरन रष्षि कहुइन। मिलै ओ कोटि देव बल ॥
संग्रामं हरषै न। सुबर षची बर धायौ ॥
रन रष्षै रजपूत। छच छल छांह नवायौ ॥
द्रिग रत बल बंसै सुबर। बेद ब्रम्म बंध्यौ चवै ॥
कालंक राइ कप्पन बिरद। कित्ति काज नव निधि द्रवै ॥छं०॥२७॥

समरसिंह का कन्ह की दी हुई नजर को रखना।

दूहा ॥ तिय हजार तेरह तुरँग। हस्त मत्त बर तीन ॥
मनि गन मुत्तिय माल दस। रष्षे कन्ह सु बीन ॥ छं० ॥ २८ ॥
पूज कुलह चहुआन दय। वे सब मनि [1]गनि साह ॥
लच्छिय सब हथ्थिय ग्रहन। दीना सब्ब समाहि ॥ छं० ॥ २९ ॥

कन्ह का यह कह कर कूच करना कि तेरस को युद्ध होगा।

चले कन्ह बर संग न्रप। समर सजग्गी आउ ॥
तेरसि त्र्यंबक बज्जिहै। धरक्कि बीर उमराउ ॥ छं० ॥ ३० ॥

दसमी सोमवार को समर सिंह जी की यात्रा की मुहूर्त वर्णन।

कवित्त ॥ घरी पंच बर सोम। दैव दसमी ग्रह सारिय ॥
दुष्ट दान करि मंच। सुगुर पंचमि बुध [2]चारिय ॥
अड्ड चार भय छूर। फेरि नव मीन न भग्गा ॥
असुर सुगुर वक्रयौ। छंड बिय थानति अग्गा ॥
चिचंग राइ रावर समर। महा जुद्ध संग्राम रजि ॥
दस कोस बीर मेलान दै। सुबर बीर चतुरंग [3]सजि ॥छं०॥३१॥

यात्रा के समय समर सिंह जी की चतुरंगिनी सेना की शोभा वर्णन।

पद्धरी ॥ सजि चल्यौ समर रावर सु तथ्थ। जानै कि सरित सागर समथ्थ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-बर साहि, बर साई।
(२) ए. कृ. को.-चारिय। (३) ए. कृ. को.-राजि।

बज्जे निसान दिसि दिसि प्रमान। मानों समुद्द गिरि [1]गजिय थान॥
छं० ॥ ३२ ॥

सुझ्झै न भान रज [2]मझि सजीव। चक्कीय चक्कवे चलि सु जीव॥
चतुरंग सेन चल्लिय सुरंग। बहु रुल्लि थंभ घन नभ्भ संग॥
छं० ॥ ३३ ॥

सहनाइ भेरि कल कलनि बज्जि। जल होइ थलनि थल जलन रुझ्झ॥
उक्कयौ मेह हय गय प्रमान। मद [3]चलहि गंध गज झिर समान॥
छं० ॥ ३४ ॥

वर रंग नेज कल मिली ताहि। बर बरन बीच सोहंत आहि॥
पाइन पयाल द्रुगपाल हल्लि। चतुरंग सेन चिचंग चल्लि॥
छं० ॥ ३५ ॥

घन जिम निसान बज्जे विसाल। जोगिंद मत्त जग हथ्थ भाल॥
पावस समूह रावर नरिंद। भिषजार भट्ट मोरन गिरिंद॥
छं० ॥ ३६ ॥

कोकिल नफेरि पप्पीह चीह। बोलंत सह कवि मधुर जीह।
बरषहति दान गज [4]मह मान। फरहरहि धज्ज बगपंति मान॥
छं० ॥ ३७ ॥

चंदून सद्द झिंगुर झँकार। सुझ्झहि भसह बदि श्रवन यार॥
पावस समूह करि समर चल्लि। रिनथंभ दिसा मेलान मल्लि॥
छं० ॥ ३८ ॥

सुसज्जित सेनाओं सहित रणथंभ गढ़ के वाएं ओर पृथ्वीराज और दाहिने ओर से समर सिंह जी का आना।

कवित्त ॥ बाम कोद प्रथिराज। छंडि रनथंभ सँपत्तौ॥
बर दच्छिन समरंग। वीर जोगिंद प्रपत्तौ॥
दुहुन बीर गढ़ चंपि। सुकवि ओपम तिन पाई॥

(१) ए. कृ. को.-गज्जि। (२) मो.-मधि।
(३) मो.-लीह। (४) मो.-मत्त।

कुंभ अंब डोलंत। हथ्थ बरनै रस माई॥
चहुआन सेन चित्रंगपति। चावहिसि बर बिड्डुरिय॥
बर ठोर छंडि चंदेर न्रप। जुग्गिनि ह्वै सन्है भिरिय॥ छं० ॥३९॥
दूहा॥ उत चंपे चहुआन ने। इत चंपे चित्रंग॥
मूंदि सास अरि सम दरी। जनु [1]चंप्यौ सु म्रदंग॥ छं० ॥ ४० ॥

पूर्व में पृथ्वीराज और पश्चिम में समरसिंह जी का पड़ाव था और बीच में रणथंभ का किला और शत्रु की फौज थी।

कवित्त॥ प्राची दिसि चहुआन। चल्यौ पच्छिम चतुरंगी॥
दुहूं बीच [2]रिनथंभ। बीच अरि फौज सु रंगी॥
दुहूं सेन [3]समकंत। [4]नग्ग मत्ता गज अग्गी॥
मनु राका रवि उदै। अस्त होते रथभग्गी॥
ससिपाल बीर बंसी [5]बिमल। दुहुन बीच मम मेर हुअ॥
षट मिलै षेह षग्गह हन्यौ। चवै चंद रवि दंद हुअ॥ छं०॥४१॥

किले और आस पास की रणभूमि की पक्षी से उपमा वर्णन।

अनल पंष अंकुऱ्यौ। जुद्ध पंचाइन मंड्यौ॥
इक सपंष षग बीय। पेट रनथंभ सु छंड्यौ॥
पीठि पंड पावार। सु वर ह्वयौ नष पंषं॥
एक मुष्ष वन बीर। धीर उभ्भौ विय मुष्षं॥
त्रिम्मान बंभ बर पुंछ कवि। पुच्छ पाइ साधन समर॥
दुह लोह कढ्ढि परियार तें। समर मोह भूल्यौ अमर॥ छं० ॥४२॥

उस युद्ध भूमि की यज्ञ स्थल और पावस से उपमा वर्णन

भुजंगी॥ मिले आइ [6]धायं सु आहुट्ट राई। लगे बीर बध्धै लगे लोह धाई॥
कढ़ी बंक अस्सी ससी बीय गत्ती। बरै ज्वाल छूरं मनों हव्वि तत्ती॥
छं० ॥ ४३ ॥

(१) ए. कृ. को.-चंपी। (२) ए.-चतुरंग। (३) ए. कृ. को.-चमकंत। (४) ए. को.-नग, नगा। (५) ए. कृ. को.-बिसल। (६) ए. कृ. को.-धाई।

करै हक्क सीरू महा मार मारं। धरं किति सीसं तुरं पार पारं॥
बजै सख बीसं [1]तुरित्तं बषानं। तिनं सद्द अग्गैं दुरै वै निसानं॥
छं० ॥ ४४ ॥
धकै आइ सूरं बिधं कन्ह हथ्थं। थकी रंभ उतकंठ मन्नौं पंग तथ्थं॥
लगै धार धारं धरक्कै बिवानं। गहै हथ्थ छुट्टै चलै देवथानं॥
छं० ॥ ४५ ॥
कटै सुंड डंडं कथै दंत तथ्थं। मनौं ज्यौं पुलंदी कढ़ै कंद हथ्थं॥
धनं धक्क हथ्थं रसं रंक मत्तं। मनौं दंपती संजुधं की सुरत्तं॥
छं० ॥ ४६ ॥
परै ढाल ढीचाल गज ढाहि सूरं। महा दिष्षियै वीर रूपं करूरं॥
कटै कंध सूरं उड़ै छिंछ भारी। झरै फूल तथ्थं सिरं डुंड भारी॥
छं० ॥ ४७ ॥
जगी जोगिनी जुद्ध देषैं [2]अरूरं। उड़ै रेंन रावत्त कच्छे करूरं॥
धराधाव श्रोनी पलं भष्ष जानं। गजे सूर जुद्धं दिसानं दिसानं॥
छं० ॥ ४८ ॥
तपै तेज तेजं सु नेजं सुरंगं। मनो विज्जमाला चमक्कंत चंगं॥
धनुष्षं कमानं धरे मेघ मद्दं। रवै दंड दंडं नफेरी सबद्दं॥छं०॥४९॥
बहै षग्ग बानं मनौं बग्ग पानं। रचै चित्त चहुआन षेतं किसानं॥
भिरै भंति भारी परै जूह राजं। ढरै घाइ धंधेर बंधी सु पाजं॥
छं० ॥ ५० ॥
[3]इलावार पूरं सरित्तान श्रोनं। तिरै रुंड मुंडं मछं जानि तीनं॥
मुषं भेद पाटं सु घाटं घुमानं। भिरै भौर भारी सु ग्रद्धं उमानं॥
छं० ॥ ५१ ॥
गहै नाग मुष्षी अरी जा उठायौ। मनौं चंद संदेस पच्छै पठायौ॥
ग्रहै रंभ मालं भरं ग्रीव बालं। रचै ईस सीसं गरै रुंडमालं॥छं०॥५२॥
पऱ्यौ षग्ग षीची भरं चित्रकोटं। जलं पष्प मच्छी धरं जानि लोटं॥
तहां गत्ति मत्तं न सुष्षं न दुष्षं। थकी जंमसालं लरे सूर पिष्षं॥
छं० ॥ ५३ ॥

(१) मो.-तुटितं। (२) ए. कृ. को.-करूरं। (३) मो.-इलाचार।

महादेव जुद्धं दिष्यौ मेस यानं। धनी चित्रकोटं ¹धत्ती सेन जानं॥
छं० ॥ ५४ ॥

चँदेरी की सेना और रुस्तमा खां के बीच में रावल समर सिंह जी का घिर जाना।

कवित्त ॥ उत बंसी ससिपाल। इतै रुस्तम्म दुंद बल॥
बिचै समर रावर। नरिंद बीरन गाहरमल॥
उतै तेग उभ्भारि। इतै सिंगनि धरि बानं॥
छंडि निधक अरियान। उररि पारी परि तानं॥
रन तुंग अवर चिंते रिपुन। छवि मुष रुष मुक्कै नहीं॥
भर सुभर दार रष्यन सु बर। समर समर उभ्भौं पही॥छं०॥५५॥

पृथ्वीराज का रावल की मदद् करना।

सम लरत्त बर समल। दिष्षि चहुआन कियौ बल॥
बांम मुष्ष अरोहि। नीर असि झझ मुषह झल॥
सौ सामंत छै ह्वर। सथ्थ प्रथुराज सु धायौ॥
सार कोट अरि जोट। पग्ग पल षंभ हलायौ॥
जै जैत देत जै जै करहि। देव बीर आनँद बढ्यौ॥
तारुन्न तुंग तन तेज बर। असि पहार धर भर चढ्यौ॥छं०॥५६॥

रनथंभ के राजा भान का समर सिंह जी से मिलना और पृथ्वीराज का भी चरन छूकर भेंट करना।

दूहा॥ रा जदव रिनथंभ तजि। मिलिय राव प्रति भान॥
समरसिंह रावर सु प्रति। चरन चंपि चहुआन॥ छं० ॥ ५७ ॥

समर सिंह, पृथ्वीराज और राजा भान तीनों का मिल कर युद्ध के लिये प्रस्तुत होना।

(१) ए. कृ. को.-मधी। (२) ए. कृ. को.-कीय।

* दिन धवलो धवली दिसा । धवल कंध भारथ्थ ॥
समरसिंघ रावर मिल्यौ । चाहुआन समरथ्थ ॥ छं० ॥ ५८ ॥
मद्धि फौज प्रथिराज बल । रा जद्दव दिसि बाम ॥
समरसिंघ दच्छिन दिसा । चढ़ि संग्राम सु काम ॥ छं० ॥ ५९ ॥

चँदेरी के राजा की फौज से युद्ध के समय दोनों सेना के बीरों का उत्साह और ओजस्विता एवं युद्ध का दृश्य वर्णन ।

छंद त्रिभंगी ॥ ससिपालय बंसी, मिलि रन गंसी, बीर प्रसंसी, बर बीरं ।
सेंमुष चहुआनं, दुति दरसानं, तमकि रिसानं, चित धीरं ॥
तुरसी रस मंजरि, पति [1]समनंजरी, ग्रह दिय अंजरि, श्रम रारी ॥
बर टोप सु कंतिय, छूर सुभंतिय, बद्दर पंतिय, जम रारी ॥छं०॥६०॥
गोरष्षन पाइय, कंठन लाइय, कढ़ि असि धाइय, बिरुझाई ॥
परि जीगइ सोकं, दिय दिषि धोकं, बसि सुरलोकं, सरसाई ॥
†वीरंग विचारै, डक्क हकारै, मंच मारै, उभ्भारै ।
छं० ॥ ६१ ॥
चफ्फार कि फारं,"असि बर तारं, बंसेलि मारं, सिर छूरं ॥
बर टोप समेतं, सिप्पर नेतं, असि आसेतं, हंसि हूरं ।
[2]हारी रउ चिन्हं, हथ्थ न लिन्हं, भयउ सभन्नं, ब्रह्मचारं ॥
छं० ॥ ६२ ॥
बर हरसि कपालं, बिय लिय मालं, हसि बर बालं किल कालं ।
‡ मचि मारद पूरं, बजि रन तूरं, बरि बरि छूरं, धरि मालं ॥

---

* "मो" प्रति में छन्द ५८ प्रथम और ५९ उस के बाद आया है परंतु प्रसंग में यही सिलसिला ठीक जँचता है ।

(१) ए.-समनेजरि ।

† यह पंक्ति मो. प्रति में नहीं है ।

(२) ए. कृ को.-हारी चिर चिन्ह ।

‡ यह पक्ति ए. को कृ तीनों पंक्तियों में है, केवल मो. प्रति में नहीं है, परंतु इस का ठाप गौण मालूम होता है ।

कर भग्न सु तुट्टं, धर धर लुट्टं, ओपम घट्टं, कविराजं ।
ओपम्म विराजं, ज्याजल काजं, मच्छवराजं, सक साजं ॥

छं० ॥ ६३ ॥

षष छिंछत श्रोनं, लगि घटि कोनं, उप्पम होनं, घन घाई ।
कवि ओपम तासं, ह्वर विलासं, माधव मासं, फिरि आई ॥छं०॥६४॥

युद्ध में मारे गए सैनिक वीरों की गणना ।

कवित्त ॥ दस क्रम्मन अरि ठेल । मुरिय पंचाइन सेनं ॥
वीर छक उत्तरी । मुत्ति भिरि रन रत नैनं ॥
सुरस पियौ प्रथिराज । प्रगटि अंषिन अल भलकिय ॥
पी अधरा रस पीन । प्रातसौ की मुष झकिय ॥
चहुआन सु बर सोरह परिग । समर सिंघ तेरह षिघट ॥
ससिपाल बीर बंसी सुबर । सहस पंच लुथ्थय सुभट ॥ छं० ॥ ६५ ॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना की पांच अनी करके आक्रमण करना ।

दूहा ॥ निग्रह [1]नर बंछत न्रपति । चढ़ि गयन्न सुष वान ॥
पंच अनी करि पेत चढ़ि । पेत अरक चहुआन ॥ छं० ॥ ६६ ॥

युद्ध के लिये सन्नद्ध हुए वीरों के विचार और उनका परस्पर वार्तालाप ।

[2]जिन गुन प्रगटत पिंड । सोई सिंघार ह्वर बल ॥
ग्रत्त [3]कुलस तन जाम । लभ्भ कित्तीति सुभट कल ॥
जिहि मरन मन ह्वर । मरन जेही मन उत्तरि ॥
पंच पंच पथ मोष । फिर न एकट्ठे नर नर ॥

---

(१) ए. कृ. को.-निग्रह नक्र ।
(३) ए. कृ को.-प्रतियों में यह छन्द दुबारा लिखा हुआ है । पाठ भेद कुछ भी नहीं है ।
(४) ए. कृ. को.-कुसल ।

घरियार रूपि सु कुठार घट। तंत मुक्ति लग्गी नदिय ॥
सिंचीय कित्ति तर अमिय में। धुअ व्यापं लग्गंन दिय ॥छं०॥ ६७॥

हंसावती की घरयार से और दोनों सेनाओं की छाया से उपमा वर्णन।

दूहा ॥ बाल कुँअर घरियार घरि। विय तरवर [1]बर छीह ॥
जिम जिम लग्गे तिम अरिय। ढाहन ढाहै दीह ॥ छं० ॥ ६८ ॥

सेना के बीच में समर सिंह की शोभा वर्णन।

कुंडलिया ॥ पंच चिराकन मभ्भ न्रप। सो सोभित जुग्गिंद ॥
मुनि ग्रह सत्तह बीस [2]यह। लिय पारस मंडि चंद ॥
लिय पारस मँडि चंद। सुभ्रित ससिपाल सु बंसिय ॥
अप्प सामि बर जानि। कित्ति जंपै रन धंसिय॥
सुनिय बैंन बुल्लियै। घोरि ढंकी अरि रंचै ॥
कपट द्रोह करि इक्क। पथ्थ टारै [3]पच पंचै ॥ छं० ॥ ६९ ॥

प्रातःकाल होते ही समर सिंह जी का अपनी सेना को चक्रव्यूहाकार रचना।

दूहा ॥ इम निसि बीर कढ़िय समर। काल फंद अरि कड्ढि ॥
होत प्रात चिचंग [4]पहु। चक्राव्यूह रचि ठड्ढि ॥ छं० ॥ ७० ॥

समरसिंह जी के रचित चक्रव्यूह का आकार और क्रम वर्णन।

कवित्त ॥ समरसिंघ रावर। नरिंद कुंडल अरि घेरिय ॥
एक एक असवार। बीच बिच पाइक फेरिय ॥
मद सरक [5] तिन अग्ग। बीच सिल्लार सु भीरह ॥

---

(१) मो.-बर बीह। (२) ए. क्र. को.-हथ।
(३) ए. क्र. को.-पंच पंच। (४) ए. क्र. को.-पंग।
(५) ए.-बिन।

गोरंधार विहार। सोर छुट्टै कर तीरह ॥
रन उटै उटै बर अरुन हुअ। दुह्न लोह कढ्ढी विभर ॥
जल उकति लोह हिल्लोरही। कमल हंस नंचै सु सर ॥छं०॥७१॥

युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ करं लोह कढ्ढै, रसं रोस बढ्ढै। अँगं अंग गढ्ढै, कथं सूर कढ्ढै ॥
छं० ॥ ७२ ॥

असी अंच उढ्ढै, थटं थट्ट गढ्ढै। इकं सीस रढ्ढै, षगं सूर कढ्ढै ॥
छं० ॥ ७३ ॥

गिधं लोल रट्टै, द्रुनं नंच ठट्टै। थुती रंभ पट्टै, अँतं तुट्ट जुट्टै ॥
छं० ॥ ७४ ॥

सिरं अंग बढ्ढै, लोहं पच्छ कढ्ढै। करं किित्ति मढ्ढै, वकं बीन नढ्ढै ॥
छं० ॥ ७५ ॥

मुषं चंद पढ्ढै, ...। सिंघ सम्भ रंनी, लुथ्थिं लुथ्थ घन्नी ॥
छं० ॥ ७६ ॥

संधि तुट्टं ऐसे, कंधं बंध्य जैसे। ...., ... ॥ छं० ॥ ७७ ॥

समरसिंह की युद्ध चातुरी से राजा भान का उत्साह बढ़ना और तिरछे रुख पर पृथ्वीराज का आक्रमण करना।

दूहा ॥ समरसिंघ दिष्षत सुबर। उघ्घारे रन भान ॥
दइ समान दुज्जन दवन। तिरछौ परि चहुआन ॥ छं० ॥ ७८ ॥

चँदेरी की सेना का तुमुल युद्ध करना।

रसावला ॥ इसी सेन राई, चँदेरी सुभाई। षगं षोलि धाई, अरी सीस घाई ॥
छं० ॥ ७६ ॥

भिरंतं बजाई, रजं तम्म छाई। विरुझझाई धाइ, असी बंक झाई ॥
छं० ॥ ८० ॥

कि रब्बं उड़ाई, ससी ब्यंब पाई। सुतं 'राति छाई, कवी कित्ति गाई॥
छं० ॥ ८१ ॥

उमा ज्यों बताई, बरं पंच पाई। चवंसट्ठि ताई, ... ॥छं०॥८२॥

लही मुग्ति रासी, अवी अब्बि नासी। उयं राज जीतं, सु भारथ्थ बीतं॥
छं० ॥ ८३ ॥

रावल समरसिंह जी और चंदेरी के राजा का द्वन्द युद्ध और चन्देरी के राजा (बीर पंचाइन) का मारा जाना।

कवित्त ॥ बर बंसी ससिपाल। समर रावर रन 'जुट्टे ॥
अमर 'बंध चित्रंग। बीर पंचाइन बट्टे ॥
सबै सथ्थ सामंत। षेत ढोल्यौ विरझाइय ॥
गुरिन गयौ अरि ग्रहन। लह मन लुथ्थि न पाइय ॥
प्रथिराज बीर जोगिंद न्रप। दिष्ट देव अंकुरि रहिय ॥
बंधनह बत्त बंधन दिवन। दिष्टकूट हसि हसि कहिय ॥छं०८४॥

युद्ध के अन्त में रणथंभ गढ़ का मुक्त होना। हुसैन खां और कन्हराय का घायल होना।

लुट्टि लच्छि चित्रंग। राज रिनथंभ 'उबारे ॥
षेत ढुंढि चहुआन। कन्ह चहुआन उपारे ॥
उभै घाइ बर अस्स। घाइ आहुट्ठ अठोंभिय ॥
पंच घाइ हुस्सेन। षान चौंडोल घालि लिय ॥
प्रथिराज बीर बीरंग बलि। निसि सपनंतर अड्ड पढि॥
'यागत्ति जागि देषै न्रपति। तबह कन्ह अलषान लहि ॥छं०॥८५॥

(१) ए. कृ. को.-राति। (२) मो.-सट्टे।
(३) ए. कृ. को.-बांधे। (४) मो.-उचारे। (५) ए. कृ. को.-मत्ति।

पृथ्वीराज का स्वप्न में एक चन्द्वदनी स्त्री के साथ प्रेमालिङ्गन करना और नींद खुलने पर उसे न पाना।

हंस [1]सुगति मानमी। चंद जामिनि प्रति घट्टी ॥
इक तरंग सुंदरि सुचंग [2]हय नयन प्रगट्टी ॥
हंस कला अवतरी। कुमुद बर फुल्लि समथ्थै ॥
एक चिंत सोइ बाल। मीत संकर अस रथ्थै ॥
तेहि बाल संग में पूछुय खिय। बरन बीर संगति जुवइ ॥
जाग्रत्त देवि बोलि न कछू। नवइ देव मन मान वइ ॥छं०॥८६॥

पृथ्वीराज से कविचन्द का कहना कि वह स्त्री आपकी भविष्य स्त्री हंसावती है कहिए तो मैं उसका स्वरूप रंग कह डालूं।

दूहा ॥ *सो सुपनंतर देषि वह। सो तुम्र बर बर नारि ॥
बे बर गज्जि नरिंद तूं। हँसि हँसि पुच्छि कुंआरि ॥ छं० ॥ ८७ ॥
एन बयन रुपह रवन। इन गुन इन उनमान ॥
धीरत्तन पूजंत बर। सुनहु तौ कहूं प्रमान ॥ छं० ॥ ८८ ॥

हंसावती के स्वरूप गुण और उस की वयःसन्धि अवस्था की सुखमा और उसके लालित्य का वर्णन।

हनूफाल ॥ सुनि सुबर बरनी रूप। तिहि चढ़न बै न्रप भूप ॥
दिन धरत सैसव एह। बालत्त तज्जन देह ॥ छं० ॥ ८९ ॥
वय काम दिन पछितान। आवंन दिन सुभ जानि ॥
इन काज असुभ प्रमान। ज्यों सहिव तजि अनि ध्यान ॥छं०॥९०॥

---

(१) मो.-गति। (२) मो.-हष

* इस छन्द मे यद्यपि पृथ्वीराज और चन्द कवि किसी का नाम स्पष्ट नहीं है परंतु छन्द के भाव से यह ज्ञात होता है।

धन धनक वेदी काम। [1]द्रिग काल गौरभ वाम॥
जंजीर भौंह चढ़ाइ। देपंत काम बजाइ॥ छं० ॥ ६१ ॥
बरछिन्न उन्नित बाल। बर काम चित चढि साख॥
चित हरत्र गरुत्र सुहंत। गुर गरू होत पढ़ंत॥ छं० ॥ ६२ ॥
जिम जिम सु विघा आइ। तुछ भरत तुछ सरसाइ॥
मति लघू अलघु प्रमान। [2]अंब निबंद समान॥ छं० ॥ ६३ ॥
बर मत्त पिछली जीअ। तहां रसन [3]हीनति पीय॥
गति हंस चढ़त सुभाइ। सुत बंटि [4]जसु अभिसाइ॥ छं० ॥ ६४ ॥
सैसब सु सुतन सुषाइ। जोवन्न रस सरसाइ॥
तिसहूंत गजगति जानि। ....॥ छं० ॥ ६५ ॥
जसु पन्न चित क्रम मान। जिम संधि प्रथम गियान॥
प्राचीय मुष रंग सूर। प्रगट्यौ सु काम करूर॥ छं० ॥ ६६ ॥
बर बाल माहि सरुप। घट धरक कपट अनूप॥
वय बाल [5]जोवत काज। किप कपट उत्तर लाज॥ छं० ॥ ६७ ॥
मधु मधुर [6]अम्रत जानि। बेजियन सीषत बानि॥
मति मत्ति बरनी घाइ। तहां बाल बेस [7]छिकाइ॥ छं० ॥ ६८ ॥

पृथ्वीराज उक्त बातों को सुनही रहा था कि उसी समय भान के भेजे हुए प्रोहित का लग्न लेकर आना।

कवित्त॥ कहि सुपनंतर [8]न्रपति। सु वह श्रोतान वढ़ाइय॥
तव लगि [9]भान नरिंद। बीर दुजराज पठाइय॥
[10]वर दुजराज पठाय। रतन उर कीनौ अप्पी॥

(१) ए. कृ. को.-दृग का लगौ सुभ वाम। (२) मो.-अंबं विन्द समान।
(३) मो.-हीनित। (४) मो.-अभि जनु माइ।
(५) ए. कृ. को.-जोबन। (६) ए. कृ. को.-उंतम।
(७) मो.-लुकाय। (८) मो.-उपति।
(९) ए. कृ. को.-मान।
(१०) ए. कृ. को.-" हय हथ्थिय मनि मृत्त रतन उर किन्हो रप्पी "।

तिथ पंचम रवि भोम। लगन प्रथिराज सु थप्पी॥
कमलहु सुरीज किन्नौ कनक। किति लभ्भी दुज्जन बहिय॥
तप तेज भान मध्यान ज्यौं। तिन चौहान चंदह कहिय॥छं०॥९९॥

और उक्त रनथंभ के युद्ध की रत्नाकर से उपमा वर्णन।

बर पंचाइन समर। दंड मुक्किय बर मुक्किय॥
मथी सेन सम्मूह। रतन कित्ती फल रुक्किय॥
लच्छि भाग चहुआन। हथ्थ हंसावति लग्गिय॥
अम्रत भाग चिचंग। सेन हाला हल सग्गिय॥
बारुनी बीर अस्सिय सु भर। अरिन पाइ जस रतन लिय॥
मह मथन रंभ हथ्थह कपट। सिंभ सीस बर अप्प लिय॥छं०॥१००॥

लग्न के समय के अन्तरगत पृथ्वीराज का बारू बन को शिकार खेलने के लिये जाना।

दूहा॥ तब लगि मंतन लगन दिन। न्रिप आषेटक जाइ॥
बारू बन उभ्भौ न्रपति। मात दरस निस पाइ॥ छं० ॥ १०१ ॥

पृथ्वीराज के बारू बन में शिकार करते समय सारंग राय सोलंकी का पितृबैर लेने का विचार करना।

कवित्त॥ बारु विरल बन न्रपति। राइ आषेटक सारिय॥
सारंग चालुक चूक। रूक तिहि बैर विचारिय॥
समरसिंघ चढ़ि हथ्थ। हथ्थ आवै चहुआनं॥
पिता बैर बहु बंध। हुऔ कार मार समानं॥
बर बैर सपुत्तन निक्कसै। ज्यौं आगम अरि अंगयौ॥
बर बीर बैर ससि सनिह लगि। गुन प्रधान बर मंगयौ॥छं०॥१०२॥

सारंगदेव का कहना कि पितृबैर का लेना वीरों का मुख्य कर्तव्य है।

दूहा॥ बैर काज बर नंद सुत। बर बैरोचन हत्त॥
करि बसीठ माली सुतन। बैर पुब्ब मन जित्त॥ छं० ॥ १०३ ॥

कवित्त ॥ सुनि मंत्रीवर बैर। राम रावन *सिर सज्जिय ॥
बैर काज ग्रहभेद। करन उरजन सिर भज्जिय ॥
बैर काज सुग्रीव। बाल जान्यो न बंधगति ॥
बैर बीति सुर इंद्र। बैर चिंतिजैं इसी भँति ॥
चहुआन समर लभ्भै जु तत। चंद सूर जिम ग्रेह लिय ॥
बर चूक दान अग लग्गिहै। कित्ति एक जुग जुग चलिय ॥छं०॥१०४॥
[1]कित्ति काज परधान। राज राजन सुख चुक्किय ॥
कित्ति काज विक्कम्म। देश देसह धर लुक्किय ॥
कित्ति काज पंवार। सीस जगदेव समप्पौ ॥
कित्ति काज बर सिवरि। [2]मध्य कर कट्टि सु अप्पौ ॥
ॐ रष्षंत [3]अचल गल्हां जियन। कीरति सब जग भल कहै ॥
सकंग एक जुग्गन विरह। रहै तो गुर भल्हा रहै ॥ छं० ॥ १०५ ॥

दूहा ॥ केहरि कल केहरी हिरन। करन जोग में ईस ॥
कोइक उत्तर देषिये। गल्ह बोहथी सीस ॥ छं० ॥ १०६ ॥

सारंग राय* का नागौद के पास मंगलगढ़ के राजा हाड़ा हम्मीर से मिल कर उसे अपने कपट मत में बांधना।

कवित्त ॥ मंगल गढ़ मंगलिय। नयर नागदह मिलंतह ॥
है हाड़ा हम्मीर। नैन बाहु सु जुरंतह ॥
पारधिरा प्रथीराज। चूक मंड्यौ चालुक्कां ॥
हाड़ा सों हथलेव। मूल कट्टन [4]सालुक्कां ॥
भंभरी भीर भौनिग तनय। परि पयार उद्दिग्ग तन ॥
पंचारि राइ पट्टनपती। तिवर तेग बत्ते कहन ॥ छं० ॥ १०७ ॥

---

* "सारंग राय" भीम देव का पुत्र था। यद्यपि यह बात इस छन्द में स्पष्ट नहीं लिखी गई है परंतु इस "पिता वैर वहुत्तन्ध, हुओ कर नार समान" पंक्ति से उक्त आशय निकलता है।

(१) ए. कृ. को.- किसी को परधान राज हरिचन्द न मंकिय

(२) ए. कृ. को.-मंस। (३) ए. कृ. को.-अचर।

ॐ ए. कृ. को.-प्रतियों में "कित्ती काज श्रिय राम राज भाभीछन दोनों" पाठ है और दूसरी पंक्ति "किसी काज विक्कम्म जैसे देसह धर लुक्किय" नहीं है। (४) ए. कृ.-को.-चालुक्कां।

* सारंग राय का पृथ्वीराज और समरसिंह जी के पास न्योंता भेजना।

दूहा ॥ भोजन मिस चालुक्क ने। [1]पाइक पाइक कीन ॥
ग्रेह कपट्ट सु मंडि कै। करि जु निवंतन कीन ॥ छं० ॥ १०८ ॥
बरन राव रावन्न ढिंग। बर चालुक्क सु थान ॥
समर सिंघ चहुआन कों। न्योतन को बलवान ॥ छं० ॥ १०९ ॥

यहां एक एक मकान में पांच पांच शस्त्रधारी नियत करके कपट-चक्र रचना।

कवित्त ॥ एक ग्रह बिच बीच। सुभर [2]सन्नाहति पंचै ॥
पंच घट्टि पंचास। बीर अंबी रज संचै ॥
तक्क लोह सह दीन। करै चालुक्क सु चल्लै ॥
आषेटक चहुआन। समर रावर बर मिल्लै ॥
भोजन्न भंति रस बीर बर। बर प्रबोध ग्रह दिसि चलिय ॥
मन तन्न मुष्ष मिट्ठै सघन। सुबर बीर संगह हलिय ॥छं०॥११०॥

हाड़ा राव का पृथ्वीराज और समर सिंह से मिल कर शिष्टाचार करना।

दूहा ॥ आज हनंदे पाप बर। ग्रह बड्डे बड़राइ ॥
समरसिंघ चहुआन मिलि। दुष्ष हनंदे आइ॥ छं० ॥ १११ ॥

कवि का हाड़ाराव पर कटाक्ष।

बर प्रमान ग्रह ग्रेह कै। भेद चूक तिन जानि ॥
घालि पिटारी उरग कों। मेल्है को ग्रह आनि ॥ छं० ॥ ११२ ॥

पृथ्वीराज को नगर में पैठतेही अशकुन होना।

गाम वाम पैसत न्नपति। बम न्नप बोलत सद्द ॥

---

* इस प्रबंन्ध में चालुक्क शब्द से सारंग राय से ही अभिप्राय है।

(१) को. मो.-धाइक। (२) मो.-सन्नाहित।

फेरि बीर दष्खिन भयौ। बैरी करन निकंद॥ छं० ॥ ११३ ॥

ज्योनार होते हुए वार्तालाप होना।

करिय सबर मनुहार न्रिप। चित्त धरं धरकत्त॥
भोजन पिधि विधि सकल भय। अकल अपूरब बत्त॥ छं० ॥ ११४॥

उसी समय किले के किवार फिर गए और पृथ्वीराज पर चारों ओर से आक्रमण हुआ।

कवित्त॥ दै किपाट चिहुं कोद। राज मुक्यौ सु मंझ ग्रह॥
ठाम ठाम सब सथ्थ। सूर सामंत सथ्थ रहि॥
घोरंधार विहार।। बिपन बर बर बन मुक्किय॥
संझ सपत्ते राज। चूक चालुक्क सलुक्किय॥
प्रथिराज सथ्थ सामंत सह। बर पवास चोहान भर॥
बर बंघ उभै सेवक चिगट। समर काज उभ्भौ समर॥छं०॥११५॥

दूहा॥ तक्कि बक्कि उट्ठे [1]सुभर। चंपे चालुक राइ॥
हाइ हाइ मची समुष। बकत बीर प्रथिराइ॥ छं० ॥ ११६ ॥

सारंगदेव के सिपाहियों का सबको घेरना और पृथ्वीराज के सामन्तों का उनका साम्हना करना।

कवित्त॥ चिहूं कोद बर सूर। तेग कड्ढी सु हक्कि कर॥
बज्ज कड्ढि कुंडली। करिय मंडली रजं फिरि॥
लहि न और अवसान। कढ़ी बर [2]अभ्भि सु सस्सी॥
झरि चालुक सब देह। सिरह बड्डी मन हस्सी॥
कैधूं दुवक्खि बंदर सिरह। हलधर हल सिर झारयौ॥
सामंत सट्ठि ग्रह कूदि कैं। फिरि पारस अरि पारयौ॥छं०॥११७॥

रावल जी और भीम भट्टी का द्वन्द युद्ध।

रावगीम बर समर। भीम भट्टी जु कंध परि॥

(१) ए. कृ. को.-समर। (२) ए. कृ. को.-आसि अस्से।

तेग हथ्थ झकझोर । बीर लिन्नों सु बथ्थ [1]भरि ॥
दुतिय घात आघात । घाइ [2]अग्गा बर बाहै ॥
कमल पंति दंती । समूह दारुन जल गाहै ॥
घट घाव भंग भेदै नहीं । चीकट जल घट बूंद जिम ॥
आहुट्ट उग्र साहस करिय । पच्च तरोवत अरिन तिम ॥छं०॥११८॥

पृथ्वीराज का *नागफनी से शत्रुओं को मारना ।

दूहा ॥ नागमुषी चहुआन लिय । अरिन करन्न सु दाह ॥
[3]हद्द नंषि उखाइ अरि । ज्यों कल बंधि बराह ॥ छं० ॥ ११९ ॥

घोर घमसान युद्ध होना और समस्त राज्य महल में खरभर मच जाना ।

मोतीदाम ॥ रन बीर रवद्द कहै कवि चंद । सु मोतिय दाम पयं पय छंद ॥
कढ़ै बर आवध बज्जत तूर । उठे परसद्द महल्लन सूर ॥
छं० ॥ १२० ॥
नचै बर उठ्ठि धरं धर ह्रूर । करै हक देषि उससि करूर ॥
जु तक्कत अच्छर जालिन मझि । रही तिन मभ्भ सुकीव समुभ्भ ॥
छं० ॥ १२१ ॥
दिषी दिषि [4]सुकिव अच्छरि जुथ्थ । उपावहि [5]मत्त जु सुंदर तथ्थ ॥
उपावत मत्त सु छोड़न घट्ट । चलंत है विद्धि अगम्मनि वट्ट ॥
छं० ॥ १२२ ॥
[6]अपज्जस कित्ति तज्यौ अस राइ । चल्यौ अप अग्ग छुड़ावत जाइ ॥
बरं कुलटा छंडि छंडि सु केउ । झुझै उल कत्ति तज्यौ करि पेउ ॥
छं० ॥ १२३ ॥
जु पीय वियोग सह्यौ नह जाइ । चली बर नारि अमग्गन धाइ ॥
लरंतह भूपति भान कुंआर । करै मनु [7]वज्जय बज्ज प्रहार ॥
छं० ॥ १२४ ॥

(१) ए. कृ. को.-परि । (२) मो.-लग्गा ।
(३) मो.-हट्ट नंषिड । * 'नगफनी' एक शस्त्रविशेष । (४) मो.-सुकवि,कुकवि ।
(५) ए. को. मंत । (६) ए.- अपंजस । (७) मो.-बजूह ।

लरै भर चालुक चंपत घट्ट। सचौरह नारि अगंम सुभट्ट॥
त्रिगं त्रिग लज्जन दच्छन जाइ। भजै क्रम सूर [1]त्रियं गय पाइ॥
छं० ॥ १२५ ॥

कढ़ी बर तेग लग्यौ ग्रह धन्न। उड़ै बर मग्ग अलग्ग [2]क्रसन्न॥
सु उज्जल छोह चल्यौ रुधि छेदि। मनों जल गंग सु भारति भेदि॥
छं० ॥ १२६ ॥

तजै अर जम्म भिदै रवि जाइ। परै धर मुत्ति जु सूरन आइ॥
॥ छं० ॥ १२७ ॥

रामराय बड़ गूजर का हाथी पर से किले के भीतर पैठ कर पारस करना।

कवित्त ॥ बर बड़ गुज्जर राम। कूह वज्जिग बर धायौ॥
पीलवान अरियान। [3]पील अरि पूर लगायौ॥
नारिगोरि सा बात। तीर जल जोर सु बढ्ढी॥
मीन रूप रघुवंस। पूर सम्हौ अरि चढ्ढी॥
कल मलिनि कलिनि कलि कलन कल। लोह लहर सम्हौ हली॥
अरि घरा फुट्टि बर [4]धार सों। सुमन लोह उड्डै मिली॥छं०॥१२८॥

कविचन्द द्वारा "युद्ध" एवं सारंग देव के कुकृत्य का परिणाम कथन।

पंच क्रमन दस हथ्थ। [5]लुथ्थि पर लुथ्थिय छुट्टिय॥
न को जियत संचयौ। न को जुझ्झयौ बिन घुट्टिय॥
कोन जम सु जुझ्झवै। वैर मंगैं सु पुव्व अब॥
व्याज तत्त अप्पीय। मूल अप्पयौ कुटँब सब॥
अदिहार बीर चालुक्क कौ। नको पेत बिन मुक्कयौ॥
संभाग बीर चहुआन कौ। सबै सथ्थ झोरी कियौ॥छं०॥१२९॥

(१) ए. कृ. को.-त्रियंअग (२) ए. कृ. को.-सक्रन्न। (३) ए.-पीर।
(४) ए.-धरा। (५) मो.-"लोथि पर लोथि"।

पज्जून राय के पुत्र कूरंभराय का बड़ी बीरता के साथ मारा जाना।

कवित्त ॥ [1]सुत पज्जून नरिंद। बीर कूरंभ नाम हर ॥
अस्त बस्त अरु सस्त। टूक लब्भै न ढुंढ धर ॥
बिहत बीच अरु षंड। एक [2]उग्गरि षँडेक भय ॥
कवि आयौ गुर तीय। नभ्भ कहि सहिस अग्नि हय ॥
ढुंढंत अस्ति न सुझि परै। लोह किरचि रच्यौ रह्यौ ॥
भेद्यौ राह रुपह सु रवि। बरन बीर बैकुंठ गयौ ॥ छं० ॥ १३० ॥

इस युद्ध में एक राजा, तीन राव, सोलह रावत और पंद्रह भारी योद्धा काम आए।

कवित्त ॥ तीन राइ रजवार। सु इक रायत्तन सोरह ॥
रावत्तन दस पंच। सेन संभरिपति जोरह ॥
नागर चाल नरिंद। रैन [3]रावत पट्टनवै ॥
इते राइ अंगए। चूक एकन ठट्टनवै ॥
उह्गि दार पांवार पर। पहुर तीन तुच्यौ करन ॥
आचिज्ज सूर मंडल सुन्यौ। सहु सथ्थैं [4]बंध्यौ सुतन ॥छं०॥१३१॥

रेन पवांर (सामंत) की प्रशंसा।

कुंडलिया ॥ मरन न लद्धौ तुंग तिहि। सब सथ्थई पंवार ॥
सोमेसर नंदन [5]छला। गहि गज्जे गंमार ॥
गहि गज्जे गंमार। तेग तोरिन बर आरन ॥
चूक मूकि चालुक। स्वामि कथ्यौ बर बारन ॥
[6]है हलान हथ्थियन। रयन रायत्तन सिद्धे ॥
सह सथ्था तन ताइ। तुंग तिन मरन न लद्धे ॥ छं० ॥ १३२ ॥

रेन पंवार के भाई का सारंग को पकड़ना और पृथ्वीराज का

(१) मो.-सत। (२) ए.-ठगरि। (३) मो.-रावन।
(४) ए. कृ. को.-मंडयौ। (५) ए. कृ. को.-कला। (६) मो.-हेसतथ्थान बंधेरन।

उसे छुड़ा कर हम्मीर को तलाश करके उससे पुनः मित्र भाव से पेश आना।

कवित्त ॥ बंध रेन लिय रज्ज। चाड़ चाल,क छंडायौ ॥
ढक्कि सेन संभरी। हेल हम्मीर बढ़ायौ ॥
षेल षग्ग षुमान। पान जोरैं जल पीनौ ॥
सो षीची परसंग। राइ तुल्ल दल लीनौ ॥
अंकुर्यौ अरिन रिनथंभ सौं। सजि जद्दव बीरन बलिय ॥
रवि राह ससि संमुह गहन। जानि छछुंदरि अप्पलिय ॥छं०॥१३३॥

तेरह तोमर सरदार और अन्य बारह सरदार सारंग की तरफ के काम आए।

भयौ भूमि भूचाल। संघ समरी आहुट्टै ॥
सजि सद्दै सिंदूर। सिंह पिंडी रवि तुट्टै ॥
तट्टै तेरह [1]तुरँव। सध्ध बंबर बर धारी ॥
बार बार रावत्त। हस्त बर बाहर रारी ॥
अदभूत जुद्ध चहुआन किय। मिलि षुमान चल्ल्यौ पलह ॥
अजहूं सु अजब जुग्गिनि जगहि। पल संभरि पंषिन पलह ॥
छं० ॥ १३४ ॥

हुसेनखां का अमरसिंह की बहिन को पकड़ लेना और रावल जी का उसे छुड़ा देना।

कुंडलिया ॥ बंधे बर हुस्सेन। षान बल सुबर कुँआरिय ॥
रन जित्ते दुज्जनह। कोइ न मंडै रारिय ॥
कोइ न मंडै रारि। मेछ संदरी बघेरी ॥
समरसिंह सुनि क्रुह। त्रियं बंधत फिरि हेरी ॥
[2]धीठ षान दै आन। हद्द अहरत्तन संधे ॥
धीठ जमन हंकार। समर हेतु बर बंधे ॥ छं० ॥ १३५ ॥

(१) ए. कृ. को.-तुररा। (२) ए. पीठ।

रावल अमरसिंहजी की प्रशंसा और अमरसिंह का उनको अपनी बहिन ब्याह देना ।

दूहा ॥ अमर बंध रष्यौ अमर । अगि दीनौ बर माल ॥
　　जस बेली चतुरंग कौं । बरन घल्लि उर माल ॥ छं० ॥ १३६ ॥

चौपाई ॥ जसबेली [1]बरिगौ चतुरंगी । चढ़ि चौंडोल ग्रेह अनभंगी ॥
　　बरन राव रावल संजोगी । सु धर फेरि चालुक न भोगी ॥
　　छं० ॥ १३७ ॥

आधी रात को समाचार मिलना कि रणथंभ के राजा को चन्देल ने घेर लिया है ।

कवित्त ॥ अद्ध रयनि संदेह । सह सावह कवीयस ॥
　　पन्यौ बीर अहव । नरिंद चंदेल [2]छवीयस ॥
　　गूड़राइ सचसलह । जुद्ध लोहं लरि वित्ते ॥
　　मुन्यौ सेन पुव्वहि । पसार पच्छिम भरि जित्ते ॥
　　[3]अप्पाह अप्प वीतक्क वित्यौ । बंधि चंदेल सज्जै सुहर ॥
　　आवद्ध बीर मत्तौ कहर । गही गल्ह बंधी सु धर ॥ छं० ॥ १३८ ॥

घुमान और "प्रसंगराय" खीची का रणथंभ की रक्षा के लिये जाना ।

गाथा ॥ जित्ताराय घुमानं । निसानें सद्दयं धायं ॥
　　छुट्टा रन रनथंभं । सा षग्गे षीचियं रायं ॥ छं० ॥ १३९ ॥

चौपाई ॥ षीचीराइ हमीर चवक्किय । दोइ चहुआन धरम्म भवक्किय ॥
　　चालुक्कां सों चूक सवक्किय । दुत्तिय दीपंता निरवक्किय ॥ छं० ॥ १४० ॥

कवित्त ॥ दूसासन अंग में । राज विहंग गति कीनी ॥
　　मध्यदेश मालव नरिंद । हंसध्वज भीनी ॥
　　नीलध्वज आर धरिम । विप्र बंदन संपन्नौ ॥

(१) ए. कृ. को. बरिगो ।　(२) ए. कृ. को.-सवीयस ।　(३) कृ. अप्पांह ।

नालिकेल तरू फूल। अनंद सौंगद सुभ किन्नौ ॥
सत पच लगन लभ्भइ भरिय। घरिय अठ्ठ तेरह तिनह ॥
रनथंभ सेन संचरि न्रपति। करिय अवधि ताकरि रनह ॥
छं० ॥ १४१ ॥

पृथ्वीराज का रणथंभ ब्याहने जाना।

दूहा ॥ आगम बीर बसंत कौ। रन जित्ते जुधवान ॥
बर हंसावति सुन्दरी। चलि ब्याहे चहुआन ॥ छं० ॥ १४२ ॥

पृथ्वीराज की स्तुाते वर्णन।

गाथा ॥ रंग सुरंग सुदीहं। ज्यों कुंजिन मेलयं सब्बं ॥
बय रुष मुष अंकुरियं। सा मिलयं बंकुरी मुच्छं ॥ छं० ॥ १४३ ॥

दूहा ॥ मुच्छ रवन्निय राजमुष। बर बंधिग सुरतान ॥
तीन दिनन आवन लगन। आय सगंध पुरान ॥ छं० ॥ १४४ ॥

दोधक ॥ ग्रंथह ग्रंथ पुरान कुरानय। राज रसं बरनौं बर जानय ॥
नीति अनीति सुभं सरसानय। लभ्भर कित्ति लही चहुआनय ॥
छं० ॥ १४५ ॥

संपय राज स कोकिल संठिय। जानि जुवान न जानि सु पुछ्छिय ॥
गायन गाइ सुअथ्थ सु अथ्थिय। संभय गानकला कल सथ्थिय ॥
छं० ॥ १४६ ॥

छंदह छंद रसे रस जानन। कंठ कला मधुरे मधु आनन ॥
उहिम मेन उदार सुधारिय। [1]न्रज्जय रूप सरूप सुरारिय ॥
छं० ॥ १४७ ॥

दूहा ॥ श्रवन रवन अरु सिष भवन। पवन चिविध तन लग्ग ॥
वापी कूप [2]तड़ाक हय। विधि अंनन कवि लग्ग ॥ छं० ॥ १४८ ॥

पृथ्वीराज का आगवन सुनकर उन्हें देखने की इच्छा से हंसावती का झरोषे से झांकना।

(१) ए. कृ. को.-नृयज्जय, नृयजय। (२) ए कृ.को.-सटाक।

सा सुंदरि हंसावती। सुनि श्रोतान सुवष्य ॥
बर दिष्टा नन मानिये। बेला लग्गि गवष्य ॥ छं० ॥ १४९ ॥
सुनि आयौ चहुआन नृप। गुरजन बंध्यौ आनि ॥
तब मति सुंदरि चिंतवै। भेदक गौष बषान ॥ छं० ॥ १५० ॥

गौख में से देखती हुई हंसावती की दशा का वर्णन।

कवित्त ॥ पंथ बाल पिय झंकि। सुभित विंटियं सु राजै ॥
मनों चंद उड़गन विचाल। मेरह चढ़ि भाजै ॥
सुनिय श्रवन दै सेन। अलिन अलिमेन सरोजं ॥
रति मच्छर मति काम। आनि अच्छरि सुर सोजं ॥
धावंत वेस अंकुरित वपु। बसि सैसव तिन वेस धुरि ॥
श्रोतान सुष्य दिष्टान धनि। यह कहि चलि सैसव बहुरि ॥
छं० ॥ १५१ ॥

दूहा ॥ प्रथम बत्त श्रोतान सुनि। सुष पै दिषहि सखोइ ॥
सब बात झूठी चवौ। तब जिय सुष्य न होइ ॥ छं० ॥ १५२ ॥
सुनि श्रोतान सु मन्निय। दिषि दिष्टांत सचीय ॥
बीज चंद पूरब्ब जिम। बधै कला मनि जीय ॥ छं० ॥ १५३ ॥

हंसावती के शृंगार की तय्यारी।

बर बेहरि देषी न्रपति। गौ न्रिप न्रिपबर थान ॥
बालु सुयंबर काज कौं। बर बज्जे नीसान ॥ छं० ॥ १५४ ॥

हंसावती की अवस्था की सूक्ष्मता वर्णन।

आभूषन भूषन न्रपति। बैसँधि कहि न कविंद ॥
कवि अनन इह लग्गि चिय। ज्यों कूरत लघु चंद ॥ छं० ॥ १५५ ॥

हंसावती का स्वाभाविक सौन्दर्य्य वर्णन।

कवित्त ॥ बर भूषन तजि बाल। सुबर मज्जन आरंभिय ॥
सोइ छबि बर दिष्षनह। कोटि [1]ओपम पारंभिय ॥

(१) मो.-उपमा।

बर सैसव बर चंपि। कंपि विंड कोद भपायौ॥
सो ओपम कविचंद। जौन्ह बूड़त मल धायौ॥
बालपन बीर बर मिच पन। रवि ससि करि अंजुरि भरिय॥
बय बाल 'उबीचन प्रीति जल। सैसव तें हरई करिय॥ छं० ॥१५६॥

नेत्रों की शोभा वर्णन।

दूहा॥ बर सैसव अच्छर नहीं। जोवन जल बर मैन॥
बाल घरी घरियार ज्यौं। नेह नीर बुड़ि नैन॥ छं०॥ १५७॥

हंसावती के स्नान समय की शोभा।

मोतीदाम॥ कि बाल प्रमोद सु मज्जन चंद। सुमुत्तिय दाम पयं पय छंद॥
लटिं भिंजि बार रही लपटाइ। मनौ दिढ़ सुक लग्यौ ससि आइ॥
छं०॥ १५८॥
वि ओपम दे बरने कविराज। द्रवै ससि रीस दसं मदु आज॥
बहै जल मेदि सु कुंकम बार। तिनं उपमान लहै कवि चार॥
छं०॥ १५९॥
जु राहय चास पिये विष सोम। द्रवै सुष चंदह मत्तह भोम॥
करैं बर मज्जन सज्जन नारि। धरैं धन धारत संत सँवारि॥
छं०॥ १६०॥

हंसावती के शरीर में सुगंधादि लेपन होकर सोलहो शृंगार और बारहो आभूषण सहित शृंगार की उपमा उपमेय सहित शोभा वर्णन।

नराच॥ किर्य सुरंग मज्जनं। नराच छंद रज्जनं॥
सुगंध केस पासयौ। विहथ्य हथ्य भासयौ॥ छं०॥ १६१॥
उपम्म जौस साधयौ। विरंचि लेष बाधयौ॥
जु बुद्धि रासि भासयौ। सजीवतां प्रगासयौ॥ छं०॥ १६२॥

(१) ए. कृ. को.-उलीचन।

[1]जु केस मुत्ति संजुरे । ससी सराह दो जरे ॥
मनौस बाल साव ज्यों । कि कन्ह कालि नाथ ज्यों ॥छं०॥१६३॥
धरी नवैन कथ्थयौ । जु कन्ह कालि मथ्थयौ ॥
तिलक भाल भासयौ । भलक काल साययौ ॥ छं० ॥ १६४ ॥
विधार गंग पावयौ । जु तिथ्थराज आसयौ ॥
बसंत सोमता वरं । कलीन भद्र सावरं ॥ छं० ॥ १६५ ॥
सुभाव वान [2]बाढ़यौ । सुराह कंपि [3]ठाठयौ ॥
सु पट्टि बाल ठानयौ । सु राह रूप जानयौ ॥ छं० ॥ १६६ ॥
उपम्म नेन ऐनसी । मनौं कि मीन मैनसी ॥
कवी [4]निसंक जानयौ । उपम्म चित्त मानयौ ॥ छं० ॥ १६७ ॥
भवन्न जीव छंडयौ । ससीम रूप मंडयौ ॥
उपंम विंब उग्गनं । कमल्ल जासु सुम्मनं ॥ छं० ॥ १६८ ॥
दसंत मुत्ति सोभई । उपम्म चित्ति लोभई ॥
अवत्त तार बिच्छुरी । दु चंद अग्ग निकरी ॥ छं० ॥ १६९ ॥
सु तारि हंस सामरं । अनेक भेस तामरं ॥
बिभास रूप जामरं । सु चंद चित्त साहरं ॥ छं० ॥ १७० ॥
रतन्न विंब जानयं । सु चंदनी प्रमानयं ॥
चिवक्कि ग्रीव सोभई । जु पोति पुंज [5]लोभई ॥ छं० ॥ १७१ ॥
ससीव राह छंडि कैं । असंन बैठि मंडि कैं ॥
डरं हरा विसाल यौ । कि हंस दीप मालयौ ॥ छं० ॥ १७२ ॥
उरं चिभंग जित्तयौ । जु मुक्क बग्ग पंतयौ ॥
कि काम वीर भंजयौ । दहत्ति ग्रेह रंजयौ ॥ छं० ॥ १७३ ॥
उपंम हंस [6]कुचयौ । अनंग नीति रचयौ ॥
रोमंग तुच्छ राजयं । उपम्म ता विराजयं ॥ छं० ॥ १७४ ॥

(१) मो.-सु । (२) मो.-बाढ़कौ । (३) मो..ठाढ़कौ ।
(४) ए. कृ. को.-संक ।

(५) मो.-लुम्भई । (६) ए.-चक्कयौ ।

उरज्ज पच्च काम को। लिषे ओवंत वाम को ॥
कटी अलष्यता ग्रही। मनों कि रिखि रंकई ॥ छं० ॥ १७५ ॥
कि सोभ हं न्यपं रही। तुला कि दंडिका कही ॥
हलंत छुद्र घंटिका। सदंत सह दंडिका ॥ छं० ॥ १७६ ॥
जु जेहरी जराइ की। घुरंत मद्द पाइ की ॥
नितंब चक्क तुंबियं। प्रवाल रंग [1]बुझियं ॥ छं० ॥ १७७ ॥
कि काम रथ्थ चक्कए। चलंत रढ़ि वक्कए ॥
उलट्टि रंभ जंघनं। करी सु नास पिंडनं ॥ छं० ॥ १७८ ॥
उपंम रंग राजही। अलज्ज भांति साजही ॥
बसन्न सेत बन्नयं। उपम्म कब्बि भन्नयं ॥ छं० ॥ १७९ ॥
मनों कि दीय थंभयं। सुभंत मध्य रंभयं ॥
दसन्न जोति दामिनी। मनों अनंग भामिनी ॥ छं० ॥ १८० ॥
सुगत्ति हंस चौनयं। सिंगार सोभ कौनयं ॥
झंकार झंझनं झनं। मनों कि सोर भद्दनं ॥ छं० ॥ १८१ ॥
सु कासमीर रंगयं। जु रढ़ि आवकं लयं ॥
मनों कि हंस सावकं। चली विद्रुम्म भावकं ॥ छं० ॥ १८२ ॥
[2]अरित्त मुद्रका नगं। सु जोति अंगुली लगं ॥
जुवास रास चासयं। मनों हुतास पासयं ॥ छं० ॥ १८३ ॥
[3]दिपंति मध्य वीसयं। रवी ससी सुरीसयं ॥
नव ग्रहीय पुंचिया। उपम्म कब्बि बंचिया ॥ छं० ॥ १८४ ॥
जु चंद राह षेदि कै। कि हस्त चंद भेदि कै ॥
उभै तिषट्ट भूषनं। तजंत भेटि दूषनं ॥ छं० ॥ १८५ ॥
चलंत वाम कोड़यं। तजंत हंस जोड़यं ॥
उमग्गि ग्रिध्धि देषनं। अलीन मझ्झ पेषनं ॥ छं० ॥ १८६ ॥
सु सैसवं लगंत रघ्घि। मुझियं दरस्स दिघ्घि ॥
॥ छं० ॥ १८७ ॥

(१) मो.- बुम्झियं,को.-पुम्झियं । (२) मो.-अरिंत । (३) मो.-दिपत्त ।

हंसावती के वस्त्र आभूषणों की शोभा वर्णन ।

हनूफाल ॥ सुर मनौं कौकिल जोइ । अवअंघ रंचन होइ ॥
अंबर कमल पुटल । रितु देषि सीत बसल ॥ छं० ॥ १८८ ॥
इह संधि रंभ दसल । बनि रवनि प्रीत बसल ॥
कसि कासमीर सुरंग । झंकार पिंड अभंग ॥ छं० ॥ १८९ ॥
नग जरित मुद्रिक पानि । रवि परी होइ सुजानि ॥
नौ ग्रहिश्र पुंचिग्र हथ्थ । उपम्म चंद सु कथ्थ ॥ छं० ॥ १९० ॥
सोई चंद उप्पम षेदि । कै हँसत हिमकर भेदि ॥
बर रहि मंडि सुरंग । अनु प्रभा रवि ससि संग ॥ छं० ॥ १९१ ॥
षट दून भूषन सज्जि । सजि सजत सैसव लज्जि ॥
नग मुत्ति जेहर जोड़ । गति हंस लज्जित होड़ ॥ छं० ॥ १९२ ॥
बर चरन लगि चिंपयान । पय परस चलि चहुआन ॥
कर वाम [1]पान सलाइ । बे काज क्रम अगदाइ ॥ छं० ॥ १९३ ॥
तब लग्गी सैसव रष्षि । मो [2]कंत दरसन दष्षि ॥ छं० ॥ १९४ ॥

हंसावती के केशरकलित हाथ पावों की शोभा वर्णन ।

कुंडलिया ॥ बर कुंकुम सब सथ्थ रंगि । बहु सब [3]रूप बर सथ्थ ॥
सो ओपम बर राज लहि । कवि बरनन लहि कथ्थ ॥
कवि बरनन लहि कथ्थ । फिरिय गुर राजहि कथ्थैं ॥
मन ससितर काम की । प्रात उग्गत रवि सथ्थै ॥
[4]सुधत रवि ससि रूप । एक असु जीव काम तर ॥
पंचानन तिन होइ । पंच प्रथिराज देव बर ॥ छं० ॥ १९५ ॥

पृथ्वीरज का विवाह मंडप में प्रवेश ।

दूहा ॥ बंदन बर आयौ न्रपति । तोरन संभरिवार ॥
प्रीति पुरातन जानि कै । कामिन पूजत मार ॥ छं० ॥ १९६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-यान । (२) मो.-कहत । (३) मो.-उप ।
(४) मो.-कै सुभूत ससि रूप ।

पृथ्वीराज के रत्नजटित मौर (ब्याह मुकुट) की शोभा और दीप्ति वर्णन।

कुंडलिया ॥ नग मग जटित सुमेर सिर। तन तर वर मन सोभ ॥
पंच उभै ग्रह चंद सिर। संग सपत्ती सोभ ॥
संग सपत्तौ सोभ। जुद्ध तट वर भन रुक्की ॥
रहै न्रपति दै आन। नैन चितवत फिर मुक्की ॥
चंचन पथ चिमनिय। ति नर तरुनी मन [1]लग्गा ॥
रन रावत जिम रेह। सूर भंगन ग्रह नग्गा ॥ छं० ॥ १९७ ॥

हंसावती का सखियों सहित मंडप में आना।

चौपाई ॥ सत संग क्रिन अवंत अली। मंचत वर अचित [2]पाय चलि ॥
पिय तन देषि रूप रस [3]सानि। पंषि मनो नव पंजर आनि ॥
छं० ॥ १९८ ॥

पृथ्वीराज का हंसावती का सौन्दर्य्य देख कर प्रफुल्लित होना।

कवित्त ॥ बंदि सु बर चहुआन। मंझ ग्रह काज सु लिन्नौ ॥
बाल रूप अवलोकि। मद्दूर मद्दुरं रस पिन्नौ ॥
द्रिग सौं द्रिग संमुहे। पीय उमगे द्रिग ओरन ॥
सो ओपम प्रथिराज। चंद ज्यौं चंद चकोरन ॥
नव भमर पिठु वर कमल में। कै मकरंद झुलावहीं ॥
आनंद उगति मंगल अभिष। सो कवि बरनन गावहीं ॥छं०॥१९९॥

पृथ्वीराज का हंसावती के साथ गठबन्धन होना।

दूहा ॥ वर अंचल सोमेस चित। बंधि वीर वर नारि ॥
देवक्रम दुज क्रम करी। सो वर वीर कुआरि ॥ छं० ॥ २०० ॥

संहावती के अंग प्रत्यंग में काम की अलौकिक लालिमा का वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-भग्गा मग्गा। (३) मो.-मानी।
(२) ए. कृ. को.-पिय।

कवित्त ॥ बैनि नाग छुट्टयौ। बदन ससि राका लुब्भौ ॥
नैन पद्म पंखुरिय। कुंभ कुच नारिंग हुब्भौ ॥
मद्धि भाग प्रबिराज। हंस गति [1]सारंग मत्ती ॥
जंघ रंभ बिपरीत। कंठ कोकिल रस मत्ती ॥
ग्रहि लियौ साज चंपक बरन। दसन बीज दुज नास बर ॥
सेना समग्र एकत करिय। काम राज [2]जीतन सुधर ॥छं०॥२०१॥
दूहा ॥ कवि लघु लघु मत्ती कही। उकति चंद मन छेव ॥
मनों जनक बंदन कवन। जानु कि बंदै देव ॥ छं० ॥ २०२॥

इसी समय दिल्ली पर मुसलमान सेना का आक्रमण करना और ५० सामंतों का उस आक्रमण को रोकना।

कवित्त ॥ चढ्ढिग सब सामंत। चूक सब सेन सु दिख्यिय ॥
घट दस बर सामंत। मरन केवल मन लिख्यिय ॥
चंत निसुरत्ति समूह। जूह दैवान सु धाइय ॥
मार मार [1]उच्चरंत। मार कहि समर सु साइय ॥
इत उतह सब सामंत रजि। तिन अरि तन तिन बर करिय ॥
मानव न नाग दिन आइ जुध। सुबर जुद्ध रत्ती करिय ॥
छं० ॥ २०३ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों और मुसलमान सेना का युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ सूर सम्हें परे, सेन भग्गे लरे। काफरं बिहुरे, लोह मची झरे॥
छं० ॥ २०४ ॥
पारसं तं फिरं, सूर हक्के करं। कढ्ढियं बंजरं, मंझ्यि लोई करं ॥
छं० ॥ २०५ ॥
सूर बथ्थं परं, मोह मोहं परं। झूक बज्जी परं, लोह बडप्फरं ॥
छं० ॥ २०६ ॥

---

(१) ए. कृ. को. सारद। (२) मो.-जीपन।
* यद्यपि यहां पर दिल्ली का कोई जिक्र नहीं है परंतु यह बात आगे छ० २२० में खुलती है।
(१) ए. कृ. को.-उर्चत,उच्चंत।

षग्ग उड्डी झरं, बीर बाजं ठरं। श्रोन रतं ¹धरं, घंत-आलुझ्झरं ॥
छं० ॥ २०७ ॥

छूर आ उब्बरं, रारि उग्गं अरं। लज्ज पट्ट परं, लोह लोहं करं ॥
छं० ॥ २०८ ॥

बास साजं भरं, रैनि चद्दी बरं। बाज कुट्टी झरं, षान झारा झरं ॥
छं० ॥ २०९ ॥

ढाह मीरं धरं, मझ्झ रोसं ररं। सामि सामं नरं, घाइ घुम्मं घरं ॥
छं० ॥ २१० ॥

दूहा ॥ कन्ह बंध मझ्झें रह्यौ। रहे सु जैत कु चार ॥
है सुझ्झिय सामंत गौ। उप्पर मेर पहार ॥ छं० ॥ २११ ॥

दूसरे दिवस प्रातः काल सुरतान खां का आक्रमण करना।

कवित्त ॥ प्रात षान सुरतान। सेन ²बंधी अहसारी ॥
बर सोभै कविचंद। चंद अट्ठमि आकारी ॥
अर्द्ध चंद्र मह्मूंदि। अर्द्ध षुरसान षान करि ॥
मध्य भाग हत्तम्म। सेन षुरसान जित्ति ³बरि ॥
दल धरकि भरकि सिप्पर लई। चकन दीय उह्हिम सुभर ॥
षिचंग राइ रावर समर। चढि मंग्यौ ⁴बंधव अमर ॥छं०॥२१२ ॥

हिन्दू मुसलमान दोनों सेनाओं की चढ़ाई के समय की शोभा वर्णन।

चोटक ॥ सारंग चक्यौ कविचंद भनं। रन नंकिय बीर नफेरि घनं ॥
झननंकहि घंटन घंटनं की। तन नंकहि भेरि भयंटन की ॥
छं० ॥ २१३ ॥

घननंकहि घुग्घर पष्य रनं। ठननंकहि चार प्रसद्द घनं ॥
⁵बर षिझ्झिय चक्कि मिले पलटे। दिषि घुग्घुर रेनिय अस्स घटे ॥
छं० ॥ २१४ ॥

---

(१) मो.-भरं। (२) मो.-बन्धे।
(३) ए. कृ. को.-बर। (४) ए. कृ. को.-बंध्यौ। (५) ए. कृ. को.-"बर चविक्रय"।

तमके तम तेज पहार उठे। बहुरे किधु पावस अभ्भ बुठे॥
कविचंद सु अंसुय 'साव धरे। चय 'नेत्त जु गंग समीर घरे॥
छं०॥ २१५॥

होउ दीन अनंदिय तेग छुटी। सु बनी चहुआनय सार टुटी॥
छं०॥ २१६॥

तब तक पृथ्वीराज का भी युद्ध के लिये तैयार होना।

दूहा॥ उट्ठि ढाल चहुआन वर। बढ़ि अवाज परवान॥
सुनि बरनी सों रत्त तिन। तत छुट्टे वर बान॥ छं०॥ २१७॥

थोड़ी ही देर युद्ध होने पीछे मुसलमान सेना के पैर उखड़ गए।

कवित्त॥ धुअ सुष रावर समर। षान निसुरत्ति षेत तजि॥
घरी अद्ध बजि लोह। सबै चतुरंग सेन भजि॥
जुध कंध कुल नास। षान निसुरत्ति अहुट्टे॥
चामर छच रषत्त। तषत है वै वर लुट्टे॥
प्रथिराज बीर रावर समर। मिलि 'नक्षिच पति ग्रहम गिरि॥
धर लज्जि लज्जि आहुट्ठ पति। तीन बार अट्ठंग गिरि॥छं०॥२१८॥

युद्ध के अन्त में लूट में एक लाख का असवान हाथ लगना और पीरोज खां का मारा जाना।

जीत लियौ चतुरंग। चाह चतुरंग समोरी॥
'एक लष्व प्रम्मान। ढाल गोरी ढंढोरी॥
षां पिरोज परि षेत। षेत को का उप्पारी॥
समर सिंघ रावर। नरिंद भोरी करि डारी॥
बज्जे निसान जयपत्त के। 'बिन सुरतानै लुट्टि दल॥
नीसान नद्द उनमद्द के। चामर छच रषत्त तल॥ छं०॥ २१९॥

---

(१) मो. साच। (२) मो.-नेत्र। (३) ए. कृ. को.-नछित्र।
(४) मो.-" एक लष्य पम्मर प्रमान " ए. कृ. को.-एक लष्य पष्षर प्रमान।
(५) मो.-" बिन सुरतान सु लुट्टि छल "।

पृथ्वीराज का सब सामंन्तों को हृदय से लगा कर कहना कि मैं आपका बहुत ही अनुगृहीत हूं।

मिले आइ चहुआन। सब्ब सामंतन मन्ने ॥
उच्च भाव आदर सु। दीन उर चंपि सु लिन्ने ॥
नैन चैन मन बैन। हीन सुषन्न कढ़ि दोज ॥
वर समान तुम राज। तेग राजन विधि कोज ॥
रष्षयौ गाम रतिवाह दै। तुम कंधें ढिल्ली नयर ॥
चित्रंग राव रावर समर। [1]पाघ सीस बंधी अमर ॥छं०॥२२०॥

पृथ्वीराज का रावल समर सिंह के पौत्र कुंभा जी को संभर की जागीर का पट्टा लिखना।

दूहा ॥ [2]तेजसिंह सुत समरसी। तिह सुत कुंभ नरेस ॥
संभरि संभरि वार दै। दौहित्तौ सोमेस ॥ छं० ॥ २२१ ॥

समर सिंह का उस पट्टे को अस्वीकार कर लौटा देना।

कवित्त ॥ तब चित्रंग [3]नरेस। चिभ्भवि नंष्यौ वर पट्टौ ॥
तुम ढूंढा कुल ढुंढ। सु मनि ऐसी मति ठट्टौ ॥
हथ्थ नीच करतार। हथ्थ उप्पर गजत्त गुर ॥
हम आहुट्ट मभ्भामि। स्वामि कहिजै सु [4]उंच वर ॥
कालंक राइ कप्पन [5]विरद। कुलह कलंक न लग्गयौ ॥
दग्यौ न हाय [6]चित्तौर पति। हम जगत्त सब दग्गयौ ॥छं०॥२२२॥

---

(१) कृ. पाय।

(२) छंन्द २२१ की प्रथम पंक्ति का पाठ ए. कृ.-को.-तीनों प्रतियों में समान है जिसका अर्थ होता है कि " समरसी का पुत्र तेजसी तिसका पुत्र कुम्भकरन जो कि पृथ्वीराज का भांजा था किन्तु मो.-प्रति में तेज सिंह चित्रंग सुत नाम धरिग भर वेष" पाठ है, इससे उक्त अर्थ में भेद पड़ता है ।

(३) मो.-नरिंद। (४) मो.-चंद। (५) ए. कृ. को.- बिरद्द।

(६) कृ.-चीतौर।

समर सिंह का चित्तौर जाना ।

दूहा ॥ ग्रेह गयौ चित्रंग पति । गौ ढिल्लिय न्रप छेह ॥
मास बीय वित्ते न्रपति । मतौ मंडि न्रप एह ॥ छं० ॥ २२३ ॥

पृथ्वीराज का हंसावती के प्रेम में मस्त हो जाना ।

विमल विलोकन कोक रस । सोक हरन सुष सत्त ॥
ससुष हंस प्रभु नीलप्रभ । विभ्रम वर द्रिग मत्त ॥ छं० ॥ २२४ ॥

हंसावती के प्रथम समागम का वर्णन ।

भुजंगी ॥ द्रिगं मंच मंचं सुमंचं प्रमानं। वियं केलि करनी विधानं सुजानं॥
निजं नेह नौलं सु कौलं कलानं । सुषं मूल विष्पं सु देवं सधानं ॥
छं० ॥ २२५ ॥

मयं मोह मंडं सु बंदीन दानं । हयं हेम हड्डं पताका सु थानं ॥
[1]सु अंषं च सोभा स सोभा स मंचं । [2]छयं छंद जोतीय संसाइ तंचं॥
छं० ॥ २२६ ॥

पियं पेम तंचं सु कंतं सु थानं । सुराया विहंगं सु पुच्ची प्रमानं ॥
लियं ग्रेह सज्ज्या प्रबंमं अलीनं । मनों मत्त मातंग [3]बंध्यौ कलीनं॥
छं० ॥ २२७ ॥

बचं अंकुसं हेट हेटं चलावै । दुरै देषि आलंतरे फेरि मावै ॥
हुच्यौ सैसवं लज्ज तें प्रेम आसं । फिरे आनि बाला तनं प्रेम आसं॥
छं० ॥ २२८ ॥

सया हंस हंसावती नील याहं । कवी केलि कंठे बकी सच स्याहं॥
उरं अंत घोरं विवाहं विरोरं । कला केलि बड्डी विहानं सजोरं ॥
छं० ॥ २२९ ॥

दनौ देव ज्यौं आनि सहान सेजं । सदा स्वेद भेदं हुऔ प्रात हेजं॥
....　　....　　।　　....　　....　　॥ छं० ॥ २३० ॥

---

(१) कृ. को.-सुषं ।　　(२) मो.- " छय दुत्तिय छंन्द छम्माय तंत्रं ।
(३) मो.-बन्धे ।

मुग्धा हंसावती की कोक कला में पृथ्वीराज का मुग्ध हो कर कामान्ध वृषभ की नाईं मस्त होना।

*कवित्त ॥ अगह गहन रमि रमन। रवन रमि रवन सु छुट्टिय ॥
दट्टिय [1]वद्दन सट्टि रट्टिय। सरस रस सौर सु लुट्टिय ॥
मट्टिय लट्टिय नट्टिं नट्टिय। [2]हह्रय हय हयह यथा [3]हह ॥
सट्टिय सेज कह कट्टिय। चंपि चिंचनिय सज्ज वह ॥
कामंध अंध मुक्कह ह्वषभ। भ्रमन भ्रमावह तिलक सन ॥
इह अर्थ सर्थ आनन सु गह। अगह मुगद्धन मन हसन॥छं०॥२३१॥

हंसावती के मन का पृथ्वीराज के प्रेम में निर्म्मल चन्द्रमा की भांति प्रफुल्लित हो जाना।

दूहा ॥ मन ह्रिय हसन मुगधनिय। रमि राजम मिय नेह ॥
नमिय निसा कर [4]मग रथिय। निसि न्रिम्मल दिय छेह॥छं०॥२३२॥

शनै शनैः हंसावती के डर और लज्जा का ह्रास होना और उसकी कामेच्छा का बढ़ना।

छंद कमंध ॥ न्रिम्मली नेह नासा। दिट्ठ एंन लग्गी सु चासा ॥
छेहंग कामी रसा। संचान भग्गी चसा ॥ छं० ॥ २३३ ॥
हंसावती संकुची। दासी प्रीति संचची ॥
†पुत्तका पढ़ि वित्तरी। कथा गाथा प्रेम वित्तरी॥छं०॥२३४॥
दंत कंडक नित्तरी। हास विलास सुत्तरी ॥ छं० ॥ २३५ ॥

हंसावती के बढ़ते हुए प्रेम रूपी चद्रमा को देख कर पृथ्वीराज के हृदय समुद्र का उमड़ना।

काव्य ॥ गगन सरस हंसं स्याम लोकं प्रदीपं।
सस [5]सजं बंधू चक्रवाकोपि कीरा ॥

---

* यह छन्द मो.-प्रति में नहीं है। (१) को.-सवद।
(२) ए.- हरय। (३) को.हय। (४) मो.-मग्गथिय। (५) मो.-सर्म ससं।
† इस छन्द का पाठ चारों प्रतियों में उलट पलट है।

तिमिरगजमृगेंद्रं चन्द्रकांतंप्रमाची ।
विकसि कमल प्राची भास्करं तं नमामी ॥ छं० ॥ २३६ ॥
अमृतमय शरीरं सागरा नंद हेतुं ।
कुमुद बन विकासी रोहीणी जीव तेसं ॥
मनसिज नस बंधु मानिनीमानमर्दी ।
रमति रज निरमनं चंद्रमा तं नमामी ॥ छं० ॥ २३७ ॥

दिवस के समय रात्रि को पृथ्वीराज से मिलने के लिये हंसावती ऐसी व्याकुल रहती जैसी चकोर चन्द्र के लिये।

सुरिल ॥ बंछय चंद चकोरत राजन । [1]हंसनि हंस उदे भयौ साजन ॥
विहु निसि नेह निसाकर वढ्ढिय । कनक जेम कसि कर [2]आहुट्टिय॥
छं० ॥ २३८ ॥

गाथा ॥ उवनि फलनी फंदा । विसनी पत्त वलाकारे हथ्थं ॥
मरकति मनि भाजन्ने । परठियं पहुप सु तीयं ॥ छं० ॥ २३९ ॥

पावस का अन्त होने पर शरद का आगम और शीत का बढ़ना।

झिल्ली झिंगुर खरी । गायन पुचीय ललित सुभ्भरियं ॥
पहुकिय षंघ [3]सु हासं । झलकिय सीताइ मदं मंदाइं ॥छं०॥२४०॥
किय मंडि स पुकारियं । मैनं राइ सिरीय बंधायं ॥
पर दार चौर साही । पुकारे आहु रे आइ ॥ छं० ॥ २४१ ॥

शीत काल की बढ़ती हुई रात्रि के साथ दंपति में प्रेम बढ़ना।

पंपट करि करतारं । हंसा सयनेव हंस सह पायं ॥
निसि बढ्ढय अंकुरियं । कुकडयं [4]कंठ कलायं ॥ छं० ॥ २४२ ॥
[5]अबलीय नेह ससी हर । [6]रसनह रंगी सुरंगयं देहं ॥
उवकंठय संदेसं । गावे एकंतं चित्त सलाइं ॥ छं० ॥ २४३ ॥

(१) ए. कृ. को.-हसति, हंसति ।　(२) ए.-आहुट्टिय ।　(३) ए. कृ. को.-सहासं ।
(४) मो.-कंठक ।　(५) ए. कृ. को.-"अबलिय नेह से सहिए" ।
(६) ए. कृ. को.-रसरह ।

हे मौनं करि कोकिलयं। जलधर सम रह कंठ [1]उंचत ॥
विकसित कर जल बंदे। विकसित रमे कोक सावासी ॥ छं० ॥२४४॥
संग्राम गए सूरी [2]संपगे। होइ चंद्रोदर ॥
विविधा काम तीयं। अवसर रत्त [3]काम लभ्भाइ ॥ छं० ॥ २४५ ॥
गाहा नक्किय तत्ती। सहानं नूपुरं उरवा ॥
[4]जिह अंकुर पव्वितं। भूतं जुथ्यांइ मंग भंगुरयं ॥ छं० ॥ २४६ ॥
जोई छविना वेनं। रचया सि महिला न रूप मह कामखे ॥
तां नंचिय सु वियोगे। निमइं मुत्तंच जुग्ग जुग्गाए ॥छं०॥२४७॥

हंसावती पृथ्वीराज की और पृथ्वीराज हंसावती की चाह में अहिर्निसि मस्त रहते थे।

पीय आरंभत चिययं। चिय आरंभ कंतं [5]चित्तायं ॥
सो तिय पिय पिय पलौ। मा पिमं [6]बिहमं धामं ॥ छं० ॥ २४८ ॥
अजा [7]सल जो होआ। कंठायं पयो हरं फलयं ॥
दीहंते सय लष्यं। हसनं रस नाय स बकियं होइं ॥ छं०॥२४९॥
*जोती अहर सहाओ। उचसिया कील कंतायं ॥
सो तिय अग्ग सुहाई। दिस असनी रसं नायं ॥ छं० ॥ २५० ॥
कवित्त ॥ रयनि पंच संकुलित। पंच लज्जित दुरि लोइन ॥
भिरत उभय भिरि मग्ग। मग्ग लग्गिय जुर जोइन ॥
[8]मिलत चतुर इक रीय। चतुर ग्रह ग्रहं [9]दहुर बल ॥
कमल कमल मंडिय सु चित्त। नष अष [10]बष्य बल ॥
आरति सोइ दइता बिछुरि। पार [11]समुद्र न नेह लहि ॥
इय प्रात प्रतिहत प्रथम पहु। नवति चित्त आचंभ लहि ॥छं०॥२५१॥

इस समय की कथा का अंतिम परिणाम वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-उंचंती। (२) ए.-संष। (३) ए. कृ. को.-कान।
(४) ए. कृ. को.-"निद अंकुरं एं विंत्तं"। (५) ए. कृ. को.-वितायं।
(६) मो.-बंदयं। (७) ए. कृ. को.-सानंजे।
* यह छंद ए. कृ. को.-तीनों प्रतियों में नहीं है।
(८) मो.-माचिंत। (९) ए. कृ. को.-दुदुरं।
(१०) मो.-चष्य। (११) मो.-समुद्रिन।

कवित्त ॥ हंसराइ [1]हंसनिय। पानि ग्रहनी ग्रह इच्छिय ॥
माखव द्रुग्ग देवास। [2]वास मुहत नव वच्छिय ॥
हय गय धुर धर भ्रम्म। भ्रम्म कित्ती अति दानह ॥
ता पाछे रनथंभ। प्रीति षीची चौहानह ॥
चिचंग राइ रावर रमिय। [3]देव राज अहव वहिय ॥
विख्यिय वसंत रिति अभ्भरिय। अचल एक कित्ती रहिय छं०॥२५२॥

समर सिंह जी और पृथ्वीराज की अवस्था वर्णन।

दूहा ॥ वत्त कवित्त उगाह करि। चंद छंद [4]कविचंद ॥
समर अठारह बरष दस। दिवस चिपंच रविंद ॥ छं० ॥ २५३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके हंसावती विवाह नाम छत्तीसमो प्रस्तावः संपूर्णम् ॥ ३६ ॥

(१) ए.-संसनिय। (२) मो.-वास मुहंत नवाछिय।
(३) ए. कृ. को.-वेदराज। (४) मो.-कवि छंद।

अथ पहाड़राय सम्यौ लिष्यते ।

(सैंतीसवां समय ।)

कविचंद की स्त्री का पूछना कि पहाड़राय तोंअर ने शहाबुद्दीन को किस प्रकार पकड़ा ।

दूहा ॥ दुज सम दुजी सु उच्चरिय । ससि निसि उज्जल देस ॥
किम तूंअर पाहार पहु । गहिय सु असुर नरेस ॥ छं० ॥ १ ॥

शहाबुद्दीन का तत्तार खां से पूछना कि पृथ्वीराज का क्या हाल है ।

कवित्त ॥ संवत सर च्यालीस । मास मधु पष्य ध्रम्मधुर ॥
घतिय दीह अहल्ल । उदित रवि व्यंब बरन तर ॥
अलिय आल आलोल । गरुअ [1]गज्ज [2]विसम्म मन ॥
रस रसाल मंजरि । तमाल पल्लव कमल्ल मन ॥
साहाब दीन सुरतान भर । आनि द्वार ठढ्ढौ सु बर ॥
अष्षै ततार षुरसान षां । कहा षबरि चहुआन घर ॥ छं० ॥ २ ॥

तत्तार खां का उत्तर देना ।

गाथा ॥ उच्चरि षान ततारं । अरि बरजोर अतर अत्तारं ॥
सामंत सूर सभारं । मत्त अमित्त समित जमक्कारं ॥ छं० ॥ ३ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज पर चढ़ाई करने की सलाह करना ।

भुजंगी ॥ कहै साह साहाब तत्तारषानं । रचौ मंडली मंडि दीवान थानं ॥

---

(१) मो.-गज्ज ।   (२) र. क. को.-विसंग मन ।

अरी [1]षान दिष्षौ बरं आसमानं। [2]करौ कूंच सेना प्रकासंत भानं॥
छं० ॥ ४ ॥

दलं लष्ष तीनं गजं बाज पूरं। तिनं तेज तोनं करं किप्ति सूरं॥
अनंहद नीसान नद्दे कि नूरं। नचे भूत बैताल मत्ते मदूरं॥
छं० ॥ ५ ॥

हलाहूम झंकार हुंकार भारौ। तुटै तेक तानं झरं ढुमि धारौ॥
करै सेन मग्गं नचै जोगमाया। घनं निंदरे घोर नंचै न छाया॥
छं० ॥ ६ ॥

सुरं सिंदनं सोभ सा भानं लोलं। सजे सेन राजी रसालं सदोलं॥
रचै रंभ रंभा विमानं विमानं। जयं सद्द देवी [3]दिमानं दिमानं॥
छं० ॥ ७ ॥

मनों साल भंजीक तेजं प्रकारं। रची स्वामि संची रची मंडिरारं॥
धजं धूमरं सेत पीतं सुरंगे। रितं राज अग्गै मनूं फूलि [4]रंगे॥
छं० ॥ ८ ॥

असं वेस कंपी ढुरी चौर मज्जी। चढ़े काम फजरं पती पीत सज्जी॥
निहारं विहारं उपं हार हारं। बरें अग्रसेना मध [5]व्रत्त पारं॥
छं० ॥ ९ ॥

रचे तुंड तुंगं तियं एक नैनं। सजे ताल वैताल सिंदू सबैनं॥
बनी अच्छरी कच्छि विम्मान गैनं। पतं जुग्गिनी पानि इच्छंत रैनं॥
छं० ॥ १० ॥

नचै रंग नारद्द मंडै अनूपं। चमू च्यारि भारं भरं सद्दि रूपं॥
अनी कोर आकार आक्रत्ति नूपं। बढ़ी भाग पथ्थी पयो उंच ओपं॥
छं० ॥ ११ ॥

---

(१) ए कृ. को.-पान। (२) मों.-करी कूच सेनाइ सासंत भानं।

(३) ए. कृ. को.-विमानं त्रिमानं। (४) मो.-हंगे।

(५) मो.-आत।

मही मंडि माया रहै लोपि मालं। पिले 'षग्ग अग्गं बलं बोलि तालं॥
नवं नद्द नीसान 'भेरी भयानं। मनों मेघ गज्जे 'कयानं पयानं॥
छं० ॥ १२॥

दूसरे दिन गजनी राजमहल के दरवाजे पर सहस्रों मुसलमान सेना का सज कर इकट्ठा होना।

दूहा ॥ 'तब ततार षुरसान षां। सुनौ साह साहाब॥
अरि अभंग दल सक्क रस। अमित तेज बल आब॥ छं० ॥ १३ ॥
अरुन वरुन उद्दित अरुन। बढ़ि प्राची रुचि 'रुप॥
मेच्छ सामि चढ़ि सेत अस। रन दिल्ली सम भूप॥ छं० ॥ १४ ॥

समस्त सेना का दस कोस पूर्व्व को बढ़ कर पड़ाव डालना।

कवित्त ॥ अरुन कोर बर अरुन। बंदि साहाब साहि चढ़ि॥
दिसि प्राची दष्षिन 'विपथ्थ। पच्छिम उत्तर बढ़ि॥
सेस भाग भै भाग। भोमि संकुचि कुकंपि निल॥
गमन सेन उड़ि रेन। गेंन 'रवि चत्त धुंध द्दल॥
दस कोस थान दल उत्तरिग। घन अवाज घर रिपु 'परिग॥
गत मेच्छ मंडि मंडल सुमति। गति सु जंग अग्गर धरिग॥छं०॥१५॥

दूहा ॥ रत निसान डग मग अरुन। जिम दीपक बसि बात॥
सुनिव चंप अति साह मन। तन विकंप अकुलात॥ छं० ॥ १६ ॥

अरिल्ल ॥ मिले मेच्छ मंडल भर भीरं। अतुलित पान षान संधीरं॥
उठत बयन अप अप्प समीरं। साहि 'बढ़ी थिर कार कंठीरं॥छं०॥१७

शहाबुद्दीन की आज्ञानुसार दीवान खास में गोष्ठी के लिये उपस्थित हुए सदस्य योद्धाओं के नाम।

---

(१) मो.-पग्ग। (२) ए. कृ. को.-मेभी। (३) मो.-पयानं कयानं।
(४) ए. कृ. को.-तवि। (५) ए. कृ. को.-रूपि। (६) मो.-विथ।
(७) मो.-रचि। (८) मो.-परिय। (९) ए. कृ. को.-थटौ थट्ठी।

हनूफाल ॥ घम घम्म बज्जि निसान। चढ़ि सेन कंपि दिसान ॥
पहु ओर कोरति भान। भर मंडि साहि दिवान ॥ छं० ॥ १८ ॥
बर मंच षान ततार। अरि जुद्ध सेन करार ॥
षुरसान रुस्तम षान। [1]बाजिंद मीर प्रमान ॥ छं० ॥ १९ ॥
मनसूर सेर हुआव। जिन दान षग अम आव ॥
[2]महमंद कम्मन काल। तिन तेज अरि भै चाल ॥ छं० ॥ २० ॥
मन ज्यंद जम्मन धीर। तेजम्मं षान गँभीर ॥
बेहद्द षान जिहान। निसुरत्ति आजम मान ॥ छं० ॥ २१ ॥
ममरेज से रनसिंघ। भजि जात तिन अरिभंग ॥
मुलतान षान मसद्द। भारथ्थ षान सुहद्द ॥ छं० ॥ २२ ॥
आमोद जाजन पीन। तिन हक्कि अरि तन छीन ॥
आषेट आतस मीर। सारफ सेर गँभीर ॥ छं० ॥ २३ ॥
सुरतान [3]मंडि दिवान। बर मंच करि परमान ॥
॥ छं ॥ २४ ॥

सभा में तत्तार खां का नियमित कार्य के लिये प्रस्ताव करना।

दूहा ॥ मिले मीर भर षान सब। रचि दिवान दरबार ॥
मंड मसूरत्ति मत्त बर। तब षुरसान ततार ॥ छं० ॥ २५ ॥

त्रितंड खां का सगर्व अपना पराक्रम कहना।

कवित्त ॥ मीरषान से रनवितंड। हक्किय हक्कारिय ॥
सनमुष साहि सहाव। बोलि बह बह बक्कारिय ॥
हनौं सेन हिँदवान। ऐन चहुआनह संधौं ॥
अरि अरिम अरि भीर। हक्कि हक्कौं षग [4]बंधौं ॥

---

(१) मो.-वाजीद। (२) ए.-महमूंद।
(३) ए.-संझि, कृ.-मांझि। (४) ए. कृ. को.-बन्धौं।

गज बाज साजि जयल पथल। चल अंदुन भंजौं [1]भरन ॥
भुम्र भाष भिस्त मंकोद रन। कै [2]घोरइ जीवन धरन ॥छं०॥२६॥

खुरसान खां का राजनीति कथन।

पद्धरी ॥ षुरसान षान कहि सुनि ततार। संची सु बत्त जंपौ सु ढार ॥
दल जोर तेज हिंदू अकार। बर मंच सेन रच्यौ [3]विषार ॥
छं० ॥ २७ ॥

बुल्ल्यौ वितंड काली तमंकि। तम छतें जुद्ध [4]किम साह संकि ॥
संग्रहौ सेनपति हिंदुराज। बंधों अषारि चल षग्ग बाज ॥छं०॥२८॥
निसुरत्ति मीर जंपै सु तब्ब। तम हसे साह किज्जैं न ग्रब्ब ॥
॥ छं० ॥ २९ ॥

दूहा ॥ रावन ग्रब्ब विनाश रज। दन सीस हयबीर ॥
अप्पा कोनन उच्छयौ। कालू से रनमीर ॥ छं० ॥ ३० ॥

पद्धरी ॥ पुनि अष्षि साहि निसुरत्ति बैन। सुरतान आन भरकान [5]नैन ॥
कुहि बाज तेन चालंत पब्ब। भौषंग कंपि हैं ग्रब्ब सब्ब ॥छं०॥३१॥
राई सुमेर करते न बार। [6]अलह सुआल ऐसी विचारि ॥
बिन साह तेज बढ्ढें सु ग्रब्ब। दूष्यै न ताहि अलह अदब्ब ॥छं०॥३२॥
मनो न संक चहुआन सूर। बंधव सुमंत्र भर मंच पूर ॥
बेलू विलाइ नदि बंधि वारि। बिन सेन कंक चहुआन च्यारि ॥
छं० ॥ ३३ ॥

* हिंदू सहस्स दस सामसंद। दल गैन लेस तन तेक कंद ॥
बुलाइ बैनपति समर मंड। बंचै विचार सु विहान चंड ॥
छं० ३४ ॥

बादशाह का (लोरक राय) खत्री को पत्र देकर धर्म्मायन के पास दिल्ली भेजना।

(१) ए. कृ. को.-सरन। (२) ए. कृ. को.-घोराहि। (३) ए. कृ. को.-विचार।
(४) मो.-क्यों। (५) मो.-दैन। (६) ए. कृ.-अलहस्सुआल।
* ए. कृ. को.- "हिन्दु सु हद सोमेस नंद। लग्गे न लेस तन तेक कंद"।

गाथा ॥ [1]बुल्लि सु दूत हजूरं । मंडे पत्तीय बीर पत्तायं ॥
अष्षित पान प्रमानं । कथ्थी गाथाय छूर चहुवानं ॥छं०॥३५॥

दूहा ॥ बोलि दूत चव निकट लिय । दिय सु पत्त तिन हथ्थ ॥
कही आइ भ्रम्मान सों । सजि चहुआन समथ्थ ॥ छं० ॥ ३६ ॥

दूत का दिल्ली को जाना और इधर चढ़ाई के लिये तैयारी होना।

गाथा ॥ निज के वीसा रुढं । वर साहाब ढिल्लीय ग्रासं ॥
बरति मंच मष किन्नं । गज्जीय मद्द भद्द नौसानं ॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ गए दूत चलि निकट चव । करि सलाम बर साहि ॥
पुर डंकिन कंकन सजन । बलि आतुर बर ताइ ॥ छं० ॥ ३८ ॥

दूत का दिल्ली पहुंचना।

स्याम [2]पष्ष पूरन क्रमिग । पहु जुग्गिनपुर नैर ॥
दिय कग्गर भ्रम्मान कर । बर [3]ष्रिम्मै रिन बैर ॥ छं० ॥ ३९ ॥

दूत का धम्मायन से मिलना।

गाथा ॥ दिय पत्ती भ्रम्मानं । पानं गहि पाइ नाइ बर मथ्थं ॥
भर चौहान समथ्थं । सज्जौ सम साह कज्जयं वैरं ॥ छं० ॥ ४० ॥

धम्मायन का पत्र पढ़ कर बादशाह के मत पर शोक करना।

दूहा ॥ कायथ कागर बंचि कर । हायथ [4]हाय सु कीय ॥
साहि काल सुब्भर सभर । आय पहुंच्यौ दीय ॥ छं० । ४१ ॥

धम्मायन का दरबार में जा कर यह पत्री कैमास को देना।

बचनिका ॥ पत्ती भ्रम्मन बाचि कैं देहु । बहुरि दरबार गएहु ॥
कैमास कों तसलीम कीनी । पत्ती सु हाथ दीनी ॥ छं० ॥ ४२ ॥

(१) ए. कृ. बुल्लवि । (२) मो.-साह । (३) मो.-पथ्य ।
(४) ए. कृ. को.-मंगै । (५) ए. को. हीय ।

शहाबुद्दीन की पत्री का लेख।

चौपाई ॥ हम तुम घरतें सौगँध कीनी। नाते भ्रम्म दुह्व हैं चीन्ही ॥
दानव देव आदि भी लग्गे। तातें बैर पुरातन [1]जग्गे ॥ छं० ॥४३॥
ज्यों ज्यों हम तुम बजिहैं [2]धार। त्यों त्यों सुकवि गाइहैं सार ॥
अमर नाम साहिब का सांचा। पानी पिंड षेह का कांचा ॥छं०॥४४॥
हम तुम में बंध्या अहंकार। मरदां भ्रम्म पुरातन धार ॥
मरदा अलि भारथ्था षेती। मरद मरै तब निपजै षेती ॥ छं० ॥४५॥
दूहा ॥ मरदां षेती षग मरन। [3]अथ्थि समप्पन हथ्थ ॥
सो सच्चा कच्चा अवर। कोइ दिन रहै सु कथ्थ ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कथा रही पैगंबरा। अरु भारथ्थ पुरान ॥
तातें हठ हजरत्ति है। सुनौ राज चहुआन ॥ छं० ॥ ४७ ॥

धम्मायन का कैमास के हाथ में पत्र देना।

दिय पत्री दूह कहि सु कर। करि सलाम तिय बार ॥
साहिब तुम सन लरन कौ। आयो सिंधु उतार ॥ छं० ॥ ४८ ॥

कैमास का पत्र पढ़ कर सुनाना।

सुनि मंत्री न्रप अष्षि सम। बंचि पत्र तिन बार ॥
कंच कूंच षंधार पति। आयो सिंधु उतार ॥ छं० ॥ ४९ ॥

पत्री सुनकर पृथ्वीराज का सामंतों की सभा करना।

सुनि पत्री चहुआन ने। सम सामंतन राज ॥
बात परट्ठिय सब भरन। अप्प अप्प [4]भरसाज ॥ छं० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज का उक्त पत्री का मर्म सब सामंतों को समझाना।

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। सुनौ सामंत [5]सूर भर ॥
गज्जनेस चतुरथ्थ। विरच आयौ सु अप्प पर ॥
साज बाज मय मत्त। षग्ग बर भर उब्भारिय ॥

(१) ए. कृ. को.- लग्गे। (२) ए. को.-धारैं। (३) ए.-हथ्थि।
(४) मो.-बल। (५) ए. कृ. को.-सुर।

उतरि वेग नदि सिंधु। सुनिय धुनि अर उत्तारिय ॥
सज्यौ समथ्थ सामंत सब। संभर चावर डंब रन ॥
सुरतान खान खुरसानपति। दल बद्दल पावस परन ॥छं०॥५१॥

सामंतों का उत्तर देना।

तमकि राज प्रथिराज। कहै समंत सूर भर ॥
चाहुआन समरथ्थ। पथ्थ भारथ्थ चाह धर ॥
सिंधु साह गज गाह। षग्ग षंडौ पल षित्तह ॥
कर अंजुलि रिषि [1]अस्ति। चंद अचवन दल कित्तह ॥
हर हार सार संमुष समर। अमर मोह जग्यौ अमर ॥
ज्यों मान व्योम आरुढ़ [2]धरि। बनी चमू चौसर चमर ॥छं०॥५२॥

पृथ्वीराज का पच्चीस हजार सेना के साथ आगे बढ़ना।

अरिल्ल ॥ चढ्यौ राज प्रथिराज सु राजन। [3]पाव लष्य दल बल गज बाजन॥
चामर छत्र रषत्त निसानं। मनुं घनघोर दिसान दिसानं ॥
छं० ॥ ५३ ॥

कूच के समय सेना की शोभा और उसका आतंक वर्णन।

चोटक ॥ चढ़ि राज महा भर सैंन भरं। उडि षेह धुरं रुकि सूर करं ॥
बनि अच्छरि चच्छरि चारु बरं। किल [6]कौतिग भूत वेताल वरं ॥
छं० ॥ ५४ ॥

मुष छंद सु चंद वरं पढियं। [4]मुष जुग्गिनि अंग वियौ गढियं ॥
सुर सद्द जयं जयरं [5]कथयं। चल चंचल सूर चढ़े कसियं ॥
छं० ॥ ५५ ॥

तल ताल करालति कूक करं। .... ॥
दोइ आइस दूत ससाहि दलं। तिन अष्षिय सेन निकट्ठ कलं॥छं०॥५६॥

---

(१) ए. कृ. को.-लागस्ति, अगस्त। (२) ए. कृ. को.-ढरि।
(३) मो.-तीन फौज रच्चे गज बाजन। (४) ए. कृ. को.-मुख।
(५) ए.-पथयं। (६) ए. कृ. को.-कोतिक।

पृथ्वीराज का पड़ाव डालना।

दूहा ॥ सुनि अवाज सुरतान दल। हरषि राज प्रथिराज ॥
कोस पंच दुअ संवचिग। हिंदुअ मेच्छ अवाज ॥ छं० ॥ ५७ ॥

अरुणोदय होते ही पृथ्वीराज का शत्रु पर आक्रमण करना।

उदय भान प्राची अरुन। चढ्यौ राज सजि सेन ॥
उर पातर कातर [1]इसे। मेच्छ पौर फर सेन ॥ छं० ॥ ५८ ॥

गाथा ॥ अच्छरि कच्छिय गैनं। चैनं चवसट्ठ गैन गोमायं ॥
हर हरषे हारायं। जुद्धं सज्जाइ दो दसा दीनं ॥ छं० ॥ ५९ ॥

हिन्दू और मुस्लमान दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना।

दूहा ॥ मिलिवि सेन अरुन सु अनी। तनी तनी दुअ [2]दीन ॥
असुर ससुर सज्जे सयन। दोउ बीरां रस भीन ॥ छं० ॥ ६० ॥

शहाबुद्दीन का अपने सैनिकों को उत्तेजित करना।

भोटि साहि भर षान सव। पति पुच्छी इह बत्त ॥
अरिय प्रचंड प्रचंड दल। करहु समर सक मत्त ॥ छं० ॥ ६१ ॥

सूर्य्योदय होते होते दोनों सेनाओं में रणवाद्य बजना और कोलाहल होना।

अरिल्ल ॥ प्रगटित भान पयानिति पूरं। वाजिग दुंदभि धुनि सुर क्रूरं ॥
चढ्यौ साहि संमर करि रूरं। अरुन वरुन मिलि तथ्थ [3]सनूरं ॥
छं० ॥ ६२ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे पर धावा करना।

दूहा ॥ ढलकि ढाल बहुरंग वर। [4]गुरत मत्त गजराज ॥
झलकि नीर वपु दल चढ़िय। मनों पावस गुर राज ॥ छं० ॥ ६३ ॥

(१) ए. कृ. को.-जिसे। (२) ए. कृ. को.-दीम।
(३) ए. कृ. को.-न थूरं। (४) मो.-"गुरतम चढ़ि गजराज"।

दोनों सेनाओं के उत्कर्ष से मिलने की शोभा और यवन सेना का व्यूह वर्णन।

भुजंगी॥ ढलक्की सु ढालं, हलक्केति [1]हूरं। धमक्के धरा, नाग नीसान[2]पूरं॥
किलक्के सुभेरं, बजे बाज तूरं। भलक्कैं सुनेजा धरा [3]धूम धूरं॥
छं०॥ ६४॥

बरक्के वितालं, बजै तार तालं। करै कूह कूहं, जगी जोग मालं॥
नचै सट्ठि चारं, करै राग सिंधू। वकैं भूत प्रेतं, कढें तार तिंदू॥
छं०॥ ६५॥

मिली सैंन सेनं, ठगी लग्गि [4]नैंनं। चढ़ी काल काया, चढ़ी गिद्धि गैनं॥
भरं भीर भीरं, भिरैं बीर भारं। रची अट्ठ फौजं, विचे साहि सारं॥
छं०॥ ६६॥

मुषं अग्ग मंने, षुरासान अब्बी। भरं चिम्मनं, षान तेयं दिठब्बी॥
दिसं वाम मारुफ, पीरोज सज्जे। दिसा दच्छनं, चिम्मनं अम्मरज्जे॥
छं०॥ ६७॥

अनी च्यारि पिठ्ठं, अनी दोइ अग्गं। गुरं गौर तारं, पारी पाइ कग्गं॥
जग्यौ जंग जोरं, हुत्र्यौ बीर सोरं। घनंनद्द नीसान, भद्दं सघोरं॥
छं०॥ ६८॥

दूहा॥ भर सहाव सज्जिय अनी। जिवन जोर चतुरंग॥
सुभर प्रफुल्लित वीर मुष। काइर कंपत अंग॥ छं०॥ ६९॥

हिन्दू सेना की शोभा और उपस्थित युद्ध के लिये उस के अनी भाग और व्यूह वद्ध होने का वर्णन।

भुजंगी॥ चढ्यौ राज चहुआन कुप्यौ करूरं। बढ़ी वेद साषी चढ़ी जाग रूरं॥
ढलक्की सुढालं सु ढालं धमक्के। करं छत्त षग्गं सु पट्टे चमक्के॥
छं०॥ ७०॥

---

(१) ए.-निसानं। (२) ए.-मेरं, कृ.-मूरं।
(३) मो.-"धरा धूर पूरं"। (४) मो.-गैनं।

घनंआगमं आनि विज्जू दमक्के। घनंघोर नीसान नादं घमक्के ॥
रची पंच [1]सेना मधे [2]मंडि राजं। गजं बाजि रोहं हयग्गार साजं॥
छं० ॥ ७१ ॥

मुषं अग्ग कैमास चावंड सूरं। सहस्सं अठं सेन गज बाजि पूरं ॥
[3]भुजा दच्छिनं भीम कन्ह किवारं। सतं तथ्थ सामंत सेनं सवारं॥
छं० ॥ ७२ ॥

दिगं वाम पंम्मार आबू[4]प्रईसं। चमू च्यारी सोभं भिरी आनि सीसं ॥
[5]रसं रौद्र मंडयौ घगं [6]षंडि जीसं। फिरें बेक ढालं [7]ढुरैं नागरीसं॥
छं० ॥ ७३ ॥

पछं जाम जाजं दलं सिंघ साजं। सयं पंच पंचास संगी विराजं॥
दहं तीन पंचं [8]तथं पंच सज्जं। इलं सेष नंदं गनं गेन गज्जं ॥
छं० ॥ ७४ ॥

घमं घम्म नीसान रीसान बज्जं। सबद्दं [9]सु सद्दं सु सिद्दं सु लज्जं॥
चढ़े मेच्छ हिंदू मिलौ जुद्ध अग्गी। कथी व्यास भारथ्थ सा आज बग्गी॥
छं० ॥ ७५ ॥

कुरं पंड बंध्यौ बधे आप अग्गे। इसे मेच्छ हिंदू भरं षग्ग लग्गे ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७६ ॥

दोनों सेनाओं की अनियों का परस्पर यथाक्रम युद्ध होना।

दूहा ॥ जनुकि पथ्थ भारथ्थ भर। लगि कुर पंड प्रचंड ॥
चाहुआन दल मेच्छ दल। हकि हय ग्गय झुंड ॥ छं० ॥ ७७ ॥
इत हिंदू उत मेच्छ दल। [10]रन चढ्ढे बर धीर ॥
हकि तेज असि बेग बढ़ि। लगे सुभर हर भीर ॥ छं० ॥ ७८ ॥

---

(१) मो.-फौजं। (२) ए. कृ. को.-मधं। (३) ए. कृ. को.-दिसा।
(४) मो.-अईस। (५) मो.-"रसं शक्कुर माडि षग षांडे जीसं"।
(६) ए. कृ. को.-षंड। (७) ए. कृ. को.-ढलै, ढलैं।
(८) ए. कृ. को.-मयं। (९) ए. कृ. को.-सुसज्जं।
(१०) ए. कृ. को.-चल्ले चढ़ि।

युद्ध का दृश्य वर्णन।

दंडमाल ॥ मेछ हिंदू जुद्ध घरहरि। घाइ घाइ अघाय घर हरि ॥
रुंड मुंडन षंड धर हर। मत्त बहुत सुरत्त झरहरि ॥ छं० ॥ ७९ ॥
भग्ग काइर जूह भीरन। छंडि जल छुरिञ्ज धीरन ॥
रुंड चट्टिय रट्टि थर हरि। रक्त जुग्गिनि पत्त पिय भरि ॥छं०॥८०॥
चवत कीरति अच्छ अच्छरि। सुफटि पट्ट सुपट्ट फर हरि ॥
सिद्ध सूरन बीर जुरि जुरि। .... ॥ छं० ॥ ८१ ॥
प्रबल पीलिय पाल सेनिय। विचलि थल दिग परे ऐनिय ॥
गोम गैंन निसान नंगिय। थान थान बिवान संगिय ॥ छं० ॥८२॥
भुअन भिरि भुअधार धारन। ओन तुच्छिय छीर झारन ॥
हिंदु मेच्छ अघाइ घाइन। नंचि नारद जुद्ध चायन ॥ छं० ॥ ८३ ॥
गाथा ॥ नंचिय नारद मोदं। क्रोधं घन देषि सु भट्टायं ॥
हर हरषिय हारं। पत्तो चंद भानं भा यानं ॥ छं० ॥ ८४ ॥

सायंकाल होने पर दोनों सेनाओं का विश्राम करना।

दूहा ॥ थकि झुझ्झत संध्या सपत। सपत भान पायान ॥
पहु प्राची बजि पंचजन। लह छुअत गोयान ॥ छं० ॥ छं० ॥ ८५ ॥

प्रातःकाल होतेही इधर से कैमास का और उधर शहाबुद्दीन का अपनी अपनी सेना को सम्हालना।

कुंडलिया ॥ पहुलग्गे चामंड सुभर। अरु चिमत्त चतुरंग ॥
इंद्रजीत लछिमन रहसि। बहसि बढ़ी (१)सु तुरंग ॥
बहसि बढ्ढि सु तुरंग। पंच साइक भाले भिलि ॥
फुनि गोरी दाहिम्म। सु हय छंडे सु बंधि कलि ॥
जिम रघुपति पतिलकं। बकं कंकन कर अग्गी ॥
तिम गोरी दाहिम्म। सु हय छंडे जुध लग्गी ॥ छं० ॥ ८६ ॥

---

(१) मो.-चतुरंग।

सूर्य्योदय होतेही दोनों सेनाओं का आगे बढ़ना और अपने अपने स्वामियों का जैकार शब्द करना।

कवित्त ॥ उदय भान पापान । कोर दिष्षिय दल चढ्ढिय ॥
हय गय [१]नर आररिय । सद्द पर सद्दन बढ्ढिय ॥
अच्छरि तन सच्छरिय । व्योम विम्मानह चढ्ढिय ॥
दिष्षि सूर सामंत । देव जैजै मुख पढ्ढिय ॥
हथ्थिय सुधारि हयनारि धरि । गजैनारि करनारि बजि ॥
चढि हिंदु मेछ मुह मिलि अनिय । मनों अम्भ पावस सु रजि ॥
छं० ॥ ८७ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे पर वाणों की वर्षा करना ॥

दूहा ॥ भर भीषम तीकम अमर । धनुष बान अग्रान ॥
हिंदुअ मीर सुदृक हुअ । मीरचंद सनमान ॥ छं० ८८ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे में पैठ कर शस्त्रों की मार करना।

भुजंगी ॥ मिले हिंदु मेंछं अनी एक मेकं । [२]बजे षग्ग धारं रजे तोन तेकं ॥
करं पच[३]सत्ती चवै [४] सिंध नद्दं । श्रवै श्रोन गंडूष षग्गं उनंगं ॥
छं० ॥ ८९ ॥
उठें रत्त पीतं घमं धूम रंगं । सतं [५] सेत नीलं जलंजात संगं ॥
उठं पच[६]डंडूर सर सोभ सज्जी । मनों डंड सालं समंडं डरज्जी ॥
छं० ॥ ९० ॥
विताखं विताखं रजे ताल प्रेरं । गिरं मेच्छ हिंदू घनं घाइ बेरं ॥
जमं जांम जग्यौ जमानं सुजग्गं । तिलं [७]तिभभ्भ अग्गं वढ़े षग्ग षग्गं ॥
छं० ॥ ९१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-अर ।
(२) मो.-"वजे षग्ग घोरं भेतो झत्ततेकं" ।
(३) ए. कृ. को.-सट्ठी । (४) मो.-सिद्ध ।
(५) मो.-सेल । (६) ए.-डेंडूर । (७) ए.. कृ. को.-तिरल ।

अयं अग्गि जग्गी अनू जग्य जूनं। रते अंग अंगं चले संग [1]सूनं॥
चढ़ी गिद्धि गैनं छयौ वान भानं। परे पाइ सामंत सो चंद आनं॥
छं० ॥ ९२ ॥

जिमं पंड [2]कैरू परे मज्झि जुद्धं। सही सच्च कथ्थी पगं बड्डि उद्धं।
कवीचंद कथ्थी कुरष्षेत हेतं। इसे हिंदु मीरं चढ़े बंदि नेतं॥
छं० ॥ ९३ ॥

युद्ध भूमि में वैताल और योगिनियों के नृत्य की शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ नेत बंधि हिंदू। नरिंद सामंत मत्तभर॥
मीर भार असरार। सबें ढाहे सु सझि सर॥
पथ्थ भेम भारथ्थ। कथ्थ सुझ्झे जिम कथ्थिय॥
सु कविचंद बरदाइ। एम कथ्थिय रन बत्तिय॥
घन घाइ आघाइ सुघाइ घट। तेक तानि नंचिय करस॥
चहुआन राइ सुरतान दल। न्रत्य बीर मंड्यौ सरस॥ छं० ९४॥

दूहा ॥ तेग तार मंडिय समर। नच्चिय नंच बिन घेर॥
चाहुआन सुरतान रिन। रचे न्रत्य बर बैर॥ छं० ॥ ९५॥

योगिनी भूत वैताल और अप्सराओं का प्रसन्न होना और सूरवीरों का वीरता के साथ प्राण देना।

भुजंगी ॥ रचे न्रत्य बर बैर [3]हिंदू ह मीरं। मदुंमंदलं तज्ज राजंत धीरं॥
घनं गज्ज नीसान ईसान सोरं। करें न्रत्य भूतं रचें और कोरं॥
छं० ॥ ९६ ॥

करंताल भालं बजें रंग रंगं। भमे गिद्धि गैनं नचै चारि अंगं
सुरं सुंदरी नंदरी चढ्ढि ब्योमं। छबी छब्बि छायं बरं बार सोमं॥
छं० ॥ ९७ ॥

उड़ें रत्त गुल्लाल फूले सु [4]फागं। चलं घग्ग ऋूचं समं माल लागं॥
उठें गाइनं नंचि तोरंत तानं। लगें घग्ग पत्तं सु पेरंत मानं॥छं०॥९८॥

---

(१) मो.-सूनं। (२) ए. कृ. को.-केरं।
(३) मो.-हिन्दू समीरं। (४) ए. कृ. को.-फागं।

कटै अब सीसं बहै रत्तजानं। रतं पट्ट बंध्यौ मनों रिभ्भि भानं ॥
सुरं सद्धि नद्दं चवै मुष्य गानं। फिरैं जुद्ध जोधं बहै मोह बानं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

बढ़े मांस प्रासाद भूतं अहूरं। रतं पानि डारं तकै सूर नूरं ॥
हरै रत्त रूपं कचं कुंच वासं। विधिं छित्ति राजौ रसं रंग रासं ॥
छं० ॥ १०० ॥

नचै प्रेत पानं बिना सीस केलं। मनों अग्ग फागं जगे न्नत्य षेलं ॥
षगं घंटि नाना कटै रुंड सेषं। इभं रुद्द सद्दी मिलैं नारि देषं ॥
छं० ॥ १०१ ॥

बकै मत्त हालाहलं षग्ग षंडे। जिसे राम रन मभ्भ रावन्न मंडे ॥
नवं नारिका बाटिका वीर तुट्टै। घनं घाइ प्रघ्घाइ जुग जोग छुट्टै ॥
छं० ॥ १०२ ॥

युद्ध रूपी समुद्र मथन को उक्ति वर्णन।

कवित्त ॥ नव बढ़िय नाटिका। षग्ग कढ़ी असु हक्किय ॥
हिंदु मेच्छ मिलि षेत। अप्प अप्पन चढ़ि कंकिय ॥
रा चावंड रा जैतसी। राइ पज्जून [1]कनकह ॥
मीर षान भर पंच। षग्ग बहुए तननंकह ॥
वपु वेद चन्द बानी विमल। विठुरि षग्ग षल षेत बढ़ि ॥
केवल सु कढ्ढि [2]सुरतान दल। लिय रतन्न मथि देव दधि ॥
छं० ॥ १०३ ॥

कुंडलिया ॥ मथि कढ्यौ सुरतान दल। दधि केवल मन बढ्ढि ॥
मीर षान मारूफ दल। वीर विमानन चढ्ढि ॥
वीर विमानन चढ्ढि। दिष्ट बढ्ढी बारह पर ॥
भर चंदेल विरंम। षेत झोरी सुभोंह भर ॥
गय नंगचंद अमृत भरिग। कुसुम गुच्छ कविचंद पथि ॥
विम्मान पथ्थ रवि कुंत रथ। षग्ग नेत कढि केल मथि ॥
छं० ॥ १०४ ॥

(१) ए. कृ. को.-कमककह। (२) मो.-षुरसान, षुरसांन।

इस युद्ध में जो जो वीर सरदार मारे गए उनके नाम और उनका पराक्रम वर्णन।

मोतीदाम ॥ मथ्यौ सुरतानय सेन पयार। लई जस कीरति चंद सुधार ॥
परे रन मज्झ चँदेल सुधाइ। परे बहु घाम सुघाइ अघाइ ॥
छं० ॥ १०५ ॥

पर्‍यौ धर बाहर [1]राइति साल। धरक्कर धम्मन तुट्टिय ताल ॥
वरैं कर अच्छर सुच्छर माल। धकद्धक काइर छत्ति विसाल ॥
छं० ॥ १०६ ॥

भुकि भभुकि तुंडन श्रव वामह। मनों हरि चक्कन वेतन बह ॥
पर्‍यौ घन [2]घाव सु वीरमदेव। हयग्गय विद्धिय छप अभेव ॥
छं० ॥ १०७ ॥

विनौं सिर मंचत मीर कमंध। हये हय नाग नरब्भर संध ॥
लयौ धर सीस सुभ्यौ असि साइ। हनैं लगि पंचय पंचय धाइ ॥
छं० ॥ १०८ ॥

[3]हए लगि पंचल पिम्मन घाइ । ....
[4]पर्‍यौ पीरोज सु रावन नंद। करे [5]मय कोतिग छूरन चंद ॥
छं० ॥ १०९ ॥

चले दल चंचल दो सुरतानं। लगे कर देषि चँदेल परानं ॥
परे मफरह सुमंच [6]विभीर। लगे ग्रहलुद्दि झषी कर कीर ॥
छं० ॥ ११० ॥

गिरे सु पिरोज तिलत्तिल गात। विय छवि छंछ बढी हविपात ॥
[7]रचे रति आगम राव वसंत। जगम्मनि जंग परे वर संत ॥
छं० ॥ १११ ॥

---

(१) मो.-राय विसाल।
(२) मो.-घाय।
(३) ए. कृ. को.-हनैं, हने।
(४) ए. कृ. को.-"परयौ पुं पीरोज"
(५) ए. कृ. को.-जय।
(६) ए. कृ. को.-विमीर।
(७) मो.-रते।

गही तरवार विपानि सु झारि। नवंतिय वाइस अंत उतारि॥
पऱ्यौ सम बाज सु हाजमषान। रचे गज इंद्र सु [1]ब्रह्म घियान॥
छं० ॥ ११२॥

कऱ्यौ मम छूर तिलत्तिल षग्ग। उड़े रिन [2]पत्तरि तप्पत अग्ग॥
चढ़े साकूप सु गैवर रूप। कऱ्यौ सम सीस धरद्धर भूप॥छं०॥११३॥
भिरें भर हिंदुअ मीर अघाइ। गिरे दस पंच सहस्सउ ठाइ॥
.... । .... छं० ॥ ११४॥

युद्ध होते होते रात्रि हो गई।

दूहा॥ गिरे मेच्छ हिंदू सुभर। हय गय घाइ अघाइ॥
[3]सुंड रुंड मुंडन भरत। रत्त झाकि भुकि ताइ॥ छं०॥ ११५॥

उपरोक्त वीरों के मारे जाने पर पहाड़ राय तोमर का हरावल में होकर स्वयं सेनापति होना।

भिरि तूंअर लिय बग्ग भरि। हय करि मीर प्रवाह॥
सघन घाइ संमुष [4]समर। लगे मेच्छ पति बाह॥ छं०॥ ११६॥

पहाड़राय तोमर का बल और पराक्रम वर्णन।

घाइ घाइ तन छाइ छिति। रत्त छिंछ उछरंत॥
भर तोंवर हर जिम तमकि। लग्गि [5]जमन गज अंत॥छं०॥११७॥
कवित्त॥ भर तोंअर अभि रत्त। धरत कर कुंत जंत अरि॥
गजन बाज धर ढारि। धरनि बर रत्त जुथ्थ परि॥
भग्गि मीर काइर कनंक। हिय पत्त [6]सुच्छि [7]द्रढ़॥
भग्गि सेन सुरतान। दिष्षि भर सुभर पानि कढ़॥
उभ्भारि सिंगि कुंभन छरिय। झरिय श्रोन मद गज ढरिय॥
हर हरषि हरषि जुग्गिनि सकल। जै जै जै सुर उच्चरिय॥छं०॥११८॥

(१) मो.-ब्रह्म सुधान। (२) मो.- पातरि।
(३) ए. कृ. को.-मुंड। (४) ए.-समन, कृ. को.-सरन। (५) मो.-जमुन।
(६) ए. कृ. को.-मुट्ठि। (७) मो.-द्रग।

दुतिया का चन्द्रमा अस्त होने पर युद्ध का अवसान होना।

दूहा ॥ प्रदिपद् परिपातह पहर। समर सूर चहुआन ॥
दिन दुतिया दल दुःख उरभि। ससि जिम सकि पिसान ॥
छं० ॥ ११९ ॥

तृतिया को दोनों सेनाओं में शान्ति रही और चतुर्थी को पुनः युद्धारंभ हुआ।

कवित्त ॥ दिन चतिया बर तुंग। भुकि झारम भुकि भुकिन ॥
हिंदु मेच्छ हय हकि। धक बज्जिय भर हकन ॥
कटि मंडल घटि घुम्मि। भुम्मि भंभरिन अकालहि ॥
भूत बीर बेताल। मंस तुट्टत श्रम चालहि ॥
दसकंध कोपि रघुपति रहसि। विहसि चंद बड्डिय बदन ॥
चतुरथ्थ जुद्ध जंगिय जगो। रंगि कंक डकिन रदन ॥ छं० ॥ १२० ॥

चतुर्थी के युद्ध में वीरों का उत्साह क्रोध उत्कर्ष वर्णन और युद्ध का जलमय वीभत्स दृश्य वर्णन।

दंडक ॥ चवथि जुद्ध उदोत आरनि। सुभर भीर समुष्ष धारनि ॥
कोपियं चहुआन भरहर। घाइ कुंअर ढाहि धरहर ॥ छं० ॥१२१॥
स्रोन छीन प्रवाह बरहर। अंत अंतम अंत भर हर ॥
[1]तार तान विताल करि करि। तेग षेंचत पाइ परि परि ॥
छं० ॥ १२२ ॥
घुम्मि भुम्मि निसान बज्जिय। अगम मेघ असाढ़ गज्जिय ॥
धुनि सु असि असमान रज्जिय। दिष्षि देव विमान छज्जिय ॥
छं० ॥ १२३ ॥
कंपि कायर लज्जि लज्जिय। [2]विकल मुष हूँ [3]निकलि भज्जिय ॥
समुष तोंवर साह सज्जिय। [4]विषल अरि कर तेग तज्जिय ॥
छं० ॥ १२४ ॥

---

(१) मो.-तार वितान विताल कर कर। (२) ए. कृ. को.-विमल।
(३) ए. कृ.को.-निकारि। (४) ए. विमल।

बीर बहुरि बिशेष बानय। छुट्टि छाय अकास भानय॥
रेन छूर दिसान यानय। सोक कोक [1]असोक आनय॥छं०॥१२५॥

भमकि सुर सुष सद्द लग्गिय। दमकि दिसि दिसि षग्ग मग्गिय॥
रत्त पत्त प्रवाह झरि भरि। ईस सीस [2]सजंत गुरि गुरि॥छं०॥१२६॥

मच्छ मच्छन कच्छ कच्छिय। दलन दोन कलोन अच्छिय॥
अंत [3]दंतिय दंत पाइन। गिद्ध जुग लै उड्डी चाइन॥ छं० ॥१२७॥

नषत चित्त सुहत्त फिरि फिरि। मष्पि डोरि पसारि कर धरि॥
रुहिर सर सम बहत धार स। भँवर पंषिन काक पारस॥
छं० ॥ १२८ ॥

मौका पाकर पहाड़ राय का शहाबुद्दीन के हाथी के पर तलवार का वार करना और हाथी का भहरा कर गिरना।

हनूफाल॥ रंगिय रदनु जुग्गिन बीर। है गै पारि असि [4]वर मीर॥
तोवँर राइ दिष्यौ साहि। नंष्यौ बाज सनमुष आइ॥छं०॥१२९॥
डारिय तेग सिर करि बीज। *गिर पर अनु कि करकिय बीज॥
करि कर वारि गज धर डाहि। [5]गैवर गिरत निकरि साहि॥
छं० ॥ १३० ॥

तोंवर दिष्षि राइ पहार। गैंवर दिष्षि है कँध डारि॥
भावरी भग्गि अब्ब मेछान। जै जै जै जंपियं चहुआन॥छं०॥१३१॥

मुसलमान सेना का घबरा कर भाग उठना।

दूहा॥ भग्गि सेन सुरतान सब। रव लग्गी मुष तक्कि॥
गह्यौ साहि तोंवर [6]पुरस। जानि राइ ससि बक्क॥ छं० ॥ १३२ ॥

(१) ए. कृ. को.-असोक जानय। (२) मो.-जाति।

* मो.-गिर पर जानु करंकिय बीन-पाठ है और ए. कृ. को.-प्रतियों में "गिरि पर किंकर कीय बीज" पाठ है किन्तु इन दोनों पाठों में छन्दोभंग होता है। (३) ए. कृ. को.-तंतिय।

(४) मो.-चर। (५) मो.-गिर चंत गैवर निकर साह। (६) मो.-पुरित।

अपनी सेना भाग उठने पर शहाबुद्दीन का चकित होकर रह जाना और पहाड़ राय का उसका हाथ जा पकड़ना और लाकर उसे पृथ्वीराज के पास हाजिर करना।

कवित्त ॥ जुग्गिनि गन गर सिंधु। करत उच्चार सार सुष ॥
अछि अच्छरि बर इच्छ। चिसन अक पानि नैन सिष ॥
बज्जि ताल बेताल। रज्जि बर [1]तुंड चंड सँग ॥
स्रोन छोनि छय छंछ। गुंज गन द्रेन रत्ति अँग ॥
[2]मुरि मेच्छ धाइ घट सघन परि। हथ्थ घालि सुरतान लिय ॥
जित्तो जु आनि सोमेस सुअ। अभै सुभै अंगन घटिय ॥छं०॥१३३॥

सुलतान सहित पृथ्वीराज का दिल्ली को लौटना और दंड लेकर उसे छोड़ देना।

गहि गोरी सुरतान। अप्प ढिल्ली सँपत्तौ ॥
माह सुक्कल पंचमी। वार भमु वर दिन चित्तौ ॥
किय सु दंड पतिसाह। सहस सत्तह सुभ हैंवर ॥
दुरद षट्ट प्रम्मान। बहै घट रित्त मद्द भर ॥
काटेक द्रब्य न्रप हेम लिय। घालि सुषासन [3]पठय दिय ॥
कलि काज कित्ति बेली अमर। सुभत लीस बहुमान किय ॥छं०॥१३४॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके तोंवर पहाड़ राइ पातिसाह ग्रहन नाम सैंतीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥३७॥

---

(१) ए. कृ. को.-तंड। (२) मो.-मुरि सेन धाइ मिछ सछन परी।
(३) मो.-पट्ठ।

अथ बरुण कथा लिष्यते ।

(अड़तीसवां समय ।)

"सोमेश्वर" सांसारिक सम्पूर्ण सुखों का आनन्द लेते हुए स्वतंत्र राज्य करते थे ।

दूहा ॥ सुष लुट्टहि लुट्टहि मयन । अरि धर लुट्टै धाइ ॥
अंग नवनि करि उब्बरै । है पुर पग्गह पाइ ॥ छं० ॥ १ ॥

चन्द्र ग्रहण पर सोमेश्वर जी का समाज सहित यमुना जी पर ग्रहण स्नान करने जाना ।

सोम [1]ग्रहन सुनि सोमन्रप । कालंद्री मन आनि ॥
[2]है गे जन सब संग लै । तहां बोले बिप्र ठानि ॥ छं० ॥ २ ॥

सोमेश्वर जीके साथ में जाने वाले योद्धाओं के नाम और पराक्रम वर्णन ।

मोती दाम ॥ जुषोड़स दान बिचारिय राज । रची बिधि ज्यौं [3]बध [4]देवति साज ॥
तहां ढिगोसिंघ पँवार पवित्त । [5]सुभ्रम्मय भ्रम्म तहां बिपचित्त ॥
छं० ॥ ३ ॥

जुगौर गुरंबर सिंह सुसंग । जिनै करि अज्जर देहिय अंग ॥
तहां ढिग संजम राव नरिंदु । धरे जनु इंद्र बिराजत [6]चन्द ॥
छं० ॥ ४ ॥

सुवाहन बीर बली कुनि तथ्य । तिनै कलि भ्रम्मन दूजि यकथ्थ ॥
तहां गुर राज [7]बिराजत ताम । तिदिह बषिष्ठ मनों ढिग राम ॥
छं० ॥ ५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-ग्रहनी । (२) ए. कृ. को.-होम जग्य ।
(३) ए. कृ. को.-बुध । (४) मो.-देवनी ।
(५) ए कृ. को.-सुधर्मय धूम नहीं बियचित। (६) ए. कृ. को.-इन्द, इन्द्र । (७) मो.-बिरामत ।

सु और अनेक महाभर मंझ। अमंत क्रमंत [1]सयन्तिय संझ ॥छं०॥६॥

उक्त समय पर पूर्णमा की शोभा वर्णन।

साटक। मुंदी मुष्य कमोद हंसति कला, चक्कीय [2]चक्कंचितं।
चंदं किरन कढ़ंत पोइन पिमं, भानं कला छीनयं॥
बानं मम्मथ मत्त रत्त जुगयं, भोग्यं च भोगं भवं।
[3]निद्रा वस्य [4]अगत्त भक्त जनयं, वा जग्य कामी नरं॥ छं० ॥ ७॥

चोटक॥ *चकी चक्क चक्किय चित्त मयं। बिछुरे बिय दिष्षिय संझ मयं॥
† जु पयोध्रिम तत्त मझं सुरवी। सु मनों दिसि दिस्सि सिंदूर [5]जवी॥
छं० ॥ ८॥

घन सोर द्रुमं करि पंष घनं। सु मनों लगि पारसियं पढ़नं॥
अलि वासिय पंकज कोक नदं। कुलटा बसि छैल रसं विमिदं॥
छं० ॥ ९॥

बिरही जन दिष्टि सु धाम ढुरी। उलटैं बसि डोरि ज्यों चंग उरि॥
बजी वर देवल झल्लर झूर। तिसं घर सिंगिय सिद्धन पूर॥छं०॥१०॥
[6]कपी मुग धापिय केलि कठौर। मुदै हसि प्रौढत सुंदर चौर॥
छवि दीपक हारन जोति जगै। जनु दंपति नैन सुभे उमगै॥
छं० ॥ ११॥

जु लगीं धुम्र घुंमर रैनन मंडि। चलै क्रम चोर मगं [7]पियं छंडि॥
‡ जुरसे रस चामर सीस हुसे। दिषि दीपक जोति पतंग जिसे॥
छं० ॥ १२॥

बिरहा उर झारिय केलि करी। हून दाहिय देहव प्रीति धरी॥
बिरही चिय मुष्य सु दुष्य [8]सदं। कुम्हिले जनु पंकज कोक नदं॥
छं० ॥ १३॥

---

(१) ए. कृ. को-सपन्निय। (२) मो.चक्कंचितं। (३) मो.-निद्रया।
(४) ए. कृ. को. जगंत। *ए. कृ. को.-"कवि चक्क सु चक्किय"।
† ए. कृ. को.-जु पयोध्र पतंत भझं सुरवी। (५) मो. त्रवी।
(६) मो.-कपि। (७) ए. कृ. को.-पिम।
‡ ए. कृ. को.-"जुरसे रस चामर सीदक से"। (८) ए. कृ. को.-मुदं।

जु सँजोगय भोग सुषं सरसे। सु कमोदिन चंद फुली दरसे ॥
जु ग्रिहं ग्रह जोवत दीप जुवं। जु वए मनु काम के बीज भुवं ॥
छं० ॥ १४ ॥

अर्द्ध रात्रि के समय ग्रहण का लग्न आने पर सब का यमुना के किनारे पर जाना।

दूहा ॥ साँझ समय ससि उग्गि नभ। गइ जामिनि जुग जाम ॥
ग्रहन समय दिषि होतही। जमुन पधारे [1]ताम ॥ छं० ॥ १५ ॥

वरुण के बीरों का जाग्रत होना।

स्नानं जंकी नौ न्नपति। जल रख्या जगि बीर ॥
[2]हक्कारे संमुष उठे। मंगन जुद्ध [3]सरीर ॥ छं० ॥ १६ ॥

इधर सामंत लोग शस्त्र रहित केवल दूब और अक्षत आदि लिए हुए खड़े थे।

ए बिन वस्त्र ह सस्त्र बिन। हस्त दरभ कुस कोस ॥
तिल तंदुल जव पुहप कर। बरन दूत उठि रोस ॥ छं० ॥ १७॥

वीरों का गहरे जल में शब्द करना।

अति प्रचंड गहराइ गल। गल गज्जे बल बीर ॥
स्याम बरन भय भीत दिषि। धीरन छुट्टै धीर ॥ छं० ॥ १८ ॥

जलवीरों के सहज भयानक और विकराल स्वरूप का वर्णन।

कवित्त ॥ अति उतंग बज्जंग। उद्दित उर जोति रत्त द्रिग ॥
अरुन रुधिर मष अधर। वस्त्र नन अस्त्र सस्त्र ढिग ॥
दसन ऊंच सिर केस। वेस भय भग्गिय पासं ॥
अति उनाह जम दाह। कौन मंडै जुध आसं ॥
कल कलह बचन किलकंत सुर। सुर बाजत जनु धुनि धमनि ॥

(१) मो.- ग्राम। (२) ए. कृ.- को.-हहकारे।
(३) ए. कृ. को.-समीर।

हम करत केलि जल संचरत। तुम [1]संमुह कोइ [2]मत अवनि ॥
छं० ॥ १९ ॥

सांमतो का ग्राव पर चला जाना।

दूहा ॥ सुभट दिष्ष करि क्रोध उर। भये भयानक क्रूर ॥
सस्त्र हथ्थ दिष्षे नहीं। *ग्राव ग्रहे जलपूर ॥ छं० ॥ २० ॥

जल वीरों के उछारने से वेग से जो जल ग्राव पर पड़ता था उसका दृश्य वर्णन।

कवित्त ॥ परत ग्राव जल पूर। झरत जनु हथ्थ फल सुवन ॥
बजत घात आघात। फुरत अवसान बीर तन ॥
रावत्तन अवसान। देव दुंदुभि अधिकारी ॥
[3]जोग ग्यान चय मान। बनिक बुधि मोहि सुनारी ॥
राजेंद्र दान सिद्धह तपह। भुगति जुगति विधि [4]कोविदह ॥
इच्छनी बत्त अवसान मिलि। मनहु मंत्र जनु गुन भिदह ॥
छं० ॥ २१ ॥

जल के बीच में जल वीरों की आसुरी माया का वर्णन।

आवरि कर वर करह। भिरत भारथ [5]पचारिय ॥
अंग अंग संग्रहहिं। इक इक्कत अधिकारिय ॥
अधम जुद्ध जुरि करहिं। करहिं बल कपट अनंगिय ॥
कबहु धूम वे करहि। करहि कब झार झरक्किय ॥
कब्बहु मेघ [6]उट्ठे सुजल। कबहिं करम ग्रावह बरष ॥
उच्चरहिं बैन बहु बीर बर। बिरचि कबहु बुल्लैं हरष ॥ छं० ॥ २२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुमुह। (२) ए. कृ. को.-मति।

*ग्राव यह शुद्ध संस्कृत शब्द है यथा-शब्दकल्पद्रुम "पृथ्वी तावत् त्रिकोण विपिन नद नदी ग्रावरुद्धं तदद्धम्" १ इसका तात्पर्य ढेल्हा से है।

(३) मो.-ज्यों। (४) मो.-कोबदह।
(५) ए. कृ. को.- पस्चारिय (६) मो.-बुट्ठे।

जलवीरों के बहुत उपद्रव करने पर भी सोमेश्वर के सामंतों का भयभीत न होना ।

कबहुं सत्त सर परहिं । कबहुं डक्कें डकारिहिं ॥
तीन लोक तन [1]हकहिं । बकहिं बीरन बकारहिं ॥
अकल कलह बल करहिं । समहि संग्राम सुधारहिं ॥
अजुत जंग उद्धरहिं । *कलह बल धार उधारहिं ॥
सामंत भूमि भंजहिं भिरहिं । गिरहिं परहिं उठहिं लरहिं ॥
सोमेस सूर संक न [2]गनहिं । बिरचि गाल गल बल करहिं ॥
छं० ॥ २३ ॥

वीरों को स्वयं अपना पराक्रम वर्णन करके सामंतों का भय दिखाना ।

हम सु भयंकर बल अभूत । सुभटन [3]हकारिहिं ॥
हम सु [4]प्रवत्त प्रमान । कनिष्ट अंगुरि उप्पारहिं ॥
हम समुद्र प्रम्मान । डोहि जल पहुमि [5]प्रवाहहिं ॥
देषी सुनी [6]न कोइ । सोइ ब्रह मंडल गावहिं ॥
किन काम धाम तजि वाम सुष । आइ सपत्त जमुनि निसि ॥
चर बेर निसाचर हम फिरहिं । नीर रमें तिल खेड़ धसि ॥
छं० ॥ २४ ॥

वीरों का राजा सहित सामंतों पर आसुरी शस्त्र प्रहार करना ।

दूहा ॥ [7]इह कहि के लग्गे लरन । गैन गुंज जल फार ॥
मानहु भारथ अंत कौ । भार उतारन हार ॥ छं० ॥ २५ ॥

सामंतों का वीरों से यथाशक्ति युद्ध करना ।

कवित्त ॥ काल संक अहुरहि । तार बज्जत प्रहार सुर ॥
जम्मुन [8]जल अंदोल । बीर बोलंत बीर गुर ॥

(१) मो.-तकँहि । * कृ. को.-कबहिं बीरन बक्कारहिं । (२) मो.-गिनहिं ।
(३) ए. कृ. को.-हक्कारिय । (४) ए. कृ. को.-चंड प्रव्वत समान ।
(५) मो.-प्रवानहि । को.-प्रवाहिहि । (६)-न होइ । (७) मो.-एह कहे । (८) मो.-सज्जन ।

कलह केलि सम केलि। ठेलि कहु चावहिसि ॥
एक ग्राव वरषंत। एक फारंत नष्य कसि ॥
परि मुच्छि मध्य विक्रम वलिय। जुद्ध निसाचर विषम [1]भषि ॥
वर बीर धीर धप्पे लरन। फहु पट्टत न्रप सोम [2]लषि ॥छं०॥२६॥

इसी प्रकार अरुणोदय की लालिमा प्रगट होते देख वीरो का वल कम होना और सामतों का जोर बढ़ना।

पद्धरी ॥ तिम [3]तिम सु बीर तामसत थोर। दिन उगन [4]बढ़ै रजपूत जोर ॥
वद्धै [5]जु मल्ल मुट्ठी प्रहार। फट्टै कि भूम पट तार तार ॥छं० ॥२७॥
उच्छरत जमुन जल इन प्रकार। क्रीड़ंत जानि मद गज फुंकार ॥
तरफरहि मध्य जल इन प्रकार। कपि कोप नंघि गिरि समुद सार॥
छं० ॥ २८ ॥
वर भरहिं करहिं लत्तननि छाइ। * बज्जंत बज्र जनु विषम घाइ ॥
रन रह बहस्सि उच्चार बैन। इतनैं भयो [6]परताप गैन ॥छं०॥२९॥
निसिचरन दिष्षि जब समय छूर। झलमलत किरन न्रिमल करूर ॥
तमचरह पुर प्रगटी किरन्न। प्रगटीं सु दिसा विदिसान अन्न ॥
छं० ॥ ३० ॥
तब लग्गि पंच भर परिय मुच्छ। निसचर उतंग करि जुद्ध गच्छ ॥
छं० ॥ ३१ ॥

प्रातःकाल के वाल सूर्य्य की प्रतिभा वर्णन।

दूहा ॥ ज्यों सैसब में जुवन [7]कछु। तुच्छ तुच्छ दरसाइ ॥
यों निसि मध्यह अरुन कर। उदित दिसा [8]लसाइ ॥ छं० ॥ ३२ ॥
* रत्ति रही वर विलगि वर। ज्यों ससि कोरह राह ॥
हरि डहु वाराह धर। कै हरि चंपत राह ॥ छं० ॥ ३३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-पिंषि। (२) ए. कृ. को. लिषि।
(३) ए. कृ. को.तिमति। (४) मो.-बढै। (५) मो.-मुगल।
* मो.-बज्र लेत हथ्थ जम्बू विघाइ।(६) ए. कृ. को.-परभात।
(७) ए. कृ. को.-कत्र। (८) मो.-ललसाइ। * मो.-"यों रत्ति ही रविलग वर"

सुर्योदय होते ही वीरों का अन्तर्ध्यान होना और सोमेश्वर सहित सब सामंतों का मुर्छित होना।

अरिल्ल ॥ गच्छिय सुद्ध निसाचर बीर। परै धर मुच्छि सु पंच सरीर ॥
किए तन पान प्रमानन जान। सु देवहि दुंदुभि जानिय गान ॥
छं० ॥ ३४ ॥

सब मुर्छित पड़े हुए थे उसी समय पृथ्वीराज का वहां पर आना।

दूहा ॥ मृतक समानति मृतक परि। रहिग जीव छिपि छान ॥
तब लगि तहँ प्रथिराज रन। आनि सपत्ते [1]पान ॥ छं० ॥ ३५ ॥

निज पिता एवं सब सामंतों की ऐसी दशा देख कर पृथ्वीराज के हृदय में दुःख होना।

साटक ॥ [2]सोद्दिष्यं न्रप राज तात निजयं। बीभच्छ इच्छा क्रुधं ॥
कालं केलिय छिंछ रुद्ध तनयं, रुद्रं सु संरत्तयं ॥
माते तामस रस्स कस्स असुरं, [3]हालाहलं नैनयं ॥
राजं जा प्रथिराज चिंति तनयं, पुच्छै गुरं [4]ततगुरं ॥ छं० ॥ ३६ ॥

यमुना के सम्मुख हाथ बांध कर खड़े हो पृथ्वीराज का स्तुति करना।

दूहा ॥ जमुन सनंमुष जोर कर। अस्तुति मंडिय मुष्ष ॥
तूं माता दुष भंजनी। रंजन सेवक सुष्ष ॥ छं० ॥ ३७ ॥

यमुना जी की स्तुति।

भुजंगी ॥ नमो मात मातंग [5]सूरज्ज जाया। नमो देवि भग्गी जमं पै [6]कहाया॥
जगं अंधकूपं सु दीपक्क गन्नी। नदी कौन [7]पुज्जै सु तेरौ करन्नी ॥
छं० ॥ ३८ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-मान। (२) ए. कृ. को.- सो दिष्यं।
(३) ए. कृ. को.-हालीं। (४) ए. कृ. को.-सद्गुरं, तद्गुरं। (५) मो.-सूरिज्ज।
(६) ए. कृ. को.-कहाये। (७) मो.-पूजै।

महा भ्रम्म धारन्न तारन्न देही। निकस्सी सलीलं सु सेलं समेही ॥
बलीभद्र रष्षी हरष्षी हलंदी। तुअं नाम पासं सुभै सो कलंदी ॥
छं० ॥ ३९ ॥

चयं ताप भंजै जगत्तं जनन्नी। तुयं सेपियं सेसु नंमं सरन्नी ॥
तुही तारनी जुग्ग हारन्नि पायं। तुहीं मात [1]करनी अघं कष्ट कायं॥
छं० ॥ ४० ॥

तुही याम सूरं अलं मुक्ति धारा। तुही नभ्भ मातंग नर लोग सारा ॥
तुहीं साधवी मात नष्षं समानी। तुहो तारनं लोक त्रैलोक रानी॥
छं० ॥ ४१ ॥

तुही बाल बेसं तुही वृद्ध काली। तुही तापसं ताप आपं सुराली ॥
तुअं तट्ट सेवैं जिते [2]तिद्ध सिद्धं। तिते मुक्ति मुक्ति मनं बंछ दिद्धं॥
छं० ॥ ४२ ॥

तुही [3]मद्दनं मथ्थनं तेज धारा। तुहीं देवता देव त्रय लोक हारा॥
तुही जोगिनी जोग जोगं कपालं। तुही कल्प [4]में कंप राषंत चालं
छं० ॥ ४३ ॥

तुही विश्व रूपं तुहि विश्व माया। तुही तारनं जन्म संसार आया॥
कियौ अश्वमेधं पुनर्जन्म आवै। नही जन्म मातंग तो ध्यान पावै ॥
छं० ॥ ४४ ॥

तुअं ध्यान मातंग अज्ञान पूरं। करै अघं [5]आचार उग्गंत सूरं ॥
तनं तम्मनं तं अयं निर्विकारी। इसी जमुन [6]अप्पं सदिष्षी अकारी
छं० ॥ ४५ ॥

स्तुति के अन्त में पृथ्वीराज का यमुना जी से वर मांगना।

कवित्त ॥ गंगा मूरति विसन। ब्रह्म मूरति सरसत्तिय ॥
जमुना मूरति ईस। दिव्य दैवन मुनि थप्पिय ॥

(१) ए. कृ. को.-कर वत, कर वत्त।
(२) ए. कृ. को.-"सिद्धं सिद्धंति"।
(३) मो.-मद्दंत।
(४) ए. कृ. को.-में कप्प।
(५) ए.-आवार।
(६) ए. कृ. को.-अप्पं।

मिली आइ [1]झल मंग । गंग सागर अवधारिय ॥
ता सोमेसर रोग । दोष दोषह तन टारिय ॥
अब सुभट सहित देवी सु तन । करि निरमल तन मोह मय ॥
इह कहत अग्गि न्रप मूरछा । प्रति बुल्लौ प्रथिराज तय ॥छं०॥४६॥

सोमेस की मूर्छा भंग होने पर पृथ्वीराज का पुनः ब्रह्मज्ञान की युक्तिमय स्तुति करना ।

साटक ॥ [2]त्वं मे देह सु भाजनेव [3]सरिसा जीवं धनं प्रनायं ॥
दाहं अग्गि सु क्रम्म दारुन धरै आवस्य [4]बंदं करं ॥
सं रुद्धं जम जोग तिष्टत तनै अद्धं पलं मध्ययं ॥
जीवी वारि तरंग चंचल धियं बिस्सत [5]अन्नतरं ॥ छं० ॥ ४७ ॥
आसा अस्य सरोवरीय सलिलं पंषी वरं [6]सुहयं ॥
सुष्यं दुष्यय मध्य इच्छ तवयं साषास्य चै गुन्नयं ॥
मोहं पत्तय रत्त हल्लव क्रमे फूलं फलं धारनं ॥
एकाश्रय सँतोष दोष तिगुना अस्याय वा निर्गुनं ॥ छं० ॥ ४८ ॥
यौं भूतं आभूत बर्ष सु सतं आयुर्बलं अद्भुतं ॥
तेषा अर्द्ध निसा गतं रवि उभै बाल्यै च इद्धं गता ॥
प्राप्तं जोवन रत्त मत्तय रसं व्याधं क्रुधं बंधनै ॥
ना भूतं संसार तारन गुने [7]संभार निस्तारयं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

इस प्रकार मूर्छा जगने पर पृथ्वीराज का गन्धर्व यंत्र का जप करना जिससे मूर्छित लोगों का शिथिल शरीर चैतन्य होना ।

दोहा ॥ ग्यान ध्यान अस्तुति करिय । भयसु प्रसन्नय देव ॥
राज सहित सामंत सब । जगे मूरछा एव ॥ छं० ॥ ५० ॥
गंध्रव मंच सुइष्ट [8]जिय । आराध्यौ प्रथिराज ॥
[9]बरन दोष तन ताप गय । उठि निद्रा जनु भाज ॥ छं० ॥ ५१ ॥

(१) ए. कृ. को.-झल गंग । (२) ए. कृ. को.-त्वंमे । (३) ए.-सरसी ।
(४) ए. कृ. को.-सबंदं । (५) ए. कृ. को.-नर । (६) मो.सुठयं ।
(७) मो.-संसार । (८) ए. कृ. को.-हुअ । (९) ए. कृ. को.-बरन ।

पृथ्वीराज का सोमेश्वर को सिर नवाना।

पद्धरी ॥ प्रथिराज राज सिर नामि आइ। आनंत मरम तुम सकल राइ ॥
सरिता रु ताल वापी अन्हाइ। निसि समय वरुन तन धरिय पाइ॥
छं० ॥ ५२ ॥
सरवरिय केलि सोइन्त [1]आइ। पाताल ईस क्रीलै सुभाइ ॥
सुमिरै न नाम सन सुद्ध [2]ध्याइ। उपजै सु विघन कै धर्म जाइ॥
छं० ॥ ५३ ॥
भौसेन तत्र तहँ एक ठाइ। करि वेद पठन तहँ विप्र गाइ॥
करि होम जाप किन्नइ पराइ। भए सुद्ध पाय गए तन [3]पुलाय ॥
छं० ॥ ५४ ॥

सोमश्वर को लिवा कर पृथ्वीराज का राजमहल में आना।

दूहा ॥ वरुन दोष मेंव्यौ सुप्रथु। ग्रेह संपते आय ॥
देषि पराक्रम सोम न्रप। फूल्यौ अंग न माय ॥ छं० ॥ ५५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके वरूण कथा नाम अड़तीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ३८ ॥

(१) ए. कृ. को.-पाइ।
(२) ए. पाइ, कृ. को.- धाइ। (३) ए. कृ. को.-फुलाइ।

अथ सोमबध सम्यो लिष्यते ।

(उन्तालीसवां समय ।)

भीमदेव की इच्छा ।

कवित्त ॥ गुज्जर धर चालुक्क । भीम जिम भीम़ महाबल ॥
कोइ न चंपै सीम । किति बर रीति अचंगल ॥
सोमेसर संभरिय । तास मन अंतर सल्लै ॥
प्रथीराज ढिल्लीस । रीस तस [१]अंतर बल्लै ॥
मिलि मंत तत्त बुझ्झवि मरम । करिय सेन चतुरंग सज ॥
धर लेउ आज दुज्जन दवटि । एकछ्छ मंडोति रज ॥ छं० ॥ १ ॥

भीमदेव का दिल्ली पर आक्रमण करने की सलाह करना ।

पद्धरी ॥ संभरिय राज गुज्जर नरेस । रत्तौ जु साम दानह [२]असेस ॥
[३]कालिंद कूल जंगलिय जास । प्रथिराज अकस रष्षै हुलास ॥छं०॥२॥
चंपौ जु अप्प उर रषैं डंस । मन मध्य भीम इम भूमि गंस ॥
हारे जुआरि कलमलिय [४]षेल । चालुक्क चित्त इम [५]मिलन सेल ॥
छं० ॥ ३ ॥
कुलटा छयल्ल जिम मिलन हेत । इम षगन षेत चहुआन चेत ॥
जिम चंद सूर मनि राह केत । कलमलिय चलिय उर भीम तेत ॥
छं० ॥ ४ ॥
रानंग देव झाला नरिंद । बुल्यौ सु राइ चालुक्क इंद ॥
[६]तमि कह्यौ ताम हौ हुतत रोस । झलहलत अग्गि ज्यों जग्गि कोस ॥
छं० ॥ ५ ॥
बुलाइ सब्ब भर इक्क ठौर । चढ़िवाइ बेगि बर करौ दौरि ॥
षेलंत नारि नर लेइ गढ्ढ । इम लेउ भूमि षल षग्ग बढ्ढि ॥छं०॥६॥

---

(१) मो.-अंबर । (२) ए. कृ. को.-अरेस । (३) मो.-काल्यंद ।
(४) ए. कृ. को.-षेत । (५) ए. कृ. को.-मलन । (६) मो.-मत ।

जिम करिव बाल घर मिटत धूरि। तिम इला आउ चहुआन चूरि ॥
भज्जंत भीम जिम घर सुहाल। संभरिय भूमि इम करों हाल ॥
छं० ॥ ७ ॥

कवित्त ॥ बोलि कन्ह कही नरिंद। रानिंग राज वर ॥
चौरा तिम जयसिंघ। बीर धवलंग देव धर ॥
धौल हरै सुरतान। बीर सारँग मकवानं ॥
जूनागढ़ तत्तार। सार लग्गौ परवानं ॥
मत मंति सज्जि चालुक्क भर। पुब्ब बैर सात्थौ हियैं ॥
केतीक बत्त संभरि धरा। रहै रंग चच्चर कियैं ॥ छं० ॥ ८ ॥

गाथा ॥ सोझत्ती रन जित्ता। केवा किन्न संभरी राजं ॥
[1]तं कोलि कालहंतं। सक्के[2] कूल मग्ग [2]मग्गायं ॥ छं० ॥ ९ ॥

सब सरदारों का कहना कि वैर का बदला अवश्य लेना चाहिए।

कवित्त ॥ बोलौ राव रानिंग। बोलि चौरासिम भानं ॥
स्यामा स्याम नरिंद। भीर कही रन थानं ॥
अति उदार अति रूप। भूप साई रन रष्षन ॥
चाहुआन बरसिंह। [3]मिभयौ बड़वानल भष्षक ॥
जै जैत कित्ति संसै न करि। सुबर बैर कही विषम ॥
भारथ्थ कथ्थ भावै भवन। सुभर मुत्ति लभ्भै सुषम ॥ छं० ॥ १० ॥

दूहा ॥ सुषम पिंड संग्रहिय बर। जुग जोग [4]नह लभ्भ ॥
हिम ग्रीषम पावस सु तप। करै बीर प्रति अभ्भ ॥ छं० ॥ ११ ॥

भीमदेव के सैनिक बल की प्रशंसा।

भुजंगी ॥ करै बीर बीरं सु बीरं प्रकारं। लगे राइ चहुआन सो जुद्ध सारं॥
सु रावत्त रत्ता अभीरत्त कोनं। करै षेत भीमंग को सोन जोनं ॥
छं० ॥ १२ ॥

---

(१) ए. कृ. को., "तंकोलि कुलहंता"। (२) ए. कृ. को.-मग्गाइं।
(३) मो.-मिंज्यौ। (४) ए. कृ. को.-नहिं।

भरै कोन जमजोति जोत्यं प्रकारं । गनै कोन वेलू सु गंगा प्रकारं ॥
गिनै कोन तारक ते [1]तेज भोरै । लरै कोन चालुक्क सो जुद्ध सोरै ॥
छं० ॥ १३ ॥

भीमदेव की सेना का इकट्ठा होना ।

गाथा ॥ फट्टे पुडु फुरमानं । धाये धराजित्त जिताइं ॥
इम जुट्टे सब सेनं । ज्यों भू नीर बड्डि सरताइं ॥ छं० ॥ १४ ॥

भीमदेव की सेना की सजावट और सैनिक ओजस्विता का दृश्य ।

विअख्वरी ॥ जुट्टे दल पहु पंग [2]अपारं । हैगे वर भर लभ्भि न सारं ॥
बनै हयं पय पंथ समानं । वह भूमी जनु पंथ उडानं ॥ छं० ॥ १५ ॥
गज गज्जै गज्यौ जनु नीरं । भइव बद्दल जानि समीरं ॥
दिषियै सूर नूर षह पूरं । संध्या सागर [3]नूर करूरं ॥ छं० ॥ १६ ॥
चल्लै मल्ल मंग मल्हारे । धावैं धर पग पाइर कारे ॥
कच्छे कच्छै बंधै डोरी । चंदन चोरि घिलै जनु होरी ॥ छं० ॥ १७ ॥
जिन पग भूमि न ढिल्लैं कोई । विघरै लरै जानि जम दोई ॥
पाइक पग पिल्लै जनु नट्टं । षंडा कढ्ढि बढ़े गज [4]दट्टं ॥ छं० ॥ १८ ॥
गोरी विन तिन लोह न छिज्जै । धार अनी कर वर ठेलिज्जै ॥
चंचल अश्वह [5]नंषत सूरं । सूर तेज जिन मुष्ष सनूरं ॥ छं० ॥ १९ ॥
बंकी भोह भयंकर नैनं । फूली चंवर लग्गे गैनं ॥
रत्ते [6]स्वामि ध्रम्मं रस रंगं । जोग जुगति मन चहुत अंगं ॥
छं० ॥ २० ॥

नेह न देह न माया ग्रेहं । चिंतत सदा ब्रह्म मन चेहं ॥
तेग त्याग मन मंड न भंगं । सुभ्भत सेन मनों सुभ्र गंगं ॥ छं० ॥ २१ ॥
गड्डु परे न्रप गाहत गड्डुं । जिम वाराह मोथ रस दड्डुं ॥

---

(१) मो.-नेज । (२) ए. कृ. को.-अपारं । (३) ए. कृ. को.-सूर ।
(४) मो.-वट्ठं, वट्टं । (५) मो.-जनुंषत । (६) मो.-साम ।

औगुन अंग न स्वामित अंगं। ज्यों सह गोन दुहागिल रंगं॥
छं०॥ २२॥

यों आतुर रत्ते पग मग्गं। ज्यों कुलटान छैल मन लग्गं॥
दसहूं दिसि दारुन दल वढ्ढं। ज्यों धुर वद्दल भद्दव चढ्ढं॥छं०॥ २३॥

सिलह सज्जि वढ्ढे बल बंकं। रीछ लंगूर मनों कपि लंकं॥
दिष्षत सेनह नैन भुलाई। मानहुं साइर [1]पार डुलाई॥ छं०॥ २४॥

अमरसिंह सेवर परिमानं। भैरू भट्ट तत्त बुधि आनं॥
बंभन लीला लच्छिन मंडे। देव क्रंम सब बंधि रु छंडे॥ छं०॥ २५॥

साम रूप सेवर परिमानं। दान रूप वर भट्ट सुजानं॥
भेद रूप दुज राज वकारं। डंड रूप चारन आकारं॥ छं०॥ २६॥

लीने भीम संग चव मंत्री। दुष्ट अरिष्ट रमे जिन [2]जंत्री॥
सुर्ग मृत्यु पाताल सुसंकं। अस आडंबर मंडत कंकं॥ छं०॥ २७॥

भोलाराय भीम का साम दाम दंड और भेद स्वरूप अपने चारों मंत्रियों को बुलाकर उचित परामर्श की आज्ञा देना।

दूहा॥ साम दाम अरु भेद करि। निरने दंड रु सार॥
च्यारि दूत चतुरंग मन। वर सिघंन आकार॥ छं०॥ २८॥

ए बुलाइ चालुक्क बर। मंत्री भोरा राज॥
अमरसिंह सेवर प्रसन। मंत्र जंत्र गुन काज॥ छं०॥ २९॥

[3]इनहिं समीप बुलाइ करि। बोलिय भीम नरिंद॥
ज्यों तुम जंपौ [4]त्यौं करौं। तुम [5]छत मो सुख [6]निंद॥ छं०॥ ३०॥

मंत्रियों का कहना कि इस कार्य्य में विलंब न करना चाहिए।

जंपि सु मंत्री मंत्र तब। सुनि भीमंग सुदेव॥
धरती वर पर अप्पनी। लेत न कीजै [7]छेव॥ छं०॥ ३१॥

---

(१) ए. कृ. को.-पाइ।
(२) ए.-मंत्री। (३) मो. इनह। (४) ए. कृ. को. ज्यौ।
(५) मो.-बत। (६) ए. कृ. को.-न्यंद। (७) ए. कृ. को.-सेव।

राज्य प्राप्त करने की लालसा से गत भीषण घटनाओं का ऐतहासिक उदाहरण।

साटक ॥ भूमीनं धर भ्रम्म क्रम्म [1]निरतं, बंध्यो बधें पाडवं ॥
भूमी काज दधीच श्रास मृगया, नित्तं बज्जं कारनं ॥
केकइयं भुश्र काज रामय बनं, दसरथ्य मंगे बरं ॥
सा भूमी क्रित कारनेव सरसा, स्वेछायं भूमयं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

पुनः मंत्रियों का आख्यान कहना।

कवित्त ॥ जा जीवन जग पाइ। आइ अवनी रस रंगह ॥
जो जा जीवन बलइ। विनोद रचइ मन पंगह ॥
जा जीवन कज्जइ। कपूर पूरन प्रभु कोकइ ॥
जा जीवन आरंभ। किंत्ति सा भ्रम्म सु रोपइ ॥
जिहि काज जियन तप जप करहि। भमर गुफा साधहिं अवस ॥
तिहि जियन [2]त्यागि मंडय कलह। तौ भूमिय लभ्भै सु [3]रस ॥
छं० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ सो जीवन द्रुम पद्दुनि करि। अच्छित सती समान ॥
पावहिसि नथ्थै निडर। वौ लभ्भै [4]मिम पान ॥ छं० ॥ ३४ ॥

भोलाराय का सेन सज कर तय्यारी करना।

सुनत मंत चल्लिय न्रपति। सज्जि सेन चतुरंग ॥
जनु बद्दल पद्द उम्मए। दिठ्ठ न परत [5]नभंग ॥ छं० ॥ ३५ ॥

सेना के जुड़ाव का वर्णन

अरिल्ल ॥ हाला हलं मिलत्तं सेनं। [6]ज्वाला मखि [7]ज्वालाइ झत्तेनं ॥
दैवत देव बंधि चतुरंगी। है हिलव्व हिंदू दल [8]नंगी ॥ छं ॥ ३६ ॥

---

(१) मो.-सरसं।
(२) मो.-काज।
(३) मो.-सर।
(४) ए. कृ. को.-विम।
(५) ए. कृ. को.-भमंग।
(६) मो.-झाला।
(७) मो.-झालाइ।
(८) ए. कृ. को.-लग्गी।

गाथा ॥ सो चतुरंगय सेनं। हय गय सज्जि बीर उर रेवं ॥
अरुनोदय गुन मंतं। जानिज्जै सूरतं बीरं ॥ छं० ॥ ३७ ॥

भीमदेव के सिर पर छत्र की छाया होना।

उग्यौ छत्र छिति राज सिर। पियत बीर रस पान ॥
यों सब सेना रज्जियें। ज्यौं जोगिंद जुवान ॥ छं० ॥ ३८ ॥

कवि की उक्ति कि मंत्री सदैव भला मंत्र देते हैं परन्तु वे होनहार को नहीं जानते।

कहहि मंच मंचिय सुमति। विधि विधि सुविधि न जान ॥
कै भंजै कै रंजई। कै [1]दिवत्त प्रमान ॥ छं० ॥ ३९ ॥

सेना का श्रेणीवद्ध खड़ा होना।

आनिय [2]अछित साल गुन। विधि चालुक्क सयन्न ॥
पुब्ब बैर सोभित्ति कौ। भिरि भंजै रिन तन्न ॥ छं० ॥ ४० ॥

पंच सहस पंचौ सुक्रत। पंचौ पंच प्रक्रत्त ॥
पंच रष्षि पंचौ ग्रहै। तौ भारथ्य सु जित्त ॥ छं० ॥ ४१ ॥

सेना समूह का क्रम वर्णन।

दूहा ॥ सबी मिली कज्जल वरन। मेक भयानक भंति ॥
तिन अग्गैं धर मँडे। तिन अग्गें गज पंति ॥छं०॥४२॥

उक्त सनासमूह की सजावट के आतंक की पावस ऋतु से उपमा वर्णन।

माधुर्य ॥ गज पंति चल्लिय अलद हल्लिय गरज नग घन भुल्लियं ॥
हल हलन घंटन घोर घुंघर नाग दुभ्भर डुल्लियं ॥
गत लग्गि गिरवर पुरहि तरवर हलहि धरवर धाइही ॥
झलकंत दंत कि पंत बग घन धाम कल सति गावही ॥छं०॥४३॥

---

(१) ए. कृ. को.-देवत्त। (२) मो.-अनीत।

गज बहत मद्दहद ¹मनहुं घन भद्द छुट्टि झिंझन उभ्भरे ॥
पग ओरि मोरि भरोरि सुर अनु दिष्षि सुरपति लुभ्भरे ॥
बनि पीलबाननि ढाल ढालनि बनिय बैरष साजही ॥
मनुं सिषर गिरि वर काम अंगम छच चमर कि राजही ॥
छं० ॥ ४४ ॥

अंध धुंधन चलत मग्गन सुनत वज्जन चल्लही ॥
वै कोट ओटन अगड़ मव्वत सिषर गिर रद झल्लही ॥
दल मुष्य मंडिय मेघ छंडिय मनहु सुरपति वज्जयं ॥
सुर सोम सोमइ मभ्भ मोमइ ग्रेह तजि प्रज भज्जयं ॥ छं ॥ ४५ ॥
परि देस देसन रौरि दौरिय सुनिय संभरि रज्जयं ॥
बर मंगि बाजिय सिलह संजिय ²वहै भोरा अज्जयं ॥ छं० ॥ ४६ ॥

इसी अवसर में मुख्य सामंतों सहित पृथ्वीराज का उत्तर की तरफ जाना और कैमास के संग कुछ सामंतों को पीठि सेना की तरफ आने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ उत्तर वै विजयंत। रोइ रत्तौ प्रथिराजं ॥
सोमेसर ढिल्लीस। संग सामंत सुराजं ॥
षीची राव प्रसंग। जाम जहां घट भारिय ॥
देवराज बग्गरिय। भान भट्टी षल झारिय ॥
उड्डिग्ग बाइ ³पग्गार भर। बलिय राव बलिभद्र सम ॥
इत्तनें रष्षि कैमास सँग। कलह कूच किन्नौ सुक्रम ॥ छं० ॥ ४७ ॥

पृथ्वीराज के चले जाने पर उन सब सामंतों का भी चला जाना जिनके भुजबल के आश्रित दिल्ली नगर था।

दूहा ॥ जिन कंठंन ढिल्ली नयर। ते रष्षे प्रथिराज ॥
रसित स्वामि अंभ्भं तरह। कलह न ⁴इच्छन काज ॥ छं० ॥ ४८ ॥

(१) मो.-मनल। (२) मो.-वही।
(३) ए. कृ. को.-पागार। (४) ए. कृ. को.-इछत।

सुनत पुकारइ होइ छवि। सत्तिय सत्त प्रमान ॥
चढ़त सोम चहु इयन। विंटि नछिचन भान ॥ छं० ॥ ४९ ॥
रन बन घन सोमेस सुत। सज्जि सेन चतुरंग ॥
को बिद गुन मन ज्यौं रमत। ज्यौं भर आनत अंग ॥छं०॥५०॥

उसी समय पूर्व वैर का बदला लेने के लिये भीमदेव का अजमेर पर चढ़आना, प्रातःकाल की उसकी तैयारी का वर्णन।

कवित्त ॥ नाग कलं मलि भार। सार सज्जत रन रज्जन ॥
दै दुवाह चालुक। भीम भारथ सों लग्गन ॥
सोभत्तौ बर वैर। बहुरि हालाहल मच्चौ ॥
भरन पहुंचिय [1]आव। खेघ लंघै को रच्चौ ॥
करि [2]न्हान दान इष्टं सु जप। भट अभंग सज्जे समुद ॥
बिगसंत नयन दिय बयन। मनों प्रात फुल्लै कुमुद ॥छं० ॥ ५१ ॥

इधर कन्ह और जैसिंह के साथ सोमेश्वर का भीमदेव के सम्मुख युद्ध करने के लिये तय्यार होना।

कुसुम जुद्ध कुसुमेक। कुसुम संधन कुसुमेकह ॥
आदि जुद्ध संपनौ। दैव बच्चौ दुति देकह ॥
संभरि वै संभरिय। राज सोमेसह कन्हं ॥
उत्तर दिसि प्रथिराज। गयौ उत्तर दिसि मन्नं ॥
जै सिंह देव जै सिंह सुअ। धुअ प्रमान पय [3]डड घरौ ॥
इल अचल अचल लग्गन नदिय। गरिल ग्गागर उभ्भरौ ॥
छं० ॥ ५२ ॥

सोमेश्वर की सेना की तय्यारी वर्णन।

हनुफाल ॥ सजि सेन सोम अपार। सुनि सज्ज सेन प्रकार ॥
सोमेस सूर बिचार। सजि चढ़े वीर जुझार ॥ छं० ॥ ५३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-आउ। (२) मो.-कान्ह।
(३) कृ. को. मो.-डंड।

*धरा धरा कंपिय भार। .... ॥
चढ़ि राइ चालुक पान। धर धरिय दिल्लि सुथान॥ छं० ॥ ५४ ॥
सुनि श्रवन संभरि राज। बर बज्जि [2]विजयत बाज॥
तन [3]चविधि तूल तरंग। विधि मंडि बीर विजंग॥ छं० ॥ ५५ ॥
दल देषि छूर सुरंग। उर छीत अरियन पंग॥
ढलकंत ढिल्लिय ढाल। मधु माध नूत तमाल॥ छं० ॥ ५६ ॥
छुटि अचग अच्छतुपार। पाहार फारि प्रहारि॥
उड़ि इत्त तिड्डिय सेन। मनों राम लंका सेन॥ छं० ॥ ५७ ॥

सैनिकों का उत्साह सोमेश्वर की वीरता और कन्हराय का वल वर्णन।

कवित्त॥ चिविध साज वड्डिय। अवाज भेरी कोकिल सुर॥
भवर झुंड झंकार। चौर मोरह ढुरंत बर॥
बर बसंत सम वीर। नच्चि तोषार चिभंगिय॥
[4]रन रत्तौ सोमेस। भीम भारथ अनभंगिय॥
दल धरकि भरकि काइर सरकि। हरषि छूर बज्जिय करस॥
कन्हा नरिंद प्रथिराज बिन। सुभर कंक मंडिय सरस॥छं०॥५८॥

युद्ध आरंभ होना।

दूहा॥ सुबर बीर मंड्यौ समर। रन उतंग सोमेस॥
दै दुबाह [5]दुज्जन घरी। घरी सु अक्क तरेस॥ छं० ॥ ५९ ॥

कन्ह का वीरमत और तदनुसार सेनापति उसका व्याखान।

कवित्त॥ जा दिन जीव ह जम्म। क्रम्मता दिज जम पच्छै॥
सुष्य दुष्य जय अजय। लोभ माया नन मुच्छै॥

* यद्यपि यह पाठ मो.-प्रति में ५३ छंद का चतुर्थ चहण करके दिया हुआ है किन्तु अन्य तीनों ए. कृ. को.-प्रतियों में छ० ५३ के चतुर्थ चरण का "सजि चढ़े बीर सुझार" पाठ है। अतएव यह पाठ भेद नहीं हो सकता, आगे चल कर छंद भंग भी है—इस से मालूम होता है कि इसके साथ का दूसरा चरण लेखक की भूल से छूट गया है। (२) मो.-विजयसु। (३) ए. कृ. को.-विवि। (४) को. कृ.-नर, ए.-मर। (५) ए. कृ.-दुज्जनं।

काल कलइ संग्रह्यौ । मोह पंजर आरुद्धौ ॥
[1]सुगति मग्ग सुझझै न । ग्यान अंतइ किन सुद्धौ ॥
प्रतिव्यंब अंब अंबइ जुगति । भुगति क्रम्म सइ उद्धरै ॥
केवल सु भ्रम्म [2]छिछिय तनइ । कन्ह कंक जौ सुद्धरै ॥ छं० ॥ ६० ॥

दूहा ॥ बीर गज्जि गज्जिय विदुष । *नर निरदोष सदोष ॥
संभरवै [3]संभर सुमति । न्रप लगि सुमत अमोघ ॥ छं० ॥ ६१ ॥

कन्ह की आंखों की पट्टी खुलना ।

कवित्त ॥ सजिय सकल सन्नाह । दाह जनु दंगल पट्टिय ॥
सुमरि साइ इक देव । दुवन दल देषि [4]दपट्टिय ॥
छुट्टिय पट्टिय नयन । भइ दुंदभी गयन्ना ॥
तेग वेग झम झमिय । मच्च आरीठ भयन्ना ॥
फूलइ सु धार धर कन्ह वर । कर पर छुट्टिय छइ घरिय ॥
पग सट्ठि नट्ठि भीमंग दल । बल अभूत कन्हा करिय ॥छं०॥६२॥

दोनों हिंदू सेनाओं की परस्पर ओजस्विता का वर्णन ।

दूहा ॥ काल चंपि वर चंपि कल । नर निर्घोष निसान ॥
सुवर बीर हिंदुअ सयन । वर बीरा रस पान ॥ छं० ॥ ६३ ॥

कन्हराय के युद्ध का पराक्रम वर्णन ।

†कलाकल ॥ कलइंतय केलि सु कन्ह कियं । जु अनंदिय नंदिय ईस वियं ॥
नचि [5]नौ रसमं इक कन्ह भरं । मय मंचि भयानक अंत करं ॥
छं० ॥ ६४ ॥

झमकंत सु दंतन असि झरी । जनु विज्जुलि पव्वत मेघ परी ॥
उड़ि धुंधरियं निय छाइ जनं । जनु सज्जिय [6]जुग्ग जुगहि पनं ॥छं०॥६५॥

---

(१) कृ. को.-मुकाति, ए.-सुकाति । (२) ए. कृ. को.-छत्री । (३) ए.-संभर ।
*ए. कृ. को.-नर निर घोस दोष । (४) ए.-दुपट्टिय, मो. को.-लपट्टिय ।
(५) मो.-नौ रस में । (६) मो.-सज्जि ।

† इस छंद को "को" प्रति में मधुराकल करके लिखा है और "मो" प्रति में भ्रमरावली करके लिखा है परंतु भ्रमरावली छंद यह है नहीं भ्रमरावली अथवा नलिनी छन्द ५ सगन का होता है पर इस छंद में केवल चारही सगन हैं ।

बजि [1]डौरुअ डक्क निसान घुरं। जनु बीर जगावत बीर उरं॥
दुअ सेन बलं असियो बरषी। नचि जुग्गनि षप्पर लै हरषीं॥
छं०॥ ६६॥

[2]जिनके सिर मार दुआर झरै। बहुर्यौ नन पंजर आय परै॥
छं०॥ ६७॥

कवित्त॥ कहर भगर जिम षेल। ठेल सेलन सम ठिल्लहिं॥
इक्क धुकत धर तुट्टि। *इक्क वल्लन गल मिल्लहिं॥
इक्क कमंध उठंत। इक्क अंतन आलुझ्झहिं॥
इक्क हथ्थ [3]पग झरहिं। टिक्कि षग[4]पग बिन झुझ्झहिं॥
[5]तरफरत इक्क धर मीन जनु। रन रवन्न [6]छिचिन कर्यौ॥
घन घाइ घुम्मि घट धुक्कि धर। इम सु जुद्ध कन्हह [7]भिर्यौ॥
छं०॥ ६८॥

कन्ह राय का कोप।

किन्न दंति बिन दंत। सुभट सौसन बिन किन्निय॥
हय किन्निय बिन नरनि। सेन भीमह करि छिन्निय॥
[8]षुद्धा बिन किय काल। बाल बर बिगरिन दिष्षिय॥
पल डारिय पल पूर। सूर कन्हा भय भिष्षिय॥
कीनी सुकित्ति भूमी अचल। सचल सस्त्र सह झंझरिय॥
मदमत्त गंध मद्दियौं [9]दुरिय। मनौं वाय इच्छह गुरिय॥ छं०॥ ६९॥

दूहा॥ सत्तह [10]आराधिय सुमहि। हरि दाढा ग्रन जान॥
[11]सो संभरि सोमेस बर। सो कौनी पहिचान॥ छं०॥ ७०॥

---

(१) ए. कृ. को.-डरुअ। (२) मो.-जिनें।
* मो.-इक्क वल भग्गल मिल्लहिं।
(३) ए. कृ. को.-षग। (४) मो.-पग। (५) ए. कृ. को.-तरफंत।
(६) ए. कृ. को.-छत्री। (७) ए. कृ. को.-लर्यौ। (८) ए.. षुधा, कृ.-षुदया।
(९) मो.-दुरत। (१०) ए. कृ. को.-आधारिय।
(११) ए. कृ. को.-से भरिवै सोमेस वर।

अपनी सेना को छितर बितर देख कर भीम देव का रोस में आकर स्वयं युद्ध करना।

कवित्त ॥ मध्य रूप मध्यंत। मध्य [1]भ्रम्मन तन मोचन ॥
सिद्ध सुरध अनुरद्ध। हद्ध वय कामति सोचन ॥
[2]पुच बिना बिन बंध। बल सु बंध्यो भीमंदे ॥
सार सुक्रत आरद्ध। सुष्ष लष्षं तंमंदे ॥
बंभनिय बिनै सद्धी सयन। *नय तरत रत्ती सुगति ॥
सोमेस सूर सोमेस सों। सार लग्गि बीरह सुभति ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कन्ह और भीम देव का परस्पर घोर युद्ध होना।

रसावला ॥ रसं बीर मत्ते, लरै लोह तत्ते। धुरा कन्ह मत्ते, रनं [3]रोस पत्ते ॥ छं० ॥ ७२ ॥
मनों काल [4]दंते, रसं रुद्र रत्ते। झरै फुल्ल पत्ते, विमानं विहत्ते ॥ छं० ॥ ७३ ॥
षगंगे विहत्ती, उड़ै गज्ज मुत्ती। असं मंस कत्ती, रुधी धार रत्ती ॥ छं० ॥ ७४ ॥
उमा हाथ कत्ती, उछारंत छत्ती। महा भीम मत्ती, इसी रुद्र रत्ती ॥ छं० ॥ ७५ ॥
तजै मोह वंसं, मिलै हंस हंसं। झरै अंत झूमी, मनों मेघ भूमी ॥ छं० ॥ ७६ ॥

कवि की उक्ति।

कवित्त ॥ सघन घाय त्रिघाइ। †मऱ्यौ को मरन अहुट्टिय ॥
सूरबीर संग्राम। धीर भारथ्थ स जुट्टिय ॥
कोन षेत तजि गयौ। कोन हाऱ्यौ को जित्तौ ॥
लिषं अंक बिन कंक। कोन माया रस वित्तौ ॥

(१) मो.-भ्रूम्मं। (२) ए. कृ. को.-पुत्रि।
* मो.-"नयन तरत तरती सुगति"। (३) मो.-सोम। (४ ए. कृ. को.-मत्ते।
† मो.-"मुन्यो कौमर आहुट्टिय"।

छुट्ट घरी श्रोन असिवर उझ्यौ । धार मार रुधि धार चलि ॥
संजुत्त अग्गि धूमह स जुत । [1]छलि बलि बीर बलिष्ट बलि ॥ छं ॥ ७७ ॥

युद्ध स्थल की उपमा वर्णन ।

सिंद्धि रिद्ध विछ्युरिय । लुथ्थि पर लुथ्थि अछुट्टिय ॥
श्रोन सलिल बढ़ि चलिय । मरन मन किंकन जुट्टिय ॥
कलमल सिर वहि गुरिय । नयन अलि वास सु वासिय ॥
जंघ [2]मगर कर मीन । कच्छ घुप्परि षग चासिय ॥
पोइनी अंत सेवाल कच । अंगुलि पग करि झिंग झरि ॥
सोमेस सूर चहुआन रन । भीम भयानक जुद्ध करि ॥ छं० ॥ ७८ ॥

दूहा ॥ हय गय जुद्ध अनुद्ध परि । बहत सार असरार ॥
*मानों आलुग अंत कौ । आनि सँपत्तौ पार ॥ छं० ॥ ७९ ॥

कन्हराय का भीम देव के हाथी को मार गिरना ।

कवित्त ॥ सोमेसर अरि सूर । ढाहि [3]दीनै [4]बरि वानै ॥
नल कूबर मनि ग्रीव । जमल भग्गा [5]तरु कान्है ॥
बे सराप नारद प्रमान । दरसन हर लद्धिय ॥
इन तमंग उत्तरै । सार कट्टै बर बढ्ढिय ॥
न्त्रिघ्घात घात मत्तौ कलह ।असुर सुरन मत्तौ [6]महन ॥
कट्टै सुरत्त कित्तिय सुभट । सु कविचंद [7]कित्तौ कहन ॥छं०॥८०॥

दोनों सेनाओं में परस्पर घोर युद्ध ।

भुजंगी ॥ बजे बीर बीरं सु सारं घनक्कै । महा मुक्ति बक्के सु बीरं रनक्कै ॥
गजे बीर बहं करन्नाल सहं । सनाहं सहूरं बहै सार हहं ॥छं०॥८१॥
नचै [8]जंग रंगं ततथ्थे तथंगं । [9]लचै रंक चित्तं मनं सूर [10]पंगं ॥
बढै बंक कंकं ससंकी धरानं । नगं नग्ग जुट्टे अभग्गं परानं ॥छं०॥८२॥

(१) ए. कृ. को.-बलि ।　(२) ए. कृ. को.-मकर ।
* ए. कृ. को.-मनो जोग जुगत्ति को ।　(३) ए. कृ. को.-दीनौ ।
(४) ए. कृ. को.-वर ।　(५) मो.-तर ।　(६) ए.-सहन ।
(७) मो.-कीरति ।　(८) ए. कृ. को.-अंग ।
(९) ए. कृ. को.-चले ।

ठनक्कंत घंटं रनक्के नफेरी। मचा मोह दोषन्न छूरन्न ¹नेरी॥
धरं धार ढौरै ढंढोरें सु ढालं। मनों चक्र फेरें कि पंकं कुलालं॥
छं० ॥ ८३॥

जामराय यद्दव और उसके सम्मुख खंगार का युद्ध करना, दोनों की मतवाले हाथियों से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ समर समुद्द भीमंग। मध्य वड़वानल राजं॥
चाहुआन चालुक्क। रोस जुट्टे बल साजं॥
दल दष्षिन जदु जाम। कलप अंती कर कुप्पौ॥
²ता मुष्षह षंगार। झार अग्गी झर रुप्पौ॥
बिरचे कि ³महिष बलवंड बल। दल ⁴चमूह चवदंत हुअ॥
न्त्रप काम जाम इक जहर झर। बहर रूप पिष्षेति दुव॥ छं० ॥ ८४॥

रसावला ॥ जदू जाम जोधं, षंगारं सरोधं। भरं भार क्रुद्धं, रमै रोस उद्धं॥
छं० ॥ ८५॥

करें केलि कंकी, पुते लज्ज पंकी। कहरं करारे, मनों मत्तवारे॥
छं० ॥ ८६॥

पियें लोह छक्कं, बकै मार हक्कं। धरा धीर धूनें, फिरं अग्ग छूनें॥
छं० ॥ ८७॥

विना दंत दंती, किए क्रुद्धवंतीं। गिरें कूट कारे, झरें रत्त धारे॥
छं० ॥ ८८॥

परें ⁵सार मारे, भयानं निनारे। हयं पाइ एकं, फिरें षेत केकं॥
छं० ॥ ८९॥

दुअं मुष्ष लग्गें, डिगै नाति डिग्गें। परें लोह पूरं, गिनै नाति छूरं॥
छं० ॥ ९०॥

वहै श्रोन धारं, झरें ⁶झिल्ल तारं। .... छं० ॥ ९१॥

उक्त दोनों वीरों की मदान्ध बैल से उपमा वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-मेरी। (२) मो.-तसु। (३) ए. कृ. को.-वलय।
(४) ए. कृ. को.-समूह। (५) मो.-मार। (६) ए.-फिरन, कृ. को. मो.-झिरन।

गाथा ॥ यों लग्गे रन सूरं । ज्यों मत्ते [1]वृषभ रोस रंगाइं ॥
　　गरजैं धर पुर धुंदे । तक्कै घाइ अप्प अंगाइं ॥ छं० ॥ ९२ ॥

इन वीरों का युद्ध देख कर देवताओं का विस्मित होना और पुष्प वृष्टि करना ।

दूहा ॥ अंमर धर पन्नग असुर । पिषि सह रष्षित नैन ॥
　　सुमन ससंभ्रम पिष्षि क्रम । सुमन स [2]वृष्टिय गैन ॥ छं० ॥ ९३ ॥
　　सघन घाइ घूमत विघट । षिलै कि पन्नग मंच ॥
　　विस भोए डंविस सबल । [3]सगति नहीं जुग [4]जंच ॥ छं० ॥ ९४ ॥

सोमेश्वर जी के वाम सेनाध्यक्ष बलभद्र का पराक्रम वर्णन ।

कवित्त ॥ वाम अंग सजि संग । बलिय बलिभद्र विरचि रन ॥
　　सेत चमर गज सेत । सेत गज झंप करनि गन ॥
　　सेत हयन गज गाह । घंट घूंघर घनघोरं ॥
　　बष्षर पष्षर जीन । सार दद्दुर दल रोरं ॥
　　गज गाज बाजि नीसान धुनि । अति उब्भर दल जोर वर ॥
　　बजि लाग राग सिंधू स धुनि । करन सु उथल्ल [5]पत्थल्लधर ॥छं०॥९५॥

भीम देव की सेना का भी मावस की रात्रि के समान जुट कर आगे बढ़ना ।

दूहा ॥ पावस मावस निसि धुनिय । सजि सारंगी आइ ॥
　　षिभिर षेत घन घाइ मिलि । जानिक लग्गी लाइ ॥ छं० ॥ ९६ ॥

सोमेश्वर जी की तरफ के बहुत से *कछवाहे वीरों का मारा जाना

(१) मो.-मनथं रोसं ।　　(२) मो.-द्रष्टिय ।
(३) मो.-सकति, ।　　(४) ए.-तंत्र ।　　(५) मो.-पथ्थ ।

* कछवाहा क्षत्रियों की एक जाति विशेष को कहते हैं । वर्तमान जैपुर राज्य उसी वंश में है । कवि ने इस कछवाहा शब्द के लिये प्रायः कूरंभ शब्द प्रयोग किया है जो कि कूर्म्म (कच्छप, कछुवा) शब्द का अपभ्रंस है ।

भुजंगी ॥ मिले सेन [1]सूरं करूरं करारे । छुटै बान कम्मान करि बार धारे॥
परैं कत्तियं घात निरघात बीरं । फिर रुंड मुंडं तनं तच्छ [2]नीरं ॥
छं० ॥ ९७ ॥

उड़ैं दंत सुंडं भसुंडं मिनारे । मनों कज्जलं कूट श्रहि चंद दारे ॥
उड़ै टोप टूकं गुरज्जं प्रहारे । मनों सूर सीसं घसे चंद तारे ॥
छं० ॥ ९८ ॥

भई तीरयं भीर अप्पेव मानं । सरं पंजरं पथ्थ पंडेव जानं ॥
मिलै सेल मेलं भएकं भयंती । कुटे धान मानों धनं कूटकंती ॥
छं० ॥ ९९ ॥

रजं रज्ज रज्जे सुरज्जे अनूपं । रमैं जानि वारुंत भूपाल भूपं ॥
जिनं कछ्छ वच्चं धरं ध्रम्म धारै । तिनं भिल्लियं षग्ग अरि सस्त्र झारै॥
छं० ॥ १०० ॥

जिते काछवाचं जितं ध्रम्म धारी । तिनं ठिल्लियं भार भर भीर फारी॥
धरं धुक्कियं धार कूरंभदेवं । सुभै सस्त्र सज्या मनों संत नेवं ॥
छं० ॥ १०१ ॥

भीमदेव की सेना का चारों ओर से सोमेश्वर को घेर लेना।

दूहा ॥ दच्छिन पच्छिम वाम दल । दत्त अनुच्चिय सार ॥
गोल गहर गाजी अनी । सोमेसर अरि भार ॥ छं० ॥ १०२ ॥

उस समय चहुआन बीरों का जीवन की आशा छोड़ कर युद्ध करना।

गाथा ॥ बज्जे रन रनतूरं । गज्जे गहर सूर षल चूरं ॥
मंडे निजर करूरं । छंडे मरन मोह साद्दूरं ॥ छं० ॥ १०३ ॥

सोमेश्वर और भीमदेव का परस्पर साम्हना होना।

साटक ॥ पिष्षेयं सोमेस गुज्जर धनी, मचकंदु निद्रा तयं ॥
जलधेयं गंजाल कोपित वलं, हालाहलं नैनयं ॥

(१) ए. कृ. को.-सार । (२) मो.-तीरं ।

जो वंडं करवान कर्षित द्लं, अज्जेन आयातयं ॥
श्री वीरं चहुआन वानति बलं, चालुक संघातयं ॥ छं० ॥ १०४ ॥

भीमदेव और सोमेश्वर दोनों की सेनाओं का परस्पर युद्ध करना।

भुजंगी ॥ बढ़े बान चहुआन चालुक पेतं। महा मंच विद्या गुरं सुक्र भेतं॥
घने घोर नीसान गज्जे गहारं। उठे जानि प्रासाद वर्षा [१]प्रहारं॥
छं० ॥ १०५ ॥

बजी भेरि भंकार नफ्फेरि मादं। तड़क्कंत बिज्जू करन्नाल सादं॥
छुटी बान जंची उड़ी गेन अग्गी। [२]महादेव वीरं चषं निद्र भग्गी॥
छं० ॥ १०६ ॥

सहन्नाइ सिंधू सुरं हर्ष वीरं। नचें ताल संभाल वेताल श्रीरं॥
नचें न्नत्य नीसान नारद्द धाई। चढ़ी व्योम विम्मान अपछरि सुहाई॥
छं० ॥ १०७ ॥

जके जष्य गंधर्व कौतिग्ग हारी। प्रलैकालयं ब्याल [३]ब्यालं विचारी॥
दुवं दिग्गपालं दुवं छत्रधारी। दुवं ढाल ढिंचाल मल्लं करारी॥
छं० ॥ १०८ ॥

दुअं [४]तवल दारं दुवं विरद वानं। दुअं भूमि संघार हिंदू हदानं॥
दुअं सूर पूतं दुअं [५]कस्य पाए। दुअं दंद दारुन्न बाजे बजाए॥
छं० ॥ १०९ ॥

दुअं लोह मेवाड़ मंडूर मानं। दुअं हंकि हंकार बढ्ढे व रानं॥
दुवं सैंन स्याही जलं बहलानं। दुअं गज्ज गुम्मानयं तेज भानं॥
छं० ॥ ११० ॥

रची चच्चरी लोह डंडं डरारी। प्रहत्तीय बेरा अघंती करारी॥
[६]सरं जाल भालं भिदै अंच जीवं। हयं हीस मंडे गरज्जे करीवं॥
छं० ॥ १११ ॥

(१) मो.-पहारं। (२) ए. कृ. को.-महावीर देषं।
(३) को.-षत्री, ए. कृ. को.-क्षत्री। (४) ए.-तन्न, कृ. को.-तत्त्व।
(५) को.-अस्व, ए. कृ.-अस्य। (६) ए. कृ. को.-रसं।

तुटै हड्ड मंसं धरंगं अभंती। गहै अंत गिद्धी गयंनं भमंती ॥
उडैं छीछ तारं अपारं उतंगं। सुरं दृष्ट बंधूक पूजं [1]अुतंगं ॥
छं० ॥ ११२ ॥

छुटैं मभ्भ सभ्भं नरं केक कत्ते। लरें जंग हथ्यं बिना केक रत्ते ॥
उड़ैं पुप्परी पग्ग झारैं करारी। मनौं चंद सूरं दधी पूज धारी ॥
छं० ॥ ११३ ॥

किते घाइ अघ्घाइ घट घूम लुट्टैं। [2]तिनं जम्म म्रनं क्रमं बंध छुट्टैं॥
किते लोह छक्के रनं भूमि घूमें। तिनं वास वैकुंठ कै ठाम धूमै ॥
छं० ॥ ११४ ॥

जिते अंग अंगं परे टूटि न्यारे। तिनं उप्पजै मुक्ति कै भूम त्यारे ॥
कहै कब्बि वष्यान किं वर्नि तेनं। फलै [3]कृष्यि पच्छं मरनं जितेनं॥
छं० ॥ ११५ ॥

कवित्त ॥ हालाहल विसयौ। सार मत्तौ कोलाहल ॥
जुग्गिनि जय जय जपहिं। पसु, पंषिन कोलाहल ॥
धर परंत ढुरि धरनि। उत्त मंगत्तिहि कारहि ॥
झर झरंत षग्गाइ। बीर डंकिनि ढक्कारहि ॥
महि मष्वि महूरत मरन रन। सद्द जाइ जय सुर करिय ॥
चहुआन सूर सोमेस रन। षंड षंड तन झरि परिय ॥छं०॥११६॥

अपना मरण निश्चय जान कर सोमेश्वर का अतुलित वीरता से युद्ध करना और उसका मारा जाना।

हय गय नर भर परिय। भिरिय भारथ सम्मानं ॥
सोमेसर संचयौ। मरन निहचैं उनमानं ॥
रत्त रंग सवरंग। जंग सारह उभ्भारै ॥
हक्कि मार धकि सार। झुम्मि झग सार [4]सु रारै ॥
कलहंत कंक अनभूत हुअ। उड़हि हंस हंसन मिलहि ॥
तन तुट्टि रुधिर पल हड्ड सन। कै कमंध उठि रन पिलहि ॥छं०॥११७॥

(१) ए. कृ. को.-भुतंगं। (२) मो.-तनं। (३) ए.-कृष्यि। (४) मो.-सुसारै।

सोमेश्वर के साथ मारे गए हाथी घोड़े पदाती एवं रावत सामंतों की संख्या कथन।

बाजि नंषि सोमेस। सहस बर दुक्क प्रमानं ॥
[1]तिन मध कहि पंचास। बीर भारथ भरि पानं ॥
तीन तीस घट परे। पर्‌यौ सोमेसर षेतं ॥
गिद्धि सिद्धि बेताल। कंक बंध्यौ सिर नेतं ॥
लभ्भौ सु मुगति अद्भुत जुगति। हंस हंकि हंसह मिल्यौ ॥
सोमेस करौ सोमेस गति। पंच तत्त पंचह मिल्यौ ॥ छं० ॥ ११८ ॥

सोमेश्वर का मरना और भीमदेव का घायल होकर मूर्छित होना।

दूहा ॥ जुझ्झि पर्‌यौ सोमेस धर। डोला चालुक राय ॥
दुहूं सेन झरि धर परे। बजी बत्त पग चाइ ॥ छं० ॥ ११९ ॥
नए भृत्य न्रप रिष्षि के। ज्यों फिरि करिहैं झुझ्झ ॥
चतुरानन चिंता भई। नर भारथ्थ अबुझ्झ ॥ छं० ॥ १२० ॥

सोमेश्वर को मुक्ति सहज ही मिली।

गाथा ॥ जा [2]मुक्ति जोगिंद। कालं काइ धम्म धमाइं ॥
सा मुक्तौ सोमेसं। इक्क छिने लभ्भियं राजा ॥ छं० ॥ १२१ ॥
भूमी भरंत भरयं। कलयं कर कथ्थि कथ्थेवं ॥
जै जै जंपि जगत्तं। है है नभ्भ सह सुर यायं ॥ छं० ॥ १२२ ॥

पृथ्वीराज का सोमेश्वर की मृत्यु सुन कर भूमि शय्या धारण करना और षोड़सी आदि मृत्युकर्म्म करना।

कवित्त ॥ सुन्यौ राज प्रथिराज। भूमि सिज्जा अवधारिय ॥
तात काज तिन पिंड। दान षोडस बिचारिय ॥
भद्द मद्द सह्यौ। राज गति अग्र प्रकारं ॥

(१) मो.-तिन मध्य सु पंचास। (२) ए. कृ. को.-मुक्ति, मुर्क्ति।

द्वादस दिन प्रथिराज। भूमि सज्या संथारं॥
बिन भोग भोज इक टंक करि। सुहथ दान दिय राज बर॥
दिन्नौ न कोइ दैहै न कोइ। इतौ दान अनमंत नर॥छं०॥ १२३॥

पृथ्वीराज का भूमि गो स्वर्णादि दान करना और पण करना कि जब तक भोराराय को न मार लूंगा न पाग बाधूंगा न घी खाऊंगा।

अट्ठ सहस दिय धेंन।। *तब प्रथ्थी विधि धारिय॥
हेम शृंग षुर हेम। तौल द्वादस हिमसारिय॥
जुगति जुगति विधि मान। दान षोड़स विस्तारं॥
तात बैर संग्रहन। सेन प्रथिराज विचारं॥
घृत मुक्कि पाघ बंधन तजिय। सुहत बीर लीनौ विषम॥
चालुक्क भीम भर गंजिके। कढ़ौ तात उद्दरहु सुषम॥ छं०॥१२४॥
अरिल्ल॥ धिग ताहि ताहि जीवन प्रमान। सध्यौ न तात बैरह बिनान॥
राजिंदु हष्टि रग तेत नेन। बध्यौ सु रोसु उर उमडि गेन॥ छं॥१२५॥

पृथ्वीराज का भोराराय पर चढ़ाई करने की इच्छा करना परन्तु मंत्रियों का पृथ्वीराज को अजमेर की गद्दी पर बैठाने का मंत्र देना।

दूहा॥ सजन सेन चाहैं न्रपति। बैर तात प्रथिराज॥
पाठ पुब्ब बैठन मतौ। पच्छ सु जुद्धह काज॥ छं०॥ १२६॥

पृथ्वीराज का राज्याभिषेक।

कवित्त॥ बोलि विप्र प्रथिराज। तत्त बुद्धी अधिकारिय॥
राज क्रंम सब जान। ध्रम्म क्रम्मह तन धारिय॥
जग्य जाप मति जोग। क्रम्म बंधन बल बंधन॥
दिषत [1]मुष्य जनु [2]ब्रह्म। पाप भंजन जन सज्जन॥

* मो.-"तब प्रथिराज सुधारिय" पाठ है।

(१) मो.-सुष्य। (२) मो.-ब्रिम्म।

जोगिंद जोग पुज्जै नहीं। काल चिद्दस जानै सुमति ॥
सासंाति ह्वर सोमह करन। सुविधि ह्वर मंडी सुभति॥ छं० ॥ १२७॥

दूहा ॥ राज विप्र बोले सुहृत। अजन सुजग्य पवित्र ॥
तव कोइ पुज्जै नहै। क्रम वारन वर मित्र ॥ छं० ॥ १२८ ॥

पृथ्वीराज का दरवार में बैठना और विप्रों का स्वस्तयन पढ़ कर तिलक करना।

पद्धरी ॥ आरसु विप्र दरवार बार। [1]साधंत जोग मति सिद्ध [2]सार ॥
मतिवंत [3]रत्ति प्रथमीत जोग। जुग जगति सेव तिन [4]देन भोग॥
छं० ॥ १२९ ॥

पूजै प्रकार [5]साधन अनेव। तिन प्रसन होइ तन मद्धि देव ॥
देषेति विप्र इन विधि प्रकार। जानंत बुद्धि तत्ती प्रचार ॥
छं० ॥ १३० ॥

मद्धि मगन मंडि नहिं निकट फंद। दिष्यंत देह आनंद कंद ॥
प्रथिराज इंद्र राजिंद जोग। अप्पै सु मुक्ति अरु भुक्ति भोग ॥
छं० ॥ १३१ ॥

धर धरनि भिरन दै दान राज। सोवन्न भूमि मंडी विराज ॥
पद सहस सहस वर हेम टूक। अप्पै सु दान मानह विसिक ॥
छं० ॥ १३२ ॥

[6]जोगिंद [7]मत्ति प्रथिराज किन्न। वर वीर धीर साधंत भिन्न ॥
छं० ॥ १३३ ॥

पृथ्वीराज का ब्राह्मणों को दान देना और दरवार में नृत्य गान होना।

दूहा ॥ विविध दान परिमान करि। निगमबोध सुभ थान ॥
लिय दिष्या जहां ब्रम्म सुत। करि अभिषेक न्रपान ॥ छं॥ १३४ ॥

(१) कृ.-साबधन। (२) ए. कृ. को.-चार।
(३) ए. कृ. को.-रत्त। (४) कृ. ए.-नैन। (५) को. मो.-राजन।
(६) ए. कृ. को.-जोगिंद्र। (७) मो.-मंति।

भ्रमरावली ॥ नव बीर नवं रस बीर नच्यौ। भ्रमरावलि छंद सु चंद रच्यौ ॥
सिधि बुद्धिय विप्र समान धरं। मति जानत तत्त सुमत्ति गुरं ॥
छं० ॥ १३५ ॥
गुर जानन गो विध तत्त सुरं। मनु बिंब सु बिंबर रंभ डरं ॥
चिय दिष्षिय रंभति रंभ गती। .... ॥ छं० ॥ १३६ ॥
वय स्याम सषी गुन गौर धरं। कविचंद सु ब्रनन कित्ति करं ॥
तमकी तम तेज किरंन [1]रजं। तिन देषत चंद कलाति लजं ॥
छं० ॥ १३७ ॥
गुर सत्त वुधं गुरमत्त ग्रसं। तिन कै उर काम ककन्न नसं ॥
षहकें नग ज्यों गज मग्ग फिरैं। तुटि वार प्रहारत धार धरैं ॥
छं० ॥ १३८ ॥
.... । मनु तारक तेज ससी उचारै ॥
छलकै छिति मत्ति जराइ जसं। झलकै जनु मुत्तिय मुत्ति गसं ॥
छं० ॥ १३९ ॥
गुर च्यार ग्रहं गुरु जीव रवी। प्रगटी जनु जोति सु तेज छवी ॥
॥ छं० ॥ १४० ॥

दर्वार में सब सामंतों सहित बैठे हुए पृथ्वीराज की शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ प्रगटि राज दर जोति। रंग रवनी रस गावहिं ॥
पाट बैठि प्रथिराज। सब्ब सामंत सु भावहिं ॥
दधि तंदुल हरि दूब। सुभ्भ रोचन कसमीरं ॥
मनों भान में भान। प्रगटि कल [2]किरन सरीरं ॥
दिष्षियै बाल गावत सरन। सपत सुरस [3]षट राग [4]मति ॥
संसार भेद आभेद [5]रत। पत्ति [6]प्रकृति साधत [7]सुरति ॥ छं० ॥ १४१ ॥

(१) ए.-जरं। (२) ए. कृ. को.-किरति। (३) ए. कृ. को.-घट।
(४) ए. कृ. को.-गति। (५) मो.-रन। (६) ए. कृ. को.-प्रगति।
(७) मो.-सुरनि।

भुजंगी ॥ कुरंगी सु चंगी द्रचंगीति वाले । इकं मोल अमोल लोलंत भाले॥
गरे पुप्फ माला विसालाति धारैं । मयंका मुषी कंठ [1]कलयंठ सारैं॥
छं० ॥ १४२ ॥

दूहा ॥ वित मति गति सारंत विधि । न्रप जै जै प्रथिराज ॥
मनों इंदु सुरपुर गहन । उदै करे मनु साज ॥ छं० ॥ १४३ ॥
लोइ स पत्ते तिन महल । जहँ सामंत नरिंद ॥
इच्छिनि अंचल गंठ जुरि । मनों इंद्रानी इंद्र ॥ छं० ॥ १४४ ॥

भुजंगी ॥ न्रपं इंच्छिनी गंठि बंधी प्रकारे । मनों कामता काम की बुद्धि तारें॥
दुहूं रंग रंगी सु रंगीति साधी । मनों जीव गुर राह एकंत बाधी॥
छं० ॥ १४५ ॥
सखी सत्त मंतं प्रकारे निनारे । मनों मेनिका रंभ आषे अषारे ॥
बरं देषि असमान अभिमान जानै । बने कोन हन्नंत ता बुद्धि दानै॥
छं० ॥ १४६ ॥

दूहा ॥ चौअग्गानी लच्छि दै । सब सामंतन सथ्थ ॥
जस जा हथ्थन विप्र के । भौ कामिनिति समथ्थ ॥छं०॥१४७॥

गाथा ॥ उभै राम बर खूरं । सामंतं सत्त षट दूनं ॥
ता अथ्थन प्रथिराजं । चौ अग्गा लच्छि संग्रामं ॥ छं० ॥ १४८ ॥

इच्छनी से गठवन्धन हो कर पृथ्वीराज का कुलाचर संबन्धी पूजन विधान करना ।

भुजंगी ॥ भई कामना काम कामित्त राजं । दियौ कन्ह चहुआन हथ्थी विराजं॥
उभै राज राजंग जोगिंदु मित्तं । मनो देवता जीव के जग्य जत्तं ॥
छं० ॥ १४९ ॥

पृथ्वीराज का राज गद्दी पर बैठना। पहिले कन्ह का और तिस पीछे क्रमानुसार अन्य सब सामंतों का टीका करना।

दूहा ॥ प्रथम तिलक सिर कन्ह किय । दुत्तिय निडर रठौर ॥
इन अग्गह सुभ संत करि । तापछ सुब्भर और ॥ छं० ॥ १५० ॥

(१) मो.-कलकंक ।

कवित्त ॥ कियौ तिलक बर कन्ह। पाट प्रथिराज विराजहि ॥
मनो इंद्र अरधंग। इथ्य इंदीवर राजहि ॥
चमर सेत सोभंत। ढुरत चावद्दिसि सीसं ॥
मनौं भान पर धरिय। किरनि ससि की प्रति रीसं ॥
अवनीस इंद्र लग्यौ तपन। धुअ सुतेज तप उद्धरन ॥
सुरतान गहन मोषन करन। बहु बीरां रस संविधन ॥ छं० ॥ १५१ ॥

पृथ्वीराज की शोभा का वर्णन।

कनक दंड सिर छच। सुभत चौहान सीस पर ॥
कै तरक्त ससि भान। तेज मंगल जंगल गुर ॥
ग्रह सुसंत संग्रहन। पंच पंचौ अधिकारिय ॥
चावद्दिसि चहुआन। दिष्टि नवग्रह बल टारिय ॥
प्रज मिलिय आनि बढ्यौ अनँद। चंद छंद चातिग रटहि ॥
प्रथिराज सु बर दुज्जन मनह। काल व्याल कारन ठटहि ॥ छं० ॥ १५२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके भोला भीम विजय सोमेस बंधनो नाम उनचालिसमों प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥३९॥

अथ पज्जून छोंगा नाम प्रस्ताव लिष्यते*।

(चालीसवां समय।)

पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर दिल्ली आना।

दूहा ॥ † सुनि कगद प्रथिराज जब। बध्यौ भीम सोमेस ॥
आतुर षरि आयौ जहां। दिल्लि देस नरेस ॥ छं० ॥ १ ॥

पज्जून राय कछवाहे की पट्टन के संग्राम में वीरता वर्णन।

दूहा ॥ कित्ति कला कूरंभ बल। कहत चंद बरदाय ॥
ज्यों पट्टन संग्राम किय। आइ सु भोरा राइ ॥ छं० ॥ २ ॥
सुनी राज प्रथिराज ने। झाला रानिँग हूय ॥
बिरद बुलावै महबली। छोंगा सज्यौ सधूय ॥ छं० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय के सिर पर छोंगा‡ बांध कर लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना।

कवित ॥ छोंगा ला सिर छच। सीस बंध्यौ पज्जूनं ॥
जस जयपत्त जु आनि। करै परसन सह [1]जनं ॥
अप्पातें घर रैंठि। रीस कीनी चालुक्का ॥
हीय घटक्के साल। बात संभरि बालुक्का ॥
पुच्छैव पल्ह कूरंभ कों। अप्पानौ दल टारियौ ॥
पज्जून मलयसी बीर वर। करन कूच उच्चारयौ ॥ छं० ॥ ४ ॥

---

* मो.प्रति में "पज्जून कछवाहा छोंगा नाम प्रस्ताव" ऐसा पाठ है।

† यह दोहा मो.-प्रति मे नहीं है और पाठ से भी क्षेपक ज्ञात होता है।

(१) ए. कृ. को.-दूनं।

‡ एक प्रकार का राजसी या सरदारी चिन्ह जो पगड़ी के ऊपर बांधा जाता है जिसे झांगी भी कहते हैं। सरपेंच, कलगी तुर्रा, इत्यादि का एक भेद है।

दूत का पृथ्वीराज को समाचार देना कि भोलाराय इस समय सोनिगर के किले में है और यहां पर पज्जूनराय का चढ़ाई करना।

दल भोला भीमंग। साल चिंतिउ सोनिंगर॥
किये कूच पर कूच। काल घेऱ्यौ कि कूट गिर॥
चंद मंडि ओपम्म। सरद राका परिमानं॥
उदधि मह्नि जिम अनिल। अलधि लंका गढ़ आनं॥
दल दूत राज पिथ्थह कहिय। हक्काऱ्यौ पज्जून बल॥
तुम जाइ जुरौ [1]ऊपम करौ। हनौ राज भीमंग दल॥ छं०॥ ५॥

दूहा॥ सकल सूर कूरंभ बर। सथ लिन्नौ अप [2]जत्ति॥
समर धीर बीरत सबर। लज्जी परै न [3]भत्ति॥ छं०॥ ६॥

पज्जूनराय की चढ़ाई की शोभा वर्णन।

पद्धरी॥ चल्यौ बीर पज्जून कूरंभ सथ्थं। मनों कच्छियं जोग जोगी समथ्थं॥
दुअं तोन बंधे दुअं लै कमानं। *मनों उत्तरा पथ्थ पारथ्थ जानं॥
छं०॥ ७॥

दुअं असं बंसं रचे रथ्थ जोरं। लगे पाइ छत्री उठी भोमि भोरं॥
कियौ पट्टनं कूच चालुक्क थानं। अपं सथ्थ बीरं सु लीए जुवानं॥
छं०॥ ८॥

पुछे पंथ पंथी तनं सब्ब जंपै। सुनै दुट्ठ बैरी तिनं तेज कंपै॥
इकं चित्त इट्ठं [4]निजा साइ मानैं। हसे बीर कूरंभ रैवान जानै॥
छं०॥ ९॥

तहा घेरियं ग्राम चालुक्क रायं। अचानक्क बीरं दरब्बार आयं॥
॥ छं०॥ १०॥

---

(१) ए. कृ. को.-ऊपर। (२) ए. कृ. को.-जिति।
(३) ए. कृ. को.-भिति। * मो.-मनों उत्त पारथ्थ जानं।
(४) ए. कृ. को.-जिन।

दूहा ॥ *चौकी भीमानी चढ़ै। झाला रानिंग सथ्थ ॥
　　छोंगा बीर महाबली। बर बीरा रस कथ्थ ॥ छं० ॥ ११ ॥

पज्जून राय का घेरा डालना। मलय सिंह का मुकाबला करना।

कवित्त ॥ चंपि बाल पज्जून। बीर भोरा भीमंदे ॥
　　कै आयौ उप्पर। फुट्टि पायाल सबद्दे ॥
　　सकल सेन चमक्यौ। बीर भोरा उठि जग्यौ ॥
　　मलैसीह सुष काल। हाल सम [१]व्याल सु [२]भग्यौ ॥
　　[३]बक्कार बीर छौंगा गह्यौ। सिर मंडन लिय हथ्थ धरि ॥
　　आए सु सीस पज्जून करि। समर बाल बीरं सुबरि ॥ छं० ॥ १२ ॥

पज्जूनराय का चाबुक भुल जाना और फिर सात कोस से लौट कर चालुक की भरी सेना में से चाबुक ले जान।

दूहा ॥ लै छोंगा बर [४]बीर चलि। चावक भूल्यौ हथ्थ ॥
　　सात कोस ते बाहुर्‍यौ। बर बीरा रस कथ्थ ॥ छं० ॥ १३ ॥
　　पट्टन हट्टन मझ्झ ते। लै आयौ फिरि धीर ॥
　　ता पाछैं बाहर चढ्यौ। दल चालुक्की बीर ॥ छं० ॥ १४ ॥

चालुक सेना का पीछा करना और पज्जून राय का उसे परास्त करना।

भुजंगी ॥ चढ़े पच्छ चालुक्क सो सज्जि सेनं। हकारे नरिंदं सु कूरंभ तेनं ॥
　　सुने सद्द कन्नं फिरे तथ्थ बीरं। छुटे तीर तीरं मनों सिंधु नीरं ॥
　　　　　　　　छं० ॥ १५ ॥
　　बजै घाइ अघ्घाइ गज्जै हवाई। बजै आवधं मझ्झ आवझ्झ झाई ॥
　　मिले बीर बीरं स्वयं सूर भारे। परे रंग जंगं मनों मत्तवारे ॥
　　　　　　　　छं० ॥ १६ ॥
　　झरैं सार सारं चिनंगीस उट्ठे। मनो भिंगनं भद्दवं रैनि बुट्ठे ॥
　　घनं रत्त घंटै उमा बीर रत्तं। परै अट्ठदह बीर कूरंभ पत्तं ॥ छं० ॥ १७ ॥

* ए. कृ. को.-"बिझ्झी बिमान चिहूटयो"।　　(१) ए. कृ. को.-ब्याल्ह।
(२) ए. कृ. को.-लग्यौ।　　(३) ए.-बक्कार।　　(४) ए.-बालि।

परे सहस चालुक्क हैवान बीरं। तहां इत्तनें भान अत्तंम नीरं ॥
छं० ॥ १८ ॥

छौंगा देकर भीमदेव का पट्टन को जाना और मलय सिंह और पज्जून राय की कीर्ति का स्थापित होना।

दूहा ॥ मल्लसीह पज्जून रा। दस दिसि किंत्ति अवाज ॥
दे छौंगा भोरा फिन्यौ। गयौ सुपट्टन राज ॥ छं० ॥ १९ ॥

पज्जून राय का पृथ्वीराज को छौंगा नजर करना।

गयौ सुचालुक ग्रेह तजि। रही कानै गिरि [1]लाज ॥
छौंगा कूरंभ रावलै। [2]कर दीनौ [3]प्रथिराज ॥ छं० ॥ २० ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को ही छौंगा दे देना और एक घोड़ा और देना।

राज सु छौंगा फेरि दिय। बर है वर आरोहि ॥
घटि चालुक [4] बढ़ि कूरमा। अयुत पराक्रम सोइ ॥ छं० ॥ २१ ॥
मल्लसिंह रानिंग सुत। सुभ्भर भोरा राज ॥
कूर्म अचानक यों पन्यौ। ज्यौं तीतर पर बाज ॥ छं० ॥ २२ ॥
*पज्जुन राइ महाबली। मल्लसिंह धर पारि ॥
छौंगा लै पाछे फिन्यौ। सुनि चालुक्क पुकार ॥ छं० ॥ २३ ॥

चन्द कवि की उक्ति से पज्जून राय के वीर शिरोमणि होने की प्रशंसा।

बहुत जुद्ध कीनौ सुबर। सुभर तेज प्रथिराज ॥
भट्ट चंद कीरति [5]तवै। कूरंभह सिरताज ॥ छं० ॥ २४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके पजून कछवाहा छौंगा नाम च्यालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥४०॥

---

(१) ए. कृ. को.-लज्ज। (२) मो.-कर दीनौ। (३) ए. कृ. को.-प्रथु हथ्थ। (४) मो.-बन्धि। (५) ए. कृ. को.-तवी। *छन्द २१ और २२ मो.-प्रति में नहीं है। इन छन्दों में पुनरुक्ति है इस से इनके क्षेपक होने का भी सन्देह हो सकता है।

अथ पज्जून चालुक नाम प्रस्ताव लिष्यते ।

(एकतालीसवां समय ।)

जै चंद के उभाड़ने से बालुका राय सौलंकी और शहाबुद्दीन की सेना का दिल्ली पर आक्रमण करना ।

दूहा ॥ [1]बालुक्का हिंदू कमध । और सु गोरी साहि ॥
साम भेद जैचंद किय । पति दोली सम ताहि ॥ छं० ॥ १ ॥

दूत का पृथ्वीराज को यह खबर देना ।

कवित्त ॥ आइ षबरि चहुआन । [2]सु दल बालुकराइ सजि ॥
आइस पंग नरेस । साह साहाब बैर कजि ॥
लष्य दोइ भर दोइ । पुरह षोषंद सुआइय ॥
दिषि है गै अनमत्त । दूत ढिल्ली दिसि धाइय ॥
प्रथिराज रुधिर कारी कढ़िय । समह राम [3]प्रोहित रढ़िय ॥
सुरतान समध बालुक कमध । [4]कहैं कोन चम्मू चढ़िय ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का विचार करना की पज्जून राय से यह कार्य्य होना संभव है ।

चालुक्का परि राइ । बीर बज्जे नीसानं ॥
सकल सूर सामंत । षग्ग मग्गं किय पानं ॥
सबर सेन सुरतान । राज प्रथिराज विचारिय ॥
विन कूरँभ को दलै । न्रपति इह तथ्थ उचारिय ॥
जो चियन बस्य नन द्रव्य बसि । मरनसु तिन जिम तन मनैं ॥
सिर धरै काम चहुआन कौ । वियौ काम चित्त न गनैं ॥ छं० ॥ ३ ॥

---

(१) मो.-चालुक्का । (२) मो.-"सुबर चालुक्का राह सजं ।
(३) ए. कृ. को.-प्रोहि । (४) मो. कहौ कान चंढ़े ।

पृथ्वीराज का पज्जूनराय को बुलाना।

दूहा॥ बोलि राज प्रथिराज तब। पान हथ्थ दिय [1]साज॥
कही जाइ कूरंभ [2]कौं। इह किज्जै हम काज॥ छं०॥ ४॥

पृथ्वीराज का सभा में बीड़ा रखना और किसी का बीड़ा न उठाना सबका पज्जूनराय की पशंसा करना।

कवित्त॥ सुनि सुबत्त कूरंभ। कोइ झिल्लै न पान वर॥
बड़गुज्जर दाहिम्म। चूर चालुक्क चंपि धर॥
परमारह कमधज्ज। बीर परिहारय भट्टिय॥
सकल सूर बर नटे। काल चंपै मति घट्टिय॥
पज्जूनराइ पग अग्गरौ। करै नाम निरमल सु धर॥
इन सम न कोइ रजपूत रन। डरहि काल [3]दिष्षिय [4]निजर॥
छं०॥ ५॥

पज्जूनराय का भरी सभा में बीड़ा उठा कर दोनों शत्रुओं का ध्वंस करने की प्रतिज्ञा करना।

ए कूरंभह बीर। धीर आहुत धनुद्धर॥
*जो मह नह पूजंत। जोग बल पंडन सद्धर॥
इनह अप्प बल दौरि। जाइ असि असि अरि झारिय॥
एकल्लै पज्जून सिंघ। परि पिसुन पछारिय॥
लै पान सीस कूरंभ धरि। सकल सूर सामंत नटि॥
चालुक्कराइ हिंदू दुसह। विषम काल व्यालह सु जुटि॥छं०॥६॥

सुलतान और कमधुज्ज के दल की सर्प और अफीम से उपमा और पज्जूनराय की गरुड़ और ऊँट सें उपमा वर्णन।

---

(१) ए. कृ. को.-बाज। (२) ए. कृ. को.-सौं। (३) ए. कृ. को.-दिष्षै।
(४) ए. कृ. को.-नजरि। * मो.-प्रति-जोगन पुज्जै जोग बल पंडन बीर।

दूहा ॥ कालव्याल सुरतान दल। कमध सु पंषय कूट ॥
हरि वाहन पज्जून दल। ते सजि धाए [1]ऊँट ॥ छं० ॥ ७ ॥

पज्जूनराय के बीड़ा उठाने पर सभा में आनन्द ध्वनि होना।

भुजंगी ॥ लियौ पान पज्जून कूरंभराइं। स्वयं जानते सोइ कीनी सु भाइं॥
मिल्लि अग्गि कूरंभ सोचित्त जानं। गई हट्ट चहुआन सुरतान मानं॥
छं० ॥ ८ ॥
बजे दुंदुभी देव देवं सु यानं। भयौ मुष्ष कूरंभ चितं स भानं॥
॥ छं० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज का पज्जूनराय को घोड़ा देना।

दूहा ॥ लरन हथ्थ लिय तेग वर। बगसि राज तब बाज ॥
लिय कूरंभ कुल उज्जले। सीस नवाइ समाज ॥ छं० ॥ १० ॥

चढ़ाई के लिये तय्यार हो कर पज्जूनराय का अपने कुटुम्ब से मिलना और उसके पांचों भाइयों का साथ होना।

कवित्त ॥ [2]पग्ग बंधि कूरंभ। आइ पज्जून अप्पन भर ॥
सुबर बीर बलिभद्र। तात पज्जून सथ्थ वर ॥
कन्ह बीर बर बीर। सिंघ पाल्हन सुधारं ॥
मलयसिंह सब हथ्थ। संग लीने भर सारं ॥
चित स्वामिभ्रंम सो अरि भिरन। लरन मरन तकसीर मन ॥
सुनि राग बीर काइर धरकि। बजिग बीर नीसान घन ॥ छं० ॥ ११ ॥

पज्जून राय की चढ़ाई की शोभा वर्णन।

दूहा ॥ बजिग बीर नीसान घन। पावस सम समीर ॥
चढ़िग ओध पज्जून [3]भर। सज्जि हयग्गय बीर ॥ छं० ॥ १२ ॥
भुजंगी ॥ चढ्यौ बीर बलिभद्र कूरंभ रायं। कला पथ्थ कोटं सुजोटं दिषायं॥
छबी तेज मुष्षं सु सोभंत बीरं। मनों केवलं अंग बीरं सरीरं॥
छं० ॥ १३ ॥

(१) ए. कृ. को.-भूटं। (२) कृ. को.-पगा। (३) मो.-परि

चल्यौ बीर संगं नरं सिंग रायं। दिठी दिठ्ठ दिठ्ठी मनों बेद गायं॥
चल्यौ राइ पज्जून छचं सुधारे। बदे जाहि स्वामी रवी रत्त भारे॥
छं०॥ १४॥
द्रुमं सीस फेरै पजूनं सचेतं। मनों बाज राजं परं बंधि नेतं॥
चढ़े सेत बंधी सयं सज्जि सारं। तिथं पंचमी पूर आदीत वारं॥
छं०॥ १५॥

पज्जून राय के कूच की तिथि वर्णन।

दूहा॥ तिथि पंचमि रवि बार बर। छंडि पंच भर आस॥
चढ़े जोध है गै परिय। [1]मुगति सु लूटन रासि॥ छं०॥ १६॥

पज्जून राय का कृत वीरताओं का वर्णन।

साटक॥ [2]धीरंजं धर धीर कूरम बली, पज्जून रायं बरं॥
जित्तं तं सुरतान मान सरसं, आहत्त बानं बिषं॥
भूयो बाल भुआल भारथ क्रतं, छघ्घो धरा धट्टियं॥
तं काजं बर बीर धीर धरयं, संसार मुक्तं बरं॥ छं०॥ १७॥

पज्जून राय की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

पद्धरी॥ चढ़ि चल्यौ सेन कूरंभ बीर। डपटीय जानि साइर गंभीर॥
बंधिय सुतीन कूरंभ मंत। जाने कि जोग जोगाधि अंत॥ छं०॥ १८॥
तहाँ हुए सगुन ए सुभ रूप। दाहारसिंघ रवि रथ्य जूप॥
दाहिनैं पूठ म्रग म्रगिय जाय। बामह सुबीय सारस सुभाय॥
छं०॥ १६॥
उत्तरै तार देवीति बार। डहकंत सह जुग्गिनिय भार॥
म्रगराज मिल्यौ दंतह प्रमान। [3]बंदे सुराज पज्जून जान॥छं०॥२०॥

पज्जून राय का यवन सेना के मुकाबिले पर पहुंचना।

दूहा॥ सकल सूर कूरंभ बर। भान भयग मुष बीर॥
तबै राइ चालुक्क बर। आइ [4]सँपत्तौ तीर॥ छं०॥ २१॥

---

(१) ए. कृ. को.-मुकति। (२) ए. कृ. को.-धीरज्जं।
(३) ए.-वदे, कृ.-बंदे। (४) ए. कृ. को.-संपत्तौ।

कमधुज्ज और यवन सेना से पज्जून राय का साम्हना होना ।

आइ सँपत्त सूर भर । सुरताना कमधज्ज ॥
कूरंभह पज्जून सम । चढ़े जोध गुर गज्ज ॥ छं० ॥ २२ ॥

दोनो प्रतिपक्षी सेनाओं का अतंक वर्णन ।

पद्धरी ॥ दुअ दीन हिंदु संमुहु प्रमान । चालुक्क राइ अरि मलन भान ॥
चहुआन सूर रवि जेम वीर । पट्टन सु राइ अरि ग्रसन धीर ॥
छं० ॥ २३ ॥
कूरम्भ दान पग रूप दीन । अजान जान रज रूप कीन ॥
छं० ॥ २४ ॥

दूहा ॥ करिग सेन संमुष सुवर । गरूड़ व्यूह किय वीर ॥
लरन मरन भारथ्थ व्रत । जज्जर करन सरीर ॥ छं० ॥ २५ ॥
[1]ग्रिद्ध व्यूह कूरंभ करि । नाग व्यूह सुरतान ॥
षा ततार षुरसान पति । मंडि फौज मैदान ॥ छं० ॥ २६ ॥

पज्जून सेना के व्यूहवध्य होने का स्वपष्टीकरण ।

कवित्त ॥ [2]पग जद्दव परिहार । पुच्छ पामार सुधारिय ॥
भट्टी सेन विषम्म । पिंड पावं अधिकारिय ॥
जानु होइ पुंडीर । मध्य उर मंस अंस करि ॥
चंच अंघ सुभ जोह । वीर कूरंभ [3]पयद्धरि ॥
[4]ग्रीवा सुजोति गज गाह गहि । [5]लहि लोहानौ [6]ठौर बर ॥
छचह [7]मुजीक पज्जून सह । दौरि पर्‍यौ वलिभद्र वर ॥ छं० ॥ २७ ॥

युद्ध की तिथि ।

घरिय सत्त दिन रह्यौ । वार नौमीति सुक्क वर ॥
पंच वीस आवट्टि । * वट्टि लोथं सुबंधि थर ॥

(१) मो.-गरुड़ । (२) मो.-पंग । (३) ए. कृ. को.-राइ धरि ।
(४) ए. कृ. को.-ग्रीवह । (५) ए. लरि । (६) मो.-मीठि । (७) मो.-मुनीक ।
* ए. कृ.- को.-"लुथ्थि पर लुथ्थि बंधि थरं" ।

कूरम्भह षग झारि। सार भारथ्थ सु किन्नौ ॥
सार बज्ज घरियार। टोप टंकार सु झिन्नौ ॥
आचार चाह राजन बरे। मरे बीर रजपूत वर ॥
संग्राम सूर कूरंभ सम। नर न नाग दानव्व [1]सुर ॥ छं० ॥ २८ ॥

श्लोक ॥ मानवं दानवं नैवं। देवांनां कुरु पांडवो ॥
कूरम्भ राइ समो बीरं। न भूतो न भविष्यते ॥ छं० ॥ २९ ॥

पज्जून राय की सेना का बड़ी वीरता से युद्ध करना।

कवित्त ॥ छाइ छाइ कहि छुट्ट। इट्ट बलिभद्र अंमरिय ॥
बलिय तप्प कूरंम। सार साहित्त घुम्मरिय ॥
यों पजून दल मल्यौ। सोइ ओपम कवि भाइय ॥
कमल पंति गजराज। सरित मझ्झह झुकि ग्राहिय ॥
घन घाइ अघाइ सुघाइ घट। करिय एम कूरंभ घट ॥
सुघ्घाट आइ कुघघाट किय। सुभट घाइ भारथ्थ [2]यट ॥ छं० ॥ ३० ॥

दूहा ॥ सुभट घाइ भारथ्थ भिरि। ते अंगन दिष्षाइ ॥
रुधि सुकै कद्दम हुए। हय तरंग सुभ्भाइ ॥ छं० ॥ ३१ ॥

इस युद्ध में पज्जून राय के भाइयों का मारा जाना।

जुद्ध सुचालुक राइ तहँ। च्यार बंध परि षेत ॥
पंच भ्रात कूरंभ बर। उप्पारे सु अचेत ॥ छं० ॥ ३२ ॥

पज्जून राय की जीत होना और शत्रु सेना का माल मता लूटा जाना।

कवित्त ॥ उप्पारिग पज्जून। बीर बलिभद्र उपारिग ॥
उप्पारिग पाल्हन नरिंदु। घाव [3]सठ्ठ तन धारिग ॥
परि पंचाइन कन्ह। जैत जैसिंह जुवानं ॥
हिंदु बीर दभझान। मेच्छ गज्जन परिमानं ॥

---

(१) मो.-अमर। (२) ए.-तट।
(३) ए. कृ. को.-सठे।

लुट्टे दरब गज बाजि रथ। रिंघ राव उप्पारयौ ॥
जस अंत लियौ कूरंभ [१]रन। जीवन अवनि सु धारयौ ॥ छं ॥ ३३ ॥

पृथ्वीराज के प्रताप की प्रशंसा।

दूहा ॥ * आज भाग चहुआन घर। आज भाग हिंदवान ॥
इन जीवत दिल्ली धरा। गंज न सक्कै आनि ॥ छं० ॥ ३४ ॥

पज्जून राय का भाइयों की क्रिया करना और २५ दिन गमी मना कर दान देना।

कोस षट्ट चहुआन बर। संमुष गय बर बीर ॥
उभै बीस अरु पंच दिन। न्हाइ दान दिय धीर ॥ छं० ॥ ३५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासाके चालुक समागम पज्जून विजय नाम इकतालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥ ४१॥

(१) ए. कृ. को.-नरं।

* छन्द ३४ मो०-प्रति में नहीं है।

अथ चंद द्वारका समयौ लिष्यते ।

(बयालीसवां समय।)

कविचंन्द का द्वारिका को जाना ।

दूहा ॥ चलन [1]चिंत चंदह कर्यौ । चलि द्वारिका सु चित्त ॥
मंगि सीष प्रथिराज [2]पहु । सजिय सकल अप सथ्थ ॥ छं० ॥ १ ॥

कविचंद का यात्रा समय का साज सामन और उसके साथियों का वर्णन ।

कवित्त ॥ दोइ सहस है बर [3]बिसाल । सत [4]वारुन [5]सथ्थह ॥
सत गयंद रथ रूढ़ । साज आसन प्रथि रज्जह ॥
पलक वेद जोजन प्रमान । घटे * संघल मत पाइय ॥
साज लष्ष तन लष्ष । सकल बल कोरि सजाइय ॥
धानुक धार सत अट्ठ चलि । करन तिथ्थ जाचह चलिय ॥
सत सुभट दान दिय तुरिय गज । मनहु जमन सागर मिलिय ॥
छं० ॥ २ ॥

चन्द का चित्तौर के पास पहुंचना ।

[6]गज घंट्टन घंवाल । भेरि सहनाइय बज्जिय ॥
चलत आइ चित्रकोट । घुरन चियलोक [8]सुरज्जिय ॥
कन्ह मान लेय न कविंद । जोजन दुअ दिष्षिय ॥
स्रृंगारिय गढ़ छट्ठ । [9]मनों इंद्रासन पिष्षिय ॥

---

(१) मो.-चित्त । (२) मो.-पैं । (३) ए. कृ. को.-बिलास ।
(४) ए. कृ. को.-बारुनह । (५) मो.-समथ्थह ।
* पाठ अधिक है । (७) मो.-घण । (८) ए. कृ. को.-पराष्षिय ।
(९) मो.-मनो इन्द्र थान बिसिष्षिय ।

बजि चंव बंव बज्जन बहुल। मन उच्छाह भिष दान दिय ॥
गढ़ मद्धि धाम मनु राम पुर। कवि सु [१]तथ्य डेरा करिय ॥छं०॥३॥

चित्तौर गढ़ की स्थापना का वर्णन।

*दूहा ॥ गिरवर डूंगर गह्वर बन। प्रबल पेषि जल ठौर ॥
चित्रंगद मोरी बसिय। दै गढ़ नाम चितौर ॥ छं० ॥ ४ ॥

चित्रकोट गढ़ की पूर्व कथा।

कवित्त ॥ चित्रकोट दिय नाम। बंधि चित्रंगद सर वर ॥
पंषि असंष निवास। सघन छाया तट तरवर ॥
बुरज कोट कंगुरा। गौष जारी चित्रसारी ॥
मह्लायत चहबचा। झिरन कारंज किनारी ॥
पागार पोरि आगार करि। थान सदेवत पिष्षयौ ॥
छतीस बंस महिचंद कहि। मोरी नाम सु रष्षयौ ॥ छं० ॥ ५ ॥

उक्त मोरी का गोमुष कुंड बनवाना।

अरिल्ल ॥ गोमुष कुंड बंधि फुनि मोरिय। सुर पति विपन सोभ सब चोरिय
भार अठार उगी बन राइव। देषि कें रीझ रह्यौ बरदाइय ॥छं०॥६॥

एक सिंहनी का ऋषि के शिष्य को खालेना।

कोरि कढ़ि पाषान मधि। गिरि कंदर इक रिष्य ॥
मुहु अग्गे सिंघनि भषत। हनि बालक तिहि सिष्य ॥ छं० ॥ ७ ॥

सिंहनी की पूर्व कथा।

कवित्त ॥ नगर अजोध्या न्रपति। नाम कीरत्ति धवल्लं ॥
सर जसुरि तातह्न। रमत सिकार सयल्लं ॥
तानि बान कम्मान। हनिय हिरनी ग्रभ वंतिय ॥
तरफंरत अवलोकि। स्रोन घन धार स्रवंतिय ॥
उतपन्न ग्यान बैराग लिय। कुंवर स कोसल संजुगत ॥
अड़ सठ्ठि करे तीरथ अटन। चित्रकोट मधि तप तपत ॥ छं० ॥ ८ ॥

(१) ए. कृ. को.-सथ्य। *-छन्द ४ से ले कर छन्द १९ पर्य्यंत मो.-प्राति में नहीं है और पाठ से भी यह अंश क्षेपक मालूम होता है।

पद्धरी ॥ तप तपत आइ चित्रकोट मद्धि । सहचरिय जाइ इह करिय सुद्धि ॥
छुनि कान बानि रानी प्रफुल्लि । उतरन महल्ल सोपानि भुल्लि ॥
छं० ॥ ९ ॥

अनुराग सुत्तपति को हरष्ष । उठि चलिय मिलन मारग गवष्ष ॥
चकचूर भइय परि पहुमि आइ । तड़िता कि तेज तारक दिखाइ ॥
छं० ॥ १० ॥

जल जलनि विष्य गिरि झंप पात । पावहि न गत्ति इह सत्ति बात ॥
जप तप्प तिथ्थ अस्नान दान । कोटिक्क पढहु पंडित पुरान ॥ छं० ॥ ११ ॥

अंतह सुमत्ति गति होइ सोइ । अहंकार उअर जिन करहु कोइ ॥
॥ छं० ॥ १२ ॥

कवित्त ॥ बघिनि होइ विकराल । आइ गिरि कंद्र प्यासिय ॥
प्रगटि पुब्ब तामस्स । भंजि शृंग जंगल ग्रासिय ॥
दंत कांति चमकंत । जरित कुंदन मय मेषं ॥
ईहा [1]मोह करंत । जनम पछिलो संपेषं ॥
असराल चष्प अंछू ढरत । पंछूरहि तुच मंस गलि ॥
इक मास लग्गि अनसन्न करि । गय नंगन उड़ि हंस चलि ॥ छं० ॥ १३ ॥

दूहा ॥ कित्ति धवल धीरज्ज धरि । श्रवन आइ उपकंठ ॥
राम नाम सभलाइ सुर । कुंअर पाइ बैकुंठ ॥ छं० ॥ १४ ॥
रघुवंसी राजिंद नें । मन हटक्कि रषि तब्ब ॥
अभवंती हिरनी हनी । तिहि बदलो लिय अब्ब ॥ छं० ॥ १५ ॥

कविचंद का आना सुन कर पृथाकुमारी का कवि के डेरे पर जाना ।

कवित्त ॥ कवि सु सथ्थ मति प्रबल । बोलि सहचरी मत्ति बर ॥
नव नव रस भोइन । अनंत इंद्रानि इंद्र घर ॥
रूप माल सु विसाल । मेघ माला सुभ मंजरि ॥
मदन बेलि मालति । विसाल सत अट्ठ अनंबर ॥

(१) कृ.-पोह ।

नरकंध रथ्थ के आहुट्टिय। ढंकिं छुट्टि मनों अंब जल॥
प्रति चल्लिय भट्ट कट्टन दरिद्। मोघ निरषि मनुराज बल॥
छं० ॥ १६॥

तिलक छुट्टि वस्त्रंग। मद्दि माला मुत्तिय मनि॥
सीतारामी सहस। कनक झारी सत बीजनि॥
अगर पान अड़सट्ठ। रजक पालिका पठाइय॥
सुवन इक्क पुत्तरिय। कर सु सारंग [1]सुह गाइय॥
मुक्कलिय प्रथा कवि थान कहं। भरन भार अधन भरिय॥
प्रति प्रति सु दान मानह प्रबल। कवि सषियन आदर करिय॥
छं० ॥ १७॥

कवि का चित्तौर जाना।

दूहा॥ दिय बहोरि न्रप नगर कों। प्रिय आसीस पढाइ॥
प्रति सुनंत मति दति प्रबल। करिस [2]कूप कल नाइ॥छं०॥१८॥
नील कंठ सिव दरस करि। मात भवानी भेटि॥
फुनि नरिंद चित्रंग मिलि। चंद दंद तन मेटि॥ छं० ॥ १९॥

कवि का किले में भोजन करने जाना। पृथा का उसे भोजन परोसना।

अरिल्ल॥ प्रतिहारन रावन पधराइय। बोलि मंच भोजन बुलवाइय॥
करन प्रथा जेवन परिमानं। उड़ि घुम्मर अम्मर सु प्रमानं॥
छं० ॥ २०॥

[3]लोह कुंड रचे सुर सची। कुरछन झारि दियंत सु चिची॥
मनों ओपमा में छवि [4]रची। जेवें बरन अठारह जची॥छं०॥२१॥
एकलिंग अवतार सु धारिय। नारि केल पुज्जै नर नारिय॥
कलिनि कलंक काल कटि भारिय। जेंवै सब परिगह परिवारिय॥
छं० ॥ २२॥

(१) ए.-सुह। (२) ए. कृ. को.-कूप, कूंर।
(३) मो..लहों। (४) मो.-मेछ ते रंची।

केसर अगर यौरि सब किन्निय। पान सुपारि कपूर प्रसिन्निय॥
हथ्थी है मोती मग विन्निय। दान मान रावर कर दिन्निय।
छं० ॥ २३ ॥

कन्ह अमरसिंहादि सामंतों का पृथा कुमारी को उपहार देना।

कनक साज है तुरी पठाइय। कन्ह एक गज मुत्तिय गाहिय॥
अमरसिंघ गज मुत्ति सुभाइय। जो चित्रंग भत्य सम राइय॥
छं० ॥ २४ ॥

मोरी रामप्रताप महाभर। सुष्यासन आरोहिय उप्पर॥
मोती जिरित मोल घन सज्जर। दीय सु दान मान अपरंपर॥
छं० ॥ २५ ॥

चन्द का चित्तौर से चलना।

दूहा॥ चलिय चंद पट्टन पुरह। अहि सिर पर धरि पौर॥
पंथ एक पष्षह चलिय। द्रिग सागर दिषि नीर॥ छं० ॥ २६ ॥

द्वारिकापुरी में पहुंच कर श्रद्धा भक्ति से दर्शन और यथाशक्ति दान करना।

कवित्त॥ उत्तरि हथ्थिय बाजि। *पाइ प्रति मिले सु मंगन॥
दिट्ठिय देवल धज्ज। पाप परहरि अँग अंगन॥
गजत पिट्ठ गोमतिय। भान तप तेज विराजिय॥
सागर जल उच्छलै। पाप भंजन पाराजिय॥
रिनछोर राइ दरसन करिय। परिय मोह मानुष्य पर॥
सुरथान मान इतनी सुचित। देवलोक कैलास दर॥ छं० ॥ २७ ॥

दूहा॥ हाटक मंडप छच लहि। मुत्तिय [२]पंतिन माल॥
मनों चंद बहु भान मभ्झ। कल मष कट्टत काल॥ छं० ॥ २८ ॥
फिरि परदछ दरसन करिय। हुअ परतष्षि प्रमान॥
तब अस्तुति सु प्रनाम करि। प्रभा विराजिय भान॥ छं० ॥ २९ ॥

---

* मो.-पाइ प्रति चले सु मंगल। (२) ए.-पंतिय, पंतिय।

कविचंद कृत रणछोड़ जी की स्तुति।

रसावला ॥ तुअं देह दट्टी, तुअं मान वट्टी। तुअं वीर दट्टी, तुअं थान थट्टी ॥ छं० ॥ ३० ॥

तुअं लोक पालं, तुअं जालमालं। तुअं भाल भालं, तुअं द्रिग्गपालं ॥ छं० ॥ ३१ ॥

तुअं देस दष्षी, तुअं भीर भष्षी। तुअं द्रोप रष्षी, तुअं सर्ग सष्षी ॥ छं० ॥ ३२ ॥

तुअं तीन रष्षी, तुअं ब्रह्म लष्षी। तुअं पंच रोही, तुअं गोप मोही ॥ छं० ॥ ३३ ॥

तुअं सत्रु दोही, तुअं सग्र सोही। तुअं सिद्धि तूंही, तुअं रिद्धि सोही ॥ छं० ॥ ३४ ॥

तुअं सर्व अंडं, तुअं तीन कुंडं। तुअं पित्त [1]षंडं, तुअं थार मुंडं ॥ छं० ॥ ३५ ॥

तुअं ग्यान गट्टं, तुअं रंभ थट्टं,। कवीचंद पट्टं, गयौ दूर हट्टं ॥ छं० ॥ ३६ ॥

दूहा ॥ हरिहर सच सच वारि बर। पुर धरि सिर पर इंद ॥
मनुं गुर तरु फर भार नमि। झलमलि हलि गोविंद ॥ छं० ॥ ३७ ॥

देवी की स्तुति।

भुजंगी ॥ नमो तुं नमो तुं नमो तुं कुमारी। नमो तुं नमो तुंज संसार सारी ॥
नमो तुं अभष्षी नमो बीज भष्षी। नमो रिष्य पूजंत सक्कंत सष्षी ॥ छं० ॥ ३८ ॥

नमो तुं रटै राज राजं रजाई। नमो [2]तुंज संसार तें सिद्ध पाई ॥
नमो तंत जालं विकालंत राई। नमो विश्वथानं [3]गिरंजा गिराई ॥ छं० ॥ ३९ ॥

*नमो ससिपालं अकालं अभष्षी। नमो काल अन्नं न कालं न सष्षी ॥
नमो एक भग्गी भरत्तार पंचं। नमो कोरि कोरं करत्तार संचं ॥ छं० ॥ ४० ॥

(१) ए. कृ. को.-पंडं। (२) ए. कृ. को.-तुझ, तुझ्झ, तुझे। (३) ए. कृ. को. गिरज्जा।
* मो.-नमो ससि पालं अकालंत राई। नमो काल असन कालं नसाई ॥

नमो सिद्ध तुं रिद्ध तुं दृद्धि पानी। नमो काल तुं भाल तुं साल रानी॥
नमो किति तुं मंच तुं गीत गानी। नमो आदि तुं अंत तुं जोग जानी॥
छं० ॥ ४१॥
नमो विश्व तुं भिस्त तुं भार भारी। नमो जोग तुं जीव तुं जुग्म चारी॥
नमो भूमि तुं धूम तुं अंब पानी। नमो तप्प तुं ताप तुं अट्ठरानी॥
छं० ॥ ४२॥
नमो बाल तुं वृद्ध तुं हाल चाली। नमो भान तुं मान तुं मुक्ति माली॥
नमो व्याघ्र तुं सार तुं वाग वद्दं। नमो भुंड मुंडं तुही पारि सद्दं॥
छं० ॥ ४३॥
नमो पच तुं छच तुं छित्ति धारी। नमो वृद्ध तुं वृक्ष तुं अघ्घ हारी॥
नमो रूप तुं रंग तुं राग [1]रत्ती। नमो भीख तुं भाव तुं सील [2]सत्ती॥
छं० ॥ ४४॥
नमो भत्त तुं हत्त तुं वार बानी। नमो चंद चंडी सदा चार मानी॥
छं० ॥ ४५॥

कवि का होम कर के ब्राह्मण भोजनादि कराना।

दूहा ॥ करि असतुति ससतुति सुबर। होम हवन हरि नाम॥
सीवन तुला सु साज बर। करि सुभट्ट मुचि काम॥ छं० ॥ ४६॥
हय हथ्थी सत दान दिय। रथ रथ्थिय [3]द्रव दिद्ध॥
हाटक चीर [4]वसुंधरा। कवि घर दीन सु निद्ध॥ छं० ॥ ४७॥

द्वारिकापुरि में छाप लगवाने का महात्म्य।

कवित्त ॥ * जे द्वारामति जाइ। छाप भुज नाहिं दिवावहिं॥
ते दरवारह चढ्ढि। न्याय हय पिट्ठ दगावहिं॥
हरि चरन्न करि सेव। रहि न उभ्भै जुरि करि वर॥
ते वागुरि अवतरे। अधोमुष [5]भूलत नर वर॥
दीनी न जिनहि परदच्छिना। दंडवत्त करि सुद्ध उर॥

(१) ए. कृ. को.-रंगी। (२) ए. कृ. को.-संगी। (३) ए. कृ. को.-भर।
(४) ए. कृ. को.-अनल अनि। * छन्द ४८ और ४९ दोनों मो.-प्रति में नहीं हैं तथा क्षेपक जान पड़ते हैं। (५) ए.-झूमत, को.-मूलत।

*कविचंद कहत ते हषभ होइ। अरहट सु [1]फेरिरंत नर ॥छं॥४८॥
भद्र मेघमह हुए। जाइ गोमत्ति न न्हावै ॥
तजै न भ्रम सेवरा। होइ करि केस लुचावै ॥
मुष पावन इन करै। वस्त्र धोवै न विवेकं ॥
श्राद्ध अंघ परंत। करत उपवास अनेकं ॥
दरसन्न देव मानै नहीं। गंगा गया न श्राद्ध क्रम ॥
कविचंद कहत इन कहा गति। किहि मारग लग्गै सु भ्रम ॥
छं० ॥ ४९ ॥

द्वारिकापुरी से लौट कर चन्द का भीमदेव की राजधानी पट्टनपुर में आना।

वंदि देव द्वारिका। करिय अति दान अघग्गल ॥
पट्टन पति भोमंग। मनो चंदन मिलि अग्गर ॥
वास भद्द गरलंत। लपटि लग्गा मन [2]डाहर ॥
तिन सेवर बदि वहु। चंद मावस उग्गा बर ॥
तिन नगर पहुच्चौ चंद कवि। मनों कैलास समाव लहि ॥
उपकंठ महल सागर प्रबल। सघन साह [3]चाहन चलहि ॥छं०॥५०॥

पट्टनपुर के नगर एवं धन धान्य की शोभा वर्णन।

सहर दिष्षि अंषियन। मनहु बहर वाहनु दुति ॥
इक चलंत आवंत। इक्क ठलवंत नवनि भति ॥
मन दंतन दंतियन। इला उप्पर इल भारं ॥
विप भारथ परि दंति। किए एकठ व्यापारं ॥
रजकंब लष दस बीस बहु। दोइ गंजन बादह पर्यौ ॥
अन्नेक चीर छूपल फिरंग। मनों मेर कंठै भर्यौ ॥ छं० ॥ ५१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-फिरत। (२) ए. कृ. को.-दाहह।

* "कविचन्द कहत" ऐसा पाठ कहीं भी नहीं पाया गया है कथाक्रम, काव्य, भाषा आदि ४८ और ४९ छन्दो की बहुत कुछ भिन्न है अत एव इन दोनों छन्दों के क्षेपक होने का सन्देह है।

(३) ए. कृ. को.-बाहन।

पलक विविध घन भार। रतन मुत्तिय द्रिग रंजत ॥
गज भरि लिज्जै कोरि। दान चुकत मति मंजत ॥
मनों गुल फूलिय धरनि। किन्न नवग्रह ताराइन ॥
लेय न इव हिम दान। रज्ज साला हिम भाइन ॥
भाषन सु भाष कहुँ मुषह। सिर स्वानह तरु धरु धवल ॥
प्रतिबिंब बसहु द्रय मानि मन। कवि मोहन दिष्षीय बल ॥छं०॥५२॥

पट्टनपुर के आनन्दमय नगर और वहां की सुन्दरी स्त्रियों की शोभा वर्णन।

अर्द्धनराच ॥ बजान बज्जयं घनं। सुरा सुरं अनंगनं ॥
सदान सद्द सागरं। समुद्दयं पटा भरं ॥ छं० ॥ ५३॥
[1]मयंद कै गजं बरं। .... ॥
हलं मलं हयं गयं। नरा नरं नरिंदयं ॥ छं० ॥ ५४ ॥
गिरं वरं [2]सुरा धरं। सबद्द सागरं पुरं ॥
अनेक रिद्धि भोगयं। नवं निधं सु जोगयं ॥ छं० ॥ ५५ ॥
भरे जु कुंभयं घनं। इला सु पानि गंगनं ॥
असा अनेक कुंडनं। .... ॥ छं० ॥ ५६ ॥
सरोवरं समानयं। परीस रंभ जानयं ॥
बतक सार संमयं। अनेक हंस भ्रम्मयं ॥ छं० ॥ ५७ ॥
भरै सु नीर कुंभयं। .... ॥
अरद्द काम रथ्थयं। सु उत्तरी समथ्थयं ॥ छं० ॥ ५८ ॥

राज्य उपवन में चन्द का डेरा दिया जाना।

दूहा ॥ दिय डेरा कुंदन सुलिग। जे लीने सुरतान ॥
तर ते वर तंबू तनिय। मनंहु कलस कै भान ॥ छं० ॥ ५९ ॥
गज बंधे गज साल में। हय बंधे हयसाल ॥
अद्ध कोस विस्तार अति। भई भीर भर चाल ॥ छं० ॥ ६० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-मृगदं कगगजं गरं। (२) मो.-सुभ्रा।

किनक आन भोरा कह्यो। दिल्लीपति दानेस ॥
अंबाई बर दान इन। नाम चंद ब्रह्म वेस ॥ छं० ॥ ६१ ॥

भीमदेव का कविचन्द के पास अपने भाट जगदेव को भेजना।

कवित्त ॥ कहै भीम जगदेव। जाहु तुम चन्द [1]समष्षन ॥
नग मनि मुत्तिय माल। परसपर बाद सपष्षन ॥
दियौ सु हथ्थिय एक। सत्त हय इक ऐराकिय ॥
लै सु जाहु तुम लच्छि। भट्ट पुच्छौ [2]मनुहाकिय ॥
चल दुश्र भट्ट आयौ वरै। करि भुझ्झौ मंचह सुपरि ॥
आरंम डंभ सुनियै बहुत। कर पिछानि मन भेद करि ॥ छं० ॥ ६२ ॥

जगदेव का कविचन्द से मिलना।

दूहा ॥ चर लग्गा दिसि कवि चरा। आयौ भोरा भट्ट ॥
करिय अनूपम रूप दुरि। वेस अचंभम [3]नट्ट ॥ छं० ॥ ६३ ॥
दीवी जाल कुदाल ढिग। अंकुस पैरी हथ्थ ॥
पूछै भोरा भट्ट इह। किन समान इह कथ्थ ॥ छं० ॥ ६४ ॥

जगदेव का अपने स्वामी भीमदेव के बल वैभव की प्रशंसा करना।

कवित्त ॥ सोमेसर किन बधिय। चंद जानौ वह गत्तिय ॥
आबू गढ़ किन लीन। भीम चालुक जुध मत्तिय ॥
इह दरिया कौ राव। सिद्ध पट्टनवै नंदन ॥
इह सु जुद्ध तें बड़ौ। गाम धामह गति गंमन ॥
कवि जुगति जानि अधिकौ कहौं। बुझ्झौ नाहिन मरम गति ॥
इह पंच दीह में जानिहौ। इह तुम इह हम जुद्ध मति ॥ छं० ॥ ६५ ॥
दूहा ॥ मिलिय परसपर रसन रचि। मिलि नाहर इक ठौर ॥
बत्त घत्त भर सद्ध मिलि। [4]सह अष्षिय द्रब कौर ॥ छं० ॥ ६६ ॥

(१) मो. सलष्वन। (२) मो.-मनुहारिय।
(३) ए. कृ. को.-मन भट्ट, भट्ट। (४) मो.-"सह अष्षिय इव कोर"

साज बाज सब फेरि दिर । प्रभु किय किसि अपार ॥
जगदेवह भोरा भनिय । [1]काह सु कवित्त उचार ॥ छं० ॥ ६७ ॥

कविचन्द का पृथ्वीराज की कीर्ति का उच्चार करना ।

सोमेसर किन बधिय । सार संमुह किन सज्जिय ॥
कन्ह पीर क्यों सहिय । किह्न किन आन कज्जिय ॥
इह गुज्जरी नरेस । वह सु दिल्ली विरदा मै ॥
क्रूप पीर आदरै । धाम उदरे इत धामै ॥
वागुरिन इत्त अवतार गनि । भिरि भुअंग भोरा सुबर ॥
अवतार लियो कलि उप्परौ । कलि प्रगटिय मनुं सहस कर ॥
छं० ॥ ६८ ॥

पुहमि राइ हस्तिनी । च्यार हंडी [2]रंधानिय ॥
इक गज्जनी सहाब । सुइ सूंपी तुर [3]तानिय ॥
इक राइ परमार । सधर सिर वानग जित्यौ ॥
करन मंद चालुक । दई तिहुवार विधुत्तौ ॥
मेल्ही जु तीन तिहु राइ घर । सु इह बत्त जुग सब क[illegible]य ॥
इम चन्द कहै जगदेव सुनि । एक राइ तुम उद्धरिय ॥ छं ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ दस लष्यन भष्यन करै । प्रथु सामत कुमार ॥
भोरा उठि गोरा गयन । तब सिर छत्र उभार ॥ छं० ॥ ७० ॥
चढ़ि भोरा तुम उप्परें । दरियापति दस लष्य ॥
[4]षग्ग साहि भंजै सुभर । सित्त सूर पति भष्य ॥ छं० ॥ ७१ ॥

जगदेव का कहना कि अच्छा तो तुम अपने पृथ्वीराज को लिवा लाओ ।

कवित्त ॥ दइय सीष जगदेव । जाहु तुम लै आवौ प्रभु ॥
जदिन सूर सामंत । तदिन पिष्षौ सुरत्ति सुभ ॥
ताम करिग तुम सुथिर । पाव चंचल होइ जैहैं ॥

(१) को.-कवि । (२) ए. कृ. को.-रंधानिग । (३) ए. कृ. को.-सुरतानिग ।
(४) ए. कृ.-मुग्ग ।

मेछ मिलै घट घंड। परम [1]उतमंग जुध जुरैं॥
रन बुध संपूरन भग्गिहै। अब महिमानी हम करैं॥
जगदेव भट्ट संची चवै। चंद भट्ट इम उच्चरै॥ छं०॥ ७२॥

भोराराय भीमदेव का चन्द के डेरे पर आना।

दूहा॥ आइ सु भोर चंद अह। हय गय नर भर भार॥
सथ्थ सपत्तौ तथ्य सब। बज्जा बज्जिय सार॥ छं०॥ ७३॥
देषिय डेरा भीम नृप। उच्चै अह आवास॥
गौष पट्टिका बनि गहव। देषिय बादर [2]रास॥ छं०॥ ७४॥

कविचंद का भीमदेव को अगवानी देकर मिलना।

आदर करि आसीस दिय। भुञ भोरा भीमंग॥
सिद्ध दिद्ध जै सिंघ तुअ। तिन पहु पुज्जि पवंग॥ छं०॥ ७५॥

कविचन्द का भोराराय भीमदेव को आशीर्वाद देना।

पद्धरी॥ जिन सिद्ध दिद्ध लिद्धी विषंड। अनेक दीप बाहन उतंड॥
जिन धर मनुष्य पहिरे न चीर। कलि कूट रूप देषंत बीर॥छं०॥७६॥
गिर धरै कंध उप्पारि नंष। पहिरे सु एक ओटं सुपंष॥
प्रति तिरें मच्छ सागर पयाल। बहु लिए रतन अनेक माल॥
छं०॥ ७७॥
तिन जीति लिए बहु रिद्धि देस। सब दीप सभझ गुज्जर नरेस॥
मझि दीप रोम राइव कुलाव। संजाल दीप प्रति काल आव॥
छं०॥ ७८॥
गिरवान दीप कंचन गुहीर। [3]तिन झुझझ दक्षिझ आसिथ्थ बीर॥
हय मुष्य ग्राह चर अंब एक। तिन जीति लिए जल जानि [4]देक॥
छं०॥ ७९॥

---

(१) ए. कृ. को.-उतकंठ। (२) को.-राव, ए.-रात।
(३) ए. कृ. को.-जिन। (४) ए. कृ. को.-टेक।

वाहन आरोहि लीने असंष। प्रति पान पुरातन लष्ष पंष॥
अवतार सेस लीनौ अवन्नि। इन भंति चंद्र कवि करि तवन्नि॥
छं०॥ ८०॥

कविचन्द और अमर सिंह सेवरा का परस्पर वाद होना और कविचन्द का जीतना।

कवित्त॥ तब पुच्छिय भीमंग। तुम बरदान सु दिज्जिय॥
बाद [1]बद्दि देवंग। सुपन पिष्षिय मन सिज्जिय॥
चंद देव किय सेव। तिन सु अमरा बुल्लाइय॥
थूल रथ्थ आरूढ़। चंद असमान चलाइय॥
तरवर सुपत्त बैठौ तिनह। फिरि न वाद कीनौ बलिय॥
मट्टी जु सषी उपजी अनल। सुरस बंचि नंचौ कलिय॥ छं०॥ ८१॥
अरिल्ल॥ जीता वे जीता चंदानं। परि पिष्षिय रष्षिय रंभानं॥
मुष बुल्लै जै जै चहुआनं। नाटिक करि नंचै निरवानं॥ छं०॥ ८२॥
हल हलंत तंबू हल हिलियं। बंदि अत्त है गै पति चलियं॥
चंद मंत्र पट्टन चल चलियं। मनों अंब ताराइन तुलियं॥
छं०॥ ८३॥

भीमदेव का अपने महल को लौट जाना।

दूहा॥ आरोहिय असु उप्परह। उड़ी रेन षुर षेह॥
भोरा चढ़ि सोरा भयौ। गयौ अप्पने ग्रेह॥ छं०॥ ८४॥

कविचन्द का सुरतान की चढ़ाई की खबर सुनकर दिल्ली को प्रस्थान करना।

प्रथु कागद चंदह पढ़िय। आयौ परि गजनेस॥
कूच कूच मग चंद परि। पहुंच्यौ घर दानेस॥ छं०॥ ८५॥

इति श्री कविचन्द विरचिते प्रथिराज रासके चंद द्वारिकागमन देव मिलन परस्पर वादजुरन नाम बयालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥ ४२॥

(१) मो.-छंद।

अथ कैमास जुद्ध लिष्यते ।

(तेंतालीसवां समय ।)

एक समय शहाबुद्दीन का तत्तार खां से पृथ्वीराज के विषय में चर्चा करना ।

गाथा ॥ इक दिन साहि सहावं । अष्षिय समह षान तत्तारं ॥
अरु षुरसान विचारं । संमर समुष राज प्रथिराजं ॥ छं० ॥ १ ॥

तत्तार खां का वचन ।

उच्चरि ताम तत्तारं । अरि अति जोर ह्वर सम रारं ॥
सम कैमास विचारं । षट्ट दिसि मंत साह साहावं ॥ छं० ॥ २ ॥

कैमास युद्ध समय की कथा का खुलासा या अनुक्रमणिका और शाह की फौजकशी का वर्णन ।

हनूफाल ॥ बर मंत्र किय सुरतान । कैमास दिसि परवान ॥
चहुआन दिष्षिय चिंत । षट्टू अ दिसि मन पंति ॥ छं० ॥ ३ ॥
संवत्त हर च्यालीस । बदि चैत एकमि दीस ॥
रवि वार पुष्य प्रमान । साहाब दिय मेलान ॥ छं० ॥ ४ ॥
चय लष्ष [1]अस असवार । बानैत सहस चिऊार ॥
पयदल सु लष्ष प्रचंड । चय सहस मद गल भंड ॥ छं० ॥ ५ ॥
चलि फौज दुंदुभि बज्जि । भद्दव कि अंबर गज्जि ॥
बाने सु गज्जि सिरज्जि । सुर राज विपन विरज्ज ॥ छं० ॥ ६ ॥
दस कोस दिय मेलान । षह षेह रंधिग भान ॥ छं० ॥ ७ ॥

---

(१) मो..लष ।

शहाबुद्दीन का सिन्ध पार करके पारसपुर में डेरा डालना।

दूहा ॥ पारसपुर तहां सरित तट। उतरि आय साहाब ॥
[1]रवि उग्गत दल कूच किय। उलटि कि साइर आव ॥ छं० ॥ ८ ॥
छनूफाल ॥ उलथ्यौ कि साइर आव। सम चढ़े षान नबाब ॥
तत्तार मंच सु प्रौढ़। षुरसान षानति [2]गूढ़ ॥ छं० ॥ ९ ॥
मारुफ षान [3]सुमन्न। बर लाल षान [4]नहन्न ॥
आकूब तेजम षान। ममरेज बंधव मान ॥ छं० ॥ १० ॥
सब लिए हय गय रिद्धि। उत्तरिय षानति सिद्ध ॥ छं० ॥ ११ ॥

दिल्ली से गुप्तचर का आना।

दूहा ॥ उतरि साद बर सिंधु नदि। किय मुकाम सब सथ्थ ॥
निसा महल सुरतान किय। बोले षान समथ्थ ॥ छं० ॥ १२ ॥
आइ भट्ट केदार बर। दै दुवाहु तिन वार ॥
कहै साहि के दार सम। कह्यौ अर्थ गुन [5]चार ॥ छं० ॥ १३ ॥
[6]मंडि भट्ट रिन जंग गुन। साहि पथ्थ सम सोइ ॥
तन विभूति सिंगी गरै। आइ दूत तब दोइ ॥ छं० ॥ १४ ॥
छम्माइन काइथ सुकर। इह लिष्षी अरदास ॥
आषेटक षेलन न्रपति। मन किय षट्टू पास ॥ छं० ॥ १५ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना।

परी हक्क दस दिसि न्रपति। चढ़ि चल्लौ [7]चहुआन ॥
धर गुज्जर अरु मालवै। सब दिसि परत भगान ॥ छं० ॥ १६ ॥

शाह का समाचार पाकर गुप्त गोष्ठी करना।

सुनिय बत्त [8]इम दूत मुष। भय चलचित सुरतान ॥
[9]गुज्झ महल सब बोलिकै। बैठे करन मतान ॥ छं० ॥ १७ ॥

---

(१) मो.-रति। (२) मो.-मूढ़। (३) ए. कृ. को.-मुमन्न।
(४) ए. कृ. को.-षान हसन्न। (५) ए. कृ. को.-च्याइ। (६) ए.-मंनि।
(७) ए. कृ. को. सुरतान। (८) ए. कृ. को.-ए। (९) ए. कृ. को.-गुह्य।

पद्धरी ॥ साहाब कहै तात्तार षान । उपजै सुमंच अष्षौ सवान ॥
[1]ढिल्लीय तें जु प्रथिराज आय । कैमास आन कीनी सहाय ॥
छं० ॥ १८ ॥
[2]फिरि गयें लाज घट्टै अनंत । भुम्भभंत हारि तो सेंन अंत ॥
आषूव तम्मि आषैति वार । सम लालषान हस्सन हकार ॥छं०॥१९॥
हम च्यारि षान बंधव सु प्रीति । साहाब साहि आने सु जीति ॥
कै जियत करैं घोरह प्रवेस । कै गहैं पथ्थ मक्का विदेस ॥छं०॥२०॥
सामंत कितक बल सूर कौन । लग्गे सु एम जिम चून लौन ॥
च्यारों सु बंध हम बल [3]अछेह । देही सु प्रथक जिय एक [4]एह ॥
छं० ॥ २१ ॥
जीवंत बंध आनें सु राज । हम जुद्ध करैं साहाब काज ॥छं०॥२२॥
दूहा ॥ सुनिय मंच सब षान मुष । बंध्या जोर सहाब ॥
रह षट्टू दिसि चल्लियैं । उलट कि साइर आब ॥ छं० ॥ २३ ॥

शहाबुद्दीन का आगे बढ़ना और पृथ्वीराज के पास समाचार पहुंचाना ।

कवित्त ॥ ग्यारह सें च्यालीस । चैत विदि सत्तिय दूजौ ॥
चढ्यौ साहि साहाब । [5]आनि पंजाबह पूज्यौ ॥
लष्ष तीन असवार । तीन सहसं मय [6]मत्तह ॥
चल्यौ साहि दर कूच । [7]फटिय जुग्गिनि घुर वत्तह ॥
सामंत सूर विकसे उअर । काइर कंपे कलह सुनि ॥
कैमास मचि मंचह दियौ । ढिंग बैठे चामुंड [8]फुनि ॥ छं० ॥ २४ ॥

पृथ्वीराज का कैमास सहित सामंतों से सलाह करना ।

दूहा ॥ कह्यौ मंत कैमास तहँ । सजि आयौ सुरतान ॥
अब विलंब किज्जै नहीं । दल सज्जौ चहुआन ॥ छं० ॥ २५ ॥

(१) मो.-"दिल्लीय तेज पृथिराज आय"। (२) मो.-परि गए। (३) ए. कृ. को.-अछेक। (४) ए. कृ. को.-मेक। (५) मो.-आय पंजाब सु पुज्यौ। (६) मो.-सत्तह। (७) मो.-पटिय। (८) मो.-पुनि।

बेर बेर आवंत इह। मानै मेछ न संधि ॥
उरह लीन प्रथिराज कौ। आनौ साहि सु बंधि ॥ छं० ॥ २६ ॥
सुनत बचन कैमास के। कही राव चावंड ॥
आन राज चहुआन पिय। हौं मारौं गज झुंड ॥ छं० ॥ २७ ॥
सुनि संभरि नृप मौज दिय। हैवर सहस मँगाइ ॥
मनि मोती सोव्रन रजक। हसती [1]सपत अमाइ ॥ छं० ॥ २८ ॥
गैवर दस हय सात सै। दिय कैमासह राइ ॥
तुरी तीन सै बीज गति। दै चावंड चितचाइ ॥ छं० ॥ २९ ॥

पृथ्वीराज की सेना की चढ़ाई और सामंतो के नाम कथन।

भुजंगी ॥ चल्यौ संभरी नाथ चहुआन राजं। चढ़े लष्य [2]पावं समं सूर साजं ॥
चले मुष्य अग्गै सुहथ्थी हजूरं। मनो प्रब्बतं झिरन मद भरत पूरं ॥
छं० ॥ ३० ॥
चल्यौ मंत्र कैमास सा काम अग्गै। वियौ राइ चावंड सम बीर सग्गै
जूचल्यौ लंगरीराइ रन्न जंगं। सकं राइ गोइंद सा काम अंगं ॥
छं० ॥ ३१ ॥
*चल्यौ चत्र कन्हा नरं नाह रन्नं। चले बीर पामार तेजं तिनन्नं ॥
†बरं बीर नर सिंघ हर सिंघ दोऊ। भरं राम बड़ गुज्जरं कनक सोऊ॥
छं० ॥ ३२ ॥
चल्यौ अचल सूरं सुजंगं जुरन्नं। चल्यौ चन्द पुंडीर चन्दं बरन्नं ॥
नरं मिढ्ढुरं सूर कामधज्ज रायं। चल्यौ बघ्घ बघघेल रन जुरन चायं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

शहाबुद्दीन की सेना की चढ़ाई और यवन योद्धाओं के नाम।

भुजंगी ॥ चल्यौ तमकि षुरसान साहाब भानं।
चली फौज तत्तार षुरसान षानं ॥
बरं रुस्तमं षान [3]आषूब मानं।
सुभै फौज साजी किधौं समुद पानं ॥ छं० ॥ ३४ ॥

(१) मो.-सत्त अनाइ। (२) मो.-एकं।
* ए.कृ.को-चल्यौ सथ्थ काका नरनाह कन्हं। † ए. कृ. को.-बरं वीर हरसिंह बरसिंह दोऊ।
(३) मो.-आकूब।

दिपै षान दरियाव दरिया समानं। लुथ्यौ अश्व [1]षुर षेह रवि आसमानं॥
चल्यौ पष्षरं धार पति षान षानं । उभै सोर सिंगी चली पंति बानं॥
छं० ॥ ३५ ॥

चल्यौ मलिक मंमार षां ताजषानं। फतेषान पाहारषां बंध ज्वानं॥
अलूषान [2]आलंम ते अग्ग बानं। सुभै गष्षरं षान कम्माल षानं॥
छं० ॥ ३६ ॥

चल्यौ [3]पतिक मारुफषां सो [4]अमानं। चल्यौ पहिलवानं सु गाजी पठानं॥
चल्यौ हब्बसी एक हब्बीवषानं। चल्यौ समसदीषान रुम्मी अपानं॥
छं० ॥ ३७ ॥

चल्यौ ग्यास दीषस्त गरुअत्त षानं। चल्यौ चिच षानं गुरं बीर दानं॥
छं० ॥ ३८ ॥

दोनों सेनाओं का चार कोस के फासले पर डेरा पड़ना।

दूहा ॥ चारि कोस चौगिरद रन। दोऊ समद समान॥
उत साहिब षुरसान कौ। इत संभरि चहुआन॥ छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज की सेना का आतंक वर्णन।

भुजंगी॥ चढ्यौ साहि साहाब करि जुद्ध साजं। करी पंच फौजं सुभं तथ्थ राजं॥
बरं मद्द वारे अकारे गजानं। [5]हलै रत्त चौंसट्ठ बैरत्त बानं॥छं०॥४०॥
षरौ फौज में सीस सुविहान छत्तं। तिनं देषतें कंपई चित्त सत्तं॥
तहां धारि हथनारि कमनैत पत्तं। .... ॥ छं० ॥ ४१ ॥
तहां लष्ष पाइक्क पंती सपेषं। तहां रत्त बैरष्ष की बनिय रेषं॥
तहां तीन पाहार मै मत्त जोरं। तिनं गज्जतें मंद मघवान सोरं॥
छं० ॥ ४२ ॥

तहां सत्त उमराव सुरतान जोटं। मनों पेषियै मध्य साहाब कोटं॥
इमं सज्जि सुरतान [6]रिन चढ्ढि अप्पं। बिना राइ चहुआन को सहै तप्पं॥
छं० ॥ ४३ ॥

(१) मो.-पुर हेवरं। (२) ए. कृ. को.-आगंम। (३) ए.कृ.को.-मलिक।
(४) ए.को.-अमानं। (५) ए.कृ.को.-"हलें रत्त चौंरं सबै रत्तवानं"। (६) मो.-चढ्ढीय अप्पं।

शहाबुद्दीन की सेना का षट्टूबन की तरफ कूच करना।

कवित्त ॥ षबरि आइ प्रथिराज। निकट सुरतान सुहाइय ॥
सज्जि सूर गज बाजि। धाक दुरजन दल पाइय ॥
किय मुकाम दिन च्यार। रहे गोइंदपुरा मह ॥
सुनि अवाज संसार। लष्ष चयमीर सु संग्रह ॥
सत लष्ष पच्छ भर आइ मिलि। कहै चंद बरदाइ बर ॥
चहुआन कलह सुरतान सम। धमधमंकि धुन्निय सु धर ॥छं०॥४४॥
दूहा ॥ चल्यौ साहि षट्टू दिसा। दिय मेलान मिलान ॥
लाल हसन आकूब सम। च्यारि भए अगिवान ॥ छं० ॥ ४५ ॥

शाह के सारुंडे में आने पर पृथ्वीराज का पुनः सामंतों से सलाह करना।

कवित्त ॥ च्यारि षान अगवान। साहि सारुंड सु आइय ॥
सुनिय षबरि चहुआन। मंचि कैमास बुलाइय ॥
कहै राज प्रथिराज। साहि आयौ तुम उप्पर ॥
दल सज्जौ अप्पान। जुरें जिम आइ अडभ्भर ॥
इह कहै राव चामंड तब। राज रहै षट्टू धरह ॥
हम जाइ जुरें सामंत सब। बंधि साह आने घरह ॥ छं० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज का चावंडराय की प्रशंसा करना और प्रातः काल होते ही तय्यारी की आज्ञा देना।

कहै राज प्रथिराज। राइ चामंड मह्हा भर ॥
तुम कुलीन बर लज्ज। लज्ज मो तुमह कंध पर ॥
रहत घटै मुहि लज्ज। बंधि आनै लज वहू ॥
कहै ताम कैमास। राज दिन सुध लै चहू ॥
इह कहिह घाव नीसान किय। भर सामंत सु बोलि लिय ॥
प्रथिराज चढ्यौ रबि उग्गतह। पंच कोस मेलान दिय ॥छं०॥४७॥

शाह का मुकाम लाडून में सुन कर पृथ्वीराज का पंचोसर में डेरा डालना।

दूहा ॥ किय मुकाम चहुआन दल। पुर पांचो[1]सर नाम ॥
सुनी षवरि सुरतान की। लषि लाडून मुकाम ॥ छं० ॥ ४८ ॥

कैमास को शाह के प्रातः काल पहुंचने की खबर मिलना।

दूत आइ पहरेक निसि। कही षवर कैमास ॥
पहर एक पतिसाह कौं। मो पच्छै दिषि पास ॥ छं० ॥ ४९ ॥

पृथ्वीराज की सेना की तय्यारी होना और कन्ह का हरावल बाँधना।

कवित्त ॥ राज पास कैमास। षवरि सुरतान कही अप ॥
सजौ सेन अप्पान। आइ सनमुष मंडै [2]वप ॥
पंच फौज साहाब। करिय भर पंच सु अग्गर ॥
सजौ फौज अप्पान। नाम लिषि लिषि तहां सुभ्भर ॥
मन्नी सु बत्त सामंत मिलि। पंच फौज राजन करिय ॥
अन भंग अंग [3]न्रप नाह नर। कंन्ह कंक अग्गें धरिय ॥छं०॥५०॥

पृथ्वीराज की पंचअनी सेना का वर्णन।

भुजंगी ॥ [4]सजौं मंचि कैमास की फौज दूजी। सथें पंच हज्जार है अनिय पूजी ॥
सुभैं पंच हज्जार कमनैत पाले। बरं पंच में मंत मै मत्त[5] वाले ॥
छं० ॥ ५१ ॥
तहां कंन्ह चहुआन सामंत साजे। तबै [6]तीसरी फौज वाजिंच वाजे॥
सहस पंच असवार गैहै सु पंचं। सहस पंच [7]माले सहै लोह अंचं॥
छं० ॥ ५२ ॥
सज्यौ गरुअ गहिलौत गोइंदराजं। चली फौज चौथी करै लोह साजं॥

(१) ए. कृ. को.-रस, रस नाम। (२) मो.-पब। (३) मो. नर नाह नृप।
(४) मो.-करी। (५) ए. कृ. को.-चाले।
(६) मो.-तीस करि। (७) ए. कृ. को.-वाले याले।

बरं पंच हथ्थी सहस पंच बाजं। सयं पंच हज्जार ढिंग [1]भंलै पाजं॥
छं० ॥ ५३ ॥

सजी पंचमी फौज यामार जैतं। तहा पंच हज्जार असवार षेतं॥
सुभे पंच हज्जार पाले पचंडं। तिनं संग मै मत्त बर पंच [2]ठड्डं॥
छं० ॥ ५४ ॥

इसी पंच फौजै चल्यौ सज्जि अप्पं। विना साहि साहाब को सहै तप्पं॥
प्रथीराज चहुआन करि चल्यौ रीसं। सुभै दूधके फेन सम छत्र [3]सीसं॥
छं० ॥ ५५ ॥

शहाबुद्दीन का भी अपनी फौज को पांच अनी में सजे जाने की आज्ञा देना।

दूहा॥ सुनी बत्त साहाब तव। सजि आयौ चहुआन॥
फौज पंच सज्जौ सु भर। मीर मलिक सब्बान॥ छं० ॥ ५६ ॥

भुजंगी॥ सुभै गोरियं जंग ठट्ठौ गुमानं। उभै लष्ष बाजं सु तथ्थं प्रमानं॥
उभै लष्ष पाले लरै लोह पानं। .... ॥ छं० ॥ ५७ ॥

अट्ठी सहस मैमत्त मद झर प्रनारं। दुजी ओपमा झिरत झिरना प्रहारं॥
भले मीर देषे दिये देढ़ [4]लष्षं। इमं चढ्ढियं षान तत्तार भष्षं॥
छं० ॥ ५८ ॥

तियं फौज षुरसान षां चढ्ढि तेजं। उभै लष्ष असवार बर बाज मेजं॥
उभै लष्ष कमनैत हयनारि हथ्थं। सजे फौज नौहथ्थ दस जुद्ध सथ्थं॥
छं० ॥ ५९ ॥

बनी फौज चौथी चल्यौ षान षानं। सुभं षान षंधार बर विरद बानं॥
दुअं लष्ष असवार पल्ले दुलष्षं। अट्ठी सहस हथ्थी कमनैत लष्षं॥
छं० ॥ ६० ॥

असी सहस असवार कारब लाह [5]सेनं। सवै अंग सन्नाह बिन दोइ नेनं॥
इकं षान षानं सुतं लाल षानं। चले लष्ष है जंग रस जुरन ज्वानं॥
छं० ॥ ६१ ॥

(१) मो.-भेले, भल्ले। (२) ए. कृ. को.-बट्टं।
(३) मो.-बीसं। (४) मो.-छर्ष्षै, भर्ष्षै। (५) ए. कृ.-सहेनं, को.-काव सनेहं।

सजी पंचमी फौज बनि ब्रंन रवं । गुरं गध्धरं घग्ग कट्टै रनेवं ॥
बली मरद कंमाल षा बधं सथ्थं । लिये सकत मन सातकी गुर्ज हथ्थं ॥
छं० ॥ ६२ ॥

सजे लष्ष द्वै सुभट करि लोह सारं । तहां देषि पाइद्दलं दुष्ष जारं ॥
तहा पंच हज्जार गट्टै गयन्नं । सजी पंचयं फौज सा [1]इंद्र ब्रन्नं ॥
छं० ॥ ६३ ॥

रणक्षेत्र में दोनों फौजों का बीच में दो कोस का मैदान देकर डटना और व्यूह रचना ।

दूहा ॥ [2]द्वै दल बीच सकोस द्वै । प्रथीराज कहि बात ॥
चौकी चढ़ि चक्कह कटक । दल अरियन करि घात ॥ छं० ॥ ६४ ॥

चौपाई ॥ चढ़िय सुचक्क सेन चहुआनं । सुबर सूर जोधा परिमानं ॥
उत सज्ज्यौ चक्कह सुरतानं । दीसै फौज मनों दधि पानं ॥ छं० ॥ ६५ ॥
कटक चक्क रच्यौ सुरतानं । प्रथीराज सज्जिग तिहि थानं ॥
परी षबरि कहियौ परिमानं । पंच फौज पंचौ [3]चहुआनं ॥ छं० ॥ ६६ ॥

डामर ॥ चढ्यौ सुरतान, सुन्यौ चहुआन, तमंकि कढी किरवान कसी ॥
मय मत्त सुमंत, पढ़े वर पंत । सहस द्वै सूर, सहस्स असी ॥
दस सट्ठि हजार, चले [4]पयदार, जमाति सु जुग्गिनि जानि हसी ।
वर बान कमान, छयौ असमान, अरी मुष संमुह, फौज धसी ॥
छं० ॥ ६७ ॥

युद्ध सम्बन्धी तिथिवार वर्णन ।

कवित्त ॥ ग्यारह सै च्यालीस । सोम ग्यारसि बदि चत्तह ॥
भए साह चहुआन । [5]मरन ठाढ़े बनि षेत्तह ॥
पंच फौज सुरतान । पंच चहुआन बनाइय ॥
दानव देव समान । ज्वान मरनं रिन धाइय ॥

(१) मो.-सावृंद्व इन्दं ।　(२) ए. कृ. को.-द्वै दल कोसह बीच द्वै ।
(३) मो.-सुरतानं ।　(४) मो.-पयदार ।　(५) मो.-मरन ।

कहि चंद दंद दुनिया सुनौ। बीर कहर चहर जहर ॥
जोधान जोध जंगह जुरत। उभय मध्य वित्यौ पहर ॥ छं० ॥ ६८ ॥

अनीपत योद्धाओं की परस्पर करनी वर्णन और अग्न्यास्त्र युद्ध।

भुजंगी ॥ प्रथीराज पतिसाह रिन जुरत जोधं। मनों राम रावन्न संभरिय क्रोधं ॥
जुरे षान तत्तार कैमास मंची। दुअं षिष्षि लग्गे दुअं भूप छिची ॥
छं० ॥ ६९ ॥

समं कन्ह षुरसान रिन जुरि क्रपानं। उड़ी षेह षुरयं न सुझझंत भानं ॥
गहिल्लौत राजंस गोइंद पानं। उतै धनिय षंधार षां षान षानं ॥
छं० ॥ ७० ॥

चढ्यौ कोपि परचंड परमार जैतं। उतै गष्षरं झाम कंमाल षेतं ॥
छुटै नारि हथनारि बानैत बानं। करै श्रत्य चहुआन सुरतान आनं ॥
छं० ॥ ७१ ॥

तहां कोपि बाहंत बर तेग राजं। इकं एक ने जे [1]लरै छोह लाजं ॥
इकं एक सेलंत कड्ढंत कोपं। इकं एक जमदड्ढ करि सेइ धोपं ॥छं०॥७२॥

इकं एक फरसी सु कड्ढंत हथ्थं। इकं एक गुरजं लरै सूर बथ्थं ॥
इकं एक हथ्थीय हथ्थी जुरंता। इकं एक सूरं उठैं भू [2]भिरंता ॥
छं० ॥ ७३ ॥

द्वादसी का युद्ध।

दूहा ॥ इम बित्ती एकादसी। होत द्वादसी प्रात ॥
रवि उग्गत सम है लरैं। हिंदू तुरक न्रघात ॥ छं० ॥ ७४ ॥

भुजंगी ॥ कहूं एक न्यारे परैं रुंड मुंडं। उड़ै श्रोन छंछं जरे जानि [3]ढुंडं ॥
इकं सूर सेलं करं कढ्ढि तेगं। *इकं हथ्थ कम्मान संचत्त वेगं ॥
छं० ॥ ७५ ॥

इकं इक्क हथियार बिन लात घातं। इकं मुष्टिकं मुष्टि किय गात पातं ॥
इमं वित्ति मध्यान अस्तिमिति भानं। इकं जम्मदड्ढं लरैं लै जुवानं ॥
छं० ॥ ७६ ॥

(१) मो.-तरे। (२) ए. कृ. को.-तुरंता। (३) ए. कृ. को.-क्षुंडं।
* मो.-"इकं अस्व कीनं रिनं वायु वेगं।"

इकं बीर बर बीर बैठे [1]विमानं। इकं सूर सूरं निरष्षंत पानं ॥
इमं जाम हूै जुद्ध करि रहे ठाढ़े। गुरे [2]बाज गजराज नरराज गाढ़े ॥
छं० ॥ ७७ ॥

पृथ्वीराज का यवन सेना में अकेले घिर जाना और चामंडराय का पराक्रम।

कवित्त ॥ घेर्‍यौ न्रप चहुआन। संग सब सथ्थिय छुट्टौ ॥
जंग करै चामंड। षग्गि गज भुंडन जुट्टौ ॥
बाग लेइ बगमेलि। सेल मैंगल सिर फुट्टौ ॥
करन कढ्ढि करिवार। दंत सम भसुंड सु तुट्टौ ॥
तुट्टौ सु दंत सम सुंड मुष। रुष किन्निय सुरतानं [3]तन ॥
दल दंत करत दाहर सुतन। मद वारुन दारुन दलन ॥ छं० ॥ ७८ ॥

दूहा ॥ कलह राइ चामंड [4]करि। इह मार्‍यौ गजराज ॥
साह गहन कौं मन कर्‍यौ। चक्यौ [5]हांस लै बाज ॥ छं० ॥ ७९ ॥

कवित्त ॥ गुरि गयंद गोरी नरिंद। चतुरंग दल सज्जिग ॥
उर निसान घुंमरिग। आइ उप्पर सिर तज्जिग ॥
जहां हक्यौ तहां भिर्‍यौ। तिनह घर नदी पलट्टिय ॥
षग्ग ताल बाजंत। मीव तरवर बन तुट्टिय ॥
[6]कतरीय पुरष गय घर मुरिग। चंद बरद्दिय इम भन्यौ ॥
भाजंत भीर तुष्षार चढ़ि। चौंडराव चावक हन्यौ ॥ छं० ॥ ८० ॥

चार यवन सरदारों का मिलकर चामंड राय पर आक्रमण करना।

दूहा ॥ लाल षान मारुफ षां। हसन षान आकूब ॥
च्यार लरे चामंड सौं। षग्ग गह्यौ तुम षूब ॥ छं० ॥ ८१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-गुमानं। (२) मो. राज।
(३) मो.-नन। (४) ए. कृ. को.-कहि।
(५) मो.-हंस। (६) ए. कृ. को.-कसरी।

कवित्त ॥ षूब षान तहां लाल। बान बरषंत बीर पर ॥
इह मरद मारुफ। [1]नेज फेरंत कहर कर ॥
हसन षान सेहथ्थ। षग्ग बाहंत सीस पर ॥
कढ्ढि कटारिय जंग। अंग आकूब इक्क भर ॥
भर भार सह्यौ भुज दुअन पर। दाहिम्मै कीनो समर ॥
कविचन्द कहै बरदाइ बर। कलह केलि भूले अमर ॥ छं० ॥ ८२ ॥
लाल षान दुअ बान। तानि सुरतान आन किय ॥
एक लग्गि हय अंग। एक चामंड बंधि हिय ॥
सकति छंडि मारूफ। जंघ [2]हय उर मद्धि भिद्दिय ॥
हसन षान तरवारि। मारि इ घा मुष छिद्दिय ॥
आकूब कटारी कढ्ढि कर। घल्लिय चामंडह गरें ॥
सुभ्भिय सुभट्ट संग्राम इम। भगल षेल नट्टह करें ॥ छं० ॥ ८३ ॥

कैमास का चामंड राय की सहायता करना।

दूहा ॥ च्यारि षान चामंड इक। एकाकी जुरि जोध ॥
अंग अम्म दाहिम्म कौ। भिऱ्यौ भीम सम क्रोध ॥ छं० ॥ ८४ ॥

चामंडराय का चारों यवन योद्धाओं को पराजित करना।

कवित्त ॥ क्रोध जोध जुरि जंग। [3]अंग चावँडराइ जुरि ॥
षग्ग जग्गि करि रीस। सीस सिप्पर समेत ढुरि ॥
एक घाव आकूब। षूब जस लियौ लोह लरि ॥
हसन मारि कट्टारि। पारि मारूफ मुऱ्यौ धर ॥
मारूफ मुऱ्यौ उछऱ्यौ हसन। आकूबह सिर धर पऱ्यौ ॥
सह दूअ आन चहुआन किय। लाल षान रन बिफ्फुऱ्यौ ॥
छं० ॥ ८५ ॥

लाल खां का वर्णन।

दूहा ॥ लाल ढाल ढिंचाल ढिग। [4]लाल बरन हय अंग ॥
लाल सील सिंधुर धजा। लाल षान किय जंग ॥ छं० ॥ ८६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-तेज। (२) मो.-हथ।
(३) ए. कृ. को.-इह। (४) ए. कृ. को.-अंग।

कवित्त ॥ लाल बरन वानैत । षग्ग कढि आन जुद्ध किय ॥
षान षान किय घाउ । कंध कटि गिर्‍यौ तास हय ॥
निरषि राइ चामंड । बिरचि फिरि बीर पचार्‍यौ ॥
गहिय तेग षां लाल । अग्ग न्रप धरनि पछार्‍यौ ॥
धर डारि रिदय पर पाव दिय । केस गहै बंकुरि करहि ॥
एकथ्थ सुनौ हिंदू तुरक । जै जै सुर नारद [१]करहिं ॥ छं० ॥ ८७ ॥

लाल खां का मारा जाना।

दूहा ॥ लाल षान के केस गहि । सिर धरि करि दुअ षंड ॥
दूसासन ज्यों भीम बल । रन ठट्ठौ चामंड ॥ छं० ॥ ८८ ॥

कैमास और चामंड राय का वार्तालाप।

कवित्त ॥ रन ठट्ठौ चामंड । मंचि कैमास पहुत्तौ ॥
[२]हयह चढ़ायौ आइ । बहुरि मुष बचन कहंतौ ॥
तूं मेरौ लघु बंध । इतौ दुष कौन सहंतौ ॥
[३]तो बिन जग सब धंध । अंध हुअ अवनि रहंतौ ॥
चढ़ि बाज आज संग्राम में । राज लाज मो भुजनि पर ॥
हठि हसन षान आकूब से । षल षंडे ते अंग बर ॥ छं० ॥ ८९ ॥

दूहा ॥ षल षंडे तुम अंग बर । [४]रगत बरन किय अंग ॥
रहि ठट्ठौ इक पिनक रन । करौं निरिषि हौ जंग ॥ छं० ॥ ९० ॥

कुंडलिया ॥ कहै राइ चामंड तब । तुम मेरे बड़ भ्रात ॥
क्यों पिची देषै षरै । कलि न अमर इह [५]गात ॥
कलि न अमर इह गात । बान मो मति तिम किज्जै ॥
हम तुम हय हक्कारि । बंधि सुरतानह लिज्जै ॥
बिरचि मार मचाइ । तबहि गज्जन पति [६]ग्रहिहै ॥
लरत कित्ति होइ तुरत । तुरक हिंदू सब [७]कहिहै ॥ छं० ॥ ९१ ॥

---

(१) मो.-कहिय । (२) मो.-हयानि ।
(३) मो.-"तौ बिन जग जनु धंध अंध हुअ अवनि परंतौ ।" (४) ए. कृ. को.-रकत ।
(५) मो.-घात्त । (६) ए. कृ. को. ग्रहिये । (७) ए. कृ. को.-कहिये ।

कैमास का युद्ध वर्णन।

दूहा ॥ ताज बाज सहबाज षां। जाज षान महबूब ॥
मान म्रदन कैमास कौ। लगि षुरसानह षूब ॥ छं० ॥ ९२ ॥

कवित्त ॥ सुनत साहि की वत्त। सत्त सब मित्त सम्हारै ॥
करत कलह [1]अम्मान। बान कम्मान प्रहारै ॥
सस्त्र सार की मार। हक्क मंची तहां टेऱ्यौ ॥
जवरजंग नीसान। मनहुं बद्दल घन घेऱ्यौ ॥
जिम पथ्थबान कर वेग गहि। च्याऱ्यौ कैमासह लगे ॥
दिष्षेव सबल संग्राम भर। ब्रह्म जोग निंद्रह जगे ॥ छं० ॥ ९३ ॥
नीर मीर [2]सक सस्त्र। मंचि कैमास तमकि तम ॥
कर गहि कठिन कमान। बान बाहंत पथ्थ जिम ॥
जाज षान दुअ बान। तानि माऱ्यौति पऱ्यौ धम ॥
तष्पि बाज सहबाज। मरद [3]महबूब मुरहि किम ॥
अहंकार धर बिमन महि। जाइ जुऱ्यौ चामंड सम ॥
दुअ करत जुद्ध मंची सरिस। लरत घाव दुअ घरिय श्रम ॥छं०॥९४॥

मध्यान्ह के उपरान्त सूर्य्य की प्रखरता कम होने पर दोनों दलों में घमसान युद्ध होना।

भुजंगी ॥ धरिय जुद्ध द्वै षरिय बिती मध्यानं। जुरे ज्वान हथ्थं सुबथ्थं जुधानं॥
दलं दोई बीरं बरं जुद्ध बानं। धकं धक्क हक्कंत षेतं सु ठानं ॥छं०॥९५॥
वहै सस्त्र अम्मान कम्मान बानं। गिरैं तथ्थ हिंदू तुरक्कं अयानं ॥
करै सूर सूरं सु घावं क्रपानं। इकं तेग लग्गे सु ठट्टे [4]घुमानं ॥
छं० ॥ ९६ ॥
मनों घुमाई ध्यानं जोगिंद बानं। लरै सूर सामंत जो जाउ मानं॥
जुरै जंम रंगं सु ठट्टै गुमानं। तहा मंचि कैमास महबूब षानं॥छं०॥९७॥
पछै पच्छवानं तता तेज ज्वानं। इसे सुभ्भियै तथ्थलै षग्ग पानं॥

---

(१) मो.-असमान। (२) मो.-सब।
(३) मो.-महमूंद। (४) मो.-गुमानं।

घनं घाव बज्जंत सो द्दै समानं । जुरे बाज सो बाज सम जुद्ध ठानं ॥ छं० ॥ ९८ ॥

जुरे च्यार षानं सु चावंड [1]मानं । जुरै अंग अंगं करै अप्प [2]मानं ॥
भजै काइरं कलह देषे कपानं । .... छं० ॥ ९९ ॥

रुप्यौ मंच मह्बूब दुअ जुद्ध थट्टं । तिनं बाहियं उअर नह तेग तुट्टं ॥
तबै थरहरे काइरं कंपि नट्ठं । तहां ताज षां षान राषंत पुट्ठं ॥ छं० ॥ १०० ॥

दलं देवता जुद्ध देषे विमानं । तहां देव मिवरंत अछरीय गानं ॥
तहां चौसठी करत भरि पच चल्ली । तहां रंभ घालंत गर माल भल्ली ॥ छं० ॥ १०१ ॥

तहां स्वांमि कामं [3]लरै हिंदु मीरं । इमं सस्त्र वस्त्रं षुटे तीर तीरं ॥
तहां मल्ल जिम लरैं बलवंत श्रीरं । .... छं० ॥ १०२ ॥

तहां लसत धंसतं सुवानं घतानं । जिसे मत्त आमत्त मत्ते मतानं ॥
तिसे दरसियं सूर दंतं दँतानं । तहां हथ्थजोरं सु हस्ती हतानं ॥ छं० ॥ १०३ ॥

सुभै ठाम ठामं परे तुरक भंुडं । तहां हह हिंदू भये षंड षंडं ॥
तहां करत सरितान में मगर तुंड । .... छं० ॥ १०४ ॥

तहां कच्छ सिर मच्छ फरके भुजानं । तहां केस कुस दंत बगपंति मानं ॥
तहां भोर ज्यों भँवर हथ्थं करारं । तहां कंज कर धार उरधार धारं ॥ छं० ॥ १०५ ॥

तहां चक्क चक्की सु सोभंत नैनं । तहां तीसरी नदिय बहिपाद्ध ऐनं ॥
तहां श्रोन की सरित जल पूर भल्ली । तहां चौसठी पच भरि कुंभ चल्ली ॥ छं० ॥ १०६ ॥

द्वादसी का युद्ध वर्णन ।

दूहा ॥ चैत प्रथम उज्जास पष । मंगल बारसि सुद्ध ॥
कैमासह चामंड सम । किय सहाव वर जुद्ध ॥ छं० ॥ १०७ ॥

(१) ए. कृ. को.-समानं । (२) ए. कृ. को.-पानं । (३) मो.-लहै षग्ग बीरं ।

दोनों सेनाओं के मुखिया सरदारों का परस्पर तुमल युद्ध वर्णन।

कवित्त ॥ परिय दोइ वर जुद्ध। क्रुद्ध जोधा रन जुट्टे ॥
मंचि मिया महबूब। [1]जंग से अंग निहट्टे ॥
परिय मीर [2]सिर मार। भार दुअ भुज वर पिल्ले ॥
घायत्तन घन घुंमि। घाय षिची षग षिल्ले ॥
षग षेल षेल महबूब सिर। कैमासह कर टारियौ ॥
तकि बाज षान बल [3]चंड करि। गहि गिरद्दान पछारियौ ॥
छं० ॥ १०८ ॥

चिंति राइ चामंड। इतें उत निरषि उभय तन ॥
षग्ग करह षनकंत। मंचि सहबाज घाव घन ॥
पहुंचि आज परिहार। धार मीरन सिर बढ्ढिय ॥
रन जित्यौ दाहिम्म। किति पहुमी पर चढ्ढिय ॥
दल दल्यौ सबल दाहर सुतन। कहै धन्य हिंदू तुरक ॥
सुनि बत्त साह संमुह [4]अरिय। जनु अस्ति वर उग्गयौ अरक ॥
छं० ॥ १०९ ॥

अपनी फौज हारती हुई देख कर शहाबुद्दीन का अपने हाथी को आगे बढ़ाना।

रसावला ॥ मत्त मत्तं खरी, मेछ दाहिम्मरी। सेन साहाबरी, छूरिमा संभरी ॥
छं० ॥ ११० ॥

कादरं कंपरी, जुद्ध देषे डरी। जेन पष्पंबरी, तेन धीरं धरी ॥
छं० ॥ १११ ॥

षग्ग षग्गें जुरी, सल्ल कट्टे अरी। रंभ आयं बरी, प्रेम बीरं बरी ॥
छं० ॥ ११२ ॥

ईस मालं धरी, [5]भ्रम्म जालंधरीं। राइ चामंडरी, जैत लड्डी घरी ॥
छं० ॥ ११३ ॥

(१) ए. कृ. को.-जंम। (२) मो.-पर।
(३) ए. कृ. को.-षंड। (४) ए. कृ. को.-ढिल्या।

तेग लग्गी तरी, मेच्छ अभ्भंतरी। मीर छुट्टे धरी, साहि डिल्ल्यौ करी॥
छं० ॥ ११४ ॥

शाह के आगे बढ़ने पर यवन सेना का उत्साह बढ़ना।

कवित्त ॥ करिय साहि ठेलंत। मीर हक्कंत प्रबल दल॥
षां ततार रुस्तम्म। मीर मंगोल सबल बल॥
चक्रसेन चहुआन। लोह बाहंत आय षल॥
नर हय गय गुंजार। लोह लग्गंत हयहल॥
असि मार धार आकास उड़ि। उट्ठि जुरंत कमंध रिन॥
चहुआन चक्र सुरतान लगि। तन तिषंड षंडे [1]करिन॥ छं० ॥ ११५॥

शहाबुद्दीन का बान वर्षा करके सामंतों को घायल करना।

तब सहाब सुरतान। बान कंमान कोपि धरि॥
अलूषान आलंम। सार बहि [2]कढ्ढी सु षुप्परि॥
चक्रसेन सिर षंडि। कियौ दह भरे लोह लरि॥
षां ततार रुस्तंम। षांन षुरसान रहै डरि॥
उर डरपि धरकि हिंदू तुरक। हूर नूर सामंत मुष॥
कविचन्द देषि कीरति करत। लरत अप्प अपनी सु रुष॥ छं०॥११६॥

दूहा ॥ अप्प अपानी रुष लरत। करत अंग अँग मार॥
चक्र सेन चहुआन कौ। भरनि सह्यौ भुज भार॥ छं०॥ ११७॥

कवित्त ॥ भरनि सह्यौ भुज भार। साह सकबान प्रहारिय॥
एक बान चामंड। लग्गि भुज दंड सुहारिय॥
दुतिय बान सिर बहिग। चक्रसेनह सिर संधे॥
सुकर कढ्ढि अप बान। षंचि बसतर [3]सम संधे॥
बर बंधि घायक षग्ग गहि। बिजल षान बगसी बह्यौ॥
कैमास राइ चामंड मिलि। धन्य दुअन जे जैं कह्यौ॥ छं० ॥११८॥

---

(1) मो. किरन, करन। (2) ए. मो.-कढ्ढि।
(3) ए. कृ.-सस।

कैमास और चामंडराय का शाह पर आक्रमण करना और यवन सरदारों का रक्षा करना।

कैमास रु चामंड। साहि गज तेग प्रहारिय॥
अलूषान आलंम। सीस दुअ घाइन पारिय॥
चक्रसेन षग बहिग। चमर कर सिर सम तुट्टिय॥
बहि क्रपान कासिम्म। [1]लरत धर पर धर लुट्टिय॥
लुट्टंति मीर तिहि साह रिन। छच धार छचिय षगन॥
दाहिम्म जुड्ड दिषि ब्रह्म सुर। भय तुंमर नारद मगन॥ छं० ॥११९॥

चक्रसेन का मारा जाना।

अलूषान धर उठिग। पानि धरि षग्ग षनंक्यौ॥
चक्रसेन कटि कंध। सिलह फुटि तनह ननंक्यौ॥
उमड़ि उट्ठि अधकाइ। घुमड़ि घन घाइ घनंक्यौ॥
तीन भरन किय घाउ। ठाम तिन तनह [2]ठनंक्यौ॥
जुध करत षग्ग तिय जोध सम। चक्रसेन सिर धर पर्‌यौ॥
बोहिथ्थ बीर तरवारि सर। उभय हथ्थ धर [3]रन तिर्‌यौ॥ छं० ॥१२०॥

चक्रसेन का वंश और उसका यश वर्णन।

*धर कर गहि तरवार। हेत हिंगोल सँभारिय॥
चढ़त साहि ढिग सज्जि। बाज सिर ताज बिहारिय॥
सचह बरस सपन्न। राय बाहर कौ जायौ॥
कलिजुग जस विस्तरिय। बहुरि बैकुंठ सु आयौ॥
बिन सिर कमंध करिवार गहि। षगन [4]मारि षल षंड किय॥
मारयौ मीर [5]जब्बव मलिक। बीर परे पारंत बिय॥ छं० ॥१२१॥

त्रयोदशी बुधवार को पृथ्वीराज की जय होना।

---

(१) मो.-लगन। (२) ए. कृ. को.-तंक्यौ।
(३) ए. कृ. को.-रत रिर्‌यौ। * मो.-धर तर कर करिवार। (४) मो.-सार।
(५) ए. कृ. को.-जब दल।

दूहा ॥ त्रयोदसी सुदि चैत की। गयौ लरत बुधवार ॥
समर साह चहुआन सम। भर भारथ किय सार ॥ छं० ॥ १२२ ॥

भुजंगी ॥ भरं भारथं कीय तिन बेर बीरं। जुरे संभरी साहि सिरदार औरं ॥
नरं काइरं झम्मले भग्ग भीरं। चढ़ौ मीर मारूफ मुष नीर धीरं ॥
छं० ॥ १२३ ॥
तहां च्यारि बंधौ भए एक सूरं। लगे मंच कैमास दिष्षे करूरं ॥
लगे बान कंमान फुट्टे परारं। कियं छिन्न सन्नाह देही विहारं ॥
छं० ॥ १२४ ॥
तहां राग मारू बजे तबल तूरं। घुरै घोर नीसान ईसान दूरं ॥
तहां षान हिंदवान भए चक्क चूरं। तहां हूर रंभा बरै बरह सूरं ॥
छं० ॥ १२५ ॥
तहां मेछ भग्गे भए प्रात तारे। तहां मंचि कैमास जित्यौ अषारे ॥
छं० ॥ १२६ ॥

दूहा ॥ जित्ति मंचि सुरतान धर। बंधव चौंड हजूर ॥
उभै लष्ष असुरान के। मेटि प्रबल दल पूर ॥ छं० ॥ १२७ ॥

कैमास और चामंडराय का शहाबुद्दीन को दो तरफ से दबाना और उसके हाथी को मार गिराना।

कवित्त ॥ मेटि प्रबल दल पूर। साह संमुह गज पिल्ल्यौ ॥
बाज राज चामंड। मंचि बंधव मिलि ठिल्ल्यौ ॥
संगि बाहि कैमास। पीत बाने बिच यट्टिय ॥
गहिय समर चामंड। तुंड पर करिय निहट्टिय ॥
कढ्ढिय सु सुंड गज दंत सम। गिरत गज्ज साहाब धर ॥
दाहिम्म गह्यौ गज्जन असुर। जय जय सुर सद्द अमर ॥छं०॥१२८॥

चौपाई ॥ प्रथीराज जित्यौ परगासं। साह सहाब ग्रह्यौ कैमासं ॥
सचह षान परे चिहु पासं। जै जै सबद भयौ आयासं ॥छं०॥१२९॥

दोनों भाइयों का शाह को पकड़ कर पृथ्वीराज के पास लेजाना।

कवित्त ॥ अमर सद्द जयकार। डारि साहाब कंध हय ॥
लै मंची सुरतान। बंधि लिय राज पास गय ॥

दिष्षि न्रपति साहाब। ताम अप्पन हिय डरयौ ॥
किय हुकम्म चहुआन। आनि सुष्षासन धरयौ ॥
न्रप जीति चल्यौ दिल्ली पुरह। उप्पार्यौ चामंड बर ॥
ढुंढयौ षेत दाहिम तहां। उप्पारिग केइक सुभर ॥ छं० ॥ १३० ॥

कैमास का रणाक्षेत्र में से घायल और मृत रावतों को ढुँढ़वाना।

उप्पारिग चहुआन। राज बंधव सु चक्रधर ॥
रामकिस्न गहिलोत। बंध रावर सु समर बर ॥
उप्पारिग नरसिंघ। बीर कैमास अनुज्झिय ॥
सामल सेषा टांक। नेह जंजरिय बंध बिय ॥
उप्परि षेत सामंत षट। षट्टपुर भारथ परिग ॥
दल हिंदु सहस असुरह अयुत। रहे षेत कंदल करिग ॥छं०॥१३१॥

रण में मृत्यु होने की प्रशंसा।

दूहा ॥ जे भग्गे तेऊ मरे। तिन कुल लाइय षेह ॥
भिरे सु नर गय जोति मिलि। बसे अमरपुर तेह ॥छं०॥१३२॥

पृथ्वीराज का दंड लेकर सुलतान को छोड़ देना और वह दंड सामंतों को बांट देना।

कवित्त ॥ गय ढिल्ली प्रथिराज। दंड सुरतान सीस किय ॥
गज द्वादस दल सोभ। बाज हज्जार अट्ठ दिय ॥
अरध दंड प्रथिराज। दियौ कैमास चौंड मिलि ॥
दंड अरध दिय राज। सुभर उप्पारि मंझ रिन ॥
पतिसाह गयौ गज्जनपुरह। बढ्ढाइय सामंत बर ॥
जै जै सु सबद सब लोक किय। चंद अष्षि कीरति अमर ॥छं०॥१३३॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके षट्टू बन मध्ये कैमास पातिसाह ग्रहनं नाम तेंतालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥४३॥

अथ भीम बध समयौ लिष्यते ।

(चौंवालिसवां समय।)

पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर शोक करना और सिंघ प्रमार का वीर वाक्यों से धैर्य्य देना ।

दूहा ॥ उर अड्डौ भीमंग न्रप । निस घटक्कै घाइ ॥
अगनि रूप प्रगटै उरह । सिंचै सचु बुझाइ ॥ छं० ॥ १ ॥

पिता बैर सिर संसहै । अरु रमनी रस रंग ॥
दिन दिन सो जल श्रोन सम । पियै सचु अनभंग ॥ छं० ॥ २ ॥

कवित्त ॥ सुनिय बत्त प्रथिराज । भीम सोमेस सद्धि रन ॥
हरि हरि मुष उच्चार । किन्न प्रथिराज सुभट गन ॥
करत दुष्ष चहुआन । बरजि पंमार सिंघ तहां ॥
आदि ध्रंम [1]षित्रीय । करे संताप तात कहां ॥
षग धार षंडि तन मंडि जस । तब सुर लोकह संचरै ॥
आजानबाह अवनीस सम । आवूवै इम उच्चरै ॥ छं० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज प्रति सिंह प्रमार के बचन ।

कहै सिंघ पामार । बत्त चहुआन चित्त धरि ॥
गुज्जर धर उज्जार । यारि प्रज्जारि छार करि ॥
सोमेसर सुरलोक । तोहि संभरिय लज्ज भुअ ॥
कितक बत्त चालुक । किम सु अंगमय जुद्ध तुअ ॥
सुरतान भूमि कंकर जहां । तहं थानौ मंडौ भलौ ॥
तुछ सुभट संग करि विकट घट । पुन अप्पन ग्रेहां चलौ ॥ छं० ॥ ४ ॥

---

(१) मो.-छत्रिय ।

पृथ्वीराज का पिता के नाम से अर्घ देकर दान करना और पितृ वैर लेने की प्रतिज्ञा करना।

दूहा ॥ स्नान सलिल अंजुलि करिय। पुनि सु पिंड दै तात ॥
सहस धेन संकलप करि। ग्रंथौ कथ्य व्रतांत ॥ छं० ॥ ५ ॥

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। सुनहु सामंत सूर [1]सम ॥
जो निरमान भवस्य। सोई संपजै क्रमक्रम ॥
जदिन भीम संग्रह्मौ। सोम उग्रह्मौ तदिन रन ॥
जोगिनि बीर बेताल। करौं संतुष्ट [2]चपति तिन ॥
छत छंडि पाद्य बंधन तजिय। सजिय अप्प संभरि दिसह ॥
अवतार भूत दानव प्रबल। अगनि अंग प्रज्वलि रिसह ॥छं०॥६॥

गाथा ॥ जाइ संपते सूरं। ग्रेहं ग्रेह अप्प अप्पानं ॥
पिष्षिय नैरवि रूपं। भूपं बिना दुब्बलं [3]सहरं ॥ छं० ॥ ७ ॥

प्रातःकाल पृथ्वीराज का सब सामंत और सैनिको की सभा करके अपने बैर लेने का पण उनसे कहना।

दूहा ॥ भूमि सयन प्रथिराज करि। निसा बिहानी निठ्ठ ॥
[4]अरुन समै उद्योत हौं। मंडि सभा सुभ बिठ्ठ ॥ छं० ॥ ८ ॥

पद्धरी ॥ बोले सु कन्ह चहुआन राइ। [5]आनंद चित्त सब बैठि आइ ॥
कर जोरि सभा सब उठ्ठ ताह। नरनाह बिरद [6]छज्जंत जाहि॥छं०॥९॥
चष पटी रहत जिन रत्ति दीह। बज्रंग अंग [7]संगर्‍यौ सीह ॥
तन तच्छ तुच्छ ह्वै घट्ट घुम्मि। तब बीर सूर सोमेस भुम्मि ॥
छं० ॥ १० ॥

---

(१) मो.-सत्र। (२) मो.-नृपति।
(३) ए. कृ. को.-सहयै। (४) मो.-असनं।
(५) ए. कृ. को.-आदर अनंत, ए.-आइर अनंत। (६) ए. कृ. को.-सज्जंत।
(७) ए. कृ. को.-संकर्‍यों।

फुनि आइ जाम जद्दव नरिंद। अमनेस मेम वज्रंग ज्यंद ॥
वलिभद्र आइ क्रूरंभ देव। बहु भंति भूय जिन करत सेव ॥छं०॥११॥
पुंडीर आइ तहां चंद वीर। सम इष्ट इष्ट शृंगार श्रीर ॥
अतताइ आइ चहुआन चंड। जनु भीम भयानक सभा पंड ॥
छं० ॥ १२ ॥

लंगरी राव तहां बैठि आइ। जगि जुद्ध समै जनु अगनि वाइ ॥
गहिलौत आइ गोइंद राउ। पर भूम झूम देयंत दाउ ॥ छं० ॥१३॥
लघु दिग्घ सूर सामंत सब्ब। बैठे जु आइ दरवार तब्ब ॥
फुनि चंद चंड [1]बरदाइ आय। जिन प्रसन देव द्रुग्गा सहाय ॥
छं० ॥ १४ ॥

प्रथिराज कही [2]सब्बहि सुनाइ। सोमेस भीम जिम सम उपाइ ॥
सजि सेन जुरौ गुज्जर नरिंद। षनि षोदि [3]कढ़ौ चालुक्क कंद ॥
छं० ॥ १५ ॥

अप्रमान बत्त भीमंग कीन। जिम जीति जुद्ध सोमेस लीन ॥
गर्भनी गर्भ कढ़ौं नरीन। प्रथिराज नाम तौ विप्र दीन ॥ छं० ॥१६॥
जहां जहां निसंक बंके मवास। षनि षोदि डारि दीजै अवास ॥
छं० ॥ १७ ॥

ज्योतिषी का गुजरात पर चढ़ाई के लिये मुहूर्त साधन करना।

दूहा ॥ करि प्रनाम सामंत सब। बोलिय जोतिगराइ ॥
सझि महूरत चढ़िये। जिम अग्गै [4]जीताइ ॥ छं० ॥ १८ ॥
व्यास आन दिष्षिय लगन। घरी महूरत जोइ ॥
इन समयै जो सज्जियै। सही जैत तौ होइ ॥ छं० ॥ १९ ॥
हक्कान्यौ जगजोति न्रप। कहौ महूरत सझि ॥
जीति होइ सद्दौं बयर। सिंघो अग्गि समझि ॥ छं० ॥ २० ॥

ज्योतिषी का ग्रह योग और सुदिन मुहूर्त वर्णन करना।

(१) मो.-दरवार। (२) मो.-सबन।
(३) ए.-चढ़ौं। (४) ए. कृ. को.-जैपाय।

कवित्त ॥ केंद्रीय ससि सोम। भोम पंचम अधिकारिय ॥
राहु बीर अष्टमो। वक्र सत्तम सुद्धारिय ॥
जंगम थावर धरिय। हलिय तिन नाम सेन भर॥
कहै विप्र प्रथिराज। राज पंचम पंचम गुर ॥
[1]मन काम होइ सो किज्जियै। अरि जित्तह पद्धर दिवस ॥
पिट्ठीय पवन रष्षै मद्दन। तौन बसाइय काल बस ॥ छं० ॥ २१ ॥

दूहा ॥ रैनि परै संमुह अरिय। चक्र जोगिनी अग्ग ॥
दई होइ दुज्जन सयन। तौ तन भग्गै खग्ग ॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ कहै व्यास जगजोति। राज चहुआन प्रमानिय ॥
गुज्जर गुज्जर सयन। बैर सोमेसर ठानिय ॥
एक लष्ष आरुहहि। लष्ष लष्षन पग रुंधहि ॥
होइ जैत चहुआन। पानि भीमंग सु बंधहि ॥
[2]गुजरात होइ तुअ ग्रेहनिय। एक बत्त संमुह मंडौं ॥
जो मिटै बत्त इह जोग कोइ। तौ हथ्थह पचौ छंडौं ॥ छं० ॥ २३ ॥

पृथ्वीराज का लग्न साध कर अपनी तय्यारी करना।

दूहा ॥ विक्रम अरु चहुआन न्रप। पर धरती सकबंध ॥
असम समै साहस [3]हसह। हिंदुराज दुअ कंध ॥ छं० ॥ २४ ॥
चढ़ि चलिय सज्यौ सयन। बोलि षत्य प्रथिराज ॥
लगन महूरत सद्धि कै। बढ्ढि निसान अवाज ॥ छं० ॥ २५ ॥

कवित्त ॥ जित्ति राज बर साज। बीर बीरह रस सज्जिय ॥
विजै जिति विजैपाल। सोइ राजन जस [4]छज्जिय ॥
तर उतंग इल [5]मूल। भूप [6]बल्लिय चित चढ्ढिय ॥
जय जय जय उच्चार। देव दानव नर पढ्ढिय ॥
सामंत गत्ति साधम्म धर। उद्धारन बर बैर पल ॥
चहुआन सज्जि चालुक्क पर। बीर बीर बड्डे [7]सबल ॥ छं० ॥ २६ ॥

(१) मो.-मम। (२) ए. कृ. को.-हुअ गुज्जर। (३) मो.-करान।
(४) ए. कृ. को.-सज्जिय। (५) ए. कृ. को. रूप।
(६) ए.-चल्लिय। (७) ए.-सकल।

गाथा ॥ इच्छिनि अच्छित मानं । वितीतं जाम भग्गयो नथ्थं ॥
अरुनोदय चहुआनं । म्रगया आइ पच्छिमं थानं ॥ छं० ॥ २७ ॥

पृथ्वीराज का शिकार के मिस पश्चिम दिसा को कूच करना।

कवित्त ॥ सा मृगया चहुआन । राज सज्जी दिसि पच्छिम ॥
सब सेना जानी न । राज एकंग सु अच्छम ॥
आषेटक सजि बीर । भयौ अरुनोदय जोगं ॥
चिहूं दिसिन संभरिय । सेन सज्जी मति भोगं ॥
जित्त तित्त फौजन हलिय । चलिय सूर सामंत बर ॥
संपत्त आइ चहुआन कौं । निड्डुर करिय जुहार सिर ॥छं०॥२८॥

राजा के साथ सैन्य सहित निड्डुर राय का आन मिलना।

दूहा ॥ निड्डुर मन संजुरि सयन । मिलिय आन प्रथिराज ॥
[1]मनु टिड्डिय धरि उच्छटिय । कै चिक्कूट पर कप्प ॥ छं० ॥ २९ ॥
पंच सबद बाजे गहिर । घन घुंमर बरजोर ॥
जंग जुझाऊ बज्जिया । बज्यौ अवंनन सोर ॥ छं० ॥ ३० ॥

पृथ्वीराज की तय्यारी का वर्णन, भीमदेव को इसकी खबर होना और उसका भी तैयारी करना।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ राज प्रथिराज सेन । कपि चले कोपि जनु लंक लेन॥
जनु उदधि उलटि छंडिय मजाद । दहवट्ट करन गुज्जर प्रसाद ॥
छं० ॥ ३१ ॥
चर चरत चरित जंगल नरेस । बढ़ि चले मध्य भीमंग देस ॥
सब षबरि कही भीमंग आइ । सजि सेन सूर चहुआन आइ ॥
छं० ॥ ३२ ॥
सामंत नाथ सामंत जोर । बढ्ढे कि आनि दरिया हिलोर ॥
चौसठि हजार परिमान [2]तेह । अनभंग जंग बढ्ढे बलेह ॥छं०॥३३॥
घृत तज्यौ पान चहुआन राइ । चिंतै सु चित्त बल विषम घाइ ॥

(१) मो.-ज्यों । (२) मो.-तेन, बलेन ।

चहुआन कन्ह गोयंदराइ। सिव सीस उदक छंडौ रिसाइ ॥
छं० ॥ ३४ ॥

बर भरे अन्य भट घट [1]अभंग। अप अप्प बिहसि सिर लगिन भंग॥
अप्पान बंध अप करौ राइ। जिम जुरो षग्ग षल बिषम घाइ ॥
छं० ॥ ३५ ॥

सब कही षबर सो सुनी दूत। [2]झलहलिय रोस जैसिंह पूत ॥
फरकंत बांह थरकंत कंध। चष [3]चढ़ि कपाल भुष हुअ असंध ॥
छं० ॥ ३६ ॥

बुल्लाइ सब्ब भर राजकाज। सम कह्यौ जुद्ध तिन करन साज ॥
परवान फट्ट देसान देस। तिन के सु चढ्ढि आए नरेस ॥छं०॥३७॥

दुअ सहस षान तेजी पठान। हथनारि धारि सँग कुहकवान ॥
चढ़ि कच्छ देस कच्छी बलान। हय सहस तीन पष्षर पलान ॥
छं० ॥ ३८ ॥

चढ़ि सहस देड़ सोरठ्ठ ठाट। तिन सहस बिषम अवघट्ट घाट ॥
चढ़ि काकरेंच कोली करूर। कमनेत कहर अन भूल रूर ॥
छं० ॥ ३९ ॥

चढ़ि झालवारि झाला अभंग। तिन लरत लोह रवि उगिन भंग॥
चढ़ि मचि [4]मुकुंद कावा नरेस। तिन चढ़त सुनत उड़ि जात देस।
छं० ॥ ४० ॥

चढ़ि कठ्ठवार कठ्ठी नरिंद। तिन सचु सुष न दिन राति न्यंद ॥
लघु दिग्घ और को गने देस। इतने कटक आए असेस ॥
छं० ॥ ४१ ॥

चढ़ि सुभट और गुर [5]गुरज षंड। अनु [6]जुरन जुद्ध बुह षेत पंड ॥
छं० ॥ ४२ ॥

भीमदेव की तय्यारी का समाचार पृथ्वीराज को मिलना।

(१) मो.-अनंट। (२) मा.-झलहलत।
(३) ए. कृ. को.-चरि। (४) मो.-कुंद।
(५) ए. कृ को.-गुजर। (६) ए.-जुरत।

दूहा ॥ चढ़े देषि चालुक दल । बहुरे संभरि दूत ॥
भेष दिगंबर दूति तनह । जे अवधूत न धूत ॥ छं० ॥ ४३ ॥
गनि गनिका कविचंद की । ठग विद्या परवीन ॥
दूत धूत अनभूत मन । नवनि राज तिन कीन ॥ छं० ॥ ४४ ॥
गाथा ॥ संमुष पिष्षिय राजं । बुल्ले बयन सुहित्त सुभाजं ॥
चढ़ि चालुक्की गाजं । नर भर समुद उलटि जनु पाजं ॥छं०॥४५॥
दूहा ॥ एक लष्ष सेना सकल । अकल कलीनह जाइ ॥
इक सहस मद गज करी । दिष्षिय जानि बलाइ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज की प्रतिज्ञा ।

कवित्त ॥ इम भंजो भीमंग । जुद्ध जौ माहिं जुरै रन ॥
ग्रीषम [1]पवन सहाय । दंग जरि जात सघन घन ॥
इम भंजो भीमंग । भीम कुलनंद पछारिय ॥
यों भंजो भीमंग । सगति महिषा सुर मारिय ॥
इम जुरों जुद्ध भीमंग सम । अगनि तेज वायं हिता ॥
प्रथिराज नाम तद्दिन धरौं । उदर फारि कढ्ढौं पिता ॥छं०॥४७॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलते हुए आगे बढ़ना ।

दूहा ॥ आषेटक खेलन चलिय । करिय पंति भर साज ॥
चावद्दिसि बन बिंटि कै । मद्धि संपतौ राज ॥ छं० ॥ ४८ ॥
*अरिल्ल ॥ मन इच्छा आषेटक लग्गिय । षग षंती मन मभभह जग्गिय ॥
जमुन विहड़ बिंटिय बहु बंके । भालि सिंह वाराहन हंके ॥छं०॥४९॥

पृथ्वीराज का गहन बन में पड़ाव पड़ना ।

दूहा ॥ जमुन बंड बंके विषम । हंकत पत्तिय संभ ॥
जो जहां हुतौ सो तहां । हुअ डेरा बन मंभ ॥ छं० ॥ ५० ॥
सूर उदय जे [2]बढ़ि हुते । उत्तरि संध्या सूर ॥
अन्न पान पहुंच्यौ सकल । कहा नीरे कहा दूर ॥ छं० ॥ ५१ ॥

(१) ए. कृ. को.-जनों पचमं । * मो.-मुरिल्ल ।
(२) ए. कृ. को.-चढ़े ।

हुकम नकीबत कहू फिरै। डेरा डेरा गाहि॥
जो जिय जा ढिग निक्करै। राज न षिज्जै ताहि॥ छं० ॥ ५२॥

कैमासादि सब सामंतों का रात्रि को राजा के पहरे पर रहना।

गाथा ॥ उत्तरि सेन सुराजं। निद्रा छुभित सब्ब सेनायं॥
पासं न्रप कयमासं। सो सुत्तं षग्ग बंधाइं॥ छं० ॥ ५३॥
यों सुत्ता सब सेनं। सा निद्रा चंपियं बीरं॥
मोह चंपि विग्यानं। [1]निद्रा ग्यान [2]नट्ठियं कालं॥ छं० ॥ ५४॥
कवित्त ॥ राज पास कैमास। कन्ह चामक्क सब्बूरा॥
सबर सूर पांमार। जैत साहिब अब्बूरा॥
[3]सलष अलष पुंडीर। दई दाहिंम चामंडं॥
*सागुर गुर सिरमौर। राज हंमीरति षंडं॥
सारंग सूर कूरंभ बलि। बर पहार तूंअर सुभर॥
लंगरीराव लोहान बर। गहिग सेन बर बीर पर॥ छं० ॥ ५५॥

एक पहर रात्रि रहने से शिकार किया जाने की सलाह।

जाम एक निसि पच्छ। बत्त आषेट विचारिय॥
सुनी सब्ब सामंत। मंत्त इह चित्त सु धारिय॥
जंत जीव जग्गै न। तंत क्रम सिद्ध न होई॥
पुब्ब श्रवन संभव्यो। निगम [4]जंपे बर लोई॥
चिंतयौ चित्त चिंता सुमन। मास तीय तिय सह सुनि॥
निरवान राज प्रथिराज गुन। [5]सुबर सगुन बज्जे सु धुनि॥
छं० ॥ ५६॥

कन्ह का रात्रि को स्वप्न देखना और साथियों से कहना कि सबेरे युद्ध होगा।

(१) को.-निज। (२) ए. कृ. को.-नट्ठियं।
(३) ए. कृ. को. सकल।
* मो.-"सागर गुर सिर मौर राज संभीरति षंडं"।
(४) ए. कृ. को.-चंपे। (५) मो.-सुगुर सुमन।

अरिल्ल ॥ इहै चित्त चिंती चहुआनं। वर मासत्ति सह सुनि कानं ॥
घरी अद्व अद्वं निरमानं। कहै बीर कन्हा चहुआनं ॥ छं० ॥ ५७ ॥
दूहा ॥ प्रात प्रगट बत्ती कहिय। आगम चिंति प्रमान ॥
सुबर काल बित्ती घरिय। कलह परै परथान ॥ छं० ॥ ५८ ॥
गाथा ॥ श्रवनं [1]सुनि सामंतं। रत्तं आचिज्ज मत्तयं [2]युद्वं ॥
आगम होइ प्रमानं। भूकंपं [3]पकयं षंडं ॥ छं० ॥ ५९ ॥
मुरिल्ल ॥ कालं सुचंपि कालं कराल। इन सगुन सूर आवत्त ताल ॥
आमुझझ सुझझ नंजिय प्रकार। बर बीर भीर बिस्तार भार ॥
छं० ॥ ६० ॥

स्वप्न का फल।

दूहा ॥ कहिग सूर सामंत सब। कहि आगम इत काज ॥
सिंघ दीप दुज्जन भिरन। मरन सु अरि प्रथिराज ॥ छं० ॥ ६१ ॥
जिहित सूर सोमेस हनि। सोइ सगुन रन भीम ॥
सोई सगुन ए सहियै। काल न चंपै सीम ॥ छं० ॥ ६२ ॥

सबेरे कविचन्द का आशीर्वाद देना और राजा का स्वप्न कथन।

अरुन उदै जग्गो न्रपति। निकट भट्ट सिरनाइ ॥
सरन कमल थल भरन मुष। फूले आनद पाइ ॥ छं० ॥ ६३ ॥
चौपाई ॥ मुदत कमोदनि उदयति भानं। बिसत वसंमति अभ्भत थानं ॥
को चंपै कै मरन अछूरं। यों मत मंत विमंत करूरं ॥ छं० ॥ ६४ ॥
चढ़ि पति घट्टि सु खड्ड रसालं। अर वरि वीर अरं वरि भालं ॥
जिते सगुन दिषि रत्ति प्रमानं। तिते कहे चक्कित चहुआनं ॥
छं० ॥ ६५ ॥
दूहा ॥ संभरि रा संभरि सुकथ। सगुन सु प्रातय राज ॥
कछु सगुन मिसि उच्चर्‍यौ। सुनहु सु जंपहु काज ॥ छं० ॥ ६६ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुर। (२) ए. कृ. को.-सूरं। (३) मो.-कीनयं।

कहै सव्व पयलग्गि भर। भर निहचै सामंत ॥
जु कछु राज दिष्यौ नयन। जंपि झंपि बर कंत ॥ छं० ॥ ६७ ॥
गाथा ॥ सो संघौ निसि सद्दं। बद्दे कन्ह तीनयो सद्दं ॥
नं जानय किंमानं। परिमानं किंनयं होइं ॥ छं० ॥ ६८ ॥

राजा के स्वप्न का फल।

चोटक ॥ दिन सद्द सगुन्नन मद्द घरी। कलहंत विषंमति बीर भरी ॥
कलि कारन मोकलि वानि रसं। घरि एक घरी मद्धि जुद्ध रसं ॥
छं० ॥ ६९ ॥
भय [1]रत्त भयानक बीर भटं। कलहंत कलेवर बीर घटं ॥
छं० ॥ ७० ॥
दूहा। कलह कलेवर बीर घट। सगुन सु दृत्तिय पान ॥
सुबर राज बढ़ै विषम। देवासुर जु समान ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कन्ह के ज्ञानमय वचन।

नको जियत दिष्यौ नयन। न को मरत दिष्यान ॥
मात गरभ आवन [2]गमन। कर नंच्यौ बंधान ॥ छं० ॥ ७२ ॥
[3]धंधौ नट्ट सुभट्ट भ्रम। जस अपजस लभ [4]हानि ॥
जिन जिन जुरि धर नष्ययौ। सो दुरजोधन जानि ॥ छं० ॥ ७३ ॥
सो दुरजोधन जोधवर। सग्गुन बंधिय पान ॥
सुई अग्र नन भूमि दिय। बर भारथ्थ प्रमान ॥ छं० ॥ ७४ ॥

पृथ्वीराज का सेना सहित शिकार करना, बन की हकाई होना।

गाथा ॥ बर भारथ्थ प्रमानं। जानं जुद्धाय बीतयौ घटयं ॥
अद्दत हत्तं चारौ। सगुनानं लभ्भियं पारें ॥ छं० । ७५ ॥
मुरिल्ल ॥ चढ्ढिय पत्ति घटि आवरि हूरं। सुघट घटय जमुना जल पूरं ॥
पथ इंदय अवत्ति पति हूरं। मयति काल विग्यानति हूरं ॥छं०॥७६॥
दूहा ॥ सुर विग्यान विग्यान पति। भयति भयंतर जुद्ध ॥
कानन बीर सु हक्कयौ। सुबर बीर गुन सुद्ध ॥ छं० ॥ ७७ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-अत्य। (२) ए. कृ. को.-जनम।
(३) मो.-बन्धौ। (४) ए. कृ. को.-भांन।

बन हंकम न्नप हुकम भव। जहँ तहँ गज्जत दूर ॥
तबल तूल चंबक चढ़िय। कह नीरे कह दूर ॥ छं० ॥ ७८ ॥
घुंघर गज घंटानि धुनि। हय गय हस मह लष्ष ॥
सयन सब्ब सोवत जगिय। कानन हांकिय पष्ष ॥ छं० ॥ ७६ ॥

बन में खर भर होते ही एक भूखे सिंह का निकलना।

कवित्त ॥ छुटत तीर चिंहु पष्ष। सद्द बज्यौ सु क्रूर घन ॥
सिंह सद्द पर सद्द। बज्जि पर सद्द मत्त पन ॥
रद् विमद्द गज भद्दग। बान भग्गे मन आररि ॥
हाइ हाइ आरिष्ट। दिष्ट लग्गे पति गाररि ॥
गौव्रत्त भृत पंचाप नय। कानन पति कानन भ्रुकिय ॥
कोई सु भज्जि मूलन रजिय। जत्ति काल कालह बकिय ॥छं०॥८०॥

दूहा ॥ सिंघ छुधित निद्रा ग्रसित। सिंघनि सिसु यह पथ्य ॥
काल नाग नागिन जग्यौ। बर बीरां रस हथ्थ ॥ छं० ॥ ८१ ॥

सिंह का वर्णन।

पद्धरी ॥ भाल्यौ सु सिंघ इक बेल वार। हतौ सु मद्ध कंदर लवार ॥
लद्दौ सु वास नर निकट जानि। ग्रज्ज्यौ सु गज्जं नभ घोर बानि॥
छं० ॥ ८२ ॥

पुच्छिय पटक्कि मंडिय सु सीस। बक्कारि उंच सिर दुद्स दीस ॥
छुट्टंत झाल जुगनेन दीस। चाटंत मुच्छ रिस अधिक रीस ॥छं०॥८३॥
तिष्षे सु जोर जमदड्ढ बंत। फड्डंत धरनि हथ्थल तुरंत ॥
हथ्थीन सीस नष हनि तुषार। देषंत दंत जनु काल धार ॥
छं० ॥ ८४ ॥

सिंघनि सु पास ससि दोइ तथ्थ। लीनौ सु घेरि सामंत सथ्थ ॥
छं० ॥ ८५ ॥

सिंह का कन्ह के ऊपर झपट कर वार करना।

कवित्त ॥ झपटि लपटि जनु अग्गि। कन्ह दिसि किन्न लटक्किय ॥

अतुल धाइ बल अतुल। अग्गि जनु अग्गि भट्टक्किय॥
जाजुल्लित गंभीर। गहम सह्म उच्चारिय॥
हाइ हाइ आरिट्ठ। राज हक्कम बक्कारिय॥
असवार चूकि चप्पौति हय। करि बुंडल कम्मान रजि॥
नर नाह वाह अवसान फवि। परिय बथ्थ नर अश्व तजि॥
छं० ॥ ८६ ॥

कन्ह का सिंह का सिर मसक कर मार डालना।

इत सु कन्ह उत सिंघ। जन्ह जुग जानि प्रलै वर॥
दुअ दंतिन दल दलन। दुअह (१)जम जोध अडर डर॥
कंध काष तिन चंपि। कन्ह कढ्ढिय कट्टारिय॥
पेट फारि धर डारि। फेरि पग भूमि पछारिय॥
सिर फट्टि भेज भेजिय उडिय। हड्ड मंस नस भूर हुअ॥
जय जय सु सह घह भूमि भय। बलि बलि कन्ह नरिंद भुअ॥
छं० ॥ ८७ ॥

भंज्या सिंघह सूर। कन्ह अंगह बहुआनं॥
भयौ नूर मुष सूर। सगुन लड्डौ परिमानं॥
उछांह सेन सजि राज। गुज्ज बुझझौ न मझ्झरति॥
कूच कूच उप्परे। देस पट्टन धर चूरति॥
आकास मध्य तारा तुटै। यौं तुट्टौ अरि सेन पर॥
कल मलत सेस काइर कंपत। कौजहि उज्जर जारि धर॥
छं० ॥ ८८ ॥

कन्ह के बल और उसकी बीरता की प्रशंसा।

गाथा॥ सूरं किरन प्रकारं। सारं मार जुद्ध मय मत्तं॥
कै देवत्त विरुद्दा। कै (२)जुद्दा कालयं करनी॥ छं० ॥ ८९ ॥

अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर सामंतों सहित राजा का आगे कूच करना।

(१) मो.-सु। (२) मो.-तुट्टा।

कवित्त ॥ सज्जि सिलह सामंत । मत्त मत्ते जनु चल्लिय ॥
　　[1]सो चौसट्ठि हजार । भार भारथ तैं हल्लिय ॥
　　चामर छत्र रषत्त । छत्र दीनौं सिर कन्हं ॥
　　छुट्टियि पट्टिय चंपि । बिरद नरनाह जिनन्हं ॥
　　सेनाधि पत्ति कन्हा कियौ । अग्ग फौज प्रथिराज वर ॥
　　पच्छली फौज निड्डुर बलिय । ता पच्छैं पंमार भर ॥ छं० ॥ ९० ॥

दूहा ॥ कूच कूच जिम जिम चले । तिम तिम छंडत मोह ॥
　　ज्यों [2]बंच्यौ दुज राज ने । तिथि पचानइ सोह ॥ छं० ॥ ९१ ॥

कूच के समय पृथ्वीराज की फौज का आतंक वर्णन ।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यो राज चहुआन सूर । दैवत वाह दुज्जन करूर ॥
　　गुज्जर नरेस पट्टन प्रवास । दल बढ़ैं राज जंगल सु वास ॥ छं० ॥९२॥
　　कलमलिय काय कंकह कठोर । *सारथ्य किन्न सम राज जोर ॥
　　करि गिरद सेन सज्जी सभंति । मानौं कि भांति किरनाल पंति ॥
　　　　　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ ९३ ॥
　　कलमलित कमठ भर पिट्ठ भूमि । सल सलित सेस सामंत भूमि ॥
　　हलमलत ग्राव बंके मेवास । पल भजत पंषि सम सहि न त्रास ॥
　　　　　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ ९४ ॥
　　चल मलत रैन सुज्झै न पंथ । झल मलत सूर जनु समय ग्रंथ ॥
　　नल टलत चित्त काइर सु संक । गल बलत सूर जनु कप्पि लंक ॥
　　　　　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ ९५ ॥
　　नल कलत अश्व रह बल सु चाल । तल फलत ढाल हिरनाल फाल ॥
　　दल हलत जानि सरिता सपूर । झलहलत झील साइर हिलूर ॥
　　　　　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ ९६ ॥
　　थल जलत दुक्क मिलि कीच उट्ठि । मिलि चलित संभि सामंत सुट्ठि ॥
　　फल फलित मरन बंछत जिन्हैं न । कल कलत, चंद कवि वल तिन्हैं न ॥
　　　　　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ ९७ ॥

---

(१) मो. सौ, कृ.-सी । (२) मो.-बन्ध्यौ । * मो.-"सारथ्य कि सूर सम राज जोर" ।

पृथ्वीराज का भीमदेव के पास एक † चुल्लू भेजना।

दूहा ॥ अहो चंद चंदह मरन। दिन दिन (१)सल्लै दुष्य ॥
कहौ जाइ चालुक्क सम। मंगै वैर समुष्य ॥ छं० ॥ ९८ ॥
† ले चल्लौ नृप भीम कौं। चंगी दोय रसाल ॥
एक सुरंगी पखधरी। इक कंचुकी भुआल ॥ छं० ॥ ९९ ॥

कवित्त ॥ मन मानै सोइ गहौ। करिव चित्तं इकतारं ॥
इह संसार सुपन्न। अपन इक्भय्यै इक वारं ॥
चंद हथ्थ कहि पठय। भीम सम संभरि वारं ॥
तात वैर संग्रहन। वयन तत्ते उच्चारं ॥
गज भाट सुभर घट भंजि तुअ। सरित चलाउं रुधिर की ॥
धार सिंचि सोमेस कहुं। तपति बुझाउं उच्चर की ॥ छं० ॥ १०० ॥
रामाइन मघवान। वरषि घन अमृत धारं ॥
वालमीक पीयूष। सींच लव रघुपति रारं ॥
अरजुन सयन समेत। आनि बब्बर पताल मनि ॥
वेद व्यास भारथ्थ। सकल छोहनि दीपक बनि ॥
चहुआन कहाइय चंदकर। पिता वैर कज इह बयन ॥
* चालक्क भीम उन सम सुनहु। तुमह जिवावन अब कवन ॥
छं० ॥ १०१ ॥

चन्द का भीमदेव के पास जाकर युक्ति पूर्व्वक कहना कि पृथ्वीराज अपने पिता का बदला लेने को तय्यार है।

चल्यौ चंद गुज्जरह। गरै जारी जंजारह ॥
मोसरनी कुद्दाल। दीप अंकुस आधारह ॥

---

(१) ए. कृ. को.-चल्लै।

* चुल्लू=स्मरण रहे कि यह चुल्लू Challenge का अपभ्रंश नहीं है। यह राजपुतानी भाषा का प्रचलित शब्द है जिसे बुन्देलखंड में चिन्नू चुन्नू भी कहते हैं। इसका अर्थ "किसी को अपने मुकाबले के लिये धमकी देना भड़काना या उभाड़ना है।

* छन्द ९९ से लगा कर छन्द १०१ पर्य्यन्त मो. प्रति में नहीं है।

कल खूल संग्रहै। गयौ चालुक दरबारह ॥
इह अचंभ जन देषि। मिल्यौ पेषन संसारह ॥
भेष्यौ सु भीम भोरा सुभर। कहिय बत्ति संभरि बयन ॥
हो भट्ट चट्ट बोलहु कथन। कहा इहै डंबर सयन ॥ छं० ॥ १०२ ॥
इन जाल संग्रह्यो। जाम जल भीतर पड़यौ ॥
इन नौसरनी ग्रह्यो। जाम आकासह चढ़यौ ॥
इन कुद्दालै षनौ। जाम पायाल पनट्ठौ ॥
इन दीपक संग्रह्यौ। जाम अंधारै नट्ठौ ॥
इन अंकुस असिवसि करौं। इन चिहुल हनि हनि सिरौं ॥
जगमगै जोति जग उप्परै। तोडर प्रथम नरिंदरै ॥ छं० ॥ १०३ ॥

भीमदेव का उत्तर देना कि मैं भी उसे दंड देने को प्रस्तुत हूं जो मेरे संमुख आवे।

जाल ज्वाल करि भसम। करस नौसरनी कट्टौं।
घन भंजौं कुद्दाल। दीप कर पवन झपट्टौं ॥
अंकुस अंकुर मोडि। तिनह चहुल संकोड़ौं ॥
हनन कहै ता हनौं। जोति जग मच्छर मोड़ौं ॥
हौं भीम भीम कंदल करौं। मो डर डंक अचंभ नर ॥
मम करइ ग्रब्ब धरि लज्ज अब। वित्तक पुत्र परष्षि पर ॥ छं० ॥ १०४ ॥
रे डंदर [1]बिल्लाल। कोइ कारन भिर मच्चौ ॥
रे गिद्धिन सिर हंस। दैव जोगह सिर नच्चौ ॥
रे म्रग वघ सँग्राम। लरै बर अप्पन आयौ ॥
रे अप्पह सो समर। करै मंडुक जस पायौ ॥
आचंभ ब्रह्म गति वह नहीं। बार बार तुहि सिष्षियै ॥
प्रज्जरै झार तरवर गिरह। का दीपक लै दिष्षियै ॥ छं० ॥ १०५ ॥
बैन बाद सो करै। छोइ भट्टह कौ आयौ ॥
गारि रारि सो भिरै। जेन रस षग्ग न पायौ ॥
हथ्थ बथ्थ सो भिरै। घरह धन बंधव [2]बट्टैं ॥
इह सोमेसर बैर। लेहु अप्पन सिर सट्टैं ॥

(१) ए. कृ. को.-बिल्लाउ। (२) ए.-बट्टे।

तुम कहौ जाइ संभरि बयन। इन डिंभन डिंभह डरै॥
संचन्यौ दरक हक्कै चरत। [1]सज्ज फटक्कै निक्करै॥ छं०॥ १०६॥

चन्द का भीमदेव के दरबार से कुपित होकर चला आना।

दूहा॥ चंद मंद मन आतुरह। उठ्यौ रत्त करि नैंन॥
फिरि पहुंच्यौ न्रप पिथ्थ पै। कहैं बरत्ता बैंन॥ छं०॥ १०७॥

भीमदेव का अपने भाट जगदेव को चंद के पास भेज कर अपनी तय्यारी की सूचना देना।

कवित्त॥ सुनौ भट्ट जगदेव। कहै भोरा भीमंदे॥
तुमहु चंद पै जाहु। षबरि पायान दियंदे॥
जो कछु तुम बुल्लए। ज्वाब मंगन हौ आयौ॥
ज्यौं सुत्तौ सुष उरग। मीड़ि बर पुंछ जगायौ॥
आयौ नरिंद गुज्जर सबर। करिय सेन चतुरंग भर॥
मो दिठ्ठ दिठ्ठ पुच्छिय सयन। बयन [2]वाद मनो न उर॥
छं०॥ १०८॥

जगदेव बचन।

कहु मिसरे छेड़यौ। राउ गुज्जरौ नरेसर॥
दीबो जाल कुदाल। कहमि वह सह आडंबर॥
कह मिसरै कैमास। जास पुच्छंत विचष्यन॥
चामँड रा कहां गयौ। बहुत राया बर दष्यन॥
कह मिसरे कन्ह विष्पनौ। जग्गदेव संचौ चविय॥
बंभन हय या दिट्ठ धर। कह मिसरैं संभरि धनिय॥ छं०॥ १०९॥

चन्द वचन।

बार बार बेलयौ। सरस बत्तडिया गुज्जर॥
अब विगत्ति [3]लभ्भिहै। [4]मिरच चब्बै ज्यौं गज्जर॥

---

(१) मो.-"क्यों छज्ज फट्टकै निक्करै"। (२) ए. कृ. को.-झुठ।
(३) ए कृ. को.-लाग्गे है। (४) मो.-मिरच चट्टै ज्यौं गज्जर।

तूंअंनि राव मजाम। जिके रन अंगन जित्ता ॥
इन संभरिवै राव। कोड़ि सै सहस विघत्ता ॥
भेद्यौ नहीं गुर अष्परो। कविय वयन संम्हौ सरै ॥
कर नहीं मंच बोछिय तनौं। घत्त हथ्थ सप्पा हरै ॥ छं० ॥ ११०॥

जगदेव का चन्द का रूखा उत्तर सुन कर भीमदेव के पास फिर जाना।

दूहा ॥ सुनि सु बैंन जगदेव फिरि। कहि भोरा भीमंग ॥
आयौ न्रप चहुआन सजि। हय गय भर चतुरंग ॥ छं० ॥ १११ ॥

पृथ्वीराज का निढ्ढुर को युद्ध का भार सौंपना।

कवित्त ॥ ढिग बुलाइ प्रथिराज। हथ्थ निड्ढुर कर धारिय ॥
सकल सूर सामंत। जुद्ध मग्गह अधिकारिय ॥
आदि राज पहु आदि। आदि सम जुद्ध समंडौ ॥
दैव काल संग्रहौ। बलह भारथ जिम पंडौ ॥
मन्नै अनन्य संसार सह। छिति छचिन महि छजत रज ॥
एकंग अंग जंगह अटल। करन जुरौ सामंत सज ॥ छं० ॥ ११२ ॥

निढ्ढुर का पृथ्वीराज को भरोसा देकर स्वामिधर्म की प्रशंसा करना।

कहि निभझर सामंत। जूह अंगन दल मंडन ॥
समर समै रति स्वामि। तनह तिनुका सम षंडन ॥
इक्क उभत जुध उद्ध। इक्क गज दंत उपारहि ॥
इक कमंध उठि लरहि। इक्क रुधि बीर बकारहि ॥
संभरि नरिंद तुम संभरौ। धरिय उदर इम एह बल ॥
बड़ बंस अंस दानव [1]प्रबल। करहु मोह हम भाग बल ॥ छं० ॥११३॥

निढ्ढुर का कन्ह राय की प्रशंसा करना।

दूहा ॥ बालप्पन जोवन बिरध। [2]रन रत्तौ ओधार ॥
कन्ह दलन अरि मंडइय। नन तिरुका करि डार ॥ छं० ॥ ११४ ॥

---

(१) मो.-अचल। (२) ए. कृ. को.-नर।

जिन अंषिन भर पट रहै । सोइ छुट्टै है ठाम ॥
कै सज्जा वामा रमत । कै छुट्टत संग्राम ॥ छं० ॥ ११५ ॥
जे बंके विरद्दन बहै । मरन नाह जग अप्प ॥
कै भारथ भीषम सुभट । कै रामायन कप्प ॥ छं० ॥ ११६ ॥

पृथ्वीराज का निढ्ढुर को मोती की माला पहनाना ।

अमुल माल मुत्तिय सजल । मोल लष्य गुन मान ॥
अप उरते उत्तारि न्रप । दीनी निढ्ढुर दान ॥ छं० ॥ ११७ ॥

निढ्ढुर का सेना की तय्यारी करके स्वयं युद्ध के लिये तय्यार होना ।

कवित्त ॥ हालाहल उर झाल । माल मुत्तिय दुति राजै ॥
रबि कंठह जनु गंग ॥ ईस जनु सीस विराजै ॥
सुभर निडर रट्ठौर । बज्जि नीसान गराजै ॥
जैसै बज्जत डंक । बीर बढ्ढत बल ताजै ॥
मंडई मरन मन अरि कलन । चलन चित्त मन अटल हुअ ॥
सब सेन मध्य इम राजई । षह मग्गह ज्यौं जानि धुअ ॥ छं० ॥ ११८ ॥

पृथ्वीराज का कन्ह को पवाई पहिनाना ।

दूहा ॥ फुनि कन्हा प्रथिराज न्रप । [1]पाव पवंग परट्ठि ॥
लेइ नहौं मन संभ मल । निठ्ठ पढ़ाईय हट्ठि ॥ छं० ॥ ११९ ॥

कन्ह का युद्ध में अपने रहते हुए सोमेश्वर के मारे जाने पर पछतावा करना ।

कन्ह कहै न्रप जंगल । मोहि सजीवन भिट्ठ ॥
सोम अरिन तन सहयौ । पंजर हंस न नट्ठ ॥ छं० ॥ १२० ॥

निढ्ढुर का कन्ह को संतोष दिला कर उत्साहित करना ।

कवित्त ॥ एक समें सुग्रीव । षिया न रष्षिय अप्प बल ॥
इक समै द्रुजोध । करन रष्षे न जित्ति पल ॥

(१) ए. कृ. को.-पाट । (२) मो.-भींमंग ।

एक समै श्री राम। सीय बनवास अरिन ग्रहि॥
एक समै पंडवन। चीर रष्यौ न द्रौपदइ॥
तुम कन्ह कंक अकलंक कहि। इष्ट रूप हम सब जपहिं॥
तुम तेज अंषि देषत नयन। मोर अप्प सम भर जपहिं॥छं०॥१२१॥

दूहा॥ निठ्ठुर कन्ह प्रमोधि इम। सोलंकी सीमंग॥
सुनि आए धाए दुसह। दल दारुन भीमंग॥ छं०॥ १२२॥

सेना का सज कर आगे बढ़ना।

गाथा॥ जाइ संपते सूरं। पट्टन सेनाय मंड भारथ्थं॥
तातं बैर प्रमानं। बट्टे बीराइ बीर षल थाइं॥ छं०॥ १२३॥

चहुआन और चालुक्य की सेनाओं का परस्पर मुठभेड़ होना।

दूहा॥ दिषादिषी दुअ सेन भय। नारि गोर गहरानि॥
कुहकबान आघात उठि। उड़िय अग्गि असमान॥ छं०॥ १२४॥
अग्ग पच्छ बाजू बियन। दल मंडै दुअ राइ॥
तत्त तुरी जे तत भरे। असि कड्ढै घन घाइ॥ छं०॥ १२५॥

भीमदेव के घोड़े की चंचलता का वर्णन।

कुंडलिया॥ फिरत तुरी चालुक्क रन। बर रष्षै चिहु कौंन॥
नस चंपै न सु ढिल्लवै। ज्यों बंदर को छौंन॥
ज्यों बंदर को छौंन। मुष्ष भंजै नन षंचै॥
तेज तुरी नष्षते। आनि आसन मन संचै॥
राग समंचै बाग। सीर लष्षै पति हेरै॥
लिषिय चित्त असवार। मत्त मत्ते हय फेरै॥ छं०॥ १२६॥

दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे से भिड़ना और उनका विषम युद्ध।

दूहा॥ बढ़त बैर बंकम विषम। विषम ज्वाल छिति सार॥

सार सरीरम झेल नह। भए [1]निचिंत पहार ॥ छं० ॥ छं० ॥१२७॥

रसावला ॥ [2]मिले वीर भट्टं, सुरंग सुघट्टं। हवी हथ्थ छुट्टं, मरं सूर लुट्टं॥ छं० ॥ १२८ ॥

मनों लागि नट्टं, भरैं हड्ड फट्टं। मनों कठ [3] तेग तट्टं ॥ छं० ॥ १२९ ॥

मनों चट्ट पट्टं, सिरं गुर्ज फट्टं। फुटै दृट्ठि मट्टं, घगं गे उहट्टं ॥ छं० ॥ १३० ॥

परै सीस कट्टं, धपै लोह थट्टं। मुषं मार रट्टं, छुटी कन्ह पट्टं ॥ छं० ॥ १३१ ॥

अगी ज्यों लपट्टं, परै वट्ट वट्टं। धरा ज्यों रपट्टं, गजं दंत भट्टं ॥ छं० ॥ १३२ ॥

मनों कंद जट्टं, मिले बथ्थ चट्टं। मनों मल्ल हट्टं, गजं यों उहट्टं ॥ छं० ॥ १३३ ॥

मनों भीम हट्टं, ढहै ढाल बट्टं। मनों चह अट्टं, लगी तीर तट्टं ॥ छं० ॥ १३४ ॥

उरं फारि फट्टं, नचै ईस नट्टं। उमा अग्ग थट्टं, रुधं काल चट्टं ॥ छं० ॥ १३५ ॥

[4]धरं माल अट्टं, पलं गिद्धि गट्टं। लगै मैन घट्टं, बहै सुर्ग बट्टं ॥ छं० ॥ १३६ ॥

मगं मग्ग [5]थट्टं, मुकत्ती स लुट्टं। [6]रिनं पत्त फाटं, ... ॥छं॥१३७॥

कन्हराय की पट्टी छूटना और वीर मकवाना से कन्ह का युद्ध होना।

दूहा ॥ पट्टे छुट्टत कन्ह चष। षल धारा धर बज्जि ॥
मानों मेघन मंडली। वीर बीजली रज्जि ॥ छं० ॥ १३८ ॥

कवित्त ॥ इत सु कन्ह चहुआन। उतह सारँग मकवाना ॥
बल बहु बल बंड। जानि कंठीर लोहाना ॥

(१) मो.-तिचित्त। (२) मो.-जुरे। (३) ए. कृ. को. कट्टं। (४) को.-वरं, मो.-रवं। (५) मो.-हट्टं। (६) मो.-रिषं।

कर कट्ठे करिवारि । भार ठिल्लिय भर भारी ॥
स्वामिधर्म सुढरै । बार हत्ती सु करारी ॥
लिष्षे जु अंक विधि कंक जिहि । आनि सपत्तिय सो घरिय ॥
अद्भुत रुद्र रस विस्तऱ्यो । सु कविचंद छंदह धरिय ॥छं०॥१३९॥

मकवान का माराजाना ।

दूहा ॥ घत फट्टे सारंग ने । रस जम कन्हा वंत ॥
[1]झुझि पऱ्यौ मकवान रिन । गल गज्जे सामंत ॥ छं० ॥ १४० ॥

सामंतों का परक्रम और शूरवीर योद्धाओं की निरपेक्ष वीरता की प्रशंसा ।

रंडरि धर [2]सारंग की । परत पहुमि मकवान ॥
सूर सु गज्जै जंगली । भैं भग्गौ अरियान ॥ छं० ॥ १४१ ॥
सिद्धि न लभ्भै सिद्धि जे । ते लद्धौं सामंत ॥
छाया माया मोह विन । विमन सुमन धावंत ॥ छं० ॥ १४२ ॥

कवित्त ॥ द्रुमति तजत वर अंत । रत्त चव्वर सी भारन ॥
अप्प अप्प संग्रहै । पार दुज्जनन उतारन ॥
सार सुगति संग्रहै । जियन सुपनौ करि जानै ॥
राति दिष्षि जंजाल । प्रात पीछे न पछानैं ॥
यों जानि सूर सव्वत रनह । बन सु अग्गि जनु वाय बसि ॥
स्वामित्त तेज तिम तन तपन । दोष न लग्गे और जस ॥छं०॥१४३॥

गाथा ॥ उठ्ठय आवत भारं । धारं पाहार पंति सुभटायं ॥
घहर घोष घन भट्टं । यों बरषंत बीर बंकायं ॥ छं० ॥ १४४ ॥

दूहा ॥ बहुरि न हंसा पंजरह । जे पंजर तुटि धार ॥
हंस उड़ा अब [3]मट्टथी । पंजर सार असार ॥ छं० ॥ १४५ ॥

कवित्त ॥ पष्षर रुक्क भर भरह । टोप असिवर वर बज्जिय ॥
वषर पषर जिम साल । सूर सामंत न भज्जिय ॥

---

(१) मो.-झुझिझ ।　　(२) ए. कृ. को.-चालूक ।
(३) ए. कृ. को.-लट्ठथी ।

हय हय हय उच्चार। घाय घायल घट गज्जिय ॥
चह चह चव'क बजिय। तुट्टि पाइक बिन तज्जिय ॥
रोस रसि वसिय सामँत रसिय। अयुत युद्ध उद्धह गतिय ॥
सामंत सूर दिसि सुर लरत। कहत धन्य राजन रतिय ॥छं०॥१४६॥

रणक्षेत्र की सरित सरिताओं से उपमा वर्णन ।

गाथा ॥ साभर मती सरित्तं। गुज्जर पंडेव धार धारायं ॥
दुअ तद रुधिर उपट्टं। वहै प्रवाह हथ्यियं बाजं ॥ छं० ॥ १४७ ॥
दूहा ॥ हथ्यि वाजि नर भर बहत। सिंघनि धुनि गरजंत ॥
एक घरी अद्भूत रस। रुद्र भयो विसमंत ॥ छं० ॥ १४८ ॥
मोतीदाम ॥ मिले चहुआन सु सत्तय बीर। तजै भव मोह भजै षग श्रीर॥
झरै सिर झार दुधार प्रवाह। परें रन में ज्युँ मदंध गवार ॥
छं० ॥ १४९ ॥
उठै धर श्रोनिय छिछ उतंग। सु पावक ज्वाल मनों गिरि शृंग ॥
उड़ै घन सार झनंकत षग्ग। मनों जुग जुग्गिनि लग्गिय मग्ग ॥
छं० ॥ १५० ॥
भनंत कि भौंर कि तीरन तार। विठं तजि पंकज फुट्टत फार ॥
परे बहु पंतिय सोलंक सेन। लियौ तिन तात सुबैर बलेन ॥
छं० ॥ १५१ ॥
इसे रन रंग सुभैत सुढार। मनों मय मत्त परे विकरार ॥
छुटंतय तीर सुभंत सुमार। उड़ै जनु भिंगन भद्दव पार ॥छं०॥१५२
[1]दमंकत तेज सु बंकिय बज्जि। रहै रन राज फवज्ज सु सज्ज ॥
॥ छं० ॥ १५३ ॥

प्रसंगराय खीची का पराक्रम वर्णन ।

कवित्त ॥ षिझि षीची परसंग। समुद अरि ग्रहन कि गस्सिय ॥
बड़वानल वलिबंड। षग्ग षोहनि दल षस्सिय ॥
बढ़त सेन तेइ जरहि। पढ़त जनु भस्म कुढ़ी हुय ॥

(१) ए. कृ. को.-मदंकत ।

जहं तहं जंगल सूर। कढ्ढि मुष सकै न आन कुय ॥
कर पच मंच जुग्गिनि जगहि। रजि पलहारिय पुह्व विन ॥
चमरैत बैत जनु किंसु बन। इम तन रज्जिय सोभ तिन ॥छं०॥१५४॥
षिभि नरिंद हय नंषि। बज्जि घुरतार कंपि भुअ ॥
अष्ट सु चल [1]दस विचल। कंपि संपात पात हुअ ॥
उठिय [2]मुष्ष मुछ बंक। सीस लग्यौ असमानं ॥
पंषि जान पावै न। करहि कुंडल कंमानं ॥
घरि एक घावि विभ्रम भयौ। हाइ हाइ मच्च्यौ कलह ॥
तिन सद्द सिंभ सिंभासनह। उघरि बीर दिष्यौ पलह ॥छं०॥१५५॥

गाथा ॥ यौं कुट्टे सुर सारं। घावं घड़य घन सु लोहारं ॥
भद्रं सूर प्रकारं। आभद्रं द्रुज्जनो ग्रेहं ॥ छं० ॥ १५६ ॥

भीमदेव की फौज का विचलना।

साटक ॥ आभद्रं वर ग्रेह दुज्जन वरं, भद्रं न्वपं राजयं।
जे भग्गा सामंत बीर बसुधा, तत्तेव जीवंतयं ॥
भग्गा सनेय बीर चालुक रनं, मुक्ती वरं मुक्कयं ॥
अंती अंत सु अंत अंतह [3]रतं, जुक्ती तुमंतं करी ॥ छं० ॥ १५७ ॥

शूरवीर पुरुषों के पराक्रम की प्रशंसा।

दूहा ॥ काल व्याल सम कर ग्रहन। भिरत परत अरि तथ्य ॥
दिव देवासुर उच्चरै। धन्न सु छचिय हथ्थ ॥ छं० ॥ १५८ ॥
सूर हथ्थ हथ्थिय ग्रहिग। चरत भान आनंद ॥
सूरज मंडल [4]भेदिते। जोति जगत्ति न इंद ॥ छं० ॥ १५९ ॥
घट [5]घट्टै लुट्टै मुगति। छिति छुट्टै रति चाव ॥
यौं मत मत्त रत्त रन। ज्यौं बलि वावन पाव ॥ छं० ॥ १६० ॥

गाथा ॥ वामन दिढ्ढ सु पावं। ईसं जच्चि सुवींयं सहयं ॥
एकक पाइक सूरं। सो जित्ते तीनयं लोकं ॥ छं० ॥ १६१ ॥

(१) ए. कृ. को.-दल। (२) ए. कृ. को.-मुछछ भुव। (३) मो.-रत।
(४) मो.-मेदिके। (५) मो.-घुटै।

स्वामिभ्रम्म सुध मत्तं। सुघयं मत्ताइ तत्त गुनयं मी॥
धीरं धीर अधीरं। धीरं छुट्टेव हथ्थयं दिघ्घं॥ छं० ॥ १६२॥

परस्पर घमसान युद्ध का दृश्य वर्णन।

चोटक॥ सुमिले चहुआन चलुक्क अनी। जु [१]बजे जनु देवय दिव्य धुनी॥
रनकावत षग्गत हथ्थ करैं। मनु बीर जगावत बीर उरैं॥
छं० ॥ १६३॥

गहि चव्वरसी चवरंग रजं। मनौं भद्दव बद्दल मद्द गजं॥
सपरै गज कंक करंन भरं। सु उड़ै जनु पंतिय पंष भरं॥
छं० ॥॥ १६४॥

भननंकय बीरति बीर सयं। स नचै जनु रुद्रय बीर हयं॥
ततथे ततथुंगय सार रजी। उड़ि काम किरच्चिन मंत गजी॥
छं० ॥ १६५॥

पल में पल वित्तय पंच उडै। बहु-यौ मन कालय बीर बुडैं॥
मसुरत्ति सरत्ति सरत्त रसी। सु उड़ै जनु सार सपत्ति बसी॥
छं० ॥ १६६॥

मय मंत सु मंति न दंति यता। भजि बीर डरावन साज हिता॥
रननंकत तुंग तुरंग रनं। झननंकहि षग्ग सुमग्ग घनं॥
छं० ॥ १६७॥

दुअ बीर दुहाइय हथ्थ पढ़ैं। सु बढ़ै तनु विज्जुल हथ्थ कढ़ै॥
॥ छं० ॥ १६८॥

दूहा॥ बढ़ि विज्जल सथ हत्ति कर। गुर घर घंमति वाउ॥
देव दिषै देवत रिझै। धनि सामंत सु घाउ॥ छं० ॥ १६९॥

कवि का कहना कि कायर पुरुषों की अपगति होती है।

गाथा॥ तव कैमास सु जुद्धं। बुधं किन्न तीनयो वारं॥
आहत्त हत्तिय चायं। न चायं नेह नारियं बीरं॥ छं० ॥ १७०॥
बंधै मुगत्ति [२]न बंधै। बंधै स्वामित्त जुद्धनो बरयं॥
सा घट घट भौ थिरयं। जंगम जुझ्झाय थावरं बीरं॥छं०॥१७१॥

(१) मो.-बने। (२) मो.-सु।

चौपाई ॥ थिर थावर जंगम नह बीरं। बज्रंगी धर बज्र सरीरं ॥
बज्र घाइ आघात न छुट्टै। फिरि फिरि मुक्त रास करि लुट्टै ॥
छं० ॥ १७२ ॥

दूहा ॥ ढाहि सेन चालुक बर। घटिय सेन चहुआन ॥
दुहुं मझ्झै कोविद ज्यौं। धर छंडै नह थान ॥ छं० ॥ १७३ ॥

चौपाई ॥ धूम्र धूम्र थानय नन छंडै। भान संझ संझया गुन षंडै ॥
कैवर रत्त अरत्तत चाई। कैवर सूर परे घन घाई ॥ छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ बजहि घाव घरियार जिम। राइन दोऊ सेंन ॥
चालुक्क चोहान रिन। भयौ भयानक गैंन ॥ छं० ॥ १७५ ॥

पृथ्वीराज और भीमदेव का साम्हना होना और कन्ह का भीमदेव को मार गिराना।

मोतीदाम ॥ मिले रिन चालुक संभरिनाथ। बजी कल कूह सु बज्जन हाथ ॥
ढहै गज गुंजत रोस चिकार। परें हय तुट्टि अदभ्भुत रारि ॥
छं० ॥ १७६ ॥

जहां तहां संग फुटै धर पार। बहै सर स्रोन कि जावक धार ॥
भई सिर छाइ कमानन तीर। फुटै धर पंजर धुकि गहीर ॥
छं० ॥ १७७ ॥

भयानक भेष भयं असकंक। थलप्थल रुद्धि मची जनु पंक ॥
अदभ्भुत कंक विरच्चिय बीर। कढ़ी अस कोह भरक्किय भीर ॥
छं० ॥ १७८ ॥

उतें न्रप भीम इतें [1]चहुआन। गही कर नागनि सी असि [2]पान ॥
[3]घनहनि भीम रह्यौ घट जंत। सु आनि कें आज [4]पहूंचिय अंत ॥
छं० ॥ १७९ ॥

करौं धर रंडरि गुज्जर देस। हकारिय भीम भयानक भेस ॥
हहंकिय भीम न पावहि जानि। [5]बिठाउन सोमइ सुर्ग ढिगान ॥
छं० ॥ १८० ॥

(१) ए. कृ. को.-प्राथिराज।　(२) ए. कृ. को.-सान।
(३) ए. कृ.को.-घनहन।　(४) मो.-सिषंत।　(५) मो.-बैठे उत।

पचारिय कन्ह सु पिथ्थ पछाय। हनै किन हूरन निझरि आइ॥
कियं सुनि घाव सु संभरि वार। वही अस कंध जनेउ उतारि॥
छं० ॥ १८१ ॥

धुकंत सु घाव कियौ भर भीम। सु रंषसि सेष वही असि हीम॥
जयं जय जंपय देव दिवान। रही घर अच्छरि अच्छ विमान॥
छं० ॥ १८२ ॥

धरें सिर राजन अंमर फूल। परी सुनि चालुक सेनह झूलि॥
जितं तित उठ्ठहिं छिंछ अनंत। निपज्जिय षेत प्रवालिय [1]भंत॥
छं० ॥ १८३ ॥

जितं तित हक्कत सीस धरंन। भयानक भेष वकंत वरन्न॥
कमंध करंत जितंतित घाइ। हनंत फरंत कि भूत विलाइ॥
छं० ॥ १८४ ॥

जितं तित घाइल घूमत सार। [2]रनंकिन छकि कि छकि गमार॥
जितं तित तर्फंत लुथ्थि चिहार। [3]जलं मझि डारि कै मीन कहार॥
छं० ॥ १८५ ॥

जितं तित हथ्थिय लुट्टत भूमि। रची जनु भीम भयानक भूमि॥
जितं तित घाइल पारत चीस। लरै जनु प्रेत करी कल रीस॥
छं० ॥ १८६ ॥

जितं तित श्रोन भभक्कत घाइ। फटै जनु नाव दर्याव मझाइ॥
भयं इम भीम भयानक अंत। सु बैठि विमान सुरप्पुर जंत॥
छं० ॥ १८७ ॥

भई रिन जीति जयं प्रथिराज। बजे रनयंच सबद्दय बाज॥
जपै सुर चारन गंध्रब भाट। मिले सब आनि फवज्जनि थाट॥
छं० ॥ १८८ ॥

जयं जय सद्द सु जंपिय भेव। झरै सिर पुप्फ सु अंबर केव॥
॥ छं० ॥ १८९ ॥

(१) मो.-नंत। (२) ए. कृ. को.-रनंमाने। (३) मो.-ललं।

कन्ह की तलवार की प्रशंसा।

कवित्त ॥ सिलह मझझ षग धार। बीय उग्यौ ससि सोभै ॥
कै नव बधु नष चित्त। काम आकार अलोभै ॥
मरम बीर कत्तरी। दिसा वर तिलक पुब्ब बर ॥
कै कुंची श्रृंगार। बहुरि सोभै ओपम धर ॥
सोभंत चंद की कला नभ। कल कलंक सोभै न तन ॥
ढुंक्यौ जु षेत सामंत नैं। बुझ्यौ राज तामंस मन ॥ छं० ॥ १९० ॥

चहुआन का पितृ वैर बदलने पर कवि का बधाई देना।

दूहा ॥ लियौ बैर चहुआन न्रप। बजि निरघोष सु घाव ॥
चावद्दिसि सेना फिरी। बर बीरां रस चाव ॥ छं० ॥ १९१ ॥

पृथ्वीराज के सामंतो की प्रशंसा।

बीरां रस बर बढ़िय भर। घट्टिय घट तन पंत ॥
जंम तजत जोगिनि सुजस। धनि सामंत सु मंति ॥ छं० ॥ १९२ ॥
गाथा ॥ लज्जी लज्ज मरिज्जं। उदरं हत्त घाव घन घड़यं ॥
कठिन अप्प कलहंतं। मरनं पच्छ निपज्जै साइं ॥ छं० ॥ १९३ ॥
गरजि तबै बेतालं। रन रंगेव रचियं काली ॥
पलहारी पल पूरं। छूरं छूर बरन बरनाई ॥ छं० ॥ १९४ ॥

सायंकाल के समय युद्ध का बंद होना।

संझ सपत्तय छूरं। मेषं भयान भंतिथं क्रूरं ॥
कहन बीर रस पूरं। नूरं दुअ सेन दिष्याइं ॥ छं० ॥ १९५ ॥
दूहा ॥ राति रहे तिन रनह मैं। सब सामंत [1]घट छूर ॥
धाइ रहै घट घाइ सौं। भयौ प्रात बर नूर ॥ छं० ॥ १९६ ॥

प्रभात समय की शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ निस सुमाय सत पच। सुक्कि अलि [2]भ्रम तक्क सारस ॥
[3]गयं तारक फट्टि तिमर। चंद भग्यौ गुन पारस ॥

(१) ए. कृ. को.-सत। (२) ए. कृ. को.-भूमन। (३) ए. कृ. को.-गत।

देव क्रम्म उघघरहि। बीर बर क्रम्म सुनिज्जइ ॥
सोर चक्र तिय तजिय। नयन घुघ्घू रस भिज्जइ ॥
पहु फट्टि फट्टि गय तिमर नभ। बजिग देव धुनि संघ धुर ॥
भय भान पनान न उघऱ्यौ। करहि [1]रोर द्रुम पष्य तर ॥छं०॥१९७॥
सरद इंद प्रतिब्यंब। तिमर तोरन किरनिय तम ॥
उग्गि किरन वर भान। देव बंदहि सु सेव क्रम ॥
कमल पानि सारथ्थ। अरुन संभारति रथ्थै ॥
जमुन तात जम तात। करन कंचन कर बरषै ॥
ग्रीषम जवास बंध्यौ कमुद। अरुन बरुन तारक चसहि ॥
सामंत सूर दरसन दिषिय। पाप धरम तन बसि लसहि ॥छं०॥१९८॥
मुरिल्ल ॥ के विगया महि मंडल सूरं। षग षंडे वर बीर सपूरं ॥
हनिग राव भीमंग सु हथ्थं। बढ्ढी कित्ति जित्ति मनमथ्थं ॥
छं० ॥ १९९ ॥

रणक्षेत्र की सफाई होकर लाशें ढूंढ़ी गईं।

कवित्त ॥ भिरिग सूर सामंत। लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय ॥
सघन घाव पम्मार। बीर बीरां रस जुट्टिय ॥
[2]बढ़वि सेन दोउ बीर। षेत ढुंढ्यौ न बीर दुहुं ॥
उतर भुम्मि भारथ्थ। सार नंध्यौति सार मुह ॥
बय ध्यान मान सम स्याम दिष। किय कीरत्ति अचल कलह ॥
सामंत सूर सम सूरतन। कवि सु चंद जंपै बलह ॥ छं० ॥ २०० ॥

युद्ध में मरे हुए सूरवीर और हाथी घोड़ों की संख्या।

डेढ हजार तुरंग। परे रन बीर बीर भट ॥
अड सहस हथ्थी प्रमान। आरुहिय मेघ घट ॥
पंच सहस परि लुथ्थि। दंत सौं अंत अलुझिझय ॥
दइय काल संग्रहै। लिषे बिन कोइ न झुझिझय ॥
इ घरी श्रोन बरषंत धर। पति पहार घर डोलयौ ॥
सामंत सूर स्वामित्त पति। जीभ चंद जस बोलयौ ॥ छं० ॥ २०१ ॥

(१) ए. कृ. को.-रोम। (२) ए. कृ. को.-चढ़वि।

संसार की असारता का वर्णन।

है संसार प्रमान। सुपन सोभै सु बस्त सब ॥
दिष्टमान बिनसिहै। मोह बंध्यौ सु काल अब ॥
काल हत्य पट्टीक। आज बंध्यौ नर ग्रेही ॥
दया देह संभवै। दया बंधै तिन देही ॥
सामंत सूर साध्म्म धनि। सज्जिय भज्जिय जानियै ॥
संसार असत आसक्त गति। इहै तत्त करि मानियै ॥ छं० ॥ २०२ ॥

दूहा ॥ बँध्यौ भीम जब राज प्रथि। बैर लियौ पगबाहि ॥
दोहित संजम सूर कौ। कीनौ कचरा राइ ॥ छं० ॥ २०३ ॥
दस बंदर कचरा दिये। दियौ चमर छच साज ॥
चौरासी बंदर महै। और रषै प्रथिराज ॥ छं० ॥ २०४ ॥
भोम दई दीनों तिलक। लीनो कचरा संग ॥
*प्रथीराज दिल्ली चले। काढ़ि बैर अनभंग ॥ छं० ॥ २०५ ॥

गुजरात पर चढ़ाई करके एक मास में पृथ्वीराज का दिल्ली को वापिस आना।

कवित्त ॥ तात बैर संग्रह्यौ। जीति जैपत्त सु लिन्नौ ॥
ढीली पत्तौ राज। किति संसार स भिन्नौ ॥
न्त्रिप संधव [1]सो उदर। सोइ सामंतनि रष्षिय ॥
एक [2]मग्ग उग्रहै। एक मग्गह रस भष्षिय ॥
पंचमी दिवस रवि वार वर। इंद्र जोग तहां बरति तिथ ॥
दिन चढ़े राज प्रथिराज जय। जै हय गय नर भर समथ ॥ छं० ॥ २०६ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके भोलाराय भीमंग बधो नाम चौवालीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४४ ॥

---

* छन्द २०३ से २०५ तक मो.-प्रति में नहीं है।
(१) मो.-जो। (२) ए. कृ. को.-मया।

अथ विनय मंगल नाम प्रस्ताव लिष्यते ॥

(पैंतालिसवां समय।)

पृथ्वी का इन्द्र प्रति वचन ।

दूहा ॥ कहै चंडि सुरपति सुनहि । धरनि [1]अघावहु लोहि ॥
रामाइन भारथ्थ [2]छुध । रही निहारै तोहि ॥ छं० ॥ १ ॥

इन्द्र का उत्तर देना ।

कवित्त ॥ [3]सा वसुमति बर चवै । सुनहु बर चंड दंड सुर ॥
रामायन रन वह । राम रावेन भान [4]भुर ॥
[5]धर मुष्षै क्यों [6]रहै । कहन हर हार तार गर ॥
छूर समर सुर धष्षि । अष्षि जम पष्षि तष्षि कर ॥
धक धार सार करिवार कर । मार मार मुष उच्चरिय ॥
असुचर अचंभ चव मंस चर । रुधिर केम अचिपत परिय ॥छं०॥२॥

दूहा ॥ कर जोरैं सुर राज सों । कहत असंभम बात ॥
कोपि गोप उरगनि गरति । कौन श्रोन आघात ॥ छं० ॥ ३ ॥

तदनुसार राम रावण युद्ध ।

सिर स्यंदन लोचन अलग । घोरन अनि जग घोर ॥
बरषि बीर रस बहुल सर । सोसि सार रत धोर ॥ छं० ॥ ४ ॥

राम रावण युद्ध का आतंक ।

हनूफाल ॥ हक हक्कि देव अदेव । धर कंपि धर धरकेव ॥
पिठ कमठ कट्ठ कलर । अत कजत काद्दर नूर ॥ छं० ॥ ५ ॥

---

(१) मो.-अघावहि । (२) मो.-वृध । (३) मो.-सच्च सुमति ।
(४) मो.-सुर । (५) मो.- तुम । (६) मो.-रहौं ।

बलि मध्य बीर करूर। जग षग्ग लग्गि [1]गरूर ॥
पथ पथ्य अंमर हूर। दह दिग्ग सुष्षम [2]नूर ॥ छं० ॥ ६ ॥
चवअंत अंत नमंत। छुय लोक चामर अंत ॥
विम्मान [3]मानिय रूढ़। [4]अंबरन रचिय गूढ़ ॥ छं० ॥ ७ ॥
छत [5]विछति [6]रघु लछिराय। रथ निगछ सुर हय चाय ॥
भाल भयंक जाम अतंक। सेन सु भूमि सेन पतंक ॥ छं० ॥ ८ ॥
बातन तात तेज अपान। उपट उपट्टि दोन सु घान ॥
लगि रघुपग्ग अंग उतंग। गो परिवान दग्गि पतंग ॥ छं० ॥ ९ ॥
सुर सुर राज सोच दिवांन। जय जय अच्छि कच्छि विमान ॥
॥ छं० ॥ १० ॥

मुरिल्ल ॥ अंमर जय जय सद्दिय अंमर। रेनि ऐनि अक बद्दिय संमर ॥
संमर अंमर [7]कोतिक अच्छिन। छाय छलं छिति भद्र सु पच्छनि ॥
छं० ॥ ११ ॥

गीता मालची ॥ सुमिरंत सुमिरिय मंच मूरध उरध हंकह धक्कयं ॥
*किल किलकि दनुज कि यच्छ भूत कि अलकि किलय कल्लयं ॥
बक [8]बकय डोंरू डमर अंमर चमर बपुअस पंगुरं ॥
झलमलत भाल विसाल विधु बर अंब रालक अंमरं॥ छं० ॥ १२ ॥
जट विकट तट जल उछल हलि हलि प्रजलि नलिनिय चच्छयं ॥
[9]चव अग्ग सट्ठिय चवति चवदिसि पत्त जोगिनि कच्छयं ॥
भुअ इंद जीति सभीति ह्वै अरि अभै लच्छिन जाइयं ॥
उड़ि अस्त्र अंग सु सस्त्र निसजर गिरित गिरधर छाइयं ॥छं०॥१३॥
बिनि रंग अच्छरि व्योम व्योमनि ताल बाल बितालयं ॥
सुर स्रवत श्रम जल चवत संमर पानि अंजुल मालयं ॥
छं० ॥ १४ ॥

(१) ए. कृ. को.-करूर। (२) ए. कृ. को.-तूर। (३) मो.-मानिन।
(४) ए. कृ. को.-अंमरन। (५) ए. कृ. को.-विछकि।
(६) ए.-रघु। (७) ए. कृ. को.-कौतक।
*मो.-किल किलकि दनुज कि दनुज कि जच्छ के किलयति कल्लयं।
(८) ए. कृ. को.-बहुय। (९) ए.-अब।

कवित्त ॥ पजलिंद्ग चवरंग। छुत्त रत छिंछ छाइ भर ॥
अग्ग रित्ति रिति राइ। चाइ नक कोप रंग बर ॥
निसचर बन चर चमर। अरिन लग्गे अरि [1]धाइन ॥
जुत्त तत्त करि सीस। पाइ कर कंजन छाइन ॥
अरि इंद्रजीत भय भीत हुआ। भूत भंति तंडव चरनि ॥
किल किलकि अमर अंजुल पहुय। लच्छि राइ मूरध धरनि ॥
छं० ॥ १५ ॥

ऊधो ॥ चढ़ि [2]चढ़ि गूढ़ मंच अमंच। हक्कि सु छुक चक्किय वंत ॥
नत नुत्त चाप सु इष्य। सरसाइ भू भरतिष्य ॥ छं० ॥ १६ ॥
देह तिस्त्रल सेल [3]सबान। बलि मुष उरवि सेज सजान ॥
वेस निसंक स्यंदन रूढ़। वंकवि कूल रासिव रुढ़ ॥ छं० ॥ १७ ॥
कंपिय कोपि कंप करूर। नागति गोपि गरनि गरूर ॥
अनुचित लच्छि रघुपति चेत। किंनर नाद नारद केत ॥छं०॥१८॥
फिरि परदच्छि दच्छिन देव। त्रिभुवन स्वामि अमित अनेव ॥
हरि हर हर न होरन ताप। निकट निकंठ काटत जाप ॥छं०॥१९॥
आसन असन अनल [4]गरूत। रघुपत्ति रघुकुल धूत ॥
धारत धरनि धारनि हेत। सोपन करहु घोरन चेत ॥ छं० ॥ २० ॥
राघव धरन [5]प्रषन प्रचाल। षग सुर गवन कित्ती काल ॥
तजि [6]भज्जि अहि गन बान। जय जय चवत सेवग थान ॥छं०॥२१॥

दूहा ॥ तजी तूझ भजि भजि सरै। भजि भजि रघुपति रूढ़ ॥
गोप गोप गर गर [7]गरनि। छिन इक गुनपति गूढ़ ॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ [8]निसि निसंक स्यंदन सु। वंक कल कंक तंग लुपि ॥
चढ़िय देव मंडल मरुत्त। आवन्न धूप धुपि ॥
क्रष्ण गोप गहि गोप। डारि जरन्न अंग लगि ॥

---

(१) ए. को.-धाइय, छाइय। (२) मो.-बढ़ि। (३) ए. कृ. को.-तिवान।
(४) मो. गत रूत। (५) ए. कृ. को.-प्रसन।
(६) ए. कृ. को.-भाति। (७) मो.-सिरनि।
(८) मो.-निकसि संक।

भाष साष म्रग मंकु। सैन भुमि सेन प्रान द्रगि ॥
जय जयति सद्द नारद चवत। कर किन्नर तारच्छि भजि ॥
तजि पासि पास तन दर बिकर। कहि रघुपति [1]अम षित्त रजि ॥
छं० ॥ २३ ॥

मेघनाद और कुम्भकर्ण का युद्ध वर्णन।

दूहा ॥ भज्जि ताप तन मानि मन। बाल व्याल उड़ि सेन ॥
सोषि स्रोन तहिन सरनि। रह्यौ राज बिनु चेन ॥ छं० ॥ २४ ॥
लच्छि राइ भर पंच मिलि। मंडि सरस धनुबान ॥
इंद्रजीत भर अवनि परि। छयौ अमर असमान ॥ छं० ॥ २५ ॥
हय बज्जी दस मुष दरनि। भय मंदोदरि बाम ॥
जाइ जगावहु कुंभ कहुं। हनै रिपुन घन जाम ॥ छं० ॥ २६ ॥
उठ्यौ कुंभ अवनी सु रर। करि जग्गत घन रीस ॥
सुर किंनर धुनि सबद बर। पिष्पहु पग्गन सीस ॥ छं० ॥ २७ ॥

गाथा ॥ दानं प्रमद प्रमादं। परयं भर कुंभ बड्डि लासायं ॥
सम गुच्छन धर धारं। चढ़ि चढ़ि अटन रटन [2]रित जेयं ॥
छं० ॥ २८ ॥

विज्जुमाल ॥ किलकि किलकि कूक। बज्ज दनु गन भूक ॥
तजि बद्द बथ्थन थूर। भज्जि सुरगन भूर ॥ छं० ॥ २९ ॥
कहकि कुंभ कनंक। चिहुं दिग्ग बर नंक ॥
मुरि [3]मुरि मेर षंड। जुर छरि जूर मंडि ॥ छं० ॥ ३० ॥
रन रेन छय सूर। मिल कहक बिशूर ॥
दह दिग्ग जगि अग्य। बर मंस रम लग्य ॥ छं० ॥ ३१ ॥
नचि नचि भय भूत। रमत सुरेस सूत ॥
चव चव [4]सड्डि ताल। भवति भल कराल ॥ छं० ॥ ३२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-जुम। (२) ए. कृ. को.-जित।
(३) ए. कृ. को.-मर। (४) ए. कृ. को.-सद्दि।

[1]कुपित कुंभक रष्षि। गहअ गहु गरषि ॥
थेइ थेइ पुर नाद। वितल उच्चित माद ॥ छं० ॥ ३३ ॥
प्रगटि [2]दानव दल। प्रलय सम अस मल ॥
गहवर धुन पान। रीस रघु असमान ॥ छं० ॥ ३४ ॥
रिन तत निस पंच। तनकि तनकि रंच ॥
उड़ि भर भुज भूर। तरसि [3]मष वतूर ॥ छं० ॥ ३५ ॥
पच्छ छिन छिनकंन। करि रघुराय रंन ॥
जरध मूरध षंड। मरि कुंभ राइ दंड ॥ छं० ॥ ३६ ॥
समर अंमर ऐन। अवत चवत चैन ॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ पन्यौ कुंभ धरनी सु धर। षंड षंड तन तेह ॥
मानों प्रबल सनूर ढरि। चढ़ि पंछी नल छेह ॥ छं० ॥ ३८ ॥
सजि डंबर घन सीस पर। सज स्यंदन [4]घर षेह ॥
चढ़ि दससिर रघुपति विहसि। रहसि बढ़ी रन केह ॥ छं० ॥ ३९ ॥
हल हल सेनन चर चरन। उड़ि आडंबर धूरि ॥
बजे तूर बनचर चमू। देव पंचजन पूर ॥ छं० ॥ ४० ॥

राम रावण का युद्ध।

गीतामालची ॥ मीसद नहि निसान स्यंदन सेन अंकुरि सेनयं ॥
झिलि रहसि रघुपति राइ रावन गज्जि आनक ऐनयं ॥
थिर भान व्योम विमान निज्जर जच्छि रच्छिन अच्छनी ॥
[5]नग नाग नागिनि पच पचन मत्त मत्तन [6]वच्छनी ॥ छं० ॥ ४१ ॥
किल किलक काल विताल मालनि व्याल जालन तंडवं ॥
डव डवरू डोरु अ करइ किन्नर करत कुंडल षंडवं ॥
मिलि दैत्य वंस अदैत्य अंसह संधि सिंधुर नद्दयं ॥
गन गिद्धि अंबर छाइ पच्छिन डंकि डंकि नरद्दयं ॥ छं० ॥ ४२ ॥
तन तुनकि चामर चाप चंपिय ताप कंपिय तिप्पुरं ॥

(१) मो.-कुपित। (२) ए. कृ. को.-दानव। (३) मो.-सम चल नूर।
(४) ए. कृ. को.-घन। (५) ए. कृ. को.-गन।
(६) ए. कृ. को.-वच्छनी।

तर तरकि चिकुट चक्क चक्किय धक्क पंकिय ईसुरं ॥
उड़ि चक्क स्यंदन चूर चामर घेर चब्बर षंडयं ॥
दानव दुरासय पलं आसय समर घन बर मंडयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥
धुर सेत पीत सुरंग [1]सातक श्रोन नील अकासयं ॥
जनु जून द्रुज भूभंति अंतर पत्त रिति निल तासयं ॥
परि ह्लर सुरगन चवत जय सुर अंचि कर मुकतामरं ॥
बढ़ि कंध दस कुल पित्त पंचर बढ्ढि बर रन [2]धूमरं ॥ छं० ॥ ४४ ॥
गिरि गिरिन दस ग्रव सोषि सर लिग रह्यौ राज अभष्षयं ॥
सुरपत्ति मुष अग मंडि जंपिय राम रावन कथ्थयं ॥ छं० ॥ ४५ ॥

रामचन्द्र जी की उदारता।

दूहा ॥ चवत राज सुरराज सौं। इह रघुकुल ब्यौहार ॥
लेत लंक छिन इक लगी। देत न लग्गी बार ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कहै देवि सुर देव सौं। लंक भभीषन अप्पि ॥
रघुपति से साँई सिरह। तूं किम रही अधप्प ॥ छं० ॥ ४७ ॥

इन्द्र का वचन।

घन तोमर अरि दल अलय। सस्त्र सस्त्र बर मंच ॥
तिन रत चपत न छिन भई। ढबि ढुरि ढुंढि भ्रमंत ॥ छं० ॥ ४८ ॥
अब कनवज दिल्ली बयर। दलन दुअन बाँड़ षेद ॥
रुंड मुंड षंडन षलन। विधि बंधी बदि बेद ॥ छं० ॥ ४९ ॥
चंडि बरन पुज्जाइ चिष। मंडि मुंड उर माल ॥
जो कनवज दिल्लिय बयर। भरहि पच रज बाल ॥ छं० ॥ ५० ॥

इन्द्र का एक गंधर्व को आज्ञा देना कि वह पृथ्वीराज और जयचन्द में शत्रुता का सूत्र डाले।

कवित्त ॥ मति प्रधान गंधर्ब। देव दिव राज बुलायौ ॥
कलह करौ भारथ्थ। मत्ति अप्पनी बढ़ायौ ॥
भूमि भार उत्तार। कलह किज्जिय विस्तारौ ॥

(१) ए. कृ. को.-सायक। (२) ए. कृ. को.-धीमरं।

चाहुआन कमधज्ज । बीर विग्रह जग्गारौ ॥
करि कीर रुप कनवज गयौ । उभय दिवस दिष्षिय पुरिय ॥
बंभनिय मदन अंगन सु तह । निसि निवास तहां उत्तरिय ॥
छं० ॥ ५१ ॥

कन्नौज की शोभा वर्णन ।

श्लोक ॥ सतयुगे काशिकादुर्गे । त्रेतायां च अयोध्यया ॥
द्वापरे हस्तिनावासं । कलौ कनवज्जका पुरी ॥ छं० ॥ ५२ ॥

गंधर्व की स्त्री का उससे संयोग के पूर्व जन्म की कथा पूछना ।

दूहा ॥ गंध्रव त्रिय प्रिय पुच्छि [1]वर । नाथ कथा समुझाय ॥
संजोगिय अवतार कहि । न्नप ग्रह ज्यों [2]जमि आइ ॥ छं० ॥ ५३ ॥

गंधर्व का उत्तर देना कि वह पूर्व जन्म की अप्सरा है ।

राज पुच्छि उतपत्त सुनि । इह अच्छरि अवतार ॥
[3]सुमन स्राप म्रत लोक महिं । हरन कारन संहार ॥ छं० ॥ ५४ ॥

कविचंद का अपनी स्त्री से संयोगिता के जन्मान्तर में शापित होने की कथा कहना ।

सुकी सुनै सुक उच्चरै । पुब्ब [4]संजोय प्रताप ॥
जिहि छर अच्छर मुनि छ-यौ । जिन त्रिय भयौ सराप ॥छं०॥५५॥

शिव स्थान पर ऋषि की तपस्या का वर्णन ।

चोपाई ॥ जटा बीर शंकर सिव थानं । गिरिजा गहिर गंग परिमानं॥
साधत रिष्षि तहां अर नामं । गइ दस इंद्र हन्यौ तिन कामं ॥
छं० ॥ ५६ ॥

श्लोक ॥ त्वचा इन्द्रिय नेत्रस्य, नासा कर्णय जिह्वया ॥
हृदय जंघ सुमासश्च, दस इन्द्रिय पराक्रमं ॥ छं० ॥ छं० ॥ ५७ ॥

(१) मो.-रस । (२) ए. कृ. को.-जम ।
(३) ए. कृ. को.-सुमत । (४) मो.-संजोग ।

एक सुन्दर स्त्री को देख कर ऋषि का चित चंचल होना।

[1]जहं प्रसाद सिव निकट प्रमानं। मनों ईस तहं आतम जानं॥
गुरु मुक्ती थइ भम्यौ विसेषं। षिमा नाम एक सुंदरी देषं॥
छं० ॥ ५८॥

कवित्त॥ बाल नाल सरिता उतंग। आनंग अंग सुज॥
[2]रूप सु तट मोहन तड़ाग। भम भए कटाष्छ दुज॥
प्रेम पूर विस्तार। जोग मनसा विध्वंसन॥
दुति ग्रह नेह अथाह। चित्त करषन पिय तुट्टन॥
मन विसुद्ध बोहिथ्थ बर। नहि थिर चित जोगिंद तिहि॥
उत्तरन पार पावै नहीं। मीन तलफि लगि मत्त विहि॥छं०॥५९॥

उक्त स्त्री का सौंदर्य वर्णन।

पद्धरी॥ दिष्टी सु दिष्ट विषया कुमारि। जनु लता लोंग कै काम धारि॥
मनमथ बजार मनमथ्थ धाम। मनमथ्थ तड़ाग कै प्रेम [3]वाम॥
छं० ॥ ६०॥

जीवनि सु मुत्ति छिन एक रंग। मन मीन फंद जनु चरि अनंग॥
षंचन कितक्कि कुचि इष्ट जानि। रति रचिय सचिय जनु सोभ सानि॥
छं० ॥ ६१॥

दिठि दिट्ठ टरिय नह नेन चास। चकोर चंद जनु अमिय ग्रास॥
देषंत नेन नह चेन अंग। विंध्यौ सु वाम नेनन निषंग॥
छं० ॥ ६२॥

स्वर भंग कंप वेपथ्थ पथ्थ। फुरकंत नयन इम भय अवथ्थ॥
पब्बय समान मन नेन भिंटि। फुट्यौ सु दूध मनु छाछ छंटि॥
छं० ॥ ६३॥

बद्दल समूह सब गगन छाइ। फट्टे कि जानि छिन छुट्टि बाइ॥
मुरछाइ रह्यौ इम ब्रह्म बाल। व्यापंत सीत जनु तरु तमाल॥
छं० ॥ ६४॥

(१) मो.-तहां। (२) ए. कृ. को.-सूप। (३) ए. कृ. को.-वानि।

साटक ॥ आ जीवंत पसार पार सुमती, रत्तं हरी ध्यानयं ॥
विमया कामय चित्त सित्त विमया, विमया रसं [1]हृदयं ॥
सा सुपनंतर दीह रत्त मुषं, प्रानंपि विमया दषं ॥
ना सुभ्भै बिय ध्यान [2]पञ्चर [3]दषं, विमयाय विमया मुषं ॥छं०॥६५॥

परंतु ऋषि का पुनः अपने मन को साधकर वदरिकाश्रम पर्य्यंत पर्य्यटन करके घोर तप करना।

गाथा ॥ विमया सुष मय भ्रमियं। रमयाइ भ्रंग कीटयो मनयं ॥
चित्त न जिन लषि भुअंगं। सो भिद्देव काम वामाइं ॥छं॥६६॥

कवित्त ॥ प्रथम तित्थ अड़सट्ठि। न्हाय बद्री [4]तप रत्तौ ॥
जठरागनि करि षपत। छुधा निद्रा वस जित्तौ ॥
हिम रित हिम तन तुटहि। पंचगिन ग्रीसम सहयौ ॥
बरषा काल प्रचंड। [5]मेघ धारह बपु [6]बहयौ ॥
कर धूम पान मुष अद्ध रहि। कर अंगुष्ठ नर देव हरि ॥
सत बरष ध्यान लग्गै भयौ। जोति चित्त चिहुटी सुहरि ॥
छं० ॥ ६७ ॥

ऋषि के तप का तेज वर्णन और उससे इन्द्र का भयभीत होना।

दूहा ॥ तप बल कंपत सुभर भुअ। रह्यौ ध्यान दिव देव ॥
सुत्त तेज द्रिग सियल हुअ। लह्यौ सुरप्पति भेव ॥ छं० ॥ ६८ ॥
तब चिंतिय सुरराज मन। का विचित्र वर वाम ॥
आदि अंत सोधिय सकल। अच्छरि अच्छरि नाम ॥ छं० ॥ ६९ ॥

इन्द्र का अप्सारओं को आज्ञा देना कि वे तेजस्वी तापस का तप भृष्ट करें।

(१) मो.-वृज्भयं। (२) कृ.-पडर।
(३) ए. कृ. को.-दृग। (४) ए. कृ. को.-पति।
(५) ए. कृ. को.-मेय। (६) ए. कृ. को.-सहयौ।

बोलि घृताची मेनिका । रंभ उरबसी रुप ॥
आनि सुकेस तिलोत्तमा । मंजुघोष सुनि भूप ॥ छं० ॥ ७० ॥
अति आदर आदर कियौ । कह्यौ आप इह बैन ॥
छलह सुमंतन जाइ कै । रहै राज सुष चैन ॥ छं० ॥ ७१ ॥

अप्सराओं का सौंदर्य्य वर्णन ।

गाथा ॥ नयनं नलिन नवीनं । गवनं गयं मत्त तुलायं ॥
बैनं पर भ्रत दीनं । छीनं कट्टि भ्रगं राजेसं ॥ छं० ॥ ७२ ॥
अर्य्या ॥ *सपत सुर गान निपुना । नृत्य कला कोटि आलया मानं ॥
तार तरलेव भ्रमरी । भ्रमरी भ्रमरी सय सयसं ॥ छं० ॥ ७३ ॥

मंजुघोषा का सुमंत ऋषि को छलने के लिये मृत्यु लोक में आना ।

कवित्त ॥ भो आयसि सुरराज । मंजुघोषा सुनि बत्तिय ॥
मत्य लोक में जाहु । सुमति छल छलौ तुरत्तिय ॥
दुसह तेज को सहै । मोहि आसन डर डुल्लिय ॥
सेस संकि कलमलिय । नेन तिय तालिय पुल्लिय ॥
जल थंबि सुरन हिय दुष्ष धरि । नहिन सु रस उड़गन भुअन ॥
तप ताप देव सब कलमलत । सुकज काज रष्षहि दुअन ॥
छं० ॥ ७४ ॥
दूहा ॥ घग षगपति आसन ग्रह्यौ । गए बित्ति बहु काल ॥
रंभ पिमा सम रूप धरि । आय [1]सपत्ती ताल ॥ छं० ॥ ७५ ॥
मानि बैन सुरराज लिय । नरपुर पत्तिय आइ ॥
जहं ताली लग्गी सुमति । तहं नूपुर बज्जाइ ॥ छं० ॥ ७६ ॥

मंजुघोषा का लावण्य भाव विलास और शृंगार वर्णन ।

अच्छरि अट्ठ विमान [2]बनि । कुसुम समान सरीर ॥
नग जगमग अंग अंग सुबनि । कनक प्रभा दुति चीर ॥ छं० ॥७७॥

* छन्द ७३ मो.-प्रति में नहीं है ।
(१) ए. कृ. को.-संपतौ । (२) ए. कृ. को.-रचि ।

नराज ॥ बनी विमान कामिनी। मनों दिपंत दामिनी ॥
दुती उपंम लोभयं। कि इंद्र चाप सोभयं ॥ छं० ॥ ७८ ॥
उरंबसी सु केसयं। तिलोत्तमा सुदेसयं ॥
सु मंजघोष रंभयं। घृताचि मेनका सुयं ॥ छं० ॥ ७९ ॥
सुरंग अंग सोहनी। मनों कि अष्ट मोहनी ॥
मुसक्कि मंद हासयं। विगास कौल भासयं ॥ छं० ॥ ८० ॥
सु नेन डोल भौंरही। कि कौंल भौंर भौंरही ॥
तिहाइ भाइ ठानही। जुगिंद चित्त [1]भानही ॥ छं० ॥ ८१ ॥
मरोरि अंग मारहीं। सकेलि सुद्ध सारहीं ॥
विलास नेन लग्गवै। तिमुन्नि काम जग्गवै ॥ छं० ॥ ८२ ॥
विराज मान मोहनी। सु कौंल माल सोहनी ॥
चवंत बेन माधुरी। न कोकिला सु माधुरी ॥ छं० ॥ ८३ ॥
प्रवीन कोक केलयं। कुकी कुकेकि केलयं ॥
सुभाय वास अंग की। सुगंध [2]गंध भंग की ॥ छं० ॥ ८४ ॥
विमान छंडि उत्तरी। मनों कि चित्र पुत्तरि ॥
सुमंत मुष्ष ठट्टियं। प्रवान पान [3]पट्टियं ॥ छं० ॥ ८५ ॥
दिषत मेंन लग्गयं। जिहाज जोग भग्गयं ॥ छं० ॥ ८६ ॥

अप्सरा के गान से ऋषि की समाधि क्षणेक के लिये डगमगाई।

दूहा ॥ करिय गान विविधान सुर। ताल काल रस भाइ ॥
छिनक पलक मुष उघ्घरिय। अप्छरि रही लजाइ ॥ छं० ॥ ८७ ॥

अप्सरा का शंकित चित्त होकर अपना कर्त्तव्य विचारना।

उलटि गयै सुरपति हँसै। [4]रहैं रषीस रिसाइ ॥
इह चिंता मन उप्पज्जिय। फिर दिव लोक सुजाइ ॥ छं० ॥ ८८ ॥
जौं न छरौं तौ देव डर। रिषि तप अप्प प्रचंड ॥
[5]दुहुं विधि संकत कामिनी। आय ताप सुर दंड ॥ छं० ॥ ८९ ॥

(१) ए. कृ. को.-तानहीं।　　　(२) ए. कृ. को.-भंग।
(३) ए. कृ. को.-टट्टियं।
(४) मो.-रह रिषि भाय रिसाय।　　　(५) मो.-दादु विधि संक न सार्मिन।

उलटि गई सुर घरनि घर। देवन देव बुलाइ ॥
इंद्र रोस कै डर डरौ। आप ताप डर पाइ ॥ छं० ॥ ९० ॥

तब तक ऋषि का पुनः अखंड रूप से ध्यानमग्न होना।

मन माया भ्रम दूरि करि। फिरि लग्यौ रिषि ध्यान ॥
ब्रह्म जोति प्रगटी उरह। रंभ प्रगट्टिय आन ॥ छं० ॥ ९१ ॥

मुनि की ध्यानावस्थित दशा का वर्णन।

कवित्त ॥ बहुरि गई रिषि पास। सांस जिन गहिय उरध गति ॥
मूल पवन द्रिग बंधि। गरजि ब्रह्मंड मेघ अति ॥
बंक नाल जल षंचि। [1]सींचि उर कमल प्रफूल्लिय ॥
ब्रह्म अगनि प्रज्जरिय। पाप करि भसम समूलिय ॥
तब मारग सुज्यौ मीन जल। पंछि षोज पायौ सगुन ॥
सुनि तार सु बज्जै करन बिन। सद्द स्वाद छंडिय त्रिगुन ॥छं०॥९२॥
तालिय लग्गिय ब्रह्म। लीन मन जोति जोति मलि ॥
कमल अमल उघ्घरिय। हृदय अवनीय धरनि [2]अलि ॥
त्रिकुटिय ताटंक लग्गि। भ्रगुटि गंगा तन मंडिय ॥
रिझ्झि सबद्द श्रवन्न। नद्द अनहद्द सु बज्जिय ॥
अधमुष उरध चरन करि। गति पच्छिय मंडल गगन ॥
ता रिषहि जगावत सुंदरिय। रह्यौ सु धुनि मझझह गगन ॥
छं० ॥ ९३ ॥

वाद्य बजना और अप्सरा का गाना।

दूहा ॥ जंच मृदंग उपंग सुर। धुनि झंझर झनकार ॥
करत राग श्रीराग सुर। कर बर बज्जत तार ॥ छं० ॥ ९४ ॥
चट्टुवात माठा धुआ। गीत प्रबंध प्रवीन ॥
[3]उघटत ललिता ललित पिय। पुजवति सुर कर बीन ॥छं०॥९५॥

(१) ए. कृ. को.-सिंचि कमर उर फूलिय।
(२) ए. कृ. को.-उर।
(३) ए. कृ. को.-उघटन।

श्लोक ॥ [1]मृदंगी दंडिका ताली । धुरधुरी तुति काहली ॥
गीत राग प्रबंधं च । अष्टांगं न्रत्य उच्यते ॥ छं० ॥ ९६ ॥

मुनिका समाधि भंग होकर कामातुर हो, अप्सरा के आलिङ्गन करने की इच्छा करना ।

दूहा ॥ सोर सुरनि के सुर जग्यौ । भग्यौ ध्यान जगईस ॥
चित्त चक्रित करि सोच मन । इह अपुब्ब कहा दीस ॥ छं० ॥ ९७ ॥
नूपुर धुनि श्रवननि सुनत । भई ध्यानगति पंग ॥
ताली छुट्टिय गगन मय । षुल्लिय पलक मन लग्ग ॥ छं० ॥ ९८ ॥
कहिय रिष्य सुर अप्छरी । कन्या गंध्रब जक्ष ॥
कै नागिनि जनमी कुंअरि । तो सिव [2]रष्या रक्ष ॥ छं० ॥ ९९ ॥

अप्सरा का अन्तर्ध्यान हो जाना ।

कमातुर चिय कर ग्रह्यौ । तप जप छंडिय आस ॥
[3]हँसि छुड़ाइ कर तड़ित मन । गई अवास अयास ॥ छं० ॥ १०० ॥

मुनि का मुर्छित हो जाना, परंतु पुनः सम्हल कर ध्यानावस्थित होना ।

छिन इक धर मूरछि पर्‌यौ । चित कलमल्यौ अधीर ॥
बहुर ग्यान मन आनि कै । मुनि वर भयौ [4]सधीर ॥छं०॥१०१॥

कवित्त ॥ फिरि उत्तरि मन धर्‌यौ । हेमगिरवरह ध्यान धरि ॥
चित्त ब्रह्म लवलीन । बरष सित कियौ नेम करि ॥
छुधा पिपासा जीति । नींद निसि नसिय इंद्रि तस ॥
बहुत जतन तप कियौ । बंधि दृढ़ पवन उरध बस ॥
पौवंत वाम दक्षिन सुषै । कुंभक पूरक जोग बल ॥
करि उर्द्ध चरन ध्यान सु रह्यौ । गह्यौ पंथ गगनह अकल ॥
छं० ॥ १०२ ॥

(१) मो.-मृदंकी ।　　(२) मो.-रछया ।
(३) ए. कृ. को.-सहि ।　　(४) ए. कृ. को.-अधीर ।

कविचन्द की स्त्री का अप्सरा के सौंदर्य्य के विषय में जिज्ञासा करना।

दूहा ॥ सुकी सुकह पुच्छै रहसि। नष सिष बरनहु ताहि ॥
जा दिष्षन मुनि मन टर्‌यौ। रह्यौ ठगट्टग चाहि ॥ छं० ॥ १०३ ॥

अप्सरा का नख सिख वर्णन।

साटक ॥ चरने रत्तय पत्त राइ रितए, कंजाय [1]चंद्राननें ॥
मातंगं गय हंस मत्त गमने, जंघाय रंभाइने ॥
मध्यं छीन म्रगेन्द्र भार जघना, नाभिंच कामालए ॥
सिंभे सिंभ उरज्ज नयनयौ, एने ससी भालयौ ॥ छं० ॥ १०४ ॥

अर्धमालची ॥ तल चरन अरुनति रत्तए। जल नलिन सोक सपत्तए ॥
नष पंति कंतिय मुत्तए। जनु चंद अद्भुत जुत्तए ॥ छं० ॥ १०५ ॥
नग जरति नूपुर बज्जए। कलहंस सबद विलज्जए ॥
गति मत्त गरब गयंदए। छबि कहत कविवर चंदए ॥ छं० ॥ १०६ ॥
गहि पिंड कनक विमानयं। रंग रंग बंदन सानयं ॥
कर करिय जंघति ओपमं। रंग फटिक केसरि सोपमं ॥छं०॥१०७॥
घन जघन सघन नितंबयं। छिन काम केलि विलंबयं ॥
कटि सोभ बर म्रग राजयं। कहि चंद यौं कविराजयं ॥छं०॥१०८॥
बनि नाभि कोस सुकज्जयं। मनु काम भ्रमरय रंजयं ॥
रव मधुर म्रदु कटि किंकिनी। झलमलत नग फननी [2]कनी ॥
छं० ॥ १०९ ॥
सलि उदर त्रिबलि त्रिरेषयौ। कुच जघन मंडि सु भेषयौ ॥
बनि रोमराजि सपंतयं। प्रतिबिंब बैनि सुभंतियं ॥ छं० ॥११०॥
उर उरज अलज विराजही। कलधूत श्रीफल लाजही ॥
उर पुहप हार उहासियं। हुअ होत जोजन वासियं ॥छं०॥१११॥
गर लजति कंठतु कामिनी। कलयंठ कोक सुधामिनी ॥
रचि चिबुक बिंद सु स्यामए। जनुं कमल बसि अलि धामए॥छं०॥११२॥

(१) मो.-चन्द्रायने। (२) मो.-कली।

बलि पुह्प तिलक सु नासिका । जनु कीर [1]चुंच प्रहासिका ॥
तिन मुत्ति बेसर सोभए । ससि सुक्र मिलि रसि लोभए ॥छं०॥११३॥
तस नयन षंजन कंजए । सुरराज सुर मन रंजए ॥
चाटंक नग जर जगमगै । विय चक्र करि ससि पर जगै ॥छं० ॥११४॥
बिय भौंह बंकित अंकुरी । जनु धनुक कामति [2]संकुरी ॥
तसु मध्य तिलक जराइ कौ । [3]रविचंद मिलि रस आइ कौ ॥छं०॥११५॥
गुथि केस चिक्कन बेनियं । जनु ग्रसित अहि ससि ऐनयं ॥
सित दिव्य अंमर अंमरं । नह मलिन होत अडंबरं ॥ छं० ॥ ११६ ॥
अंगवास [4]आस सुगंधयं । संग चलत मधुह्त संगयं ॥
सम उदधि मथि कीनौ हरौं । फटि फेन प्रगटित सुंदरौं ॥छं०॥११७॥

अप्सरा के सर्वाङ्ग सौंदर्य्य की प्रशंसा ।

मालिनी ॥ हरित कनक कांतिं कापि चंपेव गोरीं ।
रसित पदम गंधा फुल्ल राजीव नेत्रा ॥
उरज जलज सोभा [5]नभिकोसं सरोजं ।
चरन कमल हस्ती लीलया राजहंसी ॥ छं० ॥ ११८ ॥

दूहा ॥ कामालय सो संदरो । जिम अरि अग्गि अनंग ॥
विधि विधान मति चुक्कयौ । किये मेन रन अंग ॥ छं० ॥ ११९ ॥

मालिनी ॥ अधर मधुर बिंबं, कंठ कलयंठ रावे ।
दलित दलक भ्रमरे, भ्रिंग भ्रकुटीय भावे ॥
तिल सुमन समानं, नासिका सोभयंती ।
कलित दसन कुंदं, पूर्न चद्राननं च ॥ छं० ॥ १२० ॥

कवि की उक्ति कि ऐसी स्त्रियों के ही कारण संसार चक्र का लौट फेर होता है ।

दूहा ॥ न्याय छुर्‍यौ मुनि रूप इन । सुरति प्रीय त्रिय आहि ॥
जा मोहै सुर नर असुर । रहै ब्रह्म [6]सुष चाहि ॥ छं० ॥ १२१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-हंस ।　(२) ए. कृ. को.-संहरी ।　(३) ए. कृ. को.-रवि ।
(४) ए. कृ. को.-सास ।　(५) ए. कृ. को.-नासिका ।　(६) मो.-मुष ।

कवित्त ॥ इनह काज सुर धरत। सूर तन तजत ततच्छिन ॥
परत कंध नंचत कमंध। पर हनत स्वामि रन ॥
भरत पत्त जुग्गिनि समत्त। रति पिवत पिवावति ॥
चरम चष्य पल भवत। पंछि जंबुक न अघावत ॥
पुनि वपु किरच्चि करतें समर। तब लहंत रस अच्छरिय ॥
तजि मोह पुत्त पुत्तिय सु तिय। बरत बरंग नभच्छरिय ॥छं०॥१२२॥

दूहा ॥ तिन मोहनि मोह्यौ सु मुनि। मोहे इंद्र फुनिंद ॥
नर नरिंद जुग जोग रत। उड़ उड़गन रवि इंद ॥ छं० ॥ १२३ ॥

अप्सरा का योगिनी भेष धारण करके सुमंत ऋषि के पास आना।

कवित्त ॥ तीय धर्‍यौ तन जोग। श्रवन मुद्रा सु [1]फटिक मय ॥
करि अष्टंग विभूति। न्हाय जनु निकसि सिंधु पय ॥
जटाजूट सिर बंधि। दिसा दस अंमर मानिय ॥
सिंगी कंठ धराइ। जोग जंगम सिव जानिय ॥
पवनं सु अरध ऊरध चढ़ै। बंक नालि पूरै गगन ॥
धरि ध्यान सुमन नासिक धरै। रहै ब्रह्म मंडल मगन ॥छं०॥१२४॥

दूहा ॥ तजिग भोग मन जोग धरि। निकट सुमंतह आइ ॥
करिवर डँवरू डहडह्यौ। अंबर सव सिव भाइ ॥ छं० ॥ १२५ ॥

अप्सरा के योगिनीवेष की शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ गिरिजा पसुनह संग। गंगनह झलक अलक जल ॥
भूतन प्रेत पिचास। [2]मयन नह चतिय गरल गल ॥
कटिन बंधि गज चर्म। [3]पहरि अँग अंग दिगंबर ॥
नह गनेस षट बदन। पुत्र गननंदि भ्रंग सुर ॥
नहविय लिलाट पट तिलक ससि। व्याल न माल बनाइ उर ॥
नाहिन त्रिशूल त्रिपुरारि यल। नह कर लग्गिय धवल धुर ॥
छं० ॥ १२६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-फटिक। (२) ए. कृ को.-नयंन। (३) मो.-पहिर अंग अंगनि वर।

मुनि का छद्मवेषधारिणी योगिनी को सादर आसन देकर बातें करना।

बहु आदर आदरिय। [1]अरघ आतिथि तिहि दिन्नौ ॥
करिय ग्यान गुन गोष्ट। कष्ट बहु तप करि किन्नौ ॥
डुलिग इंद्र रबि चंद्र। इंद्र सुर लोकह मानिय ॥
मो अग्गै कर जोरि। देव सब तजत गुमानिय ॥
तब्बह सु ग्यान मन उप्पज्यौ। देव दुषौ करि सुष लह्यौ ॥
चिदनंद ब्रह्मपद अनुसरिय। धरिय ध्यान [2]गगनह रह्यौ ॥
छं० ॥ १२७ ॥

तपसी लोगों की क्रिया का संक्षेप प्रस्तार वर्णन।

दूहा ॥ मात गरभ आवागमन। मेटि [3]भ्रमन संसार ॥
ज्यों कंचन कंचन मिलै। पय पय मझ्झ संचार ॥ छं० ॥ १२८ ॥
सोइ ग्यान तुम सों कहौं। निरगुन गुन विस्तार ॥
बरन्यौ वपु बैराट हरि। जा मुनि लहै न पार ॥ छं० ॥ १२९ ॥
पद्धरी ॥ कहौं ग्यान मंतं सुमंतं विचारौ। गहौं अद्ध मूलं उरद्धं संचारौ ॥
धरौं ध्यान नासा चिदानंद रूपं। चिकुट्टी [4]त्रिलोकी स्वयं जोतिरूपं॥
छं० ॥ १३० ॥
पियों बंकनालं चढ़ै दंड मेरं। सुनै सद्द अनहद्द अनहत्त टेरं ॥
धुनी अंतरं जोति जानौ गियानी। जपै मंच हंसं सु सोहं विनानी॥
छं० ॥ १३१ ॥
सरं नाभि मूलं सरोजं प्रकासै। दलं अष्ट [5]पद्मं तहां सो उहासै ॥
तपत्तं कनकं वरन्नं [6]झलक्कै। दसं अंगुलं नालि हिरदै ढलक्कै ॥
छं० ॥ १३२ ॥
जिमं पुष्फ कल्ली तिमं कंज फूलै। करै जोग उद्धं धरै वाय मूलै ॥
तहां देव अंगुष्ट मानंत वासै। धरै अष्ट वाहं बसै देव वासै ॥
छं० ॥ १३३ ॥

(१) मो.-अरध। (२) मो.-गगनं। (३) ए. कृ. को.-विभूमन।
(४) मो.-त्रलोकं। (५) मो.-सतं। (६) ए.-चलक्कै।

दलं अष्ट कंजं सु रुद्दान देवं । रहै मध्य भानं अलष्यं अछेवं ॥
रहै भान मध्ये ससी सो निरत्तं । ससी मध्य अग्गी रहै रूप रत्तं ॥
छं० ॥ १३४ ॥

सु ज्वाला मई तेज तामें विराजै । तहां पिठ्ठ सिंघासनं देव साजै ॥
रतन्नं जरे बज्ज [1]कोटीस कोटी । तहां देव नाराइनी जोति मोटी ॥
छं० ॥ १३५ ॥

[2]भ्रगुं लच्छिनं वछ्छ कौस्तुभ्भ सोहै । धरै चक्र पद्मं गदा कंबु रोहै ॥
धरैं [3]पानि षग्गं धनुं [4]वान सल्लं । इसौ ध्यान दिष्षौ महा जोग बल्लं ॥
छं० ॥ १३६ ॥

महा पद्मकोसं परागंति तासी । महा उज्जलं कांति फटिकं प्रभासी ॥
तहां सूर कोटी ससी कोटि सीतं । वयं वाय कोटी मृदं नाच नीतं ॥
छं० ॥ १३७ ॥

[5]क्रितं सेत ब्रनं [6]अरक्तं सु चेता । जुगं द्वापरं पीत कलि क्रष्ण [7]नेता ॥
निराकार देवं अकारं सु ध्यानं । रहै आप आपं गुरं पच्छि थानं ॥
छं० ॥ १३८ ॥

अछेदं अभेदं प्रमानं न मानं । अकासं न वासं न जानं पुरानं ॥
न रुपं निरूपं अरूपं समथ्थं । रहै [8]सास मैवास करिदेह रुथ्थं ॥
छं० ॥ १३९ ॥

कह्यौ रुप बैराट गुर जौ बतायौ । जिसौ अरजुनं क्रष्ण भारथ [9]सुनायौ ॥
महाकास सीसं चरंनं पतालं । कढी नाभि सुर्गं दिसा बाहु पालं ॥
छं० ॥ १४० ॥

द्रुमं रोम उद्रं समुद्रं सु इभ्भं । गिरं अस्त नैनं ससी [10]सूर नभ्भं ॥
नदी तास नारी महा [11]प्रान प्रानी । कहै देव बेदं [12]न जानंत जानी ॥
छं० ॥ १४१ ॥

(१) ए. कृ. को.-सूरं । (२) ए. कृ. को.-भ्रियं । (३) ए. कृ. को.-सांग ।
(४) ए. कृ. को.-मुसल्लं । (५) ए. कृ. को.-प्रभा ।
(६) मो.-अनुक्तं सुनेता, ए.-अरस्तुं । (७) मो.-त्रेता ।
(८) ए. कृ. को.-साम । (९) ए. कृ. को.-वनायौ ।
(१०) ए. कृ. को. रूर । (११) ए. कृ. को.-बाहु । (१२) ए. कृ. को.-जनानं न

जगै रैनि दीहं महा जोग जोगी। विराटं सरूपं कहै भोग्य भोगी॥
निराकार आकार दोऊ विमायौ। कहै देव औतार गुर जो बतायौ॥
छं० ॥ १४२ ॥

अप्सरा की सगुन उपासना की प्रशंसा करना।

दूहा ॥ मन मानै सोई भजहु। कष्ट तजहु तुम देह॥
सुरति प्रीति हरि पाइयै। उर मेटहु संदेह॥ छं० ॥ १४३ ॥
सुरग बसै फिरि धर बसै। मनो ग्यान मन ईस॥
गरभ दोष मेटहु प्रबल। उर धरि ध्यान जगीस॥ छं० ॥ १४४ ॥

दसों अवतारों का संक्षिप्त वर्णन।

दूहा ॥ कहै ब्रह्म अवतार दस। धरे भगत हित काज॥
रूप रूप अति दैत्य दलि। द्रुपद सुता रषि लाज॥ छं० ॥ १४५ ॥

कवित्त ॥ मच्छ कच्छ बाराह। अप्प नरसिंह रूप किय॥
वामन बलि छलि दान। राम छिति छच छीन लिय॥
लंकपती संहऱ्यौ। उभय बलदेव हलायुध॥
दयापाल प्रभु बुद्ध। रहे धरि ध्यान निरायुध॥
कलि अंत कलंकी अवतरहि। सत्य ध्रम्म रष्षन सकल॥
करि सरस रास राधा रमन। भवन ग्यान ब्रह्मह अकल॥छं०॥१४६॥

अप्सरा का कहना कि परमेश्वर प्रेम में है अस्तु तुम प्रेम करो।

दूहा ॥ कपट ग्यान मुष उच्चरे। मन छल धूत अधूत॥
कपट रुप कंठीर कर। चरन चित्त अवधूत॥ छं० ॥ १४७ ॥
इह कहि छल संध्यौ तिनह। भै बिन प्रीति न होइ॥
हर छल तजि हर रूप करि। मान प्रगट्टिय सोइ॥ छं० ॥ १४८ ॥

नृसिंहावतार का वर्णन।

कवित्त ॥ पीत बरन कजलीय। छोह आरोह सरप जनु॥
दसन सु तिष्प कुदाल। नयन बिय वज्र धऱ्यौ तनु॥
बज्र बंक अंकुस गयंद। नष कुंभ विदारन॥

उद्धकेस कग सद्द । गरव दंती ¹दल गारन ॥
धर पटकि पुंछ मुंछाल छल । पीठ दिट्ठ अवधू पऱ्यौ ॥
भय भीति कंपि कामिनि कुटिल । धाय विप्र अंकह भऱ्यौ ॥
छं० ॥ १४९ ॥

मुनि का कामातुर होकर अप्सरा को स्पर्श करना ।

दूहा ॥ उर उरोज लग्गत सु मुनि । सर सरोज हति काम ॥
रोमंचित अंग अंग सिथल । मन मोह्यौ सुरवाम ॥ छं० ॥ १५० ॥
दिष्षत अप्छरि अष्ट उन । रह्यौ नेन मन लाइ ॥
देह भुलानौ नेह कै । और न सूझै काय ॥ छं० ॥ १५१ ॥
भ्रमन भयानक सुपन छल । सिंघन अवधू संग ॥
जानिक पंष परेवना । करि डँवरू इन अंग ॥ छं० ॥ १५२ ॥
कामजारि सिव भसम किय । कर विभूत रति सोक ॥
भोग भुगति रति सुंदरी । द्रिढ़ नह जोग न जोग ॥ छं० ॥ १५३ ॥

अप्सरा का कहना कि ऐसा प्रेम ईश्वर से करो मुझसे नहीं।

गाथा ॥ वनिता वदंत विप्पं । जोगं जुगति ²केन कम्मायं ॥
स्यामा सनेह रमनं । जनमं फल पुन्न दत्ताइं ॥ छं० ॥ १५४ ॥

उसी समय सुमंत के पिता जरज मुनि का आना ।

दूहा ॥ चित्त चल्यो मन डगमग्यो । रच्यौ रूप रस रंग ॥
आनि पहुंतो जरज रिषि । दही भात ज्यों डंग ॥ छं० ॥ १५५ ॥

मुनि का लज्जित होकर पिता की परिक्रमा पूजनादि करना ।

अरिल्ल ॥ पहर एक पर निट्ठ । जगाइय अप्प गुर ॥
भौ लज्जा लवलीन । विचारत अप्प उर ॥
जाइ सु पत्तौ तात । सु नेनन भेद्यौ ॥
भेद्यौ अंगन अंग । अनंगह षेद्यौ ॥ छं० ॥ १५६ ॥
दूहा ॥ देषि तात परदच्छ फिरि । भय लज्जा लवलीन ॥
षिमा अरथ तप रंभ कै । काम कामना भौन ॥ छं० ॥ १५७ ॥

(१) मो.-लगरन । (२) मो.-कवन ।

जरज मुनि का अप्सरा को शाप देना ।

पहचानी रिषि सुंदरी । कुस गहि कीनी दाप ॥
भ्रगुटि बंक रिस नैन रत । दिय अच्छरी सराप ॥ छं० ॥ १५८ ॥
हम रिष्षीसर बन बसत । रसह न जाने एक ॥
कंद भषत तन कष्ट करि । लेइ आप इक भेक ॥ छं० ॥ १५९ ॥

सुमंत का लज्जित होना और जरजमुनि का उसे धिक्कारना ।

कवित्त ॥ नयन चकित दुअ बाल । भाल भ्रकुटी दिषि तातह ॥
गयौ बदन कुमिलाइ । जानि दीपक लषि प्रातह ॥
पुच कवन तप तप्यौ । भयौ बसि काम वाम रत ॥
इनहि आप करौं भस्म । कवन छंडैष तोहि हित ॥
वपु क्रोधवंत रिषि देषि करि । रंभ अरंभ न कछु रह्यौ ॥
सम अग्नि रूप दिष्षीस रिषि । तबह आप रंभह कह्यौ ॥छं०॥१६०॥

जरज मुनि के शाप का वर्णन ।

कलह [1]करतह्नौ डहि कुबुधि । कलहंतर कहि एह ॥
पुहवी भार उतारनह । जनमि पंग कै ग्रेह ॥ छं० ॥ १६१ ॥
कवित्त ॥ [2]एम कह्यौ चयवार । रोस करि आप आप दिय ॥
मृत्य लोक अवतार । नाम तुअ कलहप्रिया किय ॥
इन अवधू मन छल्यौ । सुष्यनम लहहि चीय तन ॥
पित पति कुल संहरहि । पीय तो हथ्थ रहै जिन ॥
जैचंदराइ कमधज्ज कुल । उअर जुन्हाइय पुच छल ॥
संजोग नाम प्रथिराज बर । दुअ सुमार अनभंग दल ॥छं०॥१६२॥

अप्सरा का भयभीत होकर जरजमुनि से क्षमा प्रार्थना करना और मुनि का उसे मोक्ष का उपाय बतलाना ।

दूहा ॥ श्रवन सुने रंभह डरिय । रही जोर कर दोइ ॥

(१) ए.कृ. को.-करनहि ।　　(२) ए.-एक ।

अब सांई अपराध मुहि। मुगति कहो अब होइ॥ छं० ॥ १६३ ॥

पद्धरी ॥ कर जोर करत बीनती रंभ। [1]साष्यात रूप तुम सम सु ब्रह्म ॥
संसार रूप साइर समाज। कढ्ढनह पार तुम तहं जिहाज ॥
छं० ॥ १६४ ॥

[2]पाली सु भ्रम्म रिषि क्रम्म जोग। चै काल क्रम्म षट रहत जोग ॥
अबला अवध्य हम अंग आहि। कहि क्रोध देव क्यों करिय ताहि॥
छं० ॥ १६५ ॥

उद्धार होइ सो कहो देव। तुम चरन सरन नहिं और सेव ॥
सु प्रसन्न होइ रिषि कहिय एह । अवतार लेहु पहुपंग गेह ॥
छं० ॥ १६६ ॥

तुम काज जग्य आरंभ होइ। जैचन्द प्रथी दल दंद [3]दोइ ॥
भुम्मीय भार उत्तार नारि। फुनि सर्गलोक कहि तोष [4]थ्यार ॥
छं० ॥ १६७ ॥

इह कहि ह रिष भय अप्प थान। दुष पाइ रंभ बैठी विमान ॥
गइ सुरग लीग सब सषिन संग। [5]कुमिलाइ बदन मन मलिन अंग॥
छं० ॥ १६८ ॥

अप्सरा के स्वर्ग मे पात न होने का प्रकरण। तीनों देवताओं का इन्द्र के दरबार में जाना और द्वारपालों का उन्हें रोकना।

कवित्त ॥ एक दीह बर इंद्र। रमन क्रीड़ा अधिकारिय ॥
ता देषन चयदेव। ब्रह्म, सिव, विष्णु सुधारिय ॥
ए चलंत तिन थान। इंद्र दरवानति रक्कै ॥
मूढ़ मत्ति जानिय न। दैव गत्ती गति पक्कै ॥

(१) ए. कृ. को.-साक्षात रंभ। (२) ए. कृ. को.-पालो।
(३) ए. कृ. को.-होइ। (४) ए. कृ. को.-यार, पार।
(५) ए. कृ. को.-कुम्हिलाय।

घरि एक तमसि तामस तिहुन। बहुरि घात सुर उद्धरिय ॥
आनेन काल न्रिमान गति। तिन विधान विधि संचरिय ॥छं०॥१६९॥

विष्णु का सनत्कुमरों के शाप से पतित द्वारपालों की कथा कहना।

विधि न जंपि आब्रम्म। इंद्र दरवान न जानिय ॥
सुक सनकादि सनक। सनंद सनातन [1]न्यानिय ॥
ए दरवान अबुद्ध। लच्छि रोकिय परिमानिय ॥
सनत सनंदन देव। [2]मुनी व्रत आदि भिमानिय ॥
ए कुंअर पंच पंचो छटकि। पंच बाल पंचौ प्रकति ॥
रिषि बर न छोड़ तामस कबहुं। सो ओपम कवि राज मति ॥
छं० ॥ १७० ॥

गाथा ॥ छटकि सु अग्रंप्रमानं। अग्गानं साध दारूनो बरयं ॥
ज्यों रिषि नाम समथ्थो। तामसयं द्वार पालकं ॥ छं० ॥ १७१ ॥

माटक ॥ स्याम स्यामय स्याम मूरति घने, उद्यापितं बुदबुदौ ॥
नारेपं नासेय उच्चत ननं, दीर्घं न रुपं [3]वरं ॥
नंमाया चलयं बलति किरिया, एकस्य जोती तहं ॥
बैकुंठं गुरू मुक्ति धामति धरं, नापत्ति नो तावहुं ॥ छं० ॥ १७२ ॥

दूहा ॥ मापत्ते रिषि यान तिन। दै सराप तिन वार ॥
हरि विरोध तो सद्धि है। तो सध्यौ करतार ॥ ॥ छं० ॥ १७३ ॥

पद्धरी ॥ पाधरी छंद बरनंत मुझ्झ। [4]बखरन बीर कल बरन रुझ्झ ॥
अवतार एक एकह प्रकार। ससिपाल दंत [5]बक्रह विधार ॥
छं० ॥ १७४ ॥

अवतार दुतिय जौ कह्यं मंडि। अवतार किष्ण गोकुलह छंडि ॥
तिन काज किष्ण अवतार कीन। भूभार हरन अवतार लीन ॥
छं० ॥ १७५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-न्यारी। (२) ए. कृ. को.-मुनि। (३) मो.-परं।
(४) ए. कृ. को.-बलबीर बीर कल बलन रुझ्झ। (५) मो.-चक्रह।

अवतार दुतिय जयबर विरोध। राजह्ल अग्ग सुत ब्रम्म सोध॥
अवतार दुतिय हिरनाकुसस्स। हरिमेव कुस्स किय बंध [1]गस्स॥
छं० ॥ १७६ ॥

नरसिंह सिंह अवतार किन्न। मानुच्छ सिंह नन देव भिन्न॥
छायान घाम [2]नन सस्त्र [3]घाय। सिव को प्रसाद लीनों [4]सुचाय॥
छं० ॥ १७७ ॥

भरभरिय भार वर पच्च काज। रामहति राम जंपै विराज॥
छं० ॥ १७८ ॥

हिरणाक्ष हिरनाकुश बध।

दूहा॥ हरी लच्छि हरनंकुसह। दुअ [5]विजुह किय देव॥
एकं त्यों पाताल प्रति। एक षंभ प्रति सेव॥ छं० ॥ १७९ ॥

गाथा॥ सो षिझियं प्रहलादं। किं थंभं मझझयौ भनई॥
जंजं थानन हुत्तौ। तौ किन्नौ थंभयं भारं॥ छं० ॥ १८० ॥

दूहा॥ थंभ भार फुट्टौ सुवर। नष हति घाम न छाह॥
वर सिंघासन बैठि कै। वर बैकुंठह जांह॥ छं० ॥ १८१ ॥

रावण और कुम्भकरण बध।

साटक॥ राजा रामवतार रावन [6]बधं, कुंभ हत्तौ कर्नयं॥
सीतायं प्रति बोधितं प्रति [7]लतं, प्रत्यंग [8]प्रत्यंगितं॥
सा राजं प्रतिराज राज कपितं, चौकूटयं कूटजं॥
जंहल्ली धर धार उप्पम कवी, चक्रीय चक्रं फिरं॥ छं० ॥ १८२ ॥

गाथा॥ यों उड्डा कपि कंक। प्रव तर गाम प्रस्थरं लोयं॥
जिम घर सराय थानं। उड्डै सा भाजनं मुक्ति॥ छं० ॥ १८३ ॥

दूहा॥ यों उड्डी लंका सुघर। चिया बैर प्रतिपाल॥
हर बंदे गोबिंद कथ। बर बैकुंठह हाल॥ छं० ॥ १८४ ॥

(१) मो.- कस्स। (२) मो.-तन। (३) ए. कृ. को.-पाय।
(४) मो. सुभाय। (५) मो.-सु।
(६) मो.-विधं। (७) मो.-लनं। (८) ए. कृ. को.-प्रसंगिनं।

त्रिदेवताओं के पास इन्द्र का आप आकर स्तुति करना।

चौपाई ॥ सो बोलिय इंद्रह परदारं। हरि रुक्यौ तिय देव सँसारं ॥
सुनि सु इंद्र अस्तुति बर कीनिय। चरन सुरज बर सीस सु दीनिय॥
छं० ॥ १८५ ॥

भुजंगी ॥ तुही देवता देवतं विष्णु रूपं। किते इंद्र कोटं नचै कोटि रूपं ॥
नचं कोटि ब्रह्मं रविं कोटि तेजं। ससी कोटि सीतं सुधा राज सेजं॥
छं० ॥ १८६ ॥

किते कोटि जं कोटि से दुष्ट ढाहे। किते कोटि कंदर्प लावन्य लाहे॥
किते कोठि सामुद्र मज्जाद दिड्डिं। किते कोटि कल्पं तरं मुक्ति सिद्धं॥
छं० ॥ १८७ ॥

वलं कोटि पोनं द्रिगं कोति भारी। तुही तारनं तेज संसार सारी ॥
तुही विष्णु माया अमायात तूहीं। तुहीं रत्ति दीहं तुही तेज जूही॥
छं० ॥ १८८ ॥

तुहीं तू तुहीं तू तुही सर्व भूतं। तुहीं आदि अंतं तुहीं मध्य हूतं॥
जहां हूं न हूं तूं तहां तूं न नाहीं। गनों हूं न देही रहै तूं समाहीं॥
छं० ॥ १८९ ॥

तुंही ताप संताप [1]आत्ताप तूंही। कह्यौ इंद्र लग्यौ चरनं समूंही ॥
छं० ॥ १९० ॥

इन्द्रानी का त्रिदेवताओं का चरण स्पर्श करना।

दूहा ॥ कहि रु इंद्र सचीव सों। पय लग्यौ चय देव ॥
हरिचरनन छुंडै नहीं। लोहरु चंमक मेव ॥ छं० ॥ १९१ ॥

श्लोक ॥ कोटि सक्र विलासस्य। कोटि देव महावरं ॥
इंद्र ध्यान समो सिंघो। [2]पंचाननस्य राजयं ॥ छं० ॥ १९२ ॥

अप्सराओं का नृत्य गान करना और शिव का उक्त अप्सरा को शाप देना।

(१) ए. कृ. को.-अत्तातु, अतात। (२) मो.-गजाननस्य।

दूहा ॥ लै आई रंभा सवन। अङ्ग परी संग साज ॥
हाहा हूहू संग सजि। ए गुन गंध्रव गाज ॥ छं० ॥ १९३ ॥
चोटक ॥ गुन ग्रंध्रव गंध्रव लीन गुनं। इति चोटक छंद प्रमान सुनं ॥
सहतें बरनं बरनं रति राजं। नचै गुन अप्छरि अप्छरि काजं ॥
छं० ॥ १९४ ॥
रचै बर इंद्रति इंद्रह [1]साज । .... ॥
लई पहु पंजलि वाम प्रकार। जपं जय इंद्र तियं जपि त्यार ॥
छं० ॥ १९५ ॥
खिज्यौ सुनि शंकर देव प्रकार। तजै चय देव कह्यौ इंद्र सार ॥
कह्यौ गुन मंत गनेस प्रकार। भयौ तहं शंकर आप सु सार ॥
छं० ॥ १९६ ॥
पतंन पतंन कह्यौ तियवार। परै प्रति भूमि भयंकर सार ॥
छं० ॥ १९७ ॥

अप्सरा का शिव से अपने उद्धार के लिये प्रार्थना करना।

दूहा ॥ गहि चरन्न मुकै न हरि। रंभ कंपि इन भाइ ॥
मांनौ चल दल पत्तसौ। छीन वाइ विरुझाइ ॥ छं० ॥ १९८ ॥
गाथा ॥ कहु कब मुज उद्धारं। सुद्धारं कब्बयं होई ॥
तो पत्ती प्राकारं। इंद्रं चरन कब्ब सेवाइं ॥ छं० ॥ १९९ ॥

उपरोक्त अप्सरा का स्वर्ग से पतित होकर कनौज के राजा के घर जन्म लेना।

कवित्त ॥ सुनहि रंभ पहुपंग। पुत्ति बर ग्रेह देव गुर ॥
बर कनवज्ज प्रमान। गंग अस्नान सार कर ॥
इंद्र मरन बंछई। गँग स्नान जिय काजं ॥
ता कारन तुहि चीय। आप सुध्यौ गुन भाजं ॥
पहुपंग ग्रेह जनमिय तदिन। तिय सराय तरुनिय भइग ॥
आरंभ विनेमंगल पढ़न। तद्दिन मह्रूरत बर लइग ॥छं०॥ २००॥

(१) ए. कृ. को.-काज।

कन्नौज के राजा विजयपाल का दक्षिण दिशा पर चढ़ाई करना।

कनवज्जह कमधज्ज। राज विजपाल राज बर॥
हय गय नर बर भीर। सकल किय सेन जित्त पर॥
बीर धीर बर सगुन। भार उद्धार महामति॥
मन्त्रिराम चितविद्य। बीय [1]रंमाधि राज रति॥
संचर्यौ सेन सजि विजै नग। सकल जोति भर राज धर॥
मुरवस्य दिस्य न्रप संग किय। क्रम्यौ [2]देस दछिन सुधर॥ छं०॥२०१॥

समुद्र किनारे के राजा मुकुंद देव सोम वंशी का विजयपाल को अपनी पुत्री देना।

सोम बंस राजाधिराज। मुकंद देव प्रभु॥
सरित समुद्र सुतटह। कटक मय मग्गि न्रयन नभु॥
तीस लष्य तोषार। लष्य गेंवर गल गर्ज्जहिं॥
दसह लष्य पयदलह। पुलत दस छचति रज्जहिं॥
दिव दिवस रीति मंचह जपति। जगन्नाथ पूजत दिनह॥
दिगविजय करन विजपाल न्रप। सपत कोस भिव्यौ तिनह॥
छं०॥२०२॥

मुकंद देव की पुत्री का जयचंद के साथ व्याह होना।

अति आदर आदरिय। सहस दस दीन गयंदहु॥
धन असंष घन मुत्ति। [3]रतन घट समुनि मनन्दहु॥
सौ प्रजंक रजकंति। कोटि दस पाट पटंबर॥
दिय पुत्री सु विसाल। दासि सें [4]सत्त अडंबर॥
परषौ सु पुत्ति जयचंद दिषि। सुभ्भ जुन्हाइय आसरिग॥
बर सबर पंच दंपति दिनह। पानि ग्रहन उत्तिम करिग॥
छं०॥२०३॥

(१) ए. कृ. को.-रमादि। (२) मो.-देह स दच्छिन।
(३) ए. कृ. को.-रतन समुनि धन मनिंदह। (४) ए. कृ. को.-सपत।

दूहा ॥ अति सु ललित सरूप विय । रमहित राजन संग ॥
इक्क थार भोजन करहिं । अति सुष न्नपति प्रसंग ॥छं०॥२०४॥

विजयपाल का रामेश्वर लों विजय प्राप्त करके अनेक राजाओं को वश में करना।

परिग देव दच्छिन दिसह । अंग भयौ सुभ देव ॥
सेत बंध अनु सरिय मग । गोवल कुंड संगेव ॥ छं० ॥ २०५ ॥
तोरन तिलँगति बंधि न्नप । विप चढ़ि चिफिर चिकोट ॥
विद्या नैर सुजीति न्नप । सेत समुद्र सओट ॥ छं० ॥ २०६ ॥

नराज । करन्न नाट संकला पनेक भूप राजनं ॥
समुद्र ईषि भूप बंधि मैथिली सु भाजनं ॥
सुचंब कोटि मच्छरी सुरंग राय कुंकनं ।
पुलिंग देश पैं फिरी फिरेंग जीति संषिनं ॥ छं० ॥ २०७ ॥
असेर देस षानयं गँभीर गुज्जरी धरं ।
जु मंडवी मलेच्छ नट्ठ गुंड देस सो धरं ॥
जु मागधं [1]मवल्ल मुष्प चंद्रकास नट्ठयं ।
गुपाचलं गुरावयं प्रकास सोभ पठ्ठयं ॥ छं० ॥ २०८ ॥
सुप्रच्छते प्रकार साध काम कग्गलं मिलं ।
अधंम भ्रम्म सद्द भूमि पंग राज संषिलं ॥ छं० ॥ २०९ ॥

कवित्त ॥ लयौ सुगढ़ सोवन्न । कोट भंज्यौ पर कोटह ॥
गोपाचल गैनंग । चक्रित बज्जी सिर चोटह ॥
सोव्रन गिर सिरताज । नट्ठ लग्गे भग्गे षल ॥
दिय भोरा भीमंग । एक हथ्थी मद सब्बल ॥
दिय सीष कुंअर गज अठ सुबर । भोरा चलि पट्टन भनिय ॥
विजपाल चले दिगपाल चलि । मंडोवर महि अप्पनिय ॥
छं० ॥ २१० ॥

सेतबन्द रामेश्वर के पड़ाव पर गुजरात के राजा के पुत्र का विजयपाल के पास आना और उसे नजर देना।

(१) ए. कृ. को.-मवील ।

दूहा ॥ सेषुंजा डेरा सु पहु । लिय रसाल सिधराइ ॥
मानक मुत्तिय दिव्व [1]नग । लै पैलगि भोराइ ॥ छं० ॥ २११ ॥
दस कुआब संजावरी । दस घट बानी सिद्ध ॥
हथ्थिय सथ्थिय सौपकिय । रिध दौनी नव निद्ध ॥छं०॥२१२॥
कवित्त ॥ भोरा कुंअर सुं भेट । सिंघ लग्यौ तट सागर ॥
लाष दोय बाजी वितंड । नगर भग्ग बहु नागर ॥
सत्त लष्य तोषार । पंति कनवज्ज प्रमानं ॥
लष सत्तरि गय गुरहि । तपै ग्रीषम जिम भानं ॥
जलथान आइ धूलग्गि रह । रह्यौ एक बड़वानलह ॥
चहुआन देस तष्षह सुधर । पंच षंड कनवज्ज पह ॥छं०॥२१३॥

दिग्विजय से लौट कर विजयपाल का यज्ञ करना ।

गाथा ॥ किय दिगविजै विहारं । जित्तवि सकल राइ किय संगे ॥
पुर कनवज्ज संपत्तं । बज्जन बहुल बज्जि आनंदं ॥छं०॥२१४॥
दूहा ॥ मंडि जग्य विजपाल न्रप । भूपन तुंग विनास ॥
जय जयचंद विरद, बर । हठ लग्गो [2]इतिहास ॥ छं० ॥ २१५ ॥

विजयपाल की दिगविजय में पाई हुई जैचंद की पत्नी को गर्भ रहना और उससे संयोगिता का जन्म लेना ।

अरिल्ल ॥ अति वरजो वा जुन्हाइय नारि । चंद्र जेम रोहनि उनहारि ॥
अति सुष बरस दुअट्ठ प्रमानं । ता उर आनि संजोगिन थानं ॥
छं० ॥ २१६ ॥
दूहा ॥ घटि बढ़ि कलह न अनुसरै । पेम सदीरघ होत ॥
कलि कनवज दीपक सुमति । चंद्र जुन्हाई [3]जोति ॥ छं० ॥ २१७ ॥
कवित्त ॥ जिते जुन्हाइय जोति । राज गवरी गुर बंध्यौ ॥
जिनं जुन्हाइय चंद । अष्ट पर्वत वित नंध्यौ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-गन ।
(२) ए. कृ. को.-अतिहास । (३) मो.-सौति ।

जिनं जुन्हाइय चंद। तुंग तिरहन विप्रानय॥
जिनं जुन्हाइय चंद्र। कंठ कंठेर सु बानय॥
जयचंद जुन्हाइय पंगुरै। असी लष्य हैवर ¹परिग॥
जयचंद जुन्हाइय राज बर। बरनिय अरधंगइ धरिग॥छं०॥२१८॥

दूहा॥ पुब्बकथा संजोग की। कही चंद बरदाइ॥
पंग घरह जुन्हाइ उर। आनि प्रगट्टिय लाइ॥ छं०॥ २१९॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके संजोगिता पूर्व जनम नाम पैंतालिसमों प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ४५॥

(१) ए. कृ. को. परिग।

इस पृष्ठ (१२५९) में संयोगिता के जन्म का संवत् जो ११३६ दिया है वह ११३३ चाहिए ।

अथ विनय मंगल नाम प्रस्ताव लिष्यते ॥

(छियालिसवां समय।)

अप्सरा के संयोगता के नाम से जन्म लेकर शाप से उद्धार पाने का वर्णन ।

दूहा ॥ पुब्ब कथा संजोग की। कहत चंद बरदाइ ॥
सुमत सुगंध्रव गंध्रवी। अति आनंद सुहाइ ॥ छं० ॥ १ ॥
जनम संयोग संजोग विधि। कहि कविराज प्रकार ॥
जिम भविष्य भव निरमयौ। तिम सराप उद्धार ॥ छं० ॥ २ ॥

शाप देकर जरज ऋषि का अन्तर्ध्यान हो जाना और सुमंत का तप में दत्तचित्त होना ।

चौपाई ॥ एक सराप षिमा अवतारं। जरित रिष्य हरद्वार सुधारं ॥
तिन सिष सिष्यि छिमाहृत लिन्नौ। मनो तत्त [1]रस तत्त सुभिन्नौ ॥

* संवत ११३६ में संयोगिता का जन्म वर्णन ।

दूहा ॥ ग्यारह से च्यालीस चव। पंग राज ह्व मंडि ॥
बर पंचम ससि तीय ग्रह। जनम संयोग विषंड ॥ छं० ॥ ४ ॥
ससि न्त्रिमल पूरन उग्यौ। निसि निरमल अति रूप।
न्त्रिप न्त्रिप कन्या व्याहता। मरन अदब्बुद भूप ॥ छं० ॥ ५ ॥
अंजं बाखत पढ़ै गुन। तंतं बद्धति काम ॥
सिंह्नि [2]विभंतर तिय सहज। लछि लच्छिन विस्राम ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-तत्त रस लिन्नौं । (२) ए. कृ. को.-विंपतर ।

* छन्द ४ के अंत में विखण्ड शब्द "संवत ११३६" की सूचना देता है—यथा (वि = दो + खण्ड = टुकड़ा) जनम संयोग–विखण्ड = संयोगता की आयु के आधेआध समय मे अर्थात् संवत् ११४४ में राजा पंग ने राजसूययज्ञ आरम्भ किया।

संयोगता का दिन प्रति बढ़ना। और आयु के तेरहवें वर्ष में उसके शरीर में कामोद्दीपन होना।

कवित्त बढ़ै बाल जो दीह। घरिय सो बढ़ै स सुंदरि ॥
और बढ़ै इक मास। पाष बढ़ै रस गुंदरि ॥
मास बढ़ै षटमास। रित्त बढ़ै सु बरष बर ॥
बरष बढ़ै सुंदरी। होइ षट मध्य बरष भर ॥
पूरंन बाल षट बिय बरष। नव मासह दिन पंच बर ॥
ता दिनह बाल संजोग उर। मदन इह मंडिय [1]सुधर ॥ छं० ॥ ७ ॥

संयोगता के हृदय मंदिर में कामदेव का यथापन्न स्थान पाना।

इह संजोइय राज। पुत्ति बत्तीसह लच्छिन ॥
रची बिधाता काम। धाम कर अप्प बिचच्छिन्न ॥
छाजै छचिय गौष। [2]गुमट कलसा छबि छाजिय ॥
करिय रास आवास। सरस रस रंग बिराजिय ॥
तिन चिचसाल चिचत सुरंग। मनसिज आगम अंग अँग ॥
मन आस बास बसि मंदिरह। प्रथम दीप दीनौ सुरंग ॥ छं० ॥ ८ ॥

संयोगता के सौन्दर्य्य की बड़ाई।

दूहा ॥ उड़गन सम सहचरि सकल। उड़पति राजकुमारि ॥
नव रस आए देह धरि। कोन चिया अनुहारि ॥ छं० ॥ ९ ॥

संयोगता का भविष्य होनहार वर्णन।

हनूफाल ॥ संजोगि नाम सुजान। जिन तात बिजय किमानि ॥
इह लच्छिनेव बतीस। इह पच्छ छत्त बिदीस ॥ छं० ॥ १० ॥
इह उंच ग्रेह समान। भुत्र राहनी हत आनि ॥
इन पानि बर चहुआन। जिन बंधिलिय सुरतान ॥ छं० ॥ ११ ॥

(१) मो.-सुधर। (२) ए.-मुगट।

इन काज राजहू जग्य। मिलि राइ सहस विभग्य ॥
कलहंत काज सरूप छिति रत्ति स्रोनित भूप ॥ छं० ॥ १२ ॥
इन रूप रावत देव। इन इंद्र बधु अह भेव ॥
इन सुरन षोड़स दीन। इकतीस लच्छन भीन ॥ छं० ॥ १३ ॥
भौ हद्द माल विसेष। पर कलह कामिनि लेष ॥
इन संबन्धी बहु राज। भिरि सहस छत्रिय [1]छाज ॥ छं० ॥ १४ ॥
घटि मुकुट मुकुटनि पान। रवि कोटि उग्गिय जान ॥
मिलि छत्र छत्रन धाइ। सोइ छांह मंडय बाइ ॥ छं० ॥ १५ ॥
सुनि साति [2]सत्तत काज। रन पानि बर भूत आज ॥
इन कलह कामिनि नाम। संसार समनह बाम ॥ छं० ॥ १६ ॥
इन पाइ पौरुष इंद्र। [3]ज्यों रुषमिनी ह गोविंद ॥
दुज दुजन दुर्जन लाग। सुक सुनत श्रवन विभाग ॥ छं० ॥ १७ ॥
दस सहस छत्र विभंग। रुधि भिन्न षोनिय अंग ॥
परि लष्य छत्रिय जुद्ध। इन बरह किंत्ति असुद्ध ॥ छं० ॥१८॥
छिति छत्र बंधन व्याह। तिहि सुघर मंडल धाह ॥
वर मिलन बेस विरूप। चढ़ि चलन मनमथ भूप ॥ छं० ॥ १९ ॥
जिहि जियन मरन सु [4]लाह। दुअ नयर मंगल [5]धाह ॥
घट भाष भावन जान। संजोग जोवन पान ॥ छं० ॥ २० ॥
बंधि षंड राज सुराज। कनवज्ज राजन साज ॥
धम्मारि काम विलास। संजोग रूप प्रकास ॥ छं० ॥ २१ ॥
सुक सुकी केलि विभग। सुनि श्रवन भव अनुराग ॥
चित विलषि उलषि कुमारि। लगि पढ़न केलि धमारि॥छं०॥२२॥
अस ससिर रिति अत्तीति। पति तात ग्रह छिति जीति ॥
संजोगि वारिय मंडि। दुज दुजन गंध्रव छंडि ॥ छं० ॥ २३ ॥
उक मेह [6]मोर मराल। पप्पीप सह मराल ॥
उच दृष्य अंबर मंडि। मधु माधुरी सुव छंडि ॥ छं० ॥ २४ ॥

---

(१) मो.-काज।　　(२) ए.-संतन।
(३) ए. कृ. को.-ज्यों रुक्मनी कृ गुविन्द।　　(४) ए. कृ. को.-लार।
(५) ए. कृ. को.-धार।　　(६) ए. कृ. को. मोह।

इह लग्गि केलि अहार। तिम ताल तेह सहार ॥
इह केतकिय सब छंडि। नव नलिन नागिन षंडि ॥ छं० ॥ २५ ॥
इय चंद एह प्रकास। घट एह मध्य दुवास ॥
कनवज्ज राजन मज्झि। दिस षंड राइ सु मज्झि ॥ छं० ॥ २६ ॥
स्लोक ॥ *अन्यथा नैव पिष्यंति। द्विजस्य वचनं यथा ॥
प्राप्ते च योगिनी नाथे। संजोगी तत्र गच्छति ॥ छं० ॥ २७ ॥

संयोगता प्रति जयचन्द का स्नेह।

दूहा ॥ सुअ संयोग [1]समुष्य सुष। दिष्य सभोजन राइ ॥
अति हित नित नित्तह करै। तिय रयनी न बिहाइ ॥ छं० ॥ २८ ॥
सुअठ्ठ आरि अपनी करै। सरै न सौषह तात ॥
पढ़न केलि कलरव करै। कहत अपूरब बात ॥ छं० ॥ २९ ॥
नैवज पुप्फ सुगंध रस। बज्जन सह सुढार ॥
सुरति काम पूजन मिलहि। एक समै चयवार ॥ छं० ॥ ३० ॥

संयोगिता के विद्यारम्भ करने की तिथि आदि।

पद्धरी ॥ ससि तीय थान रवि भोग जोग। दिन धन्यौ देव पंचमि संजोग ॥
संजोग बहुत उर पढ़न गत्ति। दिन धन्यौ देव राजन सु मत्ति ॥
छं० ॥ ३१ ॥
दूहा ॥ अति विचित्र मंडप सुरँग। अंगन [2]सत सहकार ॥
अध सु लाल कुँअरि पढ़त। सद्रिस प्रतंम सु मारि ॥ छं० ॥ ३२ ॥
पढ़त सु कन्या पंगजा। सुंदर लच्छिन रूप ॥
मानहु अंदर देषियै। मदन पचासन भूप ॥ छं० ॥ ३३ ॥
लहु भगिनि तारा सुअन। अति सु चंग प्रति रूप ॥
जिन जिन भेद अभेद गति। जं जं मंडहि धूप ॥ छं० ॥ ३४ ॥

संयोगता का योगिनी वेष धारण कर अपनी पाठिका (मदन वम्हनी) के पास जाना।

* इस श्लोक की प्रथम पंक्ति के आगे मो. प्रति के पाठ का एक पत्रा खंडित है।
(१) को.-संमुष्य सुख। (२) ए.-तत।

अरिल्ल ॥ ए लज्जा सों लज्जहि बाल। दिगंबरह वस्त्रं गुन बाल ॥
जगत वस्त्र सो रामय भोग। वस्त्र रचै नहिं रावै जोग ॥छं०॥३५॥

योगिनी वेष में संयोगिता के सौन्दर्य्य की छटा वर्णन।

दूहा ॥ सो रथ्यी सुंदरि सु विधि। मदन हद्दि दिय हथ्थ ॥
सो कीनी मदनं सुहद्दि। अति कोविद गुन कथ्थ ॥ छं० ॥ ३६ ॥

कवित्त ॥ अति कोविद गुन कथ्य। मदन कीनी भंति हहह ॥
जोग जिहाजन जाइ। ताहि जल मंडित [1]सद्दह ॥
अति भय मिंत्तिय बाल। रूप राजति गुन साजति ॥
आभूषन षट धरै। देव बद्धू दिषि लाजति ॥
आरंभ अंबता धाम मधि। अति विसुद्ध चिहु पास सषि ॥
संजीव जोग जंगम [2]सवै। तप सुतप्प मध्या सु लिषि ॥ छं० ॥ ३७ ॥

संयोगिता का लय लगा कर पढ़ना और पाठिका का उसे पढ़ाना।

दूहा ॥ लय लग्गिय भग्गीय गुन। अति सुंदर तिन साथ ॥
एक मत्त दस अग्गरिय। विनय पढ़ावत गाथ ॥ छं० ॥ ३८ ॥
इक सत पंचत अग्गरी। राज कन्य रज रूप ॥
तिन मध्धे मध्यात में। काम विराजत भूप ॥ छं० ॥ ३९ ॥
तादिन तें द्वै दुजन बर। पढ़िय सु शास्त्र विचार ॥
उन आरंभ अरंभ करि। आप सपत्तिय बार ॥ छं० ॥ ४० ॥

एक दिन ब्राह्मणी का अपने पति से संयोगिता के विषय में प्रश्न करना।

आय सपत्तिय बाल बर। बेदिषि चष सह बाल ॥
मानौ रस अलि अलिनि कौ। लै आयहु ग्रह काल ॥ छं० ॥ ४१ ॥

(१) ए. कृ. को.-सद्दिय।　　　　(२) ए. कृ.-वसें।

पढ़ि संजोग संजोग हत। विजय सु देवह दाव॥
चढ़ह चक्र सु बेन बत। दिषि संजोग अनहाव॥ छं०॥ ४२
जाम एक निसि पच्छिली। दुजनिय दुजवर पुच्छि॥
प्रात अप्प घर दिसि उड़े। जे लच्छिन कहि अच्छि॥ छं०॥ ४३॥

ब्राह्मण का संयोगिता के भविष्य लक्षण कहना।

कवित्त॥ इन लच्छिन सुनि बाल। त्रिपति करि रुधिर प्रकारह॥
बहु छचिय भुझिहैं। रुंड हरि हार अधारह॥
गिद्ध सिद्ध वेताल। करै क्रत्यह कोलाहल॥
इह लच्छिन सुनि सब। बाल लच्छित जिन चाहल॥
संजोग फूल फल नन दियन। ए कन्या जिम प्रथम तिम॥
कलहंत राज छची सुबर। भविस बात होवै सु तिम॥ छं०॥ ४४॥

दूहा॥ तिन कारनहीं अख्य गुन। भुगति मुगति सह देन॥
सो कन्या पहुपंग कै। आय सपत्तिय मेन॥ छं०॥ ४५॥
जयति जग्य संजोग वर। दिषि अंगन लष चार॥
एक अलष्यन भिन्नहै। सो कलहंतर सार॥ छं०॥ ४६॥
कलहंतरि सुंदरिय वर। अति उतंग छिति रूप॥
तिन समान दुज पिष्य कैं। मदन लभ्भ तन [1]भूप॥ छं०॥ ४७॥

गीतामालची॥ लषि लषित अच्छिर, सषिन सच्छिर, नमित गुरजन, अंगुरं।
लहु गुरु सुमंडित, अगन छंडित, दूह गाह, समुद्दरं॥
सक [2]सगन संचित, अगन बंचित, जगन मगन, प्रबंधयं॥
उग्गाह गाह, विगाह चंचल, मह्न मिह्नचल, छंदयं॥ छं०॥ ४८॥
छिति छच बंधति, चित्त चित्त, सु नगन निंधति, अभयं॥
हरि हरय अंसय, विमल वंसय, रूप गंसय, अंसयं॥
सुभ अलस साटक, काम हाटक, भाष घटक सु संचयं॥छं०॥४९॥
संजोग जोगय, सुमति भोगय, अप्पि जोगय, भोगयं॥
इन काल बिद्धं सब्ब सिद्धं, एक दोष संजोगयं॥

---

(१) को.-सूल। (२) को.-लगन।

मय मंत मंतिय, कांम कंतिय, विज्ज जंतिय उच्चयं ॥
जं कहैं अच्छरि, पढ़ै तच्छिर, लिषै नच्छिर, मंडियं ॥
छं० ॥ ५० ॥

पाषान लीहं, दीह तीहं, काम सीहं, विच्छुरै ॥
कवि करै कित्तिय, मत्ति इत्तिय, जीह तित्तिय, उच्चरै ॥
छं० ॥ ५१ ॥

संयोगिता का मदन वृद्ध ब्राह्मणी के घर पढ़ने जाना और संयोगिता का योवन काल जान कर ब्राह्मणी का उसे विनय मंगल पढ़ाना ।

कवित्त ॥ मदन वृद्ध बंभनिय । ग्रेह हिंडोल संजोगिय ॥
कनक डंड परचंड । इंद्र इंद्रिय बर जोइय ॥
परहि लत्त हिंडोल । दुजन उप्पम तिन पाइय ॥
कनक षंभ पर काम । चंद चकडोल फिराइय ॥
लग्गें नितंब बेनिउ [१]वढ़ि । सो कवि इह उप्पम कही ॥
सैसव पयान कै करतही । कामय [२]वग्गी कर गही ॥ छं० ॥ ५२ ॥

अरिल्ल ॥ पुत्त अंब कदंब कुरंगा । तै किरपल पछै अनभंगा ॥
चकित बत्त सुनि बाल प्रकारं । सह सुंदरि सोभत सिरदारं ॥
छं० ॥ ५३ ॥

दूहा ॥ सजि सु पंग बर व्याह क्रत । बहु रचना गुन लाहु ॥
बाल सु वय जिम बाल मुन । त्यों समुझै गुन चाह ॥ छं० ॥ ५४ ॥

कवित्त ॥ एक सु पुत्तिय पंग । देव दक्षिन देवग्रह ॥
मेनहीन माननी । हीन उपजै अरंभ कह ॥
मनमोहन मोहनी । निगम करि बत्त प्रकारं ॥
आसमान इच्छियै । नाग नर सुर नहिं [३]भारं ॥
अष्यौ उमाह मंगलविनय । ध्रम्म सकल जिम सुगति मति ॥
सुनि मत्ति गत्ति रत्तिय सुबर । विधि विधान निरमान गति ॥
छं० ॥ ५५ ॥

(१) ए. कृ.-बेनी उवढि । (२) ए. को.-काम अंगी । (३) ए.-नारं ।

अथ विनय मंगल पाठ का प्रारम्भ।

बचनिका॥ मदन वृह्म बंभनी संजोगिता कौं विनय मंगल
पढ़ावति है सु कैसो विनय मंगल॥

दूहा॥ सुकल पच्छ बंभनि सुकल। सुकल सु जुवति चरित्त॥
बिनय विनय बंभनि कहै। बिनय सु मंगल वृत्त॥छं०॥५६॥
* मुगध [1]मुद्ध प्रौढ़ा प्रकृति। सुबर बसीकर चित्त॥
सुनि विचित्र बाला विनय। श्रवन सबहिन चित्त॥ छं०॥ ५७॥

विनय मंगल की भूमिका।

चोटका॥ प्रथमं उठि प्रात मुषं दरसं। उतमंग सुअंग पयं परसं॥
विनया गुन तुच्छ विभच्छ मनं। हरहं जय काम सु ताम मनं॥
छं०॥ ५८॥
ग्रह गामिय रेनि परप्परसं। प्रगटी तय भावन ताम रसं॥
द्रिग द्रप्पन लैह बदन्न [2]हसं। प्रति प्रीतय चारु चषं दरसं॥
छं०॥ ५९॥
भय कामिनि काम मनं हतलौ। सिषि नासिष पानि कुअहृत जौ॥
मन हत्ति सु गत्ति मनं गहनं। रह रत्त सु व्रत्त बरं बहनं॥
छं०॥ ६०॥
जियवं जिय रस्स रसं रसनं। भय भीर उहत्त पयं बसनं॥
परि पिम्मह पिम्म सबक्क कसं। अह ईजह दिट्ठित हीय [3]ससं॥
छं०॥ ६१॥
भुगतं बर अंन वरं विनयं। प्रथमं निज काल ग्रिहं गननं॥
भव रूप विरूप तनं लहनं। अनि ईस ननीस समं वहनं॥छं०॥६२॥
अनि पूज न आप न ईसगनं। पति पूज मनोरथ लभ्भि मनं॥
पिय दिष्षहि दिष्षि सुगद्ध मनं। वय बद्धिय ताम सुकाम बनं॥
छं०॥ ६३॥
बसनं रुचि पीय सुकीय घरं। तन मंडन भूषत ताम करं॥

---

(१) ए.-मुद्ध। * यहां से मो.-प्रति का पाठ पुनः आरंभ है।
(२) ए. कृ. को.-इसं। (३) मो.-सरसं।

महनं रस सार श्रृंगार बनं। गति गंठिय ग्रंथ सु काम मनं॥
छं० ॥ ६४ ॥

इति गत्ति चरित्त सुधाम धरं। सु जितै पिय कंत अधीन करं॥
छं० ॥ ६५ ॥

पति का गौरव कथन।

दूहा ॥ जो बनाय बनिता विनिय। सषी न मंगल माल॥
सषि आग्रह मानै नहीं। पिय छंडै ततकाल॥ छं० ॥ ६६ ॥
उच निस बस दूती ग्रहन। [1]सषिन विलंब न बग्ग॥
पियन पियहि अंतह करन। करहित सुभग [2]अभग्ग॥ छं० ॥ ६७ ॥
धं धीरज विरहै बनह। आतमेह अप सिद्ध॥
तं तन मन मान न धरहि। करै सु कामह विद्ध॥ छं० ॥ ६८ ॥

स्त्रियों की पति प्रति अनन्य प्रेम भावना।

मुरिल्ल ॥ तूं धनयं मनयं तुम्र [3]मत्तिय। तूं हियं जियं तुम्र गत्तिय॥
तू बरयं धरयं तुम्र तत्तिय। तू पियं नियं निज रत्तिय॥छं०॥६९॥
तूं ग्रहयं नरयं नय नत्तिय। तूं गनयं अपयं जक जत्तिय॥
तूं सहयं बसयं घन घत्तिय। तूं दियं छियं छवि छत्तिय॥
छं० ॥ ७० ॥

तूं सहयं दुहयं दुह कत्तिय। तूं विनयं दिनयं दिन गत्तिय॥
तूं तपयं अपयं अप नत्तिय। तूं सययं नययं सय सत्तिय॥
छं० ॥ ७१ ॥

पाठिका का उपरोक्त व्याख्या को दृढ़ करना।

कवित्त ॥ विलसि भाइ भामिनिय। जाम जामिनिय प्रमानहि॥
विलसि काम कामिनिय। ताम तामिनिय प्रमानहि॥
हौं सुबंभ बंभनिय। रंभ रंभाम सिषावन॥
श्रवन मूढ़ मन मूढ़। रूढ़ रंजन गहि दावन॥

(१) मो.-सखिय। (२) मो.-अभंग। (३) ए. कृ. को.-मुत्तिय।

तन तुंग द्रुग्ग उग्रह हिम सु। सुनि सु बाल हर धवलु [१]हन ॥
चंदनह चारु चंदन कुसुम। तन विषान चिग्गुन पवन ॥छं०॥७२॥

विनय भाव की मर्य्यादा गौरव और प्रशंसा।

जुगति न मंगल विना। भुगति विन भ्रंकार धारी ॥
मुगति न हरि बिन लहिय। नेह बिन बाल हथारी ॥
जल बिन उज्जल नथ्थि। नथ्थि न्त्रिमान ग्यान बिन ॥
किति न कर बिन लहिय। छिति बिन सत्त लहिय किन ॥
बिन मात मोह पावै न नर। बिनय बिना सुष ग्रसिन तन ॥
[२]संसार माह विनयौ बड़ौ। विनय बयन मुहि श्रवन सुनि ॥
छं० ॥ ७३ ॥

सुआ सार विनय का एक आख्यान वर्णन करता है और रति और कामदेव उसे सुनते हैं।

दूहा ॥ [३]निकट सुकी सुक उच्चरय। कर अवलंबित डार ॥
मवरिय अंब [४]सु अंब लगि। सुनत सु मारनि मार ॥छं०॥७४॥
विनय साल [५]सुक सुकनि दिषि। सर संभरिय अपार ॥
मानो मदन सुमत्त की। विधि संजोगि सु सार ॥ छं० ॥ ७५ ॥

मान एवं गर्व की अयोग्यता और निन्दा।

साटक ॥ मानं भंजन नेहमान [६]न्त्रगुना, सज्जन सा दुर्ज्जनं ॥
मानं छंदय तोरनेव जुरयं, मानेव मंदं पिमं ॥
मानं छंदय तोरनेव गुनयं, मानेपि नह्यं बुरं ॥
दूक्कं मानय बार भारथ गुरं, आवंत मानं लघुं ॥ छं० ॥ ७६ ॥

दूहा ॥ न भवति मान संसार गुन। मान दुष्ष को मूल ॥
सो परहरि संयोग तूं। मान सुहागिनि [७]हूल ॥ छं० ॥ ७७ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुनइ। (२) ए. कृ. को.-सारसा।
(३) ए. कृ. को. निकर। (४) ए. कृ. को.-नंत।
(५) मो.-विनय सार सुक्कीय दिषि। (६) मो.-त्रगुना। (७) मो.-मूल।

विनय का गौरव ।

एक विनय गरुअंत गुन । अव्वह विनयति सार ॥
सीतल मान सु जंपियै । तौ दन दभ्भै [1]तुसार ॥ छं० ॥ ७८ ॥

विनय की प्रशंसा और उसके द्वारा स्त्रियोचित साधनों का वर्णन ।

विनय महा रस अंतिगुन । अवगुन विनय न कोइ ॥
जोगीसर विनय जु पढ़ै । मुगति सलभ्भै सोइ ॥ छं० ॥ ७९ ॥
विनय नहीं जौ पंषियन । तह नहिं दोष दिपंत ॥
फल चष्षै पत्तइ हतें । मानय गुनय गहंत ॥ छं० ॥ ८० ॥
एकै विनय सभग्ग गुन । तजत न विनय अरिष्ट ॥
जाने घर सूना हुआ । भोइ नता करि मिष्ट ॥ छं० ॥ ८१ ॥
मो पुच्छै जौ सुंदरी । तौ जिन तजै सुरंग ॥
जिम जिम विनय अभ्यासिहै । तिम तिम पिय मनपंग ॥ छं० ॥ ८२ ॥

कवित्त ॥ विनय देव रंजिये । विनय बहु विद्य देइ गुर ॥
विनय द्रव्य लहि सेव । विनय विष तजै अप्प सुर ॥
विनय दत्त अदतार । विनय भरतार हार उर ॥
विनय करह करतार । विनै संसार सार सुर ॥
वय चढ़त चढ़ै विनया सुबर । सब शृंगारति भार वपु ॥
बंभनिय भनै संजोग सुनि । विनय बिना सब आर तपु ॥ छं० ॥ ८३ ॥

चौपाई ॥ बंभनियं भनियं संजोई । वयसंध्या सु सुधा बुधि भोई ॥
तूं सक सौतिन पिय बसि होई । विनय सुबुद्धि देहि बुधि तोही ॥
छं० ॥ ८४ ॥

दूहा ॥ विनय उचारन चाचु, मुष । दिष्षिय सारन सार ॥
कामत्तन सुद्धै सगुन । कंत करै उरहार ॥ छं० ॥ ८५ ॥

चंद्रायन ॥ काम धरा धरकंत सुरत्तौ । तब संजोगिनी बोल्ल अहित्तौ ॥
[2]अच्छिर छंद सु चंद विरत्तौ । सक्करया पय मुब्बह पित्तौ ॥ छं० ॥ ८६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-तुषार ।   (२) ए. कृ. को.-अछिर छंद सुछन्द सु विंत्ती ।

गाया ॥ मुष पित्ती पति रोगै। लग्गै विषमाइ सक्करं मुषयं ॥
अंतुर पये सुबाले। कामं रत्ताय मोहनो धरयं ॥ छं० ॥ ८७ ॥

उपरोक्त कथनोपकथन के प्रमाण में एक संक्षेप आख्यान।

कवित्त ॥ एक काल सुंदरी। दोइ भगनी अधिकारी ॥
एक मान सङ्ग्यौ। एक वनिया विचारी ॥
जिन चय किन्नौ मान। सुष्य तिन देह न लद्धौ ॥
अंतकाल संग्रहै। चित्त तन मोह विलुद्धौ ॥
शामंति अंति सा गत्ति हुई। ता मत्ती सारन [१]सुबर ॥
जरह नरक बहु भोगि कै। जम्म लम्भ पसु पंषि [२]तर ॥छं०॥८८॥

स्त्रियों के लिये विनय धारणा की आवश्यकता।

दूहा ॥ जिन चिय लभ्यौ विनय रस। सुष लद्धौ तन मंझ ॥
विनय बिना सुंदर इसी। बिन दीपक ग्रह संझ ॥ छं० ॥ ८९ ॥

कवित्त ॥ ज्यों विन दीपक ग्रेह। जीव विन देह प्रकारं ॥
देवल प्रतिम बिहून। कंत बिन सुंदरि सारं ॥
लज्या बिन रजपूत। बुद्धि बिनु भोग न जानिय ॥
बेद बिना बर विप्र। करन बिन कित्ति न ठानिय ॥
विनय बिना [३]सुंदरि अधम। कंत देइ दूनौ सु दुष ॥
संजोगि भोग विनयौ बड़ौ। लहै विनयमंगल सुसुष ॥छं०॥९०॥

विनयहीन स्त्री समाज में सुशोभित नहीं होती।

गाथा ॥ [४]बेदयौ बंचितं विप्रं। भेषजं बहु लोइ ग्रंथयं गुनयं ॥
सब अंजार सु जानं। अुन्हाई मेव जानयं तत्तं ॥ छं० ॥ ९१ ॥
तं तू विनय विहूंनी। यु दिट्ठाइ सुंदरी तनयं ॥
यो [५]वासंतति काल। पत्त बिना तरवरं रचयं ॥ छं० ॥ ९२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुबरयं।
(२) ए. कृ. को.-तन।
(३) ए. कृ. को.-सुघर।
(४) ए. कृ. को.-बेदया बंचित विप्पौ।
(५) मो.-यौ बासंत सुकालं।

दूहा ॥ बहु लज्जा कहि आत प्रिय। तन मंडन अवलान ॥
[1]काल बंसंत ह बाल ग्रह। सो मतिमंत सुजान ॥ छं० ॥ ९३ ॥

एक मात्र विनय की प्रशंसा और उपयोगिता वर्णन।

कवित्त ॥ विनय सार संसार। विनय बंध्यौ जु जगत सब ॥
विनय काल निकाल। विनय संसार सूर [2]अब ॥
विनय बिना संसार। पलक लभ्भै न सुष्य तनु ॥
जहां जाइ सो रिप्प। ग्राह संग्रह्यौ देह जनु ॥
नृप रीति विनय लग्गी रवनि। विनय उचारन चार रस ॥
विनय बिना सुंदरि इसी। सुपन होइ उद्यान [3]जस ॥ छं० ॥ ९४ ॥

सोरठा ॥ विनय तरुन अरु बाल। विनय होइ जुग्गन दिनन ॥
तौ पर्स्से प्रतिपाल। विनय सु हृदय बंधि रस ॥ छं० ॥ ९५ ॥

दूहा ॥ भरत भाम तारन सुरस। विनय भाष जस साष ॥
जिम जिम विनय सु संग्रहै। तिम लभ्भै अभिलाष ॥ छं० ॥ ९६ ॥

कवित्त ॥ विनय सार संसार। विनय सागर रसधारी ॥
विनय उतारन पार। मुक्ति अप्पन अधिकारी ॥
विनय लहै सब जुगति। विनय बिन भक्ति न होई ॥
विनय सुरस उच्चार। पार कहुन रस होई ॥
गुनवंत निगुन सग्गुन अगुन। विनय बिना तन बालयौ ॥
गुन बिना धनुष क्रम बिन सुफल। [4]उभभ्भर मठ देवालयौ ॥
छं० ॥ ९७ ॥

दूहा ॥ विनय सुबंधी सुबुध हिय। जौ सुष चाहत बाल ॥
विनय न छंडय सुंदरी। तिन पंनन प्रतिपाल ॥ छं० ॥ ९८ ॥

गाथा ॥ बाले विनयति सारं। देहं मध्य तत्त ज्यौ जीवं ॥
त्यों जीवं सुष देही। विनय बिना बालयं गेहं ॥ छं० ॥ ९९ ॥

दूहा ॥ विनय सुरस बंभनि कहै। पढ़न सुपंग कुंआरि ॥
बलह बसि दूजैं सुबल। तौ बसि बलह सु नारि ॥ छं० ॥ १०० ॥

---

(१) मो.-काल बसैं तरु बालग्रह। (२) मो.-रस, कृ. को.-सब।
(३) मो.-लस। (४) ए. कृ. को.-उज्जर मढ़।

प्रथम सुरस इथ्थै अपन । तो इथ्थै अप पीव ॥
सुनि संजोग सजोग है । जोव दै लीजै जीव ॥ छं० ॥ १०१ ॥

कवित्त ॥ निकट सुष्ष संजोग । पीय अप्पन बसि होई ॥
सोइ विनय सजोग । तीय पिय बदन न जोई ॥
सोई विनय सजोग । अप्प छाडै विषया रस ॥
सोई विनय संजोग । दई किज्जै अप्पन बसि ॥
सोइ एक विनय जौ तूं पढ़ी । बढ़ी भत्ति चढ़ि चंद त्रिय ॥
रति छंडि मान क्रिमवीय त्रिय । तो ग्रह जोवन संचलिय ॥
छं० ॥ १०२ ॥

कं बसि कीनी कंत । विनय बंध्यौ परिमानं ॥
जिम जिम विनयति बढ़ै । सुष्ष तिम तिम सरमानं ॥
विनय नेह तन सजल । सिंचि सुष बेलि बढ़ावै ॥
फल अम्रत संग्रहो । मान सब कहीं दिढ़ावै ॥
सो विनय बिना नारीन क्यौं । बिनय बिना संसार सह ॥
पसु पंषि जीव जल थल जिमय । विनय बिना संयोग वह ॥
छं० ॥ १०३ ॥

गाथा ॥ सम विस हर विस गंत्तं । अप्पं होइ विनय बसि बाले ॥
षट नवरस दुष सद्दें । गारुड़ बिना मंच साझरियं ॥
छं० ॥ १०४ ॥

कवित्त ॥ विनय सथ्थ जस जीव । विनय भोगवन सुष्ष वर ॥
विनय देन रसपान । विनय आचरन अम्रत धर ॥
अह रयनि अंतरै । विनय सुंदरि अभ्यासै ॥
मान नेह संग्रहै । मान भंजै गुन भासै ॥
इम बिनै बाल मुक्कै न तूं । सुनहिं सुकी सुक श्रवन कथ ॥
लच्छिन सहज्ज अरु विनय गुन । दिषित माल उप्पर सुतथ ॥
छं० ॥ १०५ ॥

दूहा ॥ विनय पच्यौ संजोग सुभ । तन में विनय सुभंत ॥
ज्यौं जल बलि जलहीं जियै । विनय जियै बर कंत ॥ छं० ॥१०६॥

इति विनय मंगल कांड समाप्त ।

चंद्रायन ॥ सुनि संजोग सिषावन सावन संभरिय ।
हीय हितानिय पीर न पावै बंझरिय ॥
गुर [1]गुज्जं नन कन्न जमावन जुग्ग हुअ ।
अच्छिर अथ्थ प्रमान विराजत मभ्भभ धुअ ॥ छं० ॥ १०७ ॥

ब्राह्मणी का रात्रि को पुनः अपने पति से संयोगिता के विषय में पूछना और उसका उत्तर देना ।

मुरिल्ल ॥ सुंधरता तर रत्तिर रत्तिय । दुज्ज दुजानौ वत्तर मत्तिय ॥
प्रेग प्रियं रज राजन मंडिय । जौहा जाम उभै षट [2]षंडिय ॥
छं० ॥ १०८ ॥

दुजी का दुज से कथा कहने को कहना ।

कवित्त ॥ मदन हद्द बंभनिय । मार माननिय मनोवसि ॥
कामपाल संजोग । विनय मंगलति पढ़ति रस ॥
तहां सहारंतर एक । अंग अंगन घन मौरिय ॥
सुक पिक पंषि असंष । बसहि वासर निसि घोरिय ॥
इक वार दुजी दुज सों कहै । सुनहि न पुन्न अपुब्ब कथ ॥
उतकंठ बधै मन उल्लसै । रहहि नींद आवै [3]सुनत ॥ छं० ॥ १०९ ॥

दुज का उत्तर ।

दूहा ॥ दुज फुनि दुजि सों उच्चरिग । कहि राजन बर बत्त ॥
जाग भोग जुद्धह जुरन । करन सु कारन हित्त ॥ छं० ॥ ११० ॥

पृथ्वीराज का वर्णन ।

कवित्त ॥ एक राव संभरीय । दुतिय जोगिनि पुर भूपति ॥
तेज मौज अजमेर । उअर उहारति मूरति ॥
वान मध्य वय मध्य । मध्य मह महि तन मोचन ॥

(१) ए. कृ. को.-गुज्झंनन ।
(२) मो.-घट पंडिय ।
(३) ए. कृ. को. सुनत ।

छिति छितान धर ब्रम्म। ग्राम धर हिय रति रोषन ॥
ऋषि देव देव मंडल सभा। इक इक अष्पि अषंडलिय ॥
सुरतान बंधि षुरसान रति। मंत अषंड सुदंड लिय ॥ छं० ॥१११॥

कथा सुनते सुनते ब्राह्मणी का निद्रामग्न होजाना।

दूहा ॥ सुनत कथा अछिवत्तरी। गइ रत्तरी विहाय ॥
दुज्ज कह्यौ दुजि संभल्यौ। जिहि सुष श्रवन सुहाय ॥ छं० ॥ ११२॥
होत प्रात तब पठन तजि। धाइ हिंडोरन आइ ॥
इह चरित्त दुज देषि कै। पछ जुग्गिनिपुर जाइ ॥ छं० ॥ ११३ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके संयोगिता कौ विनय मंगल वरननो नाम छियालीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४६ ॥

अथ सुक वर्णन लिष्यते ।

(सैंतालीसवां समय ।)

संयोगिता का यौवन अवस्था में प्रवेश ।

दूहा ॥ मदन छत्र ग्रह बंभनिय । पढ़न कुँआरिक हंद ॥
बार बार लोकन करहि । जिम नछिच बिच चंद ॥ छं० ॥ १ ॥
बालप्पन अप्पान सुष । सुष्य कि जुव्वन मैंन ॥
सुभर श्रवन साषिन करहि । ढुरि ढुरि पुच्छत मैंन ॥ छं० ॥ २ ॥
[1]स्लोक ॥ प्राप्तं च पंग ग्रेहं । अग्ग्य [2]जापय होमनं ॥
तब बंधं दंड देहा । राजा मध्य महावत् ॥ छं० ॥ ३ ॥

शुक और शुकी का दिल्ली की ओर जाना ।

हनूफाल ॥ इति हनुफालय छंद । गुरु च्यार नभ जिम चंद ॥
उड़ि चले दंपति जोर । चित्तइ स [3]पिथ्थह ओर ॥ छं० ॥ ४ ॥

शुक का ब्राह्मण के वेष में पृथ्वीराज के दरबार में जाना ।

जित संभरी हतयान । बर मंच इष्ट संमान ॥
पते सुढिल्लिय थान । अपभेद किय परिमांन ॥ छं० ॥ ५ ॥
नरभेष धरि साकार । दुज भेज मुक्कौ सार ॥
दिषि ब्रह्म भेस अकार । किय मान अर्ध अपार ॥ छं० ॥ ६ ॥

ब्राह्मणी का संयोगिता के पास जाना ।

दूहा ॥ सोई दुज दुजनी करै । बहु तरवर उड़ि जानि ॥
सो सहार संजोग किय । तीयह रम्य सु थान ॥ छं० ॥ ७ ॥

दुज का पृथ्वीराज से संयोगिता के विषय मे चर्चा करना ।

---

(१) अन्य प्रतियों में गाथा करके लिखा है ।
(२) ए.-आयं ।   (३) को.-कृ.-पिथ्थिह ।

कवित्त ॥ कहै सु दुज दुजनीय। सुनौ संभरि न्रप राजं ॥
तीन लोक हम गवन। भवन दिष्षे हम साजं ॥
जं हम दिष्षय एक। तेह नभ तड़िक अकारं ॥
मदन बंभनिय ग्रेह। नाम संजोगि कुमारिं ॥
सित पंच कन्य तिन मध्य अव। अवर सोभ तिन समुद वन ॥
आकास मद्धि जिम उडगनिन। चंद विराजै मनों भुवन ॥छं०॥८॥
दूहा ॥ मदन चरित्त सु बंभनिय। मदन कुंआरि सु अंग ॥
सोइ बत्त कनवज्ज पुर। पंग पुत्ति मम चंग ॥ छं० ॥ ९ ॥
गाथा ॥ अप्पन तन छवि दिष्षं। सिष्षं मैदाइ दुष्पनो जीवी ॥
दुष्षं संभरि राइं। कहियं आज आगमं नीरं ॥ छं० ॥ १० ॥
दूहा ॥ अप्पन तन छवि देषि कै। सुष भरि दिष्षी नाहि ॥
दुष्ष संभरिय अनूरँग। वर ओपम नहिं ताहि ॥ छं० ॥ ११ ॥
कवित्त ॥ भाजन अग्गि उतिष्ट। मध्य चमकंत गरिष्टं ॥
मिलि मषच भंजनं। नाभि दिव चरित सु मिष्टं ॥
धन्नि धन्नि उच्चार। कह्यौ रषि जरजित नामं ॥
गरभ जुन्हाइय जाइ। होइ सुष किति सु तामं ॥
जैचंद पुत्ति कलहंत गति। विधि अनेक हनंन करिय ॥
कनवज्ज वास गंगा सु तट। संत सुमंत सु विस्तरिय ॥ छं० ॥ १२ ॥

संयोगिता की जन्म पत्रिका के ग्रह नक्षत्रादि वर्णन।

दूहा ॥ इह कहंत गुरराज न्रप। जनम पत्रिका बाल ॥
जन्म सुषादी उच्चरिय। को ग्रह उंच रसाल ॥ छं० ॥ १३ ॥
कवित्त ॥ दुजनी दुज पुच्छयौ। दुज्ज दुजराज कवथ्थै ॥
मंगल बुध गुरु सक्र। सन्नि सोमार चवथ्थै ॥
केइंद्री गुर केत। राह अष्टम अधिकारिय ॥
इन मच्छिच दुज कहै। देव जगि पंगह डारिय ॥
निरमान रंभ अवतार धरि। काम गनं गुन विस्तरिय ॥
कलहंत नाम कलि जुग्ग मद्धि। बर बंछै सोइ संभरिय ॥ छं०॥१४॥
स्लोक ॥ जन्मस्य पंचमो चैव। राहकेतं नक्षचया ॥
पंगानी च जया पुत्री। मूल भारथ्य मंडिनी ॥ छं० ॥ १५ ॥

छः महीने में विनय मंगल प्रकरण का समाप्त होना ।

दूहा ॥ इह कहंत षट मास गय । लिषि अंकूरा बाल ॥
पच्छ दीय बर काढ़ि कै । लिषि जनमोति रसाल ॥ छं० ॥ १६ ॥

विनय मंगल समाप्त होने पर ब्राह्मणी का संयोगिता से पृथ्वीराज और दिल्ली के सम्बन्ध की कथा कहना ।

पद्धरी ॥ लिषि छंद बंध जनमोति ताम । तिहि दीह धन्यौ बर वाम काम ॥
तिन दिना तुच्छ हर नयन काज ।जानियै वीर बाला विराज ॥
छं० ॥ १७ ॥

तन त्रिगुन भए देवत्त लाज । आवंत लाज की लाज साज ॥
दिन धरउ पढ़न जंपन सुबाल । मंगलति विनय मंगल बिसाल ॥
छं० ॥ १८ ॥

अनंगपाल के हृदय में वैराग उतपन्न होने का वर्णन ।

इह पढ़हि बाल अप ग्रेह थान । ढिल्ली नरिंद कग्गर सु ताम ॥
बरजै न कोइ मंची प्रमान । जिन देहि भुम्मि दुरजनति दान ॥
छं० ॥ १९ ॥

सिंगार संग अनगेस राज । पायौ न पुच फल नीठ साज ॥
सत्तरिरू सत्त वर्षह रसाल । पयौ सुदीह अन्नं सु काल ॥छं०॥२०॥
आना नरिंद तस वंस राज । चिंत्यौ जु अप्प दोहित्त काज ॥
चिंतिय अचिंत मनि मित्त मित्त । जंघार भीम ओड़न विअत्त ॥
छं० ॥ २१ ॥

अनगेस ईस अनगेत पुज्ज । लिषि भोज बंध प्रारंभ कज्ज ॥
छं० ॥ २२ ॥

दूहा ॥ अनग सपत्ता कथ्य कथि । सोधि सु बंधव बीर ॥
करि अप्पन तिथ्थह गवन । को साधंन सरीर ॥ छं० ॥ २३ ॥

मंत्रियों का अनंगपाल को राज्य देने के लिये मना करना ।

चोटक ॥ मय मंत गुरू दस हार पयौ । लहु कंकन चामर तीन नयौ ॥
षट हाटक चोटक छंद बली । सु कही कविचंद उपंग भली ॥छं०॥२४॥

जिन ठौर बरंजत मंच पथं। नन मानिय राज कथा न कथं ॥
भिरि भंजय रंजय प्रग्ग सबै। जिन आइ सु तिथ्य अनंग अबै ॥
छं० ॥ २५ ॥

धर रषिय लच्छि सुमंत मनं। उपजै तिम मद्धि विकार सनं ॥
ग्रत काम कला लषि षोडसयं। बरदाइ कहै सोइ देवतयं ॥
छं० ॥ २६ ॥

अरिल ॥ उत्तर दिसि चौरह उञ्चाई। कागद लिषि प्रोहित बधाई ॥
तब राजंन सुनत सै लग्गी। बढ़ि आनंद हृदय तब जग्गी ॥ छं०॥२७॥

अनंगपाल का पृथ्वीराज को राज्य देदना।

भुजंगी ॥ लवं चित्त चिंता सुचिंता बिचारी। ननं मंच मानै गुरं धीर कारी ॥
चवं चिंत चिंता अचिंता प्रमानं। मयं बीर बीरं लघू दिव्य पानं ॥
छं० ॥ २८ ॥

प्रथीराज राजंत दोहित्त पुत्तं। तिनं बंस मातुल्ल अति प्रीत पत्तं ॥
भलक्के अँगूरं लिषे पेषि हथ्थं। हितं राज चंगं अनंगेस पुत्तं ॥
छं० ॥ २९ ॥

पृथ्वीराज की कूटनिति से प्रजा का दुःखित होकर अनंगपाल के पास जाना।

दूहा ॥ आइ संपते लोग बर। संभ धरद्धर काज ॥
नवन रीत राजस कही। जानि कुलंगम बाज ॥ छं० ॥ ३० ॥

अनंगपाल का पुनः वदरिकाश्रम को चला जाना।

कवित्त ॥ संचरि सौच सुहत्त। राज पत्तौ सु धाम न्रप ॥
फल सु प्रीति हित हेम। सेत दिष्षयौ रजक अप ॥
अनंग पाल छितिपाल। मुक्ति चल्ल्यौ सु तिथ्य श्रम ॥
हेवर चीर रतंन। गयो बदरी सुहत्त क्रम ॥
यों मिले सब्ब परिगह न्रपति। ज्यों जल झर बोहिथ्थ फटि ॥
दिसि दिसा चार अचरिज्ज बर। बजि निसान नीसान घटि ॥
छं० ॥ ३१ ॥

गाथा ॥ ऐरापति फनिगंगं । चामर मराल मालती पहुयं ॥
ता चंबीय प्रमानं । उज्जल कित्तीय सोमजा सूरं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

दसों दिशाओं में सुविस्त्रित पृथ्वीराज की उज्वल कीर्ति का आकाश में दर्शन होना ।

अति कित्ती अति उज्जली । बरने वा चंद्यो कब्बी ॥
जानिज्जै परिमानं । राजानं संमयो नथ्यिं ॥ छं० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ वह मंडल न्त्रप देषि कै । चंद सु ओपम पाइ ॥
मानौ चंद सरह कौ । संग उड्डग्गन आइ ॥ छं० ॥ ३४ ॥

है दुज्जनि दुज उत्तरह । दुह्ह रूप चमकंत ॥
कोइ कहै प्रतिब्यंब है । को कहै प्रीति अनंत ॥ छं० ॥ ३५ ॥

संयोगिता का वर्णन ।

कवित्त ॥ चंद बदनि म्रगनयनि । भौंह असित को बंक बनि ॥
गंग भंग तरलति तरंग । बैनी भुअंग बनि ॥
कीर नास अगु दिपति । दसन दामिनि दारमकन ॥
छीन लंक श्रीफल अपीन । चंपक बरनं तन ॥
इच्छति भतार प्रथिराज तुहि । अहनिसि पूजति सिव सकति ॥
अध तेरह बरष पदंमिनी । हंस गमनि पिष्षहु न्त्रपति ॥छं०॥३६॥

बारह के बाद और तेरह के भीतर जो स्त्रियों की वयःसंधि अवस्था होती है उसका वर्णन ।

दूहा ॥ तिहि तन बन न्त्रप सों कहै । दुहुं अंतर सिसु बेस ॥
जुब्बन तन उहिम कियौ । बालप्पन घटनेस ॥ छं० ॥ ३७ ॥

बालप्पन तन मध्य वय । गादरि तन चष नूर ॥
ज्यों बसंत तरु पल्लवन । इह उठुन अंकूर ॥ छं० ॥ ३८ ॥

वय बालत्तन मध्य इम । प्रगट किसोर किसोर ॥
राकापति गोधूर कह । आभा उदित ओर ॥ छं० ॥ ३९ ॥

ज्यों दिन रत्तिय संध गुन। ज्यों उष्णह हिम संधि ॥
यों सिस जुव्वन अंकुरिय। कछु जुव्वन गुन बंधि ॥ छं० ॥ ४० ॥
ज्यों करकादिक मकर मैं। राति दिवस संक्रांति।
यों जुव्वन सैसव समय। आनि सपत्तिय कांति ॥ छं० ॥ ४१ ॥
यों सरिता अरु सिंध सँधि। मिलत दुहून हिलोर ॥
त्यौं सैसव जल संधि में। जोवन प्रापत जोर ॥ छं० ॥ ४२ ॥
यों क्रम क्रम बनिता सु बय। सैसव मध्य रहंत ॥
सीतकाल रबि तेज ससि। घामह छांह सुहंत ॥ छं० ॥ ४३ ॥
सैसव मध्य सु जोबनह। कहि सोभा कबिचंद ॥
पाव उठै तर छांह छबि। षोज न नीच रहंत ॥ छं० ॥ ४४ ॥
जीति अंग सैसव सुबय। इह दिष्षिय उनमान ॥
मानों बाल बिदेस पिय। आगम सुनि फुलिकाम ॥ छं० ॥ ४५ ॥
गाथा ॥ यों राजति वय राजं। सैसव मध्येय सोभियं सारं ॥
ज्यों जल जोर प्रमानं। कमलानं कोर उभयं होइं ॥ छं० ॥ ४६ ॥
दूहा ॥ यों सैसव जुव्वन समय। विधि बर कीन प्रकार ॥
ज्यों हथलेवहु दंपती। फेरे फिरिअन पार ॥ छं० ॥ ४७ ॥
यों राजत अवनी कला। सैसव में कछु स्याम ॥
ज्यों नभ परिवा चंद तुछ। राह रेह बल ताम ॥ छं० ॥ ४८ ॥

स्त्रियों के यौवन से वसंत ऋतु की उपमा वर्णन।

पद्धरी ॥ उत्तरन ससिर रति राज नाइ। अइ संधि जिसें निसि संधि पाइ ॥
जुव्वनह अवन सैसव सुनाइ। कछु संक अंग पै निडर ताइ॥छं०॥४९॥
सैसव सुससिर रितुराज थान। मानहिं बसंत जुव्वन न आन ॥
अनमंध मधुप मधु धुनि करंत। पंचहि कटक्क सिसिरह बसंत ॥
छं० ॥ ५० ॥
भुअ नीच नैन नच्चै नवाय। आवंत जुवन जनु करि बधाय ॥
जिम सीत मंद सुगंध बाय। कछु सकुच एम बर कहि पाइ ॥
छं० ॥ ५१ ॥

जुब्बन नवत्त सिसु सरिर मंद। बिरही सँजोग रस दुअनि छंद॥
मीन मन मंत मंझि सुनि बसंत। जुब्बन उछाह सिसु सिसर अंत॥
छं० ॥ ५२॥
अंकुरिन पत्त गब्बरित डार। सिसु मध्य स्याम ज्यों सोमि सार॥
पिय ओर पिया जिम दिष्षि लुक्कि। सिसु मध्य वेस इम आइ ढुक्कि॥
छं० ॥ ५३॥
उर धक्कि सिद्ध सैसव सु सुट्ठ। जिम मैन मोज जुब्बन सउट्ठ॥
कलयंठ कंठ रष्षै संवारि। मिलिहै बसंत करिहै धमारि॥छं०॥५४॥
चिय तरस पुच्छ उट्टीय कोर। जल मीन जाल ज्यों इलत डोर॥
मुक्कलित वाय तरु इलत छीन। त्यों काम तेज चलि नेन मीन॥
छं० ॥ ५५॥
संजोगि अंग जोबन चढ़ंत। तहं उट्ठि समिर आयौ बसंत॥
वयभोग बुद्धि सुंदरि सइज्ज। रितुराज गयै जिम रैनि लज्ज॥
छं० ॥ ५६॥
दूहा॥ जनम सुष्ष जोबन जई। उई सु सैसव ठार॥
संभरि न्वप संभरि धनी। तनह सु भौ रति मार॥ छं० ॥ ५७॥
सर्जि सुपंग राजा सुभर। दिसि दिसि जित्तन वान॥
उभै दिसा बर मंच जित। अट्ठदिसा भर षान॥ छं० ॥ ५८॥

संयोगिता की बड़ी बहिन का व्याह और उसकी सुन्दरता।

कवित्त॥ एक सु पुचिय पंग। दीय दक्षिन सु देव ग्रह॥
मान हीन माननिय। रूप उप्पम रंभा कहि॥
सुबर काम रति बामं। मनों फेरिय सो आनिय॥
कमल अनूपम काज। कछू ओपम मन मानिय॥
लच्छन बतीस वयसंधि हुह। सो ओपम अग वाथ्ययौ॥
चढ़नइ सुमनमथ चित्त रथ। चढ़न मत्ति चित रथ्ययौ॥
छं० ॥ ५९॥

संयोगिता के सर्वाङ्ग शरीर की शोभा का वर्णन।

पद्धरी॥ संजोग संधि जोबन प्रवेस। चितमंडि सुनौ संभरि नरेस॥

श्रीषंड पंक कुंकम सुरंग। मानों सु करी कर मरदि गंग॥
छं० ॥ ६० ॥

उप्पमा नथ्थ आवै न कब्बि। तिन पड़ी छोड़ मयुषन सरब्ब॥
इक अंग उपम कहियै सुदुत्ति। तारकन तेज द्रप्पन सु मुत्ति॥
छं० ॥ ६१ ॥

पिंडुरी अंग झलकत सु रूर। मनु रत्त रंग कंचन कि चूर॥
ओपम्म नथ्थ फिरि कहि उपाइ। कन्नेर कली फूलंत राइ॥
छं० ॥ ६२ ॥

पिंडुरी पाइ सोभंत बाम। अंभ ओन थंभ सोवन्न बाम॥
उर जंघ दंड ओपम निरंग। गज सुंड डिंभ कै ओन रंग॥
छं० ॥ ६३ ॥

नित्तंब तुंग इन भाइ कब्बि। धरि चक्र सँवारि दुज बाम रब्बि॥
नित्तंब भाग उत्तंग छंड। मनु तुलत काम धरि लंक दंड॥
छं० ॥ ६४ ॥

लंकह प्रमान सुट्ठीत षट्टि। बैनी ढलक्क दीसंत पुट्ठि॥
चिंतै सुकब्बि ओपंम ओर। नागिनि सु हेम थंभह सुजोर॥
छं० ॥ ६५ ॥

राजीव रोम अंकुरिय वार। मानों पपील बंधी विसार॥
गति हंस चलत मुक्कत विचार। सिषवंत रूप गहि बंधि भार॥
छं० ॥ ६६ ॥

कुच सरल दरस नारिंग रंग। मरदे कि कुंक कंचन उपंग॥
जोवन प्रसंग इह रूप हद्द। छुर करी हरी मुक्कै मसद्द॥
छं० ॥ ६७ ॥

तब लग्गि होत हम थान मत्ति। जब लग्गि थान सैसव किरत्ति॥
अधवीच बात हम सुनी तास। कहि लेषि लोग आवै न हास॥
छं० ॥ ६८ ॥

कलग्रीव रहे चिवलीय थाह। बैठोति चंद आसनति राह॥
अध अधर अरुन दीसै सुरंग। जानै कि बिंब फल चंद अंग॥
छं० ॥ ६९ ॥

ओपम सुचंद बरदाइ लीन। मनु अगर चंद मिलि संग कीन ॥
मधु मधुर बानि सद सहति रंग। कलयंठ कंठ केकीन संघ ॥
छं० ॥ ७० ॥
बर दसन पंति दुति यौं सुभाइ। मोइक्क चंद जुब्बन बनाइ ॥
नासिक अनूप बरनी न जाइ। मनों दीप भवन न्त्रिघ्घात पाइ ॥
छं० ॥ ७१ ॥
सुंदरि बदन्न इनौ बनाइ। मानों रथ्थरवि दीपह मनाइ ॥
कहां लगि कहों चहुआन बाम। सैसव सुबाल कंपैति काम ॥
छं० ॥ ७२ ॥
अंबुज नयन्न मधुकर सहित्त। षंजन चकोर चमकंत चित्त ॥
बैनीति साल सोभै बिसाल। मनों अरध उरग चढ़ि कनक साल ॥
छं० ॥ ७३ ॥
दूहा ॥ इह सुनि न्त्रपति नरिंद दिन। भय स्रोतान सुराग ॥
तब लगि पंग नरिंद कै। बाजे बाजन लाग ॥ छं० ॥ ७४ ॥

ब्राह्मण के मुख से संयोगिता के सौंदर्य्य की कथा सुनकर पृथ्वीराज का उस पर मोहित हो जाना।

सुनि संजोगि अपुब्ब कथ। पंग चरित्त न काज ॥
मंच मदन बंभनि उभै। जोगिनि मुक्कै राज ॥ छं० ॥ ७५ ॥
जो चरित्र चिंतै मनह। सोई रूपक [1]राइ ॥
न्त्रिप अग्गै हर बंधि कै। कल कनवज्जह जाइ ॥ छं० ॥ ७६ ॥
कवित्त ॥ भय अनंग न्त्रप अंग। स्रवन स्रोतान सु वड्डिय ॥
संभरि संभरिनाथ। पंच बानन तन दड्डिय ॥
मध्य हिय न छिन टरहि। स्रवन मन नैंन निरष्षै ॥
चित्त गयंदह फेरि। रति न मानै बिन दिष्षै ॥
संभरि सुवत्त संभरि न्त्रपति। फुनि फुनि पुच्छै तिन सु कथ ॥
बुधि मदन सु बंभनि केलि सुनि। कुटिल तमकि चढ्यौ सु रथ ॥
छं० ॥ ७७ ॥

(१) ए. राह।

पृथ्वीराज की काम वेदना और संयोगिता से मिलने के लिये उसकी उत्सुकता का वर्णन।

कुटिल तमकि रथ चढ़त। बढ़िय श्रोतान कल न तन॥
निसा दिवस सुपनंत। राज रष्योति मद्धि मन॥
फिरै संजोगिश्र पास। और रस मुक्किलि राजं॥
देउं द्रव्य मन बंछि। जाइ प्रभुधै पिय आजं॥
दुज चलै उड्डि कनवज्ज दिसि। ग्रेह सपत्त बंभनिय॥
चहुआन तेज गुन दुति सबल। सुनत संजोगी तं गुनिय॥छं०॥७८॥

सती का ब्राह्मणी स्वरूप में कन्नौज पहुंचना।

दूहा॥ दुज सबह उच्चै कहै। कब कहि मीषं बैन॥
देषि संयोगि अचिज्ज बहु। तब करि उंचे नैन॥ छं० ॥ ७९ ॥
देषि संयोगि अचिज्ज हुअ। पुच्छत पंम कुमारि॥
कोन देस को भेस भनि। क्यों आवन सु विचार॥ छं० ॥ ८० ॥

यहां पर ब्राह्मणी का पृथ्वीराज की प्रशंसा करना।

पद्धरी॥ सुनि एक राइ संभरि नरेस। षुरसान षान बंधे असेस॥
धनु धनुक धार अज्जुन समान। मनि रतन निद्धि जस आसमान॥
छं० ॥ ८१ ॥
बर तेज ओज जमजोर जोर। अरि छिपै तेज मनु चंद चोर॥
जिन बान तेज गज सुक्कि मद्द। चतुरंग सज्जि चव कलन हद्द॥
छं० ॥ ८२ ॥
इह जोग बीर मुर्वी न बीर। बेधत्त सत्त बर एक तीर॥
कनवज्ज रीति वजि जेय कंध। इह धक्कि राज सह होइ [१]निंध॥
छं० ॥ ८३ ॥
जोगिनी भूप औधूत रूप। कहां कहौं रूप पंषी अनूप॥छं०॥८४॥

पृथ्वीराज के स्वाभाविक गुणों का वर्णन।

(१) ए.-निद्ध।

साटक ॥ लज्जारूपगुणेन नैषध सुतो, वाचा च धर्मो सुतं ॥
वाने पार्थिव भूपति समुद्दिता, मानेषु दुर्योधनं ॥
तेजे सूर समं ससी अभिगुनं, सत् विक्रमो विक्रमं ॥
इंद्रो दान सुशोभनो सुरतरू । कामी रमावल्लभं ॥ छं० ॥ ८५ ॥
दूहा ॥ दुज सुकही उप्पम भली । कथा सु उत्तम रीति ॥
बढ़ि आनंद सु छंद नन । सुनिग रीति सा रीति ॥ छं० ॥ ८६ ॥
दुज्ज दिसा चलिय जु श्रवन । द्रिग अच्छरि दिसि जाइ ॥
मनु सैसव जोवन विचै । बाल बसीठ कराइ ॥ छं० ॥ ८७ ॥

उक्त वर्णन सुनकर संयोगिता के हृदय में पृथ्वीराज प्रति प्रीति का उदय होना ।

जिमि जिमि सुंदरि दुजि बयन । कही जु कथ्थ सँवारि ॥
बरनन सुनि प्रथिराज को । भय अभिलाष कुँआरि ॥ छं० ॥ ८८ ॥
असन सेन सोभा तजी । सुनित श्रवन कुंआरि ॥
मन मिलिवे की रुचि बढ़ी । और न चित्त दुआर ॥ छं० ॥ ८९ ॥
गाथा । अमिए अंमिय बचने । रचने बाल ध्यान प्रथिराजं
गोलक डुलै न यानं । जानै लिप्पि चियं चरितं ॥ छं० ॥ ९० ॥

पृथ्वीराज की कीर्ति का वर्णन ।

मोतीदाम ॥ अमग्गत दान कहै दुज पान । सुनी सुनि माम कथा चहुआन ॥
इकं इक बत्त सबै न्रप पाइ । सबैं चहुआन दुती तन छाइ ॥
छं० ॥ ९१ ॥
सकं बिय विक्रम ज्यों परमान । सतं सत ज्यों सिवरी उन माम ॥
बलह बाह सहस्सयराज । प्रति प्रति काम सु मोचन काज ॥
छं० ॥ ९२ ॥
विधिं विधि भागति पूरन तेज । ससी सस सीतल ज्यों न्रप केज ॥
सति सत्तह ज्यों हरिचंद समान । बलवुद्धि साइर ज्यों उनमान ॥
छं० ॥ ९३ ॥
रसं रज राजत जोति प्रकार । भयंकर भीषम ज्यों करसार ॥

सयंक्रत पालग पंचव जोति। तिनं मति एक अमंतिय कोति॥
छं० ॥ ९४ ॥

प्रतिं प्रति पारथ ज्यों प्रथिराज। करी कबिचंद सु ओपम साज॥
मघवा सुमहीपति कौ बल बीर। तिनै बर विद्र बरष्यत नीर॥
छं० ॥ ९५ ॥

धराधर हिंम सुतं लछिराज। उद्यौ मनु इंद्र सु प्राचिय काज॥
छं० ॥ ९६ ॥

ब्राह्मण का कहना कि चाहुआन अद्वितीय पुरुष है।

दूहा॥ या समान जौ राज होय। तौ कहियै प्रति जोति॥
ना समान चहुआन कौ। तौ कहि ओपम कोति॥ छं० ॥ ९७॥

कंत सुकंति सु दिष्षि इम। दुहु ओतान बढ़ाय॥
दुहु दिसि पंग नरिंद दल। हत्त अहत्त समाय॥ छं० ॥ ९८॥

संयोगिता का पृथ्वीराज से विवाह करने की प्रतिज्ञा करना।

कवित्त॥ सीय लीय हत राम। सुहत नलराज दमंती॥
सिव हत लीनौ सिवा। क्रष्ण हत रुकमनि कंती॥
हत ज्यों काली भर्‍यौ। बीर बाहन शंकर बर॥
ज्यों हत लिय हतभान। भान पत्ती सुमंत वर॥
हत लियौ देव देवत न्रपत। हत संयोगि चहुआन बर॥
बर बरौं एक एकह सु हत। कै चहुआन बिसाल नर॥छं०॥९९॥
मन अभिलाष सु राज। बरन सुंदरी भइय मति॥
जौ तन मध्यें सास। मोहि संभरिय नाथ पति॥
कै कुआंर पन मरौं। धरौं फिरि अंग पहुमि पर॥
तौ राजा प्रथिराज। आन मन इंछ नहीं बर॥
इम चिंत चित्त कुंअरी सु हत। रही भोइ मन मोन अहि॥
कलहंत कोज महि मंडि दुज। अप्प सपत्ते ग्रेह कहि॥छं०॥१००॥
दूहा॥ यों हत लीनौ सुंदरी। ज्यों दमयंती पुव्व॥
कै हथलेवौ पिय करौं। कै जल मध्यें दुव्व॥ छं० ॥ १०१॥

संयोगिता का पृथ्वीराज के प्रेम में चूर होकर अहिर्निशि उसीके ध्यान में मग्न रहना।

मुरिल्ल ॥ बिय पंगानि कुमारि सुमार सुमार तजि।
घरी पहर दिन राति रहै गुन पिथ्थ भजि ॥
भेदं भंजै और जोर मन में लजिहि।
लषि पुच्छहि बिय बत्त न तत्त प्रकास किहि ॥ छं० ॥ १०२ ॥

वसंत ऋतु का पूर्ण यौवनाभास वर्णन।

दूहा ॥ सिसिर समय दिन सरस गत। मधु माधव बल मंडि ॥
भार अष्टदस बेल तरु। पच पुरातन छंडि ॥ छं० ॥ १०३ ॥
नूतन रत मंजरि धरिय। परिमल प्रगटि सुवास ॥
छच रुचिर छबि काम जनु। अलि तुट्टत सुर रास ॥ छं० ॥ १०४ ॥

पद्धरी ॥ आगम बसंत तरु पच डार। उठि किसल नइय रँग रत्त धार ॥
अंकुरित पच गहरति डार। लहलहति अंग अट्ठार भार ॥
छं० ॥ १०५ ॥

मधुपुंज गुंज कमलनि अधीन। जनु काम कोक संगीत कीन ॥
तरु तरनि कूकि कोकिल सभार। विरहिनी दीन दंपति अधार ॥
छं० ॥ १०६ ॥

कलरव करंत षग द्रुमति रोर। निसि बीति सिसिर रतिराज भोर ॥
पिय पुरुष चषनि रुचि अनँग बढ्ढि। दंपति अनंग बिरहिनी अढ्ढि ॥
छं० ॥ १०७ ॥

द्रुम अवनि राजरित गवन कीन। नव मुग्ध मध्य कंतन अधीन ॥
ग्रह ग्रहनि गान गायंत नारि। मन हरति मुग्ध मध्या धमारि ॥
छं० ॥ १०८ ॥

तन भरति रत्त रँग पीत पानि। हिय मोद प्रगट तन धरत जानि ॥
द्रुम छुम्र वसंत आगम अवन्नि। मदमत्त करिय जनु गवन वन्नि ॥
छं० ॥ १०९ ॥

मसि भौंज दिननि पिय तन वनंग। अवतार अवनि जनु धरि अनंग ॥

मुष हर्ष गंड मंडल प्रकास। फरकंत अधर मधु रस विलास ॥
छं० ॥ ११० ॥

विगसंत कमल छवि नयन मंडि। बंधूक अरुन रुचि षंडि छंडि ॥
मधुमास सुक्क निसि रुचिर चंद। बहि गंधपवन छवि सीत मंद ॥
छं० ॥ १११ ॥

हुअ रोम पंचसर अंच देह। कलमलिय ज्वलियँ बनिता सनेह ॥
निसि प्रथम प्रहर तट गवन कीन। सुभ सोभ वाग मन हुअ अधीन
छं० ॥ ११२ ॥

सगपन्न धार इक लिय चढ़ाइ। असेव इक्क अँग पवन पाइ ॥
पिष्षे सु बाग बानिक रसाल। निरषंत नयन सोभा बिसाल ॥
छं० ॥ ११३ ॥

निर्जन बन में यक्षों के एक उपवन का वर्णन।

दूहा ॥ उपबन घन बहल बरन। सीत पवन द्रुम जाल ॥
चिचरेंच बल्लिय बिटप। अवलंबि ताल तमाल ॥ छं० ॥ ११४ ॥

तरु तल जल उज्जल अमल। टपकत फल रस भार ॥
कुंज कुंज विगसत बसन। तन बढ़ि धात अपार ॥ छं० ॥ ११५ ॥

पतत पष नहिं धर रहत। बानक बान उजास ॥
चंद जोति जल बानि बनि। होड़ होत रस भास ॥ छं० ॥ ११६ ॥

कवित्त ॥ फलन भार नमि साष। जीभ रस स्वाद विवस घट ॥
सुमन संघन बरषंत। गीत संगीत कोक रट ॥
बँधि चहबचनि नीर। छवि छचन रंग धानिय ॥
मंडित मंडप गौष। सुभग सालनि छवि न्यारिय ॥
संभरिय राव बैठक बनक। कनक अलक कंचन धुरिय ॥
प्रथिराज मुदित मादक तनह। बाज राज नंष्यौ तुरिय ॥ छं० ॥११७॥

पृथ्वीराज का दरवान को जीत कर भीतर बगीचे में जाना।

कढ़ि धरनि धुरतार। भाव भर सेस ससंकिय ॥
उड़ि माल असमान। उग्गि आकास चंद षिय ॥
पल पंषिय भर हरिग। अंग अर हरिग रंष्यि कन ॥

इक अवन भंभरिग। कठिन कवियान अष्य तन॥
तुट्टिय पटाटि दवि अंग तुटि। विफरि अंग तूरिय सु रहिय॥
सोमेस सूर चहुआन सुअ। तास कित्ति चंदह कहिय॥छं०॥११८॥

बाग गिरद बर कोट। तास दरवान हुकम किय॥
एकाकी हम रमत। कोइ न आवंन लहै बिय॥
बैठि दरह दरवान। जानि जमदंड हथ्थ धरि॥
पिथ्थ करह कमान। टंक पचीस जीर जुर॥
लग्गे सु फिरन द्रुम द्रुम निकट। जषनी जष दरसन भयौ॥
देषंत सोभ भुल्लिय नयन। मैंन रत्ति आनँग ठयौ॥ छं०॥११९॥

यक्ष यक्षिनी और पृथ्वीराज का वार्तालाप।

दिष्षि जष्य प्रथनाथ। हाथ जुग जोरि नवनि किय॥
कवन काज इत अवन। नाम तुम कवन पुरुष चिय॥
जष्य नाम दुष दवन। नाम रवनी रस वल्लिय॥
नाटिक विविध विचित्र। करन आगम रस रल्लिय॥
सिर नाइ पिथ्थ कौनिय नवनि। कछू मोहि अग्या कहौ॥
सू गंध धूप मिष्टान फल। करौं प्रगट बन पुर लहौ॥ छं०॥१२०।

यक्ष का कहना कि अवश्य कोई बड़े राजा हो।

दूहा॥ कहिय जष्य प्रथिराज सम। बानक इक्क अनूप॥
दुरि पिष्यो द्रुम सघन तर। तुम कोइ भूप अनूप॥ छं०॥१२१॥

पृथ्वीराज का वहां पर नाना भांति की सुख सामग्री मंगवा कर प्रस्तुत करना।

पद्धरी॥ सेवकन बोलि करि हुकम कीन। सुगंध धूप रस काल रसीन॥
आवत्त वस्त लग्गै न वार। जहं तहँति आनि कीजै अमार॥
छं०॥१२२॥

मुष होत हुकम सेवक प्रवीन॥ सब वस्त आनि अम्मार कीन॥
भरि कनक कुंड बर कासमीर। म्रिगमद जवादि अनपार भीर॥
छं०॥१२३॥

कपूर कलस तहं धरिय आनि। कुमकुमनि कुंड सुभ भरिय थान॥
केतकि कमल केवर कुसुम्म। मालती बेल जाती सुरम्म॥छं०॥१२४॥

चपक्क फूल पहुडुर अपार। अहं तहँति आनि किंनें अमार॥
तंबोल तब बानक अनंत। बुध विविध आहि भूलत गनंत॥
छं०॥ १२५॥

दारिम्म दाष केला रसीन। अषरोट नासपाती नवीन॥
नारियर पिंड षज्जूर आनि। बिज्जौर और फल विविध बानि॥
छं०॥ १२६॥

घृत दुग्ध मिश्र पकवान ढेर। आनंत तिनह लग्गी न बेर॥
किय बिदा सब्ब सेवक बहोरि। दुरि बैठि पिथ्य इक इच्छ और॥
छं०॥ १२७॥

गंधर्व राज का आना और नाटक आरंभ होना।

दूहा॥ निमष होत गंध्रव्व इक। संग नाटिक आरंभ॥
तंतिताल बीना म्रदंग। सँग अच्छरि लिए रंभ॥ छं०॥ १२८॥

अप्सराओं का दिव्यरूप और शृंगार वर्णन।

पद्धरी॥ कुमकुमनि नीर कर मुष पषारि। अचवंत अमिय बर गंगधार॥
करि गंध लेप अंगनि बनाइ। रचि कुसुम अंग गहने बनाइ॥
छं०॥ १२९॥

तंबोल बरनि कपूरषंड। फुनि करै न्त्रित्य नाटक्क मंडि॥
स्वर सपत ताल कल मनहरंत। बनि बीन जंच इथ्थन धरंत॥
छं०॥ १३०॥

कटतार तार पट तार पाइ। संगीत भेद बरन्यो न जाइ॥
रस राग रंग छत्तीस मंडि। धुनि धरत सिद्ध तन धर्म पंडि॥
छं०॥ १३१॥

अब रची रुचिर बीना प्रवीन। नारद्द नाद तंती अधीन॥
रस सरस हास बरन्यौ न जाइ। सुभ कर्म्म धर्म्म सुष सोम पाइ॥
छं०॥ १३२॥

नाटक उट्ठि फुनि बैठि देव। करि भोग भोज मिष्टान सेव॥
हुत्र चपति अंन कपूर मंडि। तंबोल तत्त कर बिरा षंडि॥
छं० ॥ १३३ ॥

सब सथ्य बहुरि इक रह्यौ जष्पि। तिहि सथ्य इक गंध्रब्ब इष्प॥
तिहि कह्यौ जष्प रस रह्यौ आज। इह कवन आनि सब सँचिय साज॥
छं० ॥ १३४ ॥

पृथ्वीराज के आतिथ्य से प्रसन्न होकर गंधर्व का उन्हें एक सर्वसिद्ध कवच देना।

तिहि कही जष्प जिहि कत्त काम। सोमेस पुत्त प्रथिराज नाम॥
गंध्रब्ब कही सुष प्रसन होइ। इक देउ मंत्र तन अभय सोइ॥
छं० ॥ १३५ ॥

सुनि जष्प लीन प्रथिराज ताहि। मन मुदित अंग सुष रहे चाहि॥
गंध्रब्ब मंत्र दीनौ स धीस। सिर धारि हथ्थ दीनौ असीस॥
छं० ॥ १३६ ॥

गंधर्व जष्प बहुरे अकास। तिहि निसा पिथ्थ तहं किन्न वास॥
छं० ॥ १३७ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके सुकवर्ननं नाम सैंतालिसमो प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ४७॥

अथ बालुका राइ सम्यौ लिष्यते ॥

(अड़तालिसवां समय।)

राजसूय यज्ञ सम्बन्धी कार्यों के सम्पादन करने के लिये राजाओं को निमंत्रण भेजे जाना।

कवित्त ॥ राज रनज सब काम । करें राजसु आरंभै ॥
नीच काम अरु ऊंच । अन्न कामह प्रारंभै ॥
नीति काम अरु ध्रम्म । बाज गज क्रम परिहारं ॥
देस देस फुरमान । दिए पहुपंग अपारं ॥
मंत्री सुमंत मति बंधि कै । सबै देस फौजें फटी ॥
बर कित्ति करन जुग जुग लगै । इह कमंध जैचंद यटी ॥छं०॥१॥

यज्ञ की सामग्री का वर्णन।

नराज ॥ छियंत सोधि राजह्न जुराज जग्गि जोगयं ।
सवह्न राज सामदंड भेदि बंध भोगयं ॥
सु दान मान अप्पि पान दैवयं न बोधयं ॥
सवर्त्त वत्तमान रे अनेक निद्वि सोधयं ॥ छं० ॥ २ ॥
सुबन्न भार लाष एक मुत्ति भार साठयं ।
रजक्क भार कोटि एक धातु भार नाठयं ॥
तुरंग भार लाषए गजेंद्र ग्रेह लष्षयं ।
कपूर कासमीरयं अनेक भार सष्षयं ॥ छं० ॥ ३ ॥
पटंबरं स अंबरं सुगंध धूप डंबरं ।
सहस्त्र लाष च्यारि वा सदासि [1]नेस अंतरं ॥
सुमंत नाम नोदरे प्रजा प्रसन्न संतरं ॥
.... ॥ छं० ॥ ॥ ४ ॥

(१) ए.-नेम ।

षटानु अंस भाग विप्र संभने उपचयं ॥
सु षोडसा प्रमान दोन वेद वान अप्पयं ।
विराम गर्व दर्वने सु मंचि मंच भागयं ।
विचारि वीर राजह्न जयंति [1]जोति जागयं ॥ छं० ॥ ५ ॥

यज्ञ के हेतु आह्वान के लिये दसों दिशाओं में जयचन्द का दूत भेजना।

दूहा ॥ राज जग्य आरंभ किय । सेंवर सहित सँजोग ॥
मिलि मंगल मंडप रचिय । जहां विविध विधि [2]भोग ॥छं०॥६॥
दिसि मंडल षँड षंडलह । पंग फिरे जु बसीठ ।
बल बंधौ दल हिंदु जौ । बंधौ मेच्छ सो ढीठ ॥ छं० ॥ ७ ॥
मत मंडित छंडित कलह । बल दीरघ प्रति बाम ॥
कहै पंग न्नप इंच मति । रहै सु रष्षौ नाम ॥ छं० ॥ ८ ॥
गाथा ॥ केकेन गया महि मंडलायं । बज्जाए दीह दसहांई ॥
विपफुरें जास कित्ती । तेगया न विगया छंतीं ॥ छं० ॥ ९ ॥

जयचन्द का प्रताप वर्णन।

कवित्त ॥ स्वर्ग मंच जीतयौ । नाग जीतयौ मंच बल ॥
बल जीते द्रिगपाल । चवृवि है वै अभंग भर ॥
मुगत माल द्रगपाल । जित्त छल गोरे मारे ॥
द्रव्य सबल बल अग्ग । जग्य करनह अधिकारे ॥
चिहुं तेज चक्र ससि काल ज्यौं । तपै तेज ग्रीषम सु रवि ॥
संसार मान न्नप तेज बल । यौं सु धरा तौ तेज तवि ॥छं०॥१०॥
गाथा ॥ पहुवी कालह बलियं । कालह नमा कित्तियं बलियं ॥
जे नर कालह छलयं । ते कित्ती संजीवनं करयं ॥ छं० ॥११॥

जयचन्द का पृथ्वीराज को दिल्ली का आधा राज्य बांट देने के लिये संदेसा भेजने की इच्छा करना।

(१) ए.-जोगि । (२) ए.-जोग ।

पद्धरी ॥ उत्तरै वीर पहु पंगराइ । हम मात तात द्रिग विजय चाइ ॥
मुक्कलै दूत बर मंच काज । मातुलह बंस प्रथिराज राज ॥छं०१२॥
हिंदू न जानि गुरु गुरुच पत्ति । चिचंग राइ साहसह छत्त ॥
धर धरनि बंटि बिभ्भाइ लच्छि । जानै सु राज जिन तजो गच्छि ॥
छं० ॥ १३ ॥
बंधौ समेत जिन बलह भूमि । बरषै सुराज ताम्मस [1]चतूमि ॥
बर मिलै आइ पहुपंग पाइ । ढिल्ली समेत सोरों लगाइ ॥छं०॥१४॥
अप्पैज भूमि तुम सेव जाइ । .... ॥
जिम जिम सु बमौ तुम चित चढ़ंत । तिम तिम सु दान पंगहु बढंत॥
छं० ॥ १५ ॥
अनि ठौर षेद जिन करौ चित्त । अप्पै सु भूमि दस गुनिय हित्त ॥
को करै पंग सों बल प्रमान । दिष्यौ न तीन लोकह निदान ॥
छं० ॥ १६ ॥
अब अमित मंत इह तत्त जानि । गुरुबत्त तत्त मंची सु ठानि ॥
पय लग्गि सुनि ह परधान तब्ब । पहुपंग राइ बर हुकम सब्ब॥छं०॥१७॥

जयचन्द का पृथ्वीराज के लिये संदेसा ।

कवित्त ॥ मातुल हम तुम इक्क । इक्कि बंसह निरधारिय ॥
आदि बंस कमधज्ज । बरन छत्रिय अधिकारिय ॥
तुम संभरि चहुआन । बसौ अजमेरति बीरं ॥
पंग देस सब भूमि । मंगै सो अब्ब उतीरं ॥
यों कियौ मंत ग्रह अप्प बर । सुमति बोलि परधान न्रप ॥
छिति मत्ति छित्ति जौपन धरा । सुबर छर साहस सु तप ॥छं०॥१८॥

जयचन्द की आज्ञानुसार कवियों का जयचन्द की विरदावली पढ़ना और मंत्री सुमंत का जयचन्द को यज्ञ करनें से मना करना ।

(१) ए. अनूमि ।

पद्धरी॥ थप्पै सुभट्ट राजह पंग। नर हरै पाप(१)कलवत्त गंग॥
धुनि धुनि सु विप्र बोलैति बेद। तन करै त्रिमल अघ करै छेद॥
छं० ॥ १९ ॥

ग्रह ग्रहन हेम कसि कसि सु नारि। मानौं कि सूर ससि क्रिम्म तार॥
जगमगै हेम विधि विधि बनाइ। जिम निगम अंत बसि बरुन आइ॥
छं० ॥ २० ॥

ग्रह ग्रहन कलस तोरन समान। कैलास सिषर प्रतपै सुभान॥
ग्रह ग्रहन गौष रष्यत बनाइ। कैलास डरह ससि अब पाइ॥
छं० ॥ २१ ॥

ग्रह ग्रह कि पाट जगमग जराइ। कैलास लग्गि नवग्रह रिसाइ॥
*कलि अंत पथ्थ कनवज्ज राइ। .... छं० ॥ २२ ॥

सतपती सील धर ध्रम्म चाव। सुनि रोस कियौ पहु पंग राव॥
मागधहु सूत बंदनि बुलाव। .... छं० ॥ २३ ॥

पुच्छयौ सु बंस कमधज्ज ग्रब्ब। हम बंस जग्य किहि कियौ पुब्ब॥
जिहि बंस जग्य नन होइ राज। भुगतौ न भूप सुष सर समाज॥
छं० ॥ २४ ॥

तुम बंस भए कमधज्ज सूर। कीनौ सु राज राजस्स भूर॥
तव बंस भयौ बाहन नरिंद। अंतरिष रथ्थ चलि अग्ग कंद॥
छं० ॥ २५ ॥

तुम बंस भयौ पूरूर(१)रूर। रथ च्यारि चक्क जिहि जीति सूर॥
सतसिंधु सूर जिह रथ्थ चील्ह। तुम बंस भयौ न्रप राज नील॥
छं० ॥ २६ ॥

तुम बंस भयौ नलराइ अंद। नैषद्ध हार हीं धऱ्यौ बंध॥
षट चक्क भए कमधज्ज आदि। किन्नौ नरिंद जिह बरुन बाद॥
छं० ॥ २७ ॥

जीमूत धऱ्यौ जिहि चक्क सीस। संसार कित्ति कीनी जगीस॥

* इस स्थान पर छंद के कुछ अधिक अंश खंडित मालूम होते हैं क्योंकि यहां के पाठ में अर्थ नितान्त खंडित होता है। (१) सूर।

को कहै पंग सों दुह[1] आय । मंडै सुजग्य निहचैत राय ॥
छं० ॥ २८ ॥

बाहन्न भूमि हय गय अनग्ग । परठंत पुन्न राजस्रू जग्ग ॥
सोधिग पुरान बलि बंस बीर । भूगोल लिषित दिष्षित सहीर ॥
छं० ॥ २९ ॥

छिति छच बंध राजन समान । जित्तेति सकल हय गय प्रमान ॥
पुच्छै सुमंत परधान तन्न । अब करहु जग्य जिम चलहि कन्न ॥
छं० ॥ ३० ॥

उत्तर स,दीन मंची सुजानि । कलिजुग्ग नाहि विय जुग प्रमान ॥
करि ध्रम्म देव देवल अनेव । षोडसा दान दिन देहु देव ॥
छं० ॥ ३१ ॥

मो सीष मानि न्रप पंग जीव । कलिजुग्ग नहीं अर्जुन सु भीव ॥
झुकि पंगराव मंची समान । लहु लोह अब्ब बोलहु अयान ॥
छं० ॥ ३२ ॥

जयचन्द का मंत्री की बात न मान कर यज्ञ के लिये सुदिन शोधन करवाना ।

दूहा ॥ पंग वचन मंचीस उर । मन भिट्यौ न प्रमान ॥
ज्यौं सायक फुट्टै नहीं । गुरु पथ्थर परजान ॥ छं० ॥ ३३ ॥
पंग परट्ठिय जग्य जब । बत्त विविध धर बज्जि ॥
बर बंभन दिन धरहु सुभ । लगन महूरत रज्जि ॥ छं० ॥ ३४ ॥

मंत्री का स्वामी की आज्ञा मानकर दिल्ली को जाना ।

मानि हुकम पहुपंग कौ । चलि मंची बुधि बीर ॥
कै साधै चहुआन कों । कै धर बंटै धीर ॥ छं० ॥ ३५ ॥
राज बचन सेवक सुध्रम । तत्व बचन करि जानि ॥
दिस दिल्ली ढिल्ली धरा । संभरि वै परिमान ॥ छं० ॥ ३६ ॥

भुजंगी ॥ संभारियं राज चित्तं पुनीतं । जहा साधियं मंच मंची अनीतं ॥

(१) ए.-अवाह ।

मनं हत्त आन्यौ व्रितं बक्र सूरं। मनों साधनं हत्त संसार चूरं ॥
छं० ॥ ३७ ॥

न्त्रिपं भ्रम्म जानैं इसे सूर पांचौ। मनों पंग देही दुती अंग सांचौ ॥
छं० ॥ ३८ ॥

सुमंत का दिल्ली पहुँचना।

दूहा ॥ मुक्कलि धर पत्ते न्त्रपति। दूत सु भ्रम्म सुचार ॥
मनों पंग देही दुती। सुबरि बुद्धि उद्धार ॥ छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज का सुमंत का यथोचित सत्कार और सम्मान करना।

कवित्त ॥ मिलत राज प्रथिराज। करिय आदर अधिकारिय ॥
देव भगति परमान। देव जिम जचत सु चारिय ॥
बर मिष्टान सु पान। मध्य अम्रत फल धारिय ॥
रंग रंग घनसार। अंग म्रगमद अधिकारिय ॥
मतवंत हत्ति छोड़ें नहीं। डर न चित्त नन उच्चरहि ॥
षट घोंस गए बित्तें सुभर। दै कग्गद गुन बित्तरिय ॥छं०॥४०॥

मंत्री सुमंत का पृथ्वीराज को जयचन्द का पत्र देकर अपने आने का कारण कहना।

कवित्त ॥ हरन दच्छ ज्यों जग्य। सेव कीनी कुबेर वर ॥
यों सेवा प्रथिराज। जानि पङ्गपंग करै नर ॥
भगति भाव विश्राम। ताप जप जाप देव सम ॥
षट सुदीह कग्गर प्रमान। उछर्‍यौ बीर श्रम ॥
जं कह्यौ जुद्ध जैचंद वर। विधि विधान निरमान गति ॥
जैचंद मंत जौ गूढ़ कौ। कह्यौ राज राजन सुगति ॥ छं० ॥ ४१ ॥

साटक ॥ सोयं इंद्रयप्रस्थ कारन वरं, जुभ्भव गंभ्रव गुरं ॥
सोयं ता परचंड देवि बलयं, पंचे छठं [१]बंधवं।
नायं भीम द्रुयोध भूमित बलं, एवा किता अगंजं ॥
सोयं मंगयं राज राजन वरं, मातुल्ल मातुल वरं ॥ छं०॥ ४२ ॥

(१) ए.-बंधकं।

सुमन्त की बातें सुन कर पृथ्वीराज का अपने राज्य कर्म्मचारियों से सलाह करना ।

पद्धरी ॥ तिहि मंत काज प्रथिराज राज । बोले सु बीर भर बर बिराज ॥
प्रथिराज सथ्थ सामंत सत्त । इक अंग अंग पंचौ सु रत्त ॥
छं० ॥ ४३ ॥

जानहि सु तत्त सा भ्रम्म सूर । देषत नरिंद बल करि करूर ॥
बोल्यौ सु गुरुअ गोयंद राज । आहुट्ठ मभ्भ सामंत लाज ॥
छं० ॥ ४४ ॥

बोल्यौ सु धनिय धारा नरिंद । आरंभ सलष पामार इंद ॥
गंभीर गरुअ भारौति भुम्मि । साइरह मद्धि नमनद्धि धुम्मि ॥
छं० ॥ ४५ ॥

बोलयौ बीर नरनाह स्वामि । भारथ्थ बीर पारथ्थ जामि ॥
छल छच छिति निठ्ठुर नरिंद । जैचंद बंध भारथ्थ कंद ॥
छं० ॥ ४६ ॥

दुजराज गुरू षट भ्रम पवित्त । बोलए अवर जैमंत सत्त ॥
इहि विधि प्रमान सामंत रत्त । बोलै न बोल ते चित्त मत्त ॥
छं० ॥ ४७ ॥

सामंतों की सत्कीर्ति ।

दूहा ॥ मत्ति धीर सामंत सब । अति पवित्त गुन काज ॥
एक एक भुज लष्य बर । लष्य लष्य सिरताज ॥ छं० ॥ ४८ ॥

जयचन्द का यज्ञ के लिये पृथ्वीराज को बुलाना ।

पद्धरी ॥ पहुपंग राव राजह जग्य । आरंभ रंभ कीनौ अषग्ग ॥
जित्तए राज सब सिंघ बार । मिल्लए कंठ अनु मुत्ति हार ॥
छं० ॥ ४९ ॥

जुग्गिनिय पुरह सुनि भयौ षेद । आवहि न माल मभ्भह अभेद ॥
मुक्कले दूत तब तिन रिसाइ । असमथ्थ सेस किम भूमि षाइ ॥
छं० ॥ ५० ॥

बंधो समेत सामंत सथ्थ। उत्तरहि आनि दरबार अथ्थ॥
सुनि दूत चले दिल्लिय सु थान। आजानबाहं जहं चाहुआन॥
छं० ॥ ५१ ॥

पहुंचे सु इंद्र पथ्थह सु थान। गुदराइ बत्त जैचंद नाम॥
हज्जूर बोलि पठ्ठाय राज। क्यों आइ इत्त सो जंपि काज॥
छं० ॥ ५२ ॥

कन्नौज के दूत का पृथ्वीराज से मिल कर जयचन्द का संदेसा कहना।

तब दूत कहिय दिल्ली नरेस जै नरेस॥
राजसू जग्य आरंभ कीन। दस दिसन भूप फुरमान दीन॥
छं० ॥ ५३ ॥

छिति छत्र बंध आए सु सब्ब। तुम चलहु बेगि नह बिरम अब्ब॥
फुरमान दीन चहुआन तोहि। कर छरिय दावि दरबान होहि॥
छं० ॥ ५४ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों का जयचन्द के यज्ञ में जाने से नहीं करना और दूत का कन्नौज वापिस आना।

बुल्लै न बैन प्रथिराज ताह। संकरै सिंघ गुर जननि चाह॥
उत्तरे गरुअ गोयंद राज। कलि मभ्भ जग्य को करै आज॥
छं० ॥ ५५ ॥

सतजुग्ग कहहि बलिराय कीन। तिहि कित्ति काज त्रिहुलोक दीन॥
त्रेता सु कीन रघुवंसराइ। कुब्बेर कनक बरष्यौ सु आइ॥
छं० ॥ ५६ ॥

धर ध्रम्म पुत्र द्वापर सु नाइ। तिहि पथ्थ बीर अह हरि सहाइ॥
[1]इल दर्व गर्व तुम अप्रमान। बोलहुत बोल देवन समान॥
छं० ॥ ५७ ॥

(१) कृ. दल।

जानौव तुम्ह षवी न कोइ। निरवीर पहुमि कबहूं न होइ॥
जंगलह वास कालिंद कूल। जानै न राज जैचंद भूल॥
छं०॥ ५८॥

जानहित देस जोगिन पुरेस। आनल बंस प्रथिय नरेस॥
कै बार साह बंधयौ जेन। भंजिय सु भूप भिरि भीमसेन॥
छं०॥ ५९॥

संभरि सकोप सोमेस पूत। दामिनि रूप अवतार भूत॥
तिहि कंध सीस किम जग्य होइ। जो प्रथिय नहीं चहुआन कोइ॥
छं०॥ ६०॥

देषी सु सभा तिन सिंघ रूप। मानै न जग्य मन अन्य भूप॥
आदरहु मंद उठि चलि बसीठ। ग्रामिनी सभा बुधजन बईठ॥
छं०॥ ६१॥

कन्नौज के दूत का अपने स्वामी का प्रताप स्मरण करके पृथ्वीराज की ढीठता को धिक्कारना।

कवित्त॥ मन विचारि बसीठ। आप आयन दै तारी॥
बंछै जंबुक मरन। बध्थ पंचानन भारी॥
मरन लोइ बंछैत। हथ्थ जमदढ्ढह षोलै॥
अजा मरन बंछैत। बार दीपो संग डोलै॥
बंछई मरन कातर वितर। सूर हक्क पचारई॥
गामी गमार घर बैठि कै। पंग राइ बक्कारई॥ छं०॥ ६२॥

दूहा॥ जौ बरपंग नरिंद है। हौं जानू बर जोर॥
ज्यौं अगस्ति साइर पियौ। त्यौं ढिल्ली धर तोर॥ छं०॥ ६३॥
जोबन वैबर विनै बर। कहै पंग सों अज्ज॥
मंत अवैठो गैठ है। आन मान कमधज्ज॥ छं०॥ ६४॥

दिल्ली से आए हुए दूत के वचन सुन कर जयचन्द का कुपित होना और चालुका राय का उसे समझा कर शान्त करना। यज्ञ का सामान होना।

पद्धरी ॥ फिरि चलिग तबै कनवज्ज मंझ। भय मलिन मुष्ष जनु कमल संझ॥
तिन दूत पंग अग कहिय बैन। अति रोस कीन रग तैत नैन ॥
छं० ॥ ६५ ॥

बुल्ल्यौ सुमंत परधान तद्व। कनवज्ज नाथ करि जग्य अब्ब ॥
बोलै सुमंत मंत्री प्रमान। उद्धरन जग्य कलि जुग्ग पान ॥
छं० ॥ ६६ ॥

बालुका राइ बोल्यौ हकारि। साधन सु जग्य बहु जुद्ध सार ॥
षुरसानषान बंदेति मीर। सो भाग दसम अप्पै सरीर ॥छं०॥६७॥
ऐसै जु सज्जि चौसठि हजार। अप्पैति मेछ पहुपंग बार ॥
नीसान बार बज्जेति चंग। बड्डी अवाज दिसि दिसि अनंग ॥
छं० ॥ ६८ ॥

षोषंद बाद बालुकाराज। रष्यियै जग्य को रहै साज ॥
जब लग्गि गहौ चहुआन बाहि। तब लग्गि ताहि टरि काल आहि॥
छं० ॥ ६९ ॥

ए आसमंद न्रप करहि सेव। उच्चरहिं काम सो होइ देव ॥
सोवन्न प्रतिम प्रथिराज जानि। थप्पियै पवरि दरबार वानि ॥
छं० ॥ ७० ॥

सैंवर सँजोग अरु जग्य काज। बुध जननि बोलि दिन धरहु आज॥
मंत्रीन राव परमोधि जामि। घुम्मे सवार नीसान ताम ॥
छं० ॥ ७१ ॥

सब सदन बंधि बंदरनि बार। काटंत हेम ग्रह ग्रह सु तार ॥
भूषन सु दाम सुर सम अपार। आनंद इंद्र सुर सम बिचार ॥
छं० ॥ ७२ ॥

धवलियै धाम देवल सु चीय। तम हरन कलस रविब्यंब बीय ॥
धज्ज मगन रोर जनु मधु अछीय। जनु रचिय बंभ कैलास बीय ॥
छं० ॥ ७३ ॥

इक बार संजोइय सषिन प्रत्ति। मुसकाय मंद इह कहिय बत्त ॥
आचिज्ज एक सषि उरह अत्ति। बदलीय बिद्धि मो मनह गत्ति ॥
छं० ॥ ७४ ॥

संयोगिता के हृदय में विरह बेदना का संचार होना।

गाथा ॥ बंबुरे मलय मरुतं। अगुरे पिक पराग पर पंचं ॥
उतकंठं भार तरुणा। मन मान संके मषं मत्ति ॥ छं० ॥ ७५ ॥
मानीय दाह बाले। पुत्तलिका पानि ग्रहनायं ॥
एकंत सेज सहव्वं। लज्जा विया विनया साई ॥ छं० ॥ ७६ ॥

चंद्रायन ॥ कंचन ग्रेह सु मोतिय बंद्र बार हुअ।
ता ओपम बर भट्ट विचार सु एम जुअ ॥
मेर चरंनन गंग तरंगनि जानकी।
कि मेर चरन्न किरन्न भई लगि भान कौं ॥ छं० ॥ ७७ ॥
तिन ग्रेहनि में फिरत संजोगी सोभई।
रति कौ रूप न होइ काम तन लोभई ॥
मनों मधुक मन मंधि मनं मधि ही करी।
कोटि रत्ति कौ तेज रत्ति वह उब्भरी ॥ छं० ॥ ७८ ॥

अरिल्ल ॥ अंकुर पान चरावत बच्छं। मनों माननि मिस दिष्षि अनुच्छं ॥
सहचरि चरित परस पर बत्तय। मनों सजोइ सँजोग मनमथ्थय ॥
छं० ॥ ७९ ॥

गाथा ॥ बज्जाइ गाह श्रवनं। नयनं चित्तेहि दिट्ठ लग्गाइं ॥
ग्रामान ग्राम लज्जा। आनंगा अंकुरी बाला ॥ छं० ॥ ८० ॥

संयोगिता का सखियों सहित क्रीड़ा करते हुए उसकी मानसिक एवं दैहिक अवस्था का वर्णन।

पद्धरी ॥ राजन अनेक पुत्रीति संग। षटवीय बरष नम लसति अंग ॥
के जुवति संग हासद सुरंग। मिल खिषहि भाम नव नव अनंग ॥
छं० ॥ ८१ ॥
संजोगि संग जुवती प्रवीन। आनंद गान तिन कंठ कीन ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ८२ ॥

गाथा ॥ आनन उछंग चिबुकी। आलोली इह संजोगी ॥
बरनीय पानि पत्तो। दीहास तामि अट्ठ संभामि ॥ छं० ॥ ८३ ॥

पद्धरी ॥ कोमल किसोर किंचित सुरंग। अधरें तंमोर अच्छें दुरंग ॥
सुभ सरल बाल वल्लीस थोर। अंकुरहि मान मनमथ्थ जोर ॥
छं० ॥ ८४ ॥

जुव्वन जुवत्ति रचि कहहि बत्त। श्रवननि सीर निकु नयन रत्त ॥
मुक्कहि न लोह लज्जा सुरत्त। निरधनिय मनहुं धन गहिय हथ्थ ॥
छं० ॥ ८५ ॥

गाथा ॥ हा हंत सा सखिन्ना। या सुंदरि कथ बर यामि ॥
बालियं विधि विहिन्ना। संयोगीय जोगिनी पानी ॥ छं० ॥ ८६ ॥

संयोगिता की वय और उस के स्वाभाविक सौन्दर्य का वर्णन।

मोतीदाम ॥ बयजोग संजोग बसंतह जोग। कहै कविचंद समावरि भोग ॥
अनं मधु मद्धु मधुं धुनि होइ। बिना रस जोवन तीय अलोइ ॥
छं० ॥ ८७ ॥

मनं मिन लीन बसंतत राज। सु इच्छत सैसव जोवन बाज ॥
कहूं कहु अंकुरि कुंपरि नाहि। तहां बिन सैसव जोवन जाहि ॥
छं० ॥ ८८ ॥

कहै भमरी जगि होपति आज। भई न्रप बार बसंतह राज ॥
तहां बजि घुंघर जोवन भाइ। जगावहिं सैसव सेन सुनाइ ॥ छं० ॥ ८९ ॥

दूहा ॥ सैसव रिति तुछ तुच्छ हुअ। कछु वसंत धरि भाव ॥
मानों अलि दूतनि भई। नीदनि वेगि जगाव ॥ छं० ॥ ९० ॥

संयोगिता के यौवन काल की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन।

पद्धरी ॥ अधर तपत पल्लव सु वास। मंजरिय तिलक पंजरिय पास ॥
अलि अलक कंठ कलयंठ मंत। संयोगि भोग बर भुअ वसंत ॥
छं० ॥ ९१ ॥

मधुरे हिमंत रितुराज मंत। परसपर प्रेम सो पियन कंत ॥
लुट्टहित भोर सुग्गंध वास। मिलि चंद कुंद फूले अकास ॥
छं० ॥ ९२ ॥

बन बग्ग भग्ग इलि अंब मोर। सिर ठरत जानि मनमथ्थ चोर॥
चलि सीत मंद सुगंध बात। पावक्क मनौं बिरहनी पात॥
छं० ॥ ९३ ॥

कुह कुह करंत कलयंठ ओट। दल मिलहि जानि आनंग कोट॥
तरु पलव पीत अरु रत्त नील। हरि चलहि जानि मनमथ्थ पील॥
छं० ॥ ९४ ॥

कुसमेष कुसुम नवधनुक साज। मंगी सुपंति गुन गरुअ गाज॥
संजर सुबास सो मनहु नेह। विद्धारि जानि जुअ जननि देह॥
छं० ॥ ९५ ॥

ऊथलिय चलिय चंपक सरूप। प्रज्जरहि प्रगट कंद्रप्प कूप॥
कर वत्त पत्त केलुक्कि सुकांति। बिहरंत रत्त बिछुरंत छत्ति॥
छं० ॥ ९६ ॥

परिरंभ अनिल कंदलि सपान। सिर धुनहि सरस धुनि जान तान॥
भंकुरि भ्रमूर अभिराम रम्म। नन करहिं पीय परदेस गम्म॥
छं० ॥ ९७ ॥

फूलिग पलास तजि पत रत्त। रन रंग ससिर जीतौ बसंत॥
दिष्षहि तपंत जिहि कंत दूर। थकि बोलि बोलि अल रहिय पूरि॥
छं० ॥ ९८ ॥

संजोग भोग जुवती प्रवीन। पै कंठ नट्टि दुइ भगिअ लीन॥
रवि जोग भोग ससि नीय थान। दिन धन्यौ देव पंचमि प्रमान॥
छं० ॥ ९९ ॥

सोय जग्य उद्दीपन बाल काज। विलसन विलास मंडौज साज॥
पर उछव दषिन दीनौ मिलान। विग्रहन देस चढ़ि चाहुआन॥
छं० ॥ १०० ॥

पृथ्वीराज का अपमान हुआ जान कर संयोगिता का दुखित होना और पृथ्वीराज से ही व्याह करने का पण करना।

श्लोक॥ अन्यथा नैव पिष्यंति। द्रुज वाक्यं न मुंचते।
प्रापतं जोगिनी नाथो। संजोगी तत्र गच्छति॥ छं० ॥ १०१ ॥

दूहा ॥ जगत बत्त जोगिन पुरह । सुनिय किन्ति कमधज्ज ॥
भनै अप्प विध्वंस मन । नमि सामंत सुरज्ज ॥ छं० ॥ १०२ ॥
दूत वचन कग्गद सयन । यप्पि वत्त सासत्त ॥
चमकि चित्त चहुआन न्रप । नमि सामंत विरत्त ॥ छं० ॥ १०३ ॥
सुनिय वत्त दिल्लो न्रपति । यप्यो पोरि प्रथिराज ॥
अब जीवन बंछौ न्रपति । करहु मरन कौ साज ॥ छं० ॥ १०४ ॥

अपनी मूर्ति का दरवान के स्थान पर स्थापित होना सुनकर पृथ्वीराज का कुपित होकर सामंतों से सलाह करना।

कवित्त ॥ मो उभ्भै पहुपंग । जग्य मंडै अबुद्धि कर ॥
जो भंजौं इह जग्य । देव विध्वंसि धुंम परि ॥
जब करवत पाषान । हथ्थ छुट्टै बर भग्गै ॥
प्रजा पंग आरुही । बहुरि इथ्था मन लग्गै ॥
प्रथिराज राज हंकारि बर । मत सामंत सु मंडि धर ॥
कैमास बीर गुज्जर अठिल । करौ सूर एकठ्ठ बर ॥ छं० ॥ १०५ ॥

सब सामंतों का अपना अपना मत प्रकाशित करना।

मत्त मंडि सामंत । गरुअ गोयंद उच्चारिय ॥
पंग जग्य तौ करै । भूमि नन बीर संहारिय ॥
लाष बीर मथ्थियै । गयन कंकन प्रति साजन ॥
बनसी मध्य समुद्र । मथन रन रतन सुराजन ॥
परधंकि धंकि राजन गरै । पहुमि कही चहुआन नहिं ॥
निरबीर पहुमि सोइ होय बर। पंग जग्य कलजुग्ग महिं ॥
छं० ॥ १०६ ॥
पंच सूर एकंग । सथ्थ सामंत सत्त भर ॥
घाव सेन सजि सेन । राज प्रथिराज प्रीति नर ॥
राज गुरु दुजराम । राज रष्षन बल राषन ॥
अप्प सजिय सामंत । सज्जि सब सूर एक मन ॥
सामंत सूर घोषंद कजि । पंग भज्जि अग्गर सुधर ॥
बालुकराव निंदह कढ़िय । षग्ग मग्ग मंगे गहर ॥ छं० ॥ १०७ ॥

जयचन्द के भाई वालुकाराय को मारने के लिये तैयारी होना ।

दूहा ॥ काज बीर बालुक सु हत । सज्जि सेन चतुरंग ॥
तिन कारन भंजन सु जगि । बाजि बीर अनभंग ॥ छं० ॥ १०८ ॥

कन्ह चहुआन और गोइन्दराय आदि सामंतो का कहना कि कन्नौज पर ही चढ़ाई की जाय ।

पद्धरी ॥ सुनि मंत तंत जुग्गिनि पुरेस । मंनेव मेव मन मंडि तेस ॥
काज मंत संत ओगीय थान । सब बक्यौ कोप भर आसमान ॥
छं० ॥ १०९ ॥

बुलाइ सबें भर राज काज । पंमार सलष सम जैत आज ॥
निड्डुरह राव जामानि जाद । चंदेल भूप भौंहा सु वाद ॥छं०॥११०॥
कैमास भासई तेज रासि । दाहिम्म बोलि अग्गैं उहासि ॥
पुंडीर चंद लंगा अभंग । बग्गरी देव षीची प्रसंग ॥ छं० ॥ १११ ॥
सामंत सूर मिलि एक थान । मंतेव मंत विधि चाहुआन ॥
तुम सुनिय तुंम .... । ...., ... ॥ छं० ॥ ११२ ॥ ॥
हम लाज राज तुम सीस साज । तुम रचिय बुद्धि सो क्रत्यकाज ॥
तमि कहिय राव गोयंद तह्व । भंजों निकट्ठ कनवज्ज सह्व ॥
छं० ॥ ११३ ॥

तब कहीं कन्ह सुनि चाहुआन । सज्जि सेन जुरौ कनवज्ज थान ॥
मथाइ कूह कनवज्ज थाह । पंडहि सु रान विधि जग्य राह ॥
छं० ॥ ११४ ॥

उच्चरिग वत्त जामानि जद्द । सजि चढ़ौ जूह काजि कूह नद्द ॥
भंजियै देस कमधज्ज राज । उज्जारि थान जचान राज ॥छं०॥११५॥
पुक्कार कूह उट्ठे करार । भंजहि सु जेन भय जग्य भार ॥
उच्चर्‌यौ चंद पुंडीर ताम । कैमास मंत पुच्छौ सु हाम ॥छं०॥११६॥
मति सिंधु सद्द गुन अग्गरेस । बुद्धंत बुद्ध मनजा असेस ॥

आनंद सुनिय सामंत सब्ब । भय मोद मंन अस सुनिय तब्ब ॥
छं० ॥ ११७ ॥

कैमास ताम जंपै सभेस । कमधज्ज सुबल दल अस्स हेस ॥
बालुकाराय पोषंद थान । भंजियै तास हनि जुड जान ॥
छं० ॥ ११८ ॥

दग्गियै धाम पुर गैर नेस । पुकार भार पहुँ असेस ॥
बिग्गरै जग्य जैचंद राज । जस होइ कित्ति सुष सोम काज ॥
छं० ॥ ११९ ॥

दाहिंम मंत सुनि भर उहास । मन्नेव मंत सो धंनि हास ॥
आनंद राज प्रथिराज ताम । थपि मंत पत्त निज निज्ज धाम ॥
छं० ॥ १२० ॥

कैमास का कहना कि बालुकाराय को मार कर ही यज्ञ विध्वंस किया जा सकता है।

कवित्त ॥ रष्षि थान पोषंद । राइ बालुक प्रमानं ॥
दिय अड्डौ चहुआन । जग्य मूलं रषि वानं ॥
रष्षि सेन समरथ्थ । गरू आदर भर मन्निय ॥
सो संभरि चहुआन । बीर अंकुरि चित्तवन्निय ॥
सामंत सूर बर बोलि बर । मंति बैठ हीलीम पहु ॥
चय जाम सिंघ घरियार बजि । बीर बीर लग्गो सु पहु ॥छं०॥१२१॥

गाथा ॥ दिढ़ करि मंच सहाओ । पत्तौ धाम राज सा भृत्तं ॥
अंतर महल उहासौ । आग्र नेस तथ्थ चहुआनं ॥ छं० ॥ १२२ ॥

दूसरे दिन सभा में आकर पृथ्वीराज का बालुकाराय पर चढ़ाई करने के लिये महूर्त देखने की आज्ञा देना।

अरिल्ल ॥ बोलि तथ्थ मंची कयमासं । राजा मानिय दू आभासं ॥
और सबै सामंत सुरेसं । दिय सनमानि बहोरि नरेसं ॥छं०॥१२३॥

गाथा ॥ सिंघासने सुरेसं । सम अरोहि धीर हीलीसं ॥
मत पयान विचारं । .... ॥ छं० ॥ १२४ ॥

दूहा ॥ बोल्यौ बंभन सूर तहां । कही सु जिय की बात ॥
सो दिन पंडित देषि इम । जिन दिन चलै संघात ॥ छं० ॥ १२५ ॥

ब्राह्मण का यात्रा के लिये सुदिन बतलाना ।

दूहा ॥ तब बंभन कर जोर कहि । सुनौ सु बात नरिंद ॥
पुष्य नषित रविवार है । तिन दिन करौ अनंद ॥ छं० ॥ १२६ ॥

उक्त नियत तिथि पर तैयारी करके पृथ्वीराज का अपने सामन्तों को अच्छे अच्छे घोड़े देना ।

पद्धरी ॥ रवि जोग्य पुष्य ससि तीय थान । दिन धंन्यौ देव पंचमि प्रमान॥
पर उछह दिषन कीनौ मिलान । विग्रहन देस चढ़ि चाहुआन ॥
छं० ॥ १२७ ॥

साहनिय ताम सद्यौ सुरेस । विलहान वाह अप्पौ सुवेस ॥
हय मुकट मुकुट ऐराक बंस । चहुआन कन्ह अप्पौ उतंस ॥
छं० ॥ १२८ ॥

आरब्ब उंच जति पंषराव । समपौ सु राव गोयंद ताव ॥
मानिक्क महोदधि मध्य जात । निरषंत नैन थक्कै न गात ॥
छं० ॥ १२९ ॥

चमकंत तुरिय विज्जल विभास । समयौ सु राव निड्डुरह तास ॥
लहराक तेज अगाध भाल । मापंत छोनि पुज्जै न ताल ॥
छं० ॥ १३० ॥

तुरकेस गात गहअंत भेस । समपौ सु राव पज्जून तेस ॥
लटि पाल जाति पंधार मझ्झ । समपौ सु राव पम्मार सज्जि ॥
छं० ॥ १३१ ॥

रेसमी रीस मानै न मग्ग । कूदंत मंत पय धर अलग्ग ॥
हयरोह सोह मन्नै सु भेस । विलहान जैत अप्पौ सु रेस ॥
छं० ॥ १३२ ॥

तेजाल चाल वरवाह बंस । कैमास तास अप्पौ सु हंस ॥

चेटकी चित्ररूपी रसाल । समपौ सु अह आमान ताल ॥
छं० ॥ १३३ ॥

सोझाल मंझ नाचंत बाल । गति रंभ जेम रचंत ताल ॥
भप जोह जोह भंपै सुभाइ । समपौ सु साज चावंडराइ ॥
छं० ॥ १३४ ॥

गति सुबर भमर मइरेस ताजि । समदेहु राज पाहार गाजि ॥
रंगेस उंच लछन सु भेस । समपौ सु राव झंगी नरेस ॥
छं० ॥ १३५ ॥

रा राम देहु मदमेस साजि । माथुरह सरस कनकाय मांझि ॥
पटछूत पटे परसंग राव । परमार सिंघ कंकन सुभाव ॥
छं० ॥ १३६ ॥

बग्गरी देव दै तेजदाम । सिंघली सिंघ पामार ताम ॥
बहरी सु चाल तेजाल काल । समपौ सु राव भौंहा भुंहाल ॥
छं० ॥ १३७ ॥

परचई रोह जिम चित्त भाजि । मइनसी सु जंगम देहु साजि ॥
हय बाज साज साजे सुभेस । सो देउ बरन बंधव सुरेस ॥
छं० ॥ १३८ ॥

बहुत कुरंगगति कुरंगवाह । बलिभद्र अप्पि उतंग राह ॥
सोझाल फाल कनक्क सु देव । रंगाल राव विंझह बिरेव ॥
छं० ॥ १३९ ॥

महरीस जाति महरेस थान । आजानबाह अप्पौ सुहान ॥
कनक्क कनक रूपी सु तेव । पहुमीस पाय मनों दझझदेव ॥
छं० ॥ १४० ॥

गिरवर उतंग गहअत्त गात । पाहार फट्टि गुरु पाइ घात ॥
साकत्ति साज सब्बै सुभाइ । चहुआन समप्पौ अत्तताइ ॥
छं० ॥ १४१ ॥

सारसी सूर रथ किति भीम । किंगन समप्पि लोहान धीम ॥
हैअवरह अवर धत देहु जाम । बोले समंझ गुरराम ताम ॥
छं० ॥ १४२ ॥

आरस दीन सा साइनेस । विलहान देहु अत अवर जेस ॥
सहेव अप्प मुष सिलह दार । समदेहु सिलह अत गात सार ॥
छं० ॥ १४३ ॥

अंदर प्रवेस पावक्क पुज्जि । आसीस मंच दिय गहअ गज्जि ॥
दिय अतिथ दान हय मंगि राज । आनयौ ताम साकत्ति साज ॥
छं० ॥ १४४ ॥

बर पाच जेम परठंत पाइ । मंडैति थाल जिम तत्त आइ ॥
कलमोर जेम मंडै कराल । मझ्झंमि पीठ मनु कट्ठताल ॥
छं० ॥ १४५ ॥

विस्साल उप्पर अच्छौ पड़च्छि । निरषंत रथ्थ सूरिज्ज सच्छि ॥
मानिक्क मनोहर छबि लाल । हर बास भास गौसम विसाल ॥
छं० ॥ १४६ ॥

बिन चसम चसम समकंति दीस । लालप्पि लोह चंपैति रीस ॥
अचवंत सुच्छ अंजुलिय अप्प । चमकंत छाइ भय तेज बप्प ॥
छं० ॥ १४७ ॥

उर जाइ सुद्धि रुचि राग बाग । बर नह जेम सेयंत लाग ॥
मंडंत उद्ध तंडव सु उंच । परसंत पाइ मनु ध्यान रुंच ॥
छं० ॥ १४८ ॥

अति उंच हद्द भर पुरासान । पित मात विमल कुल संभवान ॥
अंनिय सु साजि सिंगार पाट । विंजंति चोर जिम पुंछ राट ॥
छं० ॥ १४९ ॥

चमकंत पुरिय दामिनि दमंकि । पटतार तार धरनिय धमंकि ॥
मंगेव चढ्यौ चहुआन जाम । जै जया सबद आयास ताम ॥
छं० ॥ १५० ॥

पृथ्वीराज के कूच के समय का ओजस्व और शोभा वर्णन।

दूहा ॥ चढ़ि चल्लौ प्रथिराज हय । जै मुष बंदी जंपि ॥
बिकसे सूर सुभट्ट तन । कलच सु कातर कंपि ॥ छं० ॥ १५१ ॥

अग्य विध्वंसे पंग की। धर लुट्टै परवान॥
मंति सूर सामंत सह। चढ़ि चल्यौ चहुआन॥ छं०॥ १५२॥

तैयारी के समय सुसज्जित सेना के बीच में पृथ्वीराज की शोभा वर्णन।

गाथा॥ इक तौ सहबलयं। एक तौ छोड़ सहसयं बरयं॥
एक तौ दस दूनं। एक तौ परबलं लष्यं॥ छं०॥ १५३॥

कवित्त॥ सुबर बीर मिलि सकल। सेन राजौ रंजन बर॥
बज्रपाट निरघात। राज चिहुं अप्परि मंगुर॥
मनों सूर छुटि किरन। समुद छुट्टिय बडवानल॥
सजे सेन चतुरंग। राज आभंग बीर बल॥
पावंद काज जीपन प्रथम। बालुका भंजन सुभर॥
निडुर नरिंद पुंडीर भर। करन राज अग्गें सगुर॥ छं०॥ १५४॥

सेना सज कर पृथ्वीराज का चलना और कन्नौज राज्य की सीमा में पैठ कर वहां की प्रजा को दुःख देना।

दूहा॥ गोडंडा षल मिल्लरौ। धर जंगली बिहान॥
यों बंधे सह सूर बर। चढ़ि चल्यौ चहुआन॥ छं०॥ १५५॥
है गै बधि बंधन विविध। धन सबी ग्रह बीर॥
चावद्दिसि धर पंग की। ज्यों कलपंतर तीर॥ छं०॥ १५६॥

गथा॥ जो धर पंग नरिंद। सो भंजे सूरयं धीरं॥
ज्यों गुर छूलत अंगं। सो लग्गे सिंधयं पानं॥ छं०॥ १५७॥

बालुका राय का परदेश की तरफ यात्रा करना।

मुरिल्ल॥ संवर काम चल्यौ चहुआनं। बालुका परदेस प्रमानं॥
है गै दल चतुरंगी पानं। भ्रम भंजन मन उग्यौ भानं॥
छं०॥ १५८॥

पृथ्वीराज की सेना की संख्या तथा उसके साथ में जाने वाले योद्धाओं का वर्णन।

हनूफाल ॥ चढ़ि चल्यौ राज चुहान । बोलेव सूर समान ॥
गिन लिए सूर सु चित्त । भर सहस सजि दह सत्त ॥ छं० ॥१५९॥
नीसान हून समान । भेरीय साद सुरान ॥
बल बढ़िय राजस बीर । जनु उपटि समुद गँभीर ॥ छं० ॥ १६० ॥
भए सकल एकत जाम । गुन सकल ग्रह विदु राम ॥
अग्गै सु कन्ह चहुआन । ता पच्छ बलिभद्र जान ॥ छं० ॥ १६१ ॥
उछंग अंग सनाह । सथ लिए सूर सवाह ॥
मद्धेस जंगल देस । चढ़ि चलिय दिसि नरेस ॥ छं० ॥ १६२ ॥
मिसि सज्यौ जानि कराल । दाहंत ग्राम सु ढाल ॥
मिलि चलिग षोषंद पास । बढ़ि बीर जुद्धस आस ॥ छं० ॥ १६३॥
मन मुष्ष साजहि जुद्ध । हनि ताहि क्रम्महि मुद्ध ॥
कलि कूह मंचि करार । धर अरिन कूटहि धार ॥ छं० ॥ १६४ ॥
षिनि षेह लोपिय व्योम । दिसि बिदिसि धुंधरि धोम ॥
रिधि मंधि लुट्टहि अप्प । वर सख्ख सख्ख सुदप्प ॥ छं० ॥ १६५ ॥
धर ढरहि भाजहि एक । मधि हनहि आप अनेक ॥
बहु मोल वत्थ समोष । सम हरहि सह हि सोष ॥ छं० ॥ १६६ ॥
संचरिय घाह विधाह । हलाय दिसि दिसि राह ॥
हूल सैल व्योम संपूर । कलि कूह हत्ति करूर ॥ छं० ॥ १६७ ॥
सब नैर भंगर कूक । सझियै अंतस जक ॥
षोषंद नर सुर थान । समपत्त अगि उतान ॥ छं० ॥ १६८ ॥

बालुका राय की प्रजा का पीड़ित होकर हाहाकार मचाना ।

मुरिल्ल ॥ छुट्टे दिसा दिसा चहुआनं । संमर काम समावर जानं ॥
परजा मिलिय करै बुंबानं । [1]संभरि भारथ रह रिसवानं ॥
छं० ॥ १६९ ॥

चाहुआन की चढ़ाई का आतंक वर्णन ।

कवित्त ॥ दिसि पहु उठ्ठिय धोम । भोम लग्गिय आयासह ॥

(१) ए. कृ.-"संभरित भर थर हरि सवान"

निधि लुट्टिय चतुरंग। रंक हुअ राज राजसह ॥
निधि पति निधि घट्टिय। सु रंक बढ्ढिय लच्छिय पन ॥
बाला संधि विसंधि। राग ग्रीषम रिति सुष्पन ॥
घरियार घरिय बढ्ढय घटै। सो ओपम परमानियै ॥
निधि पत्ति रंक रंका सु पति। विषम गत्ति गुर आनियै ॥
छं० ॥ १७० ॥

पृथ्वीराज का भुज्ज पर अधिकार करना।

सुपति पत्ति योचंद। सुनिय बालुकाराय बर ॥
धर धामह कमधज्ज। भुज्ज मंडिय कपाट भर ॥
अरि भय किम औसेर। बढ़िय अग्गर न्रप दीनिय ॥
राज तेज यों लग्य। जोग माया क्रम चीनिय ॥
जद्यपि न्रपत्ति बहु बल कियौ। नट विद्या चित्तह धरिय ॥
प्रथिराज पानि जल बढ़ि विषम। आगस्ति रूप होइ अनुसरिय ॥
छं० ॥ १७१ ॥

धोम अंचि देषीय। कान संभरि पुकार बर ॥
समै जागि लषि कलँक। जीव अह रहै नहीं धर ॥
रवि नट्ठौ ससि छिप्यौ। चंद भग्गौ भग्गा सुर ॥
पवन गवन नन करै। सीत पालै न अत्ति बर ॥
जो चलै मेर धूवह चलै। भिलै सात जोगी तदप ॥
जो चलै अरक पच्छिम परक। बल छुट्टै बालुक्क बप ॥
छं० ॥ १७२ ॥

पृथ्वीराज की चढ़ाई की खबर सुनकर बालुका राय का आश्चर्य्यान्वित और कुपित होना।

धाह याह यो चंद। सुनिय बालुक्क राव रव ॥
लघु बंधव जैचंद। राइ मंकेस असंभव ॥
सो संभलि कलि क्रूह। जक्क हक्किय दिसि दिसि दर ॥
नह सुनियै अस्तुत्ति। नयर संब गाजि गहब्बर ॥
बालुका राइ इम उच्चरै। कहौ बत्त कारन सु कल ॥

मम करहु धाइ थिर होइ करि। कवन तेग बंधी सु कल ॥
छं० ॥ १७३ ॥

पृथ्वीराज का नाम सुनकर बालुका राय का सेना सजना।

किन रुक्षौ सुअ तरनि। कहै नैरीपति संजम ॥
आज राज जैचंद। कवन उद्देग करै दम ॥
तबै जाइ धाइन। सुनहि मंकेस राउ सुअ ॥
दीलीवै चहुआन। तेन उज्जारि जारि भुअ ॥
सुनि बाद वादि नौसान किय। अप्प बोलि सज्जे [1]सुभर ॥
सज होइ चढ़ौ बढ्ढौ सिलह। अनीं बंधि आषाढ़ बर ॥
छं० ॥ १७४ ॥

बालुका राय का सैन्य सहित पृथ्वीराज के सम्मुख आना।

चढ़ि आयौ चहुआन। देस विध्वंसिय अग्गिय ॥
बर बालुका राइ। बीर बाजे रन जग्गिय ॥
अवित ढीठ चहुआन। बरै बीरं सुअ आनी ॥
धर धूसे धन लुट्टि। जग्य धूसें पंगानी ॥
बर बीर धीर तन तोन बँधि। बालुकराव सु झुक्कियौ ॥
प्रथिराज सेन संम्हौ विहर। ताजी तुंग सु नच्चियौ ॥ छं० ॥१७५॥

चाहुआन से युद्ध करने को जाने के लिये बालुकाराय का हार्दिक उत्कर्ष और ओज वर्णन।

चढ़त राव बालुक्क। आस लग्गी भो भग्गा ॥
सो ओपम कविचंद। देव बानीन चिरग्गा ॥
ज्यों नव बल्लभ प्रीति। काम कामी सो जग्गा ॥
सोइ सनेह सुबंध। प्रीति लागी तन लग्गा ॥
पुक्कार सथ्थ साथैं चल्यौ। कल सथ्थैं गोली चलै ॥
रोर चमक साथैं उठै। त्यों बर कवि ओपम फुलै ॥ छं० ॥ १७६ ॥

---

(१) ए. को. सुनर।

चहुआना संमुहौ। राव बालुक उठि धायौ ॥
छीन लगन पथ दूरि। बरन बरसें बर आयौ ॥
तुच्छ दिवस क्रम बहुत। कत्य आतुर चित चाइय ॥
सब्बँ सेन संमूह। बीर रोसह बरलाइय ॥
लागयौ रोस सामंत सथ। अप्प यान नम तज्यौ किहुं ॥
दिठ परत राइ चहुआन बर। बालुक बर साज्यौ समहुँ ॥
छं० ॥ १७७ ॥

चाहुआन राय की सेनसंख्या।

दूहा ॥ सेन सहस बनीस भर। चढ़ौ स जंगल जूह ॥
नैर छंडि बाहिर चले। तब रज झष्पिय जूह ॥ छं० ॥ १७८ ॥

दोनों सेनाओं की परस्पर देखादेखी होना।

कवित्त ॥ षंधे षेत करसनी। सूर धावै चावहिसि ॥
धन लूटत ज्यों रंक। लज्ज लग्गै न बरं तस ॥
अंबरीष ग्रभ श्राप। जेम दुर्वास चक्र कस ॥
जिम देवासुर देव। सबद जिम तरै काब्बि रस ॥
अद्दत्त जुद्ध हिंदू दुहन। सुबर बीर लग्गे बिरद ॥
संप्रत्ति बीर बाराह बर। सुथिर भए त्रिंमल सरद ॥ छं० ॥ १७९ ॥
वाघा ॥ रन डंबर अंबर उत्तानं। देषे डहर सेन समरानं ॥
सज किय सेन अप्प परसंसे। आप जाति गुन नाम सरंसे ॥
छं० ॥ १८० ॥
सुनियं तामं नाद निसानं। आयौ सेन समुष चहुआनं ॥
दल दुअ ताम हुअं दे ठालं। बज्जे नद्द सद्द भूभालं ॥ छं० ॥ १८१ ॥
गाथा ॥ दल दुअ हुअ देठालं। गज्जे नाद बीर बिसरालं ॥
सज्जे सेन सु चालं। बंधे फौज कमध फसि कालं ॥
छं० ॥ १८२ ॥

बालुका राय की सुसज्जित सेना को देख कर चाहुआन सेना का सन्नद्ध और व्यूहबद्ध होना।

अरिल्ल ॥ बँधी फौज देषी चहुआनं । सज्ज किय सेन आप सब्रानं ॥
बंधे सिलह सूर सूरानं । गज्जै सीस सुभर असमानं ॥ छं० ॥१८३॥
सज्जि सेन सामंत सूर वर । गज्जे गेन सु लग्गि महाभर ॥
बंधे गरट चले गति मंदं । मानि सूर सामंत अनंद ॥छं०॥१८४॥

दोनों हिन्दू सेनाओं का परस्पर युद्ध वर्णन ।

दूहा ॥ जीवंतह कीरति सु लभ । मरन अपच्छर हूर ॥
दो इथान लड्डू मिलै । न्याय करै वर सूर ॥ छं० ॥ १८५ ॥
चले सज्जि दूनों सयन । दिट्ठ दिट्ठ करूर ॥
सामिध्रम्म सा क्रंम गुर । सो संभारै सूर ॥ छं० ॥ १८६ ॥

रसावला ॥ हिंदु हिंदू भिरं । काल हत्ते सुरं ॥
एक एका गरं । बीर डक्कं करं ॥ छं० ॥ १८७ ॥
तार बाजे हरं । गेनं लग्गा नरं ॥
अंत दंती जरं । नाल कड्ढै सरं ॥ छं० ॥ १८८ ॥
हंस चौहं चरं । घात सोभै सरं ॥
झार वडप्फरं । लोह लोहं करं ॥ छं० ॥ १८९ ॥
देवती सेन रं । वज्र नाली करं ॥
पंग वीरं हरं । सूर मत्ते जुरं ॥ छं० ॥ १९० ॥
सिंघ छुट्टै पलं । बीर मत्ते दलं ॥
ढाल ढालं ढलं । बीर चंपे मिलं ॥ छं० ॥ १९१ ॥

वालुकाराय का युद्ध करना ।

कवित्त ॥ वर बालुका विसाल । सस्त्र वाहंत उचारिय ॥
पंग भूमि रतनंन । स हथ घाए अधिकारिय ॥
मद्धि समुद बालुका । पुव्व हीरा गल लग्गा ॥
रतन षट्ट सत छंडि । जिरह लय लरने लग्गा ॥
दल मद्धि एम चोषंद पति । ज्यों ग्रीषम मावसि रवै ॥
डोलन सु चित्त बन गयतें । चल पत्तन कर करनवै ॥छं०॥१९२ ॥

बालुकाराय की वीरता और उसका फुर्तीलापन ।

अँग चतेन बहि हथ्थ। सस्त्र लागत अड़ धारिय॥
लोह लगत सिलहान। दोष परगत्तिय हारिय॥
लोह संक नन करै। लाज संका न दिसा करि॥
छच भ्रम्म चूकंत। सूर संकै न पग्ग धर॥
नव बधुअ संक रत्ता गरुअ। कुल संकै कुल बधु सकल॥
कमधज्ज जुद्ध चहुआन सों। सुबर बीर घरि पंच छल॥छं०॥१९३॥
घरिय पंच साधंत। सूर साधै असि मर मर॥
बालुका अरि राज। सबै भगा जु क्रम्म धर॥
पग पुच्छानन दियै। पेल असिवार परिमानं॥
मोष मद्द असि रेष। परज रज बंने धानं॥
अति बीर सुग्रह तजि रोस बर। इम उकंस चहुआन रिन॥
न्रिप जैत बीर विभ्भर भगति। सुबर बीर आरम्भ धन॥छं०॥१९४॥

बालुकाराय का रणकौशल।

बाज सस्त्र छितिमंत। बीर बरषंत मंच असि॥
सस्त्र धार बाजै प्रहार। वेताल लाल रसि॥
कमल विमल विछुरंत। कमल नंचत बर बरतन॥
दूक च्यारि सिर च्यारि। नीर किन्नौ जु बीर गुन॥
सुर बचन रचन सुरलोक गति। काम धाम धामार तजि॥
बालुकाराव चहुआन सों। दुतयि बीर भारथ्थ सजि॥छं०॥१९५॥

सूरता की प्रशंसा।

चर चालै पय रहै। भान चालै न अचल हुअ॥
मंत अचल कर सुचल। इक न चलंत सूर भुअ॥
अति उतंग दिसि जोति। जोति ऐसे गतिमानं॥
कुटिल चिया चंचल सु। बीज चाव दिसि धानं॥
जिन मुष सु बीर न्रिम्मल सु बर। सार झलै ते जलझली॥
मैं मंत पंथ रूके सुबर। सुगति पंथ पंथा षुली॥ छं०॥ १९६॥

दूहा॥ सुगति मग्ग पंथा षुली। सबर थापि पति सूर॥
जिन गुन प्रगटित पंड कुल। तिहि सँधारिम सूर॥ छं०॥ १९७॥

बालुकाराय का घिर जाना और उसका पराक्रम।

कवित्त ॥ बीर कुंड मंडलिय। परिय बालुकाराय फुनि ॥
चंद मंडि ओपंम। मनों पावस्स मोर धुनि ॥
सिंधु समान भए। तेज बडवानल तुंगं ॥
हेम मज्झि नग घरिय। सूर फिरि मेर सुरंगं ॥
जयपत्त जुद्ध बोलिय सुभर। जं बोल्यौ तं कर कियौ ॥
चहुआन सिंधु लग्गे गिलन। [1]चर अगस्ति मंतह नयौ ॥
छं० ॥ १९८ ॥

युद्ध स्थल का चित्र दर्शन।

त्रोटक ॥ घरिएक भयानक बीर हुअं। बर बज्ज निसान निसान धुअं ॥
श्रमयं श्रम षेद कटंत बरं। मिटि गाबर सीस नवाइ गुरं ॥
छं० ॥ १९९ ॥

दुहु बीरन बीरह हथ्थ धकं। सु मनौ कर तोर निसान डकं ॥
दुहु बीर बिरोधत हथ्थन ही। दुहु दीनह जानि गुमान गही ॥
छं० ॥ २०० ॥

जु परे रुधि सीस कनंक्ष धरे। सुमनों गिर तिंदुअ अग्ग जरै ॥
गज दंतनि सूर दुलग्गि फिरै। तिनकी उपमा [2]कविचंद धरै ॥
छं० ॥ २०१ ॥

जल जावक धाम प्रनार परै। निकसी जनु मध्य झलंग तिरै ॥
सु किधौं ससि निक्करि हथ्थ धरी। निकसो बल लागत फूल झरी॥
घन घाव कियें सिर सूर तुटै। तिन की उपमा कविचंद रटै ॥
मनों धर वामन मापन को। बलि रूप कियौ विधि आपन को ॥
छं० ॥ २०२ ॥

बालुका राय का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना। पृथ्वीराज का उसके हाथी को मार भगाना।

(१) ए.-चमू। (२) को.-मति।

कवित्त ॥ भौर परी प्रथिराज। देषि बालुका मंत गज ॥
चंपि मुट्ठि दिढ़ पानि। सीस बाहीय कुंभ रजि ॥
टुट्टि सीस मुति बरसि। रुधिर भीजै लग्गे असि॥
सुमनों मग्ग षुति पान। चंपि निक्कसिय ओपम तस ॥
जुद्ध स एह भंजौ असह। आदि चंपि सो दिन चरिय ॥
दैवत्त बलह प्रथिराज दुति। छंद चंदकवि उच्चरिय ॥ छं० ॥ २०३ ॥

पृथ्वीराज की सेना का पुनः दृढ़ता से व्यूहबद्ध होना।

व्यूह का वर्णन।

भुजंगप्रयात॥ सँभारे सबै स्वामि भ्रम्मिंति सूरं। बरं बंस रस्सं असं संस नूरं॥
तबै उच्चर्‍यौ .... दिराजं सहाजं। समं मंत ईसं सु दाहिम्म राजं ॥
छं० ॥ २०४ ॥
समं साजियं फौजं सु औजं कमंधं। करों साज आजं अनी अन्न मंधं॥
तबै जंपि राजं सु दाहिम्म दप्पौ। नरंनाह कंधं तुमं काम थप्पौ ॥
छं० ॥ २०५ ॥
मुषं अग्ग कन्हं सु सामंत राजं। गुरूराव गोयंद सम दच्छ नाजं॥
बरं सज्जियं बाइयं निढ्ढुरेसं। मध्यं रष्षियं अप्प राजगं तेसं ॥
छं० ॥ २०६ ॥
सचे सब्ब राषे सु सामंत सूरं। गुरं बीर वाजिब बज्जे करूरं ॥
चले फौज सज्जे समं भट्ट थट्टं। गहारं भरं सेन देषे गिरट्टं ॥
छं० ॥ २०७ ॥

बालुका राय का अपने वीरों को प्रचार कर उत्साहित करना।

तबै उच्चर्‍यौ ऊंच बालुक रायं। निजं नाम आभासि अप्पं सहायं॥
सनंमुष्ष इक्के अनी चाहुआनं। दहे देस सीसं गुरं ग्राम थानं ॥
छं० ॥ २०८ ॥
भयौ काम काजं अपं चंद आजं। निजं भ्रम्म मच्चे कुलं क्रत्य लाजं॥
सुने गज्जियं दट्ठ जुद्धं सनट्ठं। मुषं रत्त नेनं तनं तेन बट्ठं ॥छं०॥२०९॥

दोनों सेनाओं में परस्पर घोर संग्राम होना। संग्राम वर्णन।

मिल्यौ बालुका राइ गज्जं नरिंदं। समं सेल चहुआन करि षग्ग दंदं॥
सजी सेन चतुरंग तारंग रुष्षं। लग्यौ चंपि प्रथिराज ता गज्ज मुष्षं॥
छं० ॥ २१० ॥

भरं भीर भारी उभारी कमानं। भिरे सेन कमधज्ज अरु चाहुआनं॥
बजे दून सेनं मिलं बान बानं। मनों बूंद भद्दं मद्दं मेघ जानं॥
छं० ॥ २११ ॥

गजे सूर सूरं लगे हथ्थ बथ्थं। दुअं उच्चरें आन ईसं दुअथ्थं॥
बजी सार धारं समं सार सारं। मुषं उच्चरे मार मारं करारं॥
छं० ॥ २१२ ॥

समं बीर बाजिच बाजिच बाजे। धरक्कें धरारं सु गो गैंन गाजे॥
तुटें सीस दीसं करें रुंड मुंडं। परें गज्ज भाजें सु तुट्टैं भुसुंडं॥
छं० ॥ २१३ ॥

फटै जठ्ठरं सठ्ठरं सं विहारं। फरं फेफरं डिंभरू तुट्टि भारं॥
विछुट्टैं डरं डिल्लरं अंतरेसं। भभक्कंत श्रोनं सश्रोनं अनेसं॥
छं० ॥ २१४ ॥

कटैं कट्ठ बाजंत षग्गं करारं। मनों कट्ठ कठ्ठारि कूटे कुहारं॥
उरा फार फूटंत पट्टे उलट्टे। मिले हथ्थवथ्थं समं भट्ट चट्टे॥
छं० ॥ २१५ ॥

छुरी जम्म दड्डं सनड्डं प्रहारं। जरादं जरं तुट्टि उठ्ठंत सारं॥
तटक्कंत टोपं गुरज्जं प्रहारं। फटै सीस दीसें विकट्टं विहारं॥
छं० ॥ २१६ ॥

मुडक्कंत कंधं कडक्कंत हड्डं। फडक्कंत फेफं सरे फंस मड्डं॥
दडक्कंत श्रोनं प्रहारे सपूरं। गडक्कंत कंधं सु घायंति जूरं॥
छं० ॥ २१७ ॥

धरं सीस हक्कंत धक्कंक जीहं। नचै षग्ग कमंध धप्पंत दीहं॥
हडक्कंत हक्कंत नाचंत बीरं। पलं चाह गोमाय गाजंत तीरं॥
छं० ॥ २१८ ॥

घइं राइ चौसट्ठि उपट्ठि मद्दं। नचै ईस सीसं डकं डक नद्दं॥
गहै अंत गिद्धी झड़प्पंत तुट्टं। पलं चार चारं अहारंत लुट्टं॥
छं० ॥ २१९ ॥

प्रसारं प्रवारं घनं श्रोन भारं। गहं राइ नादं नदी जेम नारं॥
थलं मंस हड्डं सुथट्टं असेसं। गहै हंस चारी भरै हंस एसं॥
छं० ॥ २२० ॥

हहकार हंकार हक्कार हक्कं। हवक्कं हवक्का धरे धीर धक्कं॥
गहै केस केसं प्रहारै परेसं। हने छंडि आवद्ध आवद्धनेसं॥
छं० ॥ २२१ ॥

समं सूर बथ्थं लरै सूर सथ्थं। बिनानं सु मल्लं पयं ढीक पच्छं॥
कुलं अप्प ईपे बरै आन ईसं। उक्कसंत कंसं रजे बीर रीसं॥
छं० ॥ २२२ ॥

बिना पाइ घायं करै षग्ग टेकं। हुये षंड षंडं बिहडं घिसेकं॥
महा जुद्ध आजुद्ध देषे अपारं। परे हथ्थ सामंत सा सूर भारं॥
छं० ॥ २२३ ॥

बरे इच्छि योरष्य नीवीर द्वंदं। रसं बीर नारद्द नंचै अनंदं॥
इसौं जुद्ध छूतें दुअं जाम वित्ते। मिरैं मंत माहिष्य ज्यौं मंस चित्ते॥
छं० ॥ २२४ ॥

कन्ह और बालुकाराय का युद्ध, बालुकाराय का मारा जाना।

दिषे कन्ह चौहान बालुक्क रायं। उदै दिट्ठ सोकी समं सज्जि घायं॥
तबै बालुकाराइ उभ्भारीय षग्गं। करै कन्ह हेलं सहेलं त्रिभंगं॥
छं० ॥ २२५ ॥

हने बालुकाराइ सो षग्ग झट्टं। कढ्यौ कन्ह झल्लं सु सेलंनि हट्टं॥
हयौ सेल षंडं कमंडं सजरं। सिल्है फौरि फुट्टै पटे पुट्टि भूरं॥
छं० ॥ २२६ ॥

धरं भारियं कन्ह सेलं जु नंषे। पऱ्यौ बालुका राइ सो भूमि धष्षे॥
हन्यौ बालुकाराइ देष्यौ समथ्थं। सबं देषि सामंत आमंत हथ्थं॥
छं० ॥ २२७ ॥

भगी फौज कमधज्ज सा छंडि षंतं। हन्यौ बालुकाराइ देष्यौ समथ्थं ॥
छं० ॥ २२८ ॥

कवित्त ॥ पर्‍यौ राव सारंग । बीर सङ्गौ बड़गुज्जर ॥
ईस सीस संभर्‍यौ । सोइ लीनौ स बंधि उर ॥
गंग दुचित नदि कंपि । उमा भै दीन प्रमानं ॥
सीस ईस ससिकंठ । हथ्थ बड़गुज्जर थानं ॥
रुंधेव पंच पंचौ मिलिय । सवर बीर तत्तौ सँगति ॥
षोषंद राव भुझ्झयौ सरस । स बर बीर भारथ्थपति ॥ छं० ॥ २२९ ॥

बालुकाराय के मारे जाने पर उसके बीर योद्धाओं का जूझ जाना ।

परतन नर भर भीर । सिंधु बझ्झौ चहुआनं ॥
जे हरुए उत्तरे । गयौ बहु हथ्थ निधानं ॥
कुल भारे रजपूत । रहे पथ्थर परिमानं ॥
.... । राज चझ्झौ चहुआनं ॥
बालुकाराइ भारे कुलह । पथ्थर ज्यों मंडे रह्यौ ॥
चहुआन बार बज्जी विषम । तंत बेर उड्डि न गयौ ॥ छं० ॥ २३० ॥

बालुकाराय की राजधानी का लूटाजाना ।

चाहुआन भय राज । सुभर बालुका राज बर ॥
अब लुट्टौं घर धेन । अवहि दभिझयै परहर ॥
धर किपाट बालुका । छूर अंतर संपत्त ॥
पूरन आहुति दीय । पंग जग्यह आहुत्त ॥
बालुकाराइ पंजर पर्‍यौ । देषि उभय चहुआन धर ॥
मोरिया भंजि दोइ बंधि धरि । चर नठ्ठा कासी बहर ॥छं०॥२३१॥
तजि सु नारि भजि पीय । विसरि आतुर भय पंजर ॥
पिय कोमल सुंदरी । परत पिच्छल सह्नर धर ॥
कंचन पत्त परास । छूर कल मोती धारे ॥
नूत पच परिहार । चंद ओपंम विचारे ॥
तारक बाल मंगलति ग्रह । कै नष सुंदरि पारियै ॥

ओपम चंद बरदाइ कवि । जातें बालु विचारियै ॥ छं० ॥ २३२ ॥

बालुकाराय के साथ मारे गए वीरों की संख्या वर्णन।

दूहा ॥ परत सु बालुक राय रन । सहस पंच सम सथ्थ ॥
उभय घटी मध्यान उध । धनि सामँत सु हथ्थ ॥ छं० ॥ २३३ ॥
ढिल्ली ईसय सत्त श्रत । परे सु कटि रन थान ॥
सबे सत्त सामँत कुसल । जै लड्डी चहुआन ॥ छं० ॥ २३४ ॥

बालुकाराय के शौर्य्य की प्रशंसा वर्णन।

कवित्त ॥ धनि बालुकाराय । सेन सध्यौ चहुआनं ॥
पंग जग्य बिगरंत । अंग नित मान सु सानं ॥
सार धार झिल्लोर । सेन धुंसी दुज्जन दै ॥
प्रथम रारि परि कन्ह । बलि बारुन बंभन वै ॥
सामंत सेन एकट्ठ हुअ । संमुह सेन सु धाइया ॥
गोदंड संड नीसान बर । चंपि चुहान बजाइया ॥ छं० ॥ २३५ ॥

बालुकाराय के पक्षपाती यवन योद्धाओं की वीरता का वर्णन।

पऱ्यौ जुद्ध बालुका । मीर बच्चा पंधारं ॥
ते सम पंग कुमार । षग्ग बज्ज्यौ बर सारं ॥
मिलि सामंत सरोस । रीठ बज्जी झाराहर ॥
मनों मेघ मझि बीज । बाल झंझरि ओराझर ॥
सौ सठि सहस मंझझौ मिलिय । धनि सामंत सु हथ्थ हिय ॥
भारथ्थ पथ्थ दुत्ती विषम । चंद छंद बत्त कहिय ॥ छं० ॥ २३६ ॥
चौपाई ॥ बज्जियं बीर आयास तूरं । गज्जियं काल आघात धूरं ॥
*सजी सेन नाइक दिन मानं । सजियं पति दंती विमानं ॥
छं० ॥ २३७ ॥

जैचन्द की सेना और मुसलमान सेना का पृथ्वीराज का मुख रोकना।

* इस छन्द में नीचे की दोनों पंक्तियां तो चौपाई की हैं परन्तु ऊपर की दोनों पंक्तियां छन्द भुजंगमप्रयात ही की हैं। पाठ तीनों प्रतियों में समान है।

भुजंगप्रयात ॥ मिले मीछ कमधज्ज अरु चाहुआनं। बजी सार सारं सु धारं प्रमानं॥
लगी डंबरी रज्ज आयास छायं। निसा पंति गिद्धी रुधिंइन्न पायं ॥
छं० ॥ २३८ ॥

तहां चंद बरदाय ओपंम तब्बी। मनों बाद गंठी परे जगि रब्बी ॥
मिले जोध हथ्थं तिवथ्थं बकारे। परे चंद भट्टीन छुट्टे पचारे ॥
छं० ॥ २३९ ॥

बजे घाइ आघाय घायं घुरक्की। मनों नीर मभ्भें तिरंजे तुरक्की ॥
लगै टोप तेगं सु तूटतं दीसै। मनो मुक्कि छुच्छू छुटे बीज दीसै ॥
छं० ॥ २४० ॥

घरी अद्ध दीहं रह्यौ ता प्रमानं। तबै बाहुर्‌यौ पंग पाइक्क मानं ॥
सबै मीर बंदा तुरक्काम षानं। कहैं पक्करी चाहते चाहुआनं॥
छं० ॥ २४१ ॥

धर्‌यौ पंग मोरी सु पंधार सागै। जिनें रोकियं कन्ह चहुआन भारै ॥
छं० ॥ २४२ ॥

दूहा ॥ चर तिन आनि स बीँट बर। मिलि रोक्यौ प्रथिराज ॥
पंति पंग हय जंग परि। तिहु पुर बज्जन बाज ॥ छं० ॥ २४३ ॥
परि पारस भृत पंग घन। लाग निसानति बान ॥
विंटि सेन प्रथिराज बर। जानि समुंद प्रमान ॥ छं० ॥ २४४ ॥

पृथ्वीराज की उक्त सेना पर चढ़ाई और वीरों के मोक्ष पाने के विषय में कवि की उक्ति।

कवित्त ॥ होत प्रात प्रथिराज। रच्यौ सामंत सूर सँग ॥
चतुरानन वर दिष्ष। पर्‌यौ चिंता सजीव अँग ॥
सिरजत लग्गै बार। मरत इन बार न लग्गै ॥
चित्त चेत सिरजूं सु जूह। उतकंठ सु भग्गै ॥
इतनौ सु एह अंदेह मनि। मरन जुद्ध संग्राम मन ॥
ए जीव रचि फेर न परें। मुगति बंध बंधे सघन ॥ छं० ॥ २४५ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना।

घरिय अद्धदिन चढ़त। छूर छुटि जुरन सु बड्ढे॥
अप्प अप्प मुष रोकि। अरिन मुष दोज सड्डे॥
अनी मुष्य जरि मुष्य। सोइ उच्चाय सु डारिय॥
घरिय च्यार सौ च्यारि। जानि घरियार सु झारिय॥
तट छुट्टि कमंध सु बंधि उठि। भगर यट्ट नट पिल्लयौ॥
चामंडराय दाहर तनौ। बर दुज्जन भर ढिल्लयौ॥ छं०॥ २४६॥

चहुआन और मुसलमान सेना का घोर युद्ध।

भुजंग प्रयात॥ करी ठेलि दूनौ अनौ एकमेकं। घटं लष्ष दूनं भिरे राव एकं।
पियै बारुनी सार तुट्टै दुदीनं। उतं उष्यलै भेजि ग्रज्जानि भीनं॥
छं०॥ २४७॥

गड़े मद्धि अग्गी सजोगीन होई। रजं सत्त सासत्त संसत्त लोई॥
लगें लोह तत्ते रुधिं घुट घुट्टै। परें कुंभ षग्गे अघं कन्न छुट्टै॥
छं०॥ २४८॥

परें बथ्थ बथ्थं विरुझ्झाय छुट्टें। मनों मुक्ति सारी दुअं हथ्थ लुट्टें॥
बहें बान कंमान जंबूर गोरं। सकें उड्डि नाहीं तहां पंषि तोरं॥
छं०॥ २४९॥

महाबीर धीरं लरें ते तरप्फैं। मनों पंग जंगी बली पंथ अप्पैं॥
तहां बीर सों बीर बीरं डकारं। तहां कोपियं राम बारड उषारं॥
छं०॥ २५०॥

हयं अस्सवारं समेतं उठायौ। मनों तापरी ताप माते उचायौ॥
धरी तीय तीयं सु भारथ्थ वित्यौ। रिनं संभरीराव चैवेर जित्यौ॥
छं०॥ २५१॥

कन्नौज की सेना का भागना और पृथ्वीराज की जींत होना।

कवित्त॥ भगिय सेन सा पंग। भगिय चतुरँग भुज मोरिय॥
बर बालुका सु राय। सेन चहुआन ढँढोरिय॥
बर शृंगार प्रथिराज। हुअ सु तिन बेर प्रमानं॥
कायर हयिय प्रमान। समुद उत्तरि चहुआनं॥

बालुकाराय भारौ कुलह । पारथ जिम मध्यह रह्यौ ॥
दोहित्त पंग कमधज्ज कौ । संभरि वै हथ्यह ग्रह्यौ ॥ छं० ॥ २५२ ॥

दूहा ॥ बर बालुका सु राय न्रप । निधि लुट्टिय चतुरंग ॥
त्रिय सुदेस बर भंजनह । बज्जा बज्जि सु जंग ॥ छं० ॥ २५३ ॥

बालुकाराय की स्त्री का स्वप्न ।

कवित्त ॥ जे भीलं गत हुंत । सोइ कीनिय करतारं ॥
जंघ गत्ति धरि लंक । लंक जंघा मति सारं ॥
नेनह दिष्ट सरोज । केस अहि विंध सु किन्निय ॥
परबत संभ्र चढ़ंत । मेलि सांई सुध बन्निय ॥
भय भज्जि राज प्रथिराज बर । गामनि जित राजन सु गति ॥
तजि आस बास सासन सु पिय । सुबर बीर बीराधि मति ॥
छं० ॥ २५४ ॥

बालुकाराय की स्त्री की विलाप वार्ता ।

भुजंगप्रयात ॥ जिनें साजतें धूम धूमें नरिंदं । लगी धूम आयास सो भंजि चंदं ॥
तुरी बारजं राय षोषंद बहं । तहा बालुकाराय संग्राम सहं ॥
छं० ॥ २५५ ॥

तहां बालुकाराय दानै सु मानै । तिनै भंजिया भूप घटि चाहुआन
षगं षग्ग षहे सु धक्का हलाई । जहां पारसीराव सूरं गुराई ॥
छं० ॥ २५६ ॥

छतेरी छनेरी भंडेरी बरारी । तिनं चंद चंदेरि नैरी निहारी ॥
जिने तारिया कालपी कन्दरायं । जिने मंडिया जुद्ध प्रथिराज सायं ॥
छं० ॥ २५७ ॥

जिने आल पिंडाइ राचक्क चक्के । बरं रोरिया दाइ संग्राम सक्के ॥
जिने जग्य जारे धरे गंग पारे । जिने संभरी थाट तंडे निवारे ॥
छं० ॥ २५८ ॥

जिने भंजियं भीम पुर भीम भंजे । जिने भंजिया जाय गोधंग हंजे ॥
जिने भंजियं जाय प्रथमं सु कासी । भए सूर सामंत उग्गं उदासी ॥
छं० ॥ २५९ ॥

जिने भंजियं आय मेवात ग्रामं। जिने वैर सौं सेन सज्जे समानं॥
जिने भंजियं भीम सोमेस भारी जिने राजधानीं सवें पाय पारी॥
छं०॥ २६०॥

जिने आलगी जोग षंडे षपेली। जिने माथुरी मोह मोहंत केली॥
जि सोरीपुरं रोरि पारा जगायं। .... छं०॥ २६१॥

कियं दीन बंबारि प्रथिराज तोरी। षगं षीष षंगार बलोच मोरी॥
तहां ग्रीव बंबारि अग्रीव फूटी। तहां गोधनं धेन चौनान लूटी॥
छं०॥ २६२॥

जिने देस पट्टेर जोरी विछोरी। ते तजें पो पीय कंठं सु गोरी॥
तिनं तीर नद चालहं चाल झंषे। तहां भंपरहि भेम गज झंप लष्षे॥
छं०॥ २६३॥

तिनं चीर संभीर झारंत तुट्टे। मनों रत्ति रंजं तरं पत्त छुट्टे॥
तिनं ग्रीव नगजोति रहि फुट्टि पव्वै। .... ॥ छं०॥ २६४॥

तमंचे सिषर जमदाढ लग्गे। ....॥
तिनं भ्रम्म प्रज्जारि मिटी म्रग्गएनी। तहां चलहि तिन तेज मुषचंद रेनी॥
छं०॥ २६५॥

तहां बीज फल जानि घन कीर धाए। तहां दसन बालभि दसनं छिपाए॥
तिनं सद्द सहरोस सहरोस संकी। तहां थर हरे शकि रही हीन लंकी॥
छं०॥ २६६॥

कव्वि रटि रटति पिय पीज जंपै। एम रिपु खनि प्रथिराज सु कंपै॥
॥ छं०॥ २६७॥

गाथा॥ सेंबर काम चल्यौ चहुआनं। कंपै भै षिय दुज्जन वानं॥
वर छुट्टत नीवी न सम्हारै। लेहिं उसास प्रहार प्रहारै॥छं०॥२६८॥
अंगुरि एक ग्रहै कर बालं। दूजै कीर निवारति जालं॥
थान थान विहवल भइ बालं। मुत्तिन उर वर तुट्टित मालं॥
छं०॥ २६९॥

सो ओपम कविचंद सु पाई। मनों हंस कटि पंछ पिलाइ॥
छं०॥ २७०॥

दूहा ॥ गय मंदा चष चंचला। गुर जंघा कटि रंच ॥
पिय प्रथिराज सु रिपु कियौ। विपरित करन विरंच ॥छं०॥२७१॥
कवित्त ॥ सुभट सतें सहर। घरिनि तिन पुलिय सुरन बल ॥
कुसुम कंप घन उभर। भमर भर करय जु अलि तन ॥
कंपि करग तारंन। अंब पल्लव कि कीर मति ॥
धाह सबद उच्छलीय। कग्ग कलाठ कंठगति ॥
सिर चिहर मोर विसहर गिलिय। भनिस चंद कवियन वयन ॥
चहुआन राव सोमेस सुअ। प्रथियराज इम तुअ दुअन॥छं०॥२७२॥

पृथ्वीराज का बालुकाराय को मार कर दिल्ली को आना।

हनिग राव बालुका। भंजि घोषंद मह्लापुर ॥
लुट्टि रिड्डि नव दिड्डि। कनक पट कूल नंग धुर ॥
करत सास उह्लास। छोड़ि जोरी वर दंपति ॥
फिर्‍यौ राज चहुआन। प्रान देषे हरि संपति ॥
बाजंत नद्द नीसान वर। धाह प्रकास हिलोर ६.१ ॥
भंजेव जग्य जैचंद न्नप। थान बयट्ठौ कंपि पर ॥ छं० ॥ २७३ ॥

गत घटना का परिणाम वर्णन।

सुनि विधात अब दुष्ष। जायषे मानव दुष्षं ॥
चंद दुग्ग अजह्नं दहै। विरहिन अप रुष्षं ॥
रिपु जानत चहुआन। मंत इह गत्त न कित्तौ ॥
चष चंचल गति मंद। गुरन जंघा फिरि धत्तौ ॥
पावर सुगत्ति धरती तनह। मन अंगम गिरि चढ़न कौं ॥
विचारि बत्त भवषित्त मन। तौ बैठति हम गढ़न कौं ॥छं०॥२७४॥

बालुकाराय की स्त्री का जयचन्द के यहां जाकर पुकार करना।

दूहा ॥ रन हारी पुकार पुनि। गई पंग पंधाहि ॥
जग्य विध्वंसिय न्नप दुलह। पति जुग्गिनिपुर प्राहि ॥ छं० ॥ २७५ ॥

इति कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके बालुकाराय बधनो नाम अड़तालिसमों प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४८ ॥

अथ पंग जग्य विध्वंसनो नाम प्रस्ताव।

(उंचासवां समय।)

यज्ञा के बीच में बालुकाराय की स्त्री का कन्नौज पहुँचना।

दूहा ॥ जग्य उआये अट्ठ दिन। अट्ठ रहे दिन अग्ग ॥
तेरसि माघह पुब्ब पष। सुंदर पुकारह जग्य ॥ छं० ॥ १ ॥

यज्ञ के समय कन्नौजपुर की सजावट बनावट का वर्णन और जयचन्द को बालुकाराय के मारे जाने की खबर मिलना।

पद्धरी ॥ तिन समय ताम कनवज नरेस। क्रत काम पुन्य सज्जे असेस ॥
सँवर सँजोग सम जग्य काज। विथ्थुरिय रिद्धि गति विविध राज॥
छं० ॥ २ ॥

श्रृंगारि सहर विविधं बिनान। आनंद रूप रज्जे उतान ॥
तोरन अनूप राजैं सु भाइ। जगमगत षंभ हिम जरित ताइ ॥
छं० ॥ ३ ॥

वासन विचित्र उत्तान ताम। मंडप्प उंच सज्जे सु धाम ॥
बासनह श्रेन विधि बंधि बान। सोभंत धज्ज बंधे सु यान ॥
छं० ॥ ४ ॥

छोनी पवित्र सही सवारि। द्रावै सु मंडि सुर सम अपार ॥
गावंत थानथानह सु गेव। मंगल अनेक साजौ सु भेव ॥
छं० ॥ ५ ॥

जलजात माल तोरन कुसुम्म। बहु रंग विद्धि सोभा सुरम्म ॥
आये सु न्रपति अनेक यान। उहार मत्ति षिति आसमान ॥
छं० ॥ ६ ॥

संमर संजोग लष्षे सु भूप। संपत्त साज हय गय अनूप ॥
देवंत अत्ति उत्तम थान। प्रगटंत अप्प गुन आसमान॥ छं० ॥ ७॥
चिंतै सु चित्त कमधज्ज राइ। केहरि कंठेर वर मुत्ति काय॥
संजोग सज्जि नयरी प्रकार। सम करह साज हय गय सुभार॥
छं० ॥ ८॥

वाजे अनंत बज्जे विवान। बहु न्नत्य करत रंजंत तान॥
कौतिग सु राज राजै अनूप। झलयंत कंठ सा दिट्ठ रूप॥
छं० ॥ ९॥

भूलंत मेन देषत विमान। मझंम चित्त साकल्य जान॥
आतस चरित्त साजे अनेव। नाटिक्क कोटि नाचंत भेव॥छं०॥१०॥
देषहि विवान साजहि सु देव। वानिय प्रसाद कछु कहिय गेव॥
इहि विद्धि सत्त अह वित्ति जाम। अस आइ कुक्कि पर द्वार ताम॥
छं० ॥ ११॥

कर पंग मग्ग आगें सु बीर। सर सुक्कि मुक्कि सुमनं प्रसीर॥
सुनियै न सह नीसान भार। दरबार भइय इत्ती पुकार॥
छं० ॥ १२॥

तम पुच्छि ताम जैचंद राज। अवगुन अधम्म किन करिय काज॥
उच्चंत ताम धाइ सउत्त। चहुआन राव सोमेस पुत्त॥छं०॥१३॥
सब देस भंजि षोषंद थान। बालुकाराय हनि देंष प्रान॥
छं० ॥ १४॥

सात समुद्रों के नाम।

दूहा॥ षीर नीर दधि ईष घृत। वारुनि समुद लवन्न॥
इन सत्तन सम जफने। बोलिय कमध वचन्न॥ छं० ॥ १५॥

दसों दिशाओं और दिग्पालों के नाम।

कवित्त॥ पूरब दिसि पतिइंद। अग्नि कूंनह अगिनेयं॥
दच्छिन यम नैरत्ति। कून नैरत्ति सुनेयं॥

(१) ए.-माय।

पच्छिम अधिपति वरुन । वाय कूनं वइवानं ॥
उत्तर हेरि कुबेर । कून ईसह ईसानं ॥
जरड ब्रह्म पाताल नग । मान षंडि दिगपाल कौ ॥
प्रथिराज कल्हि आनो पकरि । तौ जायौ विजपाल कौ ॥
छं० ॥ १६ ॥

अरिल ॥ द्रोनागिर हनुमंत उपारिय । अहंकार उर अंतर धारिय ॥
कहत चंद हरि गर्व पहारिय । सायक षँचि भारथ बग मारिय ॥
छं० ॥ १७ ॥

बालुकाराय का वध सुनकर जयचन्द का क्रोध करना ।

पद्धरी ॥ दै अधर दंत कंपौ रिसाइ । बुल्लो सरोस कमधज्ज राइ ॥
धन भरौ लष्ष वे सरस वाउ । करि सवालाष नीसान घाउ ॥
छं० ॥ १८ ॥

सज्जौ गयंद सत्तरि हजार । अरु असीलष्ष तिष्षे तुषार ॥
पाइक कोरि धानुष्ष धार । स्वाकोरि सजौ बंके झुझार ॥छं० ॥ १९ ॥
नव कोरि जोरि आतस्स बाज । इत्तनौ सेन छिनमेक साजि ॥
पकरौं दुअन जिन जाइ भाजि । घूनी सु थात को ठोर आज ॥
छं० ॥ २० ॥

गहिलेउ पिसुन पारो विपत्ति । जैचंद कोपि बोल्यौ न्रपत्ति ॥
॥ छं० ॥ २१ ॥

दूहा ॥ जित्ति जगत जैपत्त लिय । दिसि सुरधर उपदेस ॥
छिति रष्षन छिति परस बर । सुनि पंगुरें नरेस ॥ छं० ॥ २२ ॥

यज्ञ का ध्वंस होना और जयचन्द का पृथ्वीराज के ऊपर चढ़ाई करने की तैय्यारी करना ।

पद्धरी ॥ थकि वेद वेन विप्रान गान । आनंद सकल सुनियै न कान ॥
करि चंपि राव मुक्यौ निसास । विग्गर्‍यौ जग्य मंची विसास ॥
छं० ॥ २३ ॥

बंधों सु चंपि अब चाहुआन । विम्मन्यौ जय निहचै प्रमान ॥
जोगिनी राज चिचंग जोइ । बंधों समेत प्रथिराज होइ ॥ छं० ॥ २४ ॥
सन्नाह राज बंधौ स बीर । निर्वार करों चहुआन श्रीर ॥
आहुठराज प्रथिराज साहि । पीलों सु तेल जिम तिल्ल प्रवाहि ॥
छं० ॥ २५ ॥
संभरि जुन्हाइ बुल्लाइ राइ । इक बत्त कहा पिय सुनहु आइ ॥
सुनियै न पुन्य सभ मध्य राज । जुव जसि जुवत्ति अति करिग साज॥
छं० ॥ २६ ॥
पुच्छीस ताम संजोगि बत्त । कहि धाइ कोन मोपित विरत्त ॥
उच्चरी ताम सहचरी एक । बंधी सु राज प्रथिराज तेक ॥छं०॥२७॥
दिल्ली नरेस सोमेस पुत्त । चहुआन पान देषे सउत्त ॥
बालुकाराव सध्यौ सु तेन । षोषंद भंजि पुर लुट्टि रेन ॥छं०॥२८॥

यह सब सुन कर संयोगिता का अपने प्रण को और भी दृढ़ करना ।

सुनि श्रवन बत्त संजोगि तथ्य । चितां सुचित्त गंधर्व कथ्य ॥
संजोगि जोग बर तुम्ह आज । व्रित लयौ बरन प्रथिराज साज ॥
छं० ॥ २९ ॥
द्रिढ करिय मंच सम चित्त अत्ति । पितु विरत बुद्धि छंडौ विमत्ति॥
संजोगि ताम जंप्यौ सु एम । मानों सु सुझ्झ इह द्रढ नेंम ॥
छं० ॥ ३० ॥
चहुआन सुवर मोसत्ति मत्ति । छंडौ सु अवर लालिच अत्ति ॥
इम जंपि मंच सा निज्ज धाम । छंडेव अव्व विधि व्याह काम ॥
छं० ॥ ३१ ॥
दूहा ॥ गंठि जुन्हाइ उन्हाइ निजु । राइ बरन निज दान ॥
श्रुति अनुराग संजोगि कौ । करहु न प्रभू प्रमान ॥ छं० ॥ ३२ ॥

समय उपयुक्त देख कर जयचन्द का संयोगिता के स्वयंवर करने का विचार करना ।

कवित्त ॥ बालवेस बय चढ़त। भ्रम्म रष्षें न पुचि ग्रह ॥
भूमि भूमि न्रिप मिले। जानि वातूल तूल तहं ॥
बर संजोगि प्रनाद। राज बंध्यौ चहुआनं ॥
बंधि बीर प्रथिराज। जग्य मंडौ परवानं ॥
सज्जै जु काइ भंजै कवन। का जानै किम होइ फिरि ॥
पुत्रीय स्वयंबर मंडिकै। फिरि बंधौं दुज्जन असुरि ॥ छं० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ रह सुमंत न्रप चिंति मन। वजी अवाजन साज ॥
सुनि संजोगि कुमारि ने। हृत लीनौ प्रथिराज ॥ छं० ॥ ३४ ॥

यह सुन कर संयोगिता का चौहान प्रति और भी अनुराग बढ़ना।

कवित्त ॥ जग्य विध्वंसिय पंग। दुअन श्रोतान बढ़ाइय ॥
सुनि सुनि रह संजोगि। चित्त हृत लीय प्रवाहिय ॥
बरों कि बर चहुआन। वार पोजं भ्रम्म सारिय ॥
कै हथ्थों देंउ प्रान। बरों मनमथ्थ विचारिय ॥
मन मंझ बत्त इत्ती करी। प्रगट न वल बालह करी ॥
पहुपंग मंत बहु मानि कै। राज राज उच्चित फिरि ॥
छं० ॥ ३५ ॥

दूहा ॥ पंग सुयंबर थप्पि तहं। सुनिय जुन्हाइय बत्त ॥
बर कमोद जिम सुंदरी। रचि वचमनि सुनि गत्ति ॥छं०॥३६॥
मा मुरछी धुक्किय धरनि। सुनिय संजोइय बाल ॥
सुहन सुहंदी बत्तरी। भुअन परट्टी भाल ॥ छं० ॥ ३७ ॥
अप्प स्वयंबर की जरहि। सथ मुक्किय अरि काज ॥
सबै बीर सथ्थह दए। रहि कनवज्ज सु राज ॥ छं० ॥ ३८ ॥
हालाहल की फौज रत। तुंतर किय चहुआन ॥
अप्प अप्प कों ह्वै गई। धर जंगरी विहान ॥ छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलते समय शत्रु की फौज से घिर जाना।

कवित्त ॥ गय जंगल जगलियं । राज निरवास देस करि ॥
राजा रैवन जुथ्य । गयौ प्रथिराज मंत करि ॥
प्रजा पुलिंद नरिंद । समर रावर धर राषी ॥
चीय चीय माविच । थान थानं न्रप पाषी ॥
सम हथ्थ जुथ्थ को कथ्थ गै । सुवर कथ्थ कविचंद कहि ॥
प्रथिराज राज अरु वीर गति । विपन मझ्झ आषेट गहि ॥
छं० ॥ ४० ॥

सब सेना का भाग जाना।

काइर मुक्यौ नरिंद । पुहप परजंत मधुप तजि ॥
सुक सर तजिहति हंस । द्रुझ्झ बन म्रगन पषि भजि ॥
ज्यों कलहीत सु पंषि । तजै तरवर नन सेवं ॥
द्रव्य हीन कौं गनिक । तजत पथ्थर करि देवं ॥
जल तजत कुंभ ज्यौं भिष्ट दुज । जग्य पविच न मानइय ॥
भजि थान थान अरि धत गयं । बर लालचि सु प्रानइय ॥
छं० ॥ ४१ ॥

दूहा ॥ मानि प्रान की लालसा । तजि साईं सों हेत ॥
छंडि गए कायर सबै । रहै सूर बधि नेत ॥ छं० ॥ ४२ ॥

केवल १०६ साथियों सहित पृथ्वीराज का शत्रु पर जै पाना।

कुंडलिया ॥ पालिज्जै लहु पुच लों । मानिज्जै गुरु जेन ॥
वर संकट सो भृत्त ने । साईं मुक्यौ तेन ॥
साईं मुक्यो तेन । सिंघ नन होइ न भिल्लं ॥
सौ समंत छह सूर । समं प्रथिराज इकल्लं ॥
धर धंसे वर पंग । कोस पंची माल्हिज्जै ॥
मिथ्यौ जग्य कमधज्ज । धज्ज बंधे पालिज्जै छं० ॥ ४३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पंग जग्य विध्वंसनो नाम उनचासमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४९ ॥

अथ संजोगता नाम प्रस्ताव लिष्यते ॥

(पचासवां समय ।)

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना और कन्नौज के गुप्त चर का जयचन्द को समाचार देना ।

*दूहा ॥ तिहि तप आषेटक भ्रमें । थिर न रहै चहुआन ॥
जोगिनिपुर जो रष्षनह । दस सामंत प्रधान ॥ छं० ॥ १ ॥
दूत दोइ जुग्गिनि पुरैं । गय कनवज फिरि दिष्षि ॥
ढिल्लीवै ढिल्ली चरित । कहैं पंग सों सिष्ष ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलते फिरना और सांझ होते ही साठ हजार शत्रु सेना का उसे आ घेरना ।

कवित्त ॥ इह अप्पानी घत्त । बैर कढ्ढै चहुआनं ॥
मद्धि प्रात अरु संझ । भयति कंपै ¹पंगानं ॥
पंच अग्ग पंचास । सोर ढिल्लिय रचि गड्ढे ॥
यों कहंत दुत बीय । आय बन बीर सु ठड्ढे ॥
दुसमन दुरंग दैवान गति । अब कुरंग जम्मी ततरि ॥
गज फुंक जेम पूजौ जु द्रुम । चढ़ि अरि संमुह न्नप्प भिरि ॥छं०॥३॥
सिंघ वचन ²चर मानि । पान असि लष्ष सु फेरं ॥
सुवर तप्प चहुआन । कोइ संमुह नन हेरं ॥
भेद न्नपति करिपान । कन्ह लिन्नौ उर भानं ॥
मिलि ततार कमधज्ज । तारि कढ्ढै चहुआनं ॥
वर हंस छिपत एकत्त निसि । प्रात अचानक बढ्ढियै ॥
ढिलही वज्र कर वज्र वर । सट्ठि सहस भर चढ्ढियै ॥ छं० ॥ ४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-गंगानं । (२) ए. वर ।

* मो.-प्रति का पाठ यहां से पुनः आरम्भ होता है ।

सिलह अगें करि लीन। गाम मझ्झें उत्तारिय ॥
सोदागिर ईसब्ब। [1]बीर बढ्ढिउ जस भारिय ॥
अंधारी नव भार। अप्प दूनों संपत्त ॥
अठ्ठ पारि बर चढ्यौ। [2]भेस जू जू बर मत्त ॥
संजुरन बेन कारन्न सब। भाग चवध्यै चढ्यौ ॥
बाजीद षान लूंषे मनों। चूक [3]चौंक बर बढ्यौ ॥ छं० ॥ ५ ॥

सब सामंतों का शत्रु सेना को मार कर बिड़ार देना।

पार पार बाजीद। धाइ अप्पौ भर कोई ॥
चूक चूक चिंतयौ। सब्ब सामंत अगोई ॥
चूक बीर मानि कै। बीर [4]कैमास जु आइय ॥
सूर सूर आहुट्टि। [5]सब्ब हंसीरह धाइय ॥
बर दीन एक अद्दीन जुध। निसि समूह कलहंत बजि ॥
बर जम्म दढ्ढ बढ्ढह परे। [6]जहां तहां हिंदू सु भजि ॥ छं० ॥ ६ ॥
फिर कहंत बन बीर। चरित ढिल्ली चहुआनं ॥
अप्पन न्त्रप आषेट। सूर सन्हौ सुलतानं ॥
बर दाहिम कैमास। सिंघ चौकी बर घल्ली ॥
आय अब्ब सामंत। बंध प्रथिराज सु चल्ली ॥
बर साम दान अरु भेद दँड। कंक बंक न्त्रप किज्जियै ॥
सामंत मंत बँधि सु मति गति। सामि सँग्राम न छिज्जियै ॥ छं० ॥ ७ ॥

सामंतों की स्वामिभक्ति का वर्णन।

एकदेह पहुपंग। बंधि [7]निझ्झर निसंक भरि ॥
दुतिय देह पज्जून। सुरँभ कूरंभदेव बर ॥
त्रितिय देह तूंअर। प्रहार पांवार सलष्षी ॥
चतुर देह दाहिम्म। धरन नरसिंह सु रष्षी ॥

(१) ए. कृ. को.-वीर वढ़ी ऊस भारिय। (२) ए. कृ. को.-भेद।
(३) मो.-चूक। (४) मो.-कैमासह। (५) ए. कृ. को.-हंसारह।
(६) ए. कृ. को.-"जह नह हिंदुन सु भज"। (७) मो.-निडर, निड्डर।

पंचमी देह कमास मति। बर रघुवंस कनक बिय॥
षट देह गौर गुज्जर अठिल। लोहानौ लंगुरि सविय॥ छं० ॥ ८॥

जयचन्द का अपने मंत्री से संयोगिता का स्वयंबर करने की सलाह करना।

तब सुमंत परधान। पंग सब सेन बुलाइय॥
जु कछु मंत मंतियै। मंत बहुआन सु घाइय॥
प्रथम मूल दिज्जियै। व्याल आवै कै नावै॥
जिनहि नाहि दिज्जियै। लाभ [1]सुंदरि अकरावै॥
मोमंत मंत चिंतै न्रपति। बाल स्वयंबर किज्जियै॥
तापच्छ सिंघ एकट्टई। फिरि दुज्जन भिरि भंजियै॥ छं० ॥ ९॥

दूहा॥ इतनी बत जैचंद सों। कही सुमंत प्रधान॥
बत मन्नी जैचंद नें। अंतर मत भए आन॥ छं० ॥ १०॥
मानि मंत पहुपंग ने। महल कहल उठि जाइ॥
बर संबर संजोग कौ। पुच्छि जुन्हाई आइ॥ छं० ॥ ११॥

जयचन्द का संयोगिता को समझाने के लिये दूती को भेजना।

चौपाई॥ सुनी जंत बर बैर जुन्हाई। सहचरि चरी सुरंग बुलाई॥
कहि बर बर उतकंठ सु बाला। चिंते पुच्छि [2]विविरि बर माला॥
छं० ॥ १२॥
सहचरि चरित [3]बरन मोकल्ली। मनों हरि कामन हरी इकल्ली॥
छं० ॥ १३॥
संति करन चित हरन। संतिका नाक तिहि।
*बर सुमंतिका नाम। प्रबोधनि नाम जिहि॥ छं० ॥ १४॥

दूहा॥ सुख सु राजन सुख चित। सुख विलंब न धीर॥
पुरुष जु क्रम क्रम संचरै। नेन सुता पन पीर॥ छं० ॥ १५॥

(१) ए. कृ. को.-सुन्दर। (२) ए. कृ. को.-विवर। (३) ए. कृ. को.-चरन।

* मालूम होता है कि ऊपर की चौपाई के दो अन्तिम दो प्रथम पद भूल से खंडित हो गए हैं।

वार्ता ॥ राजा आयस दीनौ। सहचरी सलाम कीनौ ॥
हमारी सीष धरौ। [1]संजोगिता कौ हठ दूरि करौ ॥

दूतिका के लक्षण और उसका स्वभाव वर्णन।

नाराच ॥ परट्ठि पंगराय दुत्ति पुत्ति आलि सुक्कने।
तिसाम दाम दंड भेद सारसी विचष्षने ॥
बचन्न चित्त चातुरी न ताहि कोइ पुज्जई।
हरंत मान मेनका मनोहरंन सुझ्झई। छं० ॥ १६ ॥
अवन्न नेन सेन सेन तार तार मंडई।
अनेक विद्धि सिद्ध साध ईस ग्यान षंडई ॥
अनेक भांति चातुरीनि वित्त चित्त चोरई।
छिनेक में प्रसन्नवे सु जेम मेन डोरई ॥ छं० ॥ १७ ॥
कलक्कलं अलाप आप ताप ध्रत्त संसई ॥
स्रिषंड ज्यों मिठास बास सासता प्रसन्नई ॥
अनेक बुद्धि लुद्धि सब्ब सुच्छि काम जग्गवै।
सु पाठई चतूर बत्त प्रथंममन्न लग्गवै ॥ छं० ॥ १८ ॥
रहंत मोन मोनही हसंतते हसावही।
विषंम जोग भोष तेज जोर सों नसावही ॥
अगोन कंठ पोत रूप उत्तरं दिवावही।
कपट्ट ग्यान बत्त मंडि हट्ठ सों छंडावही ॥ छं० ॥ १९ ॥
प्रचारिका सु चारि जाइ अंगनै समुझ्झवै।
अनेक चित्त चातुरी सु आप मन्न [2]सुझ्झवै ॥
॥ छं० ॥ २० ॥

गाथा ॥ चंचल चित्त प्रचारौ। चंचल नैंनीय चंचला वेनी ॥
थावर थित संजोई। थावर गति गुह्य गंमाहि ॥ छं० ॥ २१ ॥

दूती का संयोगिता से वचन।

रासा ॥ अलस नयन अलसायत आदुरु प्रप्प किय।
किम बुझ्झिय मो तात सकिझ्झिय एक हिय ॥

(१) ए. कृ. को.-संजोगि। (२) मो.-परत्ति।

तब बाले बर तात सयंबर मंडइय।
कहि बर उतकंठाइ माल उर छंडइय ॥ छं० ॥ २२ ॥
चौपाई ॥ मिलि मंडल राजान्न सु बरई। सो उच्छव बंधे संकरई ॥
देषि वाम भोली तजि अंगं। ते ऊभे दरबारह पंगं ॥ छं० ॥ २३ ॥

दूती की बातों पर कुपित हो कर संयोगिता का उत्तर देना।

कवित्त ॥ दै बर सेन सँजोग। सषि सहचरि सम बुल्लिय ॥
अवुझ घात बज्रपात। काम वेमो दुष भुल्लिय ॥
[1]परसमाद कै कित्ति। ताहि गंगा गुन गावै ॥
बंझि पूत रस पढ़त। अंन हीनह समझावै ॥
सहचरिय बतनि सुन्निय सुवर। चित चल चित बत्त न बकिय ॥
बर भई समझि संजोगि पैं। फिरि उत्तर तिन तब्ब दिय ॥छं०॥२४॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा और संयोगिता के विचार।

दूहा ॥ जे बंधे पित संकरह। जे षड्डे पित लोन ॥
ते बट्टी जन बापुरे। बरै सँजोगी कोन ॥ छं० ॥ २५ ॥
रे सह सह सहचरिय गुन। का जानौ कुल बत्त ॥
जे मो पित वापह कहै। तेमो बंधव भत्त ॥ छं० ॥ २६ ॥
तिहि पुची सुनि गुन इतौ। तात बचन तजि [2]काज ॥
कै वहि गंगहि संचरौं। पानि ग्रहन प्रथिराज ॥ छं० ॥ २७ ॥
सुनत राज अचरज्जि किय। हिंयै मन्नि अनराव ॥
हौं बरि अवरहिं देउंबर। दैवै अवर सुभाव ॥ छं० ॥ २८ ॥
तब पंगुरि मन पंगु करि। धाइ सबुझ्झी बत्त ॥
तुम पुचौ गुन जानि हौ। करहु दूरि हठ इत्त ॥ छं० ॥ २९ ॥

संयोगिता का बचन।

चंद्रायना ॥ मो मन मंझ गुरू जनं गुझ्झ सु तुम कहौं।
जंपत लाजौं जीह सु उत्तर लहु लहौं ॥

(१) मो.-मुझ्झवै। (२) ए. कृ. को.-परम। (३) मो.-काहु।

सत्त सेन सामंत सूर छह मंडलिय।
बरन इच्छ बर मोहिय हंति अषंडलिय॥ छं०॥ ३०॥

धा का वचन।

दूहा॥ अन दिषि हत लीजै नहीं। तात मात [1]बरजन्त॥
पच्छि मनोरथ पुज्जि है। मानि सीष धरि [2]मन्त॥ छं०॥ ३१॥

कवित्त॥ बचन समुह संजोगि। वाल उत्तर उच्चारिय॥
अजहूं कनक समूह। तुच्छ जानै नर नारिय॥
मलया [3]पाम पुलिंद। करै इंधन बर चंदन॥
अति परचौ जिहि जानि। काच कीजै अलि बंदन॥
सो सरै पंच पंचौ भयौ। परचै नहिं चहुआन किय॥
संयोगि क्रम्म बर पुव्व गति। तैंत अली अलि व्रत्त लिय॥छं०॥३२॥

सहचरी का वचन।

सहचरी वाक्य॥ गाथा॥ मुगधे मुगधा रसया। अवरं जे भिन्न रस एवि॥
लहुआ लुहान पुत्तं। तूं पुत्ती राज ग्रेहायं॥ छं०॥ ३३॥

पृथ्वीराज के वीरत्व का संकीर्तन।

संजोगिता का वाक्य।

कवित्त॥ जिहि लुहार सुनि दुत्ति। साहि शंकर गढ़ि बंध्यौ॥
जिहि लुहार गढ़ि षग्ग। पंग जग्गह घर रुंध्यौ॥
जिहि लुहार सांडसी। भीम चालुक अहि साहिय॥
जिहि लुहार आरन्न। बरै बर मानस गाहिय॥
पावक्क सबर बर नैरि सह। अरनि मंडि जिहिं वारयौ॥
भव भूत भविष्यत व्रत मनह। कुल चहुआनह तारयौ॥ छं०॥३४॥

दूहा॥ अथवा राजन राज ग्रह। अथवा माय लुहानि॥
विधि बंधिय पट्टल सिरह। इह मुष गंध्रव जानि॥ छं०॥ ३५॥

---

(१) ए. कृ. को.-गुरु जन्न। (२) ए. कृ. को.-मन्न।
(३) ए. पर मर कृ. को.-पमर।

साटक ॥ आरत्ती अजमेर धुम्मि धमनी, कर मंडि मंडोवरं ॥
मोरीरा मर सुंड दंड दमनो, अग्निं उचिष्टा करी ॥
रनथंभं थिर थंभ सीस [1]अहिनं, ज्वलदिष्ट कालंजरं ॥
क्रप्पानं चहुआनं जान रहियं, घड़नोपि गोरी घड़ा ॥ छं० ॥ ३६ ॥

सखी का वाक्य ।

सषी वाक्य ॥ तो पुची मरहट्ट थट्ट सबले, नौमंच वैरागरे ।
कर्नाटी कर चीर नीर गहनो, गोरी गिरा गुज्जरी ॥
निमीवे हथलेव मालव धरा, मेवार मंडोधरा ।
जित्ता तातय सेव देव न्रपती, तत्वान्यनं किं वरे ॥ छं० ॥ ३७ ॥

स्लोक ॥ नमे राजन संबाद्दे । नमे गुरु जन आग्रहे ॥
वरमेक स्वयं देहे । नान्यथा प्रथिराजयं ॥ छं० ॥ ३८ ॥

संयोगिता की संकोच दशा का वर्णन ।

कवित्त ॥ श्रवननि सहचरि वचन । चित्त गुरुजन संभारिय ॥
रसन वचन चाहंत । पन सु अप्पनौ विचारिय ॥
समभिलाष गंध्रब्ब । भयौ किल किंचित नारिय ॥
नयन उमड़ि जल बिंद । बदन अंसू परि भारिय ॥
उपमान इहै कविचंद कहि । बाल अदिन सुर संभयौ ॥
उफफेन अमी मभझह रह्यौ । ससि कलंक उफफनि गयौ ॥छं०॥३९॥

द्रिग रत्त करि बाल । भौंह बंकी करि षिझ्झिय ॥
सो ओपम बरदाइ । चंद राजस मन भज्जिय ॥
सैसव जुवन नरिंद । परसपर लरत बिआनं ॥
मनु सम रष्षत बाल । दुहुन सौं पीझत आनं ॥
भोहन्नि तीर आने छुरी । दुहुन बीच अड्डी करी ॥
सो रूप देषि संजोगि कौ । उठि सहचरि मंतह हरी ॥ छं० ॥ ४० ॥

दूहा ॥ जा जीवन वंतह वयन । बयन गये म्रत होइ ॥
जा थिर रहै सोई कहौ । हौं पूछूं तुम सोइ ॥ छं० ॥ ४१ ॥

(१) मो.-अहितं ।

सखी का बचन ।

थिरु बाले वल्लव मिलनु । जो जुब्बनु दिन होइ ॥
*गयौ जुवन कछु बनत नहिं । रति मंझै घट खोइ ॥ छं० ॥ ४२ ॥

संजोगिता का बचन ।

रति आग्रह तिन सौं करहु । जो तुम सषी समान ॥
ज्वाब ज्वाब लजा करौं । मौं तुम तात प्रमान ॥ छं० ॥ ४३ ॥

सखी का बचन ।

तोसौं मात न तात तन । गात सुरंगरि याह ॥
यों जोवन अथ्थिर रहै । अंब कि अंजुरियाह ॥ छं० ॥ ४४ ॥

साटक ॥ जाने मंदिर हार चार चिहुरा वाढ़ंत चित्तानलं ॥
जाती फुल्लय [1]पंक जस्य कलया, कंदर्प दीपं प्रभा ॥
झंकारे भ्रमरे उडंत बहुला, फुल्लानि फुल्लंतया ॥
सोयं तोय संजोय भोग समया, प्राप्तं वसंते छबी ॥ छं० ॥ ४५ ॥

संयोगिता वचन (निज पण वर्णन) ।

कुंडलिया ॥ कहि सजोगि सुनि बत्त इह । मरन सरन मुहि एक ॥
किम अनि रावह लभ्भिहै । दुल्लह जनम विसेष ॥
दुल्लह जनम बिसेष । लज्ज सिंगारम थक्की ॥
बाहिथवत चहुआन । आस सासा जिय रुक्की ॥
वर गुरुजन बिसाहनौ । हिंदु हद बद्दह हियौ ॥
सुक आई सवरीस । उभैं पच्छै श्रुति कहियौ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

साटक ॥ इंद्रो किं अलि अन्यईय अनयो, चक्की भुजंगा सुरं ॥
चच्छी चारु विचार चारु भंवरे, चिंचीनि बंका करे ॥
तस्थानं कर पाद पल्लव वसा, बल्ली वसंता हरे ॥
चतुरे तव चतुराइ आनन रसा, सा जीव महना वरे ॥ छं० ॥ ४७ ॥

दूहा ॥ ग्रभ्भ आइ पहुपंग कै । वर चहुआन सु लेषि ॥
सुद्धि नहीं फिर बोलु तुहि । रन षलह करि देषि ॥ छं० ॥ ४८ ॥

---

* यह दोहा मो.-प्रति में नहीं है ।   (१) मो.-चम्पकस्य ।

श्लोक ॥ संबादेव विनोदेव । देव देवान रष्छितं ।
अनुप्राने प्रयाने वा । प्रानेस ढिल्लीश्वरं ॥ छं० ॥ ४९ ॥
दूहा ॥ देहि सही संजोगि दै । निकटति पंग कुमारि ॥
जुग्गिनिवै जीवन मरन । लै अलि अब्ब विचार ॥ छं० ॥ ५० ॥

दूती का निराश होकर जैचन्द से संयोगिता का सब हाल कह सुनाना।

सुनत सहचरी पुत्ति वच । बिनसच पुत्ति उदास ॥
उत्तर दीन सु उत्तदिय । पंग नरिंदह पास ॥ छं० ॥ ५१ ॥
दुत्तिन उत्तर उत्तरिय । बुद्धि बंध परमान ॥
नृप आगे बढ्ढिय न कछु । उत्तर दियौ न आनि ॥ छं० ॥ ५२ ॥

संयोगिता के हठ पर चिढ़ कर जयचन्द का उसे गंगा किनारे निवास देना।

सहचरि पंग नरिंद सजि । कहिय आइ अलि जाइ ॥
बर संजोगि न मानई । चित्त करहु समझाइ ॥ छं० ॥ ५३ ॥
तब झुकि पंग नरिंद ने । तट गंगा किय ग्रेह ॥
कै बुड्डवि जल मझ्झि परै । कै नैन निरष्षे देह ॥ छं० ॥ ५४ ॥
षोडस दान समान करि । दीने दुजवर पंग ॥
घनं अनष चहुआन कै । रष्षि सुरी तट गंग ॥ छं० ॥ ५५ ॥

गंगा किनारे निवास करती हुई संयोगिता को पाठिका का योग ज्ञान उपदेश।

झुकि तकिए गंगा तटह । रचि पचि उंच अवास ॥
चहति गही चहुआन कौ । मिटै बाल उर आस ॥ छं० ॥ ५६ ॥
भुजंगी ॥ किए गंग तट्टं अवासं संजोगी । रही सातषन्ने क छंडी सभोगी॥
वसंतारिवासं दई सत्त दासी । बीयं बंभनी मह नादीय पासी ॥
छं० ॥ ५७ ॥
तियं पान पानी सयं दुद्ध धारै । करै हत बाला रहीता अधारै ॥
करै जोग ध्यानं सलेषं अलेषं । सोइ सुप्पनं चित्त चौहान देषं ॥
छं० ॥ ५८ ॥

फिरै पंषिनी जीव जा ज्यों प्रमानं। इकं घट्ट ध्यानं धरै चाहुआनं॥
दलं पुब्ब सेतं अबं इन्न राजै। अदं ताव द्वार सिंघारेज साजै॥
छं०॥ ५९॥
दलं रत्त तायं गुनं होइ अब्बं। तबे नीद आलस्य आवै जु सब्बं॥
दलं दच्छिनं रूप स्वी प्रमानं। तहां क्रोध उप्पन्न सो मूढ़ जानं॥
छं०॥ ६०॥
दलं ता बनै रत्ति नीलं बरानं। तहां यत्त उग्गं मनं जंम रानं॥
दलं पच्छिमं स्याम वर्ण विराजै। तहां हास उग्गै विनोदंत साजै॥
छं०॥ ६१॥
दलं बाय कोनं नभं रंग साजी। तहां चिंति चितं उचाटं विचारी॥
दलं उत्तरं पीत हब्बक लज्जी। तहां भोग सिंगार कंचित्त भज्जी॥
छं०॥ ६२॥
दलं गौर इक्कं इसानं जु होई। तहां खज्ज संका सु संगी सजोई॥
संधी संधि इक्कं मनं मह होई। तहां रोग चिंता चिदोषं सजोई॥
छं०॥ ६३॥
इसो अंबुजं सास मब्बं बनाई। तहां मर्द अंसी सुषं लोक पाई॥
कहै बंभनी भोग संजोग सिष्षी। तहां गेन बंधं स्वयं जोति लष्षी॥
छं०॥ ६४॥

संयोगिता का अपना हठ न छोड़ना ।

चौपाई॥ तब इक दिन इम बंभनि बोलिय। सुत्तिय मन चहुआन संजोंलिय॥
कै चहुआन ग्रहौं कर भज्जिय। का तब इत संजोग सु रुज्जिय॥
छं०॥ ६५॥
सुनि फुनि राज बचन इम जंपै। घर इर धर दिल्लिय पुर कंपै॥
ज्यों रवि तेज तुच्छ जल मीनह। पंग भयं दुज्जन भय छीनह॥
छं०॥ ६६॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके संजोगिता नेम आचरनों नाम पचासमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ५० ॥

अथ हांसीपुर प्रथम जुद्ध नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(इक्यावनवां समय।)

दिल्ली राज्य की सरहद्द में कन्नौज की फौज का उपद्रव करना।

दूहा ॥ ढुंढि फौज जैचंद फिरि। बर लभ्यौ चहुआन ॥
चंपिन उप्पर आहि बर। रहै ठठुकि समान ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ मास एक पहुपंग। फवज आहट्टि सु पुच्छी ॥
ढीली तें पच कोस। रंक लुट्टी गहि लच्छी ॥
फिरि आए न्रप पास। देस दोऊ अरि बस्से ॥
राह रूप प्रथिराज। अग्गि पंगह गहि गच्छे ॥
न्रिम्मान भान कूरंभ भुज। हांसीपुर न्रप रष्षियै ॥
सामंत सबै कैमास बिन। दुज्जन मुष्ष सु दिष्षियै ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का हांसी गढ़ की रक्षा के लिये सामंतों को भेजना।

हांसीपुर सामंत। कन्ह रष्यौ परिमानं ॥
रष्यौ भीम पुंडीर। सलष रष्यौ सुत भानं ॥
रष्यौ जैत पँवार। कनक रष्यौ रघुबंसी ॥
रष्यौ देवह क्रन। रष्षि उद्दिग क्रन गंसी ॥
बग्गरी राव रष्यौ न्रपति। रा चामंड सु रष्षियै ॥
सामंत सूर तेरह चिगढ़। गोरो मुष दह दिष्षियै ॥ छं० ॥ ३ ॥

हांसीपुर का मोरचा पक्का करके पृथ्वीराज का शिकार खेलने को जाना।

दूहा ॥ न्रप आषेटक मंडि कै। ढिल्ली रषि कैमास ॥
पंच पंच सामंत सह। जुग्गिनि पुरह अवास ॥ छं० ॥ ४ ॥
ढिल्ली वै आषेट बर। पहुपंगनौ जु पास ॥
नैर सु रष्यौ सेन सह। न्रिप हांसी पुर पास ॥ छं० ॥ ५ ॥

कवित्त ॥ चढ़ि चहुआन नरेस। भंजि मैवास सबै बर ॥
गुज्जर गोरी पंग। देस दच्छिन सु पत्ति धर ॥
विषम वाय ज्यों तूल। मूल सब अरिन उड़ाइय ॥
बीर भोग बसुमती। बीर रस बीर अघाइय ॥
चामंड राव गोरी दिसा। भोज कुँअर ढिल्ली करी ॥
सामंत सूर असिवर बलह। हांसीपुर अग्रह धरी ॥ छं० ॥ ६ ॥
चहुआना समसूर। सबै सामंत धरिवारं ॥
सगपन सम जुत लाज। समै सामंत पुब धारं ॥
आदर बर चहुआन। हथ्थ अप्पे सुरतारं ॥
हंस किरनि सम गाज। राज सोभै हज्जारं ॥
आसनी सीस हांसी पुरह। बर बरषै सुरतान दिसि ॥
सत पच सूर संग्राम रवि। सो नतु दै देहौ प्रहसि ॥ छं० ॥ ७ ॥

बलोच पहारी का शहाबुद्दीन के साथ हांसी गढ़ पर चढ़ाई करने का षड्यंत्र रचना।

हांसीपुर सामंत। सुनिय बलोच पहारी ॥
हैं मारू पतिसाह। तेन बेगम पय धारी ॥
अति बलवंत बलोच। भेद दीनौ पतिसाहं ॥
हांसीपुर हिंदवान। देस अरि मिथ्र सुगाहं ॥
तुम हुकम जुद्ध इन सों करों। अरु बेगम सथ्थे सुभर ॥
मिलि सबै मंत तंतह करै। तौ कहूँ हांसी जु धर छं० ॥ ८ ॥
दूहा ॥ हम भुमिया भुमवट करहिं। तुम सहाय हम भीर ॥
सब पंधार बलोच मिलि। पनि कहुँ ग्रह तीर ॥ छं० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज का एक वर्ष अजमेर में रहना।

इक बरष प्रथिराज बर। रह्यौ ग्रेह तिप थान ॥
चावद्दिसि धर भुगवै। बर इच्छा धर भान ॥ छं० ॥ १० ॥
धर बीतिय मत्तिय छुरी। धर नागौर निधान ॥
जिन भुज्जन ढिल्ली धरा। ते रष्षे परिमान ॥ छं० ॥ ११ ॥

बलोच पहार का पत्र पा कर शहाबुद्दीन का प्रसन्न होना ।

कवित्त ॥ यों चाहैं न्रप सूर । चंद चाहै चकोर मुष ॥
बूड़त नाव सु कीर । हथ्य वोहिथ्य बीर रुष ॥
सूकत नाजह मेघ । प्रज्ज सारी अभिलाषै ॥
आहत तत्त अंतरे । बाल संम्रत गुन चाषै ॥
देषियै दुनी चहुआन मुष । लज्ज पत्ति परबत सु गुर ॥
मक्का चलाइ बेगम न्रपति । तत्त कथा आहत्त सुर ॥ छं० ॥ १२ ॥

शहाबुद्दीन का अपनी बेगमों को मक्के को भेजना ।

भुजंगी ॥ सयं सत्त वेगंम दीनी नरिंदं । तिनं लज्ज पानी मुषं मेछ इंदं ॥
महं बड्डि डड्डी लजं मुष्ष राची । दियौ षान निसुरत्ति जा मुक्ति जाची ॥
छं० ॥ १३ ॥
मियानेति पन्नी किरं रान भट्टी । जुलाची चिवत्ते विराजी सु घट्टी ॥
महं माहु मंती सु सामंत ध्रम्मं । दियं साहि गोरी सकं बीर ब्रम्मं ॥
छं० ॥ १४ ॥
घने हेम हूनं विभूती निनारी । तिनं देषि दब्बंर ग्रब्बं प्रहारी ॥
मयं मोह मक्का तिनी जात मन्नी । वियं ग्रेह ब्रम्मं क्रमं जात छिन्नी ॥
छं० ॥ १५ ॥

हांसीपुर में उपस्थित पृथ्वीराज के सामंतों का वर्णन ।

मोतीदाम ॥ मयं इत मध्य महा रस वान । उयौ जनु चंद कलानि पिछान ॥
हस्यौ नर वाहन नाग नरिंद । सु मोतीयदाम पयं पय छंद ॥
छं० ॥ १६ ॥
रहे बर सूर कलानिधि राज । मनों न्रप तेज उदै गिरि साज ॥
रहै अरि आसिय आसय सूर । मनों पवनंसुत पञ्चय मूर ॥
छं० ॥ १७ ॥
रह्यौ बर बीर सु षामँडराइ । मनों सत पुच्च तिनं धूम षाय ॥
रह्यौ बर बीर चंदेलति सूर । अरी घन बाहन ज्यों नद पूर ॥
छं० ॥ १८ ॥

रखौ रजि सारँग सारँग गौर। सु रष्यन कों छिति पच्चन मौर ॥
मइं गुर आदव जाम प्रमान। रहे ग्रहि आसिय सूर सुजान ॥
छं० ॥ १९ ॥
सु मोरिय सादल वीर विवाह। अरी दल चंपन कौ ससि राह ॥
वरं हत दाड़िम देव प्रमान। .... पारथ के उनमान ॥
छं० ॥ २० ॥
धनी धर धार धराहर पान। सु विक्कम भोज तनें उनमान ॥
षिची वट षीचिय राव प्रसंग। ([1]च) मरावली बंधन जोति अभंग॥
छं० ॥ २१ ॥

बलोच पहार का सांक्षिप्त वर्णन।

बली हत वाह स जोवनराज। जिनं गर दिल्लिय की धर लाज ॥
न्रनाहन साह सु मंचिय एक। मनों बल भीम अट्टत्तय तेक ॥
छं० ॥ २२ ॥
सतं वर सामँत मध्य सु टारि। रहे वर आसिय साहन च्यार ॥
तिनं मधि बंसिय सक्क सजूर। तिनं उठि भारथ कंदल भूर ॥
छं० ॥ २३ ॥
उभै सुर मध्य सु राजन बीर। प्रषें सुन अष्यि न लिंग्रह चीर ॥
तिनें न्रप टारिय तेसम अष्यि। सु रष्यिय राजन आसिय पष्यि ॥
छं० ॥ २४ ॥

साटक ॥ राजं जा न्रप राज राजत समं, दिल्ली पुरं प्रासनं ॥
दुर्जोधन सम मान भीषम जुधं, बुद्धंतयं जोवनं ॥
निर्जयं च चिकाल बधनं वधं, गोरेमि भा [2]सेसयं ॥
सोमिचं च सषा वचंन गुरयं, चेवा गुरं चे सषं ॥ छं० ॥ २५ ॥

बलोच पहार का आसीपुर में स्थानापन्न होना।

कवित्त ॥ तिन तुरंग गज भंजि। अंग संभरि उद्धारं ॥
तिन प्रथिराज नरिंद। वीर लभ्यो नह पारं ॥
ते रष्षे आसी नरिंद। चिय हार सु चंगे ॥

(१) (च) पाठ अधिक है। (२) क.-निभा संसय।

विधि विधिना परिमान । देव देवा दिसि संगे ॥
सुध मध्य विषम घियपत्ति न्रप । परषि रह्यौ ढिल्ली न्रपति ॥
अग्गर सु सकल सुरतान कौ। दिपति दीप दिव लोक पति ॥छं०॥२६॥

बलोच पहार का शाही बेगमों के लिये रस्ता देने को पज्जूनराय से कहना और रघुवंस राम का उससे नाही करना।

मध्य पंथ संभरिय । चलन बेगक अधिकारिय ॥
मिलि बलोच पाहार । राव चामंड सु धारिय ॥
जु कछु भेद संग्रह्यौ । दियौ तिन भेद प्रमानं ॥
विन अग्या सामंत । अग्गि लग्गिय आपानं ॥
बरजए राम रघुवंस गुर । गामी बल लग्गा विहसि ॥
पज्जूनराव पावस पहर । अमर मोह भूले रहसि ॥ छं० ॥ २७ ॥
दूहा ॥ सो नागौर सु रष्षि न्रप । अप दिल्ली पुर पास ॥
न्रप अग्या विन सूर भर । करिग अहस्त सु वास ॥ छं० ॥ २८ ॥

बड़े साज बाज के साथ बेगम का आना और चामंडराय का उसे लूटने की तैयारी करना।

कवित्त ॥ चढ़ि मक्का बेगंम । साहि जननी अधिकारिय॥
अति सु भ्रम्म माया न । क्रंम विग्यान विचारिय ॥
अट्ठ लष्य हाक्कन । पट्ट चिय द्रव्य रजंकिय ॥
सो हथ्थी बर बाज । जाइ पंथह सा बक्किय ॥
संभरि सुकान चामंड न्रप । लच्छि लोभ चल मत्त सुनि ॥
बरजयौ बीर रघुवंस नर । तौ पनि चढ्यौ अभ्भ गनि ॥ छं० ॥२९॥

बेगम के पड़ाव का वर्णन।

साटक ॥ पासं साहर भार मध्य सघनं, पानीय मिष्टं गुनं ॥
एकं रूपय रेष साहस विधिं, रम्यं हरम्यं तलं ॥

जानिज्जै बन हंस छग्ग चकितौ, नीरा वराधिं गुनं ॥
साते तेज फिरस्त अंग समयं, ग्रैयं सु बेगम सुभं ॥ छं० ॥ ३० ॥

बलोच पहारी का सामंतों के पास जाकर शाह का वर्णन करना।

कवित्त ॥ पाहारी बल्लोच। पास सामंत सपत्तौ ॥
माष ध्रम्म सुरतान। भेद करि भेद सु दिन्नौ ॥
है आमिष्ट सुवास। तमकि सब बीर सु हल्लिय ॥
भर गोरी सुरतान। संग षुरसान सु चल्लिय ॥
बर उमगि लच्छि गोरी ग्रहै। हौं षंधार अगियान बर ॥
सोधौर कोन चहुआन कौ। लोइ लंक लुट्टे सघर ॥ छं० ॥ ३१ ॥

सामंतों का रात को धावा करके बेगम को लूटना।

तब सामंत सु तक्कि। चूक चिंतिय सब धाए ॥
अद्ध रयनि परि सोइ। जोंर हिंदू भर आए ॥
ग्रहि बेगम सब सथ्थ। लुट्टि लिय पास षजीना ॥
भजि बलोच केइ झुझ्झि। सु बर रन्नो बह दीना ॥
बुंबार सद्द दस दिसि भइय। अन चिंतत अनवत्त हुय ॥
दैवत्त गत्त ऐसी हुइय। लहिय [१]घत्त रतवाह दिय ॥ छं० ॥ ३२ ॥

दूहा ॥ इह कहंत पुक्कार बर। पाहारिय सौं षेद ॥
बेगम लुट्टि नरिंद भर। लुटि लच्छि भर भेद ॥ छं० ॥ ३३ ॥

कवित्त ॥ पज्जूना कूरंभ। सबै सामंत हटक्किय ॥
सब अभंग सामंत। अग्गि बन जग्गि भटक्किय ॥
बारह षान बलोच। कंध संगह दिषि आइय ॥
बिन अग्या प्रथिराज। मुक्कि हांसीपुर धाइय ॥
उत्तर सुमग्ग बंधौ विषम। अद्ध सेन उप्पर परिग ॥
बेगंम सुट्टि बंधिप सयन। लच्छि अमग्गत सह भिरिग ॥ छं० ॥ ३४ ॥

दूहा ॥ अचरज सब सामंत कौं। कहि अब गुज्जर राम ॥
जनति सुबर सुलतान की। अह भर अवधह वाम ॥ छं० ॥ ३५ ॥

(१) ए.-पत।

विन पुच्छै बड़ गुज्जरह । चूक कःयौ सामंत ॥
तिन सों ए बत्ती कही । गुन में दोस दियंत ॥ छं० ॥ ३६ ॥

बेगम के सब साथियों का भाग जाना और बेगम का सामंतों से प्रार्थना करना ।

कवित्त ॥ भग्गा बर सब सथ्थ । रही बेगम अधिकारिय ॥
मृतक अंग संग्रह्यौ । सस्त्र किन ग्रहि न हकारिय ॥
बार बार दिषि समुष । चीर द्रुपदि ज्यों षंचत ॥
उहित सह गोव्यंद । दुहित षुहाय सु उच्चत ॥
अल्लह रु राम इक्कै निजरि । विपष बंध बंधे चलहि ॥
साध्ंम पंथ जू जू कियौ । मुगति पंथ एकें षुलहि ॥ छं० ॥ ३७ ॥
मुगति पंथ नह भिन्न । एक पंथं अधिकारिय ॥
एक नरक संग्रहै । एक मुक्तिय सु विचारिय ॥
अंत हरुअ ह्वै तिरै । क्रम्म भारो सो बुड्डै ॥
इक्क अंस संग्रहै । अहक सा पुरिसह छुड्डै ॥
संसार सकल बुद्यौ फिरै । कहै बंध बंध्यो न किहि ॥
बुड्डै सु इक्क सारंग सुक । सु बुधि बुद्ध तत्तह लहहि ॥ छं० ॥ ३८ ॥
चौपाई ॥ असु सारंग पत्तियै बंधि । उड़ै साष ह्वै राषै संधि ॥
यों न विचारि सु चामंड राइ । मेछ क्रम्म लग्गो गुन चाइ ॥
छं० ॥ ३९ ॥

धन द्रव्य लूट कर चामंडराय का हांसीपुर को लौटना और बेगमों का शहाबुद्दीन के यहां जा पुकारना ।

कवित्त ॥ लूटि सबर चतुरंग । लइय चामंडराय सधि ॥
मुक्कै कै संग्रहै । के विषंडैं के विधि विधि ॥
के अहत किय लच्छि । केम लच्छीति समप्पिय ॥
फिरें सब्ब षुरसान । दिसा गज्जनीं स रप्पिय ॥
मावित्त मत्त कीनी नहीं । ढैगे विधि लग्गे विषम ॥
चामंडराइ दाहरतनौ । मल मंची कीनों सुषम ॥ छं० ॥ ४० ॥

चौपाई ॥ तज्जि गाम चुट्टिग बर संगी। हय मिछ्छन सव सज्ज सुरंगी ॥
हाँसियपुर फेरिय सुरयानं। पुक्कारी गोरी सुरतानं ॥ छं० ॥ ४१ ॥
दूहा ॥ हीन बदन पत्ती तहां। जहँ गज्जनी सहाब ॥
सुद्धि बुद्धि पुच्छिय सकल। बिवरि देत सब ज्वाब ॥ छं० ॥ ४२ ॥

बेगम का शाह के सुखजीवी सेवकों को धिक्कार देना।

साटक ॥ ए गोरी सुरतान साहिब बरं। साहाब साहाबनं ॥
जैनं जीवत तस्य सेवक हतं। मानस्य मह जगं ॥
बीयं जाचत अर्थ बीय घनयो। धन पोपि जीवी धिगं ॥
धिगता तस्यय सेवकाय वरयं। ना दीन सामानयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥
अरिल्ल ॥ राजा षंडन मान प्रमानं। अय्या भंगन तस्य निधानं ॥
सो न्नप म्रत्यक म्रत्य समानं। आन सुनत सेवक न मानं ॥ छं० ॥ ४४ ॥
दूहा ॥ विप्प सु षंडन वेद बर। नर षंडन निर ग्यान ॥
त्रिय षंडन इह में सुन्यौ। धिग जीवन सुरतान ॥ छं० ॥ ४५ ॥

माता के विलाप वाक्य सुन कर शाह का संकुचित और क्रोधित होना।

दूहा ॥ पातिसाह श्रवनन सुनी। जंपी मात निधान ॥
में ग्रभभह भुक्यौ धन्यौ। सु ठिन षट्टी षान ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कवित्त ॥ धरत ग्रभ्भ दस मास। उदर भोगवै दुष्प तन ॥
सीत काल बर उष्ण। सवर बरिषा सुमत्त मन ॥
ता जननी दुष देइ। पुत्र ग्रभ्भं अधिकारिय ॥
ताहि पुत्र कौं गति। न साहि निह्चै विचारिय ॥
साम्रत्य काल बंधेति न्नक। कहत नयन गद गद बयन ॥
कहतें सु बचन आवै नहीं। दिन विवान देषे सुपन ॥ छं० ॥ ४७ ॥
दूहा ॥ जाचंग्या प्रति दीन सौं। करत सु देखी मात ॥
सुनि गोरी सुरतान कौ। भय तामस तन रात ॥ छं० ॥ ४८ ॥

शहाबुद्दीन का अपने दरबारियों से सब हाल कहना।

गाथा ॥ सुनि गोरी सुरतानं। सुनि साहाब सूर सब्बानं ॥
जा जीवत धरवानं। भुगो को तास अप्रमानं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

अति आतुर अप्पानं। षानन पान षाइयं पानं ॥
हियै धकि धकि लग्गि कंपानं। दौंय षबरि सबैं फुरमानं ॥
छं० ॥ ५० ॥

पद्धरी ॥ सुनि श्रवन सूर साहब साहि। धकधकी लग्गि रस बीर छाहि॥
प्रज्जरे रोस द्रिग रत्त कीन। सीची कि अग्गि घृत होम दीन ॥
छं० ॥ ५१ ॥

तमतमे तेज वर भर करूर। बद्दरन फट्टि किरनैं कि सूर ॥
विफुरैं हथ्थ रस बीर पग्ग। लंघमे सींह हथवार तग्ग ॥
छं० ॥ ५२ ॥

फुरमान फट्टि षुरसान षान। बज्जे व सोर सुरवर निसान ॥
रत्तरे रषत उट्ठे प्रमान। भद्दव कि मेघ घन रंग आन ॥
छं० ॥ ५३ ॥

तत्तारषान सुविहानं मीर। इहि रत्ति मंड बैरंम तीर ॥
मंची जु मंच जेमंत रूप। बोलियै सद्दी सुविहान भूप ॥
छं० ॥ ५४ ॥

दरबार भीर गजवाज कोइ। पावै न मग्ग भर सुभर कोइ ॥
षोलियहि षग्ग हयगय पलान। किरनानि किरन दुरि रह्यौ भान ॥
छं० ॥ ५५ ॥

बंधौं समेत सामंत सूर। सुविहानं साहि बोल्यौ करूर ॥
छं० ॥ ५६ ॥

शहाबुद्दीन का 'माता' की मर्य्यादा कथन करके दिल्ली पर चढ़ाई के लिये तैयारी का हुक्म देना।

कवित्त ॥ हिरनंकुस पाताल। जाय षग जग मंडाइय ॥
सोवनपुर सुर लूटि। पकरि त्रिय काया धाइय ॥

नारद आइ छंडाय। भयौ प्रह्लाद पुत्र तस ॥
तिहि जननी संग्रहन। सुने उर मद्धि रष्षि गस ॥
मघवान सहित दिगपाल दस। मात वयर कज भंजि जिम ॥
सुरतान कहत चहुआन भर। हों पनि गंजहु अब्ब इम ॥ छं० ॥ ५७ ॥
थान थान फुरमान। फट्टि बंधन हिंदू दिय ॥
विधिना सो निम्मयौ। मेटि सक्कै न दियौ दिय ॥
इला नाम धरि हियै। मेछ षुरसानह जोरिय ॥
ज्यों बराम उच्चरै। सेन वीरन गढ़ तोरिय ॥
हक हलाल बोलै न मुष। काफर रधर बर भई ॥
दह बड़े सूर हम साहि कर। तो सलाम कर सुभ्भई ॥ छं० ॥ ५८ ॥

तत्तार खां का शाह की आज्ञा मान कर मदद के लिये फरमान भेजना।

दिष ततार दह करि। सलाम उच्चार वरज्जिय ॥
रहि न बोल ज्यों साहि। दिया उच्चार जु हक्किय ॥
षां ततार वरजे निसान। आसन उर पानं ॥
जु कछ् मत्त मत्तियै। हुकम दीना सुरतानं ॥
मक्का मुकाम पीरान की। करिव आन बल बंधियै ॥
मादरं पिदर मानें न दर। निमक हलाल न संधियै ॥ छं० ॥ ५९ ॥

दूहा ॥ थान थान फुरमान फटि। बंधन हिंदु नरिंद ॥
दै दुवाह सों न्त्रिम्मयौ। को कढ्ढै कविचंद ॥ छं० ॥ ६० ॥
कोक कढ़ै विधिना लिषी। आज साह बल तेज ॥
मानों सात समुंद ने। तज्जि म्रजाद अमेज ॥ छं० ॥ ६१ ॥
मरजादा सत्तों समुद। अमित उलंघी आज ॥
मानों घन के देव दुति। नाग विरोधन पाज ॥ छं० ॥ ६२ ॥

शहाबुद्दीन की दृढ़ता का बखान।

कवित्त ॥ नाग भूमि सिर तजै। चंद छंडै सुचंद कल ॥
कलिन भान उग्गई। पथ्थ मुक्कै सु वान छल ॥

रघु सुग्यान छंडई । भीम छंडै बल बंधै ॥
रूप छंडि मारह । कंद छंडै हर संधै ॥
मुक्कै जु जोग जोगिंद ऊ । कर फिरस्त छंडै गुनह ॥
इत्तने धीर छंडै अर्दीय । साहि न कस मुक्कै मनह ॥ छं० ॥ ६३ ॥

दूहा ॥ मन मुक्कै सुक्कैं सुहत । हत गोरी सुरतान ॥
सकल सेन सज्जे न्रपति । सुनहु तौ कहुं प्रमान ॥ छं० ॥ ६४ ॥

शहाबुद्दीन का राजसी तेज वर्णन ।

सुनिय मीर मीरन चवै । देषि सष्पिरह मीर ॥
जितौ कस्स सुरतान कौ । तितौ न दिष्यौ तीर ॥ छं० ॥ ६५ ॥

पद्धरी ॥ देष्यो न जाइ आलम अदब्ब । थरहरे मेच्छ षुरसान सब्ब ॥
कर जोरि जोरि सब रहे ठट्ट । उच्चरै सेन बोलंत गट्ट ॥
छं० ॥ ६६ ॥

उभ्भै सुमीर ढिग ढिग विसाल । बोलै न मुष्ष सनमुष्ष काल ॥
सुरतान निजरि बर भई ताम । दह बेर हूर बर करि सलाम ॥
छं० ॥ ६७ ॥

अंगुरी टेकि इल षां ततार । दह करि सलाम बोलयति बार ॥
जिय हुकम जोइ सो मोहि देउ । उच्चरों मंत सोजीव हेउ ॥
छं० ॥ ६८ ॥

शहाबुद्दीन का अपने योद्धाओं की खातिर करना ।

दूहा ॥ चौसठि वेर सुहत्त बर । फेरि फेरि सुरतान ॥
सो पहराए मत्त गुर । दै किताब परिमान ॥ छं० ॥ ६९ ॥
दै किताब पहिराइ घर । नर नरपति मन साहि ॥
आसी पुर जो भंजई । इहै तत्त गुन आहि ॥ छं० ॥ ७० ॥

शहाबुद्दीन का अपने मंत्री से वीर चहुआन पर अवश्य विजय प्राप्त करने की तरकीब पूछना ।

सुन्यौ मंच मंची सुमत । कहत मंच सुरतान ॥

जौ अंगन प्रति भंजियै। लियें ग्रेह परिमान ॥ छं० ॥ ७१ ॥
कवित्त ॥ पति प्रमान हक्कारिय। करिय अंगम सु सत गुन ॥
अरि आवत संग्रहै। काल चंपै सु काल मन ॥
अरि निल्ठुर साहरी। सबल मंत्री हठ्यन ॥
इतें होइ जो हथ्थ। अरिन ग्रह संच सकै धन ॥
जम जोति दून दह मंत गुन। सक्ति मछरति बोलि वर ॥
तत्तार षान षुरसान पति। करौं मंत जा खेय धर ॥ छं० ॥ ७२ ॥

राज मंत्रियों का उपयुक्त उत्तर देना।

न्रपति न्रपति जो होय। सोइ नह राज राज वर ॥
चपति ग्यान जो होइ। बेद सग्यान [illegible]
बेरं कोबिद अछरि। काम अचपति
इत्ते न्रपति जो होइ। भए न्रप तैं [illegible] ॥
तिहि कहे षान तत्तार वर। आसीपुर भंजन बलह ॥
ता पच्छ लगे ढिल्ला धरा। बैर वत्त बुझ्झै षलह ॥ छं० ॥ ७३ ॥
दूहा ॥ षां ततार जंपै सुवर। हम बंदे सु विहान ॥
जु कछु साह अग्या दियै। करें बनें हम्मान ॥ छं० ॥ ७४ ॥
सुने श्रवन तत्तार बच। हिंदवान लै आइ ॥
मात रौस बेगम मिटै। सोइ सु लुट्टै आइ ॥ छं० ॥ ७५ ॥

शाह का तत्तार खां से प्रश्न करना।

षां ततार वर बेन सुनि। दै आसन अरु पान ॥
जु कुछु मंत तुम उच्चरौ। सोइ करै सुविहान ॥ छं० ॥ ७६ ॥

तत्तार खां का आसीपुर पर चढ़ाई करने को कहना।

कवित्त ॥ करि सलाम तत्तार। मतौ सैमुह उच्चारिय ॥
लच्छि सुभर प्रथिराज। सबै हंसीपुर धारिय ॥
हसम हयग्गय मीर। सज्जि चतुरंग सेन वर ॥
मीर बँदा षुरसान। सुक्कि रहै अप अर धर ॥
सामंत बंध सुनि साहि बर। तब नरिंद अप्पन चढ़ै ॥

सो मंति मंत बंधै नृपति। किन्नि बोलि [१]भर तर पढ़ै॥ छं० ॥७७॥

हांसीपुर पर चढ़ाई होने का मसौदा पक्का होना।

षां हुसेन आहत्त मन। सुमति कियौ परिमान॥
आसी पुर भंजन भरै। इह करि मंत निधान॥ छं० ॥ ७८॥

शहाबुद्दीन की आज्ञा।

कवित्त॥ रे अमंत तत्तार। मतौ जानै न प्रमानं॥
ए हिंदू हम बंधि। सीस लग्गै असमानं॥
हम दल भज्जत देषि। तुम्म गिनियै तिन मानं॥
अब हम बंचि कुरान। फतेनामा धरि पानं॥
पाषंड सब्ब अग्गें छिपै। में भंजों दुज्जन अरी॥
चहुआन सेन हांसीपुरह। लुट्टि गाम उभ्भा भरी॥ छं० ॥ ७९॥

तत्तार खां की प्रतिज्ञा।

हांसीपुर पुर विपुर। करौं सु विहान तेज बर॥
तो गज्जानिय सुद्ध। हांसि मंडौ जु अप्प धर॥
अरि भंजे तन भंजि। मार मारह करि मोरौं॥
जौ बंधों सामंत। साहि तसलीम सु जोरौं॥
ता दिवस षान तत्तार हौं। धार धार चढ़ि उत्तरौं॥
सुविहान आन चहुआन सों। जौन जुद्ध इत्तौ करौं॥ छं० ॥८०॥

शाही दरबार में बलोच पहारी का उपस्थित होना।

दूहा॥ पाहारी बल्लोच तहँ। करि सलाम सुरतान॥
हमं बंदे हाजुर निजरि। दै हांसीपुर थान॥ छं० ॥ ८१॥

कवित्त॥ सत्त बेर पाहरी। तेग बंधी जु अप्प कर॥
सब बंधौं सामंत। बौंटि षुरसान देउ धर॥
बान साहि साहाब। बीय सन मज्जिय अप्पिय॥
षां षुरसान ततार। षान विय सरद सु थप्पिय॥

---

(१) ए. को.-भरत।

चतुरंग अनौं हिंदू दिसा। बर गोरी सज्जिय सुबर॥
जुमा रत्ति ससि बंदि बर। चढ़े सेन सु विहान भर॥ छं०॥ ८२॥

गजनी के राजदूतों का सिंध पार होना।

दूहा॥ सिंधु मुक्कि गए दूत बर। तजि गोरी सुरतान॥
कै विधि पवर्त चंपई। अवनी उनमी भान॥ छं०॥ ८३॥

यवन सेना का हिंदुस्तान की हद्द में बढ़ना।

कवित्त॥ कूच कूच उप्परे। षान षुरसान ततारी॥
हसम हयग्गय हूर। दुसह दुज्जन मझारी॥
दल बद्दल सु विहान। हूर पच्छिम दिसि उट्ठे॥
लज संकार गल बंधि। सिंघ मद नद्द सु छुट्टे॥
दिसि दुरग अभंग हांसीपुरह। सजिय सेन संमुह धवै॥
धर दहन बीर चहुआन की। हठ ततार संमुष चवै॥ छं०॥ ८४॥

तत्तार खां और खुरसान खां की अनी सेनाओं का आतंक और शोभा वर्णन।

त्रोटक॥ चढ़ि षान ततार सुरंग अनी। दिगपाल चमक्कि निसान धुनी॥
पुर आसिय फेरि सुरंग ग्रसी। जनु भांवरि भान सुमेर लसी॥
छं०॥ ८५॥

दिसि रत्त रपत्त उठंत बरं। मनों बद्दर भद्दव के दुसरं॥
गुर गोरिय साहि सु संधि ग्रसी। सुनि राज नरिंद नरिंद रसी॥
छं०॥ ८६॥

चमके चव रंगनि रंग दिसा। सु मनों जमकें जमजोति जिसा॥
षल की षल संकर अंदनता। सुमनों सुर दादर के जमिता॥
छं०॥ ८७॥

रत रत्त मयूष दुला चमकै। मनु इंदवधू नभ तें दमकै॥
चहुआन सुनी सुरतान दिसं। बदि आज अवाज सुराज रसं॥
छं०॥ ८८॥

जिनके गुन वीर सुमंत चरै। तिनके बल देवन तत्त धमै ॥
अमसे दरसे जम ते गरुअं। सुरतान तिपास रहे धुरयं ॥छं०॥८९॥
धुरमानय षानति अग्ग अनी। तिनके बर पासन राज यनी ॥
ढलकें ढल ढाल ढलक्कि खता। तिर साइर काइर तं कलिता ॥
छं० ॥ ९० ॥

अब कै न्रप गोरिय साहि बरं। सुमनौं घन भूमि उतार उरं ॥
चढ़ि चल्लिय उग्गि कला दुसरी। न्रिप राज नरिंद सु जुद्ध हरी ॥
छं० ॥ ९१ ॥

सब सेन गरिग्र इती बलयं। न्रप राजन राजन सो कलयं ॥
रन मुच्छ उट्ठें बर कंक लसी। दिसि बंक विराजत पच्छ ससी॥
छं० ॥ ९२ ॥

इतने गुन चार चरंत करं। उतरे अमरोज नरिंद घरं ॥
अम रोज तजै ग्रह सिंह बरं। चहुआन सुनी रन राज उरं ॥
छं० ॥ ९३ ॥

तत्तार खां का पड़ाव दस कोस आगे चलाना।

कवित्त ॥ कूंच कूंच उप्परे। राज अग्या नन मानै ॥
सुबर जूह सुरतान। सैन चावद्दिसि बानै ॥
उगन हार ज्यों प्रात। लेन उग्यौ बर गोरी ॥
तिमरलिंग जुल्लिकन्न। राज रजकन्न सु जोरी ॥
धनि धंनि धंनि गोरी सु बर। बलभग्गा भग्गौ न बल ॥
आसीस भंजि ढिल्ली पुरां। नब लग्गौं मेवात षल ॥ छं० ॥ ९४ ॥

दूहा ॥ जानि सकल गोरी सुबर। गरुअ मत्ति तत्तार ॥
ते भारथ्थ सु हत्त पति। पत्ति ना लभ्यौ पार ॥ छं० ॥ ९५ ॥
षां तत्तार सुरतान बर। नर नाइक सुरतान ॥
दस कोसे आसो हुतें। आय सपत्ते थान ॥ छं० ॥ ९६ ॥

शाही सेना का आसीपुर के पास पड़ाव डालना।

कवित्त ॥ आय सपत्ते थान। वीर आसी गिरद्द करि ॥
सरद काल ससि मित्त। परी पारस सुमंत धर ॥

बहुरि चंद बरदाय। साह लग्गा कस धारिय ॥
चावद्दिसि रूंधये। मंत पावै न विचारिय॥
गढ़ रहि सज्यौ साहस बलौ। सेन सजत लग्गौ घरौ।
चामंडराइ दाहरतनौ। अमर मोह भूली सुरौ॥ छं० ॥ ९७॥

शाही सेना का हांसीपुर को घेरना।

चढ्यौ षान तत्तार। सोर हल्लें द्रिगपालं॥
घुरि निसान धुनि पूर। नाद अंबर लगि तालं॥
पावस चंद सरद्द। घटा घुंमरि ज्यों घेरै॥
ज्यों अषाढ़ रति भान। धुम्म धुंधरि नन हेरै॥
गोरी सपन्न सज्जिय सुभर। ज्यों छयल्ल कुलटा सबसि॥
अवसान अचानक त्यौं पुरह। हांसिय षान ततार ग्रसि॥छं०॥९८॥

मुस्लमानी जातियों का वर्णन।

षां षुरसान ततार। बीय तत्तार पंधारी॥
हबसी रोमी षिलचि। इलचि षूरेस बुषारी॥
सैद सैलानी सेष। बीर भट्टी मंदानी॥
चौगत्ता च्वि मनोर। पीरजादा लोहानी॥
अनेक जात जानैति कुल। विरद्द तेज असि ग्रहि करद॥
तुरकाम बीच बलोच बर। चिंत पूर हांसी मरद॥ छं० ॥ ९९॥

दूहा ॥ सुनि अवाज निसुरत्ति षां। षां ततार षुरसान॥
वे रज गुर सन्हे सजिग। मचिग जुद्ध विरम्भान॥ छं० ॥ १००॥

यवन सेना की व्यूहरचना वर्णन।

कवित्त ॥ षां ततार रुस्तम्म। वाम दच्छिन षष पंषौ॥
षां निसुरत्ति पष्धार। उभै सेना पग लष्षी॥
षान षान षुरसान। चंच चढ्ढु रच्चि कसानी॥
कंगुरेस गष्षरह। जंघ मंडे दल भानी॥
षिलची षुरेस भट्टी बिहर। पुंछ सु इन पच्छह सुबर॥
मद्दनंग अंग मारुफ षां। छत्र सीस धारिय सुभर॥ छं० ॥ १०१॥

युद्ध वर्णन ।

हनूफाल ॥ परिधाय सूर प्रकार । पांवार वज्र सु भार ॥
कढ़ि बोलि षग्ग विहथ्थ । भारथ्थ ज्यौं सुनि पथ्थ ॥ छं० ॥ १०२ ॥
षग षगन वाहै पंति । मनों बाज सेन कि पंति ॥
भारथ्थ कथ्थं जोति । असि अंग विद्धि विभोति ॥ छं० ॥ १०३ ॥
बजि गुरज बीर प्रहार । सँग देहि चौसठि तार ॥
दुहुं पास अंत हरंत । गिध गिधी गिद्ध गहंत ॥ छं० ॥ १०४ ॥
तर बेलि चढ्ढि म्रनाल । मनु गहिय संस सिवाल ॥
तुटि मुंड तुंड सुभट्ट । मनु भग्गरं रचि नट्ट ॥ छं० ॥ १०५ ॥
रुधि छच्छ धर बर रुंड । पावक्क झर उठि कुंड ॥
कहि लेहु लेहु सु सूर । भारथ्थ बित्त करूर ॥ छं० १०६ ॥
षग झूर उठ्ठिक बार । झर गिद्धि सी पति पार ॥
परिरंभ रंभ स आइ । तन तनक तनक न पाइ ॥ छं० ॥ १०७ ॥
मुक्कि मुक्कि माननि जाइ । फिरि पियन दष्षिन आइ ॥
मिस हारि रंभ स अग्गि । इन सब मनोरथ भग्गि ॥ छं० ॥१०८॥
किं अगनि दभ्भै ताइ । तन धार धार सुलाए ॥
बर बीर रोस सुगत्ति । तहां सोष इष्षि न मत्ति ॥ छं० ॥ १०९ ॥
दल सुभर अल्हन मज्झि । जुरिभोम कन्ह अलुज्झि ॥
उच्छरि अरी अरि भीर । चानूर मुष्टक बीर ॥ छं० ॥ ११० ॥
घरि पंच भिरि भारथ्थ । दिन अस्ति भूप न तथ्थि ॥ छं० ॥ १११ ॥

शाही फौज का बल कर के किले का फाटक तोड़ देना ।

कवित्त ॥ सुबर सूर सामंत । बीर विरुझाइ सु धाए ॥
नंषि कोट गढ़ ओट । कोट किप्पाट ढहाए ॥
सत छुट्यौ सामंत । राम बुल्यौ रघुवंसी ॥
रे अभंग सामंत । साहि बंधौं बल गंसी ॥
विना नृपति जो बंध । कित्ति चावद्दिसि चल्लै ॥
सार धार तन षंडि । बीर भारथ्थ न डुल्लै ॥

[1]नन तजौ मंत बल सत्त गहि। गहय ग्रह्म षंडोति षग ॥
उच्चरै लोइ इत्तौ करौ। करौ सूर की रत्ति नग ॥ छं० ॥ ११२ ॥

चामुंडराय के उत्कर्ष वचन।

कवित्त ॥ विहसि राव चामंड। कहै रघुबंसराइ बर ॥
तुच्छ सेन सामंत। साहि गोरी अभंग भर ॥
दंति घात आघात। षग्ग मग्गह कट्टारिय ॥
गुरज बीर गोरीस। सेन भंभरि भर भारिय ॥
महनसी मेर मारू मरह। सरद तेज ससि मुष षुल्यौ ॥
पाहार बीर तूंअर उतंग। सार धार नां धर डुल्यौ ॥छं०॥११३॥

युद्ध होते होते शाम होजाना और युद्ध बंद होना ॥

भिरिग सूर सामंत। लुथ्थि आहुट्टि लुथ्थि पर ॥
सघन घाइ आहत्त। मेर तत्तार छोड़ बर ॥
चढ़ि हांसीपुर सूर। षेत हुय्यौ न दीन दुहु ॥
उतरि मेर असि वरन। गहन जंपै न सिद्ध कहु ॥
बहु षग्ग सूर सामंत रन। भोगी षान षुरेस पर ॥
मिलि मेछ मेछ एकोन किहि। रहे सेन ठट्ठे विहर ॥ छं० ॥ ११४ ॥
समरि संग तत्तार। बज्जि नीसान षेत रहि ॥
हय गय रन [2]विच्छुरहि। रुद्र भूमिय सु बीर बहि ॥
निसचर वीर [3]उभार। भूत प्रेतह उच्छव सुर ॥
बज्जि घाइ कहि उठत। नचै चौसट्ठि रंभ बर ॥
नारद नद नंदी सु बर। बीरभद्र सुर गान बर ॥
इन भंति निसा बर सुंदरी। बर हर हर बज्जे ससुर ॥ छं० ॥ ११५ ॥

प्रातःकाल होते ही पुनः युद्धारंभ होना।

चौपाई ॥ भयौ प्रात बंछित सामंतह। मुगध महिल ज्यों बंछै प्रातह ॥
कन्ह नाह चोहान महा भर। रा बड़गुज्जर किल्हन सुभ्भर ॥छं०॥११६॥

(१) ए.-मन। (२) ए.-विछुर नहिं। (३) ए.-उभारी।

गढ़ में उपस्थित सामंतों के नाम ।

कवित्त ॥ बर षीची अचलेस । गहअ गोयंद महनसी ॥
उद्दिग बाह पगार । नरा नरसिंघ समरसी ॥
उभै बंध मोरीय । राव रानिंग गिरेसं ॥
देव क्रम्न साषुलौ । जुद्ध पारष्य बिसेसं ॥
सलषान भीम पुंडीर भर । जैत पवार सु बग्गरी ॥
चामंड राइ कनक्क सुभर । रघुबसी सिर पघ्घरी ॥छं०॥११७॥

दोनों सेनाओं में युद्ध आरंभ होना ।

दूहा ॥ प्रात उदित घायन मिले । प्रात घाइ घरियार ॥
रोस लगे हिंदू तुरक । मनुं बज्जत कठतार ॥ छं० ॥ ११८॥

युद्ध का वर्णन और दस चोट में यवन सेना का परास्त होना ।

भुजंगप्रयात ॥ असी अस्सि सस्त्रं बधी षान बल्लं ।
सु षग्गं षिती षान सो बीर चल्लं ॥
चवै चल्लि चारं सबै रंग बीरं ।
तजी गाभ बारं चढ़ी धार धीरं ॥ छं० ॥ ११९ ॥
अरं अस्स अस्सं उपंमा प्रमानं ॥
मनो षेत षड्डै किसानं रिसानं ॥
मिलें सूर धारं दलं मेल सानं ॥
परी जानि बुंदं समुद्रेन पानं ॥ छं० ॥ १२० ॥
तजे कोट षानं सबै सूर घेरी ॥
मनों भाव रंभान सुम्मेर फेरी ॥
परें षग्ग जहाँ उजत्तोत सारी ॥
मनों देववं बज्जि काल पार पारी ॥ छं० ॥ १२१ ॥
घयं भेदि घायं अघायंत रासी ॥
निकस्सी परें अच्छ सा सूर कासी ॥
कटे बंध कावंध सो बधं पारी ॥

मनो बट्टि बिब्भाय भग्गी सु कारी ॥ छं० ॥ १२२ ॥
पयं भज्जि सो डाक ही षग्ग धारी ॥
मनों बामना रूप भै भीम भारी ॥
रूधी घट्ट ज्यों फुट्टि सब्बाइ सारी ॥
तिनंकी उपंम्मा कवीचंद धारी ॥ छं० ॥ १२३ ॥
मनो रंग रेजं ग्रहे रंग रारी ।
जलं जावकं सोभ पब्बार पारी ॥
हयं छिंछ उट्ठी रुधी छिंछ तारी ।
हथं बक्क जरद्द दूबद्द पारी ॥ छं० ॥ १२४ ॥
तिनंकी उपम्मा कवी तं कहाई ।
जलं जावकं पावकं को बुड़ाई ॥
ग्रही केस उड्डे उतंमंग पब्बी ।
तिनंकी उपम्मा कवीचंद अब्बी ॥ छं० ॥ १२५ ॥
मनों अप्प ग्रेहं अवानंति वारं ।
चली नभ्भ तें चंदनं सुक्कि धारं ॥
भगी घायन भूमि भा प्रान पारं ।
मनों सिद्धि संमद्धि लग्गी अगारं ॥ छं० ॥ १२६ ॥
बजी घाय अघ्घाइनं ग्रीव पानं ।
फिरें केत रत्ती जलं मज्झि मानं ॥
उड़ी छिंछ सब्बैं दलं हद्दि जस्सी ।
मनो दीपती हिंदुनं हद्द कस्सी ॥ छं० ॥ १२७ ॥
घटं सत्त उभ्भै सुरं लोक बस्सी ।
फिरी फौज तत्तार की घाइ गस्सी ॥ छं० ॥ १२८ ॥

इस युद्ध में खेत रहे जीवों की संख्या।

कवित्त ॥ अद्ध सेन अध परिग । परिग दंती सत एकं ॥
अयुत अयुत अस परिग । पयइ को गनै असेकं ॥
दसत दून बानेत । घाय झोरी करि लिन्ने ॥
पंच पेंड़ पंचास । सेन भग्गा तिन दिन्ने ॥

पछ पुंछ षान आलील तव। अति आतुर असिवर षरिय ॥
भग्गौ न मीर मो भीर सुनि। अब भंजो हिंदू ररिय ॥छं०॥१२९॥

अलील खां का प्रतिज्ञा करके धावा करना।

सुनि सामंत निसान। षान अलील उभं भरि ॥
मनंहु अग्गि घन हत्त। आय डंडूर समंधरि ॥
डुंगोरी धर कोट। राज [1]अड्डो चहुआनी ॥
मो उभ्भै कुन सूर। भोमि विलसै सुरतानी ॥
इह कहिय सेन अग्गें धरिय। जाय सूर मुष षग्गयौ॥
तिन सार मार सामंत दल। पंच डोरि पच्छो गल्यौ॥ छं०॥ १३०॥

दोनों ओर से बड़े जोर से लड़ाई होना।

दूहा॥ तमकि सूर सामंत तव। झुकि लग्गे फिरि षग्ग॥
लपट झपट ऐसी बहै। ज्यों [2]जज्जर वन अग्गि ॥ छं०॥ १३१॥

लड़ाई का वाकचित्र वर्णन।

विराज॥ छुटे अग्गिबाजं, मनों नभ्भ गाजं। चढ़े सूर सूरं, नमे रंक नूरं॥
छं०॥ १३२॥

बहै बान भारी, मनों टिड्ड चारी। दुती सोभ आनं, कवीका वषानं॥
छं०॥ १३३॥

दिसायं न्रमल्लं, मनो नाग हल्लं। परै वष्प घायं, मनों वज्र लायं॥
छं०॥ १३४॥

करै कूह कैकं, हुअं एकमेकं। वहै षग्ग धारी, अभूतं सरारी॥
छं०॥ १३५॥

होवै षंड षंडं, धरं रुंड मुंडं। बकै मार मारं, मनों प्रेत चारं॥
छं०॥ १३६॥

जुटै सूर हथ्थं, मनों मल्ल बथ्थं। परै भूमि सारं, मनों मत्तवारं॥
छं०॥ १३७॥

(१) को.-कृ.-अड्डी। (२) ए.-वज्जर।

भए काम्ह षेतं, बधे बंध मेतं। छुटी अंषि पट्टी, मनों अग्गी छुट्टी॥
छं० ॥ १३८ ॥

षगे मग्ग चाहं, अरी वग्ग दाहं। परे नाग ठानं, कलं कूट आनं॥
छं० ॥ १३९ ॥

रनं नेज ढल्लं, मनों केलि पल्लं। खोहानों अजानं, तुट्टे षान टानं॥
छं० ॥ १४० ॥

वहै संग भारी, निकस्से करारी। तिनं घाव सद्दं, करै कुंभ नद्दं॥
छं० ॥ १४१ ॥

जुरै चंद सेनं, कियं षंड जेनं। उठे छिंछ अंगं, मनों अग्गि दंगं॥
छं० ॥ १४२ ॥

दुती ओप आनं, प्रवारी प्रमानं। पत्यौ षान अल्ली, धरारं विहल्ली॥
छं० ॥ १४३ ॥

भगे साहि ठट्ठं, गए दस्स वट्टं। भद्री पिष्षि ताजं, दियं जित्ति बाजं॥
छं० ॥ १४४ ॥

सामंतों की जीत होना और यवन सेना का परास्त होकर भागना।

कवित्त ॥ भइय जित्ति सामंत। सेन भग्गा सुरतानं॥
अप्प सूर सब कुसल। पिष्षि रष्षी चहुआनं॥
उभै सहस परि मीर। सहस इक बाज प्रमानं॥
परिय दंति सतएक। करिय अच्छरि बर गानं॥
जै जया सद्द आयास हुअ। घाव सूर झोरी धरिय॥
वित्तयौ कलह भारथ्थ जिम। कही चंद छंदह करिय॥ छं० ॥ १४५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके हांसी प्रथम जुद्ध वर्णननं नाम इक्यावनवों प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ५१ ॥

अथ द्वितीय हांसी युद्ध वर्णन ।

(बावनवां समय ।)

तत्तार खां का पराजित होना सुन कर शहाबुद्दीन का क्रोध करके भांति भांति की यवन सेना एकत्रित करना ।

कवित्त ॥ हसम हयग्गय लुट्टि । लुट्टि पष्षर रषतानं ॥
तत्तारी षुरसान । हाम भग्गौ सुरतानं ॥
सुनि भग्गा सब सेन । हाय करि पट्टि सु हथ्थं ॥
पुच्छि षबरि बर दूत । कहिय भारथ बत कथ्थं ॥
रगतैत नेन माहाब सजि । पैगंबर महमंद भजि ॥
फिरि सज्यो सेन भसुंचित्त करि । हांसीपुर जीतन सु कजि ॥
छं० ॥ १ ॥

विअष्परी ॥ सज्जिय सत मंतं सुरतानं । दस दिसि धर दिन्ने फुरमानं ॥
रुम्म हरेव परेव परारिय । भर भंभर भष्षर भर भारिय ॥ छं० ॥ २ ॥
समरकंद कसकंद समानं । बलक बलोच तक्की मकरानं ॥
कंदल वास अधम्म इलासं । रोही सोह उजब्बक रासं ॥ छं० ॥ ३ ॥
घूनकार ऐराक षंधारं । साहबदीन मिले दल सारं ॥
धुम्मर व्रन्न सिरै तुछ रोमं । जाति अनंत गिनै कुन भोमं ॥छं०॥४॥
घोरमुहा केइ सुप्पर क्रंनं । चष्य करूर मुषं रत क्रंनं ॥
इन सर कंध विवाह अजानं । दुअ दुअ दुम्मि भषै दिनमानं ॥
छं० ॥ ५ ॥

जानै धार अनी बथ मल्लं । जानि गिरब्बर सिष्पर चल्लं ॥
तानै सिनि गिनि जोर विभारं । गोंन चढ़ै जिन टंक अधारं ॥
छं० ॥ ६ ॥

बंधे दो दो तोन जुआनं। तिन साइक सत सत्त प्रमानं ॥
साबद् बेधिय लाघव सारं। पंष हनै षह दिष्ट प्रहारं ॥ छं० ॥ ७ ॥
टारैं अनी अनी साइक्कं। मुंठि अभूल रमै चित किक्कं ॥
मंद अहार सबै फल आसं। पारसि मझ्झ विवानि प्रहासं ॥छं०॥८॥
करै रगब्ब सरब्बर वानं। जानि कि ब्रच्छ विहंग बुलानं ॥
बंधिय जूसन सारषि गातं। जानि जुरी नव नाथ जमातं ॥
छं० ॥ ९ ॥

सजि पष्षर लष्षर है साजं। पंषधरी बर उड्डन काजं ॥
गज घुंमर धज नेजर बानं। जानि कि भद्दव मेघ समानं॥छं०॥१०॥
करिय टमंक चढ्यौ हय नादं। फट्टिय जानि समंद मजादं ॥
तर झंगर गिरि पड्डर धारं। उड्डिय रेन डिगे द्रिग सारं॥छं०॥११॥
धर धुंमर लगि अंमर थानं। सुनियै सद्द न दीसै भानं ॥
हे गै रथ दल अंत न जानं। आसिय दिसि हल्लिय सुविहानं ॥
छं० ॥ १२ ॥

वरन वरन की व्यूहबद्ध यवन सेना का हांसीपुर को घेरना।

कवित्त ॥ साहब सुनि सुरतान। समुद व्यूहं रचि धाइय ॥
अष्ट सेन रचि अष्ट। ईड करि सेन बनाइय ॥
एक लष्य सारह। सुभर असवारति साजं ॥
दंती पंति बिसाल। अग्ग सज्जे अगिवाजं ॥
पावस्स थान मानों प्रगट। दिस दिसान नीसान दिय ॥
आसीअ चिंत इक दौर करि। आनि सुभर घन घेरि किय ॥
छं० ॥ १३ ॥

शहाबुद्दीन का सामंतो को किला छोड़ देने का संदेसा भेजना।

दूहा ॥ घेरि सुभर साहाबदी। कहिय बत्त चर चारु ॥
कै झुझ्झहु बुझ्झहु सपरि। कै निकरौ भ्रम्म दुआर॥ छं० ॥ १४ ॥

शहाबुद्दीन का सँदेसा पाकर सामंतों का परस्पर सलाह और बादविबाद करना ।

कवित्त ॥ सुबर सूर सामंत । बीर बिरुझाइ सु धाए ॥
बड़गुज्जर रा राम । राइ रावत्त सहाए ॥
सम दुरंग सो सीस । बीर लोकिग असमानं ॥
कित्ति मुकति भर सुभर । बीर बीरं बिरुझानं ॥
कूरंभ राव पज्जून दे । गयौ हरष सामंत बर ॥
तम पषै मरन दीजै नहीं । मरहु तुम्ह जिन पर सु घर ॥छं०॥१५॥
सुनिय मंत कूरंभ । मतौ जानहि सु मरन बर ॥
जीवन मत जानंत । सामध्रमजाइ भ्रम्म नर ॥
हम बीरा रस धज्ज । जोग जीतन सिर बंधी ॥
हम अभंज अरि भंज । मंत जानै अस संधी ॥
रुक्कयौ हंस पंजर सु पच । सो पंजर भंजहिति थिर ॥
जानियै जगत तनु तिनुक वर । अरि बंधन बंधेति फिरि ॥छं०॥१६॥
सुबर बीर सामंत । मन्न लग्गे बिरुझानं ॥
रा चामँड जैतसी । राम बड़गुज्जर दानं ॥
उदिगबाह पग्गार । कनक कूरंभ पजूनं ॥
षीची रा परसंग । चंद पुंडीर स वन्हं ॥
महनंग मेर मोरी मनह । दोऊ बीर बग्गरि सलष ॥
देवकन कुंअर अल्हन सुबर । लषिय सोभ भुज बर बिलष ॥
छं० ॥ १७ ॥

सामंतों का भगवती का ध्यान करना ।

दूहा ॥ निसि चिंता सामंत सह । उदिग बाह पग्गार ॥
मात बीर अस्तुति करै । सत्त सु मंगन हार ॥ छं० ॥ १८ ॥
फुट्टि सरोवर नीर गय । अंब कि बंधै पालि ॥
तेमन संत पयान किय । इह भावी इह काल ॥ छं० ॥ १९ ॥

हांसी के किले में स्थित सामंतों के नाम और उनका वर्णन ।

कवित्त ॥ निडुर बर हरसिंघ। बीर भोंहा भर रूपं ॥
बरसिंहरु हरसिंघ। गरुअ गोयंद अनूपं ॥
राज गुरू रा राम। बलीं बंभन रस बीरं ॥
दाहिम्मौ नरसिंघ। गौर सग्गर रनधीरं ॥
चालुक्क बीर सारंगदे। दई देव दुज्जन दहन ॥
सुलतान सेन संमुह भिलै। गात जु हांसीपुर गहन ॥ छं० ॥ २० ॥

चौपाई ॥ पुर हांसी दिसि दच्छिन कीनी। बीय सूर सम्हैं अपु लीनी ॥
चक्की चवसठि जोगिनिकारी। दिसि दच्छिन उर सम्हौ भारी ॥
छं० ॥ २१ ॥

कुछ सामंतो का किला छोड़ देने का प्रस्ताव करना परन्तु देवराव बग्गरी का उसे न मानना।

कवित्त ॥ उद्दिग गयौ निकरै। सुतौ मरनह तें डरयौ ॥
समर सूर निकरै। सु फुनि अलँगे उत्तरयौ ॥
चावंड रा निकरे। सुहड सांवला सहित्तौ ॥
गोयँद रा गहिलौत। सु फुनि निकरै विगुत्तौ ॥
साधुलौ सूर भोंहा सुतन। कल कथ्था भारथ करै ॥
इत्तने राव गए निकरे। देवराव क्यों निकरै ॥ छं० ॥ २२ ॥

ए सामंत अभंग। मेर धुअ मंडल जामं ॥
सेस सीस रवि चंद। सु भुअ मंडल अभिरामं ॥
एउ टरें कोउ बेर। जोग जुग अंतर आयौ ॥
अटल एक सामंत। जुद्ध जोगा रस पायौ ॥
दैवान देव गति अलंघ है। नन गुमान कोइ कर सकै ॥
एकैक मत्त चूकै सबै। जित्ति कोइ जाइ न सकै ॥ छं० ॥ २३ ॥

कवि का कहना कि समयानुसार सामंत लोग चूक गए तो क्या।

राम चुक्क म्रग हत्यौ। सीय लिय रावन चुक्यौ ॥
हनुअ बत्त नारद। भरथ चुक्कवि सर मुक्कयौ ॥

विक्रम जीव अतक्ष । कग्ग आमिष मुष मंडिय ॥
इंद्र अहल्ल्या काज । सहस भग काया मंडिय ॥
नल राय दमंती कारनें । और नाम जानौ न उन ॥
सामंत दोष लग्यौ इतौ । मतौ एक चुक्कौ न कुन ॥ छं० ॥ २४ ॥

देवराय बग्गरी का वचन ।

साहि मलिक साहाब । दीन जिहि द्दारैं बहिय ॥
जेन द्दार निक्करौ । जेन निक्करैं न कहिय ॥
सिर तुरक्क भर पड़िहु । सहित धर आइ सरीरह ॥
हुं सभीह्र पहुचेंन । तनों निकलंक सरीरह ॥
सांषुली सूर सामित्त छल । देवराव कटि बटि मरै ॥
ता भष्षि पुत्त बापह तनौ । ध्रम्म द्दार छोड़ निक्करै ॥ छं० ॥ २५ ॥

कल्हन और कमधुज्ज का बग्गरीराव के बचनों का अनुमोदन करना ।

सत छुट्टत गोयंद । सत्त सामंतन छुथ्यौ ॥
बर षीची अचलेस । धार धारह तन तुथ्यौ ॥
सत छुथ्यौ उदिग्ग । मरन डर डर्यौ अबाहिय ॥
सत छुट्टत नरसिंघ । लंग उत्तरि पति नाहिय ॥
मुक्यो न सत्त कमधज्ज ने । नाम बीर कल्हन न्रपति ॥
बरि कनकराव परसंग भर । दीपंतन रवि तन दिपति ॥ छं० ॥ २६ ॥

सातों भाई तत्तार खां का तलवारें बांधना और हांसी गढ़ पर आक्रमण करना ।

मुक्कत सत तत्तार । तेग बंधी सत बंध्यौ ॥
मिलि आए सुरतान । सेन गोरी ग्रह संध्यौ ॥
आनि साहि साहाब । नैर हांसीपुर चल्यौ ॥
सुन्या सूर सामंत । कोन निक्करि सत डुल्यौ ॥
लच्छौ सुमंति आमत्त बर । बार बार बर बंधियै ॥
असि पच्छ कढ्ढि बंधौ सुबर । पढ़ि कुरान व्रत संधियै ॥छं०॥२७॥

*चन्द्रायन ॥ भषे पङ्गुली मंस सस्त्र बल मुक्कई। काजी क्रय्य क़ुरान भ्रम्म नन चुक्कई॥
तजि हांसीपुर जीव लभ्भ बंधी सही। हिंदवान गढ़ सुक्कि गहा अप्पा रही॥
छं० ॥ २८ ॥

कवित्त ॥ सजे मीस गयनंग। रह्यौ हप्पे रन मांही ॥
सबल सेन सुरतान। परिय पारस परछांही ॥
हक्क धक्क किलकार। करै आसुर असमानं ॥
गोर नार जंबूर। बान हक्के रह भानं ॥
पावें न मझ्झ पंषी पसर। विसर नह बज्जे सबल ॥
सांघुलौ सुभर जुध्यौ समर। उद्धि मझ्झ लग्गी अनल ॥
छं० ॥ २९ ॥

दूहा ॥ भयौ प्रात फट्टं तिमिर। मिलिघ संग तत्तार ॥
करत कूंच तुट्टे सुभर। गढ़ लग्गे चिहुं बार ॥ छं० ॥ ३० ॥

अन्यान्य सामंतों की अकर्मण्यता और देवराय की प्रशंसा वर्णन।

कवित्त ॥ षां ततार गढ़ घेरि। ढोह बज्जे बज्जानं ॥
दो दस दिन सामंत। झूझ बज्जे परमानं ॥
पन्न पान सोवन्न। दीह तिन सूरन पाइय ॥
गयौ बीर पाहार। नाम किन सूरन साइय ॥
पारथ्थ जीत भारथ्थ सह। गोपिन रषि अपुबल तिया ॥
हथ धनुष आइ बंनर बली। सीय कज्ज अपुसह किया ॥छं०॥३१॥
अस्सपूर तत्तार। झंझ बज्जी मग सुद्धी ॥
ईकल्लो देव क्रंन। बान अर्जुन मग बुद्धी ॥
और सबै सामंत। माहि बिस्सह आलुद्धी ॥
मरन झार उद्दिग। विहार बीरा रस बंधी ॥
सांघलौ सूर सारंगदे। तिन बंधी लज्जी जगत ॥
उव्वरै सूर सामंत सौ। जेन भिरत पच्छइ मरत ॥ छं० ॥ ३२ ॥

*मूल प्रतियों में इस छन्द को चौपाई करके लिखा है।

देवराव बग्गरी की बीरता।

अनल मद्धि देवराज। परे पारस दषि गोरी ॥
लहरि सेन बाजंत। धार झारा झकझोरी ॥
बज्जि धार बिभ्भार। मार मारह मुष जंपहि ॥
सूर मत्त रन रत्त। कलह कायर उर कंपहि ॥
लगि सार धार रुधि छंछ छुटि। सहस सूर उट्ठहि लरन ॥
आवट्टि सेन अट्टों सु अध। अट्ठ अट्ठ लग्गौ भिरन ॥ छं० ॥ ३३ ॥

युद्धारंभ और युद्धस्थल का चित्र वर्णन।

भुजंगी ॥ परे अट्ठ अट्ठं सु अट्ठं अधानं। भिरै अट्ठ अट्ठं रहै साह थानं॥
अगे दंत पंती चले साह सूरं। प्रलै काल मानो हलै दज्जि पूरं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

उतै पारसी मीर बोलै करारं। इतै सीस हक्कै धरं मार मारं ॥
बहै सूर सूरं लगै धार धारं। मनों भ.झरी बज्जि देवं सुधारं ॥
छं० ॥ ३५ ॥

गहैं दंत दंती उपारंत सूरं। मनों भील कढ्ढै गिरं कंद मूरं ॥
परै पीलवानं निसानं सु पीलं। हन्यौ वज्र सैलं सवष्षं कपीलं ॥
छं० ॥ ३६ ॥

बहै षग्ग धारं धरंगे निनारं। मनों चक्क पिंडं कुलालं उतारं ॥
उठे श्रोन बिंदं रतं धार लग्गी मनों लग्गि तिंदू प्रलै काल अग्गी।
छं० ॥ ३७ ॥

बहै रत्त धारं अपारं सु दीसं। मनों भद्द मझ्झै बहै नदि ईसं ॥
बिहूं बाह बाहै लगै सूर सूरं। मनों प्रीति हेतं मिले आय दूरं ॥
छं० ॥ ३८ ॥

बहैं जम्मदड्डं बहै पारवारं। मनों मोष मग्गं किवारं उघारं ॥
परै लुथ्थि पथ्थं उलथ्थंति पानं। मनो मीन कुद्दै जलं तुच्छ मानं ॥
छं० ॥ ३९ ॥

रजै ईस सीसं करै रुंडमालं। रमै भूत प्रेतं किलक्कंत नारं ॥

ग्रहै अंत गिद्धी चढ़ै गेन मग्गं। मनों डोरि तुट्टी रमै वाय चंगं॥
छं० ॥ ४० ॥

तिनं नद्द सद्दं विहंगं सुनानं। रजै हंस मानं सुरं सप्त पानं॥
भरै षेचरी पच चौसट्ठि चारी। भ्रवै भोमि श्रोनं पलं पलहारी॥
छं० ॥ ४१ ॥

भिरें जाम एकं अनेकं प्रकारं। परे सूर सेनं कहै कोन पारं॥
छं० ॥ ४२ ॥

देवकर्ण बग्गरी का वीरता के साथ मारा जाना।

दूहा ॥ देवकन्न सुरलोक बसि। हय नर धर गज भानि॥
नाग असुर सुर नर सुरभ। बढ़ि भारथ्थ बषान॥ छं० ॥ ४३ ॥

वीर बग्गरी का मोक्ष पाना।

कवित्त ॥ जीति समर देवकन। धार पति चढ्ढिय धारं॥
निगम ग्रम्म अजमेघ। द्रभ्भ यल दुज्ज अचारं॥
रथ रंभन भर यक्कि। रव्वि यक्यौ रथ लोचन॥
बंध इंद्र सर बंध। मंदु बारा रहि सोचत॥
शिव बंध सथ्य रथ जर चढ़ि। भूनिग तन गौ ब्रह्मपुर॥
इह करिन कोइ करिहैं नहीं। करो सु को रजपूत धर॥ छं०॥४४॥

देव कन्न बर बीर। धीर भर भीर अहीरं॥
चौच्यालीस प्रमाण। तुट्टि तन धार सु धीरं॥
थुति सदेव उच्चार। करै अस्तुति दै तारी॥
सिर तुट्टै धर उट्ठि। भिरन कढ्ढी कट्टारी॥
अरि मुष्ष गयौ चढ़ि चिंत अरि। तनु धारा हर बिंटयौ॥
कायरन जेम तज्यौ न रन। करि कुट्टा जिम कुट्टयौ॥ छं० ॥ ४५ ॥

इस युद्ध में मृत वीर सैनिकों की नामावली।

भुजंगी ॥ पर्यौ देव कन्नं सु भूनिंग आयं। जिनै वास लोकं सयं बंभ पायं॥
पर्यौ बीर मारू नवं कोट रायं। जिनें जुद्ध लग्गे भुजं काम पायं॥
छं० ॥ ४६ ॥

पच्यौ रानि गिरि राव बीरं पतार्इ। जिने षान अहों दुहावी षतार्इ॥
पच्यौ बीर मोरी उभै बंध सथ्थं। भजै जूह संघं घली हथ्थ बथ्थं॥
छं० ॥ ४७ ॥
पच्यौ पंच भाई सपंचं अभंगं। ढहे जूह बैरी लगे जूह अंगं॥
पच्यौ सांषुला सूर नारेन इंदं। जिन जाम षेत्यौ करी दूरि दंदं॥
छं० ॥ ४८ ॥
परे राव कूरंभ पज्जून जायं। जिने लोक में लोक संलोक पायं॥
पच्यौ पंच पंचायनं पुंज राजं। जिने चंपि वैरी कुलिंगंति बाजं॥
छं० ॥ ४९ ॥
पच्यौ बग्गरी रूप नर रूप नाइं। भगी जानि मोरी तुटी जू सनाइं॥
पच्यौ बैर बाराइ वैरी पचारं। जिने सार झारं दुझारं हकारं॥
छं० ॥ ५० ॥
पच्यौ गुज्जरीराव रघुवंसरायं। हयं अत्ति सस्त्रं किमं कान पायं॥
पच्यौ षग्ग षिची सु मंची नरिंदं। मरंतं सजी पौमरं कित्ति कंदं॥
छं० ॥ ५१ ॥
परे इत्तने सूर भारथ्थ वित्ते। डरे सूर ते वार रिन मुंकि पत्ते॥
छं० ॥ ५२ ॥

एक सहस सिपाहियों के मारे जाने पर भी सामंतों का किला न छोड़ना।

दूहा ॥ रा देवंग रहंत रन। सहस एक बर बीर॥
तामे एक कमंध षिलि। तिन संघारिग मीर॥ छं० ॥ ५३ ॥
बाने विरद बकी बढ़े। बंकौ षान अलोल॥
दस सहस सम मीर बर। तिन लीनो गढ़ कोल॥ छं० ॥ ५४ ॥
कोट मझि रजपूत सौ। तिन सझी दरबार॥
गिरद बाज चिहुकोद फिरि। मीर पीर सिरदार॥ छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज को स्वप्न में हांसीपुर का दर्शन देना।

हांसीपुर प्रथिराज पै। चंद सुपन बरदाइ॥
धवल वस्त्र उज्जल सु तन। पुकारिव न्त्रप राइ॥ छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज प्रति हांसीपुर का वचन।

हांसीपुर उद्धार बर। बीट सेन सुलितान ॥
अजहूं हूं भग्गी नहीं। करि उप्पर चहुआन ॥ छं० ॥५७॥

कवित्त ॥ उभै दीह गढ़ ओट। सस्त्र बज्जै सु बान अग ॥
अग्गबान कम्मान। सार सिंधुर अभंग जग ॥
ता पच्छै सामंत। मंत कीनौ परमानं ॥
नंषि कोट गढ़ ओट। सस्त्र लग्गे असमानं ॥
न्त्रिप राज अन्यौ आसी सुन्यौ। सुपनंतर आसी कहिय ॥
ढिल्ली न्त्रपत्ति ढीली धरा। ढीली है अग्गें रहिय ॥ छं० ॥ ५८ ॥
हांसी पुच्छै पहुमि। राय तुं काइन भग्गिय ॥
मो बभीष पम्मारि। तेन भू दंड बिलग्गिय ॥
तिन ए रस उच्चरै। चिया छल अब्ब गमिज्जै ॥
जै सिर पड़ै तो जाहु। कज्ज साईं छल किज्जै ॥
सहसा परि झुभ्भै मांघुलौ। एह अचिज्ज पिष्यन रहिय ॥
देवराव झूर षंडे परिग। ताम तुरक्क संग्रहिय ॥ छं० ॥ ५९ ॥

हांसीपुर की यह गति जान कर पृथ्वीराज का घबड़ा कर कैमास से सलाह पूछना।

दूहा ॥ सुनिय बचन प्रथिराज ने। हांसी भारथ वित्त ॥
भ्रम दुवारि निक्करि सुभर। देवराव परि चित्त ॥ छं० ॥ ६० ॥
इह भविष्य चिंतै न्त्रपति। भयो करुना रस चित्त ॥
रुद्र बीर अरु हास रस। ए अपुब्ब कथ वित्त ॥ छं० ॥ ६१ ॥

कवित्त ॥ सुनत राज प्रथिराज। बोलि कैमास महाभार ॥
तम मंची मंचंग। मंच रष्षन सामंत बर ॥
हयति नट्ठ गज नट्ठ। नट्ठि रधि वासह नट्ठी ॥
सोच सु नट्ठि सनेह। नट्ठ गुन बिद्य अनुट्ठी ॥
त्यों सेन नट्ठ हांसीपुरह। मंत उप्पजै सो करौ ॥
कैमास मंत मंती सुमत। मति उच्चारन बिच्चरौ ॥ छं० ॥ ६२ ॥

दूहा ॥ मंचि मंत कैमास कहि । राजन चित्त विचार ॥
ए सामंत अमंत मत । कोइ देवान प्रकार ॥ छं ॥ ६३ ॥ ॥

कैमास का रावल समरसी जी को बुलाने के लिये कहना ।

कवित्त ॥ कहै मंचि कैमास । पास रावल जन मुक्कौ ॥
वह आहुट्ठ नरेस । बाहि बिन मंत सु चुक्कौ ॥
तुम आतुर अति तेज । और मिलिहै चिचंगी ॥
जनु प्रजलंती अग्गि । महि घ्रत संचि तरंगी ॥
इस मंचि मंच गिर राज दिसि । दिय पची संमर विगति ॥
दिन दिवस अवधि पंचमि कहिय । दिसि हांसी आवन सु गति॥छं०॥६४॥

रावल समरसी जी का हांसीपुर की तरफ चलना ।

दूहा ॥ सुनि रावर आतुर चल्यौ । पवन पवंग प्रमान ॥
इक सगपन साहाइ पन । लषि घर विरद वहान ॥ छं० ॥ ६५ ॥

हांसीपुर को छोड़ कर आए हुए सामंतों का पृथ्वीराज से मिलना ।

कवित्त ॥ मुक्कि राज दुज दोइ । वेगि सामंत बुलाए ॥
कछुक लज्ज कछु सहमि । मिलत सिर नीच नवाए ॥
चामंड रा जैतसी । राव बड़गुज्जर कन्हं ॥
षीची राव प्रसंग । चंद पुंडीर महन्हं ॥
पज्जून कनक उहग पगर । दोउ वीर बग्गर सलष ॥
दोउ कन्न कुंअर अल्हन सुवर । मिले आय राजान भर ॥छं०॥६६॥
मिलिग आय गोयंद । नरे नरसिंघ महाभर ॥
रेनराइ उहिग्ग । विरदपागार बाह बर ॥
सूर सूर संग्राम । समर सामल अधिकारिय ॥
मिलत राज प्रथिराज । दिये आदर बर भारिय ॥
हम कज्ज लज्ज तुम सीस पर । एह बत्ति मन मत धरहु ॥
देवान गत्ति व्विम्मान मति । भइय बत्त चित्त न धरहु ॥छं०॥६७॥

दूहा ॥ कहिय सूर राजन सुनहु। तिहि जीवन अप्रमान ॥
पति धर अरियन संग्रहै। तौइ न छंडै प्रान ॥ छं० ॥ ६८ ॥

पृथ्वीराज का सब सामंतों को समझा बुझा कर सांत्वना देना।

कवित्त ॥ इक्क वार सुग्रीव। त्रिया तारा मन रष्षिय ॥
इक्क वार पारथ्थ। चीर पंचंत चष दिष्षिय ॥
इक्क वार श्रियपत्ति। जमन अग्गौं धर छंडिय ॥
इक्क वार सुत पंड। भौमि छंडिय वन हिंडिय ॥
तुम सूर नूर सामंत बल। कलह कथ्थ भारथ करन ॥
सुरतान षान मोषन ग्रहन। महनरंभ बंछहु मरन ॥छं०॥६९॥
बोलि राज सामंत। कहिय तुम जुद्धनि अज्जर ॥
चंद्रसेन पुंडीर। राइ रामह बड़गुज्जर ॥
बोलि कन्ह नर नाह। बोलि चहुआन अताइय ॥
अचल अटल हरसिंघ। बोलि वरनं वर भाइय ॥
पज्जूनराव बलिभद्र सम। लोहानौ आजांन बर ॥
सजि सेन ताम चल्लहि न्रपति। उदधि जानि हल्लिय गहर ॥
छं० ॥ ७० ॥

पृथ्वीराज का सामंतों के सहित हांसीपुर पर चढ़ाई करना।

कोलाहल कलकलिय। रत्त द्रिग बयन रत्त किय ॥
कहिय सूर सामंत। मंत नौसान सह दिय ॥
राजन सो कुल जुद्ध। राव न सुनै अप कन्नह ॥
देस भंग कुलअंत। होइ नहिं देषत धन्नह ॥
प्रथिराज राज तामंक तपि। करि प्रयान हांसी दिसह ॥
नग नाग देव द्रिगपाल हलि। मनु भारथ पारथ रिसह ॥
छं० ॥ ७१ ॥

पृथ्वीराज के हांसीपुर पर चढ़ाई की तिथि।

दूहा ॥ तिथि पंचमि चहुआन चढ़ि । अति आतुर वर वीर ॥
वर प्रधान पावास वर । इह सह परिगह तीर ॥ छं० ॥ ७२ ॥

सुसज्जित सेना सहित पृथ्वीराज की चढ़ाई का आतंक वर्णन ।

पद्धरी ॥ सजि चल्यौ सेन प्रथिराज राज । मानहुँ कि राम कपि सीय काज ॥
सामंत नाथ कटि तोन धारि । मानौ कि पथ्थ गौ ग्रहन बार ॥
छं० ॥ ७३ ॥

रगतैत नैन भ्रकुटी कराल । मानो कि ईस चयनेच झाल ॥
बंकुरिय मुंछ लगि भौंह आनि । मानो कि चंद बिय किरन बानि ॥
छं० ॥ ७४ ॥

चिहुफेर सूर बिच चाहुआन । मानो निषच परि परस मान ॥
सजि सिलह सूर अंग अंग यान । मानो कि मुकुर प्रतिब्यंब जानि ॥
छं० ॥ ७५ ॥

करि करी अग्ग रज रजत दंत । मानो कि जलद पँग बग्ग पंति ॥
उभ्भारि सुंड गज लेहि बीर । मानो कि ब्यंब अहि मरुत मौर ॥
छं० ॥ ७६ ॥

मद झरहि पाट बरषंत दान । मानो कि धराहर धार जानि ॥
तिन मचत कीच हय कलत लार । मानो कि भद्र कद्रव मझार ॥
छं० ॥ ७७ ॥

धर स्याम सेत रत पीतवंत । मानो कि अभ्भ पल्लव सुभंत ॥
चमकंति अमिय दामिनि समान । बाजंत वज्ज घनघोर बान ॥
छं० ॥ ७८ ॥

उच्चरहि छंद कवि मोर सोर । पप्पीह चीह सहनाय रोर ॥
ठनकंत घंट सादुरनि नद्द । मानो कि भद्र दादुर सबद्द ॥
छं० ॥ ७९ ॥

दिसि विदिसि धुंध मुंदियग भानि । तिधंम इंद्र बिय इंद्र जानि ॥
बरषंत धार चढ़ि ओम मंत । तिन उड्डिग रेन बिच कीच मंत ॥
छं० ॥ ८० ॥

तिन कलहि पंषि पावै न ठौर। उप्पमा कौन जंपैस और॥
कलमलिय नाग परि कमठ भार। हलहलिग दंति द्रिग मंत सार॥
छं०॥ ८१॥

रथ षरहि छूर अप अप्प मान। मानो छयल कुलटा मिलान॥
सिर लग्गि व्योम हय षरहि राज। मानो कि कपिय गिरि द्रोन काज॥
छं०॥ ८२॥

पत्तौ जु राज हांसीति थान। सजि सूर सेन दीने निसान॥
छं०॥ ८३॥

रावल का चहुआन के पहिलेही हांसीपुर पहुंच जाना।

दूहा॥ चल्यौ राज प्रथिराज बर। सुनि चिचंगी भीर॥
बर हांसी सामंत सह। बीटि षान बर बीर॥ छं०॥ ८४॥

कवित्त॥ इन अग्गै बर बीर। समर हांसीपुर पत्तौ॥
रन रत्तौ रन सु। भ्रम्म आभ्रम्म विरत्तौ॥
चतुरंगनि बर सज्जि। बीर चतुरंग सपत्तौ॥
कूंच कूंच उप्पार। दौह चौ पंच सु जत्तौ॥
सु बर राव रावल समर। अमर बंध जत अमर जत॥
आवाज बढ़ी तब मीर बर। सेन संभ हांसी बिरत॥छं०॥८५॥

समरसी जी के पहुंचते ही यवन सेना का उनसे भिड़ पड़ना।

दिसि पति पति पत्तीय। मेर लजपत्ति सु धारी॥
सबर सत्त जंपन सु। वीर किति सम बर चारी॥
ब्रह्म रूप जीति न सु। ब्रह्म आहुट्ठ सपन्नौ॥
लष्यौ रूप ततार। रंक लभ्भै वित मन्नौ॥
लगि जक सूकरस पियन बर। छुधा क्रोध लगि बीर रस॥
बर भिरन षान षुरसान दल। बल प्रमान षोलीति अस॥
छं०॥ ८६॥

डिठ्ठ ढाल ढलकंत। समर चतुरंग रंग रन॥
बंधि फवज्ज सुबीर। बीर उच्चरंत मंत मन॥
हरवल षान ततार। करै करवलति षुरेसी॥

तुंड समर लगि नहीं। आनि बंधी बल गंसी ॥
मुष हक्क मेलि मार मद्दन। नाहर राव नरिंद तन ॥
सावंग समर दिसि दिसि घिनइ। सुभर जुद्ध मच्यौ गहन ॥
छं० ॥ ८७ ॥

समर सिंह जी की सिपाहगीरी और फुरतीलेपन का वर्णन।

मद्दन रंभ आरंभ। समर बंधीत समर बर ॥
अमर नाम बर अमर। मुंकि सामंत लषै भर
पुर हांसी बर पत्त। पूर दच्छिन दच्छिन बर ॥
मिले सूर कर वर करूर। बंधीति सिरी सर ॥
बंधि सनाह बिलगे समर। करि भर घाइ अपुब्ब भर ॥
हक्कारि सूर पच्छिम परिय। वज्र मेर बज्जे सुभ्भर ॥ छं० ॥ ८८ ॥
तमकि वीर चित्रंग। बाज उप्पर बर नंषिय ॥
मनहु कंस सिर बज्र। षिलइ उप्पर धर पंषिय ॥
सथ्थ सूर सामंत। हथ्थ किरवान उभारिय ॥
मनहुँ चंद विय ब्योम। परिग रारिय षमरारिय ॥
घरि च्यार धार धारइ हरिय। भरिय नरेनर चित्तरिय ॥
औसरिय सेन अध कोस क्रम। कलह केलि ऐसी करिय ॥
छं० ॥ ८९ ॥

यवन और रावल सेना का युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ दोउ [1]रूर वहं, उडीरेन जहं। निसी जानि भहं, वहै वान सहं ॥
छं० ॥ ९० ॥
मुकै गज्ज महं, वहै षग्ग अहं। सुभै रथ्थ हहं, नचै वीर वहं ॥
छं० ॥ ९१ ॥
बजै षग्ग सहं, घटा बज्जि भहं। षमंजाल षहं, प्रलै अग्गि नहं ॥
छं० ॥ ९२ ॥

(१) को.-सूर।

चिमूली अमहं, बजै घाय रहं। जनौं घट्ट बहं, कहं जोग सहं॥
छं० ॥ ९३ ॥
मगी मुत्ति दहं, पगं सोर पहं। उभं ताप उहं, कवीचंद चंदं॥
छं० ॥ ९४ ॥
सुभे रथ्थ हथ्थं, ...। रसं रोस भानी, अमं सेन दानी॥
छं० ॥ ९५ ॥
जकी जोग माया, चितं जोग पाया। ...., ...॥ छं० ॥ ९६ ॥

समरसी जी की वीरता का बखान।

कवित्त ॥ ॥ कै छुट्टा मद्मोष। सिंघ छुट्टा पल काजें॥
कै तुट्टा बयबाज। बीच कोलिंग बिराजै॥
कै रस संका छुट्टि। वृषभ दोड़ छुट्टि बिलुट्टा॥
लज्ज रतन विषग्गंत। उभै रंकह आलुट्टा॥
बर सेन उररि निसुरत्ति यां। दइ दुवाह उप्पर परी॥
चित्रंगराव रावर समर। सुबर जुद्ध एतौ करी॥ छं० ॥ ९७ ॥

समरसी जी के भाई अमरसिंह का मरण।

मिलिग घाइ अघघाइ। समर धायौ जु समर बँध॥
धार धार तन उघरि। गयौ सुर लोक रंभ काँध॥
घठ सु पंच अरि ढाहि। पंच मिलि पंच प्रपत्ते॥
दइ दुवाह रन अमर। अमर भौ बोलन जत्ते॥
हर हार कंठ आनंद मध। मुनि सँग्राम दुभार बन॥
दुष हथ्थ दरिद्री द्रव्य ज्यों। रह्यौ पिष्षि तं चिय नयन॥
छं० ॥ ९८ ॥

युद्ध स्थल का चित्र वर्णन।

*मोतीदाम ॥ जु रुप्यौ रन रावल मंझ अनी। सु मनों ससि मंडल भू अधनी॥

* छन्द मोतीदाम चार जगण का होता है। रासो में भी तथा और जगह चारही जगण का मोतीदाम माना गया है। परन्तु यह छन्द चार सगण का है। भाषा के प्रचलित दो एक पिंगल ग्रन्थों में इस प्रस्तार का छन्द ही नहीं मिला अतएव इसका नाम वैसाही रहने दिया है।

बजि घग्ग उनंगत धंग बजै। घरियारन के सुर मंझ सजै॥
छं० ॥ ९९ ॥

गज घग्ग उड़ंतह मुत्ति झरै। तिनकी उपमा कविचंद करै॥
मनि मै ग्रह रत्ति प्रमार चली। जल जावक नागिनि पौरि छली॥
छं० ॥ १०० ॥

कढ़ि हथ्थर हथ्थ सु हथ्थ परी। तिनकी उपमा कविचंद धरी॥
मुष से सहँते जल धार धसी। निकसी जुइ एक प्रवाह गसी॥
छं० ॥ १०१ ॥

छित रावर भारथ राज धनी। कहि भग्गिय षान ततार अनी॥
छं० ॥ १०२ ॥

अरिल्ल* ॥ षां ततार सुनि बेन नेन सोयं। लज्जे करी बर भग्गा जे भानं॥
ओटं जिन कोटह सुहर। लै दस्तिक कर चंमि तुंड डड्डी बढ्ढी कर॥
षां षुरसान ततारं। भंजि भंजे सुर सुभ्भर॥ छं० ॥ १०३ ॥

यवन सेना की ओर से तत्तार खां का धावा करना।

कवित्त ॥ बाज नंषि तत्तार। बाजि षुरतार बज्जि षग॥
पंच अग्ग सौ मीर। संग धाए पयान मग॥
जुद्ध कथ्थ कर हिंदु। तूल जिम बाय उड़ाइय॥
मेर लाज पल्लून। सत्त साइर वर थाइय॥
घरि एक झिंझ बज्जी सकल। बर उप्पर पावार करि॥
निट्ठ करि षान तत्तार कढ़ि। हिंदुमेछ लहिये अपरि ॥छं०॥१०४॥

घोर युद्ध वर्णन।

पद्धरी ॥ बर लुथ्थ लुथ्थि आलुथि पलथ्थ। नचि प्रेत नाद वीरं ततथ्थि॥
नारद्द नद निस सुनि सभीर। सारद्द सिद्ध तिन तत्त बीर॥
छं० ॥ १०५ ॥

चौसट्ठि घाइ सह सूर संचि। पंचं पचीस काबंध नंचि॥

* यह छन्द वास्तव में कोई छन्द नहीं है। इस की प्रथम पंक्ति साटक छन्द की वृत्ति के समान है। दूसरी गाथा की, तीसरी उल्लाला की और चौथी रोला की है। इस से मालूम होता है कि यहां के कई एक छन्द नष्ट हो गए हैं, उनका कुछ शेषांश मात्र रह गया है।

बजि घाइ सद्द सहीन हद्द। सुनि ईस सद्द नंदी अनद्द ॥
छं० ॥ १०६ ॥

सत पंच मुक्कि तरवार बूथ। तत्तार गात अरवार हूथ ॥
बँधि चाल चाल उचाल पाव। चगवाइ विहथ्थन सूर लाव ॥
छं० ॥ १०७ ॥

तन बंधि संग सो लोह कढ्ढि। मानो कि समुद जल मीन चढ्ढि ॥
उठि छिंछ रक्त तीरत्त भाइ। मानो पलास बन फुल्लि नाइ ॥
छं० ॥ १०८ ॥

बर बुभिझ साहि कर वज्ज वाय। रुधि पियत [1]भीम सामन्न काय ॥
उतमंग हक्क धर नच्चि धाव। भ्रम वहै षग्ग की विज्ज लाव ॥
छं० ॥ १०९ ॥

दूहा ॥ अलुध जुद्ध हिंदू तुरक। भय अनादि जमनूत ॥
इन तत्तार संमुष अनी। उतै समर अवधूत ॥ छं० ॥ ११० ॥

रसावला ॥ धार धारं चढ़ी, बोलि बीरं बढ़ी। षग्ग [2]झालं जढ़ी, लोह दूनी कढ़ी॥
छं० ॥ १११ ॥

दून बानं गढ़ी, बीर जै जै पढ़ी। लथ्थि लुथ्थं बढी, हथ्थ दो दो चढ़ी॥
छं० ॥ ११२ ॥

जोग माया रढ़ी, जुद्ध देषै ठढ़ी। देवि रथ्थं चढ़ी, पुप्फ नंषै गढ़ी ॥
छं० ॥ ११३ ॥

उत्तमंगं बढ़ी, अंत तुट्टी कढ़ी। ईस देषै ननं, [3]पुत्तनं रंजनं ॥
छं० ॥ ११४ ॥

सूर कट्ठै इसं, बान कड्ढी जिसं। .... छं० ॥ ११५ ॥

इसी युद्ध के समय पृथ्वीराज का आ पहुंचना।

दूहा ॥ षोड़स इक पंचह सुभर। समर परिग संग्राम ॥
नव घट्टी अंतर परिग। सुत सोमेस सु ताम ॥ छं० ॥ ११६ ॥

कवित्त ॥ मद्धि पहर विप्पहर। समर सामंत जुद्ध मिलि ॥

(१) ए.-भूमि। (२) ए.-जाल।
(३) को. कृ.-पुत्तनं।

नवनि नीच करि नीच । जुद्ध संग्राम सार झिलि ॥
विमुष न भौ परि बंध । जुद्ध सामंत सूर मिलि ॥
अनी एक करि मेर । धाइ अरि जुट्टि षग्ग षुलि ॥
षुरसान षान दल ठेलि बर । षब्बर सौं षौरंग बजि ॥
थिर भए सूर रथ दिषत पर । कायर चलि जंगम प्रहजि ॥
छं० ॥ ११७ ॥

भुजंगी ॥ कढ़े लोह सूरं करूरंति तायं । चले सस्त्र हथ्थं न चालंत पायं ॥
मिलै हंस हंसं चलै अस्त्र कैसें । जनों नीधनी नार पिय अग्ग जैसें॥
छं० ॥ ११८ ॥

ननं डोलि चित्तं मरंनंति सूरं । चिया कुंभ चितं चलै हथ्थ जूरं ॥
प्रतंग्या प्रमानं समानं न सूरं । बुझै पंच पंचं ननं दीप दूरं ॥
छं० ॥ ११९ ॥

तुट्टैं सिप्परं टूक सा टूक सथ्थ । कला चंद्र राहै उभै भूप तथ्थैं ॥
कलै निकऱ्यौ बार सन्नाह फुट्टैं । तिनंकी उपम्मा कवीचंद जुट्टैं ॥
छं० ॥ १२० ॥

मनो केतकी पल्लवं ब्रत्त जुट्टी । रची राइ भेदं दुहुं (१)अंग फुट्टी ॥
लगे धार धारं दुधारं प्रहारं । बरं काइरं भास चित्तं विचारं ॥
छं० ॥ १२१ ॥

करं मीडि दूनों सिरं धुन्नि जत्ती । मनौं मष्षिका जाति पच्छे सुरत्ती॥
सुमिचं कपी जानि लंबालिजायं । उपंमा इनं की ननं भूलि पायं॥
छं० ॥ १२२ ॥

बजी भंभ लग्गे असम्मान सीसं । उठे पंच दह दून धावंत दीसं ॥
नही मानवे दानवे नाग लोयं । कह्यौ बाहु भारथ्थ जिम पथ्थ जोयं॥
छं० ॥ १२३ ॥

परे संमरं शूर षट्टंति पंचं । लगे धार धारं भए रंचरंचं ॥
सबै धाव सामंत सूरं प्रकारं । पऱ्यौ बग्गरी रा कह्यौ धार धारं ॥
छं० ॥ १२४ ॥

(१) ए.-अग ।

भरं राज प्रथिराज पंचास पंचं। गयौ राव चावंड रंछौरि अंचं ॥
॥ छं॰ १२५ ॥

अमर की वीर मृत्यु और उसको मोक्ष प्राप्त होना।

कवित्त ॥ पऱ्यौ अमर षावास। ग्रिड संमुह उड्डावै ॥
बल घट्टै तन घट्टि। कित्ति घट्टी नर जावै ॥
स्वामि विमुष नह भयौ। स्वामि कारज तन भग्गी ॥
साम दान अरु भेद। दंड तीने पथ लग्गी ॥
ब्रह्मपुर स्वामि सेवक सु भ्रम। गयौ मोह माया सु पथ ॥
जग हथ्थ राइ सुर लोक बसि। सली जुग्ग भारथ्थ कथ ॥
छं॰ ॥ १२६ ॥

अमर गयौ पुर अमर। देवि घर घरह उछवि करि ॥
रचिय भोग आरंभ। देव भूषन सुरंग बर ॥
बर बरु करि झग्गरी। सौ कि रानी पुक्कारी ॥
धूप दीप साषा सु। पुहप हूहह उच्छारी ॥
तन पवित्र भ्रम भ्रन धन्न तन। गौ सुरलोक अचिज्ज नह ॥
अघ रोकि न्त्रपति जोवन्न वर। षग्ग मग्ग षुरसान लह ॥
छं॰ ॥ १२७ ॥

पृथ्वीराज के पहुंचते ही शाही सेना का बल ह्रास होना।

कुंडलिया ॥ जै कित्ती रत्ती उमा। मुगत सुरत्ती षान ॥
चाहुआन बल बढ़त वर। बल घट्यौ सुरतान ॥
बल घट्यौ सुरतान। साहि भौ पूरन चंदं ॥
राज न्त्रपति बियचंद। बीर बीरं रस मंदं ॥
विधि विधान निरमान। षान दिष्षिय तिहि बतहय ॥
इन पंचौ संग्रहै। राज पट्टियत जैतिजय ॥ छं॰ ॥ १२८ ॥

पृथ्वीराज का यवन सेना को दबाना।

दूहा ॥ जै बड्डी जै जै सकल। पीलँ तन धरि ढाल ॥
बल गोरी बल संग्रहै। ज्यों चंपै बर काल ॥ छं॰ ॥ १२९ ॥

ज्यों चंपै बर काल गुन। हर चंपै विष कंद॥
रवि चंपै किरनावली। ज्यों चंपैत नरिंद॥ छं० ॥ १३० ॥

रावल और चहुआन की सम्मिलित शोभा वर्णन।

अरिल्ल ॥ बर संभरि चहुआन निवासं। उत चित्रंग नरिंदह सासं॥
फिरि गोरी पारस अधिकारी। मनो चंद बद्दर बिच सारी॥
छं० ॥ १३१ ॥

दूहा ॥ राजत बीर शरीर गति। छिति मिच्छिति बर राज॥
मनहु भूप भूआल कौ। बर बसंत रितराज॥ छं० ॥ १३२ ॥

रणस्थल की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ बर बसंत बर साज। सूर लग्गा चावद्दिसि॥
रत्त रुधिर समरंग। छित्त राजै अहत्त बसि॥
फेरि ग्रह्यौ सुरतान। चंद बध्यौ उड़गन बर॥
निस नछिच ज्यों प्रात। सेन दिष्यौ जुमंब बर॥
नर गिरहि भिरहि उठ्ठहि लरत। घट घट्टंति न सुभट घट॥
पाहुनौ सुभट गोरी कियौ। दाहिम्मै चावंड थट॥ छं० ॥ १३३ ॥

दूहा ॥ सु चिय हार सम परि सुथिर। यों सुबरे संमेत॥
सार धार बर देषियै। सार प्रहारन प्रेत॥ छं० ॥ १३४ ॥

मुख्य मुख्य वीरों के मारे जाने से शाह का हतोत्साह होना।

कवित्त ॥ गुरज उभ्भ तिय तेग। तोन त्रिय सत्त सुरंगं॥
छह कमान सर सहस। लोह सौ बीर अभंगं॥
ए तुट्टै बर अंग। तोन थक्का सुर थानं॥
अंग अंग निरमलौ। कित्ति सारथी सु आनं॥
तिहि परत गयौ गोरी न्रिपति। परत षान चौसट्ठि धर॥
तिन जंपि चंद बरदाइ बर। नाम जु जू ए सब विवरि॥छं०॥१३५॥

यवन सेना के मृत योद्धाओं के नाम।

त्रिभंगी ॥ बर षांन ततारं, छोरिय डारं, मेह उधारं, परिषानं॥
.... ॥

इबसी घट बंधं, जम गुन संधं, रति रन रंधं, आरुद्धं ॥
असि बर बर झारी, घाम प्रहारी, कुंत कटारी, बर बंधं ॥
छं॰ ॥ १३६ ॥

गोरी घर काले, ग्रस्त न झाले, अंग विहाले, परि छीनं ॥
सर बीरति भारे, परि रस सारे, बजि धर धारे, धर ईनं ॥
मद्दनंसिय मेरं, परि धर घेरं, जुग परिसेरं, षुरसानं ॥
षुरसानत षानं. चौसठि थानं, रन पति पानं, चहुआनं ॥छं॰॥१३७॥

उन रंग अहत्तं, गुन गुर तत्तं, साइय मंतं, पढ़ि देनं।
.... ॥
उड़ि साइक सूरं, नभ तक रूरं, धरि परि जूरं, धर पूरं ॥
.... ॥ छं॰ ॥ १३८ ॥

झझारे गग्गं, ओड़न तग्गं, मन मत पग्गं, पै नग्गं।
जानिय किन कालं, बजि रन तालं, मीर सु हालं, अति अंगं ॥
प्रारथ्य सुगत्ती जस रथ जुत्ती, जल कँद पुत्ती, रन घुत्ती ॥
अभिमान डकारं, बजि रन सारं, जगत उभारं, जम कंत्ती ॥
छं॰ ॥ १३९ ॥

भोरी परि लीनं, छित रस भीनं. रन दुहु दीनं, करि हीनं ॥
.... ॥
दैवत्त सु रत्तं, मन करि गत्तं, कर छित सतं, रन गत्तं ॥
.... छं॰ ॥ १४० ॥

धर धर धर तुट्टै, असि रन जुट्टै, तन आहुट्टै, मति घुट्टै ॥
नव जोग समानं, दोवर षानं, पति सन मानं, बर फुट्टै ॥
इन सूर समानं, देवन जानं. रन अभिमानं, भड़ भग्गा ॥
मोहन्नी भग्गा, तन षग लग्गा, जुगति सु जग्गा. प्रति लग्गा ॥
छं॰ ॥ १४१ ॥

यवन वीरों की प्रशंसा।

कवित्त ॥ षूब षान आजूब। षूब मारू षिति मारू ॥
षूब बेर तत्तार। षूब मंडी षिति तारू ॥

घूब घान षुरसान। घूब जा भारथ पंडै॥
षूबर गोरिय सेन। जेन भग्गापग मंडै॥
अदिहार साह गोरी सुवर। सुदिन राज प्रथिराज वर॥
तित्तनै परे भोरी धरे। सुबर बीर बीरं सु रर॥ छं०॥ १४२॥

हिन्दू पक्ष की प्रशंसा।

बलि भट्टी मइनंग। गरूअ गब्बह गज्जिय धर॥
इन लरंत सामंत। साहि चक्यौ दिल्लिय पर॥
जोगिन पुर जोगिंद। आदि चब्बर चौरंगी॥
इंद्र जोग जुध इंद्र। इंद्र कल इंद्र अभंगी॥
नग नग नरिंद नग बर सजहि। रजहि सेन सामंत सह॥
नंषयौ कोट आसी पुरह। सुबर बीर लग्गे मगह॥ छं०॥ १४३॥

सामंतों का वीरतामय युद्ध करना।

लगे मग्ग सामंत। अंग नंचे चब्बर रन॥
इक्क मंत आमंत। इक्क देषे धावत घन॥
मइन मंत आरंभ। रंभ लग्गा चावहिसि॥
एक सस्त्र बरषंत। एक बरषंत बीर असि॥
जोगिंदराइ जग हथ्थ तुअ। सुबर बीर उप्पर करन॥
कलकंकराव कप्पन विरद। मइन रंभ मच्यौ सुरन॥ छं०॥ १४४॥

युद्धस्थल का वाक् चित्र दर्शन।

भुजंगी॥ मई रंभ आरंभ सारं प्रकारं। नचै रंग भैरू ततथ्थे करारं॥
तहां पत्तयौ तत्त चिचंग राजं। मनों गज्जियं देव देवाधि साजं॥
छं०॥ १४५॥

महा मंत मंतं सु तंतं हकारे। मनों बीर भद्रं सु भद्रं डकारे॥
भनक्कंत षग्गं उपम्मा निनारी। मनो बीज कोटी कलासी पसारी॥
छं०॥ १४६॥

दुहुं बाह बीरं सहस्सं भुजानं। कहै कौन कब्बी बलं आ प्रमानं॥

रसं तार तारं जिते तार वग्गे । मनो मानही देव मा देव भग्गे ॥
छं० ॥ १४७ ॥

बहै बाह बाहं करारेति तथ्थं । परे रंग चंगं अरथ्थी सरथ्थं ॥
नचै बीर पायं झनक्कंत षग्गं । मनो तार बज्जं सु देवाल अग्गं ॥
छं० ॥ १४८ ॥

करें कंस कंसी बजे जानि नैनं । इसे सार सों सार बज्जै स घैनं ॥
उनंके उनाही गुमानं न भग्गें । करी षान षुरसान षुरसान मग्गें ॥
छं० ॥ १४९ ॥

बहै बान कम्मान आहुत्त तेजं । लगे अंग अंगं रहै नाहि सेजं ॥
सुरं धीर धीरं धरे पाइ अग्गं । मनो चच्चरी जानि आहुत्त नग्गं ॥
छं० ॥ १५० ॥

ढिलै अंग अंगं परै बथ्थ ढारे । मनों लग्गियं च्यार ज्यों मत्तवारे॥
उभै बीर बाहै सु बोलै प्रचारै । सहै अंग अंगं दुधारे दुधारै ॥
छं० ॥ १५१ ॥

इते च्यार चारं सु देषे प्रकारै । चढ्यौ सूर सूर मध्यान मझारे ॥
छं० ॥ १५२ ॥

घोर युद्ध उपस्थित होना ।

गाथा ॥ मध्यानं वर भानं भानं । तेजाय सूरयो 'मुष्षं ॥
चच्चर सी चवरंगं । उच्चारं मत्तयो बेनं ॥ छं० ॥ १५३ ॥

भुजंगी ॥ चरं चारि मतं सजे सूर सूरं । नमो डंबऱ्यौ भान उग्यौ करूरं ॥
दुअं बीर धाए सु चौहान मोरी । मनों षेत षद्दें किसानंत भोरी ॥
छं० ॥ १५४ ॥

कहें हक्क बाजी विराजंत लज्जै । सुभें दंग लग्गे जु पावक्क प्रज्जे ॥
दुअं सेन हक्कें विहक्कंत न्यारैं । बकै जानि हंदं सु बंदी पुकारैं ॥
छं० ॥ १५५ ॥

(१) ए.-सुष्षं ।

रनं रंग रत्तं विराजै सु भूमी। मनों मंगलं पुत्त की आनि रूमी॥
उडै हंस हंसं द्रुमं डाल डालं। मनों नाग मध्यं बरें अग्गि चालं॥
छं० ॥ १५६ ॥

रती रत्त अग्गे मुगत्ती ज रत्ते। मनों मान ईसे नमं देवदत्ते॥
भए नैन ऐसें द्रिगं देव जैसे। .... ॥ छं० ॥ १५७ ॥

परे गज्ज बाजी परे रथ्थ छीनं। महा मंत मत्ती लगे लोह पीनं॥
छं० ॥ १५८ ॥

पृथ्वीराज के वीर वेष और वीरता की प्रशंसा।

कवित्त ॥ प्रथीराज गज सहित। तेग बंकी सिर धारिय॥
घनह कोर बिय चंद। बीर उज्जलौ सुधारिय॥
सेन चमर सम भिंजि। रही लट एक समिज्जिय॥
स्याम सेत अरु पीत। अंग अंगन हत दग्गिय॥
कज्जलन कूट तें उत्तरहि। चिय मंदी संग्राम तिय॥
चिचंग राव रावर चवै। सुबर बीर भारथ्थ कथ॥ छं० ॥ १५९ ॥
भारथ्थह चहुआन। समर रावर सम गोरिय॥
बिध बिधान निरमान। उभै भारथ्थ स जोरिय॥
भारथ्थां पारथ्थ। समर रावर प्रथिराजं॥
मेर मद्धि सायर समद्धि। बद्धे गिरि राजं॥
जित्ति कित्ति पन सांइ सों। भिरन करन बीरत्त गुर॥
चामंडराइ दाहर तनौ। भारथ्थां लीनौ सुधर॥ छं० ॥ १६० ॥

पृथ्वीराज के युद्ध करने का वर्णन।

भुजंगी ॥ धरा भ्रम्म भारी सु लीनौ नरिंदं। मनों मेनिका देव जुद्धं सुकंदं॥
कमद्धं हँकारे हकें हाक बज्जी। कहै सीर भारी उदै मीर रज्जी॥
छं० ॥ १६१ ॥

सनक्कंत बानं भनक्कंत षग्गं। मनो बीज के बाल अभ्यास जग्गं॥
दुहुं दीन दीनं चहुआन गोरी। हडूहूत षेलंत बालक्क जोरी॥
छं० ॥ १६२ ॥

नियं भम्म देहं दुवं अंग जान्यौ। जिनें मुक्ति कौ रूप अंगं पिछान्यौ॥
गजं दंत कढ्ढे करे सस्त्र भारी। तिनै पच्छ तारी दियै हथ्थ तारी॥
छं०॥ १६३॥

उदै इंद कढ्ढै रवी कोर मानं। इसे षग्ग तेगं भभक्कै प्रमानं॥
पटे हथ्थ झारे उतारे निनारे। मनो सारसी हथ्थ कीने चिकारे॥
छं०॥ १६४॥

उडै सह बानं विवानंत रुक्कै। तिनं मारुतं सहगं मह सुक्कै॥
छवी छब्बि रत्तं उडै छिंछ भारी। मनो मत्त मेघं बरष्षै करारी॥
छं०॥ १६५॥

परं नाग नागं इलै नाग जानं। तहां संगमं मान आवै न पानं॥
छं०॥ १६६॥

युद्ध का आतंक वर्णन।

कवित्त॥ सगन संग आवइ न। नाग भिंजै नागिन रुधि॥
परे नाग हलहलिय। नाग भागै कमठ्ठ सुधि॥
मननि सीस मुक्कयौ। इहै दंपति विचारै॥
तिहिन संग आवै न। संग नागन हकारै॥
घरि एक भयौ विभ्रमत मन। बहु रिस हार सिंगार किय॥
नव रस विलास नव रस सुकय। राज उट्ठि संग्राम लिय॥ छं०॥ १६७॥

कवि कृत वीर-मत-मुक्ति वर्णन।

सोइ सँग्राम सोइ साम। सोई विश्राम सुगत्ती॥
सोइ सदेव समदेव। ताइ अच्छरि रस मत्ती॥
जु कुछ मुकति तिम ग्रसिय। सार वज्जे नइ अंगं।
ग्रसिय अनं किय अग्गि। जोग जुट्टे घन जंगं॥
विन जोग विरइ भारथ्थ विन। सूर भेइ भेदै न कोइ॥
पारथ्थ पंच पंची सुवर। गयौ सूर भेदेव सोइ॥ छं०॥ १६८॥

वीररस प्रभात वर्णन।

भुजंगी॥ चढ़े ध्यान अष्षं नयं काम रंगं। परे पल्लभा राइ मभ्भे सुरंगं॥

चढ़े कोतरं कोक कोकं पुरानं। रवी तेज भग्गी सची चार पानं॥
१६९॥ छं०॥
मुदे सूर ससिं सरोजं पुहप्पं। गयं मुद्दितं पच आरह अप्पं॥
कमोदंत मोदं घरं वै प्रमानं। तहां काइरं सो सद्दिष्षं तथानं॥
छं०॥ १७०॥
प्रफुल्लंत बीरं चकं चक थानं। इकं मुक्ति बंछे इकं सामि पानं॥
चिया कंत बंछे वियोगी सँजोगं। रनं सूर बंछे अछी अच्छ भोगं॥
छं०॥ १७१॥
भई सिंहरेनी वरं दीह ऐसें। मनो संधि बालं विराजंत जैसें॥
दुहुं सेन बज्जे निसानं दुरत्ते। तहां पंच पंषी रहे थान जत्ते॥
छं०॥ १७२॥
दुवं सेन बंमं निवंती प्रकारं। दोऊ बीर छेकं तजे बाज सारं॥
बिना नींद पानी बिना अन्न धारं। रहे एक हिंदू सहिंदान सारं॥
छं०॥ १७३॥
भषै मेच्छ बाजी रनं जे करारे। तके बीर कच्ची बिना अग्गि सारे॥
भषैं मंस चोरं धिगं आ प्रकारं। इसी रेंन बित्ती दुहुं दीन भारं॥
छं०॥ १७४॥
उरव्वीति मीरंत वारंति षानं। हसे रंग रंगं रसं बीर पानं॥
इसी रेन दोऊ गई नट्ठि नट्ठी। गई कायरं कट्टु सूरंत मिट्ठी॥
छं०॥ १७५॥

कवित्त॥ रही रत्ति आरत्ति। तत्त लग्गी परिमानं॥
जुद्ध जूह सुरतान। मंच कीने परिमानं॥
भान पयानन होइ। लोह जित्त पायानं॥
सार धार निरधार। सार उद्धार समानं॥
षुरसान षान तत्तार रन। दिसि रत्ती रत्तीत अप॥
भारथ्य कथ्य भावै भवन। सुबर बीर बीरंत जप॥ छं०॥ १७६॥

प्रातःकाल होते ही दोनों सेनाओं का सन्नद्ध होना।

दूहा॥ बर भग्गी जग्गीति निसि। दोऊ दीन परमान॥
बंधि सिपारे तीसचव। करि निवाज सुरतान॥ छं०॥ १७७॥

प्रभात वर्णन।

कवित्त ॥ क्रम उघरीय किपाट। चौर भग्गंत रोर तनु ॥
चक चक्की जंमिलहि। उघरि सत पच मत्त जनु ॥
भ्रंग भृंगि सम भ्रमहि। बज्जि मारुत सौरभ चलि ॥
गय उडुगन ससि घटिय। बढ़िय आकास किरनि कर ॥
संविधि सुरंग व्यापार घन। रवि रत्तौ मुष दिष्षयौ ॥
भासकार सहसकार क्रंमकार। नवकार कमुद विसष्षयौ ॥
छं० ॥ १७८ ॥

कंठभूषन ॥ कंठय भूषन छंद प्रकासय। बारह अच्छरि पिंगल भासय ॥
अट्ठय संजुत मत्त प्रमानय। कंठयभूषन छंद वषानय ॥ छं० ॥ १७९ ॥
उग्गि रतं रत अंमर भासय। भानु सुदेव दिवालय थानय ॥
पाप हरै तन क्रम्म प्रगासय। कौ जम तात जमुद्दय भासय ॥
छं० ॥ १८० ॥

तात करन्नय पूरन पूरय। बंध कमोदनि को मत ह्ररय ॥
बंध जवासुर ग्रीषम थानय। अर्क पलासन काम विरामय ॥
छं० ॥ १८१ ॥

कौ सुनि तात सनी सर ह्ररय। भास करं करुना मति पूरय ॥
है कर सस्वति भाष प्रकारय। तारय नाथ दिनं मति तारय ॥
छं० ॥ १८२ ॥

ईवर ओघ करं गिर पारय। मानहुं देव दिवालय साजय ॥
भंजन कुंज अलूव्रत षंडय। सो धरि ध्यान धरंत विचंरय ॥
छं० ॥ १८३ ॥

एक घरी धरि ध्यान स दिष्षिय। मुक्ति स लष्षिय संग्रम अष्षिय ॥
छं० ॥ १८४ ॥

सूर्य्य की स्तुति।

कवित्त ॥ सरद इंद प्रतिब्यंब। तिमर तोरन गयंद घर ॥
ब्रह्म विष्णु अंजुल। उदंत आनंद मंद हर ॥
इक चक्र चिहुं दिसी। चलत दिगपाल तुंग तन ॥

कमल पानि सारी अहन । संसार जियन जन ॥
उछंग बीर छच्छव पवन । निरारंभ सतह सुमुष ॥
कविचंद छंद इम उच्चरै । हरी मित्त दोइ दीन दुष ॥ छं० ॥१८५॥

सूरवीर लोगों का युद्ध उत्साह वर्णन ।

दूहा ॥ सो जगत मंगी सु कर । कढ़े लोह करि छोह ॥
दै दिवान देवत्त गति । हाइ हाइ रनि रोह ॥ छं० ॥ १८६ ॥

कवित्त ॥ हाइ हाइ .... । .... अरिष्ट गरिष्टं ॥
चाहुआन सुरतान । बीर भारथ्थ वरिष्टं ॥
दै दुवाह अति घाह । षग्ग षोलै छिति तोलै ॥
सल्ल बीर बाजंत । देव देवासुर डोलै ॥
डक्कनि डहक्कि जोगनि लसय । ससै लोह देवर धसै ॥
चामंडराय दाहरतनौ । राज भ्रम्म चित्तं बसै ॥ छं० ॥ १८७ ॥

सामंतो की रणोद्यत श्रेणी का क्रम वर्णन ।

उभू दिसा सामंत । अड्ड उभ्भै दुहुं पासं ॥
रा चामंड जैतसी । सलष छूरिवा सुवासं ॥
लोहानौ आजान । बलिय पँावार सभारिय ॥
दै दिवान दैवत्त । वर्ज लैहै अधिकारिय ॥
मद्दनसी मेर पच्छै न्रपति । मुगति हथ्थ कछौ निजरि ॥
दैवत्त वाह दैवत्त गति । सुबर बीर ठट्टे उसरि ॥ छं० ॥ १८८ ॥

यवन सैनिकों का उत्साह ।

* सौ मीरन संगमति । वज्जि नीसान षेत रहि ॥

---

* मालूम होता है कि या तो यहां के कुछ छन्द नष्ट हो गए हैं या क्रम में कुछ गड़बड़ पड़ गया है । छन्द १६८ से छन्द १८९ तक जो क्रम वर्णन है, उसके आगे युद्ध सम्बन्धी वीररस के छन्द होने चाहिएं । तिस के बाद मृतकों की संख्या या युद्ध की प्रशंसा इत्यादि होनी चाहिए । परन्तु छन्दों के खंडित होने के सिवाय हमारे विचार से छन्दों का लौट फेर भी हुआ है । छन्द १४३ से लेकर छन्द १५८ तक का पाठक्रम उधर बेसिलसिले पड़ता है । इसलिये संभव है कि प्राचीन समय में खुले पत्र पर पुस्तकें लिखी जाती थी लेखक की असावधानी से गड़बड़ हो गया हो । परन्तु पाठ क्रम में तीनों प्रतियां समान होने के कारण हमने कुछ लौट फेर करना उचित न समझ कर केवल यह टिप्पणी मात्र दे दी है । पाठक स्वयं विचार कर देखें ।

हय गय नर विच्छुरे। रुद्र भौ बीर बीर नह ॥
निस वर वर उम्भरहि । भूत प्रेतन उच्छव सिर ॥
बज्जि घाव हक्के । त्रिघाव चौसट्ठि रंभ वर ॥
नारद नह सदह सुभर । बीरभद्र आनंद भर ॥
इहि भंति निसा सुर सुंदरी । भर हर हर बज्यौ सुभर ॥छं०॥१८९॥

युद्ध का अक्षम आनन्द कथन ।

भय विभात लगि गात । रत्त रत्तं रन मत्यौं ॥
हिंदवान तुरकान । जुद्ध अंबर अंगत्यौं ॥
अगति मग्ग पाइन । सुगत्ति मारग बहु चल्ल्यौ ॥
अश्वमेद बहु दान सस्त्र । सम एक न घुल्ल्यौ ॥
स्वामित्त धरम कीनौ जु इम । मन उछाह अच्छे रहसि ॥
ना करी कोइ करिहै न को । करौ सु कौ रवि चक्र गसि ॥छं०॥१९०॥

दूहा ॥ चक्र चरित सोमंत ग्रसि । निज निवर्त नग नाम ॥
चाहुआन सुरतान सौं । बजि ऐसी असि ठाम ॥ छं० ॥ १९१ ॥

युद्ध में मारे गए वीरों के नाम ।

कवित्त ॥ गयौ षान तत्तार । पऱ्यौ षुर सानति षानं ॥
पऱ्यौ हिंदु बर रूप । भीम परि परि रन भानं ॥
पऱ्यौ भट्टि बलिभद्र । मान परिमान न मुक्यौ ॥
पऱ्यौ जंगलीराव । बीर दहिमा दल रुक्यौ ॥
अजमेर जोध जोधा परिग । पर किल्हन वन बीर बँध ॥
उप्पारि षान हुस्सेन लिय । चढ़ि अच्छरि मोरै सु कँध ॥
छं० ॥ १९२ ॥

तत्तार खां का मनहार होकर भागना ।

दूहा ॥ इन परंत तत्तार गौ । ग्रब्ब सु नंष्यौ साहि ॥
लज्ज ग्रब्ब भै मै दुऱ्यौ । जस सु जोति बल नांहि ॥छं०॥१९३॥

खेतझरना होना और लाशों का उठवाया जाना ।

कवित्त ॥ गौ ततार तजि रन । पहार हुंक्योति समर बर ॥
बजि निसान आवत्त । जीति षुरसान सूर भर ॥
उप्पारिग सामंत । बीस तिय डोल प्रमानं ॥
डोला तेरह तीस । समर उप्पारि समानं ॥
दल जल जिहाज रावर समर । धजा कित्ति उड्डी फहरि ॥
हय गय सु लुट्टि षुरसान दल । होइ फकीर छुट्टेति फिरि ॥
छं० ॥ १९४ ॥

युद्ध में मृत वीरों के नाम।

परिग षान षावास । गौर हांसीपुर धारी ॥
परि प्रताप सागर । नरिंद रन सूर विभारी॥।
पऱ्यौ कहै चंदेल । पऱ्यौ राजा नव भानं ॥
परि मोरी महनंग । जंग जीते जुग जानं ॥
पँावार परिग पूरन पहू । पहर एक भारथ्थ करि ॥
केसर नरिंद केसर बलह । तेग चित्ति कीरति लहरि ॥
छं० ॥ १९५ ॥

दूहा ॥ जीति समर भारथ्थ बर । न्रिप सम करि जुध ताम ॥
ढुंढि षेत भारथ्थ परि । कहि कविंद्र तिन नाम ॥छं०॥१९६॥

कवित्त ॥ जंगलवै बर मग्गि । भग्गि तत्तार सपन्नौ ॥
परिग सुभर प्रथिराज । जैत बंधव सलषन्नौ ॥
परिय पुत्त महनंग । सिंघ नाहर नाहर हर ॥
कन्ह पुत्त दुति कन्ह । चंद रघुबंस चंद बर ॥
नरसिंघ पुत्त हरसिंघदे । परिग सु किल्हन राम तन ॥
बीरम्म बीर माल्हन परिग । मल्हन वास विरास मन ॥
छं० ॥ १९७ ॥

हांसी युद्ध सम्बन्धी तिथि वारों का वर्णन।

हांसीपुर दिन सत्त । तीय बासर अग्गा बर ॥
घाव बांधि भर सुभर । ठेलि दुज्जन प्रवाह धर ॥
वार सोम सत्तमी । राज प्रथिराज सँपत्तौ ॥

भर रष्षिव अरि भंजि। मिलिय रावल रन रत्तो ॥
सामंत रष्षि भारथ्थ जिति। गवन रष्षि नन राज अंग ॥
बर मिलि समंद सलिता सुवर। अलन देषि एकह सुमग ॥
छं० ॥ १९८ ॥

रावल और पृथ्वीराज का दिल्ली को जाना।

जीति षान तत्तार। पारि हांसीपुर नीरं ॥
जीति समर भिरि समर। रुधिर रत लत्त सरीरं ॥
प्रथु सामत प्रथिराज। सुने सामंत सु कथ्थं ॥
अथ्थ कथ्थ अरि करिय। डोलि नन हूर सु रथ्थं ॥
छलि कै अमंत मुक्कै न बल। तजि हांसी सम्हो भिरिय ॥
बंधयौ चक्क अग्गिनि सु बर। बीर बीय संमुह फिरिय ॥
छं० ॥ १९९ ॥

दूहा ॥ ढिल्ली सह सामंत सथ। अमर सुक्रत ढिग थान ॥
समरसिंघ रावर सुभर। ग्रह लै गौ चहुआन ॥ छं० ॥ २०० ॥

रावल का दिल्ली में बीस दिन रहना।

भावभगति बहु विद्धि करि। हम लज्जा तुम भीर ॥
इक अरी कमधज्ज गिनि। इक सहाबदी मीर ॥ छं० ॥ २०१ ॥
बालुक्का सज्यौ समर। और विध्वंस्यौ जग्ग ॥
उभै बत्त पुब्बै बहुत। फेरि उन्हाई अग्गि ॥ छं० ॥ २०२ ॥
दिवस पंच मनुहारि करि। पहुँचायो चित्रंग ॥
बीस अश्व गज पंच सजि। दै पहुँचाए रंग ॥ छं० ॥ २०३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके द्वितीय हांसीपुर जुद्ध नाम बावनमों प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ५२ ॥

अथ पज्जून महुवा नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(तिरपनवां समय ।)

कविचन्द की स्त्री का पूछना कि महुवा युद्ध क्यों हुआ।

दूहा ॥ सुक सुकी सुक संभरिय । बालुक कुरंभ जुद्ध ॥
कोट महुव्वा साह दल । कहौ आनि किम रुद्ध ॥ छं० ॥ १ ॥

कविचन्द का उत्तर देना।

कवित्त ॥ गयौ साह गज्जनै । हारि कूरँभ षग झट्टिय ॥
सब लुट्टे गजबाजि । हेम मानिक नग बट्टिय ॥
अति उर लग्गिय दाह । हारि कूरँभ सम लद्धिय ॥
सह बालूक कमंध । उभय पज्जून सकिद्धिय ॥
अध्यैव नाम तत्तार बर । करी कूंच उत्त' गहर ॥
महुवा दिसान चंपै धरा । बीर पजून सु बंधि बर ॥ छं० ॥ २ ॥

खुरसान खां का महुवा पर आक्रमण करना।

दूहा ॥ पठयौ षान ततार बर । कोट महुवा थान ॥
षा निसुरति रुमों नदी । बर कीनों अगिवान ॥ छं० ॥ ३ ॥
कियो कूंच गोरी गहर । सहर महुव्वा थान ॥
षां षुरसान षुरेस षां । पाइल लष्ष प्रमान ॥ ॥छं० ॥ ४

शाही सेना का वर्णन।

कवित्त ॥ चढ्यौ साह सुरतान । षान षोयौ फिर ढूंढ़न ॥
सम कूरँभ चहुआन । धरा मोह अब मंडि रन ॥
लष्ष एक असवार । सहै बानह सम बारुन ॥
पाइक अयुत त्रिपंच । संग तत्तार सु धारन ॥

बलिराइ जेम दानव बलिय। तेम प्रकारन मझि मढ़ ॥
उडुगन कि चंद तत्तार दल। इम पेथ्थौ मोहव्व गढ़ ॥ छं० ॥ ५ ॥

निढ्ढुर का पृथ्वीराज के पास दूत भेजना।

दूहा ॥ रष्यन गढ़ यानौ नृपति। बहु दिन बीर पजून ॥
पठये दूत सु राज पै। निढ्ढुर मन साजून ॥ छं० ॥ ६ ॥
दूत कहिय दारुन षवर। फौज साह सुरतान ॥
पारस राका दल प्रबल। कोट महुवा थान ॥ छं० ॥ ७ ॥

राजा का दरबार में कहना कि महूवा की रक्षा के लिये किसे भेजा जावे।

सित्त सु मत्तह सूर बर। सकल सरन सुरतान ॥
को अगिवान सु किजियै। जुद्ध महुवा थान ॥ छं० ॥ ८ ॥
फौज दिष्षि चहुआन की। सबै सूर रनधीर ॥
मझि राज प्रथिराज पति। हाहुलिराय हमीर ॥ छं० ॥ ९ ॥

सब लोगों का पज्जून राय के लिये राय देना।

मेज बाज मीसान सजि। चढ़े सबल सामंत ॥
कूरंभ बिन को अंग में। अनी सध्य हैमंत ॥ छं० ॥ १० ॥
कवित्त ॥ पुच्छि राज प्रथिराज। समर रावर अधिकारिय ॥
को ढुंढारह राइ। धम्म मम्मह संभारिय ॥
मोसें बोलि नरिंद। 'सैन दै नेम मिलाइय ॥
ए कूरंभ नरिंद। साह सम राइ सु आहिय ॥
बोलयो आम जहों सुबर। चित्रंगी रावर सुभर ॥
इन सम न कोइ कूरंभ बर। बीर न को रविचक्र तर ॥छं०॥११॥

पज्जून राय की प्रशंसा।

इन जित्तौ जंगलू। चंदि कछी तत्तारिय ॥
बझ्झ पुच कै बार। जुद्ध अरियन सिर झारिय ॥

(१) कृ. को.-'सेन दै नेनांनि लाइय'।

इन मेहरा पै जाय। षेदि कढ्यौ चालुक्की ॥
इन गिरिनार पजाइ। लियौ डोंगा चालुक्की ॥
इन नंषि षोदि आबू सिषर। अजै बीर अजपाल चित ॥
केवरा बीर केवर इतिग। करै बीर आनंद चिति ॥ छं० ॥ १२ ॥
इन पंगानों बीर। बाद षोषंद पहारिय ॥
इन देवग्गिरि जुरिग। बंधि मोहिल जुध धारिय ॥
इन आलौरय जाय। दई भाटी महनंसिय ॥
बंधि जोध अजमेर। बैर भंज्यौ मलअंसिय ॥
प्रथिराज राज सनमान दिय। ढिल्लिय धर अविचल धरा ॥
संग्राम सूर कूरंम ढिग। नको बीर बीरंमरा ॥ छं० ॥ १३ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को जागीर और सिरोपाव देकर आज्ञा देना।

दूहा ॥ मानि राज प्रथिराज बर। समर मिलिग पज्जून ॥
बर हांसी हिंसार दिय। गढ़ दीनै दह दून ॥ छं० ॥ १४ ॥

कवित्त ॥ दीनै छत्र सुजीक। सत्त नीसान षोर बर ॥
रतन हेम हय गय। समूह आदर अनंत भर ॥
सुघर बीर अति धीर। कन्ह कल्हन बुलायौ ॥
अप्पि मझ्झ्या काज। बाजि बर बीर चढ़ायौ ॥
सुरतान साह गोरी चढ़िग। षां ततार अगिवान करि ॥
उतर्यौ सिंधु अरु विहथ विच। मीर सुसान गुमान धरि ॥
छं० ॥ १५ ॥

दूहा ॥ सगुन सरभर सुभ असुभ। जिझ्झा जबर सुनिंद ॥
चले साह कारन करन। नह पुच्छयौ नरिंद ॥ छं० ॥ १६ ॥

पज्जून की प्रतिज्ञा।

कवित्त ॥ सुनि ततार बर बीर। तोन बंध्यौ गोरीय भुकि ॥
दैवकाल उपज्यौ। छिति छचीम रहै लुकि ॥
अति आतुर पतिसाह। हम स हिंदु सामंता ॥
ज्यौ रोजा सौं भुकि। हस्थ छंडे जुधवंता ॥

कूरंभ सकल बरबंधि कैं। हौं बंधन गोरी करौं ॥
महुवा सु दिसा चंपी धरा। सुबर बीर कित्ती धरौं ॥ छं० ॥ १७ ॥

पज्जूनराय और शहाबुद्दीन का मुकाबिला होना।

दूहा ॥ परिग सहाव महुव्व धर। दिल्ली दक्षिन छंडि ॥
पहुंच्यौ तहां पजून पै। आनि सु भारथ मंडि ॥ छं० ॥ १८ ॥

युद्ध वर्णन।

विराज ॥ सुरत्तान गोरी, कढ़ी तेग जोरी। पजूनं सपुत्तं, मलैसिंह जुत्तं ॥ छं० ॥ १९ ॥
भिरै बीर बीरं, बजे सद्द तीरं। भजे कोटि धारी, बयन्नं करारी ॥ छं० ॥ २० ॥
करं कुंत हल्लैं, महाबीर बुल्लै। मलैसिंह हथ्थं, दिपै कोटि सथ्थं ॥ छं० ॥ २१ ॥
रुधिं धार धारं, बहैं ज्यों प्रनारं। स्वयं बीर बीरं, महामत्त तीरं ॥ छं० ॥ २२ ॥
जिनै मुष्ष पानी, झुलै षग्ग बानी। उठे उट्ठि धावै, मनं मत्त भावै॥ छं० ॥ २३ ॥
छुटै बीर वीरं, रुलंते सरीरं। कहै चंद बानी, उमाते प्रमानी ॥ छं० ॥ २४ ॥

पज्जून राय की वीरता।

दूहा ॥ भीर सु भंजत बीर बर। चक्यौ भान मध्यान ॥
जे कूरंभ करै सु झर। देव मनुष्य प्रमान ॥ छं० ॥ २५ ॥
धंनि सुक्रत पज्जून कौ। मलयसिंह बलिभद्र ॥
स्वामि सद्द बंधन हसहि। कढ्ढन भीर नरिंद ॥ छं० ॥ २६ ॥
त्रिभंगी ॥ कूरंभा बाले, सिंधुर टाले, असिमर झाले, झमझाले ॥
षानं मुलतानं, से षुरसानं, तन तुरकानं, भय भानं ॥
गजदंत सु कढ्ढैं दै पग चढ्ढैं, कंद उकढ्ढैं, भिल्लानं ॥

*नरजे बल कारी, सुर बर सारी, उत्तम चारी, बल धारी ॥
छं० ॥ २७ ॥

यवन सेना का भाग उठना ।

कवित्त ॥ भग्गौ दल पुरसांन । षान पीरोज उपारे ॥
षूब षान आकूब । षूब सिर तेग प्रहारे ॥
मारूराव नरिंद । पारि पष्षर परिहारी ॥
दुवै अंग बलिभद्र । घाव दुअ अंग विचारी ॥
षट वार चढ़ायौ चित्त में । जै बज्जा घन बज्जया ॥
प्रथिराज भाग जं जं जियै । कूरंभराव सु रज्जया ॥ छं० ॥ २८ ॥

पज्जून राय की प्रशंसा ।

प्रथीराज साहन समूह । दल मिलिग मुहल्लै ॥
तिनह दलह रावत्त । डरै डगमगैं न डुल्लै ॥
संभरि राव नरेस । फिरे पिछवाह न दिष्यौ ॥
मलह बंस नल बर । नरेस दस दिसि दल रष्यौ ॥
गहि सेल सकुंजर सिर हयौ । भर भंजन जग डग्ग सुअ ॥
पज्जून महुव्वै जीति रन । जैत पत्र कूरंभ तुअ ॥ छं० ॥ २९ ॥

पज्जून राय का दिल्ली आना और शाह का गजनी को जाना ।

दूहा ॥ जीति महुव्वा लीय बर । ढिल्ली आनि सु पथ्थ ॥
जं जं कित्ति कला वढ़ी । मलै सिंह जस कथ्थ ॥ छं० ॥ ३० ॥
गयौ साह फिरि गज्जने । बहु दल रिन में कढ़ि ॥
उभै हारि असि पति लही । उर अति रोस अचढ़ि ॥
छं० ॥ ३१ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पजून महुवा जुद्ध नाम त्रेपनों प्रस्तावः संपूर्णम् ॥ ५३ ॥

* इस छन्द का बहुत कुछ अंश लोप हो गया मालूम देता है पाठ में भी बहुत भेद पड़ता है ।

अथ पजून पातसाह जुद्ध प्रस्ताव लिष्यते।

(चौवनवां समय।)

और सामंतों को महुवा में छोड़ कर पज्जून का नागौर जाना।

कवित्त ॥ रष्षे कन्ह नरिंद। सलष रष्षे बड़ गुज्जर ॥
उदिग बाह पम्मार। साह साई भुज पंजर ॥
रष्ष निड्डुर वीर। वीर रष्षे सु पवारं ॥
किल्हन हि तूंअर। उतंग किल्हन सिर सारं ॥
पज्जून महीवे जीति बर। पुत्त रष्षि बलिभद्र बर ॥
तिय बंध मलैसी पल्हसी। सुबर चित्त चिंता सुभर ॥ छं० ॥ १ ॥
दूहा ॥ ए सब रष्षि पजून संग। दै सांई सिर भार ॥
बर नागौर सु रष्षिया। झिल्लन सार प्रहार ॥ छं० ॥ २ ॥

ममहीन शाह का गजनी को जाना और पजून राय को परास्त करने की चिंता करना।

कवित्त ॥ गयौ साह गज्जनी। तज्जि मौहव महत्त सम ॥
उभै हारि सिर धारि। छंडि हय गय प्राक्रम भ्रम ॥
बढ़िय दुःष घटि सुष्ष। संझ छायाह प्रात फुनि ॥
गयौ साह पन एम। पाग बंधौं कूरंभ हनि ॥
पठ्ठये दूत नागौर दिसि। संभरि चाषेडक्क स पुह ॥
श्रीफल सु आनि आसेर गढ़। दिसि जुग्गिनिपुर गंम तह ॥
छं० ॥ ३ ॥

धम्मायन का गजनी को समाचार देना।

दूहा ॥ चल्यौ राज दिल्ली दिसा। सुर धर सुभर सु रष्षि ॥
धम्माइन काइथ कुटिल। कग्गद गोरी लिष्षि ॥ छं० ॥ ४ ॥

गोरी पै गय दूत बर। षान 'साहि सुरतान ॥
बर कूरंभ चरित्त दिषि। धर नागौर प्रमान ॥ छं० ॥ ५ ॥

शहाबुद्दीन का मंत्री से पज्जून राय के पास दूत भेजने की आज्ञा देना। इधर सेना तय्यार करना।

कवित्त ॥ कहै साहि साहाब। अहो ततारषान सुनि ॥
धर नागौर प्रमान। थान पज्जून रष्षि फुनि ॥
संभरिवै अद्धौ दिसान। आसेर सु छिंडिय ॥
व्याह विनोद सुरंग। नृपति देवास समंडिय ॥
फुरमान लिषौ कूरंभ तन। गहिय मान फिरि कढ्ढिहौं ॥
कै पाइ आइ पतिसाह गहि। कै बंधिह वपु षंडिहौं ॥ छं० ॥ ६ ॥
पद्धरी ॥ लष तीन मीर अवसान सज्जि। चहुआन धरा कामना किज्जि ॥
दस सहस करी मत्त प्रमान। आषाढ़ सु गज्यौ मेघ जानि ॥
छं० ॥ ७ ॥
पाइक्क सहस चौसट्ठि चिअच्छ। दह घाव इक्क टारंत स्वच्छ ॥
सावद्द वेध साइक्क मग्ग। दिष्षेव साइ बंधंत षग्ग ॥ छं० ॥ ८ ॥
साइक्क साइ बर हने तीर। असि वरछु पंच कटि बाज बीर ॥
सिंगिनिय उभै बर धार दीस। गुन चढ़त तेन बर टंक बीस ॥
छं० ॥ ९ ॥
कूरंभ दीसा फुरमान लष्षि। सिर ताव भाव बहु बैन अष्षि ॥
फुरमान लिष्षि सुरतान बीर। मुक्कले दूत नागौर तीर ॥ छं० ॥ १० ॥
पज्जून तेगबर छंडि हथ्थ। कै मंडि जुद्ध सुरतान सथ्थ ॥
छं० ॥ ११ ॥

यवनदूत का नागौर पहुंचना।

दूहा ॥ गयौ दूत नागौर धर। जहं कूरंभ बर बीर ॥
सम सहाब संमर करन। आयो जोजन तीर ॥ छं० ॥ १२ ॥

पज्जूनराय का हँसकर निधड़क उत्तर देना।

(१) ए.-सहित।

कवित्त ॥ हँसि पज्जून नरिंद । कहै सुरतान साह बर ॥
जीव डरै लज्जवै । सो न कूरंभ होहि नर ॥
सो न होहि रघुबंस । तेग छंडैं मरनं डर ॥
हम छंडैं जब तेग । सूर उग्गै न दीह पर ॥
चलै न पवन गंगा थकै । गवरि तजै बर ईस बर ॥
पज्जून नाम कूरंभ मो । साहि जान चिंता न कर ॥ छं० ॥ १३ ॥
कहैं राज पज्जून । बीर कूरम्भ चेत बर ॥
हम सलाह सुरतान । हम सु रष्षें ढिल्लिय धर ॥
हम रवि मंडल भेदि । जाम लगि सत्त न छंडैं ॥
षंड षंड धर ढारि । सीस हर हार सु मंडै ॥
सुरतान सुनिव चिंता न करि । मंडि जौति नागौर दिसि ॥
कूरंभ अचल लज्जा सुभर । मेर जेम करतार कसि ॥ छं० ॥ १४ ॥

दूत का गजनी जाकर शाह से पज्जून राय का संदेसा कहना ।

दूहा ॥ गयौ दूत गज्जन पुरह । दिय दुवाह सुरतान ॥
भग्गि अवर चक्रित सुभर । कूरँभ तजै न मान ॥ १५ ॥

शहाबुद्दीन का कुपित होना ।

कवित्त ॥ तमकि साहि सुरतान । षान तत्तार बुलायौ ॥
हम सुषान अंगली । जुड चहुआन चलायौ ॥
षीषंदा बर बाद । मारि गम्मार सु जित्तौ ॥
डूंगोरी साहाबदीन । लोकह परि लित्तौ ॥
पज्जून सुनवि सामंत सम । आय पाय सुरतान परि ॥
कै अप्पि कोट नागौर तजि । कै सु साहि सनमुष्ष लरि ॥
छं० ॥ १६ ।

इधर नागौर में किलेबन्दी होना ।

दूहा ॥ पुच्छि कन्ह बलिभद्र बर । मलैसिंह दुअ बंध ॥
चलहिं साह संमुह लरन । लज्जह काँवरि कंध ॥ छं० ॥ १७ ॥
बर पज्जून बरज्जिया । नृपतिल ढिल्ली ठाह ॥

को रष्षै ढुंढा रहा। उभै पूत सँग लाइ ॥ छं० ॥ १८ ॥
तात सु अग्या मानि बर। साजि कोट नागौर ॥
सकल सूर सामंत मनि। मरन सरन किय और ॥ छं० ॥ १९ ॥

पज्जून राय की वीर व्याख्या।

कवित्त ॥ सकल सूर सों कही। बीर आरंभ उचारिय ॥
न रहै तन धन तरुनि। किरनि बेताइन चारिय ॥
वापी कूप इषम्म। सरित सर वर गिरि जैहैं ॥
मठ मंडप बर कोट। कोटि पाषंड सचै हैं ॥
अप किति किति जैहै न जग। रहै मग्ग पिची सुवर ॥
पज्जून इह नागौर गहि। साधन सार समग्ग कर ॥ छं० ॥ २० ॥

यवन सेना का नागौर गढ़ घेर कर नाल चलाना।

पद्धरी ॥ सुरतान घेरि नागौर गढ्ढ। मानो कि मद्धि प्रकार मढ्ढ ॥
भर बाज करिय पावस पमान। मानो नषित्र मधि एम जान॥
छं० ॥ २१ ॥
सावाति भांति चिहुं दिसा लग्गि। अंजनी सुतन दै लंक अग्गि ॥
गोला अवाज दस दिसा घोरि। बंधनह पाज कपि करिय सोर ॥
छं० ॥ २२ ॥
दस दिसा षान गढ़ बंटि दीन। अप अप्प ठौर चौकीस कीन ॥
चय लष्ष मीर नाषित प्रमान। घेऱ्यौ सु मद्धि पज्जून भान ॥
छं० ॥ २३ ॥

राजपूत सेना का घबड़ाना और पज्जूनराय का उसे धैर्य्य देना।

कवित्त ॥ घेरि साह नागौर। पंति मंडी सु पंति पर ॥
दैव काल सामंत। सत्त छूटंत बीर बर ॥
पथ गोपी लुट्टई। बहित बारह सत छुट्यौ ॥
दुर्जोधन बल बंधि। सिंधु बंधी जल लुट्यौ ॥

आनयौ सत्त सुरतान बर। सकल सूर सामंत डर ॥
जंपै सु चंद कूरंभ जस। प्रथीराज जित्तौ सु भर ॥ छं० ॥ २४ ॥

पज्जून ह बलिभद्र। बोलि कूरंभ करारो ॥
सत छुट्यौ नहि साह। सत्त मो सत्तह सारो ॥
उदिग बांह पग्गार। सुनह सामंत सबाहौ ॥
मझ फौज गोरी। नरिंद पंती गज गाहौ ॥
पंचीस पंच नह अग्गरौ। फेरि काल फुनि फुनि परौ ॥
जं करो सब्ब सामंत मिलि। बोल रहै जुग उब्बरौ ॥ छं० ॥ २५ ॥

पज्जून राय का यवन सेना पर रात को धावा मारना।

तेग तमकि पक्करिग। सकल सामंत सूर बर ॥
पंच बंध कूरंभ। कोटि रष्षे पहार भर ॥
उघ्घारिय गढ़ पौरि। अद्ध निसि बीर सु तत्ते ॥
रत्तिवाह करि चाह। कूर करि सूर सपत्त ॥
राजाधिराज सामंत सर। तमकि तमकि तेगं कसी ॥
ससिपाल जोति ज्यों लज्ज फिरि। कूरंभ आनन में बसी ॥
छं० ॥ २६ ॥

मुसल्मान सेना के पहरुओं का शोर मचाना और सेना का सचेत होना।

विराज ॥ बसी मुष्ष लज्जौ, सिला धूर रज्जौ। दिसा उत्तरायं, सु बीरं पठायं ॥
छं० ॥ २७ ॥

कियं कूच मंचं, हलालं अनंतं। लगे जोइ चौकी, मनो नारि सौकी॥
छं० ॥ २८ ॥

दुअं इक्क थोयं, भजे पुठ्ठि दीयं। चढ़े षान षानं, समंझी गुरानं ॥
छं० ॥ २९ ॥

सबै सेन धायौ, धषं जैति मायौ। मजूनं सपूतं, मिलै सिंह जूतं ॥
छं० ॥ ३० ॥

नचे कोट पाटं, हुची ओट थाटं। कटे कोट डेरा, कियं साह घेरा॥
छं० ॥ ३१ ॥
मसंदं हजारं, ग्रहे तेग सारं। सुरत्तान पायौ, सनंमुष्ष धायौ॥
छं० ॥ ३२ ॥
सबै सूर सज्जी, मंडे आनि पज्जी। चुके षग्ग राजी, बलीभद्र ताजी॥
छं० ॥ ३३ ॥
भुजं ओट कोटं, पहारंति ओटं। मुषं सुष्ष आई, सहस्सा दिषाई॥
छं० ॥ ३४ ॥
जको जोग माया, हरी रूप पाया। तुटै अंग अंगं, विभंगं चिभंगं॥
छं० ॥ ३५ ॥
छनंकेति तीरं, परं वज्र श्रीरं। पयं पल्ह धायौ, सुरत्तान आयौ॥
छं० ॥ ३६ ॥
मिलै सिंह साहं, विबंधो विवाहं। उड़ै चाल टोपं, ति कूरंभ कोपं॥
छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ इक ओर बीरम्म बर। कियौ गहम्मह सूर॥
परि सुरतानह उप्परै। अति आतुर गति क्रूर॥ छं० ॥ ३८ ॥

हिन्दू और मुसलमान दोनों सेनाओं का युद्ध।

षा षुरमान ततार तब। सुनिय कूह दल सथ्थ॥
सहस बीस गष्षर लियें। आयो बीर समथ्थ॥ छं० ॥ ३९ ॥
नंषि पाट पज्जून रिन। पलै गष्षर कोट॥
सहस बीस गष्षर मसँद। लग्गि करी जम जोट॥ छं० ॥ ४० ॥

दोनों में तलवार का युद्ध होना।

कवित्त ॥ सहस बीस गष्षर गुराय। तत्तार षान रहि॥
नव दूनं कटि बाज। बीर बलिभद्र हथ्थ बहि॥
मुररि मुररि मारूफ। बान कम्मानति [1]भग्गी॥
मुक्कि बान कम्मान। तेग कड्ढी सालग्गी॥

(१) कृ. को.-भग्गी।

बजि घाइ निघाइ अघाय घट । बर बसंत जिम दिष्षि भर ॥
फुल्लै सु जानि केहू सुरंग । यौ दीसै बर बीर नर ॥ छं० ॥ ४१ ॥

दूहा ॥ लरत पिष्षि बलिभद्र कौं । हरषि पजून सुचित्त ॥
को रष्षै कविचंद इह । इम समान तुम मित्त ॥ छं० ॥ ४२ ॥
परे दौरि हिंदू सुभर । उसर साह साहाब ॥
औसरि लगि आसुर सयन । मद्यति बेर किताब ॥ छं० ॥ ४३ ॥

पज्जून राय के पुत्रों का पराक्रम ।

भुजंगी ॥ पर्‍यो षान अल्लाल सें तीन जामं । भई बारहूं फौज सौ एक ठामं ॥
लरंतं सु बीरं प्रमानं प्रमानं । बजे बंस नंसं करष्षे कमानं ॥
छं० ॥ ४४ ॥

मिले सिंह धायौ लषे बीर धीरं । गही बग्ग बलिभद्र आनुज्ज बीरं ॥
दुअं बीर तेगं छुड़ा छोड़ बाहै । मनों चचरी चक्क डंकेस गाहै ॥
छं० ॥ ४५ ॥

नियं भ्रम्म रष्षे सदा व्रत्त ग्रेहं । हडूडूह षेलंत बालक्क जेहं ॥
छुरी धार धारं मुरै हथ्थ नाहीं । गहीदंत बग्गं कटारी समाहीं ॥
छं० ॥ ४६ ॥

भरे षग्ग षग्गं चिनंगीत उड्डैं । मनों भिंगनं भद्दवं रेनि चड्डै ॥
इलाहं इलाहं कहैं षान जादे । इसे बीर बीरं महो माह वादे ॥
छं० ॥ ४७ ॥

करै मुष्ष पूतं पजूनं दुहाई । प्रलै काल मानों उभै सेस धाई ॥
दुअं बाह बीरं बहै बीर भग्गे । इसे छूर क्रूरंभ के हथ्थ लग्गे ॥
छं० ॥ ४८ ॥

कहै मेछ रुष्षं सरुष्षं प्रमानं । किधौं मानवं लोह लै देव जानं ॥
द्रुमं डाल डालं दुवं संकरक्के । लग्यौ अंस बंसं सु बंसं घरक्के ॥
छं० ॥ ४९ ॥

बहै बान कम्मान दीसै न भानं । भ्रमै तथ्थ गिद्धं सु पावै न जानं ॥
मलै सिंह हथ्थं पर्‍यौ बथ्थ गोरी । मनों फूल माला लई हथ्थ जोरी ॥
छं० ॥ ५० ॥

लगे लोह अंगं परे अंग षानं। पऱ्यौ षान षुरसान तह षेत पानं॥
॥ छं० ॥ ५१ ॥

दूहा ॥ बाज राज मंध्यौ सु भर। मलै सिंह कूरंभ ॥
दस हथ्थी बढ़ि षग्ग सों। तम तरंग ब्रंम ॥ छं० ॥ ५२ ॥
इनि जित्तें भग्गौ सु अरि। बर बंध्यौ सुरतान ॥
दुअ सु लष्ष को अंग मै। धनि कूरंभ प्रमान ॥ छं० ॥ ५३ ॥

पज्जून राय का शहाबुद्दीन को पकड़ लेना और किले में चला जाना।

कवित्त ॥ षूब षान मारुफ। षूब दल मलिय मलैसी ॥
बंध्यौ गोरी साहि। भांति करिकें जु प्रलै सी ॥
सब लज्जै सामंत। सीस संमुह न उठावैं ॥
सुबर भाग प्रथिराज। बीर कूरम्भ सु गावैं ॥
लै गयौ साह चहुआन पैं। जस बज्जाग्रह बज्जया ॥
कूरंभ वंस सुत मलैसी। बंधे साह सुरज्जिया ॥ छं० ॥ ५४ ॥

यवन सेना का भागना।

सुन्यौ षान तत्तार। साहि गहि कोट पयट्ठौ ॥
सुरतानह सब सेन। संकि आतुर वर नट्ठौ ॥
छंडि करी सें सत्त। बुगर आतुर अध हैं बर ॥
हसम हेम डेरा। जरीन बरभर दर कज्जर ॥
हुअ प्रात आइ पज्जून भर। करि हसम्म हैवर गिरद ॥
कविचंद किक्ति उज्जल उदित। राका निसि चंदह सरद ॥
छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज का दंड लेकर शहाबुद्दीन को पुनः छोड़ देना।

छंडि राज सुरतान। सुजस सिर कूरँभ धारिय ॥
सहस बाज दस पंच। डंड गैवर सुकारिय ॥
कहै राज सुनि साह। तुम सु नरनाह कहावहु ॥

[1]वार वार प्रौढा प्रमान । दंड करि घर जावहु ॥
कोरान करीम करम्म तजि । हम सु पैज पीरान किय ॥
कूरंभ समह मुर षेत षसि । षोय लज्ज षुरसान किय ॥छं०॥५६॥

दूहा ॥ दंड मंडि सुरतान सिर । छंडि दयौ चहुआन ॥
औ सु भ्रम हिंदवान कुल । करिग चंद बष्यान ॥ छं० ॥ ५७ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पज्जून कछावाहा
पातिसाह ग्रहन नाम चौअनौं प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५४ ॥

(१) इस पंक्ति में एक मात्रा अधिक होती है और "दंड" शब्द का प्रयोग खटकता है, परंतु अर्थयुक्त है और किसी भी प्रति में पाठभेद नहीं है ।

अथ सामंत पंग जुद्ध नाम प्रस्ताव लिष्यते ।

(पचपनवां समय ।)

पृथ्वीराज का प्रताप वर्णन ।

कवित्त ॥ राइ रूप चहुआन । मान लग्गौ सु भूमि पल ॥
दान मान उग्रहै । बीर सेवा सेवा छल ॥
बीय भंति उग्रहै न । कोइ न मंडै रन अंगन ॥
सबर सेन सुरतान । बान बंधन षल षंडन ॥
सा धम्म राइ धर धरन तन । देव सेव गंध्रब्ब बल ॥
सामंत सूर सेवहि दरह । मंडे आस समुद्र दल ॥ छं० ॥ १ ॥

दूहा ॥ इक्क द्रव्य महि हरष सुष । दुष भज्जै दल द्रब्ब ॥
अरि सेवें आसा अवनि । कोइ न मंडै ग्रब्ब ॥ छं० ॥ २ ॥

जयचन्द का प्रताप वर्णन ।

कवित्त ॥ कमधज्जह जैचंद । दंद दारुन दल दुत्तर ॥
पच्छिम दच्छिन पुब्ब । कोन मंडै दल उत्तर ॥
ढिल्लिय चिषय कोट । ओट अड्डे दल पंगं ॥
सेव दंड अन मंड । षग्ग मंडन बल अंगं ॥
बहु भूमि द्रव्य घर उग्रहै । इम तप्पै रट्ठौर पहु ॥
सुष इंद्र च्यंद छत्तीस दर । मुकट बंधि बिन मान सहु ॥
छं० ॥ ३ ॥

अति उतंग तन बल। विभंग जग मद्धि सूर जुध ॥
अहुत वाह जम दाह। काल संकलप काल क्रुध ॥
कोप पंग को सहै। फट्टि दल आनिक साइर ॥
बल बलिष्ट जुनु इष्ट। दिष्ट कंपहि बल काइर ॥
निम्मलो सूर तन सूर जिम। समर सज्जि गज्जै सुबर ॥
आवाज कंन पंगह सुनौ। ज्ललक्कि कंपि दिल्ली सहर ॥ छं० ॥ ४ ॥

दूहा ॥ दिट्टि सु न्रप दिष्षे सकल। दिक्षावत बलि सेन ॥
मनो सकल अग सुंदरी। जग्गावत पिय मेन ॥ छं० ॥ ५ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना।

कवित्त ॥ इक सबल सित सूर। इक बल सहस प्रमानं ॥
इक लष्ष साधंत। दंति भंजै गज पानं ॥
इक विरुध जम करहि। इक जम जोर भयंकर ॥
इक जपहि दिन अंत। करन कलिकाल षयंकर ॥
सुभ सेव भ्रम्म स्वामित्त मन। तन छित्तन मंडै वियौ ॥
तिन रष्षि घरह प्रथिराज न्रप। अप्पन आषेटक कियौ ॥
छं० ॥ ६ ॥

राजा जयचन्द की बड़वाग्नि स उपमा वर्णन।

अगस्ति रूप पहु पंग। समुद सोषन धर ढिल्लिय ॥
बयर नयर प्रज्जरहि। धूम डंबर नभ हल्लिय ॥
सजि चतुरंगिय पंग। आनि पावस अधिकारिय ॥
रज्जि रज्ज चष घुम्म। सेन संभरि उच्चारिय ॥
अरि त्रिय नयन बरिषा जुअल। मोर सोर डंबर कविय ॥
प्राची प्रमान संमुह अनिय। मुष पंगुर विज्जनु मनिय ॥ छं० ॥ ७ ॥
अढर ढुरहि गढ़ ररहि। मेर घर भर सुपरहि भर ॥
कसक्कि कमठ पर पिट्ठ। सेस सल सलहि छाड़ि धर ॥
जल साइर उच्छरहि। नैर प्रजरहि अरहि घर ॥
जल थल होत समान। बंक छारंत बंक छल ॥

हिंदवान राइ पहुपंग वर । चंपि लगे अरि भान ग्रह ॥
छुट्टै न दान कर दान बिन । षग्ग पंति मंडौ सु रह ॥ छं० ॥ ८ ॥
दूहा ॥ दान छूर छुट्टै न महि । विषम राइ कमधज्ज ॥
वह जठरागिन राग बिनु । इह जठरागि न सज्ज ॥ छं० ॥ ६ ॥
अभय भयंकर अरि भवन । भ्रमत भूमि षग धार ॥
को कमधज्जह अंग मैं । सो न बियौ संसार छं ॥ १० ॥

जयचन्द का राजसी आतंक कथन ।

कवित्त ॥ को अंगमै सु जम्म । क्रम्म को करै सँघारन ॥
को मुर्वी कर धरै । मूर महि कोन उपारन ॥
को दरिया दुस्तरै । नभ्भ ढंको रवि चाहै ॥
को सुन्यह संग्रहै । कौन उत्तर दिसि गाहै ॥
को करै पंग सो जंग जुरि । दनु देवत्तरु नाग नर ॥
कलिकाल कलन कंकह कहर । उदधि आनि जलटि गहर ॥
छं० ॥ ११ ॥
बेली भुजंगी ॥ चलि पंग सेन अपारयं । अनभंग छत्रिय धारयं ॥
चहुआन बलनह बंधयं । द्रगपाल क्रम क्रम संधयं ॥ छं० १२ ॥
भव भवन रवनति छंडयं । डर डरपि मुंडति मंडयं ॥
दुअ अट्ठ दिसि बसि बिच्छुरै । जल मीन भंगति उच्छरै ॥
छं० ॥ १३ ॥
भुअ कंप लंक ससंकयं । धर डुलत मानहु चक्कयं ॥
पिय पतिय मुक्कति लुप्पती । कहीं दुतिन दिष्षिय दंपती ॥
छं० ॥ १४ ॥
पहुपंग घूमिय ना रहै । सुरलोक संकति आरुहै ॥ छं० ॥ १५ ॥
दूहा ॥ सुरगन सरनी तल कुदल । चलि कहुँ छूं कंद ॥
घूनी पंग नरिंद की । को रष्पै कविचंद ॥ छं० ॥ १६ ॥
कवित्त ॥ अग्गें सिंघ सु सिंघ । सिंघ पछ्छ्यो झलालह ॥
पंग अमृत फल चषै । अमृत लग्गी जु तमालह ॥
आगेई बर अप्प । नाग नंदन विधा पढ़ि ॥
आगेई बर करन । भान सादै चिंता चढ़ि ॥

को करै पंग सो जंग जुरि। सु बिधि काल दिष्षै नही ॥
रिनमान काज रजपूत गति। संभरि वै संभरि रही ॥ छं० ॥ १७ ॥

जयचन्द के सोमत्तक नाम मंत्री का वर्णन।

पंग पुच्छि मंत्रीस। मंत्र पुच्छै जु मंत्र वर ॥
सोमंतक परधान। मंत विग्गन्यौ मंड धुर ॥
धवल सुमंत्री मंत्र। तत्त आरिष्य प्रमानिय ॥
तारा क्रत संघरिय। चित्त रावर उनमानिय ॥
विधि मंत्र जंच आरत्ति करि। साम दान भेदह सकल ॥
जानो सु बीर सो उच्चरहु। काम क्रोध साधन प्रबल ॥
छं० ॥ १८ ॥

सबद बाद से वरें। इष्ट मंत्री न तत्त गुर ॥
बाल ब्रह्म जुवती प्रमान। जानहि स भ्रम्म नर ॥
स्वामि ध्रम्म उच्चरैं। कित्ति जुग्गीरह संधे ॥
उर अधीन सम प्रान। जानि क्रत आनन बंधे
सह नित्त जीव दिष्षै सु पुनि। मुनि मयंक द्रिगपाल हर ॥
कालंक बिनै को तत्त वर। क्रम्म बिना लग्गै सु नर ॥ छं० ॥ १९ ॥

दिल्ली की दशा।

संभरि वै तजि गयौ। छंडि ढिल्ली ढिल्ली धर ॥
जुद्ध करन न्रप पंग। कोइ न दिष्यौ सु रुस्स नर ॥
ग्राम धाम तजि बीर। बहुरि पत्तौ कनवज्जं ॥
तारा क्रत चिचंग। दियो संदेस सु कज्जं ॥
करि करिनि कंक चिचंग बस। करौ जग्य आरंभ बर ॥
मंत्री सुमंत्र राजन बली। ते हक्कारे मंत धर ॥ छं० ॥ २० ॥

जयचन्द का यज्ञ के आरम्भ और पृथ्वीराज को अपमानित करने के लिये मंत्री से सलाह करना।

पंग पुच्छि मंत्री सुमंत। पुच्छै सुमंत्र बर ॥
पहु सुमंत विग्गन्यौ। जग्य मंड्यो जु पुब्ब धर ॥

सोइ मंत्री स प्रमान। जग्य धुर वधं सु बंधे ॥
स्वामि ध्रम्म संग्रहै। कित्ति भग्गी रह संधे ॥
सह जीव अंत दिष्षै सहज। मुनि मयंक द्रिग पाल बर ॥
कालंक दग्ग लग्गै कुलह। सो मिट्टावहि मंच नर ॥ छं० ॥ २१ ॥

अति उज्जल न्रप भरथ। भरथ जिहि वंस नाम नर ॥
तिन कलंक लग्गयौ। पुत्र हत्तयौ अप्प कर ॥
चंद दोष लग्गयौ। कियौ गुर बाम सहिल्लौ ॥
बर कलंक लग्गयौ। राज सुत पंड बुहिल्लौ ॥
चित्रंग राव रावर समर। विनक बंक छिप्यौ निडर ॥
आहुट्ठ राइ आहुट्ठ पति। सबर बीर साधन सबर ॥ छं० ॥ २२ ॥

सुम सु मंच परमान। पंग उच्चरिय राज बर ॥
चाहुआन उद्धरन। जग्य उद्धरन मंत धर ॥
चित्त अग्गि भय अग्गि। जग्गि जग्यौ छल राजं ॥
तारा क्रत साध्रम्म। पंग कीजै ध्रम्म साजं ॥
जा ध्रम्म जोग रष्यौ नहरि। कौन ध्रम्म ध्रम्मन गरुअ ॥
मुक्कलौ मंच जे मंच उर। सुबर बीर बोलन हरुअ ॥ छं० ॥ २३ ॥

मंत्री का सलाह देना कि रावल समरसी जी से सन्धि करलेने में सब काम ठीक होंगे।

तब सुमंच मंत्रिय प्रधान। उच्चरिय राज बर ॥
चाहुआन बंधन सुमत्त। मंडनह जग्य धर ॥
नर उत्तिम चित्रंग। राज उत्तिम चित्रंगी ॥
कर अदग्ग दग्गन। जगत्त रष्षन गज अंगी ॥
कालंक अछिय कट्टन सु छिप्र। पर सु चार तिन तिन करय ॥
चित्रंग राव रावर समर। मिलि सु जग्य फिरि दिन धरय ॥
छं० ॥ २४ ॥

कुंडलिया ॥ फुनि न स्यंद पहु पंग बर। उभयति बर बर जोग ॥
समर मिले कामधज्ज कौं। जग्य समप्पैं लोग ॥
जग्य समप्पैं लोग। उभ्भ सारंग सुनाई ॥

एकल्ले सारंग । तिमिर अप कहूं न आई ॥
वियौ तिमिर भंजियै । अप्प पुच्छि आइ तमं घन ॥
अप्प तिमिर भंजियै । प्रलै हाइय सु अप्प फुनि ॥ छं० ॥ २५ ॥

सोमंतक का चितौर को जाना ।

कवित्त ॥ पंग अग्य आरंभ । मंत प्रारंभ समर दिसि ॥
सोमंतक परधान । पंग हक्कारि बंधि असि ॥
सत तुरंग गति उड्ड । पंग गजराज विशालं ॥
मुत्ति अवेध सुरंग । एक दस लालति मालं ॥
पंजाब पंच पंचों सु पथ । अद्ध देस अध बंटियै ॥
चाहुआन बंधि जग बंधिकर । अग्य अरंभ सु ठट्टियै ॥
छं० ॥ २६ ॥

जयचन्द का मंत्री को समझाना ।

आहुट्ठां मझझांम । समर साहस चित्रंगी ॥
निविड बंध बंधे । अबंध सा भ्रम्म सु अंगी ॥
चिंतानी कलपत्ति । रूक रत मोह अरत्ता ॥
सिद्धानी मोगर सुभेस । सम सद्द सु गत्ता ॥
चहुआन चंपि चवदिसि करिय । अग्य बेलि जिमि उद्धरै ॥
चित्रंग राव रावर समर । मिलि जीवन जिहि उब्बरै ॥
छं० ॥ २७ ॥

पद्धरी ॥ मुक्कलै पंग वर मंच बीर । आनै सु गत्ति राजन सरीर ॥
मन पंग होइ सो कहें बत्त । बिन बुलत बोल बोलें सुतत्त ॥
छं० ॥ २८ ॥
आनै सु चित्त नर नरनि वत्त । अनि रत्त रत ते लखहिं गत्त ॥
कीटी सु श्रंग ज्यों मिलहि स्याम । डर ग्रहै रहैं आमित्त जाम ॥
छं० ॥ २९ ॥
तिन मध्य एक सारंग सूर । सह मत्त विद्व आगत सपूर ॥
पाषंड दंड रचै न अंग । भारथ्थ कथ्थ भीषम प्रसंग ॥
छं० ॥ ३० ॥

खगुराज पैज जिन करिय देव। मंगी सु म्रत्यु जिन म्रत्य सेव ॥
संतन सुमंति स्वामित्त सत्त। रष्षै जु राज राजन सु पत्ति ॥
छं० ॥ ३१ ॥

चलौ सुजार चित्रंग थान। चित्रंग राज मिलि दीन मान ॥
छं० ॥ ३२ ॥

रावल समरसी जी का सोमंत से मिलना और उसका अपना अभिप्राय कहना।

दूहा ॥ समर सपति पति समर की। समर सभेद सपंग ॥
जग्य बेद जौ उद्धरौ। भूमि भेद ग्रह अंग ॥ छं० ॥ ३३ ॥

पूव कहौ चलतहिं न्त्रपति। सुबर बीर कमधज्ज ॥
दीन भये दीनत भगै। सुबर बीर बर कज्ज ॥ छं० ॥ ३४ ॥

दीन भयें अरि अंग बर। छल छुट्टियै न छच ॥
मय मत्तह सो हत्त है। वै पुज्जै गुन मत्ति ॥ छं० ॥ ३५ ॥

रावल जी का सोमंत को धिक्कार करके उत्तर देना।

नाम सु मंत्री तिन धर्‍यौ। रे समंत परधान ॥
दीनत भयें भयौ न जग। जग्यबेर बलिदान ॥ छं० ॥ ३६ ॥

अरिल्ल ॥ मिलिव समर उच्चरि चौहानं। जग्य करन पहुपंग निधानं ॥
त्रेता द्वापर कर्‍यौ जु देव। कलिजुग पंग जग्य करि सेव ॥
छं० ॥ ३७ ॥

कवित्त ॥ समर रूप सुनि समर। पंग आरंभ जग्य धुर ॥
सत्य पहुर बलिराइ। जग्य पहुरै सु जग्य बर ॥
बियौ पहुर रघुबीर। जग्य आरंभन जग्यौ ॥
तृतीय पहुर जग्गयौ। ध्रम्म सुत ध्रम्म न लग्यौ ॥
कलि पहुर जग्गि जग्यन बलिय। सुबर बीर कमधज्ज धुच ॥
संसार सब्ब निंद्रा छिपिग। जग्गि जग्य विजपाल सुच ॥
छं० ॥ ३८ ॥

स्वर्ग इच्छ बलिराइ। जग्य किय गयौ पयातल ॥
चंद्र जग्य मिट्टन। कलंक [1]का कुट्ठ अंग गल ॥
राज इच्छ राजह्व। राज रा षंड षंड बन ॥
नघुष राजह्व जग्य। कूर कर कुट्ठ कूप जन ॥
कलिजुग्गराज राजसु करौ। कह्यौ दान षोडस करन ॥
सित सिष्प कोम बर वीर हर। हरि विचार लग्गौ चरन ॥
छं० ॥ ३९ ॥

अश्वमेद राजह्व। लंब गौषंभ मेद बर ॥
अगनि होच बर मेद। मध्य जग मेध अप्प बर ॥
कनिट्ठ बंध बड़बंध। चौय आचरन ग्रेह बर ॥
ब्रत संन्यास आचरन। पंच चवकलि न होहि धर ॥
कलि दान जग्य षोड़स करन। बाजपेय बर उद्धरै ॥
नन होइ कोइ इन जग्य वर। हँसे लोइ बहु बिग्गरै ॥छं०॥४०॥

पद्धरी ॥ उच्चऱ्यौ मंच चिचंग राव। कलि मध्य जग्य नहिं भ्रम्म चाव ॥
बल करौ नल्ल भेषह प्रमान। जग्यौ न एक भुअ चाहुआन ॥
छं० ॥ ४१ ॥

चहुआन जोग छचौ अनंभ। अन्यन कोस सित्तए मंझ ॥
वय हीन इट्ठ नन बल प्रमान। जग्गहि सजोग नह लच्छि थान ॥
छं० ॥ ४२ ॥

मंचौ न कोइ बर पंग ग्रेह। [1]नन होइ जग्य मानुष्य देह ॥
चैवार काल चंपै प्रमान। बरजै न तास उर जग्य जान ॥
छं० ॥ ४३ ॥

अपजस बिसाहि करि कुमत मत्त। पुच्छौं सु बत्त तौ कहौ बत्त ॥
सुद्दरै बात सो करौ वीर। आवै न समर बर जग्य तीर ॥छं०॥४४॥

रावल जी का कहना कि होनहार प्रवल है।

कवित्त ॥ फुनि चिचंग नरिंद। चतुर विद्या सचित्त मति ॥
भव भवस्य न्त्रिम्मान। ब्रह्म भूलै न्त्रिमान गति ॥

(१) ए.-ना कुट्ठ।

इह अजह्व चिंतयौ । ग्रह्व प्राहारन सांई ॥
तन मनुच्छ सम देव । बुद्ध बुल्यौ बल तांई ॥
चै लोक अप्पि बलिराइ नें । राम जुद्ध चैता सुबर ॥
जदुवीर सहाइक पथ्थ बंध । तब कुबेर बरथ्यौ सुधर ॥ छं० ॥ ४५ ॥

पंग सुवर परधान । समर सम्हौ उच्चारिय ॥
बलि सु जग्य विग्गऱ्यौ । भ्रम्म छिचौ न सम्हारिय ॥
चंद जग्य विग्गऱ्यौ । मंत बिन अटन सु पत्तौ ॥
दुज्ज दोष नघु क्रत्त । क्रित्त अप्पनौ सु हत्यौ ॥
इह भ्रम्म क्रम्म षल षंडि षग । जित्त जगत सब बस कियौ ॥
प्रथिराज समर बिन मंडलह । अवर जग्य नह हर तियौ ॥
छं० ॥ ४६ ॥

रावर समर नरिंद । समर साधन्न समर बर ॥
समर तेज सम जुद्ध । समर आहत्य समर घर ॥
सम समंति सम कंति । समति सम सूर प्रतापं ॥
समर विधान विधान । सिंघ पुज्जै नन दापं ॥
भव भवसि भूत भव भव कहहि । भवतव्य सु चिंता सच्चरिय ॥
चिचंग राव रावर समर । इह प्रधान सम उच्चरिय ॥ छं० ॥ ४७ ॥

रावल जी का अपने को त्रिकालदर्शी कहना ।

हम नरिंद जोगिंद । भूत सुझ्झैत भवसि गति ॥
हम चिकाल दरसौ सु । क्रम्म बंधै न मोह भति ॥
जु कछु पच्छ निरमान । अग्ग मुष सोइ उच्चारै ॥
सुनि सुमंत उच्चरौं । जग्ग चहुै नसि रारै ॥
मुनि देव राज दुज विदुष बर । रही जप तपह सु बर ॥
देषियै भलप्पन पच्छि बर । तौ अग्गेंई जाइ धर ॥ छं० ॥ ४८ ॥

रावल जी का ऐतहासिक प्रमाण देकर प्रधान को यज्ञ करने से रोकना ।

बंदीजन रिषि ब्रह्म । जग्य पंडव बष्पानिय ॥

अकसमात इक प्रगट। निकुल जंपिय इय वानिय ॥
द्वादस बरस दुकाल। पऱ्यौ कुरषेत धरन्नं ॥
विप्र उच्छ ब्रति न्हान। न्योति रिषि धोय चरन्नं ॥
तिहि पंक माहि लोटंत हौ। अध देह कंचन भयौ ॥
पूरन कारन्न तुम जग्य में। आयौ पन दाग न गयौ ॥ छं० ॥ ४९ ॥

दूहा ॥ कहि मोकलि परधान कर। इह सु कथ्य चित्रंग ॥
तौ तुम अब जग अंश से। कहा करहु पहुपंग ॥ छं० ॥ ५० ॥
अश्वमेद जग छसें करि। विश्वमित्र तप जोर ॥
कहा गरै न्रप मंद मति। अहंकार मन ओर ॥ छं० ॥ ५१ ॥

सोमंत का कुपित होकर जयचन्द की प्रशंसा करना।

कुंडलिया ॥ पंग प्रधान प्रमान उठि। बचन श्रवन सुनि राज ॥
रत्त द्रष्टि अरु रुद्र मुष। चंपि लुहट्टी साज ॥
चंपि लुहट्टी साज। बचन वर बीर कहाई ॥
तर उप्पर चित्रंग। करहि जुग्गन पुर नाई ॥
सज्जे पंग नरिंद। तीन पुर कंपि अभंग ॥
असुर ससुर नर नाग। पंग भय भये सु पंग ॥
छं० ॥ ५२ ॥

कवित्त ॥ बचन उच्च दिठ उच्च। समर तप कारन उचाइय ॥
पंग लज्ज सिर मंडि। बीर ब्रह्मंड लगाइय ॥
सोइ न्रपत्ति जयचंद। नाम जिन पंग पयानं ॥
इला धरन समरथ्थ। नयन काली जुग जानं ॥
कविचंद देव विजपाल सुअ। सरन जाहि हिंदू तुरक ॥
चित्रंगराव रावर समर। रज नष्षै लग्गै अरक ॥
छं० ॥ ५३ ॥

जयचन्द का राजसी आतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ बुल्यौ सुमंच मंची प्रमान। कनवज्जनाथ करि जग्य पान ॥
मिसि सेन सज्जि आषेट रूप। चिंता न चिंत्य बंधेत भूप ॥
छं० ॥ ५४ ॥

आरज्ज सेन प्रथिराज राज। बंधेति बलह समरह समाज ॥
बन वहन गहन दुज्जन सभूमि। सर ताल वितल कट्टैति तूंमि ॥
छं० ॥ ५५ ॥

बग्गुरि समँद गोरी उपाइ। बंधि सिंध उभय पच्छिम लगाइ ॥
मंडै समूल सुरतान तीर। करनाट करन षुरसान मीर ॥छं०॥५६॥

गुज्जर सु कोह दच्छिन लगाइ। लग्गै न गहन कहु अरिन पाइ ॥
उतरत्त बंध पुब्बह प्रमान। चढ़ि देषि पंग पावै न जान ॥
छं० ॥ ५७ ॥

तारक सु षेद बंधे प्रसार। चहुवान चपेटक जुद्ध भार ॥
पाताल पंथ नन ब्योम पंथ। बन वहन हरन दुरि सोम अंथ ॥
छं० ॥ ५८ ॥

दल सज्जि करहि न्रप सच भेद। पहुपंगराइ राजह बेद ॥
॥ छं० ॥ ५९ ॥

यज्ञपुरुष का ऋषि के वेष में नारद के पास आना।

दूहा ॥ आयौ रिषि नारद सद्रिस। धरम मूल प्रतिपार ॥
मनों विदिसि उत्तारनह। अग्य रूप सिरदार ॥ छं० ॥ ६० ॥

नारद का पूछना कि आप दूवरे क्यों हैं।

दीन दिष्षि वर वदन तिन। ता पुच्छै रिषि राज ॥
किन दुष्षह तन किससता। किन दुष्षह आकाज ॥ छं० ॥ ६१ ॥

ऋषि का उत्तर देना कि मैं मानहीन होने से दुखी हूं।

तब रिषि बोल्यौ रिष्ष प्रति। असौ अस्त्र सरूप ॥
तिन कारन तन जरजर्यौ। अग्गि विभंगन रूप ॥ छं० ॥ ६२ ॥

कवित्त ॥ अंग षंड न्रप राज। मान षंडनति विप्र वर ॥
गुरु षंडन गुरु विदुष। लच्छि षंडन विनक घर ॥
निसि षंडन तिय जोग। सु निसि षंडन अभिमानं
क्रत षंडन उरदेव। अग्य षंडन सुरथानं ॥
इतने षंड कीने हुते। तदपि दुष्ष जर जर तनह ॥
जानैन देव दैवान गति। सुगति विद्धि न्रम्मय घनह ॥छं०॥६३॥

नारद ऋषि का कहना कि आपके शुभ के लिये यथा साध्य उपाय किया जायगा।

दूहा ॥ सोनंतह तिन विप्प कहि। नव नव चरित प्रमान ॥
तू आज्ञा जो देइ गौ। सो आज्ञा परमान ॥ छं० ॥ ६४ ॥
विअष्परी ॥ अग्गि समान जु अग्गि प्रमानं। विप्र और औरै उचारनं ॥
जाहि कुचील कुचील करिज्जै। तौ वह वेद भंग नव लिज्जै ॥
छं० ॥ ६५ ॥
जो वह तन अत्यंत प्रकारं। बहुत भ्रम्म आरत उचारं ॥
पंड मंड लीने कर धारिय। कांति सराप भई सिल नारिय ॥
छं० ॥ ६६ ॥
तहां आइ बर बाज बिलग्गे। सुनै पंग आतुर मन मग्गे ॥
जौ आग्या इन भंति सु भज्जै। तौ ग्रेह होंहिं ग्रामि गुर सज्जै ॥
छं० ॥ ६७ ॥
हंका कार दुह्ह न्नप भारी। पंग जाउ जानै न प्रकारी ॥
जिन डहाल क्रम्मं गुन पेद्यौ। तीन बाल भारथ्यह भेद्यौ ॥
छं० ॥ ६८ ॥
उभै बान करि मान प्रकारं। सुबर बीर संचै सिर सारं ॥
छं० ॥ ६९ ॥

सोमंत का राजा को सलाह देना कि चहुआन से पहिले रावल समरसी दोनों को परास्त करना चाहिए।

कवित्त ॥ सुमत समंती स्याम। सुमति संग्रही पंग बर ॥
बंधि राज चहुआन। बंधि चित्रंग सम्म घर ॥
सुलप लज्ज पति जीह। बेंन क्रक्कस उच्चारहि ॥
* ....
मधि भूप रूप दारुन वचन। पंगराइ अम्मर अरस ॥
सज सेन सु बंधौ बंध बल। देव राज देवह परस ॥ छं० ॥ ७० ॥

* छन्द ७० की चतुर्थ पंक्ति चारो प्रतियों में नहीं है।

सोचहि पंग नरिंद। राज आनै इह सत्तिय ॥
ता छत्री कों दोस। भूमि भोगवै न दुत्तिय ॥
पंग काल आरुहै। ताहि गारुरू न कोई ॥
सख मंच उड्डरै। सार धर धार समोई ॥
मयमंत सेन चतुरंग तजि। बढ़िय दंद हिंदुअ उभय ॥
दैवत्त कला दैवत्त तूं। दै दुवाह दुज्जन डरय ॥ छं० ॥ ७१ ॥

मंत्री के बचन मान कर जैचन्द का फौज सजना।

दूहा ॥ सज्जन सेन सु राज कहि। बज्जिग बज्ज सु लाग ॥
इक्कै विधिना अंगमै। बीय मनुष्ष न भाग ॥ छं० ॥ ७२ ॥

कवित्त ॥ तज्जि कमान सु तीर। छंडि अवाज गोरि चलि ॥
ज्यों गुन मुक्कि उठि चंग। सीह बर मग्ग अंड हलि ॥
त्यों पहुपंग नरिंद। सेन सजि धर पर धाईय ॥
असुर ससुर सर नाग। पंग पहुपंग हलाइय ॥
अच्छरत रैन अरि उच्छरत। कायर मन पछ अग्ग तन ॥
कविचंद सु सोभ विराजई। जानि पताका दंड घन ॥ छं० ॥ ७३ ॥

जयचन्द की सुसज्जित सेना का आतंक वर्णन।

कुंडलिया ॥ चढ़तें पंग सु सेन मिलि। तुछ तुछ कूंच प्रमान ॥
नदी समुद्रह सब मिलै। पंग समुद्रह आनि ॥
पंग समुद्रह आनि। सेन न्रप मंडप साधै ॥
सिंभ गंग उतमंग। रंग पल ती रंग राधै ॥
दइय पंग अनभंग। सक्र सहाय छिति डुल्लै ॥
सुदरि भाम संचरी। दिसा दुरि धर पर चल्लै ॥ छं७ ॥ ७४ ॥

चोटक ॥ पहुपंग निसान दिसान हुअं। सुनियं धुनि डुल्लि प्रमान धुअं ॥
विधि बंध विधिं क्रम काल डरै। जयचंद फवज्ज सु बंधि परै ॥
छं० ॥ ७५ ॥

रज सज्जि हयं गय पाय दलं। तिन मद्धि विराजति चाहि ललं ॥

नव बज्जि निसान त्रिघोष सुरं। सुनियै धुनि धीरज तज्जि भरं॥
छं० ॥ ७६ ॥

गजराज स घंटन घंट बजै। अनहद्द सबद्दनि जानि सजै॥
घन नंकहि घुंघर पष्षर के। सु बुले जलजात किधौं जल के॥
छं० ॥ ७७ ॥

पर टोपनि सीस धजाति हलै। तिनकी कवि देषि उपम्म कलैं॥
* चय नेचय मंडिय नेष उजास। झर मज्झि प्रगट्टि मनों कैलास॥
छं० ॥ ७८ ॥

बँधि पंषि उमा वग्नि सीस सधी। वढ़ि सस्सि कला मनों ईस बँधी॥
चवरंग धजा फहरीति हलं। सु मनों ससि चाह बसीठ हलं॥
छं० ॥ ७९ ॥

गुरु भान ति राह ब भूमि सुधं। सब अप्पि परी गह तात बुधं॥
दमकै बनि कंति कती सरसी। निकसै मनु मानिक मंजर सी॥
छं० ॥ ८० ॥

दिसि अट्ठ दुरी उपमानि जनं। सु मनों तम जीति रह्यौ रविनं॥
ढुरि ढाल ढलं मिल सोभ धरै। चढ़ि देव विमान सु केलि करै॥
छं० ॥ ८१ ॥

सु मनों जनु जुग्गिय अग्गियरं। सु मनों प्रलैकाल प्रथीपुरयं॥
छं० ॥ ८२ ॥

रहस्सहि बीरति ह्रूरति मुष्ष। मनों सतपत्त विकासिय सुष्ष॥
मुदे मुष काइर भुम्मिभग मोद। मनों भए संझ सु दिष्षि कमोद॥
छं० ॥ ८३ ॥

* यह पंक्ति छन्दोभंग से दूषित है। त्रोटक छन्द चार सगण का होता है किन्तु इस पंक्ति में एक लघु अधिक है। पाठ में कोई ऐसी युक्ति भी नहीं है कि जिस से लिपि दोष माना जाय और न किसी प्रकार शुद्ध करने का अवकाश भी है अस्तु इसे ज्यों का त्यों रहने देकर केवल यह सूचना दे दी है। छन्द ८२ के बाद के दो छन्द न तो त्रोटक हैं और न समरूप से उनकी मात्रा किसी अन्य छन्द से मिलती है इसका मूल कारण लिपि दोष है। बीच में कुछ छन्द छूटे हुए भी मालूम होते हैं।

उभै षट फौजति पंग सजै। दिसि अड्ड उभै दुरि बान लजै ॥
चल्यौ पहुपंग सु हिंदुअ थान। इतें चितरंग उतें चहुआन ॥
छं० ॥ ८४ ॥

सेना सजनई का कारण कथन।

दूहा ॥ सधर धार बज्जन बहुल। धर पहार बर गज्जि ॥
पुब बैर चहुआन कौ। बजे तीर कर बज्जि ॥ छं० ॥ ८५ ॥
जग्गि अलनि जैचंद दल। बल मंड्यौ छिति राज ॥
बैर बंध्यौ चहुआन सौं। पुब्ब बैर प्रति काज ॥ छं० ॥ ८६ ॥

जैचन्द का पृथ्वीराज के पास दूत भेजना।

दूत सु मुक्कि प्रधान बर। दिसि राजन प्रथिराज ॥
*मातुल पष जैचंद धर। अर्द्ध सु मंगै काज ॥ छं० ॥ ८७ ॥

गोयंद राय का जैचन्द के दूत को उत्तर देना।

भुजंगी ॥ न जानं न जानं न जानंत राजं।
तुमं मातुलं वंस ते भूमि काजं ॥
दई राज अनगेस प्रथिराज राजं।
लई भारथं वीर भारथ्थ वाजं ॥ छं० ॥ ८८ ॥
जमं ग्रेह पत्तौ किमं पच्छ आवै।
ततं पंग राजं सु भूमिं सु पावै ॥ छं० ॥ ८९ ॥
दूहा ॥ पंगराज सोइ भूमि बर। मतन भूमि सिरताज ॥
कहै गरुअ गोयंद मति। सामंता सिर लाज ॥ छं० ॥ ९० ॥
कवित्त ॥ सुनहु मंत भर पंग। बात जानहु न मंत बर ॥
वीर भोग वसुमती। बीर बंका बंकी धर ॥
वीरा हो अनसंक। रहै वीरा बिन बंकी ॥
है पुर षग्गह धार। सोइ भोगवै जु संकी ॥
पाषंड डंड रचै नहीं। पाषंडह रचै न गुन ॥

* इसके बाद का एक दोहा या और कोई छोटा छंद छूट गया मालूम होता है।

क्रम विक्रम चारि चचर जिमसि। अहत हत्त आवै न पन ॥
छं० ॥ ९१ ॥

कवित्त ॥ काल ग्रेह को फिरै। मेघ बुट्टै धारा धर ॥
षह तुट्टै तारिका। जाइ लग्गै न नाक पर ॥
छल छुट्टै 'मुष सह। गरुअ हरुअं सु प्रमानं ॥
बुधि छुट्टै आबुद्धि। होइ पछितावति जानं ॥
संघरिय चीय बर कंत बर। गरुअ भूमि को भोगवै ॥
मातुल कहाय तातुल सु मति। मरन देव गुन जोगवै ॥
छं० ॥ ९२ ॥

दूत का गोयन्दराय के बचन जैचन्द से कहना।

कहिय बत्त यो मंचि। राज यों बत्त न मानिय ॥
अधम बुद्धि बनि तमक पोत। क्रम अक्रम न ठानिय ॥
छल छुट्टै बल बधै। सधै सिद्धंत सु सारं ॥
एक एक आवद्ध। देव दैवत्त बिचारं ॥
पहुपंग राय राज सु अवर। जाइ कही तामस विधिय ॥
सजि सैंन सबें चतुरंग बर। सुबर बीर बीरह बधिय ॥छं०॥ ९३ ॥

जैचन्द का कुपित होकर चढ़ाई करना।

दूहा ॥ सुतन सु पंग नरिंद सजि। सब छिची छबि छाइ ॥
बर बंसी ससिपाल ज्यों। षग्ग षटक्यौ आइ ॥ छं० ॥ ९४ ॥

जयचन्द के पराक्रमों का वर्णन।

कवित्त ॥ चंदेरी ससिपाल। कारन डाहाल पुच बर ॥
तिहि समान संग्राम। बान बेध्यौति बीर उर ॥
तिमिरलिंग षेदयौ। षेदि कढ्यौ तत्तारिय ॥
सिंघराव जै सिंघ। सिंघ साध्यौ गुन गारिय ॥
जैचंद पयानौ चंद कहि। ग्रह भग्गौ निग्गह भगिय ॥
भीमंत भयानक भीम बर। पुब्ब तरोवर तब रहिय ॥ छं० ॥ ९५ ॥

---

(१) छ.-सुख।

दूहा ॥ सो फुनि जीत्यो पंग पहु। धरनि वीर सों वीर ॥
उदधि उलट्टिय हिंदु न्रप। वढ़ि कायर उर पीर ॥ छं० ॥ ९६ ॥

भुजंगी ॥ प्रकारे सुचारे चवै इक्क पायं। असी एक मंतेय होवंत तायं ॥
सु बंबीस मत्ते न होवंत कंदं। भुजंगी प्रयातं कहै कब्बि चंदं ॥ छं० ॥ ९७ ॥
चव्यौ पंग रायं प्रकारं प्रकारं। पुरी इंद्र ज्यों आनि बलिराय सारं ॥
घनी अंग अंगं जिती सेन सज्जं। मनो देवता देव साधंत गज्जं ॥
छं० ॥ ९८ ॥
रहै कोन अभ्यंत जंबल प्रकारं। जितै पंग सौं कोन कलि आस सारं ॥
फनी फूंक भूली डुली भू प्रमानं। कंपे चारि चारं उभै यं प्रमानं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

कवित्त ॥ धर तुट्टै धुरतार। पंग असि बर अस सज्जी ॥
हिंदु मेछ दोउ सेन। दोउ देवत्तन बंधी ॥
दुहूं तोन जम द्रोन। पथ्थ प्रथिराज गनिज्जैं ॥
ए न डुले ए डुले। ए म रंजे ए रज्जैं ॥
जैचंद सपूरन कर पवित। परिपूरन उग्यौ अरक ॥
नर नाग देव देवत्त गुन। विधि सुमंत बज्जी धरक ॥ छं० ॥ १०० ॥

चोटक ॥ सु सुनी धुनि बैन प्रमान धरं। चढ़ि संमुष पंग नरिंद घरं ॥
सजि सूर सनाह सुरंग अनी। सु कहू जनु जोग जुगिंद्र धनी ॥
छं० ॥ १०१ ॥
बर बंक चिलक्क करद्ध इसी। घन सीस उग्यौ जनु बाल ससी ॥
जल होत थलं थल होत जलं। सु कही कविराज उपंम भलं ॥
छं० ॥ १०२ ॥
जल सुक्किय ग्यानिय मोह जतं। जल बढ्ढि जलं अर वीरज तं ॥
सम बंच कहूर कुरंग दिसा। पुरहे जनु कायर वीर रसा ॥
छं० ॥ १०३ ॥
स बढ़े बल सूर प्रमान रनं। सु मनो बरसैं बर घेरि घनं ॥
अरकादि स धुंधर मंत दुरं। सु मनों बिन दानय मान दुरं ॥
छं० ॥ १०४ ॥
हत भंग निसानति वीर बजै। रथ बाज करी करनान लजै ॥

कलहंत करे किहि चिंत वरं। दुरि इंद्र रखौ पय बंधि मरं॥
छं० ॥ १०५ ॥

कुंडलिया (?) ॥ यों लय लग्यो पंग पय। तो पग सजिग सिंगार॥
*श्रवन बत्त संची सुनै। श्रवन सुनै घरियार॥
श्रवन सुनै घरियार। अंध कारिम तन सोहै॥
मिलें पंग तौ पंग। अंग दुज्जन दल गोहै॥
घट विय षोडस जग्ग जै। जो रजै राज राजे सुतौ॥
.... ॥
विधि बंधन बुधि हरन। देव द्रजोध जोध सौ॥
.... ॥
तौ पंघ समह जुद्दह करन। .... ॥
.... ॥ छं० ॥ १०६ ॥

दूहा ॥ पंग छच छिति छांह वर। उभै दीन भय दीन॥
पंग सूर उग्गै सजल। भयौ बीर प्रति मौन॥ छं० ॥ १०७ ॥

जैचन्द की सेना का प्रताप वर्णन।

कवित्त ॥ बन घन पग लग्गीय। हलिय चतुरंग सेन वर॥
यों हल्लिय धर भार। नाव ज्यौं रीति वाय वर॥
यों हल्ले द्रिगपाल। चंद हल्लै ज्यों धज धर॥
बहर पवन प्रकार। ध्यान डुल्लेति अगनि धर॥
इह मंत चिंति चहुआन वर। मातुल घर उर धग्ग पिति॥
मंगै जु पंग पहुमी सपति। सुबर बीर भारथ्थ जिति॥ छं०॥ १०८॥

जैचन्द का चहुआन को पकड़ने की तैयारी करना और उधर शहाबुद्दीन को भी उसकाना।

दूहा ॥ सु विधि कीन सज्जिय सयन। ग्रहन चाइ चहुआन॥
तो सुरपुर भंजै नहीं। इह आधार विरान॥ छं० ॥ १०९ ॥

* यह कुंडलिया नहीं वरन दोहा छन्द है परंतु खण्डित है और इसके बाद के कुछ और छन्द भी लोप हुए ज्ञात होते हैं क्योंकि मजमून का सिलसिला टूटता है।

पहुपंग सु भैभीत गति। बीर डंड मंडि सूर ॥
ते फिरि सूर समान भय। विधि मति रत्ति करूर ॥ छं० ॥ ११० ॥
नव गति नव मति नव सपति। नव सति नव रति मंद ॥
चाहुआन सुरतान सौं। फिरि किय पंग सु दंद ॥ छं० ॥ १११ ॥
सत्त अरुझि संकरह ज्यौं। उठी बीर बर बेलि ॥
बढ़न मतैं चहुआन रज। बर भारथ्थ सु केलि ॥ छं० ॥ ११२ ॥
कवित्त ॥ भये अभय भय भवन। रजन स्वामित्त सूर नर ॥
तेजल लगै न पंग। सुरस पाई न पंग धर ॥
अग्ग ग्रंम ग्राम धरिय। ग्रंम पच्छा न उचारै ॥
मय मत्ता तिथि पत्त। गयौ बंचै न सुधारै ॥
बर बन बिहसि रह सैन कथ। रथ भंजै भंजन सु अरि ॥
डंमरिय डहकि लग्गिय लहकि। दहकि रिदै कायर उसरि ॥
छं० ॥ ११३ ॥

जैचन्द की सेना का दिल्ली राज्य की सीमा की भूमि दबाना और मुख्य मुख्य स्थानों को घेरना।

दूहा ॥ कूरलती सारस सबद। सुरसरीस परि कान ॥
सूर संधि मन बंधि कें। चले बीर रस पान ॥ छं० ॥ ११४ ॥
पद्धरी ॥ अन बुद्ध जुद्ध आवद्ध सूर। बर भिरत मत्त दीस करूर ॥
बर बुद्धि जान आवुद्ध जुद्ध। सामंत सूर बर भंजि सुद्ध ॥
छं० ॥ ११५ ॥
दुक्कंत तमसि तेजं करूर। कढ्ढैति दंत गज मंत सूर ॥
बज्जी सु बाह बाहंत बज्ज। भिल्लैति बज्ज सुग्गं सु रज्ज ॥
छं० ॥ ११६ ॥
सामंत सूर पति तीन बाहु। चंप्यौति पंग दल गिलन राहु ॥
डह डहक बदन फुल्लै प्रकार। सामंत सूर सन पच भार ॥
छं० ॥ ११७ ॥
कंमोद चोद काइर कुरंग। उग्यौ सु भाम पहुपंग जंग ॥

छिति मिच छच छची न जान। नर लोइ गत्ति ज्यों अगति वाम ॥
छं० ॥ ११८ ॥

नव निजरि निकरि नव विघन सूर। जंपै सु चंद बरदाइ पूर ॥
छं० ॥ ११९ ॥

कवित्त ॥ भुज पहार चहुआन। उदधि रुकवन पंग वर ॥
सु दिसि विदिसि वर बोरि। बीर कमधज्ज घग्ग भर ॥
अति अथाह उप्पटिय। सलिल सहमत्त सघन वर ॥
भ्रम्म जिहाज तिरंत। मंत बैरष्य बंधि भर ॥
धर ढारि पारि गढ़ बंक बहु। दिल्ली वै हल्लिय दिसह ॥
धनि सूर न्रप्प सोमेस सुअ। तुच्छ अथाह प्रवेस दल ॥छं०॥१२०॥

ऐसेही समय पर पृथ्वीराज का शिकार खेलने को जाना।

गोडंडह चल मिच। राज सेवा चुकि ग्यानं ॥
ग्यान दगध जोगिंद। कुलट कैरव भगि पानं ॥
वयति मध्य तामध्य। मझि मोचन अरि रोचन ॥
तहां पंग चहुई। पर्यौ पारथ नह पोचन ॥
भय काल काल संभरि धनी। सुनि अवाज ढिल्ली तजिय ॥
मयमंत मयझत मोह गति। सुवर जुड जम झत लजिय ॥
छं० ॥ १२१ ॥

दूहा ॥ तिन तप आषेटक रमै। थिर न रहै चहुआन ॥
बर प्रधान जोगिनि पुरह। धर रष्षन परवान ॥ छं० ॥ १२२ ॥

कैमास की स्वामिभक्ति।

कवित्त ॥ गय सु रष्षि परधान। थान कयमास मंच वर ॥
अति उतंग मति चंग। नदिय नंदन बंदन बर ॥
अति उतंग मंचह। अभंग झिल्लै प्रहार कर ॥
स्वामि काज स्वामित्त। करन सनमान करन धर ॥
दल दुझि सु रिधि राजन बलिव। अभै भयंकर बल गरुअ ॥
सामंत सूर तिन मंच वर। सवर बीर लग्गौ हरुअ ॥ छं० ॥ १२३ ॥

दिल्ली के गढ़ में उपस्थित सामंतों के नाम।

रष्षि कन्ह चौहान। अत्तताई रूई भर ॥
रषि तोंअर पाहार। बीर पज्जून जून भर ॥
रषि निड्डुर रठ्ठौड़। रष्षि लंगा बाबारौ ॥
षीची रावप्रसंग। लज्ज सांई सिर भारौ ॥
दाहिम्म देव दाहरतनौ। उहिग बाह पगार बर ॥
अज्जोनराइ कैमास सँग। एकादस रष्षेति भर ॥ छं० ॥ १२४ ॥

जमुना पार करके दवपुर को दहिने देते हुए कन्नौज की फौज का दिल्ली को घेरना।

गौ जंगल जंगली। देस निरवास वास करि ॥
जोगिन पुर पहुपंग। दियौ दष्षिना देव फिरि ॥
उतरि जमुन परि बीर। देवपुर सुनि पल पट्टी ॥
अद्ध रयनि कल अद्ध। चंद उग्यौ कल अट्टी ॥
अगिवान कन्ह तोंअर बलिय। हलिय सेन नन पंच करि ॥
नद गुफा बंक बंकट विकट। सुबर बैर बर बीर धरि ॥ छं० ॥ १२५ ॥

दूहा ॥ विकट भूमि बंकट सुभर। अंगमि पंग नरिंद ॥
सो प्रथिराज सु अंगमै। धनि जैचंद नरिंद ॥ छं० ॥ १२६ ॥

सामंतों की प्रशंसा और उनका शत्रु सेना से लड़ाई ठानना।

कवित्त ॥ जमुन विहड बर विकट। इक बज्जिय चावद्दिसि ॥
पंग सेन संमूह। सूर कहुँ संमुह असि ॥
तेंही रत्त नरिंद। मुक्कि भग्गौं चहुआनं ॥
पुंडीरा नीरत्ति। नेह बंध्यौ परिमानं ॥
विन स्वामि सब्ब सामंत भर। एक एक बर सहस हुअ ॥
अष्षै नरिंद पहुपंग दिसि। धुअ समान सामंत भुअ ॥
छं० ॥ १२७ ॥

दूहा ॥ अढर ढरहिं अनमन्न महि। ढरहि अठार प्रकार ॥
को जयचंदह अंगमै। दोऊ दीन सिर भार ॥ छं० ॥ १२८ ॥

जैचन्द की आज्ञानुसार फौज का किले पर गोला उतारना।

कवित्त ॥ आयस पंग नरिंद । गहन उप्परि संभरि सुर ॥
सवर सूर सामंत । लोह कड्डे बड्डे वर ॥
बीर डक सुनि हक्क । बज्जि चावद्दिस झानं ॥
मुष मुष रुष अवलोकि । बीर मत्ते रस पानं ॥
सद मद्द सिंघ छुट्टे तमकि । झमकि हथ्थ सिप्पर लइय ॥
दुरजन दुवाह भंजन भिरन । दह दुवाह उभ्भे दइय ॥छं०॥१२९॥

उधर से सामंतों का भी अग्निवर्षा करना।

नराज ॥ इयं उवं उभ्भं इयं दुअंत सेन उत्तरं ।
अमी जु गंज सेत जेत बद्दि सिद्धि सुभ्भरं ॥
कुसंम किंसु किंसु कंक कत्ति मत्ति मंडयं ॥
मनो मनं मनी मनं मनी मनंत षंडयं ॥ छं० ॥ १३० ॥
जयं जयं जमंन काल व्याल पग्ग उभ्भरं ।
मनो मयंक अंक संक काम काल दुभ्भरं ॥
झनं झनं झनं झनं ठनंत घंट बज्जयं ।
मनो कि मद्द सद्द रद्द भद्द गज्ज गज्जयं ॥ छं० ॥ १३१ ॥
मनो कि संक काम जाम लान ताम बद्दयं ।
न्वपत्ति रूप भूप जूप नूप नद्द हद्दयं ॥ छं० ॥ १३२ ॥

घोर युद्ध का आतंक वर्णन।

कवित्त ॥ धकाई धकाइ । मग्ग लीना पग मग्गं ॥
पग्गानी भ्रम अग्ग । बीर मीसानति बग्गं ॥
सार झार दिष्षियै । पंग मन दिष्षि नयंनं ॥
भय भयान पिष्षियै । सद्द सुनियै नन कंनं ॥
सुष दुष्ष मोह माया न तह । क्रोध कलह रस पिष्षियै ॥
पारथ्थ कथ्थ भारथ विषम । लष्ष एक सर लष्षियै ॥छं०॥१३३॥

शस्त्र युद्ध का वाक् दर्शन वर्णन।

चोटक ॥ जु मिले चहुआन सु चार घनी । करि देव दुवारन दुंद घनी ॥

रननंकहि बीर नफेरि सुरं। मनो बीर जगावत बीर उरं॥
छं० ॥ १३४ ॥
दुअ स्वामि दुहाइय मुष्ष पढ़ै। झलकावति षग्गति हथ्थ कढ़ै॥
तिन मध्यति जोगिनी कूक करै। सुनि सद्द तिमंसिय प्रान डरै॥
छं० ॥ १३५ ॥
नचि कंध कमंधन नंचि शिवा। शिव कै उर लग्गि रही न जिवा॥
दिषि नंदिय चंदति मंद हसी। सिव स्वेद सिवा सुर भंग लसी॥
छं० ॥ १३६ ॥
गज षग्ग सु मग्गन यों रमके। सु बजें जनु झंझन के झमके॥
पय बंधि जला जल दिव्य नचै। .... ॥ छं० ॥ १३७॥
परिरंभ अरंभति रंभ बरै। जिनके झर सीस दुझार झरै॥
गज दंतन कढ्ढि सु सस्त्र करै। तिन उप्पर देवन पुष्फ परै॥
छं० ॥ १३८ ॥
उड़ि हंस सु पंजर भग्गि करी। पजरं तिन हंसन फेरि परी॥
अययौ रथ हंस सु हंस लियं। भर पचनि पंच सु सथ्थ लियं॥
छं० ॥ १३९ ॥
परि डेढ़ हजार तुरंग करी। नरयं भर और गनी न परी॥
छं० ॥ १४० ॥
दूहा ॥ उभय सु षट भारथ परिग। हय गय नर भर बीय॥
मरन अवस्था लोक के। जुग ए जीवन जीय॥ छं० ॥ १४१ ॥

कन्ह के खड्गयुद्ध की प्रशंसा।

फिरिय कन्ह जनु कन्ह गिरि। भिरन भूप भर पंग॥
जनु दव लग्गो चिन वनह। भरहर पंगिय जंग॥ छं० ॥ १४२ ॥

घोर घमसान युद्ध का वर्णन।

भुजंगी ॥ लरै स्रूर सामंत पंगं समानं। मनों डक्क बज्जै सु भूतं उभानं॥
सुभं एक एकं प्रमानंत वाहै। मनों चच्चरी डिंभरू डंड साहै॥
छं० ॥ १४३ ॥
तुटै अंग अंगं तरफ्फंत न्यारे। तिनं देषि कव्वी उपम्मा विचारे॥

जलं मानसं तुच्छ जल में विचारी। मनों पेल होहेलुआ देत तारी॥
छं० ॥ १४४ ॥
तुट्टै कधं बंधं उठैं छिंछ रत्ती। कही चंद कब्बी उपम्मा सु रत्ती॥
तरं बेलिबद्धी सु चढ्ढीन अग्गी। फिरी जानि पच्छी सु पाताल मग्गी॥
छं० ॥ १४५ ॥
पियै चौसठी रुद्धि गज्जं प्रहारं। घुटै घुंट लोही करै ऋत्यु न्यारं॥
मनों मोर बंध्यौति मोरंत अष्षै। फरस्सी कपूरं मनौं मुष्ष नंषै॥
छं० ॥ १४६ ॥
तुटै बीरमं बीर बंसी निनारै। दलं मध्य सोहै मनौं मुक्ति भारै॥
प्रजा पत्ति दच्छं जचै ईस अग्गै। भजै पुत्र बैरं फिरै सीस मग्गै॥
छं० ॥ १४७ ॥
उड़ै षग्ग मग्गं तुट्टै सीस सज्जै। जंपै झंपि केकी मनों मीन बज्जै॥
तुटी दंत दंतीन के दंत लग्गी। मनों चंच हंसी ग्रनालंति षग्गी॥
छं० ॥ १४८ ॥
फुलै भान दिष्षै अरुन्नं समेतं। मनों तारका राह गुर काल हेतं॥
छं० ॥ १४९ ॥

कुंडलिया॥ सार प्रहारति सार झर। वरन विहसि दहिराज॥
सो दिष्यौ भारथ्थ में। कथ्थ कहिग सिरताज॥
कथ्थ कहिग सिरताज। सार सम्हौ सहि बीरं॥
धार षग्ग उभझरी। मुष्ष उभझरि नह नीरं॥
मवति मत्ति उज्जली। बीर बीरह लगि वारं॥
गजदंती विच्छुरै। सूर 'टुट्टै धर सारं॥ छं० ॥ १५० ॥

दिल्ली की सेना के साथ चित्तौर की कुमक का आ मिलना।

कवित्त॥ सुहत पंग आभंग। रंग रवनी रवनंगन॥
मो हत अंगम काल। अंग अंगमै देव धन॥
सार धार देवत्त। देव दुज्जन दावानल॥
पंग सहायक सूर। बीर मारुत मारुत कल॥

(१) ए..टुंटै।

चहुआन वैर चिचंग होउ। दुअ सज्जन बंधी अनी ॥
पूजै न कोइ भारथ्थ में। नव निसान जुड़ंपनी॥ छं०॥ १५१॥

राजा जैचन्द का जोश में आकर युद्ध करना और उस की फौज का उत्साह।

भुजंगी॥ झुक्यौ पंगराजं प्रकारं प्रकारं। मनो सूर हथ रासि उग्यौति सारं॥
महा तेज मुष रत्त द्रग वीर लज्जै। भयं छंडि भूपाल अलि थान छज्जै॥
छं०॥ १५२॥
मनौं जोगमाया जुगं जुद्ध तारं। झुक्यौ पंग पंगं सुलज्झै न पारं॥
न आनं न आनं न आनंत सेनं। तिहूं लोक पंगंति सेनं समेनं॥
छं०॥ १५३॥
तितंची तितंची तितंची प्रकारं। मनौं उज्जलं सूर ज्यों पंग धारं॥
दिषै भूमि नाहीं अनी सेन देषै। घनं बद्दलं मद्धि चन्दं विसेषै॥
छं०॥ १५४॥
तजै ताकनी तार अहकार तारं। इसे सार सौं सार बज्जै करारं॥
ततथ्थे ततथ्थे तथुंगं चिनेतं। रहै कोन अभिमंन रावत्त हेतं॥
छं०॥ १५५॥
महावीर बंके भयं छिग्ग दूरं। तिने उपम्मा चंद ससि सीस सूरं॥
प्रलै ते प्रलैकाल पंकीति मेघे। मनो हादसं भान छुट्टै प्रसेघे॥
छं०॥ १५६॥
दुहै तोन बंधे सुरं तीन जोधं। तिनं बालुकी बुद्धि भ्रम्मा विवोधं॥
छं०॥ १५७॥

साटक॥ सासोधं पहुपंग पंगुर गुरं, नागं नरं नर सुरं॥
सब्बं भै विधि भानं मान तजयं, अष्टा दिसा पालयं॥
भूपाले भूपाल पालन अरिं, संसारनं सारियं॥
सोयं सा तिहुकाल अंगमि गुरं, नं काल कालं गुरं॥ छं०॥ १५८॥

जैचन्द का प्रताप वर्णन।

कवित्त॥ हय गय नर थर अवरि। सवरि सज्जिय सनाह वर॥
ज्यों द्रप्पन भूडोल। सिंभ विभ्भूत धरा धर॥

मुकर मध्य प्रतिबिंब। अग्नि मझे सु सांत सधि ॥
....
पहुपंग सेन सजि सुकित बर। बजि निसान उन मान दिन ॥
अंगमै कोन पहुपंग कौ। धीर छंडि बीरह तदन ॥ छं० ॥ १५९ ॥

कैमास का राजा पृथ्वीराज के पास समाचार भेजना।

कुंडलिया ॥ सुनि अवाज संभरि सुबर। ग्रह न रहै गुरराज ॥
ज्यौं दैवत्त सु अंगमै। सो पहुपंग विराज ॥
सो पहुपंग विराज। बीर बुल्लै प्रतिभासं ॥
मंची बर संभऱ्यौ। राज पुछ्यौ कैमासं ॥
गह वारुअ गुर घरिय। प्रीत प्रत्तह प्रति प्रतिपनि ॥
हय मुलतान सु जान। राज ऐसी अवाज सुनि ॥ छं० ॥ १६० ॥

कन्नौज की सेना का जमुना किनारे मोरचा बांधना और इधर से सामंतों का सन्नद्ध होना।

कवित्त ॥ जमुन विहड़ गहि विकट। निकट रोकै पहुपंग ॥
सार धार चहुआन। पान बंधें प्रति अंगं ॥
सुनत सिद्धि विधि समति। लोह कढ्यौ प्रति दैवै ॥
मवन मत्त चहुआन। राज बंध्या ढिल्लीवै ॥
रहि सब्ब सूर सामंत बर। गहिग ठौर बंकट करस ॥
न्रप राज कमंधन सुनि भए। अंमर कै अंमर अरस ॥छं०॥१६१॥

निढ्ढुर और कन्ह का भाईचारा कथन।

दूहा ॥ भैया निढ्ढुरराइ बल। तिन बल कान्ह नरिंद ॥
तिन समान जौ देषियै। तोंवर लिषियै कंद ॥ छं० ॥ १६२ ॥

भान के पुत्र का कहना कि राजा भाग गया तो हम क्या प्राण दें? इस पर अन्य सामंतों का कहना कि हम वीर धर्म के लिये लड़ेंगे।

दूहा ॥ हम बंधे बर तेक बर। तूं मुक्के धर राज ॥

जिय अंगमै सु अप्पनौ । भान पुत्त किं काज ॥ छं० ॥ १६३ ॥

कवित्त ॥ कहै सूर सामंत । सुनहि वर पुहमि ईस वर ॥
अप अंगमै सु जीव । पुत्त बंधहति भान वर ॥
जोग जोइ अंगमै । नेह नारी नह रष्षै ॥
बीर राग आनंद । राज तिन हत्त विसष्षै ॥
लिष्षवै सोइ जीवत्त वर । सुहत्त बत्त लिष्षै न वर ॥
तिन काज सूर सामंत बर । राज बरजि बरजियति गुर ॥
छं० ॥ १६४ ॥

यह समाचार पाकर जैचन्द का अपने में सलाह करना ।

दूहा ॥ गुरु भ्रत गुरु जानी न विधि । रिधि रष्षन कमधज्ज ॥
तिहित बीर पहुपंग सुनि । मतौ मत्ति कमधज्ज ॥ छं० ॥ १६५ ॥

सामंतों का एका करके सलाह करना कि किला न छोड़ा जावे ।

कवित्त ॥ ब्यंजं बरन कवित्त । जंपि कन्हा चहुआनं ॥
वर रट्ठौर नरिंद । राव निड्डुर उनमानं ॥
गरुअ गज्ज गहिलोत । मतै कैमासह सूरं ॥
मतै डिट्ठ कैमास । चंद डिढ़ कलहति सूरं ॥
तिन मझ्झ रिनह नर सिंह बलि । रेनराम रावत्त गुर ॥
सामंत सूर सामंत गति । कौन बीर बंधैति धुर ॥ छं० ॥ १६६ ॥

सामंतों की पुरेन पत्र से उपमा वर्णन ।

दूहा ॥ तज सुमत इन मत्त किय । भयन तजिय भय राज ॥
पंगानी डर सुजल मधि । भए सतपत्र विराज ॥ छं० ॥ १६७ ॥
सुबर बीर सतपत्र हर । पंग नीर प्रति बट्ठ ॥
सुबर बीर प्रथिराज कौ । अंग अहृत न चट्ठ ॥ छं० ॥ १६८ ॥

गाथा ॥ जंमुक्का पहुपंगं । तेछ्चीय सूर बीराई ॥
माहं चवंथि प्रमानं । साछिप्पीय लोययं सब्बं ॥ छं० ॥ १६९ ॥

कन्नौज की फौज का किले पर धावा करना ।

जंबंघा चच्चा चट्टुआनं। पग्गं सेनाय पंगयं दलयं॥
बालं ससी प्रमानं। सा बंदैस दीन उभयाइं॥ छं०॥ १७०॥

कवित्त॥ स्वामि ध्रम्म रत्ते। सुमंत लग्गै असमानं॥
अजुत जुद्ध आरुद्ध। बीर मत्त रस पानं॥
हथ्थ थकत श्रम करहि। मनति श्रम सों उच्चारहिं॥
.... । ....॥
धरि धार भार हरि हरुअ घट। कन्यौ घट्ट गरुअत्त जुर॥
इन परत सूर सामंत रिन। लन्यौ न को फिरि बहुरि भर॥छं०॥१७१॥

दूहा॥ बंदिय बल जिन निय न्रपति। न्रपन रूजाद उलंघि॥
कपि साधन रघुवंस दल। ज्यौं दैवत्त प्रसंग॥ छं०॥ १७२॥

दिल्ली घेरे जाने की बात सुन कर पृथ्वीराज का दिल्ली आना।

बाघा॥ संभरि वत्त जु पंग अवन्नं। बीर बिरा रस बढ्ढिय कंनं॥
है गै मै गै मत्त प्रमानं। उग्गिय जान कि बारह भानं॥छं॥१७३॥
लंबिय बाह कपाइत नैनं। गुंज्या सिंह लग्या सिर गैनं॥
है दल पैदल गैदल गट्टं। सूर सनाह सनाह सबट्टं॥ छं०॥१७४॥
यों रच्चै पहुपंगति सारं। कच्छे जोग जु गिंद्र विधारं॥
मत्त निरत्त अमत्त निसानं। गज्जे ज्यौं आषाढ़ प्रमानं॥छं०॥१७५॥
को अभिनंतु रहै रन पग्गं। सो दिष्यं पियलोक न मग्गं॥
धारै कंध वराहति रूपं। रहै श्रम नन डट्ठति भूपं॥छं०॥१७६॥
सयल गयल चिहुं दिसान धावहि। कहै राज ढिल्ली गढ़ ढावहि॥
रत्ते नैन कपाइत अंगं। जानि विरच्चिय बीरति जंगं॥
छं०॥ १७७॥
नंचै भैरव रुद्र प्रकारं। जानि नटी नट रंभ प्रकारं॥
अग्गें छोड़ गिवान मुनारं। बंधा ज्यौं बर कोटति सारं॥
छं०॥ १७८॥
ढाहै गाहै साहै राजं। मानों सासुद्र बांधे पाजं॥
उट्ठी मुंछ धरा लगि गैनं। बंक ससी सरि राजत मैनं॥ छं०॥ १७९॥

भषै दान प्रोहित्तं राजं । अप्पै मेर सुमेरति साजं ॥
यों कीनी धर पंगति सावं । जै जै वाय सु वायति नावं ॥
छं० ॥ १८० ॥

धावै दल मलिनं पहुपंगं । बूड़त नाव नीर गुन रंगं ॥
यों धाए पहुपंग सयंनं । मंस काज दीपी उनमंनं ॥
छं० ॥ १८१ ॥

वार धुरा धरयौ भर हल्ली । वाय विषंम पात बहु थल्ली ॥
एहि प्रकार चल्यौ चित राजं । कहि ढिल्ली ढिल्ली उन काजं ॥
छं० ॥ १८२ ॥

पृथ्वीराज के आने से कन्नौज की सेना का घबड़ाना ।

दूहा ॥ जा ढिल्ली ढिल्ली धनीं । दल हल्लिय पहुपंग ॥
मानो उत्तर वाय ते । चावहिसा विभंग ॥ छं० ॥ १८३ ॥

बाहरी तरफ से पृथ्वीराज का आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ संमुह सेन प्रचंड । पंग सज्जी चतुरंगनि ॥
ज्यों उग्गै इष सूर । बैर करि तपै कमोदनि ॥
सुबर सोभ कविचंद । हितू चक्रवाक प्रकारं ॥
बरै विरह विरहनी । हेत उड़गन ससि सारं ॥
सा बैर नैर नारिय निकट । विकट कंत बिछुरहि बधुअ ॥
पहुपंग राव राजन बली । सजी सेन सेनह सु भुअ ॥ छं० ॥ १८४ ॥

दो दल के बीच दब कर कन्नौज की फौज का चलचित्त होना ।

कुंडलिया ॥ बंधि कविज्जै बीय बर । दिसि दच्छिन अरु पुब्ब ॥
सुबर बीर सम्हौ भिरिग । करि भारथ्थ अपुब्ब ॥
करि भारथ्थ अपुब्ब । कोन अंगम पल घोलै ॥
मार मार उच्चारि । असिर अवसानति डोलै ॥
सो भग्गा घट सेन । माग आकारति संध्यौ ॥
बीय लच्छि तजि मोह । मरन केवल मग बंध्यौ ॥ छं० ॥ १८५ ॥

दूहा ॥ संभरि जुद्ध अरुद्ध गति। बर विरुद्ध रति राज ॥
चाहुआन चंपी अनी। सब संती सिरताज ॥ छं० ॥ १८६ ॥

युद्ध वर्णन।

कवित्त ॥ सुबर बीर आरुहिय। बीर हक्कै चावद्दिसि ॥
मत्त सार बरषंत। बीर नचहंत मंत कसि ॥
बंकौ असि के सुद्ध। केय लंबी उभ्भारैं ॥
घात षंभ निरघात। जानि झल्लरि झल्लारै ॥
बुट्टंत रस न संनाह पर। अबुठि बुट्ठि पच्छें परैं ॥
मानों कि सोम पारथ्थ यों। बर चंनं नन विथ्थुरैं ॥छं०॥१८७॥

इस युद्ध में मारे गए सामंतों के नाम।

परिग सुभर नारेन। रूप नर रष्षि बंधि बिय ॥
परिग सूर पामार। नाम पूरन्न पूर किय ॥
बघ्घसिंघ बिय पुत्त। परे हरसिंघ सु मोरिय ॥
पऱ्यौ सूर सूरिमा। सेन पंगह ढंढोरिय ॥
बग्गरी बीर बाहड़ हरिय। मुकति मग्ग षोली दरिय ॥
दह परिग भिरिग भंजिग अरिय। ब्रह्मलोक घर फिरि करिय ॥
छं० ॥ १८८ ॥

पऱ्यौ भीम भट्टी भुआल। बंधव नाराइन ॥
पऱ्यौ राव जैतसी। भयौ अजमेर पराइन ॥
परि जंघारौ जोध। कन्ह छोकर अधिकारिय ॥
सरग मग्ग जित्तयौ। ब्रह्म पायौ ब्रह्मचारिय ॥
भौ भंग बंक संके दुते। जुद्ध घात घातं सु रन ॥
आवरत सूर पहुपंग दल। सुबर बीर संभर अरन ॥ १८९ ॥

जैचन्द के चौसठ बीर मुखियाओं की मृत्यु।

दूहा ॥ घाव परिग सामंत सह। सुबर सूर सिसु सास ॥
इन जीवत चहुआन निज। फिरि मंडी धर आस ॥ छं० ॥ १९० ॥
चौ अग्गानी सट्ठि परि। डोला पंग नरिंद ॥
हलकि जमुन जल उत्तरिग। कहिग कथ्थ कविचंद ॥ छं० ॥ १९१ ॥

केहरि बर कंठेरिया। डोला मध्य नरिंद ॥
दंद गमाए जमुन कह। कहि फिरि मंडे दंद ॥ छं० ॥ १९२ ॥

जैचन्द का घेरा छोड़ कर चले जाना।

आतुर पंग नरिंद परि। जमुन विहड़ तजि बंक ॥
धर पद्धर ग्रह विकट तजि। जुग्गिनि पुर ग्रह संक ॥ छं० ॥ १९३ ॥

स्वामिभक्त वीरों की वीर मृत्यु की प्रशंसा।

भुजंगी ॥ क्रमं क्रम्म कट्ठे क्रमं तंति सस्त्रं। रनं निर्वसीयं निवासीय तत्रं॥
छिती छत्र भेदं अभेदंति सारं। तिनं जोग मग्गीय लब्भै न पारं ॥
छं० ॥ १९४ ॥

कवित्त ॥ जोग मग्ग उथ्थापि। थप्पि मुगती धर धारं ॥
सहस बरस तप करै। मुगति लब्भै न सु पारं ।
छिनक षग्ग मग अंग। जंग सोई छत छंडै ॥
धार धार विस्तरै। मुक्ति धामह धर मंडै ॥
धर परै बहुरि संगी न [1]को। तिन तिनुका सब नेह मनि ॥
रजक्रम्म भासयं देह सब। सुनहु सूर कबिचंद भनि ॥ छं० ॥ १९५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके सामंत पंगजुद्ध नाम पचपनवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५५ ॥

(१) "संगी को" पाठ है।

अथ समर पंग जुद्ध नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(छप्पनवां समय ।)

जैचन्द का चित्तौर पर चढ़ाई करना ।

दूहा ॥ तरउप्पर धर पंग करि । जुग्गनि पुर सहदेस ॥
चित्रंगी उप्पर तमकि । चढ़ि पंगुरौ नरेस ॥ छं० ॥ १ ॥

पद्धरी ॥ चित चिंति चित्त चित्रंग देस । चढ़ि चल्यौ स गुरि पंगुर नरेस ॥
दिसि संकि दिसा दस कंपि थान । कलमलिय सेस गय संकि पान ॥
छं० ॥ २ ॥
धुम्मलिय विदिसि दिसि परि अंधेर । उरझै कुरंग प्रज्जरह नैर ॥
मिटि भान थान तजि रष्यिय तक्कि । अरि घरनि अटनि रहि लटकि थक्कि ॥
छं० ॥ ३ ॥
बज्जै निसान सुर मान सद्द । सुत ब्रह्म रीझ कहुंति हद्द ॥
बिप्फुरहि कित्ति कमधज्ज सूर । नन रहत मान सुनतह करूर ॥
छं० ॥ ४ ॥

जैचन्द की चढ़ाई का समाचार पाकर समरसी जी का सन्नद्ध होना ।

कवित्त ॥ श्रवन सुनिग समरेस । पंग आवाज बीर सुर ॥
अति अनंद मति चंद । दंद भंजन सु अरिन धर ॥
बजि निसान घुम्मरिय । चित्त अंकुरिय बीर रस ॥
मोह कोह छिति छांड । मुक्कि मंड्यौ जुअंग जस ॥
श्रुत सील तत्त द्रिग चित अचल । चलैं हथ्थ उर विप्फुरहिं ॥
चित्रंग राव रावर समर । भिरन सुमत मत्तह करहि ॥ छं० ॥ ५ ॥

युद्ध की तय्यारी जान कर दरवारी योद्धाओं का परस्पर वार्तालाप करना ।

अरिल्ल ॥ सकल लोग मत जे वर जानिय। समर समय समरह परिमानिय ॥
अप्प वचन सुष तूल [1]प्रकासिय। सकल लोय गुरु जन परिभासिय ॥
छं० ॥ ६ ॥

सकल लोक मन सोच विचारिय। तत्त वचन मनह उचारिय ॥
एक कहत भारथ्थ अपुब्बं। एक कहत जीवन सुष सब्बं ॥
छं० ॥ ७ ॥

दूहा ॥ एक कहत सुष सुगति है। एक कहै सुष लाज ॥
एक कहै सुष जियन रस। जस गुर तस मति साज ॥ छं० ॥ ८ ॥

साटक ॥ यस्या जीवन जन्म मुक्ति तरसं। तस्या नरं वै [2]सुषं ॥
नैवं नैव कलानि मुक्ति तरसं। सुष्यंति नरके नरं ॥
धन्यो तस्यय जीव जन्म धनयं। माता पिता सत्गुरं ॥
सो संसार अहत्त कारन मिदं। सुप्राय सुप्रंतरं ॥ छं० ॥ ९ ॥

अरिल्ल ॥ अंतर त्यागिय अंतर बोधिय। बाहिर संगिय लोग प्रमोधिय ॥
एकय एक अनेक प्रकारं। समर राव भारथ्थ उचारं ॥ छं० ॥ १० ॥

रावल जी का वीर और ज्ञानमय व्याख्यान।

दूहा ॥ समर राव भारथ्थ मति। ग्यान गुभ्भ उचार ॥
जहति प्रान पवनह रमे। सुगति लभ्भ संसार ॥ छं० ॥ ११ ॥

योग ज्ञान वर्णन।

त्रिभंगी ॥ तन पंच प्रकारं, कहि समरारं, तत उच्चारं, तिहारं ॥
सुति ग्यान प्रसंसं, नसयति संसं, वसयति हंसं, जिह्वारं ॥
मन पंच दुआरं, भमय निनारं, रक्कि सवारं, अनहद्दं ॥
सुरकम्म सबद्दं, चिंतय अद्दं, नासिक तद्दं, तन भद्दं ॥ छं० ॥ १२ ॥
गुरु गम्य सु थानं, चिंतियध्यानं, ब्रह्म गियानं, रमि सोयं ॥
मन सून्य रमंतं, झिलिमिलि मंतं, नन भुलि अंतं, सो जोयं ॥
तजि कामय क्रोधं, गुर वच सोधं, संहित बोधं, सब्बानं ॥

---

(१) ए.-प्रकारिय। (२) ए.-मुष।

अंगुष्ट प्रमानं, भौंह विधानं, निगम न आनं, तिज्जानं ॥ छं० ॥ १३ ॥
गुर मुष्यय बत्तं, चिंतिय गत्तं, सिद्ध रमंतं, मुनि मोती ॥
षट मद्दयं थानं, पिंड समानं, मंडि सु ध्यानं, दिठ जोती ॥
जब लष्यिय रूपं, भजि भ्रम कूपं, दीपक नूपं, सो भूपं ॥
तब नंसिय संसं, मुक्ति रमंसं, जोगय अंसं, सो रूपं ॥ छं० ॥ १४ ॥

मनुष्य के मन की वृत्ति वर्णन ।

दूहा ॥ कलिय काल कालन कलिय । बल भ्रमग्ग बल चित्त ॥
समरसिंह रावर समर । ग्यान बुद्धि गुरु हित्त ॥ छं० ॥ १५ ॥
घरी एक घट सुष्य मैं । घरी एक दुष थान ॥
घरी एक जोगह सलै । घरि इक मोह समान ॥ छं० ॥ १६ ॥
छिन छिन में मन अप्पनौ । मति बिय बीय रमंत ॥
चित्रंगी रावर समर । तिन बेरा चितवंत ॥ छं० ॥ १७ ॥

रावल जी का निज मंत्री प्रति शारीरिक ज्ञान कथन और अमर समाधि का क्रम वर्णन ।

पंच तत्व तन मांहि बसहि । कोठा सत्तरि दोइ ॥
तत्त असिय रावर समर । मंचनि जंपत होइ ॥ छं० ॥ १८ ॥
उभय सेन संमुह सजे । चित्रंगी पंगान ॥
समर समय रावर समर । मंचिन जंपत ग्यान ॥ छं० ॥ १९ ॥

रावल जी की समुद्र से उपमा वर्णन ।

सर समुद चित्रंगपति । बुद्धि तरंग अपार ॥
तर्क मीन भेदन भमर । ब्रह्म सु मध्य भँडार ॥ छं० ॥ २० ॥
पग पारौ लज्जा सु जल । विद्या रतन बषान ॥
आनि जीव परमातमा । आतम [1]पालन ग्यान ॥ छं० ॥ २१ ॥

जीवन समय की दिवस और रात्रि से उपमा वर्णन ।

(१) कृ. को.-पालत ।

पद्धरी ॥ जोगंग जुगति जे अंग जानि। कहि चंद चंद सम [1]भमत भान ॥
सब देह जीव धर लषि विनान। धर टंकि बस्त रापन परान ॥
छं० ॥ २२ ॥

मध्यान प्रात लषि संभ मान। भ्रमि जाइ काल रष्षै छिपान ॥
पूरन्न ग्यान जब प्रगट आइ। ब्रह्मंड देह कर धर बताइ ॥
छं० ॥ २३ ॥

आवंत काल सहजह लिषाइ। तब पूर्न तत्व केवल लगाइ ॥
चिंतंत स्याम तन पट्ट पीत। टरि जाइ काल भय अमर मीत ॥
छं० ॥ २४ ॥

तिहु काल काल टारन उपाय। हरि रूप रिदय इन ध्यान ध्याय ॥
जब ग्रसन समय संभया प्रकार। चिंतियै सेत धुंमर अपार ॥
छं० ॥ २५ ॥

उपदेस गुरह लषि प्रात गात। जिन धरत ध्यान भुल्लहि सनात ॥
चिंतियै जोति सुभ कर्म सिद्ध। झर दीप कूल ठहराइ मद्धि ॥
छं० ॥ २६ ॥

अष्टमी बीय पंचमी थान। कै टहितिकाल मुनि जोर बान ॥
पूरन्न पान ताटंक माल। तन धरै धवल दिष्षिय विसाल ॥छं०॥२७॥
तन लषै सुद्धि नह बिय प्रकार। जनु भयौ ब्रह्म इच्छा भँडार ॥
रेचक्क कुंभ ताटंक पूर। जो गंग जुगति इह जतन मूर ॥
छं० ॥ २८ ॥

*षग मंग कहै चिचंग राव। मन सुद्ध समर पूरन्न भाव ॥
छं० ॥ २९ ॥

दूहा ॥ अंग समुद दोज समर। षग हिलोर छिति पान ॥
फिरि पुच्छत आहुट्ठ पति। तत्त मत्त निरवान ॥ छं० ॥ ३० ॥

कनकराय रघुवंसी का मानसिक वृत्ति के विषय में प्रश्न करना।

(१) कृ. को.-भनत।

* यहां के कुछ (दो या तीन) छन्द नष्ट हो गए जान पड़ते हैं।

कवित्त ॥ फुनि पुच्छे फिरि ग्यान । कमक केवल रघुवंसी ॥
मोहि एक आचिज्ज । तुम सु उत्तर भ्रम नंसी ॥
घरी मध्य आनदं । धरी वैराग प्रमानं ॥
घरिय मध्य मति दान । घरिय सिनगार समानं ॥
वैराग जोग स्रंगार कव । दइय दरिद्रय विग्रहत ॥
चित्रंग राव रावर चवै । अंतकाल मति उग्रहत ॥ छं० ॥ ३१ ॥

गाथा ॥ केवल मत्ति सउत्तं । चित्तं चित्रंग मत्ति उनमानं ॥
कहि जोगिंद सुराइं । प्रानं वसि गच्छ कंठामं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

रावल समरसी जी का, हृदय कुंडली और उस पर मन के परिभ्रमण करने का वर्णन करना ।

चोटक ॥ सु कहै रघुवंसिय रावरयं । सुनि चत्त सु भ्रंम न लावनयं ॥
पुब दच्छिन उत्तर पच्छिमयं । अगनै वरु वाय विसष्पनयं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

नयरत्ति इसानय कन्न धरं । इह अष्ट दिसा दिषि तत्त परं ॥
सु तड़ाग तनं सुष दुष्ष भरं । तहँ पंकज एक रहै उघरं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

दिसि पूरब पंत कमल सुरं । तिन रत्तरि पंषुरि हल्ल धरं ॥
तिहि पंम वसै मन आइ नरं । सु कह्यौ तु अचित्त सु चित्त धरं ॥
छं० ॥ ३५ ॥

गुरु बुद्धि कल्यान रु दान मती । वर भोगव बुद्धि सुक्रम्म गती ॥
अगिनेव दिसा दिसि पंषुरियं । तहां नोल बरन्नह उग्घरियं ॥
छं० ॥ ३६ ॥

तहां यद्यपि आइ वसै मनयं । तिय दोष बढ़ै मरनं तनयं ॥
दिसि उत्तर पंषुरियं (१)हररं । तहां पीतह रंग सु हल्ल धरं ॥
छं० ॥ ३७ ॥

उघरै प्रति क्रम्मय क्रम्म गती । तजि भोगय जोग गहै सु मती ॥

(१) कृ. को.-सुररं ।

नयरत्ति निरत्तय धुंमरियं । नभ भम्मि रहै तन घुम्मरियं ॥
छं० ॥ ३८ ॥

पच्छिम दिसि नील बरन्न करं । तहाँ प्रात पुरष्ष सजै समरं ॥
दिस वायवयं बनि क्रष्ण रँगं । दुरबुद्धि ग्रहै तस अंस अगं ॥
छं० ॥ ३९ ॥

दिसि दष्षिन उज्जल हन्न धरं । सजि सातुक मत्ति ततं अमरं ॥
ईसायन यं रंग सुक्कसयं । उपजै सु उचाट मनं नभयं ॥
छं० ॥ ४० ॥

ब्रह्म मंडय पंढ कहै गुरयं । घर मद्धि अनेक मनं सुरयं ॥
मन हथ्थ करै प्रथमं मनुषं । हुआ निर्भरयं तन बद्धि सुषं ॥
छं० ॥ ४१ ॥

जिम दीपक बात बसं हलयं । इम क्रम्मय चिंत नरं चलयं ॥
मन हथ्थ भयें सब हथ्थ भयौ । प्रगटै तन जोति ह अंध गयौ ॥
छं० ॥ ४२ ॥

रावल जी का मन को वश करने का उपदेश करना।

कवित्त ॥ मुगति कठिन मारग्ग । क्रम्म छुट्टै न पंच वर ॥
मन लिप्पै मन छिपै मन । सु अवतरै घरघ्घर ॥
मन बंधै क्रम राज । मन सु क्रम जमय छुड़ावै ॥
मन साषी सुष दुष्ष । मनह जावै मन आवै ॥
मन होइ ग्यान अग्यान तजि । गुर उपदेसह संचरै ॥
मन प्रथम अप्प बसि किज्जियै । समर सिंघ इम उच्चरै ॥छं०॥४३॥

दूहा ॥ समर सिंह भारथ्थ में । जोग हुहै गुन जान ॥
सो निकस्यौ भर समर तें । को जिन करौ गुमान ॥ छं० ॥ ४४ ॥

ढुंढाराय का कहना कि राजा का धर्म राज्य की रक्षा करना है।

कवित्त ॥ तब ढुंढारह राइ । मत्त मन बत्त सु कथ्थिय ॥
समर सिंघ रावरह । समर साहस गति पथ्थिय ॥
तुम बीरन गंजागि । भूप साहस रस पाइय ॥
भारथ्था रजपूत । स्वामि आचारा धाइय ॥

आचार धार भरथ्थ मति। तत्त बत्त जानौ जुगति॥
अग्गै सु पंग अनभंग सजि। राज रष्षि कीजै सुमति॥छं०॥४५॥

मंत्री का कहना कि सबल से वैर करना बुरा है।

दूहा॥ कहै मंचि भर समर सुनि। सरभर करि संग्राम॥
सबला सूं मंडत कलह। धर भर छिज्जै ताम॥ छं०॥ ४६॥

रावल जी का उत्तर देना।

कहि मंची रावर समर। सुनि मंची बर बैंन॥
तमकि तेग तन तोक बँधि। करि रत्ते बर नैंन॥ छं०॥ ४७॥

चौपाई॥ ससिर रित्त रित राजह संधि। गम आगम सित उष्ण प्रबंधि॥
तपति सूर रत्ते रन रंगं। दुरिग सीत भगि कायर अंगं॥
छं०॥ ४८॥

रावल जी का सुमंत प्रमार से मत पूछना।

दूहा॥ बंधि परिग्गह गुर जनह। मंची सजन सु इट्ठ॥
भृत्त सु लोइ पुच्छै न्रपति। सुमति सुमंच अदिट्ठ॥ छं०॥ ४९॥

सुमंत का उत्तर देना कि तेज बड़ा है न कि आकार प्रकार।

कवित्त॥ सुनि सुमंत पंमार। इक्क गरुडहु र नगन गन॥
अगस्ति एक सायर सु। इंद्र इक्कै र कूट घन॥
निसचर घन काली सु। पंच पंडव र लष्य अरि॥
तारक चंद अनेक। राहु चंपै सु वसन जुरि॥
मद करी जुथ्थ पंचाइनह। मत्त एक धक्कह वहै॥
चिचंग राव रावर कहै। अतत मंत मंची कहै॥ छं०॥ ५०॥

सिंह जू का रात्रि को छापा मारने की सलाह देना।

कवित्त॥ स्वामि वचन सुनि सिंह। जूह रतिवाह विचारिय॥
सबला सों संग्राम। भार भारथ्थ उतारिय॥
जं जानै सब कोइ। जीभ जंपै जस लोइय॥

अरि भंजै तन भजे। टरै दीहंतन दोइय ॥
आघाय घाय घट निघटै। हय गय हय मंचै रव न ॥
भंजै न ध्रम्म अम्मन मरन। तत्त मंत सट्टै रवन ॥ छं० ॥ ५१ ॥

रावल समरसिंह जी का कहना कि दिन को युद्ध कर स्वच्छ कीर्ति संपादन करनी चाहिए।

समरसिंह रावर नरिंद। रति उथपि दीह थपि ॥
दीह धवल दिसि धवल। धवल उट्ठहि सु मंच जपि ॥
धवल दिव्य सुनि कन्न। धवल कहुँ धवली असि ॥
धवल वृषभ चढ़ि धवल। धवल बंधै सु ब्रह्म बसि ॥
धवलही लीह जस विस्तरै। धवल सेद संमुष लरै ॥
यों करौं धवल जस उब्बरै। धवल धवल बंधै बरै ॥ छं० ॥ ५२ ॥

सुनिय मंच बर मंच। गुझ्झ गामार मंच सुनि ॥
जनम लभ्भ सोइ क्रित्ति। क्रित्ति भंजियै तनह फुनि ॥
जु कछु अंत न्रिमयौ। कहै सब माया मेरी ॥
मरत न माया कहै। निमष चलहु न मुष हेरी ॥
पहु जग्ग दान अप्पन सुगति। जुगति मोह भंजै भरै ॥
भोगवी दुष्य जीवत बहुत। जु कछु कहौ जिन उब्बरै ॥छं०॥५३॥

चढ़ाई के समय चतुरंगिनी सेना की सजावट वर्णन।

चोटक ॥ जु सुनं धनि बैन प्रमान धरं। चढ़ि संमुष पंग नरिंद घरं ॥
सजि हूर सनाह सुरंग अनी। सु कछै जनु जोग जुगिंद रनी ॥
छं० ॥ ५४ ॥

बर बंक तिलक्क चिलक्क रसी। घन मद्धि उग्यौ जनु बाल ससी ॥
सह बीर बिराजि सनाह इयं। जनु राहह बंधि सु भान दियं ॥
छं० ॥ ५५ ॥

सब सेन सु सिंगियनाद कियं। सुर मोहि सिवापति दंद दियं ॥
जुग वह निबंधि सनाह कसी। उर नह चिपंडिय बहर सी ॥
छं० ॥ ५६ ॥

बजि बीर अनेक प्रकार सुरं। हर चूर चमंकति गंग बरं।
बजि बीरन नद्द सु सद्द रजं। सु उलद्दति मद्दति भद्द गजं॥
छं० ॥ ५७ ॥
सहनाइ नफेरि अनेक सुरं। बर बज्जि छतीस निसान घुरं॥
दुति देव वसिष्ठ निसाचरयं। जम तेज सु बंधन निद्दुरयं॥
छं० ॥ ५८ ॥
चितरंगपती चतुरंग सजी। तिन दिष्षत पंति समुद्द लजी॥
चतुरंम चमू चमकंत दिसं। पहुपंड निसान दिसा कु रसं॥
छं० ॥ ५९ ॥
नल बज्जि हयं बहु सद्द रजे। पटतार मनों कठतार बजे॥
घन घुघ्घर पष्षर बज्जि करी। सुर बंधि सुरप्पति चित्त हरी॥
छं० ॥ ६० ॥
*चान्द्रायन ॥ विधि विनान चतुरंग ति, सज्जि हहल्लि हय।
समर समर दिसि रज्जि, बाल अरु हद्ध वय॥
उद्यौ छच नयजानिय, मानिय पंग न्रिय।
कढ्ढि लोह बढ़ि कोह, समाहिर बीर वय॥ छं० ॥ ६१ ॥

युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ कटै लोह सारं, विहथ्थं ति भारं। तुटैं सार भारं, सरोसं प्रहारं॥
छं० ॥ ६२ ॥
करै मार मारं, सङ्खरं पचारं। जगी कूक वारं, उड़ें छिंछ सारं॥
छं० ॥ ६३ ॥
सु नंदी हकारं, कटं कंध पारं। कामद्धं निनारं, रुधिं छिंछ सारं॥
छं० ॥ ६४ ॥

* मूल प्रतियों में इसे मुरिल्ल करके लिखा है। किन्तु मुरिल्ल से और इस से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह छन्द वास्तव में चान्द्रायण ही है। अन्त में जो इस छन्द में रगण के स्थान में नगण का प्रयोग है वह लिपि भेद मात्र है। पढ़ते समय ह+य का उच्चारण है और व य का उच्चारण "वे" होगा। इस प्रकार से सगण का उच्चारण होता है। अस्तु इसीसे हमने इस छन्द को चान्द्रायण नाम से सम्बोधन किया है।

स चुंथै करारं, तुटै गग्ग भारं। अपारंत मारं, वहै दिव्य भारं॥
छं० ॥ ६५ ॥
रसं बीर सारं, पती देव पारं। सुमंती डकारं, चवट्ठी सु भारं॥
छं० ॥ ६६ ॥
रुधी धार पारं, उछारैति वारं। उमापत्ति लीनं, जपै जंग भीनं॥
*गहै मुत्ति तथ्यं, उछारें विहथ्यं। .... ॥ छं० ॥ ६७ ॥

पंग के दल का व्याकुल होना।

दूहा ॥ दल अग्गी अग्गी अनी। हलमलियौ दल पंग॥
यों उभ्भौ सुभ्भै सुभुअ। तिहुंपुर मंडन जंग॥ छं० ॥ ६८ ॥

पंगराज का हाथी छोड़ कर घोड़े पर सवार होना।

कवित्त ॥ हक्कि मंगि गजराज। छंडि गज ढाल सु उत्तर॥
रत्तें रेन विसाल। तेग बंधी दल दुत्तर॥
कै हथ्थी जमजाल। काल छुट्टा मय मत्ता॥
कै अप्पानै अप्प। सेन रावत्त विरत्ता॥
उत उतंग बहु पंग दल। समर समह भारथ भिरिग॥
सारथ्थ किण्ण सम बान बढ़ि। रोकि भीम कंदल करिग॥छं०॥६९॥

भुजंगी ॥ चढ्यौ पंग जंगं सु मानिक्क बाजी। नियं वर्न सेनं मनं नील साजी॥
फिरै पष्परं भार कूदै उतंगा। मनों बायपूतं धरै द्रोन अंगा॥
छं० ॥ ७० ॥
जसं पंग जद्यौ जुलै पंग धारी। घनं सार चोरं न गंगा विचारी॥
चमक्कंत नालं विसालंत मोहै। उभै चंद बीयं घटा जानि सोहै॥
छं० ॥ ७१ ॥
रवी रथ्थ जोरें सु भौंरै भ्रमावै। मनंषी न अंषीन पंषी न पावै॥

---

* ये युद्ध वर्णन के छन्द या तो छन्द ७४ के बाद होने चाहिए थे या इन्हीं छन्दों के ऊपर का कुछ अंश लोप या खंडित होगया है। क्योंकि कवि ने सर्वत्र इसी प्रकार से वर्णन किया है कि पहिले सेना की तैयारी फिर दोनों सेनाओं का जुड़ाव और तिसके पीछे युद्ध का होना परन्तु यहां का पाठ इस क्रम से बिलकुल विरुद्ध पड़ता है।

मनों बाय गंठी गयौ ब्रह्म बंधी । पियै अंजुली नीर उत्तंग संधी ॥
छं० ॥ ७२ ॥

डमं सीस डोलं चिभंगीति सोहै । गिरं नंचि केकी कला आनि मोहै ॥
छं० ॥ ७३ ॥

रावल जी के वीर योद्धाओं का शत्रु को चारों ओर से दबाना ।

कवित्त ॥ समर सिंघ रावर समान । हय नंषि समर हर ॥
कन्ह जैत बर बीर । भान नारेन सिंघ हर ॥
पल्हदेव न्रप सोम । अमर न्रप ब्यंठि आनि भ्रम ॥
प्रति प्रताप तन समर । ताप भंजन सांई श्रम ॥
बंकम्म बीर बलिभद्र बर । झर तरवारनि अधर झर ॥
चतुरंग चंपि चावद्दिसा । धार पहार विभार झर ॥ छं० ॥ ७४ ॥

युद्ध की तिथि और स्थल का वर्णन ।

दूहा ॥ बार सोम राका दिवस । पूरन पूरन मास ।
समुष सूर संमुह लरै । मुकति सु लूटन रासि ॥ ७५ ॥
नद षारी दुरगा सु पुर । प्रथम जुद्ध बर बीर ॥
दुतिय जुद्ध परि समर सों । पत्ति सु पट्टन धीर ॥ छं० ॥ ७६ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर घमासान युद्ध वर्णन ।

चोटक ॥ पग षोलि विहथ्थ सु बथ्थ परें । दुहु सीस सु रंग सुझार झरें ॥
सिरदार सु गाहत पंग अनी ॥ सुमनो जल बारधि पंति घनी ॥
छं० ॥ ७७ ॥

फुटि षग्ग किरच्च जुझार झरं । मनु झिंगन भद्दव रेनि परं ॥
उडि छिंछनि रत्त तरत्त भए । विहझाइन धाइन सूर नए ॥
छं० ॥ ७८ ॥

घन घाइ घटं घट अंग रजै । मनु देव प्रद्युनय बंधु पुजै ॥
विफरै बहु हथ्थनि पाइ फुरै । बहु सूर उचीरन से उचरें ॥
छं० ॥ ७९ ॥

चित डोलन पिंड को आइ कहीं। दिषि बीर भरं लपटाइ तहीं॥
दोउ सूर महाबल के बरकें। सु बजें मद मोषन के सुर कें॥
छं० ॥ ८० ॥

करि भंजि कुँभस्थल षग्ग लसी। कुवलथ्थलकें भर में करसी॥
रुधि बिंद द्रवै कठ सोभ जगै। मनुं इंद्रबधू चढ़ि पुट्ठि लगै॥
छं० ॥ ८१ ॥

उपमा पलयं चलयों न कही। सकुचें सरसी जु समुद्द मही॥
गज भंजि कुंभस्थल पग्ग दमैं। सु नचै जनु बिज्जुल बद्दल में॥
छं० ॥ ८२ ॥

गजराज धुकै बहु कंपि करी। तिन सथ्थ महावत कून परी॥
इन भेषय गज्जय मान छरं। दस कंधय डुल्लि किलास बरं॥
छं० ॥ ८३ ॥

गज राजति षग्गति मध्य गसं। मनों तेरसि को ससि अहनिसं॥
गजमुत्ति लगै षग यों दमकै। तिन की उपमा दिषि देव जकै॥
छं० ॥ ८४ ॥

मुठि चंपि द्रढं करपान गसी। निचुरैं मनु नीर सु मोतिग सी॥
छं० ८५ ॥

रावल समर सिंह जी के सरदारों का पराक्रम वर्णन।

कवित्त ॥ समरसिंह सिरदार। सेनगाही जुरि भज्जिय॥
आहुट्टां मभ्भझाम। परिय द्वादस चमरज्जिय॥
पंग समानन तक्कि। भूमि नंषत षग वग्गिय॥
बीरा रस बलबंड। हथ्थ दच्छिन भर लग्गिय॥
जिम परत पतंग जु दीप कन। तूटि तूटि निक्करि परत॥
षुरतार धरें हय षुटि धरनि। षलन षलक षग्गह भरत॥ छं० ॥८६॥

पद्धरी ॥ झर करत विद्दुल भर लोह मार। छुट्टंत नाल उद्धत पहार॥
उट्ठंत धूम धर आसमान। बुड्डंत सार रुधि गूद मान ॥छं०॥८७॥
रुंडंत व्योम अंती अनंत। छुट्टंत नेह घट जीव जंत॥
गुड्डंत गिद्ध धर वंच वोथ। उथ्थलकि थलकि बाराह मोथ॥
छं० ॥ ८८ ॥

कमधज्ज सेन आहुट्ठ ऐम। राहु अरु केत रवि सोम जेम ॥
सुभ्भै न अंषि नह सब्द कान। भर रैंन दीह रष्षत भान ॥
छं० ॥ ८९ ॥

चढ्ढे जु समर मुष समर राव। पत्ते कि पत्त डंडूर वाव ॥
रन रह्यौ रोपि वाराह रूप। पेषिय सु भयंकर पंग भूप ॥
छं० ॥ ९० ॥

दूहा ॥ भयति भीति दुअ जुद्ध हुअ। अवति वंत सत सूर ॥
दह अग्गै अस्तुति सुवर। न्रप भारथ्थ करूर ॥ छं० ॥ ९१ ॥

कवित्त ॥ कढ्ढि समर विच समर। समर रुक्यौ जु समर भर ॥
अजुत जु अति बुध सख्ख। सख्ख बज्जै सुमंत भर ॥
भय अभ्भित मय राम। बीर छुट्टे घन छुट्टै ॥
अघट घट्ट घूंटंत। ईस ग्यानह व्रत छुट्टै ॥
संक्रांति जेठ आषाढ़ मधि। नीर दान सम दान नहि ॥
सामंत सूर साईं भिरत। जोग न पुज्जै मंत लहि ॥ छं० ॥ ९२ ॥

सत्त विरत साईं सु। मत्त लग्गे असमानं ॥
हूतत जुद्ध आरुद्ध। बीर मत्ते रस रानं ॥
हथ थक्कत श्रम करै। मन न श्रम सौं उच्चरैं ॥
गान दगध सौं कथ्थ। गुरु न मंचह विस्तारैं ॥
घन धार भार हरुअंत घट। कन्यौ घट्ट गरुअंत जुरि ॥
दिन पंच परें पंचो विपत लन्यौ न को रवि चक्कतर ॥
छं० ॥ ९३ ॥

भुजंगी ॥ न जानं न जानं न जानं प्रमानं। न रुद्रं न रुद्रं न रुद्रं न जानं ॥
न सीखं न सीखं न सीखं न गाहं। गुरं जा गुरं जा गुरं जासु चाहं ॥
छं० ॥ ९४ ॥

घनं जा घनं जा घनं जानि लोभी। मुकत्ती मुकत्ती मुकत्तीत सोभी ॥
छिमंते छिमंते छिमंते समानं। भ्रमंते भ्रमंते भ्रमंते भ्रमानं ॥
छं० ॥ ९५ ॥

उरंगं उरंगं उरगंति धारं। ततथ्थे ततथ्थे ततथ्थे सु भारं॥
छं० ॥ ९६ ॥

समर सिंह जी के शत्रु सेना में घिर जाने पर १२ सरदारों का उनको वेदाग बचाना।

दूहा ॥ भयति भरवि भ्रम सयन भर। गयनति गुर गुर गाज॥
लरन सूर पहुपंग कों। करि भारथ्थ सु काज॥ छं० ॥ ९७ ॥
सार सार सज्जे सु हत। सु हत बचन सुनि काज॥
सो सिर मंडिय लीन बर। जित छिति छित्ती भाज॥ छं० ॥ ९८॥
कल सु चित्त मत्तह सु चित। रचि न्नप करन उपाय॥
भर भारथ्थति मुंच तह। रहै सु जीव न चाय॥ छं० ॥ ९९ ॥

कवित्त ॥ सबर सूर रजपूत। पत्ति देष्यौ घुमत्त घट॥
समर समर बिच चपत। नीठ [1]कढ्यौ द्वादस्स भट॥
[2]बीच घत्त सो मझि। षग्ग षल रुक्कि भंजि थट॥
बीर रंग बिप्पहर। समर संमुह सुभम्यौ नट॥
अनभंग पंग दल भंग किय। अठिल थाट ढिल्लिय सुभट॥
प्राक्रम्म पिष्षि भम्मेव सुर। सीस कज्ज भमि धर जट॥
छं० ॥ १०० ॥

इस युद्ध में दो हजार सैनिकों का मारा जाना।

दूहा ॥ उभय सहस भर लुथ्थि परि। तिन में सत्त सु सूर॥
द्वादस अग रावर परत। न्निप कढि निठ्ठ करूर॥ छं० ॥ १०१ ॥

रावल जी को निकाल कर वीरों के विकट युद्ध का वर्णन।

पद्धरी ॥ कढि सेन समर अस मझ्झि सेन। रुक्कयौ पंग भर भिरि करेन॥
लावार लोह भिरि समर धेन। धावंत तप्पि सब षग्ग देन॥
छं० ॥ १०२ ॥
तन बीर रूप लज्जा प्रहार। कढ़ि असि सूर बर करि दुधार॥

(१) ए.-कढ्यौ। (२) ए. कृ. को.-त्रीस घटत।

झम झमी तेग बर तड़िग रूप। बाहेवि हथ्थ करि आन भूप॥
छं० ॥ १०३ ॥
ढल मली ढाल गज फिरति स्रून। नग पंति दंति दीसै सदून॥
तरफरहि लुथ्थि घट घाय धुक्कि। उच्छरें मीन जल जानि मुक्कि॥
छं० ॥ १०४ ॥
आघात घात घट भंग कीन। बर भङ्ग स्रूर तन छीन छीन॥
परि समर सुभर रषि समर रूप। ढुंढयौ षेत सह पंग भूप॥
छं० ॥ १०५ ॥

रावल जी के सोलह सरदारों का मराजाना।

दूहा॥ गरूअत्तन तन हरूअ भय। घाट कुघाट सु कीन॥
समर स्रूर सोरह परिग। सुगति मग्ग जस लीन॥ छं० ॥ १०६ ॥

सरदारों के नाम।

कवित्त॥ कन्ह जैत जैसिंघ। पंच चंपे पंचाइन॥
सोम स्रूर सामला। नरन नीरह नारायन॥
रूप राम रन सिंह। देव दुज्जन दावा नल॥
अमर समर सब जित्ति। समर सध्यौ साईं छल॥
बैकुंठ बट्ट जिन सङ्ग्यौ। रषि सांई जिन सत्त बल॥
माहेस महनसी महन बर। महन रंभि जित्यौ सकल॥छं०॥१०७॥

रावल जी का विजयी होना और आगे की कथा की सूचना।

दूहा॥ कन्ह भतीज उठाय लिय। हय नंध्यौ बर अग्ग॥
पंग ढूंढि भारथ्थ भर। सह मिल्यौ जुरि हग्ग॥ छं० ॥ १०८ ॥
समर सु सद्धे समर बर। बाल [1]सुयंबर लोग॥
जिन बर बर उतकंठ भय। पानि भरै संजोग॥ छं० ॥ १०९ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके जैचंद राव समरसी जुद्ध नाम छप्पनवों प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ५६ ॥

(१) ए. कृ. को.-सयंबर।

अथ कैमासबध नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(सत्तावनवां समय।)

राजकुमार रेनसी और चामंडराय का परस्पर घनिष्ट प्रेम और चंदपुंडीर का पृथ्वीराज के दिल में संदेह उपजाना।

कवित्त॥ दिल्लीवै चहुआन। तपै अति तेज पग्ग वर॥
चंपि देस सव सीम। गंजि अरि मिलय धनुद्धर॥
रयन कुमर अति तेज। रीझि हय पिट्ठ विसंमं॥
साथ राव चामंड। करै कलि किति असंमं॥
मेवास वास गंजै दुगम। नेह नेह बढ़ै अनत॥
मातुलह नेह भानेज पर। भागनेय मातुल सुरत॥ छं०॥ १॥
सयन इक्क संवसहि। इक्क आसन आरुम्महि॥
[1]वीरा नह विहार। भार जल राइ सुरम्महि॥
भागनेय मातुलह। जानि अति प्रीति सु उम्भर॥
चिंति चंदपुंडीर। कही प्रति राज हित्त भर॥
चावंड रयन सिंघह सु [2]घर। अप्प नेह बंध्यौ असम॥
आनौ सु क्रत्य वारनह कलि। कलै भ्रम्म धरनिय विसम॥
छं०॥ २॥

दूहा॥ चिंति वत्त पुंडीर चित। अप्प सु गुन गंभीर॥
समय काज प्रथिराज न्रप। हिय न प्रगट्टिय हीर॥ छं०॥ ३॥
दल बद्दल भर भीर भरि। चवत स्त्रर सुर छंद॥
सामंत स्त्रर [3]सम्मूह सजि। क्रीड़त ईस नरिंद॥ छं०॥ ४॥

पृथ्वीराज का नगर के बाहर सभा रचकर वर्षा की बहार लेना और सायंकाल के समय महलों को आना।

(१) ए. कृ. को.-वारि। (२) मो.-पर (३) ए. कृ. को.-सनाह, समोह।

पद्धरी ॥ संवत्त एक पंचास पूर। आषाढ़ मास नवमी सनूर ॥
रचि विमल षष्य उद्योत भान। प्राचीय अमल [1]फड्डिय पयान ॥
छं० ॥ ५ ॥

सत सूर पूर सम रूकु राज। मंड्यौ सु देव देवन समाज ॥
सत रंज राज बर पेल मंडि। मंचीन अप्प आरंभ थंडि ॥
छं० ॥ ६ ॥

पज्जूनराव बर [2]चंद्रसेन। विचरंत राव कर [3]दष्षि नेत ॥
चामंड जैत कर वाम तेन। मुष अग्ग कन्ह निद्दुर सु देन ॥
छं० ॥ ७ ॥

अरु सलष लषन विंझल नरिंद। दस निकट रंग सोमेस नंद ॥
कविचंद अग्र [4]विचुर सु छंद। तिहि प्रत्ति राज उच्चरि प्रबंद ॥
छं० ॥ ८ ॥

इक जाम सूर कीनौ पयान। उघघरिय धुंध धरनीय थान ॥
मिट्टै सु वाय चर चक्र होत। दष्षिनह वाम अनकूल सोत ॥
छं० ॥ ९ ॥

आएस स्वामि किन्नौ सनूर। बहुरे सु सकल सब भर सपूर ॥
फट्टेव [5]घूर थट्टे सु ताप। उघघर्‍यौ गेंन रवि धूप धाप ॥
छं० ॥ १० ॥

उक्कसे घोर घन गरुअ गुंज। दिस दिसा उमड़ि बद्दरन पुंज ॥
[6]कलपंत किलकि कल इल्ल राज। क्रीडंत रेनि इंछनि समाज ॥
छं० ॥ ११ ॥

झमकिय सु बूंद बढ्ढिय विसाल। विछुरेय सुभ्भगन प्रातकाल ॥
ठट्टौ सु आइ दीवान राज। किन्नौ सु हुकम न्रप इक्क काज ॥
छं० ॥ १२ ॥

---

(१) मो.-काट्टिय। (२) ए. कृ. को.-सेव।
(३) ए. कृ. को.-दच्छिनेत्र। (४) मो.-विछुरे।
(५) मो.-सूर। (६) ए. कृ. को.-"कालांत किलकि कल महल राज"।

दूहा ॥ दूत दूत दरबार बहु । सजे सूर भर साज ॥
सजे बीर दुंदुभि बजे । हदफ पेषि प्रथिराज ॥ छं० ॥ १३ ॥

कवित्त ॥ चढ्यौ राज प्रथिराज । सज्जि बर थट्ट बाज गज ॥
मंचि बोलि कयमास । राव पज्जून चंद्र रज ॥
रा चामँड बर जैत । कन्ह निढ्ढुर नर नाहं ॥
सलष लषन बघेल । नरिंद् विंझा षग बाहं ॥
कम्मान कठिन हथ हथ्थ करि । बान बिबिध बाहंत बर ॥
बाहुरे सूर रवि [1]अथ्थमित । सोर घोर पावस अतर ॥ छं० ॥ १४ ॥

हाथी के छूटने से घोर शोर और घबराहट होना।

स्वान माल हथ्थान । जोर घेरे षवास रज ॥
बेढ़ि कूट कंठेर[2]। बग्घ बायात कोरि हर ॥
इक बत्त कहति बढ़ि । बंधि गजराज डारि कर ॥
.... ॥
बहुरेव सूर मुष अथ्थमित । जूथ जितंतित तुंग बर ॥
छुट्टौ सु पाट गजराज सुनि । घोर सोर पावस अतर ॥ छं० ॥ १५ ॥

हाथी का थान से छूट कर उत्पात करना और चामंडराय का उसे मार गिराना।

पद्धरी ॥ संवत्त एक पंचास अंग । आषाढ़ मास दसमी सुरंग ॥
डंडूर बात जल जात उर्द्ध । घन पूरि सजल थल प्रथम बुट्ठि ॥
छं० ॥ १६ ॥

घहराइ स्याम बद्दल बिसाल । बिथ्थुरिय सयल सिर मेघ माल ॥
उभ्भरिय चसिय चप्पिय सु अप्प । संदेस मेस केकी सु दप्प ॥
छं० ॥ १७ ॥

क्रीलंत केलि चढ़ि अप्प राज । सामंत सूर सब सजे साज ॥
शृंगारहार गजराज पट्ट । मयमंत मत्त मद झरत [2]पट्ट ॥
छं० ॥ १८ ॥

(१) मो.-अथ्यमन। (२) ए. कृ. को.-उपट्ट।

बंध्यौ सु थंभ संकर गुराइ। मानै न सइ उनमत्त बाइ ॥
गज्जंत मेघ धुनि सुनिय श्रप्प। धुक्किय सु थंभ संकर सु दप्प ॥
छं० ॥ १९ ॥

उप्पव्यौ श्रप्प चल्ल्यौ विराइ। मानै न श्रनिय श्रंकुस दुवाइ ॥
ढाहंत मट्ठ मंडप अनूप। प्राकार द्वार देवाल जूप ॥ छं० ॥ २० ॥
ढाहंत उंच आवास धव। मानै न मार प्राकार ढव ॥
फारंत उंच तरु चौ उरारि। लग्गौ सु लोग सव्वइ हँकार ॥
छं० ॥ २१ ॥

पय तेज तुरिय पावै न आनि। मंडे सु [1]दुयस चौपय प्रमान ॥
मद्गंध श्रंध सुभझै न राह। सनमुष्ष मिलिग चामंड ताह ॥
छं० ॥ २२ ॥

दाडिम्म पेलि आवंत ग्रेह। संकरे रोहि मिलि गज सु रेह ॥
गजराज देषि चामंडराइ। उप्पारि सुंड सनमुष्ष धाइ ॥
छं० ॥ २३ ॥

चामंड देषि आवंत गज्ज। पच्छै जु पाइ चिंतिय सु लज्ज ॥
उप्पारि संग है संघ देस। उक्कसिय कंध श्रद्दइ असेस ॥
छं० ॥ २४ ॥

लाघवी दीन वहि षग्ग धार। सम सुंड दंत तुट्टिय सुजार ॥
ढहि पर्यौ मंत धरनीय सीस। सब लोकदेव दीनी असीस ॥
छं० ॥ २५ ॥

चामंडराव निज ग्रह अपार। भातेज सथ्थ रयनं कुमार ॥
संभलिय वत्त पुहमी नरेस। कलमलिय चित्त अप्पइ असेस ॥
छं० ॥ २६ ॥

शृंगारहार का मरना सुन कर राजा का क्रोध करना और चामंडराय को कैद करने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ सुनिय वत्त प्रथिराज। हन्यौ सिंगारहार गज ॥
चिंति वत्त पुंडीर। अवर गंठी सु गुझझ रज ॥

(१) ए. कृ.को.-दुयय।

अप्प कोप उर धरिय । गल्ह [1]कातिन्न कसारिय ॥
रामदेव गुर राज । मुष्प अग्गे अभ्भारिय ॥
बेरी सु आनि दीनि न्रपति । जाय पाइ चामँड भरौ ॥
संकोच प्रीति सनमंध सुष । ननह षंड धरनी करौ ॥ छं० ॥ २७ ॥

बिभ्भयौ बीर प्रथिराज । राज दरबार बुलाइय ॥
हाहुलिराव हमीर । बोल पज्जून लगाइय ॥
आज राज गज मारि । कल्हि बंधे फिरि तेगा ॥
राजनीति नन होइ । स्वामि अग्या तजि वेगा ॥
तब देन पाइ पच्छे न भय । हांसीपुर दीने तबै ॥
इहि काज कीन अब अग्रमन । स्वामि गज्ज मारन अबै ॥
छं० ॥ २८ ॥

लोहाना का बेड़ी लेकर चामंडराय के पास जाना ।

कहै राज प्रथीराज । मीच चामंड न मारौ ॥
सुनहु सूर सामंत । मरन कहुत अत्तारौ ॥
लोहानौ आजान । हथ्थ बेरी लै चल्लं ॥
साम दान करि भेद । पाइ चामंड सु घल्लं ॥
अनभंग अंग है राम गुर । राज रीति राषन्न तिहि ॥
दाहिम्म राव दाहर तनय । सुनि अवाज चर चित्त रहि ॥छं०॥२९॥

चामंडराय के चित्त का धर्मचिंता से व्यग्र होना ।

दोय सहस दाहिम्म । पहिरि सन्नाह सु रज्जिय ॥
बज्जि साहि वर अग्र । बीर बाहै कर बज्जिय ॥
चिंत राव चामंड । ध्रत्त हुई भ्रम्म न छोड्डय ॥
सामि सनंमुष लोह । सामि दोही घर जोड्डय ॥
पूछियै सेव जिन देव करि । दुष्ट भाव किम चिंतियै ॥
करतार घरह घर कित्ति की । दुहु धर मरन न जित्तियै ॥
छं० ॥ ३० ॥

(१) ए. कृ. को.-काढिन ।

गुरुराम का चामंडराय को बेड़ी पहनाना।

लै बेरी गुर राम। गए चामंड राव ग्रह ॥
कर दीनी दाहिम्म। रीस गजराज घून कह ॥
तब लीना दाहिम्म। भ्रम्म स्वमित्त सुद्ध मन ॥
सो लीनी करभेलि। प्रेम धारी पय अप्पन ॥
धनि धन्नि धन्य सब नयर हुअ। सयल धन्य संचरि सु सद ॥
चामंडराय दाहर तनै। नीति रेह रष्षी सु हद ॥ छं० ॥ ३१ ॥

चामंडराय का बेड़ी पहिनना स्वीकार कर लेना।

दूहा ॥ बंदि लई चामंड ने। बेरी सम्हौ हथ्थ ॥
साम भ्रम्म जुग रष्षयौ। जीरन जग्ग सु कथ्थ ॥ छं० ॥ ३२ ॥
यों घल्ली चामंड पय। ज्यों मद मत्त गयंद ॥
लाज [1]राज अंकुसन मिटि। धनि दाहिम्म नरिंद ॥ छं० ॥ ३३ ॥
यों अग्या प्रथिराज की। मन्नी दाहिम इंद ॥
ज्यों सुनि मंचह गारडी। मानत आन फुनिंद ॥ छं० ॥ ३४ ॥

इस घटना से अन्य सामंतों का मन खिन्न होना।

अरिल्ल ॥ भर बेरी चामंड राज जब। भए अति विमन सु मन सामंत सब ॥
भ्रमत राज आषेट पंग भय। ग्रह रष्षौ कैमास मंच रय ॥
छं० ॥ ३५ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना।

दूहा ॥ तिहि तप आषेटक भ्रमै। थिर न रहै चहुआन ॥
जोगीनिपुर बर रष्षि कैं। [2]दस सामंत प्रधान ॥ छं० ॥ ३६ ॥
चौ अग्गानी बीस बर। संग मुक्कि कैमास ॥
आषेटक चहुआन गौ। न्रप दुग्गाबन पास ॥ छं० ॥ ३७ ॥

राजा की अनुपस्थिति में कैमास का राज्य कार्य्य चलाना।

(१) मो.-काज। (२) ए. कृ. को.-गय।

कवित्त ॥ राज काज दाहिम्म । रहै दरबार अप्प बर ॥
आषेटक दिल्लिय । नरेस षेलै कमंधं डर ॥
देस भार मंचीस । राव उद्दार सु धारै ॥
न को सीम चंपवै । इह तप्पै सु करारै ॥
लोपै न लीह लज्जा सयल । स्वामि भ्रम रष्षै सुरुष ॥
क्रत नीति रीति बहु विसह । [1]बंछै लोक असोक सुष ॥
छं० ॥ ३८ ॥

दिन विशेष की घटना का वर्णन।

सुर गुर वासर सेष । घटिय दसमीय देव दिन ॥
पुब्ब षाट भद्दौं सु गाढ़ । घन वट्ट कोक मन ॥
गहकि मोर दद्दुरनि । रोर बद्दर बगपंतिय ॥
बन दिसान गहरान । चाप वासव चित मंतिय ॥
दरबार आय कैमास न्त्रप । कीय महल सिर रज्ज भर ॥
[2]घन संकुस तुछ सथ्थे सयन । चित्त मित्त दुअ [3]पंच बर ॥
दाहिम्म मिल्यौ इमि दासि सम । षीर मद्ध जिम नीर मिलि ॥छं०॥३९॥

कैमास का चलचित्त होना।

राज चित्त कैमास । चित्त कैमास [4]दासि गय ॥
नीर चित्त वर कमल । कमल चित्त बर भान गय ॥
भंवर चिंत भमरी सु । भँवर रत्तौ सु कुसुम रस ॥
ब्रह्म लोय रत्तयौ । लोय रत्तौ सु अधम रस ॥
उतमंग ईस धरि गंग कौं । गंग उलटि फिरि उदधि मिलि ॥
छं० ॥ ४० ॥

करनाटी की प्रशंसा और उसकी कैमास प्रति प्रीति।

दूहा ॥ नंदी देस बनिंक सुअ । वेसव नंजन हत्त ॥
बीन जान रस बनसु घर । राजन रष्षिय हित्त ॥ छं० ॥ ४१ ॥

(१) ए. कृ. को. वंधे। (२) ए. को.-छन।
(३) ए. कृ. को.-घन। (४) मो.-दाहिम्म।

दिव्य दास रष्यिय दिवस । सुग्रह पवारिय द्वार ॥
तिन अवास दासिय सघन । अह निसि रस रषवार ॥ छं० ॥ ४२ ॥

कवित्त ॥ समुष समुष ग्रह राज । [1]महल साला सु रूव रँग ॥
तहं सु रोहि कयमास । [2]सजन आवरिय अप्प अँग ॥
ऊँच महल करनाटि । देषि डंबर घन अंमर ॥
बैठी गवष ससष्यि । सुमन [3]मंती अह संमर ॥
सम दिट्ठि उट्ठि दाड़िम्म दुअ । अग्गि मार उब्भार चित ॥
अंकूरि द्रष्ट अंतर उरिय । प्रीति परट्ठिय [4]कालक्रत ॥ छं० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ नव जोवन श्रृंगार करि । निकरि गवष्यह पास ॥
देषि उझकि बर सुंदरी । काम द्रष्टि कयमास ॥ छं० ॥ ४४ ॥
करनाटी दासी सुवर । चित चंचल तिय वास ॥
काम रत्त कैमास तन । दिष्ट उरभिभय तास ॥ छं० ॥ ४५ ॥
करनाटी कैमास मन । राजन नथ्थि अवास ॥
भावी गत को मिट्टई । ज्यों जनमेजय व्यास ॥ छं० ॥ ४६ ॥
द्रष्टि द्रष्टि लोकन जरिग । मति राजन ग्रह काज ॥
सहिय करत असहिय समर । असहवान तन साज ॥ छं० ॥ ४७ ॥

दोनों का चित्त एक दूसरे के लिये व्याकुल होना, और करनाटी का अपनी दासी को कैमास के पास प्रेषित करना ।

ग्रह बाहुरि सामंत गय । रहि चौकी कैमास ॥
करनाटी सहचरि उभै । मुक्कि दई तिन पास ॥ छं० ॥ ४८ ॥

गाथा ॥ लग्गी द्रष्टि सु द्रष्टि अपारं । धरकी दुअर धार ना धारं ॥
कलमलि चित्त अभित्त दुआनं । लग्गो मीन केत क्रत बानं ॥
छं० ॥ ४९ ॥

(१) मो.-"माहिल साली सु सूव रँग" । (२) ए. कृ. को.-सुजन ।
(३) मो.-मतिनि । (४) मो.-कालक ।

थिय दाहिम्म केविक्रत काजं । उग्यौ सूर अस्त मनि साजं ॥
अप्प ग्रेह कैमास सपत्तौ । भेन बान गुन ग्यान वियत्तौ ॥ छं० ॥५०॥
छिन अंदर भीतर आवासं । नन धीरज्ज हंस रहै तासं ॥
मठी मत्ति रति गत्ति उहासं । अविगत देव काल निसि नासं ॥
छं० ॥ ५१ ॥

घटिय पंच पल बीस सबें कल । विचिव निसा उसास समुक्कल ॥
अति भंषत करनाटिय [1]जरं । काम कटाछ्य सु लग्गि करूरं ॥
छं० ॥ ५२ ॥

कवित्त ॥ कन्नाटिय कैमास । ग्रिह देषत मन लग्गो ॥
कलमलि चित्त सुहित्त । मयन पूरन जुरि जग्गो ॥
गयौ ग्रेह दाहिम्म । तलप अलपं मम किन्नौ ॥
बोलि अप्प सो दासि । काम कारन हित दिन्नौ ॥
[2]लै मंच राज अप्पं सरिस । जौ हम आनें चित्त हर ॥
सम चली दासि कैमास दिसि । जंपिय भेव सनेह बर ॥छं०॥५३॥

करनाटी के प्रेम की सूचना पाकर कैमास का स्त्री भेष धारण कर दासी के साथ होलेना ।

दूहा ॥ सुनि दासी करनाटि बच । निज संचरि सथ मुद्ध ॥
मत्ति घटी अरुझी सुरति । काल निसा क्रत निद्ध ॥ छं० ॥ ५४ ॥
सहचरि बर मोकलि कै । तकै बट्ट कैमास ॥
सम समझि सज्जें रच्यौ । करि करि हिये विलास ॥ छं० ॥ ५५ ॥
निसि भद्दव कद्दव कद्दल । आषेटक प्रथिराज ॥
दाहिम्मौ दहि काम रत । काल रैनि कै काज ॥ छं० ॥ ५६ ॥
दासिय हथ्थ सु हथ्थ दिय । चिय अंबर आछादि ॥
दासिय अंतर अप्प हुअ । [3]दरन स पिष्यौ सादि ॥ छं० ॥ ५७ ॥

(१) मो.-कुंजर ।
(२) ए. कृ. को.-" लै अप्प राज मंत्री सरिस " । (३) मो.-दरसन ।

साटक ॥ राजं जा प्रतिमा सुचीन प्रतिमा, रामा रमे साभती ॥
*नित्तौ रंकरि काम वाम वसना, सज्जीन संग्या गती ॥
आधारेन जलिन छीन तड़िता, तारा न धारा रती ।
सो मंची कयमास मास विषया, दैवी विचित्रा गती ॥ छं० ॥ ५८ ॥

सीढ़ी चढ़ते हुए इंछिनी रानी का कैमास को देख लेना ।

कवित्त ॥ मध्य महल कैमास । दासि सम अप्प संपत्तौ ॥
ग्रेह निकट पामारि । काम [1]कामना न मत्तौ ॥
घन सुगंध सुर भास । जानि वित इंछिनि चिंतिय ॥
आषेटक दिल्लेस । कहा सुर वास सु भत्तिय ॥
निसि स्याम चिलजि चौया वसन । चढ़्यौ अप्प सिढ्ढिय सुमन ॥
दृष्यौ सु द्दार इंछिनि तड़ित । नर सु [2]पित्त कोइ काम रत ॥
छं० ॥ ५९ ॥

सुग्गे का इंछिनी प्रति बचन ।

सुक चरित्त दासिय परषि । कहि इंछिनि संजोइ ॥
काग जाइ मुत्तिय चरै । हरति हंस का होइ ॥ छं० ॥ ६० ॥
सुक जंपै इंछनिय । एक आचिज्ज परष्षिय ॥
बीर भजन म्हगमदक । घाय कग्गं तन दिष्षिय ॥
बचन पंषि संभरै । बाल चरचित चित किन्ना ॥
बर आगम गम जानि । भेद सुक कौं किन दिन्ना ॥
निसि अद्ध अध्य सुझ्झै नहीं । बार बज्जि निसचर हरिय ॥
कैमास क्रम्म गहि दासि भरि । जेम क्रम्म सम्हा भरिय ॥
छं० ॥ ६१ ॥

इंछिनी का पत्र लिख दासी को दे कर पृथ्वीराज के पास भेजना ।

---

* यह साटक और इसके आगे की एक पंक्ति मो. प्रति में नहीं है ।

(१) ए. कृ. को.-कामन मन । (२) ए. कृ. को-पिट्ट ।

गयौ मध्य कैमास। रयनि संपत्त जाम इक॥
तंबुल्लिय सषि साष। पट्ट रागनिव निकट सिक॥
बाय घात दिय पूर। भ्रमिय पिय किय अति अंतह॥
अति सरोस पिक पानि। सु नष लिषि सषि कर कंतह॥
असि असन वारि मग्गह परिय। अवधि दीन दो घरिय कह॥
पल गयन सु राइह संचरिय। अयन सयन प्रथिराज जहँ॥
छं॰॥ ६२॥

रोला॥ *वर चढ्ढिय चतुरंग तुरंगम चारु सु नारिय।
इंछनि इथ संदेस चली बोलइ अवधारिय॥
दीनौ संग पवारि उभै तब चढ़ि चतुरंगं।
निसिनि अद्ध बढ़ि तिमर गई बाली अनुरंगं॥ छं॰॥ ६३॥

दासी का पृथ्वीराज के पड़ाव पर पहुंचना।

कवित्त॥ विमल बग्ग सुर अग्ग। धाम धारा ग्रह सुब्बर॥
जल सु थान अभिराम। दिल्लि अंम्यौति संस[1]तर॥
मंडे वासुर म्रगय। निसा प्रावट्टि मंनि मन॥
उभय सत्त हय तथ्थ। ताम विस्राम [2]स्राम तन॥
सिंगनि सु बान पर्यंक दुअ। अरिय सेज न्रप सयन किय॥
सूतौ सुथान निद्रा सकल। अति उर कंपिय दिघ्घि जिय॥
छं॰॥ ६४॥

राजा और सामंतों की सुसुप्ति दशा।

सनमुष साला सुभट। सकल विस्राम नींद भर॥
जाम देव बलिभद्र। बरन चहुआन संघहर॥
तोंवर राइ पहार। सिंघ [3]रनभय पावारं॥

---

* मूल प्रतियों में इसका पाठ चौपाई करके लिखा है। ए. प्रति में प्रथम पंक्ति का पाठ "वर चढ़िय चतुर तुरंगम नारिय" पाठ है।

(१) र. क. को.-समंतर। (२) ए. कृ. को.-श्रम।

(३) ए. कृ. को.-निम्मय।

खंगी खंगरराव। सूर सा अल्ह कुआरं॥
आजानबाह गुज्जर ¹कनक। सोलंकी सारंग बर॥
सामली सूर आरज कमँध। बाम जु इष्ष विसग्ग भर॥
छं०॥ ६५॥

गाथा॥ यों राजंत कमानं। राजन सयनेव सुभ्भियं एमं॥
ज्यों स्त्री बल भरति अंगं। श्रम थक्के दंपती उभयं॥ छं०॥ ६६॥

दूहा॥ रष्या करीव देव तुहि। सोवत न्रप भत सब्ब॥
दासी चौकी चक्रित हुअ। कर धरि छित्तिय जब्ब॥ छं०॥ ६७॥
न्रप सूतौ अंतर महल। आइ संपतिय दासि॥
जुग्गिनिवै चहुआन कौ। गुन किन्नौ अभिलास॥ छं०॥ ६८॥

दासी का राज शिविर में प्रवेश।

²बंध्यो षंभ सु रंभ हय। अप्प चली जहं राज
विसग सथ्थ दिष्यौ सकल। उर मन्यौ अविकाज॥ छं०॥ ६९॥

दासी का नूपुर स्वर से राजा को जगाने की चेष्टा करना।

गाथा॥ भू भत सु चित्त निद्रा। सिंगी सार रयन्न जग्गियं॥
विद्व दीपक अरंत मंदं। नूपुर सद्दानि भान अच्छानि॥छं०॥७०॥

साटक॥ भूपानं जयचंद राय निकटं, नेहाय जग्गाइने॥
संसाहस्स बसाइ साहि सकलं, इच्छामि जुद्वायने॥
मिद्धं चालुक चाइ मंच गहनो, दूरेस विस्वारने॥
अग्यानं चहुआन जानि रहियं, देवं तु रष्या करे॥ छं०॥ ७१॥

स्लोक॥ पंग जग्यो जितं वैरं। ग्रह मोषं सुरतानयं॥
गुज्जरी ग्रह दाहानि। दैवं तु रष्या करे॥ छं०॥ ७२॥

दूहा॥ सुनिय सु नूपुर सद्द न्रिप। सषी सु चिंतिय चित्त॥
मझिय कारन सिद्ध मनि। न्रप गति दुक्रित नित्त॥ छं०॥ ७३॥

दासी का राजा को जगाना और इंछिनी का पत्र देना।

(१) मो.-कमल। (२) ए. कृ. को.- बंध्यौ रंभ सुथंभ।

* चान्द्रायण ॥ छत्तिय हथ्थ धरंतं नयंनन चाहुयौ।
दासिय दष्षिन हथ्थ सु बंचि दिषाययौ॥
जिन बाना बलवान रोस रस दाहयौ।
मानहु नाग पतित्त अप्प जगावयौ॥ छं० ॥ ७४ ॥

साटक ॥ जग्यौ श्री चहुआन भूपति भरं, सिंघं समं पिष्षियं॥
दिल्लीनं पुरलोक चुंकति ग्रहं, तेजंबु कायं मुषं॥
सा संकी वय ग्रास धीरज रनं, वीराधि वीरं अरी॥
करनाटी वर दासि दाहिम वरं, मंची सरो भिष्टयं॥ छं० ॥ ७५ ॥

दूहा ॥ बंचि बीर कग्गद चरह। तरकि तोन कर सज्ज॥
निर तिन [1]कह दीनो न्नपति। सब सामंतन लज्ज॥ छं० ॥ ७६ ॥

पृथ्वीराज का इंछिनी के महल में आना।

आयौ न्नप इंछिनि महल। राज रीस चित मानि॥
अगनि दभ्भ कैमास कै। बीर बरज्जिय पानि॥ छं० ॥ ७७ ॥

राजा प्रति इंछिनी का बचन।

वहनि वच्छ महि अच्छ रस। इहि रस महि रसकंत॥
दनुकि देव गंध्रव्व जहि। [2]दासी निसि विलसंत॥ छं० ॥ ७८ ॥

† चान्द्रायण ॥ संग सयंनन सथ्थ न्नपत्ति न जानयौ।
दुहु विचह्नै इक दासिय संग समानयौ॥
इंद नरिंद फुनिंद्र अष्यि समानयौ।
घरह घरी दुअ मद्धि ततच्छिन आनयौ॥ छं० ॥ ७९ ॥

दूहा ॥ रति पति मुच्छि अलुभ्भि तन। घन घुम्यौ चिहुं पास॥
पानिन अंचन संचरै। महल कहल कैमास॥ छं० ॥ ८० ॥

इंछिनी का राजा को कैमास और करनाटी को दिखाना।

सुंदरि जाइ दिषाइ करि। दासौ दुहुं दाहिम्म॥

---

(१) ए. कृ. को.-किन। 　　　(२) ए.-दीसी।

* इस छन्द को चारों प्रतियों में रासा करके लिखा है परन्तु यह छन्द चान्द्रायण है। रास या रासा में २२ मात्रा और तीन जमक होते हैं। 　　　† रासा।

बर मंत्री प्रथिराज कहि। इह दुवाह बर क्रम्म ॥ छं० ॥ ८१ ॥
ना दानव ना देवगति। प्रभु मानुष बर चिन्ह ॥
सु रस पवारि गवारि कह। प्रौढ़ मुगध मति किन्ह ॥ छं० ॥ ८२ ॥
रमनि पिष्षि रमनिय बिलसि। रजनि भयानक माह ॥
चित्त दिषात सु चिंचनी। मोन बिलग्गिय बाह ॥ छं० ॥ ८३ ॥
निमष चित्त देष्यौ दुचित। सलष सलष्षिय नैंन ॥
हृदै सुयस....सुंदरिय। दुत्र षप थंपिय बैन ॥ छं० ॥ ८४ ॥
नीच बान नीचह जनिय। बिलसन किंत्ति अभग्ग ॥
सुनहु सरूप सु मुत्ति कर। दासि चरावति कग्ग ॥ छं० ॥ ८५ ॥
करकुँवंड लीनौ तमिक। [1]अरुचि दान बिधि जोय ॥
चरिय कग्ग तरवर सबै। हंसनि हंसन होइ ॥ छं० ॥ ८६ ॥

बिजली के उजेले में राजा का बाण संधान करना।

निसि अद्धौ सुझझै नहीं। बर कैमासय काज ॥
तड़ित करिग अंगुलि धरम। बान भरिग प्रथिराज ॥ छं० ॥ ८७ ॥

कैमास की शंका।

श्लोक ॥ अर्जुनः सायको नास्ति। दशरथो नैव दृश्यते ॥
स्वामिन् अषेटकं हत्ति। न च वानं न चयो नरः ॥ छं० ॥ ८८ ॥

बाण बेधित-हृदय कैमास का मरण।

दूहा ॥ बान लग्ग कैमास उर। सो ओपम कवि पाइ ॥
मनों हृदय कैमास कै। हथ्थ बुझिझय लाइ ॥ छं० ॥ ८९ ॥

कवित्त ॥ भरिग बान चहुआन। जानि दुरदेव नाग नर ॥
दिट्ठ मुट्ठि रस डुल्लिग। चुक्कि निकरिग्ग इक्क सर ॥
दुत्ति आनि दिय हथ्थ। पुठि पामार पचाऱ्यौ ॥
बानि हत्त तुटि कंत। सुनत धर धरनि अषाऱ्यौ ॥
इय कब सब सरसै गुनति। पुनित कह्यौ कविचंद तत ॥

(१) ए. कृ. को.- अरुचि।

यों पऱ्यौ कैमास आवास तें। जानि [1]निसानन छिचपति ॥
छं० ॥ ९० ॥

गाथा ॥ सुंदरि गहि सारंगो। दुज्जन दुभनोपि पिष्पि सायक्कं ॥
किं किं विलास गहियं। किंकिनी दुष्प दुष्पाई ॥ छं० ॥ ९१ ॥

कविकृत भावी वर्णन।

श्लोक ॥ भवितव्यं भवितव्यं। ललाटपटलाक्षरं ॥
दासिकाहेत कैमासं। मरणं हस्त राजभिः ॥ छं० ॥ ९२ ॥

पद्धरी ॥ नदि चलिय पूर गहराइ अत्ति। शृंगार तरुन मन मिलन पत्ति॥
मेदनी नील सोभंत रूप। प्रज रचिय सचिय सम दिष्ट भूप ॥
छं० ॥ ९३ ॥

गहकंत वृक्ष बद्दर बिरूर। पहु पुष्प मंच बहु दुकि क्रूर ॥
कुरलंत पुष्टि कोकिल कलच्छि। में मंत संढ जनु तंब पिच्छ ॥
छं० ॥ ९४ ॥

बर गजिय व्योम रंजि इंद्रबान। गहि काम चाप जनु दिय निसान ॥
नीलभा [2]गह्वर तरु रज्जि माल। गुन थकित जानि तुट्टे भुआल ॥
छं० ॥ ९५ ॥

मुकल्यौ अप्प भासंत पब्ब। मोहियौ रुक्कि मनि मुनि सु तब्ब ॥
....　....　...　....　....　॥ छं० ॥ ९६ ॥

कैमास की प्रशंसा।

कवित्त ॥ जिन कैमास सुमंचि। षोदि षट्टू धन कढ्यौ ॥
जिन कैमास सुमंचि। राज चहुआन सु चढ्यौ ॥
जिन कैमास सु मंचि। पारि परिहार सुरस्थल ॥
जिन कैमास सु मंचि। मेछ बंध्यौ बल सब्बल ॥
चिहुं ओर जोर चहुआन न्रप। तुरक हिंदु डरपन डरह ॥
बाराह बघघ बाराह बिच। सु बसि बास जंगल धरह ॥ छं० ॥९७॥

(१) ए. कृ. को.-" निसान छित्त पति "
(२) मो.-गरह ग्तर।

अन्यान्य सामंतों के सम दूषण।

साटक ॥ कन्हं कायक कांति कंत वहनं, चामंडतिय दावरं ॥
हरसिंघं बिय बाल बालय व्रतं, रामंच सलषं व्रतं ॥
[1]हं कंता बड़ गुज्जरं च कनक्क, परदारते विम्मुहा ॥
रामो काम जिता सनास विविधं, कैमास दासी रता ॥ छं० ॥ ९८ ॥

कवित्त ॥ जिन मंची कैमास। ग्रेह जुग्गिनि पुर आनी ॥
जिन मंची कैमास। बंध बंध्यौ पंगानी ॥
जिन मंची कैमास। भीम चालुक्क पहारं ॥
जिन मंची कैमास। [2]जिवन बंध्यौ षट वारं ॥
सोमत्त घट्ट कैमास की। दासि काज संदोह हुअ ॥
दुप्पहर चाह दस दिसि फिरै। कोइ हची अब्बहन तुअ ॥ छं० ॥ ९९ ॥

राजा का कैमास को गाड़ देना।

दूहा ॥ षनि गड्यौ कैमास तहं। दासी सम करि भंग ॥
पंच तत्त सरसे सुषै। प्रात प्रगट्टै रंग ॥ छं० ॥ १०० ॥
जो तक्त पंगति उप्पज्यौ। बैनन दिषि कविचंद ॥
साम प्रगट वर कंधनह। वर [3]प्रमाद मुष इंद ॥ छं० ॥ १०१ ॥

करनाटी का निकल भागना।

षनि गड्यौ न्रप सम धनह। सो दासी सुर पात ॥
दिव धारनै जलद्वि तें। लीला कहिग सु प्रात ॥ छं० ॥ १०२ ॥
षनि गड्यौ तिहि गवषनह। तजि गौषति गई दासि ॥
षनि गड्यौ कैमास वर। कित है दासी भासि ॥ छं० ॥ १०३ ॥
कर्नाटी कैमास दुति। दासि गई तन थान ॥
संकर रस संकर न्रपति। वर दंपति चहुआन ॥ छं० ॥ १०४ ॥
क्रित्य कुलच्छिन हीन चित। औरन जुग जुग हास ॥
निसि निद्रा ग्रसि चिंत वर। पुच्छिय इंछिनि भास ॥ छं० ॥ १०५ ॥

---

(१) मो.-है। (२) मो.-" जिनव वंधी बहु वारं "।
(३) ए. कृ. को.-प्रसाद।

उपोद्घात।

मुरिल्ल ॥ उभै दासि कैमास सपत्ती। दासी प्रनइ अमंत सु रत्ती ॥
आमनि गई सुक आभासी। विय निसपत्त प्रपत्तय दासी ॥
छं० ॥ १०६ ॥

देवी का कविचंद से स्वप्न में सब हाल जताना।

दूहा ॥ बर चिंता बर राजई। सुपनंतर [1]कविचंद ॥
जुगति मंद मौ मंद दै। भै वीचं भो विंद ॥ छं० ॥ १०७ ॥
गरै माल न्रप किंत्ति भय। सोहंती तन माल ॥
सुपनंतर कविचंद सों। विरचि देवि कहि ताल ॥ छं० ॥ १०८ ॥

गाथा ॥ न्रप हति बीर कैमासं। [2]मुर घट्टी रहि निसया ॥
बर गौ पुब्बह धनयं। रैनं निंद्रा गई बानं ॥ छं० ॥ १०९ ॥

दूहा ॥ मुष रत्ती पत्तौ न्रपति। दिसि धवली तमछिन्न ॥
चिंति मग्ग गहि सूर मन। पुरष प्रवानी खिन्न ॥ छं० ॥ ११० ॥

कविचन्द के मन में शंकाएं होना।

मुरिल्ल ॥ बाल सु भ्रत द्रिगया मन किन्नी। रवि मुष भरि दिषि वल्लभ भिन्नी ॥
को पुच्छै किन उत्तर दीयौ। तजि आषेट भ्रम्म हत लीयौ ॥
छं० ॥ १११ ॥

दूहा ॥ भ्रम परंत दिल्लिय नयर। चित सुहि संधि करूर ॥
गौ हरम्म हरि माननी। चित सामंतन सूर ॥ छं० ॥ ११२ ॥
दिन नष्षे हरि पूज बिन। निसि नष्षे बिन काम ॥
प्रात भई गत रोस गम। अरधि अग्गि सित ताम ॥ छं० ॥ ११३ ॥
गयौ न्रप्प बन अड्ड निसि। सुंदरि सौंपि [3]सहाय ॥
सुपनंतर कविचंद सों: सरसे बढ्ढिय आय ॥ छं० ॥ ११४ ॥

देवी का प्रत्यक्ष दर्शन देना।

(१) ए. कृ. को.-सुनि।
(२) मो "सुर घटी रहि नीलया"। (३) ए. कृ. को. ।पसाय

मुरिल्ल ॥ तब परतष्षि भई ब्रह्मानी। बीना पानि हंस चढ़ि ध्यानी ॥
न्रिमल चीर हीर विन मंडं। तिहि कल किति कही सु प्रचंडं॥
छं० ॥ ११५ ॥
जिहि निसि सो बर बित्तक वित्ती। ज्यों राजन कैमास सु हत्ती ॥
बर अनंत सर अंबर छाइय। तबहि रूप चंदह कवि ध्याइय ॥
छं० ॥ ११६ ॥
दरसन देवि परस्सिय कव्वी। सुपनंतर कविचंद सु दिव्वी ॥
बद्रिय अुत्ति उचार तुंव बर। बरन उचार कियौ आसा उर ॥
छं० ॥ ११७ ॥
भइ परतष्षि सु कव्वि मनाई। उगति जुगति कहि कहि समुझाई॥
बाहन हंस अंस सुष दाई। तब तिहि रूप ध्यान कवि पाई ॥
छं० ॥ ११८ ॥

सरस्वती के दिव्य स्वरूप की शोभा वर्णन।

नराज ॥ मराल बाल आसनं। अलित्त [1]साय सासनं ॥
सुहंत आस तामरं। सुराग राग धामरं ॥ छं० ॥ ११९ ॥
कलिंद केस मुक्करे। उरम्भ बाल विथ्थुरे ॥
लिलाट रेष चंदनं। प्रभात इंद बंदनं ॥ छं० ॥ १२० ॥
कपोल रेष गातयौ। उवंत इंद्र पाययौ ॥
उछाइ कीर पंजनं। तरुन रूप रंजनं ॥ छं० ॥ १२१ ॥
चाटंक झंक झंकई। तिलक्क पान संकई ॥
सुहंत तेज भासई। हसंत मुत्ति पासई ॥ छं० ॥ १२२ ॥
उपंम चंद जंपयौ। चुनंत कीर सीपयौ ॥
विभूअ जूअ पंचयौ। कलंक राह चंचयौ ॥ छं० ॥ १२३ ॥
त्रिभंग मार आतुरं। चिबुक्क चारु चातुरं ॥
अवम्न चाट पिष्षयौ। अनंग रथ्थ चक्कयौ ॥ छं० ॥ १२४ ॥
जु बाल कीर सुब्भयौ। [2]उपम्म तासु सुब्भयौ ॥
दिपंत तुच्छ दिट्ठयौ। बिचै अनार फुट्टयौ ॥ छं० ॥ १२५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-छाय। (२) ए. कृ,को.-"तकंत रत्त बिंवयौ"।

सु ग्रीव कंठ मुत्तयौ । सुमेर गंग पत्तयौ ॥
सुमंत कुच तुंमरं । [1]सुरच्छि लग्गि भ्रंमरं ॥ छं० ॥ १२६ ॥
नषादि हंस अच्छनं । धरंति सुच्छि लच्छिनं ॥
सुरंग हथ्थ सुंदरी । सो पानि सोभ सुंदरी ॥ छं० ॥ १२७ ॥
सुजीव भम्म बालयं । सुगंध तिष्य तालयं ॥
कनक बिप्प पल्लया । सुराज सिंभ दिल्लया ॥ छं० ॥ १२८ ॥
विविध रोम रंगयं । पपील सुत्तरंगयं ॥
हरंत छद्रि जामिनी । कटिं सुहीन सामिनि ॥ छं० ॥ १२९ ॥
सदैव ब्रह्मचारिनी । अबुद्ध बुद्धि कारिनी ॥
अभाष दोष बंचही । सुहंत देवि संचही ॥ छं० ॥ १३० ॥
अपुट्ठ रंभ नारिनी । सुजुत्त ओप कारनी ॥
नयन्न नास कोसई । बरट्टि कट्टि भेसई ॥ छं० ॥ १३१ ॥
झलक तेज कंबुजं । चरन्न चारु अंबुजं ॥
सुरंग रंग इंडुरी । कलीति चंपि पिंडुरी ॥ छं० ॥ १३२ ॥
सबद्द सद्द नूपुरे । चलंत हंस अंकुरे ॥
सु पाइ पाइ रंगजा । जु [2]अद्ध रत्त अंबुजा ॥ छं० ॥ १३३ ॥
दरस्स देवि पाइयं । सु कव्वि कित्ति गाइयं ॥ छं० ॥ १३४ ॥

सरस्वत्योवाच ।

दूहा ॥ मात उचारत चंद सौं । भेद दियौ ग्रह काज ॥
दासि काज कै मास कौं । अप्प हन्यौ प्रथिराज ॥ छं० ॥ १३५ ॥

गाथा ॥ अंबुज विकसि बिलासं । देवी दरसाइ भट्ट कवि एहं ॥
अद्धं वद्धं परष्यं । चरचरितं चंद कवि एयं ॥ छं० ॥ १३६ ॥

पावस वर्णन ।

अरिल्ल ॥ अंबुज विकसि बास अलियायौ । स्वामि बचन सुदरि समझायौ ॥
निसि पल पंच घटी [2]दू आयौ । आषेटक जंपिह न्रप आयौ ॥
छं० ॥ १३७ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुरत्ति ।　　(२) ए. कृ. को.-अद्ध ।

हनूफाल ॥ घन घुम्मियं चिहुपास। आषेट राजन वास ॥
निर्घोष घन घहरंत। आकास कलि किलकंत ॥ छं० ॥ १३८ ॥
द्रिगपाल पेंडुन सुझ। [1]दल जलज बद्दल उझ ॥
धर पूर वारि विसाल। गिरि थंभ पूरित माल ॥ छं० ॥ १३९ ॥
तिन म्रगय राजन सेन। धर स्याम अभ्भनि गेन ॥
निसि अद्ध नवनिति बिज्जि। चिहु ओर घन घन गज्जि ॥
छं० ॥ १४० ॥
थ्रित पंति पंति सु सज्जि। छिन दीप छिन छिन रज्जि ॥
झिमझ्झुम्म लुंम विपष्प। बहु बत्ति जल अति कष्प ॥
छं० ॥ १४१ ॥

दूहा ॥ अच्छौ दिन अच्छै महल। नवबति बज्जि विसाल ॥
चव म्रत ग्रह कैमास मत। भग्गी पीठ रसाल ॥ छं० ॥ १४२ ॥

कैमास और करनाटी का कामातुर होना।

लघु नराज ॥ जुग सत्त पुर पंचासयं। भव भद्द मास अवासयं ॥
अग मन्न पष्प सु बारयं। दिसि दसमि दिवस उचारयं ॥ छं० ॥ १४३॥
तम भूमि तंमि नितं तयं। गत महल गुरु गत मंतयं ॥
परजंकयं परमोदयं। जनु चंद रोहिनि कोदयं ॥ छं० ॥ १४४ ॥
दूल मिलिति मिलि जुग मंतयं। जुग जामि जामिनि पत्तयं ॥
सिष सिष्षयं पट रंगिनी। मन सज्ज सज्जित दंगिनी ॥छं०॥१४५॥
[2]दसयं धनं धन अच्छियं। सामानि केलि सु कच्छियं ॥
लिषि भोजयं भरि दासियं। दिय दोर ओर पियासियं ॥छं०॥१४६॥
दुति जाम पल दुति अंतयं। सषि स्वामिनी इह भंतियं ॥
असु हंकयं पल विर्भयं। रुचि राज सेन सु इत्तयं ॥ छं० ॥ १४७ ॥
भुअ सचित सेन निसुम्भयं। घन प्रथल रस [3]वस उभ्भयं ॥
तन तेज दीपक अलपयं। रुचि राज राजित तलपयं ॥छं०॥१४८॥
दम दमकि दामिनि दोसयं। झम झमकि बूंद बरोसयं ॥

(१) ए.-जल। (२) ए. कृ. को. सदयं। (३) ए. कृ. को. मो-रस।

धुनि नूपुरं क्रत मंदयं । गत जहां सयन नरिंदयं ॥ छं० ॥ १४९ ॥
छिय पानि मंडित आगरं । कर मद्धि निरषत कागरं ॥
छिन बंचियं असु इंकियं । क्रम क्रमत राजन बंकियं ॥
छं ॥ १५० ॥
रस तिय निमेष अतीतयं । घनघोर रोर क्रतीतयं ॥
द्रिग द्रिगन दिष्षन अंगयं । कलमहल कलह अलंगयं ॥
छं ॥ १५१ ॥
सम परस पर प्रति दासियं । मुष भिन्न भिन्न प्रकासियं ॥
छं० ॥ १५२ ॥

कैमास का करनाटी के पास जाना ।

कवित्त ॥ नाज रूए कैमास । बाल नन चिपति भुष्ष गुर ॥
मदन बध्यो जुर जोर । लगी तन ताप तलप उर ॥
नाह नारि छंडयौ । चिष्ष लग्गिय ओतानं ॥
लाज बंद गयौ छंडि । रोग रोगी न पिछानं ॥
पीडयौ प्रेम मारुत सु तह । राम नाम मुष ना कहिय ॥
जंभाति प्रकंपति सिथल [1]तन । बर प्रजंक पलक न रहिय ॥
छं० ॥ १५३ ॥

इंछिनी रानी का पत्र ।

दूहा ॥ कग्ग अरोह्यौ हंस ग्रह । महल सु राज दुआर ॥
कहती राज न मानते । लिषि पट्टयौ पावार ॥ छं० ॥ १५४ ॥
श्लोक ॥ न जानं मानवो नागो । न जानं जष्य किन्नरं ॥
औ अपूरबं देहं । दासी महल मनुष्ययं ॥ छं० ॥ १५५ ॥

पृथ्वीराज का इंछिनी के महल में जाना । इंछिनी का राजा को सब कथा सुना कर कैमास करनाटी को बतलाना ।

दूहा ॥ सुनि रु बचन चल्ल्यौ न्रपति । जहां इंछिनिय अवास ॥
कह्यौ क्रत्त कैमास कौ । जो दिष्यौ ग्रह दासि ॥ छं० ॥ १५६ ॥

(१) मो.-नन ।

हनूफाल ॥ जल सजल अच्छित सेनं। धर हरत धुम्मर ऐनं ॥
दम दमकि दामिनि दूरि। जलजात नैषद पूरि ॥ छं० ॥ १५७ ॥
करि इच्छिनिय ग्रह पंति। जनु मैंन रति सम पंति ॥
द्रिग दिष्षि कूलन बाज। तिय तरित अच्छित दाज ॥ छं० ॥ १५८ ॥
इक पंच धुन कर चंपि। तर तरकि दुअ बिच कंपि ॥
कैमास प्रति सम दीस। तहां बैनं कोन प्रकीस ॥ छं० ॥ १५९ ॥
इक चुक्कि राजन जाम। पच्चारि इंछनि ताम ॥
बिप धऱ्यौ राजन पानि। कर करषि करन सु तानि ॥छं०॥१६०॥
बिय बुद्ध लगि [1]वहि गात। भर हरिय [2]भूमि निपात ॥
तकि तिष्य धष्षि न सिद्ध। बढि तोमरं तन बिद्ध ॥ छं० ॥ १६१ ॥
कहि क्रन्न बनिता बैन। अरि पऱ्यौ प्रभु [3]असु ऐन ॥
बानावली बर धाइ। चुकि नांहि जुग्गिनि राइ ॥ छं० ॥ १६२ ॥
गहि संदरी सारंग। दइ नेव दुव्वनि अंग ॥
दिषि राज भवषित भग्ग। मन सोक सोच विलग्ग ॥ छं० ॥ १६३ ॥
[4]गड्यौ मुधन न्रप अप्प। बर उड्डि राजन तप्प ॥
.... ॥ छं० ॥ १६४ ॥

राजा का कैमास को मार कर गाड़ देना और करनाटी का भाग जाना।

कवित्त ॥ रवन कंपि रव रवन। भवन भूषन धरि हरि परि ॥
आइय दंपति इष्षि। दिष्षि दाडिम उर उब्भरि ॥
चितें राज गति राज। कठिन मन्ने मन अंतरि ॥
षनि गड्यौ कैमास। पाच सम दासि [5]तपं उर ॥
चलि सु दासि बोलन्न जो। सो भग्गी मन मानि भय ॥
समपी सुरिड्डि पांवारि कर। फिऱ्यौ अप्प बन पिथ्थ [6]रय ॥
छं० ॥ १६५ ॥

(१) मो.-वढिय। (२) ए. कृ. को.-भूषन। (३) ए. कृ.-वसु।
(४) ए. कृ. को.-गडयो सु। (५) मो.-मयं उर। (६) मो.-रथ।

पृथ्वीराज का अपने शिविर में लौट कर आना ।

दूहा ॥ गयौ राज बन जहां सयन । जहं सामंतह सूर ॥
संभ्रम सर सति चंद सों । सब बहै सम्मूर ॥ छं० ॥ १६६ ॥

देवी का अन्तरध्यान होना ।

गई मात कबिचंद कहि । भइय प्रात अनुरत्त ॥
दुचित चित्त अनुप्रात भय । चिंति भट्ट प्रापत्त ॥ छं० ॥ १६७ ॥

प्रभात वर्णन ।

कवित्त ॥ बजिग प्रात घरियार । देव दरबार नूर घुलि ॥
भ्रम्म सुक्रत अंकुरिय । पाप संकुरिय कुमुद मिलि ॥
सूर किरन बिसतरन । मिलन उद्दिम सत पच्छी ॥
[1]काम घरी संकुटिय । उड़न पंषी मन मच्छी ॥
मिलि [2]चक्क सु चक्क चकोर धर । चंद किरन बर मंद हुअ ॥
बिड्डुरिग बीर बीरं रहन । सूर [3]कंट मन कंद धुअ ॥छं०॥१६८॥

पृथ्वीराज का रोजाना दरबार लगना और कविचन्द का आना ।

*कवित्त ॥ अंतर महल नरिंद । महल मंडिय बुलाय भर ॥
तेज तुंग आहुत्य । देषि अवधूत धूत नर ॥
बिरद भट्ट बिरदैत । नैंन बीरा रस पिष्षिय ॥
सो ओपम कविचंद । रूप हरनार सदिष्षिय ॥
सामंत सूर मंडलि रषिय । कं चित्तें कैमास जिय ॥
भावी बिगत्ति जाने न को । कहा बिधाता न्निम्मयिय ॥ छं० ॥ १६९ ॥

वार्त्ता ॥ [4]राजन महल आरंभै । नीकी ठौर बैठक प्रारंभै ॥
सूर सामंत बोले । दरीषानै दुलीचे षोले ॥
छत्र चमर कर लीने । मूढ़ा गादी सामंतन को दीने ॥छं०॥१७०॥

---

(१) ए. कृ. को.-काम घटी संकुरी ।　　(२) मो.-चक्क ।
(३) ए. कृ. को.-सुर कंद मन कंद हुअ ।　　(४) ए. कृ. को.-राज ।

*अरिल्ल ॥ मझि पहर पुच्छैं प्रभु पंडिय। कहि कवि बिजै साहि जिहि मंडिय॥
सकल सूर बैठवि सभ मंडिय। आसिष आनि दीय कवि चंदिय ॥
छं० ॥ १७१ ॥

दरबार का वर्णन।

भुजंगी ॥ ढरैं कनक दंडं विराजैत रायं। नगं तेज जोत्यं झलक्कंत कायं ॥
ढरें चौंर सोहै लगै छच ढोरैं। तहां चंद कब्बी उपम्मानि जोरैं ॥
छं० ॥ १७२ ॥

ग्रहं एकठे मंडली अट्ठ षेलैं। लग्यौ राह निद्वंतियं अप्प मेलैं ॥
मिलो मंडली भ्रत्य [1]विच न्रप्प भारी। मनों पारसं पावसं साम धारी॥
छं ॥ १७३ ॥

भरं भार कारी करें [2]वित्त सेनं। कसे संकमानं धनुद्धार तेनं ॥
[3]विरद्दाप चंदं बरद्दाय सब्बी। दिषी जोति चौहान संजोति हब्बी ॥
छं० ॥ १७४ ॥

पृथ्वीराज की दीप्ति वर्णन।

दूहा ॥ मूढ़ा धरि गादी धरी। धुर सामंता राज ॥
देषि देव ग्रब्बं गरै। न्रप सिंघासन साज ॥ छं० ॥ १७५ ॥

रासा ॥ कनक दंड चामर छच विराजत राज पर ॥
रयन सिंघासन आसन सूर सामंत भर ॥
राजस तामस सत्त चयं गुन भिन्न पर ॥
मनहुं सभा मँडि वंभ बिय छिन अप्प कर ॥ छं० ॥ १७६ ॥

उपस्थित सामंतों की विरदावली।

चोटक ॥ सभ हन्नन भट्ट कविंद कियं। सब राज दिसा रजपूत बियं ॥
भुज [4]दष्षिन लष्षिन कन्ह हुअं। रन भूमि बिराजत जानि धुअं ॥
छं० ॥ १७७ ॥

---

* छन्द १६९ और छन्द १७१ मो.-प्रति में नहीं हैं।

(१) मो.-विचित्र मधि। (२) ए. कृ. को.-चित्त, चिंत्त।

(३) मो.-वरदास। (४) ए. कृ. को.-'दष्छिन, लच्छिन।

जिन बीर महंमुद मान हन्यौ। अरि[1] अच्छ अछच पवार धन्यौ ॥
हरसिंघ हसिंह सुवाम [2]भुजं। उन मझि विराजत राज [3]दुजं ॥
छं० ॥ १७८ ॥

नरनाह सनाह सुस्वामि हुअं। जब चालुक भीम मयंद भुअं ॥
बर बिंझ विराजत राज दलं। जब चालुक चार नछिच हलं ॥
छं० ॥ १७९ ॥

परमाल चंदेलति संघ धरै। न्रप जाहि बकारत रौरि परै ॥
बर वीर सु बाहरराय तनं। अचलेसर भट्टिय जासु रनं ॥
छं० ॥ १८० ॥

कर बीर सिंघासन जासु चँपै। नर निढ्ढुर एक निसंक तपै ॥
जिहि कुप्पत गज्जत देस कँपै। धर विग्र* जाहि जिहांन जपै ॥
छं० ॥ १८१ ॥

* लरि लष्षन देषन दो ललियं। मुँह मारि मुरस्थल स्वस्थ हियं ॥
सनमान सबै दिन चन्द लहै। [4]पुठियं जुध वत्त सु आह कहै ॥
छं० ॥ १८२ ॥

रिसि पाइ के चावँड लोह जन्यौ। मदगंध गयंदन सों सु लन्यौ ॥
गहिलोत गयंद सु राज [5]वरं। भुज ओट सु जंगल देस धरं ॥
छं० ॥ १८३ ॥

तप तोंवर सोभि पहार सही। दल दिष्ष सु [6]साह सिताब ग्रही ॥
मुष मुच्छ सु अल्ह नरिंद मुषं। जुध मंडय साह सहाव रुषं ॥
छं० ॥ १८४ ॥

बड़गुज्जर राम कनक्क बली। जिहि सज्जत पंगुर देस हली ॥
कुवरंभ पजूनति राज बलं। जिन षग्ग सु जुग्गिनि जूह घलं ॥
छं० ॥ १८५ ॥

(१) मो.-अनूअ। (२) ए. कृ. को.-भुअं। (३) ए. कृ. को.-दुअ।
* यह पंक्ति केवल मो. प्रति में है। (४) ए. कृ. को.-पुच्छियं। " चावंड रिसाइ के लोह जन्यो " (५) मो.-वरी, धरी। (६) ए. कृ. को.-ताह।

नअगौर नरेस न्वसिंघ सही । जिन रिद्धि सनंतन माझ लही ॥
परमार सलष्षन लष्ष गनै । इक पट्टिय कंगुर देस तनै ॥छं०॥१८६॥
दस [1]पुचति मानिकराइ तनै । कहि को [2]तिनही उतपत्ति [3]बनै ॥
जिन वंस जराजित बीर हुअं। सर संभरिजा उतपत्ति भुअं ॥छं०॥१८७॥
नवनिकरि के नव मग्ग गए । नवदेस अपूरव मारि लए ॥
तिन पट्ट सु प्रथ्थय राज तपै । कलही कलही निसि घोस जपै ॥
छं० ॥ १८८ ॥
कर सिंगिनि टंक पचीस गहै । गुन अंग जंजीरनि तीन रहै ॥
सर संधि समंतत तेज लहै । सबदं सर हेत अनंत बहै ॥छं०॥१८९॥
गुन तेज प्रताप जो हन्न कहै । दिन पंच प्रजंत न अंत लहै ॥
सम मंडप मंडित चिच कियं । कवि अप्प सु अग्ग हकारि लियं ॥
छं० ॥ १९० ॥
गाथा ॥ *हक्कारिय चन्द कव्वी । देवी वरदाय वीर भट्टायं ॥
तिहुं पुर परागद वानी। अग्गें आव राव आएसं ॥ छं० ॥१९१॥
पद्धरी ॥ बेमग्गराइ दारिद विभाड़ । अचगल्ल राइ जाड़ा उपाड़ ॥
अनपुट्ठराय पुट्ठिय पलानि । मुह कंठराय तालू लगान ॥छं०॥१९२॥
असपत्ति राय उथ्थापि हथ्थ । अस कत्ति राय थापन समथ्थ ॥
महाराज राज सोमेस [4]पुत्त। दानवह रूप अवतार धुत्त ॥छं०॥१९३॥

कविचन्द का राजा के पास आसन पाना।

दूहा ॥ †आयस सुनि अग्गे [5]भयौ । दयौ मान कर अप्प ॥
[6]सहि न जास कविचंद पै । निकट न्रपत्ति सु तप्प ॥ छं० ॥ १९४ ॥

कन्ह का कविचन्द से मानिक राय के पुत्रों की पूर्व कथा पूछना।

(१) मो.-पुत्रनि। (२) ए. कृ. को.-तिनकी। (३) ए. कृ. को.-गनै।
* यह गाथा मो.प्रति के सिवाय अन्य प्रतियों में नहीं है।
(४) मो.-पूर। (५) मो.-गयौ। (६) ए. कृ. को.-"सह्यौ न जाइ"
† इस छन्द के बाद का पाठ मो. प्रति में नहीं मिलता।

जराजित्त मानिक सुतन। कन्ह पुच्छि कविचंद ॥
तिहि बंधव कारन कवन। काढ़ि दिए करि दंद ॥ छं० ॥ १९५ ॥

कवि का उत्तर कि "मानिक राय की रानी के गर्भ से एक अंडाकार अस्थि का निकलना"।

अरिल्ल ॥ तक्षक पुर चालुक ग्रह पुत्तिय। मानिकराव परिनि गज गत्तिय ॥
तिहि रानी पूरब क्रम गत्तिय। इंडज आकृति हड्ड प्रसूतिय ॥
छं० ॥ १९६ ॥

मानिक राय का उसे जंगल में फिकवा देना।

कवित्त ॥ कह जानै कह होइ। अस्ति गोला रँभ अंदर ॥
हुकुम कियो मानिक्क। जाइ नंषौ गिरि कंदर ॥
नह मन्यौ रागिनी। करे अपमान निकासिय ॥
संभरि कै उपकंठ। रहिय चालुक पुरवासिय ॥
सोवी विगत्ति मन सोचि कै। बहुत भंति घन जतन किय ॥
दिन दिन अधिक बधतो निरषि। हरषि आस बढ्ढिय सु हिय ॥
छं० ॥ १९७ ॥

दूहा ॥ मुरधर षंडहु काल परि। लैब सही सँग भंड ॥
आय कमधती कर रहिय। चालुक पुर गुढ़ मंड ॥ छं० ॥ १९८ ॥

मानिक राय का कमधुज्ज कुमारी के साथ व्याह करना।

कवित्त ॥ सोलंकिन मन मोच। पठय परधान विचच्छन ॥
दै असंष धन धान। लगन थप्पाइ ततच्छन ॥
पानिग्रहन कर लियौ। कुंअर हड्डा कमधज्जनि ॥
दसह्न दिसि उड़ि वत्त। सुनै अचरज पति गज्जनि ॥
आरंभ गोल करि फौज को। गोला रँभ उप्पर चलिय ॥
नीसान डंक के बज्जते। नव सुलष्ष साहन मिलिय ॥
छं० ॥ १९९ ॥

गजनी पति का मानिक राय पर आक्रमण करना।

भुजंगी ॥ नवं लष्य सेना सजे गज्जनेसं। चल्यौ चढ्ढि मग्गं अछिंदं दिनेसं ॥
षलक्कंत अंदू गजं मद्द छक्के। कमठ्ठं दिगंपाल नागं कसक्के ॥
छं० ॥ २०० ॥

प्रजारंत ग्रामानि धामं मिवासं। प्रजा कोक भज्जी उरं लग्गि चासं ॥
दरं कूच कूचं धरा हिंदु लेनं। सुन्यौ संभरीनाथ आवंत सेनं ॥
छं० ॥ २०१ ॥

करेषा परे ताम नीसानं घायं। सतं मुष्य क्रम्यौ सु मानिक्क जायं ॥
पचीसं हजारं चमू चाहुआनं। मिली जाम मध्ये प्रथमं मिलानं ॥
छं० ॥ २०२ ॥

पुरं चालुकं जाय डेरा सु दीनं। भज्यौ रूस नो रागिनी गोठि कीनं ॥
फिरे चढ्ढियं देय नीसान बंबं। गरज्जे मनों सायरं सत्त अंबं ॥
छं० ॥ २०३ ॥

उस अस्थिअंड का फूटना और उसमें से राजकुमार का उत्पन्न होना।

परज्जंद उट्ठे अग्राजं सबद्दं। नचे बीरभद्रं जिसे वीर हद्दं ॥
बज्यौ सिंधु औ राग सारं करारं। तबे हड्ड फट्यौ प्रगट्यौ कुमारं ॥
छं० ॥ २०४ ॥

प्रचंडं भुजा दंड उत्तंग छत्ती। नरं नारसिंघं अवत्तार भत्ती ॥
कवचं कसे उत्तमंगं सटोपं। धरा बाहरा अश्व आरूढ़ कोपं ॥
छं० ॥ २०५ ॥

पहुंच्चे पिता अग्ग दौरे पहिल्लं। अरी फौज में जोर पारे दहल्लं ॥
नषं तिष्य धारा गरग्गं सु धारे। हिरंनंकुसं गोल रंभं विदारे ॥
छं० ॥ २०६ ॥

इसे लोह वाहे छछोहे दुदीनं। मनो इंद्र वृत्तासुरं जुद्ध कीनं ॥
बहे रत्त धारान कें षाल नालं। परे भूमि झूमे भरं बिक्करालं ॥
छं० ॥ २०७ ॥

परी पंषिनी जोगिनी बीर ईसं। नचै नारदं आदि पूरी जगीसं ॥
कहां लग्गि चंदं बरन्नै सँग्रामं। भगी साह सेना तजे ग्रब्ब मामं ॥
छं० ॥ २०८ ॥

गजं बाज लूटे असंषित्त मालं। लियौ संग्रहे अस्सपत्ती भुआलं ॥
छं० ॥ २०९ ॥

उक्त राजकुमार का नाम कर्ण और उसका सम्भर का राजा होना।

कवित्त ॥ गोला रंभ रिन गंजि। भंजि नवलष्ष भुजा दंडि ॥
सतरि सहस मयमत्त। करे सिर दंड साह छंडि ॥
पुनि संभरि पुर आय। पूजि आसा वर माइय ॥
उद्ध पाल दिय नाम। विरद हाड़ा बुल्लाइय॥
असुरान मेटि करि हिंदु हद। पिता राज लब्बिय तबै ॥
अस्तिपाल हुअ संभरि न्रपति। हड्ड मंड फट्टिय जबै ॥
छं० ॥ २१० ॥

संभर की भूमी की पूर्व्व कथा।

पद्धरी ॥ संभरिह मभ्भ संभरादेव। मानिक्क राव तिन करत सेव ॥
सुप्रसन्न होइ इन दिन वरज्जि। मति लेय दंड करि सिर परज्जि ॥
छं० ॥ २११ ॥

चढ़ि पवँग पहुमि परि है जितक्क। अनषूट रजत ह्वै है तितक्क ॥
करि हुकुम मात संभरि पधारि। चहुआन ताम हय चढ़ि हकारि ॥
छं० ॥ २१२ ॥

द्वादसह कोस ऊतर कुमंत। भवतव्य कोन मेटै निमंत ॥
मन आनि भ्रंति फिरि देषि पच्छ। ह्वै गयौ लवन गरि सर प्रतच्छ॥
छं० ॥ २१३ ॥

उपजीय चित्त चिंता निरास। छंडिय सु देह चंदहु प्रकास ॥
अनचिंत म्रत्त हुअ कलह वढ्ढि। वड़ पुत्त जराजित बंध कढ्ढि ॥
छं० ॥ २१४ ॥

परजंन लाज गुरजन्न मुक्कि। गोहड्ड नंषि जल घाट डक्कि ॥
पंधार लार करि सिलह बंधि। उत्तारि आय निज देह रुंधि ॥
छं० ॥ २१५ ॥

धर वेध षेध लग्गिय अनादि। रघु भरथ पंड कुरु जुद्ध वादि ॥
लिय राज पाट हय गय भँडार। मेटै न चित्त उषिग्ग षार ॥
छं० ॥ २१६ ॥

हो तौ सु जानि फिरि कदंब गोत। डेरा उपारि बिय रवि उदोत ॥
अनि अग्नि साष थप्पित उतन्न। उगरीय जीय मानिक्क तन्न ॥
छं० ॥ २१७ ॥

*इह कथा जाम कहि रहिय चंद। फिरि निकट बोलि लिय तव नरिंद॥
छं० ॥ २१८ ॥

अरिल्ल ॥ मध्य प्रहर पुच्छै न्रप पंडिय। कहि कवि विजै साह जिन मंडिय॥
सकल सूर बैठे विस मंडिय। आसिक तहां दीय कवि चंदिय ॥
छं० ॥ २१९ ॥

कविचन्द का आशीर्वाद।

साटक ॥ केके देस नरेस सूर किद्रसं, आचार जोवा न्रपं।
किंकिं देन प्रमान मान सरसा, किंकिं कयं भष्ययं ॥
किंकिं भेस कि भूप भूषन गुनं, का सो प्रमानं धरं।
[1]किंनारी नर मान किं नर वरं, जंपे कविंदं तुअं ॥
छं० ॥२२०॥

कवित्त ॥ नरह नरेस विदेस। भेस जूजू रसया रस ॥
कौ मंडे जस रस समूह। काल भ्रमया न केन बस ॥
सबे पाइ संसार। किनै संसार न पायौ ॥
मोहनि चित्त निहार। जगत सब बंध नचायौ ॥

*छन्द १९३ से लेकर छन्द २८० तक की कथा क्षेपक मालूम होती।

(१) ए.कृ.को.-नारी।

नच्चै न मोह जग द्रोह जिम । मुगति भुगति करि ना नचै ॥
बसि परै पंच पंचो अगनि । मोह छांह सब को पचै ॥छं०॥ २२१ ॥

चौपाई ॥ [1]हुंकरि चंद देवि बरदाइय । भद्र विरह तिह्नं पुर ताइय ॥
उमा जिनै जुग जुगति जगाइय । मुगति भुगति अप संगह छाइय ॥
छं० ॥ २२२ ॥

राजोवाच ।

दूहा ॥ सबै सूर सामंत [2]जुरि । बिना एक कैमास ॥
[3]तस जानौ बरदाइ पन । मंचि जोग नन पास ॥ छं० ॥ २२३ ॥

अरिल्ल ॥ प्रथम सूर पुच्छै चहुआनय । है कयमास कहौ कहुं जानय ॥
तरनि छिपंत संझ सिर नायौ । प्रात देव हम महल न पायौ ॥
छं० ॥ २२४ ॥

राजा का कहना कि यदि तुम सच्चे बरदाई हो तो बतलाओ कैमास कहां है ।

दूहा ॥ उदय अस्त तौ नयन दिठि । जल उज्जल ससि कास ॥
मोहि चंद है विजय मन । कहहि कहां कैमास ॥ छं० ॥ २२५ ॥
नन दिट्ठौ कैमास कवि । मो जिय इय [4]संदेह ॥
चामंडा बीरह सुमन । अप्पौ न्रप्प सु छेह ॥ छं० २२६ ॥
नाग पुरह नर सुर पुरह । कथत सुनत सब साज ॥
दाहिम्मौ दुल्लह भयौ । कहि न जाय प्रथिराज ॥ छं० ॥ २२७ ॥
का भुजंग का देव ससि । निकम कवित्त जु षंडि ॥
कै बताउ कैमास मुहि । हर सिद्धी बर छंडि ॥ छं० ॥ २२८ ॥

कवित्त ॥ जौ प्रसन्न बरदाय । देव संचौ बर अप्पौ ॥
कहि अदिष्ट कैमास । देवि बर छंडि न जप्पौ ॥
तीन लोक संचरै । सत्ति तिनकी बरदाई ॥
तूपन अप्पन छंडि । जोग पाषंडह षाई ॥

---

(१) ए. कृ. को- हक्करि (२) ए. कृ. को- तुरि ।
(३) ए. कृ. को- तम (४) ए. कृ. को- अंदेस ।

मानहु सु बात अरु बेग बत। कहिग साच कविचंद तत॥
मन बच क्रम्म कैमास धन। जौ दुरगा सची सुभत॥
छं० ॥ २२९ ॥

कवि का संकोच करना परंतु राजा का हठ करना।

दूहा॥ जौ छंडे सेसह धरनि। हर छंडै विष कंद॥
रवि छंडै तप ताप कर। बर छंडै कविचंद॥ छं० ॥ २३० ॥
हठ लग्गौ चहुआन न्रप। अंगुलि मुष्ष फुनिंद॥
तिहुंपुर तुअ अति संचरैं। कहै बनै कविचंद॥ छं० ॥ २३१ ॥
जौ पुच्छै कविचंद सों। तौ ढंकी न उघारि॥
अब कित्ती उघर चंपौ। सिंचन जानि गमारि॥ छं० ॥ २३२ ॥

चन्द के स्पष्ट वाक्य।

सेस सिरप्पर हूर तन। जौ पुच्छै न्रप एस॥
दुहुं बोलन मंडन मरन। कहौ तौ कव्वि कहेस। छं० ॥ २३३ ॥
होता नत कविचंद सुनि। तूं साचौ बरदाइ॥
कहि मंची कैमास सौ। क्यों मार्‍यौ अप धाइ॥ छं० ॥ २३४ ॥

गाथा॥ कहना न चंद [1]चित्तं। नर भर सम राज जोइयं नयनं॥
आचिज्ज मूढ़ [2]वत्तं। प्रगट भवसि अवसि आरिष्टं॥ छं० ॥ २३५ ॥

कवित्त॥ एक बान पहुमी। नरेस कैमासह मुक्यौ॥
उर उप्पर [3]थर हर्‍यौ। बीर कष्षं तर चुक्यौ॥
बियौ बान संधान। हन्यौ सोमेसर नंदन॥
गाढ़ौ करि निग्रह्यौ। षनिव गड्यौ संभरि धन॥
थल छोरि न जाइ अभागरौ। गाड्यौ गुन गहि अग्गरौ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। कहा निघट्टै इय [4]प्रलौ॥ छं० ॥ २३६ ॥

---

(१) मो.- विंत। (२) ए. कृ. को.- मंत्तं, मंत।
(३) ए. कृ. को.-षरहर्‍यौ। (४) मो.-प्रलै।

राजा का संकुचित होना ।

दूहा ॥ सुनि न्रपत्ति कवि के वयन । अनन बीय अवरेष ॥
कविय [1]वचन सम्हौ भयौ । सूर कमोदनि देष ॥ छं० ॥ २३७ ॥

गाथा ॥ झंझामि झार लग्गी । संझया वंदामि भट्ट बचनानि ॥
बुझझामि हाम को इनं । षम दम उर मझझ रष्षियं राजं ॥
छं० ॥ २३८ ॥

सब सामंतों का चित्त संतप्त और व्याकुल होना ।

कवित्त ॥ भट्ट वचन सुनि श्रवन । कन्ह धुनि सीस ग्रेह गय ॥
विसम परिग सामंत । सुनिय साचं जु तत्त भय ॥
कोन काज इह षेह । हुऔ मंची इह राजन ॥
निसि अड्डी आषेट । कियौ किं कीऐ भाजन ॥
किं भट्ट बीर जान्यौ सु रिन । कह सुझयौ संभरि धनी ॥
अंगुरी दंत चंपी सकल । अप अप ग्रेह उठि भनी ॥ छं० ॥ २३९ ॥

सब सामंतों का खिन्न मन होकर दरबार से उठ जाना ।

वाधा ॥ सुनि सुनि श्रवन चंद चहुआनं । कलिमलि चित्त सुभट सङ्घानं ॥
के अवलोइ सु मुष्पं चंदं । निरषे नयन के विभूत दंदं ॥छं०॥२४०॥
के भय मूढ़ ऊढ़ बर अप्पं । के भय चित विरत्त सु दप्पं ॥
समुझि न परे सूर सामंतं । गंठन गुन नन आवै अंतं ॥
छं० ॥ २४१ ॥

निरषे द्रग मुष रत्त करूरं । असह्यौ तेज अजेज सनूरं ॥
निरषे अन्यौ अन्य सजूरं । भय भय चित्त सुभट्ट सपूरं ॥
छं० ॥ २४२ ॥

गहके बद्दर गज्जि गुहीरं । भय न्रिघात तरित तन भीरं ॥
भय गंभीर सुहीर समीरं । उड्डे कर सर रेन सनीरं ॥ छं० ॥ २४३ ॥
घट्टी मद्ध पंच पल सेषं । विन भद्रवै भयानक भेषं ॥

(१) मो.-षेचन ।

दिसि नैरत्ति कि गहि गोमायं । दिसि धूमंत सिवा सुर तायं ॥
छं० ॥ २४४ ॥

बद्दी देवि चकोरन भासं । गज्जे छोनि ओनि आयासं ॥
मन्नं सह आरिष्ट अपारं । उपज्यौ किन कारन क्रत्यारं ॥
छं० ॥ २४५ ॥

भुव अवलोकि कन्ह नर नाहं । उठ्ठे आसन हुंत अराहं ॥
चले अप्प निज मग्ग सु ग्रेहं । फुनि गोयंदराज उठि तेहं ॥
छं० ॥ २४६ ॥

[1]उनमन मन्न उट्ठि सामंतं । कलमलि विकल उकल सा चिंतं ॥
कहै चंद बरदाइ सकोहं । [2]हनि कैमास दासि रिस दोहं ॥
छं० ॥ २४७ ॥

सुनि सुनि वचन भट्ट न्रप कानं । अप्पअप्प गए ग्रेह परानं ॥
जुग्गिनि पुर [3]जग्गत चहुआनं । भइ निसि चार जाम जुग मानं ॥
छं० ॥ २४८ ॥

सब के चले जाने पर कविचन्द का भी राजा को धिक्कार कर घर जाना ।

कवित्त ॥ राजन मझ [4]संपरिय । पट्ट दरबार परठ्ठिय ॥
बहुरे सब सामंत । मंत भग्गिय सिर लट्ठिय ॥
रह्यौ चंद बरदाइ । विमुष पग डगन सरक्क्यौ ॥
ग्रभ्भ तेज वर भट्ट । रोस जल षिन षिन सुक्क्यौ ॥
रत्तरी कंत जागंत रै । भई घरंघर बत्तरी ॥
दाहिम्म दोस लग्गयौ घरौ । मिटै न कलि सों उत्तरी ॥छं०॥२४९॥

चौपाई ॥ इह कहि ग्रेह चंद संपन्नौ । वर कैमास आसु भलपन्नौ ॥
मित्रद्रोह भट उर सपन्नौ । दाहिम वरन वरन संपन्नौ ॥
छं० ॥ २५० ॥

(१) मो.-"उने मत मन्न उठे सामंत । (२) ए. क. को.-हाति ।
(३) मो.-जग्गे । (४) ए. कृ. को.-संभारिय ।

पृथ्वीराज का शोकग्रस्त होकर शयनागार में चला जाना और नगर में चरचा फैलने पर सब का शोकग्रस्त होना।

पद्धरी ॥ निज रहन अंग साला सु एक। आवास रंग रचन विवेक ॥
अंदर महल्ल अंतर अवास। अति [1]रचन चित्र आसासि तास ॥
छं० ॥ २५१ ॥

पर्यंक उभय आभासि भासि। [2]अति ऊक गंध रसु रस्स वासि ॥
आरोहि अप्प सोहै सु राज। विन तरुनि करुन मुष छादि गाज ॥
छं० ॥ २५२ ॥

दर रष्षि बोल आएस दीन। रुक्यौ सु अप्प पर वच्च चिन्ह ॥
किय सयन पेम न्रप जंपि अप्प। रष्यौ सु थान निज द्रप्प रप्प ॥
छं० ॥ २५३ ॥

बैठो सु पिठ्ठ [3]पट सूर घट्ट। रष्षे सु जक्कि सब थान थट्ट ॥
भय चकित चित्त अंदर बहाज। भयभीत मंन मन्ने अकाज ॥
छं० ॥ २५४ ॥

इह क्रत्य चित्त नयरी निवास। सब लोक दोष उद्दार रास ॥
रूंधे सु हट्ट पट्टन सु बान। बिन रूप दिष्षि दिठ्ठिय डरान ॥
छं० ॥ २५५ ॥

सब पत्त सूर सामंत ग्रेह। क्रत्या सु क्रत्य मन्नेव एह ॥
इह क्रम्यौ दुष्ष विते चिजाम। भयभीति निसा मन्नी [4]सहाम ॥
छं० ॥ २५६ ॥

भइ [5]षिनद जाम चव जुग समान। सब लीक दुष्ष बित्ती डरान ॥
कैमास ग्रेह चिंत्यौ सु दोस। गज्यौ सु दासि षूनह सरोस ॥ छं०॥२५७॥
चंद्रेन चिंति निज नाह सत्त। चढ़ि चलिय ग्रेह बरदाइ जत्त ॥
छं० ॥ २५८ ॥

---

(१) ए. कृ. को-चरन। (२) ए. कृ. को.-"अति ऊक गंध रव सुर सताम"।
(३) ए. कृ. को.-पट्ट। (४) ए. कृ. को.-महाभ। (५) ए. कृ. को. षिमद।

उग्गियं मान पायान पूर। बज्जियं देव [1]दर संष तूर॥
*कलच कैमास चढ़ि वरन साल। बरदाइ देवि वर मंगि बाल॥
छं° ॥ २५९ ॥

कवि का मरने को उद्यत होना।

चंद्रायन॥ चलै चीय बर मंगन भट्ट सु भट्ट बर।
अप्पाबै कैमास मिले जाइ अंग बर॥
न्टर छुट्टी कवि छित्त घरी पल बरनि बर।
तौ जन जन सह चिंत सत्ति तुअ देव बर॥ छं० ॥ २६० ॥
रोला॥ चंद बदनि ये चंद सीष कोमंगि उचारी।
मरन टरे जो भट्ट राज कैमास विचारी॥
हम तुम दुहुन मिलंत सुनी अंगन तुम धारी।
दंपति सम्हौ बचन तब्ब बर बरनि उचारी॥ छं० ॥ २६१ ॥
गाथा॥ बाला न अच्छि लग्गी। हुं बरदाइ कड्डिया अग्गी॥
तंबाल विरस लग्गी। लच्छिन षुरसान रष्षिया मग्गे ॥छं०॥२६२॥
आदर दीन सु कब्बी। आसन आछादि रोहि तिय तथ्यं॥
निज प्रारथना राजं। गोमभक्षे ग्रेह साजनं साजः॥ छं० ॥ २६३ ॥

कविचंद की स्त्री का समझाना।

चौपाई॥ तब ग्रेहनि बरदाइ सु आइय। अंचल गंठि विलग्गिय धाइय॥
को [2]अति जात अप्प अम आनै। अनि सिर मत्य अप्प सिर तानै॥
छं० ॥ २६४ ॥
जिन कैमास रिद्धि रज रष्पी। जिन कैमास मंच सिर सष्पी॥
जिन कैमास देस नव आने। सो कैमास हत्यौ निज बाने ॥छं०॥२६५॥

---

(१) मो-दरबार नूर।

* इस छन्द को चारों प्रतियों भुजंगी नाम से सम्बोधन किया गया है। मूल पाठ भी "उग्गियं भान पायान पूरं, वज्जियं देव दर संख तूरं। कलुत्र कैमाम चढ़ वरन माला। देवी बरदाय वर मंगशाला।" यह है परन्तु यह भुजंगी नहीं है। भुजंगी छन्द में चार यगण होता है। मालूम होता है लेख की भूल से कुछ हेर फेर होगया है अस्तु हमने इस छन्द को पूर्व्वोक्त पद्धरी में मिला कर पाठान्तर दे दिए हैं।

(२) ए. कृ. को.-अनि।

तू भूल्यौ बरदाय विचारं। अच्छिर सुद्धिमुद्ध मन द्वारं॥
जे जमग्रेह न अप्प ढुंढाने। सो जग्गवै काय विनसाने॥
छं०॥ २६६॥

कवित्त॥ जा जीवन कारनह। भ्रम्म पालहि व्रत टारहि॥
जा जीवन कारनह। अथ्थि दै चित्त उबारहि॥
जा जीवन कारनह। द्रुग्ग हय देसंति [1]अप्पहि॥
जा जीवन कारनह। होम करि नव ग्रह जप्पहि॥
जा जीवन सांई सुपन। न्रपति बहुत जाचिय अभौ॥
सुक्के सु सरोवर हंस गौ। कलि बुज्झै अधियार [2]भौ॥छं०॥२६७॥
जो मनुच्छ धर भ्रम्म। मरम जानै न मरम जप॥
सास आस बंधयौ। आस आसना करै अप॥
जग्ग जोग तप दान। सास बंधन जग्गो जुअ॥
मोर बीर अनुकार। सास नन असन बंध धुअ॥
छिन देह भंग विज्जल छटा। सजय विजय [3]बंधय सु जिय॥
गुर गल्ह रहै भल पत सुचौ। दुष्य न करो महंत पिय॥छं०॥२६८॥
मात गरभ बस करी। जम्म बासुर बस लभ्भय॥
षिनन नग्गि षिरदाय। सुदय षिन हंस अलुभ्भय॥
बपु विसष्य बढ्ढयौ। अंत रुढ्ढह डर डरयौ॥
कच तुच दंत जरार। धार किम किम उच्चरयौ॥
मन भंग मग्ग मुक्कत सयल। निषत निमेषन चुक्कयौ॥
पर कज्ज अज्ज मंगौ न्रपति। सकै न [4]प्रान पमुक्कयौ॥छं०॥२६९॥

दूहा॥ समरि जाय कविचंद बर। बर लद्धौ हुंकार॥
राज दरह सम्हौ चलै। मरन सुमंगल भार॥ छं०॥ २७०॥

स्त्री के समझाने पर कवि का दरबार में जाना और राजा से कैमास की लाश मांगना।

(१) मो.-अथ्थह। (२) मो. सौं।
(३) मो.-बंधिय। (४) ए. कृ. को.-"प्रान पमुक्कयौ।

कवित्त ॥ रष्षि सरनि सह गवनि। मरन मंगल अपुब्ब किय ॥
दरनि पिष्षि दरबार। रुक्कि सक्यौ न मग्ग दिय ॥
जग्गि जलनि प्रथिराज। नैन नेनं जब दिष्यौ ॥
अति करना रस बीर। करी संकर रस लिष्यौ ॥
बुल्ल्यौ न बेन तब दीन हुअ। कनक काम कवि अच्छयौ ॥
तुम देव किति कुहलिय कमल। धरनि धरनि तन मुक्कयौ ॥
छं० ॥ २७१ ॥

दूहा ॥ रहि सु भट्ट अंतर करन। कविन अभ्म धर भूर ॥
इह अभ्रम्म लग्गहि उरह। क्रम्म उरक्कहि जर ॥ छं० ॥ २७२ ॥

गाथा ॥ बाला न मंगि बरयौ। काउ वासंत भट्ट [1]सियाइं ॥
ना तुअ गति संभरवै। संभरि वै राय राएसं ॥ छं० ॥ २७३ ॥

पृथ्वीराज का नाहीं करना।

दूहा ॥ पढ़िय किति बुल्लिय बयन। दिल्ली पुरह नरिंद ॥
दाहिम्मौ दाहर जहर। को कहुँ कविचंद ॥ छं० ॥ २७४ ॥

कवि का पुनः राजा को समझाना।

कवित्त ॥ रावन किन गङ्घयौ। क्रोध रघुराय बान दिय ॥
बालि सु कित गङ्घयौ। चीय सुग्रीव जीय लिय ॥
चंद किन्न गङ्घयौ। कियौ [2]गुरवारस हिल्लह ॥
[3]रविन पंग गङ्घयौ। पुच्छि सहदेव पहिल्लह ॥
गड्यौ न इंद्र गोतम रिषह। सिव सराप छंडन जनी ॥
इन दोस रोस प्रथिराज सुनि। मति गङ्घय संभरि धनी ॥
छं० ॥ २७५ ॥

ना राजन कुर नंद। [4]नाक वत्ती [5]क्रन कट्टी ॥
अभ्रम्म बीर विक्रम्म। सक्क बंधी कल [6]मिट्टी ॥
पंजर सह सु रारि। दिष्षि गंध्रव नृप भंजों ॥

(१) ए. कृ. को.-सिरयाई, सिरपाई। (२) कृ.-गुरवास हिल्लह।
(३) ए.-रवनि।
(४) ए. कृ. को.-नाक वित्ती। (५) मो.-कट्ठी। (६) मो.-कट्टी

तमकि तास अगि मारि । क्रित्ति पुत्त मुक्किय अज्जों ॥
सो सत्ति बात आतम पुरिसि । तामस इह आपुन मिटै ॥
किं जान खोय किं किं [1]जपइ । क्रित्ति तोय बहु न्रप नटै ॥
छं० ॥ २७६ ॥

कवि का कैमास की कीर्ति वर्णन करना ।

मति कैमास मति मेर । दोस दासी न हनिज्जै ॥
मति कैमास मति मेर । सामि द्रो ही न गनिज्जै ॥
मति कैमास मति मेर । दंड कुब्बेर भरिज्जै ॥
मति कैमास मति मेर । दाग बिन धरनि धरिज्जै ॥
बहि गई सरक नगौर की । मंच जोर सेवर कहर ॥
चहुआन राव चिंतारि चित । गड्यौ कढ्ढि दै करि नहर ॥
छं० ॥ २७७

दूहा ॥ दासि संग कैमास कढि । जग दिष्षवै नरिंद ॥
बरै बरनि अंगन परी । बर मंगै कविचंद ॥ छं० ॥ २७८ ॥

कैमास की लाश उसके परिवार को देना ।

कवित्त ॥ रोस मेल्ही दासी सु । राज लिन्नौ अध लिष्यौ ॥
सो नट्ठी तिन बेर । कढ्ढि कैमासह दिष्यौ ॥
कविय हथ्थ अप्पयौ । अप्प बरनी बर लिन्नौ ॥
पुत्र बीर दाहिम्म । हथ्थ कविचंद सु दिन्नौ ॥
तिहि तरुनि मिलत तारुनि करिनि । पेम पंसि विधि विधि करै ॥
कविचंद छंद इम उच्चरै । भावी गति को उब्बरै ॥ छं० ॥ २७९ ॥

राजा का कैमास के पुत्र को हाँसीपुर का पट्टा देना ।

कविय पुत्र [2]कैमास । राज हांसीपुर दिन्नौ ॥
पुब्ब धनं पन अप्पि । गोद नरसिंह [3]सु किन्नौ ॥
तिहि सु दिनह प्रथिराज । बीर दुरबार सजोइय ॥
बरनि बज्जि नौसान । रोस छिम सात्वक होइय ॥

(१) ए. कृ को. जयियं । (२) मो.-कैवास । (३) ए. कृ. को.-सु दिन्नौ ।

सुरतान गहन मोषन न्रपति । पंग बीय पातुर दरसि ॥
दिषि बीय सभा मन पंग कौ । छबि संमुह बरि बरि बिरसि ॥
छं० ॥ २८० ॥

दूहा ॥ प्राहारी कैमास न्रप । सो अप्पे बिह सत्त ॥
न्रप पुच्छत कबिचंद कौं । अरु गुर राज सहित्त ॥छं०॥२८१॥

पृथ्वीराज का गुरुराम और कविचन्द से पूछना कि किस पाप का कैसे प्रायश्चित्त होता है।

तुम गुर न्रप अरु गुर कबी । तुम जानौ बहु काम ॥
किहि परि गह लंछन लगै । [1]को मेटै लगि साम ॥ छं० ॥ २८२ ॥

कविचन्द का उत्तर देना। (सामयिक नीति और राज नीति वर्णन)

पद्धरी ॥ उच्चरै चंद गुर राज साज । कल कहै बत्त सो नीत राज ॥
संभरहु सूर सोमेस पुत्त । कल धूत धूत [2]जग धूत धुत्त ॥
छं० ॥ २८३ ॥

सम वर प्रधान सम तेज राज । सम दान मान सामत्ति साज ॥
पलटै कि राज लछन्न लीन । बहु भंति कुलह विग्गरै तीन ॥
छं० ॥ २८४ ॥

विग्गरै छत्र हंकार मभ्भ । बर जाय अप्प रस भ्रम्म रज्ज ॥
विग्गरै राज राजन अन्याइ । विग्गरै ग्रेह चीया अछाय ॥
छं० ॥ २८५ ॥

उद्दिम सु हीन न्रप राज राइ । तिन चंद चंद प्रातह दिषाइ ॥
विग्गरै इष्टपन कट्ठ नेह । विग्गरै सोय निज लोभ ग्रेह ॥
छं० ॥ २८६ ॥

विग्गरै मोह भर समर साज । विग्गरै लच्छि बौहरे लाज ॥
प्रसट्ठै अध्रम्म विगरै भ्रम्म । संभरि सु राज राजन सु ध्रम्म ॥
छं० ॥ २८७ ॥

(१) मो.-"कै मैटन लग्गी काम"। (२) ए. कृ. को.-गज।

साधृम्म सेव गरुअत्त जीव । चिय राज नीति राजह न सीव ॥
बिग्गरै पुन्य धीरह सु छ्व । मादक्क ग्रेह बहु दृष्ट ह्लव ॥
छं० ॥ २८८ ॥

बिग्गरै राज परदार [1]पान । लोभिष्ट चित्त चंचल प्रमान ॥
बिग्गरै राज सुय बाल छ्र । संचरै बहुत सषि मझ्झ दूर ॥
छं० ॥ २८९ ॥

बिग्गरै दुज्ज ग्रह अंत दान । बिग्गरै तप्प क्रोधह प्रमान ॥
बिग्गरै राज राजन सु जानि । जो सुनै बत्त दुष्टं सु बानि ॥ छं० ॥ २९० ॥

परनारि [2]षित्त आचरन छोइ । बिग्गरै राज निज संच सोइ ॥
तन सहै राज चिंतन प्रमान । पुच्छहि सु बोल कनवज्ज जान ॥
छं० ॥ २९१ ॥

पुच्छि मंच राय संभरि नरेस । तत ग्रहै राज नीतह सुरेस ॥
उच्चर्यौ राव जंबू नरेस । संभरिय राज संभरि नरेस ॥ छं० ॥ २९२ ॥

[3]तव बंस भाव जरतित्त मान । संभरी हुत ऊपत्ति थान ॥
तिहि सेन राजनीतह सु राज । सो नीत राज जित [4]सुरग राज ॥
छं० ॥ २९३ ॥

रिसराज जोर तिन तह प्रमान । बंधयौ सकल तिन राज [5]थान ॥
कसि असक ओर कसि द्रव्य दंड । दिज्जियै ओर जोगिंद डंड ॥
छं० ॥ २९४ ॥

भंजियै बंक कै बंक साल । भजि कठिन कंक कौ कठिन बाल ॥
बल पुच [6]माय सम सुमति आइ । आनयौ पुच सम रहिस धाय ॥
छं० ॥ २९५ ॥

[7]पंडिय सु दोस दुज दान प्रीय । न्रप दुरै झूठ कित्ती सु [8]दीय ॥
न्रप नीति भ्रम्म समकाल लोय । बंकै कटाछ्य बंके न कोय ॥
छं० ॥ २९६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-थान ।　(२) ए. कृ. को.-चित्त ।　(३) ए. कृ. को.-तम ।
(४) ए. कृ. को.-सुग्गि ।　(५) ए. कृ. को.-थान ।　(६) ए. कृ. को.-न्याय ।
(७) ए. कृ. को-"पंडिय सुदेम हुज दान प्रीति" ।　(८) ए. कृ. को.-दीत ।

संसार नीति किय तत्त पंथ । विभ्भूत नीति सुनि नीति ग्रंथ ॥
सइ ध्रम्म पुच्छ तत्तं प्रमान । नित साम धास ब्रह्मा सु ध्यान ॥
छं० ॥ २९७ ॥

रषिये सु भत्य रष्षन सु लच्छि। फिरि हीत ताहि हित तत्त अच्छि ॥
न्रिप भजै नीति उमराव हीति । न्रिप [1]रहै नीति जो हैत प्रीति ॥
छं० ॥ २९८ ॥

नृप जानि बीर भौ ताहि भेद । दुह भरनि बीर ज्यों पुवह षेद ॥
नृप मेटि करै समता सरीर । बुभ्झवै अगनि जिम बरसि नीर ॥
छं० ॥ २९९ ॥

भोग वै राज परिगह संजुत्त । मति प्रान करै सा ध्रम्म पुत्त ॥
रिषियै सु भत्य इन भांति मान । ते सामि काम अमरित्त जान ॥
छं० ॥ ३०० ॥

सा ध्रम्म सहै सो मित्त सेव । जानै न सामि उत्तर न देव ॥
नृप पास बत्त इह भंति जानि । कवि बहि लज्जि गंभीर बानि ॥
छं० ॥ ३०१ ॥

नृप सुनी बत्त परि कहि न जाइ । ज्यों जल तरंग जल में समाइ ॥
हय गय सु मांहि धुम्र परी ह्रम्र । सम्माइ जेम जल छांह कूम्र ॥
छं ॥ ३०२ ॥

समसान अग्गि निधि न्रपति जीय । न्रप चित्त भंग कोटी [2]सु लीय ॥
रष्यो सु अंब जो नृपत रूप । वय ससी चित्त लज्जी सकूप ॥
छं० ॥ ३०३ ॥

जन हथ्थ आन पंकी सु रंग । तामंस लोह जनि [3]मनित पंग ॥
सुरतान चित्त जब होय लोय । उन चित सदा कलपंत होइ ॥
छं० ॥ ३०४ ॥

।सा ध्रम्म बिना परि गहन काच । रूपं न रत्त दरबार साच ॥

(१) ए.- दहै । (२) मो.-तीय ।
(३) ए. कृ. को.-मन पतंग ।

दुज सफर जम्म [1]नाही समान । संसार रतन नृप परष वान ॥
छं० ॥ ३०५ ॥

दूहा ॥ इह मंची नृप काज अरु । सब परिगह इन भीत ॥
राजनीति राजन रहै । जस धन ग्रहन न जीत ॥ छं० ॥ ३०६ ॥

राजा का कहना कि मुझे जैचन्द के दरबार में ले चलो ।

होय कंठ लग्गिय अगनि । नयन जलग्गि लखान ॥
अंब जीव बंछै अधिक । कहि कवि कोन सयान ॥ छं० ॥ ३०७ ॥
तौ अप्पौं कैमास तो । जो मेटै उर अंदेस ॥
दिष्षा वहि पहु पंगुरौ । जै जैचंद नरेस ॥ छं० ॥ ३०८ ॥

कवि का कहना कि यह क्यों कर हो सकता है ।

षिनक न मन धीरज धरहि । अरि दिष्षत तिन काल ॥
अति बर बर बुल्लै नहीं । सुकिम [1]चलहि भूपाल ॥ छं० ॥ ३०९ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि हम तुम्हारे सेवक बन कर चलेंगे ।

सुरिल्ल ॥ चलौं भट्ट सेवक होइ सथ्थह । जौ बोलूं तो हय तुम मथ्थह ॥
जबह जानि संमुह हुअ । तब संमरु अंग करौं दोउ भूअ ॥
छं० ॥ ३१० ॥

कवि का कहना कि हां तब अवश्य हमारे साथ जाओगे ।

अरिल्ल ॥ अब उपाय समझयौ इह संचौ । सुनि कवि मरन मिटै नह रंचौ ॥
समर तिथ्थ गंगाजल षंचौ । अवसर अवसि पंग ग्रह नंचौ ॥
छं० ॥ ३११ ॥

राजा का प्रण करना ।

दूहा ॥ आनंद्यौ कवि के वयन । न्रप किय संच विचार ॥

(१) ए. कृ. को.-तीही । (१) मो.-चलहु ।

मरन गहत्र सिर हरूअ है। जियन हरूअ सिर भार ॥छं०॥३१२॥

*चान्द्रायन॥ अप्पौ पहु कैमास सती सत्त संचर्यौ।
मरन लगन विधि हथ्थ तत्थ कवि उच्चरयौ॥
धर भर पंग प्रगट्ट रुठट्ठ विहंडिहौं।
इन उपहास विलास न प्रानय षंडिहौं॥ छं०॥ ३१३॥

कैमास की स्त्री का उसका मृतकर्म करना, राज महलों की शुद्धता होनी, सब सामंतों का दरबार होना।

पद्धरी॥ अप्पौ सु कविय कैमास राज। बरदाय किति मन्यो सु काज॥
दीनौ सु हथ्थ सह गमनि तथ्थ। लै चली बाहि 'क्रत न्नि सथ्थ॥
छं०॥ ३१४॥

बोलयौ सुतन कैमास हंस। दुअ तिय बरष्य अति रूअ रंस॥
दीनौ जु तथ्थ सिर राज हथ्थ। थप्पौ सु थान परि तुय परथ्थ॥
छं०॥ ३१५॥

दुअ घटिय पंच पल आदि जाम। किन्नौ सु महल चहुआन ताम॥
बोले सु सब्ब सामंत सूर। आदर अदब्ब दिय अप्ति जर॥
छं०॥ ३१६॥

कयमास घात अपराध दासि। सब कही सुभट सुभ्भा सु भासि॥
अप्पान क्षत्य मन्यो सु अप्प। जानहु सु रीति राजंग दप्प॥
छं०॥ ३१७॥

इम कहिय कन्ह नरनाह बोलि। अप्पौ सु तेग हमकों सु षोलि॥
किय सुमन सूर सामंत सब्ब। हुअ ग्रेह ग्रेह आनंद तब्ब॥
छं०॥ ३१८॥

सब नैर बासि आनंद मन्नि। षोले किपाट न्रप जुगति गन्नि॥
उथ्यौ सु महल सब सुचित कीन। पारनें काज द्वादसी दीन॥
छं०॥ ३१९॥

*इस छन्द को चारों प्रतियों में मुश्किल करके लिखा है। (१) मो.-क्रम।

कैमास के कारण सबका चित्त दुखी होना।

बहुरेब सूर सामंत ग्रेह। कयमास दोस मन्यो सु देह॥
कीने सुभट्ट सब सुचिंत राज। उर मन्यौ अप्प आनंद काज॥
छं० ॥ ३२० ॥

पालहि सु नीति बिधि कित्ति अंग। बिन सच्च रच्च दाहिम्म रंग॥
भंगीर धीर मति बीर अत्ति। [1]सुभभ्भै सुमन्न अंतर उरत्ति॥
छं० ॥ ३२१ ॥

राजा का कैमास के पुत्र को कैमास का पद देना।

दूहा ॥ उरसल्लौ कैमास नृप। पुत्र परठ्ठिय पट्ट॥
चित चंचल अबल करिय। दिय हय गय बर यट्ट॥
छं० ॥ ३२२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके चावंडराय बेरी भरन कन्नाटी दासी षून कैमास बधनो नाम सत्तावनवों प्रस्ताव संपूरणम् ॥ ५७ ॥

(१) मो.-सुझ्झै।

अथ दुर्गा केदार सम्यौ लिष्यते।

(अट्ठावनवां समय।)

पृथ्वीराज का कैमास की मृत्यु से अत्यंत शोकाकुल होना।

दूहा ॥ नह सच मुष्ष गवष्ष यह। नह सच अंदर राज ॥
उर अंतर कैमास दुष। सामंता सिरताज ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ न्रप क्रीड़त चौगान। सथ्थ सामंत सूर भर ॥
जब रामति रसरंग। तब्ब संभरै मंचि वर ॥
जब क्रीड़त जल केलि। चित्त कैमास उदासै ॥
बारावन्नि विहार। तथ्थ दाहिम बर भासै ॥
जब जब सु गान कोतिग कला। पुहप सुगंधह ¹वास रस ॥
जब जबह अवर सुष संभवै। तब उर सल्लै² सहिय तस ॥ छं० ॥ २ ॥

दूहा ॥ अति उर सालै मंचि दुष। करै न प्रगट समुझ्झ ॥
मानो कूआ छांह ज्यौं। रहत रात दिन मझ्झ ॥ छं० ॥ ३ ॥

सामंतों का गोष्ठी करके राजा के शोक निवारण का उपाय विचारना।

कवित्त ॥ तब सु कन्ह चहुआन। राव जैतह सम बुझ्झिय ॥
षीची राव प्रसंग। जाम जद्दव घन सुझ्झिय ॥
चंद्र सेन पुंडीर। राव गोयंद राज बर ॥
लोहानौ आजान। राम रामह बड़गुज्जर ॥
पुछ्यौ सु मंच सब मंच मिलि। राज दुष्ष कैमास मिति ॥
नन कहै ²कवन सो मन वचन। मिटै सोइ मंडौ सुमति ॥
छं० ॥ ४ ॥

सामंतों का राजा को शिकार खेलने लिवा जाना।

---

(१) ए. कृ. को.-वास। (२) ए. कृ. को.-वचन।

कही जाम जद्दो जुवान। सुनि कन्ह नाह नर॥
चंद्र सेन पुंडीर। राय गोयंद राज बर॥
आषेटक प्रथिराज। सह अंतर गति आदै॥
द्वै समद्धि संक्रमौ। करौ इन बुद्धि सवादै॥
मन्नी सु सब्ब सामंत मिलि। थपि सामंतन सत्ति करि॥
बरनौ सु जाम जद्दव न्रपति। तवद्दि राज म्रगया सुभरि॥छं०॥५॥

सज्जि सब्ब सामंत। चल्यौ चहुआन पान भर॥
अटल अवनि आभंग। सज्जि सक कन्ह नाह नर॥
गरुअ राव गोयंद। अतत्ताईय ईस बर॥
चढ़िय निडर रट्ठौर। सलष लष्षन बघेल भर॥
सामंत सूर मिलि इक हुअ। चले सथ्थ राजन ररिय॥
औछंग अंग सन्नाह लै। इम सु राज म्रगया करिय॥ छं०॥ ६॥

प्रनित सब्ब सामंत। चल्यौ चहुआन अनब्बर॥
सथ्थ सूर सामंत। विरद अन्नेक वहत सिर॥
सथ्थ लीन सन्नाह। अवर परकार साथ सजि॥
बानगीर हथ नारि। धारि दिढ़ मुट्ठि [1]हथ्थ रजि॥
घन लीन सज्जि सथ्थें [2]सयन। करि टामंक सु कूचकिय॥
क्रीड़न सु राज म्रगया चल्यौ। सब आषेटक साजलिय॥छं०॥७॥

पृथ्वीराज के शिकारी साज सामान का वर्णन।

पद्धरी॥ आषेट चल्यौ प्रथिराज राज। सथ लिये सूर सामंत साज॥
रस अग्ग सून्य सौ तुंग एक। सथ लिये तुंग सो भषन तेक॥
छं०॥ ८॥

पंच सै मद्धि नाहर पछारि। जीव लैं जाव वच्छंतिवार॥
इक सहस बधन वादाह तेज। जुटि पटकि भुम्मि कड्डत करेज॥
छं०॥ ९॥

(१) मो.-रथ्थ। (२) ए. कृ.- को.-सथन।

सारद्ध सहस बल गनै कौन । धावंत भूमि भुल्लाइ पौन ॥
छल छेद भेद जीवन लषंति । जुट्टंति अंत पसु पल भषंति ॥
छं० ॥ १० ॥

पय तरह रत्त मुष अग्र नास । रत्ती सु रसन कोमल सु भास ॥
नष बीह अग्र कै बीय चार । चौरार पुंछ तिष्षे सु तार ॥छं०॥११॥

कर पट्ट थोर जड्डे सजोर । नष तिष्ष विज्ञ गिरि वज्र रोर ॥
कटि क्रसल थूल नित्तंब जानि । उर थूल लंक केहरि समान ॥
छं० ॥ १२ ॥

गररत्त गहअ विस्साल भाल । तिष्षे सु दसन दंपति कराल ॥
कप्पोल सरल बल प्रथुल रुच । सोभंत गात वैताल रुच ॥
छं० ॥ १३ ॥

बिन अंग रोम के प्रथुल रोम । अनेक जाति दिसि विदिसि भोम ॥
द्रिग अनत तेज जोतिष्ष जास । जघनं सु गत्ति म्रगराज ग्रास ॥
छं० ॥ १४ ॥

जर हेम पट्ट के डोरि पट्ट । सेवक एक प्रति उभय घट्ट ॥
धावंत धरनि आजानवाह । बर बेग पवन मन लच्छि गाह ॥
छं० ॥ १५ ॥

नर जान रोह के अस्व जान । आरुढ़ सकट के वृषभ थान ॥
तुंगह सु पंच तोमर पहार । अनेक देस साजोति सार ॥
छं० ॥ १६ ॥

सत तुंग भषन लंगीस राव । तुंगह सु पंच आमानि ताव ॥
पम्मार जैत चव तुंग सथ्थ । द्वै तुंग भषन चोहान तथ्थ ॥
छं० ॥ १७ ॥

चय तुंग चंद पुंडीर धीर । द्वै तुंग राम गुज्जर [1]गहीर ॥
बलिभद्र एक सारद्द तुंग । परसंग राव द्वै तुंग जंग ॥ छं० ॥ १८ ॥

द्वै तुंग महन परिहार सार । चय तुंग बरुन बंधव सहार ॥
षेलंत सब्ब प्रथिराज संग । गिरवर विहार थल बहि रंग ॥
छं० ॥ १९ ॥

(१) ए. कृ. को.-सहीर ।

सारङ्ग दून सें चित्र साज। बर साज बहल के भास भाज॥
हय रोय कैय आरोहि पिट्ठ। स्त्री गोस केस अस्राव यट्ट॥
छं० ॥ २० ॥
फंदैत कुरँग सें दून सार। जर हेम [1]पट्ट डोरी मषार॥
जुर बाज कुही तुर मतिय जुत्त। को गनै अवर पंषी अभुत्त॥
छं० ॥ २१ ॥
[2]पेदा सु सहस सारङ्ग एक। तरिया सु सहस चौ जुवि मेक॥
सें पंच मूल धारी अभूल। द्रिग दिट्ठ अंत आनी समूल॥ छं० ॥ २२ ॥
आवै सु मध्य पावै न जानि। कौतुंन राज सम विषम थान॥
.... । .... ॥ छं० ॥ २३ ॥

शहाबुद्दीन का दिल्ली की ओर दूत भेजना।

कवित्त ॥ मन चिंतै सुरतान। मान संभरिपति भंजिय॥
पानी पत्र प्रवास। सबै मुष तिन दुष तज्जिय॥
तिन सु बैर उर चिंति। प्रात अप्पिय सम [3]दूतन॥
तुम दिल्लिय पुर जाहु। जहँ चहुआन सु धू तन॥
लिषि पत्र साह ध्रम्मान सम। मुष वानी इम रट्टियौ॥
कैमास हत्य सामंत सम। षबरि विवरि सब पट्टियौ॥ छं० ॥ २४ ॥
दूहा ॥ दूत सपत्त साहि तब। जहं कायथ ध्रम्मान॥
मेद राज सामंत कौ। लिषि दीजै अब्बान॥ छं० ॥ २५ ॥

धम्मायन कायस्थ को शाह का दिल्ली की सब कैफियत लिखना।

ध्रम्माइन काइथह तब। जो [4]कछु वित्त कवित्त॥
चाहुआन सामंत के। सब लिखि दिये चरित्त॥ छं० ॥ २६ ॥

दूतों का गजनी पहुंच कर शाह को धम्मायन का पत्र देना।

(१) ए. कृ. को.-घट्ट। (२) ए. कृ. को. दोषा।
(३) ए. कृ. को.-दूतह, धूतह। (४) ए. कृ. को. चिन्त।

दूत सपत्ते गज्जनै। अहँ गोरी सुरतान ॥
तपै साह साहाब बर। मनों भान मध्यान ॥ छं० ॥ २७ ॥
दिन चढ़तें साहाब दर। आनि कगर कर दीन ॥
मुदित चित्त भए मीर सब। मन उछाह सब कीन ॥ छं० ॥ २८ ॥

दुर्गा भाट का देवी से कविचन्द पर विद्या वाद में विजय पाने का वर मांगना।

कवित्त ॥ निमा एक निज ग्रेह। भट्ट साहाब दुग्ग बर ॥
धरिय देवि उर ध्यान। इष्ट चिंतन सु अप्प करि ॥
निसा अद्ध सुत जानि। देवि आई सुचित्त धरि ॥
कहै चंडि सुनि चंड। मुझ्झ विग्यान इक्क बर ॥
बरदाइ चंद चहुआन कौ। सुनिय अपूरब कथ्थ तम ॥
सम वाद विद्य मंडौ रसन। जौ पाऊं देवी दरस ॥ छं० ॥ २९ ॥

देवी का उत्तर कि तू और सब को परास्त कर सकता है, केवल चन्द को नहीं।

कहै देवि सुनि दुग्ग। उभय पुत्तह नह अंतर ॥
दीरघ चंद सु चारु। अनुज केदार कलाधर ॥
वाद विवाद जु कोइ। जाय चंदह सम मंडै ॥
झीन होइ मति हीन। ख्याति तिन वानी पंडै ॥
जित्तनह अवर जग मझ्झ तुम। एक चंद अंतर सुचिर ॥
अनि वत्त विवह अप्पों अनत। पुच सु पुज्जन प्रेम धर ॥ छं० ॥ ३० ॥

हनूफाल ॥ उच्चरिय देविय गाजि। सुनि भट्ट तूं कविराज ॥
कविचंद दीरघ सेव। तुम अनुज अंतर भेव ॥ छं० ॥ ३१ ॥
नन करहु तिन सम वाद। अनि देस जिप्पन स्वाद ॥

दुर्गा का कहना कि मैं पृथ्वीराज से मिलना चहता हूं इस पर देवी का उसे वरदान देना।

केदार अष्पय एम। चहुआन देषन प्रेम ॥ छं० ॥ ३२ ॥

जो हुकम अप्पै मात। सुविहान पुच्छों बात॥
बोलौ सु देवी बेंन। तुम चलौ दिल्लिय चेंन॥ छं०॥ ३३॥
साहाब दैहै सीष। चहुआन पेम परीष॥
हय गय सु वाहन हेम। ग्रामेक पच परेम॥ छं०॥ ३४॥
सत बाज हथ्थिय तीस। समपै सु दिल्लिय ईस॥
अषेट लभ्भय राज। पानीय पंथ समाज॥ छं०॥ ३५॥

प्रातःकाल दुर्गा भाट का दरबार में जाना।

गाथा॥ निसि गत जग्गिय भट्टं। उर आनंद मानि मन अप्पं॥
जहां साहिब सुरतानं। तहां स चलि अप्पयं कव्वी॥ छं०॥ ३६॥
दूहा॥ मुक्कि ग्रहं निय ग्रह दिसा। सयन अप्प तजि बंध॥
ज्यौं कंचन जिय चिंतइय। ज्यौं पंडित गुन अंध॥ छं०॥ ३७॥
गाथ॥ कबि पहुंच्यौ दरबारं। करि सलाम साह बर गोरी॥
दिष्टे पासव सेनं। पेंसत दिट्ठाइ गोरियं साहिं॥ छं०॥ ३८॥

दुर्गा भट्ट का शहाबुद्दीन से दिल्ली जाने के लिये छुट्टी मांगना।

कोलाहल कवियानं। सनमानं साहिबं होयं॥
[1]वारिज विपनह मझ्झै। ना सूझंत हरुअ गरुआई॥
छं०॥ ३९॥
भुजंगी॥ दिषे माहि गोरी दरब्बार थानं। करै भट्ट केदार [2]ताके बषानं॥
मनो पावसं अंत आभा सु रंगं। दिषे साहि दरबार बहु मेछ रंगं॥
छं०॥ ४०॥
कही बागबानी ग्रमानी सु अल्ली। दियौ साह सीषं चलै भट्ट दिल्ली॥
.... । .... ॥ छं०॥ ४१॥

तत्तार खां का कहना कि शत्रु के घर मांगने जाना अच्छा नहीं।

(१) मो.-ज्यो बाज दिन संझने। (२) ए. कृ. को.-ताकि।

कवित्त ॥ सुनिय बचन सुरतान । दिष्षि बोल्यौ ततार बर ॥
भट्ट चलै मंगना । जहां बंध्यौ सु अप्प कर ॥
अरिसों ना हिय मिलन । मगन तिन ठाउन आइय ॥
मान भंग जहां होइ । पास तिन मग नन पाइय ॥
अप्पिहि दान अप्पन कुटिल । अप्प कित्ति तौ [1]हान मम ॥
बरदाय भट्ट द्रुग्गा सु तुम । इच्छ होइ तौ करहु गम ॥ छं० ॥ ४२ ॥

शाह का कविचन्द की तारीफ करना ।

दूहा ॥ सुनि सहाब हसि उच्चरिय । दिष्षहु चंदह सत्त ॥
सुपनेंऊ धर गज्जनें । मंगन नायौ इत्त ॥ छं० ॥ ४३ ॥

इस पर दुर्गा भट्ट का चकित चित्त होना ।

सुनय बयन सुरतान मुष । कवि उत्तर नन आइ ॥
मानों उरग [2]छछोंदरी । डारैं बनै न षाय ॥ छं० ॥ ४४ ॥

शहाबुद्दीन का दुर्गा भट्ट को छुट्टी देना और भिक्षावृत्ति की निन्दा करना ।

घरी एक बिसमति भयौ । मुष दिष्षै सुरतान ॥
मोहि भट्ट पुछहु कहा । जाहु जहां तुम जान ॥ छं० ॥ ४५ ॥
तिन तें तुस तें तूल तें । फेन फूल तें आनि ॥
हसि जंपै गोरी गरुअ । मंगन है हरुआन ॥ छं० ॥ ४६ ॥

दुर्गा केदार का दरबार से आकर दिल्ली जाने की तैय्यारी करना ।

सुनत बचन सुरतान मुष । भट्ट संपतौ धाम ॥
तजि बिराम चित्तह चल्यौ । जुग्गिनिवै पुर ठाम ॥ छं० ॥ ४७ ॥
पिता पुत्र सों बत्त कहि । मंगन मन चहुआन ॥
स्वामि बैर दातार घन । साहि कही इह बानि ॥ छं० ॥ ४८ ॥

---

(१) ए. कृ. को. दान मम ।　　(२) ए. कृ. को. छछुंदरी ।

कवित्त ॥ [1]चलिय भट्ट बर ताम। नाम दुग्गा केदार बर ॥
संभरेस अवदेस। लष्ष अप्पै बिलष्ष गुर ॥
अति उतंग चहुआन। मान मरदन षल षानं ॥
अरब षरब उप्परैं। कोरि अप्पै करि दानं ॥
संभरिय राउ सोमेस सुअ। आसमान अभिलाष षल ॥
भिद्दै न [2]जाहि माया प्रबल। मनों नीर मझ्झैं कमल ॥ छं० ॥ ४९ ॥

दुर्गा केदार का ढाई महीने में पानीपत पहुंचना।

दूहा ॥ [3]पष्ष पंच पंथह गवन। आतुर धरि उत्ताव ॥
सुनिय राज संभर धनी। पानी पंथ प्रभाव ॥ छं० ॥ ५० ॥
गिरिवर झुंगर [4]गह्वर बन। नद विहार जल थान ॥
क्रीड़त देसह आनि किय। पानी पंथ मिलान ॥ छं० ॥ ५१ ॥

शिकार में मृत पशुओं की गणना।

कवित्त ॥ पानी पंथह राइ। आय षेलत आषेटक ॥
सत्त एक एकल बराह। हत्ते सु गात सक ॥
अवर सत्त षट तथ्थ। घत्त हत्ते करवानह ॥
सौ कुरंग संग्रहै। [5]दून सौ हनै चितानह ॥
को गनै अवर सावज [6]अनंत। हनें [7]पसू अरु पंषि जहां ॥
उत्तंग छांह जल थान पिषि। चित्त उल्हस अनु सरिय तहां ॥
छं० ॥ ५२ ॥

राजकुमार रेणसी का सिंह को तलवार से मारना।

नीसानी ॥ अहो सिंघ न बल्ल इक आया निछ्यारे।
संभव हक गहक्क ही उठ्या [8]भूभारे ॥
उत्तरिया असमान थी किनि कस्या भूफारे।
कंध बिबथ्था प्रथु कपोल तिष दंत करारे ॥ छं० ॥ ५३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-चल्यौ। (२) ए. कृ. को.-नाहि।
(३) ए. कृ. को.-पक्ष। (४) ए. कृ. को. गहन। (५) मो. दूत।
(६) ए. कृ. को. अनंग। (७) ए. कृ. को.-अनंतीति। (८) ए. कृ. को.-मारे।

जोह झाक झक झकै मनों बीज पधारे।
नैन विसोहै जामिनी गुरु सुक्रह तारे॥
लग्गी भट्ट टगट्टगी मनों [1]मुस्सारे।
संभरिया पंच मुष्य थापें देष्या दस बारे॥ छं०॥ ५४॥
आया कुंअर उप्परे षावास निहारे।
आडा आया संकडा परवार पचारे॥
आवत [2]सीस उभक्किया सिर सिंगी झारे।
हथ्थल षग्ग पछट्टिया कोय पिंड पत्तारे॥ छं०॥ ५५॥
रैंनि करष्षे कोपिया झुक्या असि झारे।
बहिया कंध विसंध होय दोय टूक निनारे॥
मनों सारे सत पिंड हो धग्गा कुल्लारे।
पड़िया सीस धरट्ठ हे परसद्द पहारे॥ छं०॥ ५६॥
जानि परे गिरि शृंग होहारि वज्र प्रहारे।
जानि कि कन्हा कोपिया दोइ मल्ल पछारे॥
कै अप्प कुपे रघुनाथ ने सिर रावन झारे॥
जानि अलुझझी गुज्जरी दधि मट्ट फुटारे॥ छं०॥ ५७॥
कूर कबारी कुट्टिया तरु उंच कुठारे।
रेनि कहंदै धन्य हो जै सद्द उचारे॥ छं०॥ ५८॥

पानीपत के मैदान में डेरा पड़ना।

कवित्त॥ आषेटक संभरिय। कुंअर म्रगराज प्रहारे॥
जामदेव जहों। पुंडीर का कन्ह विचारे॥
दस दिस अरिय प्रचंड। तुच्छ सिक्कार सथ्थ हम॥
मिलि चिन्हय चहुआन। अप्प पिष्षियै भोमि क्रम॥
सुनि राज अप्प मन फिरन हुअ। मानि मंत सामंत किय॥
सित माह प्रथम वर पंचमी। पानीपंथ मेलान दिय॥छं०॥५९॥

गोठ रचना।

(१) ए. कृ. को.-मुछारे। (२) ए.-सीर।

दूहा ॥ तहां उतरि प्रथिराज पहु। करिय गोठि तथ्थाहु ॥
घन पकवान सुअन अनत। गनै कोन जी छांहु ॥ छं० ॥ ६० ॥

गोठ के समय दुर्गा केदार का आ पहुंचना।

कवित्त ॥ भई गोठि जब राज। सह परिहार सबन किय ॥
आय सूर सामंत। अवर बरदाय बोल लिय ॥
तथ्थ समय इक भट्ट। नाम द्रुग्गा केदारह ॥
सपत दीप दिन जरहि। सथ्थनी सर नौसारह ॥
सिर हेम छच उप्पर उरग। अंकुस तस कर दंड सम ॥
आसीस आय दीनी न्रपति। मिलि पहु पुच्छिय मति मरम ॥
छं० ॥ ६१ ॥

चौपाई ॥ आषेटक संभरि न्रप राई बट छाया बैठे [1]तहां आई ॥
दानवंत बलवंत सलज्जौ। सुबर राज राजन प्रथिरज्जौ ॥छं०॥६२॥

कवि के प्रति कटाक्ष वचन।

दूहा ॥ भट डिंभी आडंबरह। अरु पर जानन वित्त ॥
अप्प सु कवि कन्नी कहै। किय न्रप सन्हौ चित्त ॥ छं० ॥ ६३ ॥

कवि की परिभाषा।

गाथा ॥ भट्ट उचरियं बानी ॥ [2]उगतिं लहरि तरंगं रंगं ॥
[3]जुगतिं जल जंभायं। रतनं तर्क वितर्कयं जानं ॥ छं० ॥ ६४ ॥

कवित्त ॥ जानन तर्क वित्तर्क। सरल वानी सुभ अच्छिर ॥
च्यारि बीस अरु च्यार। रूप रूपक गुन तच्छिर ॥
सुंदर अठ गन ग्रंह। लघू दीरघ बल नच्चै ॥
जुगति उगति घन संचि। लेइ गुन औगुन [4]बच्चै ॥
बुधि तोम बान बर भलक करि। वर विधान मा बुद्धि कवि ॥
बिय गुनिय देषि ग्रब्बह गरै। ज्यौं तम भगत देषंत रवि ॥
छं० ॥ ६५ ।

(१) ए. कृ. को.-नृप छाई। (२) मो.-उकंतं लहर तरंगयं रंगं।
(३) मो -जुगत। (४) मो.-वंचै।

दुर्गा केदार कृत पृथ्वीराज की स्तुति और "आशीर्वाद" ।

पद्धरी ॥ मिलि भट्ट दिट्ठ न्रपती प्रमान । बुल्लि छंद बंध सम चाहुआन ॥
तुहि इंद्रप्रथ्थ आजानबाह । तुहि अग्गि तूल चालुक्क दाह ॥
छं० ॥ ६६ ॥

तुंहि भंजि जुद्ध परिहार धाइ । तुंहि पंच पथ्थ प्रथिराज राइ ॥
तुंहि भंजि मान जैचंद पंग । तुंहि बीर मुरवि तुंहि काम अंग ॥
छं० ॥ ६७ ॥

तुंहि सूर रूप तुंहि अम्मराइ । तुंहि भेद अभेदन बेद गाइ ॥
तुंहि मौज त्याग दिष्यौ न ईस । नन सर बरीस धन्नाधि तीस ॥
छं० ॥ ६८ ॥

विक्रम्म पच्छ सब बंध तूंहि । तुंहि साल पंग सुरतान तूंहि ॥
मम दिट्ठ वाद ओतान लग्ग । सोइ देषि आज प्रथिराज द्रिग्ग ॥
छं० ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ दिय असीस प्रथिराज कौं । बहुत भाव गुन चाव ॥
साम दाम दंड भेद करि । तब तिन बेध्यौ राव ॥ छं० ॥ ७० ॥

कवित्त ॥ बैनह बेध्यौ राव । चाव बेध्यौ चहुआनं ॥
गगन भान गाहतौ । भोमि गाहै षल पानं ॥
सूर गरूअ [1]गुर वीर । बीर बीराधि सु बीरं ॥
छत्रपती छिति सोभ । सूर सामंत सु धीरं ॥
सुरतान गहन मोषन सुबर । उभय बेद एकत्त कर ॥
हिंदवान लाज सोभै सु उर । कहै भट्ट द्रुग्गा सु बर ॥ छं० ॥ ७१ ॥

पृथ्वीराज का दुर्गा केदार को सादर आसन देना ।

करि जुहार चहुआन । भट्ट आदर बहु किन्नौ ॥
मुक्कि न्रपति आषेट । चिंति मुक्काम सु दिन्नौ ॥
संझ महल परमान । भट्ट दोऊ रस बहे ॥

(१) मो.-नुर, उर ।

उन उचार उच्चरत। वाद दोऊ तब बढ्ढे ॥
उच्चऱ्यौ द्रुग्ग केदार बर। क्यों बरदा अप्पन ग्रहै ॥
मानो तो साच बरदाय पनु। जो द्रुग्गा सेंमुष कहै ॥ छं० ॥ ७२ ॥

दुर्गा केदार का निज अभिप्राय कथन।

दूहा ॥ कहै भट्ट न्वप राज सुनि। सुहि मति बुद्धि अगाध ॥
सुनिय चंद बरदाय है। आयौ बहन बाद ॥ छं० ॥ ७३ ॥

उसी समय कविचन्द का आना और राजा का दोनों कवियों मे बाद होने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ दिय असीस कविचंद। आय तिन बेर प्रमानं ॥
उभय ब्रम्म हिंदवान। आइ बेठे इक थानं ॥
उभय बेद रह आनि। उभय बरदाय उभय बर ॥
उभय बाद जित वान। उभय वर सूर सिद्ध नर ॥
न्वप राज ताम पुच्छै दुअनि। गुन प्रबंध कवितह रचिय ॥
बरनौ दुबीर तुम बाद बद। ध्यान धरे [1]उभया सचिय ॥
छं० ॥ ७४ ॥

दोनों कवियों का गूढ़ युक्ति मय काव्य रचना।

दूहा ॥ यत्त अप्पौ सु दुहून कवि। ससि बरनौ इक बाल ॥
इक पूरन बरनौ ससी। इक जंपो वै काल ॥ छं० ॥ ७५ ॥
इक कहौ रितु राज गुन। जुगतें जुगति प्रमान ॥
कहै राज कविराज हौ। तत्तहि तत्त बषान ॥ छं० ॥ ७६ ॥
मिलिय चंद भट तास सम। किय सादर सनमान ॥
सु गुन [2]प्रसंसिय अप्प कर। करौ वाद विधान ॥ छं० ॥ ७७ ॥
बाल चंद अरु बाल ससि। द्वै विधि चंद सु मत्ति ॥
वर वसंत पूरन्न ससि। विधि द्रुग्गा किय सत्ति ॥ छं० ॥ ७८ ॥

(१) ए. कृ. को.-उभया। (२) मो.-प्रसंसित।

कविचन्द का वचन।

कवित्त ॥ चंद चंद विध कही। सुनो प्रथिराज राज बर ॥
मदन बाज नष सस्यौ। मदन बांनी [1]नवक्क सर ॥
समर सार कत्तरी। दिसा सुंदरि नष चित पिय ॥
चक्र काटि मनमथ्थ। उभय किय तोरि ताहि बिय ॥
दसि अधर बधू मानोज ससि। सिंघ काटि नष बड्डियौ ॥
कटाच्छ सुरति बंकै विषम। कै काम दीप हुप सड्डियौ ॥छं०॥७९॥

गाथा ॥ जं कहियं कविचंदं। संभरि रायान रावतं कहियं ॥
चौपानं सहु राजन। सा जंपी कित्तियं भट्टं ॥ छं० ॥ ८० ॥

दुर्गा केदार का वचन (वैसन्धि)

कवित्त ॥ कहै भट्ट द्रुग्गा प्रमान। वैसंधि उचारिय ॥
पत्त झार अंकुरित। डार नव सुभित कुँमारिय ॥
कोकिल सुर सजि रहिय। भ्रंग सजि पंष उड़ावन ॥
सीतल मंद सुगंध। पवन विममौ [2]भौ भावन ॥
वासंत बिना इन सकल बुधि। सब्ब मनोरथ रच्यौ मन ॥
लहरी समुद्र हंससमुद्र में। उलसि उलसि मध्यें सु तन ॥छं०॥८१॥

कविचन्द का उत्तर देना।

कहै चंद वयसंधि। आय ऐसें गति धारिय ॥
सैसव वपु सिकदार। सु वन पत्तह [3]उत्तारिय ॥
सिसिर थान छुट्टयौ। पट्ट जोवन लै धारित।
काम न्रपति दै आन। कट्टि सैसब तन पारित ॥
जागित्त जुब्ब तब अंग तर। [4]सिसिर कट्ठि भए बंधयौ ॥
नव भए सगुन अचिज्ज तन। आन दीप दोय संधयौ ॥ छं० ॥ ८२ ॥

दूहा ॥ के छुट्टा तुट्टाति के। के अति घोट उचार ॥

---

(१) ए. कृ. को.-निवक्क। (२) मो मैं।
(३) ए. कृ. को.-उच्चारिय। (४) ए.-ससिर।

अष्यर कुकवि कवित्त ज्यौं। गति जुन तुट्टाहार ॥
विधि विधि [1]बरन सु अर्थ लिय। अति ढंक्यो न उघारि ॥
अष्यर सु कवि कवित्त ज्यौं ज्यौं। चतुर स्त्री हार ॥ छं० ॥ ८४ ॥

दोनों कवियों में परस्पर तन्त्र और मंत्र विद्या सम्बन्धी वाद वर्णन।

सो सरसत्तिय सुष दियन। बाद बरन न भट्ट ॥
चित्त मंडि का करन पल। मत कवित्त बढ़ि घट्ट ॥
छं० ॥ ८५ ॥

केदार के कर्त्तव्य से मिट्टी के घट से ज्वाला का उत्पन्न होना और विद्याओं का उच्चार होना।

पद्धरी ॥ केदार कहै सुनि चंद भट्ट। सत अग्र मुष्य इक मंडि घट्ट ॥
सब मुष्य होंहि ज्वाला प्रचार। [2]मुष मुष्य वेद विद्या उचार ॥
छं० ॥ ८६ ॥

कविचंद कहै सुनि भट्ट राज। प्रगटौ जु अप्प विद्या सु साज ॥
केदार ताम मंड्यौ जु घट्ट। उच्चर्यौ मुष्य प्रति अंग घट्ट ॥
छं० ॥ ८७ ॥

सब मुष्य प्रगटि पावक्क ज्वाल। किल किला सद्द श्रुति बंचि नाल ॥
मंड्यौ सु घट्ट बरदाय चंद। उच्चर्यौ मुष्य प्रथु प्रथुल छंद ॥
छं० ॥ ८८ ॥

दस च्यार मुष्य विद्या उचार। ज्वाला सु मद्धि सब वारि धार ॥
हुंकार सद्द किलकार हांक। पूरौ सु चंद देवी भिलाष ॥
छं० ॥ ८९ ॥

बंधी जु गत्ति जब चंद भट्ट। केदार ताम करि अवर थट्ट ॥
केदार कहै सुनि कवि विवेक। [3]बुल्लाउं बाल जो मास एक ॥
छं० ॥ ९० ॥

---

(१) मो.-प्रश्नन।

(२) ए. कृ. को.-सब मुष्प वेद विद्या विचार। (३) ए. कृ. को बुल्लाड।

कविचन्द के बल से घोड़े का आशीर्वाद पढ़ना।

कविचंद कहै सुनि चंडिपाल। जंपै छ भाष दिन एक बाल॥
ठट्ठौ जु अग्ग जकि वाज राज। दिय अषित सीस केदार साज॥
छं० ॥ ९१ ॥

है राज राज दीनी असीस। उट्ठे विचंद दिय कुसुम सीस॥
उच्चर्‍यौ बाज गाथा सु एक। आसीस राज वर विधि [1]विवेक॥
छं० ॥ ९२ ॥

गाथा॥ जिन सारथ सजि पथ्थौ। निज रष्यौ सु ग्रभ्भ उत्तरया॥
जिन रष्यौ प्रह्लादी। सो करौ रष्या राज प्रथिराजं॥ छं०॥९३॥

दुर्गा केदार का पत्थर की चट्टान को चलाना और उसमें अंगूठी बैठार देना।

हनूफाल॥ वै संधि बाल प्रमान। घट घटिय द्रुग्गा पान॥
पढ़ि छंद मंच विसाल। नर रीझि देवन माल॥ छं० ॥ ९४ ॥
भय अग्ग जंगम अंग। गति लही थावर जंग॥
रिंगि चल्यौ पाहन पंग। नय जानि जमुन तरंग॥ छं० ॥ ९५ ॥
[2]थुति करत सामँत सूर। धनि चंद मंच गरूर॥
कढ़ि मुद्र कीनिय पानि। नंषीति मध्य प्रमान॥ छं० ॥ ९६ ॥
गुन पढ़त रहिय सुभट्ट। भय प्रथम उपल सु घट्ट॥
कर मंगि मुद्रिक चंद। नन दई मुद्रि कविचंद॥ छं० ॥ ९७ ॥
कीनी सु विद्य प्रमान। फिरि बाद मंडिय जान॥ छं० ॥ ९८ ॥

कविचंद का शिला को पानी करके अंगूठी निकालना।

दूहा॥ प्रथम बाद पाहन कियौ। फिरि मंड्यौ बिय बाद॥
चंद सिला पानी करी। दुग्गा आनि प्रसाद॥ छं० ॥ ९९ ॥
साटक॥ छत्रं सीस विराजमान बरयं राजेंद्र राजं वरं॥

(१) ए. कृ. को.-विसेक। (२) ए. कृ. को.-छत, छ्त, छुति।

भ्रम्म सास्त्र विरत्त [1]मंचति कवी बरदाय गुर सिद्धयौ ॥
केदाराय सु भट्ट किंन चरितं हिंदवान साषी बरं ॥
जै द्रुग्गा बरदान देवि मुषयौ तर्क बरं भासितं ॥ छं० ॥ १०० ॥

दुर्गा केदार का अन्यान्य कलाएं करना और चन्द का उत्तर देना।

चौपाई ॥ कला बहुरि द्रुग्गा बहु किन्नी। पुच काटि सिर जू जू दिन्नी ॥
धर धावै सिर पढ़ै सु छंदं। इसौ दिष्षि अड्डौ भय चंदं ॥
छं० ॥ १०१ ॥

दूहा ॥ बर प्रसन्न द्रुग्गा कियौ। विविध चरिच विचार ॥
ए सुजानि [2]नर बीर गति। बहु बंधाना भार ॥ छं० ॥ १०२ ॥

देवी का वचन कि मैं कविचंद के कंठ में सम्पूर्ण कलाओं से विराजती हूं।

अरिल्ल ॥ मात कहै सुनि चंदर भासं। एक दिना ठाढ़ी पित पासं ॥
पाप तात कौ संध्यौ पंठ। हुं तब छंडि [3]बसी तो कंठ ॥
छं० ॥ १०३ ॥

अनि कवि कंठ बसी परिमानं। कला पाव कै अड्डी जानं॥
तो में बसी सबै गुन लीनी। [4]दुती देह नह जानै भीनी॥छं०॥१०४॥

अन्तरिक्ष में शब्द होना कि कविचंद जीता।

झाई सी बोल्लिय घट मांही। चंद जीभ बोल्यौ गहराही ॥
पिक्खयौ सुन द्रुग्ग केदारं। अंतरिष्य बोल्यौ गुन हारं ॥छं०॥१०५॥

दुर्गा केदार का हार मान कर राजा को प्रणाम करना और राजा तथा सब सामंतों का दुर्गा केदार की प्रशंसा करना।

---

(१) ए. कृ. को.-मतृति। (२) ए. कृ. को.-वर।
(३) मो.-नसी। (४) मो..दुनी।

दूहा ॥ हारि बोलि उर सकल बर । गयौ पास प्रथिराज ॥
सकल सूर आचिज भयौ । विधि विधान विधि साज ॥ छं० ॥१०६॥

कवित्त ॥ विधि विधान विधि साज । हारि अंतरिष बुलिय बर ॥
कहिय अप्प प्रथिराज । कला केदार करिय गुर ॥
थुति जंपै दनु देव । नाग जंपैति असुर नर ॥
सकल सूर सामंत । कित्ति जंपैति कित्ति कर ॥
सिर कट्टि पुच माया विभग । छंद बंध मुष उच्चरै ॥
सामंत सकल सेना सुबर । जै जै जै बानी करै ॥ छं० ॥ १०७ ॥

सरस्वती का ध्यान ।

साटक ॥ सेतं चीर सरीर नीर सुचितं स्वेतं सुभं निर्मलं ॥
स्वेतं संति सुभाव स्वेत ससितं हंसा रसा आसनं ॥
बाला जा गुन वृद्धि मौर सु ध्रितं त्रिभे सुभं भासितं ॥
लंबी जा चिहु राय चंद्र वदनी दुर्गा नमो निश्चितं ॥ छं० ॥१०८॥

सरस्वती देवी की स्तुति ।

भुजंगी ॥ सधी सद्धियं बीर बीरं प्रमानं । हँसी देषि मातंग मातंग न्यायं ॥
करै मुक्ति कौ काज सब्बैति देवं । तहां मुक्ति कौ तत्त आवै सु भेवं ॥
छं० ॥ १०९ ॥

करै रिद्धि कौ काज सब्बै विहंसं । तहां सिद्ध आवै न सेवे वरंसं ॥
करै रिद्ध कौ पास गब्बै सछंडै । तहां रिद्धि आवै न पासै विषंडै ॥
छं० ॥ ११० ॥

इतं बात जाने न तो बाद जीतं । ननं सस्त्र बीरं मनं बीर रीतं ॥
जरी सस्त्र सों जंच जालंधरानी । सबै तेज मातंग तूही समानी ॥
छं० ॥ १११ ॥

कवित्त ॥ तू माया तूं मोह । मोह तत भेदन तूंही ॥
तूं जिह्वा मोथान । तूंब गुन में गुन भोंई ॥
तो बिन एक न होय । एक पच्छै कवि राजं ॥
मंच सुनै सह बज्ञ । लष्ष लष्षन सिरताजं ॥

तजि मोह बीर बंछै सु कवि। तत्त भेद मन अंग तिहि॥
मो समरि मं डोलै नहीं। उभय आस छंडै जु कहि॥छं०॥ ११२॥

देवी का वचन।

दूहा॥ सु कवि सों सरसति कहै। मो तो अंतर नाहि॥
सूर तेज कोइ हो कहै। ससि अस अम्रत छांह॥ छं०॥ ११३॥

लीलावती॥ हहं तूं हहं तूं नहं तूं नहं तूं। ननंहुं ननंहुं ननंहुं तु नांही॥
भयं तो भयं तो महं तो महं तो। कथं तूं कथं तूं ननं ह्रूं ननं ह्रूं॥
॥ छं॥ ११४॥

गुनं तो गुनं तो हुं जंची हुं जंची। तु जंचं तु जंचं कथती पढ़ंती॥
कथंती कथंती न्रतंती न्रतंती। भ्रमंती भ्रमंती नतंती नतंती॥
छं०॥ ११५॥

भ्रमे जेमवंती जमंती जमंती। .... ॥ छं०॥ ११६॥

कवित्त॥ पय दृष्षन कर उंच। मुष्ष बोले तूं है बर॥
कहै सु बर प्रथिराज। बत्त जंपै सु क्रम गुर॥
ब्रह्म विष्णु उप्पनौ। ब्रह्म देवी जुग जन्ना॥
सूर बंस न्रप आदि। चंद बंसी नर दुन्ना॥
रचि बालय ब्रन्नन तेज बन। किय असुन्न जगि सुमन किय॥
उच्चऱ्यौ संत सत्ता सु गति। मति प्रमान जंपैति सिय॥छं०॥११७॥

दुर्गा केदार का कवि को पुनः प्रचारना।

दूहा॥ पाषंड न जित्या अमर। सिला दिष्ट बंध कीन॥
अब आनै बरदाय पन। उमया उत्तर दीन॥ छं०॥ ११८॥
जु कछु कहै कविचंद सो। [1]करै बनै कवि सोय॥
जु कछु बत्त तुमसों कहौं। सो उतर द्यौ मोय॥ छं०॥ ११९॥
जो पाषान सु पुत्तरी। अस्तुति करै जु आय॥
जो उमया सेंमुष कहै। तो सांचो बरदाय॥ छं०॥ १२०॥

कविचन्द का वचन।

जासों तू पाषंड कह। सो रचि मोहि दिषाउ॥
हो नंषों बर मुंदरी। तूं कर कढ्ढि सु ताउ॥ छं०॥ १२१॥

(१) ए. कृ. को.: फरै बनें सब कोइ।

एक संधि वै बरनवौं । इक चद इक्को भट्ट ॥
दो बर साधि उमा कहै । अंतर मझ्झ सु घट्ट ॥ छं० ॥ १२२ ॥

घट के भीतर से लालो प्रगट होकर देवी का कविचन्द को आस्वासन देना ।

कवित्त ॥ सुनि सैसव बिछुरत्त । बाल किय अमर अरुन द्रिग ॥
बाम जगावन काज । रह्यौ 'पिलदार जानि ढिग ॥
छीनरु उन्नित बढ़ै । घटै करकादि मकर जिम ॥
कामसाल गति पद्धति । चिंति उतरादि सूर भ्रम ॥
इच्छइ जु अंछि बंके करन । संका 'लज्ज बसंकरी ॥
ग्रह ग्रहन फिरत बल दिष्पिए । श्रवन कथा रसनन चरी ॥
छं० ॥ १२३ ॥

गज निसि अंकुस चंद । कमल तारक विहीनी ॥
कै प्राची दिसि चिया । बिंद कै कंदर हीनी ॥
कै कुंचिक शृंगार । काम द्रप्पत बर लोभै ॥
गाहनि काननि 'ग्रनौ । सिंघ नष गज मुष सोभै ॥
मनमथ्थ भुवन सोभै सुकवि । नष पच्छिम दिसि बधुअ मुष ॥
मनमथ्थ धजा मनमथ्थ रथ । चक्र एक एक हति रूष ॥
छं० ॥ १२४ ॥

रोला ॥ घट मंझै कविचंद । कवित उभया सुनि सुन्नी ॥
अति रिझ्झय बरदाय । सुरंग यासों सर धुन्नी ॥ छं० ॥ १२५ ॥

*चान्द्रायना ॥ बिजै है मति राज । उकत्ति जो बहु धर्‍यौ ।
मोहि चंद बरदाय । सु अंतर मति कर्‍यो ॥ छं० ॥ १२६ ॥

चौपाई ॥ सो विन अक्षर एक न होई । घट घट अंतर कव्विन जोई ॥
तुम बहु जुगति द्रुगति कवि आनौ । मो कविचंद न अंतर जानौ ॥
छं० ॥ १२७ ॥

(१) मो.-पिलवार ।　　(२) ए. कृ. को.-लंक ।　　(३) ए. कृ. को.-गनी ।

* चारों मूल प्रतियों में रोला छन्द को चौपाई करके लिखा है इस चाद्रायन का नाम ही नहीं दिया है ।

चन्द कृत देवी की स्तुति।

भुजंगी ॥ तुंही ए तुंही ए तुंही तुं अगंतं। तुंही देव देवा [1]सुरेतं समंतं ॥
मरालंति बालं अलिं सास ओरै। कियं कै सभुक्के उगस्सं विढोरै ॥
छं० ॥ १२८ ॥

लिलाटं न चंदं विराजै कला की। प्रभातं तईदं बंदै लोय जाकी ॥
हरें रत्त सोभै बरन्नं सु चंदं। धसे गंग हेमं भजे माहि इंदं ॥
छं० ॥ १२९ ॥

पईं तुंमरं ताहि पावै न पारं। दियो चंद कन्नी हयं जा हुंकारं ॥
छं० ॥ १३० ॥

पुनः दुर्गा केदार का अपनी कलाएँ प्रगट करना और कविचन्द का उन्हें खण्डन करना।

पद्धरी ॥ केदार बत्त तब जंपि एह। दिष्याउं तोहि बरसाय मेह ॥
प्रथमं सु पवन तब बज्जि जोर। गज्जीय गगन घन गरजि सोर ॥
छं० ॥ १३१ ॥

नभ छाइ स्याम बद्दल विसाल। भइ अंध धुंध जनु हुअ निसाल ॥
तरकंत तड़ित चिहुं ओर जोर। लग्गे सु करन कल मोर सोर ॥
छं० ॥ १३२ ॥

झम झमक बूंद बरसन्न लाग। इह चरित मंडि केदार बाग ॥
आचिज्ज हुअ [2]स[3] सभा एह। दिष्षय बसंत कविचंद तेह ॥
छं० ॥ १३३ ॥

आघात बात चलि फारि मेह। न्निम्मलिय नभ्भ रवि तपन छेह ॥
हुअ अंब मौर फुल्लिगपलास। द्रुम सघन फुल्लि पंषिन हुलास ॥
छं० ॥ १३४ ॥

भ्रमि भ्रंग जुथ्थ गुंजार भार। कलयंठ कुहुकि द्रुम बैठि डार ॥
[2]सभ सकल मांहि रहि इन सु छंद। किन्नौ अभूत बत्तह सु [4]चंद ॥
छं० ॥ १३५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-अमारं। (२) ए. कृ. को.-सभ सकल।
(३) ए. कृ. को.-सम। (४) ए. कृ. को.-छंद।

जे जेय विद्य देषी केदार। ते तेय चंद देषिय [1]विथार ॥
बैठक सु राज सिल एक तथ्थ। दिष्षिय सु चंद उच्चरिय कथ्थ ॥
छं० ॥ १३६ ॥

सुनि बत्त अद्दो अंग्गा केदार। प्रगटौ [2]सु विद्य जौ अंग्र सार ॥
गुन पढ़ौ याहि अग्गें सु छंद। हुअ उपल गलित तो विद्यवंत ॥
छं० ॥ १३७ ॥

चिंत्तिय सु चित्त बरदाय देव। मन बच्च क्रम्म आचिंति तेव ॥
लगि पढ़न चंद देवी चरित्त। वर बानि ग्यान सद्यौ सु मंत ॥
छं० ॥ १३८ ॥

कुहलाय उपल हलहलिय अंग। झलमलगि जानि पारद सुरंग ॥
भिद्यौ सु वज्र गिरि पंक जानि। मुद्रक्रिय नंषि कवि मध्य थान ॥
छं० ॥ १३९ ॥

डुब्बी सु मध्य मुद्रिक अभिंदु। भयौ बज्र वान [3]सरिवरि कविंद ॥
कविचंद कहै वर वदौं तोहि। अप्पै जौ काढ़ि मुद्रिय सु मोहि ॥
छं० ॥ १४० ॥

लग्यौ जु पढ़न केदार बानि। वर भास छंद अन्नेक आनि ॥
भेदै न उपल कछु अंग ताहि। थक्यौ अनंत करि करि उपाय ॥
छं० ॥ १४१ ॥

फिरि लग्यौ पढ़न कविचंद मंत। किल किलकि मध्ये देवी हसंत ॥
अन्नेक वीज मंचह उचार। पढ़ै सु बानि कविचंद सार ॥
छं० ॥ १४२ ॥

फिरि भयौ गरित गिरिवर सु अंग। कढ्ढिग सु चंद मुद्रीय नंग ॥
*लग्यौ सु पाय केदार तब्ब। सम तोहि दिषि न त्रिभुवन्न कब्ब ॥
छं० ॥ १४३ ॥

कविचंद प्रसंसिय ताम भट्ट। वर विमल तुंही बानी सु घट्ट ॥ छं० ॥ १४४ ॥

कवित्त ॥ लज्जि बीर केदार। बाद मंद्यौ मरनं चित ॥
सुवर [4]कट्ठ पुत्तरी। देहि उत्तर सजीव हित ॥

---

(१) ए. कृ. को.-चिथार। (२) ए.-जु। (३) ए. कृ. को.-मवरी।
* ये अन्तिम दो पंक्तियां मो-प्रति में नहीं हैं। (४) ए. कृ. को. कष्ठ।

तब चंद बंदि आराधि। घट्ट जल बंधि उड़ायौ॥
गंग हेत बरदाइ। बरनि नौ रस्स पढ़ायौ॥
द्रुग्गा केदार घट भंजि कै। कर अंतर भ्रंमत करि॥
पिरयौ न सुजल अंतर रह्यौ। सो ओपम कविचंद हरि॥छं०॥१४५॥

दूहा॥ नीर धर्म तजि पिष्यियै। घट पर्ष्यै कविचंद॥
मानौ [1]किरनि पतंग की। षेलत पारस मंडि॥ छं०॥ १४६॥

चौपाई॥ इह चरित्त चंद कवि दिष्यिय। भला भला ऐसा तुम अष्यिय॥
चंद सूर दोऊ करि सष्यिय। बाद बिवाद परस पर रष्यिय॥
छं०॥ १४७॥

कवित्त॥ पढ़त मंच बरदाय। चल्यौ पाषान सुरंग कल॥
घट बहै रिति कलिय। दिइ आसीस हय सु बल॥
बर सुंदरि कढ़ि नंषि। और आरंभ सु किन्नौ॥
जंच मंच बहु जुगति। मंगि फिर बोल सु दिन्नौ॥
ठठुक्यौ सु दुर्गा केदार बर। देव बिष्ट नंषे सुमन॥
जीत्यौ न कोय हार्‍यौ न को। सुनिय कथ्थ प्रथिराज उन॥
छं०॥ १४८॥

अन्त में दोनों का बाद बराबर होना।

दूहा॥ बाद बिबादन बीर [2]कबि। सत्ति सुभाव सुधीर॥
द्रुग्ग मत्ति तौ संचरी। जौ चंद वयट्ठौ नीर॥ छं०॥ १४९॥

दोनों कवियों की प्रशंसा।

नीसानी॥ पुब्ब राइ पढ़मष्परां हिंदू तुरकाना।
दोई राज सु दीन दो गोरी चहुआना॥
दोई सास्त्र विचार दो कौरान पुराना।
इल उप्पर त्यों भट्ट दो ज्यों राति बिहाना॥ छं०॥ १५०॥
इकै पुच विवद्ध कर इक नीर पषानां।
दोई राजन मंनिया सामंत सवानां॥ छं०॥ १५१॥

(१) ए. कृ. को.-किरति। (२) मो.-कोइ।

पृथ्वीराज का दुर्गा केदार को पांच दिन मेहमान रख कर बहुत सा धन द्रव्य देकर बिदा करना।

कवित्त ॥ बाद वीर संवाद। [1]रहै मन मझ्झ मनोरथ ॥
[2]कोप छाइ सिंधु तरंग। लग्गयौ कि बान पथ ॥
संझ परत प्रथिराज। रहै ऐसै मन धारिय ॥
बहुत बाद उच्चार। चंद जीतौ गुन चारिय ॥
न्रप दीन भट्ट दिष्यौ बदन। सो दिन सरसत्तिय बिरस ॥
अप्पयौ दान उचित सु अति। सु कवि दिष्षि तार्थे सरस ॥
छं० ॥ १५२ ॥

रष्षि पंच दिन राज। चंद आदर बहु दिन्नौ ॥
भोजन भाव भगत्ति। प्रीति मह्मिान सु किन्नौ ॥
गेंवर सज्जिय तीस। तुंग साकति सिंगारिय ॥
तरल तुरंग सजि बेग। सत्त दिय परिकर सारिय ॥
कोटेक द्रव्य दीनौ न्रपति। अवर गिनै को विविध वरि ॥
सामंत सब्ब दिनौ सु दुत। कवि सु प्रसंसित किति करि ॥
छं० ॥ १५३ ॥

दूहा ॥ हैवर सत गज तीस सुभ। मोती माल सु रंग ॥
लाल माल उभ्भय करन। दै राजन रस रंग ॥ छं० ॥ १५४ ॥

श्लोक ॥ यावच्चंद्रो दिवानाथ। यावत् गंगा तरंगयोः ॥
तावत् [3]पुत्र प्रपौत्रस्य। दुर्गा ग्रामं [4]विलोकयेत् ॥ छं० ॥ १५५ ॥

कवित्त ॥ बर समोधि न्रप भट्ट। रोस छिम्माय प्रमोध्यौ ॥
तापच्छैं कविचंद। भट्ट गुन करि गुन सोध्यौ ॥
प्रसन बीर प्रथिराज। लच्छि चतुरंग सु अप्पी ॥
इंद्रप्रस्थ वै थान। ग्राम दस अघटह अप्पी ॥

---

(१) ए. कृ. को.-रहेन। (२) ए. कृ. को.-कूप छांह।
(३) ए. कृ. को.-पौत्रस्य। (४) ए. कृ. को.-विलोकयत्।

*
आजन्म जन्म दारिद्र कपि। भट्ट भारह सरद करिय॥
आदर अदब पहुंचाय करि। सब प्रसंस परसाद किय॥
छं० ॥ १५६ ॥

दुर्गा केदार कवि का राजा को आशीर्वाद देकर विदा होना।

प्रथीराज चहुआन। दान गुन जान षग्ग धर॥
अवलोकत से दून। पंच से देइ बाच वर॥
आनि समप्पै सहस। सहस वत्तह जौ दिज्जै॥
बर विद्या रंजवै। तास दारिद्र न छिज्जै॥
सोमेस सुअन सब जान गुन। दानह अंकन वालियौ॥
केदार कहै सब कुसल कल। कवि लहु सुत परि पालियौ॥
छं० ॥ १५७ ॥

दूहा ॥ चल्यौ भट्ट केदार जब। दिय प्रथिराज असीस॥
करि सुभाव सामंत सब। उठि रुचि नायौ सीस॥ छं० ॥ १५८ ॥

कवि की उक्ति।

पिथ्थ बलिय चहुआन पें। बामान ह्वै कवि आय॥
[1]लिये दान केदार कह। फुनि ब्रह्मंड नमाय॥ छं० ॥ १५९ ॥

कवि का शहाबुद्दीन से रास्ते में मिलना।

चल्यौ भट्ट गज्जन पुरह। मझ्झ रह मिल्यौ सहाब॥
लिये सथ्थ घन सेन बर। हय गय [2]तथ्थ तहाब॥ छं० ॥ १६० ॥

गजनी के गुप्तचर का धर्म्मायन के पत्र समेत सब समाचार शाह को देना।

* इस छन्द में "चल्लावानि सामंत सूर सब सेना थप्पी" यह पंक्ति चारों प्रतियों में अधिक है। कहीं कहीं कवि ने इसी कवित्त छन्द को ८ पंक्ति का मान कर "डोढ़े" के नाम से लिखा है परन्तु यहां पर न तो इसके जोड़ की दूसरी पंक्ति है न इसका पाठक्रम समयोचित है इस लिये हमने इस पंक्ति को मुल छन्द से विलकुल निकाल कर अलग पाठान्तर में लिखा है।

(१) ए. कृ. को.-पाये। (२) मो.-सथ्थ।

कवित्त ॥ सोइ ग्राम सोइ ठाम । मान अप्यौ चहुआनं ॥
आदर सादर समुह । भट्ट गोरी सुरतानं ॥
ताहि सथ्थ बर दूत । रहै ऐसें परिमानं ॥
जल महि ज्यों गति जोक । भेद कोई नन जानं ॥
मुक्कयो बाद बहे सु कवि । गए पास सुरतान घर ॥
आघात साहि गोरी सुबर । आषेटक चहुआन धर ॥ छं० ॥ १६१ ॥

अह सथ्थ चहुआन । राज आषेटक षिल्लै ॥
हय हथ्थी बर साज । सबै जुग्गिनिपुर मिल्लै ॥
अप्पानो अपजोग । पुच्छि तत्तार प्रमानं ॥
कही सु दूतय बत्त । तत्त जंगली निधानं ॥
निय भट्ट बाद हार्‍यौ सु [1]निय । कछु कछु तत जंपे सगुर ॥
षम्मान बीर कग्गद लिषं । करो साहि सो सत्ति धुर ॥ छं० ॥ १६२ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज पर चढ़ाई करना ।

सुनिय बत्त साहाब । बंचि कग्गर ततार बर ॥
अति आनंदिय चित्त । करिय अति धंष राज धर ॥
कियौ निसानन घाव । धाक दस दिसि धर फट्टिय ॥
मिले षान अगिवान । चढ़न साहाब सु रट्टिय ॥
दस कोस साहि बर उत्तरिय । सरित तट्ट मुक्काम किय ॥
रग रत्त पीत डेरा बने । हय गय मीर गंभीर जिय ॥ छं० ॥ १६३ ॥

तत्तार खां का फौज में हुक्म सुनाना ।

दूहा ॥ बोलि परिग्गह सूर सब । पुच्छे सकल जिहान ॥
षां षुरसान सु बोलि बर । बर बंध्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ १६४ ॥

कवित्त ॥ कहै षान षुरसान । साहि गोरीं परिमानं ॥
बर संभरि चहुआन । दूत भेज्यौ बनि दानं ॥
लहुंति लोह लोहार । षग्ग षुरसान षटक्कै ॥
सुनत दूत बर बेन । साह सज्यौति सटक्कै ॥

(१) ए.-निव ।

चहुआन सेन सायर मथन। गहन मान पुब्बा कह्यौ॥
चतुरंग सज्जि बाजिच सुर। करि गोरी आतुर चह्यौ॥छं०॥१६५॥

यवन सरदारों का शाह के सम्मुख प्रतिज्ञा करना।

षा षुरसान ततार। साहि सम्हें कर जोरिय॥
आन दीन सु विहान। एन चहुआन विछोरिय॥
हसहि मीर कहि धीर। मीर रोजा रंजानहि॥
पंच निवाज विकाज। [1]जाइ गोरी गुम्मानहि॥
इन बेर साहि सुरतान बर। करै दीन बत्ता सु गुर॥
भर सूर सधै बंधै न्रपति। कै जीवत गड्डै सुधर॥ छं०॥ १६६॥

दूहा॥ छय मुसाफ सुरतान अग। उंच उंच बंधि तेग॥
सुबर साहि साहाब सुनि। करै दीन उच वेग॥ छं०॥ १६७॥
सौगँध मानि साहाब षरि। ढिल्लीवै चहुआन॥
राति दीह सल्लै सुबर। पुब्ब बैर सुरतान॥ छं०॥ १६८॥

शहाबुद्दीन की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

पद्धरी॥ चढ़ि चल्यौ साहि आलम असंभ। उप्पन्यौ जानि सायरन अंभ॥
जल थल थलं न [2]जल होत दीस। उन्नयौ मेछ बर बैर रीस॥
छं०॥ १६९॥

बज्जहि निसान धुंनित विसाल। हालंत नेज सुरतान हाल॥
बारुनि बहंत मदगंध बुंद। मानो कि कूट चलि सत रविंद
छं०॥ १७०॥

सज्यौति सेन सुरतान बीर। बढ़ि तेज तुंग जानै गंभीर॥
सम्हौ सु भट्ट मिलि आय राज। अति क्रूर तेज आहत्त साज॥
छं०॥ १७१॥

सुरतान कहै हो दिल्लि राज। आयौ सु दौरि निय सुनि अवाज॥
तब दूत कहै साहाब बाचि। आपौ सु भट्ट चहुआन जाचि॥
छं०॥ १७२॥

(१) ए. जोइ। (२) ए. कृ.-को.-मिल।

चहुआन सत्त हय दीय उच्च। सामंत अवर समदिय सरुच्च ॥
गज तीस अप्पि ग्रामह दुसष्य। अप्पिय सु हेम राजन विलष्य ॥
छं० ॥ १७३ ॥

[1]अनि द्रव्य कोट दीनौ सु भाइ। सामंत सब्ब रुचि सीस नाइ ॥
संभरिय बत्त सुरतान बीर। धारेव उअर मझ्झे गँभीर ॥
छं० ॥ १७४ ॥

अग्गें सु बंधि निसुरत्ति षान। दस पंच हथ्थ उत सुव्विहान ॥
पारस्स साहि लक्करिय लाल। मानो कि सुभ्भि परवाल माल ॥
छं० ॥ १७५ ॥

दूहा ॥ सुबर साहि बंचिय निजरि। बर चल्लिय अगिवान ॥
यों पहुंच्यौ असपत्ति गनि। देस दिसा चहुआन ॥ छं० ॥ १७६ ॥

शहाबुद्दीन का सोनिंगपुर में डेरा डालना और वहां पर दुर्गा केदार का उससे मिलना और दूतों का भी आकर समाचार देना।

उतरि साह सोनंग पुर। दिसि दष्यिन बर थान ॥
किय डेरा केदार तब। मीर महुब्बति षान ॥ छं० ॥ १७७ ॥

अरिल्ल ॥ निमां [2]साम बज्जिय नौबत्तिय। किय निमाज उमरावन तत्तिय ॥
सज्जि महल साहाब बयट्ठौ। आयौ महल [3]उम्मरां जिट्ठौ ॥
छं० ॥ १७८ ॥

आय महल दुग्गा केदारह। दीन असीस विविधि विधारह ॥
मिलि सहाब सादर सम्मानिय। पुच्छिय कुसल विविध कल बानिय ॥
छं० ॥ १७९ ॥

दूहा ॥ पुच्छि कुसल आसन्न दिय। सम द्रुग्गा केदार ॥
तन विभूत जट सिंग म्रग। आए दूत सुच्चार ॥ छं० ॥ १८० ॥
दिय दुवाह तिन चरच बस। काइम साहि सहाब ॥

(१) ए. कृ. को.-"अति द्रव्य कोर दांनौ सु भाइ"।
(२) मो.-साव। (३) मो.-उमराव।

[1]अग्र बोलि गोरी गरुअ। तब अति दिष्यौ [2]आव ॥ छं० ॥ १८१ ॥

शहाबुद्दीन का कवि से पृथ्वीराज का समाचार पूछना और कवि का यथा विधि सब हाल कह सुनाना।

गाथा ॥ आयस दिय लिय अग्गं। पुच्छिय षबरि विवरि चहुआनं ॥
अरु सामंत सु धीरं। पुच्छियं प्रीति रीति साहाबं ॥ छं० ॥ १८२ ॥

अरिल्ल ॥ बपत बड़े सुरतान मानि मन। बंधी गास पंग प्रथि मंतन ॥
हनिय अप्प कैमास मंच बर। भए चलचित सामंत सूर भर ॥
छं० ॥ १८३ ॥

भरि बेरी चामंड सु बीरं। चमकि चित्त सामंत सधीरं ॥
भयौ षीन चहुआन मंचि दुष। गय पिपास निद्रारु षुधा सुष ॥
छं० ॥ १८४ ॥

चढ़ि आषेटक तुच्छ सेन सजि। सथ्थ सूर सामंत चिंति रजि ॥
क्रीड़त देस मद्धि पंथानह। कंपै असि आंर मत्त पयानह ॥
छं० ॥ १८५ ॥

भरि भंगान पुंडि मीना धर। गोरा भरा भज्जियं तज्जिर ॥
सहस तीस सब सेन समथ्थह। आए भए रोज दस तथ्थह ॥
छं० ॥ १८६ ॥

रोज तीस मुकाम थप्यौ थह। उतर्यौ आनि मद्धि जलपंथह ॥
बपत समथ साहि साहाब सुनि। चढ़ि अरि गंजि मंजि महरनि रज ॥
छं० ॥ १८७ ॥

सुलतान का मुसाहिबों से सलाह करके सेना सहित आगे कूच करना।

दूहा ॥ सुनिय बत्त साहाब चर। दिय निरिघाव निसान ॥
अप्प षान मोरं वरा। कहो सजन सब्बान ॥ छं० ॥ १८८ ॥
कही षान षुरसान सम। षा तत्तार निसुरत्ति ॥
कही सचर सुनियै सबै। जुरन याह घर घत्ति ॥ छं० ॥ १८९ ॥

(१) ए. कृ. कां.-अग वाले। (२) ए.-आव।

अरिल्ल ॥ कीय बत्त षुरसान ततारह। आयस आन दीन सेला रह ॥
गय अंदर सयनह सुरतानह। कूच कूच भय सेन सबानह ॥
छं० ॥ १६० ॥

दुर्गा केदार के पिता का दुर्गा केदार को समझाना और धिक्कारना।

दूहा ॥ अप्प अप्पयह उम्मरा। आए सज्जित सब्ब ॥
चमकि चंड कैदार मन। आयौ तात [1]सु तब्ब ॥ छं० ॥ १६१ ॥
सुनिय बत्त कवि विविध बर। पति आषेटक साज ॥
सोमेसर सुअ जुद्ध थिर। सलिल [2]लज्ज सिंधु पाज ॥ छं० ॥ १६२ ॥
द्रुग्ग मत्ति सुत सों कहिय। तुम जानहु चहुआन ॥
पहिली भट अपराध बहु। माधव कियौ विनान ॥ छं० ॥ १६३ ॥
कवित्त ॥ बल मोगर मेवात। राज सुत्तौ परिमानं ॥
माधौ पच्छैं भट्ट। राज बैसास म आनं ॥
करौ बत्त न्रप हित्त। कपट दिष्यौ सुरतानं ॥
जाहु पास प्रथिराज। षबरि अप्पौ सु निदानं ॥
धनि भ्रम्म बंध संभरि न्रपति। निगम मोह संम्हौ मिलिय ॥
उज्जेन राज श्रीफल उदित। दे कग्गद संम्हौ चलिय ॥
छं० ॥ १६४ ॥

दुर्गा केदार के भाई का पृथ्वीराज के पास रवाना होना।

दूहा ॥ लघु बंधव कविदास तिन। दरक चढ़ाइय सु बेग ॥
जाहु सु पानी पंथ तुम। करहि नरह उद्देग ॥ छं० ॥ १६५ ॥

कवि का पृथ्वीराज प्रति संदेसा।

कुंडलिया ॥ दिष्य फौज सुरतान की। बंधव मोकलि भट्ट ॥
तुम उप्पर गोरी सुबर। है गै सज्जे थट्ट ॥
है गै सज्जे थट्ट। सज्जि आयौ सुरतानं ॥
तिरि भर जल गंभीर। भीर सज्जे बहु षानं ॥

(१) मो.-सुन। (२) मो.-लाज।

तीस लष्य में साहि। [1]यट्ट तारे दस दष्षे ॥
तिन में पंच सु लष्य। लष्य में लष्य सु दिष्षे ॥ छं० ॥ १९६ ॥

कवित्त ॥ सौर फिरस्ते टारि। दब्ब मार्यौ सिंधु तट्टें ॥
सिंधु विहथ्थैं वीच। साह पुल बंधन घट्टें ॥
छुय मुसाफ तत्तार। मग्न केवल विचारे ॥
सज्जि साथ चहुआन। काल्हि उतरिहैं पारे ॥
उप्परे डेर मुक्काम तजि। सेन काज [2]पुंटिय बजे ॥
नीसान हवाई मुंदरी। गज घंटानन डर सजे ॥ छं० ॥ १९७ ॥

दूहा ॥ जाय राज प्रथिराज पहि। विवरि षवरि सुरतान ॥
कहियो [3]वेगौ सेन सजि। आयौ पंथ चंपान ॥ छं० ॥ १९८ ॥

कविदास की होशयारी और फुर्ती का वर्णन।

कवित्त ॥ चल्यौ चंड कविदास। दमकि उड्यौ दा सेरक ॥
मनुं वामन किय हड्ड। क्रम्म चयलोक मने सक ॥
[4]कुमा तिष्ष कर कड्ढि। अग्र द्रिय वक्र निरष्षै ॥
मनों कुलटानि कटाच्छ। मध्य गुर जन सम लष्षै ॥
संचर्यौ एम संमीर बर। प्रोथ बात रोक्यौ प्रबल ॥
अध धर्यौ चक्र कर जेम हरि। मनुं जंबूर स छुट्टि कल ॥
छं० ॥ १९९ ॥

दास कवि का पानीपत पहुंचना और पृथ्वीराज से निज अभिप्राय सूचक शब्द कहना।

दूहा ॥ चल्यौ चंड कविदास तब। पहर एक निसि जंत ॥
अनल बेग हक्क्यौ दरक। आयौ पानी पंथ ॥ छं० ॥ २०० ॥

कवित्त ॥ उत्तम न्रिम्मल सु द्रह। पुलिन बर पंसु झीन सम ॥
करत राज जल केलि। सुमन कसमीर अगर जम ॥

---

(१) मो.-हथ्थ। (२) ए. कृ. को.-पुंटिय।
(३) ए. कृ. को.-वेगी। (४) ए.-कसा।

सथ्थ सूर सामंत। मत्त षेलत हड्डूअ॥
.... । .... ॥
दिन सेष धरी सत्तरु दुअह। [1]हहकि दरक मन वेग तहां॥
कविदास आय तव जंपि न्रप। करौ सिलह सामंत सह॥
छं० ॥ २०१॥
*दूहा॥ मो दिष्षै न्रप दिष्षियौ। गोरी साहि नरिंद॥
हसम हयग्गह सज्जि कै। दल वद्दल वर इंद॥ छं० ॥ २०२॥
साहबदी सुरतान अब। तुम पर साज्यौ सेन॥
[2]मों देष्षै देषौ न्रपति। घरी एक अप नेन॥ छं० ॥ २०३॥

कवि के बचन सुनकर राजा का सामंतों को सचेत करना और कन्ह का उसी समय युद्ध के लिये प्रबन्ध करना।

छंद भ्रमरावली॥ सुनियं तव राजन चंड तनं [3]बयनं।
तव अग्गिय बीरह धौर तनं नयनं॥
तव सद्दिय सब्बह एक किए अयनं।
सब सामँत सूरह सीस सजे गयनं॥ छं० ॥ २०४॥
पहु आवरि वीरह अप्प तनं तयनं।
मुष रत्तह ब्यंबह श्रोन समं नयनं॥
भिरि मुच्छह भौंहह भोंह समं षयनं।
सब आवध सज्जिय भत्तह जे हयनं॥ छं० ॥ २०५॥
कवित्त॥ तव सज्जि सेन प्रथिराज। मंत सब सामँत पुच्छिय॥
हय अरोहि धुज जुरहि। काय [4]पथ होइ सुमत्तिय॥
कहिय कन्ह चौंहान। सु थल या अग्गें वेहर॥
पुठ्ठि सुने दिसि बाम। पूर जल किन्न सु केहरि॥
मंडियै जुद्ध हय छंडि सब। इक्क भाग रष्यौ चक्यौ॥
मंनी सु बत्त सामंत न्रप। भल भल सब सेना पक्यौ॥ छं० ॥ २०६॥

(१) ए. कृ. को.-हक्कि। *यह दोहा मो.-प्रति में नहीं है।
(२) ए. कृ. को.-मैं। (३) ए. कृ. को.-बनयं। (४) ए. कृ. को.-पय।

चहुआन सेना की सजाई और व्यूह रचना।

भुजंगी ॥ सथं सज्जियं व्यूह प्रथिराज राजं। सुरं बीर रस उंच वाजिच बाजं॥
भरं मंडलं मंडियं मंडि अन्नी। ¹रसं सूर सामंत सा सूर मन्नी॥
छं० ॥ २०७ ॥

भरं सहस बा बीस हय छंडि बीरं। तिनं रचियं व्यूह जल जात धीरं॥
नरं कन्ह चौहान गोयंद राजं। भरं जैत पर सिंघ बलिभद्र साजं॥
छं० ॥ २०८ ॥

बडं गुज्जरं दून हड्डा हमीरं। रचे अट्ठ सामंत वा पच भीरं॥
बरं बग्गरी देव पज्जून राजं। सुतं नाहरं सिंह परिहार साजं॥
छं० ॥ २०९ ॥

भए च्यार सामंत सो कर्णि कारं। बियं मझ्झ धीरं परागं सु ढारं॥
भयो नारि पम्मारि जैतं समथ्थं। भयौ मध्य मेही प्रथीराज तथ्थं॥
छं० ॥ २१० ॥

भरं मध्य उद्दिग्ग बाइं पगारं। तिनं मझ्झि जद्दौं सु जामानि सारं॥
सजे मध्य चंदेल भौंहा सु धीरं। तिनं मझ्झ लोहान सा विंझ बीरं॥
छं० ॥ २११ ॥

चढ़े रष्षिनं दष्षिनं रा पहारं। सहस्संच अट्ठं चढ़े सूर सारं॥
छं० ॥ २१२ ॥

शहाबुद्दीन का आ पहुंचना।

दूहा ॥ सज्जि सेन साहाब सुर। आयौ आतुर हंकि॥
दिष्षि रेन डंबर डहसि। भर चहुआन ²असंषि॥ छं० ॥ २१३ ॥
गंभीरां सुरतान दल। अति उतंग ³वरजोर॥
मिले पुब्ब पच्छिमहु तें। चाहुआन चित घोर॥ छं० ॥ २१४ ॥

यवन सेना की व्यूह रचना।

कवित्त ॥ अनिय बंधि पतिसाह। जुड्ड जीपन चहुआनं॥
षां मुस्तफा दलेल। पुट्ठि रष्षे गिरवानं॥

(१) मो.-रसे। (२) ए. कृ. को.-आंत।

सजे सेन चतुरंग । दंद दंती बनि घट्टा ॥
सुबर बीर सुरतान । बान [1]उब्बरि जल छुट्टा ॥
चहुआन सुन्यौ आचंभ चर । सिंधु उतरि संम्हौ मिल्यौ ॥
दोउ दीन आय आवरि सुभर । षग्ग कढ्ढि पग्गह पुल्यौ ॥
छं० ॥ २१५ ॥

यवन सेना का युद्धोत्साह और आतंक वर्णन ।

हनूफाल ॥ आयो सु सज्जि सहाब । [2]उल्लथ्यौ सायर आब ॥
है लष्य सारध एक । प्रति रची फौज विमेक ॥ छं० ॥ २१६ ॥
जति अनंत बज्जै बज्ज । गिरधरनि अंबर गज्जि ॥
भर सिलह बंधिय बीर । तजि आस जीवन धीर ॥ छं० ॥ २१७ ॥
सजि कसे आवध सब्ब । बर लज्ज देषिय [3]अब्ब ॥
मद गज्ज अट्ठो अट्ठ । बर बेग राह सु घट्ठ ॥ छं० ॥ २१८ ॥
करि दौरि आयौ साहि । पंचास कोस [4]पहाहि ॥
बिच राज जोजन एक । विश्राम सज्जिय सेक ॥ छं० ॥ २१९ ॥
तहां सिलह है गै भार । परसंसि पीर भुझार ॥
उन्नमिय नेज उतंग । गनि जाइ रवन रंग ॥ छं० ॥ २२० ॥
षुर षेह उड्डिय रेन । आकास मुंदिय तेन ॥
गहगही सद्द सु गाह । रज गहर पष्षर पाह ॥ छं० ॥ २२१ ॥
बानैति बानैं साज । रस बीर धरिय सु गाज ॥
भय निजरि ट्टलिय सेन । भर भीर चिंतिय तेन ॥ छं० । २२२ ॥
बज्जंत रन रनतूर । निज ध्रम्म संभरि सूर ॥
जब देषि हिंदु उतारि । उच्चर्यौ षान ततार ॥ छं० ॥ २२३ ।

तत्तार का खां आधी फौज के साथ पसर करना, बादशाह का पुष्टि में रहना ।

दूहा ॥ कहि ततार साहाब सों । किय दल हिंदु उतार ॥
हम उत्तरियै मीर सब । तुंम रहौ पुट्ठि साधार ॥ छं० ॥ २२४ ॥

(१) मो. उच्चरि ।　　(२) ए. कृ. को.-उद्धर्यो ।
(३) ए. कृ. को.-पब्ब ।　　(४) ए. कृ. को.-पहाड़ ।

कवित्त ॥ लष्य एक है छंडि । कियौ तत्तार उतारह ॥
अट्ठ लष्य दल चढ्यौ । रह्यौ सुरतान सुभारह ॥
मीर मसंद मसंद । अग्ग सज्जे भर सुब्भर ॥
कुल अरेह अस्मील । बोलि पित पित्त नाम नर ॥
अग्गै सु भार हयनारि धरि । बानग्गीर बानैत तह ॥
सजि सेन गरट चलि मंद गति । लग्गे बज्जन बीर रह ॥
छं० ॥ २२५ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर साम्हना होना।

दूहा ॥ बज्जे बज्जन लाग दल । उभै हंकि जगि बीर ॥
विकसे सूर सपूर बढ़ि । कंपि कलच अधीर ॥ छं० ॥ २२६ ॥

हिन्दू मुसल्मान दोनों सेनाओं का घोर घमासान युद्ध वर्णन।

गीतामालची ॥ छुट्टियं हयनारि दुअ दल गोम व्योमह गज्जियं ॥
उड्डियं आतस झार झारह धोम धुंधर सज्जियं ॥
छुट्टियं बान कमान पानह छाह आयस रज्जियं ॥
निरयंत अच्छरि सूर सुब्बर सज्जि पारथ मज्जियं ॥ छं० ॥ २२७ ॥
सज्जेवि सुभ्भर देवि ईसर आय गंध्रव किन्नरं ॥
नारह नद्दह मंडि मद्दह दृष्षि नंचि अचंभरं ॥
हिंदू स जंपिय राम रामह सांइ अग्गा सद्दयं ॥
असुरेव जंपिय दीन दीनय [1]पीर मीर महम्मयं ॥ छं० ॥ २२८ ॥
मिलि फौज दूनह एक मेकह झार धारह बज्जियं ॥
हक्के दुमाइय अप्प अप्पह वाहि आवध गज्जियं ॥
तन तेग [2]तुट्टय सीस लुट्टय कमध नच्चय केभरं ॥
बहि ओन पूरह काल करूरह किलकि जोगिनि जे सुरं ॥ छं० ॥ २२९ ॥
नच्चंत बीर बिताल तालिय घरहरंत सु सद्दयं ॥
नच्चंत ईसुर रज्जि भीसुर डमकि डोंरुअ नद्दयं ॥
रस रूक बाहै धाक धाहै झाक आवध ओभरं ॥

(१) मो.-पादि नीर। (२) ए. कृ. को.-तुट्टहि, लुट्टहि।

असि पटापेलयं सेल [1]मेलय सूर तुट्टहि सुभ्भरं ॥ छं० ॥ २३० ॥
परि सीस हक्कहि धर हहक्कहिं अंत पाइ अलुभ्भरं ॥
उठि उट्ठि क्ककसि केम उक्कसि सांइ सुथ्थल [2]जुभ्भरं ॥
एकेक चंपहि पीठ नंषहि धरनि धर परिपूरयं ॥
हक्कियं सु बेगं अलिय महमद करिय द्रग्ग करूरयं ॥ छं० ॥ २३१ ॥
सम चले गज्जह देषि रज्जह जीह हनि हनि जंपियं ॥
आवंत टूंन मसंद राजह देषि चच्चर चंपियं ॥
हनि संग ऊरह प्रान पूरह दो कलेवर गोइयं ॥
बिड्डवि राजह परे गाजह संगि एक परोइयं ॥ छं० ॥ २३२ ॥
रस रुद्र बीर भयान मच्चिय काल नच्चिय नोदयं ॥
हक्कीय राज दुअप्प सुभ्भर बीर बीरह मोदयं ॥
हँकि सूर मंत गयन्न लग्गिय बाह चंपिय आवधं ॥
ढिलि असुर सयंन पिंड पंचह चंपि जंपिय सावधं ॥ छं० ॥ २३३ ॥
जामेक जुड अरुड लग्गिय बीर जंपिय बीरयं ॥
सिड्डीय सिड्डय संत रासह ग्रध्र सोनह सीरयं ॥
...　　....　　....　　....　　.... ॥
....　　...　　....　　...　　.. ॥ छं० ॥ २३४ ॥

बरनी युद्ध वर्णन ।

कवित्त ॥ हय गय हय हय अरय । रथ्थ नर नर सों लग्गा ॥
हय सों हय पायल सु । पाय करि सों करि भग्गा ॥
ईस आन बर चवै । सूर सूरन हक्कारिय ॥
सार धार झिल्लै । प्रहार बीरा रस धारिय ॥
घरि एक भयानक रुद्र हुअ । सीस माल गंठी सु कर ॥
कविचंद दंद दुअ दल भयौ । सुगति मग्ग पुल्लै विदर ॥छं०॥२३५॥

लोहाना का फुर्तीलापन ।

साटक ॥ सीतं [3]गोप सरेत भीतय बरं नर जोति दिष्षी गुरं ॥
रंभं रंभ सुरथ्थयं च अमृतं आलंब वाहं बरं ॥

(१) ए. कृ. को.-सेलहि ।　(२) ए. कृ. को.-जुथ्थरं ।　(३) ए. कृ. को.-तोप ।

दिग्गी दिष्टि विभारथोवि सरसा भारथ्थ विय बुझयं ॥
गोरी सा सुरतान रुक्कति तयं आजानबाहं बरं ॥ छं० ॥ २३६ ॥

लोहाना और पहाड़राय का शाह पर आक्रमण करना और यवन सेना का उन्हें रोकना ।

दूहा ॥ लोहानो आजान वर । लोहा लंगरि राव ॥
कढ्ढ लंबी तेग वर । साह सनंमुष धाव ॥ छं० ॥ २३७ ॥
सज्जि [1]सेन तूंअर सुभर । [2]वड्डिय हय चढ़ि षेत ॥
समुह साहि दिष्यौ सु द्रग । बंध्यौ बंधन नेत ॥ छं० ॥ २३८ ॥

नराच ॥ सु दिट्ठि दिष्यि फौजयं, पहार साहि सम्मयं ।
चल्यौ सु राव सूर मंत, दिष्यि सम्म रम्मयं ॥
बचे सु राम बीर बीचि, साजि गाज उट्टए ।
कढ़े सु सस्त्र सारि झारि, मीर सीस तुट्टए ॥ छं० ॥ २३९ ॥
मिल्यौ दु फौज हक्कि धक्कि, अन्य अन्य आवधं ।
जयं सु अप्प बंछि बंधि, वीर संधि सावधं ॥
तुटे सु षग्ग भग्ग भार, दंत उड्डि दामिनी ।
बरंत हूर मीर धीर, काम [3]बंछि कामिनी ॥ छं० ॥ २४० ॥
बरंति हूर अच्छरी, सु देह रोहि रथ्थयं ।
ग्रहंत अग्नि एक पंति, उड्ड जात तथ्थयं ॥
मच्यो करार धार मार, सार सार धारयं ।
परंत एक तुट्टि तेग, उट्ठि झार मारयं ॥ छं० ॥ २४१ ॥
करें किलक बीर हक्क, सट्ठि कंठ पूरयं ।
रमंत रासि भीर भासि, नंदि नंचि नूरयं ॥
तुटंत सीस रोम रीस हक्कयं धरप्परं ।
.... ॥ छं० ॥ २४२ ॥
नचै कमंध तुट्टि रंध [4]अभ्भि रंत संभरं ।
अलुझ्झि कंठ कंठ एक तुट्टि तेग दुब्भरं ॥

(१) ए.-फौज । (२) ए. कृ. को.-कड्डिय ।
(३) ए. कृ. को.-बंधि, बादि । (४) ए. कृ. को.-भर ।

वहंत सार बार पार ता हरंत अंतरं।
ग्रहंत दंत दंत एक कंठ कंठ मंतरं ॥ छं० ॥ २४३ ॥
झटा सु हाक झाक धाक साल सेल संमुहं।
कांत घाव जंम ¹डाव घाव घाव रंमहं ॥
हुअंत षंड षंड घाउ सुन्नरं बगत्तरं ॥
परंत बाजि षंड भाजि सुंडरं सु पष्परं ॥ छं० ॥ २४४ ॥
झरंत मत्त सुंड दंत षंड षंड चिक्करं।
ठिले सु मीर एक धीर नट्ठि षेत निक्करं ॥
चली सु फौज लष्षि साहि रोहि गज्ज सज्जियं ॥
हकारि मीर बक्कारि षग्ग धारि गज्जयं ॥ छं० ॥ २४५ ॥

क्षत्रिय वीरों का तेज और शाह के वीरों का धैर्य्य से युद्ध करना।

कवित्त ॥ बीर बीर षुट्टए। बीर बीरह आहुट्टे ॥
सार धार बज्जे प्रहार। मद ज्यों दुअ जुट्टे ॥
रन हकारें राव। सिंघ पर एन सु छुट्टे ॥
वर उतंग भर सुभर। अप्प पर अनत न छुट्टे ॥
वर बीर साहि दिष्यौ निजरि। सां षुस्सें कुल चाढ़ि सहु ॥
जाने कि काल जीहा उकसि। उद्दिग बाह ²पगार बहु ॥
छं० ॥ २४६ ॥

दूहा ॥ हय गय रथ्थ अरथ्थ हुअ। नर सों नर नर लग्ग ॥
सघन घाइ उर बज्जते। भय भींभर द्रग भग्ग ॥ छं० ॥ २४७ ॥
हुअ हकार गज्जिय सु भर। जुटे साहि तसील ॥
मानों मत्त गयंद दो। जुटि अंकस बिन पील ॥ छं० ॥ २४८ ॥

उक्त दोनों वीरों का युद्ध और अन्य सामंतों का उनकी सहायता करना।

(१) ए. कृ. को.-दाव। (२) मो. पसार।

भुजंगी ॥ जुटे जोध जोधं अभंगं करालं। उठे मुष्य नासा नयनं बरालं॥
मिले छोह कोहं असम्मान लग्गे। परे लोह लत्तं निघत्तं करग्गे ॥
छं० ॥ २४९ ॥

दुअं दीन दीदेर ते लोह [1]छक्के। फिरै गेन देवी हकारंत हक्के ॥
भए चाल बंधं [2]मसंदं मसंदं। करें हूक हकं सु आवृत सद्दं ॥
छं० ॥ २५० ॥

हरें संध बंधं बहैं षग्ग धारें। मनों चक्र पंकं कुलालं उतारें ॥
लगे [3]संग अंगं कढ़ें बार पारं। बहै आनि आदक्क ओनं प्रनारं ॥
छं० ॥ २५१ ॥

लगै गुर्ज सीसं दुअं हथ्थ जोरं। दधी भाजनं आनि हरि ग्वाल फोरं॥
मिले हथ्थ बथ्थं गहै सीस केसं। जरे जम्म दड्ढं महा मल्ल भेसं ॥
छं० ॥ २५२ ॥

करें छुल्लिका जुद्ध [4]कित्तंति बीरं। दियें भेज अंगं मनों मुंड चीरं॥
रुपे बीर सामंत डिग्गे न पग्गं। तुटै सीस धक्कै धरं हक्क अग्गं ॥
छं० ॥ २५३ ॥

चले श्रोन पारं मची कीच भूमीं। अभूतं सु कंकं महाबीर भूमी॥
जहा षान तत्तार रुपि राहु रूपं। तहां चक्र रुपी प्रथीराज भूपं ॥
छं० ॥ २५४ ॥

मिले मुष्य गोयंद चहुआन कन्हं। जुरे जैत बलिभद्र परसंग मन्हं ॥
परे मेच्छ व्यूहं सु पावै न आनं। करी पारसं कोपि चहुआन आनं॥
छं० ॥ २५५ ॥

गहों साहि गोरी हरों स्वामि त्रासं। बहै मध्य लोहान ज्यों काल ग्रासं॥
मुन्यौ षान तत्तार अप्पार मारं। परे षेत अंगं अभंगं अपारं ॥
छं० ॥ २५६ ॥

लिये जीति वाजिच हस्ती तुरंगं। तक्यौ तोमरं साहि सज्यौ कुरंगं॥

(१) ए. कृ. को.-छक्कं, हक्कं। (२) ए. कृ. को.-मसंदं।
(३) ए. कृ. को. संग। (४) मो.-कित्ते स।

* .... । .... ॥ छं० ॥ २५७ ॥

यवन सेना का पराजित होकर भागना।

कवित्त ॥ [1]लुथ्थि लुथ्थि आहुट्टि। लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय ॥
षां षुरमान ततार। षान रुस्तम वे जुट्टिय ॥
अवर सेन अध लष्य। तेह घाइल भर भग्गिय ॥
सहस [2]सत्त परि षित्त। मुष्य सामंत विलग्गिय ॥
मत्तंति लोह छक्के गरुअ। हरुअत्तन करि गरुअ किय ॥
भग्गौ सु तूल सुरतान दल। क्रम्म क्रम्म उड्ड बरिय ॥छं० ॥ २५८ ॥

छः सामंतो का शाह को घेर लेना।

चढ़त गज्ज साहाब। दिट्ठ पाहार सु दिष्यिय ॥
रा जद्दव जामानि। राव भोंहा भर लष्यिय ॥
लोहानों आजान। बाह उद्दिग पग्गारह ॥
विंझराज चालुक्क। देपि षट सामंत सारह ॥
दौरे सु सज्जि असिवर सुमुष। गहो गहो जंपेव सुर ॥
आए मसंद अट्ठे दुदस। मुझ्झ अलुझ्झिय साह पर ॥
छं० ॥ २५९ ॥

उत्तह बीस मसंद। इत्त सामंत सत्त षट ॥
बज्जै सार करार। झार उट्ठंत रूक झट ॥
[3]षमरन श्रोन प्रवाह। गाहि रन बीर समथ्थं ॥
परे मसंद मसंद। धरनि सामंत सु हथ्थं ॥
चंप्यौ सु गज्ज गोरी गरुअ। रा भोंहा हय सीस गय ॥
घेर्‍यौ सु सब्ब सामंत मिलि। लोहानों गज रोह हय ॥छं०॥२६०॥

लोहाना का शाह के हाथी को मार गिराना।

दूहा ॥ हक्कि तुरी लोहान तब। हन्यौ कंध गज षग्ग ॥
ढरिग सीस पुंतार सम। धरनि दंत दोय लग्ग ॥ छं० ॥ २६१ ॥

*मालूम होता है यहां के कुछ छन्द खण्डित हो गए हैं।

(१) मो.-लोथि। (२) ए. कृ. को. सित। (३) ए. कृ. को -षमरत।

शाह का पकड़ा जाना।

कवित्त ॥ ढरत कंध गज साहि। गह्यौ पाहार षंचि कर ॥
कसिय बाह तूंवर सतेन। हय डारि कंध पर ॥
गह्यौ देषि सुरतान। सेन भग्गे सब आसुर ॥
परी लूटि हय गय समूह। बर भरे दरक 'जर ॥
परे मीर सत्तह सहस। सहस अड्ड हय 'पंचि गय ॥
दिन अस्त साहि साहाब गहि। दियौ हथ्थ अप्पन सु रय ॥
छं० ॥ २६२ ॥

मृत वीरों की गणना।

दूहा ॥ सय षत्तिय परि हिंदु रन। सत्त एक हय थान ॥
सामंता सब तन कुसल। जय लद्धी चहुआन ॥ छं० ॥ २६३ ॥

लोहाना की प्रशंसा, शाही साज सामान की लूट होना।

कवित्त ॥ लोह हद्द मंडीय। मोहि विसमै द्रिग लिन्निय ॥
अहत कंट मंडयौ। होम पासंग सु किन्निय ॥
सकति अग्ग दुभ्भरी। किन्न पूजा कज वद्दिय ॥
सुजस पवन छुट्टयौ। कित्ति चाव दिसि फुट्टिय ॥
आवद्ध रतन लोहान बर। लोहा लंगर धाइयां ॥
आजान बाह बहु भूप बल। गहन तेग उच्चाइयां ॥ छं० ॥ २६४ ॥
गह्यौ साहि सुरतान। ओध हय गय तहं भग्गे ॥
जमदट्टां जम दड्ड। असम असिवर नर लग्गे ॥
चामर छत्र रषत्त। तषत्त लुट्टे सुरतानी ॥
बंधि साह सु विहान। सुकर दीनौ चहुआनी ॥
बर बंध गए ढिल्ली तषत। जै बज्जा बज्जे सघन ॥
सोमेस सुअन संभरि धनी। रबि समान तप मान 'धन ॥
छं० ॥ २६५ ॥

(२) ए.-जारन। (३) ए. कृ. को.-पंचि। (३) ए. कृ. को.-सम।

पृथ्वीराज का सकुशल दिल्ली जाना और शाह से दंड लेकर उसे छोड़ देना।

गहिय साहि आलम्म। गए प्रथिराज अप्प ग्रह ॥
पोस मास पंचमिय। सेत गुरवार क्रत्ति कह ॥
जोग सकल गहि साह। सज्जि दिल्ली संपत्तौ ॥
अति मंगल तोरन। उछाह नीसान घुरत्तौ ॥
दिन तीस रष्षि गोरी गरुअ। अति आदर आसन्न वर ॥
करि दंड सहस अट्ठह सु हय। गय सु सत्त लिय मुक्कि कर ॥
छं० ॥ २६६ ॥

दंड वितरण।

दूहा ॥ अर्द्ध दंड (१)प्रथिराज पहु। दीनौ राव पहार ॥
अवर पंच सामंत अध। दीनौ प्रथुक पयार ॥ छं० ॥ २६७ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके दुग्गा केदार संवादे पातिसाह ग्रहनं नाम अट्ठावनवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५८ ॥

(१) मो.-पतिसाह।

अथ दिल्ली वर्णनं लिष्यते ।

(उनसठवां समय ।)

पृथ्वीराज की राजसी ।

दूहा ॥ साष साष भट भाष घट । । द्र सम वर पुर इंद ॥
तपै स्वर सामंत इछ । दिल्लिय चंद कविंद ॥ छं० ॥ १ ॥

दिल्ली के राज्य दरबार की शोभा ।

अति अति रूप अनंत बर । जरि जराव बहु भंति ॥
सभा सिंगारिय सकल भर । मनु सुरपति ओपंति ॥ छं० ॥ २ ॥
मधुरिति छत्र विराज महि । सिंघासन बहु साज ॥
जनु [1]कि मेर उतकंठ महि । सामंत रिद्धि सकाज ॥ छं० ॥ ३ ॥

कवित्त ॥ घट सुभाप घट हंन । बहुत बज्जन तहं बज्जत ॥
रंग राषि घट भंति । करिय सें अट्ठह गज्जत ॥
वपु सुमेर गति सर्प्प । छके घट रिति मद मत्तह ॥
मनहु काम प्रतिबिंब । । लयौ अवतार [2]दिल्लि यह ॥
चल चलत राइ चिहुं चक्क के । आयम रन डंडक गहन ॥
चहुआन भान सम भान तप । रहन वास उडुपति धरन ॥
छं० ॥ ४ ॥

निगमबोध के बाग की शोभा वर्णन ।

नराच ।। सुधं निगंम बोधयं, जमंन तट्ट सोधयं ।
तहां सु बाग अच्छयं, बने सु गुल्ल अच्छयं ॥ छं० ॥ ५ ॥
समीर तासु बासयं, फलं सु फूल रासयं ।
बिरष्य बेलि डंबरं, सुरंग पान अंमरं ॥ छं० ॥ ६ ॥
जु केसरं कुमंकुमं, मधुप्प वास तं भ्रमं ।

(१) मो.-जनु किरन्न । (२) ए. तिनह ।

अनार दाष पल्लवं, सु छच पत्ति ढिल्लवं ॥ छं० ॥ ७ ॥
श्री षंड थंड [1]वासयं, गुलाब फूल रासयं ।
जु चंपकं कदंबयं, षजूरि भूरि अंबयं ॥ छं० ॥ ८ ॥
सु अंननास जीरयं, सतूतयं जँभीरयं ।
अपोट सेव दामयं, अवाल बेलि स्यामयं ॥ छं० ॥ ९ ॥
जु श्रीफलं नरंगयं, सबद्द स्वाद छीतयं ।
चवंत मोर वायकं मनो सँगीत गायकं ॥ छं० ॥ १० ॥
उपम्म बग्ग राजयं, मनों कि इंद्र साजयं ।
...., ... ॥ छं० ॥ ११ ॥

दूहा ॥ उड़ि सु वास गुल्लाल अति । उड़ि अबीर असमान ॥
मनहु भान अंबर सुरत । बजी तंति सुरगान ॥ छं० ॥ १२ ॥

दरबार की शोभा और मुख्य दरबारियों के नाम ।

* वेलीविद्रुम ॥ बजि तंति तंचिय बज्जनं । सुरगान [2]सज्जिय सुरगनं ॥
गुल्लाल लज्जिय अंगनं । आरक्त रंगि परंगनं ॥ छं० ॥ १३ ॥
चहुआन ओपिय छचयं । बंधान बंधिय सत्रुअं ॥
सामंत दरगह [3]सज्जयं । करतार कौन सु कज्जयं ॥ छं० ॥ १४ ॥
ढरि चमर दुअ भुज ढिल्लयं । मधु उपम मधुवन मिल्लयं ॥
गोयंद निद्दुर सलष्षयं । धुर धरन गह्यि नष्षयं ॥ छं० ॥ १५ ॥
बनि इंद देव सु वन्नयं । सोमेस बंधव कन्हयं ॥
चष पटिय चष्पन थट्टयं । दस लष्ष मीर दवट्टयं ॥ छं० ॥ १६ ॥
रिषि आप आप विधुत्तयं । थिर रहै रिद्धि न थुत्तयं ॥
गुरराम पिट्ठ विराजयं । जनु वेद ब्रह्म सु साजयं ॥ छं० ॥ १७ ॥

(१) ए.-वीसयं ।

* इस छन्द को मो. प्रति में दण्डमालची करके लिखा है । वास्तव में कौन छन्द ठीक है इसके लिये हमने प्रचलित हिन्दी पिंगलों की छानबीन की परन्तु कुछ भी पता न चला अस्तु हमने ए. कृ. को. तीनों प्रतियों के पाठ को मान कर मो. प्राति के पाठ को पाठान्तर में दिया है।

(२) ए. कृ. को.-सज्जि कि सरगनं । (३) ए. सज्जियं ।

मुष अग्ग चंद [1]सु भष्षनं। रज रीति हद्द सु रष्षनं॥
पुंडीर चंद सु पाहरं। नर नाथ दानव नाहरं॥ छं०॥ १८॥

बनि अन्यो अन्य सु ठौरयं। सुनि तंति सुरगन सोरयं॥
पिट्ठे स दिट्ठय पासनं। रचि अंब सेत हुतासनं॥ छं०॥ १९॥

चामंड लष्ष सु लष्षनं। रजि हिंदु राज सु रष्षनं॥
रनधीर सामँत सुब्भयं। भिरि भंजि मीर सु द्रब्भयं॥ छं०॥२०॥

मुष अग्ग बाजन ठट्टयं। पहु दीप मझ्झल कट्टयं॥
दोसत्त जुर रा दुष्षनं। चिहु चक्क चारु सु [2]पिष्षनं॥ छं०॥ २१॥

घुरि चंब सुर तहं बज्जनं। गहि छंड गोरिय गज्जनं॥
रचि मद्दल मधुरिति मधुरयं। भ्रम छंडि मंडि सु पिष्षयं॥
छं०॥ २२॥

दिल्ली नगर की शोभा वर्णन।

चोटक॥ घुरि घुम्मिय चंब निसान घुरं। पुर है प्रथिराज कि इंद्रपुरं॥
प्रथमं दिलियं किलयं कहनं। ग्रह पौरि प्रसाद पना सतनं॥
छं०॥ २३॥

धन भूप अनेक अनेक भती। जिन बंधिय बंधन छत्रपती॥
जिन अस्व चढ़े [3]घरि असि लयं। बल श्री प्रथु मच अनेक भयं॥
छं०॥ २४॥

दह पोरि सु सोभत पिष्ष वरं। नरनाह निसंकित दाम नरं॥
भर हट्ट सु [4]लष्षनयं भरयं। धरि बस्त अमोल नयं नरयं॥
छं०॥ २५॥

तिहि बीच महल्ल सतष्षनयं। लष कोटि धजी सु कवी गनयं॥
नर सागर तारँग [5]सुद्ध परें। परि राति सुराथन बादु परें॥
छं०॥ २६॥

(१) मो. सु भूषन। (२) ए. कृ. को.-चष्षनं। (३) ए. कृ. को.-घरि। (४) ए. कृ. को.-सुष्पनयं। (५) ए.-सद्ध।

मचि कीच अोगालन हट्ट मझें। दिषि देव कैलासन दाव दझें॥
[1]रजितार वितारन भंति नवी। परिजानि हुतासन लत्त छवी॥
छं० ॥ २७ ॥

मनु सावक पावक मद्द किय। विन तार अतारन मारि लिय॥
इन रूप टगं मग चाहनयं। मनों सूर सबै ग्रह राहनयं॥
छं० ॥ २८ ॥

तिन तट्ट कलिंदय तट्ट सजं। धर मभझन तार अनेक सजं॥
तिन अग्ग सुभंत सु बग्गनयं। लषि लष्षि चौरासिय उड्डनयं॥
छं० ॥ २९ ॥

पचि लल्लिय नीलिय मानकयं। रतनं जतनं मनि तेज कयं॥
सुभ दिल्लिय हट्ट सु नैर मझैं। करि दंत मिलंत गिरंत सझैं॥
छं० ॥ ३० ॥

इय सामँत दामिन रूप कला। वर बीर उठै घरि सत्त कला॥
जिन सामँत सामँत सुद्धरयं। घटि बढ्ढि मँडे गिर दुब्भरयं॥
छं० ॥ ३१ ॥

कवित्त ॥ परिहारह बन बीर। आय हथ जोरि सु उभ्भिय॥
भोजन सद्द प्रमान। तहां [2]प्रथु सामँत सुभ्भिय॥
सभा विसरजिय सूर। आय बैठक बैठारिय॥
बहुत मंस पकवान। जबुकि प्रथमी आधारिय॥
पट ब्रन्न दरग्गह सोम सुभ्र। केसर अगर कपूर उर॥
सामंत नाथ चरचिय सबन। सिव दच्छी ढुंढा सहर॥
छं० ॥ ३२ ॥

राजसी परिकर और सजावट का वर्णन।

तोटक ॥ इह इंद्र पुरं किधौं दिल्ल पुरं। इम उप्पिय मंदिर सोम [3]सुरं॥
इह मेर किधों इंद्र चापनयं। बहु भंति जरे मनि पट्टिनयं॥
छं० ॥ ३३ ॥

(१) ए. कृ. को.-रचिता विरलारन। (२) ए.-प्रिथा, ए. कृ. को.-प्रिथ।
(३) मो.-सुत्र।

सुर मध्य विराजत ह्रर समं। सु मनों सुर उप्पर भान भ्रमं॥
घन मद्धि तड़ित्त कला विकलं। पुर धाम सुभट्ट सषा प्रबलं॥
छं० ॥ ३४ ॥

सुभ रूप तहां गनिका गनयं। भ्रमि मानव सिद्ध सुरं भ्रमयं॥
गहि तंचिय जंचिय डक्क बजै। जनु मार किधों कुरु कोक सजै॥
छं० ॥ ३५ ॥

उड़ि बीर अबीर न झारनयं। जनु मेर सुधा गिर धारनयं॥
लष एक लियै रजनी सजनं। ग्रह रूप अनूपम काम मनं॥
छं० ॥ ३६ ॥

भरि द्रव्य रमै सब हीर मनं। रमि जूप बदै रमनी गमनं॥
सब हारि निहारि कोपीन सझै। जब लिद्धिय नारि अपारि द्रझै॥
छं० ॥ ३७ ॥

इन मान अमान सु रूप रमै। मनु सिद्धि करामति क्रम्म क्रमै॥
बनि पंति सुकंत निसान लयं। मुष दिट्ठिय ढिल्लिय मालनयं॥
छं० ॥ ३८ ॥

मनु रूप अनूप सितं विकनं। भर भीर बढ़ी नह दिट्ठ नयं॥
[1]घन घोरत सोर अमोघ नयं। मनु बाल सजोवन प्रौढ बनं॥
छं० ॥ ३९ ॥

सु जहां चहुआन सु भोन सजै। सु मनों ससि कोरन कोर मझै॥
ग्रह दिष्षिय दासि अवासनयं। तिन सोभ सुकाम करी [2]तनयं॥
छं० ॥ ४० ॥

बहु रूप रवंन रवंन भती। मुष अम्रत सम्रत प्रान पती॥
मुर अट्ठ सषी अँग रष्षि कला। मनु सेस बधू प्रभु की अवला॥
छं० ॥ ४१ ॥

तिन धाम कलस्सन कोर बनी। जनु अंबर डंबर भान घनी॥

(१) ए. कृ. को.-घन सोर अमोर ! (२) ए. कृ. को.-नटयं, नठयं।

सित सत्त कलस्स सु [1]मुंदरयं। तिन मझ्झ सषी बहु सुंदरयं॥
छं० ॥ ४२ ॥

गज राजत राज सु छत्रपती। प्रथिराज कैमास हन्यौ सु मती॥
चहुआन बधू दसयं भनयं। भिरि लिद्धि मंडोवर दंपतियं॥
छं० ॥ ४३ ॥

सुभ इंछिनियं कनयं [2]सुनयं। रिति छत्र कला सुर संपतयं॥
तिय पिथ्थह व्याह पुंडौर कियं। मनु अंबर मद्धि तड़ित्त बियं॥
छं० ॥ ४४ ॥

भनि नाम चंद्रावति चंद सुती। सुष भाग सुहागन चंद सुती॥
घर दाहुर दाहिम पुत्ति दयं। तिन पेट रयन्न कुमार भयं॥
छं० ॥ ४५ ॥

ससि हत्त सु भंतिय क्रम्म करी। मनु आनिय पीय सु कंध धरी॥
तिन रूप [3]रुपं मनि लिद्ध रजं। चहुआन सु आनिय देव सजं॥
छं० ॥ ४६ ॥

बरि लिन्निय षग्ग इंद्रावतियं। जनु मुष्ष सरस्वति गावतियं॥
कुल भान सती सुत हाहुलियं। जनु किस्न रुकंमनयं मिलयं॥
छं० ॥ ४७ ॥

ग्रह पान सुती सु पजून घरं। मनु चित्त कि पुत्तरि आनि धरं॥
रिनथंभ हंसावति काम कला। तिन दीपति छिप्पत चंद कला॥
छं० ॥ ४८ ॥

सुर अच्छर मच्छर मान वती। किय अप्प [4]जँजोग संजोग सती॥
वह रूप अनूप सरूप मती। नह दिष्षिय नागिनि इंद्र सुती॥
छं० ॥ ४९ ॥

मनु काम [5]धनुंक करी चढ़यं। किधौं पंभ द्रुमं सु हिमं [6]चढ़यं॥
मुर कोटि चियंड नयन्न सुजं। तट तास सुबास जमुंन [7]सजं॥
छं० ॥ ५० ॥

(१) मो.-सन्दरयं। (२) ए.कृ.को.-सुभयं। (३) ए.कृ.को.-रयंमनि। (४) ए.कृ.को.-संजोग।
(५) ए. कृ. को.-धनंक। (६) ए.-बढ़यं। (७) ए. कृ.-सझं।

तिन तट्ट अनेक [1]गयंद सढं । पग नट्ट गिरं पवनंति बढं ॥
बहु रूप अनूप सरूप भती । दिषि जानि कला सुर देव पती ॥
छं० ॥ ५१ ॥

गज षंभ छुटंत उमद्द मदं । मनुं गाजत गज्ज अषाढ़ भदं ॥
कि मनों घह उट्ठिय कंठ लयं कि बढ़े मनु उप्पर बद्दरयं ॥
छं० ॥ ५२ ॥

बहु रंग सुरंग सु वस्त्र दिपै । तिन मेर [2]सियंन सुभान छिपै ॥
तिन मध्य रयंन कुमार नयं । सुत सूर गयंन विदारनयं ॥
छं० ॥ ५३ ॥

दिनप्रत्ति रमें तट कूलनयं । सुर पेषि सुराथह भूलनयं ॥
तट रेष रिषी सर पालनयं । क्रित नाम सुधारन कालनयं ॥
छं० ॥ ५४ ॥

राजकुमार रेनसी का ढुंढा की गुफा पर जाकर उसका दर्शन करना, ढुंढा की संक्षेप में पूर्व कथा ।

[3]सत तीन वरष्प असी अगलं । जब ढूंढ़ ढँढोरिय भू सगरं ॥
तिन सिद्ध गुफा अवतार लियं । मुनि जानि ब्रह्मा समयं दिषयं॥
छं० ॥ ५५ ॥

तिन ढिग्ग रयंन कुमार गयं । मुनि जानि कृपाल कृपाल भयं ॥
बजि तारिय भारिय सद्द बधं । प्रति जीव सु जोति गयंन सिधं ॥
छं० ॥ ५६ ॥

जट जूट विकट्ट भ्रकुट्ट भरं । मधि क्रन्न सुकी सुक मंडि घरं ॥
सुत चंद सु पानि जुगं जुरयं । सिधद्रिग्ग उघारि दियं नरयं ॥
छं० ॥ ५७ ॥

तिन पुच्छिय बत्त मही रिषयं । तुम बीसल पुच नरं [4]भषयं ॥
अब किल्लिय दुल्लिय बास कियं । प्रथमं अजमेर कुबेर दियं ॥
छं० ॥ ५८ ॥

---

(१) ए.-मयंद । (२) ए. कृ. को.-सपंन ।
(३) मो.-सित दोय वरष्य असी अलगं । (४) मो.भपनं ।

दूहा ॥ जब उतपंन सु कुंड मधि। दिय रिषि नें बर ताम ॥
जाहु सु पहिलै [1]अजय बन। जुग्गिनि वास सु ठाम ॥ छं० ॥ ५९ ॥

कवित्त ॥ पुर जोगिनि सुर थान। [2]जुग्गहने ताथें तारिय ॥
सतजुग संकर सधर। [5]परत प्रथिराज सु पालिय ॥
द्वापर पंडव राव। सत्त कौरव संघारिय ॥
कलिजुग पति चहुआन। जिन सु गोरी घर ढारिय ॥
घर जारि पंग [3]पारन रवरि। फिरि दिल्ली चिहुं चक्क धर ॥
मेवात पत्ति इक छच महि। [4]निव भ्रमेव आवट्टि नर ॥छं०॥६०॥

रेनु कुमार की सवारी और उसके साथी सामंत कुमारों का वर्णन।

दूहा ॥ सुभट सीष दिय भर सबन। रिषि प्रमान करि भीर ॥
बिन तारी करतार बर। तट बहि जमना तीर ॥ छं० ॥ ६१ ॥
घुरि निसान सद्दह धमकि। चढ़ि गज रेन कुमार ॥
मनौं इंद्र ऐराप धरि। करिय असुर संघार ॥ छं० ॥ ६२ ॥

पद्धरी ॥ आरोहि गज्ज रेनं कुमार। चढ़ि चले सुतन सामंत सार ॥
सुत कन्ह मन्नि ईसरह दास। दिय देस रहन पट्ट सु वास ॥
छं० ॥ ६३ ॥
सुत निडर बीर चंद्रह [1]जु सेन। पल मारि झारि कर बध्घ ऐन ॥
सम जैत सुअन करनह सु जाव। जिन लिये सच सिर सिद्ध दाव ॥
छं० ॥ ६४ ॥
गोयंद सुतन सामंत सींह। जिन स्वामि काम नहि लोपि लीह ॥
कैमास सुअन परताप आप। जिन रष्यि भ्रम्म घर वट्ट बाप ॥
छं० ॥ ६५ ॥
पुंडीर धीर सुत चंद्रसेन। जिन चलै सहस द्वै उड्डि रेन ॥

(१) ए. कृ. को.-अज्ज। (२) ए. कृ को.-जुगह तेता ते तारिय।
(३) ए. कृ. को पारी। (४) ए. कृ. को.-निहच मेव आवट्टि नर।
(५) ए. सु

परिहार पीय सुअ तेज पुंज । मनु दीप पक्क कै केलि कुंज ॥
छं० ॥ ६६ ॥

गुरराम सुअन हरिदेव रूप । मुष मिठ दिट्ठ कलि परन भूप ॥
हम्मीर सुतन नाहर पहार । दस पंच बरष महि बजिय मार ॥
छं० ॥ ६७ ॥

जग जेठ कुँअर चामंड जाव । जिन लिये कोट दस भंजि राव ॥
सुत मदनसिंह जैसिंघ बीर । जिन रष्षि वंस पिचवढ नीर ॥
छं० ॥ ६८ ॥

पंमार सिंघ सुअ राजसिंघ । जुरि जुद्ध रुद्र उड़ि बाह जंघ ॥
रिनधीर सुतन गुज्जरह राम । दस देस लिद्ध ग्रह अप्प धाम ॥
छं० ॥ ६९ ॥

बरदाइ सुतन जल्हन कुमार । मुष वसै देवि अंबिका सार ॥
हरिसिंघ सुतन पातल नरिंद । गज दंत कढ़े जनु भील कंद ॥
छं० ॥ ७० ॥

विंझा नरिंद सुत देवराज । सो जंग मंझ गज करत पाज ॥
अचलेस सुतन देवराज पट्ट । तन तरुन तेज गंगा सु घट्ट ॥
छं० ॥ ७१ ॥

तोंअर सुतन्न किरमाल कन्ह । जिन करी गिद्ध दुज दे अमंत ॥
पज्जून सुअन पाहारराइ । चहुआन दूला कलि करन न्याइ ॥
छं० ॥ ७२ ॥

नरसिंघ सुतन [1]हरदास हड्ड । गुर ग्रब्ब मान हम्मीर गड्ड ॥
षीची प्रसंग सुअ मल्हनास । वचि देव भ्रम्म बंकट्ट बास ॥
छं० ॥ ७३ ॥

सुत तेज डोड अचला सुमेर । दीपंत देह मानों कि मेर ॥
जंघार भीम [2]सुअ सिवहदास । कट्ठियाराइ सुत कव्विलास ॥
छं० ॥ ७४ ॥

अतताइ सुतन आरेन रूप । भिरि भीम बद्ध मारंत भूप ॥
चंदेल माल प्रथिराज ह्रूअ । भिरि जंग मभ्भ गज गहन भूअ ॥
छं० ॥ ७५ ॥

(१) मो.-सिवदास । (२) ए.-सुह ।

संग्राम सुअन सहसो समथ्थ। जुरि जुड भान रोकै सुरथ्थ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७६ ॥

दूहा ॥ स्वामि दरग्गह चलि सुवन। मनहु प्रथीपुर इंद॥
'कलि सोभन मोहन कवी। मनो सरद्द चंद ॥छं०॥ ७७ ॥

बसंत उत्सव के दरबार की शोभा, राग रंग और उपस्थित दरबारियों का वर्णन।

पद्धरी ॥ रितराज राज आगंम जानि। पंचमि बसंत उच्छव सुठानि॥
किय हुकुम सचिय सम बोलि तब्ब। प्रभु सेव साज मंगाय सब्ब॥
छं० ॥ ७८ ॥

परजनन जुक्त तह मभझ आइ। षिल्लहि बसंत गोपालराइ॥
परधान हुकुम सिर पर चढ़ाइ। सब बस्त रष्षि कन पहि कढ़ाइ॥
छं० ॥ ७९ ॥

घनसार अगर सत कासमीर। म्रगमद जवाद बहु मोल चीर॥
बहु बर्न पुप्फ को लहै पार। मन हरत मुनिन सुगंध तार॥
छं० ॥ ८० ॥

चदंन अबीर रोरी गुलाल। अति चोल रंग जनु भूड लाल॥
मिष्टान पान मेवा असंष। मन चिपति होत निरषंत अंषि॥
छं० ॥ ८१ ॥

सुभ साल विसद अंगन अवास। विच्छाय सु पट जाजिम नवास॥
अंमोल मोल दुल्लीच भारि। पंचाइ पुंट रुलितानि धारि॥
छं० ॥ ८२ ॥

छिरकाव छिरकि गुल्लाब पूरि। दिषियंत उड़ति अब्बीर धूरि॥
रहि उमड़ि घुमड़ि तहं धूप वास। तन बढ़त जोति सुब्बास रास॥
छं० ॥ ८३ ॥

तहं धरिय सिंघासन मध्य आनि। नग जरित हेम बिसकर्म जानि॥
बैठाय पाट गोपालराइ। घन घंट संष झल्लरि बजाइ॥
छं० ॥ ८४ ॥

---

(१) ए.-कवल।

मिरदंग ताल जहं पौंन धार । बीनादि जंच झिनकार सार ॥
नपफेरि भेरि सहनाइ चंग । दुर बरी ढोल [1]आवझ उपंग ॥
छं० ॥ ८५ ॥

दम्माम सबद बज्जत विनोद । बंसी सरस्स सुर उपजि मोद ॥
[2]अनि अनि चरित्त नर नारि आनि । सक्कै न होइ तिन जाति जानि ॥
छं० ॥ ८६ ॥

धरि कनक दंड सिर चमर सेत । रष्षंत पवन विय विप्र हेत ॥
[3]विद्वान चतुर दस विद्य अच्छ । सम अग्ग सिंघासन बैठि पच्छ ॥
छं० ॥ ८७ ॥

बैठिय सु कन्ह चहुआन आनि । झलहलत क्रोध उर अगनि जानि ॥
गहिलोत राव गोयंद आय । जिन सुनत नाम अरिदल पुलाइ ॥
छं० ॥ ८८ ॥

निढ्ढुर नरिंद कमधज्ज पधारि । आदर [4]अनंत न्रप करि उचारि ॥
कूरंभ कहर बलिभद्र आय । जिहि सुनत नाम अरिनह दहाय ॥
छं० ॥ ८९ ॥

फुनि आय अप्प अल्ल नरेस । भय भीम रूप जमनेस भेस ॥
अतताइ आइ तहं सिव सरूप । बैठिय सु उठ्ठि [5]भट्टराय भूप ॥
छं० ॥ ९० ॥

चावंड बिना भट सब्ब आय । अरि धरनि धरनि जे देत दाय ॥
पुंडीर आय तहं धीर चंद । अरि तिमिर तेज जिन फटति दंद ॥
छं० ॥ ९१ ॥

कूरंभ कहर पाल्हन्न देव । जिहि वियन काम बिन स्वामि सेव ॥
बय वृद्ध बाल सामंत सब्ब । अवधारि राज प्रथिराज तब्ब ॥
छं० ॥ ९२ ॥

फुनि आइ चंद [6]बरदाइ माइ । जिहि प्रसन जीह दुग्गा सदाइ ॥
आयं सु न्रत्य नाटक अधीन । गंधरव राग विद्या प्रवीन ॥
छं० ॥ ९३ ॥

(१) मो.-आवझ ।　(२) मो.-अनेक चरित ।　(३) मो.-पंडित ।
(४) ए. कृ. को. अचंत ।　(५) ए. भटराय ।　(६) ए. कृ. को.-बरदास ।

छह ग्राम मुरछना गुनं वास। सुर सपत ताल विद्या बिलास ॥
संगीति रीति अभ्यास बाल। उच्चारि राग रिझ्झिय भुवाल ॥
छं० ॥ ९४ ॥

अन्नेक चरित श्रीकृष्ण कीन। ते सब्ब प्रगट कीने प्रवीन ॥
तिम सुनत नवत तन पाप छीन। न्रप राइ रिझ्झि बहु दान दीन॥
छं० ॥ ९५ ॥

रस रह्यो रंग सभ उट्ठि राज। सामंत सब्ब निज ग्रह समाज ॥
अनसंक कंक बंकन पधोर। यों तपै पिथ्थ दिल्ली सजोर ॥
छं० ॥ ९६ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके दिल्ली वर्णनं नाम उनसठवां प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५९ ॥

अथ जंगम कथा लिष्यते ।

(साठवां समय ।)

सुसज्जित सभा में पृथ्वीराज का विराजमान होना ।

चौपाई ॥ बैठौ राजन सभा विराजं । सामँत सूर समूहति साजं ॥
विस्तरि राग कला क्रत भेदं । हरषित [1]ह्रदय असम सर षेदं ॥
छं० ॥ १ ॥

सज्जिय थान न्त्रपति कै पातुर । गुन रुपक विचरति स्रुत चातुर ॥
नाटिक कला स गीत आन रचि । अति [2]न्त्रत्यत करि विगति सु गति सचि॥
छं० ॥ २ ॥

चंद चारु माठा रूपक धरि । गीत प्रवीन प्रबंध कीन थरि ॥
उघट चिघट [3]अंग प्रमुष्य यह । निंदत चित्ररेष अच्छरि गह ॥
छं० ॥ ३ ॥

राजा को एक जंगम के आने की सूचना का मिलना ।

दूहा ॥ तत्त समै राजिंद बर । अपि सु षबरि अच्छत्त ॥
जंगम [4]एक सु आय कहि । कमधज पुर पति बत्त ॥ छं० ॥ ४ ॥

दिष्षि रहसि न्त्रप निरति रस । गुन अनेक कल भेद ॥
निरषि परषि प्रति अंग अखि । पातुर कला अषेद ॥ छं० ॥ ५ ॥

राजा का नृत्यकी को विदा करना ।

सत्त हेम है राज इक । दिय पातुर प्रति दान ॥
न्त्रत्ति विगति अवलोकि गुन । दई सीष यह मानि ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-हृदय, रिदय ।
(२) ए. कृ. को.-सु नृत्य ।
(३) ए. कृ. को.-अंड ।
(४) ए. कृ. को.-इक्कें ।
(५) ए.-वत्ति ।

पृथ्वीराज का जंगम से प्रश्न करना और जंगम का उत्तर देना।

पुनि जंगम प्रति उच्चरिय। कमधज्जन की कथ्थ ॥
बहुरि भिन्न करि उच्चरिय। सुनि सामंत सु नथ्थ ॥ छं० ॥ ७ ॥

चौपाई ॥ राज जग्य सज्ज्यौ कमधज्जं। देस देस हंकारत सज्जं ॥
मिलि इक कोटि सूर भर हासं। नृप अदेस देस रचि तासं ॥ छं० ॥ ८ ॥
थपि दर द्वारपाल चहुआनं। लकुटिय कनक हथ्थ परिमानं ॥
आय पंग तट इष्य समाजं। आनि अप्प चहुआन सु लाजं ॥ छं० ॥ ९ ॥
इह सु कथा पहिली सुनि राजन। आय कही सो फीफुनि साजन॥
लग्यौ राग श्रोतान रजानं। बुझ्झी बहुरि सु जंगम जानं ॥ छं० ॥ १० ॥

संयोगिता का स्वर्ण मूर्ति को जयमाल पहिराना।

कवित्त ॥ [1]आवलि पंग नरेस। देस मंड सुवेस बर ॥
बरन कज्ज चौसर। विचार संजोग दीन कर ॥
देवनाथ कवि अग्ग। बरनि नृप देस जाति गुन ॥
फुनि अप्पै संजोग। कनक विग्रह सु द्वार उन ॥
चहुआन राव सोमेस सुअ। प्रथीराज सुनि नाम बर ॥
गंध्रव्व [2]वचन विचारि उर। धरि चौसर प्रथिराज गर ॥ छं० ॥ ११ ॥

संयोगिता का दूसरी वार फिर से स्वर्ण मूर्ति को माला पहिराना।

दूहा ॥ देषि फेरि कहि नाथ पति। फुनि मुक्कलि कविराज ॥
बहुरि जाहु पंगानि अग। विचरै नृपति समाज ॥ छं० ॥ १२ ॥

कवित्त ॥ बहुरि नाम गुन जाति। देस पित प्रपित बिरद बर ॥
लै लै नाम पराम। देवजानी स देव कर ॥

(१) मो.-आचलि। (२) मो. वयन।

फुनि चहुआन सु पास। जाय ठट्ठे भए जामं ॥
कछु कवि रहिय राज। कछुक जंपे गुन तामं ॥
न्रप लज्ज पंग ग्रह भट्ट बर। तुच्छ संषेप सु उच्चऱ्यौ ॥
संजोग समझ्झे उर ग्रह। कंठ प्रथ्थु चौसर धऱ्यौ ॥

छं० ॥ १३ ॥

पुनः तीसरी वार भी संयोगिता का पृथ्वीराज की प्रतिमा पर जयमाल डालना।

दूहा ॥ दुसर राज इह देपि सुनि। तिय सु नाथ उर जाम ॥
सपत हथ्थ सुर जा धरिय। प्रचरि नरेसनि ताम ॥ छं० ॥ १४ ॥

कवित्त ॥ फुनि नरेस अद्देस। नाथ फिरि आय मझ्झ दर ॥
आदि वंस रचि नाम। चवत विक्कम्म क्रम्म बर ॥
दई पानि कवि जानि। होत काह्न कर मंडं ॥
भूत भविष्यत बत्त। भव्वि जानी उर चंडं ॥
उतकंठ लोकि प्रतिमा प्रतषि। दिष्षि देव देवाधि सचि ॥
बरनी संजोग चहुआन बर। पहुप दाम ग्रीवा सु रचि ॥

छं० ॥ १५ ॥

जयचन्द का कुपित होकर सभा से उठ जाना।

दूहा ॥ कोप कलंमल पंग पहु। समय विरंचि विचारि ॥
रास सोस उर धारि तव। क्रम भति भई न चारि ॥ छं० ॥ १६ ॥
उठ्ठि राज अंदरह दर। कियौ प्रवेस अपान ॥
विमुष निमुष दिष्यौ न्रपति। देव कत्य परमान ॥ छं० ॥ १७ ॥

पंगराज का दैवी घटना पर संतोष करना।

कवित्त ॥ दइय काल सुनि पंग। जग्गय विग्गऱ्यौ दच्छ पति ॥
द्रुपद राय पंचाल। जग्गय विग्गऱ्यौ इष्ट रति ॥
दइय काल दुजराज। जग्य विग्गऱ्यौ सु जानं ॥
[1]न्रघुष राइ [2]राज ह्व। गत्त जानी परमानं ॥

(१) ए. कृ. को. नघुष।　　　　(२) ए.-राजरु।

श्रुति बर पुरान श्रोतास वल। विधि विचार मंडिय सकल ॥
चय काल काल सामंत कहि । दइय काल मानै अकल ॥
छं० ॥ १८ ॥

राजा जयचन्द का संयोगिता को गंगा किनारे निवास देना ।

दूहा ॥ आदि कथा संजोग की । पहिलें सुनी नरेस ॥
अब इह जंगम आय कहि । विधि मिलवन संदेस ॥ छं० ॥ १९ ॥

कवित्त ॥ रचि अवास रा पंग । गंग दंगह उतंग तट ॥
दासि सहस सुंदरिय । प्रसँग कल ग्यान भाव पट ॥
ब्रत उचार चहुआन । घरत कर करत अप्प पर ॥
पंच धेन पूजंत । बचन मन क्रम्म गवरि हर ॥
सुनि पुनि नरेस संदेस दिढ़ । सोफी फुनि जंगल कहिय ॥
आरत्ति चरित चहुआन मन । दइय भेद चित्तह गहिय ॥
छं० ॥ २० ॥

दूहा ॥ पहिल ग्यान जंगम कहिय । दुतिय सो सोफी आनि ॥
तब प्रथिराज नरिंद ने । दैव काल पहिचान ॥ छं० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज का अपने सामंतों से सब हाल कहना ।

उठि राजन तब हुकम किय । बहुरि हूर सामंत ॥
परिहार केहरि कमल । काम नाम भर संत ॥ छं० ॥ २२ ॥
बुलिय स भूपति साधनह । दुतिय स ईसर दास ॥
बरन नेह विस्तार तन । आन रंग इतिहास ॥ छं० ॥ २३ ॥
गंग जमन जल उभय करि । करि अस्नान नरिंद ॥
क्रत हरि हर उर ध्यान प्रभु । उठ्यौ थान सुरिंद ॥ छं० ॥ २४ ॥
असन मार आराम सुष । सुष सयन्न क्रत राज ॥
उर सल्लै संजोग ब्रत । संभरि नाथ समाज ॥ छं० ॥ २५ ॥
*तब परिहार मु हुकम दिय । गए सु भोजन साल ॥
व्यंजन रस रस सेष परि । सुनि सुनि कथा रसाल ॥ छं० ॥ २६ ॥

* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है ।

पृथ्वीराज की संयोगिता प्रति चाह और कन्नौज को चलने का विचार ।

पद्धरी ॥ लग्गयौ सु राज स्रोतान राग । संजोग वृत संभरि समाग ॥
अति असम बान बेधे सरीर । नह धीर हसं [1]नह भाव धीर ॥
छं० ॥ २७ ॥

[2]रिति राज आनि रंगे सदंग । फुल्लेस विकट नव कुसुम [3]चंग ॥
कलयंठ कंठ उपकंठ अंब । पाठंत विरहनी पति सितंब ॥छं०॥२८॥
कुंजत उतंग गिरि तुंग सार । तालीस धार [4]उद्दार धार ॥
सति मान जानि सिंदन सु तात । संजोग सुघद विरहिन निपात ॥
छं० ॥ २९ ॥

उन श्रवन सान गाजंत जोर । मधु वृत्त समागध पठत घोर ॥
[5]साहीत सिषी चढ़ि सिषर टेरि । विज्जोग भगनि तिय उप्प वेर ॥
छं० ॥ ३० ॥

सासन सुरंम धरि त्रिविध पौन । वारह मत्त लघुमात गौन ॥
लगि दहन गहन मदनह सु भाम । रति नाथ नाथ विन सज्जि ताम ॥
छं० ॥ ३१ ॥

संवत्त संभ पंचास मेक । पष स्याम असित [6]उच्चार नेक ॥
पित नछिच जोग सुभ नवमि दीह । नृप मन विचार उर चलन कीय॥
छं० ॥ ३२ ॥

दूहा ॥ लग्गि बान अनुराग उर । मनमथ प्रेरि वसंत ॥
सहै नृपति अप्पै न कहुं । षेदे रिदय असंत ॥ छं० ॥ ३३ ॥

कवित्त ॥ दंग सुरंग पलास । जंग जीते बसंत तपु ॥
मदन मानि मन मोद । लीन छेदे [7]प्रछेद वपु ॥
देस नरेस अहेस । देस आदेस काम कर ॥
नीर तीर नाराच । पंग बेधे अबेध पर ॥

(१) ए. कृ. को.-चित । (२) ए. कृ. को.-रति ।
(३) ए. कृ. को.-जंग । (४) ए.-उद्दास । (५) ए. कृ. को.-साहात ।
(६) ए. कृ. को.-उज्जार । (७) ए. कृ.को.-अछेद ।

वालमलत चित्त चहुआन तब। उर उपजै संजोग हत॥
बरदाय बालि तिहि काल कवि। मन अनंत मति पर उधृति॥
छं० ॥ ३४ ॥

कविचन्द का दरबार में आना और राजा का अपने मन की बात कहना।

दूहा॥ आय चंद बरदाय बर। दिय आदर न्रप ताम॥
आनि बहुरि दीने सु तब। रष्षे तथ्थ सु काम॥ छं०॥ ३५॥
द्वारपाल कमधज्ज थपि। हम रष्षे दरबार॥
अब जीवन बंछै कहा। कहौ सु कब्बि विचार॥ छं०॥ ३६॥
अरु दिढ़ हत्त पँगानि लिय। तुम जानो सब तंत॥
चलन नयर कमधज्ज कै। सु बर विचारहु मंत॥ छं०॥ ३७॥

कवि का कहना कि कन्नौज को जाने में कुशल नहीं है।

तब कबि [१]एम सु उच्चरिय। सुनि संभरी नरेस॥
चलत न्रपति बरजिय न कहुं। विधि न्रम्मान सुदेस॥ छं०॥ ३८॥
पंग सु जानहु तुम न्रपति। चलि कीनी तुम देस॥
गाम ठाम बाहर विचल। पारि जारि किय रेस॥ छं०॥ ३९॥

कवित्त॥ [२]कोरि जोर कमधज्ज। सयन आयौ पर ढिल्ली॥
जारि पारि बेहाल। पलक कीनी धर मिल्ली॥
[३]गोपर मार उत्तंग। तोरि उच्छारि भारि भर॥
दंग जंग परजारि। [४]ठाम कीनौ अठाम नर॥
कर सँपि काल मुष को धरै। को जम पानि पसारि लय॥
सोमेस नंद विच्चारि चलि। भवसि सोय [५]देवाधि भय॥ छं०॥ ४०॥
कवन भुजा [६]बलवंत। गयन प्रस्थानन लीनौ॥
पारावार अपार। कवन पलक्ख तन कीनौ॥

(१) ए. कृ. को.-राम। (२) मो.-कारि।
(३) ए. कृ. को.-गोपरि गिर। (४) ए. कृ. को.-ताम, छाम।
(५) ए. कृ. को.-देवास। (६) ए. कृ.-बलबंड।

हेम सैल करताल। धन्यौ सिष नष्य सुन्यौ न्रप ॥
कवन धनंजय पानि। करै संभरि नरेस द्प ॥
जम जोर हथ्थ को जोर रहि। जवन अरुन रन जित्तियै ॥
चल्लहु नरेस परदेस मन। दै विधान मन चिंतियै ॥ छं० ॥ ४१ ॥

पृथ्वीराज का फिर भी कन्नौज चलने के लिये आग्रह करना।

दूहा ॥ चलन नरिंद कविंद पिथ। पुर कनवज मत मंडि ॥
दइय सीष कविचंद कहु। बहुते आसन छंडि ॥ छं० ॥ ४२ ॥

रात्रि को दरबार वरखास्त होना, सब सामंतों का अपने अपने घर जाना, राजा का सयन।

जाम एक रजनी रहिय। तथ्थ सुबर कविचंद ॥
ताम काम परिहार कों। दई सीष उनमंद ॥ छं० ॥ ४३ ॥
तब सु चंद ग्रह अप्प गय। उठिय सु पिथ्थ नरिंद ॥
आभूषन वस वास धरि। ससि दुति तेज हु मंद ॥ छं० ॥ ४४ ॥

राजसी प्रभात वर्णन।

कवित्त ॥ आय राज दीवान। जानि नाकेस अमर गन ॥
उद्वि [1]सुभर न्रप करि। जुहार आरोहि सोह थन ॥
आय तब्ब वर बुद्धि। [2]बीन धर नमित क्रत्त पहु ॥
सुधरि तंत सुर सपत। कंठ कलरव कलंठ सहु ॥
जुग घटिय सु घट अनुराग मन। राग श्रोत श्रोता धरत ॥
पांवार तार उम्भय [3]अभय। जर सभीत तारन परत ॥ छं० ॥ ४५ ॥
ताम समय बंदियन। आय बरदाय बीर बर ॥
दिष्षि सभा राजिंद। इंद निदंत नाक पर ॥
नथ्थि सुहर वाहनह। नथ्थि कालिंद्र वार भर ॥
नथ्थि बरुन वलिराइ। नथ्थि दनुनाथ लंकधर ॥
अनजीत निगमबोधह नयर। बयर साल [4]कढ्ढन [5]महन ॥

(१) मो.-सुभये। (२) मो.-"बीन धरन मिल ब्रत पहुं।
(३) ए. कृ. को.-उभय। (४) ए. कढ्ढन। (५) ए. मनह।

सोमेम नंद अनलह कलह। अंच किति भंजन दहन ॥छं०॥४६॥

गाथा ॥ दिष्पि सुभट्टह दिवानं। राजत बीर धीर अरोहं ॥

निरषि ताम प्रतिसारं। आगम निगम जान सह कब्बी ॥छं०॥४७॥

कविचन्द का विचार।

कवि जानी करतारं। रचना [1]सचन सब्ब भर सुभरं ॥

कत्तन सु मेटन हारं। विधि लिषयं भाल अंकेन ॥ छं० ॥ ४८ ॥

दूहा ॥ गत समांन भर थान उठि। आयति समय पुलिंद ॥

गहन मझि बाराह वर। निंदत कोहर किंद ॥ छं० ॥ ४९ ॥

तत कोहर इक भाल बर। पात अराम भिराम ॥

विहुरि न्रपत्ति नरेस किय। व्याधि स रष्यहु ताम ॥ छं० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज का कतिपय सामंतों सहित शिकार को जाना।

कवित्त ॥ उठि प्रातह चहुआन। [2]चढ़ि सु क्रम्मत नरेस पिथ ॥

सथ्थ सूर सामंत। मंत जान्यो अषेट पथ ॥

सुभट जाम जद्दों जुवान। बलिभद्र बीझ बर ॥

महनमोह सम पीप। बंधि लंगिय अभंग भर ॥

गुज्जरहराम आजानभुज। जैतराव भट्टी अचल ॥

हाहुलियराव मंडन्न हर। मिले सुभट तहं क्रमत भल ॥छं०॥५१॥

बाराह का शिकार।

दूहा ॥ जाय संपते भर गहन। जोजन इक इक [3]कोह ॥

तहं सूकर सूतौ न्निमय। कोहर तथ्थ सु [4]पोह ॥ छं० ॥ ५२ ॥

धरि छत्तिय दिढ़ तुपक न्रप। हक्किय व्याधि वराह ॥

उट्ठि भयंकर पात तजि। तिच्छन संचरि ताह ॥ छं० ॥ ५३ ॥

बाराह का वर्णन और राजा का उसे मारना।

कवित्त ॥ कविय व्याधि वाराह। उट्ठि धायौ चंचल सम ॥

बदन भयंकर भूत। दंत दीरघ ससि बीय सम ॥

(१) मो.-सचनं। (२) मो.-"चढ़ि संक्रम्भ नरेस पिथ"।

(३) मो. ग्रेह। (४) मो. पेह।

सनमुष क्रमत नरेस। दिष्षि छत्तिय धरि जंतिय ॥
सबद् रोस संचार। सूर जोवंत [1]सु पंतिय ॥
संचष्षि उभय भ्रकुटिय सहथ। लग्गिय गोरिय [2]परचरिय ॥
उच्छरत योत धुक्किय धरनि। भल जंपिय भर सारथिय ॥
छं० ॥ ५४ ॥

दूहा ॥ किय सिकार बर सूर पति। ग्रेह संपतौ जाय ॥
चल्यौ प्रात प्रथिराज पहु। सिव सेवन सद भाय ॥ छं० ॥ ५५ ॥

शिकार करके राजा का शिवालय को जाना। शिव जी के शृंगार का वर्णन।

पद्धरी ॥ आभत्त ईस ईसान घान। पुर अलक असुर सुर हंद मान ॥
जट विकट चकुट झलकंत गंग। तिन दरसि भरत पातिग पतंग ॥
छं० ॥ ५६ ॥
तट भाल चंद दुति दुतिय दीह। हरि सुजस रेष राजन अतीह ॥
तिन निकट नयन झलकंत अंग। सिर पंच [3]सोह रजिकय उदंग ॥
छं० ॥ ५७ ॥
आभा अनूप विभ्भूति बार। प्रगटे सुधीर दधि करि विहार ॥
झलकंत तरल तिच्छन सुरंग। [4]तम रहै मेर उपकंठ संग ॥
छं० ॥ ५८ ॥
रजि उरग हार उद्दार धार। रुचि सेत स्याम तन तिन प्रकार ॥
आरोपि उअर वर रुंडमाल। उड़पंति कंति हिम गिरिय [5]भाल ॥
छं० ॥ ५९ ॥
कटि तटि लपेटि लंकाल घाल। आवरिग अंग गज [6]तुज विसाल ॥
कर तरल तुंग तिरसूल सोह। चयलोक सोक संकत समोह ॥
छं० ॥ ६० ॥
डहडहत डमरू कर दच्छि पानि। क्रत उंच उंच भय भगति [7]भानि॥

(१) ए. कृ. को.-सर्यतिय। (२) ए. कृ. को.-परचारिय।
(३) ए. कृ. को.-सीह। (४) ए. कृ. को.-तन।
(५) ए. कृ.-पयाल। (६) मो. गज तुव। (७) ए. कृ. को.-सांनि।

अरधंग उमय सरवंग देव। नाटिक्क कोटि को लहत भेव ॥
छं० ॥ ६१ ॥

चवरंग विसाल [1]माली प्रमथ्थ। अरोहि वृषभ मन [2]सुमन रथ्थ ॥
घट बदन बदन गज मदन अग्ग। गन जंत गज्ज अनेक बग्ग ॥
छं० ॥ ६२ ॥

कैलास वास सिवरंग रोध। बर बसत आय थिर निगमबोध ॥
आहुत्ति परसि क्रित प्रथियराज। उपवास व्याधि कारन सुभाज ॥
छं० ॥ ६३ ॥

निसि जगत ईस तिय रथ परिथ्थ। हरिहरि समेत कलि कलन कथ्थ॥
अनेक विधी रिष गन प्रसंग। उर हरन करन क्रमि आय तंग ॥
छं० ॥ ६४ ॥

दूहा ॥ राज दरसि हर सरस बर। उर उद्दित आनंद ॥
कर कलंक तिरहूल कर। जै जै समर निकंद ॥ छं० ॥ ६५ ॥
नमित दान शिव प्रमित सुष। बारह वार नरेस ॥
हर हर हर उर ध्यान गुर। दिष्षन दरसन तेस ॥ छं० ॥ ६६ ॥
स्रुति उचार संचय सु रिषि। उज्जल अरचि अचार ॥
मन सु ब्रह्म तन माम सी। ते देषे हरद्वार ॥ छं० ॥ ६७ ॥

पृथ्वीराज का स्नान करके शिवार्चन करना, पूजा की सामग्री और विधान वर्णन।

करि सनान संभरि स पहु। स च सुवास तन धार ॥
अंदर शिव मंदिर परसि। आरोहन क्रत कार ॥ छं० ॥ ६८ ॥

पद्धरी ॥ करि नमसकार संभरि नरेस। अवलोकि अंग उमया वरेस ॥
रिषि रुप षटंग उचरंत चार। ओरहि राज दुज सम सुसार ॥
छं० ॥ ६९ ॥

धरि ध्यान [3]उरध नाटेस राय। मधु दूब षीर दधि तंदुलाय ॥
घट उभय सहस [4]सुर सुरिय अंब। चव सहस कलस जमना प्रसंब॥
छं० ॥ ७० ॥

(१) ए. कृ. को.-मानी। (२) ए. समन।
(३) ए. कृ. को.-अरध। (४) मो. रसुरीय अंब।

दधि सहस एक घट सहस षीर। मधु पंच सत्त सुच्छव सहीर ॥
घट सहस [1]रष्षि अहइ प्रवान। घट कासमीर सय पंच थान ॥
छं० ॥ ७१ ॥

रस उभय दून घट विसल बानि। अस्तूति चंद जंपै विधान ॥
वरकुंभ सत्त गुल्लाब पंच। घट उभय नाग संभव सुरंच ॥
छं० ॥ ७२ ॥

घठ उभय जष्षि क्रद्दम सु सत्त। घट उभय सात बहु विधि प्रबत्त ॥
सिव सिर अवंत न्टप अप्प हाथ। सद भाय अर्चि अलकेस नाथ ॥
छं० ॥ ७३ ॥

तंदुल सु दूब मधु षीर नीर। दधि सार पंच तुछ मंडि सीर ॥
सिव संषि सुघट पुज्जै चिअंब। सु प्रसन्न ईस [2]कारन तिअंब ॥
छं० ॥ ७४ ॥

सतपच कमुद ससि सूर वंस। मंदार पहुप केतकि सुअंस ॥
मालती पंच जाती अनेव। फल पहुप पच पल्लव सु भेव ॥
छं० ॥ ७५ ॥

मालूर पंग श्रीषंड धूप। नैवेद ईस आराधि जप ॥
आरोह नंत आगम प्रदोष। रचि सयन अयन राजन सु कोष ॥
छं० ॥ ७६ ॥

प्रस थारि कथा ग्रहि संभरेस। अन्नेक दांन रिषि दिय नरेस ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७७ ॥

पूजन के पश्चात कविचन्द का राजा से दिल्ली चलने को कहना।

दूहा ॥ पूजा [3]हर घन हित करी। धूप दीप सब साज ॥
चंद भट्ट बोल्यौ तबै। चल्यौ सु ग्रह फिरि राज ॥ छं० ॥ ७८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके जंगम सोफी कथा, सिव पूजा नाम साठवों प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥६०॥

(१) ए. क्र. को.-सरषि। (२) ए. कृ. को.-कारनीन। (३) ए. कृ. को.-घन हर।

अथ कनवज्ज समयो लिष्यते ।

(एकसठवां समय ।)

[अथ षट् ऋतु वर्णन लिष्यते ।]

पृथ्वीराज का कविचन्द से कन्नौज जाने की इच्छा प्रगट करना ।

दूहा ॥ सुक वरनन संजोग [1]गुन । उर लग्गे छुटि बान ॥
पिन पिन सल्लै वार पर । न लहै बेद बिनान ॥ छं० ॥ १ ॥
भय स्रोतान नरिंद मन । पुच्छै फिरि कविरज्ज ॥
दिष्यावै दलपंगुरौ । धर ग्रीषम कनवज्ज ॥ छं० ॥ २ ॥

कवि का कहना कि छद्म वेष में जाना उचित होगा ।

कवित्त ॥ दीसै वहु विध चरिय । सुअन नर दुअन भनिज्जै ॥
बल कलियै अप्पान । किति अप्पनी सुनिज्जै ॥
छौंडिज्जै तिहि काज । दुष्ष सुष्षह भोगिज्जै ॥
तुच्छ आव संसार । चित मनोरथ पोषिज्जै ॥
दिष्षियै देस कनवज्ज वर । कही राज [2]कवि चंद कहि ॥
[3]मुक्कही सूर छल संग्रहै । तौ पंग दरसन तत्त लहि ॥ छं० ॥ ३ ॥

यह सुनकर राजा का चुप हो जाना और सामंतों का कहना कि जाना उचित नहीं ।

दूहा ॥ सुनिय सुकवि इह चंद वच । ना बुल्ल्यौ सम राज ॥
अंबुज को दोऊ कठिन । उदय अस्त रविराज ॥ छं० ॥ ४ ॥
स्लोक ॥ गमनं न क्रियते राजन् । सूर सामंतमेवच ॥
[4]प्रस्थानं च प्रयाणं च । राजा [5]मध्ये गतं तदा ॥ छं० ॥ ५ ॥

---

(१) मो.-सुन (२) ए. कृ. को. कहि । (३) मो. मुक्कहि सूर छल संग्रहै ।
(४) ए. कृ. मो.- प्रच्छानं । (५) ए. कृ. को.- मध्य ।

राजा का इंछिनी के पास जाकर कन्नौज जाने को पूछना।

दूहा ॥ पुच्छि गयौ कविचंद को। इंछिनि महल नरिंद ॥
संदरि दिसि कनवज्ज कौ। चलै कहै धर इंद ॥ छं० ॥ ६ ॥

रानी इच्छनी का कहना कि वसंत ऋतु में न जाइए।

इन रिति सुन चहुवान वर। चलन कहै जिन जीय ॥
हौं जानूं पहिलै चलै। प्रान प्रयान कि [1]पीय ॥ छं० ॥ ७ ॥
प्रान ज्वाव दूनों चलै। आन अटक्कै घंट ॥
निकसन कों झगरौ पऱ्यौ। रुक्यौ गद्गद कंठ ॥ छं० ॥ ८ ॥

वसंत ऋतु का वर्णन।

साटक ॥ स्यामंगं कलधूत नूत सिषरं, मधुरे मधू वेष्टिता।
[2]वाते सीत सुगंध मंद सरसा, आलोल संचेष्टिता ॥
कंठी कंठ कुलाहले मुकलया, कामस्य उद्दीपने।
रत्ते रत्त वसंत मत्त सरसा, संजोग भोगायते ॥ छं० ॥ ९ ॥

कवित्त ॥ मवरि अंब फुल्लिग। कदंब रयनी दिघ दीसं ॥
भवर भाव भुल्लै। भ्रमंत मकरंदव सीसं ॥
वहत [3]बात उज्जलति। मौर अति विरह अग्गनि किय ॥
कुहकुहंत कल कंठ। पच राषस रति अग्गिय ॥
पय लग्गि प्रान पति वीनवौं। नाह नेह मुझ चित धरहु ॥
दिन दिन अवद्धि जुब्बन घटय। कंत वसंत न [4]गम करहु ॥छं०॥१०॥
धुम्र चलिय बन पवन। भ्रमत मकरंद कंवल कलि ॥
भय सुगंध तहँ जाइ। करत गुंजार अलिय मिलि ॥
बल हीना [5]डगमगहि। भाग आवै भोगी जन ॥
उर धर लगै समूह। कंपि भौ सीत भयत नन ॥
लत परी ललित रुब पहुप रति। तन सनेह जल पवित किय ॥
निझरै भंग अंबुज हरुअ। सीत सुगंध सुमंद लिय ॥ छं० ॥ ११ ॥

(१) को. कृ-पींउ। (२) ए. कृ. को.- वातो।
(३) ए. कृ. को.- बात। (४) ए. कृ. को.- गमन। (५) मो.-डत।

साटक ॥ लैवंधं सुर थट्ट इंछित मधू, उन्मत्त भ्रंगी धुनी ।
कंद्रप्पे सु मनो वसंत रमनं, प्राप्तो धनं पावनं ॥
कामं तेग मनं धनुष्य सजनं, भीतं वियोगी मुनी ।
विरहिन्या तन ताप पत्त सरसा, संजोगिनी सोभनं ॥ छं० ॥ १२ ॥

कुंडलिया ॥ इहि रिति मुक्कि न बाल प्रिय । सुष [1]भारी मन लुट्टि ॥
कामिनि कंत समीप विन । हुई षंड उर फुट्टि ॥
हुई षंड उर फुट्टि । रसन कुह कुह आरोहै ॥
चल्लन कहै जो पीय । गात वर [2]भग्गो सोहै ॥
नयन उमगि कन बीय । सोभ ओपम पाईं जिहि ॥
मनों षंजन बिय बाल । गहिय नंषत सुत्तिय [3]इहि ॥ छं० ॥ १३ ॥

ग्रीष्म ऋतु आने पर पृथ्वीराज का रानी पुंडीरनी के पास जाकर पूछना ।

दूहा ॥ इहि रिति रष्पिय इंछिनिय । अथ ग्रीषम रितु चारु ॥
कांम रूप करि गय न्रपति । पुंडीरनी दुआर ॥ छं० ॥ १४ ॥
सुनि सुंदरि पहु पंग की । दिसि चालन की सज्ज ॥
बर उत्तम धर दिष्षियै । पिष्षन भर कनवज्ज ॥ छं० ॥ १५ ॥

रानी पुंडीरनी का मना करना ।

न्रप ग्रीषम ग्रिह सुष्षनर । ग्रेह मुक्कि नन राज ॥
गांमगांम छादिय अमर । पंथ न सुज्झै आज ॥ छं० ॥ १६ ॥

कवित्त ॥ दीरघ [4]दिन निस हीन । छीन जल धरवैसंनर ॥
चक्रवाक चित मुदित । उदित रवि थकित [5]पंथ नर ॥
चल्लत पवन पावक । समान परसत स ताप मन ॥
सुकत सरोवर मचत । कीच तलफंत मीन तन ॥
दीसंत दिगम्बर सम सुरत । तरु लतान गय पत्त झरि ॥
अक्कलं दीह संपति विपति । कंत गमन ग्रीषम न करि ॥ छं० ॥ १७ ॥

(१) ए.- भासे । (२) ए. भग्गे-ए.-भग्गो ।
(३) ए. कृ को.-जिहि । (४) ए. कृ. को.-दिस ।
(५) ए. कृ. को.-परसत ।

साटक ॥ दीहा दिग्घ सदंग कोप अनिला, आवर्त मित्ता करं।
रेनं सेन दिसान थान मिलनं, गोमग्ग आडंबरं ॥
नीरे नीर अपीन छीन छपया, तपया तरून्या तनं।
मलया चंदन चंद मंद किरनं, ग्रीष्म च आषेवनं ॥ छं० ॥ १८ ॥

कवित्त ॥ पवन त्रिविध गति मुक्कि। सेन भुअ पत्ति जूथ चलि ॥
विरह [1]जाम बर कदन। मदन मैं मंत पील हलि ॥
पथिक बधू भरै। आम आवन चंदाननि ॥
जो चालै चहुआन तौ। मरै फुटि उर व्रंननि ॥
मन भुअन आन दैतो फिरै। प्रिय आगम गज्जै मयन ॥
कंता न मुक्कि वर क्रित्ति गर। कहूं सुनो सोनिय बयन ॥छं०॥१९॥
पिन तरुनी तन तपै। वहै नित बाव रयन दिन ॥
दिसि च्यारों परजलै। नहिं कहों सीत अरध पिन ॥
जल जलंत पीवंत। रुहिर निसि वास निघट्टै ॥
कठिन पंथ काया। कलेस दिन रयनि सघट्टै ॥
त्रिय लहै तत्त अष्पर कहै। गुनिय न ग्रब्ब न मंडियै ॥
सुनि कंत सुमति संपति विपति। ग्रीषम ग्रेह न छंडियै ॥छं०॥२०॥

*गीतामालची ॥ त्रिय ताप अंगति दंग दवरित दवरि छव रित भूषनं।
कुरु भेह पेहति ग्रेह लंपिति स्वेद संवित अंगनं ॥
नर रहित अनहित पंथ पंगति पंगयौ जित गोधनं।
रवि रत्त मत्तह अभ्भ उद्दिक कोप कर्कस सोषनं ॥ छं० ॥ २१ ॥
जल बुट्ठि उट्ठि समूह बल्लिय मनों सावन आवनं।
हिंडोल लोलति बाल सुप सुर ग्राम सुर सुर गावनं ॥
कुसमंग चीर गंभीर गंधित मंद बुंद सुहावनं।
ढलकंत बेनिय तट्ठ ऐनिय चंद्र सैनिय आननं ॥ छं० ॥ २२ ॥
ताटंक चंचल लजित अंचल मधुर मेषल रावनं।
रव रंग नूपुर हंस दो सुर कंज ज्यौं पुर पावनं ॥
नष द्रप्प द्रप्पन देपि अप्पन कोपि कंपि सु नावनं।
दमकंद दामिनि दमन कामिनि जूथ जामिनि जाननं ॥छं०॥२३॥

(१) ए.कृ.को.-जातु। * आधुनिक हिन्दी पिंगलों में इस छन्द को प्रायः हरिगीतिका करके लिखा है।

तंवोल रत घनसार भारह बेलि विद्रुम छावनं।
अलि गुंज मालहि. देषि लालहि रंभ राज रिझावनं॥
.... ॥ छं० ॥ २४ ॥

वर्षा के आने पर राजा का इन्द्रावती के पास जा कर पूछना।

दूहा ॥ मानि रूप मानिनि वचन। रहि ग्रीषम वर नेह॥
पावस आगम धर अगम। गय इंद्रावति ग्रेह॥ छं० ॥ २५ ॥

इन्द्रावती का दुखी होकर उत्तर देना।

पीय वदन सो प्रिय परषि। हरष न भय सुनि गोंन॥
आह्न मिसि असु उप्पटै। उत्तर [1]देय सलोन॥ छं० ॥ २६ ॥

वर्षा ऋतु वर्णन।

साटक ॥ अब्दे वद्दल मत्त मत्त विसया, दामिन्य दामायते।
दादूरं दर मोर सोर सरिसा, पप्पीह चीहायते॥
[2]शृंगारीय वसुंधरा मलिलता, लीला समुद्रायते।
जामिन्या सम वासुरो विसरता, पावस्स पंथानते॥ छं० ॥ २७ ॥
कवित्त ॥ मग सज्जल सुझ्झैन। दिसा धुंधरी सघन करि॥
रति पहुवी कि चरित। लता तरु वींटि सुमन भरि॥
आलिंगत धर अभ्भ। मान मानिन ललचावत॥
बर भद्रव कद्रव मचंत। कद्रव विरुझावत॥
चतुरंग सेन वै गढ दहन। घन सज्जिय न्रप चढ़िन तिन॥
भरतार संग बंछै त्रिया। बिन क्रतार [3]भत्तार बिन॥ छं० ॥२८॥
घन गरजै घरहरै। पलक निस रैनि निघट्टै॥
सजल सरोवर पिष्षि। हियौ तत छिन धन फट्टै॥
जल बद्दल बरषंत। पेम पल्हरै निरंतर॥
कोकिल सुर उच्चरै। अंग पहरंत पंच सर॥

(१) ए. कृ. को. देति। (२) ए. कृ. को.-श्रगाराय।
(३) ए. कृ. को.-भरतार।

दादुरह मोर दामिनि दसय। अरि चवथ्थ [1]चातक रटय॥
पावस प्रवेस वालम न चलि। विरह अगनि तनतप घटय॥छं०॥२९॥
घुमड़ि घोर घन गरजि। करत आडंबर [2]अंमर॥
पूरत जलधर धसत। धार पथ थकित दिगंबर॥
झझकित द्रिग सिसु म्रग। समान दमकत दामिनि द्रसि॥
विहरत चाचग चुवत। पीय दुषंत समं निसि॥
ग्रीषंम विरह द्रुम लता तन। परिरंभन क्रत सेन हरि॥
सज्जंत काम निसि पंचसर। पावस [3]पिय न प्रवास करि॥
छं० ॥ ३० ॥

चंद्रायना॥ विजय विहसि द्रिगपाल पाग्रननि पंच किय॥
विरहनि [4]विस गढ़ दहन मघव धनु अग्र लिय॥
गरजि गहर जल भरित हरित छिति छच किय।
मनहु दिसान निसानति आनि अनंग दिय॥ छं०॥ ३१॥

गीतामालची॥ द्रिग भरित [5]धूमिल जुरति भूमिल कुमुद न्रिम्मल सोभिलं॥
द्रुम अंग वल्लिय सीस हल्लिय कुरलि कंठह कोकिलं॥
कुसुमंज कुंज सरोर सुभ्भर सलित दुभ्भर सद्दयं।
नद रोर दद्दुर मोर नद्दुर बनसि बद्दर बद्दयं॥ छं०॥ ३२॥
झम झमकि विज्जल काम किज्जल श्रवति सज्जल कद्दयं।
पप्पीह चीहति जीह जंजरि मोर मंजरि मद्दयं॥
जगमगति झिंगन निसि सुरंभन भय अभय निसि हद्दयं।
मिलि हंस हंसि सुवास संदरि उरसि आनन निद्दयं॥छं०॥३३॥
[6]उट सास आम सुवास वासुर [7]छलित कलि वपु सद्दयं।
* करत आडंबर अमर प्रस्त जलधर धार पयथ्थयं॥
संयोग भोग संयोग [8]गामिनि विलसिराजन भद्दयं॥छं०॥३४॥

(१) मो. चत्रिक, चातिक। (२) ए. कृ. को.-डमर।
(३) मो.-प्रिय। (४) ए. कृ. को. बन।
(५) ए. कृ. को.-भूमिल। (६) ए. कृ. को. उत्र।
(७) ए. कृ. को. कलिल। * यह पंक्ति मो० प्राति के सिवाय अन्य प्रतियों में नहीं है
(८) मो. मानिनि।

साटक ॥ जे [1]विज्जु,भ्भल फु,ट्टि तुट्टि तिमिरं, [2]पुन अंधनं दुस्सहं ।
बुंदं घोर तरं सहंत असहं, वरषा रसं संभरं ॥
बिरहीनं दिन दुष्ष दारुन भरं भोगी सरं सोभनं ।
मा मुक्क पिय गोरियं च अबलं, प्रीतं तया तुच्छया ॥छं०॥३५॥

शरद् ऋतु के आरंभ में तैयारी करके राजा का हंसावती के पास जाकर पूछना ।

दूहा ॥ सुनि [3]श्रावन वरिषा सघन । सुष निवास न्रिप कीय ॥
बर पूरन पावस कियौ । राज पयान सु दीय ॥ छं० ॥ ३६ ॥
हंसावति सुंदरि सुग्रह । गयौ प्रीय प्रथिराज ॥
धर उत्तिम कनवज्ज दिसि । चलन कहत न्रप आज ॥छं०॥३७॥

हंसावती के वचन ।

दिष्षि वदन पिय पोमिनी । फु,नि जंपै फिरि बाल ॥
सरद रवन्नौ चंद निसि । कित लभ्भै छुटि काल ॥ छं० ॥ ३८ ॥

शरद् वर्णन ।

साटक ॥ पित्ते पुत्त सनेह गेह [4]गुपता, जुगता न दिव्या दने ।
[5]राजा छचनि साज राज छितिया, निंदायि नीवासने ॥
कुसुमेषं तन चंद न्रिमल कला, दीपाय वरदायने ।
मा मुक्क प्रिय बाल नाल समया, सरदाय दर दायने ॥छं०॥३९॥
दूहा ॥ आयौ सरद स इंद्र रिति । चित पिय पिया सँजोग ॥
दिन दिन मन केली चढ़े । रस जु लाज [6]अलि भोग ॥छं०॥४०॥
कवित्त ॥ पिष्षि रयनि न्रिमलिय । फूल फूलंत अमर धर ॥
श्रवन सबद नहिं सुझ्झै । हंस कुरलंत मान सर ॥
कवल कद्रव विगसंत । तिनह हिमकर परजारै ॥
तुमहि चलत परदेस । नहीं कोइ सरन उबारै ॥

(१) मो.-त्रिज्जुल । (२) मो.-पुनंधन ।
(३) को.-सावन । (४) ए. कृ. को.- भुगता ।
(५) ए. कृ. को. राजा छत्र निसान (६) ए. कृ. को.-अति ।

निग्रहन रत्त भरपंच सर। अरि अनंग अंगै वहै ॥
जौ कंत गवन सरदै कहै। तौ विरहिनि सिष ह्वै दहै ॥छं०॥४१॥
ट्रप्पन सम आकास। स्रवत जल अमृत हिमकर॥
उज्जल जल सलिता सु। सिद्धि संदर सरोज सर॥
प्रफुलित ललित लतानि। करत गुंजारव [1]भंमर॥
उदति सित्त निसि नूर। अंगि अति उमगि अंग बर॥
तलफंत प्रान निसि भवन तन। देषत दुति रिति सुप जरद॥
नन करहु गवन नन भवन तजि। कंत दुसह दारुन सरद॥छं०॥४२॥
माधुर्य ॥ लहु वरन घट विय सत्त, चामर बीय तीय पयो हरे।
माधुर्य छंदय चंद जंपय, नाग वाग समोहरे॥
अति सरद सुभगति राज राजति सुमति काम उमद्दयं।
ग्रह दीप दीपति जूप जूपति भूप भूपति सद्दयं॥ छं०॥ ४३॥
नव नलिनि अलि मिल्ल अलिन अलि मिल्लि अलिनि अलिव्रतमंडियं॥
चक चकी चकित चकोर चष्पित चच्छ छंडित चंद्यं।
दुज अलस अलसनि कुसुम अच्छित कुसुम मुद्दित मुद्दयं॥
भव भवन उच्छव तरु असोकहि देव दिव्य नि नद्दयं॥छं०॥४४॥
नौरता मंचहि न्रपति राजत वीर झंझरि बग्गयं।
महि महिल लच्छिर सुध्रित अच्छिर सकति पाठ सु दुग्गयं॥
अट्ठार भारह पुपित अच्छित अधर अमृत भामिनी।
रस तीय राजन लहय सोजन सरद दीपक जामिनी॥छं०॥४५॥
कवित्त॥ नव नलिनी अलि मिलहि। अलिन अलिमिलि व्रत मंडै॥
तनु न्रम्मल [2]यह चंद। चष्प [3]चकोरति छंडै॥
दुज अलसित बर निगम। कुसुम अच्छित मुद्रावलि॥
[4]पिच नेह ग्रेहरचें। बाल छुट्टै अलकावलि॥
करि स्नान धूत बसतर रचें। कंज वदन पिचंग चरि॥
आनूप जूप अंजन रचै। बिना कंत तिय गुन सुगरि॥
छं०॥ ४६॥

(१) मो.-संभर। (२) ए. कृ. को.- वह।
(३) ए. कृ.-चकोरन। (४) ए.कृ. मो.-पित्र ग्रेह नेह रचें।

चंद रयनि न्रिम्मलौ। सरिस आकास अभ्यासित ॥
पिया बदन सो चंद। दोइ कुच चिकुर प्रगासित ॥
षंजन नयन अलोल। कीर नासा [1]न्रम्मल मुति ॥
उज्जल वस्त्र अनूप। पुहप भाजन रजता भति ॥
नव गात न्रिमल सुंदरि सरल। नवल नेह नित नित भलौ ॥
चित चतुर रीति बुझ्झै न्रपति। सरद दरद करि मति चलौ ॥
छं० ॥ ४७ ॥

हेमंत ऋतु आने पर राजा का रानी कूरंभा के पास जाकर पूछना और उसका मना करना।

दूहा ॥ हिम आगम वित्तें सरद। गवन चित्त न्रप इंद ॥
पुछन कुरंभी महल गय। सरद ग्रेह वर चंद ॥ छं० ॥ ४८ ॥

रानी का वचन और हेमंत ऋतु का वर्णन।

साटक ॥ छिन्नं बासुर सीत दिघ्घ निसया, सीतं अनेतं बने।
सेजं सज्जर बानया बनितया, आनंग आलिंगने ॥
यों बाला तरुनी वियोग पतनं, नलिनी दहन्ते हिमं।
मा मुक्के हिमवंत मन्त गमने, प्रमदा निरालम्बनं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

रोला ॥ कुच वर जंघ नितंब निसा बहुत धन बढ्ढी।
लंक छीन उर छीन छीन दिन सीत सुचढ्ढी ॥
गिरकंदर तप जुगति जागि जोगीसर मंनं।
ते लब्भे कविचंद वाम कामी सर धंनं ॥ छं० ॥ ५० ॥

कवित्त ॥ देह धरें दोगत्ति। भोग जोगह तिन सेवा ॥
कै वन कै वनिता। अगनि तप कै कुच लेवा ॥
गिरि कंदर जल पीन। पियन अधरारस भारी ॥
जोगिनीद मद उमद। कै छगन वसन [2]सवारी ॥
अनुराग बीत कै राग मन। बचन तीय गिर झरन रति ॥
संसार विकट इन विधि तिरय। इही विधी सुर असुर अति ॥ छं० ॥ ५१ ॥

(१) ए. कृ. को.-म्रमल। (२) ए. कृ. को. सचारी।

रोमावलि वन जुथ्य। वीच कुच कूट मार गज ॥
हिरदै[1] उजल विसाल। चित्त आराधि मंडि सज ॥
विरह करन क्रीलई। सिद्ध कामिनी डरप्पै ॥
तो चलंत चहुआन। दीन छंडै पै रुप्पै[2] ॥
हिमवंत कंत मुक्कै न पिय। पिया पत्र पोमिनि परषि ॥
ग्रहि कंठ कंठ ऊठन[3] अवनि। चलत तोहि [4]लगिवाय रूष ॥ छं० ॥ ५२ ॥

न चलि कंत सुभचिंत। धनी बहु[5] विंत प्रगासौ ॥
गह गहि ऐसौ प्रेम। सौज आनंद उहासौ ॥
दीरघ निसि दिन तुच्छ। सीत संतावै अगा ॥
अधर दमन घरहरै। प्रात परजरै अनंगा ॥
[6]जा ऐनि रैनि हर हर जपत। चक्क सद्द चक्की कियौ ॥
हिमवंत कंत सुग्रह्य ग्रहति। हहकरंत फुट्टै हियौ ॥ छं० ॥ ५३ ॥

चोटक ॥ गुरु पंच सुभै दस मत्तपयो। अिय नाग हन्यौ हरबाहनयो ॥
इति छंद विछंद विलास लहै। तत चोटक छंद सुचंद कहै ॥ छं० ॥ ५४ ॥
दिव दुर्ग निसा दिन तुच्छ रवै। जरि सीत बनं बनवारि जवै ॥
चक चांक चकी जिम चित्त भवै। नितवांम प्रिया सुष [7]मोरि ठवै ॥
छं० ॥ ५५ ॥

विरही जन रंजन हारि भियं। घनसार[8] मृगंमद पुंज कियं ॥
पहुपंकति पुंजति कन्त जियं। परिरंभन रंभन रे रतियं ॥
करि विभ्रम निभ्रम लग्ग तियं। .... ॥
छिन भाजत लाजत लोचनयं। तन कम्पत जम्पत मोचनयं ॥
छं० ॥ ५६ ॥

नव कुंडल मंडल क्रन्न रमै। कच अभ्रपटी जनु वीज भ्रमै ॥
कुसमावलि तुट्टि लवंग लगं। बरनं रचि छुट्टति पंति बगं ॥ छं० ॥ ५७ ॥

(१) मो.-हिरदे उज्जल जल विसाल चित्त आविति मांड गज। (२) मो.-रुक्कै
(३) ए. कृ. को.-अवत। (४) ए. कृ. को.-चलन तोहि लगीय रुप।
(५) मो.-वत्त। (६) ए. कृ. को.-मय नह रैनि।
(७) ए. कृ. को.-कोलि जवै। (८) ए. कृ. को.-मृदंमद।

श्रम बुंदति मुत्ति भारं उरनं। भलती जनु गिम्ह सिवं सरनं॥
कटि मंडल घंटि रमन्नि रवै। सुरमंजु[1] मंजीर अमीय श्रवै॥
छं० ॥ ५८॥
रति ओज मनोज तरंग भरी। हिमवंत महा रितराज करी॥
॥ छं० ॥ ५९॥

शिशिर ऋतु का आगम।

दूहा॥ संगम सुष सुत्तौ न्रपति। ग्रिह विन एक न होइ॥
सुनि चहुआन नरिंद बर। सीत न मुक्कै तोइ॥ छं०॥ ६०॥
हिम वित्यौ आगम शिशिर। चलन चाइ चहुआन॥
सुनि पिय आगम शिशिर कौ। क्यों मुक्कै ग्रिह थान॥ छं०॥ ६१॥
साटक॥ [3]रोमाली वन नीर निझ्झ[4] चरयो[5] गिरिदंग [6]नारायने॥
पव्वय पीन कुचानि आनि मलया, फुंकार भुंकारए॥
सिसिरे सर्वरि वारुनी च विरहा मादद मुव्वारए॥
मांकंते म्रिगवझ्झ मध्य गमने, किं दैव उच्चारए॥ छं०॥ ६२॥
*दूहा॥ अरिय सघन जीतन दिसा। चलन कहत चहुआन॥
रतिपति चल होइ पिथ्थ गय। ग्रह हमीर ग्रिह जानि॥
छं०॥ ६३॥
कवित्त॥ आगम फाग अवंत। कंत सुनि मित्त सनेही॥
सीत अंत तप तुच्छ। होइ आनंद सब ग्रेही॥
नर नारी दिन रैनि। मैंन मदमाते डुल्लैं॥
सकुच न हिय छिन एक। बचन मनमानै बुल्लैं॥
सुनौ कंत सुभ चिंत करि। रयनि गवन किम कीजइय॥
कहि नारि पीय बिन कामिनी। रिति ससिहर किम जीजइय॥
॥ छं०॥ ६४॥

(१) ए. कृ. को-पंज। (२) ए. कृ. को. गनि
(३) ए. कृ. को. रोमावालि। (४) ए. कृ. को. निजयो।
(५) ए. कृ. को.-गिरिदंत। (६) ए. कृ. को. नारायते।
* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।

हनुफाल ॥ गुर गरुत्र चामर नंद। लहु वरन विच विच इंद ॥
विवहार पय पय बंद। इति हनूमानय छंद ॥ छं० ॥ ६५ ॥
रिति ससिर सरवरि सोर। परि पवन पत्त झकोर ॥
वन चिगुन तुल्ल तमोर। घन अगर गंध निचोर ॥ छं० ॥ ६६ ॥
भुत्र भोज व्यंजन भोर। लव अमर तिष्य कटोर ॥
रस मधुर मिष्ठित थोर। रति रसन रमनति जोर ॥ छं० ॥ ६७ ॥
कल्ल कलम न्रित्ति किसोर। वय स्याम गुन अति गोर ॥
परि पेम पेम सजोर। अवलोक लोचन ओर ॥ छं० ॥ ६८ ॥
सुष अंत मुकति मकोर। .... ॥
रस रमति पिथ्थ न्रपत्ति। मनौं भुवन वनि सुरपत्ति ॥छं०॥६९॥
इति ससिर सुष विलसंत। रिति राइ आय वसंत ॥
षटु रित्तु षट रमनीय। रषि चंद वरनन कीय ॥ छं० ॥ ७० ॥
तरु लता गहवरि फेरि। प्रति कुंज कुंजन हेरि ॥
... . । .... ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ कुंज कुंज प्रति मधुप। पुंज गुंजत वैरनि धुनि ॥
ललित कठ कोकिल। कलाप कोलाहल सुनि सुनि ॥
राजत वन मंडित। पराग सौरंभ सुगंधिन ॥
विकसे किंसुक विहि। कदंब आनंद विविध धुनि ॥
परिरंभ लता तरवरह सम। भए समह वर अनग तिथि ॥
विच्छुरन छिनक संपत्ति पति। कंत असंत बसंत रिति ॥छं०॥७२॥

पृथ्वीराज का कविचन्द से पूछना कि वह कौनसी ऋतु है जिसमें स्त्री को पति नहीं भाता।

दूहा ॥ षट रिति वारह मास गय। फिरि आयौ रु वसंत ॥
सो रिति चंद बताउ मुहि। तिया न भावै कंत ॥ छं० ॥ ७३ ॥

(१) ए. कृ. को. सस।

कबिचन्द का कहना कि वह ऋतु स्त्री का ऋतु समय (मासिक धर्म्म) है।

जौ नलिनी नीरहि तजै। सेस तजै सुरतंत॥
जौ सुबास मधुकर तजै। तौ तिय तजै सु कंत॥ छं०॥ ७४॥
रोस भरै उर कामिनी। होइ मलिन सिर अंग॥
उहि रिति चिया न भावई। सुनि चुहान चतुरंग॥ छं०॥ ७५॥

रानियों के रोकने पर एक साल सुख सहवास कर पृथ्वीराज का पुनः बसंत के आरंभ में कन्नौज को जाने की तैयारी करना।

चौपाई॥ षट्ट सु [1]वरनौं विय षट मासं। रष्यै वर चहुआन विलासं॥
ज्यों भवरी भवरं कुसुमंगा। त्यों प्रथिराज कियौ सुष अंगा॥
छं०॥ ७६॥

दूहा॥ वर वसंत अग्गों जिपति। सेन सजी बहु भार॥
दिसि कनवज वर चढ़न कों। चितवति संभरिवार॥ छं०॥ ७७॥
कै जानै कविचंदई। कै प्रयान प्रथिराज॥
सित सामंत सु संमुहै। पंगराय ग्रह काज॥ छं०॥ ७८॥

गुरुराम का कूच के लिये सुदिन सोधना।

मतौ मंडि संभरि [1]न्रपति। चलन चिंत [2]पहु अज्ज॥
दिन अप्पौ गुरराज मिलि। चिंत चलन कनवज्ज॥ छं०॥ ७९॥

राजा का रविवार को अरिष्ट महूर्त में चलने का निश्चय करना।

कवित्त॥ चैत तीज रविवार। सुद्ध संपज्यौ सूर जव॥
एकादस ससि होइ। छंडि दस थान मान तव॥
वर मंगल न्रप राशि। पंच अक्रूर मेछ वर॥
दुष्ट भाव चहुआन। राशि अष्टम ढिल्ली धर॥

(१) ए. कृ. को.-बरुनी। (१) मो.-सुपहु। (२) मो.-नर।

भर रासि गहइ षोटौ न्रपति। देषि पुच्छि चहुआन चलि ॥
भावी विगत्ति मति उरइ उर। जु कछु कह्यौ कविचंद पुलि ॥
छं० ॥ ८० ॥

पृथ्वीराज का कैमास के स्थान पर जैतराव को राजमंत्री नियत करना।

दूहा ॥ नन मानौ चहुआन न्रप। भावी चिंति प्रमान ॥
सलष बोलि मंतह न्रपति। मत कैमासह थान ॥ छं० ॥ ८१ ॥

कवित्त ॥ मंत्रिय थपि पामार। मंति कैमास थान वर ॥
ता मंत्री पन अप्पि। स्त्रर सामंत मंझ भर ॥
मंत्र दिट्ठ दिढ़ वाच। काछ दिट्ठी दिढ़ लोभै ॥
लोह दिट्ठ जुध काल। सामध्रम्मह दिढ़ सोभै ॥
पुरुषह सु दिट्ठ काया प्रचंड। दिढ़ दुरग्ग भंजन सुहर ॥
गुरराज राम इम उच्चरै। सो मंत्री न्रप करन धर ॥ छं० ॥ ८२ ॥

राज्य मंत्री के लक्षण।

सो मंत्री न्रप करिय। पुव्व बंसह सु वीय सुधि ॥
दूत भेद अनुसार। मोह रस बसिन ईछ मुधि ॥
न्याय ध्रंम अनुसार। न्याय मंदन परगासै ॥
रोगजीत नन होइ। तास चिय लछि अभ्यासै ॥
परधान ध्यान जानै सकल। अध्रम द्रव्य मन संग्रहै ॥
पम्मार सलष मंत्री न्रपति। बल गोरी मुष संग्रहै ॥ छं० ॥ ८३ ॥

राजा का जैतराव से पूछना कि भेष बदल कर चलें या योंही।

सो मंत्री पुच्छौ न्रपति। चलन चाइ चहुआन ॥
दिसि कनवज धर दिष्षियै। पंग जोग परमान ॥ छं० ॥ ८४ ॥
छल्लाल पान नरिंद वर। अदभुत चरित विराज ॥
चंद भेष चहुआन कौ। येट सुपत्तौ साज ॥ छं० ॥ ८५ ॥

जैतराव का कहना कि छद्मवेष में तेजस्वी कहीं नहीं छिपता इससे समयोचित आडंवर करना उचित है।

चौपाई ॥ राजन चंद वदन ढंकि किन्नं । छिपै न छिप कर सूर सघन्नं ॥
छिप्पत कवहुँ न मोमभ्भर तिन । रंकति न छिपै वित परषन षिन॥
छं० ॥ ८६ ॥

सुभग मन मधि विदुष सु कव्वी । देषि सुजान न छिपै गुनव्वी ॥
गैपति मैपति समद न छिप्पै । न [1]छिप्पै न रज रजपूत सुदिप्पै ॥
छं० ॥ ८७ ॥

कवित्त ॥ जो आडंवर तजिय । राज सोभै न राज गति ॥
आडंबर विन भट्ट । कव्वि पुनगार मेट यति ॥
आडंबर विन नट्ट । गोरि गावै नह रुकहि ॥
आडंबर विन वेस । रूप रत्ती न सोय कहि ॥
जन एक सुभर वंदन विदुष । हरुअत आडंवरह विन ॥
पर धर नरिंद बंदन मतौ । करि आडंबर बीर तन ॥ छं० ॥ ८८ ॥

पुनः जैतराव का कहना कि मुझसे पूछिए तो मैं यही कहूंगा कि सब सेना समेत चल कर यज्ञ उथल पथल कर दिया जावे।

दूहा ॥ मत पुच्छै चहुआन मुहि । सज्जि सवै चतुरंग ॥
अजै विजै जानै नहीं । जग्य विनट्टै पंग ॥ छं० ॥ ८९ ॥
तुच्छह सथ्य नरिंद सुनि । जो जानै पहुपंग ॥
वंधि देइ करतार अरि । चोर लग्ग निय संग ॥ छं० ॥ ९० ॥
अरि भंजै भंजौ सु पुनि । सम वरि समर सु पंग ॥
जौ पुच्छै चहुआन बर । [2]तौ सज्जौ चतुरंग ॥ छं० ॥ ९१ ॥

गोयन्द राय का कहना कि ऐसा करना उचित नहीं क्योंकि शहाबुद्दीन भी घात में रहता है।

मतौ गरुअ गोयंद कहि । वर ढिल्ली सुर पान ॥

(१) ए. कृ. को.-नन छिपै रजपूत मरकंति वह दिप्पै । (२) ए. कृ. को.-बर ।

हथ्थ वीर विरुझाइ चलि। धर लग्गौ सुरतान॥ छं० ॥ ९२ ॥
जिम लग्गो आखट अगि। ढिल्ली वै सुरतान॥
विन वुभाय वुझि अग्गिया। जिम 'घट्टै जम पानि॥ छं० ॥ ९३ ॥
चित्त चलन चहुआंन कौ। जिन अप्पी मति नन्ह॥
सब भृत मभ्भभनटारि लष। नृप ढुंढिय धन लिन्ह॥ छं० ॥ ९४ ॥

अन्त में सब सेना सहित रघुबंश राय को दिल्ली की गढ़ रक्षा पर छोड़कर शेष सौ सामंतो सहित चलना निश्चय हुआ।

सौ समंत छ सूर भय। ते इक एकह देह॥
जागिनपुर रघुवंश सौ। सो रप्पी तल लेह॥ छं० ॥ ९५ ॥
तत्त मत्त चालन कियौ। महल विसरजन कीन॥
सत्त घरी घरियार वजि। वर प्रस्थान सुदीन॥ छं० ॥ ९६ ॥
एक वरप प्रस्थान ते। विय प्रस्थान सुपत्त॥
ग्यारह से कनवज्ज कौ। चैत तीज रविरत्त॥ छं० ॥ ९७ ॥

रात्रि को राजा का शयनागार में जाकर सोना और एक अद्भुत स्वप्न देखना।

कवित्त॥ विपन महल चहुआन। राज प्रस्थान सुपत्तौ॥
निसा निद्र उत्तरिय। सघन उन्नयों सु रत्तौ॥
बीज तेज सूझंत। तमत उध्यौ व्रत भारी॥
निसा पत्ति सुर आय। बोल बर बर उच्चारी॥
चरि चित्त चित्त चहुआन करि। बान विषम गुन बंधयौ॥
वल श्रवन दिष्ट संभरि धनी। सुर चिंतह लष संधयौ॥
छं० ॥ ९८ ॥

प्रथमं स्वर चहुआन। बान संध्यौ गुन मंगह॥
विय अलुक सुर बोलि। चित्त मुक्यौ तिन संगह॥

(१) मो.-हट्टै।

तीय वचन अपि जीह। जीव सध्यह लुक छुट्टियं ॥
कर चारहु मन राज। कह्यौ छंदे अंग जुट्टिय ॥
निस पतन भई जोगय विपन। हंकाऱ्यौ दुजराज बर ॥
घरियार प्रात बज्जै सुघर। रत्त मार बर उग्गि धर ॥
छं० ॥ ९९ ॥

कविचन्द का उस स्वप्न का फल बतलाना

सु गुन विड्ड कविचंद। अग्र भय छंद विचारियं ॥
[1]सामि हथ्थ जस चढ़न। सुभत आतुर रन पारिय ॥
कलह केलि आगंम। सामि परिगह आहुट्टिय ॥
बल सगपन किय दान। हीन हीनह अप छुट्टिय ॥
कहुई चंद कवि मुष्य तत। आरुष राज न मानइय ॥
सो भुत्त गति न्निमान संति। ननं मिट्टै जुग जानइय ॥
छं० ॥ १०० ॥

दूहा ॥ नहिं वरज्यो कविचंद न्नप। कहि सुनाय सब सथ्थ ॥
ज्यों विधिना वर न्निंमयौ। [2]जम कग्गद चढ़ि हथ्थ ॥छं०॥१०१॥

११५१ चैतमास की ३ को पृथ्वीराज का कन्नौज को कूंच करना

ग्यारह सं एकानवै। चैत तीज रविवार ॥
कनवज देषन कारनें। चल्यौ सु संभरिवार ॥ छं० ॥ १०२ ॥

पृथ्वीराज का सौ सामंत और ग्यारह सौ चुनिंदा सवारों को साथ में लेकर चलना।

कवित्त। ग्यारह से असवार। लष्य लीने मधि लेषैं।
इसे स्हर सामंत। एक अरि दल बल भष्षैं ॥
[3]तनु तुरंग बर वज्र। बज्र ठेलै बज्रानन ॥
वर भारथ सम स्हर। देव दानव मानव नन ॥
नर जीव नाम भंजन अरिय। रूद्र भेस दरसन न्नपति ॥
भेंटयौ सु यह भर सभ्भई। दिपति दीप दिवलोक पति ॥छं०॥१०३॥

(१) ए. कृ. को.-स्वामि। (२) मो०.-सं. (३) ए० कृ० को०-तनु तन गब्बर वज्र।

चल्यौ सु संभरिवार। सथ्थ सामंत सूर भर ॥
इनिग राज कयमास। अवनि आकप राज बर ॥
सर बर संभरिवार। साहि बंध्यौ गज्जनवै ॥
हय गय नर भर बीय। सिद्धि छंड्यौ पुनि हैवें ॥
सामंत सूर सथ्थह न्रपति। दैव वत्त कारन सुगति ॥
कनवज्ज राज जग्गह[1] कलन। चल्यौ राज संभरि सुभति ॥
छं० ॥ १०४ ॥

कनवज्जह जयचंद। चल्यौ दिल्लीपति पिष्षन ॥
चंद बरद्दिय तथ्थ। सथ्थ सामंत सूर घन ॥
चाहुआन कूरंभ। गौर गाजी बड़गुज्जर ॥
जादव रा रघुवंस। पार पुंडीरति पष्षर ॥
इत्तने सहित भूपति छल्यौ। उड़ी रेन छीनौ नभौ ॥
[2]इक लष्ष लष्ष बर लेषिए। चलै सथ्थ रजपूत सौ ॥छं०॥ १०५ ॥

दूहा ॥ करि सुनंद संभरि सु पहु। चहिकल्यौ [3]लय मग्ग ॥
हर हर सुर उच्चार मुष। उर आराधन लग्ग ॥ छं० ॥ १०६ ॥

साथी सामंतों का ओज वर्णन।

कवित्त ॥ एक सत्त बल सूर। एक बल सहस पानि बर ॥
एक अयुत साधंत। [4]दुरद रद दहन तत्त कर ॥
एक लष्ष आरुह्न। जुद्ध जम जेम भयंकर ॥
एक कोटि अंगवन। धरत हर उर सु ध्यान बर ॥
रवि तन समान तन उज्जलं। सत घट अग्ग सु बीर तन ॥
तिन सथ्थ सज्जि संभरि स पहु। तिथ्थ क्रम न विच्चारअन ॥
छं० ॥ १०७ ॥

सामंतों की इष्ट आराधना ॥

एक ईस आराधि। एक उमया आरोहन ॥
[5]एक दुमनि चित जपत। एक गजवदन प्रमोहन ॥

(१) मो० काग्न (२) ए. कृ. को.-एकेक लष्ष वर लिषिए।
(३) ए. कृ. को. मग। (४) ए. कृ. को. दुर। (५) मो.-एकदिन मन।

एक सट्ठि चव रचित। एक पंचास उभय रत ॥
एक हनू हिय ध्यान। एक भैरव घोरत मत ॥
इक जपत अंत अंतक मनह। एक पुरंदर रत्त उर ॥
इक उर विदार विद्दर सिरग। धरत ध्यान लंकाल मुर ॥

छं० ॥ १०८ ॥

राजा के साथ जानेवाले सामंतों के नाम और पद वर्णन।

भुजंगी ॥ गुरुं अंत मत्तं पयं पाय पायं। असी मत्त सब्बै गयंनं सठायं ॥
लहू षोडसं गोचवं अट्ठ सायं। चवै चंद छंदं भुजंगंप्रियायं ॥

छं० ॥ १०९ ॥

चल्यौ जंगलीराव कनवज्ज पथ्थं। चले सूर सामंत सथ्थं समथ्थं ॥
चल्यौ सथ्थ सामंत कन्हं समथ्थं ॥ जिनै बंदियं सूर संग्राम हथ्थं ॥

छं० ॥ ११० ॥

विरद्दं नरंनाह उग्गाह सोहं। कुलं चाहुआनं चपं पट्ट रोहं ॥
गुरू राव गोयंद बंदै सु इंदं। सुतं मंडलीकं सबै सेनचंदं ॥

छं० ॥ १११ ॥

धरै ध्रंम सामित्त सा रायलंगा। सुतं राव संयम्म रन में अभंगा ॥
सदा सेवसों चित्त हनमंत बीरं। रमै रोम रंगं तबै आय भीरं ॥

छं० ॥ ११२ ॥

चल्यौ स्वामि सन्नाह सा देवराजं। सुतं बग्गरीराव सामंत जाजं ॥
सदा इष्ट आभिट्ट स्वामित्त चित्तं। वियं बीर चित्तं सु आनै न हित्तं॥

छं० ॥ ११३ ॥

रनंधीर पावार सथ्थं सलष्षं। चल्यौ जैत सिंघं सु कंकं अलष्षं ॥
भरं जामजदौं सु पीची प्रसंगं। करं कच्छवाहं सु पज्जून संगं॥

छं० ॥ ११४ ॥

बलीभद्र कूरंभ पाल्हंन सथ्थं। करंबाह कथ्थं सु कंकं अकथ्थं ॥
नरं निड्डुरं धज्ज कमधज्जराजं। बडंगुज्जरं राम सो सामि काजं ॥

छं० ॥ ११५ ॥

(१) मो.- मन। (२) ए. कृ. को पाद्य। (३) ए. मे नर।
(४) कृ. को.-सनथ्थं। (५) मो.-गाज। (६) मो.-संगं।

सदा ईस सेवं सुरं अत्तताई । चले हड्ड हम्मीर गंभीर भाई ॥
वरंसिंघ दाहिम्म जंघार भीमं । वरं तास चंपै न को जोर सीमं ॥
छं० ॥ ११६ ॥

सज्यौ वाह पग्गार उद्दिग्ग सथ्थं । चल्यौ चंद पुंडीर संग्राम सथ्थं ॥
वर चाहुआनं बरस्सिंघ बीरं । हरस्सिंघ संगं सु संग्राम धीरं ॥
छं० ॥ ११७ ॥

सज्यौ राव चालुक्क सारंग संगं । मनं विक्षराजं सु बंधं अभंगं ॥
सथं जागरं सूर सागौर गोरं । वरं बाररंसिंह मा सूर[1]घोरं ॥
छं० ॥ ११८ ॥

बली वाररं रेन रावत्त रामं । दलं दाहिमा रूव संग्राम धामं ॥
निरब्बान बीरं सु नारेन नीरं । समं सूर चंदेल भोंहा सधीरं ॥
छं० ॥ ११९ ॥

बड़गुज्जरं कंक राजं कनक्कं । सहं सूर सामंत बंधैति अंकं ॥
चल्यौ माल चंदेल भट्टी सु भानं । समं सामलं सूर कमधज्जरानं ॥
छं० ॥ १२० ॥

वरं सिंघ बीरं सु मोहिल्ल बंधं । न्रपं राय बंधं बरंनं सुसिद्धं ॥
दलं देवरा देवराजं सु सोहं । महा मंडलीराव सीहं अरोहं ॥
छं० ॥ १२१ ॥

धनू धावरं धीर पांवार सथ्थं । चल्यौ तोमरं पाहरा [1]वारि वथ्थं ॥
सज्यौ जावल्यौ जल्ह चालुक्क भारौ । चलं वग्गरी वाय षेता षँगारौ ॥
छं० ॥ १२२ ॥

बलौ राय वीरं सु सारंग गाजी । परीहार राना दलं रूव राजी ॥
बरं वीर जादौं भरं भोजराजं । समं सांषुला सीह सामल्ल साजं ॥
छं० ॥ १२३ ॥

कमंधज्ज बीकंम सादूल मोरी । जरी ठंठरी टाक सारंन [3]जोरी ॥
जयंसिंघ चंदेल वारू कँठेरी । भरं भीम जादौं अरी गो उजेरी ॥
छं० ॥ १२४ ॥

(१) ए. कृ. को.-घोरं। (१) ए. कृ. को.-वसि।
(२) मो.-सथ्थं। (३) ए. कृ. को.-मोरी।

सुतं नाहरं परिहारं मइन्नं। समं पीप संग्राम साहं गइन्नं॥
बरं बारडं मंडनं देवराजं। रनं अच्चलं पाय अचलेस साजं॥
छं० ॥ १२५ ॥

चल्यौ कच्छराराव चालुक्क बंभं। सुतं भीम संगं सदा देव संभं॥
कमधज्ज आरज्ज आहं कुमारं। भरं भीम चालुक्क बीरंबरारं॥
छं० ॥ १२६ ॥

गनै लष्षनं लष्ष बघ्घेल एकं। सुतं पूरनं[1]सूर बंदै सुतेकं॥
परीहार तारन्न तेजल्ल डोडं। अचल्लेस भट्टी अरीसाल सोढं॥
छं० ॥ १२७ ॥

बड़ंगुज्जरं चंद्रसेनं सुधीरं। सुतं कट्ठियं सिंघ संग्राम बीरं॥
विजैराज बघ्घेल गोहिल्ल चाचं। लषनं पवारं नहौ क्रूर राचं॥
छं० ॥ १२८ ॥

भरं रंघरौ भ्रम्म सामंत पुडीरं। भिरै सूर भग्गै नहीं सारभीरं॥
कमध्धज्ज जैसिंघ पुंज पहारं। भरं भारथंराय भारथ्थ भारं॥
छं० ॥ १२९ ॥

सुतं जागरं केहरी मल्हनासं। बँधंनौरवं कट्ट संग्राम बासं॥
चल्यौ टांक चाटा सु रावत्त राजं। हरी देवतौराइ जादौं सु जाजं॥
छं० ॥ १३० ॥

बली राइ कच्छं[2]ओहट्टी गँभीरं। हुअं हाहुलीराव सथ्थं हमीरं॥
पहू पुहकरंराव कन्हं सुराजं। दलं दाहिमा जंगली राय साजं
छं० ॥ १३१ ॥

मुषं पंच पंचाइनं चाहुआनं। सुअं पारिहारं रनंबीर रानं॥
रसं सूर सामंत सथ्थं ससष्षं। बरंलष्षियं एक एकं सुलष्षं॥
छं० ॥ १३२ ॥

हनूफाल॥ इक सेवक छिंगन कंन्ह तनौ। निरष्षे कविचंद पुरष्ष घनौ॥
इह अग्गर सुभ्भट सत्त जुतं। कनवज्ज चल्यौ न्रप सोमसुतं॥
छं० ॥ १३३ ॥

(१) ए. कृ. को.-पूर (२) के. एहट्टी।

पृथ्वीराज का जमुना किनारे पड़ाव डालना।

कवित्त ॥ तट कालिंदी तीर। कियौ मुक्काम दिल्लेसुर ॥
अवर सूर सामंत। सब्ब उत्तरे आय तुर ॥
समै निसा निज सिवरि। बोल्ल सामंत सूर सब ॥
मधूसाह परधान। राज उच्चैर सूर तब ॥
तीरथ बन अंतर धरिय। अंतर बेध मगंग धर ॥
आवासि मंत कारन सुनहु। चल्लौ सुभट्ट समंग भर ॥छं०॥१३४॥

दूहा ॥ तट कालिंद्री तहँ बिमल। करि मुक्काम न्टप राज ॥
सथ्थ सयन सामंत भर। सूर जु आये साज ॥ छं० ॥ १३५ ॥

कवित्त ॥ अप्प जाति बिन सब्ब। चले सामंत सथ्थ तब ॥
पहु निकट्ट कनवज्ज। ताहि प्रछन्न गवन कब ॥
मधूसाह गुरराम। रहे दिल्ली रह कज्जं ॥
गुर वीठल समदेव। अनुज रामह सथ सज्जं ॥
अह अट्ट राज आवागमन। सजौ सेन सथ्थें सुविधि ॥
कज दान द्रव्य गंगह सजौ। जिम सिभञ्झै तीरथ्थ सिधि ॥
छं० ॥ १३६ ॥

जमुना के किनारे एक दिन रात विश्राम करके सब सामंतों को घोड़े आदि बांटकर और गढ़रक्षा का उचित प्रबन्ध करके दूसरे दिन पृथ्वीराज का कूच करना।

दूहा ॥ [1]किय आयस संभरि स पहु। सुनौ सगुर बर साह ॥
मत क्रम्मलक सथ्थ घन। सजौ सक मन राह ॥ छं० ॥ १३७ ॥
एकादस सर एक न्टप। सौ सामंत छ सूर ॥
दिसि कनवज दिल्ली न्टपति। चैतह वज्जि [2]स तूर ॥ छं०॥ १३८ ॥

कवित्त ॥ पारिहार रनबीर। राज अग्गें आभासिय ॥
प्रछन्नह कनवज्ज। तिथ्थ संक्रमन सु भासिय ॥

(१) मे.-कार (२) मो..सनूर।

साज सव्व बर ¹तास। भरौ वासन द्रव रज्जिय ॥
अवर सब्ब परिहार। काज भोजन सथ मज्जिय ॥
साहनौ सहि जगमाल तहँ। देहु सबन सामंत हय ॥
सारङ्ग सित्त तेजक्क हय। सजे सब्ब परकार तय ॥ छं० ॥ १३९ ॥

दूहा ॥ बोलि साहनौ सोच मन। दल लष्षन अस लज्ज ॥
सामंतन कारन विल्हन। समपि समर जस कज्ज ॥ छं० ॥ १४० ॥
प्रथम संबोधे सथ्थ सह। सुत दुज रष्षे साह ॥
जाम सेष रजनौ रह्यौ। सिलह सु सज्जौ ताह ॥ छं० ॥ १४१ ॥

पृथ्वीराज का नाओं पर यमुना पार करना।

इन प्रपंच भुअपति चल्यौ। अरु कविचंद अनूप ॥
जमुना ²नावनि उत्तरिय। निकट महल अनुरूप ॥ छं० ॥ १४२ ॥

पृथ्वीराज के नांव पर पैर देते ही अशुभ दर्शन होना।

कवित्त ॥ चढ़त राज प्रथिराज। सगुन भय भीत उपन्नौ ॥
स्याम अंग तन छिद्र। कलस संमुह संपन्नौ ॥
एक अंग तिय सकल। एक आमेस भेस बर ॥
एक अंग शृंगार। एक अंगह सुंदर ¹नर ॥
दिष्षौ सु नयन राजन रमनि। पुच्छि वत्त धारह धनिय ॥
शृंगार बीर दुअ संचरहि। अब्बूवै अप्पन भनिय ॥ छं० ॥ १४३ ॥

नांव से उतरने पर एक स्त्री का मिलना।

दूहा ॥ तोन बंधि भुअपति उभय। अरु कविचंद अनूप ॥
जमुन उतरि नावह निकट। मिलिय महिल इन रूप ॥छं०॥१४४॥

उक्त स्त्री के स्वरूप का वर्णन।

कवित्त ॥ पानि नाल दालिमी। हास मुष नैन रास निज ॥
उरसि माल जा हूल। कमल कनयर सिरसौ रज ॥

(१) ए. कृ. को.-नाह। (२) मो. नावमु।
(१) ए. कृ. को.-बर।

वाम हेम आधंन। लोह दच्छिन दिसि मंडिय ॥
अद्ध केस सलवंध। अद्ध [1]मुकलित तिहि छंडिय ॥
विपरीत पीत अंबर पहरि। पिष्षि राज अचरिज्ज करि ॥
किन महिली किन घर न सुबर। किन सु राज अरधंग धरि ॥
छं० ॥ १४५ ॥

हनूफाल ॥ मिलि महिल सगुन सरूप। द्रग अप्प निरषत भूप ॥
दछि दोर नालि सु लीन। कर वाम समकर भीन ॥ छं० ॥ १४६ ॥
अधकेस मुकुलित संधि। [2]अध कुंत लंकल बंधि ॥
अवतंस इक स्रव स्रोन। दिसि कंक आसिय वीन ॥ छं० ॥ १४७ ॥
द्रिग वाम अंजन दीन। दछि नेंन नागवि कीन ॥
सल वाल भाल सुपत्ति। परसात कंकि [3]षत्ति ॥ छं० ॥ १४८ ॥
मुष हास नेन विगोस। [4]नासाग्र उग्रन जोस ॥
कर रतन दच्छिन राज। पहु पानि वल्लिय बाजि ॥ छं०॥ १४९ ॥
मुकतावली अध सेत। अध लाल माल मवेत ॥
दुति बरन भूषन रूप। जालंक कलसा नूप ॥ छं० ॥ १५० ॥
अधसेत आसुरि स्याम। रत पीत अंबर काम ॥
मुर गुनिय जा तिल तंत। सिर कमल कल हय यंत ॥ छं० ॥ १५१ ॥
तंडीव तरल तरंग। जालंक तंड सुरंग ॥
अध मत्त गवन अनूप। अध चंचलं मद ऊप ॥ छं० ॥ १५२ ॥
पद जेहरी धरि हेम। क्रम क्रम्यौ उरजत नेम ॥
सच साष वाम सु पुल्लि। पद दच्छिनी क्रत गुल्लि ॥ छं० ॥ १५३ ॥
को महिल को वर गेह। पुछि राज अचरिज एह ॥
... . । .... ॥ छं० ॥ १५४ ॥

राजा का कवि से उक्त महिला के विषय में पूछना।

दूहा ॥इहि बिधि नारि पयान मिलि। मुष काल रत्त फुनिंद ॥
उद्दिम आदर चलिय न्रप। तव नह वुज्झिय चंद ॥ छं० ॥ १५५ ॥

(१) मो.-मुक्कित बर। (१) ए. कृ. को.-धर।
(२) ए. कृ. को.-पत्ति। (३) ए. कृ. को.-नासाग्र उग्र उग्गन जै ।

*कहै चंद नृप ईस सुनि । दरस देवि दिय तोहि ॥
अगि भंजि अरि गंजिकै । दुलह संजोगिय होइ ॥ छं० ॥ १५६ ॥

राजा का कविचंद से सब प्रकार के सगुन असगुनों का फल वर्णन करने को कहना ।

बहुरि सगुन राजन हुअ । फल जंपै कविचंद ॥
उत्तिम मद्धिम विवह परि । कहि समझावत [1]छंद ॥ छं० ॥१५७॥
पद्धरी ॥ चहुआन चवै सुनि चंद भट्ट । संक्रमन [2]मग्ग उछछंग थट्ट ॥
तुम लहौ अर्थ विद्या सु सार । जंपौ सु सगुन सब्बै प्रचार ॥
छं० ॥ १५८ ॥

कविचंद का नाना प्रकार के सगुन असगुनों का वर्णन करना

कविचंद कहै सुन दिल्लिराज । विधि कहौं सगुन रुब्बें सु साज ॥
दष्यिनहि वादि वामंग वादि । सम थान देवि उत्तिम उमादि ॥
छं० ॥ १५९ ॥
अति बृद्धि रिद्धि [3]अप्पै सु लोय । जस कुसल सुफल पंथी सजोइ ॥
सुर दून तीन दाहिनी देय । वर्ज्जंत गमन पथिकं परेय ॥
छं० ॥ १६० ॥
मंडलह ख्वर तरि संभ सद्दि । मुक्कंत सीम पंथिक परद्धि ॥
बायंब हुंत दष्यिन प्रवेस । ताराय ताम जंपे सु तेस ॥
छं० ॥ १६१ ॥
एकीक कुसल दुअ कुसल काज । [4]तीसरी होत फल रिद्धि राज ॥
दाहिनी हुंत दिसि धाम आय । पंथी गवंन वरजंत ताइ ॥
छं० ॥ १६२ ॥
दूसरी घात बंधनह हत्त । तीसरी गवन [5]सूचंत मृत्त ॥
ताराय उंच फल उंच [6]देस । मद्धिम्म अधम अद्धी सु [7]तेस ॥
छं० ॥ १६३ ॥

---

*यह दोहा मो. प्रति में नहीं है । (१) ए. कृ. को.-चंद ।
(२) ए. कृ. को.-लग्ग । (३) ए. कृ. को.-अप्पै । (४) ए. कृ.-नीसरी ।
(५) मो.-सयूंत । (६) ए. कृ को.- देह । (७) ए. तेय । को. मो. नेस ।

दष्षिनी सगुन सुर दष्षि चारि। बांईय वाय प्रमरंत गारि॥
कारज्ज सिद्धि सूचंत ताम। विपरीत सुफल विपरीत काम॥
छं० ॥ १६४ ॥

सुर एक एक कंटक अरोहि। अंगार तूर भसमं वरोहि॥
सूकें सु कट्ठ गोवर सु हंडि। आहट्ठि सद्दि गुनयंग छंडि॥
छं० ॥ १६५ ॥

उत्तरै तार सद्दै सु सद्द। पूरन्न चित्त कारिज्ज मंद॥
आवंत होय जो ग्रेह नाम। वांईय सद्दि सिद्धंत काम॥
छं० ॥ १६६ ॥

केदार कूप नै तट्टवाय। परहरै सिद्ध वंछै सु जाय॥
तीतरह परह नाहर जंबूक। सारस्स चिल्ह चाचिग अलूक
छं० ॥ १६७ ॥

कपि कंटनील सुक सद्धि नाम। दिस संति सुष्य पूरंतकाम॥
पंचाइन दिस दाहिन प्रचार। सादंत अर्थ दष्षित सचार॥
छं० ॥ १६८ ॥

सूचंत सुभय दारुन्न सथ्य। पति सथ्य निद्धि निंदं अतिदथ्थ॥
चै पंच सत्त एकं उभार। पहु काल मृग्ग दाहिन सुचार॥
छं० ॥ १६९ ॥

भोजनं परच्छ वाईय माल। पूरंत अर्थ अथींव ढाल॥
एकलौ असित मृग जम्म रूप। बूडंत किरनि अंतकह जूप॥
छं० ॥ १७० ॥

निक्काम सगुन जो होइ सिद्धि। प्रावेस सोय विपरीत रिद्धि॥
सद्दै जो सिवा सद्दह कराल। वाईंय दिसा सुभ भेव ढाल॥
छं० ॥ १७१ ॥

चाचिग्ग निकुल्ल अज भारद्वाज। चामर सु छत्र वीणा सवाज॥
भृंगार बार विरही कनक। दुर्वारु[1] दद्धि सुरसुर[2] धनंक॥
॥छं०॥१७२ ॥

(१) ए. कृ. को.-दुर्वास। (२) मो.-सुरि।

द्रष्यन कलाल वेसाह गज्ज ।[1]सारन्न सिद्धि अष्षै सुरज्ज ॥
मूषक करम्भ गोधह भुअंग । ... . छं० ॥ १७३॥
अंगार कच्च भसमंग पास । गुड़ लवण तक्र गोबर दरास ॥
[2]प्रवरज्ज अंध मूकंत केस । गरदम्भ रूढ़ तजि अंदेस ॥
॥छं०॥१७४॥
प्रनयाम पंच छह करहि जाम । या दुष्ष सगुन छंडै सु राम ॥
सागुन्न पुरिप सह वाम नाम । चिय नांम सुम्भ दच्छिनह ताम ॥
॥ छं० ॥ १७५ ॥

दूहा ॥ बनबिल्लाव घूघू घरह । परत परेव पंडूक ॥
एक थान दष्षिन दिसह । कहिय न श्रवन समूक ॥ छं० १७६ ॥
रासभ उभय कुलाल करि । सिर बंधन निस भारि ॥
वाम दिसा संमुह मिलिय । अवसि होइ प्रभु रारि ॥छं०॥१७७॥
अतिलक बंभन स्याम असु । जोगी हीन विभूति ॥
संमुह राज परष्षियै । गमन वरज्जै नित्त ॥ छं० १७८ ॥
सिर पंछी दच्छिन रवै । वामी उवहि सियाल ॥
मृतक रथी समुंह सुपह । कीजै गवन न्त्रिपाल ॥छं०॥१७९॥
कलस केलि उज्जल वसन दीपक पावक मच्छ ॥
सुनिय राज बरदाय भनि । एह सगुन अति अच्छ ॥छं०॥१८०॥
राज सगुन संमूह हुअ । धुअ तन [3]सिंघ दहारि ॥
मृग [4]दच्छिन छिन छिन धुरहि । चलहित संभरिवार
॥ छं० ॥ १८१ ॥
सुनत सीस [5]सारस सबद । उदय सुबद्दल भान ॥
परनि भाजि प्रतिहारसौ । करहित काज प्रमान ॥ छं० ॥ १८२ ॥
कल कलार मच्यो समुह । हसि न्त्रप वुभयौ चंद ॥
इक रवि मंडल भेदि है । इक करिहै आनंद ॥ छं० ॥ १८३ ॥

(१) ए. कृ. को.-साहसन । (२) ए. घत्ररज्ज ।
(३) मो. "सिंघह" । (४) मो. दष्षिन षिन षिन ।
(५) ए. कृ. को.- सारद ।

कवि का कहना कि आप सफल मनोरथ होंगे परंतु साथही हानि भी भारी होगी ।

एक करहि ग्रह नंद वहु । इक छिन [1]भिन्न सरीर ॥
इक भारथ्थ सु जीतिहै । जे वज्रंग सु बीर ॥ छं० ॥ १८४ ॥

यह सुन कर पृथ्वीराज का कैमास की मृत्यु पर पश्चाताप करके दुचित्त होना ।

सुबर बीर सोमेस सुअ । गुन अवगुन मन धारि ॥
दुष अति दाहिम्मा दहन । मरन सु मंगल रारि ॥ छं० ॥ १८५ ॥

सामंतों का कहना कि चाहे जो हो गंगा तीर पर मरना हमारे लिये शुभ है ।

सम सामंतन राज कहि । पहु परमारथ मत्ति ॥
समर तिथ्थ गंगा उदक । उभय अनूपम गत्ति ॥ छं० ॥ १८६ ॥

वसंत ऋतु के कुसमित वन का आनंद लेते हुए सामंतों सहित राजा का आगे बढ़ना ।

रति माधव मोरै सु तरु । पुहप पच बन बेलि ॥
राज कवी करतह चले । सम सामंतन केलि ॥ छं० ॥ १८७ ॥

राजा के चलने पर सम्मुख सजे बजे दूलह का दर्शन होना ।

कवित्त ॥ चलत मग्ग चहुआंन । जांम पिगौय पहु निकरि ॥
सजि दुल्लह सनमुष्य । सुमन सेहरौ सीस धरि ॥
सजे पिठ्ठ वामंग । रंग निज नेह प्रकम्मे ॥
पिष्षि राज प्रथिराज । मन्नि सा सगुन सु [2]मृम्मे ॥
उदयंत दिवाकर चौय मिलि । सुभट अंत किय जुद्ध जुरि ॥
जय जंपि सथ्थ साहा गवन । बज्जे बज्जनि [3]सिंधु सुर ॥छं०॥१८८॥

---

(१) ए. कृ. को.-भीन । (२) को.-भ्रंमे । (३) मो.-सिंधुसुरन ।

आगे चलकर और भी शकुन होना और राजा का मृग को वाण से मारना।

बाग षंचि दिसेस । जाम उभया षिन उत्तरि ॥
दिसि दाहिनि सजि द्रुग्ग । बाम विती तर (१)उप्परि ॥
दिसि बाइँ बर सदि । भसम उप्पर आरुन्नी ॥
ताम तंमि उत्तरी । इष्षि राजन मरसन्नी ॥
एकन्न मृग्ग सन्हौ मिल्यौ । हयौ राज संधेव सर ॥
उत्तरी ताम देवी दुहर । देषि सर्व दुम्मन्न भर ॥ छं० ॥ १८६ ॥

और भी आगे चलने पर देवी के दर्शन होना।

चल्यौराज प्रथिराज । उभय षिन तथ्थ विलंबे ॥
मिलि संमुह जुग्गिनिय । दरस दीये न्रप अंबे ॥
कर षप्पर तिरसूल । सवद उच्चरि जय जंपे ॥
मधि षप्पर (२)धरि छेम । प्रनमि राजंग पयंपे ॥
माकत्ति मज्जि हय हंकि सब । अवर वारि आरोहि चिय ॥
ग्रह जाइ अप्प अपगुन किये । मिलिय राज सा संमुहिय ॥
छं० ॥ १९० ॥

इसी प्रकार शुभ सूचक सगुनों से राजा का बत्तीस कोस पर्य्यंत निकल जाना।

दूहा ॥ इन सग्गुन दिल्लिय न्रपति । संपत्तौ भूसाम ॥
कोस तीस दुअ अग्गरौ । कियौ मुकाम सु ताम ॥ छं० ॥ १९१ ॥

एक रात्रि विश्राम करके पृथ्वीराज का आगे चलना।

सहि राज रनवीर तहँ । किय भोजन सु उताम ॥
सब आहारे अन्न रस । चच्या जाम निसि जाम ॥ छं० ॥ १९२ ॥
अरिल्ल ॥ किय भोजन सबसथ्थ ब्रहासन ग्रास दिय ।
तिथ्थि चवथ्थिय सोम जाम इक नींद लिय ॥

(१) ए. कृ. को.- उत्तरि ।   (२) मो.-पर ।

फुनि चढ़ि चल्यौ राज न बुझयौ कोइ भत्त।
नट्ट सु बुझझै राज ममज्जि न अष्षि व्रत्त ॥ छं० ॥ १९३ ॥

उक्त पड़ाव से राजा का चलना और भांति भांति के भयानक अपशगुन होना।

भुजंगी ॥ चल्यौ राज प्रथिराज कनवज्ज राजं। लिए सहस एकं सतं एक साजं॥
रवीवार वारं तिथी ताइ रूपं। सवं इन्द्र जोगं छठं राह रूपं ॥
छं० ॥ १९४ ॥

दुरं वार आकास वाअंक लज्जी। दुहूं पष्य नीचं सबं दाव नज्जी॥
मिली नारि पंचं सिरं कुंभ धारी। मुगी मध्य विद्धी उभै रूपकारी॥
छं० ॥ १९५ ॥

न्वपं जोग तीरं जु जै जै करंती। दई दच्छिनं वाम पंषी फिरंती॥
मिल्यौ रूपराअं करै सद्द वामं। गरज्जंत मेघं अकालं सु तामं॥
छं० ॥ १९६ ॥

सुवं अग्गि झाल्लं मृतं काम उट्ठी। वन्नैजा करीरं मुषं मंस छुट्टी॥
लियं मंस गिद्धी उयं हंनि मग्गी। बुलै सारसं वाम कूरलंत डग्गी॥
छं० ॥ १९७ ॥

एक ग्राम में नट का भगल (अंग छिन्न दृश्य) खेल करते हुए मिलना।

कवित्त ॥ चलत मग्ग चहुआन। निकट इक गाम समंतर॥
नट षेलत नाटक। भगल मंड्यौ भ्रम तंतर॥
सत्त संगु उप्परै। नट्ट सुत्तौ जय जंपत॥
कहुंत सीस कहुं पानि। धरनि धर पर्यौ सु कंपत॥
इह चरित पिष्पि सामंत सब। अप्प चित्त विभ्रम लहै॥
पिष्यंत परसपर मुष [1]सकल। नको बुझझ राजन कहै॥छं०॥१९८॥

(१) ए. कृ. को.- सयल।

जैतराव का कन्ह से कहना कि राजा को रोको यह अशगुन भयानक है। कन्ह का कहना कि मैं पहिले कह चुका हूं।

इक कहै कोइ तिथ्थ। कवन थानक को देवह ॥
जिहि असगुन चल्लियै। कोइ न जानै यह भेवह ॥
कहिय जेत सम कन्ह। तुमहिं रष्षौ कहि राजन ॥
कहै कन्ह नन लहौ। प्रथम बरज्यौ बहु जाजन ॥
पज्जून कहै बुझ्झहु (१)सकल। इह अवस्थ कनवज क्रमै ॥
जानै सुभट्ट कारज भयल। मति सु कोइ चिंता भ्रमै ॥छं०॥१९९॥

कन्ह का कहना कि कहने सुनने से होनी नहीं टरती।

कहै कन्ह नरनाह। सुनहु कुरंभराव धुअ ॥
जो भविस्य (२)निमान। सोइ मिट्टै न भूर (३)धुअ ॥
धरम सुअन (४)क्रत दूत। सोई बरज्यौ नहिं मानिय ॥
जनमेजै कहि जग्य। सु हित निष्यंध न जानिय ॥
सौमित्र बरज्जित राज रघु। कनक मृग्ग संधेव सर ॥
दसकंध (५)निषेधिय मंत्रियन। सीय न अप्पिय काल वर ॥छं०॥२००॥
किय जद्दव त्रिय रूप। स्राप दुर्वास सुधारिय ॥
काल विनस निर्घोष। विप्र वाहै नन हारिय ॥
इहि राजा प्रथिराज। हन्यौ कैमास अप्प कर ॥
भरि बेरी चामंड। किये दुस्मन सब्ब भर ॥
इह गमन भट्ट बुझ्झै न्रपति। करै कहा सुझ्झै न मन ॥
उप्पजी कोइ क्रत्या अतुल। मोइ प्रसंचिय राज म तन ॥ छं० ॥२०१॥
*बार सोम पंचमी। जाम एकह निसि बित्ती ॥
कें दुर्बल वर पट्ट। तहां उतरी न्रप रत्ती ॥

* यह २०२ और २०३ दोनों छन्द मो. और ए. प्रतियो में तो हैं ही नहीं। कृ. प्रति में लिख कर काट दिए गए हैं।

(१) ए. कृ. को- मयल (२) मो.-निरमान। (३) मो. कृ. ए.-धुअ।
(४) ए. कृ. को. अम। (५) ए. कृ. को. निषेवन।

करि स्तुति सब सथ्थ। अश्व तजि नौंदह ग्रासं॥
घटी पंच निसि शेष। सु पहु चल्यौ चढ़ि तासं॥
पत्तौ सु जाय संकरपुरह। दिवस अंत बरथान नय॥
आहारि अन्न आसन्न सय। सब बुल्लि सामन्त तय॥ छं०॥ २०२॥

पृथ्वीराज का सब सामंतों को समझाना।

इह जंपी प्रथिराज। करिव अस्तुति सामंतं॥
धरि छग्गर कविचंद। महल दिष्षन मन संतं॥
जब जानौ युध समय। तुमैं सब काम सुधारौ॥
मो चिंता मन मांहि। होय तुमतैं निसतारौ॥
संभलिव सकल सामन्त मत। भयौ वीर आभास तन॥
चिंतिय सु इष्ट अप्पान अप। आश्रमें सब्बा सुमन॥ छं०॥ २०३॥

पंचमी सोमवार को पहर रात्रि गए पड़ाव पड़ना।

दूहा। जानि सगुन चहुआन नें। मन भावी मो गत्ति॥
मो न मिटै पर ब्रह्म सौं। ब्रह्म चीत भैभित्त॥ छं०॥ २०४॥

सामंतों का कहना कि सब ने हटका पर आप न माने।

[1]सह समझि नारंजुलै। सो इच्छिनि मोकल्लि॥
गुरू सज्जन सैसव[2] सु बंध। बरजंते न्रप चल्लि॥ छं०॥ २०५॥

सामंतों का कहना कि हमें तो सदा मंगल है परंतु आप हमारे स्वामी हो इस लिये आपका शुभ विचार कर कहते हैं।

रवि मंडल भेदै स [3]फुटि। प्रथम चित्त [4]फुनि होइ॥
[5]तन जंपै भट जीह करि। न्रपहि अमंगल [6]जोइ॥ छं०॥ २०६॥

---

(१) ए. कृ. को.- सम। (२) ए. कृ. को.- सैसव्व।
(३) मो.- फुनि। (४) मो.- पुनि।
(५) मो.- नन। (६) ए. कृ को.- होइ।

प्रातःकाल पुनः चाहुआन का कूच करना। स्वामी की नित्य सेवा और उनका साहस वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ राज चहुआन सूर। निमलिय किति रवि प्रात नूर॥
इक एक वीर दह दहति सूर[1]। देवत्त वाह दुज्जन करूर॥
छं० ॥ २०७ ॥

तिन सथ्थ पंच भर पंच जित्त। सक्रोति सेन सिरदार इत्त॥
इक इक संग हुअ दुअन दाह। जनु दार पच्छ बाराह राह॥
छं० ॥ २०८ ॥

सजि चली संग देविय प्रचंड। उनमत्त[2] रूप कर सजे दंड॥
सजि चल्यौ संग भैरू उभंत। सेवक सहाय अरि करत अंत॥
छं० ॥ २०९ ॥

सजि चले रय पंचास वीर। कौतक्क कहल मन हरषि धीर॥
जुग्गिनिय सठ्ठि चव चल्लि संग। किलिकिल्लत काल सम रमन जंग॥
छं० ॥ २१० ॥

भहराति भीत भूतन जमांति। घहराति घोरि सुर प्रेत पांति॥
अनि अल्लि इष्ट सबदेव साधि। चल्ल सुमंच जंचनि अराधि॥
॥ छं० ॥ २११ ॥

अकलंक कंक अनसंक चित्त। रचे सु स्वामि सन सेव हित्त॥
माया न मग्ग जिन चित्त जाइ। पोइनिय पत्त जल ज्यों जनाइ॥
॥ छं० ॥ २१२ ॥

ऐसे जु सित्त सामंत सूर। उनमत्त अंग जनु नदिय पूर॥
हलहलिय ढाल मालह सजूर। वज्जंत आन हल्लत पजूर॥
॥ छं० ॥ २१३ ॥

निरषंत नयन तिय तेज ताप। चढ़ि चल्यौ राज चहुआन आप॥
सामंत सूर[3] सूरहि नरंभ। दिष्षियै लाज तिन मुष्प अंभ॥
॥ छं० ॥ २१४ ॥

(१) ए.- सूर। (२) ए. कृ. को.- उनमत्ते। (३) ए. कृ. को. सूरह।

सामंत किरनि प्रथिराज सूर । अरि तिमिर तेज कढ़न करूर ॥
पूहवी न बीर इन समह कोइ । कवि कहै बरनि जौ आन होइ॥
॥ छं० ॥ २१५ ॥

रहि पंड समय भूभार पथ्थ । तिहि काज भयौ अवतार तथ्थ॥
भय अभय चिंति हद मुषहि जोति। उग्गंत हंस छवि जानि होत ॥
॥ छं० ॥ २१६ ॥

इस पड़ाव से पांच योजन चलने पर पृथ्वीराज का कन्नौज की हद मे पहुंचना ।

जोजनह पंच गय चाहुआन । पर पुरह जानि उग्गयौ सभान ॥
॥ छं० ॥ २१७ ॥

दूहा ॥ पर पुहमी पत्ते सु पहु । उग्ग भान पयान ॥
दल बद्दल सद्दल दिसह । पूरन छयत गयान । छं० ॥ २१८ ॥

एक दिन का पड़ाव करके दूसरे दिन पुनः प्रातः काल से पृथ्वीराज का कूच करना ।

उदय हंस सज्जे सगुन । बज्जे अनहद सद्द ॥
दिष्यत दरसन परम तप । पुज्जे दस दिस जद्द ॥ छं० ॥ २१९ ॥

प्रभात समय वर्णन ।

कवित्त ॥ चढ़ि चतुरंग चहुआन । राइ संभरिय सयंभर ॥
सकल सूर सामंत । सत भंजन समथ्थ वर ॥
पर अहंन सम समय । होत सकुन कुल सोरं ॥
वज्जि पंचजन देव । सेव अंबर मग ओरं ॥
जल पात जात मिलि विच्छुरत । रोर अलिन मलिन सपद ॥
लंपट कपाट विट चिय तजत । तम चर चर कीनी सुपद ॥
छं० ॥ २२० ॥

(१) मो.- प्रिय । (२) ए. कृ. का. सयत । (३) ए. कृ. को. चढ़ि चतुरंग चतरंग ।
(४) ए. कृ. को. मन । (५) मो.-लपट किपाट बिट चिय तजन । चम चर चर कीनी मुखद ।

पद्धरी ॥ तह मज्झि सुदल विद्दल विमाल । पूरंन [1]गेन मूरंन [2]भाल ॥
[3]डंबरिय धरनि आरोह गेंन । दिसि विदिसि पवनपरसंत[4] गेन ॥
॥ छं० ॥ २२१ ॥

मानंत मूर हैवर अरोहि । आक्रत्त [5]क्रत्त मत्ति अगम मोह ॥
ढलवौय पीय ढलकंत ढाल । दधि झाल पलव वैरष विमाल ॥
॥ छं० ॥ २२२ ॥

हय हींसधरा पूर विहर बाह । तारच्छ सु तन अंतर उलाह ॥
ऐसे सुवीर रिन[6]विषम धार । अरि अंब[7]अचन अग्गयि करार ॥
॥ छं० ॥ २२३ ॥

चहुआंनभान अरि तिमिर तार । मानंत सूरकरिकर प्रचार ॥
दरसंत परसपर सुभट नेन । सौभंत भंति तन धग्गि मेन ॥
छं० ॥ २२४ ॥

विह[8]सत विहाय सथ्थान थान । सतपत्त फुल्लि मिलि भ्रमर मान॥
छूटंत गंधि [9]मिलि मंद वात । मिलि चले भ्रमर परमन्न सुधात ॥
॥ छं० ॥ २२५ ॥

परजंक प्रीय नह तजत प्रौढ़ । नव पंज रंज [10]तल मलत मौढ़॥
सद्दंत चक्र साहीत वैन। अनुभान मत्त क्रम छंडि मेन॥
॥ छं० ॥२२६ ॥

दिसि विदिसि नयन परमान करंत।रसना रमान हरि वर धरंत॥
संफटि तमाघ [11]तिमरनि तरार । अंजनह नगर उठि पवन धार॥
छं०॥ २२७ ॥

संभरिय राय संभरि सु [11]साम । अवलोक देव वंदन सु राम ॥
... . । .... . छं० ॥ २२८ ॥

(१) ए. कृ. को.-गोंन । (२) ए.-मूरंन । (३) मो.- डमार ।
(४) मो. पसरंत । (५) ए. कृ. को.-क्रम्म । (६) मो.-निरमले ।
(७) ए. कृ. को.-मो. अचपन । परंतु अक्षर बढ़ता है । (८) ए. कृ. को. जागि ।
(९) मो.-नल । (१०) ए. कृ. को.-नमूनि । (११) मो.-गाम, को. कृ.-समान ।

कवित्त ॥ है सजि संभरि राय। चढ़िव चौहान प्रमं मन ॥
क्रमत मग्ग पिंगलह। मान उद्यान विषंनम ॥
नैंन दरसि दिसि विदिसि। निंद सभगिय पल अंगन ॥
अधलांकित दिन लोक। लोकनर वर है दंगन ॥
दिष्षियै बदन दूलह दुगनि। सदन रंग दुलही क्रमत ॥
बंदेवि पाय निंदे अगुन। फल सुभाव अंवर प्रमत ॥
छं० ॥ २२९ ॥

वन प्रान्त में एक देवी का दर्शन करके राजा का चकितचित होना।

दूहा ॥ बन सु थान इक देवि मिलि। संग स्वान गन माल ॥
जट विभूति कर कंबयनि। लषि अचिज्ज भूपाल ॥ छं० ॥ २३० ॥

देव का स्वरूप वर्णन।

हनूफाल ॥ जट विकट सिर जट जूट। अव सचिय मुद्र विनूट ॥
चरचर्थ्य चरचित अंग। द्रग दिपै लोल सुरंग ॥ छं० ॥ २३१ ॥
गर गुंज गुंथित बंध। बनि सेत नेत सुकंध ॥
सजि पानि तानि कराल। सँग रंग स्वानह माल ॥ छं० ॥ २३२ ॥
रव छक्क गज्जत गन। लघु दिघ्घ चुट्टत नैंन ॥
हिय रत्त स्याम स थान। कटि नील पीत उरान ॥ छं० ॥ २३३ ॥
भुज गेंन [२]रंग रसाल। कंबु ग्रीव [३]पीत सु आल ॥
अव सेत भ्रूव स भूर। लिल्लाट केसरि नूर ॥ छं० ॥ २३४ ॥
तन रंग नान प्रकार। चर चरन रंग सु चार ॥
नष नील घन परवान। मुष मुदित दिष्षि न्रपान ॥ छं० ॥ २३५ ॥
कविचंद दीन असीस। हसि जंपि नंमिय सीस ॥
दिषि दंत नील सुरंग। रसना सुरंग दुरंग ॥ छं० ॥ २३६ ॥
मित अमित तन के भाव। सुद देव भूतनि राव ॥

(१) मो.-हुल्लो। (२) ए. कृ. को.-रैंन। (३) ए. कृ. को.-पीतल।

राजा का पूछना कि तू कौन है और कहां जाती है।

किन थान सों गम कीन। किन ठौर पर मनदीन ॥ छं० ॥ २३७ ॥

उसका उत्तर देना कि कन्नोजका युद्ध देखने जाती हूं।

सतिजुग्ग मो पित जुड्ड। रन त्रिपुर षंड विरुद्ध ॥
त्रता सु रघुकुल राम। हनि लंक रावन नाम ॥ छं० ॥ २३८ ॥
द्वापुर सु अर्जुनराय। [1]घटवंश घल्यौ घाय ॥
कलिजुग्ग कनवज राज। चहुआन कुल [2]प्रथिराज ॥ छं० ॥ २३९ ॥
अच्छी सु कमधज वंस। जुन्हाइ उद्र प्रसंस ॥
दिय सुमति ताहि दुसीस। कलिप्रिया नाम सरीस ॥
छं० ॥ २४० ॥
पित पत्ति कुल संघार। सम पानग्रहन सु वार ॥
सो चरित दिष्षन काज। सिव हार कंठ समाज ॥ छं० ॥ २४१ ॥
यह जंपि गवन सु कीन। न्रिप चंद हसि रसभीन ॥
.... .. । .... छं० ॥ २४२ ॥

पृथ्वीराज का चंद से अपने सपने का हाल कहना

तिघट तोय माया सरिय। द्रिग लग्गिय तिहि काल ॥
सजि संवेग सु सुंदरिय। रचि शृंगार रसाल ॥ छं० ॥ २४३ ॥

पूर्व की ओर उजेला होना, एक सुंदरी स्त्री का दर्शन होना।

हनूफाल ॥ पहु ओर प्रगटि [3]प्रहास। छिन प्राचि ओर उजास ॥
तिहि समय न्रप द्रग लग्गि। तिन मध्य सुपन सुवग्गि ॥
छं० ॥ २४४ ॥

उक्त सुन्दरी का स्वरूप वर्णन।

छिय नेन सेन विहाम। नवरंग नारि इहाम ॥
तिहि समय सुधम चंद। मुष अग्ग न्रप बर संद ॥ छं० ॥ २४५ ॥

(१) ए. कृ. को.- घन। (२) ए. कृ. को.-पुगराज।
(३) ए. कृ. को. प्रकाम।

कच कुसुमकवरि सुरंग। जनु ग्रसिय [1]इंद उरंग॥
नग मुत्ति सुमन सुभाल। हर रूढ़ कालि कपाल॥ छं०॥२४६॥
मधि भाग केसरि [2]आट। हर इंद तिलक लिलाट॥
श्रुत मंडि कुंडल लोल। रथ भान भंग अलोल॥ छं०॥ २४७॥
[3]भुअ बंक धनु सुरराइ। कर अंचि [4]चाय सुचाइ॥
द्रिग दिपत चंचल चार। अलि जुगल कुमुद विहार॥छं०॥२४८॥
नव नासिका सुकनंद। रति बिंब बढ़िय अनंद॥
तिन अग्र मुकति सु नंद। रस सुक्क ससि नप कंद॥ छं०॥ २४९॥
कल काम आल कपाल। तहँ अलक झलकत लाल॥
[5]दुरि रदन दारिम बीज। रव काल कोकिल सी ज॥छं०॥२५०॥
बनि चिबुक स्याम सु व्यंद। बसि कुमुदनी अलिइंद॥
कलग्रीव रेष सुभेष। हरि कंज अंगुल [6]तेप॥ छं०॥ २५१॥
करकुमुद अमुद अनूप। जटि रतन रूप सनूप॥
कुच मद्धि हार विराज। हरहार गंग जु राज॥ छं०॥ २५२॥
कटि छीन छवि म्रगराज। पचि भ्रंग पीत समाज॥
रचि और कंचन थंभ। लजि दुरिग कुल कल रंभ॥छं०॥ २५३॥
बनि पिंड नारंगि रंग। जनु कनक दंड सुरंग॥
नप चरन अरन अनूप। रवि चंद अंबुज जूप॥ छं०॥ २५४॥
कलहंस गमन विसाल। बरनी सु चंदति काल॥

राजा का उससे पूछना कि तू कौन है और कहां जाती है।

[7]को नाम को तुम मात। को बंध को पित जात॥ छं०॥ २५५॥
जाती सु कोपति थान। किहि आत कून पयान॥
सो देवि पुर जगिनाथ। सो प्रकृति भिन्न अकाथ॥ छं०॥ २५६॥

(१) ए. कृ.-इन्द्र। (२) ए. कृ. को.-आइ।
(३) मो.- भव वक धनुप सु राह। (४) कृ. ए. वाप।
(५) ए. कृ. को. रद कनक। (६) ए. कृ. भेप, को. नेक।
(७) मो. को को नाम तम तात को बंध को पित मात॥

उस सुन्दरी का उत्तर देना।

गाथा ॥ पयं पीय गत नयं। घट्ट कट्टंति हरयं ॥
　　भरता पित कुल बद्धं। स्रापं सुमंतयो मुनी ॥ छं० ॥ २५७ ॥
　　कलह प्रिया मो नामं। मंजु घाषापि रंभया सोरं ॥
　　समरस्य जग्य समये। प्रछन्नं कथितं मया ॥ छं० ॥ २५८ ॥

कवि का कहना कि यह भविष्य होनहार का आदर्श दर्शन है।

दूहा॥ पल प्रगट्टि कवि चंद सों। कह्यौ कौन इह भाव ॥
　　कह्यौ जु इह ह्वै है अवसि। सुन डंकिनिपुर राव ॥ छं० ॥ २५९ ॥

भविष्य वर्णन।

कवित्त ॥ कहर कंक कल कलिय। भार फनिमन कर भज्जिय ॥
　　सजिय सेन चहुआन। किन्न कारन अरि कज्जिय ॥
　　अप्प अप्प सजि इष्ट। चलै जैचंद सभानन ॥
　　बर अप्पन चौसट्ठि। करह मो कर दैवानन ॥
　　रुधि गहन पच दारुन दिर्वाहि। चंद भट्ट आसिष्य दिय ॥
　　सुर करिय क्रित्ति भय भीत भर। करन कृत्त आगम कहिय ॥
　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ २६० ॥
　　चिहुर बंध बंधियहि। काल पढ़ियहि कुलाहल ॥
　　...　　...　　।　　...　　...　　॥
　　अधर पाइ धर धरनि। कंठ रुधि पियै सु नद्दिय ॥
　　मनो पुञ्ज प्रति पाउ। पच पचन उरि लद्दिय ॥
　　संजोग व्याह विध जोग सुनि। चलत राह उद्यान मग ॥
　　रन राग रंग पचन भरन। दुर्गति रूप दानव सु द्रग ॥छं०॥२६१॥

देवी का पृथ्वीराज को एक बाण देकर आप अलोप होजाना।

　　एन बान असुरान। भिरन महिपासुर भग्गिय ॥
　　एन बान रापिसन। राम रावन्न उछग्गिय ॥

(१) ए. कृ. को. मुध।

एन बान कौरव ममथ्थ। पथ्थ भर करन पछारिय ॥
एन बान संकर सुभग्ग। त्रिपुरारि सु पारिय ॥
इन बान पराक्रम बहु करिय। सजिय हथ्थ चहुआन वर ॥
इन बान मारि पंगुर पिसुन। करन कंक चलौं कहर ॥छं०॥२६२॥

पृथ्वीराज को शिवजी के दर्शन होना और शिवजी का राजा की पीठ पर हाथ देकर आशीर्वाद देना।

चलत मग्ग चहुआन। भान सम दीख भयंकर ॥
गिर तह लग्गिय गेन। पलन षंडन तह षंघर ॥
वैल गैल जट जूट। पिठु तठ काम विराजै ॥
गंग उदक उछ्छरै। सार चंमर सिर राजै ॥
जब चष्प पिष्प चौहान भट। तब उत्तरि सब भरनि भर ॥
पेषंत पाइ दुज्जन दुसह। धर्यौ पिठु सवि अप्प कर ॥छं०॥२६३॥
उदक गंग विभ्भूत। अंग सारंग सुरंगह ॥
बरन अनंत मन हरत। निरषि गिरजा मन रंजह ॥
करी चर्म गरलह विक्रंम। रच्छिस उर दाहन ॥
त्रिग्ग नयन ज्वाला बयन्न। कंद्रप्प न मानह ॥
तह तरुन तार त्रिय बर बसहु। रिसह सघ चहुआन रषि ॥
भरि भूत धूत दिष्षिय पिथह। लिय अग्या सिर नाइ सिष ॥
छं० ॥ २६४ ॥

पुनः पृथ्वीराज का पयान वर्णन।

दूहा ॥ चले राइ पहु फट्टतें। सत सामंत सुराह ॥
मनों पथ्थ भारथ करन। दल कौरव धरि दाह ॥ छं० ॥ २६५ ॥

कन्ह को एक ब्राह्मण के दर्शन होना। उसका कंन्ह को असीस देकर अन्तर्ध्यान होना।

कवित्त ॥ दुज [1]उछो दल नाह। प्रवल तन जोति प्रगासिय ॥
मुष विछी भर कन्ह। मानि अप्पन मन भासिय ॥

(१) ए. कृ. को.-उभ्भौ।

द्रग पट्टिय छुटि पट्ट । लग्यौ उद्योत उरानह ॥
भान रूप भज नाह । दिष्ष नारांजी [1]दानह ॥
लगि पाय धाय कर पिट्ठ दिय । मम संकै जुद्दह निपुन ॥
फिरि तथ्थ विप्र नह [2]पिष्यौ । तुम हम मंडल रवि मिल्लन ॥
छं० ॥ २६६ ॥

हनुमान जी के दर्शन होना।

चलिय अग्ग चहुआन । एक जोजन ता अग्गिय ॥
घटा रूप घन सज्जि । निजरि ता ताहि न लग्गिय ॥
जीह वीज विकराल । धजा घन वद्दल रंगिय ॥
हथ्थ गदा सोभंत । भूत प्रेतह ता संगिय ॥
सामंत राज पिष्षिय सलप । हनूमान चंदह कहिय ॥
बाजंत नद्द विधि विधि वसुह । चह सुबज्जि चंबक दहिय ॥
छं० ॥ २६७ ॥

कविचन्द का हनुमान जी से प्रार्थना करना।

दूहा ॥ चंद गयौ अग्गें सुवर । तोतन रूप अथाह ॥
हम मानुष्षी मति अधम । करहु रूप कल नाह ॥ छं० ॥ २६८ ॥

लंगरीराय का सहस्रबाहु का दर्शन और आशीर्वाद देना।

कवित्त ॥ सहस हथ्थ सोहन्त । धूम्र ब्रन्नह मुष मग्गह ॥
अंपि तेज अगि जानि । पानि पलचर [3]ता संगह ॥
धनुष धजा फररंत । हथ्थ डंकिनि फिक्कारै ॥
जै जै मुष उच्चरंत । सिंह वह वर बक्कारै ॥
लंगोट बंध काया प्रचंड । लोहालंगर समुष करि ॥
धारंत हथ्थ मथ्थें धरिय । मासु पंष मथ्थें सुहरि ॥ छं० ॥ २६९ ॥

गोयन्दराय का इन्द्र के दर्शन होना।

जोजन तीन जलद्धि । राय गोयंद सु भारिय ॥
आप इष्ट तन सिद्धि । इन्द्र इंद्रासन धारिय ॥

(१) ए. कृ. को.-दोनह । (२) ए. कृ. को. दिष्पई । (३) ए. कृ. को.-ना संगह ।

एक कोम आकंप। भद्र जाती उज्जल तन ॥
सहस दंत सित हथ्थ। मनो राका जोतिंबन ॥
विंमान देव बहु जटित मय। चमर छच अच्छरि चल्लिग ॥
गोयंदराव सिर हथ्थ दिय। कहिय तुझझ हम ग्रह मिल्लिग ॥
॥ छं० २७० ॥

एक बावली के पास सब का विश्राम लेना। कवि को देवी का दर्शन देना।

विवर एक वट संझ। तास मझझह कंदल ग्रह ॥
भान तेज [1]भल्लकंत। आय सेना उत्तरि [2]सह ॥
चंद गयौ चलि अग्ग। देवि पूजा घन विद्धिय ॥
वघ्घ रूप आराहि। आय उब्भी हर सिद्धिय ॥
मम करहि चंद अंदेस मन। लेय राज संजोगि ग्रहि ॥
चौसट्ठि सुभर भेदें सुहरि। जय जय करि अपछरि वरहि ॥
छं० ॥ २७१ ॥

दूहा ॥ चयत दिवस चय जामिनिय। चयत जाम फल उन्न ॥
जाजन इक्कत संचरिग। प्रथीराज संपन्न ॥ छं० ॥ २७२ ॥

समस्त सैनिकों का निद्राग्रस्त होना और पांच घड़ी रात से चल कर शंकरपुर पहुंचना।

कवित्त ॥ वार सोम पंचमी। जाम एकह निसि विक्तिय ॥
के दुब्बल वर पट्ट। तहां उत्तरि पहु रत्तिय ॥
करि अस्तुति सब सथ्थ। अश्व तजि नींद सु ग्रासं ॥
घटी पंच निसि सेष। सु पहु चढ़ि चल्यौ तासं ॥
पत्तौ सु जाइ संकरपुरह। दिवस अंत वर थान नय ॥
आहारि अन्न आसन्न मय। सब बोलि सामंत तय ॥ छं० ॥ २७३ ॥

(१) को.- झल्लंत। (२) ए. कृ. को. तहां।

राजा का सामंतों से कहना कि मैं कन्नौज को जाता हूं बाजी तुम्हारे हाथ है।

इह जंपिय प्रथिराज। करिव अस्तुति सामंतं ॥
धरि छगार कविचंद। महल [1]पिष्यन मन संतं ॥
जब जानौ सुध सबै। तुमै सब काम सुधारै ॥
मो चिंता मन मांहि। होइ तुमतें निसतारै ॥
संभलत सब्ब सामंत मत। भयौ बीर आभासि तन ॥
चिंतिय सु इह अप्पान अप। आश्रमें सव्वां सुमन ॥
छं० ॥ २७४ ॥

दूहा ॥ चयनि जांम वासुर विसरि। घटिग हंस तन गात ॥
जु कछु चप्प इच्छा हुती। सोइ दिष्यौ परभात ॥ छं० ॥ २७५ ॥

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। [2]स्रमित सामंत सुरेसं ॥
मा चिंत्यौ तुम कंध। सुनौ कारन क्रत एसं ॥
चितिया दिन बाईस। कांम चौवीस चवथ्थौ ॥
घट चौसह पंचमी। तीस अठ पठि सपथ्थौ ॥
जोजन्न उभय कनवज्ज कहि। इन थानक कमधज्ज अगि ॥
देषनह पंग अभिलास अति। क्रत्य सब्ब तुम कंध लगि ॥छं०॥२७६॥

पृथ्वीराज प्रति जैनराव के बचन कि छद्मवेष में आप छिप नहीं सकते।

कवविक्का ॥ बद्दल चंद किरन्न। छिपै नन सूर छांह घन ॥
भूपति छिपै न भाग। रंक नन छिपत बसन्न तन ॥
नाह नेह नह छिपत। छिपै नन पुहप बास नर ॥
कुलट * कटंब न छिपै। छिपै नन दान अधर धर ॥
छिप्पै न सुभट जुद्धह समै। चतुर पुग्ग कवितह कह्या ॥
पंमार कहै प्रथिराज सुनि। तू न छिपै छगार गह्या ॥छं०॥२७७॥

---

(१) ए. कृ. को. दिष्यन। (२) ए. स्रम।
(३) ए. कृ. को.-सव्व। * कुटुंब

सामंतों का कन्नौज आकर जयचन्द का दरबार देखने की अभिलाषा में उत्सुक होना।

दूहा ॥ करि अस्तुति सामंत न्रप। जंपि विगति रति बत्त ॥
उतकंठा दिष्षन नयन। कमधज्ज राज दरत्त ॥ छं० ॥ २७८ ॥

मुख्य सामंतों के नाम और उनका राजासे कहना कि कुछ परवाह नहीं आप निर्भय होकर चलिए।

पद्धरी ॥ सुनि तहां सभा ए राज बेंन। उभ्भरे [१]रोम लग्गे सु गेन ॥
अप्पानि अप्प [२]दैवत्त चिंत। संमान सुचित चिंते सुचिंत ॥
छं० ॥ २७९ ॥

मंड्यौ सुराज दीवान राज। जानै कि देव देवन समाज ॥
बैठे सु कन्ह गोयंदराज। पज्जून सलष निड्डूर समाज ॥
छं० ॥ २८० ॥

पुंडीर चंद तूंवर पहार। जामानिजद्द आजान हार ॥
पंमार सिंह लष्षन वघल्ल। चहुआन अत्ततार्इ अभंल ॥
छं० ॥ २८१ ॥

वलिभद्रराइ षीची प्रसंग। गुज्जरह कनकरामह अभंग ॥
अनि अन्नि सूर सामंतरेस। बैठ स राज आवरि अस्रेस ॥
छं० ॥ २८२ ॥

हक्कारि चंद बरदाइ ताम। उथ्थान मान वर जथ्थ ठाम ॥
इह जंपि राज भर सुमत संम। दिष्यौ सपंग [३]दीवान तंम ॥
छं० ॥ २८३ ॥

क्रत काल कव्य लय पान वीर। अवलोकि पंग भर सुभर तीर ॥
सब महिल वरित अन अन्नि रंच। कंधव तंम सोभानि संच ॥
छं० ॥ २८४ ॥

दूहा ॥ [४]विहसि सुभर विकसे सुमन। न्रप न करहु अंदेस ॥
धनि धनि मुष जंपिहु विनय। दिष्षहु महल नरेस ॥ छं० ॥ २८५ ॥

(१) मो.-रोम। (२) मो.-दैवान।
(३) ए. कृ.-पंग। (४) ए. विहरि।

तुच्छ निद्रा लेकर आधीरात्रि से पृथ्वीराज का पुनः कूच करना

मानि मंत सामंत । राज सुष सेन विचारिय ॥
भूम सेज सुष सयन। गंग मंडल वर धारिय ॥
घटिय पंच जुग अग्ग । तलप अलपह आनंदति ॥
फुनि चढ़ि चल्यौ राज । पुरह संकर मानंदति ॥
सुनियै निसान ईमान घन । जनु दरिया पाहार गुरि ॥
निस अड्ड घरिय ऊपर चतुर । पंग सु उत्तरि गंजि धर ॥
छं० ॥ २८६ ॥

दूहा ॥ चढ़त राज चहुआन निस । घोर सपंग निसान ॥
जान कि मेघ असाढ़ सम । उठिय घोर दरसान ॥छं०॥२८७॥
चलत मग्ग संभरि सपहु । सुर बज्जे सहनाइ ॥
रस दारुन भय संचरिग । घोर गंभीर विभाइ ॥ छं० ॥ २८८ ॥

कवित्त ॥ [1]घटिय च्यार चप्परह । अड्ड जामनिय अरत तम ॥
चढ़िग राज संभरि नरेस । सामंत सकल सम ॥
देवगुरू सप्तमी । अश्वनि अभि जोग प्रमानह ॥
चलत मग्ग अहुआन । [2]गंग मंडल वर थानह ॥
अग्गह सुभट्ट मारग सुमग । कहत कथा जाह्नविय ॥
कलमल बिछाह तन हात जल । जाल बाल चूरन [3]कविय ॥
छं० ॥ २८९ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि कन्नौज निकट आया अब तुम भी वेष बदल डालो।

बचनिका ॥ राजा सामंतन सों बोल्यौ । हूं पंगुरे की दिवान देषन चल्यौ॥
प्रगट रूप सरूप [4]दुराओ ॥ और सरूप करि साथ आओ ॥
ऐसो कहत सामंतन मानी । सा निसा जुग एक बराबरि जानी ॥

(१) मो.-चरिय । (२) मो.-गगन मंडल वर भानह ।
(३) ए. कृ. को. करिय । (४) ए. कृ. को.-दुरावौ आवौ ।

सामंतों की तैयारियां और वह प्रभात वर्णन।

पद्धरी ॥ चंपौ सुभोमि कनवज्ज जाइ। दसगुनौ सूर बर चढ़त भाइ॥
उच्चर्‌यौ भट्ट कविचंद सथ्थ। हौमई राज रवि मम समथ्थ॥
छं० ॥ २९० ॥

जिम जिम सु निकट कनवज्ज आय। डरपहि न सूर तिम तिम हढ़ाय॥
आपंन चंद जंपौ सुराय। बल बंधि पीय संगम दिढ़ाय॥
छं० ॥ २९१ ॥

उत्तरिय चित्त चिंता नरेस। वेतरहि सूर सुरलोक देस॥
इक कहत लोह बल इंद्र राज। जम जियन मरन प्रथिराज काज॥
छं० ॥ २९२ ॥

कर करहिं सूर अस्नान दान। बर भरत सुरसुनि क्रन निसान॥
सरवरिय साल बंछहित भांन। मुध बाल जेम इच्छत विहान॥
छं० ॥ २९३ ॥

गुरु द्यत उदित म्रित मुदित इत्त। झलमलिग तार तरु हलिग पत्त॥
द्रेषियत इंद किरनीन मंद। उदिमह हीन जिम न्रपति चंद॥
छं० ॥ २९४ ॥

धरहरिग [1]चित्ति सुर [2]मुह मुंद। उप्पज्जौ जुद्ध आवद्ध दुंद॥
पहु फटिग घटिग सर्वरि सरीर। झलकंत कलस दिषि गमन नीर॥
छं० ॥ २९५ ॥

बिरहीन रैंनि छुट्टि [3]मित मान। नष्यंत तोरि भूषन प्रमान॥
असुवंत अंसु उस्सास आइ। बिरहीन कंत चंदहु बुलाइ॥
छं० ॥ २९६ ॥

पह फट्टि घट्टि भूषननि बाल। दिसि रत्त दरसि दरसी कमाल॥
[4]न्रिप भ्रंमि गंग सब पुब्ब देस। आरन्न अरिन उत्तरि नरेस॥
छं० ॥ २९७ ॥

---

* ए. कृ. को.-बल बंधि पिय संग दिन दिढ़ाय। आपम चंद जानी समाय।

(१) ए. कृ. को.-वित्त। (२) ए. कृ. को. सद्द।

(३) ए. कृ. को.-नमति। (४) को.-नृप भूमिग जानि यह पुब्ब देस।

न्रप षम्मिग जानि इह पुब्ब देस। अरि नयर [1]नीर उत्तर कदेस ॥
हर सिद्ध दिद्ध कनवज्ज राव। तिन बध्यौ अंग धर ध्रंम चाव ॥
छं० ॥ २९८ ॥

दूहा ॥ पह फट्टिय घट्टिय तिमिर। तमचूरिय कर भान ॥
पहमिय पाय [2]प्रहारनह। उदोहोत असमान ॥ छं० ॥ २९९ ॥
रत्तंबर दीसै सुरति। किरन परष्यिय रत्त ॥
कलम पंग नहिं होय यह! बिय रबि बंध्यौ नेत ॥छं०॥३००॥

सब का राह भूलना परंतु फिर उचित दिशा बांध कर चलना।

रबि तंमुह संमुह [3]उद्यौ। इह है मग्ग समुज्झि ॥
भूलि भट्ट पुब्बह [4]चलि..य। कहि उत्तर कनवज्ज ॥ छं० ॥ ३०१ ॥
कंचन फूलिय अर्क बन। रतनह किरनि [5]प्रसार ॥
सु .. कलम जयचंद घर। संभरि संभरिवार ॥ छं० ॥ ३०२ ॥

पास पहुचने पर पंगराज के महलों का देख पड़ना।

कवित्त ॥ एह कलम कवि चंद। दंद मंध्यौ सुष रव्विय ॥
जग उप्पर जगमगत। [6]भूलि कैलासह छव्विय ॥
जगत पत्ति जग धज्ज। षग्ग कमधज्ज बांहबर ॥
दान षग्ग अनभंग। धजा बिय दान बंधि पर ॥
आभंग अवंग कनवज्ज पति। सुष नरिंद [7]दुनि इंद बर ॥
पाइये बंस छत्तीस तहँा। नवै रस्स षट भाष गुर ॥छं०॥३०३॥

कन्नौज पुरी की सजावट और सुखमा का वर्णन।

दूहा ॥ गंगा तट साधन सकल। करहि जु भंति अनेक ॥
नट [8]नाटिक संभरि धनी। बर विष्यात छबि केक ॥छं०॥३०४॥

---

(१) मो.-जानि।　　(२) ए. कृ. को. प्रहारनल, पहार नर।
(३) ए. कृ. को.-उचौ।　　(४) ए. कृ. को. चल्यौ।
(५) ए. कृ. को.-प्रचार।　　(६) ए. कृ. को.-ईस कैलास भुल्लि छवि।
(७) ए. कृ. को.-दुति।　　(८) ए. कृ. को.-नागर।

भुजंगी ॥ कहूं संभरे नाथ थट्टे गयंदा। मनुं पिष्षियै रूप ऐराप इंदा ॥
कहूं फेरिहित भूप अच्छे तुरंगा। मनों प्रब्बतं बाय बढ्ढे कुरंगा ॥
छं० ॥ ३०५ ॥

कहूं मल्ल भूदंड ते [1]रीस साधैं। तिकै मुष्टिकं ओर चानूर बाधैं ॥
कहूं पिष्षि पाइक्क बानैत बाधैं। नचें इंद्र [2]आहेस कै बज्र साधैं॥
छं० ॥ ३०६ ॥

कहीं विप्र उट्ठंत ते प्रात चल्ले। कहूं देवता सेवते स्वर्ग भुल्ले ॥
कहूं जग्य आपन्न ते राज काजैं। कहूं [3]देवात देव न्नित्यान साजैं॥
छं० ॥ ३०७ ॥

कहूं तापसी तप्प ते ध्यान लागै। तिनं दिष्षियै रूप संसार भागै॥
कहूं षोड़सा राय अप्पंत दानं। कहूं हेम सम्मान प्रथ्थी समानं ॥
छं० ॥ ३०८ ॥

कहूं बोलही भट्ट छंदं प्रमानं। कहूं [4]औघटं बीर संगीत गानं ॥
कहूं दिष्षि सिद्धं लगी तारि भारी। मनों नैर प्रातं कपाटं उघारी॥
छं० ॥ ३०९ ॥

कहूं बाल गावैं विचित्रं सुग्यानं। रहै चित्त मोहन्न डुल्लै न [5]पानं॥
इत चरित पेषंत ते गंग तीरे। स्वयं देषतें पाप नट्ठे सरीरे ॥
छं० ॥ ३१० ॥

पृथ्वीराज का कवि से गंगा जी का माहात्म पूछना।

दूहा ॥ कह महंत दरसंन तिन। कह महत तिन न्हान ॥
कह महंत सुमिरंत तिन। कहि कविचंद गियान ॥छं०॥३११॥

कवि का गंगा जी का महत्व वर्णन करना।

गाथा ॥ जो फल नीरह नयनं। जो फल गुनी गाइयं गेयं ॥
सोइ फल न्हात सरीरं। सोइ फल पीयंत अंजुलं नीरं ॥
छं० ॥ ३१२ ॥

(१) मरों। (२ ए. कृ. को.-आसेह।
(३) ए. कृ. को.-देवान। (४) मो.-औपटं।
(५) ए. कृ. को.-प्रानं। *छन्द ३१२ मा.-प्रीति में नहीं है।

जं जंय भाव सु बुद्ध। तं तं कहियंपि सुंदरी कथ्थं ॥
महिलान बाल अच्छं। सामं घनं सोभियं सारं ॥ छं० ॥ ३१३ ॥

पुनः कवि का कहना कि गंगास्नान कीजिए।

अरिल्ल ॥ जंतं न्हान महातम जानौं। दरसन तंत महंत बषानौं ॥
सुमिरन पाप हरै हर गंगे। सो प्रभु आज परस्सहु अंगे ॥छं०॥३१४॥

सब सामंतों सहित राजा का गंगा तीर पर उतरना।

कवित्त ॥ अंबुज सुत उमया विलोकि। वेद पढ़त पलि नीरज ॥
सहस बहत्तरि कुंअर। उपजि भौजंत गंगा रज ॥
आभूषण अंबर सुगंध। कवच आयुध रथ संतर ॥
रविमंडल के पास। रहत चौकी सु निरंतर ॥
चहुवांन चमूं तिन समर जत। सु कविचंद ओपम कथिय ॥
सामंत सूर परिगह सकल। उतरि तट्ट भागीरथिय ॥छं०॥३१५॥

कवि का गंगा के माहात्म्य के संबंध मे एक पौराणिक कथा का प्रमाण देना।

साटक ॥ सोरंभं कमलं तज्यों न मधुपं, मध्ये रह्यौ संपुटं ॥
सो लैजाय सरोज संकर सिरं, चढ़ाइयं अच्छरी ॥
सिंघं तंत स उध्धरं घट भरं, गंगा जलं धारयं ॥
बारं लग्गि न चंद कव्वि कहियं, संभू भयौ छप्पयं ॥ छं०॥३१६॥
इक्कं मृग्ग पियंत नीर डसियं, काल्लो समं पंनगं ॥
सोई व्याल्लय मृगछालय बही, शृंगी बही सुरसुरी ॥
धारे रूप पसूपती पसु तहां, भागीरथी संगती ॥
*आनंदी दुज वैल लेन क्रमियं, कैलास ईसं दिसं ॥छं०॥३१७॥

राजा का गंगा को नमस्कार करना, गंगा की उत्पत्ति और माहात्म्य वर्णन।

दूहा ॥ हो सामंत सुमंत कहु। सु हरि चिंति तजि बाज ॥

* "३१६ से ३१७ तक ये छंद मो.-प्रति में नहीं है।

त्रिपथ लोक प्रथिराज सुनि। नमसकार करि राज ॥छं०॥३१८॥

कवित्त ॥ पाप मनंमथ हरन। गंग नव बंध अनी पर ॥
हरि चरनन करि जनम। काम छंडै सु दुष्ष बर ॥
तीन लोक भर भवन। तहां प्राक्रंम सु थानन ॥
निगम न हरि उर धरी। भ्रम्म तट काय प्रमानन ॥
वंछहि सु चतुर नर नाग सुर। दुति दरसन परसन [1]विहर ॥
[2]ढिल्लीवनाथ सो गंग दिषि। अस सम उज्जल बसु अपर ॥छं०॥३१९॥

साटक ॥ ब्रह्मा कष्य कमंडलं कलिकले, कांताहरे कंकवी ॥
तं तुष्टा त्रयलोक संपद पदं, तंत्राय सहसंनवी ॥
अघ काष्ठं ज्वलने हुतासन हवी, अध विष्णु आगामिनी ॥
अजाल जग तार पार करनी, दरसाय जाह्नवी ॥ छं० ॥ ३२० ॥

अरिल्ल ॥ ब्रह्म कमंडल तें कल गंगा। दरसन राज भयौ दिवि संगा ॥
तामस राजस धरि उर पारह। [3]सातुक उदक गंग मझझारह ॥
छं० ॥ ३२१ ॥

दूहा ॥ अस्तुति कहि वरदाय बर। पढ़िय कवींद्र विचार ॥
सो गंगा उर जंपई। क्रम उत्तारन पार ॥ छं० ॥ ३२२ ॥

जैचन्द की दासी का जल भरने को आना।

वचनिका ॥ राजा दल पंगुरे की दासी गंगोदक भरन आनि ठाढ़ी भई ॥
चंद कह्यौ राजा इह काम तीरथ मुगति तीरथ इयखेवा मिलत है॥

कवि का दासी पर कटाक्ष करना।

दूहा ॥ जरित रयन घट सुंदरी। पट कूरन तट सेव ॥
मुगति तिथ्थ अरु काम तिथ। मिलहि इयह इय लेव ॥छं०॥३२३॥

काव्य ॥ उभय कनक सिंभं भृंग कंठीव लीला। पुहप पुनर पूजा विप्रवे कामराजं॥
त्रिवलिय गंग धारा मद्धि घंटीव सबदा। मुगति सुमति भौरे नंग रंगं त्रिवेनी॥
छं० ॥ ३२४ ॥

(१) ए. कृ. को.-विवर। (२) ए.-ढिल्लीच।
(३) ए.-सादुक।

दूहा ॥ रहसि केलि गंगह उदक। सम नरिंद किय केलि ॥
चिरन चिभंगी छंद पढ़ि। चंद सु पिंगल मेलि ॥ छं० ॥ ३२५ ॥

गंगाजी की स्तुति।

चिभंगी ॥ हरि हरि गंगे तरल तरंगे अघ छित भंगे छित चंगे।
हर सिर परसंगे जटनि विलंगे विहरति दंगे जल जंगे ॥
गुन गंध्रव छंदे जै जै बंदे छित अघ कंदे मुष चंदे।
मति उच गति मंदे दरसत नंदे पढ़ि वर छंदे गत दंदे ॥
छं० ॥ ३२६ ॥
वपु अपु विलसंदे जम भृत जंदे सुर धुनि नंदे कह गंदे।
.... । .... ॥
षिति मति उर मालं सुगति विसालं विर धुत कालं मद कालं।
हिम रिति प्रतिपालं सुर तट तालं हर छर नालं विधिबालं ॥
छं० ॥ ३२७ ॥
दरसन रस राजं सुमरित साजं जय जुग काजं भय भाजं ॥
अंमर छर करिजं चामर वरिजं वर बहु पाजं सुर साजं ॥
(१)अंमर तह मंजरि निय तन जंजरि वर वर रंजरि चष षंजरि ॥
करुना रस मंजरि जनम पुनंगिरि हसि हसि संकरि सामंकरि ॥
छं० ॥ ३२८ ॥
कलिमल हरि मंजन भव भत भंजन जन हित संजन अरि गंजन॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ३२९ ॥

दूहा ॥ हरि जस जिम उज्जल सजल। तरल तरंगति अंग ॥
पाप विडारन अंग तें। भ्रंम तरन्नि विहंग ॥ छं० ॥ ३३० ॥

राजा का गंगा स्नान करना।

बचनिका ॥ राजा षीरोदक पहिर स्नान कऱ्यौ।
तब चंद बहुरि और अस्तुति करत है ॥

कवि का पुनः गंगा जी की स्तुति करना।

(१) ए.-अमरत।

भुअंगी ॥ तिके दिष्षियै गंग चिहु पास बालं । तहां उप्पमा चंद जंपै विसालं
अरै कामनाथं दया गंग आई । मनों हार धारी रती तत्त छाई ॥
छं० ॥ ३३१ ॥

भरै घट्ट भारं घटं नीरभाई । तहा चंद बंदी सु ओपम्म पाई ॥
ग्रसे चंद कुंभं करं इंद दंदं । मनों विद्य पारीर भेंटै फुनिंदं ॥
छं० ॥ ३३२ ॥

करै बाल अस्नान सोभै प्रकारं । तहां चिंतियं चंद ओपंमभारं ॥
चमक्कंत लक्कं सु कप्पोल सोहै । मंनों उट्ठितम चंद कै पास रोहै ॥
छं० ॥ ३३३ ॥

झलक्कं कनक्कं कलस्संत नीरं । मनों मज्ज सथ्थै सुपंतीज सीरं ॥
दिष्यं गंग तट्टं कहै कव्वि कथ्थं । किधों [1]सुगति तिथ्थं किधों काम तिथ्थं॥
छं० ॥ ३३४ ॥

कविचन्द का उस दासी का रूपलावण्य वर्णन करना ।

चंद्रायन ॥ दिष्यौ नगर सुहावो कवियन इह कहै ।
चष चंचल तन सुद्ध जु सिद्धति मन रहै ॥
कंचन कलस झकोरति गंगह जल भरै ।
सु कविचंद वरदाय सु ओपम तहँ करै ॥ छं० ॥ ३३५ ॥

चपतिष्षी वरबाल बाल सति सहम वर ।
आप मनोरथ करै कवींद्रति मंडिनर ॥
सहज तमारि स फुल्लि अलिन ग्रीवाति मन ।
मधुसहज्ज वरषंत विहंगन सूर नन ॥ छं० ॥ ३३६ ॥

संक्षेप नख सिख वर्णन ।

कवित्त ॥ राह चंद इकलास । पास कोवंड कुरंगा ॥
कीर विंबफल जुगल । उभय भूतेस अनंगा ॥
मग्गराज गजराज । राज पिष्षिय एकंतं ॥
पुच्छि तांम कविराज । कहा इह अचरिज बत्तं ॥

(१) ए. कृ. को. सुगति ।

बरदाइ ज्वाब दीनौं बहुरि। निरषि तट गंग दासि तन ॥
थांनक प्रताप जयचंद के। बैरभाव छंडिय' सु इन ॥ छं० ॥ ३३७ ॥

दासी के जल भरने का भाव वर्णन।

दूहा ॥ द्रिग चंचल चंचल तरुनि। चितवत चित्त हरंति ॥
कंचन कलस झकोरि कैं। सुंदरि नीर भरंति ॥ छं० ॥ ३३८ ॥

जल भरती हुई दासी का नख सिख वर्णन।

लघुनराज ॥ भरंति नीर सुंदरी। सु पांनि पत्त अंगुरी ॥
कनक्क बंक जे जुरी। तिलग्गि कढ्ढि जेहरी ॥ छं० ॥ ३३९ ॥
सुभाव सोभ पिंडुरी। जु मेन चित्तही भरी ॥
सकोल लोल जंघया। सुनील कच्छ रंभया ॥ छं० ॥ ३४० ॥
कटिंत सोभ संसुरी। बनी जु बांन केसरी ॥
अनंग छब्बि छत्तियां। कहतं चंद बत्तियां[२] ॥ छं० ३४१ ॥
दुरांइ कुच्च उभ्भरे। मनो अनंग ही भरे ॥
रुलंत हार सोहए। विचित्र चित्त मोहए ॥ छं० ॥ ३४२ ॥
उठंत हथ्थ अंचले। रुलंत मुत्ति सज्जले ॥
कपोल लोल उज्जले। लहंत मोल सिंघले ॥ छं० ॥ ३४३ ॥
अरक्क अद्ध रत्तए। सुक्रील कीर वत्तए ॥
सुहंत दंत आलिमी। कहंत बीय दालिमी ॥ छं० ॥ ३४४ ॥
गहंग कंठ नासिका। विनाग राग सासिका ॥
जुभाय मुत्ति सोभए। दुभाय गंज लोभए ॥ छं० ३४५ ॥
दुराय कोय लोचने। प्रतष्य काम मोचने ॥
अवद्ध ओट भौंह ए। चलंत मौंह सोहए ॥ छं० ॥ ३४६ ॥
लिलाट राज आड़ ए। सरद्द चंद लाजए ॥
.... ॥ छं० ॥ ३४७ ॥

(१) ए. कृ. को.-मंडिय। (२) ए. कृ. को.-रत्तियां।

पृथ्वीराज का कहना कि क्या इस दासी को केश हैं ही नहीं।

दूहा ॥ हसि प्रथिराज नरिंद कहि। कवि चुक्की अंदेस ॥
पंग दास आचिज्ज इह। बाल बरनि बिन केस ॥ छं० ॥ ३४८ ॥

कवि का दासी के केशों की उपमा वर्णन करना।

ढिल्ली सुह अलि की लता। श्रवन सुनहु चहुआन ॥
जनु भुजंग संमुष चढ़ै। कंच न षंभ प्रमान ॥ छं० ॥ ३४९ ॥

कवि का कहना कि यह सुंदरी नागरी नहीं वरन पनिहारिन है।

[1] रहि रहि चंद म गव्व करि। करहित कवित विचारि ॥
जे तुम नयर सुंदरि कही। सह दिष्षिय पनिहारि ॥ छं० ॥ ३५० ॥
गाथा ॥ जे जंपी कविराजं। साजं सुष्षाय कित्तियं बलयं ॥
तिरए छित्ति समस्तं। जानिज्जे भूलयो कव्वी ॥ छं० ३५१ ॥

कन्नौज नगर की गृह महिलाओं की सुकोमलता और मर्य्यादा का वर्णन।

दूहा ॥ जाह्नवी तट दिषि द्रम। रूपरासि ते दासि ॥
नगर सु नागर नर घरनि। रहहिं अवास अवास ॥ छं० ॥ ३५२ ॥
ते दरसन दिनयर दुलह। निय मंडन भरतार ॥
सुह कारन विह निरमई। दुह कत्तरि करतार ॥ छं० ॥ ३५३ ॥
पाव न धरनि परट्टियै। उंच थांन जे बाल ॥
कै रवि देषत सतषननि। कै मुष कंत विसाल ॥ छं० ॥ ३५४ ॥
कुवलय रवि लज्जा रहसि[2]। रहि भगि अंग सरन्न ॥
सरस वुद्धि हंनन कियौ। दुल्लह तरुन तरुन्न ॥ छं० ॥ ३५५ ॥

उनके पतियों की प्रशंसा।

गाथा ॥ दुल्लह तरुनिति मुष्षं। घन दीहंति हंस सेवायं ॥

(१) ए. कृ. को.-रहहि चन्द मम गर्व करि। (२) ए. कृ. को.-विहसि।

आनिज्जै मन[1] अप्पं। [2]प्रीतमयं ताप अधिकायं ॥ छं० ॥ ३५६ ॥

कन्नौज नगर की महिलाओं का सिख नख शृंगार वर्णन।

दूहा ॥ पुनर मंडि जनमेज जगि। पित अरि कुल दह अग्गि ॥
भग्गि शेषकुल शेष रहि। रहि त्रिय पीठनि लग्गि ॥छं०॥३५७॥

भुजंगी ॥ पुनर्जन्म जेते रहे जांनि जग्गे। सु ये सेस सेसा तिके पिट्ठ लग्गे॥
मनं मग्ग[3] मोहन्न मोती न बानी। मनों धार आहार कै दूध तांनी॥
छं० ॥ ३५८ ॥

तिलक्कं मगं देषि जगजोति जग्गी। मनों रोहिनी रूप उर इंद लग्गी॥
हथ्थं अब्बरेषं भुवं देषि जग्यौ। मनों कांम चापं करं उद्धि लग्यौ॥
छं० ॥ ३५९ ॥

[4]प्रगट्टे नयंनं विचिं ऐन दीसं। मनों जोति सारंग निर्वात रीसं॥
तेज चाटंक ते श्रोन डोलं। मनों अर्क राका उदै रूत्त लोलं॥
छं० ॥ ३६० ॥

कही चंद कव्वी उपम्मा प्रमानं। मनों चंद रथभंग द्वै भान जानं॥
उरज्जं जंभीरं भई मंभ्भ भालं[5]। उवं दिध्यदर्शी अरूढील बोलं॥
छं० ॥ ३६१ ॥

अधर आरत्त तारत्त सांई। मनों चंद बिय बिंब अरुने बनाई॥
कहीं ओपमा दंत मोतीन कंती। मनों बीज माला जुगं सोभ पंती॥
छं० ॥ ३६२ ॥

कपोलं कलागी कली दीव सोहं। अलक्कं अरोहं प्रवाहंत मोहं॥
सितं स्वाति बुंदं जिते[6] हार भारं। उभै ईस सीसं मनो गंग धारं॥
छं० ॥ ३६३ ॥

करं कोक नद्दंति कंचू ममुभ्भं। मनो तिथ्यराया चिवल्ली अलुझ्झं॥
तिनं ओपमा पांनि आनंन[7] लभ्भं। लाजि कुल केलि दृग्गि मभ्झ गभ्भं॥
छं० ॥ ३६४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-नन। (२) ए. कृ. को.-प्रीतम पंत अप्प अधिकाय।
* यह दोहा मो.-प्रति में नहीं है। (३) ए. कृ. को.-मगं। (४) मो.-प्रगुर।
(५) मो. जालं। (६) ए. कृ. को.-जिसे। (७) ए.-आनंत।

निर्तवं उतंगं जुरे बे गयंदं। तिनं मझ्झ रिपुछीन रघ्यौ मयंदं॥
कटी कांम मापी सुकामी करालं। मनों काम की जोति बद्धी सरालं॥
छं०॥ ३६५॥

जघं ब्रन्न सोवन्न भोहन्न[1] थंभं। मनों सीत उन्नेव रितु दोषरंभं॥
नरंगी निरंगी सुपिंडी छछोटी। मनों कनक कुंदीरु कुंकु अलोटी॥
छं०॥ ३६६॥

किधौं केसरं रंग हेमं झकोरं। किधौं बढ्ढियं बांम मनमथ्थ जोरं॥
सदं रोह आरोह मंजीर वादे। मदं छिद्द, तेजं परंकार बादे॥
छं०॥ ३६७॥

पगं एड़िअं डंबरं श्रोन बानी। मनो कच्छ चीनीन में रत्त पांनी॥
नषं निम्मलं द्रप्पनं भाव दीसं। समीपं सुपीयं कियं मांन रीसं॥
छं०॥ ३६८॥

रगं अम्मरं[2] रत्त नीलंत पीतं। मनौं पावसं धनुक सुरपत्ति कीतं॥
सुकीबं सुजीवं जियं स्वामि आनं। रवी पंग दरसं अरंब्यंद मानं॥
छं०॥ ३६९॥

दासी का घूंघट उघर जाना और उसका लज्जित होकर भागना।

कुंडलिया॥ दरस चियन ढिल्ली न्रपति। सोवन घट वर हथ्थ॥
वर घुंघट छुटि पट्ट गौ। सटपट परि मनमथ्थ॥
सटपट परि मनमथ्थ। [3]भेद वच कुच तट अंदं॥
उघ्ट कंप जल द्रगन। लग्गि जंभायत भेदं॥
सिथल सु गति लजि भगति। गलत पुंडरि तन सरसी॥
निकट [4]निजल घट तजै। मुहर मुहरं पति दरसी॥छं०॥३७०॥

दासी के मुखारविंद की शोभा वर्णन।

गाथा॥ कमोदं वर विगासं। सरसीरुह सरसियं[5] तेजं॥
चक्कति चक्क एकं। अरकं रकइ प्रथ्थ संजोगं॥ छं०॥ ३७१॥

(१) ए. कृ. को. सोहन्न। (२) मो.-अंतर। (३) ए. कृ. को. भेद तट कुच वच्छेदं।
(४) मो.-निज्जल। (५) ए. कृ. को.-ससीयं।

रोरंत कच किलास । चंद मुखौ दरसि मरसिय प्रतिय ॥
मवसं प्रांन वेसासी । दोहं मेकं सयं एक ॥ छं० ॥ ३७२ ॥
कुमुदं कुच प्रगासी । हार वीचं तनं तयं अंबं ॥
अभिअर तरंग ओपं । रोमं राजीव सेवालं ॥ छं० ॥ ३७३ ॥
पावस धनुक सुकंती । अंबर नीलाइ पीतमं बाले ॥
जानिज्जै परमासं । स्यांम घन मझि तड़ितायं ॥ छं० ॥ ३७४ ॥

गंगा स्नान और पूजनादि करके राजा का चार कोस पश्चिम को चल कर डेरा डालना।

दूहा ॥ प्रथम स्नान गंगा निरषि । पुर रट्टौर निवास ॥
फिरि पच्छिम दिसि उत्तरै । जोजन एक सुपास ॥ छं० ॥ ३७५ ॥

चौपाई ॥ जोजन एक गयौ चहुआनं । सोम सुभ्र तिथि षष्टी जानं[1] ॥
अंतरि पट्ट सुनंत नरिंदं । भर विंटे जनु पारस चंदं ॥
छं० ॥ ३७६ ॥

कवित्त ॥ मो पट्टन तजि न्टपति । चल्यौ कनवज्ज राज बल ॥
जाय [2]संपनौ राव । गंग सुरसर सुरंग जल ॥
करि मिलान परमोन । थान आश्रम्म सु उज्जल ॥
दीप जाप मन करै । भ्रंम भंजै सु अभ्रम्म दल ॥
चहुआन दान षोड़स करिय । तिहि जय जय सुरलोक हुआ ॥
दिन पतत निसा बंधय सयन । रस षिल्लिय प्रथिराज जिय ॥
छं० ॥ ३७७ ॥

दूसरे दिन एक पहर रात्रि से तैय्यारी होना।

दूहा ॥ निसि नंषी चिंतान भर । भयग प्रात तम भग्गि ॥
तरुन अरुन प्रगटिय किरनि । वर प्रयान न्टप जग्गि ॥ छं० ॥ ३७८ ॥
निसि चियाम बित्तिय सु जब । उच्छ सुपिन दा प्रान ॥
प्रात तेज उद्दित भयौ । चढ़ि चल्ल्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ ३७९ ॥

(१) ए. कृ. को. थानं । (२) ए. कृ. को.-मपन्नो ।

राजा पृथ्वीराज का सुख से जागना और मंत्री का उपस्थित होकर प्रार्थना करना।

कवित्त ॥ जग्गि सु न्रप चहुआन। थान सामंत सूर फिरि ॥
चहूं राज कर जोरि। मंत कीनो सुमंत करि ॥
दुहदू दिप्पि कनवज्ज। जहां बसि थान सुरत्तं ॥
दई विधिना त्रिम्मयौ। काल ग्रह आनि सु पत्तं ॥
मुष कालव्याल उंदर परै। ग्रास मुष्प मंषी जियन ॥
तुम सत्त ग्रहौ बंधौति षग। मंत अप्प देषौ बयन ॥ छं० ॥ ३८० ॥

व्यूह बद्ध होकर पृथ्वीराज का कूच करना।

राज अग्ग गोयंद। बीर आहुट्ठ नरेसर ॥
दाहिम्मौ नरसिंघ। चंदपुंडीर सूर सर ॥
सोलंकी सारंग। राव कूरंभ पजूनं ॥
लोहा लंगरिराव। षग्ग मग्गह दह गूनं ॥
लष्पन बघेल गुज्जर कनक। बारहसिंघ सु अग्ग चलि ॥
बिय सेन सब्ब साईं सु पुछि। षग्ग मग्ग जिन बल अकल ॥ छं० ॥ ३८१ ॥
दूहा ॥ इह समग्ग सब सेन चलि। दिसि कनवज्ज नरिंद ॥
प्रथीराज ढिग राजई। मधि कविता [1]वरचंद ॥ छं० ॥ ३८२ ॥

सबका मिलकर कन्ह से पट्टी खोलने को कहना और कन्ह का आखों पर से पट्टी उतारना।

एक दिसा उत्तरि न्रपति। [2]आरन छिनक सपन्न ॥
मतो करन साईं सु भृत। पुच्छहिं आय सु कन्ह ॥ छं० ॥ ३८३ ॥
कवित्त ॥ सुनि कन्हा चहुआन। ग्रेह कैमास न मंची ॥
तंतसार बिन तुंब। जंच वाजै छिन [3]जंची ॥
चंद दंद उप्पाय। गंज विष [4]अग्गि लगाई ॥
सुभर भ्रम्म रजपूत। पत्ति रष्षै पति पाई ॥

---

(१) ए. कृ. को. कविचन्द। (२) ए. कृ. को.-अरांन।
(३) मो. मंत्री। (४) ए. कृ. को.-आंग।

दरबार पंग दैवान भर। कल अलह सौ उललै ॥
पुच्छौ सु इच्छ बल मंत बर। दल भंजै पुज्जै दलै ॥ छं० ॥ ३८४ ॥

सुनि कन्हा चहुआन। कन्ह विद्यौ जु कन्ह जुगि ॥
कन्ह अनौ कुव्वर। मेछ मोरन मुट्ठि षगि ॥
सामध्रम्म अगि प्रान। नीति रापन राजंनिय ॥
तिहि कारन तुअ अंषि। निठ्ठि पाटी जुग जानिय ॥
आषिज्ज लोह कनवज्ज बर। पूछि न दिषि तन तन नयन ॥
प्रथिराज काज तौ सुद्धरौ। छोरि पट्ट सज्जौ सयन ॥छं०॥३८५॥

तत्पश्चात् आगे चलना और प्रभात समय कन्नौज में जा पहुंचना।

दूहा ॥ कूच करिग भावी अवन। बर बर चलि सहरत्त ॥
प्रात भयौ कनवज्ज फिरि। सुनि निसान धुनि पत्त ॥छं०॥३८६॥

कन्ह मंत मित्तेञ बर। बर पुच्छन हग सब्ब ॥
बर भावी गति चिंतकिय। नयन सु बरजौ तब्ब ॥ छं० ॥ ३८७ ॥

देवी के मंदिर की शोभा और देवी की स्तुति।

भुजंगी ॥ [1]जहां दिष्षियै जासु संदेह सेहं। उअं अर्कसा कोटि संपन्न देहं॥
बने मंडपं जासु सोभन्न गेहं। तिनं मुत्तियं छच दीसै न छेहं ॥
छं० ॥ ३८८ ॥

रुधिं सित्त माहीष बहु मध्य रत्ती। तिनं प्रात पूजंत त्रनेम अत्ती॥
भुजं डंड दुंदेस देसं प्रकारं। थमै देवता इंद्र लभ्भै न पारं ॥
छं० ॥ ३८९ ॥

बजै दुंदभी देव देवाल निक्तं। बरं उट्ठि संगीत गानं पवित्तं ॥
बजै मह झंझै समं जोग भिद्दं। निरत्तं न पायं तिनं कव्विचंदं॥
छं० ॥ ३९० ॥

(१) ए. कृ. को.-तहा।

सुष पंड भारथ्थ विय वैर साजी। सुषं देषि चहुआन किलकारि गाजी॥
प्रभा भान तेजं विराजै अकारी। मनों अग्नि ज्वाला जलं में उजारी॥
छं० ॥ ३९१ ॥

[1]नमो तूंअ तातं नमो मात माई। तुअं सक्ति रूपं जगत्तं बताई॥
तुअं थावरं जंगमं थान थानं। तुअं सत्त पाताल सरतं सतानं॥
छं० ॥ ३९२ ।

तुअं मारुतं पानियं अग्गि मट्टी। तुअं पंचभूतं स्वयं देह यट्टी॥
सुअं स्वस्ति चंदं अनंदं अनंदी। भई मोह माया जपै आप बंदी॥
छं० ॥ ३९३ ॥

तवै वैन आकास मद्धि भयौ ताजं। तुमं होइ जैपत्त प्रथिराज राजं॥
तवं दच्छिनं अंग करि नमसकारं। धुअं मध्यता नैर कीजै विचारं॥
छं० ॥ ३९४ ॥

सरस्वती रूप की स्तुति।

साटक ॥ वीना धारन अग्र अग्रति दिवं, देवं तमं भूतलं ॥
तूं वाले जल जी जगंत कलया, जोगिंद माया दुतिं ॥
त्वं सारं संसार पार करनी, तोयं तुअं सारसं ॥
दंदीनं दारिद्र दैत्य दलनी, मातं त्वया द्रुग्गया ॥ छं० ॥ ३९५ ॥

कवि का देवी से प्रार्थना करना कि पृथ्वीराज की सहायता करना।

दूहा ॥ [2]कै मातुल कै प्रक्रति तू। कै पुरिषत्व प्रमान ॥
तुं सब छचिन मंझ है। तू रष्षै चहुआन ॥ छं० ॥ ३९६ ॥

गाथा ॥ लज्जा रूप सुदेवी। छवी छवीतेज [3]मुर्गति का गनया ॥
किय कमलं सु जेयं। बंधि पानि उच्चरै बलयं ॥ छं० ॥ ३९७ ॥
तूं धारन संसारं। चंदं चंद कित्तियौ सुनियं ॥
ज्यौं पंडव मंझ प्रगट्टी। अब हुज्जे राज मझझाइं ॥छं०॥३९८॥

(१) ए. कृ. को.-नमो तू अतातं।
(२) ए. कृ. को. "कै मातुल परकृति गति"। (३) ए. कृ. को. मंगीत।

चौपाई ॥ इच्छा नाम छचि जौ लेई। सार धार डुसिन बल कोई ॥
चो अग्गा छल दाषें वीर। जौ गुन होइ [1]जु मध्यसरीर ॥
छं० ॥ ३९९ ॥

कवि का कहना कि नगर को दहनी प्रादिक्षणा देकर चलना चाहिए।

दूहा ॥ किय विचार नृप नगर कौ। सह सामंत समेव ॥
चंद बुझिक्क तब मन कियौ। चल्यौ सु [2]दष्यन देव ॥छं०॥४००॥
देत प्रद्ष्यिन नगर कौं। होत तहां बहु बार ॥
राज देष पच्छै करै। एह सकल विचार ॥ छं० ॥ ४०१ ॥
हर सिद्धी परनाम करि। राषि समंत सु साज ॥
कनवज दिष्यन राज ग्रह। चल्यौ चंद बर राज ॥ छं० ॥ ४०२ ॥

पृथ्वीराज के नगर द्वार पर पहुंचते ही भांति भांति के अशकुन होना।

भुजंगी ॥ वजै पंग नीसान प्रातं प्रमानं। धरी अंक भोमं चली थान थानं ॥
कहै चंद कव्वी उपम्मा सु पत्तं। गजै मेघ मानो नछत्रं सहित्तं॥
छं० ॥ ४०३ ॥
धुनं संभरी क्रम्म साधंत भीतं। ग्रहैं साध ध्रम्मं सहै साधु नीतं॥
सधें मग्ग हेतं ग्रहं ध्रम्म जीयं। [3]निहं दोस मंदेह छत्रं [4]पतीयं॥
छं० ॥ ४०४ ॥
सोई ध्रंम कन्हं चितंतं प्रमानं। दिषी लज्जि मन्नं कन्नं जोति मानं॥
धरै सामध्रमं जिनं धूम्र लीनं। जिनं जित्तियं जस्स देहं न कीनं ॥
छं० ॥ ४०५ ॥
सगुन्नं प्रथीराज दीसै नरिंदं। धुरं पैसते भोम पहु पंग इंदं ॥
बुलै देवि वामं घटं वाल मध्यै। बुलै वायसं वाम चढ़ि अस्ति रथ्यैं॥
छं० ॥ ४०६ ॥

(१) मो.-मु। (२) ए. कृ. को. दिष्यन।
(३) ए. कृ. को.-तिहं। (४) ए. कृ. को.-पयाहिं।

दिषी राज दिट्ठं गलंती ज ईसं। लरै वाम नंदी अनंतं सुरीसं॥
दिसा दच्छिनी लोह भट्ठी सु जागी। तहां चक्कितं चित्त कविचंद लागी॥
छं०॥ ४०७॥

कवित्त॥ असुभ सगुन मंगल न। चित्त चहुआन विचारी॥
मग्ग अग्ग मंजार। वाम दष्यिन निक्कारी॥
वर उचिट्ठ पावक्क। विहन तिन मझ्झ चमंकै॥
मेघ वृट्ठि आकाल। मध्य धुमंरिय गहक्कै॥
आरिट्ठ भाव कविचंद कहि। तब चिंत्यौ न्रिमान बसि॥
भावी विजत्ति भंजन गढ़न। सुनि चहुआन नरिंद हसि॥
छं०॥ ४०८॥

दूहा॥ सिंगिनि बंदि विरंम करि। बाग पंग न्रप आइ॥
दिषि अराम सिष ग्रह परसि। रहि सुगंध बरछाइ॥छं०॥४०९॥

कन्नौज नगर का विस्तार और उसके चारों तरफ के बागानों का वर्णन।

भवर टोल झंकार वर। सुमन राइ फल लिद्ध॥
क्रूर दिट्ठ मन रह वढौ। मसि तारक भ्रित रिद्ध॥छं०॥ ४१०॥

पद्धरी॥ वर मग्ग बग्ग चिहु कोद दिष्यि। विस्तार पंच जोजन्न लष्यि॥
कछ मग्ग भोमि चिहुं मग्ग दिस्सि। नारिंग सुमन दारिम विगस्सि
छं०॥ ४११॥

प्रतिव्यंब अंभ झलकंत सरूप। उप्पम तास बरनत अनूप॥
नव विह गत्ति सह जल प्रवेस। मुसकंत भ्रंड दिष्षौ सुदेस॥
छं०॥ ४१२॥

प्रतिव्यंब झलकि चंपक प्रसून। उप्पंम देषि कविचंद दून॥
दीपक्क माल मनमथ्थ कीन। हरभयति दिष्यि इह लोक दीन॥
छं०॥ ४१३॥

हलहलत लता द्रमकंत वाय। मनु बध्धौ सपतसुर भंग पाइ॥
चल्लै सुगंध बर सीत बत्त। जानियै सब्ब हथ्थीन जित्त॥
छं०॥ ४१४॥

भुजंगी ॥ तहां प्रात प्रातं विंबं अंब मौरे। सुरं कंठ कलियंठ रस प्रस्न झोरें॥
फली फूल बेली तहं चढ़ि सोहै। तिनं ओपमा हैन कविचंद मोहै॥
छं० ॥ ४१५ ॥
रवी तेज देषी ससी बाल भागी। मनौं तारिका उड़ि तर सब्ब लागी॥
कहौं जूहि जंभीर गंभीर बासी। तमी तप्पनी सेव सीसंम सासी॥
छं० ॥ ४१६ ॥
ग्रसै मोर मकरंद उडि बाग मेंही। मनौं विरहनी [1]दिग्घ उस्सास लेही॥
कितें एक बीजोर फल [2]भार लुट्टै। [3]मनौं जीवनं पीउ पीयूष फुट्टै॥
छं० ॥ ४१७ ॥
कहूं सेवत्ती फुलै ते प्रकारं। किधौं दिब्बियं प्रगट मकरंद तारं॥
कहूं मोभही यट्ट गुल्लाल फूलं। चषं भोर मकरंद सहफूल भूलं॥
छं० ॥ ४१८ ॥
वरं बोरसरि फूल फूली सुरंगी। छके भोर भौरं मनं छोइ पंगी॥
कहूं कद्दली सेसुरंगं जु पंती। किधौं [4]मंत मध्यं कि बीचैं धमंती॥
छं० ॥ ४१९ ॥
घरी एक चहुआन तिन थान राही। असंसार संसार संसार काही॥
तरं पिंड आकास फुल्लैं निनारै। वरन्न वरन्नं अनेकं सवारे॥
छं० ॥ ४२० ॥
सबैं कब्बिराजं उपम्मा न पग्गी। मनौं नौ ग्रहं वार रस आय मग्गी॥
कवी जे जुवानं मनं ओप जानै। कवी जेम वत्तं रसं सो बषानै॥
छं० ॥ ४२१ ॥
न लालं न [5]पिंगी षजूरं अमग्गी। नरं उंच व्रिषंत सो सीस पग्गी॥
छं० ॥ ४२२ ॥

पृथ्वीराज का नगर में पैठना।

दूहा ॥ बिलम सगुन चल्यौ न्रपति। नैन दरसि सो सथ्थ॥
वर दीसी हट नैर की। मिलन पसारत हथ्थ॥ छं० ॥ ४२३ ॥

(१) ए. कृ. को.-दीरघ, दीर्घ। (२) ए. कृ. को.-प्रात।
(३) ए. कृ. को.-"मनौं जीवनं पीय पी पीउ फुट्टै"। (४) मो.-मनमध्य।
(५) ए. कृ. को.-पीगी।

नगर प्रवेसनि देषि नृप। जूप साल जेठाइ॥
ता ढ्रम्मन रस उप्पज्यौ। कहत चंद बरदाइ॥ छं०॥ ४२४॥

नगर के बाह्यप्रान्त के वासियों का रूपक तदनन्तर नगर का दृश्य वर्णन।

भुजंगी॥ जिते लंगरी रूप दिन के प्रसंगा। तिते दिष्षियै कोटि कोपीन नंगा
जिते जूपकों चोप चोंपें जु आरी। तिते उच्चरें सो आमंन पारी॥
छं०॥ ४२५॥
जिते साधु संमारि षेलंत लष्षे। तिते दिष्षियै भूप दामंत पष्षे॥
जिते छैल संघाट वेस्यानि रत्ते। तिते द्रव्य के हीन हीनंत गत्ते॥
छं०॥ ४२६॥
जिते दासि कै चास लग्गे सु रूपा। मनों मीन चाहंत बग मध्य कूपा॥
किते नाइका दिष्षि नर नैन डुल्लै। रहें सुरह लोकं सुरं दिष्षि भुल्लै॥
छं०॥ ४२७॥
बचं उच्चरै बेंन निसि की उज्जग्गी। मनो कोकिला भाष संगीत लग्गी॥
उड़ै उंच अब्बीर सेज्या समारै। मनों होइ वासंत भूपाल द्वारै॥
छं०॥ ४२८॥
कुसम्मं समं चीर संकीर सोभा। मनो मध्यता काम कद्ली सु ग्रभा॥
रसं राग छत्तीस कंठं करंती। बरं बीन बाजिच हथ्थें धरंती॥
छं०॥ ४२९॥
तिनें देषि असमान रुग्गी उठुक्की। मनो मेनिका नृत्य तें ताल चुक्की॥
बरन्नंत भावं लगें जुग्ग सारे। इसे पट्टनं ग्रेह दिष्षे सवारे॥
छं०॥ ४३०॥

दूहा॥ सो पट्टन रट्ठौर पुर। उज्जल पुण्य विपष्य॥
कोट नगर नायक सघन। धज बंधी तिन लष्य॥ छं०॥ ४३१॥

नाराच॥ सु लाष लाष द्रव्य जासु नित्य एक उट्ठवै।
अनेक राइ जासु भाइ आय आय बिट्ठवै॥
सुगंध तार काल मानसा मृदंग सुभ्भवै।
सु दछिनं समस्त रूप स्याम काम लुभ्भवै॥ छं०॥ ४३२॥

सु छंद चारु धुक्क देस सेस कंठ गावहीं।
उपंग बीन तासु पानि बालते बजावहीं॥
गमन्नि ते अनंग रंग संग ए परस्सए।
सु बीर सा अरद्ध अंग पट्टि पाच नच्चए॥ छं० ॥ ४३३ ॥

सवद्द सुभ्भ उच्चरें सु कित्ति का वषानिए॥
नरिंद इंद इत्त ने सु कोटि इंद जानिए॥ छं० ॥ ४३४ ॥

कन्नौज नगर के पुरजनों का वर्णन।

दूहा ॥ अमंग हट्ट पट्टन नयेर। रत्न मुत्ति मनिहार॥
हाटक पट धन धात सह। तुल्ल तुल्ल दिष्षि सवार॥ छं० ॥ ४३५ ॥

मोतीदाम ॥ अमग्गति हट्टति पट्टन मंझ। मनों द्रग देवल फूलिय संझ॥
जु नष्पहि मोरि तमोरि सु ठार। उलिंघत कीच कि पीक उगार॥
छं० ॥ ४३६ ॥

मिलै पट पट्ट सु वेदल चंप। सु सीत समीर मनो हिम कंप॥
जु वेलि सेवंतिय गुंथहि आइ। दियै द्रब दासि सु लेहि ढहाइ॥
छं० ॥ ४३७ ॥

सुबुद्धि बजावत बीन अलाप। अनेक कथा कथ ग्रंथ कलाप॥
विवेक बजाज सु बेचहि सार। छुअंत नवासर रूझहि तार॥
छं० ॥ ४३८ ॥

ति देषहि नारि सकुंज पटोर। मनो दुज दष्षन लागहि थोर॥
सु मोत्ति जराइ मढ़े बहु भाइ। जु कट्टहि कोरि कहै सुनि गाइ॥
छं० ॥ ४३९ ॥

सु लेतन सुष्ष रहै अपनाइ। जु सेज सुगंध रहे पलटाइ॥
लहंलह तानक तानति बाम। बनी षिय दीसहि कामभिराम॥
छं० ॥ ४४० ॥

जराव कनक्क जरंज कसंत। मनो भयौ बासुर जामिन अंत॥
कसिक्कसि हेम सु काढ़त तार। उगंत कि हंसह क्रम्म प्रकार॥
छं० ॥ ४४१ ॥

करंकर कंकन अंकह जोव। मनों दुजहीन सरद्दहि सोव ॥
जरे जिव प्रान प्रकारति लाल। मनों ससि सम्भझ्झ तार विसाल ॥
छं० ॥ ४४२ ॥

ह्लंत जुधंतत राजनु जोप। मनों घन मद्धि तदिन्तह ओप ॥
जरेजिव नंग सुरंग सुघाटि। ति संदरि सोभ उवावति पाट ॥
छं० ॥ ४४३ ॥

दु अंगुलि जोरि निरष्षहि हीर। मनों फल विंबहि च पहि कीरि॥
नषं नष चाहति मुत्तिय अंस। मनों मष छंडि रह्यौ गहि हंस ॥
॥ छं० ॥ ४४४ ॥

दसों दिसि पूरि हयग्गय भार। सु पुच्छत चंद गयौ दरवार ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ४४५ ॥

कविचन्द का राजा सहित राजद्वार पर पहुंचना ॥

दूहा ॥ हय गय दल संदरि सहर। जौ बरनों बहुबार ॥
इह चरित्र कहं लगि कहूं। चलि पहुपंग दुआर ॥
॥छं० ॥ ४४६ ॥

चलत अग्ग दिष्यौ न्टपति। हरि सिद्धी सु प्रसाद ॥
चंद नम्मि अस्तुति करिय। हरिय अघ्घ अपराध॥ छं०॥४४७॥

कौतूहल दिष्षै सकल। अकल अपूरब बट्ट ॥
पानधार छर छग्गरह। राजग्रही बर भट्ट ॥ छं० ॥ ४४८ ॥

राजद्वार और दरवार का वर्णन।

कवित्त ॥ गज घंटन हय षेह। विविध पसुजन समाज हुव ॥
घन निसान घुम्मरत। प्रबल परिजन समथ्थ नव ॥
विविध बज्ज बज्जत सु। चंद भर भीर उमत्तिय।
इक्क लत्त आवत सु। इक्क नरपत्ति समथ्थिय ॥

(१) ए. कृ. को.-पुंपावहि। (२) ए. कृ. को. जंपहि। (३) ए. कृ. को-गनों।
(४) ए. कृ. को.-छग्गल छलह। (५) मो.-हेष। (६) ए. कृ. को.-रच।

घुंभौय अवनि सुम्भय मइल। जनु डुल्लित उभ्भिय करन ॥
दरबार राज कमधज्ज कौ। जग मंडन मभ्भइ धरनि ॥
छं० ॥ ४४९ ॥

कौतूहल आलम अलाप। दिष्षिय दर चंदह ॥
पंगराइ दरबार। बार आगत जै विंदह ॥
सत जुग्गह बलिराइ। नगर पुर भ्रंम प्रमानं ॥
चितिय जुग्ग रघुनाथ। अवधि पट्टन वर थानं ॥
द्वापरह नाग नागर नगर। जुरा जोध तप्पे सुतप ॥
जै चंद दंद दाह दलन। कलि कमधज कनवज्ज नृप ॥
॥ छं० ॥ ४५० ॥

दिष्षि चंद दरवार। छच धरि फिरिहि विनइमद ॥
भ्रमर गुंज पुंजरत। [1]कत्त क्रमंत दुरद रद ॥
अनुचर अनुसंकरइ। मत्त गम्भित कंठीरव ॥
वासुर संझ विहारि। वारि अचवत अभंग भव ॥
दिष्षियै द्रुगम सुग्गम सुघन। सुगम द्रुगम जयचंद ग्रह ॥
सब जंत तंत जिम मर कटकि। समन दमन बस भूरि बह ।
छं० ॥ ४५१ ॥

कन्नौज राज्य की सेना और यहां की गढ़रक्षा का सैनिक प्रवंध वर्णन।

लष्ष सुभर आवंत। लष्ष दरवार इरज्जै ।
लष्षह गोलंदाज। लष्ष टूक नालि भरिज्जै ॥
लष्ष तानि सिलहाब। गिरद रष्षै दरबारह ॥
पाइक लष्ष प्रचंड। संक मानै नह मारइ ॥
लष असिय सकल सेवा करै। द्वादस स्वरज जोति कल ॥
लष तीन तुरय पष्षर सहित। पवन पाइ ऐराक भल ॥
छं० ॥ ४५२ ॥

(१) ए. कृ. को. मुकत क्रमत दुरहु रद ।

नागाओं की फौज का वर्णन।

गज्जत जलधि प्रमान। संष धुनि बज्जत भारिय॥
मनक्रम चिय बच रहित। सहित सब्बाह सुधारिय॥
रिष सरूप जयचंद। सहस संषहधुनि रष्षन॥
आवध साल प्रलंब। षंभ रुप्पौ श्रुति तिष्षन॥
मन सित्त एक हथ्थिय फटक। दुह हथ्थ प्रेलत बल॥
भुज दंड प्रचंड उचाय कर। धरत जानि मदगल कि मल॥
छं०॥ ४५३॥

नागा लोगों के बल और उनकी बहादुरी का वर्णन।

हथ सित ऊरध षंभ। बान नंषत सत भारिय॥
फोरत लोह प्रचंड। मुट्ठि चौसट्ठि प्रचारिय॥
किनकि संगि नंषंत। धरनि षुंभत तिष्यारिय॥
कितक बथ्थ भरि षभ। कढ्ढि नंषंत उछारिय॥
इम रमत सहस संषह धुनिय। रिषि सरूप प्राक्रम अतुल॥
उच्चऱ्यौ राज भट्टह सरस। [1]इह कौतूहल पिषिय भल॥
॥ छं०॥ ४५४॥

संखधुनी लोगों का स्वरूप और बल वर्णन।

मोरपंष तन वस्च। मोर सिर मुकुट विराजत॥
मोर पंष बल्लभ अनंत। पंषे कर साजत॥
तप सु तेज पिचौय। चष्ष बघ्घह भुज सुंडह॥
पग नेवर झनकार। समर मेरं गिरि मंडह॥
अवतार रूप दरसंत भल। संष बजावत माधरिय॥
लष असी मभभ्भ पौरुष अतुल। धर कंपत पग्गह धरिय॥
॥ छं० ॥ ४५५॥

---

(१) मो.-इक।

पृथ्वीराज का उन्हें देख कर शंकित होना और कवि का कहना कि इन्हें अत्तताई मारेगा।

दूहा ॥ पिष्षि पराक्रम राज इह । विरत भयौ मन मंझ ॥
चंद वरद्दिय उकति करि । सामंत सूर समंझ ॥
॥ छं० ॥ ४५६ ॥

कहिय चंद राजन्न प्रति । कहा सोचि मन मंडि ॥
अततताइय जुध जुरै । जब इन सस्चन षंडि ॥
॥ छं० ॥ ४५७ ॥

भाषनि भाष सु मिलिय दिस । दई सिसिर वनि इंद ॥
नव नव रस अह सघन सष । जोध सुपंग नरिंद ॥ छं० ॥ ४५८ ॥

पद्धरी ॥ संचरिय देस भाषा न भाष । रायान राय साषान साष ॥
नौवत्ति वज्जि भर तीन लाष ।[1] चक्रित सुनाथ हुअ निच विसाष ॥
छं० ॥ ४५९ ॥

सामंतो का कहना कि चलो खुल कर देखें कौन कैसा बली है।

दूहा ॥ निसि नौवति मिलि प्रात मिलि । हय गय देषिय साज ॥
विचरि सुभर करिवर [2]गहिय । किनहि कहिय प्रथिराज ॥
॥ छं० ॥ ४६० ॥

कवि चंद का मना करना।

कहहि चंद दंद न करहु । रे सामंत कुमार ॥
तीन लष्ष निसि दिन रहै । इह जैचंद दुआर ॥
॥ छं० ॥ ४६१ ॥

उसका कहना कि समयोचित कार्य करना बुद्धिमानी है देखो पहिले सब ने ऐसा ही किया है।

(१) ए. कृ. को.-"चक्रित सुनाथ दुज निरषि साथ" (२) मो.-गहिउ।

कवित्त ॥ एक ठौर[1] पृथिराज । रास मंगै इल काजै ॥
समौ ताकि गोविंदि । अग जरासिंध सुभाजै ॥
समौ जानि श्रीराम । बैर पति कासिय मुक्किय ॥
समौ ताकि पंडवन । देह जस बल अप लुक्किय ॥
मतिसिद्ध पुरष तक्कै समौ । मनह मनोरथ चिंति मति ॥
कवि कहत कोंलि लागौ विषम । टारी टरै न पुब्बगति ॥
छं० ॥ ४६२ ॥

राजा का कवि की बात स्वीकार करना ।

दूहा ॥ मांनि राज रिस रीस मन । चिंति उदै प्रथुदुत्ति ॥
मो जागी श्रो तान जल । मन भौ कंद उपत्ति ॥ छं० ॥ ४६३ ॥

कवि का पूछते पूछते द्वारपालों के अफसर हेजम कुमार रघुवंशी के पास जाना ।

मुरिल्ल ॥ पुच्छत चंद गयौ दरव्वारह । जहां हेजम रघुवंस कुमारह ॥
जिहि हरि सिद्धि पास वर पायौ । सु कविचंद दिल्लिय तें आयौ ।
छं० ॥ ४६४ ॥

द्वारपालों का वर्णन ।

कवित्त ॥ करनि कनक मय दंड । परस उद्दंड चंड बल ॥
दिध्घ देह संदर समथ्थ । अति सुमति सु न्त्रिमल ॥
प्रति नर प्रीति प्रसन्न । परम सपत्त सब्ब जग ॥
अवर भूप पिष्षत नयन्न । परसाद लग्गि[1]नग ॥
सुकलम्भ कलपतरु वग्ग जिम । पुन्य पुंज पुज्जिय सुभुअ ॥
प्रति हार राज दरवार महि । दिषि वरदाय ममित्त हुअ ॥
छं० ॥ ४६५ ॥

प्रतिहार का पूछना कि कौन हो? कहां से आए? कहां जाओगे?

(१) ए. कृ. को.-पग ।

मुरिल्ल॥रुकि कविंद हेजम बुल्लिय हसि।कौन थान बर चलिय कौन दिस॥
को न्रप सब देव को नाम। किहि दिसि चिंत करयौ परिनाम॥
छं० ॥ ४६६ ॥

कवि का अपना नाम ग्राम बतलाना ।

ही हेजम रघुवंस कुमार। न्रिप चहुआन प्रथी अवतार॥
फिरि ढिल्ली कविथान नरिंद। मो बर नाम कहै कविचंद॥
छं० ॥ ४६७ ॥

हेजम कुमार का कवि पर कटाक्ष करना ।

द्वारपालवाक्य ।

श्लोक ॥ मंगिवांन विवारता कविन, संधिवान् कि विग्रहात्॥
जुद्धवान पंग रायन्। ना भूतो न भविष्यति॥ छं० ॥ ४६८॥
दूहा ॥ बैरी काटन राज बच। डंड भरन परधान॥
सेवा मानन भेदियन। हिंदू [1]मुसलमान॥ छं० ॥ ४६९ ॥

कवि का उत्तर देना

[2]असतिनि बोलहु हेजमन। ग्रब्ब करहु जिम आलि॥
जु कछु समर चित्तें रनह। इह देषहु तुम कालि॥ छं० ॥ ४७० ॥

हेजम कुमार का कवि को सादर आसन देना ।

आदर करि आसन दियौ। पालक पंग नरिंद॥
छिनक विलंबहु सुहित करि। जब लगि कहौं कविंद॥
॥ छं० ॥ ४७१ ॥

हेजम कुमार का वचन ।

पंग दरस अच्चन मिसह। कै मोकलिग बसीठ॥
कै मिलि षट मंडल न्रपति। राज राज मू दीठ॥ छं० ॥ ४७२ ॥

(१) ए. मुसलमान ।　　(२) मो.-असत बोलहु हजमने ।

कवि का कहना कि कवि लोग वसीठ पन नहीं करते ।

कुंडलिया ॥ सुनि हेजम रघुवंस वर । भट्ट बसीठ न हुंति ॥
पंति पट्टत्त छिनकह मरै । जस मंगन नन षंति ॥
जस मंगन नन षंति । कौन प्रथिराज दान बरि ॥
को दिष्षन राज सू । कहां नलराइ जुधिष्ठिर ॥
मंडली मोहिं जाचन नियम । दरिद्द करिय चहुआन सुनि ॥
पंगुरौ न्रपपति दे षन मनह । रघुवंसी हेजम्म सुनि ॥ छं० ॥ ४७३ ॥

कवित्त ॥ तूं मंगन कविचंद । सथ्य मंगन मन होइय ॥
तौ देषत तिय थान । इंद्र भुल्लिय [1]द्रग जोइय ॥
एह कपट कवि हस्यौ । नयन दिष्षियै निनारै ॥
न्रपन होइ दरबार । भूत भयें छंद विचारै ॥
दरबार कव्वि बिरम्यौ न्रपति । [2]भर संमुह रष्यौ न दर ॥
तुम राज नीत जानहु सकल । हुकम बिना रष्यौ न बर ॥
॥ छं० ॥ ४७४ ॥

दूहा ॥ तहां बिरंम कीनौं सु कवि । सघ सामंत बहोरि ॥
चंद फेरि दष्षिन दिसा । भर उभ्भै बरजोर ॥ छं० ॥ ४७५ ॥

हेजम कुमार का उसे बिठा कर जैचन्द के पास जाकर उसकी इत्तला करना ।

न्रप कवि हेजम मझि दर । रष्षि गयौ न्रप पास ॥
भट्ट संपतौ राज पै । वंने चंद विलास ॥ छं० ॥ ४७६ ॥

आदर करि हेजम [3]कविहिं । गयौ जहां न्रपति नरिंद ॥
दिल्लियपति चहुआन कौ । कह अतीस कविचंद ॥
॥ छं० ॥ ४७७ ॥

सुनत हंत हेजम उठिग । दिषत चंद बरदाइ ॥
न्रप आगे गुदरन गयौ । जहां पंग न्रप आहि ॥ छं० ॥ ४७८ ॥

(१) ए. कृ. को.-जुग । (२) ए. कृ. को.-नर । (३) ए. कृ. को.-सुकवि ।

हेजम गय पहु पंग पैं। स्वामि आय कविचंद ॥
मत जंपी बुल्ल्यौ सुभट। सुनि सुनि सोभ नरिंद ॥
॥ छं० ॥ ४७९ ॥

जो करिजै चिंतक सुनौ। जानत होइ अजान ॥
हरुअप्पन गरुअत करै। सोई न्नपति सयान ॥ छं० ॥ ४८० ॥

हेजम कुमार का जैचन्द को बाकायदे प्रणाम करके कवि के आने का समाचार कहना।

वस्तबंध रूपक ॥ तब सु हेजम तब सुहेजम। जुगम कर जोरि ॥

.... । .... ॥

सीस नयौ [1]दसवार तिहि। मंत छत्रपति मद सुदिट्ठौ ॥
सकल बंध सथ्थह नयन। चकित चित बुलै गरिट्ठौ ॥
तब सु कियौ परनाम तिहि। बर करी राय [3]प्रतिहार ॥
जिहि प्रसन्न सरसति कहै। सुकविचंद दरबार ॥ छं० ॥ ४८१ ॥

दूहा ॥ सीस नायि बुल्लौ वयन। औसर पंग रजेस ॥
कवि जौ जुग्गिनि पुर कहै। संपत्तौ द्वारेस ॥ छं० ॥ ४८२ ॥

कवि की तारीफ।

कवि सरस बानी सरस। कित्ती रूप प्रमान ॥
चंद [4]बत्त हर विदुष जन। गोपंथिती समान ॥ छं० ॥ ४८३ ॥
गुन आगंम समंद जौ। उक्ति तिल हरि तरंग ॥
जपति कवित मज्जाद ज्यौं। रतन वच्च प्रपरंग ॥ छं० ॥ ४८४ ॥
संमिय अगुनि प्रगास ज्यौं। गत्ति जुगत्ति बिचार ॥
सुष्ष नरेस निधान धन। [5]जनु अर्जुन भटवार ॥ छं० ॥ ४८५ ॥
गुन बिद्यौ नष्ष धनी। तीन प्रकारय कित्ति ॥
सरसेसर उतकंठ कर। ग्रह्वह तत कवि दित्त ॥ छं० ॥ ४८६ ॥

(१) कृ. को.-दरवार,दमार (२) ए. कृ. को. नद। (३) मो.-प्रहार।
(४) मो.-बत्तहं। (५) ए. कृ. को. अनु

आडंबर बर भट्ट बहु। भर बर सध्य कविंद ॥
तब रुक्यौ दरबार में। संग रष्षि कबिचंद ॥ छं० ॥ ४८७ ॥

राजा जैचन्द का दसोंधी को कवि की परीक्षा करने की आज्ञा देना।

बयन सुन्यौ रघुवंस कौ। भय सुभ सुभहि नरिंद ॥
तिन दसोंधिय सों कह्यौ। बोलि परष्षहु चंद ॥ छं० ॥ ४८८ ॥
कवियन तन चाह्यौ न्रपति। जो मुष तकौ न जान ॥
जौ लाइक लष्यौ लपन। तौ लाओ इन थान ॥ छं० ॥ ४८९ ॥

* दसोंधी का कवि से मिलकर प्रसन्न होना।

चौपाई ॥ आयस भौगु तियन तन चाह्यौ। तिन परनाम कियौ सिर नायौ ॥
कैधों डिंभ कवी परवानी। सरसें वर उच्चारहु बानी ॥
छं० ॥ ४९० ॥
से चवि आइ चंद पहि ठढ्ढै। मिलतें हेत प्रीति रस बढ्ढै ॥
हुअ आनंद चंद पहि आए। ज्यों सक्कर पय भूपें पाए ॥
॥ छं० ॥ ४९१ ॥

कवि और डिंबियों का भेद।

भुजंगी ॥ कितं दंडिया डंबरी भेष धारी। सु कब्बी कुकब्बी प्रकारं विचारी ॥
सुने भट्ट मेंजे हु च्यार प्रकारी। किधौं ब्रह्म मुनि ब्रत वर ब्रह्म विचारी ॥
किधौं ठग्ग कै ठोठ कै हुनगारी। .... ॥ छं० ॥ ४९२ ॥
कहै राइ पंगु सुनौ कब्बि सब्बी। परष्यौ सु पतं कुपतं गुनब्बी ॥
छं० ॥ ४९३ ॥
किते भट्ट जाने दुरे ते कविंदं। तिनं पास आडंबरं मध्य इंदं।
कला ग्यान अग न्यान विग्यान जानं। अरथ्थं सुरथ्थं कुरथ्थं प्रमानं॥
छं० ॥ ४९४ ॥

* दसोंधी एक जाति होती है जो कि आज कल जसोंधी भी कहलाती है, दरबार के नाजि या कड़खे कहने वाले ओगबर अबतक इस वंश में होते हैं।

कठोरं कुबोलं पंढते तिरष्षं । अदिष्टं अदानं प्रमानी निरष्षं ॥
जिते बाल बानी कवीचंद जानं । तिते पंग दिष्टं अदानं प्रमानं ॥
छं० ॥ ४९५ ॥

अदित्तं सुदित्तं सु वित्तं विचारौ ।रसं नौ छ भाषा स साषा उधारौ॥
परंमान ग्यानौ विग्यनौ विरूरं ।लषौ बुद्धि विद्या तौ आनौ हजूरं॥
छं० ॥ ४९६ ॥

दसोंधियों का कवि के पास आना और कविचन्द का कवित्त पढ़ना ।

चौपाई ॥ ति कवि आय कवि पहि संपत्ते । गुरु व्याकंन कहै मन मत्ते ॥
थकि प्रवाह गंगा सरसत्ती । सुर नर श्रवन मंडि रहै बत्ती ॥
छं० ॥ ४९७ ॥

मुष [1]परसंत परसपर रत्ते । मुन उच्चार कऱ्यौ सरसत्ते ॥
गुन उच्चार चार तन कीनौ । अनु भुष्षै पय सक्कर दीनौ ॥
छं० ॥ ४९८ ॥

सब रूपक कहि कहि कवि जित्ते । नव रस भास सु पुच्छहि तत्ते॥
गजपति गरूअ ग्रंह गुन गंजहु । श्रीधर बरनि पंग मन रंजहु॥
छं० ॥ ४९९ ॥

श्रीवर श्रीकर श्रीपति सुंदर । सुमिरन कियौ तथ्य कविचंदर ॥
बीठल विमल बयन बसुधा बन । द्रुपद पुत्ति चिर चीर बढ़ावन ॥
छं० ॥ ५०० ॥

ग्राह गहत गंधर्व गयंदह । रष्षहु मान सुभान नरिंदह ॥
तुम्म चिंतत सच्च सब मित्तिय । विष दातव्य विषा लझी चिय ॥
छं० ॥ ५०१ ॥

जब अर्जुन कोवंड धरिय कर । तब [2]संघरिय सकल षोहिन भर
जब अर्जुन मन मोह उपायौ । तब भारथ मुष मभझ दिषायौ॥
छं० ॥ ५०२ ॥

(१) ए. कृ. को.-परसंन । (२) ए. संघिय ।

है हरता करता अविनासी। प्रकृति पुरुष भारथ श्री दासी ॥
सा भारति मुष मभ्झ प्रसन्नी। तव न वरस साटक भाष छ भन्नी ॥
छं० ॥ ५०३ ॥

साटक ॥ अंवोरुह मानंद लोइ लरिसी, दारिम्म लो बीयलो ॥
[1]लोयन्ने चल चालु चालुय वरं, विंबाइ कीयौ गहौ ॥
के सीरी कै साइ बैनिय रसौ, चीकीमि की नागवौ ॥
इंदो मध्य सु इंद मानवि [2]हितो, ए रस्स भासा छठौ ॥
छं० ॥ ५०४ ॥

दसोंधी का प्रसन्न होकर कवि को स्वर्ण आसन देना।

चौपाई ॥ कवि पिष्षत कवि को मन रत्तौ। न्याय नयर कवंज संपत्तौ ॥
कवि एकह अंगी कित कीनौ। हेम सिंघासन आसन दीनौ ॥
छं० ॥ ५०५ ॥

दसोंधी का कवि की कुशल और उसके दिल्ली से आने का कारण पूछना।

दूहा ॥ क्यौ मुक्यौ प्रथिराज वर। क्यों ढिल्ली पुर छेह ॥
जंपि कह्यौ कविचंद तत। तुम कुसलत्तन ग्रेह ॥ छं० ॥ ५०६ ॥

कवि का उत्तर देना कि भिन्न भिन्न राज्य दरबारों में विचरना कवियों का काम ही है।

गाथा ॥ दीसै विविह चरियं। जानिज्जै सज्जन दुज्जनं ॥
[3]अप्पानं चक लिज्जै। हिंडिज्जै तेन पुहवीए ॥ छं० ॥ ५०७ ॥

दूहा ॥ जिन मानो चहुआन भौ। सुलाइ जालई भट्ट ॥
देषि ग्रव्व सुरपति गरै। पंग दरसि सो थट्ट ॥ छं० ॥ ५०८ ॥
जगत समुद्दयकार जल। षग्ग सीस चहुआन ॥
दुह अचिज्ज वर भट्ट सुनि। तुछ निड्डर संमान ॥ छं० ॥ ५०९ ॥

(१) ए.-को-लोदन्ने, लोहने। (२) मो. हनौ। (३) ए.-अप्पानं तनक लिज्जै।

दसोंधी का कहना कि यदि तुम बरदाई हो तो यहीं से राजा के दरबार का हाल कहो।

चौपाई ॥ गजपति गरूअ ग्रेह मन रंजहु। किन गुन पंग गाय मन गंजहु॥
जो सरसै बर है तुम रंचौ। [१]तौ अदिष्ट बरनौ कवि संचौ॥
छं० ॥ ५१० ॥

मुरिल्ल ॥ तब सो देषै जान [२]प्रवीनं। भट्ट नयन सोहै रसलीनं॥
दान षग्ग सरबंगै सूरौ। अनीवानि [३]अब्बंगै पूरौ॥छं०॥५११॥

दूहा ॥ दीन वचन लहु करि कहौ। कविन करौ मन मंद॥
जै सरसै बर कछु हुए। तौ बरनौ जयचंद॥ छं० ॥ ५१२ ॥

अरिल्ल ॥ अहो चंद बरदाइ कहावहु। कनवज्जह न्रप देषन आवहु॥
जौ सरसति [४]आनौ बर चाव। तौ अदिष्ट बरनौ नृप भाव॥
छं० ॥ ५१३ ॥

कवि का कहना कि अच्छा सुनों मैं सब हाल आशु छन्द प्रवंध में कहता हूं।

दूहा ॥ जौ बरनौं जैचंद को। तौ सरसें बर मोहि॥
छंद प्रवंध कवित्त अति। कहि समझाउं तोहि॥ छं० ॥ ५१४ ॥

दसोंधी का कहना कि यदि आप अदिष्ट प्रबन्ध कहते हैं तो यह कठिन बात है।

कहहि पंग बुधिजन कवित। सुनहु चंद बरदाइ॥
दिठि दिष्यौ बरनै सकल। अदिठ न बरन्यौ जाइ॥ छं० ॥ ५१५ ॥

कविचन्द का जैचन्द के दरबार का वर्णन करना।

पद्धरी ॥ सभ साज पंग बैठौ नरिंद। गुनगहर सकल साजै सु इंद॥
सिंघासन आसन सुभ्र साज। मानिक्क जटित बहु मोल भाज॥
छं० ॥ ५१६ ॥

(१) मो.-तो अदिष्ट बरनहु नृप संचौ। (२) ए. प्रर्वीनं।
(३) मो.-सरबंगै। (४) ए. कृ. को.-जानू।

बासन्न सेत मधि पीति सोहि । झलंत ताम कविराज मोहि ॥
मंद्यौ किरीट बररूव सीस। उत्तंग मेर हर सिषर दीस ॥
छं० ॥ ५१७ ॥

बैठो सु भूप मुष दिसि कुबेर । रजि रुद्र थान रचि जानि मेर ॥
दाहिनै वांम भर भर बयठ्ठ । सूरत्त दत्त गुन सकल दिठ्ठ ॥
छं० ॥ ५१८ ॥

सिर सेत छच मंद्यौ सु भूप । बहु देस रिद्धि बहु तास रूप ॥
सनमुष्य बैठि बर विप्र भट्ट । इह चव सु विद्य कलताम घट्टि ॥
छं० ॥ ५१९ ॥

तिन पच्छ बैठि गायन सु गेव । किन्नरह कंठ रस सकल भेव ॥
हिमदंड छच किय सेत पान । ठट्टौ सु पिठ्ठ विस भूप जानि ॥
छं० ॥ ५२० ॥

दुहु पिठ्ठ साजि वर चंवर ढार । रजि रूप जानि अश्वनि कुमार॥
ठट्ठौ सु पन्नधर दच्छि थान । प्रतिबिंब रूप दुअ इंद जानि ॥
छं० ॥ ५२१ ॥

बैठे सु पिठ्ठवर पासवान । बनि रूप रेह जित राज जान ॥
रत्तौ सु कीर मुष अग्र आन । भुज्जंत पक्क फल करक पान ॥
छं० ॥ ५२२ ॥

थरि करह बाज ठट्ठौ सनुष्य । देयंत ताम तामो सुरुष्य ॥
इहि विद्धि बयठ्ठौ पंगराज । आसनह जीति जोगिंद साज ॥
छं० ॥ ५२३ ॥

जैचन्द का वर्णन।

साटक ॥ आ सीसं चमरायते सित छतं, धं पिन्न इंदोलिता ॥
बाला अर्क समान तेज तपनं, कोटी तयं मौलिता ॥
सस्त्रे सस्त्र समस्त पिचि दहियं, सिंधुं प्रयाते यलं ॥
कंठे हार रुलंति आनक समं, प्रथिराज हालाहलं ॥
छं० ॥ ५२४ ॥

दरबार में प्रस्तुत एक सुग्गे का वर्णन।

दूहा ॥ नील चंच अरु रत्त तन। कर करकटी भषंत ॥
जोइ जोइ अष्षै राज मुष। सोइ सोइ कीर कहंत ॥छं०॥ ५२५ ॥

कवित्त ॥ नीम चंच तन अरुन। पानि आरोहि राज सुक ॥
रुचि संपार परंम। चरन पिंगल सुभंत जुक ॥
कंठ मुकत गुन रतन। जटित ओपत आभूषन ॥
[1]रूर वारु कर नषनि। दष्षि भष्षित तन पूषन ॥
जिम जिम उचार अष्पत न्नपति। तिम तिम कीर करंत सुर ॥
भूलंत सुनत क्रत बेद बर। रस रसाल बानी सु फुर ॥
छं० ॥ ५२६ ॥

दूहा ॥ सहस छच बज्जन बहल। बहुल बंस विधि नंद ॥
एक सहस संयहधुनी। महल जानि जयचंद ॥ छं० ॥ ५२७ ॥

दसोंधी का कहना कि सब सरदारों के नाम गाम कहो।

दूहा ॥ तब तिन कवियन उच्चरिय। अहो चंद बरदाइ ॥
[2]पृथुक पृथुक नर नाम सभ। बरनिह हमहि सुनाइ ॥
छं० ॥ ५२८ ॥

कवि चन्द का सब दरबारियों का नाम गाम और उनकी बैठक वर्णन करना।

पद्धरी ॥ राजिय सुसभा राजै सपंग। बिहु बांह पंति रंगह सुरंग ॥
सोभत सुरंस सुर समय मार। इमि इतक्रसुर दरबार भार ॥
छं० ॥ ५२९ ॥

दष्षिनिय अंग रयसल्ल कमंध। तिन अंग बीरचंदह सुबंध ॥
जद्दवह भांन जुगराज बीर। कासह नरिंद रविबंस धीर ॥
छं० ॥ ५३० ॥

(१) ए.-रूर चारु कर नषनि, कृ.-रुचिरु रनि पनि, मो. उरट वारु कर नषनि।
(२) ए. कृ. को.-"पृथुक नाम नर नाम सब"।

बरसिंघ राव बघेघल सूर। [1]कठिया राय केहरि करूर॥
परताप बीर तेजंप नाथ। रा राम रेन राहप्प पाथ॥
छं० ॥ ५३१ ॥

केलिया बंध कट्ठी सु आस। करनाट भर काहप्प तास॥
सारंग भट्ट सुग्रीव भाव। मोरी मुवंद परमार राव॥
छं० ॥ ५३२ ॥

बीरंमराव नर पाल बीर। नरसिंघ कन्ह सम भुज गंभीर॥
महदेव समह हरसिंघ बंक। मेहान इंद सद सार कंक॥
छं० ॥ ५३३ ॥

पूरन्नराव चालुक्क देव। गोयंदराव परमार भेव॥
हम्मीर धीर परताप तत्त। परबत पहार पाहार सत्त॥
छं० ॥ ५३४ ॥

सवसाल अवधि पाटन नरिंद। साषुला हीर भुज फर कविंद॥
हनू लंगूर रनबीर बाह। जसवंत उट्ठ द्रुग सबर नाह॥
छं० ॥ ५३५ ॥

बर बीरभद्र बघघेल मेर। नृप क्रष्णराय सहन अरेर॥
श्री मकुंदराइ बीराधिधार। जै सिंघ सूर [2]आकार भार॥
छं० ॥ ५३६ ॥

भुज बाम बंक सेनी सधीर। आघात पात वज्रंग बीर॥
रठवरह सूर रावत्त राज। रनबीर धीर आवद्ध धाज॥
छं० ॥ ५३७ ॥

न्नप चंद्रसेन पांवार राव। न्नप भीमदेव आजान दाव॥
नरसिंघ सूर चालुक्क बीर। वर रुद्रसिंघ कंठी सधीर॥
छं० ॥ ५३८ ॥

श्री रामसेन राजेस राज। सांषुला देव दासह समाज॥
रा रामचंद्र रानिंग राव। हम्मीर सेन चतुरंग चाव॥
छं० ॥ ५३९ ॥

(१) ए. कृ. को.-कठिसा। (२) कृ. को.-आकार, ए.-साकार।

जट्टह सुदेव सारंग सूर। बीरंम सवन घाती समूर॥
जैसिंघ कमध आजानि पांनि। पंमार भीम रण सिंघ थान॥
छं० ॥ ५४०॥

अरजुन्नदेव निमकुल नरेस। आसोक राइ साहन सुरेस॥
चंदेल वीरभद्रह सवीर। सहदेव बंक भुज धज गँभीर॥
छं० ॥ ५४१॥

केहरी ब्रह्म चालुक बीर। हरिचंद तेज चहुआन नीर॥
हरसिंघ राइ रजि पास वान। निसुरत्ति बीर ममरेजषान॥
छं० ॥ ५४२॥

इतमीस मीर बहबल मसंद। [1]आरासषान पीरोज बंद॥
कंमोदषान जहान भार। जुग बलिय अमिय अल्लिय करार॥
छं० ॥ ५४३॥

महमुंद षान केलिय गंभीर। अबदुल्ल रोम राहिम्म मीर॥
सल्लम साहि [2]इसमित्त षान। [3]आरोज साहि असवद्द पान॥
छं० ॥ ५४४॥

ढारंत चँवर जुग पच्छ भूप। हरि बीर रास सम वय सरूप॥
ठट्ठौ सु दषिन कर मंचि राव। यट्टे मुकुंद पहु वाम थाव॥
छं० ॥ ५४५॥

शिव राग होत हरि गुन [4]मिलंत। उर सुनत सत्त पत्तह [5]षिलंत॥
श्रीकंठ सु गुर कवि कमल भट्ट। जुग ओर समुष कमधज्ज पट्ट॥
छं० ॥ ५४६॥

जुग पुरुष आय बिनतिय समान। पट्ठए नाथ तिरहुत्त थाम॥

दसोंधी का दरबार में जाकर कवि की शिफारिस करना।

कवि गमत बहुर फिरि पंग तीर। सुनि गुन गंभीर कमधज्ज बीर॥
छं० ॥ ५४७॥

(१) ए.-आरात। (२) ए. कृ. को.-इसमीर। (३) मो.-आरज्ज।
(४) कृ. ए.-मिलंत। (५) मो.-लिपंत।

कवि कमल विमल गुन अहरेस। अष्यियै अंषि निज वर नरेस ॥
छं० ॥ ५४८ ॥

दूहा ॥ * मंगल बुध गुरु सुक्र सवि। सकल सूर उड़दिट्ठ ॥
आत पत्र धुअ जिम तपै। सुभि जयचंद बयट्ठ ॥ छं० ॥ ५४९ ॥

नव रस सुनि छिठ अदिठरस। भाषा जंपि न्रपाल ॥
सहह पत्त कुपत्त लिषि। गुन दरसी चयकाल ॥ छं० ॥ ५५० ॥

कवि का एक कलश लिए हुई स्त्री को देख कर उसकी छवि वर्णन करना।

आन्यौ वर वरदाइयन। वर संचौ कविचंद ॥
कंद्रप कितो कि और वर। सेत पीठ जैचंद ॥ छं० ॥ ५५१ ॥

चौपाई ॥ दस दिस कवि संमुही उहाई। घट धरि बाल [1]कुरित्तन आई ॥
धरत सुधरि छाइं मुष [2]छाइया तिहि कविराज सु ओपम [2]पाइय ॥
छं० ॥ ५५२ ॥

दूहा ॥ वर उपजै विपरीति गति। रहत सहायक इंद ॥
तत्त विरम्मि निवेस किय। [3]चित्तहि तत्तहि चंद ॥ छं० ॥ ५५३ ॥

कवित्त ॥ तहां सुदिष्षि कविचंद। चंद दह दह संजुत परि ॥
पूरानन आनंद। जुद्ध मकरंद सुद्ध जुरि ॥
म्रगा मीन गुन गनै। गुनह लज्जीत छिपाकर ॥
तहां अपुब उप्पनौ। हीर चक्रवाक प्रभाकर ॥
सज्जीव मदन बेली विहसि। वरकमोद सामोद घटि ॥
संजोग भोग सम जोग गति। रति प्रमान मनमथ अनटि ॥
छं० ॥ ५५४ ॥

*यह दोहा मो. प्रति में इस छन्द पद्धरी के पहिले और दोहा छन्द ५१७ के बाद है।

(१) ए. कृ. को.-कुरित्तिन। (२) ए. कृ. को.-छाई पाई।

(३) ए. कृ. चित्तरि ततरि चंद।

कवि की विद्वत्ता का वर्णन ।

दूहा ॥ भाषा षट नव रस पढ़त । बर पुच्छै कविराज ॥
संप्रति पंग नंरिंद कै । बर दरबार बिराज ॥ छं० ॥ ५५५ ॥
भाव परिछा भाव छह । दस रस दुम्भर भाग ॥
वित्त कवित्त जु छंद लौं । षग सम पिंगल नाग ॥छं०५५६ ॥

कवित्त ॥ भेद भाव गुन कला । सुनत आचिज कविंद घन ॥
नृपति बरन अनदिट्ठ । सभा सद बिवह बचन घन ॥
छंद कवित पारस प्रचार । सुरधार नंदि सुर ॥
रस रसाल बानी [1]पुनंत । गय भज्जि उरह जुर ॥
दीरघ दरस्स कविचंद बर । सुनि नंरिंद कनवज्ज पति ॥
[2]अनि गुनिय कला गुन सब्बवै । सरसें वर धरि सरस मति ॥
छं० ॥ ५५७ ॥

कविचन्द का दरबार में बुलाया जाना ।

दूहा ॥ प्रभु बोलिय कवि मझ्झ ग्रह । दरसि पंग असथान ॥
मनुं भान चरन नव ग्रस परसि । नक बैठो सुरथान ॥
छं० ॥ ५५८ ॥

राजा जैचन्द का ओज साज वर्णन ।

कवित्त ॥ जिम सरद ससि ब्यंब । तिम सु [3]महि छच विरज्जिय ॥
जिम सु भ्रम्म पव्वय । पवित्र [4]छीरनिधि जिम छज्जिय ॥
जग मंडिन जिम मुत्ति । कित्ति तानिय वितान तिम ॥
जिन सु सत्त [5]मय पुंज । सेत सुरतरु फुल्लिय तिम ॥
सित सहस पत्र विगसिय जिमसु । दुरद मत्त अलि सुम्मयौ ॥
अति तुंग सुधा रस राजग्रह । पियत कव्वि द्रग भुल्लयौ ॥
छं० ॥ ५५९ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुनत । (२) ए. कृ.-अति ।
(३) ए. कृ. को.-माछि । (४) ए. कृ. को.-छीर निधि । (५) मो.-गय

हेजम का अलकाव बोलना और कविचन्द का आशीर्वाद देना

दूहा ॥ हक्कार्यौ हेजम्म कवि। निकट बोलि नृप ईस ॥
सरसें बर संभारि करि। कवि दीनी आसीस ॥ छं० ॥ ५६० ॥

कवि का आशीर्वाद देना।

कवित्त ॥ जिम ग्रह पिति ग्रहपंति। जिम सु उड़पति तारायन ॥
मधि नाइक जिम लाल। जिम सु सुरपत नाराइन ॥
जिम विषयन संग मयन। सकल गुण संग सील जिम ॥
वरन मध्य जिम उगति। चित्त इन्द्रिय आलइ तिम ॥
अनि अनि नरेस भर भीर सर। दारिम न्नप मंदिर मरिय ॥
दिख पंग पानि उन्नित करिय। सुकविचन्द आसिष्ष दिय ॥
छं० ॥५६१॥

वचनिका ॥ साहि भार साहि विभ्भार। बलिय साहि कंध कुद्दार ॥
सबर साहि मान मरदान। निबर साहि मान भूमि वरदान ॥
अदतार राइ अंकुस्स सीस। दातार राइ सरसोभ दीस ॥
सुक्ति राइ बाहन बरीस। विजैपाल सूय कनवज्ज ईस ॥

जैचंद की दराबरी बैठक वर्णन।

कवित्त ॥ मंगल बुध गुरू सोम। सुक्र सनि सोभ पास तप ॥
छत तप [1]धुतम नरिंद। पंग सोद्दीज मंडि जप ॥
सकल सूर वर सुभट। सुबर मंडिली विराजै ॥
द्रुग्ग देषि कविचंद। [2]सुभत सुरराज सुभाजै ॥
क्रम बेन सम उच्चर्यौ। विरह तुंग द्रिगपाल तप ॥
क्रम अट्ठ अट्ठ षिटें सु वर। मध्य बीर मंडलिय अप ॥ छं० ॥५६२॥

जैचन्द की सभा की सजावट का वर्णन।

भुजंगी॥ सभा सोभियं बीर विजपाल नंदं। मनों मंडियं थान बिय इंद दंदं ॥
बरं थान थानं दुलीचै विराजै। तिनं देषि रंगं धनंपंति लाजै ॥
छं० ॥ ५६३ ॥

(१) ए. कृ. को.-घुतम। (२) ए. कृ. को.-सुदित सुरनाथ सु भाजै।

गुंथे रत्त पट्टं सुई डोरि हेमं। मनो भूमि रविक्रंन मिल चलहि तेमं॥
जरे रत्त नीलं नगं पट्ट साही। मनो आवरे बंधु धर नील माही॥
छं०॥५६४॥

ढरैं चोर सेतं झपै मोज ताही। तिनंकी उपम्मा कवीचंद भाही॥
मनं आरुही भान लगि लग्गि आजं। डरं जान उग्गै रमै रथ्थ साजं॥
छं० ५६५॥

उठै छत्र पंगं उपम्मा समग्गं। मनो नौग्रहं मान तजि सीस लग्गं॥
कवीचंद राइं बरद्दाय बीरं। कला काम कल कोटि दिष्षी सरीरं॥
छं० ५६६॥

राजा जैचन्द को प्रसन्न देख कर सब दरबारियों का कवि की तारीफ करना।

दूहा॥ पंग पयंप्यौ कवि कमल। अमर सु आदर कीन॥
पुब नरेस परसंन दिट्ठि। सब जंपयौ प्रवीन॥ छं०॥ ५६७॥
चंद अग्ग प्रथिराज बर। हन्नौ फुनि फुनि एष॥
जिम जिम न्रप पुच्छै बिरद। तिम तिम बढ़ै विसेष॥छं०॥५६८॥

पुनः जैचन्द का बल प्रताप और पराक्रम वर्णन

कवित्त॥ कोरि जोर दल प्रबल। अचल चल सुथिर थरथ्थर॥
नाग सु फनि फन सकुचि। कच्छ पुप्परिय षरप्पर॥
चढ़त भान छावंत रेन। [1]गयनेव दसं दिस॥
दीपक ज्यौ बसि बात। आत पचं [2]आधारिस॥
कमधज्जराइ विजपाल सुअ। तो बर भूपति हय किसौ॥
बरदाइ चंद हैदेवि बर। जिसौ होइ अष्षै तिसौ॥ छं०॥५६९॥

इस समय की पूर्व कथा का संक्षेप उपसंहार।

प्रथम परसि संदेह। भयौ आनंद सबै जन॥
अरू गंगा जल न्हाय। पाप परहऱ्यौ ततच्छन॥

(१) ए. कृ. को. गयनेन दसंज्जिय। 　　(२) ए. कृ. को.-आधारिय।

गयौ चंद दीवान। अनी वानी सु फुरंतौ ॥
सुफल हथ्थ सुष विरद। राय भिंध्यौ सु तुरंतौ ॥
श्रुत सुनिय विरद पुच्छिय तुरत। संच पयंपहु भट्ट सुनि ॥
जिम जिम अचार ढिल्लिय न्रपति। तिम तिम जंपहि पुनह पुन ॥
छं० ॥ ५७० ॥

भुजंगी ॥ जहां आसनैं सूर ठट्टै सनाहं। जिनै जीति छितिराइ किय एक राहं॥
धरा भ्रम्म दिगपाल धर धरनि षंडं। धरै छत्र सिर सोभ दुति कनक [1]डंडं॥
छं० ॥ ५७१ ॥

जिनै साजतें सिंधु गाहैं सु पंगा। उनै तिमिर तजि तेज भाजै कुरंगा॥
जिनैं हेम परवत्त सें सब्ब ढाहे। [2]जिनैं एक दिन अट्ठ सुरतान साहे॥
छं० ॥ ५७२ ॥

जसं जंपियं [3]सब्ब सो चंद चंडं। जिनै थप्पियं जाय तिरहूत पिंडं ॥
जिनै [4]दष्षिनी देस अप्पै विचारै। जिनैं उतऱ्यौ सेतबंधं पहारै॥
छं० ॥ ५७३ ॥

जिनैं करन डाहाल दुअ बान बेध्यौ। जिनैं सिद्ध चालुक्क कय बार षेध्यौ॥
तिनं दिव्व जुद्धं भिरै भूमि रुंडं। बरं तोरि तिलंग गोआल कंडं ॥
छं० ॥ ५७४ ॥

जिनै छिंडियौ बंधि इक गुंड जीरा। ग्रहे लिद्ध वैरागरें सब हीरा ॥
जिने गज्जने सूर साहाब साही। तिने मोकल्यौ सेव निस्सूरत्ति भाही॥
छं० ॥ ५७५ ॥

बरं भुल्लि भष्यौ घनं जोव रोरै। तहां रोस कै सोस दरिया हिलोरै॥
जिनैं वंधि षुरसान किय मीर बंदा। इसौ [5]रट्ठवर राय विजपाल नंदा
छं० ॥ ५७६ ॥

जहां बंस छत्तीस आवैं हकारे। परं एक चहुआन षुमान टारै ॥
छं० ॥ ५७७ ॥

(१) ए. कृ. को.-दंड। [२] मो.-जिते। [३] ए. कृ. को.-सच्च।
[४] ए. कृ. को.-दछिन। [५] मो.-रिटवर।

पृथ्वीराज का नाम सुनतेही जैचन्द का जल उठना।

दूहा ॥ सुनत न्रपति रिपु कौ बयन। तन मन नयन सु रत्त ॥
दिय दरिद्र मंगन घरहु। को मेटै विधिपत्त ॥ छं० ॥ ५७८ ॥
रतन बुंद बरषै न्रपति। हय गय हेम सु हद्द ॥
लग्गि न बुंद सु मग्ग तन। सिर पर छत्र दरिद्द ॥ छं० ॥ ५७९ ॥

पुनः जैचन्द की उक्ति कि हे*बरद्द दुबला क्यों है ?।

मुह दरिद्र अरु तुच्छ तन। जंगलराव सु हद्द ॥
बन उजार पसु तन चरन। क्यौं दूबरौ बरद्द ॥ छं० ॥ ५८० ॥

कवि का उत्तर देना कि पृथ्वीराज के शत्रुओं ने सब घास उजार दी इसी से ऐसा हूं।

कवित्त ॥ चढ़ि तुरंग चहुआन। आन फेरीत परब्बर ॥
तास जुद्ध मंडयौ। जास जानयौ सबर बर ॥
केइक तकि गहि पात। केइ गहि डार मूर तरु ॥
केइत दंत तुछ चिन्न। गए दस दिसनि भाजि ¹डर ॥
भुअ लोकत दिन अचिरिज भयौ। मान सबर बर मर्दिया ॥
प्रथिराज षलन षद्धौ जु घर। सु यौं दुब्बरौ बरद्दिया ॥
छं० ॥ ५८१ ॥

पुनः जैचन्द का कहना कि और सब पशु तो और और कारणों से दुबले होते हैं पर बैल को केवल जुतने का दुःख होता है। फिर तूं क्यों दुबला है।

हंस न्याय दुब्बरौ। मुत्ति लब्भै न चुनंतह ॥
सिंघ न्याय दुब्बरौ। करी चंपे न कंठ कह ॥

(१) ए. कृ. को. कर।

* "बरद्द" शब्द के दो अर्थ होते है एक बरदाई दूसरा बैल। अब भी बैसवाड़े में बैल को बरधा, बरध या बधिया इत्यादि कहते हैं।

म्रग्ग न्याय दुब्बरौ। नाद बंधियै सु बंधन॥
छैल छक्क दुब्बरौ। चिया दुब्बरौ मीत मन॥
आसाढ़ गाढ़ बंधन धुरा। एकहि गहि ह हरद्दिया॥
जंगर जुरारि उज्जर पर न। क्यों दुब्बरो बरद्दिया॥ छं०॥ ५८२॥
पुरै न लग्गी आरि। भारि लद्यौ न पिट्ठ पर॥
गज्जवार गंमार। गद्दी गट्ठी न नथ्थ कर॥
भ्रम्यौ न कूप भावरी। कबंहुक सब सेन रत्तौ॥
पंच धार ललकारि। रथ्थ सथ्था नह जुत्तौ॥
आसाढ़ मास बरषा समै। कंध न कहों हरद्दिया॥
कमधज्ज राव इम उच्चरै। सु क्यौं दुब्बरौ बरद्दिया॥ छं०॥५८३॥

पुनः कवि का उपरोक्त युक्ति पर प्रत्युत्तर देना।

फुनि जंपै कविचंद। सुनौ जैचंद राज बर॥
पुरै आर किम सहै। भार किम सहै पिट्ठपर॥
नथ्थ हथ्थ किम सहै। कूप भाँवरि किम मंडै॥
है गै सुर बर सुधर। स्वामि रथ भारथ तंडै॥
बरषा समान चहुआन कै। अरि उर बरह हरद्दिया॥
प्रथिराज षलनि षद्दौ सु षर। सुइम दुब्बरौ बरद्दिया॥ छं०॥५८४
प्रथम नगर नागौर। बंधि साहाब चरिग तिन॥
सोभंत भर भीम। सीम सोधीत सकल बन॥
मेवाती मुगल महीप। सब्ब पचजु षद्दा॥
ठट्ठा कर ढिल्लिया। सरस संमूर न लद्दा॥
सामंत नाथ हथ्थां सु कहि। लरिकैं मान मरद्दिया॥
प्रथिराज षलन षद्दौ सु षर। यौं दुब्बरौ बरद्दिया॥ छं०॥५८५॥

कवि के वचन सुन कर जैचंद का अत्यंत कुपित होना।

सुनत पंग कबि बयन। नयन श्रुत बदन रत्त वर॥
भुवन बंक रद अधर। चंपि उर उससि सास भर॥
कोप कलंमलि तेज। सुनत विक्रम अरि क्रम्मह॥
सगुन विचार कमंध। दिष्षि दिस चंद सु पिम्मह॥

आदर सुभट्ट राजिंद किय। अंग एँडाइ बिसतारि कर ॥
नन मिलत मोहि संभरि धनिय। कहौ बत्त मुष बिरद बर ॥
छं० ॥ ५८६ ॥

कवि का कहना कि धन्य है महाराज आप को!आपने मुझे वरद पद दिया। वरद की महिमा संसार में जाहिर है ।

जिहि बरद चढ़ि कै। गंग सिर धरिय गवरि हर ॥
सहस मुष्प संपेषि। हार किन्नौ भुजंग गर ॥
तिहि भुजंग फन जोर। झोलि रष्यौ वसुमत्तिय ॥
वसुमत्ती उप्परै। मेरगिरि सिंधु सपत्तिय ॥
ब्रहमंड मंड मंडिय सकल। धवल कंध करता पुरस ॥
गरुअत्त बिरद पहुपंग दिय। क्रपा करिय भट्टह सरिस ॥
छं० ॥ ५८७ ॥

जैचन्द का कहना कि मुझे पृथ्वीराज किस तरह मिले सो बतलाओ ।

दूहा ॥ आदर किय न्रप तास कौं। कह्यौ चंद कवि आउ ॥
[1]मिले मोहि ढिल्लिय धनौ। सु वत कहिग स मझाउ ॥ छं० ॥५८८॥

राजा जैचन्द का कहना कि पृथ्वीराज और हम सगे हैं और तुम जानते हो कि सब राजा मेरी सेवा करते हैं ।

उनि मातुल मुहि तात कहि। नित नित प्रेम वढंत ॥
जिम जिम सेव स अहरिय। तिम तिम दान चढंत ॥ छं० ॥ ५८९॥
सोमेसं पानिग्ग्रहन। अब ढिल्ली पुर कौन ॥
हम गुरजन सब बत्त करि। बहु धन संग सु लीन ॥ छं० ॥ ५९० ॥
कै कमान सद्धो सु इह। सुन्यौ न विजय नरिंद ॥
सब सेवहि पहु हमहि न्रप। सो तुम सुनि कविचंद ॥छं०॥५९१॥

[१ मो.-मिले न मुहि ।

कविचन्द का कहना कि हां जानता हूं जब आप दक्षिण देश को दिग्विजय करने गए थे तब पृथ्वीराज ने आपके राज्य की रक्षा की थी।

पद्धरी ॥ अवसर पसाउ सुनि पंगराव। तुअ तात मात द्रिगविजय चाव ॥
तुम दिवस लग्गि दच्छिनह देस। तव लग्ग मेछ [1]इच्छह प्रवेस ॥
छं० ॥ ५९२ ॥

सामंत नाथ तपि तोन बंधि। संहऱ्यौ साहि सब सेन संधि ॥
दामिन्न रूप छत्तौ कुलाह। सामंत सूर दुहु बिधि दुबाह ॥
छं० ॥ ५९३ ॥

अन पुच्छि करै ग्रिह राज काज। कुल छच पंड चहुआन लाज ॥
[2]सिंगिनि समथ्थ सर सबद बेध। जिन करहु राव उन मिलन षेध ॥
छं० ॥ ५९४ ॥

हिँदवान जेन लग्गीय धाय। उहि छिच कौन द्रिग विजै राइ ॥
मानिकराव दुअ बंस सुद्ध। रघुवंसराव जिमनि विन दुद्ध ॥
छं० ॥ ५९५ ॥

मुकल्यौ तोहि दिष्पनि बरीति। राज सु जेम मंड्यौ प्रवीति ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ५९६ ॥

जैचन्द का कहना कि यह कबकी बात है आह यह उलहना तो आज मुझे बहुत खटका।

कवित्त ॥ कहै पंग सुनि चंद। येह वितक किम वित्तौ ॥
किम गोरी सुरतान। भार भर थंभर जित्तौ ॥
कौन समै इह बत्त। घत्त षेली किम गोरी ॥
यादिन ही मुहि परम। परी बत्ता सब भोरी ॥
कहि कहि सु चंद मम ढील करि। राज पयंपत पुनह पुन ॥
[3]तब कही चंद वचनह विवर। एह कथ्थ संमूल सुनि ॥ छं० ॥५९७

(१) ए. कृ. को.-हथ्थह। (२) मो.-संगानि। (३) ए. कृ. को. तब कहा चंद वरदाइ ने

कवि का उक्त घटना का सविस्तर वर्णन करना।

संवत तीस चिआर। विजय मंड्यौ सुपंग पह॥
जीति देस सब अवनि। लीन करमध्य हिंदुसह॥
दिसि दच्छिन संपत्त। कोपि गोरी सहाव तव॥
रचिय बुद्धि बर अप्प। बोलि उमराव मीर सब॥
तत्तार षान षुरसान षां। षां रुस्तम [1]तालन गनिय॥
जेहान मीर मारूफ षां। बोलि मंत मंचह मनिय॥ छं०॥ ५९८॥

शहाबुद्दीन का कन्नौज पर चढ़ई करने का मंत्र करना।

गुज्झ महल साहाब। दीन सुरतान सपत्तौ॥
मंडि मंत एकंत। बोलि उमरावन तत्तौ॥
इह काफर बरजोर। जीति अवनीय अप्प किय॥
तेज अनंत मति अनंत। सेन सज्जै भर बंकिय॥
आए सु साज कंगुर करषि। करन सेव को देन कर॥
बर जोर हिंदु सा दीन पहु। घटै न रंचि सु बुद्ध [2]नर॥
छं०॥ ५९९॥

मंत्रियों का कहना कि दल पंगुरा बड़ा जबरदस्त है।

कहिय षान तत्तार। साहि साहाब दीन सुनि॥
विषम जोर बर हिंद। जीति पहुपंग अप्प फुनि॥
मिले सेन सुरतान। [3]मलिक अनेक द्रव्य भर॥
द्रव्य पानि पथ्थार। संकरि सब वस्य अप्प पर॥
गहि कोट सज्जि गज्जन सुबर। आतम चरित [4]अनेक करि॥
आवंत पंग साधर सयन। [5]लरि मनमथ्थ पियान अरि॥
छं०॥ ६००॥

(१) ए. कृ. को.-तालन यह नाम महोबे के चंदेल राजा परिमाल के दरबारी एक मुसलमान सरदार का भी है।

(२) ए. कृ.को. बर। (३) ए. कृ. को. मिलक।

(४) ए. कृ. को.-अनंत। (५) ए. कृ. को.-जीर मनमथ पिय भान लरि।

शाह का कहना कि दिल छोटा न करो दीन की दुहाई बड़ी होती है।

कहै साहि साहाब। अहो तत्तारखान सुनि ॥
खुरासान रुस्तमां। जमन मारुफ खान गुनि ॥
काल जमन जेहान। सुनौ बर बत्त चित्त तुम ॥
मंत मत्त सुद्धरौ। दीन नन हीन करौ क्रम ॥
सजि सेन चढ़ौ कनवज्ज धर। भंजि देस सम पुर सयल ॥
हरि रिद्धि बंधि नर नारि धर। आतस आलिय अप्प बल ॥
छं० ॥ ६०१ ॥

दूहा ॥ सज्जि सेन [1]साइन[2]समुद। गज्जनवै सुरतान ॥
बोलि मीर गंभीर भर। भंजि देस थन थान ॥ छं० ॥ ६०२ ॥

शहाबुद्दीन का हिंदुस्तान पर चढ़ाई करना और कुंदनपुर के पास रयसिंह बघेले का उसे रोकना।

पद्धरी ॥ मिलि सेन साहि आलम असंख। गंभीर मीर दिढ़ तीर नंषि ॥
मेमंति दंति घन बज्जि सार। आगाढ़ स्याम बद्दर सु ढारि ॥
छं० ॥ ६०३ ॥

बर तुरिय तेज अग्गल उभाव। उत्तंग अंग [3]जिम वेग वाव ॥
सजि लष्ष चढ़े गारीस सेन। रज्जु सु बाज बज्जे सु गैन ॥ छं० ६०४ ॥

धज नेज भंड हल्लै अनंत। बहुरंग अंग लभ्भै न अंत ॥
षह पूरि धूरि धुंधुरिग भान। दिसि विदिसि पूरि मंनिय नमान ॥
छं० ॥ ६०५ ॥

गहरह सुमंत सुनियै न कान। संचार बत्त संदरहि थान ॥
संपत्त सेन कनवज्ज देस। भंजिए नयर पुर ग्रभनेस ॥ छं० ६०६ ॥
बंधियहि बांधि गोचीय बाल। धर जारि पारि किज्जै बिहाल ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ६०७ ॥

(१) ए. कृ. को.-साहिन। (२) ए.-समुद्द। (३) ए. कृ. को. ताजि।

कवित्त ॥ कुंदन पुर वघेल । राय रयसिंघ सिंघ रन ॥
आगम साहि सहाब । सेन सज्जिय [1]बीरह तिन ॥
सहस उभै साहन । समुंद दस सहस पयभ्भर ॥
बधि नारि नग ढारि । रख्यौ निज सेन सज्जि बर ॥
आवंत सेन रुक्यौ सकल । भयौ जुद्ध हरि उग्ग मनि ॥
परसै न सुदल रोक्यो सकल । भयो जुद्ध अदभुत्त तिन ॥ छं० ६०८ ।

हिन्दू मुसलमान दोनों सेनाओं का युद्ध वर्णन ।

भुजंगी ॥ चली अग्र चौकी सु साहाब सायं । अगें गज्ज चालीस मत्त महायं ॥
अगें हथ्थनारी उभारी उतंगा । सयं सत्त सासह वादी सु चंगा ॥
छं० ॥ ६०९ ॥

सहस्सं च पंचं गजं बाज पूरं । महाबीर बाजिच बज्जे करूरं ॥
मिली फौज हिंदू तुरक्कीस तेजं । कहै सूर रैसिंघ आप्पं अजेजं ॥
छं० ॥ ६१० ॥

सरं दून छुट्टै सुभारं उभारं । सरा पंजरं पंथज्यों पंड चारं ॥
हकै हक्क वज्जी भरं दून दूनं । चपे सिंघ न्रसिंघ हक्कं रुऊनं ॥
छं० ॥ ६११ ॥

भगी साहि चौकी चंपे सिंघ रायं । परे मीर भीरं सयं तीन घायं ॥
महा आय गज्जे सु मैदान सिंघं । भगे मीर मारूफ करि जेम जंगं ॥
छं० ॥ ६१२ ॥

हके कट्टि तत्तार कत्तार तिप्पं । भली मुच्छ मोहैं भई रत्त अंयं ॥
करै फौज अग्गै चल्यौ गज्जि गोरी । चवै दीन दीनं लखै झल्लि घोरी ॥
छं० ॥ ६१३ ॥

मिलै आवधं मीर हिंदू करारे । धुरं ध्रुव्व तुट्टै उभै सार धारै ॥
झरं आवधं आवधं झाक बज्जै । बजै बीर बाजिच गोगेन गज्जै ॥
छं० ॥ ६१४ ॥

धरा कार [2]लोहं रसं रुद्र मत्तं । उभै हार मन्नै नहीं आय अंतं ॥

(१) ए.-बारह ।　　(२) ए.-मोहं ।

मिली दिठ्ठ तत्तार रैसिंघ दूनं। मिले घाय सायं चुलै षग्ग ऊनं॥
छं० ॥ ६१५ ॥

करै दिठ्ठ तत्तार कम्मान मुठ्ठी। कसे बान गोरी मह्हा दठ्ठ दिठ्ठी॥
लगे जर सींसंग फुट्टे परारं। हँसे ऋार संगी हयौ षान सारं॥
छं० ॥ ६१६ ॥

लगे बाहु ग्रीवा समं घाय सालं। पऱ्यो षान तत्तार बाजी बिहालं॥
हयो सिंघ कालम्म मीरं सनेजं। पऱ्यो राय रनसिंध रन ऋंत सेजं॥
छं० ॥ ६१७ ॥

भगी फौज हिंदू जुधं जीति मीरं। धऱ्यौ षान तत्तार झोगी सु तीरं॥
छं० ॥ ६१८ ॥

मुसलमानी सेना का हिन्दू सेना को परास्त कर देश में लूट मार मचाते हुए आगे बढ़ना।

दूहा ॥ परे हिंदु सय तीन धर। मत्त पंच पर मीर॥
गुर गुस्ताना मंचिया। बजि बाजित्र गुहीर॥ छं० ॥ ६१९ ॥

मंझ ढाल तत्तार षां। धरि आयौ साहाब॥
साज सज्जि चढ्यौ सु फुनि। जनु उलौ [1]दरियाव॥ छं० ॥ ६२० ॥

भंजि रयन पुर लूटि निधि। बजि बाजित्र निहाय॥
अलहन सागर उत्तरिय। बंधि तत्तार सु घाय॥ छं० ॥ ६२१ ॥

नागौर नगर में स्थित पृथ्वीराज का यह समाचार पाकर उसका स्वयं सन्नद्ध होना।

दिसि दिसि धाह जु संचरिय। भगिय प्रजा तजि देस॥
सुनिय बत्त नागौर पहु। चढ़ि प्रथिराज नरेस॥ छं० ॥ ६२२ ॥

---

(१) मो. दधि आव।

पृथ्वीराज का सब सेना में समाचार देकर जंगी तैयारी होने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ सुनिय वत्त प्रथिराज। चल्यौ चहुआन महाभर ॥
बोलि कन्ह चहुआन। राय बरसिंघ सिंघ बर ॥
बोलि चंदपुंडीर। बोलि बघघेल्ल सु लष्षन ॥
लोहानो आजानबाहु। मिलयो सु ततष्छिन ॥
गुज्जरह राम जिन बंध मम। चालुक बीझ सु भीम भर ॥
हाहुलिराव हम्मीर हर। मिलिय सेन दस सहस सर ॥छं०६२३॥

दूहा ॥ अवर सेन सामंत मिलि। चल्यौ राज प्रथिराज ॥
गाजि गुहिर बाजिच बजि। सज्जि सयन [1]जुध साज ॥ छं०॥६२४॥

कुमक सेना का प्रबंध।

कवित्त ॥ बोलि चंद चंडौस। दीन आयस प्रथिराजहु ॥
तुम षट्टूपुर जाहु। [2]जहां तिथि मंचिय काजह ॥
लै आवहु कैमास। राइ चामंड महाभर ॥
हैवर पष्पर सूर। सज्जि आतुर सु जुम्भ हर ॥
कहियौ सु वत्त साहाब सब। भंजि देस कनवज्ज इन ॥
षिन पंग हिंदु मिरजाद मिटि। आवहु आतुर षेत रिन ॥
छं० ॥ ६२५ ॥

पृथ्वीराज का सारुंडे के मुकाम पर डेरा डालना जहां से शाही सेना केवल २८ कोस की दूरी पर थी।

दूहा ॥ पठय चंद षट्टूपुरह। चल्यौ राज चहुआन ॥
आतुर बहिय अवधि न्त्रप। सारुंडै सुसथान ॥ छं० ॥ ६२६ ॥
जाइ चंद षट्टूपुरह। कहिय षबर कैमास ॥
चल्यौ सु अप्पन सुनत हीं। आनि संपतौ पास ॥ छं० ॥ ६२७ ॥

(१) ए.-सुध। (२) ए. कृ. को.-जहा थिति मांची कैमासह।

मारुंडै चहुआन पह । संपत्तौ बरबीर ॥
सुनिय बत्त [1]सुरतान की । जोजन मित्तह [2]तीर॥ छं० ॥ ६२८ ॥

पृथ्वीराज की सेना का ओज वर्णन ।

भुजंगी ॥ स्वयं चढ्ढियं सेन प्रथिराज राजं । बजे बीर बाजित्र [3]आयाम गाजं॥
धुअं सीस सामंत सूरं सुधारे । भरं बंधियं राग रज्जे करारे ॥
छं० ॥ ६२९ ॥
तुरी मह उत्तंग षुंदै धरन्नी । मनो छुट्टियं मेघ सेना सुरन्नी ॥
पुरं जाइ संपत्त मो संकराई । सबें उत्तरे बाग मध्ये सु भाई ॥
छं० ॥ ६३० ॥

चंद पुंडीर का कहना कि रात को छापा मारा जाय ।

दूहा ॥ चवै चंड पुंडीर तब । अहो राज चहुआन ॥
निसा जुद्ध सज्जिय समय । भंजिय सेन परान ॥ छं० ॥ ६३१ ॥

पृथ्वीराज का सात घड़ी दिन रहते से धावा करके आधी रात के समय शाही पड़ाव पर छापा जा मारना ।

कवित्त ॥ मानि मंत चहुआन । मंत पुंडीर चंद कहि ॥
घटिय सत्त दिन सेष । राज सज्जिय सु सेन सह ॥
चढ्यौ राज प्रथिराज । नद्द नीसान बीर सुर ॥
कीन दान तं हान । सूर सामंत सब्ब भर ॥
सन्नाह सब्ब सेना धरिय । निसा अद्ध पत्ते सु पुर ॥
हल्लाल हल्लि सय सत्ति दुति । चढ़ि चौकी गोरी गहर ॥छं०॥६३२॥
दूहा ॥ चौकी चढ़ि पुरसान षां । सहस सत्ति हय रज्जि ॥
उभय सत्त गज मद गहर । गुरु सनाह हय रज्जि ॥ छं० ॥ ६३३ ॥
चोटक ॥ चढ़ि सज्जि सबैं प्रथिराज भरं । पर चौकिय [4]चंपिय हक्कि हरं ॥
भर बज्जिय आवध रीठ सुरारि । मनौं बन कूटहि कट्ठि कवारि ॥
छं० ॥ ६३४ ॥

---

(1) ए. कृ. को.- चहुआन । (2) मो.-नीर ।
(3) ए. कृ.-अयाम । (4) मो. चंपय ।

दोनों सेनाओं का घमासान युद्ध होना और मुसलमानी सेना का परास्त होना ।

हहक्किय चंपिय सूर सुधीर । महा भर सामंत विभ्रम बीर ॥
महा बर चंपिय चौकिय काल । ठिले भर भग्गिय मिच्छ बिहाल ॥
छं० ॥ ६३५ ॥

कहंकह सद्द सु मच्चि करार । सुन्यौ सुरतान भजे दल भार ॥
बजे मुष मारि चंपे चहुआन । लरे मझि अप्पह मेछ अपान ॥
छं० ॥ ६३६ ॥

हवक्कहि धक्कहि सेलहि संग ।पटा भर झार विडारिय अंग ॥
वहै किरमाल सुचाल सुभेद । मनों सुभ सार करव्वत छेद ॥
छं० ॥ ६३७ ॥

परे सिर नंषत उट्टक मंध । करे रिनषंड सु धाय विसंद ॥
चलक्कत श्रोन नदी जिम षाल । परे गज बाल भरे रन ताल ॥
छं० ॥ ६३८ ॥

करष्षत केस सु एकहि एक । परे रन रिंघहि तुट्टि सुतेक ॥
तरफफत उट्ठत लग्गत कंठ । सुछुट्टिय घाव करै दिठ मुंठि ॥
छं० ॥ ६३९ ॥

लरक्कर लग्गहि कंठ करीति । मनों मतवार लरै रस मीत ॥
फिनक्कहि बाजिय बीर सुभार । [1]फिरें गज भीर करंत चिक्कार ॥
छं० ॥ ६४० ॥

लष्यौ पतिसाह सु चंद पुंडीर । हयौ हिय सेल भगी भर भीर ॥
भग्यौ रन सेन सहाब सचस्सि । निकस्सिय सक्कि दिसा [2]अवदस्सि ॥
छं० ॥ ६४१ ।

रह्यौ पतिसाह इकल्लो बीर । भयो जिम मीन गयै सर तीर ॥
धरो गर सिंगनि चंद पुंडीर । भयो पतिसाह सु बंधिय बीर ॥
छं० ॥ ६४२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-परै । (२) ए. कृ. को.-अवदिस्स ।

चंद पुंडीर का शाह को पकड़ लेना।

दूहा ॥ भाग्यौ सेन साहाब गिरि। इकल्लौ गहि सार ॥
गह्यौ चंद पुंडीर परि। हय कंधहि दिय डारि ॥ छं० ॥ ६४३ ॥
भगे सेन साहाब रन। उग्गि सूर सुविहान ॥
अठ सहस धर मीर परि। पंच कोस रन थान ॥ छं० ॥ ६४४ ॥

पृथ्वीराज का खेत झरवाना और लौट कर दर पुर में मुकाम करना।

सोधि सु रन प्रथिराज पहु। [१]दरपुर कीन मुकाम ॥
लुट्टि रिद्धि चिय गोस धन। जुरि जस लद्धौ ठाम ॥ छं० ॥ ६४५ ॥

पृथ्वीराज का शाह से आठ हजार घोड़े नजर लेना।

दंड कियौ सुरतान सिर। अट्ठ सहस हय सब्ब ॥
घत्ति सुषासन पट्ट घर। गज्जिय पिथ्थ सु गब्ब ॥ छं० ॥ ६४६ ॥

कविचंद का कहना कि पृथ्वीराज ने इस प्रकार शाह को परास्त कर आप का राज्य बचाया।

इम गज्जनवै गंजि पिथ। जस लिन्नौ षल मारि ॥
सरबर सक संभरि धनी। कोइ न मंडौ रारि ॥ छं० ॥ ६४७ ॥

जैचन्द का कहना कि पृथ्वीराज के पास कितना औसाफ है।

कितक सूर संभरि धनी। कितक देस [२]दल बंधि ॥
कितक हथ्थ रन अग्गरौ। हसि नृप बूझयौ चंद ॥ छं० ॥ ६४८ ॥

कवि का उत्तर देना कि उनकी क्या बात पूछते हैं पृथ्वीराज के औसाफ कम परंतु कार्य्य बड़े हैं।

---

(१) दरपुर (या) हरपुर। (२) ए. कृ. को.-बल।

कवित्त ॥ कितक सूर संभरि नरेस। अंदेस कहत करि ॥
कितक देस बल बंधि। 'राव रावत्त छत्रधर ॥
कितक को स मेंगल मदंध। तोषार भार भर ॥
कितइक गहि करिवार। कलह विहारि बीर झर ॥
कित इक मौज विद्दरन बहत। अति पर आगम जानियै ॥
उग्गौ न अरक तित्तह लगै। तिमिर तितें बल मानियै ॥
छं० ॥ ६४९ ॥

पृथ्वीराज का पराक्रम वर्णन।

दूहा ॥ सूर जिसौ गयनह उवै। द्ल बल मारन आस ॥
जब लग अरि कर उठ्ठवै। तब लग देय पचास ॥ छं० ॥ ६५० ॥

कवित्त ॥ सूर तेज चहुआन। हनत गज कुंभ झार षग ॥
विय विहंड होइ षंड। परत धर रत्त धार जग ॥
दल बल धरै न आस। तेज आजानबाहु बर ॥
सपत नाग सर पार। तार 'कोवंड तजै कर ॥
मत्त दुरह रद सह वर। पारि झारि मथ्थै धरनि ॥
विसर्गा बिकार उप्पारि पटु। मालकार नंषे करनि ॥छं०॥६५१॥

जैचन्द का पृथ्वीराज की उनिहार पूछना।

दूहा ॥ विहसत कवि बुल्ल्यौ बयन। इह लच्छन छिति है न ॥
सुभ सु मूरति लच्छिनह। को दिषवों पहु नेंन ॥ छं० ॥ ६५२ ॥
मुकट बंध सब भूप हैं। सब लच्छिन संजुत्त ॥
कौन बरन उनहार किहि। कहि चहुआन सु उत्त ॥छं०॥६५३॥

कवि चन्द का पृथ्वीराज की आयु बल बुद्धि और शकल सूरत का वर्णन करके सच्चे पृथ्वीराज को उनिहारना।

कवित्त ॥ बत्तीसह लच्छिनह। बरस छत्तीस मास छह ॥
इस दुज्जन संग्रहत। राह जिस चंद सूर ग्रह ॥

(१) ए. कृ. को.-राह। (२) ए. कृ. को -कोदंड।

एक छुटहि मथिदान। एक छुट्टहिति दंड भर॥
एक गहहि गिर कंद। एक अनुसरहि चरन परि॥
चहुआन चतुर चावहिसहि। हिंदवान सब हथ्थ जिहि॥
इम जंपै चंद वरद्दिया। प्रथीराज उनहारि इहि॥ छं०॥६५४॥

इसौ राज प्रथिराज। जिसौ गोकुल महि कन्हह॥
इसौ राज प्रथिराज। जिसौ पथ्थर अहि बन्नह॥
इसौ राज प्रथिराज। जिसौ अहंकारिय रावन॥
इसौ राज प्रथिराज। राम रावन संतावन॥
बरस तीस छह अग्गरौ। लच्छिन सब संजुत्त गनि॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। प्रथीराज उनहारि [1]इनि॥ छं०॥६५५॥

जैचन्द का कुपित होकर कहना कि कवि वृथा बक बक करके क्यों अपनी मृत्यु बुलाता है।

दिष्षि नयन कमधज्ज। नरेस अंद्रेस इह वर॥
दंग दहन औरन जरंत। परचंत अंत पर॥
श्रुत्ति अरुन मुष अरुन। नेन आरत्त पत्त सम॥
पानि मींडि दवि अधर। दंत दब्बंत तेज तम॥
कविचंद बहुत बुल्लहु बयन। छित्ति अछिति षची कवन॥
चल दल समान रसना चपल। विफल बाद मंडो मवन॥छं०॥६५६॥

पृथ्वीराज और जैचंद का दूर से मिलना और दोनों का एक दूसरे को घूरना।

दूहा॥ देषि घवाइत थिर नयन। कारि कनवज्ज नरिंद॥
नयन नयन अंकुरि परिय इक यह दोइ मयंद॥ छं०॥६५७॥

कवित्त॥ दिष्षि नयन रा पंग। दंग चहुआन महा भर॥
अंकुरि नयन विसाल। झाल झारंत रंच उर॥

(१) ए. कृ. को.-इहि।

इक धार कंठीर। [1]पल न आकज्ज करत तमि ॥
वर बारुनी समग्ग। मत्त मातंग रोस [2]अमि ॥
कमधज्जराज फिरि चंद कहु। कहत बत्त संभरधनिय ॥
वर वर कवित्त कवि उच्चरिय। अब सुकित्ति कथ्थौ घनिय ॥
छं० ॥ ६५८ ॥

जैचन्द का चकित चित्त होकर चिन्ताग्रस्त होना और कविचंद से कहना कि पृथ्वीराज मुझ से मिलते क्यों नहीं।

अति गँभीर पहु पंग। मन सु दब्बै द्रिग [3]लज्जइ ॥
कवन काज झग्गरह। पानि ग्राही भट कज्जइ ॥
कित्त काज करि बेंन। बानि बंदन बरदाइय ॥
श्रवन राग हम तुमै। दिट्ठ गोचर तत लाइय ॥
संभरै अंम देषै सुभट। अंत निमत पुज्जै भिलत ॥
सोमेस पुत्त तुम हित्त करि। क्यौं मुझ्झहि नाहीं [4]मिलत ॥
छं० ॥ ६५९ ॥

कवि का कहना कि बात पर बात बढ़ती है।

दूहा ॥ मत मंतौ लहु मंत कहि। नीतें नीति बढंत ॥
जिम जिम सैसव सो दुरै। तिम तिम मदन चढ़ंत ॥ छं० ॥ ६६० ॥

कवि का कहना कि जब अनंगपाल पृथ्वीराज को दिल्ली दान करने लगे तब आपने क्यों दावा न किया।

कवित्त ॥ चहुआना कुल रीति। ध्रम्म जानन सोमी वर ॥
वर सोमेसर सीस। तिलक कढ्ढ्च अनंग करि ॥
अप्प जानि दोहित्त। राज डिल्ली दे हथ्था ॥
प्रजा [5]लोक परधान। राय सह तूंअर कथ्था ॥

(१) मो.-पलन। (२) ए. कृ. को.-जिमि। (३) ए. कृ. को.-कज्जह, लज्जह।
(४) ए. कृ. को.- भिलत। (५) ए. कृ. को.-लोइ।

तिन्नेति बीर तिष्यह गयौ। रहसि फेरि विष षत्त दिय ॥
गे मुरिय न्रपति कविचंद [1]कहि। तब जोगिनि पुर छल न लिय ॥
छं० ॥ ६६१ ॥

जैचन्द का कहना कि अनंगपाल जब शाह की सहायता ले कर आए थे तब शाही सेना को मैं नें ही रोका था।

अनंग पाल चक्कवै। साहि। गोरी पुकारै ॥
हय गय दल चतुरंग। मीर मीरह सब्बारै ॥
मैं बल रुकि साहिब्ब। सेन अग्गा षुरसानी ॥
बर अगस्ति कमधज्ज। समुद सोषै तुरकानी ॥
मी सरन रहन हिंदू तुरक। जग्गि जानि तिहि मंडयौ ॥
विग्गारि जग्ग चहुआन गय। हिंदु जानि मैं छंडयौ ॥छं०॥६६२॥

कवि का कहना कि यदि आपने ऐसा किया तो राजनीति के विरुद्ध किया।

कोन लोइ जग्ग ते। बसत अप्पनी गमावै ॥
कोन जोर रस जोइ। दई जन कोन छलावै ॥
को तात बैर दुज्जनै। दया मानव को मुक्कै ॥
को विषहर बर डसै। दाव को घावह चुक्कै ॥
पहुपंग जानि चहुआन अरि। बसि परि सकै न मुक्कियै ॥
पुज्जै न सुबल कर चढ़त नहिं। घात अप्प अप चुक्कियै ॥
छं० ॥ ६६३ ॥

जैचन्द का पूछना कि इस समय सर्वाङ्ग राजनीति का आचरण करने वाला कौन राजा है।

दूहा ॥ हँसि पुच्छी पहुपंगने । तुम जानौ बहु मित्त ॥
को राजन तकि काल रत। को रत कोन विरत ॥ छं० ॥ ६६४ ॥

(१) मो-मुनि ।

कवि का कहना कि ऐसा नीति निपुण राजा पृथ्वीराज है जिसने अपनी ही रीति नीति से अपना बल प्रताप ऐश्वर्य्य आदि सब बढ़ाया।

पद्धरी ॥ संभरिय पंग आयस प्रमान । बोलै सु छंद पाधरी मान ॥
संभरि सु बीर सुनि तत्त राज । नोतें सु बंध सब चलन साज ॥
छं० ॥ ६६५ ॥

नीतिय सु लहिय लही सु राज । धन ध्रम्म किति तिहिं तेज साज ॥
जीवन सु नीति न्रप जमिन पीन । बइ मरन बीर कुल भ्रंमहीन ॥
छं० ॥ ६६६ ॥

पुनः कवि का कहना कि आपका कलियुग में यज्ञ करना नीति संगत कार्य्य नहीं है।

उच्चरै चंद बरदाइ तब्ब । राज ह्व जग्य को करै अब्ब ॥
बलिराय प्रथम जुग जग्गि मंडि । बर बीर बंधि पाताल छंडि ॥
छं० ॥ ६६७ ॥

कढ्ढन कलंक ससि मंडि जग्ग । गज्जरे कुष्ट बर बीर अंग ॥
न्रघुराइ जग्य मंडे प्रमान । काकुष्ट धरिग तन कोपि ध्यान ॥
छं० ॥ ६६८ ॥

इच्छियै इच्छ गुर मंडि बीर । नव सीय दोष जज्जर सरीर ॥
श्री राम जग्य मंड्यौ बिचारि । कुब्बेर बरषि सोब्रन्न धार ॥
छं० ॥ ६६९ ॥

मह दान कलहि षोडस्स होइ । राजह्व जग्य मंडै न कोइ ॥
सुन्नै सरूप पँगु लभ्भ कीय । देवरह ध्रम्म बड़ बंध चीय ॥
छं० ॥ ६७० ॥

राजह्व जग्य को करन भाय । नन होय पंच कलिजुग्ग राइ ॥
*सतजुग्ग जग्य सुत कवल कीन । हाटक सुमेर दच्छिना दीन ॥
छं० ॥ ६७१ ॥

---

*यहां से मो. प्रति में पाठ नहीं है आवांतर कथा की कल्पना होने से कुछ भाग के क्षेपक होने का भी संदेह है।

संकलित नग्ग तिहि संग च्यार। लूटंत विप्र हरि हथ्थ हारि ॥
ता पच्छ जग्य रचि मरुत रज्ज। दानह सु दीन बेपार दुज्ज ॥
छं० ॥ ६७२ ॥

नंषिय सु मग्ग लगि हेम भार। परि साठि सहस पंकति पहार ॥
गो दान दीन फुनि तिहि चलेह। तारक्क गंग रज बुंद मेह ॥
छं० ॥ ६७३ ॥

आरंभ जग्य फुनि राज ऐल। तसु दान बेद कहि सकि न सैल ॥
नवषंड पूरि बेदी रवंन। डाभाग्र रहि न पाली अवंनि ॥
छं० ॥ ६७४ ॥

करि जग्य सेत कौरव्वि भूप। दस सहस नदी चल्लाय नूप ॥
सक्कि सकिय न झेल आहुत्ति बन्हि। तजि कुंड गहय ब्रह्मा सरन्नि॥
छं० ॥ ६७५ ॥

पथ्थहि चराइ षंडीव अन्न। मिट्टिय अजीर्न घन दिनौ तन्न ॥
बलिराइ जग्य रच्चिय जिवार। उतपन्न भ्रंम वामनति वार ॥
छं० ॥ ६७६ ॥

थपि जग्य जुधिष्टिर राज पंड। पनवार अप्प श्री क्रष्ण मंडि ॥
गुहरिय तन्न इह चंद भट्ट। जैचंद राइ सों विविध थट्ट ॥
छं० ॥ ६७७ ॥

राजा जैचन्द का कवि को उत्तर देना।

सुनि श्रवन जंपि पहुपंग ताम। पर छोड़ करन कहु कौन काम ॥
उनमान अप्प अप्पनि अवन्नि। रष्षहि जु नाम सोइ भूप धन्नि ॥
छं० ॥ ६७८ ॥

* साभ्रम्म छोड़ जोगिन पुरेस। आमंत निरषि संची नरेस ॥
नीतह सु भंग किट्टी सुरज्ज। भनतंत जोति बिच्चरै सज्ज ॥
छं० ॥ ६७९ ॥

तजि नीत सोय अप इह जान। कट्टै जु अन्न दिन घरि प्रमान ॥
जुध सथ्थ साइं मुक्किये अंग। रष्षिये भ्रंम साईं सुरंग ॥
छं० ॥ ६८० ॥

* यहां से मो.-प्रति का पाठ पुनः आरंभ होता है।

बिन राजनीति ग्रह जो अरज्ज। घट घटहि नीर छिन गलति सभज्ञ॥
बिन राजनीति दुति तजिय जोन्ह। सोभन्न प्रतिम मंडियै बैन॥
छं० ॥ ६८१ ॥

इह सुनिय बैन पहुपंग वीर। मुष तत्त मुष्य कलह सरीर॥
न्त्रिप कलह साउ जेही अनाय। कालंत कहिय कल किति गाय॥
छं० ॥ ६८२ ॥

चाटंक निमुष घटि कला जाइ। आनौ सुकाल छल हीन ताय॥
रत गुन अरत्त रत्त न मोह। उप्पम चंद जंपै सद्रोह॥छं०॥६८३॥
रंग रंग गत्त मज्जीठ मन्न। कसुंभ रंग रँग मोह पेन्न॥
बर बिरत श्रोन लच्छिन प्रमत्त। नव नवी वाम इच्छा रमत्त॥
छं० ॥ ६८४ ॥

[1]सातुक्क मकहूं हित बढंत। आतंम मोह माया चढ़ंत॥
दिष्यौ ज स्रग्ग चिल्ला सरंत। संसार कूप रस में परंत॥
छं० ॥ ६८५ ॥

राजा जैचन्द का कहना कि कवि अब तुम मेरे मन की बात बतलाओ।

दूहा॥ सत सुवत्त कबिचंद मुष। तब पुच्छिय इह बत्त॥
हौं पुच्छौ चाहूं सुमति। सो जंपौ कवि तत्त॥ छं० ॥ ६८६ ॥

कवि का कहना कि आप मुझे पान दिया चाहते हैं और वे पान रनिवास से अविवाहिता लौंडियां ला रही हैं।

जे त्रिय पुरिष रस परस बिन। उठिगगाइ सु निसान॥
धवलग्रह संपन्न कहि। भट्टहिं अप्पन पान॥ छं० ॥ ६८७ ॥

राजा का पूछना कि तुमने यह कैसे जाना।

महल अदिट्ठ त्रिय दिट्ठ सुभ्र। क्यों ब्रम्नै बर कब्बि॥
सरसैं बुधि ब्रम्मन कह्यौ। मुष दिष्षे नन रब्बि॥ छं० ॥ ६८८ ॥

(१) ए. कृ. को. सक हितहि बढंत।

कवि का कहना कि अपनी विद्या से।

कछुक सयन नयनह करिय। कछु किय बयन बषान ॥
कछु इक लछिन विचार किय। अति गंभीर सु जानि ॥छं०॥६८९॥

कवि का उन पान लाने वाली लौंडियों का रूप रंग आदि वर्णन करना।

तिन कह अथ्थि सु हथ्थ किय। जे राजन ग्रह अच्छि ॥
ते सुंदरि सब एक सम। चली सुगंधनि कच्छि ॥ छं० ॥ ६९० ॥

षोड़स बरस समुद्ध ग्रिह। ले सब दासि सु जानि ॥
मनों सभा सुरलोक की। चलि अच्छरिय समान ॥ छं० ॥६९१॥

उक्त लौंडियों की शिख नख शोभा वर्णन।

अर्धनराज ॥ विहिंग भंग जो पुरं। चलंत सोभ नूपुरं ॥
अनेक भंति सादुरं। अषाढ़ सोर दादुरं ॥ छं० ॥ ६९२ ॥
सुधा समान सथ्थही। सुगंध हथ्थ हथ्थही ॥
चरन रत्त सोभई। उपम्म कब्बि लोभई ॥ छं० ॥ ६९३ ॥
बरन्न रत्त श्रीर जे। कसीस कासमीर जे ॥
चरन्न एड़ि रत्त ए। उपम्म कब्बि पत्त ए ॥ छं० ॥ ६९४ ॥
सु वंक चंद अंकनं। सु राइ तेज संकनं ॥
सुसंक जीवनं टरै। सुनें सरूप में करै ॥ छं० ॥ ६९५ ॥
नषादि आदि उप्पनं। सु काम केलि द्रप्पनं ॥
चरन्न हंस सद्दही। उपम्म कब्बि बद्दही ॥ छं० ॥ ६९६ ॥
सुनंत छोड़ छंडयौ। चरन्न सेव मंडयौ ॥
सु पिंडि बाल सोभई। सु रंग रंग लोभई ॥ छं० ॥ ६९७ ॥
सुरंग कुंकुमं भरी। षराद काम उत्तरी ॥
सुरंग जंघ ताल से। कि काम षंभ आलसे ॥ छं० ॥ ६९८ ॥
नितंब तंब स्याम के। मनो सयन्न काम के ॥
लवन्न भ्रंग गुंजही। सुगंध गंध पुंजही ॥ छं० ॥ ६९९ ॥

दिपंत डोर कंकनं । कटिं प्रमान रंकनं ॥
टिकै न दिट्ठ लंकयौ । विलोकि अष्षि अंकयौ ॥ छं० ॥ ७०० ॥
उतंग तुंग तामयौ । कि भम्म लोभ कामयौ ॥
सु रोमराजि दिट्ठयौ । हलंत बेनि पिट्ठयौ ॥ छं० ॥ ७०१ ॥
सु चंपि चंद गाढयौ । विपास काम चाढ़यौ ॥
अुषन्न हीय सोभई । सु सिद्ध मैंन लोभई ॥ छं० ॥ ७०२ ॥
ग्रहक्क रंग चालई । सु लज्जि लंक हालई ॥
उठंत कुच्च कंचुअं । कि तंबु काम रच्चयं ॥ छं० ॥ ७०३ ॥
बजे प्रमान सज्जनं । सुमेर अग्र भंजनं ॥
जु पोत पुंज सोभयौ । सु चित्त काम लोभयौ ॥ छं० ॥ ७०४ ॥
सु जित्ति राह थानयौ । सु चंद बैठि मानयौ ॥
जराइ चौकि कंठयौ । उपम्म कव्वि तंठयौ ॥ छं० ॥ ७०५ ॥
ग्रहं जु इंद आइयं । चरन्न चंद साहियं ॥
वनित्त सब्ब जंपयौ । सुराह थान अप्पयौ ॥ छं० ॥ ७०६ ॥
चिबुक्क चारु सोभयौ । उपम्म कव्वि मोहयौ ॥
सु बाल अंग पत्तयौ । सु कंज मुक्कि जत्तयौ ॥ छं० ॥ ७०७ ॥
सुरत्त अद्ध (१)रत्तयौ । लहै न ओप अंतयौ ॥
ओसाफ, कव्वि सोहयौ । प्रबाल रत्त मोहयौ ॥ छं० ॥ ७०८ ॥
सुधा समान मुष्पही । दसन्न दुत्ति रुष्पही ॥
सु सद्द बद्द पंचमं । कलिन्न कंठतं कमं ॥ छं० ॥ ७०९ ॥
सुनी सु कव्वि राजई । उपम्म कव्वि साजई ॥
ससंक सारगं हरी । प्रगट्ट काम मंजरी ॥ छं० ॥ ७१० ॥
धनुक्क भौंह अंकुरे । मनौं नयन्न बंकुरे ॥
श्रवन्न मुत्ति ताल जे । अलक्क बंक आलुजे ॥ छं० ॥ ७११ ॥
सबद्द सोभ जो षुलै । रहंत लज्जि कोकिलै ॥
अनेक रुव्व जो कहै । तौ जम्म अंत ना लहै ॥ छं० ॥ ७१२ ॥

(१) ए.कृ. को.-जत्तयौ ।

दासी का पानों को लेकर दरबार में आना और पृथ्वीराज को देख कर लज्जा से घूंघट घालना।

कवित्त ॥ आय निकट रापंग। अंग आरब्भ बेद बर ॥
अति सुगंध तंमोर। रंग जुत धरय अुष्ष पर ॥
दिष्षि न्निपति प्रथिराज। दासि आरोहि सीस पट ॥
मनहु काम रति निरषि। सकुचि गुर पंच मड़ि घटु ॥
कमधज्ज राज संकुल सभा। अकुल सुभर दरसंत दिस ॥
उस्ससे अंग उभ्भरि अरषि। परसपर सु अवलोकि [1]सिस ॥
छं० ॥ ७१३ ॥

कवि का इशारा कि यह दासी वही करनाटकी थी।

चौपाई ॥ चहुआनह दासी सिर कंपिय। पुर रठ्ठौर रही दिसि नंपिय ॥
बिगरत केस पुरुष नहिं अंकिय। प्रथीराज देषत सिर ढंकिय ॥
छं० ॥ ७१४ ॥

दासी के शीश ढांकने से सभासदों का संदेह करना कि कवि के साथ में पृथ्वीराज अवश्य है।

अरिल्ल ॥ ढंकित केस लषी भय [2]भूपह। दिन दिन दिस्सि कहां राई मह॥
कविवर सथ्थ प्रथीन्रप आयौ। सो लच्छिन बर दासि बतायौ ॥
छं० ॥ ७१५ ॥

उच्च सरदारों और पंगराज में परस्पर सुगबुग होना।

कवित्त ॥ अप्प अप्प भट अटकि। पटकि पट दासि मंडि सिर ॥
इक चवै क्रत बदन। इक पल मथ्थ जाति थिर ॥
इक कहै प्रथिराज। इक जंपय पवास बर ॥

(१) मो.-रिस। (२) ए. कृ. को.-भूमह।

दिष्षि दरस [1]रयसिंघ । कहत दीवान अज्ज भर ॥
कट्ठिया [2]विकट केहरि कहर । अहर भार अंगय ममह ॥
संग्रहौ आय रिपु दुष्ट ग्रह । समय सङ्ग रा पंग कह ॥छं०॥७१६॥

दूहा ॥ भै चकि भूप अनूप सह । पुरष जु कहि प्रथिराज ॥
सुमति भट्ट [3]सथ्थह अछै । जिहि करंत तिय लाज ॥ छं० ॥ ७१७ ॥

कविचन्द का दासी को इशारे से समझाना ।

अरिल्ल ॥ करि बल कलह स मंची मार्यौ । नहि चहुआन सरंन बिचार्यौ ॥
सेन सुबर कहि कवि समुझाई । अब तूं कलह करन इहां आई ॥
छं० ॥ ७१८ ॥

दासी का पट पटक देना और पंगराज सहित सब सभा का चकित चित्त होना ।

समझि दासि सिर बर तिन ढंक्यौ । कर पल्लव तिन द्रग बर अंक्यौ॥
नव रस सबै सभा कमधज्जी । भैचकि भूप [4]सिंगिनी सज्जी ॥
छं० ॥ ७१९ ॥

उक्त घटना के संघटन काल में समस्त रसों का आभास वर्णन ।

कवित्त ॥ बर अद्भुत कमधज्ज । हास चहुआन उपन्नौ ॥
करुना दिसि संभरी । चंद बर रुद्र दिपन्नौ ॥
बीभछ बीर कुमार । बीर बर सुभट बिराजै ॥
गोष बाल झंषतह । द्रिगन सिंगार सु राजै ॥
संभयौ सन्त रस दिष्षि बर । लोहालंगरि बीर कौ ॥
संगाइ पान पहुपंग बर । भय नव रस नव सौर कौ ॥
छं० ॥ ७२० ॥

दूहा ॥ सिर ढंकति सकुचिय तरुनि । सु विधि चिंति स्वामित्त ॥
बहुरि सु जिम तिम ही कियौ । [5]लवन बिचारिय हित्त ॥छं०॥७२१॥

(१) मो.-रायसिंघ ।   (२) मो.-निकट ।   (३) ए.कृ. को.-अथ्थह ।
(४) ए. कृ को. सिंगनि गुन ।   (५) ए. कृ. को.-नवन ।

एक कहै बैठे सुभट। इनह सथ्थ प्रथिराज॥
ए न्रप जीवन एक है। तिनहि करत चिय लाज॥ छं०॥ ७२२॥

जैचन्द का कवि को पान देकर विदा करना।

अप्पि पान सनमान करि। नहि रघ्यौ कवि गोय॥
जु कछु इच्छ करि मंगिहौ। प्रात समप्पौं सोय॥ छं०॥ ७२३॥

राजा का कोतवाल रावण को आज्ञा देना कि नगर के पश्चिम प्रान्त में कवि का डेरा दिया जाय।

हक्कारयौ रावन न्रपति। के के मुक्कि सुबास॥
पच्छि दिस्सि जैचंद पुर। तिहि रघ्यौति अवास॥ छं०॥ ७२४॥

रावण का कवि को डेरों पर लिवाजाना।

आयस रावन सथ्थ चलि। अयुत एक भट सथ्थ॥
अग्ग राह सो संचरै। मेर उचावहि बथ्थ॥ छं०॥ ७२५॥

कवित्त॥ पच्छिम दिसि पुर चंद। सु कवि मौ न्रपति सपत्तौ॥
रावन सथ्थ समथ्थ। वचन सो कवि रस रत्तौ॥
धवल मझ्झ सपन्न। कलस कुंदनह वज्र दुति॥
जठित थंभ जगमगहि। कनक वासन विचित्र भति॥
प्रज्जंक कनक मनि मुत्ति भति। मानिक मध्य विविद्ध भति॥
आसनह पट्ट बहु मोल विधि। मनु मनि भूमि कि संभ क्रति॥
छं०॥ ७२६॥

दूहा॥ डेरा सु कवि विरंम तुम। करि कवि लयौ चरित्त॥
राजनीति रज गति चरित। चित गनि कहौ (१)सुचित्त॥
छं०॥ ७२७॥

रावण का कवि के डेरों पर भोजन पान रसद आदि का इन्तजाम करके पंगराज के पास आना।

(१) ए. कृ. को. चारित्त।

डेरा कराइ रावन चल्यौ। थान थान तिन ठाहि॥
सुष्य सुषासन आरुहै। तहां पंग न्रप आहि॥ छं० ७२८॥

डेरों पर पहुंच कर पृथ्वीराज का राजसी ठाठ से आसीन होना और सामंतों का उसकी मुसाहबी में प्रस्तुत होना।

कवित्त॥ बोलि लियौ सब सथ्थ। तथ्थ प्रथिराज [२]सुअत्तं॥
सलिता जेम समुद्द। सुद्ध पति मिलन सपत्तं॥
चामर छत्र रषत्त। लियै सामंत सपत्ते॥
रति सुभ्यौ राजान। मद्धि ग्रह पति रवि रत्ते॥
आए सु सुहर सब चंदपुर। देषि अनूपम पंति तथ॥
सामंत नाथ बरदाइ बर। आय सपत्ते सब्ब सथ॥ छं०॥ ७२९॥

सब सामंतों का यथास्थान अपने अपने डेरों पर जमना।

दूहा॥ सथ्थ सपत्तौ तथ्थ सब। ध्रित सामंत रु सूर॥
हय हयसाला बंधि गै। सुभि राजन दर नूर॥ छं०॥ ७३०॥

अरिल्ल॥ मंदिर बंटि दिए सब भूपन। आप रहै निज ग्रेह अनूपन॥
हीर हिरंनन की दुति पंडिय। तापर लाल परग्गहि मंडिय॥
छं०॥ ७३१॥

पृथ्वीराज के डेरों पर निज के पहरुवे बैठना।

दिय डेरा सामंत समानह। फिरि आवास सुवास सवानह॥
दर रष्षे दरबार सुजानह। बिन आयस न्रिप रुक्कि परानह॥
छं०॥ ७३२॥

पंगराज का सभा विसर्जन करके मंत्रियों को बुलाना और कवि के डेरे पर मिजमानी भेजवाना।

दूहा॥ सभा विसरजी पंग पहु। गय मधि साल विचित्र॥
तहां सुषासन इंद्र सम। तिहं सुमंचिय मंच॥ छं०॥ ७३३॥

(२) ए. कृ. को.-सुअप्पं।

कवित्त ॥ तब राजन जैचंद । बोलि सोमित्त प्रधानह ॥
अरु प्रोहित श्रीकंठ । मुकंद परिहार सुजानह ॥
दियौ राइ आएस । जाहु सो कवियन थानह ॥
विविध अन्न व्यंजनह । सरस रसरंग रसानह ॥
तंमोर कुसुम केसरि अगर । कट्ठ कपूर सुगंध सह ॥
आदर अनंत उपचार बर । करि सु प्रसन्नह कविय कह ॥छं०॥७३४॥

सुमंत का कवि के डेरे पर जाना, कवि का सादर मिजवानी स्वीकार करके सबको बिदा करना।

तब आयस जैचंद । मंनि सो मित्त प्रधानह ॥
अरु प्रोहित श्रीकंठ । मुकंद परिहार प्रमानह ॥
बचन बंदि जय जंपि । लिए उपचार सार सब ॥
गये कव्वि सुस्थान । रूके दर सथ्थ सब्ब जब ॥
दर रष्षि कह्यौ दरबार न्रप । भय षवास संबोलि सह ॥
धरि वस्त विबह अग्गै सु कवि । विविध विवरि बर लष्ष लह ॥
छं० ॥ ७३५ ॥

सुमंत का जैचंद के पास आकर कहना कि कवि का सेवक विलक्षण तेजधारी पुरुष है।

चोटक ॥ कवि आदर किन्न सु पंग दियं । किय विद्य सु विप्रह जीति जियं॥
फिरि मंगिय सीष सु पंग रजं । लषि नीति सु किति अनंत सजं॥
छं० ॥ ७३६ ॥
रज मित्ति सु गत्ति अनंत भती । मइनूर अदब्ब न आइ मती ॥
कवि षत्त सरूप सु भूप बरं । तिन तेज अजेज असेस भरं ॥
छं० ॥ ७३७ ॥
चित चक्रित मंत्रि मुकंद गुरं । भए देषि विमन्न ग्रहन्न नरं ॥
गय पंग दरं सुधि पंग लही । चित्रसाल सुधूपह बोलि तही ॥
छं० ॥ ७३८ ॥

सब पुच्छिय कब्बि चरित्त कला। कहि मंचिय ¹मोसहु बार न ला ॥
कहै मंचिय विप्र सु राज सुनै। कवि मंनिय गत्ति न चित्त गुनै
छं० ॥ ७३९ ॥
रज रीति अनूप अदब्ब लही। भ्रित देषि अनूप न जाय कही ॥
भ्रित रूपहि इंद्र समान लजं। बल तेज अजेज सु राज सजं ॥
छं० ॥ ७४० ॥
कवि सथ्थ जु भ्रितह तेज नवं। भर पंग निरष्षिय नैन सवं ॥
... . । .. . . ॥ छं० ॥ ७४१ ॥

जैचंद के चित्त में चिन्ता का उत्पन्न होना।

दूहा ॥ सुनि चित्तह चिंत्यौ न्रपति। कवि यह कह कथ चित्त ॥
गुन गंभीर सु गंठि हिय। गौ दिय सिष्य सु रुत्त ॥ छं० ॥ ७४२ ॥

रानी पंगानी के पास कविचन्द के आने का समाचार पहुंचना।

चौपाई ॥ सुनिय बत्त न्रप पंग सु राजह। आयौ कवि चहुआन सु लाजह ॥
सुनि जुन्हाइय चित्त सु चिंतिय। बोलि सहचरि मंत सुमंतिय ॥
छं० ॥ ७४३ ॥

रानी पंगानी का कवि के पास भोजन भेजना।

गाथा ॥ इह कवि दिल्लियनाथो। मैं सुन्यौ बीर बरदाई ॥
तिहि नव रस भाष छ भनियं। पट्ठाइयं अस्सनं²तथ्थं ॥छं०।७४४॥
तिहि सषि बोलि सुथानं। चिचनि चिच केसरी समुषं ॥
लीला विमल सु बुद्धी। सा बुद्धी लग्गि चरनायं ॥ छं० ॥ ७४५ ॥
दूहा ॥ पंगराइ वर बीर वर। सेंन अप्पि सहलीन ॥
दिसि जुन्हाइ असीस कवि। हुकम कहन न्रप दीन ॥छं०॥७४६॥
पद्धरी ॥ चौबार स्याम वर पंग ग्रेह। ग्रिह मद्धि रतन कै मद्धि केह ॥
षोड़स बरष्ष अप्रपत्त बाल। ³दिष्षियै पंग भामिनि विसाल ॥
छं० ॥ ७४७ ॥

(१) मो.-सा मति। (२) मो.-तथे। (३) ए. कृ को.-दिष्षी स।

दिषि हरन कत्ति ब.्.त्त काम। मनों मीन मीन विश्राम ताम ॥
पद्मिनिय हंस चिचनिय बाल। सोभै सुपंग ग्रिह मुरु विसाल॥
छं० ॥ ७४८ ॥

पद्मिनी कुटिल केसह सुदेस। अस्तनह चक्र वक्रह मुनेस ॥
बरगंध पदम मुर हंस चाल। जन जीभ रत्त म्रिग अंकि साल ॥
छं० ॥ ७४९ ॥

कुलवंत सील अंमृत वचन्न। पद्मिनी [1]हरै पहुपंग मन्न ॥
आसीस भट्ट बोल्यौ प्रकार। चित हरै चंद मुषचंद मार ॥
छं० ॥ ७५० ॥

पंगानी रानी "जुन्हाई" की पूर्व कथा।

कवित्त*॥ सूर किरनि तें प्रगटि। रुचिर कन्यका तपत्या ॥
तरवर तुंग कैलास। साष संग्रहि कर सत्या॥
झूलंती संपेषि। भयौ भुअपत्ति सु आसिक ॥
एक पाइ तय मंडि। धारि द्रग अग्ग सु नासिक ॥
वाचिष्ट रिष्षि सु प्रसन्न होइ। रवि प्रारथ्थि विवाह किय ॥
जैचंद राय बरदाइ कहि। तिहि सम जुन्हाइ लहिय॥ छं० ॥ ७५१ ॥

अरिल्ल ॥ पंग हुकम अरुदान जुन्हाई। भट्ट न्रपति चहुआन सुनाई ॥
रहि सि चौय चित दै बहु बहै। [2]जनों किरन कल पचम चहै ॥
छं० ॥ ७५२ ॥

दासियों की शोभा वर्णन।

मुरिल्ल ॥ सब अंग सु रंगिय दासि घनं। घन हथ्थय पीत पटंबरनं ॥
घनसार सुगंध जु हथ्थ धरै। तिन उप्परि भोरन भोर परै॥
छं० ॥ ७५३ ॥

रानी जुन्हाई के यहां से आई हुई सामग्री का वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-रहै। *यह कवित्त मो.-प्रति में नहीं है और क्षेपक जान पड़ता है।
(२) ए. कृ.-जनों कि हथ्थ कल पत्रम चढ़ै।

कवित्त ॥ सहस एक हेमंग । सहस दोइ पीत पटंबर ॥
सहस अट्ठ नव नालि । केलि [1]कप्पूर सु ठुंमर ॥
म्रिग जु नाभि निक रासि । देस गवरी सा पंगी ॥
मुक्ति गंध काकीन । सेत बंधइ भारंगी ॥
दारिम्म विजोरीं इष्य वर । विमल मद्द मोदक भरन ॥
अरु गंध पंग संभारि करि । जाति जुन्हाई संधि रन ॥ छं० ॥ ७५४ ॥

हनूफाल ॥ मिलि मंजरी गुन बेलि । मदनावली गुनकेलि ॥
मालती अविज सरूप । लीलया कमला अनूप ॥ छं० ॥ ७५५ ॥
मभ्भ हिय सुलष्य सुबुद्धि । लषि नेंन लपन सु बुद्धि ॥
[2]क्रंमारि माला मुष्य । सम हंसगोरिय रुष्य ॥ छं० ॥ ७५६ ॥
वर बीर सषि सम लाज । पुच्छिय सु स्वामिनि काज ॥
कर जोरि आयस मंगि । बहु सषिय बोलिय संग ॥ छं० ॥ ७५७ ॥
जुन्हाइ जंपिय तब्ब । पति दिल्लिय आयौ कब्ब ॥
मिष्टाइ लै [3]तहां तथ्य । [4]सम जाहु सषिसम सथ्य ॥ छं० ॥ ७५८ ॥
मिष्टाइ विवह विचित्र । मिष्टाइ रुप पवित्र ॥
सें तीन बानय पूरि । आच्छादि अवर सनूर ॥ छं० ॥ ७५९ ॥
रस अगर पंच सुअट्ठ । करपूर पूरित जठ्ठ ॥
केसरि सद्रोन सदून । म्रगमद्द थालन रून ॥ छं० ॥ ७६० ॥
तंमोलि चौसठ्ठि पान । द्वै सहस हेम जुतान ॥
हिम हंस एक अनूप । जस जपै चातुर भूप ॥ छं० ॥ ७६१ ॥
मानिक्क जटित अमूल । मनि विचित्र जानि अतूल ॥
मरकंति मनि विन रेह । वर इड्ड मुत्ति जलेह ॥ छं० ॥ ७६२ ॥
मनि जटित विवह विराज । वर बसन धारित भाज ॥
सुभ सुजल मुक्तिय माल । वासंसि सुभ धरि थाल ॥ छं० ॥ ७६३ ॥
वर विचित्र अन्न अनंस । सुभ गत्ति स्वाद सुमंस ॥
मिष्टाइ जाति न संष । बहु रूप राजित अंष ॥ छं० ॥ ७६४ ॥

(१) ए.-ठुंमर । (२) ए. कृ. को. क्रम्यारि ।
(३) ए. कृ. को.- थह । (४) ए. कृ. को.-लै ।

अनि वस्त विवह विभंति। गनि जाति कौंन गिनंत॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७६५ ॥

दूहा॥ सु बन सिंगारिय सह सषिय। विवह वस्त लिय सब्ब॥
सो निज स्वामिनि अंग मुनि। क्रमिय सु अथ्यह कब्ब ॥छं०॥७६६॥

कवि के डेरे पर मिठाई लेजाने वाली दासियों का सिखनख श्रृंगार वर्णन।

लघुनराज॥ रजंत बान सा सषी। द्रगंत बानता तिषी॥
सिंगारि साज सब्बयौ। दिपै छरीब गब्बयौ॥ छं०॥ ७६७॥
सु गोंपि वास रासयं। तमोर भष्षि आसयं॥
बदन्न रूव रज्जयौ। सरद [१]बिंब लज्जयौ॥ छं०॥ ७६८॥
ढुरंत मुत्ति बेनियं। विराजि काम नेनियं॥
सुभाल कोर वासनं। उही सुमुच्छ भासनं॥ छं०॥ ७६९॥
चाटंक सोभि अमरं। तड़ित्त दुत्ति संमरं॥
[२]खंत कट्टि मेघरं। चकोर साव से सुरं॥ छं०॥ ७७०॥
सुरंस हंस हंस यौ। समूह साव रंसयौ॥
सुरं समथ्थ कामिनं। समोहि मुट्ट वामिनं॥ छं०॥ ७७१॥
वरष्ष अट्ट अट्ठयं। सवंक कंपि तट्ठयं॥
रुलंत हीय हारयं। समुट्ठि काम कारयं॥ छं०॥ ७७२॥
विचित्त हंस कामिनी। मयंद मत्त गामिनी॥
सषी सुबीय सष्षयं। क्रमंत अंग पष्षयं॥ छं०॥ ७७३॥
प्रवीन बीन बद्दनं। सुरन्न षड्ड अद्धनं॥ ॥
विचित्त काम जं कला। कटापि चाल अष्षिला॥ छं० ॥७७४॥
विसाल वैन चातुरी। मनो सु मोहिनीं जुरी॥
सु सामं दान भेदयौ। कुसल्ल दंड षेदयौ॥ छं०॥ ७७५॥
कला सु अट्ठ अट्ठयौ। सुभेव भाव गट्ठयौ॥
सभाव चन्न सोभिलं। बदंत काम कोकिलं॥ छं०॥ ७७६॥

(१) मो.-रूप। (२) मो. रचंति।

चलौं सु सब्ब संजुरी । मनो सुइंद अच्छरी ॥
चढ़ी कि डोलियं वरं । सरोहि कै हयं वरं ॥ छं० ॥ ७७७ ॥
सषी सु पंचयं सयं । गमंत सथ्थ सेनयं ॥
लियं सु सब्ब साजयं । सु अथ्थि रिद्धि राजयं ॥ छं० ॥ ७७८ ॥
सपन्न कब्बि थानयं । दरं सु रष्पि मानयं ॥
.... । ... . ॥ छं० ॥ ७७९ ॥

कवित्त ॥ पंकज सुत[1] सोवंत । फेरि करवट्ट प्रजंकह ॥
असुर उपजि अनपार । धरनि कज मंडिय कंकह ॥
संभ समय तव ब्रह्म । देह तजि रंभ उपाइय ॥
रूप अचंभम देषि । रहे दानव ललचाइय ॥
नष सिष मानहु तिहि मम । रचे संप्रतीक सहचरि सकल ॥
कविचंद थान कमधज पठय । कलन सु छल पिथ्थह अकल ॥
छं० ॥ ७८० ॥

उक्त दासी का कवि के डेरे पर आना ।

अरिल्ल ॥ सतु दासी न्रप थान सपत्ती । नूपर सद कवियान प्रपत्ती ॥
चंद चिंत उप्पय बर भारे । जुथ वजे मनमथ्थ नगारे ॥
छं० ॥ ७८१ ॥

दरवान का दासी को कवि के दरबार में लिवा जाना ।

गाथा ॥ सषि दरबार सपन्नी । आदर दीन तथ्थ दरवानं ॥
दर गय अंदर राजं । नइवेदयं तथ्थ सब्बायं ॥ छं० ॥ ८७२ ॥

चौपाई ॥ बोलिय मझ्झ सु कब्विय बालह । तब सिंघासन छंडि भुआलह ॥
आय सषी सब मझ्झ स बुड्डिय । आदर विवह वानि कवि किड्डिय ॥
छं० ॥ ७८३ ॥

दासी का रानी जुन्हाई की तरफ से कवि को पालागी कहना और कवि का आशीर्वाद देना ।

(१) को.-सोवत्त ।

विवह विचित्र धरी मुष अंबह । कही असीस जुन्हाइय कब्बह ॥
तुम त्रिकाल दरसी बुधि पाइय । बहु आदर दिन्नौ जु जुन्हाइय ॥
छं० ॥ ७८४ ॥

तुम बहुआन सु भट्ट समत्तिय । अगम सुगम गत लहौ सु गत्तिय[1] ॥
मंगिय विदा सु कव्वि प्रसन्निय । देषि चरित रजगत्ति सु मन्निय ॥
छं० ॥ ७८५ ॥

दासी का रावर में वापस जाकर रानी से कवि का आशीर्वाद कहना।

गति मति अंतर भेद सु जन्निय । देषि चरित अचिज्ज सु मुन्निय ॥
फिरि आई जु जुन्हाइय थानह । पयलग्गी विधि कही विनानह ॥
छं० ॥ ७८६ ॥

गाथा ॥ कहि आसीस सु कव्वी । सुप्रसन्नौं दिट्ठतो भासं ॥
[2]तो तन चिंता भंगो । कथ्थि आसीस केलि कव्वीसं ॥ छं ॥ ७८७ ॥
रामा रज गति [3]लद्धी । आदर अदब नीति अनभूतं ॥
कवि यह अथ्यह राजं । संपिष्षेय कह कहं नाई ॥ छं० ॥ ७८८ ॥
सुनि सा बत्त जुन्हाई । दिय निज कम्म सब्ब सपिएनं ॥
निज हिय चिंता ठानी । संपन्नौ धवल मभ्झनं ॥ छं० ॥ ७८९ ॥

यहां डेरों पर यथानियम पृथ्वीराज की सभा का सुशोभित होना और राजा का कवि से गंगाजी के विषय में प्रश्न करना।

दूहा ॥ तहां सु सूर सामंत मिलि । मधि [4]नायक कवि चंद ॥
प्रथीराज सिंघासनह । [5]जनु परिपूरन इंद ॥ छं० ॥ ७९० ॥
अहो चंद इह दंद भलि । हंज दरसन किय गंग ॥
मन उछाह पुनि मुझ्झ भयो । कछु बरनन करि रंग ॥
छं० ॥ ७९१ ॥

(१) ए. कृ. को. गत्तिय, मत्तिय।
(२) ए. कृ को-"तो तन चिंतिय भंगो कही असीस केलि कव्वीस"।
(३) मो.-रिद्धी।
(४) ए. कृ. को.-ताकिप। (५) मो. मनों प्रथीपुर इंद।

कविचन्द का गंगाजी की स्तुति पढ़ना ।

कहै कव्वि न्रप राज सुनि । मो मुष रसना एक ॥
इह सु गंग सुर मुनि जिते । [1]लहहि न पार अनेक । छं० ॥ ७९२ ॥

भुजंगी ॥ मुनी साधु जोगी जती आय जेते । गुनी ग्यान ध्यानं प्रमानं न तेते॥
धरा रोम ते व्योम तुम्मे तरंगे । बसी ईस सीसं जटा जूट गंगे ॥
छं० ॥ ७९३ ॥

चतूरान पानं ब्रह्मंडं कमंडं । चयीकाल संभ्या रिषी दोष षंडं ॥
समाधिं धरै कूल साधून साधं । तुही एक तें चंद चकोर राधं ॥
छं० ॥ ७९४ ॥

तुमं सेव भागीरथं जानि कीनी । सबें मेलि आचानि तू संग दीनी॥
हुती स्वर्गवै लोक धारा अपारं । धसी प्रब्बतं पेलि नाना प्रकारं ॥
छं० ॥ ७९५ ॥

प्रवाहं अमानं प्रमानं न जानं । मनो एक मुष्यं मती मूढ़ ग्यानं ॥
कँपै पाप जो भीर पत्तं सु सत्तं । रहै दिष्य संसिष्य तद्धार भत्तं ॥
छं० ॥ ७९६ ॥

तुही सग्गुनं निग्गुनं सुद्धि कासं । तुही सब्ब जीवं सजीवं स सासं॥
तुही राजसं तामसं सातुवंती । तुही आहितं छित्त चितं चरंती ॥
छं० ॥ ७९७ ॥

तुही ज्वाल माला कुलाला कुरष्टी । तुही बारिधारा अधारं अरिष्टी॥
तुही वर्न भेदे विसंताहि साधै । तुही नाद रूपी सजोगी अराधै ॥
छं० ॥ ७९८ ॥

तुंही ते हरी तूं हरी तेन औरै । जिसौ भेद जो कंचनं टूक कोरै ॥
लषै को गती ता मती देव गंगे । रटै कोटि तेतीस तो नाम अंगे॥
छं० ॥ ७९९ ॥

जिसौ वारि गंगा तरंगे प्रकारे । तिसौ तोमने अप्प अप्पं अपारै ॥
करै पाप भारं फना व्याल कंपै । रसन्राजि कै देवि तो नाम जंपै॥
छं० ॥ ८०० ॥

(१) मो.-लहत ।

त्रिभारं करै पाप भारंत दूरं। रची पुन्य कै क्यारवै भ्रम्म रूरं॥
सते साध गहि लोक तें सीस रघ्यौ। तबै बेद भय वेद सब छेद नंष्यौ॥
छं० ॥ ८०१ ॥

अमी आइ अंगाइ त्रिमया न किन्नौ। इंतौ दोष आदिष्ट गारिष्ट भिन्नौ॥
तुंही देषि करि तेज कप्पौ समुद्दं। छल्यौ सब्ब करि देवि छंड्यौ सु चंदं॥
छं० ॥ ८०२ ॥

धरे सहस सत रूप आनूप भारी। कला नेक नेकं अनेकं प्रकारी॥
रमी रंग रंगं तरंगं सरीरं। जिसी भेद पय पान जान्यौ न नीरं॥
छं० ॥ ८०३ ॥

जिसी सिंह अरु मगति भयभीत भारी। जिसी मुत्तिहर मूर तें भाकझारी॥
जिसी अप्प अप्पै अपारं अनंतं। तिसी मोष नर भेद पावै तुरंतं॥
छं० ॥ ८०४ ॥

सिया रूप हुय भूप रावन सहार्‍यौ। भये देवकी अंस चानूर मार्‍यौ॥
इसौ कौन सहगत्ति सों कहै ग्यानी। इहै द्रोपदी होइ भारथ्थ ठानी॥
छं० ॥ ८०५ ॥

[1]समी सीस तें देवि देवी मुरारें। रमी सीस तें माहिषं पाइ ठारे॥
[2]इहै कालिका काल जिम दुष्ट मारै। इहैं संभनिस्संभ धायौ प्रहारै॥
छं० ॥ ८०६ ॥

तुंही ग्रंथ गेनं सिवं संग धंगे। तुही मोचनी पाप कल अलष गंगे॥
दयालं दया जानि चवि चंद बानी। जयं जान्हवी जोति तू पापहानी॥
छं० ॥ ८०७ ॥

श्री गंगा जी का माहात्म्य वर्णन।

चन्द्रायण॥ मनसा एक जनम्म महा अघ नासही।
दरसन तीन प्रकारति पाप प्रनासही॥
न्हायै दुष्य समूह मिटै भव सात के।
अंव हरै लगि बूंद सहस्सति गात के॥ छं० ॥ ८०८ ॥

(१) मो-रमी। (२) ग. कृ. को.-इहै।

गंगाजी के जलपान का माहात्म्य और कन्ह का कहना कि धन्य हैं वे लोग जो नित्य गंगाजल पान करते हैं।

गाथा ॥ सो फल निरषित नयनं । सो फल गुन गाइयं बैनं ॥
सोइ फल न्हात सरीरं । सोइ फल पिअत अंब अंजुलयं ॥
छं० ॥ ८०९ ॥

भुजंगी* ॥ जलं गंग न्हावै कितीकं कलत्तं । अलंकार चीरं सरीरं सहित्तं ॥
सरं केस पासं नितंबं बिलंबे । तिलं तेल फुल्लेल सीचें प्रलंबे ॥
छं० ॥ ८१० ॥

द्रगं कज्जलं म्रग्गयं कस्तूरी । करी कच्छपं भौजिय हथ्य चूरी ॥
मुकत्ताफलं सीपयं कीट पट्टं । विलेपन्न कीनें सुगंधं सुघट्टं ॥
छं० ॥ ८११ ॥

मुषं नाग बल्ली विरच्छं बरंगं । महंदी नषं जावकं रंग पग्गं ॥
इतें जीव पायं तुरन्तं मुकत्ती । कवीचंद जंपी न झूटी उकत्ती ॥
छं० ॥ ८१२ ॥

धरे ध्यान चौहान किन्नौ सनानं । अचिज्जं कहा पावनं मोपथानं ॥
सुने कन्न तामं कहै कन्ह काकौ । पियें अंब निसि दीह वड़भाग ताकौ॥
छं० ॥ ८१३ ॥

दूहा ॥ इय गंगा राजं न थुति । सुनी रत्ति धरि ध्यान ॥
जनम मरन दोऊ सधै । जो उपजै इह थान ॥ छं० ॥ ८१४ ॥

सामंत मंडली में परस्पर ठट्ठा होना और बातों ही बात में पृथ्वीराज का चिढ़ जाना।

तब सामंतन चंद कहु । सब पुच्छिय न्रप बत्त ॥
जु कछु सत्य सँबोध भौ । निठुररायह तत्त ॥ छं० ॥ ८१५ ॥

* यह छन्द मो. प्रति में नहीं है।

अरिल्ल ॥ तत्त करे न्रिप निठ्ठुर बुभ्भिय। राजा चंद प्रहास समुभ्भिय ॥
आदि दिये कमधज्ज सु रायहि। दासि समेत कह्यौ सब भायहि ॥
छं० ॥ ८१६ ॥

अचिज एक भयौ चहुआनह। मान सबै मुक्किय न्रप पानह ॥
भट्ट निवेस करै कर जोरहि। छच धऱ्यौ कहि कोन निहोरहि ॥
छं० ॥ ८१७ ॥

फेरि कह्यौ कविचंद सु बत्तिय। पंग प्रताप गयौ तप छत्तिय ॥
पान सु पात तुम्हें गर थल्लिय। भट्ट कहै कर छुग्गर [1]झल्लिय ॥
छं० ॥ ८१८ ॥

संभरि राव तमंकि रिसानौं। मैं भ्रम काज धऱ्यौ कर पान्यौं ॥
कालि सु भेस करौं भुअपत्तिय। कंप न तोहि धरद्धर छत्तिय ॥
छं० ॥ ८१९ ॥

कन्ह का कविचन्द से बिगड़ पड़ना।

भट्ट सौं कन्ह निपट्ट रिसानौ। तूं सामंत न तोर घरानौ ॥
तूं कवि देत असीसन छुट्टहि। सूर सीस दे सत्तन [2]जुट्टहि ॥
छं० ॥ ८२० ॥

कविचन्द का राजा को समझाना और सब सामंतों का कन्ह को मनाकर भोजन प्रसाद करना।

कवित्त ॥ [3]कपह जग्ग मंडयौ। न्यौंति जम इंद्र बुलाइय ॥
दिग्गविजय तँह करत। फौज लै रावन आइय ॥
मरन अचिंत्यौ जानि। चिंत कायरपन आदर ॥
वायस करकोटिया। रूप धरि उग्गरि दादुर ॥
दिय श्राद्ध पिंड जम कग्ग कौं। रंग ककेटक सुरपती ॥
मंडिक मदद्व गऱ्यौ वरुन। चंद कहत सुनि नरपती ॥
छं० ॥ ८२१ ॥

(१) ए. कृ. को.-घल्लिय। (२) मो. छुट्टहि। (३) कृ.-कगह, को.-कवह।

अरिल्ल ॥ तब परिहार वीर वीरन बर । भोजन सह सबै कीनौ नर ॥
राव गोयंद इंद बर उट्ठे । धरिय कन्ह निज बाह स रुट्ठे ॥छं०॥८२२॥

सब का शयन करने जाना।

तो लगु भोजन भष्य संपज्जे । हसि करि मंन सुचेतन लज्जे ॥
हो सब साथ सनाथ सयानौ । सूर कहै कब होइ विहानौ ॥
छं० ॥ ८२३ ॥

वार्ता ॥ जब लगि मिष्टान पान सरसे । तब लगि अंबर [1]दिनयर दरसे ॥

पृथ्वीराज का निज शिविर में निःशंक होकर सोना।

दूहा ॥ भइत निसा दिन मुदित बिनु । उड़पति तेज विराज ॥
कथक साथ कथ्थहि कथा । सुष्प सयन प्रथिराज ॥ छं० ॥ ८२४ ॥
अदरस दिनयर देषि करि । तलप प्रजंक असंक ॥
मनहु राज जोगिनिपुरह । सोभै सेंन निसंक ॥ छं० ॥ ८२५ ॥
कोतर रत रत चित्त तह । मानौं थान विहंग ॥
जुवती जन मन कुमुद बसि । मनु मनि सथ्थ भुअंग ॥छं०॥८२६॥

जैचंद का कवि को नाटक देखने के लिये बुलवाना।

ओसर पंग सुरत्त किय । चंद सुजानह भट्ट ॥
कहै जाय जुग्गिनि पुरह । नव रस भास सुघट्ट ॥ छं० ॥ ८२७ ॥
और प्रपंच विरंच कौ । निजरि पंग लगि क्रूर ॥
साच दिषावन राग रंग । चंद बुलाय हजूर ॥ छं० ॥ ८२८ ॥
जाम एक निसि बीति बर । बोलं भट्ट नरिंद ॥
ओमर पंग नरिंद कौ । देषहु आय कविंद ॥ छं० ॥ ८२९ ॥
एकाकी बोल्यौ सु कवि । ओसर देषन राय ॥
राज नींद मुक्यौ करत । पौरि संपतौ जाइ ॥ छं० ॥ ८३० ॥

(१) ए. कृ. को.-दिनरय ।

जैचंद की सभा की रात्रि के समय की सजावट और शोभा वर्णन।

मुरिल्ल ॥ सुनि न्रप भट्ट महल तजि आइय। देषत पंग सु ओपम पाइय॥
नहि रावन्न सजै सु प्रमानं। क्रम लद्धौ [1] गिर अंध गजानं॥
छं० ॥ ८३१ ॥

दूहा ॥ मृदु मृदंग धुनि संचरिय। अलि अलाप सुध व्यंद॥
ताल विग्गम उपंग सुर। औसर पंग नरिंद॥ छं० ॥ ८३२ ॥

कवित्त ॥ दस हजार मन तेल। सित्त मन अगर फ,लेलह॥
सत्त सहस सोब्रन्न। जरित दीवी सित जेलह॥
सहस पाल असुहेज। पेल षाना सु जनावर॥
सींह म्रग्ग सोहन्नं। कपिल हस्ती बहु, नाहर॥
पंषी अनेक जलचर प्रबल। जल थल प्रवृत इक हुए॥
जैचंद राइ तप तेज थी। कु निजरि कोई नह जुए॥ छं० ॥ ८३३॥

दूहा ॥ ज्वलन दीप दिय अगर रस। फिरि घनसार तमोर॥
जमनि कपट उच महल मुष। जनु सरद अभ्भ ससि कोर॥
छं० ॥ ८३४ ॥

राजा जैचन्द की सभा में उपस्थित नृत्तकी (वेश्याओं) का वर्णन।

तात धरम्मह मंत इह। रत्तह कॉम सु चित्त॥
काम विरुद्ध निविद्ध किय। न्रत्य नितंबिनि नित्त॥ छं० ॥ ८३५ ॥

भुजंगी ॥ सजी पातुरं नट्ट दीसै सु पंगं। चिहुं पास पासं अतंकी अभंगं॥
उड़ी धाम अग्गार ने धाम छाई। तिनं देषतें चंद ओपंम पाई
॥ छं० ॥ ८३६ ॥

सुरं नूपुरं सद्द बद्दं विहंगं। बरं तारि ता रूप पाथं सुरंगं॥
करै जमनिकं पट्ट दीसै सुरंगी। गतं चंदलं चंद उप्पम्म मंगी॥
छं० ॥ ८३७ ॥

---

(१) मो.-गिरधंगज।

हरं बार पुब्बं मनंमध्य सज्जं । बंध्यौ काम जारं मनी सीम [1]मज्जं॥
बजै नूपुरं सद्द पर सद्द धंमै । बजै दुंदभी समर सम राज क्रम्मै ॥
छं० ॥ ८३८ ॥

नगं हेम बर जटित तन घन विराजै । तिनं ओपमा चंद बरदाइ साजै॥
लगै नौग्रहं उग्रहं काम लग्गयौ । मनों आतमा आतमा भाव जग्गयौ
छं० ॥ ८३९ ॥

तिनं भट्ट संकै कहै बाल संचै । तिनं कारनं पातुरं साथ नंचै ॥
कटिं छुद्रघंटी रुलंती विराजै । तिनं उप्पमा सुबर कविचंद साजै ॥
छं० ॥ ८४० ॥

दिषै धनुष कामं षिजै सिंभ चासी । लगै पंच ग्रह चंचलं तं धरासी॥
रुरै हार भारं सु मुत्ती अनूपं । दमं मुष्य कंती प्रतीव्यंब रूपं॥
छं० ॥ ८४१ ॥

कथी चंद बंदी उपम्मा अनूपं । करै चंद आद्दन्न जल सेत कूपं॥
रुरै बाल कंठं समं [2]मुट्ठि पुंजं । कहै चंद कव्वी उपम्मा [3]अनुज्जं ॥
छं० ॥ ८४२ ॥

तिनं भेष सोहै फिरै बंध नंगं । धरै चंद तत्तं हरं मध्य गंगं ॥
बरं भूषनं दूषटं बाल साजै । बरं अट्ठ दूनं सिंगारं विराजै ॥
छं० ॥ ८४३ ॥

वेश्याओं का सरस्वती की वंदना करके नाटक आरंभ करना।

साटक ॥ दीपांगी चंद्रनेत्रा नलिन अलि मिली, नैन रंगी कुरंगी ॥
कोकाषी दीर्घनासा सुसर कलिरवा, नारिंगी सारदंगी ॥
इंद्रानी लोल डोला चपल मति धरा, एक बोली अमोली ॥
पूहपा बानी बिसाला सुभग गिरवरा, जैत रंभा सु बोली ॥
छं० ॥ ८४४ ॥

(१) मो.-वज्जं । (२) ए. कृ. को.-कुच्च । (३) ए. कृ. को.-लघुजं ।

नृत्यारंभ की मुद्रा वर्णन।

दूहा ॥ पुहपंजलि दिसि वाम कर। फिरि लग्गी गुरपाइ ॥
तरुनि तार सुर धरिय चित। धरनि निरष्षय चाइ ॥
छं० ॥ ८४५ ॥

मुरिल्ल ॥ सजि नग पातुर चातुर चल्ली। कैवर चंद चंद वर बुल्ली ॥
देषि सुबर ओपम [1]वर भल्ली। मदन दीप मालासजि चल्ली ॥
छं० ॥ ८४६

मंगल आलाप।

दूहा ॥ मंग प्रथम जंप जपै। जै गजमुष अग्रजाइ ॥
सेत दंत पाठक उदै। सोभै पंगुर राइ ॥ छं० ॥ ८४७ ॥

वेश्याओं का नृत्य करना; उनके राग, बाज, ताल, सुर,ग्राम, हाव भाव आदि का और उनके नाट्य कौशल का वर्णन।

नराज ॥ उअं अलाप मङ्गिता सुरं सु ग्रामपंचमं।
षडंग तप्प मूरछंमनंत मान संचमं ॥
निसंग थारंत अलप्य जापते प्रसंसई।
दरस्स भाव नूपुरं इतन्न तान नेतई ॥ छं० । ८४८ ॥
सुरंसपत्त तंच कंठ[2]बोधि राग साभरं।
हहा हुहू निरष्षि तार रंभ चित्त ताहरं ॥
ततंग थेइ तत्तथेइ तत्तथे सुमंडियं।
थथुंगं थुंग थुंगथे विराम काम मंडयं ॥ छं० ॥ ८४९ ॥
सरग्गमप्प धुन्निधा धुनं धुनं निरष्षियं।
भवंति जोति अंग मानु अंग अंग लष्षियं ॥

(१) ए. कृ. को. मुर। (२) ए. कृ. को.-ओलि।

कलं कलं सु [1]सथ्थनं सुभेदनं मनंमनं ।
रनकि झंकि नूपुरं बुलंत भंभनं भनं ॥ छं० ॥ ८५० ॥
थमंडि थारु घंटिका भमंति भेष रेषयौ ।
[2]जुटंति घुंट वेस पास पीत स्याह रेदयौ ॥
लजंति गत्ति तारया कटिं प्रमान कंटरी ।
कुलम्मसार आउधं कुसुम्म ओड नंटरी ॥ छं० ॥ ८५१ ॥
उरंप रंभ भेष रेष सेपरं करं कसं ।
तिरप्पि तिष्य निष्पयौ सु देस दच्छिनं दिसं ॥
सुरंति मंगि गातनौ धरंति सासने धुने ।
जमाइ जोग कट्टरी चिविड नंच संपने ॥ छं० ॥ ८५२ ॥
तिरप्पि लेत [3]पातुरं सु चातुरं दिषावहीं ।
कै अट्ठ ग्रह वीय चंद भोर कै अमावहीं ॥
छतीस राग बंधि तार बाल ता बजावहीं ॥
.... छं० ॥ ८५३
सु कम्म तार धौ मृदंगचित्त बंध संचरं ॥
विरम्म काम धूव बंधि चंद्र ध्रूव उच्चरं ॥
समीप रथ्थ भेदयौ जु चित्त चित्त चोरई ॥
अनेक भंति चातुरी जुमन्न मेर डोरई ॥ छं० ॥ ८५४ ॥
सिंगार ते कलेवरं परस्सि उभ्भ रावके ॥
सिंगार सोभ पातुरं कि [4]चातुरं सिंगार के ॥
उलट्टि पट्टि नाचनौ फिरहि चक्कि चाहनौ ॥
निरक्खि नेंन राघि जानि बंभ मुत्ति बाहनौ ॥ छं० ॥ ८५५ ॥
विसेष देस द्रुप्पदं बदन्न देंन राजयौ ॥
सु चक्र भेष चक्र हत्ति बाल ता विराजयौ ॥
उरद्ध मुद्ध मंडली अरोह रोह चालिनं ॥
ग्रहंति मुत्ति दुत्तिमा मनों मराल मालिनं ॥ छं० ॥ ८५६ ॥

(१) ए. कृ. को.-मथ्थनं । (२) ए. कृ. को.-जटंति ।
(३) ए. कृ. को. षातुरं । (४) ए. कृ. को.-पातुरं ।

प्रवीन वान उद्दरी मुनींद्र मुद्र कुंडली ॥
प्रतष्षि मेष उद्दर्यौ सु भुम्मि लोइ षंडली ॥
तलं तलं सुताल ता मृदंग धुंकने घने ॥
अपा अपा भनंत भे जपंत जान ज्यौं जने ॥ छं० ॥ ८५७ ॥

अलाष लाष लाष नैनयं न बैंन भुंषने ॥
नरे नरिंद मास मेस मेस काम सुष्षने ॥
.... । ....छं० ॥ ८५८ ॥

सप्तमी शनिवार के बीतक की इति।

दूहा ॥ जाम एक छिन [1]दान घट सत्तमि सत्तनिवार ॥
कहु कामिनि सुष रति समर। [2]त्रिपनिय नींद निवार ॥छं०॥८५९॥

घटि चियाम घरियार बजि। ससि मिटि तेज अपार।
अकस अच्छ दिन सो तजौ। चिय रुठि निसि भरतार ॥छं०॥८६०॥

नृत्यकी (वेश्या) की प्रशंसा।

साटक ॥ सुष्षं सुष्ष मृदंग तल्ल जघनं , रागं कला कोकनं ॥
कंठी कंठ सुभासने समजितं , कामं कला पोषनं ॥
उरभी रंभ कि ता गुनं हरहरी , सुरभीय पवनं पता ॥
एवं सुष्षह काम कुंभ गहिता , जय राज राचं गता ॥ छं०॥८६१॥

कांती भार पुरान यौविगलिता , साषा न गल्हस्थलं।
तुच्छं तुच्छ तुरास लग्गि कमनं , कलि कुंभ निंदा दलं ॥
मधुरे माधुरयासि आलि अलिनं , अलि भार गुंजारियं ॥
तरुनं [3]प्रात लुटीय पंगज जिया, राचं गता साम्प्रतं ॥
छं० ॥ ८६२ ॥

(१) ए. कृ. को.-दक्षिन (२) ए. कृ. छो.-त्रिय तिय निंदनिवार।
(३) ए. कृ. को.-प्रान।

तिपहरा बजने पर नाच बंद होना, जयचंद का निज शयनागार को जाना और कवि का डेरे पर आना।

अरिल्ल ॥ भई ग्रम बेर अथवंत निसं। गह्नि चोर परद्दर कपट बसं ॥
झलि झालरि देवर सुष्य नदं। भइ विप्र उचारिय बेद बदं ॥
छं० ॥ ८६३ ॥

दूहा ॥ गयौ चंद थानह न्रपति। मतौ पंग चितवार ॥
भट्ट सथ्थ चहुआन सत। बंधि दियौ करतार ॥ छं० ॥ ८६४ ॥
प्रातराव संप्रापतिग। जहं दर देव अनूप ॥
सयन करहि दरबार तहं। सत्त सहस अस भूप ॥ छं० ॥ ८६५ ॥
गत चिजाम राजन उठ्यौ। सीष दई कविचंद ॥
निसा जाम इक नींद किय। प्रात उठ्यौ जैचंद ॥ छं० ॥ ८६६ ॥
प्रापत चंद कविंद तहं। जहं ढिल्ली चहुआन ॥
जगि बरदाइ बर बुलै। बरबंधन सुरतान ॥ छं० ॥ ८६७ ॥

इधर पृथ्वीराज का सामंत मंडली सहित सभा में बैठना, प्रस्तुत सामंतों के नाम और गुप्तचर का सब चरित्र चरच कर जैचन्द से जा कहना।

भुजंगी ॥ सभा सोभियं राज चहुआन पासं। बिठे सूर सामंत रस बीर लासं॥
सभा सोभियं सूर सूरं प्रमानं। तहां बैठियं सूर चौहान ध्यानं ॥
छं० ॥ ८६८ ॥

तहां बैठियं राइ गोयंद जूपं। जिनै मुग्गली बंध दिय हथ्थ भूपं ॥
भरं दाहिमौ सोभि नरसिंघ बीरं। जिनै पत्ति बंध्यौ षुरासान मीरं॥
छं० ॥ ८६९ ॥
सभा सोभियं सूर कूरंभरायं। जिनै आस हांसीपुरं जीति पायं॥
सभा मभ्भ सारंग चालुक मंड्यौ। मनों लाल मोतीन में मेर छंड्यौ॥
छं० ॥ ८७० ॥

सभा सोभियं सूर बघ्घेलरायं। जिनै सेहरो स्वामि किती चढ़ायं॥
रजं राअ पामार लष्षं सलष्षं। जिनै बंधि गोरी सबै सेन भष्षं॥
छं० ॥ ८७१ ॥

सभा सोभियं राइ आल्हन्न रायं। जिनै ठेलि ठट्टा समुद्दं बहायं॥
सभा बीरचंदं सुचंदं पुंडीरं। जिनें प्रांन रक्कं सरद्दं गंभीरं ॥
छं० ॥ ८७२ ॥

सभा सोभियं बीर भोहां प्रकारं। जिनैं देवगिरि सीस झिल्लै दुधारं॥
सभा धावरं सोभि नारेन बीरं। जिनै भंजियं मीर सुरतान तीरं॥
छं० ॥ ८७३ ॥

सभा सोभियं जावलौ जल्ह कातं। जिनै षेदि सब्बं ससी पल्ह जंतं॥
सबै सूर सामंत सभ में बिराजैं। जिनै देषि ससि सरद की भांति लाजैं॥
छं० ॥ ८७४ ॥

चरं संभरी कथ्थ जंपै नरिंदं। इदं बैठियं भासि प्रथमीपुरंदं ॥
ढुरै कनक सीसं सु चौरं जु दीसं। मनौं उग्गयौ भान प्राची प्रदीसं॥
छं० ॥ ८७५ ॥

¹सुनी पंग बीरं अबी रंति मिंटी। करे जोर जम्मं रह्यौ भान ब्यंटी॥
बरं बोलहीं दिष्ष विहु जन्न एकं। जनौं आरजं बार बर इंद मेकं
छं० ॥ ८७६ ॥

अरिल्ल ॥ गयौ दूत सब देषि चरित्तं। पंग अग्गि जंपी बर तत्तं ॥
भट्ट जानि जिन भुल्लो चंदं। बैठौ जेम प्रथीपुर इंदं ॥छं०॥८७७॥

दूत के बचन सुनकर जैचन्द का प्रसन्न होना और शिकारी तैयारी होने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ श्रवन सुनिग कमधज्ज। पंग फुल्ल्यौ बर भासं ॥
प्रात फुल्लि सतपत्र। संझ कामोद प्रकासं ॥
²बार रूप भौ बीर। भीम दुस्सासन बारं ॥
द्रोन कज्ज हनुमान। कन्ह गोधन्न उपारं ॥

(१) ए. कृ. को.-सुनी पंग बीरं अपं रीति मिट्टी"। (२) मो.-बीर

उब्बरं चंद चंदहति सम । दंद पुब्ब भंजन सु दह ॥
आषेट हुकम दै पुब्ब दिसि । चंद समप्पन दान बह ॥ छं० ॥ ८७८ ॥

जैचन्द की शिकारी सजनई की शोभा वर्णन ।

आषेटक पहुपंग । बाजि नीसान प्रथम बर ॥
हिंदवान अरु असुर । गयरु सज्जीय [1]धरब्बर ॥
दुतिय बज्जि नीसान । सबै भूत हैबर सब्बर ॥
मग्ग अठ्ठ पय बांम । गाज कमधज्जह समभर ॥
बज्जै निसांन न्नपतिय चढ़ौ । पंच सबद बाजिच बजि ॥
सामंत सूर बर भरि भरिय । करह न दंद नरिंद कजि ॥ छं० ॥८७९॥

दूहा ॥ आषेटक पहु पंग क्रत । चढ़िग लष्य बजि तूर ॥
आज बीर कमधज्ज सौ । इंद फुनिंद न सूर ॥ छं० ॥ ८८० ॥
क्रम्यौ राज जैचंद बर । अहां चंद प्रथिराज ॥
सुभि ग्रहगन मध्ये सवित । अदभुत चरित विराज ॥ छं० ॥८८१ ॥

कवित्त ॥ नग सु तुल्य चलि नाग । मान सेना कितीस तर ॥
मनहुँ काम कर सज्जि । रंग चवरंग [2]चंग चर ॥
अदभुत चरित विराज । नग्ग जर बंग विराजत ॥
अंतरथ्यि हय [3]हथ्यि । मनहुँ पातुर तिय साजत ॥
दरबार उतरि भयभीर भर । सकल लोक बर इंद कों ॥
जैचंद राज विजपाल [4]सुअ । विदा करन कविचंद कों ॥
छं० ॥ ८८२ ॥

छंद नाराच ॥ चल्यौ नरिंद पंग राइ बाजि बीर सद्दयं ।
अनेक राइ राज सज्जि हि [5]जान नद्दयं ॥
कनंक हथ्थ पच सुलक्कगीन कंठ्ठियं ।
मनों ममंद उड्डि सोर बीर बोझ क्रम्मियं ॥ छं० ॥ ८८३ ॥

(१) मो-भर पर ।　　(२) मो.-चक्र, चक्क ।
(३) मो.-हाच्छि ।　　(४) ए. कृ. को.-तन ।
(५) को.-जाम ।

सुपंग अंग बंधि बीर बार कंद्रपं कयं।
रजंत अग्ग एक सौ अ दंति पंति चोरयं ॥
तिमद्द रद्द हेम पट्ट घट्ट यट्ट फेरयं।
सुभंत छत्र राज सीस हेम दंड मेरयं ॥ छं० ॥ ८८४ ॥
धनुष्यधार मीर बंद दुष्ट [1]अप्प दिष्पयं।
रमंत तत्त बेध साम बान ते विसष्ययं ॥
सुदुंद सज्ज हथ्थ रथ्थ पट्ट पोत चल्लयं।
मनों करीय नाग अग्ग पट्ट कांम पुल्लयं ॥ छं० ॥ ८८५ ॥
दसं दिसान कंपवै निसान राज संभरै।
सुन्यौ जू सूर लोक वाम पुंज तेज विफ्फुरै ॥
.... छं० ॥ ८८६ ॥

जैचंद का सुखासन (तामजाम) पर सवार होना।

दूहा ॥ मिसि बज्जहिं गंगा बरन। दान कवी पति सेव ॥
चढ़त सुषासन संमुहौ। अहं सामंत न्टपेव ॥छं० ॥ ८८७ ॥

पंगराज का मंत्री को बुलाकर शिकार की तैयारी बंद करके कवि की विदाई के विषय में सलाह करना।

कवित्त ॥ बोलि सु मंत्रिय पंग। मुक्कि आषेट राइ बल ॥
भट्ट किंत्ति चल चित्त। भट्ट निस चलह किन्ति चल ॥
मेद मंच दिय दान। दंद दालिद कवि भग्गिय ॥
सवें मनोरथ भग्गि। सुष्य आसुष्य विलग्गिय ॥
जाचै न दून हिंदून दुह। कै कवि भग्गौ कंक बल ॥
संभारै बाल संभरि धनी। अम्म चंद भग्गौ अलल ॥ छं० ॥ ८८८ ॥
*चिंति चित्त कमधज्ज। दान वेताल सु विक्रम ॥
अद्ध लष्य मन कनक। अंक मेटन बिधि अक्रम ॥

(१) ए. अप्प।
* यह छन्द मो. प्रति में नहीं है।

मुत्तिय मन इकतीस । दुरद मदगंध प्रकासं ॥
वारंगन इकतीस । रूप लावन्य निवासं ॥
मंत्री सुमंच इह कुमति किय । बरजि राइ जैचंद कौं ॥
पन कितौ कहरि अप्पन छोइ । इतिक बिदा सजि चंद कौं ॥
छं० ॥ ८८९ ॥

मंत्री सुमंत का अपनी अनुमति देना ।

छनूफाल ॥ सो मंच मंचिय तब्ब । करि अरज फेरि सु कब्ब ॥
दहतीय सजि गजराज । सुनि गगन मंद अवाज ॥ छं० ॥ ८९० ॥
सम इंद्र आसन जूप । चलि नाग नाग सरूप ॥
घन चुअत मद परि अंत । गिरि राज भरनि भरंत ॥ छं०॥ ८९१ ॥
जटि कनक [1]काज सुरंग । सम बसति सोभ दुरंग ॥
सत उभय तुरिय सु तेज । दुअ अंस वंस विरेज ॥ छं० ॥ ८९२ ॥
फरकंत चातुर जेम । असमान सज्जत तेम ॥
नग जीन करित अमोल । उत साज सज्जित तोल ॥ छं० ॥८९३॥
लगि लाग लेत ललित्त । गति अंतरिच्छ कलित्त ॥
रस उभै बानौ हेम । सतमन्न तुल्लिय तेम ॥ छं० ॥ ८९४ ॥
दै लाष पूरि प्रमान । गिरिराज उदर समान ॥
मनि रतन मोल अनंत । गनि छोइ गनिकन अंत ॥
छं० ॥ ८९५ ॥
फिरि पुरष कीनौ कोस । सकलाति फिरगह तोस ॥
जरबाफ कसब अराव । उद्दोत करन प्रभाव ॥ छं० ॥ ८९६ ॥
बहु जात चामर रूप । सिर ढुरै आनि सुभूप ॥
जिन चरचि बहुत सुवास । कलि कसब सवित उहास ॥
छं० ॥ ८९७ ॥
जै चंद इंद बिराज । दै गै सुघन घन साज ॥
कविचंद कारन इंद । सम दैन चलि जैचंद ॥ छं० ॥ ८९८ ॥

(१) ए. कृ. को.-साज ।

कविचन्द की विदाई के सामान का वर्णन।

कवित्त ॥ तीस सज्जि गजराज। गगन गर जार मंद करि ॥
इै सें चपल तुरंग। चरन लग्गै धरनि पर ॥
हाटक षोडस बानि। मनह सत केवल तोलिय ॥
रतन अमोलक मुत्ति। परषि ते गंठहि बंधिय ॥
सकलाति फिरँग चामर चरचि। कसब सबे विधि जर जरिय ॥
जैचंद इंद वित विविध लै। विदा करन चलि चंद किय ॥
छं० ॥ ८९९ ॥

दूहा ॥ तीस करिय मुत्तिय सघन। इै सें तुरंग बनाय ॥
द्रव्य बदर बहु संग लिय। भट्ट समंघन जाय ॥ छं० ॥ ९०० ॥

पंगराज के चलते समय असकुन होना।

कवित्त ॥ भट्ट समंघन जात। राज नट विंद प्रबंधी ॥
मौम बैंन नहि चित्त। मभ्भम हक्कत सालध्धी ॥
सिभू[2] मेस अनंत। रुंड माला रचि गुंथी ॥
षंड षंड अंगार। मच जूरी तन रुंधी ॥
उध्धई कंभ षग मग्ग करि। गिद्धि पष फुनि फुनि करै ॥
जनय चोट धाराहरह। रस प्रसिद्ध बीरह भिरै ॥ छं० ॥ ९०१ ॥

दूहा ॥ कुरलंती चिलिहय गयन। चंच विलग्गौ सप्प ॥
वाम अंग मंजार भय। चक्रित चिंत[1] न्रप अप्प ॥ छं० ॥ ९०२ ॥

पंगराज का चिंता करके कहना कि जिस प्रकार से शत्रु हाथ आवे सो करो।

बोलि सवन्नी सुनि श्रवन। सुर अन भग अकथ्थ ॥
धन्नि ध्रंम भरि कित्ति जन। ज्यों अरि आवै हथ्थ ॥ छं० ॥ ९०३ ॥

---

(१) मो.-चित। (२) मो.-सिभ मेस।

मंत्रियों की सलाह से पंगराज का कवि के डेरे पर जाना ।

भुजंगी ॥ ननं मांनियं जानियं द्रेव मंती । गयं [1]चंद न्नप ग्रेह देषे बिरंती
गतं सायरं माम गभीर दालं । सद आ प्रवालं पवनं [2]प्रचालं ॥
छं० ॥ ६०४ ॥

बलं तेज केली ननं जाहि कालं । सुरज्जं समं पाइ संचार आलं ॥
बरं लावनं इंदियं दिग्ग पालं । बलीनं बलीनं भरं विश्व बालं ॥
छं० ॥ ६०५ ॥

ब्रह्मंडं विजै थभ करि हथ्थ बज्रं । पगं जानि पारथ्थ भारथ्थ मज्जं ॥
दिटी असु दिट्ठी सबैं सथ्थ रारी । धरी सथ्थ नंदी संसारी सुभारी ॥
छं० ॥ ६०६ ॥

दिपी पंग जैचंद इंदं परष्षी । तहांईय आसीस बरदाय भष्षी ॥
छं० ॥ ६०७ ॥

जैचन्द का शहर कोतवाल रावण को सेना सहित साथ में लेना ।

कवित्त ॥ जीत मत्त पहुपंग । बोलि राठौर सुबीरं ॥
सास दान करि भेद । डंड बंध्यौ अरि मीरं ॥
छल बल कल संग्रहै । दई दुरजन दावानल ॥
भट्ट थान आहुट्टि । पंग बुट्ठे सारह जल ॥
चतुरंग लच्छि लीजै सघन । दै दुबाह घायन चढ़हि ॥
सब सथ्थ सथ्थ प्रथिराज बल । सुनौ सुभर सो बुद्धि इहि ॥
छं० ॥ ६०८ ॥

रावण के साथ में जाने वाले योद्धाओं का वर्णन ।

(१) ए. कृ. को.-गयंदंच । (२) ए. कृ. को.-प्रवालं ।

दूहा ॥ अगि मोकलि रावन न्रपति। इक्कार्यौ कविराज ॥
भट्ट इट्ट मोकलि सु बर। कंक विसाइन काज ॥ छं० ॥ ९०९ ॥

कवित्त ॥ मेर उच्चवहि वथ्थ। देय तन वज्र पात कर ॥
भयै च्यार अज इक्क। नेर सम क्रंति देह धर ॥
हठिय अग्ग रिन परहि। स्वामि स्वामित्तन चुक्कहि ॥
पर नायि पर मुष्य धर। धरा धीर सु रष्यहि ॥
कर चलहि अप्प पय अचल बर। रावन सथ्थ सु मंडि लिय ॥
दिष्षिय सु भंति इह कव्वि करि। मनुं सरद अभ्भ ससि कुंडलिय॥
छं० ॥ ९१० ॥

रावण का कवि को जैचन्द की अवाई की सूचना देकर नाका जा बांधना।

दूहा ॥ सवैं क्रूर ग्रह पंग बर। एकादस न्रप राह ॥
दुष्ट मंच दानह करिग। भट्ट सुमंदन राहु ॥ छं० ॥ ९११ ॥
गयौ रावन मैलान बर। कपट चित्त मुह मिट्ठ ॥
दान समप्पन भट्ट कों। चित बंधन बर दिट्ठ ॥ छं० ॥ ९१२ ॥

पंगराज के पहुंचने पर कवि का उसे सादर आसन देना और उसका सुयश पढ़ना।

कवित्त गयौ रावन मेलहान। चंद बरदिया [१]समप्पन
देषि सिंघासन सद्यो। पास पारस्स इंद्र जनु ॥
कवि आदर बहु कियौ। देषि कनवज्ज मुकट मनि ॥
इह ढिल्लिय सुर दत्त। बियौ नहि गनै तुभ्भ गिनि ॥
थिर रहै यवा इत वज्र कर। छंडि सिकारहि छिन कुरहि ॥
[२]जिहि असिय लष्य पलानि यहि। पान देहि दिढ हथ्थ गहि ॥
छं० ॥ ९१३ ॥

(१) मो.-समप्पन। (२) मो. जिहि।

पान देह दिढ़ हथ्थ। परिस षावास पंग बर ॥
आ अग्गै अस तेज। तेज कंपहि जु नाग नर ॥
देषि प्रथीपुर उदै। सूर सरनै गौ तंतक ॥
बर कंपै द्रिगपाल। चित्त चंचल गत्तौ भ्रक ॥
अघ हरन किरन किरनो प्रचंड। देखि दून गति देषियै ॥
अप्पि बर पान पारस सुगत। दुती परस सो लिष्षियै

छं० ॥ ९१४ ॥

पान धार दै पान। भट्ट ष्षिप आनि मंडि कर ॥
नर नरिंद जैचंद। जग्गि सम मंडि देव बर ॥
इंद्र मौज जचन [1]विसा। सह होय अचाइय ॥
। .... । .... ॥
[2]चय हथ्थ लंक उप्पर न्नपति। तरन हथ्थ कमधज्ज कहि ॥
आदि करि देव दानव सुरह। बलि आंच्यो बावन जुजहि ॥

छं० ॥ ९१५ ॥

खवास वेष धारी पृथ्वीराज का जैचन्द को बाएं हाथ से पान देना और पंगराज का उसे अंगीकार न करना।

दूहा ॥ पान देइ दिढ हथ्थ गहि। बर करि हथ्थ दिवंक ॥
मनु रोहिनि सो मिलिग ज्यों। बीय उदित्त मयंक ॥ छं० ॥ ९१६ ॥
लिय सु पान भुअ राज रुष। मुखप्रसन्न [3]मन रोस ॥
दिषत न्नपति चल चिंत किय। पुब्ब प्रसन्नौ दोस ॥ छं० ॥ ९१७ ॥
करै न कर प्रथिराज तर। धरै न कर जैचंद ॥
उभय नयन अंकुरि परिग। ज्यों जुग मत्त गयंद ॥ छं० ॥ ९१८ ॥
[4]सुनि तमोर पट्ठिय सुकर। मुष उत करि दिठ बंक ॥

(१) मो. पिसाल। (२) मो.-त्रय लोक हथ्थ लंक उद्धर नृपति।
(३) ए.कृ. को.-मुन मुत। (४) ए. कृ. को.-मुनि।

अनु छैलनि कुलटा मिलै। बहुत दिवस 'रस षंक ॥ छं० ॥ ९१९ ॥
राज पान अब अप्पही। पंग न मंडै हथ्थ ॥
रोस नृपति अब चिंति मन। कही चंद तब गथ्थ ॥ छं० ॥ ९२० ॥

कवि का श्लोक पढ़ कर जैचन्द को शान्त करना।

श्लोक ॥ तुलसीयं विप्र हस्तेषु। विभूति श्रिय जोगिनां ॥
तांबूलं चंडि हस्तेषु। चयो दानेव आदरं ॥ छं० ॥ ९२१ ॥

जैचन्द का पान अंगीकार करना परंतु पृथ्वीराज का ठेल कर पान देना।

चौपाई ॥ भट्ट जानि करि मंग्यौ राय। उहि तंमोर दियौ नृप चाइ ॥
ठट्ठै पानि दियौ नित ठेलि। मनौं वज्रपति वज्जह मेलि ॥ छं० ॥ ९२२ ॥

पृथ्वीराज का जैचंद के हाथ में नख गड़ा देना।

दूहा ॥ पानि पान करिकें दियौ। कमधज्जह प्रथिराज ॥
चल्यौ रकत कर पल्लवनि। ग्रह्यौ कुलिंगन बाज ॥ छं० ॥ ९२३ ॥
कर चंपे नृप तास कर सारंग दिह सुचंग ॥
पानि प्रथीपति दब्बियौ। श्रोन चल्यौ नष संग ॥ छं० ॥ ९२४ ॥

इस घटना से जैचंद का चित्त चंचल हो उठना।

कवित्त ॥ पान धार दै पान। दिष्ट आरुहिय बंक बर ॥
एक थान द्वै सूर। तेज दिष्यौ कि सूर बर ॥
'बिहुन हथ्थ बिभ्भरै। लाज संकर गर बंधिय ॥
अंष वह दिषि भट्ट। बीर भंजन सु बीर पिय ॥
निश्चल सु चित्त चहुआन कौ। चित निश्चल नन पंग बर ॥
लग्गौ सु पान नृप वज्र सर। पान धरे बर बज्र 'सर ॥
छं० ॥ ९२५ ॥

दूहा ॥ प्रथमहि सभा परष्षयौ। पानधार नहि भट्ट ॥
नृप कवियान सपत्तयौ। तब परषयौ निपट्ट ॥ छं० ॥ ९२६ ॥

(१) मो.-रिस। (२) ए. कृ. को.-बहुन। (३) ए. कृ. को.-कर।

भुअ बंकी किय पंग न्प। अप्पि हथ्थ तंमोर ॥
मनहु बज्रपति बज्र धर। सब अप्पौ तिहिं ओर छं० ॥ ९२७ ॥

जैचन्द का महलों में आकर मंत्री से कहना कि कवि के साथ का खवास पृथ्वीराज है उसको जैसे बने पकड़ो।

कवित्त ॥ गहि कर पान सु राज। फिर्यौ निज पंग ग्रेह वर ॥
सोमंचिक परधान। बोल उच्चरिय क्रोध भर ॥
गह्यौ राज संभरि नरेस। सामंत अंत रिन ॥
मिटै बाल उर आस। आस जीवन सु मिटै तिन ॥
बोलिय सुमित्त कमधज्ज वर। छग्गर भट्ट न पृथु गहन ॥
भूत भ्रात तात सामंत सुत। छलन काज पट्टिय पहन ॥
छं० ॥ ९२८ ॥

मंत्री का कहना कि पृथ्वीराज खवास कभी न बनेगा यह सब आपके चिढ़ाने को किया गया है।

दूहा ॥ छलन काज पट्टिय पह न ॥ मिलिन छुम्म दरबार ॥
पान भट्ट पृथु किम ग्रहै। न्प बर सोचि विचार छं० ॥ ९२९ ॥

कवित्त ॥ न्प बर सोचि विचारि। संग सुभ्भै बरदाइय ॥
अवधि बसीठ रु भट्ट। बंस न्प लगै बुराइय ॥
इह कलि किति नरिंद। रज्ज अपजस हुअ ढंकन ॥
दिष्टमान बिनसिहै। लग्गि अंमर कुल अंकन ॥
जुग्गिनि समथ्थ जौ इन हुए। तौ सब भ्रत गिनि मारियै ॥
रिधि मंत्र राइ राजन सुनौ। विप्र भट्ट नन टारियै ॥ छं०॥ ९३० ॥

जैचन्द का कवि को बुला कर पूछना कि सच कहो तुम्हारे साथ पृथ्वीराज है या नहीं।

चौपाई ॥ टरिय राज उर क्रोध विचारिय। बरदाई मिथ्या न उच्चारिय ॥
फिरि जैचंद पिथ्थ यह आयौ। निज कर (१)रावन भट्ट बुलायौ ॥
छं० ॥ ९३१ ॥

---

(१) मो.-रान सुभट्ट ।

कवित्त ॥ अप्पि पान करि मान । नाथ कनवज्ज अप्प कर ॥
दिल्लीवै चहुआन । तास बर भट्ट सिद्धि हर ॥
अमर नाग नर लोक । जास गुन आन ग्यान बर ॥
आदि बंध मुनिवर । प्रबंध षट भाष भाव भर ॥
नव रस पुरान नव दून जुत । चतुर देह चातुर सु तप ॥
रष्यौ न राज अप्रछन्न कवि । कहत तत्त कनवज्ज न्रप ॥
छं० ॥ ९३२ ॥

चौपाई ॥ बोलौ भट्ट सु मत्ति विचार । किन सिर आतपत्र आधार ॥
जौ प्रथु ह्वै तौ हनौं ततच्छिन । नहिं तुम्है गै [1]देउ अप्पि घन॥
छं० ॥ ९३३ ॥

कवि चंद का स्वीकार करना कि पृथ्वीराज हैं और साथ वाले सब सामंतों का नाम ग्राम वर्णन करना।

दूहा ॥ पद्धरि छंद सु चंद कहि । सिंघासन प्रथिराज ॥
कन्ह सु दिष्षिन जन्ह गिरि । निड्डुर वाम विराज छं० ॥ ९३४ ॥

पद्धरी ॥ बैठो [2]सुभट्ट आरोहि पिट्ठ । तिन ढिगह सोभ इंद्रह बयट्ठ ॥
छत्रह उतंग चामर बइंभ । छज्जह सरूप फुल्लीत संभ ॥छं०॥९३५॥
डोलीय पंच आरोहि तिथ्थ । तिन मझ्झ बयठ निड्डुर समथ्थ ॥
बल कन्ह देषि पट्टी आरोहि । कौरवह पत्ति कर्नह समोहि ॥
छं० ॥ ९३६ ॥

पुच्छै सु बत्त कनवज्ज राइ । देषेव रूप प्रज्जलित लाइ ॥
दामित्त रूप सामंत देषि । लिष्षौ सु भ्रंम जम्मह स लेष ॥
छं० ॥ ९३७ ॥

कन्हा नरिंद चहुआन बंक । पट्टनह राव मान्यौ जु कंक ॥
गोयंद राव गहिलौत नेस । जिन दीय फेर गज्जन गद्देस ॥छं०॥९३८॥
जैतह पमार अब्बू नरेस । छत्रह धरंत मध्थै असेस ॥
पंडियौ राय बंध्योति साष । बलबंधि साह दस सहस लाष ॥
छं० ॥ ९३९ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-दिया। (२) ए. कृ. को.-जु।

हरसिंघ नाम बर सिंघ बीर। तिन हथ्थ जुट्टि षचवट्ट नीर॥
वालुका राव सध्यौ सु पंग। संभलिय राय झाला प्रसंग॥
छं॰ ॥ ६४० ॥

विंझ राज देषि चहुआन रूप। जिन भरिय लष्य द्रव्यान कूप॥
परमाल देषि चंदेल राज। बंधिया राय द्रव्यान काज॥
छं॰ ॥ ६४१ ॥

बारड़ सु राव अधिपत्ति सेन। तिन चढ़त लग्गि वह उड्डि रेन॥
अचलेस नाम भट्टी सु संध। मुरधरह राइ पडिहार बंध॥
छं॰ ॥ ६४२ ॥

परिहार पीप सामंत सुद्ध। पतिसाह बंधि लीयौ अरुद्ध॥
निढुरह राय अवनी अकंप। गजनेस राइ ज्वाला तलंप॥छं॰॥६४३॥
तोंवर पहार अवनी सु जोर। बंधयौ राइ कन्ना समोरि॥
कूरंभ राव पज्जून बीर। सद्दये जेन इक लष्य मीर॥छं॰॥६४४॥
नरसिंघ एक नागौर पत्ति। रिनधीर राज लीयैं जुगत्ति॥
परमार सलष जालौर राह। जिन बंधि लिद्ध गजनेस साहि॥
छं॰ ॥ ६४५ ॥

कंगुरौ देस दल लीन ढाहि। कीनी सु एक षिच वट्ट राह॥
परमार धीर रिनधीर सथ्थ। मेवात बंधि मुग्गल अकथ्थ॥
छं॰ ॥ ६४६ ॥

जद्दव सु जाम षीची प्रसंग। लीनैं सु देस अवनी पुलिंग॥
हाहुलिराय कंगुर नरेस। लीए सु सत्त पतिसाह देस॥
छं॰ ॥ ६४७ ॥

जंघार भीम उड़गन सु सोह। रिन जुद्ध बीर संकर अरोह॥
सारन्न राइ मोरी भुआल। कढ्ढिया राइ जिन किद्ध काल॥
छं॰ ॥ ६४८ ॥

तेजलह डोड परिहार रान। भिड़ एक तेक बंदे सु भान॥
गुजरात धनी सागौत गौर। आरनि सु माहि बंधंत मौर॥
छं॰ ॥ ६४९ ॥

परिहार एक तारन सुरष्ष । कर सलय लोय सेना समष्ष ॥
वारड़ सुधीर सहसौं करन्न । वरियाति वीस हुम्र छिन्न भिन्न ॥
छं० ॥ ९५० ॥

चहुआन एक अततार रूप । कालिंज राइ बंध्यौ अनूप ॥
बल्लिराइ एक भारथ्थ भीम । कूरंभ राव चंपेव सीम ॥छं०॥९५१॥
भोंहां चँदेल जिन बंध राज । पानीय पंथ प्रथिराज काज ॥
गुज्जरह राम धूवत समान । मारयौ जेन आलील षान ॥
छं० ॥ ९५२ ॥

चंदेल माल यट्टा अरोह । साधियौ वीर जनचंद मोह ॥
रस सूर रोह मेरह समान । जिन हेम प्रवत लिय जोर पान ॥
छं० ॥ ९५३ ॥

मंडलीक राव वघघह अरोह । आवद्ध एक चिसूल सोह ॥
पूरन्न माल षल हंड षेत । जिन सूर दीन सत अस्वमेत ॥छं॥९५४॥
धावरह धीर सामंत राज । जिन जीव एक प्रथिराज काज ॥
हाडौ हमीर सथ्थें कुलाह । बंधयौ जेन भिरि पातिसाहि ॥छं॥९५५॥
रावत्त राम सामंत सूर । जिन द्रिग्ग देषि नट्टे करूर ॥
जावलौ जल्ह रिनतूर बज्जि । लिय बंधि जेन इकतीस रज्जि ॥
छं० ॥ ९५६ ॥

चालुक्क एक भारो जु सोह । लीयें जु फिरै इक सहस लोह ॥
बग्गरी बघघ षेता षँगार । रिनथंभ तेन करि मार मार ॥ ९५७ ॥
दाहिम सुभट्ट संग्राम धाम । मारयौ वरुन करुना सु काम ॥
मंडलीक [1]कंकवे सेन चंद । बंधयौ जेन भौमह नरिंद ॥छं०॥९५८॥
परमार सूर सामल नरेस । रिन मंझ अटल दल असहेस ॥
परमार कनक पछवान लीन । प्रथिराज ग्राम दस सहस दीन ॥
छं० ॥ ९५९ ॥

संजम हराय बर जुद्ध नेस । षोडस्स दान दिय वाल वेस ॥
चाटौ जु टांक बैठौ नरिंद । देषंत जानि धुम्र रूप इंद ॥ छं०॥ ९६०॥

(१) ए. कृ. को.-कंसवे ।

बिरसंह इसौ षाटंत सेन। रिन जुवंत सैन उडुंत रेन॥
सांखुली सहस मलनेत बंध। दस सहस ग्राम पट्टेति बंध॥
छं० ॥ ६६१ ॥

विक्रमादित्य कमधज्ज राइ। जिन देस भोग लीयात नाथ॥
भुज राज सुभट दो सहस सेन। बंधिया राइ अवधूत तेन॥
छं० ॥ ६६२ ॥

मोरीति सुभट सादूल नरिंद। कंठिया राव वासीति हिंद॥
बघेल सूर सोहंत सेन। लिन्नीय पग्ग बल दृष्षि नैन॥
छं० ॥ ६६३ ॥

लंगरिय राव सथ्थह भुआल। अध देस दिद्ध व्याघात काल॥
पुंडीर चंद सोहंत सथ्थ। किरनाल नेघ कीनी अकथ्थ॥
छं० ॥ ६६४॥

परिहार सुअन तारन सु सोह। देषंत अछर करि मोह सोह॥
केहरिय मल्हनासह विधूस। बंधनौर वास सत गाइ भूस॥
छं० ॥ ६६५ ॥

हरिदेव सहस सामंत रूप। अहव सु आज अवनी अकूप॥
उहठी गंभीर सोहंत रह। रज रीति रूप रष्षीति रेह॥
छं० ॥ ६६६ ॥

सामंत राइ पुहकर समथ्थ। जिन लीन दिल्लि जोधान बाथ्थ॥
दाहिमौ कन्ह समियान गहु। बंधि लिय राय सोक तल बहु॥
छं० ॥ ६६७ ॥

चहुआन पंचाइन सहस सेन। चलंत सथ्थ उडुंत रेन॥
परिहार इसौ रिनधीर सोह। रिन चढ़े अम्म आलिंम लोह॥
छं० ॥ ६६८ ॥

सामंत सित्त पंगुर नरेस। तिन पिट्ठ सूर सत्तह कहेस॥
तिन पिट्ठ सूर सुभटह हजार। रिन जुद्ध करंतह मार मार॥
छं० ॥ ६६९ ॥

सामंत एक बुंदह सु अत्त। उट्ठंत बीर घरि एक सत्त॥

जुध करहि सूर धड़ मचहि सार। मत्तकहि पिठु करै मार मार॥
छं० ॥ ९७० ॥

पंगुरै देषि चित चक्रित नाथ। असमान सीस लगि ढिल्ल नाथ॥
डेरौ सुदीन चयकोस माहि। जे लिए रखत उत्तंग साइ॥
छं० ॥ ९७१ ॥

अनेक कमल अनेक रूप। रह वास थान तल उंच सूप॥
कनवज्जराय तब उठ्ठि चल्लि। रायान राय साथा न ह्लल॥छं०॥९७२॥

दस लष्य रष्षि चौकी भुआल। इंद्र रूप दरस सेवंत काल॥
प्रथिराज प्रात कीनौ पयान। दस लाष वींटि परि परस [1]भान॥
छं० ॥ ९७३ ॥

जैचन्द का हुक्म देना कि पड़ाव घेर लिया जाय, पृथ्वीराज जाने न पावे।

कवित्त॥ कहि सब कनवज राइ। भज्जि प्रथिराज जाइ जिन॥
असिय लष्य हय दलह। षबरि किज्जै सु पिन्नषिन॥
हसिय सव्व सामंत। रोस प्रथिराज उहासै॥
मिलिय सेन रघुवंस। चंद तब भट्ट प्रगासै॥
इह दैत्य रूप जुध मंगिहै। भाज नीक परतह वहै॥
कनवज्ज नाथ मन चिंत इह। जुध अनेक बल संग्रहै॥छं०॥९७४॥

पहचान्यौ जयचंद। इहत दिल्ली सुर लिष्यौ॥
नहिय चंड उनिहार। दुसह दारुन तन दिष्यौ॥
कर संध्यौ करिवार। कहै कनवज्ज मुकुटमनि॥
हय गय दल पष्परहु। भाजि प्रथिराज जाइ जिन॥
इत्तनौ सोच भुअपति उर्यौ। सुनि नरिंद किन्नौ न भौ॥
सामंत सूर हसि राज सों। कहै भलौ रजपूत भौ॥ छं० ॥ ९७५ ॥

इधर सामंतों सहित पृथ्वीराज का कमरें कस कर तैयार होना।

(१) ए. कृ. को.-पासिमान।

धनि धनि धनि सामंत । सूर कहि राज इंद बर ॥
निरषि हरषि कर करषि । परषि कनवज्ज नाथ तर ॥
निरभै सोम सिंगार । करन कलहंत मंत मन ॥
नरनि नाह कन्हइ कमंध । उच्चर्‌यो बीर तन ॥
आभासि अवर आनन सुभट । यह मंति चहू चलन ॥
करि साथ तुरंगम सथ्थ भर । कसि ठहू अप अप बलन ॥
छं० ॥ ९७६ ॥

दोनों ओर के बीरों की तैयारियां करना ।

रसावला ॥ उठी पंग राजी, रवी तेज साजी । उठे बीर सूरं, छछोह सभीरं ॥
छं० ॥ ९७७ ॥

भृंगी राज राजी, सुराजी बिराजी । चिह्न पास साजी, अरी दोस गाजी ॥
छं० ॥ ९७८ ॥

दोऊ रोस जग्गी, प्रलै जानि अग्गी । .... ॥ छं० ॥ ९७९ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों की तैयारियां और उनका उत्तेज ।

कवित्त ॥ कंउ सूर दाहिम्म । अंग लग्गी सुवास तन ॥
लष्प मद्धि दुहु प्रगटि । अग्गि उट्ठी सूरं घन ॥
चंद बीय ज्यौं बहू । अग्गि लग्गी दरसानी ॥
हय [1]हय हय उच्चार । गहग्गह सुनिये बानी ॥
लंगरीराव [2]लोहा लहारी । चावौगो चहुआन दल ॥
बर भरी बीर जित्तन अरिय । [3]मुगति पंथ षुल्लिय सु बिल ॥
छं० ॥ ९८० ॥

कवित्त ॥ पत्रैसर प्रथिराज । राज सोमेसर संभरि ॥
लंगी लंगरराइ । राय संजम सुअ अंबरि ॥
वारा हाथह भुल्लि । बघ्घ उठ्यौ लोहानह ॥
पारह्नी भुल्लि धार । मूल चंप्यौ चहुआनह ॥
बर बीर बराहां उप्परैं । केहरि बह्नारी बढन ॥
इक चष्प क्रन्न करैं पग्ग इक । सावकं मुष लग्गा रहन ॥ छं० ॥ ९८१ ॥

(१) मो. गय । (२) ए. कृ. को.-लोहां । (३) ए. कृ. को.-मुकति ।

अड्डा आसन अड्ड। राज अड्डा तंमूलं ॥
अड्डा देस सुवेस। एक आदर संमूलं ॥
पंगानै दीवान। रहै न रह्यौ चलि सथ्यह ॥
काया तुंग सु कन्ह। देव साह्यौ भुज वथ्थह ॥
गुरवार रत्ति गोचर कियौ। प्रात प्रगट्टत छुट्टयौ ॥
दरबार राव पहुपंग दल। चौकी चौरंग जुट्टयौ ॥ छं० ॥ ६८२ ॥

पंग दल की तैय्यारी और लंगरीराय का पंगदल को परास्त करके राजमहल में पैठ पड़ना।

पद्धरी ॥ जुध जुटन लंग उट्ठयौ भीम। मानौं कि पथ्थ गो ग्रहन सीम ॥
संभरिय राज सों करि जुहार। चय सहस सुभट सजि लोह सार ॥ छं० ॥ ६८३ ॥

मद गंध करी च्यालीस सोह। गज फूल कनक झप्पह झरोह ॥
भानेज सहसमल सथ्थ व्योम। धुंधरिग भान दुह दिग्ग धोम ॥ छं० ॥ ६८४ ॥

हम्मीर कनक राठौर बंस। चाल्यौ कि कृष्ण मारनह कंस ॥
हरि सिद्ध जाइ कीनौं प्रनाम। दुअ सहस महुर दुज दिन्न दाम ॥ छं० ॥ ६८५ ॥

दरबार जाइ दरबान रुक्कि। सत सहस पौरि दरवान मुक्कि ॥
लप तीन महल चौकीन हल्लि। परधान सुमिच तव तेग झल्लि ॥ छं० ॥ ६८६ ॥

हहकारि सीस दर गयौ लंग। हल हलिय सुभट देषंत पंग ॥
उंचे अवास जाली सु भंति। दस पंच महल मंडी जु पंत ॥ छं० ॥ ६८७ ॥

तिन मद्धि पंग देषै सु भट्ट। अनेक अवर मिलि एक यट्ट ॥
घम घम निसान चय लष्य बज्जि। सिंधूर राग करनाल सज्जि ॥ छं० ॥ ६८८ ॥

गुजरत्त सह जंगी तवल्ल। मानो कि भृम्म करिहै जु मल्ल ॥

(१) मो.-वांम।

अनेक गिद्धि परि ठौर ठौर। जंबुक कुलाह जिय नद्द सोर॥
छं० ॥ ६८९ ॥

चौसट्ठि रुद्द तुंवर [1]अनेय। रंजि रंभ रही टगटगी लेय॥
संजोगि मात पुच्छे सु जोइ। आचिज्ज एह यह कवन लोइ॥
छं० ॥ ६९० ॥

अद्वा सु अंग इह कहां दिट्ठ। तरवारि झपट पारंत रिट्ठ॥
मुह मुह चमक्कि दामिनि झपट्टि। नय लष्ष घटा लीनी लपट्टि॥
छं० ॥ ६९१ ॥

लंगरीराय के आधे धड़ का पराक्रम वर्णन और उसका शान्त होना।

अनेक छिंछ आकास उट्ठि। जैचंद यट्ट रहे निट्ठ निट्ठ॥
विहथंत तेग [2]वाहत अछेग। उड्डंत सीस धर परत वेग॥छं०॥६९२॥
निरपंत सीस घर मड्डि पंग। दुअ लष्ष सेन करि मान भंग॥
हल हले सहर दुनियां अकंप। वाडलिय लग्गि [3]उड्डंत लंप॥
छं० ॥ ६९३ ॥

जयचंद घरनि सब निरषि ब्योम। धुंधरिग धराधर उड्डि धोम॥
उड्डंत बीर झपटंत सेन। लरथरहि परहि उड्डंत तेन॥
छं० ॥ ६९४ ॥

निकल्यौ महौदधि जन्न बीर। मुहु लेय चिन्न उतर्यौ नीर॥
लेयंत सीस हर हार कीन। बरयौ सु मिच अपछरन लीन॥
छं० ॥ ६९५ ॥

किलकंत सट्ठि रुधि पीय पूर। सम्हौ जु जुद्ध जे किये सूर॥
अंतह अलुभिझ पग बेरि बाहि। धर झारि धार भर पारि याहि॥
छं० ॥ ६९६ ॥

षहचर उड़ंत पल धापि लेय। आवंत रथ्थ अनेक केय॥
चालंत रुधिर सलिता प्रवेन। तिन मध्य चली अनेक सेन॥
छं० ॥ ६९७॥

(१) ए. कृ. को.-अनेक। (२) ए. कृ. को.-चाहत। (३) को.-उड्डंत।

पट्टनह हट्ट बिच चलिय नद्द। मारीय सु करि वहता सु सद्द॥
चौसट्ठि पच बुदबुदा चल्लि। अंगुली भिंग सल सलत सल्ल॥
छं० ॥ ९९८ ॥

भरसुंड करी मग रहबि बुड्डि। कमलनि सुभंत सर मज्झि रुड्डि॥
उप्परह भौंह सो भँवर तुंड। अपछर अनेक तट जानि झुंड॥
छं० ॥ ९९९ ॥

घुप्परिय कछ सेवाल केस। लंगरिय किड्ड कौड़ा नरेस॥
ऐसौ सु जुड करिहै न कोउ। चय लष्य मान आवट्ट सोउ॥
छं० ॥ १००० ॥

घर मज्झि रुधिर पलचर अमेय। घर छोड़ि सरन हर सिद्धि लेय॥
तुट्टी अकास धरनिय पलट्टि। गिद्धनी सलित उप्पर झपट्टि॥
छं० ॥ १००१ ॥

संभले राज प्रथिराज सेन। करि है न जुद्ध करुना सु केन॥
संजम्मराय सुत सकल संभ। गम्मयौ दरिद्र रुद्र तनौ रंभ॥
छं० ॥ १००२ ॥

किलकिका नाल छुट्टी अग्राज। लै चली लंग पर महल साज॥
दस कोस परे गोला रनक्कि। परि महल कोट गज्जी धनक्कि॥
छं० ॥ १००३ ॥

संजमह सुअन लै चली रंभ। सब लोक मज्झि हूअौ अचंभ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ १००४ ॥

जैचन्द के तीन हजार मुख्य योद्धा, मंत्री पुत्र भानेज और भाई आदि का मारा जाना।

कवित्त ॥ परे तुरिय सत सहस। परे मदगंध सहस्सह॥
परे पेत पंगार। पऱ्यौ मंची सु धरंनह॥
परे सुभट चय लष्य। परे लंगा चहुआनह॥
परि सहसो भानेज। परे चय सहस सबानह॥
परि धनी सेन किय उद्ध गति। रुधिर कम्लित कनवज बही॥
घर मज्झि परी गिद्धनि अछरि। सु कविचंद ऐसी कही॥ छं०॥१००५॥

लंगरीराय का पराक्रम वर्णन ।

इह जुड्ड लंगरिय । आय चौकी सम जुथ्थौ ॥
एक अंग लंगरिय । तीन लष्षह हय पुथ्थौ ॥
मार मार उच्चरंत । परी गिड्डा रव भष्षन ॥
गज वाजिच निहाय । वज्जि उत्तराधि दष्षिन ॥
हूम भिन्यौ लंग पंगह अनी । हाय हाय मुष फुट्टयौ ॥
हल हलत सेन असि लष्ष दल । चौकी चौरंग जुट्टयौ ॥
छं० ॥ १००६ ॥

मंची राव सुमंत । हथ्थ विंटचौ सचलंतौ ॥
दुज्जाई दिल्लीप कोप । ओप कुंजरनि बढ़ंतौ ॥
हालो हल कनवज्ज । मंभ्क केहरि कूकंदा ॥
संजमराव कुमार । लोह लग्गा लूसंदा ॥
चहुआन महोवै जुड्ड हुअ । ग्रेहा गिद्ध उड़ाइयां ॥
रन भंग रावनै वर विरद । लंगै लोह उचाइयां ॥
छं० ॥ १००७ ॥

एक कहै अप्पान । एक कहि बंधि दिवाना ॥
बंधौ बंधन हार । मार लड्डी सिर कान्हा ॥
बाबारी बर तुंग । पग्ग [1]साहै बिरुभ्काना ॥
लंगी लंगरराव । अड्ड राजी चहुआना ॥
उरतान ढंकि कमधज्ज दल । संजम राव समुह हुअ ॥
प्रारंभ जुद्द जुद्दे सबल । चलि चलि बीर भुजंग [2]भुअ ॥
छं० ॥ १००८ ॥

पृथ्वीराज का धैर्य्य ।

जौ पच्छिम दिसि उयै । पुब्ब अंथवै दिनंकर ॥
धर भर फनि फन मुरहि । गवरि परहरै जु संकर ॥
ब्रह्म वेद नह चवै । अन्नित जुधिष्टिर जौ बुल्लय ॥
जौ सायर जल छिलै । मेर [3]मरयादह डुल्लय ॥

(१) ए. कृ. को.-सोहै । (२) ए. कृ. को.-हुअ । (३) मो.-मरयादा ।

इतनीय होय कविचंद कहि। इह इत्तौ पिन में करहि॥
तुम हीन दीन सब चक्कवै। प्रथीराज उर नहिं डरहि॥
छं० ॥ १००९ ॥

लै संजोगि न्त्रप षेत। जाइ ठढ्ढौ एकत बर॥
तब लगि पंग कनवज्ज। वीर चढ्ढै संमुह धर॥
रावन रन [1]उत्तऱ्यौ। सामि फौजह अधिकारिय॥
मीर कटक मोकलहु। ताम रुक्यौ झुकि भारिय॥
बनवीर रान सिंहा सुभर। मुकल्यौ वेगि चतुरंग दल॥
सज्जे सुबंध चहुआन भर। .... ॥ छं० ॥ १०१० ॥

अपनी सब सेना के सहित रावण का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना।

तब झुकि पंग नरिंद। दिष्टि कीनी झुकि अग्गौ॥
जिम सुकिया दुति बचन। दूत टारिय अंपि अग्गौ॥
ज्यौं जोगिंद सुष इंद। रंभ टारै तप भग्गै॥
झुकिय कित्त [2]कुटवार। पंग रावै द्रव मग्गै॥
भयभीत न्त्रपति रावन्न तजि। तजै धनज जोगिंद तजि॥
यों बढ्यौ राज चहुआन पर। अप्प सेन नलवारि रजि॥
छं० ॥ १०११ ॥

रावण की फौज का चौतरफा नाकेबंदी करना।

अप सेन सम नरिंद। लरन धायौ रावन बर॥
काल जाल जम जाल। हथ्थ कीने जु अग्गि गिरि॥
[3]सजि सनाह जमदाह। कूह मंची जु अत्ति बर॥
सुनि सु कान रव पाल। वीर संभरि निसान घुरि॥
फिरि पऱ्यौ सेन इन उप्परहि। सो ओपम कविचंद कहि॥
फट्टी फवज्ज चावद्दिसह। गंग कूल बक्कारियहि॥ छं० ॥ १०१२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-उच्चऱ्यौ। (२) ए. कृ. को.-कोटवार।
(३) मो.-सलि।

रावण का पराक्रम और उसकी वीरता का वर्णन।

फिऱ्यौ हथ्थ जमजाल। ग्रहन अति चार पच्छ फिरि॥
नीर थंभ थह फिऱ्यौ। वुट्टि जल फिरै मीन हरि॥
पवन फेर पित फिरै। बीर ज्यों फिरै हकाऱ्यौ॥
फिरै हथ्थ बर रोस। पेम ज्यों फिरै संभाऱ्यौ॥
भज्जई हथ्थ हथ्थीअ बल। करिस नेंन रत्त रुधिर॥
जानै कि दठ्ठ जम की विसल। चुबै जानि मंगलति झर॥
छं० ॥ १०१३॥

मोरि हथ्थ बिहारि। काल बिहारि भवन कौं॥
तिरस जानि रस मुठ्ठि। चल्यौ मोरन्न पवन कौं॥
काम अंध दिष्षै न कोइ। सोच सुद्धित मदपानिय॥
राज मद्द राजनिय। ग्यान सुद्दिन सुर पानिय॥
करि देषि मंत रावन बलिय। उप्पर हरि धावै लरन॥
ओपम्म चंद जंपै विसल। तत्त मंत कबहूं करन॥ छं० ॥ १०१४॥

ज्यों कलंक पर हरै। न्हान गंगा तिथ्थह बग॥
अध्रम ध्रम्म परहरै। अजस पर हरै सुजस मग॥
माह चवथ ससि तजै। देवध्रम तजै सूद्र नर॥
चंप भवर गुन तजै। भोग जिम तजै रिष्प गुर॥
इम मुक्कि करिय रावन बलिय। राज सेन उप्पर पऱ्यौ॥
जमजाल काल हथ्थी सु बर। ता पच्छै क्रम क्रम पऱ्यौ॥
छं० ॥ १०१५॥

रावण के पीछे जैचन्द का सहायक सेना भेजना और स्वयं अपनी तैयारी करना।

लरत राज रावन्न। पंग पच्छै फवज्ज फटि॥
सूर किरन फट्टंत। बान छुट्टंत पथ्थ फटि॥

(१) ए. कृ. को.-बचै। (२) ए. कृ. को.-सोरन्न।

है गै मत्त मतंग। [1]दंद दंतिन धर छाइय॥
ज्यों बद्दल इल उप्परि। छांह चल्लै सो धाइय॥
ता पच्छै पंग अप्पन चढ़न। सुनि रावन आहत जुध॥
जाने कि राज चहुआन को। इसौ दरसि भग्गौ जु बँध॥
छं०॥ १०१६॥

चांद्रायन॥ इह ओपम कविचंद। पिष्षि [2]तन रन्नियं॥
सोज राज संमेत। जपेषय तन्नियं॥ छं०॥ १०१७॥

अरिल्ल॥ सूर करी मधि डार कहंकह। कहै प्रथिराजन लेउ गहंगह॥
.... । .... ॥ छं०॥ १०१८॥

पंगराज की ओर से मतवाले हाथियों का झुकाया जाना।

दूहा॥ छूटत दंतिन संकरनि। सो मत मंत उतंग॥
गात गिरव्वर नाग गति। [3]चालत सोभ सुअंग॥ छं०॥ १०१९॥
सत्त सूर सोभत सजत। अभंग सेन भर राज॥
गहन राज प्रथिराज कों। सेन सुरंगह साज॥ छं०॥ १०२०॥

पंगराज और पंगनी सेना का क्रोध।

विअष्षरी॥ देषियहि राज रस सूर भल्लै। सूर रज बीर सारोस इल्लै॥
वेंन आकास सरं लल कल्लै। देषियहिं पंगुरें नेंन लल्लै॥
छं०॥ १०२१॥

दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना।

कवित्त॥ मिले सूर बज्जे अघात। [4]सस्त्र बज्जे अस्त्रन सों॥
ज्यौं ताल ताल बज्जए। जीभ चिय मग उलाल सों॥
गजर बज्जि घरियार। लोह भय अंति अघानं॥
बजि त्रिघात उतंग। सस्त्र घल्लै सुर पानं॥

---

(१) ए. कृ. को.- दंत। (२) ए. कृ. को.-रम, को.-तर।
(३) ए. कृ. को.-चालति। (४) ए. कृ. को.-सस्त्र वज्जे जु सस्त्र सों।

चहुआन आन कमधज्ज करि। पाइ मंडि आघाट दुज ॥
हक्कै पहक्क कायर परै। देव रूप आहत्त सुज ॥ छं० ॥ १०२२ ॥
तेग बहत मंडली। रोष जनु करी तुंग बर ॥
पूर जूह आवंत। रुधिर रन लोह लग्गि पर ॥
स्वामिध्रंम सों लच्छि। भेर हय लच्छि न ग्राहै ॥
रगत पील मभिक गिरत। तिनह में मोती बाहै ॥
भेदै न कमल जल सुबर बर। कमल पच छिंटन्न लग ॥
छवि गात तेग आतुर बहै। रुधिर छिंट छुट्टै न जुग ॥छं०॥१०२३॥

पंगराज का सेना को प्रगट आदेश देना।

दूहा ॥ तब हंकारौ कीय न्टप। चढ़ि मच्छर बर जीव ॥
जनु प्रजरंती अग्गि महि। लै करि ढारिय घीव ॥छं०॥१०२४॥
मंचिय जुड अनुड सुनि। अरियन ग्रहन न सार ॥
रे चहुआन न जाइ घर। पंग पिटारै मार ॥ छं० ॥ १०२५ ॥
इह कहंत पंगह चल्यौ। आइस ले सब सेन ॥
लेहु लेहु इम उच्चरिय। जन जन मुष मुष बेंन ॥ छं० ॥ १०२६ ॥

पृथ्वीराज का कविचंद से पूछना कि जैचन्द को पंगु क्यों कहते हैं।

*पुच्छि नरिंद सु चंद सौं। तुम बरदाय कविंद ॥
सब पंगुर किहि विधि कहत। यह जयचंद सु इंद ॥
छं० ॥ १०२७ ॥

कवि का कहना कि इस का पूरा उपनाम दलपंगुरा है क्यों कि उसका दलवल अचल है।

कवित्त ॥ जैसे नर पंगुरौ। विनु सु [1]भंगुरी न हल्लहि ॥
आधारित भंगरी। हरू वह वत्त न चल्लहि ॥
तैसे रा जयचंद। असंप दल पार न पायौ ॥

*छन्द १०२७ और १०२८ मो.-प्राति मं नहीं है।　　　　(१) को -डंगुरी।

चालुक इक सर सरित। दलन हरवल्ल अघायौ ॥
दिसि उभय गंग जमुना सु नदि। अड्ढ कोस दल तव बध्यौ ॥
कविचंद कहै जैचंद न्रप। तातें दल पंगुर कह्यौ ॥ छं० ॥ १०२८ ॥

जैचन्द की सेना का मिलना और पृथ्वीराज का पड़ाव पर घेरा जाना।

चंद अग्नित भरि बीर। विषय झाला सु प्रजलि चलि ॥
नेंन दंत आरुहिज। मत्त दंती सु दंत घुलि ॥
तम तामस उक्करै। बीर नीसान धुनंके ॥
बीर सद्द सुनि क्रन्न। मद्द गजराज भुनंके ॥
विंटये सूर सामंत न्रप। रावन सब न्रप मग्ग गसि ॥
असि लष्य न्रपति पहुपंग दल। सूर [1]चिंत नन मंत बसि ॥ छं० ॥ १०२९ ॥

दूहा ॥ ग्रसि रावन चिहु मग्ग रहि। सर प्राहार प्रमान ॥
ग्रहन राज चहुआन कौं। पंग वज्जि नीसान ॥ छं० ॥ १०३० ॥
साम सनाह कनंक वर। सलप सु लष्य प्रमान ॥
मग रष्पन रजपूत बट। अरि मुक्कौ न सु थान ॥ छं० ॥ १०३१ ॥

कवित्त ॥ रावन दल दलमलत। हलत भग्गेव सुभर अरि ॥
भग्गें दल बोहिथ्थ। बीर भाटी पहार फिरि ॥
घरी एक आवृत्त। झंझ बज्जी जुध जग्गी ॥
जनु कि महिष मेंमंत। ग्रत्त विभ्रम बल लग्गी ॥
भर सिंघ पंच पचाइनह। तजन राज रज राज भिय ॥
पांवार धन्नि धावर धनी। मग्ग पग्ग मग भीर लिय ॥ छं० ॥ १०३२ ॥

जैचन्द का मुस्लमानी सेना को आज्ञा देना कि पृथ्वीराज को पकड़ो।

चौपाई ॥ वज्जे सुनवि पंग सुर रूपं। चक्रित चित्त भूपाल सु भूपं ॥
[2]पुक्कारे वर उन न्रिप अंगं। अरि गौ भंजि थान सुर मंगं ॥
छं० ॥ १०३३ ॥

(१) मो.-चित्त। (२) ए. कृ. को.-पुक्कारी।

पद्धरी ॥ अग्गें सुपंग बज्जीर बीर । फुरमान अप्पि अरि गहन मीर ॥
बंधि सिलह कन्ह उभ्भौ करूर । मनु धाइ छुट्टि [1]भद्दव तिहूर ॥
छं० ॥ १०३४ ॥

सन्नाह सज्जि गोरी पहार । जानियै हूर सायर अपार ॥
हज्जार सित्त सजि सुभर मीर । मिलि पंग हेत बर बीर तीर ॥
छं० ॥ १०३५ ॥

जानियै बीर बीरन्न जूर । कंद्रप्प किति जानीय हूर ॥
मनुं हक्क सज्जि सजि सिलह थान । बहकरै बीर दस कंध मान ॥
छं० ॥ १०३६ ॥

हज्जार साठि सजि परे मीर । कलहंस मान कसि अंग बीर ॥
हय गय पलान पहुपंग घुल्लि । दे्पंत किरनि बर किरनि डुल्लि ॥
छं० ॥ १०३७ ॥

हलहलत होत गजराज छुट्टि । आयसं आनि धन पंग लुट्टि ॥
सन्नाह सज्जि सोभै सु भूप । द्रप्पन झलक्कि प्रतिब्यंब रूप ॥
छं० ॥ १०३८ ॥

सोभै अनेक आकार बीर । मानो मज्झि इक्क सोभै सरीर ॥
पष्परै भीर हय भीर जंपि । गति डुलै प्रबत प्रव्वत्त सु कंपि ॥
छं० ॥ १०३९ ॥

बर हुकम पंग न्रिप इहय दीन । टिड्डीस अन्न सम गवन कीन ॥
बिछुरे सेन कमधज्ज थान । ग्रहन भौ ग्रहन प्रथिराज भान ॥
छं० ॥ १०४० ॥

उग्रहन बत्त करतार हथ्थ । हक्कवन धाइ चहुआन सथ्थ ॥
छं० ॥ १०४१ ॥

युद्ध-रँग राते सेना समूह में कवि का नव रस की सूचना देना ।

कलाकल ॥ नचि नौरस थान अदभ्भुत बीर । भयौ रस रुद्र कवै कवि भीर॥

---

(१) मो.-भद्दव कि ।

भैभंति भयानक कायर कंपि। करुना रस केलि कलामुष जंपि ॥
छं० ॥ १०४२ ॥

तहां रस संकर द्दै अरि संच। उथ्यौ अदबुद्द महारस नंचि॥
लियौ रस निड्डर बीभछ अंग। दिष्यौ चहुआन सु सेनह पंग ॥
छं० ॥ १०४३ ॥

हस्यौ रस हास सलष्य पवार। बरं बरझालि सु बीर दुधार ॥
भयौ रस सत्त मुगत्ति य मग्ग। सुधारहि काम चलै जस अग्ग ॥
छं० ॥ १०४४ ॥

रचैइ सिंगार बरब्बर रंभ। झुल्यौ रस बीर षगं षग अंभ ॥
.... । .... छं० ॥ १०४५ ॥

दूहा ॥ कल किंचित किंचित करहि। सुरग सुधारहि मग्ग ॥
भंजौ लज्ज मुकत्ति बर। ग्रहि भग्गीह न दग्ग ॥ छं० ॥ १०४६ ॥

पृथ्वीराज का सामंतों से कहना कि तुम लोग जरा भीर सम्हालो तो तब तक मैं कन्नौज नगर की शोभा भी देख लूं।

सकल सूर सामंत सम। बर बुल्यौ प्रथिराज ॥
जो रुक्कौ षिन षेत में। देषौं नगर विराज ॥ छं० ॥ १०४७ ॥

सामंतों का कहना कि हम तो यहां सब कुछ करें परंतु आपको अकेले कैसे छोड़ें।

कवित्त ॥ हम रुक्कैं अरि जूह। स्वामि कौ तजै इकल्लै ॥
कै रपि दुज्जन पढन। स्वामि मुक्कियै न ढिल्लै ॥
नारिंघनि करि देव। ताप तप जांहि देव बर ॥
सुनहि राज प्रथिराज। दिट्ठ बंधीय अप्प कर ॥
सो चलै संग छाया रुकिय। कै छांह स्वामि मुक्यौ भिरन ॥
चहुआन नयर दिष्षन करै। दुरन देव सोभै किरन ॥
छं० ॥ १०४८ ॥

कन्ह का रिस होकर कहना कि यदि तुम्हें ऐसाही कहना था तो हम को साथ ही क्यों लाए।

दूहा ॥ कहै सब्ब सामंत सौं । एकल्लौ बिन वग्ग ॥
दइ विधिना फिरि में लई । जाय परस्सो गंग ॥ छं० ॥ १०४९ ॥
बोल्यौ कन्ह अयान न्रप । रे मत मंड समथ्थ ॥
जो मुक्कै सत सथ्थियन । तौ कित लायौ सथ्थ ॥ छं० ॥ १०५० ॥
जौ मुक्कौं सत सथ्थियन । तौ संभरि कुल लज्ज ॥
दिष्षन करि कनवज्ज कौं । फिर संमुह मरनज्ज ॥ छं० ॥ १०५१ ॥

परन्तु पृथ्वीराज का किसी की बात न मान कर चला जाना।

चल्यौ नयर दिष्षन करन । तजि सामंत सुलच्छि ॥
गौ दिष्षन दिष्षन करन । चित्त मनोरथ बंछि ॥ छं० ॥ १०५२ ॥
कुंभ चित्त चहुआन कौ । चौकट बुंद न अम्भ ॥
जल भय पंगह ना भिदै । ज्यौं जल चौकट कुंभ ॥छं०॥१०५३॥

युद्ध के बाजों की आवाज सुनकर कन्नौज नगर की स्त्रियों का वीर कौतूहल देखने के लिये अटारियों पर आ बैठना।

गाथा ॥ दस सुंदरि गहि बालं । विसालं सुष्ष अलनि मिलि अलियं ॥
सुनि वज्जे पहुपंग । चरितं सो भुल्लियं बाला ॥ छं० ॥ १०५४ ॥
चढ्ढि गवष्यन बाला । सु विसालं जोइ राजियं राजं ॥
थक्के विमान सूरं । सुभंतिय वाय कंसजियं ॥ छं० ॥ १०५५ ॥

दूहा ॥ देषन लच्छिन न्रपति बर । गो दच्छिन क्रत बेर ॥
अवन राज चहुआन बढि । पंग घरंघर वेर ॥ छं० ॥ १०५६ ॥

जैचन्द का स्वयं चढ़ाई करना।

जो पत्ती पत मरन की । बोलि सहेट प्रमत्त ॥

इम सौलत बंचे सु बट। न्निप तिह मिलहि न मत्त॥छं०॥१०५७॥
इह कहंत पंगह चल्यौ। बजि निसान सरभर॥
सकल सूर सामंत सम। लेहि नरिंदह घेरि॥ छं०॥ १०५८॥

कवित्त॥ पल्लान्यौ जयचंद। गिरद सुरपति आ कंप्यौ॥
असिय लष्य तोषार। भार फनपति फन तंप्यौ॥
सोरह सहस निसान। भयौ कुहराव भूअ भर॥
घरी मद्धि तिहुलोक। नाग सुर देव नाम नर॥
पाइक धनुद्धर को गिनै। असी सहस गैंवर गुरहि॥
पंगुरौ कहै सामंत सम। लेहु राज जीवत घरहि॥ छं०॥ १०५९॥
हय गय दल धसमसहि। सेस सलसलहि सलकहि॥
सहस नयन झलभलहि। रैंन पल पूरि पलकहि॥
तरनि किरन मूंदयौ। मान द्रगपाल स छुट्टिहि॥
वसंत पवन जिम पच। अरिय इम होइ सु यट्टहि॥
पायान राय जैचंद कौ। विगरि पिथ्थ कुन अंगमै॥
हय लार बहति भाजंत थल। पंक चहुट्टै चक्कवै॥ छं०॥ १०६०॥

जैचन्द की चढ़ाई का ओज वर्णन।

विजय नरिंदह तनौ। रोस करि इम धरि चल्ल्यौ॥
इम हम पुर षुंदत। एम पायालह (१)डुल्ल्यौ॥
एम नाद उछर्यौ। एम सुर इंद गयंदहि॥
एम कुलाहल भयौ। एम मुद्दित रवि इंदहि॥
दल असिय लष्य पष्पर परहि। एम भुअन आकंप भय॥
पंगुरौ चल्यौ कविचंद कहि। बिन प्रथिराजह को सहय॥
छं०॥ १०६१॥
एक एक अनुसरिग। अंग दह लच्छि कोटि नर॥
धानुक धर को गिनै। लष्य पचासक हैंवर॥
सहस हस्ति चवसट्ठि। गरुअ गाजंत महाभर॥
समुद सयन उलटंत। डरहिं पन्नग सुर आसुर॥

(१) को.-झुल्यों।

जैचंद राइ चालंत दल । चक्क सूर पुज्जन चल्लिग ॥
गढ़ गिरिग्ग जलथल मिल्लिग । इत्ते सब दिष्षिय जुरिग ॥
छं० ॥ १०६२ ॥

पंगराज की सेना के हाथियों का वर्णन ।

मत्त गत्त सन भिरिग । हट्ट पट्टन सह तुट्टिग ॥
कच्छि कच्छि जुरि भीर । घंट घंटा हरि फुट्टिग ॥
बाल बाल आलु झिझ । करन सम करन लागि पग ॥
मैंगल मद्गल चलत । थार हस्ती सन चंपिग ॥
जैचंद राय चालंत दल । गिरिवर कंपहि चंद कहि ॥
देषंत राइ भंभरि रहहि । दंति पंति दस कोस लहि ॥
छं० ॥ १०६३ ॥

दूहा ॥ जल थल मिलि दुअ कंप हुअ । टुटि तरवर जल मूल ॥
देषि सपन सामंत बल । छलन कि वामन फूल ॥ छं० ॥ १०६४ ॥

दल पंगुरे के दल बद्दल की चढ़ाई का आतंक वर्णन ।

बाघा ॥ दह दिसा थर थिथरंत । दिगपाल दसन करंत ॥
उरबी न धारत सेस । ससि होत फेर दिनेस ॥ छं० ॥ १०६५ ॥
धरधुंध रज छदि व्योम । सद नास थिर गहि गोम ॥
कठ कमठ पीठ कमंठ । थल विथल फिरत न कंठ ॥ छं० ॥ १०६६ ॥
धुरि मेर मुरि मुरि जात । सर झुकि सबित उपात ॥
मम चढ़हु पंग नरिंद । हरहरत गगन गुरिंद ॥ छं० ॥ १०६७ ॥
हरि सीस रज बरषंत । द्रिग उरग मद्धि परंत ॥
हुंकार प्रगटित अग्गि । चिय नयन प्रजलि विलग्गि ॥छं०॥ १०६८ ॥
ससि तवैं अमिय पतंत । [1]अवि बुंद सिंह जगंत ॥
बबकारि [2]गज्जत सद्द । विड्डरत धवल दुरद्द ॥ छं० ॥ १०६९ ॥
सिव फिरत तिन सँग जूर । नन चढ़हु पंगह सूर ॥
ब्रह्मंड नष अरु एक । इल मिलत होत समेक ॥ छं० ॥ १०७० ॥

(१) ए. कृ. को.-आप ।　　(२) ए. कृ. को.-सज्जत ।

गन सेंन विथुरित भूमि। घन मिटत नासा धूम ॥
अल प्रलय लोपत लीह। धर थिथरि होत अगीह ॥ छं० ॥ १०७१ ॥
भुअ परत अच्छरि व्योम। नीसान गज्जत गोम ॥
तुम चढ़त जैचंद राज। तिहुलोक डरति अवाज ॥ छं० ॥ १०७२ ॥
कवित्त ॥ डर द्रुग्गम थरहरहि। अडर डरि परहि गरुअ गिरि ॥
चिन बन घन टूटंत। धरनि धसमसहि हयनि भर ॥
सर समुंद थरभरहि। डिढह डिढ डाह करकहि ॥
कमठ पिट्ठ कलमलहि। पहुमि महि प्रलय पलट्टहि ॥
जयचंद पयानौ संभरत। फुनि ब्रह्मंड विछुट्टि हय ॥
मम चलहि मचलि मम चलि मचलि। चलहित प्रलय पलट्टि हय ॥
छं० ॥ १०७३ ॥
दूहा ॥ साजत पंग नरिंद कहुं। विनय स छोनिय बाग ॥
मुगता ग्रह सुक कवित कह। [1]जलथल थग्ग अमाग ॥छं०॥१०७४॥
कवित्त ॥ दल राजन मिलि विभजि। अट्ठ दिग्गं [2]करवर कर ॥
कर धरंत द्रिग अट्ठ। [3]डट्ठ वाराह मुरहि हरि ॥
हरि वराह दिढ दट्ठ। करतु फनवै फन टारहि ॥
फनिवै फनह टरंत। कमठ थोपरि जल भारहि ॥
भारहि सुजल्ल पुप्परि उछरि। उच्छरि है पायाल जल ॥
जल होत होय जगतै प्रलौ। समु चढ़ि चढ़ि जैचंद दल ॥
छं० ॥ १०७५ ॥

समस्त सेना में पृथ्वीराज को पकड़ लेने के लिये हल्ला होना।

दूहा ॥ मढरि मढरि छोनी सु चिय। सत करि छिनक सवल्ल ॥
छत्रपति करि जीरन अधिग। तूं नित नितह नवल्ल ॥छं०॥१०७६॥
धम धमंकि धुकि निष्प महि। रमहि न गंग सु तट्ट ॥
गहहि चंपि चहुआन कों। भव भरि मुद्दित सु वट्ट ॥छं०॥१०७७॥

(१) ए. कृ. को.-"जल थल मग्ग अमग्ग"।
(२) ए. कृ. को.-करु। (३) मो.-मट्ठ, को. डट्ठ।

भौ ठामंक दिसि विदिस कहु। बहु पष्षर बहु राव ॥
मनु अकाल टिड्डिय सघन। पव्वय छुट्टि पहाव ॥छं०॥ १०७८॥

कन्नौज सेना के अश्वारोहियों का तेज और ओज वर्णन।

भुजंगी ॥ प्रवाहंत ताजी न [1]लज्जीय हारे। मनों रब्बि रथ्थं सु आने प्रहारे॥
जिके स्वामि संग्राम झल्ले दुधारं। तिनं ओपमा क्यों बदी जै छिकारे॥
छं० ॥ १०७९ ॥

तिनं साहियं बग्ग गट्टे न सारा। मनों आवधं हथ्थ वज्जंत तारा॥
हयं छट्टियं तेज ठट्टे जिकारा। सयं सज्जियं हूर सव्वै [2]करारा॥
छं० ॥ १०८० ॥

सरे पाषरे प्रान जे मार वारा। तिके कंध नामे नहीं लोह भारा॥
तहां घाट औघट्ट फंदै निनारा। तिनं कंठ भूमंत गज गाह भारा॥
छं० ॥ १०८१ ॥

दिसा राह लाहौर वज्जै तुरक्की। तिनं धावतें धूर दीसै षुरक्की॥
दिसं पच्छिमं भूमि जानै न थक्की। तिनं साथ [3]सिंधी चलै नाव जक्की॥
छं० ॥ १०८२ ॥

पवंनं न पंषी न अंषी मनक्की। तिके सास कट्टै न चंपै न नक्की॥
तिनं राग चंपै न सुद्धी डरक्की। मनों ओपमा उंच आए धरक्की॥
छं० ॥ १०८३ ॥

अरब्बी विदेसी लरै लोह लच्छी। गनै कोनं कंठील कंठील कच्छी॥
धरं षेत षुंदंत रुंदंत बाजी। [4]हरंवी हए एक तत्तार ताजी॥
छं० ॥ १०८४ ॥

तिके पंडु ए पंगुरे राइ साजे। मनों दुज्जन दल तुच्छ देषंत लाजे॥
इसौ एह आपुब्ब कविचंद पिष्यौ। तिनं रब्बि दुजराज सम तेज दिष्यौ॥
छं० ॥ १०८५ ॥

डरं डंबरी रेन अप्पै न पारं। अषीनं [5]पषीनं सषीनं मिहारं॥

(१) ए. कृ. को.-लाजी अहारे।
(२) ए. कृ. को.-तुषारा।　　(३) ए. कृ. को.-सिंधं।
(४) ए. कृ.-हरेवी हए एक ताजी तत्तारी।　　(५) ए. कृ. को.-अषीनं।

तहां कौन सामंत राजं न [1]ठट्टै। मनों मेर उत्तंग हस्ती न चट्टै॥
छं० ॥ १०८६ ॥

मुषं जोव जोवं भरं भूप भारे। [2]तिनं काम कनवज्ज मझ्झै पधारे॥
छं० ॥ १०८७ ॥

दूहा ॥ भर हय गय नीसान बहु। इह दिष्षिय सह थान ॥
जौ चढ़िजै हर [3]दिष्षियै। चिहु दिसि समुद प्रमान ॥
छं० ॥ १०८८ ॥

वृद्धनाराज। जहां तहां हयग्गयं निसान घान घुंमरे।
मनों कि मेघ भद्दवा दिसा दिसान धुंमरे॥
चमक्कती सनाह संग वीज तेज विप्फुरै।
मनो कि गंग न्हाय कै किरन्न भान निक्करै॥ छं० ॥ १०८९ ॥
सपष्षरं प्रमान राज बाज राज सोभई।
मनो कि पंष प्रब्बतं सुफेरि इंद लोभई॥
गहग्गहं जु वाजि नाद तेज हथ्थ विथ्थुरे॥
सुने सबद्द तेज सूर कायरं स विद्दुरे॥ छं० ॥ १०९० ॥

इतने बड़े भारी दलबल का साम्हना करने के लिये पृथ्वीराज की ओर से लंगरी राय का आगे होना।

दूहा ॥ सुनिय सबर दल गंग हिन। लंगा लोह उचाय॥
पंग सेन सम्हौ [4]फिरिय। बोलि वज्र विरुझाइ॥ छं० ॥ १०९१ ॥

लंगरी राय का साथ देने वाले अन्य सामंतों के नाम।

कवित्त ॥ लंगा लोह उचाइ। जूह झल्लिय संमुह भिरि॥
दुज्जन सलष पुंडीर। धरै बंधव उप्पर करि॥
तूंअर तमकि ततार। तेग लीनी गढ़ तत्ती॥
बर पुच मिच अचान। भान कूरंभ सुभत्ती॥
सांषुला सूर बंकट भिरं। मोरी केहरि सूर भर॥

(१) ए.-डट्टै। (२) ए. कृ. को.-फिनं।
(३) मो. दिष्षिकै। (४) ए मो. परिय।

पहु पंग सेन सम्हौ भिरिग। सु बजि बीर बर विप्पहर ॥
छं० ॥ १०९२ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे को प्रचार कर परस्पर मार मचाना।

रसावला ॥ पंग सेनं भिरं। षग्ग षोलं झरं ॥ बीर हक्कं वियं। लोह लंगी लियं॥
छं० ॥ १०९३ ॥

षग्ग लग्गे झलं। भिन्न रत्तं पलं ॥ बीर हक्के अरी। घाय बज्जं घरी॥
छं० ॥ १०९४ ॥

तुंग बाहं बरं। नंषि बङ्कफरं ॥ बीर लग्गे भरं। कालते संघरं ॥
छं० ॥ १०९५ ॥

द्रोन नंचं धरी। मार हक्कं परी ॥ कूक वीरं करी। गिद्ध उड्डे डरी॥
छं० ॥ १०९६ ॥

टूक पावं बटं। षग्ग टेके ठटं ॥ घाइ घुम्मे घनं। मत्तवारे मनं ॥
छं० ॥ १०९७ ॥

कंधनं बंधरं। जंमुषं विड्डुरं ॥ रंभ तारी चसी। हूर पानं हसी॥
छं० ॥ १०९८ ॥

घाव वज्जे घटं। पाइ कै सुब्बटं ॥ अंत तुट्टै बरं। पाइ आलुझ्झरं॥
छं० ॥ १०९९ ॥

भट्ट ऐसे रजं। तंति बंधे गजं। मुगति मग्गे अरी। षग्ग षोली दरी॥
छं० ॥ ११०० ॥

कवित्त ॥ घरी एक आवरत। पंग संघार अरिय पर ॥
लुथ्यि लुथ्य आहुट्टि। रुद्र रस भयत बीर बर ॥
हय गय नर भर भरिय। पर्यौ रन रुद्धि प्रतापं ॥
षग्ग मग्ग अरि हलिय। चलिय धारनि धर आपं ॥
दुअ जन्न भट्ट हक्कारि करि। कमल सेन जिन चिंत परि ॥
उच्चरे ब्रह्म ब्रहमंड सों। गोटन कोट गह्लन फिरि ॥छं०॥११०१॥

चौपाई ॥ धाए न्त्रिपत न लोह अघानं। छुट्टक सिद्ध किद्ध विरुझानं ॥
संझ किधों घरियारन घाई। चच्चर सी चुतुरंग बजाई ॥
छं० ॥ ११०२ ॥

सायंकाल होना और सामंतों के स्वामिधर्म की प्रशंसा।

दूहा ॥ भंजन भीरन जो नृपति। करिभन भौंर चरंच ॥
सांई बिन जीवन्न कों। षोहनि कारन ह पंच ॥ छं० ११०३ ॥
भान न भग्गौ भान चलि। भान भिरंतह भान ॥
अस्ति समंपिय भान कों। दै सिर संकर दान ॥ छं० ॥ ११०४ ॥

युद्ध भूमि की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ पंग बसंत सो सिग सु। गंध गज मद झरि दानं ॥
सो कायर पत पीप। पत्त झर झर कर पानं ॥
प्रसव चंद सिर आन। मान भिरि भिरि अग्गह हर ॥
लज्जा छोह सुरंग। रंग रंग्यौ सु सुरंग बर ॥
बोलंत घाव भवरिय भवर। कूक कूह कोकिल कलह ॥
फुलिग्ग सुभर अंजह सुरन। पवन विविध सेना सुलह ॥
छं० ॥ ११०५ ॥
अट्ठ अट्ठ अरु अट्ठ। एक आगरे पंच बर ॥
पग्ग मग्ग दित पत्त। भरें भर धज्जि जित्त भर ॥
धर पलचर हर रंभ। नंद नरिंदह आघाई ॥
मुगति चिपंग मन मज्जि। अंब पीवन जिहि आई ॥
गोरष्ष किन्ति जित्ती सपन। मात पित्त गुर बंध [1]रन ॥
दई साम सुधारन सकल कौं। इन समान कीरति मयन ॥
छं० ॥ ११०६ ॥
अरिल्ल ॥ ठट्ठ के सुसेन पङ्गपंग अग्गं। छिले लोह सूरं मनं जंग भग्गं ॥
सबै धाय बीरं रहै बीर पासं। न को कंध कहुँ ठढे पास वासं ॥
छं० ॥ ११०७ ॥

पंगराज का पुत्र के तरफ देखना।

दूहा ॥ पंग प्रपत्तौ पुत्र दिषि। झुकि किय [2]मुष दिसि वाम ॥
बीर मत्त रत्त नयन। उत्तर सु किय प्रनाम ॥ छं० ॥ ११०८ ॥

(१) मो.-रत। (२) ए. कृ. को.-सुख।

पंग पुत्र के वचन ।

कवित्त ॥ जोरि हथ्थ फिरि तथ्थ । राज संमुह उच्चारिय ॥
असुर ससुर नर नाग । जुद्ध दिष्यौ न संभारिय ॥
अप्प सथ्थ [1]मुनि सामि । अरिन सम्हौ हक्कारिय ॥
भय भारथ्थ सु जुद्ध । जोह आवै न प्रकारिय ॥
धनि हथ्थ सूर सामंत के । धनि सु हथ्थ पहुपंग भर ॥
धरि तीन मोहि सुभयौ न कछु । सार अगनि अग्गें सु नर ॥
छं० ॥ ११०९ ॥

नन जित्यौ दल अप्प । दल न भग्गौ चहुआनं ॥
द्वादस हथ्थिन बीच । लुथ्थि पर लुथ्थि समानं ॥
पच्छै दल सुनि स्वामि । लोह छीनं अनलोपं ॥
राज कहन सुकलीय । सामि अवगुन सुनि कोपं ॥
अरि अरिय हथ्थ दह छंडि रन । रन में ढुंढिय पंग बर ॥
हज्जार उभै अप सेन परि । तुच्छ सु परि चहुआन भर ॥ छं० ॥ १११० ॥

पंगराज का क्रोध करके मुसल्मानों को युद्ध करने की आज्ञा देना ।

दूहा ॥ तुच्छ तुच्छ अरि पंग भर । चित्त सपच्छ हस हथ्थ ॥
यों चज्जे चहुआन दल । लच्छि गमाई हथ्थ ॥ छं० ॥ ११११ ॥
[2]झुकि पंग दिय हुकम सह । गहन मीर चहुआन ॥
प्रात सु डंबर मझझतं । किरन सु छुट्टिय भान ॥ छं० ॥ १११२ ॥

पंगसेना का क्रोध करके पसर करना, उधर पृथ्वीराज का मीन चरित्र में लवलीन होना ।

पद्धरी ॥ बर हुकम पंग दुअ दीन दीन । मंची सुमंचि सजि सिलह लीन ॥
अप्पें तुरंग पहुपंग फेरि । भर सुभर लेत घम्म मझझ हेरि ॥
छं० ॥ १११३ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुनि । (२) ए. सुकवि, कृ. को.-झुकवि ।

गजराज पंच आकास अन्न ॥ सोभै सु पंग रत्ते नयन्न ॥
चिहु मग्ग फट्टि फौजैं सु लीन। चहुआन भूलि बर चरित मीन ॥
छं० ॥ १११४ ॥

दूहा ॥ पिथ्थ चरित्त जु भुल्लि बहु । नट नाटक बहु भूप ॥
दूहा दासि संयोग की । हरि चित रत्तौ रूप ॥ छं० १११५ ॥
भर भुल्लिय सह चित भुलि। अरि रहि अनि तजि क्रोध ॥
बढि ढिल्ली पहुपंग कौ । छुट्टि सु मंची सोध ॥ १११६ ॥

घोर घमसान युद्ध होना।

रसावला ॥ सुधं मंच बानं। कलं भूर गानं । रसं वट्ट जानं। लह्ह कूर मानं ॥
छं० ॥ १११७ ॥
लपै चट्टि चन्नं। वरं रत्त रन्नं ॥ हथ्थं उट्टि लिन्नं। तुलं बज्ज छिन्नं ॥
छं० ॥ १११८ ॥
सुरं सोभ धन्नं। दिवं आस मंनं ॥ हथ्थं बीब तानं। बनं नष्पि धानं॥
छं० ॥ १११९ ॥
रतं कंध तीनं। घची विभ्भरीनं॥ [1]रठं रंक धन्नं। सुनी सुद्ध मन्नं ॥
छं० ॥ ११२० ॥
उभं झेलि फिन्नं। दतं कट्टि लिन्नं ॥ [2]जवं जानि तीनं। जुधं जीत बीनं॥
छं० ॥ ११२१ ॥
लजं मेर जंनं। सदावृत्त पंनं।। धरं दुब्ब रानं। ससी झल्लि फानं ॥
छं० ॥ ११२२ ॥
सुधं मंच सूरं। भुअं नंषि पूरं॥ जहं जं पियारी। हके पार सारी ॥
छं० ॥ ११२३ ॥

लंगरीराय के तलवार चलाने की प्रशंसा।

दूहा ॥ पारस फिरि पहुपंग दल । दई समानति रुक्कि ॥
जंघारो जोगी बली । बाबारो पग धुक्कि ॥ छं० ॥ ११२४ ॥
पग धुक्किय मुक्किय न पग । लंगा लोह उचाय ॥

(१) मो. टरं । (२) ए. कृ. को.-बजं ।

पंग समुह संमुह पऱ्यौ। हर बडवा नल धाइ ॥ छं० ॥ ११२५ ॥

जैचंद के मंत्री के हाथ से लंगरी राय का मारा जाना।

भुजंगी ॥ [1]परे धाइ सोमंच मद्दैक वारं। बहै षग्ग [2]सोरं गुरज्जं निनारं ॥
हयं नारि सोवान कील्हक फुट्टै। करै हथ्थ छत्तीस आवद्ध छुट्टै ॥
छं० ॥ ११२६ ॥

बरं बीर बीरं तथा बिद्ध पारं। [3]पगं बाजि सो षग्ग झामं किसारं॥
सहंनाइ में सिंधुऔ राग बज्यौ। लगी लोह [4]में जुद्ध आजुद्ध गज्यौ॥
छं० ॥ ११२७ ॥

गयं मुष्ष हाकी हहाकी करारी। [5]बरं बीर सोमचियं जुद्ध भारी॥
बढ़ी बाजि सो मुक्कि प्राधान बीरं। लगी धायसो लंगरी बद्ध पीरं॥
छं० ॥ ११२८ ॥

पलं पंचकं लोकलं कित्ति भुल्लौ। बरं भारथं लग्गि सो तुंग हल्लौ॥
बरं लंगरी राइ प्राधान बीरं। भगी सार मा भग्गियं हूर नीरं ॥
छं० ॥ ११२९ ॥

तुटी रंच कीरच्च कीरच भयन्नं। तुटी षग्ग सोवं गिनं उड्डि गेनं॥
इकं पंच तें पंचकं बिद्ध नच्चं। इके तिन्न के सीस सारं सु नच्चं॥
छं० ॥ ११३० ॥

बरी लंगरी बीर प्राधान बारे। भयौ भार उत्तारनं बंग धारे ॥
छं० ॥ ११३१ ॥

दूहा ॥ पऱ्यौ बीर लंगरि सु बर। जंघारो घन घाइ ॥
सु बर बीर सामंत मिलि। मंचो सोम उपाइ ॥ छं० ॥ ११३२ ॥

कन्ह का गुरुराम को पृथ्वीराज की खोज में भेजना।

कवित्त ॥ राज गुरू दुज कन्ह। कन्ह मोकलि सु लेन न्रप ॥
स्वामि मल्हि सह सथ्थ। मंच कारज्ज मंच अप ॥

(१) ए. कृ. को.-"परे धाइ सोमंध मत्रीक वारं"।
(२) ए. कृ. को.-गेरं। (३) ए. कृ. को.-षगं।
(४) ए. कृ.-सै। (५) ए. कृ. को.-ककारी।

लै आवौ प्रथिराज । पंग है विद्दुर सेन ॥
पष्षवै न पथ आज । भयौ भर अंतर केन ॥
यों करिग देव दच्छिन सु दुज । दिषि सामंत षटंग बर ॥
संजोग दासि इंदह न्रपति । ठठुकि रह्यौ [1]तखि यान नर ॥
छं० ॥ ११३३ ॥

पृथ्वीराज का कन्नौज नगर का निरीक्षण करते हुए गंगा तट पर आना ।

दूहा ॥ फिरि राजंन कनवज्ज मह । जानि संजोगिह बत्त ॥
चढ़ि विमान जै जै करहि । देव सु रंगन कित्ति ॥ छं० ॥ ११३४ ॥

कवित्त ॥ नगर सकल गुन मय । निहार लड्डीय सुष न्रपति ॥
मंडप सिषर गवष्य । जालि दिट्ठी सु विचित्र अति ॥
द्वार उच्च पागार । विपुल अंगन आगारह ॥
जह तहं निझ्झर झरँत । निरमल जल धारह ॥
नर बाज दुरद बन गेह पसु । भरिय भीर पट्टन परम ॥
सुर असुर चमंकत सबदं सुनि । सु फिरि समुद मंथ्थन भरम ॥
छं० ॥ ११३५ ॥

दूहा ॥ करिग देव दच्छिन नयर । गंग तरंगह कूल ॥
जल छुटै तब दृच्छ करि । मीन चरिचन भूल ॥ ११३६ ॥

पृथ्वीराज का गंगा किनारे संयोगिता के महल के नीचे आना ।

भुजंगी ॥ रची चित्र सारी त्रिषंडी अटारी । नकस लाज वद्दं सुवंनं सु ढारी॥
जरे तथ्थ जारी नही राजु वन्ने । रही फैलि रवि इंद मानों किरन्ने॥
छं० ॥ ११३७ ॥

हसी ष्याल षेलै तहां म्रग्ग नैनी । भरें माग मुत्ती गुहै बैठि बैनीं॥
सजै छच आचार आनंद भौनै । तिनं सौंस भौरानि आवृत कीनें॥
छं० ॥ ११३८ ॥

(१) ए. कृ. को.-तेहि ।

सुभं रूप सोभा तिनं अंग वेसं। तनं चीर सारी पटं कूल नेसं ॥
चमकंत चौकी कनै फूल झब्बी। गरै पीति पुंजं रिदै हार फब्बी॥
छं० ॥ ११३९ ॥

कटिं छुद्रघंटा वंली जे बनीयं। पयं झंझनं सद्द श्रवने सुनीयं ॥
इदं रूप हंसाय गंमाय तेनं। लजै कोकिला कान सुनतें सुरेनं॥
छं० ॥ ११४० ॥

बनी निकट नारी सुगंधाय बासै। सबै चंद बदनी तहां चंद भासै॥
तहां संभरी नाथ लागै तमासै। लरै मीन हय फौन, तिन देषि हासै॥
छं० ॥ ११४१ ॥

कुंडलिया ॥ मीन चरित्त जु भुल्लि न्रप। पंग न भुल्लिय युद्ध ॥
तीन लष्य अग्गों न्रपति। जो भारथ्थ विरुद्ध ॥
जो भारथ्थ विरुद्ध। दई अंगमै सु सब्बल ॥
दई बन लाई कलिय। जुपिय हक्कियै सवद्दल॥
वल अभंग अरिभंग। पंग सिर पान सु लिन्नौ ॥
कहर कन्ह साहस्स। सिंघ सो दिल्ल समिन्नौ ॥ छं० ॥ ११४२ ॥

दूहा ॥ इतें सेन चढ़ि पंग बर। है गै दिसा दिसान ॥
दछिन नैर नरिंद करि। गंग सु पत्तौ ध्यान ॥ छं० ॥ ११४३ ॥

पृथ्वीराज का गले की माला के मोतियों को मछलियों को चुनाना।

चन्द्रायना ॥ भूलौ न्रप इह रंगहि जुद्ध विरुद्ध सह ।
नंषहि मीननि मुत्ति लहै जुअ लष्य दह ॥
छोड़ तुछ तुच्छ सु मुत्ति मरं तन कंठ लह ॥
पंक प्रवेस हसंत झरंत न कंठ मह ॥ छं० ॥ ११४४ ॥

संयोगिता और उसकी सखी का पृथ्वीराज को गौख में से देखना।

कवित्त ॥ सुनि वज्जन संजोग। सुनिय आवन्न न्रपति बर ॥
भयौ चित्त चर चित्त। मित्त संभरि सु रंग नर ॥

बल बौंटिय राज नह। लाज रष्षी मत किन्नौ ॥
गौष कुंअरि सिर रही। उट्ठि सुंदरि बर चिन्हौ ॥
दिसि पुव्व देखि चहुआन नृप। बर लोचन मन षग्ग मग ॥
उपम्म बाल चिंतै सु चल। पुव्व दिसा दौ रवि सु उग ॥
छं० ॥ ११४५ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को देखना।

कुंजर उप्पर सिंघ। सिंह उप्पर दोय पव्वय ॥
पव्वय उप्पर भ्रंग। भ्रंग उप्पर ससि सुभ्भय ॥
ससि उप्पर इक कीर। कीर उप्पर मृग दिट्ठौ ॥
मृग उप्पर कोवंड। संध कंद्रप्प बयट्ठौ ॥
अहि मयूर महि उप्परह। हीर सरस हेम न जन्यौ ॥
सुर भुअन छंडि कविचंद कहि। तिहि धोषै राजन पन्यौ ॥
छं० ॥ ११४६ ॥

दूहा ॥ भूल्यौ नृप इन रंग महि। पंग चल्यो हय पुट्ठि ॥
सुनि सुंदर बर बज्जने। अई अपुव्व कोइ [1]दिट्ठ ॥ छं० ॥ ११४७ ॥
देषत सुंदरि दल मिलनि। चमकि [2]चढ़ौ मन त्रास ॥
नर कि देव किधौं नाग हर। गंगह संत निवास ॥ छं० ॥ ११४८ ॥

अरिल्ल ॥ बजि बीर निसान दिसान बजी। सु किधौं फिरि भद्दव मास गजी ॥
सह नाइन फेरि अनेक [3]सजी। सुनि सोर संजोग सु गौष रजी ॥
छं० ॥ ११४९ ॥

चौपाई ॥ सुनि सुंदरि बर बज्जन चल्ली। पिन अलपह तलयह मुष झल्ली ॥
देषि रंजि संजोगि सु भल्ली। फूलि वाह मुष कुमुदह कल्ली ॥
छं० ॥ ११५० ॥

पृथ्वीराज और संयोगिता दोनों की देखा देखी होने पर दोनों का अचल चित्त हो जाना ॥

स्लोक ॥ दिष्टा सा चहुआनं। संमरं कामं संमायते ॥

(१) ए. कृ. को.- दृट्ठि। (२) ए. कृ. को.-चढ़ी। (३) ए. कृ. को. वजी।

कमधुज्ज' वर वीरं। विगलति नीवीवनं वसति ॥ छं० ॥ ११५१ ॥
मुरिल्ल ॥ उर संजोइ साल घन मंडं। श्रवन श्रोतान जु लागि चिकंडं ॥
फरन फराक भये घग भग्गे। जनु चंमक लोहान सु लग्गे॥छं०॥११५२॥

संयोगिता का चित्रसारी में जा कर पृथ्वीराज के चित्र को जांचना और मिलान करना।

मोतीदाम ॥ प्रति बिंब निरष्षि हरष्षिय बाल। लई सषि सथ्थ चढ़ी चित्रसाल॥
साइक समान न प्रौढन मूढ़। समान सु केलि सिंगार स पोढ़ ॥
छं० ॥ ११५३ ॥
स बुद्धि स बुद्ध अबुद्धि न बुद्ध। चलं चल नैंन सु मैंन निबद्ध ॥
पिनं पिन रूप सरूप प्रसन्न। पुजै किम कोकिल आस रसन्न ॥
छं० ॥ ११५४ ॥
लगी बर आलि न गौषन नाय। लिषी दषि पुत्तलि चित्र समाइ ॥
रही बर देषि टगं टग चाहि। मनों चित्र पास न कै दिन जाहि ॥
छं० ॥ ११५५ ॥
कहै इक नारि संयोगि दिषाई। धरै अंग अंग अनंग जु साई ॥
किधों दिसि प्राचिय भान प्रकार। किधों मन मध्य कै काम अकार॥
छं० ॥ ११५६ ॥
कि इंद फ़ुनिंद नरिंद्ह कोइ। किधों हृत लीन संयोगिय सोइ ॥
छं० ॥ ११५७ ॥

संयोगिता की सहेलियों का परस्पर वार्त्तालाप।

दूहा ॥ इक कहै दनु देव इह। इक कहै इंद फुनिंद ॥
इक कहै अस कोटि नर। इक प्रथिराज नरिंद ॥ छं ॥ ११५८ ॥
सुनि वर सुंदरि उभै तन। उभै रोम तन अंग ॥
स्वेद कंप सुर भंग भौ। नैंन पिपत प्रथुरंग ॥ छं० ॥ ११५९ ॥

संयोगिता के चिबुक बिंदु की शोभा।

चोटक ॥ हिय कंप विकंप विपथ्थ पथं। मनु मंत विराजत काम रथं ॥
कल कंपित कंप कपोल सुभं। अलकावलि पानि उचंत उभं ॥
छं० ॥ ११६० ॥

निज निंदति मंथुर पंथनियं। धव धक्क धकं धक अस्ति हियं॥
सुर भंग विभंग उमंग पियं। रद मंडल चंडल चंपि लियं॥
छं० ॥ ११६१ ॥

निज नूपुर भारि नितंब छियं। रिजु नेह दुनेह चिमंग चियं॥
चिबुकं चिकु उहिम विंदु धुश्रं। कटि मंडल हार विहार सुश्रं॥
छं० ॥ ११६२ ॥

अध दिष्ट उनष्टि कतं तिलकं। बरुनी बर भंगत पौ पलकं॥
सत भाव सतं [1]तिल की कथयं। निज सोजि विलोकि तयं पथयं
छं० ॥ ११६३ ॥

हँसि हँस्सिह रम्य करी करयं। सषि साषि परष्षि हँसी हरयं॥
छं० ॥ ११६४ ॥

संयोगिता का पृथ्वीराज को पहिचान कर लज्जित होना।

गाथा ॥ पिय नेहं विलवंती, अबली अलि [2]गुज नेन दिट्ठाया।
परसान सद हीनं, भिन्नं की माधुरी माध ॥ छं० ॥ ११६५ ॥

चन्द्रायन ॥ दुलह जानि अनराइ सु हाइ सुषं अली।
लज्जा गरुअ समुंद अबुह्वन यह कली॥
मरन सरन संजोगि विहत बरनं सचिय।
सहि चहुआन सु बुभिभय पेम सु मंभ चिय॥ छं० ॥ ११६६ ॥

संयोगिता का संकुचित होते हुए ईश्वर को धन्यवाद देना और पृथ्वीराज की परीक्षा के लिये एक दासी को थाल में मोती देकर भेजना।

अरिल्ल ॥ सारति संकुल सांवर वीरं। सषि संकुचि भौ लोचन नीरं॥
[1]परसपर संपर भीरन भीरं। कामातुर निट्ठुर लगि तीरं॥
छं० ॥ ११६७ ॥

गुरु जन गुर निंदरियं सुंदरि। राज पुत्ति पुच्छियै न दुरि दुरि॥
अमहि पुच्छि तौ दुत्ति पठावहि। कुन अच्छै पुच्छ विकरि आवहि॥
छं० ॥ ११६८ ॥

(१) ए. कृ. को. तिक। (२) ए. कृ. को. गुंजनेव।

चोटक ॥ मन पंचिय तौजुग यौ जविषं । सुमरी मन लज्जिय मात पषं ॥
अथ दिष्ट करी चितयौ सु हितं । गुरनी गुर बंधिव गंठि चितं ॥
छं० ॥ ११६९ ॥

चन्द्रायण ॥ जनो गोचर कथ कलंनि कथं कथ अष्षियै ।
रस संकहि अंकुरि मान मनं मथ भष्षियै ॥
जान दुहै परमान बिधानन लष्षियै ।
को मिट्टै संजोग संजोगिन अष्षियै ॥ छं० ॥ ११७० ॥
तब पंगुर राय सु पुत्तिय मुत्तिय थाल भरि ।
जौ हिय हुइ प्रथिराजह पुच्छहि तोहि फिरि ॥
जौ इन लच्छिन सब तन्न विचारि करि ।
है व्रत मोहि न्रप जीव तौ लेउं सजीव वरि ॥ छं० ॥ ११७१ ॥

कवित्त ॥ दिष्ट फंद संजोग । दासि खिल वारि हथ्थ दिय ॥
म्रग बंधन चहुआन । पुब्ब ओतान षेद किय ॥
पुब्ब रूप गिड्डीव । मद्द मन मध्थ संभारिय ॥
भय म्रग पंग नरिंद । चंद वंधन वन डारिय ॥
हक्कैति हक्क हाका सषिय । मूर गौष अपबंध सिष ॥
वेधंत आनि बानह [1]अभुल । अगुक सीस कामंग दुष ॥ छं० ॥ ११७२ ॥

दासी का चुप चाप पीछे जाकर खड़े हो जाना ।

दूहा ॥ सुंदरि धरि श्रवननि सुन्यौ । गुन कह्यौ गुनं विद्ध ॥
ठग मग प्रत्ति [2]प्रतच्छि पिय । प्रसनह प्रत्ति प्रसिद्ध ॥ छं० ॥ ११७३ ॥

चन्द्रायन ॥ सुंदरि आइस धाइ विचारन बुल्लइय ।
ज्यौं जल गंग हिलोर प्रथीति प्रसंग तिय ॥
कमलति कोमल पानि केलि कुल अंगुलिय ।
मनहु अंध दुज दान सु अप्पत अंजुलिय ॥ छं० ॥ ११७४ ॥

पृथ्वीराज का पीछे देखे बिना थाल में से मोती ले ले कर मछलियों को चुनाना ।

(१) ए.-अभुज । (२) ए. कृ. को.-परष्षि ।

दूहा ॥ अंजुलि जल मंडत नृपति। जव विन्ने गलमुत्ति ॥
जलहल भै अंमन कियौ। पमीति बाल निपत्ति ॥ छं० ॥ ११७५ ॥
गौष निरष्षहि सुभ्भ चिय। हियै हरष्षहि बाल ॥
उभै पानि एकत करिग। देषि मुरज्जन हाल ॥ छं० ॥ ११७६ ॥

थाल के मोती चुक जाने पर दासी का गले की पोत पृथ्वीराज के हाथ में देना। यह देखकर पृथ्वीराज का पीछे फिर कर दासी से पूछना कि तू कौन है और दासी का उत्तर देना कि मैं रनवास की दासी हूं।

वृद्ध नराज ॥ नराज माल छंद ए कहंत कब्बि [१]चंद ए।
अपंत अंजुलीय दान जान सोभ लग्ग ए ॥
मनों अनंग रत्त सेय रंभ इंद पुज्जए।
सु पानि बार थक्कि थाल मुत्ति वित्तए ॥ छं० ॥ ११७७ ॥
पुनेपि हथ्थ कंठ तोरि पोति पुंज अप्पए।
... . ॥
सुटेरि नैन फेरि रैन तानि पत्ति चाहियं।
तरप्पि दासि पास कंपि संकियं न वाहियं ॥ छं० ॥ ११७८ ॥
भयं चक्यौ भयान राज गात श्रम्म दिष्षयौ।
कै स्वर्ग इंद गंग में तरंग नित्त पिष्षयौ ॥
अनेक संग रूप रंग जूप जानि सुंदरी।
उछंग गंग मद्धि धुक्कि स्वर्ग पत्त अच्छरी ॥ छं० ॥ ११७९ ॥
हों अच्छरी नरिंद नाहि दासि ग्रेह पंगुरे।
जु तास पुत्ति जम्म छंडि ढिल्लि नाथ अव्हरे ॥
सपन्न सूर चाहुआन मन्न एम जानये।
करी न केहरी न दीप इंद एन थान ए ॥ छं० ॥ ११८० ॥
प्रतष्य हीर जुद्ध धीर जौ सुवीर संचही।

(१) मो. बन्दए।

बरंत प्रान मानि नीच लौ सु देन गंठही ॥
सुनंत सूर अश्व फेरि तेज ताम हंकयं।
मनों दरिद्र रिद्ध पाइ जाय कंठ लग्गयं ॥ छं० ॥ ११८१ ॥
कनक्क कोटि अंग धात रास बास मालची।
रहंत भौंर झौर स्याम छच तच कामची ॥
सुधा सरोज मौजयं अलक्क अलि हल्लियं।
मनों मयन्न रत्ति रन्न काम पास घल्लियं ॥ छं० ॥ ११८२ ॥
करस्सि काम कंकनं जु पानि फंद साजए।
जु भावरी सषी सु लाज झुंड सो बिराज ए ॥
अनेक संग डोर रंब रत्त मत्त सस्सियं।
जु संगही सरोज सोभ होत कंत तस्सियं ॥ छं० ॥ ११८३ ॥
अचार चारु देव सब्ब दोउ पष्प जंपियं ॥
सु गंट्ठि दिट्ठ एक चित्त लोक लोक चंपियं ॥
सु इंद्रनी जु इंद्र जानि गंध्रवी विवाहयं।
मुसक्कि मंद हासयं समुष्ष दिष्षि नाहयं ॥ छं० ॥ ११८४ ॥
सु अंगुली उचक्कि एक देवतानि सुंदरी।
मिलंत होय कथ्थ मोहि स्वर्ग वास [1]मंदरी ॥
अनेक सुष्ष मुष्ष सास जुड साध लग्गियं।
सुकंत कंति अष्षिता तमोरि मोरि अष्पियं ॥ छं० ॥ ११८५ ॥
दूहा ॥ इहि विध [2]धिरताई कहत। विड्डिय विड्डि निषड्ड ॥
सुष्ष सु विड्डय जान सें। मुष्षह विड्डि निषिड्डि ॥ छं० ॥ ११८६ ॥
दिषन सासु सहस वल्लिय। अरि चल सिंघनि डार ॥
कानिन गन अनभंग है। मत्ति तेन दह च्यार ॥ छं० ॥ ११८७ ॥
चक्रित चित्त चहुआन हुअ। दरसि दासि तन चंद ॥
तन कलंक कट्टन मिसह। जहां रन्न विष वद्द ॥ छं० ॥ ११८८ ॥

दासी का हाथ से ऊपर को इशारा करना और पृथ्वीराज का संयोगिता को देख कर बेदिल होजाना।

(१) ए. कृ. को.-संगरी।   (२) ए. धिरसाई कृ. को.-धिरताई कहै।

मुरिल्ल ॥ दरसि दासि तन नृप बर ठढ्ढी । भेद बांच पंडुर तन चढ्ढी ॥
उष्ट कंप जल नैंन अंभाई । प्रात सेज ससि रोहिनी आई ॥
छं० ॥ ११८९ ॥
दासि दिष्ट चहुआन सु जोरी । रूप निहारि उभै दिसि मोरी ॥
इंद्र इंद्र रस भरि ढरि चीनौ । मनो सुष रोष वारुनी पीनो ॥
छं० ॥ ११९० ॥
करिवर दासि संजोगि दिषाई । दिष्षत न्त्रिप दुरि तन भय गाई ॥
झंषत तुछ तन सब्ब न सारन । सुकल ससि रवि हसै पारन ॥
छं० ॥ ११९१ ॥

दूहा॥ चंद चमक झंषिम गवष । चंद्र पत्ति दुति मार ॥
मनौं बदन चहुआन कौ । बंधति बंदर वार ॥ छं० ॥ ११९२ ॥

संयोगिता का इच्छा करना कि इस समय गठ बंधन हो जाय तो अच्छा हो।

मुरिल्ल ॥ कुसल जोग[1] राजन चित हट किय । जनम पुब्ब प्रथिराज षट्ट किय ॥
बर बिचार बर बाल बुलाइयं । गंठ जोरि ग्रह बर चल्लाइय ॥
छं० ॥ ११९३ ॥

संयोगिता का संकुचित चित्त होना।

दूहा ॥ जौ जंपौ तौ [2]जित्त हर । अनजंपै विहरंत ॥
अहि डहु छच्छुंदरी । हियै बिलग्गी बंति ॥ छं० ॥ ११९४ ॥

ऊपर से दस दासियों का आकर पृथ्वीराज को घेर लेना।

चन्द्रायन ॥ उतर दैन संजोगिय धाइयं दासि दस ।
चावद्दिसि चहुआन सु बिट्टिय कीय बस ॥
नही कोट दै ओट सु गट्टिय काम कस ।
मनुं दह रुद्र न बिंठि करै मन मध्य बस ॥ छं० ॥ ११९५ ॥

दासियों का पृथ्वीराज पर अपनी इच्छा प्रगट करना।

(१) मो.-रोज । (२) ए. कृ. को-चित्त ।

दूहा ॥ मुक्ति सुबर चहुआन को। अली सु कहिय जु बत्त ॥
पुब्ब अंक विधि बर लियौ। को मेटे विधि पत्त ॥ छं० ॥ ११९६ ॥
पानि ग्रहन संजोगि कौ। जोइ सु देवनि ग्रेह ॥
यों नथि भाविति भाव गति। मनु पुच पंग सु एह ॥ छं० ॥ ११९७ ॥

संयोगिता की भावपूर्ण छवि देख कर पृथ्वीराज का भी बेबस होना।

कवित्त ॥ देषि तथ्थ संजोगि। नेह जल काम करारे ॥
हाय भाय विभ्रम। कटाच्छ दृग बहु भंति निनारे ॥
रचित रंग झंकोर। [1]वयन अंदोल कसय सब ॥
हरन दुष्य द्रुम रुम मिवाल। कुच चक्र वाक सोदि सब ॥
द्रिग भवर मकर बिंबर परत। [2]भरत मनोरथ सकल सुनि ॥
[3]वर बिहुर न्नपति म्रनाल में। नन जानो किहि घटिय गुनि ॥
छं० ॥ ११९८ ॥

सखियों की परस्पर शंका कि व्याह कैसे होगा।

दूहा ॥ मंगल कढि पानि ग्ग्रहन। सुष्य संजोग सु बंक ॥
दिषि विवाह सुभ्यौ वदन। ज्यौं सुंदरि ससि पंक ॥ छं० ॥ ११९९ ॥

अन्य सखी का उत्तर कि जिनका पूर्व संयोग जाग्रत है उनके लिये नवीन संबंध विधि की क्या आवश्यकता।

कवित्त ॥ सुनि सषि सषि उच्चरिय। कोन बंध्यौ अकास मज ॥
अमर न देषे देव। बेद गंध्रब्ब रिषिय सुज ॥
रुषमनि अरु गोविंद। वेद गंध्रब सुष किन्नौ ॥
दमयंती नल व्रत्त। पन्न अग्गं तिन लिन्नौ ॥

(१) ए. कृ. को.-वैन अंदोल कसय सव।
(२) ए. कृ. को.- भरत मनों मुनि सकल अंग।
(३) ए. कृ. को.-वर विदुर नृपति मृनालते तत जानो केहि टाहि लागि।

यों व्रत्त लीन संदरति पन। धावि अगें सो सुनही॥
संजोगि अंग जो विहि लिष्यौ। सो मिटे न सिर मन धुन्नही॥
छं० ॥ १२००॥

दूती का पृथ्वीराज और संयोगिता को मिलाना।

दूहा॥ कहि करि न्रप संजोगि फुनि। दिसि सुहथ्थ बहु लाइ॥
मिलि कमोद सत पच रवि। दूती दूहु न माइ॥ छं० ॥ १२०१॥

पृथ्वीराज का संयोगिता के साथ गंधर्व विवाह होना।

हनूफाल॥ संजोगि गहि न्रप हथ्थ। मनों सरज जोरित नथ्थ॥
संजोगि न्रप बर राज। उप्पंम कवि बर साज॥ छं० ॥ १२०२॥
पदमिनिय पत्र प्रमान। हरु अंषिआन अधान॥
सषि बिंट दंपति सोभ। कविराज ओपम लोभ॥ छं० ॥ १२०३॥
दिषि चंद रोहिनि लास। गइ लास कुमुदनी पास॥
फिरि रंभ आरंभ कीय। न्रप वाम वाम सुलीय॥ छं० ॥ १२०४॥
तन बंध मन दै दान। न्रप छोरि गंठ [1]प्रवान॥
.... । .... ॥ छं० ॥ १२०५॥
दूहा॥ वरि चल्ल्यौ ढीली न्रपति। सुत जयचंद कुमारि॥
गंठ छोर दच्छिन फिरिग। प्रान करिग मनुहार॥ छं० ॥ १२०६॥

पृथ्वीराज का संयोगिता से दिल्ली चलने को कहना।

कहि चल्ल्यौ चहुआन चित। उरझे चित्त सु [2]पथ्थ॥
[3]बद चल्ल प्रथिराज न्रप। हठ संजोगि सु तथ्थ॥ छं० ॥ १२०७॥
स्लोक॥ प्रयाने पंगपुत्री च। जैतिकं जोगिनीपुरं॥
विधि सर्व निषेधाय। तांबूलं दद्दतं न्रपं॥ छं० ॥ १२०८॥

संयोगिता का क्षण मात्र के लिये विकल होकर स्त्रीजीवन पर पश्चाताप करना।

गाथा॥ सुनि इंदो अनुरात्रो। दिट्ठी रिझाइ सब्ब सो अप्पं॥

(१) ए. कृ. को.-प्रमान। (२) मो.-तथ्थ। (३) ए. कृ. को.-बदालि चले।

दै हथ्थं हवि छुट्टा । जाइं जे बज्जनो हिययौ ॥ छं० ॥ १२०९ ॥
हंजेह आइ नंषी । कंपी तनपाइं काम संजोइ ॥
निरधा अधार विनसं । या [1]बाला जीवनं कुच ॥ छं० ॥ १२१० ॥
दूहा ॥ नर आसुर सु रंम मन । [2]सबल बंध अवलेह ॥
थान लाज चहुआन कैं । टुट्टिय संकर नेह ॥ छं० ॥ १२११ ॥

दंपतिसंयोग वर्णन ।

चौपाई ॥ रति संजोगि जगि उप्पम नेनं । रच्यौ विचारि कब्बि वर मेनं ॥
जोग ग्यान द्रिग पुच्छि उचारै । तौ दंपति रति ओपम मारै ॥
छं० ॥ १२१२ ॥
मेर जेम मो मन सा आनं । जो हत लीय जिही चहुआनं ॥
सुष भरि बैंन नेंन अवलोकं । गंठि बंधि पुब्बह परलोकं ॥
छं० ॥ १२१३ ॥
कह्रं कंति धर मुक्लि बल बुल्ली । पीन देह दुति छुट्टी ल्लल्ली ॥
कल अधको अध छिप्पत मन्नं । रकि चतुर्राष्थ्य सुकन्न ससि जन्नं ॥
छं० ॥ १२१४ ॥
मुच्छि परंत प्रजंक प्रसंसी । [3]माइस अद्ध घरी घट चंसी ॥
षोडस आदि कलंकल कंपी । रष्षि सषी सषि सों मषि जंपी ॥
छं० ॥ १२१५ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता प्रति दाक्षिण से अनुकूल होजाना ।

दूहा ॥ [4]सुनि अंदोअन राव दिठ । रिझझाए सब मोइ ॥
फंदह मांहि विछुट्टही । देह जे बज्ज न होइ ॥ छं० ॥ १२१६ ॥
बर दच्छिन पुब्बह न्रपनि । भौ अनकूल प्रमान ॥
कंक कन्ह अप्पन कवन । पन्न सु धन परिमान ॥ छं० ॥ १२१७ ॥
मुरिल्ल ॥ मन रूपी तन पिंजर पीरे । दंपति दुष जंपति तन तीरे ॥
हरख दुष्य सुष सषी प्रगासी । परमहंस गुर बैन सन्यासी ॥ छं० ॥ १२१८ ॥

(१) ए. कृ. को.-बाले । (२) ए.-सबल ।
(३) ए. कृ. को.-माहस अद्ध भरी घर संसी ।
(४) ए. कृ. को.-सुनि इन्द्रोनव रावदित ।

संयोगिता का दिल खोल कर अपने मन की बातें करना, प्रातः काल दोनों का बिलग होना।

कवित्त ॥ दच्छिन बर चहुआन। कीय अनुकूल पिम्म तन ॥
बिरह बाल द्रग उमगि। अंषि कनक क्रप नंधन ॥
न्रप मन धन दभ्भिय सनेह। देह दुष काम वाम अगि ॥
ज्यौं कुलाल घट अग्गि। पचपयौं उमभ्भि उट्ठि लगि ॥
दंपत्ति नेह दुष दुहुन कहि। बिछुरि साथ चक्रवाक जिम ॥
ज्यौं सहै दुहन जिहि कुल बधू। कहत साष पंजर सु तिम ॥
छं० ॥ १२१९ ॥

गुरुराम का गंगा तीर पर आ पहुंचना।

दूहा ॥ पहुंचायौ दस दासि न्रप। गंग सपत्तौ ताम ॥
वह दिष्यौ गुरु राज ने। ज्यौं रति बिछुरति काम ॥ छं० ॥ १२२० ॥
चौपाई ॥ दिसि गुर राज राज तन चाहं। मनो गजिय उर उज्जल गाहं ॥
दिष्यि सु छबि ढिल्ली चहुआनं। जानै कन्ह सु लछियं जानं ॥
छं० ॥ १२२१ ॥

पृथ्वीराज का गुरुराम को पास बुलाना।

दूहा ॥ बर दंपति दस दासि ढिग। दंद जुदो जनु व्याह ॥
दुहु दिसि मंगल बज्जिहै। बिच मंगल बरधाह ॥ छं० ॥ १२२२ ॥
तब देषिय गुर राज न्रप। चलि आइय तिहिं पास ॥
मन देषत सीतल भयौ। बढिय राज उर आस ॥ छं० ॥ १२२३ ॥

गुरुराम का आशीर्वाद देकर सब बीतक सुनाना।

दै असीस उच्चारि अज। संभरि संभरि वार ॥
सुभर सूर सामंत सों। पंग सु जुद्ध प्रहार ॥ छं० ॥ १२२४ ॥
कवित्त ॥ बीर हेम झुंझयौ। वाम जग्गयौ जु कंक अगि ॥
बर दंपति हथ लेव। बधि बंदी उपंम मनगि॥
बरसै सब उतरंत। चढ़त सम राज पाज बंधि ॥

कै भगि मगि भलि पाल । मंगि बाला जोवन संधि ॥
आचार चार दुहु पष्प बर । देव देव मिलि जंपइय ॥
भाँवरिय लाज सषि ज्यों जुरिय । धीर बीर [1]मिलि बज्जइय ॥
छं० ॥ १२२५ ॥

पऱ्यौ राव लंगरी । पंग भंजै परधानं ॥
इद्द दमन कूरंभ । परे दुरजन [2]सलषानं ॥
सिंघ मिले संमरह । सिंह न्निबान सभानं ॥
बर प्रताप तूँवर ततार । सकति सुनि न्निप कानं ॥
रघुबंस भीम जै सिंघ दिनि । भान भष्प गौ झुल्लयौ ॥
इन परत पंग ढिल्ली बहुअ । न्निप ढिल्लीस न ढिल्लयौ ॥
छं० ॥ १२२६ ।

गुरुराम का कहना कि सामंतों के पास शीघ्र चलिए ।

दूहा ॥ ढिल्ली वै संभरि न्नपति । बत्त कहंतह बेर ॥
फिरि सामंतन सूर मिलि । करहि न न्नपति अबेर ॥छं० ॥ १२२७
दुज दासौ संयोग पै । कहन सोभ कलिरीय ॥
दे सुराज चहुआन चित । ओडन मुक्किय जीय ॥ छं० ॥१२२८॥

कवित्त ॥ इह सर सुनि सजोगि । जोग पायौ न देव मुनि ॥
तिहि सर सुष्ष न दुष्प । जीत भौटरै जम्म फुनि ॥
रंभा भर जुग्गिनी । गिद्ध बेताल सु कंषी ॥
हंस हंस उड़ि चलैं । रहि जल कमल नियंषी ॥
रस बीर विचें सेवाल कच । किति भवर तिहि गंजइय ॥
[3]रत्तय म्रनाल कित्तिय अथय । सूर सुतन मन रंजइय ॥
छं० ॥ १२२९ ॥

दूहा ॥ सुनिय बयन संजोगि कहि । लिषि दिय पट्ट प्रमान ॥
दई करै सो न्निम्मयौ । मिलन तेहु चहुआन ॥ छं० ॥ १२३० ॥

कन्ह का पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का चलना और संयोगिता का दुखी होना ।

(१) ए. कृ. को.-मिलि । (२) ए. कृ. को.सल्पानं । (३) ए. को.-इत्तह ।

चौपाई ॥ लै पटि बंधि कन्ह गिरि संगं। चल्यौ न्रपति [1]जुद्ध रस अंगं॥
जिम जिम बर चल्लै चहुआनं। तिम तिम बाल प्रमुक्कै प्रानं ॥
छं० ॥ १२३१ ॥

कवित्त ॥ चल्यौ राज प्रथिराज। पास गुर कन्ह मन ॥
चिंति स सूर सँजोग। चल्यौ चहुआन राह पन ॥
सौ क्रम दस ता अग्ग। पंग दल रुक्कि जुद्ध बल ॥
इक कहै [2]प्रिथु पथ्थ। इक तप जुत्त जुधिट्ठल ॥
रुक्कयौ रतन सा निद्धि पत। रतन सींह चिहु मग्गि गसि ॥
हंकारि सूर सम्हौ फिरिय। संभरि वै कढ्ढीति असि ॥छं॥१२३२॥

पृथ्वीराज का घोड़ा फटकार कर अपनी फौज में जा मिलना।

नंषिहै मान नरिंद। बज्जि घुरतार कंपि भुअ।
बज्रघात न्रिघघात। बज्र संपत्त कंपि ध्रुअ ॥
अष्ट सु चल दह विचल। उड्डि बंबर धर धुम्मर ॥
बजी सद्द पर सद्द। सद्दतजि रह्हिग सद्द करि ॥
भै चक्क सुभर न्रप बीर बर। लष्षि बीर चहुआन बर ॥
[3]बर नंच बीर सुनि कल हंसे। जियत बत्त प्रथिराज नर ॥
छं० ॥ १२३३ ॥

मुसल्मान सेना का पृथ्वीराज को घेरना पर कन्ह का आड़ करना।

रसावला ॥ राजरुक्के अरी, सिंघ रोहं परी। पंजरं षोलियं, बीर सा बोलियं॥
छं० ॥ १२३४ ॥
षग्ग बंकी कढ़ी, तेज बीयं बढी। बान नष्षं भरं, मोह [4]मंनं झरं ॥
छं० ॥ १२३५ ॥
राज बिच सारयं, पंच हज्जारयं। बंक धंकं डनी, बीर नंषे धुनी ॥
छं० ॥ १२३६ ॥

(१) ए. कृ. को.-दुद्ध। (२) मो.-प्रथिराज।
(३) ए. कृ. को.-बरनंचे। (४) ए. कृ. को.-मत्तं जंर।

राषि सज्जं धनं, बोलि पत्तं मनं। फौज फट्टी फिरी, कन्ह रुक्के अरी॥
छं० ॥ १२३७ ॥

सामि कट्ठे बलं, काज रुक्कं घलं। ...., ... ॥
छं० ॥ १२३८ ॥

सात मीरों का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना और पृथ्वीराज का सब को मार गिराना।

कवित्त ॥ सत्त मीर जम सम सरीर। जइ रुक्यौ नृप अग्गा ॥
राज कन्ह दुअ गुरू। सार छल सूरह लग्गा ॥
नग सम सत्त पुरष्ष। पूर मंचइ असि बर पढ़ि ॥
होम जाप जुथ्यौ सु। बीर सरसं प्रहार चढ़ि ॥
सम सेवग सेव सु स्वामि ध्रत। किंत्ति देव संतोष बलि ॥
पंड अग्ग भाग प्रथिराज कौ। देव भ्रम्म उग्गारि बल ॥
छं० ॥ १२३९ ॥

फिरि पच्छौ चहुआन। बान आरोह प्रथम करि ॥
षां वहिरम बरजही। फुटि टट्टर टरिग्ग धर ॥
बीय बान संधान। षान पीरोज सु भग्गा ॥
पष्षर अस्व पलान। मीर सहितं धर लग्गा ॥
त्रय बान कमान सु संधि करि। सुगति मग्ग गुन चंद कहि ॥
जल्लाल मीर सम बल प्रचंड। बालि प्रान संमह सढहि ॥
छं० ॥ १२४० ॥

बान चवथ्थै राज। तूटि कंमान षनक्की ॥
उडि गासी छुटि तीर। [१]पंच बहु सह भनक्की ॥
इति उत्तरि चहुआन। षग्ग कढि बज्ज कि पायौ ॥
दुति उप्पम कविचंद। तीय विक्रम असहायौ ॥
नषि राज बाज उप्पर वसिस। सक्क मीर अवसान चुकि ॥
षग मीर ताप तप्यौ नही। मुक्कि अस दिसि वाम धुकि ॥
छं० ॥ १२४१ ॥

(१) मो.-पंष।

दूहा॥ हय गय बर गंभीर चढ़ि। नर भर दिसन दिसान॥
पंग राव कोपिय सुबर। गहन मेछ चहुआन॥ छं०॥ १२४२॥
रैन परै सिर उप्परै। हय गय [1]गतर उछार॥
मनहु ठग्ग ठग मूरि लै। रहिग सबै मुंछार॥ छं०॥ १२४३॥

पृथ्वीराज को सकुशल देख कर सब सामंतों का प्रसन्न होना।

मनहु बंध अनभूति धर। है तिन जानत यट्ट॥
बचन स्वामि भंग न करहि। सह देषहि नृप वट्ट॥छं०॥१२४४॥
अवलोकति तन स्वामि मन। भौ सामंतनि सुष्ष॥
हँसहि सूर सामंत सुष। कायर मानहि दुष्ष॥ छं०॥ १२४५॥
धीरत धरि ढिल्लेस बर। बहु दंती उभ [2]रोंभ॥
नृपति नयन तन अंकुरे। मनहु मद्द गज सोभ॥ छं०॥ १२४६॥

सामंतों की प्रतिज्ञाएं।

कुंडलिया॥ देषि सुभर नृप नेन। आनि भौ आनंद चंद॥
अरि गंजे रुप त्रिप्प। बीर हक्के ग्रह दंद॥
बीर हक्के ग्रह दंद। मुकति लुट्टे कर रस्सी॥
आज सामि रन देहि। बरै अच्छरि कुल लस्सी॥
काम तेज संभरी। देव कंदल जुध पिष्षे॥
गुरु गल्ह उद्धरै। दृष्टि धारा रवि दिष्षै॥ छं०॥ १२४७॥

कन्ह का पृथ्वीराज के हाथ में कंकन देख कर कहना यह क्या है।

दूहा॥ हरषवंत नृप अत्त हुअ। मन मझ्झह जुध चाव॥
मिलत हथ्थ कंकन लष्यौ। कह्यौ कन्ह इह काव॥छं०॥१२४८॥
गगन रेन रवि मुंदि लिय। धर भर छंडि फनिंद॥
इह अपुब्ब धीरत्त तुहि। कंकन हथ्थ नरिंद॥ छं०॥ १२४९॥

(१) ए. कृ. को.-गत। (२) मो.-रोस।

हथ्थह कंकन सिर तिलक। अच्छित लगे लिलार॥
कंठ माल तुअ कंठ नहि। कहि न्रप कवन विचार ॥छं०॥१२५०॥

पृथ्वीराज का लज्जित होकर कहना कि मैं अपना पण पूरा कर चुका।

चौपाई॥ सुनि सुनि बचन भुमि सिर नायौ। अपन दान ज्यों बंजि दुरायौ॥
पंच पंच अब लीन क चिंतर। छंडित बहि दियौ तब उत्तर॥
छं० ॥ १२५१ ॥
बरिय बाल सुत पंगह राय। वह व्रत भंग मोहि व्रत जाइ॥
तिहि मुंधहि अब जुड सुहाई। अथ्थि अवासह देउं बताई॥
छं० ॥ १२५२ ॥

कन्ह का कहना कि संयोगिता को कहां छोड़ा।

तिहि तजि चित्त कियौ तुम पासं। छंडिय कन्ह रुदंत अवासं॥
सौ सुभट्ट महि एक भट होइ। तौ नृप धनहि न मुक्कै कोइ॥
छं० ॥१२५३॥
जौ अरि थाट कोरि दल साज। तौ दिल्लिय तषत दैहि प्रथिराज॥
इतनौ नृपति पुच्छियै तोहि। परनि मुक्कि सुंदरि इह होइ॥
छं० ॥१२५४॥

पृथ्वीराज का उत्तर देना कि युद्ध में स्त्री का क्या काम।

स्लोक॥ जज्ञकालेषु धर्मेषु। कामकालेषु शोभिता॥
सर्वच वल्लभा बाला। संग्रामे नन गर्हिनी॥ छं० ॥१२५५॥

कन्ह का कहना कि धिक्कार है हमारे तलवार बांधने को यदि संयोगिता सकुशल दिल्ली न पहुंचे।

चौपाई॥ हम सौ रजपूत रु सुंदरि एक। मुक्कि जांहि ग्रह बंधहि तेक॥
जौ अरियन थट कोरि दल साजहि। तौ दिल्लिय तषत दैहि प्रथिराजहि॥
छं० ॥१२५६॥

कवित्त ॥ महि मंडन महिलान । जोग मंडन सुष मंडन ॥
दुष वंटन जम चसन। नेह पूषनि मन षंडन ॥
काम वंत सोभाय । पूर चित समर विमत्तन ॥
मय सुष दिष्षत मोह । लीन भौ अनुरत रत्तन ॥
संसार सुबरनी सरम रूष । करहि सरन अनमुष्य रुष ॥
अरि धरनि मुक्ति धारन न्नपत । चलहि कित्त जुग एक मुष ॥
छं० ॥१२५७॥

पुनः कन्ह के वचन कि उसे यहां छोड़ चलना उचित नहीं है।

दूहा ॥ अग्गि काल धूम काल कौ । सब्ब काल सोभित्त ॥
पूरन सब सोरथ्य लग । मोकिल ना मोहित्त ॥ छं० ॥ १२५८ ॥
भर बंकै अच्छरि बरन । रस बंके दिसि बाल ॥
दुहु बंके पारथ कारन । चढ्ढि सूरत्तन साल ॥ छं० ॥ १२५९ ॥

पृथ्वीराज के चले आने पर संयोगिता का अचेत होजाना।

चलि चलि सूरति सथ्थ हुअ। [1]रन निसंक मन भौन ॥
सह अचार सुष मंगलह । मनहुं करहि फिरि गौन ॥
छं० ॥ १२६० ॥
पति अंतर विछुरन विपति । न्नपति सनेह संजोग ॥
सुनत भयौ सुष कौंन विधि । दैव जिवावन जोग ॥ छं० ॥ १२६१॥
सुरिल्ल ॥ पानि परस अरु दिट्ठ विलग्गिय । सा सुंदरि कामागिन जग्गिय ॥
[2]विन तलपह अलपह मन कीनों । ज्यौं वर वारि गये तन मीनौ ॥
छं० ॥ १२६२ ॥
अंगन अंग सु चंदन लावहि । अरु राजन लाजन समुझावहि ॥
दै अंचल चंचल द्रिग मूंदहि । विरहायन दाहन रवि उदहि ॥
छं० ॥ १२६३ ॥
फिरि फिरि बाल गवष्षनि अष्षिय । तासिष टैंम बैंम वर सष्षिय॥
विन उत्तर सु मौंन मन रष्षिय । मन बच क्रम प्रीतम रस कष्षिय॥
छं० ॥ १२६४ ॥

(१) ए. कृ.-को.-नर (२) मो.-विन तल्पन तलपह।

सखियों की उसे सचेत करने की चेष्टा करना।

कवित्त ॥ बाली बिजन फिरन। चंद चारी क्रितम रस ॥
के घन सार सुधारि। चंद चंदन सो अति लस ॥
बहु उपाय बल करत। बाल चेतै न चित्त मय ॥
है उच्चार उचार। सखी बुझयति कयति हय ॥
श्रवनें सु नाद जंपै सु अलि। नाम मंच प्रथिराज वर ॥
आवस निवत्त अगाद भय। तं निवलइ द्रिग छिनक कर ॥
छं० ॥ १२६५ ॥

संयोगिता का मरने को तैयार होना, सखियों का उसे समझा कर संतोष देना।

दूहा ॥ तन तज्जौं संजोगि पिय। गहि रष्यी फिरि बाल ॥
आनि नळचिन परि गिरी। चंद मरइति काल ॥ छं० ॥ १२६६ ॥
अरिल्ल ॥ बहुत जतन संजोगि समाए। साम कमल दिनयर दरसाए ॥
उझकि झंकि दिष्यो प्रन पत्तिय। पति दिष्यत मन महि अलि रत्तिय॥
छं० ॥ १२६७ ॥
ब्याह नाथ संजोगि सु लच्छन। जिहि तुम कर साह्यौ बर दच्छिन॥
सा तुम तात भए दल तत्तो। सरन तोहि सुंदरि संपत्तौ ॥
छं० ॥ १२६८ ॥

संयोगिता का वचन।

दूहा ॥ ता मुष मुंदिन मोद किय। अलियन जंपहु आलि ॥
दाषेक पर लवन रस। स्रतक न दिज्जै गारि ॥ छं० ॥ १२६९ ॥
अंध न द्रप्पन दिष्षिहै। गुंग न जंपहि गल्ह ॥
अश्रुत नर गान न लहै। अवल न करै सबल्ह ॥ छं० ॥ १२७० ॥
में निषेद किन्नौ जु कथ। दुज अरु दुजिय प्रमान ॥
टरै न गंध्रव गंध्रविय। विधि कौनौव प्रमान ॥ छं० ॥ १२७१ ॥

(१) ए. कृ. को.-राज्जिय। (२) ए. कृ. को.-जैरै।

श्लोक ॥ गुरजनं मनो नास्ति । तात आज्ञा [1]विवर्जितं ॥
तस्य कार्यं विनश्यंति । यावत् चंद्रदिवाकरौ ॥ छं० ॥ १२७२ ॥
दूहा ॥ इह कहि सिर धुनि सषिनि सों । दिषि संजोगिय राज ॥
जिहि प्रिय जन अंगुलि करै । तिहि प्रिय जन किहि काज ॥
छं० ॥ १२७३ ॥
इह चिंतित बत्ती सु सुनि । क्रोध ज्वाल सरि अंब ॥
रही जु लिषिये चित्र मैं । ज्यों सरद प्रतिब्यंब ॥ छं० ॥ १२७४ ॥

संयोगिता का झरोखे में झांकना और पृथ्वीराज का दर्शन होना।

कुंडलिया ॥ धुनत गवष्यन सिर लष्यौ । अंबुज मुष ससि अंब ॥
अनिल तेज झलहल कँपै । सरद इंद्र प्रतिब्यंब ॥
सरद इंद्र प्रतिब्यंब । चिंति चतुरानन आनन ॥
निरषि राज प्रथिराज । साज सुंदरि अपकानन ॥
इय सत भट्ट सु भूप । मग्ग भोहैं न गनंतन ॥
मानि विसव्वा वीस । सीस धुनि धुनि न धुनंतह ॥छं०॥१२७५॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को मूर्छा से जगाकर कहना कि मेरे साथ चलो।

चौपाई ॥ झंकत न्रप दष्षी बर बुल्लै । गंग निकट प्रतिब्यंब सी हल्लै ॥
चिहलै पर्यौ चंद तरपीनौ । कै मग तिन्न देषि मन मीनौ ॥
छं० ॥ १२७६ ॥
मुच्छि बाल संजोगि उठाई । देवर तर दिसि दिसि पट्ठाई ॥
कै श्रोतान सूर सुनि झूठे । कै कातर अबहीं न्रिप दीठे ॥
छं० ॥ १२७७ ॥
दूहा ॥ ए सामंत जु सत्त कहि । पंग पुति घटि मंत ॥
एक लष्ष भर लष्षियै । जै कढ्ढै गज दंत ॥ छं० ॥ १२७८ ॥

---

(१) मो.-नर्जितं ।

गाथा ॥ मदनं सरा लति विविहा। जिग्हा रटयोति प्रान [1]प्रानेसं ॥
नयन प्रवाहति विवहा। अह वांमा कंत कथ्थायं ॥छं०॥१२७९॥

आर्या ॥ कहु लीभा सो चंद लासौ। मन मध्थं पहु पांजलि ॥
बरन मान निसा दिवसे। धुनयं सीस जो मम ॥ छं० ॥ १२८० ॥

संयोगिता का कहना कि मैं कैसे चलूं यदि लड़ाई में मैं छूट गई तो कहीं की न रही।

दूहा ॥ किम हय [2]पुट्टहि आरुहौं। घटि दल संगह राज ॥
भीर परत [3]जो तजि [4]चल्यौ। तब मो आवै लाज ॥छं०॥१२८१॥

पृथ्वीराज का कहना कि मेरे सामंत समस्त पंग दल का संहार कर सकते हैं।

तब हँसि जंप्यौ न्रप बयन। गहर न करियै अब्ब ॥
सब्ब पंग दल संहरों। सुंदरि लाज न तब्ब ॥ छं० ॥ १२८२ ॥

संयोगिता का कहना कि जैसा आप जाने पर मैं तो आपको नहीं छोड़ सकती।

कवित्त ॥ सुंदर जंपै बैंन। ढीठ दिल्लिय नरेस सुनि ॥
कहहि सूर सामंत। पवन हलहि पहार फुनि ॥
अजहौं अलियों चवै। गंठि दैहै [5]सु जंम कहु ॥
जो सब्बै सुरलोक। लहहि अच्छरि नन संकहु ॥
इह चित्त कंत इच्छहिं बहुल। बहु समूह भुज बल कहहि ॥
संदेह सास संभरि धनी। पलन प्रान पच्छै लहहि ॥
छं० ॥ १२८३ ॥

(१) मो.-प्रानेव।
(२) ए. कृ. कौ.-पुट्ठौ।　(३) ए. कृ. को.-मुहि।　(४) मो.-चलौं।
(५) ए.-दास।

गाथा ॥ अवलोकित न्रप नयनं। वचनं जिवहा सु कातरा सामी ॥
निंदा सह स्तुत माने। घोरं संसार पातकी ॥ छं० ॥ १२८४ ॥

संयोगिता का जैचन्द का बल प्रताप वर्णन करना।

कवित्त ॥ सिंगारिय सुंदरिय। हास उपजत बर मद्दह ॥
करुना वुलि इहि बीत। रुद्र कामिनि कथ बद्दह ॥
बीर कहत गंध्रब्ब। भयो भामिनी भयानक ॥
वीभच्छिय संग्राम। मनहि आचिज्ज सयानक ॥
छिन संत मंत इय कंत तुम। पिय विलास दिन करि करिय ॥
इम कहै चंद बरदाय बर। कलहकंत तुम तौ डरिय ॥छं०॥१२८५॥
जे पहुरी बिमान। तेह पहुरी बिमानह ॥
जे सारंग करार। तेह सारंग करारह ॥
जिहि कित्तिय गय कोस। तेह कित्ती गय कोसह ॥
जिहि गय सघन सरोस। तेह गय मघन सरोसह ॥
विल्लोर पयोहर गै मलन। मलन विल्लोर पयोहरह ॥
जयचंद पयानौ परठयौ। भा भुम्म हुम्मरु बसंत रह ॥छं०॥१२८६॥
करत पंग पायान। षेह उड्डत रवि लुक्कै ॥
मह्हरैजल पुट्टै सु। पंक सरिता सर सुक्कै ॥
पानी ठाहर षेह। रह उड्डती विराजै ॥
बर पयान छावंत। भान [1]सिर पट्ट कविज्जै ॥
दिगपाल कंपि हलि दसो दिस। सेसपयानौ नहि सहै ॥
बर न्रपति सीस ईसं सु सुनि। भौ पंगुर तातें कहै ॥छं०॥१२८७॥

संयोगिता प्रति गोइन्दराय का बचन।

हे कमधज्ज कुमारि। कहै गोयंद राज बर ॥
जे भर पंग नरिंद। सबें भंजों अभंग [2]घर ॥
सम सामंत सहित्त। जंग जैचंदह मंड्यौं ॥
अब कोपै चहुआन। षग्ग मैमत्त विहंडौं ॥

(१) चारों प्रतियों में "कूट" पाठ अधिक है। (२) ए. कृ. को.-षल।

जदपि बहुत्त गोमाय गन । तदपि म्रग्गपति नह डरै ॥
ममसंकि चित्त चिंता न करि । पहुचाऊं दिल्ली घरै ॥छं०॥१२८८॥
चढ़त पंग बर बीर । नाग बर बीर दढिय अहि ॥
जिहि कर करिवर धरिय । धरिय ते भार विदुष महि ॥
चित्त करिग कुंडली । अप्प पोषंन बाय बर ॥
कर कढ्ढिह कलिवान । नाहि धारंत इक्क कर ॥
जिनि पहुमि मनी मनि सहस फन । सो फनि फुनि फुनि फनि धरिय॥
जानें कि हथ्थ तत्त कि चिय । सुबर भाजि कर कर करिय ॥
छं० ॥ १२८९ ॥

हाहुलिराय हम्मीर का बचन ।

दूहा ॥ हाहुलि राव हमीर कहि । सुनि पंगानी बत्त ॥
एक भिरै असि लष्ष सों । सो भर किमि भाजंत ॥छं०॥१२९०॥

संयोगिता का बचन ।

कवित्त ॥ कोरि एक चंचल । चलंत हबर बर पष्पर ॥
ता उप्पर दस सहस । वालि जिसे असि होइ जलधर ॥
सोलह सहस निसान । सहस सत्तरि गैवर घन ॥
तीस लष्ष गेंवर प्रचंड । षग्ग फारक्क न्नभै तन ॥
चालंत सेन विजपाल सुअ । पहुमि भार फनपति मुरिय ॥
कह होइ ह्वर सामंत हो । पंग सु दल बल उप्परिय॥छं०॥१२९१॥

चंदपुंडीर का कहना कि सब कथा जाने दो यज्ञ विध्वंस करने वाले हमी लोग हैं या कोई और ।

चवै चंद पुंडीर इम । कह बल कथ्थह पुब्ब ॥
पंग पंग पग नरिंद कौ । जग्य विधवंस्यौ सब्ब ॥ छं० ॥ १२९२ ॥

यह सुनते ही संयोगिता का हठ छोड़ना।

सुनत बाल छंड्यौ सु हठ । बर [1]चढ्ढी द्रिग बंक ॥

(१) ए. कृ. को.-उटूठी ।

किधों बाल मन मोहिनी। कै बिय उदित मयंक ॥ छं० ॥ १२९३॥

कन्ह वचन कि स्वामी की निंदा सुनना पाप है, हे पंग पुत्री सुन।

कवित्त ॥ सुनिय बचन बर कन्ह। सीस धुनि धुनि फुनि जंपिय ॥
भ्रग जियन म्रत सब्ब। पिंड बेचिय उर थप्पिय ॥
मन्न वचन तन रत्त। भ्रम्म छुट्टै सुष भग्गा ॥
गहन्न पान जो जियन। जूह जीयन तुछ लग्गा ॥
सो भ्रम्म छचि रष्षन [1]सु तन। जो सांमि निंद कानन सुनैं ॥
कातर वचन संजोग सुनि। जौ परन श्रान रष्षै [2]ननैं ॥छं०॥१२९४॥

कन्ह का बचन कि मैं अपने भुजबल से ही तुझे दिल्ली तक सकुशल भेज सकता हूं।

हे प्रथिराज वामंग। संग जौ कन्ह नन्ह दल ॥
हौ चहुआन समथ्थ। हरू[3]रिपु राय भुजन बल ॥
मोहि विरद नर नाह। दंद को करै[4]भुअन बर ॥
मो कंपहि सुरलोक। पंति पन गरू भूमि नर ॥
मम कंपि चंपि सुंदरि सु पहु। चढ़िग कोटि कायर रषत ॥
इन भुजन ठेलि कनवज्ज कौं। तों अप्पों ढिल्ली तषत ॥छं०॥१२९५॥
तेग छोरि जदवन। सौंह सिर धरि करि कथ्थिय ॥
इहै सत्त सामंत। भूमि स्रंगार भरथ्थिय ॥
अतुलित बल अतुलित प्रमान। अतुलित बलदेवह ॥
अतुलित छिति छचि न गियान। स्वामित्त सु सेवह ॥
देषहि न राज बंसहि विलगि। कलह केलि कलहंत पिय ॥
अवलत्त छंडि मन सबल करि। बिघर राग सिंधूव किय॥छं०॥१२९६॥
सुनि उच्चरि गोयंद। गहन्न गहिलौत राज बर ॥

(१) मो.-सुथन। (२) ए. कृ. को.-तनै। (३) ए. कृ. को.-हरो।
(४) मो.-मुजन।

बीर पंग लगि धीर । लग्गि को छरन छिन्न कर ॥
जुड़ जूह पहु पंग । करिग गौ पैज सूर सर ॥
सबर सेन भर अग्ग । धाय दुअ लग्गि सेन धर ॥
जद्यपि सु रहि रष्यै अलष । अरकु तदपि रहि हन सरै ॥
जद्दपि अगनि सम्हौ बलै । जीरम अग उंछी परै ॥ छं० । १२९७

चंदपुंडीर का कहना जिस पृथ्वीराज के साथ में निढ्ढुरराय सा सामंत है उसके साथ तुझे चिंता कैसी ।

कहै चंद पुंडीर । सूर नहि सूर घरघ्घर ॥
षास लगै नन सस्त्र । भजै आभंग मंच बर ॥
पंग पान बुट्टंत । तन्न भज्जैन ज्वाल पर ॥
प्रथी जेम वल अवून । संग चतुरंगी निढ्ढुर ॥
निमषेक निकष बर ब्रह्म कौ । दौरि जुगी बहुतें जुगल ॥
असि प्रान मान सामंत कौ । न्रिप सुंदरि नन चिंति बल ॥
छं० ॥ १२९८ ॥

राम राय बड़गुज्जर का वचन ।

प्रति सुंदरि न्रप काज । कनक बोल्यौ बड़ गुज्जर ॥
हरि चक्रह सहज वत् । जाल नन रहै बुद्धिबल ॥
काट क्रम्म संजवत । अंति भज्जै हरि नामं ॥
नीर परस संजवत । मैल नन रहै बिरामं ॥
नन रहै गुनौ अग्गैं अवधि । सिध अग्गै सिद्धि न रहै ॥
संजोग जोग भंजन क्रम । राह सूर चंपिरु ग्रहै ॥ छं० ॥ १२९९ ॥

आल्हन कुमार का वचन ।

तब बोलै अल्हन कुमार । सब्ब ब्रहमंड बीर बर ।
जिहि मिलंत भर सुभर । होहि तन मत्त बीर सर ॥
मिलै सरित सब गंग । होइ गंगा सब अंगा॥

(१) मो.-आंछी ।

भग्गै सब परपंच। मिलै ब्रह्म ब्रह्मह मग्गा ॥
ऐसे सुबीर सामंत सौ। ढील बोल बोलै बदन ॥
जानै न बत्त बर बंध की। पहुंचावै ढिल्ली सुधन ॥छं०॥१३००॥

सलष पँवार का बचन।

बोलि सलष पांवार। पार लभ्भ्यौ न सस्त्रबल ॥
ब्रह्म पार पायौ न। रूप अवरेष रूप कल ॥
मेघ सोय आग्राज। पार वायन में धारिय ॥
सो कहि असति चरित्र। ब्रत पायँड अधिकारिय ॥
सौ जुझ्झ पार धारह धनी। जुद्ध पार लभ्भ्यौ न दोउ ॥
तिहि सत संजोगि सुहै प्रलै। प्रलै राज ढिल्लीव सोउ ॥छं०॥१३०१॥

देवराज बग्गरी और रामरघुवंस के बचन।

देवराज बग्गरी। बीर बाल्यौ विह से बर ॥
* .... ॥छं०॥१३०२॥
कहै राम रघुवंस। सुनहि संजोगि बाल बर ॥
पंग प्रलै संमूह। जगत बुझ्झन न्रप कग्गर ॥
बरप सात सामंत। सोभ पत्तिन परख्ष्यं ॥
बर दंपती [1]निसंक। सस्त्र भग्गा न विसुष्यं ॥
नल कमल मांहि कंद्रप रहै। पति रष्यै चहुआन द्रुम ॥
दिषि वत्त सति संयोग इह। तब सु प्रलै सासहित क्रम ॥
छं० ॥ १३०३ ॥

पुनः आल्हन कुमार का बचन।

फुनि जंप्यौ अल्हन कुमार। सुनि सुंदरी सूर बल ॥
बर अगनित अंजुलो। पंग सो सै समुंद दल ॥
सार मेघ बुट्ठतें। बीर टट्टी बिच्छोरै ॥
बर दंपति संयोगि। बंधि दल गौत न जोरै ॥

* छं: १३०२ की चारों प्रतियों में केवल एक ही पंक्ति है शेष पंक्तियां हैं ही नहीं।
(१) ए. कृ. कों.-न सकं।

उप्पारि सस्च गो ब्रह्मनह । न्त्रिप रषि वज्जी जेम कल ॥
कमधज्ज इंद बुट्टै प्र पुनि । सुमन संच जानैं अकल ॥छं०॥१३०४

पल्हन देव कच्छावत का वचन।

पल्हनदे कूरंभ । लाज बड पन बड बीरं ॥
न्त्रिप लग्गै नन अंच । पंच जौ पंच सरीरं ॥
सोम नंद संभरी । सूर सो भ्रम्म न छोई ॥
सौ मे एकज होइ । तेज मुक्कै ग्रह जोई ॥
इक अग्ग पंच जौ सत्त है। सत्त मेर सत जीन तजि ॥
नन डरहि चलहि प्रथिराज संग । रयत कोटि कायरह सजि ॥
छं० ॥ १३०५ ॥

संयोगिता का वचन कि यह सब है पर दैव गति कौन जानता है।

तब कहंत संजोगि । इक बन मभ्झ सरोवर ॥
तहं पंकज्ज प्रफुल्लि । सरस मकरंद समोभर ॥
आय इक मधु करह। तथ्थ विश्रामिं गुंजा रत ॥
रैंनि प्रपत्तिय ताम । रह्यौ मधि भंवर विचारत ॥
ह्वै है बित्तित जामनि सबै । तबै गमन इह बुड्ड किय ॥
बिन प्रात होत बिधि इह करिय । से कलिका गजराज लिय ॥
छं० ॥ १३०६ ॥

दाहिमा नरसिंह के वचन कि सुन्दरी वृथा हमलोगों का क्रोध क्यों बढ़ाती है। कहते हैं कि सकुशल दिल्ली पहुचावेंगे।

तब दाहिम नरसिंघ । सिंघ बुल्ल्यौ बंचाइन ॥
सुनिय बचन सुंदरी । अत्राल उट्ठी लगि पाइन ॥
इन दष्षित संजोगि । जोग जिन मग्ग प्रहारै ॥
इन पच्छै बलदेव । जम्म गति दिष्षि निहारै ॥

---

(१) ए. कृ. को.-गुंजारं ।　　(२) ए. कृ. को.-करै ।

उड्डरों बीर दंपति दुहुनि। सरस मद्दम मथ्थिल्लै ॥
चलि सथ्थ राज प्रथिराज कै। मुकति भुगति हम ह्थ्यल्लै ॥
छं० ॥ १३०७ ॥

पुनः सलष का वचन।

सु बर बीर पामार। सलष बुल्ल्यौ प्रति धारं ॥
अग्गि जलनि कमधज। जोग जीवन जुग तारं ॥
ए अमंत सामंत। भज्जि जानै न अभंग अपु ॥
वज्र सार झल्लै प्रहार। निश्चलित सार वपु ॥
जं करै गहर संजोगि सुनि। मुगति गहर बित्तिय घरिय ॥
'जग्गाय पंग दिष्षै दलं। रषित कुंअर केअरि फिरिय ॥
छं० ॥ १३०८ ॥

सारंगदेव का वचन।

सारंग सारंग बीर। बीर चालुक्क उचारिय ॥
षग्ग मग्ग बो हिथ्थ। मरन जिहि तत्त बिचारिय ॥
बीच राज प्रथिराज। सूर चावद्दिसि चल्लै ॥
ज्यों सिर मग धुअ झाल। भूअ सामंत न डुल्लै ॥
संजोगि करिन कायरह तौ। पहुँचावै ढिल्ली घरह ॥
प्रथिराज ग्रहै जो पंग बर। तौ पंग सूर एकत धरह ॥छं०॥१३०९॥

रामराय रघुवंसी का वचन।

तब रायां रघुवंस। जनक उच्चै उच्चारिय ॥
हम निकलंक छचीय। जुद्ध बर जुद्ध विचारिय ॥
जे मेरें कुल भए। हुए ते षंड तन झुज्झर ॥
मत्ति सत्त हसुमंत। बीर जंपिहि बड़ गुज्जर ॥
संजोगि बचन कातर कहिग। सहिग प्रान मझझह रहिग ॥
हम अग्ग पंग कच्छून बर। जम कंपत षग्गह गहिग॥छं०॥१३१०॥

(१) ए. कृ. को.-जग्गवै।

भौंहाराव चंदेल का बचन ।

भौंहा राव नरिंद । बीर उच्चरि बीरत्तं ॥
पै लच्छिन बतीस । पंग पुची घटि मत्तं ॥
तिहि इक लछिन हीन । बही लछिन नन सध्यै ॥
एक एक सुरइंद्र । आइ दुज्जन दल भध्यै ॥
सत कोस पंच घटि धांन न्टप । इमह सत्त छह अग सुभर ।।
इक इक कोस इक इक भर । पहुँचावै संयोगि बर॥छं० ॥१३११॥

चंदपुंडीर का बचन ।

तब कहि चंद पुंडीर । मतौ सुनि सस्च सूर बल ॥
लष्य एक लष्यियै । एक भंजैति लष्य दल ॥
बल अगनित अति जुड । पंग जीरन तिन सेनं ॥
दावा नल सामंत । सस्त्र मारुत बल देनं ॥
ढंढोरि ढाल गजदंत कढि । कवल पीर कन्हति वर ॥
नष्यै सु बाजि गम भीम दुति । पंग सेन प्रथिराज भर ॥
छं० ॥ १३१२ ॥

निढ्ढुरराय का बचन कि जो करना हो जल्दी करो बातों में समय न बिताओ ।

तब निढ्ढुर उच्चरिय । सब्ब सामंत राज प्रति ॥
पंग सेंन [1]निरदरहु । ग्रब्ब बोल्यौ सुदेवध्रित ॥
मन मथी गोंविद चंद । छोड़ न कहि कालं ॥
मन पुच्छिहु कहौ जीह । काल घत्ते जिहि जालं ॥
जौ करै ढील ढिल्ली धनी । तौ जुग्गिनिपुर जल हथ्थ दै ॥
सत षंड जीह जंपत करौ । पै चल्लि राज इह लज्ज दै ॥छं०॥१३१३॥
मानि मत्तौ सब सेन । गहुअ गोयंद कन्ह कहि ॥
सुजै अप्प जौ चलै । चलै इम हथ्थ रंभ ग्रहि ॥
जो अप्पन आभंज । सबल बंधी अब बंधी ॥

(१) ए. कृ. को.-निरदरे ।

ढील न करि सुंदरी। लीह अलध कल संधी ॥
ढंढोरि ढाल पहुपंग दल। तन अरत्त जिम तोरियै ॥
पहुंचाय सांमि ढिल्ली धरा। जम्म जजर तन जोरियै ॥छं०॥१३१४॥

संयोगिता के मन में बिश्वास हो जाना।

दूहा ॥ बाले बल सामंत कलि। देखि सूर सम चित ॥
इन जु हीन बल [1]जंपियै। [2]अिकत बुद्धि इन वृत्त ॥ छं०॥१३१५॥

संयोगिता का मन में आगा पीछा बिचारना।

चंद्रायना ॥ बचन सुनिय कनि बाल बिचारत सोचि मन।
माया गुरजन चित्त विगोवत बेर तिन ॥
* .... ॥ छं० ॥ १३१६ ॥

अरिल्ल ॥ सुबर चंद ओपम लिय कथ्यं। ज्यों कुछ वधु वर इंद्री अपहथ्यं॥
† .... ॥छं० ॥१३१७॥

संयोगिता का पश्चाताप करके राजा से कहना कि हा मेरे लिये क्या जघन्य घटना हो रही है।

कवित्त ॥ बाल कहिग संजोगि। पुब बंधी सु गंठि बर ॥
रिष सराप अरु देव। काज भौ भरन मरन भर ॥
स्वरग मग्ग रुक्कयौ। मरन संभरि चहुआनं ॥
केवल कित्ति सु कंत। रंभ बर बरनन पानं ॥
बंधई गंठि संभरि धनी। अब इत्तिव अंतर रहिय ॥
सामंत सूर संभरि सु कथ। न्त्रिपति सु दंपति इम कहिय ॥
छं० ॥ १३१८ ॥

राजा का कहना कि इस का विचार न करो यह तो संसार में हुआ ही करता है।

चंद्रायना ॥ राज सेन दे नैन समभिझय चंद कबि।

(१) ए. कृ. को.-चंपिये। (२) मो.-ध्रिग वुधि दग वृत।
* यह छंद चारों प्रतियों में आधा है। † चारों प्रतियों में ऐसा ही है।

सुनि संजोग इह जोग बुज्भि मन दुष्य हवि ॥
आंसू भरि छह [1]सात [2]अगनि भेज पवर पंग ।
रहै गल्ह जुगजाइ सब्ब संमूह नर ॥ छं० ॥ १३१९ ॥

संयोगिता का कहना कि होनी तो हुई सो हुई परंतु चहुआन को चित्त से नहीं भुला सकती ।

कवित्त ॥ सुंदरि सोचि सु चित । प्रथम व्रत लियौ राज बर ॥
बरजि मंत पित बंध । बरजि गुर जन छोनी धर ॥
तात जग्य बिग्गरि । ध्रम्म लोपे सु लीह कुल ॥
सहस मुष्य अपहास । हीन भय दीन पलति पल ॥
कर तारह जे लिषिय कर । स्वांमि द्रोह बर बिछुरन ॥
मै लीन भाव मावी विगति । नन मुक्कौं चहुआन मन॥छं०॥१३२०॥

पृथ्वीराज का संयोगिता का हाथ पकड़ कर घोड़े पर सवार कराना ।

दूहा ॥ परनि राव ढिल्लीं सुपहि । ग्रहि लीनी कर वांम ॥
सम संजोगि न्रप सोभियत । मनहु बने रति कांम ॥छं०॥१३२१॥
चंद्रायना ॥ सुंदरि सोचि समुज्भित गह गह कंठ भरि ।
तबहि पानि प्रथिराज सुपंचिय बाह करि ॥
दिय हय पुट्ठहि भोर सु सब्ब सु लच्छनिय ।
करत तुरंग सुरंग सु [3]पुच्छनि वच्छनिय ॥ छं० ॥ १३२२ ॥

अश्वारोही दंपति की छवि का वर्णन ।

कवित्त ॥ हय संजोगि आरुहिय । पुट्ठि लग्गी सु वांम नृप ॥
पति राका पूरन प्रमांन । अरक बैठे सुह्वर बिप ॥
काम रित्त रहि चढी । काम रति दंपति राजं ॥
कै विद्रुम हिम संग । वियन ओपम [4]छपि माजं ॥

(१) ए. कृ. को.-वार ।   (२) मो.-अगनि भंजे जु पंगवर ।
(३) ए. कृ. को.-पुछनिय ।   (४) ए. कृ. को. छिति ।

सामंत सूर पारस नृपति। मधि सु राज राजंत बर॥
ग्रह सत्त भान ससि बिंटिकै। दिपत तेज प्रथमी सु पुर ॥छं०॥१३२३॥

संयोगिता सहित पृथ्वीराज का व्यूह बद्ध होकर चलना।

पंग पुत्ति आरुहिय। सूर चावद्दिसि रष्षे॥
दिसि ईसान सु कन्ह। पंग षंधार विलष्षे॥
केहरि बर कंठेरि। पंग पहुरै सो मुक्यौ॥
पुब्ब सेन निड्डुर नरिंद। धाराहर रुक्यौ॥
अगि नेव बीर पहु पंग कौ। धार कोट ओटह, सुभर॥
पांवार धार धारह धनी। सुजस लष्ष लष्षन सुबर ॥छं०॥१३२४॥
दिसि दच्छिन लषन कुआर। सार पाहार पंग छल॥
भौंहा राव नरिंद। सांमि रष्षे रुकि कंदल॥
नयन रत्त दल सिंघ। रिंघ रष्षन कमधज्जी॥
बर लच्छन बघघेल। सार सारह भुअ छज्जी॥
दिसि मरुत बीर बर सिंघ दे। लष्ष सेन आरुहिय रन॥
बर बंध बरुन साई सु पथ। जम विसाल कंपन डरन ॥छं०॥१३२५॥
दिसि उत्तर गषर गुरेस। रनह रुड्ड रावत बर॥
उभै स्वामि षल और। छंडि मदमुष्ष भेष बर॥
दिसि पच्छिम बलिभद्र। [1]जांम जद्दव अवराही॥
दई दुवाह दो बीर। रंभ रंभन मन मोही॥
सुरपत्ति समासै नग डुलै। दुहूं दिसा जै उच्चरिय॥
सामंत सूर रष्षे नृपति। पंग राय पारस फिरिय॥छं०॥१३२६॥
काट पंग आरुहिय। नीम कित्तिय थह मंडिय॥
थंभ सूर सामंत। अटल जुग ससि सिष छंडिय॥
बर चिनेत अरु प्रेत। ताल तुंमर नारद पढ़ि॥
देव रूप प्रथिराज। लच्छि संजोगि वाम गढ़ि॥
कामना मुकति अप्पै तही। जो बीर रूप संचै धयौ॥
सेवै जु सूर औ सूर मिलि। पार बरी तारन भयौ॥छं०॥१३२७॥

(१) मो.-भान।

पंग दल में घिरे हुए पृथ्वीराज की कमल-संपुट भौंरे की सी गति होना।

आर्या ॥ एकथ्थोय संजोई। एकथ्थौ होइ समर नियोसौ ॥
अनि लेय यथा पदमं। अंदोलए राज रिदएवं ॥ छं० ॥ १३२८ ॥
दूहा ॥ मन अंदोलित चंद मुष। दिषि सामंत सरुष्ष ॥
अंदोलित प्रथिराज हुअ। सिर कट्टिय सुष दुष्ष ॥ छं० ॥ १३२९ ॥

पृथ्वीराज के हृदय में यौवन और कुल लज्जा का झगड़ा होना।

वय सु लग्गि एकत करह। कक्कर लग्गिय लाज ॥
वय जुग्गिनि पुर चलि कहै। लाज कहै भिरि राज ॥छं०॥ १३३० ॥
चौपाई ॥ वै सुष सब्ब संजोगि बतावै। राज मरन दिसि पंथ चलावै ॥
दोई चित्त चढी बर राजं। वै बिलास मरनं कहि [1]लाजं ॥
छं० ॥ १३३१ ॥

वय भाव।

दूहा ॥ मिष्टानं बर पान भय। नव भामिनि रस कोक ॥
अमर राइ [2]इच्छति सबै। लाज सुष्य पर लोक ॥ छं० ॥ १३३२ ॥

लज्जा भाव।

चौपाई॥मो तजि मति चोहान सुजाई। ज्यों जलबिंदु सब किति समाई ॥
तौ तिय पन वय तज्जि दिषाई। तिन जिय जाहु ये लज्जन आई॥
छं० ॥ १३३३ ॥

वय विलासिता भाव।

दूहा ॥ सुनत वचन लज्जिय वयह। उत्तर दीय न लज्ज ॥
वै बिलास उत्तर दियौ। अज्जु लज्ज हम कज्ज ॥ छं० ॥ १३३४ ॥

पृथ्वीराज के हृदय में लज्जा का स्थान पाना।

वै सुष कौपि प्रमान से। मुक्किय जुगति जुगत्ति ॥

(१) ए. कृ. को.- काजं। (२) ए. कृ. को.-इच्छैति कै।

ए [1]हलका दंतीन के । धाए उज्जल कंति ॥ छं० ॥ १३३५ ॥
बैतन कुरषि निरष्षयौ । लाज सु आदर दीन ॥
कलि नारद नीरद कवि । प्रगट करहु हम कौन ॥ छं० ॥ १३३६ ॥

कवि का कहना कि पंग दल अति विषम है ।

कहत भट्ट दल विषम है । तुहि दल तुच्छ नरिंद ॥
परनि पुत्ति जैचंद की । करहि जाइ ग्रह नंद ॥ छं० ॥ १३३७ ॥

पृथ्वीराज का वचन कि कुछ परवाह नहीं मैं सब को बिदा करूंगा।

भुकित राज उत्तर दियौ । सो सथ सत्त सुभट्ट ॥
हूं चहुआन जु संभरी । भुज ठिल्लौ गज थट्ट ॥ छं० ॥ १३३८ ॥

कविचंद का पंग दल में जाकर कहना कि यह पृथ्वीराज नव दुलहिन के सहित हैं।

चल्यौ भट्ट संमुह तहां । जहं दल पंग अरेस ॥
जो इंछे नृप तुज्झ मन । टट्टौ षेत नरेस ॥ छं० ॥ १३३९ ॥
परनि राइ ढिल्लिय सु सुष । रुष किन्नौ मन आस ॥
कही चंद न्रप पंग दल । जुद्ध जुरै जम दास ॥ छं० ॥ १३४० ॥
चढिग सूर सामंत सह । न्त्रिप भ्रम्मह कुल लाज ॥
सुहर समुह दिष्षहि नयन । चिय जु बरिग प्रथिराज ॥छं०॥१३४१॥
गयौ चंद न्रप बयन सुनि । जहं दल पंग नरिंद ॥
अरि आतुर अरिग्रहन कौ । मनों राहु अरु चंद ॥ छं० ॥१३४२ ॥

अंतरिक्ष शब्द (नेपथ्य में) प्रश्न।

श्लोक ॥ कस्य भूपस्य सेनायां । कस्य बाजित्र बाजनं ॥
कस्य राज रिपू अरितं । कस्य संन्नाह पष्परं ॥ छं० १३४३ ॥

उत्तर ।

दूहा ॥ छलि आयौ चहुआन न्रप । भट्ट सथ्थ प्रथिराज ॥
तिहि पर गय हय पष्षरहि । तिहि पर बज्जत बाज ॥छं०॥१३४४॥
गाथा ॥ सा याहि दिल्लि नाथो । सा यंतु जग्य विध्वंसनौ ॥
परनेवा पंगपुत्री । जुद्ध मांगंत भूषनं ॥ छं० ॥ १३४५ ॥

(१) ए. कृ. को.-ए हेला देतीर के ।

चहुआन पर पंग सेना का चारों ओर से आक्रमण करना ।

दूहा ॥ सुनि श्रवननि चहुआन को । भयो निसानन घाव ॥
जनु भद्दव रवि अस्त मनि । चंपिय बद्दल बांव ॥ छं० ॥ १३४६ ॥

प्रकोपित पंगदल का विषम आतंक और सामंतों की सजनई ।

भुजंगी ॥ भरं साजतें धोम धुम्मै सुनंतं । तहां कंपियं कोलि तिय पुर कँपंतं ॥
तहां डमरु कर डहकियं गवरि कंतं । तिनं जानियं जोज जोगादि अंतं ॥
छं० ॥ १३४७ ॥

तवं कमक मिरु सेस सिर भार महियं । तहां किम सु उच्चास रवि रथ्थ सहियं ॥
तहां कमठ सुत कमल नहिं अंबु लहियं । तवैं संकि ब्रह्मान ब्रह्मंड गहियं ॥
छं० ॥ १३४८ ॥

[1]उनं राम रावन्न कबि किन्न कहता । उनं मरुति सुर महिष बल धन्न लहिता
मनों कंस ससिपाल जुर जमन प्रभुता । तिनं अम्मियं एम भय लच्छि सुरता ॥
छं० ॥ १३४९ ॥

भरं चढ्ढियं सूर आजान बाहं । तिनं तुट्टि बन सिंघ दीसंत लाहं ॥
तिनं गंग जल मोन धर हल्लिय आजैं । भरं पंगुरे राव राठौर भोजैं ॥
छं० ॥ १३५० ॥

तवै उप्परें फौज प्रथिराज राजं । मनों बांदरा लेन ते लंक गाजं ॥
तवं जग्गियं देव देवं उनिंदं । तिनं चंपियं पाय भारं फुनिंदं ॥
छं० ॥ १३५१ ॥

तवै चापियं भार पायाल दुंदं । घनं उड्डियं रेन आया समुंदं ॥
गिनै कौन अगनित्त रावत्त रत्ता । तिनं छत्र छिति भार दीसै नपत्ता ॥
छं० ॥ १३५२ ॥

जु आरंभ चक्की रहै कौन संता । सु बाराह रूपी न कंधै धरंता ॥
जु सेनं सनाहं नवं रूप रंगा । [2]तिनं भिल्ल वैतेग तेचैच गंगा ॥
छं० ॥ १३५३ ॥

तिनं टोप टंकार दीसै उतंगा । मनों बद्दलं पंति बंधी विहंगा ॥

(१) ए. कृ. को.-उनं । (२) ए. कृ. को.-तिनं झिल्ल चेचे मते वैच गंगा ।

जिरह जंगीन बनि अंग लाई। मनो कट्ठ कंती सुगोरष बनाई॥
छं० ॥ १३५४ ॥

तिनं हथ्थरे हथ्थ लग्गै सुहाई। तिनं घाइ गंजै न थक्कै थकाई॥
तिनं राग अरजीव बनि बान अच्छै। भरं दिष्षियै जानु जोगिंद कच्छै॥
छं० ॥ १३५५ ॥

मनं सस्त्र छत्तीस करि लोह साजै। इसे सूर सामंत सौ राज राजै॥
छं० ॥ १३५६ ॥

लज्जा भाव कि लज्जा के रहने से संसार में कीर्ति अमर होगी।

कुंडलिया॥ बाद बत्तवै कट्टि न्रिप। बहु उपाइ तो साज॥
मैं वपु लज्जै सौंपि कर। कै चलै प्रथिराज॥
कै चलै प्रथिराज। कित्ति भग्गौं भगि जित्तौ॥
मरन एक जम हथ्थ। दुरै भज्जिन जम वित्तौ॥
ते अप्पन तिय राज। लाज इक राग सदेवति।
गति के प्रान तिन काज। राज हन्नहि सु बद्द ब्रत॥छं०॥१३५७॥

मुरिल्ल॥ जब लाज सबै बे कर रस बद्दे। तब लगि पंग बीर रस सद्दे॥
दिसि दिसि दल धाए कविचंद। ज्यौं गाज्यौ बर ससि पाल [1]गुविंद॥
छं० ॥ १३५८ ॥

पृथ्वीराज के मन का लज्जा का अनुयायी होना।

दूहा॥ दुहु[2] एनौ तन चढ्ढियै। लज्ज प्रसंसत राइ॥
सत्त सुसत्त प्रनंब चढ़ि। चढ़िय सु उत्तर राई॥ छं० ॥ १३५९ ॥

पृथ्वीराज का वचन।

तूं लज्जी तन चढ्ढयौ। लज्ज प्रान संग [3]गथ्थ॥
अब कित्ती वत्तीय लगि। [4]अब सन चूक न तथ्थ॥छं०॥१३६०॥

---

(१) ए. कृ. को.-गुव्यंदं। (२) ए. कृ. को.-एतौ। (३) मो. सथ्थ।
(४) ए. कृ. को. अबसन सूक न नथ्थं।

पंग सेना के रण वाद्यों का भीषण रव।

मुरिल्ल ॥ बाजि न्रपत्र विचित्र सु बाजिग। मेघ कला दल बद्दल साजिग॥
बंबरि चौर दिसान दिसानं। दस दिसि 'रत्त घोर निसानं॥
छं० ॥ १३६१ ॥

भुजंगी ॥ निसानं दिसानंति बाजे सुचंगा। दिसा दच्छिनं देस लीनी उपंगा॥
नबल्लं तिदूरं जुजंगी मृदंगा। मनों न्रत्य नारद्द कट्टै प्रसंगा॥
छं० ॥ १३६२ ॥

बजै बंस विसतार बहु रंग रंगा। तिनं मोहियं सथ्थ लग्गे कुरंगा॥
बरं बीर गुंडीर संसे ससंगा। तिनं नच्चई ईस ते सीस गंगा॥
छं० ॥ १३६३ ॥

सुनै अच्छरी अच्छ मंजै सु अंगा। सिरं सिंधु सद्दनाद्द श्रवने उतंगा॥
रसे सूर सामंत सुनि जंग रंगा। .... ⋮ ॥ छं० ॥ १३६४ ॥
नफेरी नवं रंग सारंग भेरी। मनों न्रत्यनी इंद्र आरंभ केरी॥
सुनै सिंगि सावद्द नंगी न नेरी। मनों झिंझ आवद्ध हथ्थैं करेरी॥
छं० ॥ १३६५ ॥

करी उच्छरी घाव घन घंट टेरी। चितं चिंति तन छीन बाढी कुबेरी॥
अन्यं ओपमा घंड नैने निभग्गी। मनो राम रावन्न हथ्थें विलग्गी॥
छं० ॥ १३६६ ॥

पंगराज की ओर से एक हजार संख धुनियों का शब्द करना।

दूहा ॥ सुनि बज्जन रज्जन चढ़िग। सहस संष धुनि चाइ॥
मनों लंक विग्रह करन। चल्यौ रघुप्पति राइ॥ छं० ॥ १३६७ ॥
राम दलह बंदर विषम। रष्षस रावन वृंद॥
असी लष्य सौं सौ जुरिग। धनि प्रथिराज नरिंद ॥छं०॥१३६८॥

सेना के अग्रभाग में हाथियों की भीड़ बढ़ना।

दल संमुह दंतिय सघन। गनत न बनि अगनित्त॥

(१) ए. कृ को.-जोरत।

मनों[1] पन्नय विधि चरन किय। सह दिष्षिय मय मत्त ॥छं०॥१३६९॥

मतवारे हाथियों की ओजमय शोभा वर्णन।

मद मंता दँत उज्जला। मय कपोल मकरंद ॥
दुहुं दिसि भवर गुंजार करि। [2]छुटि अंदून गयंद ॥ छं० ॥ १३७० ॥

भुजंगी ॥ देषियहि मंत मैमत्त मंता। छच छहरंग चौरं ढुरंता ॥
छके जेह अंदून छुट्टै जुरंता। बाय वहु वेग झटकंत दंता ॥
छं० ॥ १३७१ ॥

जिते सिंघली सिंघ सुंडी प्रहारे। तिते सोर संमूह धावै हकारे ॥
उज्जर बान आवै [3]वकारे। अंकुसं कोस तेनं चिकारे ॥
छं० ॥ १३७२ ॥

मौठ मंगोल चिहु कोद बंके। इसे भूप बाजून बाजून हंके ॥
दंति मनु मुत्ति जरये सुलष्षी। मनों बीज झमकंत जलमेघ पष्षी ॥
छं० ॥ १३७३ ॥

घटं घंन घोरं न सोरं समानं। हलं हाल ए मंत लागे विमानं॥
बिरद बरदाइ आगे वृदंगा। स्वर्ग संगीत [4]करि रंभ संगा ॥
छं० ॥ १३७४ ॥

तेह तर जोर पट्टंब झिल्लैं। चंपियं पान ते मेर ढिल्लैं ॥
रेसमी रेसना रीति भल्ली। सिरी सीस सिंदूर सोभा सु मिल्ली ॥
छं० ॥ १३७५ ॥

रेष वैरष्य पति पात वल्ली। मनहु बन राइ द्रुम डाल हल्ली ॥
सीस सिंदूर गज जंप झंपे। देषि सुरलोक सहदेव कंपे ॥
छं० १३७६ ॥

इत्तनिय आस धरि मध्य रहियं। कहहि प्रथिराज गहियं सु गहियं॥
.... । .... छं० ॥ १३७७ ॥

दूहा ॥ गहि गहि कहि सेना सकल। हय गय बन उठि गन्न ॥
जनु पावस पुन्नहु अनिल। हलि गति बद्दल सब्ब ॥छं०॥१३७८॥

---

(१) मो.-पन्नन। (२) ए. कृ. को.-छुट्टिय अंदन।
(३) ए. कृ. को.-हकारे। (४) ए. कृ. को. डरि।

सुसज्जित सेना संग्रह की रात्रि से उपमा वर्णन ॥

लघुनराज ॥ हयं गयं नरं भरं । [1]उनम्मियं अलद्वरं ॥
दिसा दिसानं बज्जये । समुद्द सद्द लज्जए ॥ छं० ॥ १३७९ ॥
रजोद मोद उप्पली । सव्योम पंक संकुली ॥
तटाक बाल रींगनीं । सु चक्कयो वियौगिनी ॥ छं० ॥ १३८० ॥
पयाल पाल पल्लए । द्रगंत मंत हल्लए ॥
प्रहति छबि छज्जए । सरोज मौज लज्जए ॥ छं० ॥ १३८१ ॥
अनंदिते निसाचरे । कु कंपि तुंड साचरे ॥
भगंत [2]गंग कूल ए । समुद्र कून फूल ए ॥ छं० ॥ १३८२ ॥
अषंड रेन मंडयौ । डरप्पि इंद्र छंडयौ ॥
कमट्ठ पिट्ठ निठ्ठुरं । प्रसाल भाल विघ्घुरं ॥ छं० ॥ १३८३ ॥
छिपान हंस मग्ग ए । समाधि आधि जग्ग ए ॥
अपूर पूर बड्डए । जटाल काल लुड्ड ए ॥ छं० ॥ १३८४ ॥
नंरिद पंग पायसं । सु छबि मंगि आयसं ॥
गहन्न जोगिनी तुरे । सु अप्प अप्प विपफुरे ॥ छं० ॥ १३८५ ॥

पंग सेना का अनी बद्ध होना और जैचन्द का मीर जमाम को पृथ्वीराज को पकड़ने की आज्ञा देना ।

दूहा ॥ अप्प अप्प दल विप्फुरे । दिल्ली गहन नंरिद ॥
* मीर जमांम हमांम कौ । दिय आयस जैचंद ॥ छं० ॥ १३८६॥
दिसि दिसि अग्गै सज्जि बर । चतुरंगिनि पँग राइ ॥
चक्की चक्क वियोगइन । अनँद कमोद कँदाइ ॥ छं० ॥ १३८७ ॥

जंगी हाथियों की तैयारी वर्णन ।

भुजंगी॥चढी पंग फौजं चवं कोद लोकं । दिठी जानि कालं चली जोध थोकं ॥
बँधे बैरषं रत्न[3]हस्सै प्रकारं । मनों [4]नौकरी नौत सोभै सहारं ॥
छं० ॥ १३८८ ॥

(१) ए. कृ. को.-उनठियं । (२) ए. कृ. को.-नंग । * यह दोहा मो. प्रति में नहीं है ।
(३) मो.-सोभै । (४) ए. कृ.को.-निक्करी ।

बजे तब्बलं सद्द बंदी निनारे। मनों भृत्त बीरंद इथ्थं सँवारे॥
सिरी पष्षरं लोह गज्जं बनाई। नगं रत्त मम्भं भ्रमकंत भाई॥
छं० ॥ १३८९ ॥

सुती बैठियं लाल माला प्रकारं। मनों षेलही [1]पारसं कन्ह भारं॥
गजं सज्जयं हेम ओपं विराजे। तिनं अग्र सोहै सितं चौर साजे॥
छं० ॥ १३९० ॥

तिनं की उपम्मा कवी का विचारं। मनों हेम कूटं बहै गंग धारं॥
सिरी उज्जलं लोह है सीस राजं। तहां चौरं ठट्टं सु सीसं बिराजं॥
छं० ॥ १३९१ ॥

तहां चंद कव्वी उपम्मा विचारी। मनों राहु कूटं टटं भान मारी॥
सजी पंग सेनं रसं [2]लोह बीरं। तिनं मोकले गहन प्रथिराज मीरं॥
छं० ॥ १३९२ ॥

रावण कोतवाल का सब सेना में पंगराज का हुक्म सुनाकर कहना कि पृथ्वीराज संयोगिता को हर लाया है।

दूहा ॥ सजत सेन पहुपंग घन। आय स पत्ते तीर॥
बर रावन कुटवार तब। पुक्कारे बर बीर॥ छं० ॥ १३९३ ॥

पद्धरी ॥ धर पथ्थराइ बरनौ सुबीर। विश्राम राइ मन मथ सरीर॥
रहुवान सिंघ न्रप भेद दीन। चहुआन हरन संजोगि कीन॥
छं० ॥ १३९४ ॥

दरबार जैत मिल्लाइ आइ। संजोगि हरन न्रप सथ्थ जाइ॥
घरि एक एक घरियार बज्जि। पुक्कार लग्गि मारूफ सज्जि॥
छं० ॥ १३९५ ॥

जैचन्द का रावण और सुमंत से सलाह पूछना।

दूहा ॥ परी भीर बर द्रिग्ग बर। द्रिष्ट संजोइय कंत॥
तब तराल रावन कहै। पंग राइ सोमंत॥ छं० ॥ १३९६ ॥

(१) ए. कृ.-को.-पीर सं। (२) ए. कृ. को.-रोस।

सुमंत का कहना कि बनसिंह और केहर कंठीर को आज्ञा दी जाय ।

कवित्त ॥ मोहि मत पुछै नरिंद । तौ चहुआन गहन गुन ॥
दल बल अरि अरि दहि । ठट्ठ ठेलै दुज्जन दुव ॥
प्रथम राव बन सिंघ । राव बन बीर अग्गि करि ॥
[1]हेत सुमन जग्गौत । उनै पहुपंग पूरि परि ॥
केहरि कंठीर पठौ सु न्रप । इन समान छिचौ न छिति ॥
अड्डौ सु धरो बिभ्भार घन । रावन रिन सिष ईय पति ॥
छं० ॥ १३९७ ॥

जैचन्द का कहना कि पृथ्वीराज मय सामंतों के जीता पकड़ा जाव ।

तब नरिंद रा पंग । सु मुष बोल्यौ रावन प्रति ॥
आज गिद्ध ननि जौग । हनै घन स्याम भूप प्रति ॥
अति अयान अनबुझ्झ । अग्गि आगम्म प्रगट्टिय ॥
अप्प अप्प जस हीन । दीन दुनिया दल छुट्टिय ॥
अवरम्न सेन लष्षा चढौ । कढौ तेग बंधे दिवन ॥
बहु लाभ होइ जो षेम बिन । जु कछु काम कीजै सु चन ॥
छं० ॥ १३९८ ॥

बघघेलो बर सिंघ । राव केहरि कंठेरिय ॥
कालिंजर कोलिया । राय बंधिय बरजोरिय ॥
[2]रन रावन तलियार । बघघ कह्यौ मुष जंपौ ॥
रवि जैपाल नरिंद । काम कारन हूं अप्पौ ॥
बर गहन चंपि चहुआन कौ । [3]सत्त घत्त सामंत सह ॥
सम समथ सथ्थ भारथ भिरहि । सहस दिये कमधज्ज दह ॥
छं० ॥ १३९९ ॥

---

(१) ए. कृ. को. हेत सुमत जग्गौत ।   (२) ए. कृ. को.-नर ।
(३) मो.-मन्त ।

रावण का कहना कि यह असंभव है। इस समय मोह करने से आपकी बात नहीं रह सकती।

तब रावन उच्चरै। न्त्रिपति इह मत्ति सु भुट्टौ ॥
दीन छोड़ रापंग। सरित डंडी गुर मिट्टौ ॥
इह जोगिनि पुर इंद। मंजि गोरी गज बंधन ॥
इन सु सथ्थ सामंत। सूर अति रन मद मद्दन ॥
इह गहन दहन इच्छै न्त्रपति। भर समूह मोंहन करै ॥
नव अश्व बाज नव नव न्त्रपति। नव सु जोरि जग्गह धरै ॥
छं० ॥ १४०० ॥

रावण के कथनानुसार जैचन्द का मीर जमाम को भी पसर करने का हुक्म देना।

दूहा ॥ सहस मान सह छत्रपति। सह सम जुद्ध स जुद्ध ॥
गहन मीर बंदन कहै। तिहि लग्गै लहु बद्ध ॥ छं० ॥ १४०१ ॥
मीर बंद बारून बलिय। सक सामंत नरिंद ॥
मंच घात सक हरिमा। विष मुत्तरै फुनिंद ॥ छं० ॥ १४०२ ॥
अप्प अप्प दल विप्फुरयौ। दिल्ली गहन नरिंद ॥
मीर जमाम हमाम कौं। दिय आयस जैचंद ॥ छं० ॥ १४०३ ॥
तुम बिन जग्य न न्त्रिब्बहै। तुम बिन राज न धाम ॥
सुक कठ्ठ कठ्ठन समुह। जरि जरि अंब बुझान ॥ छं० ॥ १४०४ ॥

रावण का कहना कि आप स्वयं चढ़ाई कीजिए तब ठीक हो।

फिरि रावन न्त्रप सौं कह्यौ। तात परयौ तुहि काम ॥
जब लगि अप्प न नांचियै। काम न होइ सु ताम ॥ छं० ॥ १४०५ ॥

पंगराज का कहना कि चोरों को पकड़ने में क्यो जाऊं।

कवित्त ॥ तब झुकि पंग नरिंद। ढीठ कुटवार इट्ठ पर ॥
बाट घाट तस करन। चास बसि करन प्रज्ज धर ॥
रस अदभुत संग्राम। मद्धि रघ्यत धरि छंडी ॥

न कछु मभझ्म माजनौ। वाद राजन सौं मंडी ॥
अति ग्रब्ब अरब बर्ज्ज सिरह। नरनि नीर उत्तरि रह्यौ ॥
जानहि न जुद्ध अविरुद्ध गति। किम सु बचन राजन कह्यौ ॥
छं० ॥ १४०६ ॥

दूहा ॥ अरे ढीठ रावन्न सुनि। जितहि न डट्टो अप्प ॥
जो अलभ्भ लोकनि कह्यौ। जिहि मरि मारिय अप्प ॥
छं० ॥ १४०७ ॥

पुनः रावण का प्रत्युत्तर की आपने अपनें हठ से सब काम किए।

कवित्त ॥ फिरि रावन उच्चर्यौ। जग्य मंडि कुकमत्ति किय ॥
जैन जग्य आरंभ। प्रथम चहुआन बंध लिय ॥
बहुत मत्त चुक्कए। अवहि तुम मंत सुमंत्ते ॥
संदेसै व्यौहार। कहौ किन होतै भंत्ते ॥
बंधहु बबंच मंचिय मरन। चाहुआन गहियन गहिय ॥
संबरे जाय कन्या [1]रवन। जुगति जग्य पसरिय रहिय ॥ छं० ॥ १४०८

कुतवाल का बचन कि जिसका पालन करना हो उसे प्राण समान माने परंतु संग्राम में सबको कष्ट जाने।

स्लोक ॥ अप्प प्रानं समानस्य। लालना पालनादपि ॥
प्रापते तु युद्धकालस्य। शुष्ककाष्टं हुताशनं ॥ १४०९ ॥

दूहा ॥ कै प्रारंभन प्रिय भरन। मरन सु अग्गर राइ ॥
जग्य विगारन जूह चढ़ि। लियें सु कन्या जाइ ॥ छं० ॥ १४१० ॥
मुष म्रजाद बुल्ल्यौ बयन। नयर कंध कुटवार ॥
सु विधि मीर संग्राम भर। तुम रष्षहु हटवार ॥ छं० ॥ १४११ ॥
हट्ट नाम कुटवार सुनि। परि सामंतन जंग ॥
सबन निरष्षत पंग दल। पर पति दीप पतंग ॥ छं० ॥ १४१२ ॥

---

(१) ए कृ को.-बरन

मुसल्मानी सेना नायक का सेना सहित हरावल में होकर आगे बढ़ना।

भुजंगी ॥ तबै पट्ठियं पंग रायं सु हौसं। भयै दोइ द्रू म्मीन हीनेन दीसं॥
किथं नीच कंधं तुछं रोम सीसं। परी उप्परैं फौज प्रथिराज ईसं॥
छं०॥१४१३॥

रसावला ॥ [1]कोल पलं लषी। मंस स्रवं भषी ॥
रोम राइं नषी। बेयजे विद्रुषी ॥ छं० ॥ १४१४ ॥
बीर बाहू पषी। सुम्मरे नां लषी ॥
विद्दि सा बद्दषी। टंक अट्टुरषी ॥ छं० ॥ १४१५ ॥
षंचि विब्भारषी। लोह नारंजषी ॥
कोल चाहै [2]चषी। बाज बाहै लषी ॥ छं० ॥ १४१६ ॥
दुम्म साहै मुषी। बोल तें ना लषी ॥
पारसी पारषी। बान बाहं पषी ॥ छं० ॥ १४१७ ॥
प्रान तिन्नं तषी। पंग पारट्ठषी ॥
स्वांमिता चित्तषी। ढिल्लि ढाइंभषी ॥ छं० ॥ १४१८ ॥
बीच रत्तं मुषी। सट्ठि हज्जारषी ॥
पवंगे पारषी। .... छं० ॥१४१९॥

पंगदल को आते देख कर पृथ्वीराज का फिर कर खड़ा होना।

भुजंगी। हयं सेन पय सेन अग्गै सुंडारै। त्रिपत्ती मछ्छी न लभ्भै नपारै॥
तिनं सूर सामंत मध्यं हजारे। मनों विटियं कोट मंझे मुनारे॥
छं० ॥ १४२० ॥

तबै मोरियं राज प्रथिराज बग्गं। बरं उट्ठियं रोस आयास लग्गं॥
मनों पथ्थ पारथ्थ हरि होम जग्गं। मनों षोलियं षग्ग षंडून लग्गं॥
छं० ॥ १४२१ ॥

बरं उट्ठियं सूर सामंत तज्जै। तबें षोलियं षग्ग साहथ्थ रज्जै॥
सुरं बाजनै पंग रा बीर बज्जै। मनों आगमं मेघ आषाढ़ गज्जै॥
छं० ॥ १४२२ ॥

(१) ए. कृ. को.-"कोल पल अमर्ण्यो।" (२) ए.-षषी।

पृथ्वीराज की ओर से बाघ राज बघेले का तलवार खींच कर साम्हने होना।

कवित्त ॥ बग्घराव बग्घेल। हेल मुग्गल निहल्ल किय ॥
मेघ सिंघ विज्जुलिय। जांनि भ्रंमर भ्रलक्किय ॥
बे गयंद बारुन बहंत। बारत्तन बारिय ॥
मीर पुट्ठि आरुट्ठि। सेन गहि गहि अप्फारिय ॥
आवृत्त बत्त सामंत रन। जमर मेछ संमुह मिलिय ॥
अष्टमी चष्प इक्कह सु ग्रह। प्रथम रोस दुअ दल मिलिय॥ छं० १४२३॥

सौ सामंत और असंख्य पंग दल में संग्राम शुरू होना।

दूहा ॥ जोध जोध आयरु मिले। एक इक्क सौं लष्ष ॥
नारद तुंबर सिव सकति। सौ सामंतां पष्ष ॥ छं० ॥ १४२४ ॥

पुनः रावण का वचन कि पृथ्वीराज को पकड़ने में सब सेना का नाश होगा।

कवित्त ॥ फिरि रावन उच्चरिय। सुनौ कमधज्ज [1]इला बर ॥
अरि बंधन इंछियै। सु तन बंछियै मरन भर ॥
प्रथम मूल दिज्जियै। व्याज आवै धुर जव्वी ॥
इन कज्जैं इल भार। देव [2]करयौ छिति लिन्नी ॥
छिति ग्रीषम बुठ पावसह। बैंन पहु जु पंगह सुनिय ॥
[3]कायर सु भीर भंजै न भर। भर भंजै संभरि धनिय॥ छं०॥१४२५॥

केहर कंठेर का कहना कि रावण का कथन यथार्थ है।

केहरि बर कंठेर। पंग सम्हौ उच्चारिय ॥
मत्त सु मत उच्चरिय। बीर रावम अधिकारिय ॥
अंच जोर जो बजै। सार तंची मिलि अंची ॥
अंचि जोर जो [4]चलै। सार बंधी अनु तंची ॥

(१) मो.-इलावर। (२) मो.-लरयौ
(३) ए. कृ. को.-कायरन भीर भंजै सुभर। (४) मो.-वजै।

भंजौ जु बीर चहुआन दल। दइ दुबाह सन्हौ भिरै॥
भारथ्थ बीर मंडन सदै। अरी जीत कायर मुरै॥ छं०॥ १४२६॥

पंग का उत्तर देना कि सेवक का धर्म स्वामी की आज्ञापालन करना है।

सुनि केहरि बर बेंन। कौंन उच्चरै जुड यथ॥
धर संग्रह गो ग्रहन। सामि संकट जु बीर तथ॥
साम दान अरु भेद। सोइ चुक्कै बर साई॥
नरक निवास प्रमान। सुथित कित्ती निधि पाई॥
जंकारै मंत्त उत्तरि परै। सामि अग्गि मंगै सुभर॥
यौं हंसन केलि घर घर करै। इकत पच्छ बहु सुभर॥
छं०॥ १४२७॥

पंग को प्रणाम करके केहर कंठेर और रावण का बढ़ना।

दूहा॥ केहरि कन्ह सु गत्तमी। करि जुहार न्रप भार॥
हस्ति काल जम जाल लै। चलि अग्गैं कुटवार॥ छं०॥ १४२८॥

उनके पीछे जैचन्द का चलना।

कवित्त॥ केहरि बर कंठीर। कन्ह कमधज्ज सु रावन॥
हस्ति काल जम जाल। [1]अग्गि नग चासति धावन॥
ता पच्छै कमधज्ज। सेन चतुरंगी चल्लिय॥
हसम हयगय सुभर। भूमि चावहिसि हल्लिय॥
कंद्रप्प केत पहुपंग सँग। बजि निसान अप्पन चढ़िय॥
घन अँगम्यौ सेन चहुआन बर। पवन सेन टिड्डी बढ़िय॥
छं०॥ १४२९॥

जैचन्द के सहायक राजा रावतों के नाम।

भुजंगी॥ तिकें चढ्ढियं पंग अज्ञान बाहं। बचं उच्चरें सेनं चौहान साहं॥
सुतं चढ्ढियं [2]सेर कंद्रप्प केतं। मनों बंधियं काम बे बीर नेतं॥
छं०॥ १४३०॥

---

(१) ए. कृ. को.-अगिन, अगिनिग। (२) ए. कृ. को. बीर।

चढै प्रब्बतं बीर बीरं प्रमानं । कहै पंग अप्पै बँधे चाहुआनं ॥
चढे चंचलं चंपि चंदेर राई । जिनैं पुब्ब बैरं रनंथंभ पाई ॥
छं० ॥ १४३१ ॥

चढ़े किल्हनं कन्ह क्रन्नाट राजी । उठौ बंक मुंछं ससी बीय लाजी॥
चढ्यौ दच्छ भानं सुभानं प्रमानं । चढे कन्ह चंदेल भौधू समानं ॥
छं० ॥ १४३२ ॥

चढ्यो बग्गरी बीर तत्तौ [1]तुरीसं । लरैं सामि कामं असम्मानं सीसं॥
चढ्यौ इंद्र राजं असप्पति बीरं । महा तेज जाजुल्य बीरं सरीरं ॥
छं० ॥ १४३३ ॥

चढ्यौ मालवी बीर वर सिंह तद्दं । भजै तेज जाजुल्य देष्यौ [2]फुनिंदं॥
चढ्यो पंच पंचाइनं बीर मोरी । चढै बाह रंजैत पावंग जोरी ॥
चढ्यौ दाहिमौ देव देवत्त गत्ती । चढ़े मीर वीरं षुरासान तत्ती ॥
छं० ॥ १४३४ ॥

असी लष्य सेना चिह्नं मग्ग धाई । मनौं भूमि बाराह कंधै उठाई॥
कमठ्ठंति पिठ्ठंति ठीसी समालं । कँपी सेन मुकै कुवे हथ्थ [3]झालं॥
छं० ॥ १४३५ ॥

पंग की चढ़ाई का आतंक वर्णन ।

कवित्त ॥ [4]वजत धरद्धर सीस । धार धरनीय सेस कहि ।
कुंडलेस कुंडलिय । कहय पन्न गति अरुल रहि ॥
[5]अहि अहि कहि अहि नाम । संकभौ सीस सेस वर ॥
गहिन परै तिहि नाग । चित्त विभ्रम चिचक पर ॥
कंपेस नाम कंपत भयौ । बहुत नाम तहिन लहिय ॥
जिन जिन उपाय रष्षिय इला । [6]पंग पयानह तिहि कहिय ॥
छं० ॥ १४३६ ॥

दूहा ॥ फन फन पर मुक्कत जु इल । तत्त बसत दष्षि हथ्थ ॥

(१) ए. कृ. को.-तिरीसं ।　(२) ए. कृ. को.-दुनिंदं ।
(३) ए. कृ. को.-जालं ।　(४) ए. कृ. को.-जत्रत ।
(५) ए. कृ. को.-अहि अहि अहि कहि नाम । (६) ए. कृ. को.-पंग पयानन होत वहि ।

अट्ठ कंपि दो अट्ठ डरि। रवि सुभ्भ्भै नह पथ्थ ॥छं०॥१४३७॥

क्षत्री धर्म की प्रभुता।

कवित्त ॥ मिलि गरूर सामंत। विपथ अरु सुपथ उचारं ॥
विपथ जु बंध्यौ मोह। सुपथ पति रषि पति वारं ॥
रहै विपथ रजपूत। मझ्झि अनि रपि चित भारथ ॥
इह सु पथ्थ रजतीय। सामि प्रेमह छोड़ सारथ ॥
सह किंत्ति कलं कल कथ्थयौ। काल सु पंग कलंतरै ॥
कस भ्रम्म भ्रम्म छची तनौ। मवन मत्त [1]चुक्कहि नरै ॥छं०॥१४३८॥

दूहा ॥ निसि भै भै काइर भजिग। [2]तमस भज्ज गनि सूर ॥
भय भयान रन उदित वर। अद्ध निसा अध पूर ॥ छं० ॥ १४३९ ॥

प्रफुल्ल मन वीरों के मुखारविंद की शोभा वर्णन।

भुजंगी ॥ परी अद्ध निस्सा जमं छिद्र कारी। ठठुक्के सुरं देखि बरसे न पारी॥
फिरी पंति चावद्दिसं पंग सूरं। महा तेज जाजुल्य दिट्ठी करूरं ॥
छं० ॥ १४४० ॥

सपत्तेज सूरं तहां युद्ध तूरं। दिषे सूर प्रतिबिंब तो मुभ्भ नूरं ॥
महा तेज सूरं समुद्दं जु प्रीतं। बड़े कव्वि रावन्न उप्पम दीतं ॥
छं० ॥ १४४१ ॥

करे सिद्धि जेमन सकारंन नाई। थपे सिद्धि मानं वियं सिद्धि पाई॥
[3]सतं पत्रयं मुद्दि फुल्लै कमोदं। मनौ बाल्लवै संधि दो संधि जुदं॥
छं० ॥ १४४२ ॥

तरें को तरं उड्डि पंखं प्रमानं। वसे भौर भोरं सतं पत्र थानं ॥
[4]मिलं दंपती भौर जोगं सरंगी। ललं बेस सोसी जु मुकरंद पंगी ॥
छं० ॥ १४४३ ॥

चले छोड़ जानं मनं मथ्थ वीरं। सजै कुट्टि लै रथ्थ भुम्मनं सरीरं॥
डगे उड्डि गेनं इकं दुत्ति मानं। रगं रत्त सुभ्भै अँभै आसमानं॥
छं० ॥ १४४४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-चक्कहि। (१) ए. कृ. को—तम समनग्गनि सूर।
(२) ए. कृ. को. संत पत्र जा (३) मो.-मिले दंपती भौंरि ज्यौं गंत रंती।

पृथ्वीराज को पकड़ने के लिये पांच लाख सेना के साथ रूमीखां और बहराम खां दो यवन योद्धाओं का बीड़ा उठाना ॥

दूहा ॥ षां मारुफ नव रत्ति षां। रुषमीं षां बहराम ॥
पान मंडि लीनौ सुकर। सामि सपत्ते काम ॥ छं० ॥ १४४५ ॥
पंच लष्य तिन सथ्थ किय। अनी बंधि न्रप राज ॥
गुन गोरी नम जानई। सामि भ्रम्म सौं काज ॥ छं० ॥ १४४६ ॥

मोतीदाम ॥ बजे बर चंग निसार्नान नद्द। सिरं सहनाय नफेरिन सद्द ॥
बजंत निसान सुरंभ रिझंत। सुने सद ईस [1]पल्लक्क पुलंत ॥
छं० ॥ १४४७ ॥
बजै घट घुंघर घोरनि भार। कै इंद्र आरंभ करै बिविचार ॥
बजै रंग ओज जलज जल घंट। हरै ग्रव संभरि नारद कंठ ॥
छं० ॥ १४४८ ॥
बजै सद बंस महिष्यत सिंघ। मनों काम नंकन आरँभ रंग ॥
तबल्ल टँकार निसानन हल्ल। किधौं गज मेघ असाढ़ सु कल्ल ॥
छं० ॥ १४४९ ॥

आगे रावण तिस पीछे जैचन्द का अग्रसर होना और इस आतंक से सब को भाषित होना कि चौहान अवश्य पकड़ा जायगा ॥

दूहा ॥ रावन न्रप बहुत सुबर। षिजि बंधव बर बीर ॥
आदि बैर चहुआन सौं। चढ़ि फवज्ज भर भीर ॥ छं० ॥ १४५० ॥
फटिय फौज पहुपंग बर। मत मंची न्रिप चिंति ॥
अप्प चढ़न बहन अरी। नीर फौज छबि कित्ति ॥ छं० ॥ १४५१ ॥

कवित्त ॥ करि रावन न्रप अग्ग। पंग चढ़ि बर नागर ॥
[2]धरनि धाय सननंति। रंग दुस्सह जुग सागर ॥

(१) मो.-सु पल्ल सलंत। (२) मो.-धरति।

मुगति दान अप्पनह। जंम जीवन उछ्यप्पन ॥
फल कित्ती भोगवन। क्रंम भंजन अघ कप्पन ॥
आजुल्य देव दैवान भर। दिषि नरिंद तोमर तरसि ॥
डगमगे भग्गि द्रगपाल बर। बीर भुगति तुंमर परसि ॥
छं० ॥ १४५२ ॥

दूहा ॥ तरसि तुंग बद्दलति दल। पल भल विजय निसान ॥
बाल वृद्ध दुभ उच्चरै। गहै पंग चहुआन ॥ छं० ॥ १४५३ ॥

हरावल के हाथियों की प्रभूति।

बर सोहै बद्दलति दल। बर उतंग गज रत्त ॥
काज न सज्जल रष्षई। कौन गंग उर गत्त ॥ १४५४ ॥
हलि गज दंतिन सघन घन। गति को कहै गनित्त ॥
मनों प्रब्बत बिधि चरन कै। फौज अग्गैं मैंमत्त ॥ छं० ॥ १४५५ ॥

पंग दल को बढ़ता देख कर संयोगिता सहित पृथ्वीराज का सन्नद्ध होना और चारों ओर पकड़ा पकड़ो का शोर मचना।

पद्धरी ॥ पूरन्न राव चालुक्क बंभ। हम्मीर राव पामार थंभ ॥
गोयंद राव बघ्घेल सूर। अंगमी सेन घन ज्यों लंगूर ॥
छं० ॥ १४५६ ॥
पहुपंग गोपि प्रविकास राज। दिष्षै कमंध दल करिय साज ॥
बाजिच ताम बज्जे गुहीर। हय गय सु ताम रुज्जंति बीर ॥
छं० ॥ १४५७ ॥
न्रिप नाइ सीस मिलि राज सब्ब। दिष्षेव पंग गुर तेज ग्रब्ब ॥
दल सजे साजि सब देषि पंग। उच्चर्यौ गरुअ चहुआन जंग ॥
छं० ॥ १४५८ ॥
सिर धारि बोलि [1]जसराज सामि। बंधें अवन्नि गुरु तेज ताम ॥
सजि सेन गरट चलि मंद गत्ति। निज स्वामि काम [2]गुभ्भ गुरत्ति ॥
छं० ॥ १५५९ ॥

(१) मो.-सज। (२) मो. गुंजे।

आवंत सेन प्रथिराज जानि। उट्ठेव सूर सामंत तानि॥
सामंत सूर सजि चढ़े जाम। हय मंगि चढ़न चहुआन ताम॥
छं० ॥ १४६० ॥
संजोगि पुट्ठि ¹आरोहि बंधि। थट्टौ सु राज सन्नाह संधि॥
छं० ॥ १४६१ ॥
दूहा ॥ गहि गहि गहि मुष बेंन कहि। भग्गि न पावै जान॥
श्रवन सबद्द न संचरिय। मनों गुंग करि सान॥ छं० ॥ १४६२॥

लोहाना आजान बाहु का मुकाबला करना और वीरता के साथ मारा जाना।

कवित्त ॥ दल समंद पहुपंग। गज्जि लग्गौ चावद्दिसि॥
लोहानौ बर बीर। पारि मंडी अड्डिय असि॥
लोह लहरि ढिल्लई। फिरिव बज्जे दल षग्गह॥
हं हं हं आरुहिय। गजति गज्जन नर लग्गह॥
पारथ्थ बीर बर बार हर। बहु क्रूर कढ्ढी विहर॥
रघुबीर तरंग तुरंग जल। कमल जानि नंचैति सिर॥छं०॥१४६३॥
मित्त रथ्थ रजि व्योम। मङ्कि अट्टई असुर गुर॥
रसह रौद्र विथ्थुऱ्यौ। षिति षिजि लग्गो अमर पुर॥
संकर भरि लगि लोह। धूरि धुंधरि तिनि सा छबि॥
हाजुर मीर हमाम। मीर गिरदान सामि नमि॥
चवदिट्ठ उट्ठि राजन सबद। पारसि गहन गहन्न किय॥
है छंडि मंडि असिबर दुकर। जंपत आतुर जीह लिय॥
छं० ॥ १४६४ ॥

लोहाना के मरने पर गोयंदराय गहलौत का अग्रसर होना और कई एक मीर वीरों को मार कर उसका भी काम आना।

भुजंगी ॥ तबै हक्कि गहिलौत गोयंद राजं। हयं छंडि हरि जेम करि चक्क साजं॥

(१) ए. आरोंधि।

लगे [1]मुद्ध धारं सु बाहं सु भारं। मनों भक्कसं तार तुट्टै करारं॥
छं० ॥ १४६५ ॥

बहै षग्ग झट्टं स झल्लति सट्टं। बिसीसं बिघट्टं मनों नाचनट्टं॥
तुटै पग्ग उड्डंत व्योमं विहारं। मनों संभ संक्रंति हव्वाइ झारं॥
छं० ॥ १४६६ ॥

हहक्कार हक्कार हक्कै सुमीरं। चवं राहि बीरं बजे जुद्ध धीरं॥
समुष्षं हमामं सु मीरं मिलंदे। मनों राह ग्राहं कुटं बेस इंदे॥
छं० ॥ १४६७ ॥

हए तोमरं हीय फेरे फरक्के। मनो मट्ट बेसं सु भूमं तरक्के॥
तबै चंपि गिरियं सु गोयंद राजं। हये संगिनौ छुट्टि सीसं सु गाजं॥
छं० ॥ १४६८ ॥

फटे तोमरं पुट्टि उट्टंति रंगे। धमक्के धरा नाग नागं सिरंगे।
चवै दीन दीनं गिरंदौं गुमानं। कियं आय पाहार नाविक्क बानं॥
छं० ॥ १४६९ ॥

चँपै चंप बर बेग गोयंद राजं। मृगी जेम मृगराज धपि पंषि बाजं॥
हए ताम नेजानि छूरंति धायं। कियं कंत प्राहार गोयंद रायं॥
छं० ॥ १४७० ॥

हए षग्ग सीसं परे रंभ थंभं। मनों कोपिनं षत्ति घटंति ईभं॥
बियं लग्गि बथ्थं बलं बाहु बाहं। जमं दट्ठ चंपे डरं मेछ गाहं॥
छं० ॥ १४७१ ॥

उठे हक्कि करि भारि कोपेज डालं। हए च्यार मीरं दुबाहंड ढालं॥
उरं लग्गि जंबूर आरास षानं। पऱ्यो राव गोयंद दिल्ली भुजानं॥
छं० ॥ १४७२ ॥

गोयंदराय की वीरता और उसके मरने पर पज्जूनराय का हाथियार करना॥

दूहा ॥ पहर एक असिवर सुभर। आरिसि बुट्ठी सार॥
गिनै कौन गोयंद सिर। जे षग तुट्टिय धार॥ छं० १४७३ ॥

(१) ए. कृ. को.-जुद्ध।

कवित्त ॥ तब गरज्यौ गहिलौत। पत्ति पाहार धार चढ़ि ॥
बड़वा नल असि तेज। पंग पारस संमुह चढ़ि ॥
अरि अबुभ्भ सिध्दवै। मल्ल वज्जौ तन भिल्लै ॥
अंकै मरन समूह। सत्य बर 'सत्थन छिल्लै ॥
आहत्त घाय तन भंभरिय। मन अच्छरि तिन तन बरिय ॥
गोयंदराय आहुट्ठ पति। सुगति मग्ग पुच्छिय दरिय ॥
छं० ॥ १४७४ ॥

परत धरनि गहिलौत। सेन नच्चिय असुरायन ॥
चितिय जांम अह सुक्र। रस्स मत्तौ रुद्रायन ॥
गयत प्रान गोयंद। मीर इति मित्ति सुपिच्छिय ॥
पिभ्भे राज पज्जून। सुधर कम्मार सु ढिच्छिय ॥
हहकारि सीस साजे गयन। किहय कंध असि भारि कर ॥
धर पर्‍यौ दंत ग्रत मित्त परि। उठ्यौ हक्कि हरि जेम अरि ॥
छं० ॥ १४७५ ॥

पज्जूनराय पर पांच सौ मीरों का पैदल होकर धावा करना और इधर से पांच सौ सामंतों का उसकी मदद करना॥

दूत मित्तह उपारह। 'मीर सौ पंच छंडि हय ॥
है है है जंपै जुवान। उथ्थान थान भय ॥
तिन रोक्किग पज्जून। राय केहरि करि जुथ्थह ॥
देषि 'सिघ पामार। पीप परिहार सु पथ्थह ॥
चंदेल भूप भौंहा सुभर। दाहिम्मौ नरंसिघ बर ॥
कछरा राइ चालुक पहु। मिलिय पंच उप्पर समर ॥
छं० ॥ १४७६ ॥

नरसिंहराय का वीरता के साथ मारा जाना।

मोतीदाम॥मिलि हक्किय हक्क सु भीर गंभीर। गुमान दुमान सु चंपिय पीर॥
महाभर सूरसामंत सु धीर। सु न्निम्मल नेम रजे रज नीर ॥
छं० ॥ १४७७ ॥

(१) ए. कृ. कां.-सन्नुन । (२) ए. कृ. को. सीर ।

हबक्कि सु धक्कि अनो अनि अंग। लगे जम दड्ढ सु सेलह संग ॥
छुरिक्कइ घाइ सु तुट्टहि सीस। घिलंत कमंध उठै भर रीस ॥
छं० ॥ १४७८ ॥

चल्ले धर पूर रुहीर प्रवाह। सबै मिलि घुंटि सकोति सु राह ॥
न्रिपति कहर [1]निभारत पन्न। मनों नटिनी मुष जक्क अगन्नि ॥
छं० १४७९ ॥

मिले इत मित्त पजून सु थाइ। हयौ हिय नेज कुरंमह राइ ॥
चले सम नेज हयौ असि भार। पऱ्यौ इत मित्त मनों तरतार ॥
छं० १४८० ॥

पऱ्यौ धर राइ पजून समुच्छि। हयौ असि सेर न सीसं उच्छि ॥
चंप्यौ नरसिंघ मनों करि सिंघ। महातन मंडिग सेन कलिंग ॥
छं० १४८१ ॥

लग्यौ दल सिंघ करष्षि सु तीर। चंपे चव सिंघ सु भग्गिय मीर ॥
पऱ्यौ नरसिंघ नरव्वर सूर। तुटे सिर आवध जाम करूर ॥
छं० १४८२ ॥

नरसिंह राय की वीरता और उसका मोक्ष पद पाना।

कवित्त। दाहिम्मै नर सिंघ। रिंघ रष्यौ रावत पन ॥
सिर तुट्टै कर कट्टि। चट्टि धायौ धर हर घन ॥
मार मार उचरंत। राव बज्जे धारा हर ॥
देव स्तुति करि चार। रंभ अग्गरी कहिरु बर ॥
संकरह सीस लीन्यौ जु कर। दई दरिद्री ज्यौं गहिय ॥
कविचंद निरषि सुभ्भै सिरह। जुगति उगति कवियन कहिय ॥
छं० ॥ १४८३ ॥

मुसलमान सेना का जोर पकड़ना और पज्जूनराय का तीसरे प्रहर पर्यंत लड़ना।

पंग हुकम परमान। अग्र चौकी पुरमानिय ॥
प्रथम जुद्ध किय [2]मीर। हारि किनही नह मानिय ॥

(१) ए. कृ. को.-डारत। । (२) ए. कृ. को.-मार।

परे मीर पथ्थार। धार असिवर सिर झारं ॥
सामंतनि लंगरिय। घाइ उट्ठी ग्रह सारं ॥
सम सथ्थ बाघ बघ्घेल न्रिप। जंग ओट कोटह अकल ॥
टारै न मुष्य सांईय छल। लोह लहरि बाजंत झल ॥
छं० ॥ १४८४ ॥

मुसल्मान सेना के क्षित विक्षित होने पर उधर से बाघराज बघेले का वसर करना और इधर से चंदपुंडीर का मौका रोकना।

परत राइ पज्जून। विक्तचय जाम सु बासुर ॥
विषम रुद्र बिथ्थर्यौ। भार लग्गै भर सुभ्भर ॥
बघ्घराव बघ्घेल। मार कामोद सेन सम ॥
मिलि चंपिय चहुआन। सूर सुभ्भै न अगम गम ॥
षह धूरि उड्डि धुंधरि धरनि। किलक हक्क बज्जिय विषम ॥
पुंडीर राइ राजह तनौ। समर बार सज्यौ असम ॥ छं० ॥ १४८५॥
बीर मंच उच्चार। धार धाराहर बज्जिय ॥
तिमर तेग निब्बरिय। गुडिल गयनं लषि गज्जिय ॥
उड़पति कमल अलाइ। तेज मंजिय तारा अरि ॥
[1]अनौ भोर अर अकल। सयर लोग उप्पर परि ॥
धर धार धार धुक्किय धरनि। करिय [2]अरिय किननंत धर ॥
पुंडीर राइ चंदह सुचित। अरिन नट्ट नच्चै सु नर ॥छं० ॥१४८६॥

मीर कमोद और पुंडीर का युद्ध और पुंडीर का माराजाना।

बीर मौर कामोद। आय जब पुंडिर उप्पर ॥
बिहथ नेज उभ्भारि। बाहि निभ्भझाहि चंद उर ॥
सेल सैल संमुहिय। हड्डु भंजिय हिय चंपिय ॥
सुधर ढार निभ्भार। बाहि असुराइन कंपिय ॥
पुंडीर राइ आसर सयन। मृत जिम नंचिय समर ॥
दलभंति पंग पुंडीर परि। जय जय सुर सद्दे अमर ॥छं०॥१४८७॥

(१) ए. कृ. को.-अनौ मोरं अरि कमल। 　(२) ए. कृ. को.-अरिय।

चंद पुंडीर की वीरता।

दूहा ॥ परत राइ पुंडीर धर। तरनि सरन गय सिंधु ॥
गनै जु को पुंडीर सिर। जे धर तुट्टि अनिंधु ॥ छं० ॥ १४८८ ॥

चंदपुंडीर के मरने पर कूरंभराय का धावा करना और बाघ राज और कूरंभराय दोनों का मारा जाना।

कवित्त ॥ परत राइ पुंडीर। गहिव कूरम षग धायौ ॥
बाघ राइ बघ्घल। उहित [1]असिवर करि साह्यौ ॥
न्त्रिभै न्त्रिमै न्त्रिमरिग। तेग झारिय टट्टर पर ॥
मनहु बेद दुजहीन। पिट्ठि झल्लरि अग्गै हर ॥
गल बांह लग्गि गट्ठौ पिसुन। मीत भेट मद्दा विच्छुरिय ॥
उर चंपि दोइ कट्टारि कर। मुगति मग्ग लभ्भी घरिय॥छं०॥१४८९॥

कूरंभ के मरने पर उसके भाई पल्हनराय का मोरचे पर आना।

कूरंभइ उप्परइ। [2]बंधु पाल्हनह आयौ ॥
सिंघ छुट्टि संकलकि। देषि कुंजर घट धायौ ॥
कुंतन तरनि सु मंजि। दट्ठु जम दट्ठु विकासे ॥
भाला षग्गन छुट्टि। पंग सेना परिनस्से ॥
गजबाज जुद्ध घन नर परिग। पहु कारन दिय प्रान जुध ॥
सुरनरह नाग अस्तुति करैं। बलि बलि बीर भुअंग भुअ ॥
छं० ॥ १४९० ॥

पाल्हन की वीरता और दोपहर के समय उसका खेत रहना।

मध्य टरत विप्पहर। सार बज्यौ प्रहार भर ॥
मेघ पंग उन्नयौ। मार मंडीय अपार सर ॥
भय कूरंभ टट्टीव। छार भीजै तहां दिज्जै ॥
बर ओडन प्रथिराज। बीर बीरां रस लिज्जै ॥
तन तमकि तमकि असि बर कढ्यौ। असि प्रहार धारह चढ्यौ ॥
पज्जून बंध अरु पुत्त बर। कारन जेम हथ्थह बढ्यौ ॥ छं०॥१४९१॥

(१) ए. कृ. को-असिमर। ।(२) मो.-पाल्हनराय।

पाल्हन और कूरंभ की उदंड वीरता और दोनों का मोक्ष पद पाना ।

परे मध्य विप्पहर । पल्ह पज्जून बंध बर ॥
रज रज तन किय हटकि । कटक कमधज्ज कोटि भर ॥
ईस सीस संहर्‍यौ । हथ्थ सों हथ्थ न मुक्कयौ ॥
सूर मुष्यौ सुख हर्‍यौ । बीर बीरा रस तक्क्यौ ॥
मारत अरिन कूरंभ झुकि । ते रवि मंडल भेदियै ॥
डोल्यौ न रथ्थ संमुष चल्यौ । किति कला नह देषियै ॥
छं०॥ १४९२ ॥

गंग डोलि ससि डोलि । डोलि ब्रह्मंड सक्क डुल ॥
अष्ट थान दिगपाल । चाल चंचाल विचल थल ॥
फिरि रुक्यौ प्रथिराज । सबर पारस पहु पंगिय ॥
च्यारि च्यारि तरवारि । बीर कूरंभति सज्जिय ॥
नंषिय पहुप्प इक चंदनं । एक किक्ति जंपत बयन ॥
बे हथ्थ दरिद्री द्रव्य ज्यों । रहे सूर निरषत नयन ॥छं० ॥ १४९३ ॥

पज्जूनराय का निपट निराश होकर युद्ध करना ।

दूहा ॥ भीर परी पहुपंग दल । भये चलिय पहुराम ॥
तब पजून संमुह करन । मरन क्रत्य किय काम ॥छं० ॥ १४९४ ॥

भुजंगी ॥ भिरें बीर पज्जून यों पंग जानं । बहै षग्ग अघ्घाइ अघ्घाइ बानं ॥
करी छिन्न भिन्नं सनाहं तिजीनं । हयं अंस बंसं द्रुमं बीर कीनं ॥
छं० ॥ १४९५ ॥

महा सूर बीरं बुलै क्रूर बानी । चल्यौ धार पज्जून संसार जानी ॥
करी अग्ग पच्छं सु दूनं दिषंबे । भयौ स्वामि सन्नाह बैरी छुडंबे ॥
छं० ॥ १४९६ ॥

पहू पंग राइं लग्यौ भोन राजं । भुजा दान दीनौ षगं मग्ग साजं ॥
बुलै मुष्ष कूरंभ सो हन्न राई । मिले हथ्थ बथ्थं रुपे सेस पाई ॥
छं० ॥ १४९७ ॥

कवी जीह जंपै सु पज्जून हथ्थं। दुकं भारि उभ्भारि हथ्थं समथ्थं॥
बदे अग्रव पज्जून ओपंम पाई। कु कुब्बी कला जे नहिं दू सभाई॥
छं० ॥ १४९८ ॥

गये तथ्य नाही तुरी तत्त मत्ते। रह्यौ कुट्टरं मध्य ज्यों जुद्ध रत्ते॥
दिष्यौ सामलं सिंह पुत्तं चरित्तं। बदे बांन ज्यौं पथ्थदानं सु [२]रथ्थं॥
छं० ॥ १४९९ ॥

दिषै यौं पजूनं मिल्यौ सिंह रुष्षं। भिरंतं बसंतं भयौ ज्यों विरष्षं॥
भई पंच आए प्रथीराज कामं। भए एक घट्टं भिरे तीन जामं॥
छं० ॥ १५०० ॥

पज्जूनराय के पुत्र मलैसी के वीरता और ज्ञान मय वचन।

दूहा ॥ है हम मंगल अब जियौ। मरन सुमंगल काज ॥
मरे पुच कों विप्र सुनि। भंजों तामस राज ॥ छं० ॥ १५०१ ॥
हम रत्ते कूरंभ रन। मरन सुमंगल होइ ॥
पंच पँचीस संवच्छरन। जाहु सु जीवन जोइ ॥ छं० १५०२ ॥

कवित ॥ आवरदा सत बरष। अद्ध तामें निसि छिज्जिय ॥
अद्ध तास बै दृद्ध। बाल मझ्झै होइ हज्जिय ॥
सुतह सोक संकट प्रताप। प्रिय चिय नित संग्रह ॥
वद्रि छोह रस कोह। दुद्ध दारुन दुष दुग्रह ॥
यौं सनों सकल हिंदू तुरक। कौंन पुच को तात बर ॥
करतार हथ्थ तरवार दिय। इह सु [२]तत्त रजपूत कर ॥छं०॥१५०३॥

मलैसिंह का वीरता और पराक्रम से युद्ध करके मारा जाना।

भुजंगी ॥ तबै देषियं तात पुत्तं चरित्तं। मनों पिष्षियं बाह आयास मित्तं॥
घल्यौ हथ्थ बथ्थं दुहथ्थं त नथ्यौ। भिन्यौ हथ्थ बथ्थं रसं बीर धथ्यौ॥
छं० ॥ १५०४ ॥

दिष्यौ एक एकं अनेकं प्रकारं। मनों ब्रह्म माया सु सोयं अपारं॥
कह्यौ कंध हीनं कमद्धं कलापं। लगी जुग्गिनी जोग माया अलापं॥
छं० ॥ १५०५ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुमथ्थं। (२) मो.-तन

तुटै अंत पायं उरझ्झं सरीरं। मनों नाल कट्टै त्रिनालं 'गँभीरं।
तुथ्यौ बाज राजं बिराजै दुकूलं। मधू माध वै जानि केह्व सु फूलं॥
छं० ॥ १५०६ ॥

उरं बान सुष्षं अघानं प्रमानं। मनों षत षायै जु धावै क्रिसानं॥
कढ्यो सब्ब सामंत जै जै मलैसो। दुवं बंस तारै सुअं माल तैसो॥
छं० ॥ १५०७ ॥

लगे घाव सट्ठिं परे धीर षेतं। उपाऱ्यौ सु विप्रं भयौ सो अचेतं॥
पऱ्यो यों पजूनं सुपुत्तं उचाऱ्यो। भयो इत्तने भान अस्तमित चाऱ्यौ॥
छं० ॥ १५०८ ॥

उधर से रावण का कोप करके अटल रूप से युद्ध करते हुए आगे बढ़ना।

कवित्त ॥ तब रावन नं टरै। सिर न चंपिय चतुरंगी॥
हस्ति काल जमजाल। उठे गज झंपि सुषंगी॥

पंग सेना की ओर से मतवारे हाथियों का झुकाया जाना।

पीलवान रायन्न। दई अंकुस गज मथ्थं॥
सुभर सीस गज झरी। करी आरूढ़ सुत्तथ्थं॥
'उम्मड़ै मीर आयो अगह। कूह कहर पच्छै फिरिग॥
मै मत्त कोइ अष्षै अषन। अप्प सेन उप्पर परिग॥छं०॥१५०९॥

सामंतों का हाथियों को बिचला देना जिससे पंग सेना की ही हानि होना।

अप्प सेन उप्परै। परे गजराज काज अरि॥
सेन पंग बिध्धूरी। मीर उच्छारि झारि धर॥
सर समूह परि पील। बान मिट्ठी मं थानी॥
'करी सम्ह कर वट्टि। मुष्ष दीनें चहुआनी॥

---

(१) ए. कृ. को.-सरीरं।　　(२) ए. कृ. को.-उम्मडे पीर अग्गो अगह।

संमुह्यौ षग्ग सामंत सब। उररि सेन उप्पर परिय ॥
धनि धनि नरिंद् सामंत सह। असी लष्ष सम सों भरिय ॥
छं० ॥ १५१० ॥

सामंतों के कुपित हो कर युद्ध करने से पंग सेना का छिन्न भिन्न होना इतने में सूर्य्यास्त भी हो जाना।

भुजंगी ॥ मिले लोह हथ्थं सुबथ्थं हँकारे। उड़ै गेंन लग्गैं सकं सार भारे॥
कटै कंध कामंध संधं निनारे। परें जंग रंगं मनों मत्तवारे ॥
छं० ॥ १५११ ॥

भरं संभरी राव मो सारभारे। जुरे मल्ल हल्लै नहीं ज्यौं अषारे॥
जबै हार मन्ने नहीं को पचारे। तबें कौपियं कन्ह मैं मत्त वारे ॥
छं० ॥ १५१२ ॥

जबै अप्पियं मार हथ्थं दुधारे। फटै कुंभ भूमंत नीसान भारे ॥
गहे सुंड दंतीन दंती उभारे। मनों कंदला कंदु 'भील' उपारे ॥
छं० ॥ १५१३ ॥

परे पंगुरें पंडुरे मीर सीसं। मनों जोगजोगीय लागंत रीसं ॥
बहै बान कम्मान दीसै न भानं। भमै गिद्धनी गिद्ध पावै न जानं॥
छं० ॥ १५१४ ॥

लगे रोह रत्ते अरत्ते करारं। मनों गज्जियं मेघ फट्टै पहारं ॥
दई कन्ह चहुआन अरि पील सीसं। करी चंद कब्बी उपम्मा जगीसं॥
छं० ॥ १५१५ ॥

तितं संग संधी महा पील मत्तं। मनों षंचियं द्रोन बरबाय पुत्तं॥
किधौं षंचियं राम हथिना पुरेसं।किधौं षंचियं मथन गिरिसुर सुरेसं।
छं० ॥ १५१६ ॥

किधौं षंचियं कन्ह गिरि गोपि काजं। धरी सीस ऐसी सुभट्टं विराजं।
'रूरै षेत रत्तं सुरत्तं करारं। सुरै कंठ कंठी न लागै उभारं॥
छं० ॥ १५१७ ॥

मुरं स्रोन रंगं पलं पारि पंकं। वजे बंस नेसं सुबेसं करंकं ॥

---

(१) ए.-नीलं। (२) ए० कृ. को.-रुपै

द्रुमं ढाल ढालं सु लालं सुवेसं । गए हंस नंसी मिले हंस वेसं॥
छं० १५१८ ॥

परे पानि अंघं धरंगं निनारे । मनों मच्छ कच्छा तिरंतं उभारे॥
सिरं सा सरोजं कचं सासि वाली । गहै अंत गिद्धी सु सोहै सनाली॥
छं० ॥ १५१९ ॥

तटं रंभ [1]थम्भं भरत्तंब चीरं । कितं स्याम सेतं कितं नील पीरं॥
बरै अंग अंगं सुरंगं सु भट्टं । जिते स्वामि काजै समप्पै जु घट्टं॥
छं० ॥ १५२० ॥

तिते काल जम जाल हथ्थी समानं । हुअै इत्तनै जुद्ध अस्तमित भानं॥
छं० ॥ १५२१ ॥

कन्ह के अतुलित पराक्रम की प्रशंसा ।

कवित्त ॥ तब सु कन्ह चहुआन । गहिय करवान रोस भरि ॥
असिय लष्ष चिन गनिय । हनत हय गय पय निंद्दरि॥
करत कुंभस्थल घाव । चाव ववगुन धरि धीरह ॥
तुबक तीर तरवार । लगत संक्यौ न सरीरह ॥
कहि चंद पराक्रम कन्ह कौ । दिय ढहाय गेंवर समर ॥
उछरंत छिछ स्रोनित सिरह । मनहु लाल फरहरि चमर ॥
छं० ॥ १५२२ ॥

सारंगराय सोलंकी का रावण से मुकाबला करना और मारा जाना ।

सोलंकी सारंग । बीर रावन आरुझिय ॥
दुअ सु हथ्थ उत्तंग । तेग लंबी सा लुझिय ॥
दो मरद्द आरुद्ध । रुद्ध भानं झिल्लोरिय ॥
टोप फुट्टि सिर फुट्टि । छिंछ फुट्टिय कविलोरिय ॥
निल वट्टि फुट्टि पलवन्न वन । कै ज्वाल माल पावक पमरि ॥
तन भंग घाय अरि संग करि । पत्ति पद्दुर चालुक परि ॥
छं० ॥ १५२३ ॥

(१) ए. कृ. को. रथ्थं ।

सोलंकी सारंग की वीरता।

ब्रह्म चालुक ब्रह्म चार। ब्रह्म विद्या वर रष्षिय॥
केस डाभ अरि करिय। रुधिर पन पच विसष्षिय॥
षग्ग गहिग [1]अंजुलिय। नाग गहि नासिक तामं॥
धरनि अधर दुहुं श्रवन। जाप जापं मुष रामं॥
सिर फेरि षग्ग सम्हौ धऱ्यौ। दुअन तार मन उलहसिय॥
अष्टमी जुद्ध सुक्रह अथमि। सुर पुर जा सारँग बसिय॥
छं० ॥ १५२४ ॥

सायंकाल पर्य्यंत पृथ्वीराज के केवल सात सामंत और पंगदल के अगनित बीरों का काम आना।

भुजंगी ॥ परे सत्त सामंत सा सत्त कोटं। षलं चंपियं बीर भै सोम ओटं॥
लगी अंग अंगं कहूं पंग [2]मध्यं। किधौं वज्र छुट्टै कि वज्जीय हथ्यं॥
छं० ॥ १५२५ ॥

वहै गग्ग मग्गं प्रचारे सु बीरं। झलै षग्ग नीरंजिनें मुष्ष नीरं॥
लरै सत्त बीरं दिष्षै सब्ब यट्टं। हरी एक माया करै घट्ट घट्टं॥
छं० ॥ १५२६ ॥

षगं मग्ग सेना जुपंगं हलाई। मनों बोहथी मारुतं कै रुलाई॥
दुती देषतें ओपमा कव्वि पाई। मनों बीर चक्रं कुलालं चलाई॥
छं० ॥ १५२७ ॥

भषै काइ पंषी किअग्गी कि दाही। तुटैधार मग्गं लियै अंग लाही॥
बरै काहि दूरं ग्रिवं माल काकी। ढुढै ब्रह्म लोकं सलोकं सुताकी॥
छं०॥ १५२८ ॥

ननं देव ओपम्म सी धन्नि जाकी। लगी नाहि माया तजे तंत ताकी॥
वजे लोहि आनं फिरी ग्रेह मग्गी। तिनं तेज छुट्टं सुरं ग्रेह भग्गी॥
छं०॥ १५२९॥

(१) मो. अंगुरिय। (२) मो.-सथ्थं।

दूहा ॥ भान विहान जु देषि कै। पिषि सामंत सु सूर ॥
षिनुकन धीरं तनु धरहि। तीरथ इक्क्यौ क्रूर ॥
छं० १५३० ॥

गाथा ॥ निसि गत बंछिय भानं। चक्की चक्काइ सूर साचित्तं ॥
विधु संजोग वियोगी। कुमुद कली कातरां नांचं ॥
छं० १५३१ ॥

प्रथम दिन के युद्ध में पंगदल के मृत मुख्य सरदारों के नाम।

कवित्त ॥ प्रथम मार सामन्त। सहिय मीरन इत मित्तिय ॥
बाघ राव बघेल। हेल इन उप्पर वित्तिय ॥
उभय उमगि गजराज। काज किन्नौ प्रथिराजह ॥
इकति सुंड आधारि। एक [1]मिंडिग पग पाजह ॥
पुंतार डरह कट्टारि कर। परिग षित्त तेषिन न जिय ॥
इह जुद्ध मच्चि चहुआन सों। प्रथम केलि कमधज्ज किय ॥
छं० ॥ १५३२ ॥

मृत सात सामन्तों के नाम।

दाहिम्मौ नरसिंघ। पय्यौ नागौर जास धर ॥
पऱ्यौ गंजि गहिलौत। नाम गोयंद राज बर ॥
पऱ्यौ चंद पुंडीर। चंद पिष्यौ मारंतौ ॥
सोलंकी सारंग। पऱ्यौ असिवर झारंतौ ॥
कूरंभ राव पाल्हन दे। वंधव तीन सु कट्टिया ॥
कनवज्ज रारि पहिल[2] दिवस। सौमेसत्त निघट्टिया॥छं०॥१५३३॥

पंगदल के मारे गए हाथी घोड़े और सैनिकों की संख्या।

दूहा ॥ उभै सहस हय गय परिग। निसि निग्रह गत भान ॥
सत्त सहस अस मीर हनि। थल विंध्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ १५३४ ॥

---

(१) ए.-कृ. को.-टुटै।   (२) मो-मांडग।

जैचन्द के चित्त की चिन्ता।

कवित्त ॥ चित्त [1]चिंता कमधज्ज। देषि लग्गी चहुआनं ॥
प्रथम जुड दरबार। सूर सद्ध असमानं ॥
घटिय मत्त दिन उड्ड। जुड लग्गे सु महाभर ॥
अस्त काल [2]सम मीर। परे धर सूर अप्प धर ॥
सामंत सत्त प्रथिराज परि। करे क्रम्म अतुलित्त सह ॥
प्रथिराज तरनि सामंत किरनि। थपी तेज आरेन यह ॥
छं० ॥ १५३५ ॥

जैतराव का चामण्डराव के बन्दी होने पर पश्चात्ताप करना।

पज्जूनह उप्परह। राज प्रथिराज सँपतौ ॥
गरुअ राय गोयंद। घाव अघाइ सँसतौ ॥
चाइ चित्त चहुआन। कन्ह किन्नौं कर उभभौ ॥
रा रंडी ठिल्लरीय। आज लग्गौ मन दुभभौ ॥
धाराधि नाथ धारंग धर। जैत जीत कीनौ रुदन ॥
चामंड डंस मुक्यौ सुग्रह। रष्यन छिति छत्ती हदन ॥छं०॥१५३६॥

अष्टमी के युद्ध की उपसंहार कथा।

दूहा ॥ जिहि ग्रह निग्रह पथ्थिवर। बँधि सनाह सयन्नि ॥
मन बँधिय अच्छरि वरन। बंधि अँग सँजोगिन्नि ॥
छं० ॥ १५३७ ॥

पद्धरी ॥ बंधे सनाह न्रप सेन कीन। भोगी उपम्म मनु रंभ दीन ॥
आवृत्त पंग बज्जे निसान। भै चितन लग्गि बर चाहुआन ॥
छं० ॥ १५३८ ॥

तिन सुनी जानि पंगुर नरेस। जनु सत्त जुड्ड जुग्गिनिपुरेस ॥
जनु पंग बिषम धुक्किय सयन्न। जुध सभें बीर विष पियन अन्न ॥
छं० ॥ १५३९ ॥

(१) ए. कृ. को.-मेंस। (२) ए. कृ. को.-तथ्य।

आवृत्त भूमि रनइक्कि बीर। कंपंत बप्प, कायर अधीर॥
इक्कंत [1]नृप्प सो पंच बीर। सुनि श्रवन हास नारद गँभीर॥
छं० ॥ १५४० ॥

उर ग्रहन बाल दंपति सनाह। दिषि उदित पत्ति रत्तीस दाह॥
पहुपंग बीर संबर सु ताम। मनु बँधिय सेन रति पत्तिकाम॥
छं० ॥ १५४१ ॥

सोभै सनाह उज्जल अवझ्झ। चमकंति भान द्रप्पनति मझ्झ॥
निस गयति अद्व ससि उदित बीर। बज्जे सु बज्जि मद्यत सुमीर॥
छं० ॥ १५४२ ॥

पृथ्वीराज की वाराह और पंगराज की पारधी से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ अद्ध रयनि चंदनिय। अद्ध अग्गैं अँधियारिय॥
भोग भरनि अष्टमिय। सुक्र वारह सुदि रारिय॥
च्यारि जाम जंगलिय। राव निसि निंदन घुंच्यौ॥
थल विंध्यौ कमधज्ज। रह्यौ कंदल आहुव्यौ॥
दस कोस कोस कनवज्ज तैं। कोस कोस अंतर अनिय॥
वाराह रोह जिम पारधी। इम रुक्यौ संभरि धनिय॥ छं०॥१५४३॥
रोइ राह वाराह। झार सामंत डढारे॥
ढिल्लो ढार जुझार। पंच सूरति रषवारे॥
रन सिंघार झुझ्झार। उड्ड बड्डा उच्छारे॥
पारथ [2]बर पथ्थियै। सत्त स्वामित्त सु धारे॥
पारस विलास रा पंग दल। धन जिम धर बंबरि दवन॥
संग्राम धाम धुंधरि परिय। निसि विग्रात तारह छवन॥
छं० ॥ १५४४ ॥

अंधेरी रात में मांसाहारी पशुओं का कोलाहल करना।

चंद्रायना ॥ तारक मंत प्रगट्टिय। थट्टिय पंषियन॥
अंषिन अद्व उरद्धन। अद्धन निंद मन॥

(१) ए. कृ. को. तथ्य। [२) ए. कृ. को.-बीर।

ढिल्लिय ढाल कुलाल। कुलाहल किन्नरन।
ढिल्लिय नाथ सु हाथ। समथ्थिन अथ्थियन ॥ छं० ॥ १५४५ ॥

दूहा ॥ अब अवन्निय चंद किय। तारस मारू भिन्न ॥
पलचर रुधिचर अंस चर। करिय रवन्निय रिन्न ॥ छं० ॥ १५४६ ॥

सामंतों का कमल व्यूह रचकर पृथ्वीराज को बीच में करना।

कवित्त ॥ चावद्दिसि रचि सूर। मद्धि रष्यौ प्रथिराजं ॥
ज्यौं सरद काल रस सोष। मद्धि ससि [1]जुत्त विराजं ॥
ज्यौं जल मद्धित ओत। तपति वड़वानल सोइं ॥
ज्यौं [2]कल मद्ध अमन। रूप मधि रत्तौ मोइं ॥
इम मद्धि राज रष्यौ सुभर। नरन सकल निंदो सु बर ॥
सब सुष्य पंग रुक्यौ सु बर। सो उप्पम जंप्यौ सु गिर॥छं०॥१५४७॥

पृथ्वीराज का प्रिया के साथ सुख से शेष रात्रि बिताना।

चंद्रायना ॥ मिच महोदधि मझ्झ। दिसंत ग्रसंत तम।
पथिक बधू पथ द्रष्टि। अद्दृिय चंग जिम ॥
जुवजन जुवतिन गंजि। सुमंति अनंग लिय ॥
जिम सारस रस लुद्ध। सुमुद्ध्ह मद्ध तिय ॥ छं० १५४८ ॥

चांद्रायन ॥ यह[3] चारु रुचि इंद इंदीवर उदयौ।
नव [4]बिहार नवनेह नवज्जल रुद्दयौ ॥
भूषन सुभ्भ समीपनि मंडित मंड तन।
मिलि मृदु मंगल कौन मनोरथ सब्ब मन ॥ छं० ॥ १५४९ ॥

श्लोक ॥ जितं नलिनीं तितं नीरं। जितं नलिनी [5] जलं तितं ॥
जतो ग्रह ततो ग्रहिणी। जच ग्रहिणी ततो ग्रहं ॥ छं० ॥ १५५० ॥

सब सामन्तों का सलाह करना कि जिस तरह हो इस दंपति को सकुशल दिल्ली पहुंचाना चाहिए।

दूहा ॥ मिलि मिलि बर सामंत सह। न्नप रष्षन बिचार ॥

(१) मो.-जुद्ध। (२) ए. कृ. को.-कमल। (३) मो. यह।
(४) मो.-बिरहा। (५) ए. कृ. को-नीरं।

चलै राज निज तरुनि सम। दूहै सुमत्तह सार ॥ छं० ॥ १५५१ ॥

जैतराय निढ्ढुर और भोंहा चंदेल का विचारना कि नाहक की मौत हुई।

कवित्त ॥ रा निढ्ढुर राजैत। राव भौंहा भर चिंतिय ॥
सो अरिष्ट उप्पज्यौ। मरन अपकित्ति सुनंतिय ॥
छछुंदरि ग्रहि अप्प। ग्रहन उग्रह को सुझ्झइ ॥
मरि छुट्टौ कैमास। मंत जरिगय ता मझ्झइ ॥
न्रिप कियौ सुभयौ इन भट्ट सथ। तट्ट भेष राजन कियौ ॥
परपंच पंच बंधहु सुपरि। जोगिनि पुर जाइ सुजियौ ॥
छं० ॥ १५५२ ॥

आकाश में चाँदना होतेही सामंतों का जागृत होना और राजा को बचाने के लिये व्यूह वद्ध होने की तैयारी करना।

राजनिद्धि कै काज। सूर जग्गे जस पहरैं ॥
पलइ चोर लगि आय। भ्रम्म लज्जा रषि गहिरै ॥
छुध पिपास निद्रान। जानि हवि दीन पछित्तिय ॥
पंच इंद्री मुष बंधि। भए जोगिंद सु गत्तिय ॥
जहं लगि निद्धि यष रचन रहै। तहं लग्गि सच्च, घर बीर उत ॥
सब मिलिरु सूर पुच्छहि सुमति। अप्प रहै कहुँ न्रपति ॥
छं० ॥ १५५३ ॥

पति बर बर चहुआन। काम चहुन पंगी [1]भय ॥
हेमादक उनमाद। मुक्ति मोहन सोषन लय ॥
हय गय नर सर नारि। गोर चिहुकोद चलाइय ॥
लाज कोट चहुआन। दुहुन दंती दुहुलाइय ॥
मन रक्कि मार दल रक्किदल। उग्गि चंद कविचंद कहि ॥
सामंत सूर उच्चारि तव। कही मंत फुनि प्रत्त लहि ॥ छं० ॥१५५४॥

(१) ए. कृ. को.-वस।

मिले चंद सामंत। मंति सा धृम्म विचारिय॥
इह सुवेह मंगलिय। होइ मंगल अधिकारिय॥
मुगति भुगति अप्पियै। जुगति लभ्भै न जुगंतह॥
जस मंगल तन होइ। काम मंगल सुभ जै ग्रह।
कढ्ढियै स्वामि तन बढ्ढियै। चढ्ढियै धार धारह धनी॥
मंगलन हीय इह अन्न को। पति रष्षै पति अप्पनी॥ छं०॥१५५५॥

गुरुराम का कन्ह से कहना कि रात्रि तो बीती अब रक्षा का उपाय करो।

दूहा॥ मानि मंत सामंत सह। चलिग बोलि दुजराज॥
स्वामि ध्रम्म पत्तिय सु पति। चलि पुच्छन प्रथिराज॥छं०॥१५५६॥
अन्न लग्गि कहि कन्ह सौं। तकित राय अनुवत्त॥
निसा अप्प ग्रह कियन कछु। प्रात परै इह [1]छत्त॥छं०॥१५५७॥

कन्ह का कहना कि औघट से निकल चलना उचित है।

कवित्त॥ कहै कन्ह तम मुद्ध। मूढ़ राजन जिनि[2]संगह॥
उद्ध मरन तैं डरह। काइ भग्गहु अनभंगह॥
कहिय राव पज्जून। सोव बित्तक्क इह वित्तिय॥
असुर बुद्धि असुरिय। भट्ट मंडन किय कित्तिय॥
गारुडिय ग्रह्यौ अंमृत मितिय। विषम विष्प नल उत्तरै॥
[3]अवघट्ट घाट नंपै न्रपति। दैव घाट संमुह करै॥ छं०॥१५५८॥
जिहि देवल भर कोट। सूर सामंत थंभ धर॥
कित्ति कलस आरुहिय। नीम जीरन जुग्गह कर॥
सार पट्ट पट्टयौ। चित्र मंड्यौ सु उकति अप॥
धर्यौ पुहप पहुपंग। करौ पूजा सु बीर जप॥
सा भ्रम्म बचन लग्गौ चरन। देव तेव प्रथिराज हुअ॥
वामंग अंग संजोगि करि। लच्छि रूप मंड्यौ सु धुअ॥
छं०॥१५५९॥

(१) मो.-वत्त। (२) मो.-संग्रह। (३) ए. आवट्टनाव।

राजा पृथ्वीराज का सोकर उठना।

दूहा ॥ सुनी मत्त कन्नह नृपति । जगी संजोगि निवारि ॥
वीर रोस उठ्यौ न्रपति । मनु रजि रुद्र सार ॥ छं० ॥ १५६० ॥

पृथ्वीराज से सामंतों का कहना कि आप आगे बढ़िए हम एक एक करके पंग सेना को छेड़ेंगे ।

कवित्त ॥ मिलिए सब्ब सामंत । बोल मांगहिति नरेसर ॥
आप मग्ग लग्गियै । मग्ग रष्षै इक इक भर ॥
इक इक जूझंत । दंति दंतन ढंढोरहि ॥
जिके पंग रा भीछ । मारि मारिन मुष मोरहि ॥
हम बोल रहै कल अंतरै । देहि स्वामि पारथ्थियै ॥
अरि असी लष्ष की अंग मैं । बिना राइ सारथ्थियै ॥छं०॥१५६१॥

सामंतों का कहना कि सत्तहीन क्षत्री क्षत्री ही नहीं हैं ।

कहै सूर सामंत । सत्त छंडै पति छिज्जै ॥
पत्ति छिज्जत छिज्जंत । नाम छिज्जत जस छिज्जै ॥
जस छिज्जत छिज्जै सुगति । सुगति छिज्जत क्रम बढ्ढै ॥
क्रम बढ्ढत बढ्ढै अकिति । अकिति बढ्ढहि नृक दिज्जै ॥
दिज्जियै नृक कढ्ढन कुमति । करनी पति तै जान भर ॥
छिची निछित्ति सत गरुअ निधि । सत छंडै छची निगर ॥
छं० ॥ १५६२ ॥

सामन्तों का कहना कि यहां से निकल कर किसी तरह दिल्ली जा पहुंचो ।

समद सेन पहुपंग । धार आवध नभ लग्गिय ॥
चढि वो हिथअत सामि । पैज लगि अंकिन मग्गिय ॥
स्वामि सुष्य भुग्गियै । ध्रित भुग्गै जु सुगति रस ॥
जगि जीरन प्रथिराज । गिल्यौ सष्षीज जंप जस ॥
मिष्टान पान भामिनि भवन । चूक कह्यौ जू उप्पनौ ॥

चहुआन नाथ जोगिनिपुरह। धर रष्षै बर अप्पनौ॥
छं०॥ १५६३॥

राजा का कहना कि मरने का भय दिखाकर मुझे क्यों डराते हो और मुझ पर बोझ देते हो।

मति घट्टी सामंत। मरन भय मोहि दिषावहु॥
जम चिट्ठी बिन कहन। छोइ सो मोहि बतावहु॥
तुम गंज्यौ भर भीम। तास ग्रब्बह मैमंतौ॥
में गोरी साहाब। साहि सरबर साइंतौ।
मैरैंज सुरन हिंदू तुरक। तिहि सरनागत तुम करहु॥
बुझियै न सूर सामंत हौ। इतौ बोझ अप्पन धरहु॥ छं०॥१५६४॥

पृथ्वीराज का स्वयं अपना वल प्रताप कहना।

राव सरन रावत्त। जदहि धर पायै आवै॥
राव सरन रावत्त। जदहि कछु पटौ लिषावै॥
राव सरन रावत्त। काल दुक्काल उबारहि॥
राव सरन रावत्त। जदहि कोइ [1]अनिबर मारहि॥
रावत्त सरन नित राव कै। कहा कथन काहावता॥
संग्राम वेर मुझ्झै सुभर। राव सरन तदि रावता॥छं०॥१५६५॥
मैं जित्तौ गढ द्रुग्ग। मोहि सब भूपति कंपहि॥
मोहि कित्ति नव षंड। पहुमि बंदी जन जंपहि॥
मैं भंजै भिरि भूप। भिरवि भुजदंड उपारे॥
छोंब कहा मुष कहौं। कौन षग षत वियारे॥
मैं जित्ति साहि सुरतान दल। मुहि अमान जानै जगत॥
चहुआन राव इम उच्चरै। इं देष्यौ कब कौ भगत॥छं०।१५६६॥

सामंतों का कहना कि राजा और सेवक का परस्पर का व्यवहार है। वे सदां एक दूसरे की रक्षा करने को वाध्य हैं।

बन राषै ज्यौं सिंघ। बिंझ बन राषहि सिंघहि॥

(१) मो.-आमिवर।

धर रष्षै यौं भुअंग । धरनि रष्षैति भुअंगह ॥
कुल रष्षै कुलबधू । बधू रष्षैति अप्प कुल ॥
जल रष्षै ज्यौं हेम । हेम रष्षैति सब्ब जल ॥
अवतार जवहि लगि जीवनौ । जियन जम्म सब आवतह ॥
रावत्त तेहरा रष्षनौ । राजन रष्षहि रावतह ॥ छं०॥ १५६७ ॥

सामंतों का कहना कि तुम्हींने अपने हाथों अपने बहुत से शत्रु बनाए हैं ।

तें रष्यौं रा भान । षान रष्यौ हूसेनं ॥
तें रष्यौ पाहार . सुरन किन्नर सो मेनं ॥
तें रष्यौ तिरहुंति । कढ्ढि तोंअर तत्तारी ॥
तें रष्यौ पंडुयौ । डंडि नाहर परिहारी ॥
रष्षनह ढोल ढिल्ली सुरह । गौर भान भट्टी सरन ॥
चहुआन सुनौ सोमेस सुअ । अरिन अब्ब दिज्जे मरन ॥छं॥१५६८॥

सामंतों के स्वामिधर्म की प्रभुता ॥

अति अग्गें हठ परहि । चोट चिहु रत्तन घल्लहि ॥
परे लेहि परि गाहि । दाह दुअननि उर सल्लहि ॥
पहु डोलंत पच्छै परंत । पाय अचल्ल चलहि कर ॥
अंत असन सिर सहहि । भाव भल पनति लहहि भर ॥
बरदाय चंद चिंतनु करै । धनि छचौ जिन भ्रंम मति ॥
मुक्कहि न स्वामि संकट परें । ते कहियै रावत्त पति ॥ छं०॥१५६९॥

पुनः सामंतों का कहना कि "पांच पंच मिल कीजे काज हारे जीते नाहीं लाज" इस समय हमारी कीर्ति इसीमें है कि आप सकुशल दिल्ली पहुंच जावें ।

पंचति रष्षहि पास । पंच धरणी धन रष्षहि ॥
पंच पुच्छि अनुसरहि । पंच तत्तै जिय लष्षहि ॥

पंच भीत वंचियै। पंच आदर अमनाइत ॥
पंच पंच धर तोन। कहनि मंडियै वासन जति ॥
चहुआन राइ सामस सुअ। इमग तेग बहुै सुकिति ॥
अनुसरिय लाज राजन रवन। सुनौ राज राजंन पति ॥
छं० ॥ १५७०

दूहा ॥ राज विमुष्यौ लोक सुनि। धुनि सामंत अनंत ॥
बंक दीह बंछै न को। सुर नर नाग [1]गनंत ॥ छं० ॥ १५७१ ॥

कवित्त ॥ तें रष्यौ हिंदवान। गंजि गोरी गाहंतौ ॥
तें रष्यौ जालोर। चंपि चालुक्क चाहंतौ ॥
तें रष्यौ पंगुरौ। भीम भट्टी दै मथ्थै ॥
तें रष्यौ रनथंभ। [2]राय जद्दों सै हथ्थौ ॥
इहि मरन किति रा पंग की। जियन किति रा जंगली ॥
पहु परनि जाई ढिल्ली लगै। तौ होइ घरघ्घर मंगली॥छं०॥१५७२॥

सुनौ सूर सामंत। सूर मंगल सुपत्ति तन ॥
लाज वधू सो पत्ति। राज सोपत्ति सूर घन ॥
कवि बानी सोपत्ति। जोग सोपत्ति ध्यान तम ॥
मिचापति सोपत्ति। पत्ति बंधै सो आतम ॥
इम पत्ति पत्ति न्रप जो चलै। तो पति इम [3]पुज्जै रली ॥
सा भ्रम जु पंज सामंत भर। रक्क पंगह मंजाली॥छं०॥१५७३॥

पुनः सामंतों का कथन कि मर्दों का मंगल इसी में है कि पति रख कर मरें।

सूर मरन मंगली। स्याल मंगल घर आयैं।
वाय [4]मेघ मंगली। धरनि मंगल जल पायैं ॥
क्रियन लोभ मंगली। दान मंगल कछु दिन्नै ॥
सत मंगल साहसी। मंगन मंगल कछु लिन्नै।
मंगली बार है मरन की। जो पति सथह तन षंडियै ॥
चढि षेत राइ पहु पंग सों। मरन सनंमुष मंडियै॥छं०॥१५७४॥

(१) ए. कृ. को गावंत। (२) ए. कृ. को. सुई।
(३) ए. कृ. को. पुरजै रली। (४) मो. मंगक।

मरन दियै प्रथिराज। इसें छचिय कर [1]पट्टिहि ॥
मीच लगी निय पाइ। कहें आयौ घर [2]बैठहि ॥
पंच पंच सौ कोस। कहै दिल्ली अस कथ्थें ॥
एक एक छरिमा। पिष्षि वाहंते बथ्थें ॥
घर घरनि [3]परनि रा पंग की। पहुंचै इहैं बड़प्पनौ ॥
जब लग्गि गंगधर चंद रवि। तब लगि चलै कविप्पनौ ॥
छं० ॥ १५७५ ॥

कहै राज प्रथिराज। मरन छिचिय सत भिन्नी ॥
जस समूह गुर सद्द। महिम करि मानन रिन्नी ॥
कथ समूह उच्चरै। चिच कीजै कवि रूपं ॥
कलस मरन मन चढ़त। पार पल में सो जूपं ॥
छचीन मरन मारन सुरब। नथ्थि सु मिट्टन काल बर ॥
जीरन्न अम्म संदेस बल। ढिल्ली इंदे ढोल गिर ॥ छं० ॥ १५७६ ॥

राजा का कहना कि मैं तो यहां से न जाऊंगा रुक करके लडूंगा।

सुनौ छूर सामंत। जियन चहि डहु काल पुर ॥
अधम अकित्ती मुष्प। सा मनौ ग्रह दंड दुर ॥
मोंह मंद बर जगत। भए विधि चिच चिताही ॥
अचित होइ जिहि जीत। पुन्न जित देषि पिषाही ॥
नन मोह छोह दुष सुष्प [4]तन। तौ जर जीवन हथ्थ भुत ॥
पहु पंग जंग मुक्कै नहीं। जौ जग जीवहि एक सत॥छं०॥१५७७॥

सामंतों का उत्तर देना कि ऐसा हठ न कीजिए।

दूहा ॥ राजन मरन न इंछियै। ए धन बंछै नित्त ॥
सिर सट्टै धन संग्रहै। सो रष्षै छच पत्ति ॥ छं० ॥ १५७८ ॥

कविच ॥ तन बंटन दुष अपन। कित्ति बिय भाग न होई ॥
पुच चिया सेवक सु। बंध कर भुग्गवै जोई ॥

(१) ए. कृ. को.- त्रिट्टहि, पेंटहि। (२) मो.-बट्टहि। (३) ए.-सर्रा
(४) ए. कृ. को.-तत।

सुबर स्हर सामंत। जीति भंजौ दल पंगं॥
तुम समान छची न। भिरौ भारथ्य अभंगं॥
इन सुभर सूर पच्छै मरन। कित्ती रस मुक्कै न न्नप॥
रजपूत मरन संसार बर। ग्रब्र बात बोलै न अप॥छं०॥१५७९॥

पृथ्वीराज का कहना कि चाहे जो हो परंतु मैं यहां से भाग कर अपकीर्ति भाजन न बनूंगा।

बैर ब्याह मँगलीय। बेह मंगल अधिकारिय॥
मो कित्ती गर भग्गि। पच्छ भग्गौ जम भारिय॥
बीर मात गावही। अप्पि प्रिय अछित उच्चारिय॥
मुत्ति जुथानक भग्गि। करौ कानिन उद्दारिय॥
कुट्टी प्रजंक जस मुगति किथ। काम मुक्कि कित्ति सु मुकी॥
जो भंग होइ निसि चोय करि। रहित मौन बर भ्रंम की॥
छं०॥ १५८०॥

जा कित्ती कारनह। म्रत्त मंग्यौ भीषम नर॥
जा कित्ती कारनह। अस्ति दद्वीच देव बर॥
जा कित्ती कारनह। देव दुर्जोधन मानी॥
जा कित्ती कारनह। राम बनवास प्रमानी॥
कारन्न कित्ति [1]दीलीप न्नप। सिंघ मंग गोदान दिय॥
मम मुक्कि कित्ति हथ्थह रतन। सत्त बरष जीवै न जिय॥छं०॥१५८१॥

सामंतों का कहना कि हठ छोड़ कर दिल्ली जाइए हम पंग सेना को रोकेंगे।

मरन दियै प्रथिराज। कित्ति भज्जै जु अप्प कर॥
पंग कित्त सिंचवय। अपै बल्लौ सु बट्ट बर॥
जोगि नेस जच्चियै। छंडि मंगल करि मंगल॥
एक एक सामंत। पंग रुक्कंत जाइ दल॥
मानुच्छ देह [2]दुलह न्नपति। फुनि देह राजन्न मिल्लि॥

(१) ए. कृ. को.-इंछै। (२) मो.-दिल्लिय नपति। (३) मो.-दुल्लभ।

रजपूत द्रोह भज्जत लगै । इम रुंधै निसि पंग [1]बल ॥छं०॥१५८२॥

पृथ्वीराज का कहना कि यहां से निकल कर जाना कैसा और शरीर त्याग करने में भय किस बात का ।

अरे अमंत सामंत । मोहि भज्जंत लाज जल ॥
काम अग्गि प्रज्जरै । लोभ आधीन बाइ बल ॥
निस दिन चढ़े प्रमान । दुहुं कन्ना परि सुभझी ॥
इह लग्गी कल पंक । कब जिहि जिहि वर बुभझी ॥
को राव रंक सेवक कवन । कवन न्रपति को चिक्करै ॥
ढिल्लीव दिसा ढिल्लिव न्रपति । पंग फौज धर उप्परै ॥छं०॥१५८३॥

दूहा ॥ सो सति सत न्रप उच्चरै । परें लभ्भ इह ग्रेह ॥
जिहि वर सुब्बर सोउ न्रप । फल भुग्गवै सु तेह ॥छं०॥ १५८४ ॥

चौपाई ॥ सुनी देह गत जीव प्रमानं । जीरन ज्यों बंसन फल मानं ॥
जीरन बस्त्र देह ज्यों छंडै । त्यौं ग्रह छंडि पर त्तिन मंडै ॥
छं०॥ १५८५ ॥

सामंतों का मन में पश्चाताप करना ।

कवित्त ॥ कहै सूर सामंत । राज इह बत्त न आइय ॥
जौ भ्रम सतु करि रिदै । बचन मझि मन जाइय ॥
कोट हरन द्रग रंजन । चूक ककहुं न नाइय ॥
जौ साम ध्रंम अत्तहीं । साम द्रोही नन पाइय ॥
अवरन्न ह्रदै धरि रँजै ज्यौं । कब्बि बीर बंदै बचन ॥
ज्यौं अनल डसन मानुन करै । यौं प्रथिराज रन तत्त मन ॥
छं० ॥ १५८६ ॥

राजा का कहना कि सामंतों सोच न करो कीर्ति के लिये प्राण जाना सदा उत्तम है ।

सोच न करु सामंत । सोच भग्गै बल छत्रिय ॥
सामि द्रोह सो बंध । आहि बंधी तन रत्तिय ॥

(१) ए. कृ. को.-कल ।

सोच किये बल भग्ग। भग्गि बल किति न पाइय॥
सुगति गये नर सब्ब। निद्धि ज्यौं रंक गमाइय॥
ज्यों उतर सूर पहरैं अहनि। त्रिघति रंज नह द्रिग्ग हर॥
सामंत सूर बोलंत बर। सुवर बीर बित्त पहर॥ छं० ॥ १५८७॥

पृथ्वीराज का किसी का कहना न मान कर मरने पर उतारू होना।

गाथा॥ मिटयो न जाइ कहिनौ। कहनो कविचंद सूर सामंतं॥
प्राची क्रम्म विधानं। ना मानं भावई गत्तं[1]॥ छं०॥ १५८८॥
दूहा॥ चिंत्ति त्योंर सामंत सह। बहुरि सु रुक्के थान॥
इहै चित्त चहुआन की। कंचन नैन प्रमान॥ छं०॥ १५८९॥
मरन मंत प्रथिराज भौ। मरन सुमत सामंत॥
इंद्रासन मत्ती[1] लहिय। डोलिय बोल कहंत॥ छं०॥ १५९०॥

सामंतों का पुनः कहना कि यदि दिल्ली चले जांय तो अच्छा है।

कवित्त॥ सामि हथ्थ भर नथ्थ। नथ्थ भर साम हथ्थ बर॥
और मंच छिन मंच। [2]मंच उर श्रम पिव सर नर॥
प्रथम सनेह वियोग। बिछुरि तीय पीय बिच्छबर॥
जीव सधन पुच विपछ। इष्ट [3]संकट अबुद्धि गिर॥
सामंत सूर इम उच्चरै। बिरंग देष बंधेत नर॥
प्रथिराज ग्रेह जौ जाइ बर। जम्म सुष्य बंधौत धर॥
छं०॥ १५९१॥

पृथ्वीराज का कहना कि मैं तो जैचन्द के साम्हने कभी भी न भागूंगा।

चलै नौमेर निधान। धूअ डुलै चलै अपु॥
सत्त समुद जल घुटै। सत्त मरि जाहि काल वपु॥

(१) मो॰ गत्तां (२) ए. कृ. को-मंत्र उर सम पाविस नर।
(३) ए. कृ. को.-संकष्ट।

चंद चंदायन घटै। बठै सूर औगुन अगा॥
पच्छा पंग नरिंद। राज अग्गै नन भग्गा॥
जं करौ सूर उप्पाइ बर। राज रहे रज रष्षियै॥
कहुं न बैन प्रथिराज अग। बार बार नन अष्षियै॥
छं० ॥ १५९२ ॥

कविचन्द का भी राजा को समझाना पर राजा का न मानना।

नह मन्निय मति राज। सब्ब सामंत सहित्तं॥
बरजि ताम कविचंद। मन्न मन राजन बत्तं॥
बहुरि दिन्न सामंत। गिरद रष्यौ फिरि राजन॥
फिरे भत्य अप थान। बिंट [1]लिन्ने ते जाजन॥
बुल्यौ ताम जादव जुरनि। अहो कन्ह सुनि नाह नर॥
न्रिप व्याह राह चिंतौ सुचित। घर सु तरुनि तरुनिय सु घर॥
छं० ॥ १५९३ ॥

जामराय जद्दव का कन्ह से कहना कि यह व्याह क्या ही अच्छा है।

दूहा॥ अवर व्याह अनि मंगली। एह व्याह [2]जुधराह॥
तिन [3]रति व्याह हरष्षियै। रयन मयन प्रथमाह॥ छं० ॥ १५९४॥
*भुजंगी॥ परी पंग पारस्स घन घोर कोटं। भए सूर सामंत सो सामि ओटं॥
दिसा अट्ठ बौरं सुषं पंग साहे। गहे सामि ध्रम्मं अध्रम्मं न गाहे॥
छं० ॥ १५९५ ॥

व्यूह वद्ध सामंत मंडली और पृथ्वीराज की शोभा वर्णन।

कवित॥ दिसि बांई [4]उर भत्त। सूर हय अरुहि पंति फिरि॥
सत्त पंच हय तेज। पच्छ उभ्भै पारस्स करि॥

(१) ए. कृ. को.-लिन्हे। (२) ए.-जुद्धराह। (३) ए. कृ. को.-रतिवाह।
* इस छन्द को ए. कृ. को. तीनों प्रतियों में चौपाई और मो. प्रति में अरिल्ल करके लिखा है।
(४) ए. कृ. को.-सुर।

बर उज्जल सन्नाह। तेज चिहुं पास विराजै॥
कै पसरी रवि किरनि। मेर विच लषि प्रथिराजै॥
नग मुष्य गढ़ी दुकल विधी। वीर बीच दंपति सयन॥
सन्नाह सहित सुभ्भै सु न्त्रिप। रति तीरथ परसै मयन॥
छं०॥ १५९६॥

उक्त समय संयोगिता और पृथ्वीराज के दिलों में प्रेम की उत्कंठा बढ़नी।

गाथा॥ श्रम भौ बर संग्रामं। अभि लिष्यियं चिंतयो बालं॥
ग्रब्बं भौ चहुआनं। नंदरीयं सेन पंगायं॥ छं०॥ १५९७॥

मुरिल्ल॥ कुंचित न्त्रिप कल किंचित पायौ। नेह दिष्ट दंपति न सहायौ॥
छुटित लाज छिन छिन चढ़ि मारे। ज्यौं जोबन चढ़ि सैसब बारे॥
छं०॥ १५९८॥

कन्ह का कुपित होकर जामराय से कहना कि तुम समझाओ जरा मानें तो मानें।

कवित्त॥ तब कहै कन्ह नर नाह। सुनहि जामान जादवर॥
विरध राह हद्दाह। तुमहि बुझ्झौ सुभाव भर॥
तुम समान नहि वीर। नेह सम सगुन सुधा रस॥
तुमहि कहौ तिन राज। प्रेम कारन काम कस॥
हम काज आज सिर उप्परें। षग्ग धार [1]टालौं सु पल॥
पुज्जओं राज ढिल्ली सु धर। दुभर सु भर भंजों सु दल॥
छं०॥ १५९९॥

मे जान्यौ पहिलों न। एह राजन क्रत काजन॥
मरन पच्छ कैमास। मंत जानै नह ताजन॥
भट्टकज्ज न्त्रप करिय। [2]सकल लोकह सो जानिय॥
एह कथा पहिलों न। संन सन भई सयानिय॥
[3]मत्यौ सु एह कारन प्रथम। पुर कमज प्रथिराज किय॥

(१) ए. कृ. को.-टालो। (२) ए. कृ. को.-सव्व।
(३) ए. कृ. को.-मंत्यौ।

षंडौ सु अब्ब अरि हर उकसि। लोक सु जित्तौ काज जिय ॥
छं० ॥ १६०० ॥

जामराय जद्दव का राजा से कहना कि विवाह की यह प्रथम रात्रि है सो सुख सेज पर सोओ।

सुनिय बत्त राजंन। कन्ह मन रीस अप्प चित ॥
पय लग्यौ नर नाह। धन्नि जंपौ सु धन्नि हित ॥
बलिय बास न अन अन्य। फिरत रोपिय सब संगिय ॥
बंध वारि विथ्थारि। उद्ध चिंतान विलग्गिय ॥
जंपयौ राज जद्दौ नमिय। प्रथिम रज इह व्याह रह ॥
खनिय सु ग्रेह प्रथमाह यह। करहु सयन न्रिप सुष्ष सह ॥
छं० ॥ १६०१ ॥

दरबार बरखास्त होकर पृथ्वीराज का संयोगिता के साथ शयन करना।

दूहा ॥ संजोगिय नयननि निरषि। सफल जनम न्रप मानि ॥
काम कसाये लोयननि। हन्यौ मदन सर तानि ॥
छं० ॥ १६०२ ॥

सुधि भूली संग्राम की। भूलि अप्पनिय देह ॥
जोन भयो बसि पंग दल। सो भयो वाम सनेह ॥
छं० ॥ १६०३ ॥

नयन चरन करमुष उरज। विकसत कमल अकार ॥
कनक वेलि जनु कामिनी। लचकनि बारन भार ॥छं०॥१६०४॥
रवनि रवन मन राज भय। भयौ नैंन मन पंग॥
सूरन सों संग्राम तजि। मंड्यौ प्रथम रस जंग ॥ छं० ॥ १६०५ ॥
तब सु राज रवनिय निरषि। हसि आलिंगन दिठ्ठ ॥
रचिय काम सयनह सुबर। दिय अग्गा भर उठ्ठ ॥ छं० ॥ १६०६ ॥

प्रातः काल पृथ्वीराज का शयन से उठना सामंतों का उस

के स्नान के लिये गंगाजल लाना स्नान करके पृथ्वीराज का सन्नद्ध होना।

पद्धरी ॥ अग्गिय दीन जइवइ जाम। रष्षहु जु सब्ब निष्ठाम ठाम ॥
मंगयौ ताम प्रथिराज वारि। अंदोलि मुष्ष पय पान धारि ॥
छं० ॥ १६०७

आवद्द बड्ड सुष सयन कीन। सब दिसा अप्प बर बंटि लीन ॥
सब फिरत थाइ सामंत दीन। पारस फिरंत सामंत कीन ॥
छं० ॥ १६०८ ॥

दस हथ्थ मग्ग सीसइ सु चंद। बैठो सुचिंत चिंता समंद ॥
निड्डुरइ राव जामान सथ्थ। बलिभद्र सिंघ पामार तथ्थ ॥
छं० ॥ १६०९ ॥

सामलौ सूर दिसिं पुब्ब पंच। रष्षनइ राइ राजेस संच ॥
नर नाइ कन्ह पामार जैत। उद्दिग्ग उदोत राष्षै सु भैंत ॥
छं०॥१६१०॥

हाहुलियराव हंमीर तथ्थ। जंघारराव भीमान पथ्थ ॥
घन पत्ति दिसि राषै सु धीर। अपअप्प परिग्गह जुत्त बीर ॥
छं० ॥१६११॥

बंधव बरन्न तोमर पहार। बग्घेल सु लष्षन लष्ष सार ॥
द्वै बंध हड्ड सम अप्प सूर। मइनसी पीप परिहार पूर॥
छं० ॥ १६१२ ॥

पच्छिम दिसाइ सजि धीर सार। भंजनइ मंत गय जूहभार॥
पवार सलष आजानबाह। चहुआन अत्त ताई उधाह ॥
छं० ॥ १६१३ ॥

चालुक्क विंझ भोंहा अभंग। बग्गरी देव षीची प्रसंग ॥
बारउह सिंह अनभंग भार। दच्छिन दिसाइ सजि जूह सार ॥
छं० ॥ १६१४ ॥

(१) मो.-पुज्ज।

[1]साहस्स एक सत एक सथ्थ । सब भग्ग ढूंष नीचह उरथ्थ ॥
छं० ॥ १६१५ ॥

अप अप्प भत्य सामंत सब्ब । पट्ट्र काज जल पंग तब्ब ॥
कमधज्ज भत्य मध्धे वराह । आनयौ अप्प मेल्हेव ताह॥छं०॥१६१६॥
मुष पाय पानि अंदोलि वारि । अचयौ अप्प आतम अधारि ॥
करि सुतन संति सामंत राज । चिंते सु दूह भर स्वामि काज ॥
छं० ॥ १६१७ ॥

आवद्द बंधि सजि वाजि सब्ब । आसन्न ताम अप्पह अथब्ब ॥
उच्छंग भत्य कौ दै असीस । अस्तंमि षेट के षिन परीस ॥
छं० ॥ १६१८ ॥

पारस्स बैठि पंगुरह सेन । गज्जें निसान हय गय गुरेन ॥
चिंता सु चुंभि अति पंग राज । पारस्स फिरै चहुआन काज ॥
छं० ॥ १६१९ ॥

प्रातः काल होते ही पुनः पंग दल में खरभर होना ।

दूहा ॥ चित्त अत्ति चिंता तपित । सज्जि राज कमधज्ज ॥
जिके सुभट बर अप्पने । फिरै तब क्रित रज्ज ॥ छं० ॥ १६२० ॥
सेन संजोग प्रथिराज हुअ । बाजहि लाग निसान ॥
कादर विधु मन बंछही । सूरहो बंछहि भान ॥ १६२१ ॥

प्रभात की शोभा वर्णन ।

रासा ॥ इसौ राति प्रकासी । सर कुमुदिनी विकासी ॥
मंडली सामंत भासी । किवन कल्लोल लासी ॥ छं० ॥ १६२२ ॥
पारसं रज्जि चंदं । तारस्स तेज [2]मंदं ॥
कातरा क्रति बंधे । सूर सूरत्तन संधे ॥ छं० ॥ १६२३ ॥
वियोगिनी रेंनि छुट्टी । संजोगिनी लाज छुट्टी ॥
*　*　*　।　*　*　छं०॥१६२४॥

---

(१) ए. कृ. को.-साहस ।　　(२) ए. कृ. को.-संदं ।

चोटक ॥ छुटि छंद गिरा सुरसा प्रगटी। मिलि ढालनि माल रही सु घटी॥
निसमान मिसान दिसान हुअं। धुअ धूरिन मूरिन पूरि पुअं ॥
छं० ॥ १६२५ ॥
नव निभ्भरयं बनयं बनयं। गज बाजत साज तयं घनयं ॥
निज कच्छरि अच्छरियं सदयं। करि रंजन मंज नयं जनयं ॥
छं० ॥ १६२६ ॥
करि सारद नारदयं नदयं। सिर सज्जन मज्जनयं सदयं ॥
निज निर्भय यं चहुआन मनं। किर निर्भर रज्जित सूर जनं ॥
छं० ॥ १६२७ ॥
गाथा ॥ सितभ किरनि समूरौ। [1]पूरयं रेनं पंग आयेसं ॥
जुग्गनि पति भर सूरौ। पारस मिलि पंग राएसं ॥ छं० ॥ १६२८॥
मुरिल्ल ॥ पारसयं पसरी रस कुंडलि। जानकि देव कि सैव अपंडलि ॥
हालि हलाल रही चव कोदिय। दीह भयौ निस की दिसि मुंदिय॥
छं० ॥ १६२९ ॥

प्रातः काल से जैचन्द का सुसज्जित हो कर सेना में पुकारना कि चौहान जाने न पावे।

* कुंडलिया ॥ देषि चिरा उद्योत घन। चंद सु ओपम कथ्थ ॥
दीपक विद्या अनु रचिय। द्रोन कि पथ भारथ्थ ॥
द्रोन कि पथ भारथ्थ। काम आये जै अरथं ॥
उभय घरी दिक्कतें। रुधि हरि चक्र विरथं ॥
दो प्रदीप गज तुरंग रथ। एक धनुष पाइल्ल करग ॥
पावै न जानि पथ्थीखिका। निसा दीह सम करि भिरग ॥
छं० ॥ १६३० ॥
कवित्त ॥ सहस पंच सम सूर। पास वर तिय निरमल कुल ॥
निज सरीर हय देह। सज्जि सिर अग्गि राज बल ॥
तिन समथ्थ रा पंग। फिरत सब सेन अप्प प्रति ॥

(१) मो.-चूरयं सेन पंग आएसं ।
* वास्तव में यह डोढ़ा छन्द है परंतु इसकी बीच की दो पंक्तियां खो गई हैं। यह छन्द मो. प्रति में नहीं है ।

जिके सेन प्रथिसेव । कहै प्रथिराज रोह तति ॥
जिन आय निकसि चहुआन ग्रह । ग्रहौ तास सब सेन हय ॥
[1]इम फेरत राज निज भ्रत्त प्रति । प्रथु सनमानित सब्ब रय ॥
छं० ॥ १६३१ ॥

जैचन्द का पूर्व दिशा से आक्रमण करना ।

करति अरति पहु पंग । फिरे सब सेन अप्प प्रति ॥
जग्गि तेज हुल्लास । झाल दुति भई दीह भति ॥
प्रथम पुब्ब दिसि राज । जथ हु तह फिरि पारस ॥
तहं फिरि आइय राज । जाम जामनिय रहिय तस ॥
प्राचीय मुष्प सजि राज गज । दिष्षि सोय कमधज्ज नमि ॥
नृप चढ़े तेव टामंक करि । ग्रहन राज चहुआन तमि ॥
छं० ॥ १६३२ ॥

सुख नींद सोते हुए पृथ्वीराज को जगाने के लिये कविचन्द का विरदावली पढ़ना ।

पद्धरी ॥ सोवै निसंक संभरि नरिंद । पष्परत पंग संक्यौ सुरिंद ॥
प्रथिराज काम रत सम संजोगि । अवतार लियौ धर करन भोग ॥
छं० ॥ १६३३ ॥

जग्गवै कोन जालिम्म जोह । प्रेमनिय प्रेम रस रह्यौ मोह ॥
चव बाह मत्त[2]हीसंकि कान । चंपि चुंग दिसनि रहि घुरि निसान ॥
छं० ॥ १६३४ ॥

सिधूअ मारु मलक्यौ सु गान । सुनि सूर नह कादर कंपान ॥
पंचास कोस रुद्धी धरन्नि । मेलान मध्य चहुआन न्निन ॥
छं० ॥ १६३५ ॥

कवि किय किवार बुल्ल्यौ विरद । सिंघ जिम जग्ग सुनि श्रवन सद ॥
छं० ॥ १६३६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-इम फेर राजनित भूत पति । (२) ए. कृ. को.-हींसहि ।

पृथ्वीराज का सुख से जागना।

दूहा ॥ बिरदावलि बोलत जग्यौ। श्रीय संजोइय कंत ॥
कंदल रस रत्ते नयन। क्रोध सहित विहसंत ॥ छं० ॥ १६३७ ॥

गाथा ॥ इम सज्जत सामंत। घटय रयनि तुच्छ संघरियं ॥
जग्गत न्रप चहुआनं। पयानं भान [1]प्रच्छानं ॥ छं० ॥ १६३८ ॥

दूहा ॥ सयन संधि मंडिय न्रपति। दुअ यट्ठौ अरि येति ॥
मानि घात सामंत मन। तब उभ्भै करि नेत ॥ छं० ॥ १६३९ ॥

पृथ्वीराज का सेन से उठ कर संयोगिता सहित घोड़ पर सवार होना और धनुष सम्हालना।

त्रोटक ॥ न्रिप मंगिय राज तुषार चढ़े। कविचंद जयज्जय राज पढ़े ॥
परिपंग कटक्कत घेर घनं। दस पंचति कोस निसान सुनं ॥
छं० ॥ १६४० ॥

गज राज विराजित मध्य घनं। जनु बद्दल अभ्भ सु रंग बनं ॥
[2]परि पष्वर सार तुरंग घनी। जनु छुल्लत हेल समुद्द अनी ॥
छं० ॥ १६४१ ॥

बर बैरष बंबरि [3]छत्र तनी। बिच माहिय स्याहिय सिंघ गनी ॥
[4]हरि पष्प इमा उभ पीत बनी। जनु लज्जत रैंनि सरद्द तनी ॥
छं० ॥ १६४२ ॥

भन नंकहि भेरि अनेक सयं। सहनाइय सिंधुअ राग लयं ॥
निसि सब्ब न्रिपत्ति अनीन फिरै। जनु भांवरि भान सु भेर करै॥
छं० ॥ १६४३ ॥

दल सब्ब सँभारि अरित्त करी। जिन जाइ निकस्सि नरिंद अरी ॥
गत जांम चिजाम सु पीत परी। जय सद्द अयासह देव करी ॥
छं० ॥ १६४४ ॥

कर चंपि नरिंद सँजोगि ग्रही। उपमा चर चारु सुभद्र कही ॥
मनों भोर दुआरसि अग्गि तपी। कलिका गजराज कमोद झपी ॥
छं० ॥ १६४५ ॥

---

(१) ए. को.-प्रस्थानं। (२) मो.-परि पष्वर ताप सुरंग घनी।
(३) मो.-पचरती। (४) ए. कृ. को.-हरि पष्प उमापति पीत पती।

पय चंपि रके वनि बाल चढ़ी । रवि बेलि किधों गह काम बढ़ी ॥
तर तोन चमंकत पच्छ दिठी । जु मनों तन भांन 'मयूष उठी ॥
छं० ॥ १६४६ ॥

मुष दंपति चंद बिराज बरं । उदै अस्त ससी रबि रथ्थ घरं ॥
भर न्नप्प सजे सु तरंग चढ़े । मनं भान पयानति लोह कढ़े ॥
छं० ॥ १६४७ ॥

चहुआन कमानति कोपिलियं । मिलि भोहनि षंचि कसी सदियं॥
सर छुट्टत पंषति सद्द 'सयं । मद गंध गयंदन मुक्कि गयं ॥
छं० ॥ १६४८ ॥

सर एक सु विद्धत सत्त करी । दल दिष्षत मेंन ठठ्ठुक परी ॥
नरवारि हजारक च्यार परी । प्रथिराज लरंत न संक करी ॥
छं० ॥ १६४९ ॥

पंग सेना का व्यूह वर्णन ।

कवित्त ॥ उभै सहस गजराज । मद्द मुष्षह पंति फेरिय ॥
नारि गोर जंबूर । बान छुटि कहुंकि सु मेरिय ॥
पंग अग्ग कंद्रप कुआर । 'मीर गंभीर अभंगम ॥
ता अग्गे बन सिंघ । टांक बलिभद्रति जंगम ॥
केहरि कंठेरि अग्गें न्नपति । सिंह विभग्गा सिंह रन ॥
उग्यौ न भान पयान बिन । ⁴मथन मेंर मथ्थौ मदन ॥
छं० ॥ १६५० ॥

वीर ओज वर्णन ।

रसावला ॥ घग्ग वीरं घुलं, अंत दंतं हलं । दंत दंती घुलं, लोहरतं मिलं ॥
छं० ॥ १६५१ ॥

वीर वीरं ठिलं, सार सारं भिलं।चच्च 'रंसी बिलं, वीर अंगं ढिलं॥
छं० ॥ १६५२ ॥

(१) ए. कृ. को.-मझंष । (२) ए. कृ. को.-भयं । (३) ए. कृ. को.-मीर ।
(४) मो.-मथन । (५) ए. कृ. को.-चच्चरं चीषिलं ।

काइरं जे पुलं, बैन बहु बुलं । सिद्ध 'चित्त डुलं, क्रम्म बंधं षुलं॥
छं० ॥ १६५३ ॥

मुगति मग्गं चलं, ईस सीसं रुलं । ढुंढि बंधं गलं, षग्ग मग्गं दलं॥
छं० ॥ १६५४ ॥

ढाल गज्जं मलं, देवलं जं ढुलं । घाइ घुम्मै षलं, अंग सोभै ललं ॥
छं० ॥ १६५५ ॥

सीस हक्कै कलं, काइ रंजं ढलं । पिंड रत्नं पनं, षग्ग वित्तं तनं ॥
छं० ॥ १६५६ ॥

स्तर उट्ठै पनं, द्रोन नच्ची धनं । आयुधं झंझनं, नारदं रिझझनं
छं० ॥ १६५७ ॥

सूर्य्योदय के पाहिले से ही दोनों सेनाओं में मार मचना ।

कवित्त ॥ बिनह भान पाथान । इदं कमधज्ज जुद्ध दुअ ॥
सह्यौ न बोल संमुखै । बिरद पागार बज्ज भुअ ॥
सुकल 'षोलि कल्हार । झकित कह्यौ झाराहर ॥
बिनहि अरुन उद्योत । अरुन उग्यौ धाराहर ॥
पहु बिन पुकार पहु उप्परिग । सु प्रह पहक फट्टी फहम ॥
उहिग सुतन अरि बर किरन । मिलिव चक्क चक्की गहम ॥
छं० ॥ १६५८ ॥

असिवर झर उघ्घरिय । चक्क चक्की अनंद मन ॥
कुमुद मुदिग कमधज्ज । सेन संपुटिग सघन रिन ॥
पंच जन्य संपन्न । सकल कुरु घरनि घरीयं ॥
पसु कि मझ्झ मुष पंच । तिमिर किरनिनि निवरीयं ॥
उडगन अचंभ कौतूहलह । अरु सु स्वामि किन्नौ गहरु ॥
उहिग पगार सुत पंचनन । समर सार बुल्यौ पहरु ॥
छं० ॥ १६५९ ॥

(१) मो.-बिसें । (२) ए. कृ. को.-कोल ।

युद्ध वर्णन।

छंदनाराज ॥ हयग्गयं नरभ्भरं [1]रथं रथंति जुट्टयौ।
मनों नरिंद देव देव झल्लरी सु बट्टयौ ॥
किनंकही तुरंग तुंग जूह गज्ज चिक्करं।
जु लोह छक्कि नष्षि भोमि पेत मुक्कि निक्करं ॥ छं० ॥ १६६० ॥
बजंत घाय सद्दकं ननद्द नद्द मुद्दरं।
गरज्जि देषि अग्गि ज्यौं विदोष मन्न जो दुरं ॥
उठंत दिष्ट सूर की करूर अंषि राजई।
मनों कि सौकि बीय दिष्ट बंकुरौति साजई ॥ छं० ॥ १६६१ ॥
उभै सयन्न क्रम्म यंक को न भूमि छंडयं।
जु मझ्झि कंक भज्जि कोन सार अंग षंडयं ॥
बरंत रंभ रंभ भंति सार के दुझ्झारयं।
जुधं जुधं बजंत सूर धार धीर पारयं ॥ छं० ॥ १६६२ ॥
तुटंत स्रोन सीस द्रोन नंचि रीस छक्कयौ।
[2]रचंत भोम विद्र कार बीर बीर झक्कयौ ॥
परंत के उठंत फेरि मच्छ ज्यौं तरप्फई।
रनं विधान धीर बीर बीर बीर जंपई ॥ छं० ॥ १६६३ ॥

अरुणोदय होते होते भोनिग राय का काम आना।

कवित्त ॥ पहर एक असि एक। एक एकह निब्बर धर ॥
धर धर धरनि निहारि। नाग धक्कयौ सु नाग सिर ॥
हल हलि मिलि रट्ठौर। रीठ बज्जी बज्जारह ॥
कर क्क्कस रस केलि। धार तुट्टिय लगि धारह ॥
दुहुं दल पगार पागार गिरि। [3]भिरि भुअंग भूनिग तनौ ॥
पहु फटिग घटिग सर्वरि समर। अमर भोइ जग्यौ घनौ ॥
छं० ॥ १६६४ ॥

(१) मो.-रथं रथं सु। (२) ए- कृ. को.-चंरत भोम छिद्रकार। (३) मो.-भर।

अरुणोदय पर साषुला सूर का मोरचा रोकना।

बहन बहन उद्दयौ। षरग उद्दिग उद्दिग जुअ॥
सह सुष्परि सा षुलौ। षोलि षंडौ उग्गिग दुअ॥
हय गय नर आरुरि सु। राइ बंबरि बर तोल्यौ।
सार सार [1]संभार। बीर बंबरि भंभोल्यौ॥
पहुपंग समुद जरइ[2]अध। हूर सार सारह हनिय॥
दनु देव नाग जै जै करहिं। बरन रुद्र रुद्रह भनिय॥
छं०॥ १६६५॥

घरी एक दिन उदै। पंग आरुहिय सेन भिरि॥
हय गय नर भर भिरत। लुथ्थि आहुट्टि लुथ्थि पर॥
किन्नर बर [3]चैनेन। बीर पल पंष किलक्किय॥
पंचम सुर जुग्गिनिय। बंधि नारद सु बक्किय॥
हं हंत हंत सुर असुर कहि। जै जै जै प्रथिराज हुअ॥
असि लष्ष पंग साइर उलटि। धनि नरिंद मंडेति भुअ॥
छं०॥ १६६६

एक घड़ी दिन चढ़े पर्य्यंत सामंतों का अटल हो कर पंग सेना से लड़ना।

परिग बीर बन सिंघ। रंग कमधज्ज सुरष्यिय॥
बर सुरंभ घरि फेरि। तज्यौ बर प्रान सु लष्यिय॥
ज्यौं मझ्झ बर [4]अष्पि। लीन बंकुरि तिय लष्यिय॥
बीनि रंभ दुहु हथ्थ। मरन जीव ते लष्यिय॥
लष्यन प्रमान मझ्झहिति रुष। रंभ अरंभन फिरि बरी॥
तिहि परत सिंघ रषि रिंघ अप। पंग पंच हथ्थिय परी॥
छं०॥ १६६७॥

दूहा॥ घरिय उदय उभ्भय दिवस। हक्कि हलक गज पंग॥
सुभर सूर सामंत सुनि। टरिय न बीर अभंग॥ छं०॥ १६६८॥

(१) मो.-संसार (२) ए.-अस। (३) ए. कृ.को.- त्रैनेत्र। (४) कृ. को. अछि।

सामन्तों का पराक्रम और फुर्तीलापन।

कवित्त ॥ जहं जहं संभरि वार। सूर सामंत वहिग वर ॥
तहं ति तेज अग्गरौ। फिरौ करि वार करतु कर ॥
जहं तहं भय भागंत। सार सनमुष सिर सहयौ ॥
जहां जहां चहुआन। चिहुरि चंचल चित रहयौ ॥
तहँ तहं सु सार [1]सारंग लिय। विरचि वीर चंदह तनौ ॥
पहु पुच्छ तुरी रिंझवि रनह। तहं तहं करै निवच्छनौ ॥
छं० ॥ १६६९ ॥

पङ्गराज की अनी का व्यूह वर्णन और चंदेलों का चौहानों पर धावा करना और अत्तताई का मोरचा मारना ॥

षोड़स गज पहु पंग। मीर सत सहस राज अगि ॥
अट्ठ अट्ठ गज राज। दिसा दच्छिन रु वाम मग ॥
पां पहार मोहिल्ल। महिद बंध रान ततारिय ॥
समर सूर चंदेल। बंध मिल्लि बाग उपारिय ॥
वर बंध बरुन अल्हन उभै। अत्तताइ अवरत्त बर ॥
दिसि मुक्कि वाम दच्छिन परिग। हाइ हाइ आरत्त भर ॥
छं० ॥ १६७० ॥

रसावला ॥ हलके हलकं, गिरं जानि बकं। छुटी मद्द पट्टं, वपं मेर घट्टं॥
छं० ॥ १६७१ ॥

चढ़ी जम्म भल्ली, गिरं भान हल्ली। सर क्रित्त मद्दं, घटं जानि भद्दं॥
छं० ॥ १६७२ ॥

दियै दंत भारी, सनंना सयारी। [2]कबी बक्क अष्यं, भमै मेघ पष्यं॥
छं० ॥ १६७३ ॥

धयै तेज जस्सं, जपं कंक कस्सं। [3]सरं नाव कस्सं, पनु रंत अस्सं॥
छं० ॥ १६७४ ॥

कुकं कोपि हल्ली, उपम्माति भल्ली। नदी नंद पायौ, रुपी पान धायौ॥
छं० ॥ १६७५ ॥

(१) ए.- सा मंगलिय। (२) मो०-कवी चक्र अष्यं। (३) ए० कृ. को.-रसं।

पतू रत्त अस्सं, अपं कंक कस्सं। मुषं मोर आनं, उपम्मा न आनं॥
छं० ॥ १६७६ ॥

इतने में पृथ्वीराज का दस कोस बढ़ जाना परंतु हाथियों के कोट में घिर जाना ॥

कवित्त ॥ चढ़ि पवंग प्रथिराज। कोस दस गयो ततष्छिन ॥
परत कोट चिहुकोद। घेरि करि लियौ गयंदनि ॥
इम जंपै जैचंद। भग्गि प्रथिराज जाइ जिन ॥
सोइ रावत रजपूत। सूर तिहि गनौं अयंगनि ॥
[1]कंमान कठिन कविचंद कहि। दुहु भुव बल कर तानियौ ॥
लग्गौ सु बान जयचंद हय। तब दल फिरि दुहुं मानयौ ॥
छं० ॥ १६७७ ॥

पृथ्वीराज का कोप करके कमान चलाना।

इसौ देषि प्रथिराज। सहस ज्वाला जक जग्गिय ॥
मनों गिरवर गरजंत। फुट्टि दावानल अग्गिय ॥
अप्प अप्प विप्फुर्यौ। करिय ज्वाला क्रम लग्गिय ॥
मनु पावक मझ्झि वीज। आनि अंतर गन जग्गिय ॥
हिरनाल फाल कट्टिन सकै। दावा नल भट्टह तयौ ॥
कनवज्ज नाथ असिलष्ष दल। जन जम अग्गि झपट्टयौ ॥
छं० ॥ १६७८ ॥

एक प्रहर दिन चढ़ते चढ़ते सहस्त्रों योद्धाओं का मारा जाना।

सत विंध्यौ चहुआन। पंग लग्गौ अभंग रन ॥
सु बर सूर सामंत। जोति झलहलिय उंच घन ॥
जांम एक दिन चढ्यौ। रथ्थ पंच्यौ किरनालं ॥
ब्रह्म चौंति फुनि परिय। देषि भारथ्थ विसालं ॥
पूतंनि ताम देवन्न कर। धरे ग्रब्भ दस मास बर ॥
जोगवै जतन पन निम्मइय। तिन मरत न लग्गत पल सुभर ॥
छं० ॥ १६७९ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-लेकर कमांन कविचंद कहि।

गाथा ॥ इष्टं सनाह सरिसं । निमुष निमुष बंधनं तनहं ॥
　　तिष्टं जोग प्रमानं । तं भंजयौ सूर निमिषाई ॥ छं० ॥ १६८० ॥
दूहौ ॥ रन रुंध्यौ संभर धनी । पंग प्रमानत घेरि ॥
　　निमुष सु रघ्यौं बर न्रपति । ज्यौं पतिभान सुमेर ॥ छं०॥१६८१ ॥

जैचन्द का कुपित होकर सेना को आदेश करना ।

कवित्त ॥ लल्लै नैन सु पंग । बान रत्ती रस बीरं ॥
　　हथ्थ रोस विथ्थुरै । मोंह मुक्कत्ति सरीरं ॥
　　गह गहगह उच्चार । भार भारथ सपंतं ॥
　　बंधन बर चहुआन । भीम दुस्सासन रतं ॥
　　सावंग अंग चित पंग कौ । ग्रत्त[1] सोज प्रथिराज रस ॥
　　सामंत होम भारथ्थ कस । बीर मंच जदि होइ बस ॥ छं० १६८२ ॥

घनघोर युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ परे पंच वीरं, म्रदेलघ्य भीरं । परे बंद मत्ती, समंदं हरत्ती ॥
　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ १६८३ ॥
　　मये बीर भीरं, जुअंतं सरीरं । उड़ै छिछ अग्गं, लगे अंग अग्गं ॥
　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ १६८४ ॥
　　नगं रत्त जैसं, जरे हेम तैसं । लगे लोह तत्ती, सहं बीर पत्ती ॥
　　　　　　　　　　　　　　छं० १६८५ ॥
　　सुन्यौ बीर नद्दं, बहै बग्ग हद्दं । वही अंप जारी, विजूयों संभारी॥
　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ १६८६ ॥
　　[2]धुसी लग्गि वीरं, बरं मंत पीरं । [3]गद ढाहि नीरं, दँती कढ्ढि वीरं ॥
　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ १६८७ ॥
　　कन्हं कंस तीरं, कँधं नंषि भीरं । घयं वार पारं, रुधी धार धारं ॥
　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ १६८८ ॥
　　जयं कंन रायं, पलं छुट्टि वायं । सिरं तुट्टि पारं, रुधी छुट्टि धारं ॥
　　　　　　　　　　　　　　छं० ॥ १६८९ ॥

(१) मो०-ग्रत्त ।　(२) ए. कृ. को.- धुछी　(३) ए. कृ. को.- गजं ।

नभं होम लग्गी घृतं होम अग्गी। घटं घट्ट धारं, दिवी घट्ट भारं॥
छं० ॥ १६६० ॥

झले पग्ग जग्गी, तिने लोक लग्गी। जिवं मुक्कि भट्टं, चली बंधि थट्टं॥
छं० ॥ १६६१ ॥

धरं धार चट्टं, घगं मग्ग बट्टं। सत्त वीर झारं, जुधं लीन भारं॥
छं० ॥ १६६२ ॥

मरं मार [1]मारं, पँगं बीर बारं। * * छं० ॥ १६६३ ॥

पृथ्वीराज के सात सामंतों का मारा जाना और पंग सेना का मनहार होना परंतु जैचन्द के आज्ञा देने से पुनः सबका जी खोलकर लड़ना।

कवित्त ॥ परिग पंग भर सुभर। राज रजपूत सत्त परि॥
लोथि लोथि पर चढ़ी। बीर बट्टीति कोट करि॥
परिग सूर जै सिंह। गौर गुज्जर पहार परि॥
परिय नन्ह अरु कन्ह। अमर परि नाभ अमर करि॥
बग्गरी परिग रनधीर रन। रनहँधिग रिन मल्ल परिग॥
इन परत सूर [2]सत्तौ तिरन। पंग सेन ढट्टुकि करिग॥ छं० ॥१६६४॥

भुजंगी ॥ ठठुक्के सुमंनं मनं मीर मिल्लै। डरं [3]विट्टुरी सेन सब्बें निकल्लै॥
बरं बैर राठौर चहुआन [4]झल्लै। तबै लष्यियं पंगु रा नेन लल्लै॥
छं० ॥ १६६५ ॥

तिंन उप्पजी रोस उर अम्भ अग्गी। उतं निक्करे न्त्रिपनि कै नैन मग्गी॥
तिनं लुंवियं नैंन दीसै दिसानं। तबं चंपियं राज नें चाहुआनं॥
छं० ॥ १६६६ ॥

तिनं उप्पजी संष धुनि सिंगिधारं। तिनं वज्जियं नद्द नीसान भारं॥
लयं लग्गियं क्रम्म राजं सजोई। तिनं अप्पियं कंत कोवंड जोई॥
छं० ॥ १६६७ ॥

तिनें सुमरियं चित गंध्रब्ब सद्दं। उतं जोइयं मुष्ष सामंत हद्दं॥

(१) मो.-झारं, कृ.- कारं। (२) ए.- मत्तौ। (३) को.- बिझ्झरी। (४) ए. कृ. को.- हल्लै।

बचनं सु सद्दं कवी चंद बोल्यौ। तबै भंजियं कन्ह सों सौ अबोलौ॥
छं० १६९८॥

तबें लग्गियं भान रायंति रायं।[1]उनं देषियं आज कौतूह चायं॥
तबै कोपियं बीर विजपाल पुत्तं। तिनं आवधां झारि जमजालि दुत्तं॥
छं०॥ १६९९॥

सवं संहरी सेन सौनह दीहं। इसौ नौमि तिथि थान प्रथिराज सीहं॥
तिनं राजसं तामसं बे प्रगट्टं। भरं मुक्कियं सब्ब सातुक्क बट्टं॥
छं०॥ १७००॥

सरं सार संपत्ति पे त्तति रच्छं। मनो आवधं इंद्र रुद्रानि कच्छं॥
बरं निट्ठुरी ढाल गय पत्ति मत्तं। तबै उट्ठियं सूर सामंत रत्तं॥
छं०॥ १७०१॥

उतं भूमि भर धरनि ढहि ढरि सुपथ्थं। तिनं अथ्थि बिय हथ्थ प्रथिराज सथ्थं॥
बढे वीर सामंत सा बीर रूपं। जिसे सैल संदूर संदेस जूपं॥
छं०॥ १७०२॥

उडै विग्रवानै सुमानै उदंता। जिसें आरक फल फूटि होतें अनंता।
ततें कंपियं काइरं लोह इत्तं। मनों अनिल आरंभ प्रारंभ पत्तं॥
छं०॥ १७०३॥

इसौ जुद्ध आवद्ध मध्यान हूअं। रहे हारि हथ्थं जु जूवारि जूअं॥
छं०॥ १७०४॥

दूसरे दिन नवमी के युद्ध के ग्रह नक्षत्रादि का वर्णन।

कवित्त॥ तिथि नौमी सनिवार। मेष संक्राति सिंघ ससि॥
गंज नाम बर जोग। चित्र जोगिनी बाम बसि॥
दिन नछित्र रोहिनी। जांम मंगल बुध तीजौ॥
के इंद्री गुर देव। भान ससि राह सुभीजौ॥
बर द्रष्टि येह ग्रह दान रन। नवमि जुद्ध[2]अवरुद्ध बजि॥
पहुपंग बीय सुंमुह ढरी। चावद्दिसि रष्यै सु सजि॥ छं० ॥१७०५॥

(१) ए. कृ. को. तिनं। (२) ए. कृ. को.- अवरत्ति।

जैचन्द की आज्ञा से पंग सेना का कोप करना और चौहान की तरफ से पांच सामंतों का मोरचा लेना। इन्हीं पांचों के मरते मरते तीसरा पहर हो जाना।

तदिन रोस रट्ठौर। चंपि चहुआन गहन कहि ॥
सौ उप्पर सैं सहस। [1]बीह अगनित्त लष्य दहि ॥
छुटि डुंगर थल भरिग। फुट्टि जल थलति प्रवाहिग॥
सह अच्छरि अच्छहि। विमान सुर लोक बनाइग॥
कहि चंद दंद दुंह, दल भयौ। घन जिम सिर सारह झरिग ॥
हरि सैस ईस ब्रह्मानि तनि। तिहुं समाधि तद्दिन टरिग ॥छं०१७०६॥

पंग बीर गंभीर। हुकम अप्पौ जु गहन बर ॥
बर हैवर बर रम्य। द्रुग्ग देवत्त जुद्ध भर॥
चित चचभुज भर दंद। गोर सूरंत नषत हर ॥
चावद्दिसि चहुआन। हक्कि कड्ढी असिवर भर ॥
दल मुररि मुररि मोहिल मयन। नयन रत्त बोलिग सुभर ॥
जुग्गिनि पुरेस निंदरि चलिय। अबल होत उप्पर सुधर ॥
छं० ॥ १७०७॥

गाथा ॥ विपहर [2]पहुरति परियं। हय गय भार सार [3]नथ्थनं ॥
रह रंग रोस भरियं। उट्ठियं बीर बिबेनं॥ छं० ॥ १७०८॥

कवित्त ॥ सुनिग माल चंदेल। भान भट्टी भुआल बर ॥
धनू बीर धवलेस। उट्ठि न्त्रिबान हक्कि बर ॥
तमकि हूर सामली। सार झल्लिय पहार भर ॥
पंच पंच तिय पंच। पंच पंचंत पंच बर॥
दैवान जुद्ध पंचै भिरिग। भिरि भारथ्थ अपुब्ब बर ॥
बजि घरी पहर तीसर उठी। [4]ज्यौं अगनि धुंम संजुत्त धर ॥
छं० ॥ १७०९ ॥

---

(१) मो.-बीरह। (२) ए. कृ. को महुरति।
(३) मो.-सथ्थनं। (४) मो.-ज्यौं अगनि धुंमर जुत्त धर।

वीर योद्धाओं का युद्ध के समय के पराक्रम और उनकी वीरता का वर्णन ।

बाघा ।। परि पंच जुड सु बीर । बजि सस्त्र बज्जि सरीर ॥
भर अग्गि अंजन भीर । झुभझही घग्गनि नीर ॥ छं० ॥१७१०॥
तुटि सस्त्र बस्त्र सरीर । मनु [1]तरनि सोभि करीर ॥
नरपत्ति चाहत बीर । तिन किलकि जोगिनि तीर ॥ छं० ॥ १७११॥
तजि सबन यों अन बीर । घग मिलिग झलिग सरीर ॥
दल मथत दलन अधीर । जनु समुद थाहत कीर ॥ छं०॥१७१२॥
बर बरै अच्छरि बीर । जिन मुष्ष झलकत नीर ॥
तुटि अंत दंतन तीर । म्रिनाल मन कढि नीर ॥ छं०॥१७१३ ॥
बजि पग्ग नद्द निनद्द । [2]गज गजत सोरस मद्द ॥
गज रत्त रत्त जु ढाल । घग लगत भज्जत हाल ॥ छं० ॥ १७१४ ॥
सद व्रत्त जनु गहि दीन । तिन ईस सीस जुलीन ॥
घट उट्ठि धरियत अङ्ग । चंदेल माल विरुद्ध ॥ छं० ॥ १७१५ ॥
सिर हथ्थ साहि प्रमान । कर नंषि दिसि चहुआन ॥
बर [3]पंग है गै बीत । भारथ्थ दस गुन गीत ॥ छं० ॥ १७१६ ॥

उक्त पांचों वीरों की वीरता और उनके नाम ।

कवित्त ।। परे पंच बर पंच । सुभर भारथ्थह पुत्ते ॥
उंच हथ्थ करतूति । उंच बड़पन बड़ जुत्ते ॥
तिल तिल तन तुट्टयौ । [4]पंग अगनित घल भंजिय ॥
पंच पंच मिलि पंच । रंभ साहस मन रजिय ॥
दिन लोक देव आनंद कर । बर बर कहि कहि झग्गरैं ॥
इन परत पंग जो गति बुझी । षिझत फिरी पारस परैं ॥
छं० ॥ १७१७ ॥
पऱ्यौ माल चंदेल । जेन धवली धर गुज्जर ॥
पर्यौ मान भट्टी । भुआल थट्टा धर अग्गर ॥

---

(१) ए. क्र. को.-सरनि ।　(२) ए. क्र. को.-गज गजत सोरह मद्द ।
(३) ए. क्र. को.-पंच ।　(४) ए.-अंग ।

पऱ्यौ सूर सामन्तौ। जेन बानै मुष मच्छइ॥
हँसै तेन पांवार। जेन विरदावल अच्छइ॥
न्निब्बान बीर धावर धनू। [1]इनुय नरिंद अनेक बल॥
इन परत पंच भय विप्पहर। अगनित भंजि असंष दल॥
छं० ॥ १७१८ ॥

पृथ्वीराज को पकड़ लेने के लिये जैचन्द की प्रतिज्ञा।

चढ्यौ सूर मध्यान्ह। पंग परतंग गहन किय॥
[2]सुरनि षेह षह मिलिय। श्रवन दुह सुनिय सुलीय लिय॥
तब नरिंद जंगलिय। कोह कढ्ढौ सु बंकि असि॥
धर धूमिलि धुम्मरिय। मनहु दल मझ्झि दुतिय ससि॥
अरि अरुन रत्त कौतिक कलस। भयौ न भय सुभिरंत भर॥
सामंत निघट पंचह परिग। न्रपति सपिट्ठिय पंच सर॥
छं० ॥ १७१९ ॥

साटक॥ इक्कं तीन सकड्डियं कर धरं, पंचास [3]वर्द्धासने।
उत्तारे सहसं सु बीय उडनं, लष्षं चलष्षं बियं॥
सब्बं पारि इमंच क्रित्त जनकं, पत्तं च धारायनं॥
एवं बाहु सु बाह बान धरियं, द्रोनाद्वि पथ्थं जया॥ छं० ॥१७२०॥

जैचन्द का अपनी सेना की आठ अनी करके चौहान को घेरना और सेना के साथ राजकुमार का पसर करना। उक्त सेना का व्यूहवद्ध होना। मुख्य योद्धाओं के नाम और उनके स्थान।

कवित्त॥ अष्ट फौज पहु पंग। परिस चहु आनह फेरिय॥
मीर धीर धरवान। षान असमानह केरिय॥
क्रोध परिग गजराज। सत्त मुर मह मीष बर॥
तिन मझ्झ मल्हन महेस [4]। बंसीति सहस भर॥
ता अग्ग केत कुंअर कंद्रप। दस सहस्र भर सु भर सजि॥

(१) ए. कृ. को.-हनिय। (२) ए. कृ. को.-सुरनि।
(३) मो.-पंचास वर्द्धानिने। (४) "सर" पाठ अधिक है।

ता अग्गै न्रपति [1]बज्जीत सवि । पंच सत्त गज मुष्ष गजि ॥
छं० ॥ १७२१ ॥

ता अग्गै तिरहुति नरिंद । बीर केहरि कंठेरिय ॥
विष जद्दों रा भान । देव दच्छिन न्रप भेरिय ॥
ता अग्गैं अंगोल । देव दहिया तत्तारिय ॥
मोरी रा मद्दनंग । बीर भीषम षंधारिय ॥
ता अग्ग सींह बल अंग बल । सजि समूह ब्रह्माह मयन ॥
प्रथिराज सेन दिष्षत गिम्नं । सु कविचंद बंटहि नयन ॥ छं० ॥ १७२२ ॥

वीर रस माते योद्धाओं का ओज वर्णन ।

रसावला ॥ पंग रा सेनयौ । रत्त आनै नयौ ॥
आइ संछुट्टियं । [2]दिट्टयं तुट्टियं ॥ छं० ॥ १७२३ ॥
बीर जं विप्फुरं । जोर जम्मं जुरं ॥
सस्त्र वाहं बरं । वज्जतं सिप्परं ॥ छं० ॥ १७२४ ॥
सस्त्र छुट्टं नियं । बथ्थ जुथ्थं लियं ॥
जुद्ध अद्धं मयं । बज्जि जुद्धं मयं ॥ छं० ॥ १७२५ ॥
क्रूर सूरं अरी । जानि मत्ते करी ॥
पाइ बज्जे घटं । बीर बोले भटं ॥ छं० ॥ १७२६ ॥
कूक मच्ची परं । सार सारं भरं ॥
अंत रथ्थं बरं । देव रथ्थं परं ॥ छं० ॥ १७२७ ॥
बोल जे जं बरं । फूल नंषे सिरं ॥
देव जुद्धं ननं । सूर बंटै धनं ॥ छं० ॥ १७२८ ॥
अंत गिद्धी कुड़ी । अंतरिछं उड़ी ॥
मन्न मुष्षं परं । रथ्थ हक्के डरं ॥ छं० ॥ १७२९ ॥
क्रंम सत्तं बरं । द्रोन नंचै धरं ॥
थोर थोरं थनी । [3]अप्प ढुंढै धनी ॥ छं० ॥ १७३० ॥
चंद जोहं करी । गो पथं उच्चरी ॥
गज्ज ढालं ढरी । दंत दंती परी ॥ छं० ॥ १७३१ ॥

(१) मो.-वज्जानि । (२) ए. कृ. को.-भावनं दिठियं । (३) ए. कृ. को.-अथ्थ ।

सोमि मुक्के करी। अस्स पंषी परी ॥
* * * । * * छं० ॥ १७३२ ॥

लड़ते लड़ते दोपहर हो जाने पर संभरी नाथ का कुपित हो हाथ में कमान लेना।

कवित्त ॥ दिनयर सुश्र दिन जुड्ड। जूह चंपिय सामंतन ॥
भर उप्पर भर भर । परिहि उप्पर धावंतन ॥
दल दंतिन बिच्छुरहि। हय जु हय हय किन नंकहि ॥
[1]अच्छरि बर हर हार। धार धारन झन नंकहि ॥
जय जया सद्द जुग्गिनि करहि। कलि कनवज दिल्लिय बयर ॥
सामंत पंच षित्तह षपिग। भिरत पंच भये [2]विप्पहर ॥
छं० ॥ १७३३ ॥

रन रत्तो चित रत्त। [3]वस्त्र रत्तेत षग्ग रत ॥
हय गय रत्तै रत्त। मोह सों रत्त बीर रत ॥
धर रत्ते [4]पत रत्त। रुक रत्ते विहझानं ॥
रत्त बीर पलचर सु रत। [5]पिंड रत्ती हिय सानें ॥
विप्फुरे घाइ अघघाय फुट। पंग ठट्ठ चंपे सु भर ॥
दैवत्त जुद्ध चहुआन वर। षिजि कमान लीनी सु कर॥छं०१७३४॥

घनघोर युद्ध का वाकचित्र दर्शन।

मोतीदाम ॥ रजे रविरथ्थ रहस्सिय व्योम। धमक्किय बज्जिय गज्जिय गोम॥
[6]जग्यौ रस तांम स पंगह पूर। गहग्गह राग [7]वज्यौ सम सूर ॥
छं० ॥ १७३५ ॥

नवम्मिय क्रत्यकसूर सु अन्न। घटी दह अट्ठ सु[8]गव्वह दिन्न ॥
नयौ सिर आनि सु डुंगह देव। गह्यौ पहु जंगल सूर समेव ॥
छं० ॥ १७३६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-कच्छर। (२) ए. कृ. को.-दुप्पहर।
(३) मो.-वस्त्र रत्ते सु। (४) ए. कृ.-पर।
(५) ए. कृ. को पिंड रत हिये न साने।
(६) ए. कृ. को.-मच्यौ। (७) ए. कृ. को.-गत्तह।

भुवनह राज सु जंगह अग्ग। कढ़ी करनट्टिय सिंघ सु कग्ग॥
तुरंगम पंति पयद्दल सक्क। जु सज्जिय अग्गह सह सरक्क॥
छं० ॥ १७३७ ॥

धमक्किय धोम निसानन नद्द। झनक्किय कातर सिंधु असद्द॥
पहं मंडि सिंधुअ खूंपुर रेन। गहग्गह वज्ज कम्यौ सब सेन॥
छं० ॥ १७३८ ॥

उलट्टिग सिंधु सपंतिन अप्प। उरब्बिय सा जनु अंत कलप्प॥
मुरक्किय बग्ग सु जंगल राज। प्रगट्टित कोप [1]धुअं वर गाज॥
छं० ॥ १७३९ ॥

चह चह चंब तरं रन तूर। सु रब्बर संप सजे घन सूर॥
मिले पहु जंगल सेन सु पंग। मनौं मिलि सागर संग सु गंग॥
छं० ॥ १७४० ॥

जगे रस तामस नग्गिय षग्ग। मनौं रस हारि जु आरिय लग्ग॥
झरझ्झर वज्जिय धारनि धार। मनौं ससि ककस्सि तुट्टिय तार॥
छं० ॥ १७४१ ॥

लगे मुष नाग सकत्ति न झेरि। मनौं गजराज बजावत भेरि॥
हयद्दल पैदल दंतिय एक। लगे कर आवध सावध केक॥
छं० ॥ १७४२ ॥

झरझ्झर सेन झनक्किय झार। धरब्बर लुथ्थि [2]ढरें धर भार॥
[3]कढी चहुआन कमान सु बंक। मनौं षह सेन सु बीय मयंक॥
छं० ॥ १७४३ ॥

पृथ्वीराज की कमान चलाने की हस्तलाघवता।

दूहा ॥ कढि कमान असमान घन। मह्नि चमंकिय बीज॥
मनौं काल की जीभ ज्यौं। झुकि कढ्ढी करि षीजि॥
छं० ॥ १७४४ ॥

तमकि तेज कोवंड लिय। जंगल वै जुध वान॥
असी लष्य दल तुच्छ गनि। न्याइ बंध्यौ सुरतान॥ छं० ॥१७४५॥

(१) ए. कृ. को.-धुअंमर। (२) ए. कृ. को.-धरें। (३) ए. कृ. को.-चढी।

पृथ्वीराज का जैचन्द् पर वाण चलाने की प्रतिज्ञा करना और संयोगिता का रोकना।

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। सुनहि संयोगि सु [1]लष्षिन ॥
आज हनों जैचंद। दंद ज्यौं मिटै ततष्षिन ॥
पिता मरन सुनि डरिय। करिय अरदास जोरि कर ॥
मोहि पंग बग सीस। कंत किज्जै सु प्रेम धर ॥
मन्नेव बचन संयोगि तब। चल्यौ राज अग्गे विमन ॥
कलहंत नारि जानिय सु चित। मिटै न गंध्रव कौ वचन ॥
छं० ॥ १७४६ ॥

पृथ्वीराज के घोड़े की तेजी।

दूहा ॥ असी लष्प दल उप्परै। नंषि वाजि प्रथिराज ॥
धरनि फट्टिकै गगन तुटि। भरकि सु कायर भाजि ॥ छं० ॥१७४७॥

चहुआन की तलवार चलाने की हस्तलाघवता।

चोटक ॥ [2]चहुआन कमानति कोपि करं। पघनं पघनं प्रिथिराज वरं ॥
जिहि लष्प असी दल तुच्छ करी। दल गाहि नरिंद जु मंझ फिरी ॥
छं० ॥ १७४८ ॥

वहि वान कमान धुंकार बजी। कि मनों बर पुब्बय मेघ गजी ॥
सर फुट्टि सनाहन भेदि परी। नर हथ्थ तरंगनि जुड्ड [3]तरी ॥
छं० ॥ १७४९ ॥

चहुआनति मुष्पहि वीर चढ़ी। सर नंषि तहां किरवान कढ़ी ॥
लगि राज उरं किरवान कटी। कि मनों हरि पै तड़िता वि छुटी ॥
छं० ॥ १७५० ॥

चहुआन वही किरवान बरं। सु परे अरिषंड विषंड धरं ॥
अरि ढाहि परे गजराज मुषं। सु बहै [4]तिन बान कमान रुषं ॥
छं० ॥ १७५१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-लच्छिन। (२) यह पंक्ति मो.प्रति में नहीं है।
(३) मो.-करी। (४) मो.-नित।

कटि सुंडि सु नैनन दंत कटी। सु मनों तड़िता घन मद्धि छुटी॥
सु परे धर बीरति पंग भरं। प्रथिराज जयज्जय चंपि बरं॥
छं०॥ १७५२॥

सुकरी अरि [२]अप्प विडारत गज्ज। मनों बन जारिम जानि धनज्ज॥
ढहै गज ढाल सु झंडहि झाल। मनों फल भारह तुट्टिय डाल॥
छं०॥ १७५३॥

ढह्यौ घन घाव सु डुंगह देव। भुवन्नह राव पर्यौ घह घेव॥
भरक्किय सेन सु भग्गिय पंति। परे दह तीन सहस्सह दंति॥
छं०॥ १७५४॥

परे धर बीर सु पंग भरं। प्रिथीराज जयज्जय चंपि बरं॥
छं०॥ १७५५॥

सात घड़ी दिन शेष रहने पर पंगदल का छिन्न भिन्न होना देख कर रयसलकुमार का धावा करना।

कवित्त॥ घरिय रस्स रवि सेष। भयौ कलहंत ताम भर॥
वज्र घात सामंत। अग्गि लग्गी सु षग्ग झर॥
हलहलंत दल पंग। दंग चहुआन जान [३]भय॥
तब आयौ रयसल्ल। बिरद भैरुं सु भूत रय॥
हाकंत हक्क बर उच्चरिग। अतुल पान आजान हुअ॥
कमधज्ज लग्गि कमधज्ज छल। बीर धीर विजपाल सुअ॥
छं०॥ १७५६॥

पृथ्वीराज के एक एक सामंत का पङ्ग सेना के एक एक सहस्त्र वीरों से मुकाबला करना।

दूहा॥ सहस बीर भर अप्प बर इक इक रष्षै रिंघ॥
संभरि जुध सामंत सम। मनों लग्गि सम सिंघ॥ छं०॥१७५७॥

घमासान युद्ध वर्णन।

(२) ए. कृ.-को.-अप्प। (३) ए.-कृ.-को. भुव।

पद्धरी ॥ लग्गे सु सिंघ सम सिंघ घाइ । चहुआन सूर कमधज्ज राइ ॥
छाकंत मत्त भारंत तेक । इम संत रत्त हलि चलन एक ॥
छं० ॥ १७५८ ॥
गय नभ्भ सूर रुधि रत्त भौन । पसरै मरीच नह मभिभ तौन ॥
संचार क्रन्न सद्दौ न ब्योम । धुंधरिग धाम द्दह दिग्ग धोम ॥
छं० ॥ १७५९ ॥
पावै न मध्य गिड्डी पसार । भिद्दै न अन्य षह अड्ड चार ॥
[1]देषंत सूर[2]कौतिग्ग सोम । नारद्द आनि अध निरषि ब्योम ॥
छं० ॥ १७६० ॥
षह चरह सुड्ड सुभ्भै न कंक । घन घुरह षेह पूरित पलंक ॥
अच्छरिय रथ्थ रुड्डंत सीस । पावै न बरन इच्छंत ईस ॥
छं० ॥ १७६१ ॥
पत्तौ सु काल रयसन्न रूप । गह गह चवंत चहुआन भूप ॥
भौ तिमिर धुंध सुभ्भै न भान । प्रगटै न अप्प द्रिग अप्प पान ॥
छं० ॥ १७६२ ॥
दिष्षहि न सूर सामंत राज । संग्रहौ सह दल सकल साज ॥
सद्यौ सु कन्ह सामंत हद्द । हो जैत राव जामानि जद्द ॥
छं० ॥ १७६३ ॥
निड्डुरह सिंघ सुनि अत्त ताइ । सुभ्भै न ईस सौधौ सु राइ ॥
वंच्यौ सु सूर चौरंगि नंद । लष्यौ सु राज अरि लष्ष दंद ॥
छं० ॥ १७६४ ॥
वंच्यौ सु कन्ह धुअ गेन धार । गय पंग ढारि बंधौ सु पारि ॥
क्रम्यौ सु श्रवन सुनि अत्तताइ । भौंहा सु धीर धरि तोन धाइ ॥
छं०१७६५ ॥
हलकंत सथ्थ सामंत तार । मानहु क्रमंत हरि दंत भार ॥
बिहथंत कोपि वाहंत कोन । भिद्दंत सिंधु उड्डंत श्रोन ॥
छं० ॥ १७६६ ॥
प्रगटंत भाक पावक्क [3]षोम । किलकंत घूंटि संठौ सु ब्योम ॥

(१) ए. कृ॰ को. देषन्न । (२) मो.-कौतिक्क । (३) ए. मो. धोम ।

धमकंत नाग धर असि उसंध । चइकंत कंध कूरंम बंध ॥
छं० १७६७ ॥

घर तुट्टि धरनि पल पलनि पंक । तन खन अवन ब्रहमान संक ॥
गय ढार सार सुषमत्त भार । प्रगटंत मझ्झि दुअ दल पगार ॥
छं० ॥ १७६८ ॥

रुक्कंत पारि पंगुरह सेन । निरषंत स्वामि सामंत नेन ॥
*　*　*　*　*　*　छं० ॥ १७६९ ॥

नवमी के युद्ध का अंत होना ।

दूहा ॥ संझ सपत्तिय न्वप तिरन । बिय पारस पर कोट ॥
रहै सूर सामंत जकि । देषि न्वपति तन चोट ॥ छं० ॥ १७७० ॥
दोइ बर अश्वनि पष्वरह । दुअ न्वप इक संजोइ ॥
इह अवस्थ अंषन लषी । हम जीवन न्वप तोइ ॥ छं० ॥ १७७१॥

सामंतों का कहना कि अब भी जो बचे हैं उन्हें लेकर दिल्ली चले जाओ ।

इह कहि न्वप लग्गे चरन । सांई दिष्षत अंषि ॥
[1]जाहु सुजीवत जानि घर । पंच सु बीसह नंषि ॥ १७७२ ॥
जीत हारि न्वप होत है । अरु हांसी दुज्जन लोग ॥
जुरि धर अद्ध निरद्ध किय । अब जंगल वै भोग ॥ छं० ॥ १७७३ ॥

नवमी के युद्ध में तेरह सामंतों का मारा जाना ।

सविता सुन दिन जुद्ध बर । भौ रस रुद्र [2]समंत ॥
होत संझ नवमिय दिवस । परे तेर सामंत ॥ छं० ॥ १७७४ ॥

मृत सामंतों के नाम ।

कवित्त ॥ परे रेन रावत्त । राम रिन जंग अंग रस ॥
उठत इक्क धावंत । पंच वाहंत बीर दस ॥
बलि बारड मोहिल । मयंद मारुअ मुष मध्ये ॥
आरेनो अरि लंघि । पंग पारस दल षद्धे ॥

(१) ए. कृ. को.-जाह सु जीवत । (२) ए.-समात ।

नारेन बीर बंधव बरन । दिव देवान [1]गौ देवरौ ॥
कलहंत बीज सामंत मुष । रह्यौ स्वामि सिर सेहरौ ॥छं०१७७५॥

संध्या का युद्ध बंद होना ।

दूहा ॥ संझ सपत्तिय रत्ति भर । पुनि सज्जै दल पंग ॥
चलिग पंति [2]पहु पंग मिलि । जुद्ध भरनि किय जंग ॥
छं० ॥ १७७६ ॥

पंग सेना के मृत रावतों के नाम ।

कवित्त ॥ कमधज्जह रयसल्ल । बिरद भंड़ सु भूत गहि ॥
कर नाटिय किय सोर । राग सारंग यट्ट यहि ॥
सु पहु गुंड सु ग्रीव । राव बग्घेल सिंघ बर ॥
मोरी [3]का सु मुकंद । पुट्ठि भौमेह पंति धर ॥
न्टप कन्ह राव मरहट्ठ वै । हरिय सिंघ [4]हथनेव पर ॥
नरपाल राव नेपाल पति । राइ सल्ल क्रमि लै समर ॥
छं० ॥ १७७७ ॥

नवमी के युद्ध की उपसंहार कथा ।

विज्जुमाला ॥ नवमिय [5]सूरन सूर । बज्जिग विषम तूर ॥
गहन [6]गट्टन पंग । बज्जिग सज्जिग जंग ॥ छं० ॥ १७७८ ॥
तरनि सरनि सिंधु । धरनिति मिर धुंध ॥
संचार गौ मय बानि । झलकि सझित जानि ॥ छं० ॥ १७७९ ॥
सघन जुग्गन जूप । प्रगटित पहुमि रूप ॥
सज्जित सु चहुआन । करषि कर कम्मान ॥ छं० ॥ १७८० ॥
रजति रामठि संक । मनहु सेयन लंक ॥
घुट्टि छग्गुन कंन । बढ़िया तुरंग [7]तंन ॥ छं० ॥ १७८१ ॥
पष्षर सब्बर सार । प्रगटि उरनि पार ॥
सनमुष पंग सेल । सहित सूरन ठेल ॥ छं० ॥ १७८२ ॥

---

(१) ए. कृ. को. गयौ । (२) ए. कृ. को-पहुपंति ।
(३) मो.-पास । (४) मो. हथनेर । (५) मो.-सूअन ।
(६) ए. कृ. को.-गन । (७) ए. कृ. को.-छंन ।

बहिग विष्षम सार । प्रगटि उतरि पार ॥
धार धार लगि झार । धरनि धर सुहार ॥ छं० ॥ १७८३ ॥
रयसल्ल लष्षिय राज । क्रमि गहनं भु साज ॥
लषि सम रज धाय । आइ लगि अततोइ ॥ छं० ॥ १७८४ ॥
[1]हय होय सिंगी झार । नष्षौ जु पूर परार ॥
उहिग क्रमि सु सूत्र । मंडि गज सिंघ [2]रूत्र ॥ छं० ॥ १७८५ ॥
रयसल्ल परे पिष्षि । क्रमे गह राज रिष्षि ॥
मिली कन्ह अत्ता ताइ । रिषि रन रुक्कि राय ॥ छं० ॥ १७८६ ॥
परे दह सत्त घाइ । सघन घइ अप्प आइ ॥
परे अन्न भूय पिषि । भोग सेन सब लषि ॥ छं० ॥ १७८७ ॥

पंग सेना का पराजित होकर भागना तब शंखधुनी योगियों का पसर करना ।

दूहा ॥ भगे सेन विजपाल न्रप । लषि भै तामस राइ ॥
सहस एक भर संब धर । कढि हय छंडि रिसाइ ॥ छं० ॥ १७८८॥
बाते संष विरद्द धर । बैरागी जुध धीर ॥
सूर संष न्रिप नामि सिर । भर पहु मज्जन भीर ॥ छं०॥१७८९ ॥

शंखधुनी योद्धाओं का स्वरूप वर्णन ।

कवित्त ॥ पवंग मोर पष्षरह । मोर ग्रीवत गज गाहिय ॥
मोर टोप टहरी । मोर मंडित संनाहिय ॥
मोर माल उर संष । संक छंडिय भय भग्गिय ॥
धार तिथ्थ आदरिय । पंग सेवहि वैरागिय ॥
तिहि डरनि डारि घल्लै । तिनहिं नित राज अग्गे रहै ॥
हल हलत सेन सामंत भय । मुक्कि मुक्कि अप्पन कहै ॥छं०॥१७९०

पृथ्वीराज का कवि से पूछना कि ये योगी लोग जैचन्द की सेवा क्यों करते हैं ।

दूहा ॥ रिषि सरूप संषह धुनिय । अति बल पिथ्थ कहंद ॥
बैरागी माया रहित । किमि सेवै जयचंद ॥ छं० ॥ १७९१ ॥

(१) मो.-हय हाय संगे झार । (२) ए. कृ. को.-सूत्र ।

कविचन्द का शंखधुनियों की पूर्व्व कथा कहना।

कहत चंद प्रथिराज। ए सब रिषि अवतार ॥
मुनि नारद [1]परबोध भौ। कथ्य सुनहु विस्तार ॥ छं० ॥१७९२॥

तैलंग देश का प्रमार राजा था उसके रावत लोग उस से बड़ी प्रीति रखते थे।

कवित्त ॥ सहस एक सुधवंस। सहस एकह धर सोहै ॥
सेवा करत तिलंग। लष्य दस सस्च अरोहै ॥
एक सहस वाजिच। समुद तट सेवा सद्धै ॥
वपु सु वज्र चित वज्र। एक निरलेप अरद्धै ॥
सब एक जीव तन भिंन भिंन। बंस छत्तीस अषाढ़ सिध ॥
पामार तिलंग हरि सरन हुअ। कुल छतीस धर दान दिध ॥
छं० ॥१७९३॥

उक्त प्रमार राजा का छत्तीस कुली छत्रियों को भूमि भाग देकर वन में तपस्या करने चला जाना।

न्रप केहरि कंठेर। राइ सिंधुआ पाहारं ॥
रा पछार परताप। पत्त डंडौर सु धारं ॥
राम पमार तिलंग। जेन दिग्विय वसुधा दन ॥
उज्जैनिय चक्कवै। करै सेवा तिलंग जन ॥
सह सेक सुभट सब एक मम[2]। अब तिलंग परलोक गय ॥
छचीन दान दिन्नौ तबहि। सहस सु भट बनवास लय ॥
छं० ॥ १७९४ ॥

दिय दिल्ली तोंवरन। दई चावंड सु पट्टन ॥
दय संभरि चहुआन। दई कनवज कमधज्जन ॥
परिहारन मुर देस। सिंधु बारडा सु चालं ॥
दै सोरठ जद्दवन। दई दच्छिन जावालं ॥

---

(१) मो. परमोद। (२) ए. कृ. को.-मन।

चरना कच्छ दीनौ करग । भट्टां पूरब भावही ॥
बन गए न्रपति बंटै धरा । गिरिजापति माला गही ॥छं०॥१७९५ ॥

राजा के साथी रावतों का भी योग धारण कर लेना ।

दूहा ॥ एक सहस रिष रूप करि । अजपा जपै सु नाम ॥
बन षंडह विस्राम किय । तप तप्पत तिन ठाम ॥छं०॥१७९६॥

ऋषियों का होम जप करते हुए तपस्या करना ।

पद्धरी ॥ रिषि मंगि आइ सुर धेन ताम । दीनी सु इंद्र वर होम काम ॥
रिषि तास दूध [1] वर करै होम । संच पत होइ तिन सुरभ धोम॥
छं० ॥ १७९७ ॥
अध्याय अधिन आजंन जप्प । रिषि करै सब्ब उन कष्ट तप्प ॥
तहं करत दैत्य बहु विघन [2] नित्त । भष्षी सु गाव वच्छी सहित्त ॥
छं० ॥ १७९८ ॥

एक राक्षस का ऋषि की गाय भक्षण कर लेना और ऋषियों का संतापित होकर अग्नि में प्रवेश करने के लिये उद्यत होना ।

विअष्षरी ॥ रिषि तहां बसै उभै सत वर्ष । राक्षस तहां धेन बछ भष्षं ॥
कोपवंत रिषि हुए सु भारी । सब मिलि अगनि प्रवेस विचारी ॥
छं० ॥ १७९९ ॥
इह उतपात चिंति नारह रिषि । आयौ तिन आश्रम्म समह सिषि॥
अरघ पाद सब्बह मिलि किन्नौ । मुनि सुष पाइहु औआधिन्नौ ॥
छं० ॥ १८०० ॥

नारद मुनि का आना और सब योगियों का उनकी पूजा करना ।

दूहा ॥ रिषि आवत नारह मुनि । लग्गे सब्बह पाइ ॥
फनपत्ती से दिष्षि करि । चरन पषालै आइ ॥ छं० ॥ १८०१ ॥

---

(१) ए. दूस । (२) मो. वित्त ।

नारद मुनि का योगियों को प्रवोध करना।

दूहा ॥ मुनि प्रवोध मुनिजन कियौ। प्रति राक्षस कृत साप ॥
सो तुमकों लग्यौ सबै। तब रिष लग्गे ताप ॥ छं० ॥ १८०२ ॥

नारद का कहना कि तुम जैचन्द की सेवा करो वहां तुम युद्ध में प्राण त्याग कर साक्षात मोक्ष पावोगे।

विषष्षरी ॥ नारद रिषि उच्चरै सु बत्तं। सुनौ सबै इह इक करि चित्तं ॥
फिरि रिषि राज सु आयस दिद्धं। करौ तपस्या साधक 'सिद्धं ॥
छं० ॥ १८०३ ॥

वरष बीस तुम तप्प सु तप्पे। एक चित्त करि अजया जप्पे ॥
तुम हौ छत्री जाति सबै मुनि। तिहि आचरौ धार तीरथ फ,नि॥
छं० ॥ १८०४ ॥

और तप्प बहु काल अभ्यास। इंद्री डुलै सबै भ्रम नास ॥
धार तिथ्थ आदरै जु पत्री। सुष में पावै मुगति तुरत्ती ॥
छं० ॥ १८०५ ॥

धार तिथ्थ पहिलै छत्री ध्रम्म। भू पर सबै और जानौ भ्रम ॥
काहौ कौन हम सों जुध आवै। देषत दूरिहु तें जरि जावै ॥
छं० ॥ १८०६ ॥

जग मध्ये जयचंद कमंद न्रप। अवनी उप्पर तास महा तप ॥
मानों इंद्र सरूप विचारं। आयौ प्रथी उतारन भारं॥छं०॥१८०७॥
ता रिपु एक रहै चहुआनं। अवर सबैं न्रप सेवा मानं ॥
संभरि वै दिल्ली पति रज्जं। सौ सामंत सेव तिन सज्जं ॥
छं० ॥ १८०८ ॥

सो ढुंढा अवतारी भारी। ते तुम संमुह मंडै रारी ॥
जाउ तुम सेव जयचंद प्रति। एक लष्ष गढ़ तिन घर सोहति ॥
छं० ॥ १८०९ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-चित्त।

लष्य असी तोषार पलानै। अग मध्ये तीनूं पुर आनै॥
रषि मुनि बन सबें सुष पायौ। अच्छौ गुर उपदेस बतायौ॥
छं०॥ १८१०॥

कवि का कहना कि ये लोग उसी समय से जैचन्द की सेना में रहते हैं।

दूहा॥ रिषि आयस मन्यौ सु रिष। संष चक्र धरि साज॥
दिन प्रति सेवै गंग तट। सुनि विजपाल सु राज॥ छं०॥ १८११॥
मोर चंद्र मध्यै धरिय। जटा जूट जट बंधि॥
संष बजावत सब्ब भर। सेवें जाइ कमंध॥ १८१२॥

नारद ऋषि का जैचन्द के पास आना और जैचन्द का पूछना कि आपका आना कैसे हुआ।

बिअष्षरी॥ धुज्जै भूमिरु अंबर गज्जै। तीन लष्य वाजिच धुनिज्जै॥
तुट्टि अकास तीन पुर भग्गै। जोग मायर्यो जोगिनि जग्गै॥
छं०॥ १८१३॥

है षुर रज ढंकियें सु अंबर। चढ़ै कमंध करि मेघाडंबर॥
लष्य पचास पड़ै हय पष्वर। हुअ मैदान मेर से भष्पर॥
छं०॥ १८१४॥

अग्गै जल पच्छै मिलि पंकं। सर वर नदी लादि सों ठंकं॥
पानी थान षेह उड्डै बहु। अंत कलष्य टूसी सुनियै कहु॥
छं०॥ १८१५॥

दस दिगपाल परे भंगानं। मानव संसदेव संकानं॥
इन आडंबर चढ़ि कमधज्जं। आतपच ढंक्यौ उडि रज्जं॥
छं०॥ १८१६॥

यौं जयचंद तपै तट गंगा। नाम सुनंत छोड़ अरि पंगा॥
नारद मुनि आये तिन ठामं। पंग उट्ठि तब कीन प्रनामं॥
छं०॥ १८१७॥

कुसल पुच्छि बहु सुष रिष किन्नं। चरन सु राज मस्तक न्नप दिन्नं॥
किन कारन आए पुच्छै न्नप। भाग अज्ज मो नगर आय अप॥
छं० १८१८॥
रिष्य कहै संभलि न्नप राजं। सावधान मन करे समाजं॥
* * * । * * * छं० ॥१८१९॥

नारद ऋषि का शंखधुनी योगियों की कथा कह कर राजा को समझाना कि आप उनको सादर स्थान दीजिए।

दूहा॥ नाद सु नारद जंपि इह। सुनि जैचंद विचार॥
सहस एक षिची सु तन। सेवक तिलंग पंवार॥छं०॥१८२०॥
जीव एक देही उभय। अवतारी रजपूत॥
जब पवांर परलोक गय। गह्यौ भेष अवधूत॥ छं०॥ १८२१॥
सागर तट तप सझ्यौ। बरष उभै सित रह॥
होम धेन राक्षस हतौ। तिन डर डरौ सु देह॥ छं०॥१८२२॥
सब मिलि मरन विचारयौ। अगनि प्रवेस कुमार॥
उभय भाग रिषि राज सुनि। हूं आयौ तिन बार॥ छं०॥१८२३॥
दहन बरज्ज्यौ बोध दै। धारा [1]तिथ्थ सु सत्ति॥
वेद पुरान प्रमान जुग। दस अट्ठह [2]संमृत्ति॥ छं०॥१८२४॥
श्लोक॥ जीविते लभ्यते लक्ष्मी। मृते चापि सुरांगणा॥
क्षणं विध्वंसिनी काया। का चिंता मरणे रणे॥ छं०॥१८२५॥
कवित्त॥ मुनि प्रबोध मन मानि। रिष्षि आये तुम पासं॥
धारा तीरथ आदि। तहां साधन किय आसं॥
मोर पंष जट मुगट। सिंगि संग्राम सु धारै॥
मोह देह सब रहित। मरन दिन अंत विचारै॥
कलहंत वार मिलकंत न्नप। संष नाद पूरंत सर॥
जैचंद सेव आये सबै। [3]एक जीव उभया सु हर॥छं०१८२६॥

(१) ए. कृ. को.-तीरथ। (२) मो.-सुमृत्त।
(३) मो.-" एक जीव उरभया सुहर"।

नीसानी ॥ बषत बडे बानवज्ज राय रिषि तेग गहाई।
संषधुनी सहसेक न्रप हुये जु सहाई ॥
अब चल्लै संष सद्द दै गिरि मेर ढहाई।
लष्य असी मधि देषियै नारद बरदाई ॥
ए अवतारी मुनी सबै पूरब पुनि पाई।
जब कोपे करि वार लै पुर तीन ढहाई ॥
ए पराक्रमी सूरिमा हर उमया जाई ॥ छं० ॥ १८२७ ॥

कवि का कहना कि तब से जैचन्द इन्हें अपने भाई के समान मान से रखता है।

दूहा ॥ राज पंग पय लग्गि करि। सब रष्षे निज पास ॥
लष्य एक देही लहै। पुज्जै द्वादस मास ॥ छं० ॥ १८२८ ॥
अति बर न्रप आदर करै। जेठा बंधव जोग ॥
तिनहि राज रष्यह रहै। ते छुटि अज जुध भोग[1] ॥
छं० ॥ १८२९ ॥

जैचन्द की आज्ञा पाकर शंखधुनियों का प्रसन्न होकर आक्रमण करना।

कवित्त ॥ न्रिप केहरि कंठेर। राय परताप पट्ठ चह ॥
सिंधुअ राय पहार। राम षम्मार यट्ठ यह ॥
कट्ठिय आस सुकाज। पत्त गुडीर नरत्ता ॥
पह परवत पाहार। रहै सांषुला सुमत्ता ॥
अनेक सेव पति संष धर। सहस एक बिन मोह मत ॥
अग्या सुपंग किल क्रंत क्रमि। अप्प अप्प मुष उप्परत ॥
छं० ॥ १८३० ॥

शंखधुनियों का पराक्रम।

हय हय हय आयास। केलि सज्जी सुव्योम सिर ॥
किल किलंत का मक्कि। डक बज्जी सुहंस हर ॥

(१) मो.-जोग।

ओर राह पति संष। हकि असि ताईय तत्ते।
मनहुं पात न्त्रिघ्घात। पत्ति सामंत सुसत्ते॥
हम संत सेन अम्भय उभय। चाहुआन कमधज्ज कस॥
उच्चरिग आन अप अप्प मुष। हकि धार रत्ते सुरस॥
॥ छं० ॥ १८३१ ॥

युद्ध की शोभा और वीरों की वीरता वर्णन।

विज्जुमाल॥ पैदलह मंत रत्त। जु गुर सुलह जुत्त॥
बंचित सुचंद छंद। विज्जुमालवि वंद॥ छं० ॥ १८३२ ॥
विमल सकल व्योम। रजति सिरनि सोंम॥
[1]प्रगटि ताम सपंग। हलि मिलि झिलि गंग॥ छं० १८३३॥
सुरत सेन सुलष्षि। निरषि परषि पिष्षि॥
विहसि द्रिग्ग करूर। बाजित बिंब तूर॥ छं० ॥ १८३४ ॥
मुंछति निरति भोंह। भोंह दु कुंतल सोंह॥
दल सु समुद दूप। अचवन अगस्ति रूप॥ छं० ॥ १८३५ ॥
हाकंत संष सुधार। वहत विषम सार॥
धार धार लगि धार। भररंत तुट्टी भार॥ छं० ॥ १८३६ ॥
किननंत सिर निसार। अचल मनु आधार॥
हबकि हबकि संग। अनी अनी लगि अंग॥ छं० ॥ १८३७ ॥
बिहल कराल कूप। क्रिपित कोल सरूप॥
बानैत संष समंत। अरि ग हूकर अंत॥ छं० ॥ १८३८ ॥
सु वचि सामंत राज। अप अप इष्ट साज॥
सुमिरंत बीर मंत। आइग सब सुनंत॥ छं० ॥ १८३९ ॥
एकित सु तोन धारि। कढ्ढिग सिरनि सार॥
धरनि सु धर धोर। हक हाक बजि भार॥ छं० ॥ १८४० ॥
नंचित चीर षंग। थइ थेई थंग॥
घन नंक सघन घंट। किलकंत [2]गोम कंट॥ छं० ॥ १८४१ ॥
गिधिय अंत गहेस। अंत सु लगिय तेस॥

(१) ए. कृ. को प्रगटित ताम संग। (२) मो.-मोम।

मनों बल बाला रंग। उचरंत चारु चंग ॥ छं० ॥ १८४२ ॥
सु रचि जठ्ठर सार। अद्वध उद्व विहार ॥
फर फर टरे फेफ। परति [1]पंषी रेफ ॥ छं० ॥ १८४३ ॥
इकित सिर बिकंध। नचित धर कमंध ॥
नचित रुचि जटाल। संचि सिरनि माल ॥ छं० ॥ १८४४ ॥
सकति अघाइ घोर। बजि राग घंट रोर ॥
रमित रस सभंद। आनंद चिल्हय ब्रंद ॥
चुंगल ग्रहंत पल। चुंच बल लै कमल ॥ छं० ॥ १८४५ ॥

शंखधुनी योगियों के साम्हने भौंहा का घोड़ा बढ़ाना।

दूहा ॥ बजत संष दह सत्त। सघन नीसान धुनक्किय ॥
पावस रिति आगमन। सिषर सिषि जानि निरत्तिय ॥
तिन अमित्त पौरष्ष। सहस सामंत बिअप्पिय ॥
निट्ठुर जैत नरिंद। स्वामि अग्गौ धपि दिप्पिय ॥
हहकारि सीस भौंहा सुभर। गहि अकास नंष्यौ म हय ॥
उड़ मंडल उत्त निरष्ययौ। मनो बाज पंषी सु भय ॥छं०१८४६॥

मांसभक्षी पक्षियों का बीरों के सीस ले ले कर उड़ना।

दूहा ॥ रुंड मुंड पल षंड [2]भुअ। मचि योगिनि बेताल ॥
चिल्हनि भष जंबुक गहकि। हर गुंथी गल माल ॥ छं०१८४७ ॥
लै चिल्ही भ्रम्मिय सु भर। है हर मिड्डी रूप ॥
बीर सीस चुंगल चंपे। गय [3]ग्रधन्न अनूप ॥ छं० ॥ १८४८ ॥

एक चील्ह का बहुत सा मांस लेजाकर चील्हनी को देना।

कवित्त ॥ लै चिल्हन सिर बीर। बीर भारथ्थ देषि भर ॥
को तर पर तिह थान। विषम प्रब्बत सु रंग बर ॥
उंच वृच्छ बट अति सु रंग। पंष [4]घूंसल अध बिचं ॥

(१) ए. कृ. का.-पंषी। (२) ए. कृ. को.-हुअ।
(३) ए. कृ. को.-ग्रहधन्न। (४) ए. कृ. को.-घूंसन।

तिहिं सु तट्ट चौसट्ठि। देवि आरंभन रच्चं ॥
जिम जिम सु सीस भष्षन कियौ। तिम तिम सुभभ्भै तीन भुम्र ॥
पल भष्षत क्षुद्ध भष्षित सकल। आनंदी पंषी सुनिय॥छं०॥१८४९॥

चील्हनी का पति से पूछना यह कहां से लाए।

दूहा ॥ आनंदी पंषी सकल। चिल्हानी पुछि कंत ॥
कहि कहि गल्ह सु रंग बर। सुष दुष जीवन जंत ॥छं०॥१८५०॥
चिल्हानी बुल्लि पत्ति सों। [1]जमंती बरजंत ॥
बड़ गुरजन बत्ती सुनी। सो दिट्ठी दिषि कंत ॥ छं० ॥ १८५१ ॥

चील्ह का कहना कि जैसा अपने पुरुषों से प्राचीन कथा सुनता था सो आज आखों देखी।

कवित्त ॥ पुब्ब सुन्यौ बर कंत। जुद्ध बलि राइ इंद्र बर ॥
तिपुर युद्ध संकरि विरुद्ध। भारथ्थ पंड भर ॥
चंद जुद्ध तारक्क। कन्ह ससिपाल लंक रघु ॥
जरासिंध जद्दवनि। दच्छ नंदी जु जगी अघु ॥
हरि जुद्ध बीर [2]बीत्यौ असुर। पुब्ब सेन जंप्यौ सुनिय ॥
दिट्ठौ सु कंत भारथ्थ मैं। पुब्ब पच्छ अब नह सुनिय ॥१८५२॥

चीलहनी का पूछना किस किस में और किस कारणवश यह युद्ध हुआ।

स्लोक ॥ कस्यार्थे कंत भावीति। बरणं कस्य सुंदरी ॥
कस्य वैर विरुद्धं सौ। कस्य कस्य पराक्रमं ॥ छं० १८५३ ॥

चील्ह का सब हाल कहना।

जग्य वैर विरुध्धं सौ। बरनं क्रत्य रंभयौ ॥
प्रथीभारो पंगराजो। जोधा जोधंत भूषनं ॥ छं० ॥ १८५४ ॥

चील्ह का चील्हनी से युद्ध का वर्णन करना और उसे अपने साथ युद्ध स्थान पर चलने को कहना।

---

(१) ए. कृ. को-उग्गती। (२) मो.-चित्यौ।

चौपाई ॥ [1]लुथ्थी लुथ्थि पुलथ्थि प्रमानं । भर बजि गज्जि बीर लुटि थानं॥
हेरे संमर रंभ हकारी । कहो कंत मो पन उच्चारी ॥छं०१८५५॥

दूहा ॥ सुनि विवाद चिल्हो सु बर । धुनि सुनि वर भारथ्थ ॥
उमा कंति चौसट्ठि दिय । रहि ससु पुच्छिय कथ्थ ॥छं०॥१८५६॥

पद्धरी ॥ [2]उच्चरी चिल्ह भारथ्थ कथ्थ । चौसट्ठि सुनौ सुनि कंत तथ्थ ॥
नर भिरैं जुद्ध देवनि मसान । उत मंग गुरें हकि सीस पान ॥
छं० ॥ १८५७ ॥

सुनि दिब्ब दिव्व जुद्धह सयंन । षग षगति जुद्ध बन निस्तबंन ॥
रथ रथनि रथ्थ गज गजन जुट्ट । बाजीन बाजि नर नर अहुट्टि॥
छं० ॥ १८५८ ॥

बर सुन्यौ देवि भारथ अपुब्ब । उद्दित्त बीर देषत सब्ब ॥
दूह रित्त सब्ब बाजित्त सार । तन सिद्धि दिंत जोगिनि सु तार ॥
छं० ॥ १८५९ ॥

डमरु डक्क बज्जै [3]अजूप । तुंमर पिसाच पल चर अनूप ॥
गावंत गीत जुग्गिनिय [4]थान । आहत्त जुद्ध चल्लै न भान ॥
छं० ॥ १८६० ॥

नारद नद्द वैताल [5]डक्क । वर बैर रंभ फिरि बरै चुक्क ॥
नच्चै कमंध हक्कंत सीम । पीसंत दंत बंभनी गीस ॥ छं०॥१८६१॥
आचिज्ज जुद्ध जो दिषत तथ्थ । उड़ि चलौ कंत चौसट्ठि सथ्थ ॥
*　*　*　* 　।　*　छं० ॥ १८६२ ॥

कवित्त ॥ सुनत कंत आनंद । बीर आनंद चवसठी ॥
लै चिल्हनि चलि सथ्थ । जुद्ध पिष्षन दिवि उठी ॥
उठे सूर बल ग्रंह । बान अरजुन जिम विद्धत ॥
एक भार उभभार । एक संमुष [6]षग संधत ॥
तेगां अचंभ सुभभै [7]सपत । आरुध्यौ प्रथिराज दिषि ॥

(१) मां.-लोथी लोथि । (२) को. उत्तरी ।
(३) मे.-अनूप । (४) ए. कृ. को.-गान ।
(५) ए.कृ.को रुक्क । (६) मां.-मुष । (७) ए. कृ. को सपनु ।

मोहिनि सँजोग पहुपंग सुर। भेंन रत्न चहुआन लिपि ॥
छं० ॥ १८६३ ॥

शंखधुनी योगियों के आक्रमण करने पर महा कुहराम मचना।

दस हजार बर मीर। पंग आयस फिरि अप्पिय ॥
छुटिय बान कम्मान। मेछ चावद्दिसि धप्पिय ॥
सबर सूर सामंत। बीर बीरं बिरझानं ॥
गज्ज जिमी बर पत्त। पत्त झंकुरिआ घानं ॥
आवद्ध बीर प्रथिराज बर। असम सिंह आहत्त बल ॥
लगि पंच बान उप्पर सु धपि। अगनित दल भंजै सु षल ॥
छं० ॥ १८६४ ॥

बड़ी बुरी तरह से घिर जाने पर सामंतों का चिंता करना और पृथ्वीराज का सामंतों की तरफ देखना।

दूहा ॥ दुतिय बेर सामंत फिरि। देषि स्रोन धर धार ॥
मन चिंता अति चिंतवन। ढिल्ली ढिल्ली पार ॥ छं०॥१८६५ ॥
कवित्त ॥ बान स्रोन प्रथु बीर। बाल देषो अग्गो हुअ ॥
असन बीर बिच राज। बान उड़गन जु मद्धि धुअ ॥
दूसो लोह विप्फुरै। जानि लग्गै बिय अग्गा ॥
फिरि नंष्यै है राज। सूर साही न्रप बग्गा ॥
मोरे सु मौर मोहिल परिग। षग्ग मग्ग वोहिथ्य रिन ॥
बर कन्ह सलष भोंहा न्रपति। फेरि त्रिपति दिष्यौ सु तन ॥
छं० ॥ १८६६ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों का भी जी खोल कर हथियार चलाना।

सूर पत्त दित संझ। सूर चिंती रस मग्गा ॥
बन कट्ठी जल जलनि। राज अग्गा नन अग्गा ॥
अल्हन कुंअर नरिंद। कनक बड़ गुज्जर बीरं ॥
न्रप अश्वंबन चली। राज अप्पौ लिय तीरं ॥

संजोगि पीय दंपति दुहनि। मुष प्यालन आलस भिरिगि॥
रवि मुदित चंद उग्गनि परह। फेरि पंग पारस फिरिग॥
छं०॥ १८६७॥

पृथ्वीराज का कुपित हो कर तलवार चलाना और बान बर्सांना।

भ,कित पंग प्रथिराज। गहिय कर वार चंपि कर॥
रोस मुट्ठि नित्तरिय। दंत बाही सु कुंभ पर॥
धार मुत्ति आदरिय। पंति लग्गिय सुभ चीरहि॥
मनहु रोस गहि षग्ग। ढाहि धारा धर नीरहि॥
मनु दुतिय चंद बद्दल बिचै। पंति लग्गि उड़गन रहिय॥
धर धुकत मंत द्रुम दिष्षियै। मनहु इंद्र बज्जह बहिय॥छं०॥१८६८॥

दूहा॥ पंग डंस चहुआन बर। मंच सँजोगि सु भार॥
संभ पार सम्हौ अरै। अरि पंचन रिपुचार॥ छं०॥ १८६९॥

कवित्त॥ परी निसि ससि उदित। सूर सामंत पंति फिरि॥
उतरि न्रपति प्रथिराज। लघु अनिस्संक अभंग करि॥
उभै तुषार [1]तुषार। बान छुट्टै कमड्ड बर॥
उभै बीर सम्हौ नरिंद। सोभै सु रंग भर॥
लग्गौ सु नेंन त्रिकुटी बिबिच। टोप फट्टि कंठं[2] सु भगि॥
प्रथिराज सु बल संभरि धनी। जै जै जै आये सु लगि॥
छं०॥ १८७०॥

दूहा॥उभै दिवस बित्ते सकल। गत घाटिका निसि अग्ग॥
जो पुच्छै दिवि सकल तू। सुनि भारथ्थ [3]समग्ग॥ छं०॥ १८७१॥

इसी समय कविचन्द का लड़ने के लिये पृथ्वीराज से आज्ञा मांगना।

तीर तुबक सिर पर बहत। गहत नरिंद गुमान॥
बरदाई तहां लरन कों। हुकम मांगि चहुआन॥

(१) ए. कृ. को. निहार। (२) मो.-सुमग्ग। (३) ए. कृ. को.-लगि।

पृथ्वीराज का कवि को लड़ाई करने से रोकना।

हम भ्रूझत रजपूत रिन। जंपत संभरि राव॥
अमर किति सामंत करन। बरदाई घर जाव॥ छं०॥ १८७२॥

कविचन्द का राजा की बात न मान कर घोड़ा बढ़ाना।

किति करन गुन उद्धरन। जल्हन पच्छ सु लज्ज॥
मोहि न्रिपति आयस करौ। ईस सीस द्यौ अज्ज॥ छं०॥ १८७३॥
बिन आयस प्रथिराज कै। धाय नंषयौ बाज॥
कौ रष्षै सुत मल्ह कौ। हूर नूर मुष लाज॥ छं०॥ १८७४॥

कविचन्द के घोड़े की फुर्ती और उसकी शोभा वर्णन।

लघुनराज॥ कविंद बाज नष्षयं। नरिंद चष्ष दिष्षयं॥
मनों नछिच पातयं। छ अंकि मद्धि राजयं॥ छं०॥ १८७५॥
पवंन बेग पाइसं। तुरंग कब्बि रायसं॥
न्रपत्ति अप्प पारषं। बियौ न कोइ आरिषं॥ छं०॥ १८७६॥
नचंत वै किसोरयं। हरै गुमान मोरयं॥
धरा ऐराक ठौरयं। लियौ सु वप्प तोरयं॥ छं०॥ १८७७॥
दियौ चुहान मौर को। समुद्द की हिलोर को॥
जरावयं पलानयं। अमोल पिट्ठ ठानयं॥ छं०॥ १८७८॥
मनो कि रथ्थ भानयं। कविंद जाचि आनयं॥
सु भंत अग्रकान के। मनों भलक बान के॥ छं०॥ १८७९॥
हरन्न सत्रु प्रान के। करे विरंच पानि के॥
हुती उपंम जोरयं। चिया सुनेन कोरयं॥ छं०॥ १८८०॥
कि भोर चित्त केत की। गरभ्भ फाफ केतकौ॥
प्रफुल्ल चंद मौजयं। कि पंषुरी सरोजयं॥ छं०॥ १८८१॥
पवन्न हीन पिष्षयं। कि दीप जोति सिष्षयं॥
तमं दरिद्र भंजनं। पतंग स्रम दझ्झनं॥ छं०॥ १८८२॥

सुभंत केस वालयं । सरित्त ज्यौं सेवालयं ॥
सबद्ध कंध वक्र कौ । सगोल पुट्ठि चक्र कौ ॥ छं० ॥ १८८३ ॥
गिरद्द देत घुम्मरं । पलं इलंत भुम्मरं ॥
खुरं चमक्क उज्जलं । मनों घनंम विज्जुलं ॥ छं० ॥ १८८४ ॥
बरन्न गात भौंर सौ । इलंत पुंछ चौंर सौ ॥
करतं फौज हौसयं । दिष्यौ कनौज ईसयं ॥ छं० ॥ १८८५ ॥
षुरं रजं तुरंगयं । उड़ंत जोर जंगयं ॥
किरन्न सूर मंदयं । छुट्टंत तीर द्दयं ॥ छं० ॥ १८८६ ॥
बजै निसान नद्दयं । गरज्ज ज्यौं सुमुद्दयं ॥
बद्दंत गज्ज मद्दयं । करंत सद्द रद्दयं ॥ छं० ॥ १८८७ ॥

कविचंद का युद्ध करके मुसल्मानी आनों को विदार देना और सकुशल लौट कर राजा के पास आजाना।

उठै रनं रवद्दयं । सुनंत भट्ट सद्दयं ॥
कमद्ध पंग उट्ठयं । सुमेर जेम दिट्ठयं ॥ छं० ॥ १८८८ ॥
करै हुकम्म पट्ठयं । गँभीर भीर अट्ठयं ॥
हुसैन षाँ कमालयं । षलील षां जलालयं ॥ छं० ॥ १८८९ ॥
पिराज षां हुजाबयं । फरीद षां निबाजयं ॥
अजब्ब साज बाजयं । धरंत जुद्ध लाजयं ॥ छं० ॥ १८९० ॥
कुलं जरं गरिट्ठयं । भुजा तिनं बलिट्ठयं ॥
द्रिगं सु [1]घात रत्तयं । मनो गयंद मत्तयं ॥ छं० ॥ १८९१ ॥
लरंत मीर भट्टयं । छुटै हथ्यार थट्टयं ॥
करंत घाव घट्टयं । नचंत जेम नट्टयं ॥ छं० ॥ १८९२ ॥
अरी घटा दबट्टयं । कि विज्जुलं लपट्टयं ॥
परंत चट्ट पट्टयं । पिशाच श्रोन चट्टयं ॥ छं० । १८९३ ॥
सनट्ट हथ्थ भट्टयं । उभै सु मीर कट्टयं ॥
हयग्गयं सु अंगयं । कलंत श्रोन पंकयं ॥ छं० ॥ १८९४ ॥

(१) ए. कृ. को.-गात रत्तयं ।

कृपान हथ्थ चंदयं। सु रग्गदेव बंदयं ॥
झरंत मीर अंगयं। निकट्ट तट्ट गंगयं ॥ छं० ॥ १८९५ ॥

घटं सु धाव घुम्मयं। परे सु मीर झुम्मयं ॥
लगे तुरंग अंगयं। सँपूर लोह जंगयं ॥ छं० ॥ १८९६ ॥

घटं सु घाव घुम्मयं। परे सु मीर झ,म्मयं ॥
लगे तुरंग अंगयं। सँपूर लोह जंगयं ॥ छं० ॥ १८९७ ॥
फिर्यौ सु चंद तब्बयं। कन्ह राज कब्बयं ॥
लगे न घाव गातयं। सहाय दुग्ग मातयं ॥ छं० ॥ १८९८ ॥

कवि का पराक्रम और राजा का उसकी प्रसंशा करना।

दूहा ॥ कुंजर पंजर छिद्र करि। फिरि बरदाई चंद ॥
तिन अंदर जिह्ननि भ्रमत। ज्यौं कंदरा मुनिंद ॥ छं० ॥ १८९९ ॥

कवित्त ॥ लरत चंद बरदाइ। करत अच्छरि बिरदावलि ॥
झरत कुसम गयनंग। धरत गर ईस मुंडावलि ॥
करत घाव[1] कबि राव। पिसुन परि बथ्थ पछारत ॥
भरत पच कालिका। भूत बेताल उकारत ॥
जहं तहं ढरंत गज बाज नर। लोह लपटि पावक लहर ॥
मुष वाह वाह प्रथिराज कहि। कटक भट्ट किन्नौ कहर ॥
छं० ॥ १९०० ॥

कवि का पैदल हो जाना और अपना घोड़ा कन्ह को देना।

भयौ पाज कविराज। तंग रुक्यौ दल सायर ॥
कर कृपान चमकंत। कंपि थर हर कर काइर ॥
साज बाज रुधि भीज। किर्यौ छर हर गति नाहर ॥
भूमि तुरंग परंत। मुष्य जंपिय गिरिजा हर ॥
कविचंद पयादौ हाइ करि। न्रप बिरदावलि आपु पढ़ि ॥

(१) मो.-कविराज।

विलहान कन्ह चहुआन कौ। बगसि भट्ट सिर नाइ चढ़ि॥छं०॥१९०१॥

नवमी को एक घड़ी रात्रि गए जैचन्द के भाई का मारा जाना।

दूहा॥ नौमी निसि इक घटि चढ़ी। बंधि परत पिष्षि पंग॥
धाइ परे चहुआन पर। ज्यौं अगि भज्जर दंग॥ छं०॥१९०२॥

जैचन्द का अत्यन्त कुपित होकर सेना को ललकारना। पंग सेना के योद्धाओं का धावा करना। उनकी वीर शोभा वर्णन।

भुजंगी॥ धाए पंग राजं महा रोस गत्तं। सुनी सावधानं रसं बीर बत्तं॥
चले तीर तत्ते कहें मेघ बुट्टे। जले पंष पंषी तिते भज्जि छुट्टे॥
छं०॥१९०३॥

कछू [1]पंष हीनं [2]तनं जान पायं। जिते बान मानं सरीरं बँधायं॥
महा तेज सूरं बरच्छी धमायं। तहां बह कब्बी उपम्माति पायं॥
छं०॥१९०४॥

फलं उज्जलं सोभिते स्याह डंडं। मनों राह चंदं हडूडंत मंडं॥
बजे लोह लोहं बरं सूर रुट्टै। मनों इंद्र के हथ्थ तें बज्र छुट्टै॥
छं०॥१९०५॥

गदा लग्गि सीसं फुटे टूक टोपं। फुटी जानि भानं मयूषं अनोपं॥
[3]भिर तंनु दीसै न दीसै गुरंतं। तुटी सीस दीसं बलं जा अनतं॥
छं०॥१९०६॥

पियं राग [4]सिंधू श्रवन्नं न [5]बट्टं। द्रवै सूर बीरज्ज अंगं उलट्टं॥
तिनं कन्ह सूरं बलं जा [6]अमन्नं। तनं कि क्रमं रूप धावै दिवन्नं॥
छं०॥१९०७॥

बहै तेग बेगं गजं सीस धारं। दुहं अंग छंछं रुधी धार पारं॥
कबीचंद मत्ती उपम्मा जु पट्ठी। उपै बद्दलं जानि भारथ्थ कट्ठी॥
छं०॥१९०८॥

(१) मो.-पंग। (२) को.-तिनं, मो.-ननं (३) ए. कृ. को.-भिरंजानि।
(४) मो.-सोर्धे। (५) ए. कृ. को.-बट्टं। (६) मो.-अनन्तं।

सुभै स्याम [1]फुंदा सनाहं नि जक्की। चले हल धारं दुहुं अंग बक्की॥
उभै पंति बंधू सती भोंर बीचं। उरं चंद मांनो चलैं चंद सीचं॥
छं० ॥ १६०६ ॥

करी बज्र बीरं न हल्लै हलाई। बधू बाल जैसें बधू ज्यों चलाई॥
हसं हंस हंसं हसं पंच पंचे। उड़ै पंच पंचे भगी देह संचे॥
छं० ॥ १६१० ॥

सुनै सूर दिल्ली सु सोभै सु देहू। फ,खे जानि सोभै मधू माधुकेहू॥
भये छिन्न छिन्नं सनाहं निनारी। मनों ग्रेह रज्जं मंडी जानि जारी॥
छं० ॥ १६११ ॥

दिषै देवि आई सुषं एक मोरं। कहै कोनं तो सी ज भारथ्थ जोरं॥
परे सीस न्यारे विरुझझाइ उट्ठे। विना सीस दीसै जमं तंज छुट्टै॥
छं० ॥ १६१२ ॥

करै सीस हक्कै धपै दो निनारे। मनों केत ते राह दूनों हकारे॥
कही बल चिल्ही कहं ए सु जीयं। बनी नाहि जीहं सुकै कोटि कीयं॥
छं० ॥ १६१३ ॥

सामंतों का बल और पराक्रम वर्णन।

साटक ॥ छची जे पहपंग जुग्गिनि पुरं लीयंत धारा धरं॥
दुत्ती बज्जन वीर धीर सुभटं आलुथ्थि अलुथ्थनं॥
अंती अंत हरंति भंजति धरं धारं रुधिं धारयौ॥
चिल्ही जंभर बीर भारथ वरं जो गीव जत्ती गतं॥ छं० ॥१६१४॥

चिल्हनी का युद्ध देख कर प्रसन्न होना।

दूहा ॥ इह सुनि कर भारथ्थ गति। उट्ठि चिल्ही चवसट्ठि॥
सो भारथ्थ न दिट्ठयौ। पंषिन अंषिन दिट्ठ॥ छं० ॥ १६१५॥

कवित्त ॥ उठें एक धावंत। सहस हुआ अगिनित बल॥
क्रोध किये दस होइ। सहस दसमध्य जूह पल॥
वाहंतै सुरपंच। लष्य सम्हौ उत्थारं॥
रुधिर पारसह होंसु। चलह अगनित उभ्भारं॥

(१) ए.-फंदा। (२) ए. कृ. को.-तो सूंज।

उच्चरै चिल्ह अस्तुति करी । साषि भरै सामंत दल ॥
भारथ्थ देवि मन उल्हसी । चिल्ह पंषि दिष्यौ सकल॥छं०॥१६१६॥

केहरि कंठीर का पृथ्वीराज के गले में कमान डाल देना ।

केहरि रा कंठेरि । स्वामि सिगिनि गर घत्तिय ॥
वरुन पास निय नंद । लोक पालह पति पत्तिय ॥
हसि हलक्कि हक्कारि । पंग पुत्तिय आनन पन ॥
तात अग्ग संबरिय । राज राजन आनी धन ॥
चहुआन रथ्थ सथ्थह चढ़िय । नंषि बथ्थ कामधज्ज बर ॥
अब देषि बाल लालन सु पर । सुतन हाल विच्चै सु बर ॥
छं० ॥ १६१७ ॥

संयोगिता का प्रत्यंचा काट देना और पृथ्वीराज का केहरि कंठीर पर तलवार चलाना ।

दूहा ॥ गुन कट्टिय रमनिय सु वर । डसनह पंग कुंआरि ॥
असि वर भार प्रथिराज हनि । सूर हथ्थ नर वारि ॥छं०॥१६१८॥

तलवार के युद्ध का वाक् दृश्य वर्णन ।

चोटक ॥ निर वारि सु कट्टिय कंठ तनं । धर ढारि धरब्बर भार घनं ॥
भर लग्गिय भार उभार भरं । कटि मंडल षंड विहंड धरं ॥
छं० ॥ १६१६ ॥

लगि हक्कि सु धार सु बीर सुअं । कठिया किकरिम्मर धार धुअं ॥
असि दंड सु मुंडन भुंभ पयट्ठ । मनों सुक कूटि कबारिय कट्ठ ॥
छं० ॥ १६२० ॥

जु क्रमे बर केहरि चंगल चंपि । ग्रहे कर पाव[1] उडंत उभंपि ॥
धरे सम जंगल पुच्छ सरोह । सनंषत मंडल उंडल सोह ॥
छं० ॥ १६२१ ॥

फिरक्कन आय धरप्पर धुक्क । किलक्कति चष्प विलग्गिय कुक्क ॥
विभच्छह रस्स सु रच्चिय मेन । हयग्गय लुथ्थि तहाँ पर अंन ॥
छं० १६२२ ॥

(१) ए-उडंपि ।

धर ष्परि संघ धरं सय मत्त। मुरक्किय सेन सु पंगु रषत्त ॥
मनो भगि धूर अधूर नरिंद। मुदंत मरीच अथंगय चंद ॥
छं० ॥ १९२३ ॥

नवमी की रात्रि के युद्ध का अवसान। सात सौ शंखधुनियों का मारा जाना।

दूहा। तिथ नौमी सिर चंद निसि। बारह सुत्त रविंद ॥
सुत चौरंगी संघ धर। कहर कलह कविचंद ॥ छं० ॥ १९२४ ॥
संघ धुनिय परि सत्त सय। मुर रानौ कमधज्ज ॥
अति सु अरिष्ट विचारयौ। आय कि संभर रज्ज ॥ छं० ॥ १९२५ ॥

नवमी की रात्रि के युद्ध की उपसंहार कथा और मृत योद्धाओं के नाम।

कवित्त ॥ निसि नौमी सिर चंद। इक बज्जी चावद्दिसि ॥
भिरि अभंग सामंत। वारि वरषंत मंच असि ॥
अयुत जुड आवड। इड आरंभ सत्ति बर ॥
एक जीव दस घटित। दसति ठेलै सु सहस भर ॥
दिठै न देव दानव भिरत। जूह रत्त रत्तिय सु पल ॥
सामंत सूर सोरह परिग। मोरे पंग अभंग दल ॥ छं० ॥ १९२६ ॥

भुजंगी ॥ भए राय दुञ कंक इक्कै समानं। परे सूर सोलह तिनं नाम आनं ॥
पस्यौ मंडली राव माल्हंन हंसौ। जिनै पारिया पंग रा सेन गंसौ ॥
छं० ॥ १९२७ ॥

पस्यौ जावलौ जाल्ह सामंत भारे। जिनै पारिया पंग षंधार सारे ॥
पज्यौ बग्गरी बाघ बाहे दुहथ्थै। भिरै षग्ग भग्गौ मिल्यौ हथ्थ बथ्थै ॥
छं० ॥ १९२८ ॥

पस्यौ बीर जादौं बली राव बानं। जिने नंषिया गेंन गय दंत पानं ॥
पज्यौ साह तौ सर सारंग गाजी। दुहुं सथ्थ भष्यो भलौ हथ्थ माजी ॥
छं० ॥१९२९॥

पऱ्यौ पहरी राव परिहार राना । पुले सेल साजै पुलै पंग बाना ॥
[1]अवै उप्पटी पंग आवद्ध नोरं । तबै सांषुला सिंह भुज[2]भानि भीरं॥
छं० ॥ १६३० ॥

पऱ्यौ सिंधुआ सिंधु सादूल मोरी । लगे लोह अंगं लगी जानि होरी ॥
भिरैं भोज भग्गं नहीं सार भग्गै । पऱ्यौ मल्ह मानों नही जूह लग्गै ॥
छं० ॥ १६३१ ॥

पऱ्यौ राव भोंहा उभै चंद साषी । इकै कुसुम नंषे इकै किंत्ति भाषी ॥
जिसी भारथं षोड्नी अट्ठ होमी । तिसी चैत सुदि रारि निसी एक नोमी ॥
छं० ॥ १६३२ ॥

कवित्त ॥ तब नायौ [3]रयपाल । जहां ढिल्ली संभरि वै ॥
मुहि सांई लगि मरन । चंद रु ह्लर साषि हुये ॥
सार सिंगि सिर परत । फुट्टि सिर चिहुं दिसि तुट्टौ ॥
धर धायो असमान । अंत पय [4]पथ भर षुट्टौ ॥
छटक्यो सु कटक किन्नो चटक । सब दल भयौ भयावनौ ॥
जग जेठ भ्रु भिंभ्र धरनी पऱ्यौ । अच्छरि [5]करिहि वधावनौ ॥
छं० ॥ १६३३ ॥

दूहा ॥ पहु पचार रट्ठौर रिन । जिहि [6]सिंगिनि गुर कौन ॥
भुज[7]भुअंग सामंत कय । गह्यौ संष धर लौन ॥ छं० ॥ १६३४ ॥
तुरंग विह्निं डिग चंढि तसु । करिग सु सस्त्र विसस्त्र ॥
रुधिर धार धर उद्धरिय । भरिग उमा पति पत्र ॥ छं० ॥ १६३५ ॥
राज पर्यंप्यौ भिरन भर । आज कहौं हिय छोह ॥
भोंहा भोंह पराक्रमह । कुल चंदेल न होहि ॥ छं० ॥ १६३६ ॥

कवित्त ॥ जिनै संष धर संष । पूर पूरत भुअ कंपिय ॥
जिनै संष धर संष । भूमि डारत भर चंपिय ॥
जिनै संष धर संष । राज गर सिंगिनि घत्तिय ॥
सो संषहर असि समेत । आयास मपत्तिय ॥

(१) ए. कृ. को.-वजै ।　(२) मो. जानि ।　(३) ए. कृ. को.-रजपाल ।
(४) ए. कृ. को.-पथ, पथ्थ ।　(५) ए. कृ. को.-करिरहि ।
(६) मो.-सिंगिन गर ।　(७) ए. कृ. को.-भुनंग ।

धनि बीर बीर बीरम्म सुश्र। सु काज वारि अवधारितैं॥
सामंत सूर सूरन इनहि। सुकल किति विसतार तैं॥छं०॥ १९३७॥

दिल्ली द्रुग्ग नरिंद। कासि राजा जुर जग्गिय॥
राय इनौं लंगूर। गोठि करनं कर भग्गिय॥
पंग राय परतष्षि। जंग रष्षन रन साई॥
निसि नवमी ससि अस्त। गस्त [1]गौअर गहि पाई॥
इकंत दंत चंप्यौ न्रपति। सामंतन असि वर वहिय॥
धग पन्यौ सत्त आबंत कौ। कहिग सह्र गहियन गहिय॥
छं०॥ १९३८॥

दूहा॥ सिंधु जस्ति कमधज्ज दल। [2]विवरि अनी अन लष्ष॥
दिय आयस कर उंच करि। [3]कनक राइ परतष्ष॥ छं०॥ १९३९॥
एक लष्ष सेना सुभर। बाजि वज्ज रसबीर॥
अनिय बंधि आषाढ़ नभ। बरषि बूंद घन तीर॥ छं० १९४०॥

युद्ध वर्णन।

चोटक॥ सजि सेन मनौं मिलि मत्त जलं। मिलि उप्पर पुट्टि कमड्ड दलं॥
घन नंकिय घंट सु बीर धुरं। भर निर्मल स्वामि सु नेह धुरं॥
छं०॥ १९४१॥

मिलि सेन उभै भर आतुरयं। कुअ नारि सु कातर कातरयं॥
लगि लोह उभै भर संकरयं। असि पावक भाक बढी भरयं॥
छं०॥ १९४२॥

इय भार ढरै धर धार मुषं। किननं कहि धुकहि दुट्ट दुषं॥
करि तुट्टहि सुंड सु सीस ढुरै। पय तुट्ट पुलै चक चीह करै॥
छं०॥ १९४३॥

भर सामंत जुड्ड अयास लगै। जय स्वामि सु अप्पइ अप्प मगै॥
निज इष्ट सु सूरनि संभरियं। सुनि आइ सबै सोइ संधरियं॥
छं०॥ १९४४॥

(१) मो.-गौवर। (२) ए. कृ. को.-विचार। (३) ए. कृ. को.-कैचन राउ।

अय बीर भयानक रुद्र रसं । धर नच्चि धरप्पर सीस कसं ॥
जु कियं कर असि जुधं अधयं । दिठि दिट्ठि सुनीन सु सा जुधयं॥
छं० ॥ १९४५ ॥

[1]भय धुंधर छक्क किलक्क बजं । गज तुट्टिय ढाल सु नेज धजं ॥
भय साम त जुट्टह सट्टरयं । जुरि जुट्टहि छट्टमि सुट्टरयं ॥
छं० ॥ १९४६ ॥

भ्रम छत्त [2]अछत्त सु राज भयं । अय आस उभै भर बीर गयं ॥
छं० ॥ १९४७ ॥

सामंतों की प्रशंसा।

कवित्त ॥ धनिव सूर साम त । जीव लगि जतन न कीनौ ॥
धनिव सूर साम त । सबद जंपत पुर तीनौ ॥
धनिव सूर साम त । घाय दुज्जन संघारे ॥
धनिव सूर साम त । देष पिथी रिन पारे ॥
इतनौ सु कियौ प्रथिराज छल । कहत चंद उत्तिम हियौ ॥
संदेह देवि पय लग्गि करि । तबहि गंग मज्जन कियौ॥छं०॥१९४८॥

अत्तताई का युद्ध वर्णन ।

दूहा ॥ *चौरंगी नन्दन सुभर । अत्तातार उतंग ॥
समरि ईस आनंद न्रप । धरि चिह्नल जुरि जंग ॥ छं०॥१९४९॥

अत्ताताई की सजावट और युद्ध के लिये उसका ओज एवं उत्साह वर्णन ।

पद्धरी ॥ जुरि जंग सूर चौरंगि नंद । धकि दंत मंत उप्पर मयंद ॥
जा गिनिय पच लै [3]सजिय संग । उल्हास ईस आनंद अंग ॥
छं० ॥ १९५० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-भर ।　　(२) ए. कृ. को.-असत्त ।

* दिल्ली के राजा अनंगपाल तूंअर के प्रधान चौरंगी चहुआन जिनका बेटा अताताई था ।

(३) ए. कृ. को. चलिय ।

उत्तंग तोलि चिसूल बीर। गज्यौ गगन गल काल कंठीर॥
घर सर घयड मधि मत्त हंति। उभ झारि कमल घग ढिग मु पंति॥
छं०॥ १९५१॥

अलडोहि सु अल बीरत्त रत्त। भंजी सु पारि अरि अनिय मत्त॥
जय जय सु किति जंपै अघाइ। नच्चै सु ईस भर रुंड पाइ॥
छं०॥ १९५२॥

प्राहार लत्त औरत्त एक। है गै तुटंत नर ताम तेक॥
घन रुहिर झाक रंगिय सकत्ति। तन रत्त रुद्र रल ज्यौं अरत्ति॥
छं०॥ १९५३॥

उट्ठी दुरंग मुषि लग्यौ धाहि। चिसूल झारि धर धरनि ढाहि॥
जसवंत कमध कोपै करार। आयौ सु साज सह यट्ट सार॥
छं०॥ १९५४॥

प्राहार कियौ चहुआन जाम। [1]संग्रह्यौ हक्क कंठह सु ताम॥
असि घाइ सीस उप्पर उभार। प्राहार अवरि अवनी सु ढारि॥
छं०॥ १९५५॥

रुहिरै सु पूर पावस प्रवाह। जल रत्त गंग मिलि भयौ [2]नाह॥
भग्गे सु सेन न्रिप पंग जाम। आइयौ हनू लंगूर ताम॥
छं०॥ १९५६॥

अत्ताताई पर मुसल्मान सेना का आक्रमण करना।

दूहा॥ तत्तारिय तमि पंग भर। करि उप्पर द्रिग बीर॥
अत्ताताई उप्परै। आइ घरक्कै मीर॥ छं०॥ १९५७॥

अत्ताताई का यवन सेना को विदार देना।

कवित्त॥ अततार्इ बर बीर। सेन रुंध्यौ तत्तारी॥
छोह सामि तजि मोह। कोह कड्ढी कट्टारी॥
गल्ह अप्पि आभंग। वज्जि नंच्यौ बर बाही॥
जाम समंत विप्फरे। पंग सेना सब गाही॥

(१) ए. कृ. को.-संग्रह्यौ कंठ हसिहक्क तांमं। (२) ए. कृ. को.-ताह।

तोषार [1]तुंग पष्षर सहित । परिग भीर गंभीर भर ॥
पहु पंग फेरि पारस परिय । घटिय तीय घट्टी पहर ॥
छं० ॥ १८५८ ॥

अत्ताताई का अतुलित पराक्रम वर्णन ।

अततार्इ बर बीर । स्वामि लद्धौ न पार बल ॥
तीय पहर बाजिग्ग । बज्र बिष परे जूह षल ॥
धर समुंद परमान । बहु मेलौ देषी जुध ॥
धुध प्रमान पै मंडि । धूध की नौत अप्प भुअ ॥
धर परत धरनि उट्ठे भिरन । हक्कि सीस तिहि ईस बर ॥
जंपरे बीर धरनी सु बर । बरन रंभ बंटेति भर ॥ छं० ॥ १८५९॥

बरन रंभ बंटयो । भरन पिष्षै पौरिष बर ॥
बरन सु बर किय चित्त । सूर रंछिय रन चित्त भर ॥
रंभ कहत्तिय आदि । सूर उर वसि उर मंडं ॥
अमगत्ती जिन अंनि । बंद छंडे जिन छंडं ॥
संभरी बोल तम बर बरी । भित्त छंछ इच्छी सु बर ॥
नन बरे बरहि रहि सु बर । बन्यौ न को रवि चक्रतर ॥
छं० ॥ १८६० ॥

कोपि चाइ चहुआन । तट्ठि तर सूर उपारिय ॥
सिंगी नाद अनंद । इष्ट करि इष्ट सँभारिय ॥
सुधिर सत्त सामंत । रुधिर पष्षर लष संगह ॥
रहसि राइ लंगूर । ग्रीव चंप्यौ आभंगह ॥
जै सह बह जोगिनि करिय । अत्ताताइ उतंग सिर ॥
भरि हरिय पंग पंगुर सयन। गंग सु रंगिय रंग ढरि॥ छं०॥१८६१॥

अत्ताताई के युद्ध करते करते चहुआन का गंगा पार करना ।

दूहा ॥ ढरत सु धर चहुआन कौ । मह्नि गंग वै माहि ॥
जय जय सुर जंपिय सु भर । धनि धनि अत्ताताइ ॥ छं०॥१८६२॥

(१) मो.-तुरंगः ।

गंधर्वों का इन्द्र से कहना कि कन्नौज का युद्ध देखने चलिए और इन्द्र का ऐरावत पर सवार होकर युद्ध देखने आना।

पद्धरी॥ गंध्रब्व सुग्गं पत्त सु जाम। आनंद उअर उप्पनौ ताम॥
आदर सु इंद्र दीनौ विश्राम। मेलयौ जुद्ध भल कौन काम॥
छं॥ १९६३॥

गंध्रब्ब कहै सुनि सुर्ग देव। सामंत जुद्ध पिष्षन स टेव॥
जस करौ रथ्थ ऐराय इंद्र। देषनह जुद्ध कमधज्ज दंद॥
छं० ॥ १९६४ ॥

सजि चले देव अन्नेक सथ्थ। सोभंत रंग अन्नेक रथ्थ॥
अपछर अनेक चालंत सुर्ग। अन्नेक सुभट लेपंत मग्ग॥
छं० ॥ १९६५ ॥

गंगह दुकूल छाहंत सेन। रेलयौ कटक सरिता प्रवेन॥
अन्नेक करी वहता सु दीस। वेहाल मुष्ष पारंत चीस॥
छं० ॥ १९६६ ॥

चंपे लंगूर अततार अब्ब। बंधेव तोम संकर गुरब्ब॥
सा बद्द वेध लाघब्ब सार। मारंत सेन संगह प्रहार॥छं०॥१९६७॥
सामंत सज्जि चव औरं जोर। अन्नेक सेन बिच करत सोर॥
रोपयौ बीच सित महल थंभ। गज गाह बंधि देषत अचंभ॥
छं० ॥ १९६८ ॥

पचास कोस रिन षेत हूअ। कीनौ सु जुद्ध सामंत धूअ॥
* * * * ॥ * * छं० ॥ १९६९ ॥

पृथ्वीराज का कविचन्द से अत्ताताई की कथा पूछना।

दूहा॥ अत्ताताइ अभंग भर। सब पहु प्राक्रम पेषि॥
लगी टगटगी दुअ दलनि। न्रिप कवि पुच्छि विसेष॥छं०॥१९७०॥
अतुलित बल अतुलित तनह। अतुलित जुद्ध सु विंद॥
अतुलित रन संग्राम किय। कहि उतपति कविचंद॥छं०॥१९७१॥

(१) ए. कृ. कां.-सर्ग। (२) ए. कृ. को.-तब्ब।

कविचन्द का अत्ताताई की उत्पत्ति कहना कि तूअरों के मंत्री चौरंगी चहुआन को पुत्री जन्मी और प्रसिद्ध हुआ कि पुत्र जन्मा है।

कवित्त ॥ चौरंगी चहुआन । राज मंडल आसापुर ॥
तूंअर धर परधान । सु बर आनै हत्तासुर ॥
[1]धर असंष धन धरिय । एक नारिय सुचि धाइय ॥
तिहिं उर पुत्री जाइ । पुत्र करि कही बधाइय ॥
करि संसकार दुज दान दिय । अत्ताताइय कुल कुंअर ॥
न्रिप अनंगपाल दीवान महि । पुत्र नाम अनुसरइ सर ॥
छं० ॥ १९७२ ॥

पुत्री का यौवन काल आने पर माता का उसे हरिद्वार में शिवजी के स्थान पर लेजाकर शिवार्चन करना।

अति तन रूप सरूप । भूप आदर कर उट्ठहि ॥
चौरंगी चहुआन । नाम कीरति कर पट्ठहि ॥
द्वादस बरष सु पुज्ज । मात गोचर करि रष्यौ ॥
राज काज चहुआन । पुत्र कहि कहि करि भष्यौ ॥
हरद्वार जाइ बुल्ल्यौ सु हर । सेव जननि संहर करिय ॥
नर कहै रयन [2]रयनिय पुरुष । रूप देषि सुर उद्धरिय ॥
छं० ॥ १९७३ ॥

दूहा ॥ जब त्रिय अंग प्रगट्ट हुअ । तब किय अंग दुराइ ॥
अह रयन लै अनुसरिय । सिव सेवन सत भाइ ॥ छं०॥ १९७४ ॥

शिवस्तुति ।

विराज ॥ स्वयं संभु सारी । समं जे सुरारी ॥
उरं विष्य धारी । गरलं विचारी ॥ छं० ॥ १९७५ ॥
ससी सीस सारी । जटा जूट धारी ॥
सिरं गंग भारी । कटिं ब्रह्मचारी ॥ छं० ॥ १९७६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-धन ।   (२) ए. कृ. को.-नरनिय ।

मया मोह कारी। अपंगा विडारी॥
गिरिज्जास पारी। उछंगं सु नारी॥ छं०॥ १९७७॥
धरी वज्र तारी। चयं नाउंकारी॥
प्रलै अहि भारी। करे नेम कारी॥ छं०॥ १९७८॥
अनंगं प्रहारी। मतं ब्रह्मचारी॥
धरै सिंग सारी। विभूतं अधारी॥ छं०॥ १९७९॥
जुगं तत्त जारी। छिनं जे निवारी॥
सुअं सार धारी। [1]भुगत्तं उधारी॥ छं०॥ १९८०॥
इसौ सिंभु राया। न दिष्यौ न माया॥
तिनं कित्ति पाया। जगत्तं न चाया॥ छं०॥ १९८१॥
चढ़े दृष्य सीसं। विभूती वरीसं॥
मनौं क्रन्न रब्बी। अपं जोध सब्बी॥ छं०॥ १९८२॥
दूहा॥ मात पिता बंधव सकल। तजि तजि मोह प्रमान॥
दस कन्या बर संग लै। गायन गौ सुरथान॥ छं०॥ १९८३॥

कन्या का निराहार वृत कर के शिवजी का पूजन करना।

ईस जप्प दिन उर धरति। तजि संका सुर [2]बार॥
सो बाली लंघन किये। पानी पत्त अधार॥ छं०॥ १९८४॥
पंच धनं पुज्जंत सिव। गहि गिरिजा तस पानि॥
चिय कि पुरुष हवि संभु कहि। विधि कलि बंध प्रमान॥
छं०॥ १९८५॥

शिवजी का प्रसन्न होना।

एक दिवस सिव रीझ कै। पूछन छंदन लीन॥
सुनि सुनि बाल विसाल तौ। जो मंगै सोइ दीन॥ छं०॥ १९८६॥

कन्या का बरदान मांगना।

मुझ पित जुग्गिनिपुर धनिय। अनंगपाल परधान॥
पुत्र पुच [3]कहि अनुसरिय। जानि वितडुर मानि॥ छं०॥ १९८७॥

(१) ए. कृ. को.-भुगत्त। (२) ए. कृ. को.-बाल। (३) ए. कृ. को.-कर।

कवित्त ॥ [1]विदित सकल सुनि चपल । सतीत्र लंपट विन कपटे ॥
भगत उधव अरविंद । तीस चंदह दिषि झपटे ॥
गीत राग रस सार । सुभर भासत तन सोभित ॥
काम दहन जम दहन । तीन लोकह सोय लोकित ॥
सुर अनंग निद्धि सामंत गवन । अरि भंजन सज्जन रवन ॥
मो तात दोष वर भंजनह । तुअ विन नह भंजै कवन ॥
छं० ॥ १९८८ ॥

शिवजी का वरदान देना ।

दूहा ॥ जयति जुवति संतोष घन । संचहि थामी आव ॥
सुवर वाल नन आइयै । सो विह लघ्यौ सु पाव ॥ छं० ॥ १९८९ ॥
पुच लिषिनि पुन्नैं कहौं । देउ सु ताहि प्रमान ॥
जु कछु इंछ वंछै मनह । सो अप्यौ तुहि ध्यान ॥ छं० ॥ १९९० ॥

शिवजी का वरदान कि आज से तेरा नाम अत्तातांई होगा और तू ऐसा वीर और पराक्रमी होगा कि कोई भी तुझ से समर में न जीत सकेगा ।

पद्धरी ॥ बोलेति सिंभ वालह प्रमान । आघात कियौ देवलनि आनि ॥
आना नरिंद वेताल हकि । डर करै नाथ वाला प मुक्कि ॥
छं० ॥ १९९१ ॥
षट मास गये विन अन्न पान । दिष्यौ सु चिंत निह कपट मान ॥
चल चलइ चित्त तिन लोइ होइ । पावै न देव तप झूठ कोइ ।
छं० ॥ १९९२ ॥
निश्चलह चित्त जिम होइ वीर । पावै जु सुर्ग सुष मद्धि कीर ॥
जगि जग्गि निसा तज्जिय चिजाम । सपनंत ईस दिष्यौ [2]प्रमान ॥
छं० ॥ १९९३ ॥
अततांइ नाम तो धरौं वीर । पावैव राज राजन सरीर ॥
ना लषै पुत्त तुअ तात ग्रेह । तजि नारि रूप धरि ब्रम्म देह ॥
छं० ॥ १९९४ ॥

(१) ए. कृ. को.-दिवस तरळ ।　　(२) ए. कृ. को.-पनाम ।

जं होई सद्द भारथ्थ काल। भंजै न तूअ तिन अंग साल ॥
किरनेव किरन फुट्टत प्रकाल। भंजै सु घलह लुकि अग्ग धार ॥
छं० ॥ १९९५ ॥

भारथ्थ रमन अब होइ काल। मरअंत काल बाल हति बाल ॥
तुअ अंग जंग 'पुज्जै न जुद्ध। मानुच्छ कोन करिहै विरुद्ध ॥
छं ॥ १९९६

जिन मध्य होइ अततताइ भान। कट्टिहैं तिमिर दुज्जन निधान ॥
झलकंत कनक दिष्यौत बाल। जग्गयौ बीर तिन मध्य काल ॥
छं० ॥ १९९७ ॥

लच्छि कच्छि बंधी सु थाल। पावहि सु बीर बीरह बिसाल ॥
इह कहिह बीर गय अप्प थान। विभ्भूत चक्क डोंरु प्रमान ॥
छं० ॥ १९९८ ॥

मालाति अरत्त दीसै उतंग। सिव रूप धरिग मन दुति अनंग ॥
सिर नेत दीन सुष्षम थान। इह काल करिग आयौ सु पान ॥
छं० ॥ १९९९ ॥

साटक ॥ जुत्तं जो सिव थान अनगति वरं, कापाल भूतं बरं ॥
डोंरु डक्कय नद्द नारद बलं, बेताल बेतालयं ॥
तूं जीता रन बाहुनैत्र कमलं, जै जै अताताइयं ॥
ह्मातं मंचय छित्ति तारन तूही, पुज्जै न कोई बलं ॥ २००० ॥

कवि का कहना कि अत्ताताई अजेय योद्धा है।

दूहा ॥ नागति नर सुर असुर मय। असुर चित्त परमान ॥
तो जित्तै अतताइ जुध। सो नह दिष्षिय आन ॥ छं० ॥ २००१ ॥

अत्ताताई के वीरत्व का आतंक।

कवित्त ॥ अत्ताताइ उतंग। जुद्ध पुज्जै न भीम बल ॥
थुति धावत करै देव। चक्र वक्रैत काल कल ॥
गह गह गह उच्चार। मध्य कंपै मघवा भर ॥

(१) ए. कृ. को.-पुच्छे।

अरु कंपै हगपाल । काल कंपै सु नाग नर ॥
उच्छाह तात संमुह करिय । आय सपत्तह पुत्त पह ॥
लभ्भै सु कोटि कोटिह सु नन । सो लभ्यौ [1]सत्ती सु दहि ॥
छं० ॥ २००२ ॥

दूहा ॥ तूं तारन कल ऊपज्यौ । अत्ताताइ उतंग ॥
जिन हुकंम कव कल करिय । करै सु रनह अभंग ॥
छं० ॥ २००३ ॥

रन अभंग को करै तुहि । तूं बढ़ देवह थान ॥
चाव दिसि सो भिंटई । हरत पान गुन मान ॥ छं० ॥ २००४ ॥

उस कन्या के दिल्ली लौट आने पर एक महीने में उसे पुरुषत्व प्राप्त हुआ ।

इक मास षट दिवस बर । रहि नृप दिल्ली थान ॥
सु बर बीर गुन उप्पजिय । सुनि संभरि चहुआन ॥ छं० ॥ २००५ ॥
भाई सोई पय सु लहि । बंछि जनम सँघ नाव ॥
दुसतर जुग ने तीर ज्यौं । छुटै न बंधव पाव ॥ छं० ॥ २००६ ॥
नर चिंता पाच तलभै । जौ परुषन सुष्याइ ॥
तौं बंधन छुट्टै परी । जौ सुत्तौ जग्गाइ ॥ छं० ॥ २००७

इस प्रकार से कवि का अत्ताताई के नाम का अर्थ और उसके स्वरूप का वर्णन बतलाना ।

कवित्त ॥ सिव सिवाह सिर हथ्थ । भयौ कर पर समथ्थ दै ॥
सु विधि राज आदरिय । सत्ति स्वामित्त अथ्थलै ॥
वपु विभूति आसरै । सिंगि संग्राह धरै उर ॥
चिजट कथं कंठरिय । तिष्पि तिरसूल धरै कर ॥
कलकंत बार किलकंत क्रमि । जुग्गिनि सह सथ्थै फिरै ॥
चौरंगि नंद चहुआन चित । अत्तताइ नामह सरै ॥ छं० ॥ २००८॥

(१) ए. कृ. को.-छत्ती ।

आयौ तब ढिल्ली पुरह। ले चहुआन सु भार॥
कोट सबैं सामंत भय। अत्तताइ [1]हम नार॥ छं०॥ २००९॥
नमसकार सामंत करि। जब जब दिष्षहि ताहि॥
तब तब राज बिराज में। रहें भूप मुष चाहि॥ छं०॥ २०१०॥
ढिल्ली सह सामंत सह। अमर सु क्रत लिग थान॥
[2]समर सिंघ रावल सुभर। ग्रह लै गौ चहुआन॥ छं०॥२०११॥
इह बत्ती कविचंद कहि। सुनिय राज प्रथिराज॥
जुद्ध पराक्रम पेषि कैं। मंन्यौ सब क्रत काज॥ छं०॥ २०१२॥

अत्ताताई के मरने पर कमधुज्ज सेना का जोर पकड़ना और केहरि मल्ल कमधुज्ज का धावा करना।

कवित्त॥ अततातइय धर पऱ्यौ। बाग उप्परी पंग भर॥
गहन हुकम किय राज। बीर पंगुरा सुभर भर॥
सस्त्र बीर प्रथिराज। दिसा केहरि करि मिल्लं॥
हुकम बीर कमधज्ज। सस्त्र [3]ओडन सब झिल्लं॥
कम्मान सीस धनि न्रपति गुन। कढ़ी रेष नरपत्ति बर॥
सामंत सूर तीरह निकसि। करिग राज उप्पर सु भर॥
छं०॥ २०१३॥

पंग की कुपित सेना का अनेक वर्णन।

भुजंगी॥ कहै चंद कव्वी कह्यौ ज्यों फुनिंदं। वरं चार चारं भुजंगी सुछंदं॥
ससी सोम सूरं करूरं जु धायं। गिरि पंग सेनं छिनं भेद लायं॥
छं०॥ २०१४॥
करी बीर दूनं दुहूनं दुहाइ। दुहुं अग्गि सिंगी दुहुं नैन नाई॥
दोऊ बीर रूपं बिरूझझाय धाई। मनों घोटरं टक्करं एक छाई॥
छं०॥ २०१५॥
अनी सों अनी अंग अंगी धरक्की। मनों भौंन भानं दुहुं बीच बक्की॥
मिलौ मंडली फौज पहूपंग घेरी। कियं क्रोध दिट्ठी चहूआन हेरी॥
छं०॥ २०१६॥

(१) ए. इम। (२) मो. अमर सिंह। (३) मो. ओड़त।

सबै सख्ख मंतं अवतं ज सूरं। भरै दिष्ट वैरी लगै जे करूरं॥
दिसा धुंधरी पंच बिभ्भान छायौ। किधौं फेरि बरिषा जु आषाढ़ आयौ॥
छं० ॥ २०१७ ॥

गजै मार धारं निसानं प्रमानं। फिरै पंति दंती घनं सेम मानं॥
बजै सद्द झिंगूर [1]उद्दंद क्रूरं। पढै भट्ट बीरं समं जानि [2]सूरं॥
छं० ॥ २०१८ ॥

धजा सेत नीलं सु मतं फिरंती। मनों सुक्क मालं बगं पच्छ जंती॥
उडै मार धारं [3]किरव्वान तथ्थं। उड़ै भिंगनं जानियै बिज्ज सथ्थं॥
छं० ॥ २०१९ ॥

उडै सार सोरं अमी बंक भारं। मनों अभिभ [4]सरन बाल बज्यो सवारं॥
भयं अंग रत्तं ढरै रुद्धि हल्ली। मनों हथ्थ पायं नदी जानि चल्ली॥
छं० ॥ २०२० ॥

कहै रंभ लेयं नहीं हथ्थ आवै। तिनं मार धारं सु मंगल्ल गावै॥
रही अच्छरी हारि मनोरथ्थ पुट्टै। मनो बिरहिनी हथ्थ तें पीउ छुट्टै॥
छं०॥ २०२१ ॥

ढलं ढाल ढालं सु रत्ती फिरंती। गुरं गज्ज छंडै चढ़ै पंप पंती॥
परे पंच सूरं जु भारथ्थ भारै। जिनं पंग सेनं सबं षग्ग झारै॥
छं० ॥ २०२२ ॥

दूहा ॥ पंग राव चहुआन बर। सब बित्ते कविचंद॥
देवासुर भारथ्थ मन। मन बित्ते सुर इंद्र॥ छं० ॥ २०२३ ॥

कवित्त ॥ परत पंच भारथ्थ। चंपि चहुआन अरुझि झय॥
डरिरि मन्न सामंत। मुत्ति लहन मन सुभिझय॥
धर धारव चंपिय सु। पंग पारस गहि नंषिय॥
जियन जुद्ध तुछ कीय। कित्ति कीनी जुग सष्पिय॥
कलहंत केलि लग्गी विषम। [5]तन सुरत्त बर उम्मरिय॥
मनों पुहप हथ्थ बंधन षलह। अमर अम्भ पूजा करिय॥
छं० ॥ २०२४ ॥

(१) ए. कृ. को.-उञ्झंत।　(२) मो. सूरं।　(३) मो. किरवान।
(४) ए. कृ. को.-सन।　(५) मो.-नन।

युद्ध स्थल की पावस से उपमा वर्णन।

बर माधव पहपंग। सार उन्नयौ सस्त्र झर॥
बज्जी बर प्रथिराज। सोर मंडै अड्डै गिरि॥
सस्त्र तेज उठ्ठाय। [1]सांम लगियन सु बुंद असि॥
घरी एक धर धरे। सार बुठ्ठंन सूर धसि॥
अवरत्त बीय बज्जे बिषम। भगि अप्पौ नर सूर बिव॥
प्रथिराज दान घन दीय सस्त्र। ग्रहन राह अरि भजन रवि॥
छं० ॥ २०२५ ॥

दूहा॥ छिनक उसरि बद्दलति दल। छच पंग सिर भास॥
हेम दंड चलि उदै सय। ग्रह चंपे रवि रास॥ छं० ॥ २०२६ ॥

पंगराज के हाथी की सजावट और शोभा।

कवित्त॥ रत्ति ढाल ढलंकति। रत्त अम्मरिय पीत धज॥
सेत मंत गज झंप। रत्त मंडत्त सहस गज॥
मनों राइ रवि व्योम। भोम चढ़ि पिष्षि दल त्र्यंबं॥
सज्जि सेन कमधज्ज। अग्ग दीनो अरि हिंबं॥
तिम चढ़त घटत किरनाल कर। भै अभंत चतुरंगिनिय॥
तन कढ्ढि करषि कायर धरषि। सुमरि सोम बासर गनिय॥
छं० ॥ २०२७ ॥

पंगराज की आज्ञा पाकर सैनिकों का उत्साह से बढ़ना। उनकी शोभा वर्णन।

दूहा॥ इन भज्जै संजोगि ग्रह। जीय संपतौ राज॥
अजुत जुद्ध रिन जित्तही। पंग सु भर [2]किहि काज॥छं०॥२०२८॥

रसावला॥ पंग कोपे घनं। लोह बज्जे झनं॥
ओड मंडे ननं। बीर बज्जै[3]रनं॥ छं० ॥ २०२९ ॥
चष्षरं चंगनं। चंपि पुत्ते मनं॥
बान रोसं भनं। अंत [4]तुट्टै घनं॥ छं० ॥ २०३० ॥

(१) ए. कृ. का.-स्याम। (२) ए. कृ. को.-कहि।
(३) ए. कृ. को.-ननं। (४) ए. कृ. को.-लुट्टै

लज्ज बीरं जनं। बीर नंचै छिनं ॥
दंत दंती तनं। सीस चट्टी फनं ॥ छं० ॥ २०३१ ॥
मांहि भेलं मनं। जोत रिष्षे कनं ॥
सोर लग्गो तिनं। जक्क जे संमनं ॥ छं० ॥ २०३२ ॥
सिंघ देषे तिनं। ग्रब्ब मेरं मनं ॥
कोटि तप्पं तनं। पग्ग पावं छिनं ॥ छं० ॥ २०३३ ॥
सीस इक्के फनं। द्रोम नंचे घनं ॥
सूर दिष्षे छिनं। जानि कीयं ननं ॥ छं० ॥ २०३४ ॥
लज्ज पंकं घुतं। ढोरि पन्नं [1]जुतं ॥
लोटि घंनं मनं। कित्ति बंधं तनं ॥ छं० ॥ २०३५ ॥

पृथ्वीराज की तरफ से हाड़ा हम्मीर का अग्रसर होना।

कवित्त ॥ हाड़ा राव हमीर। राय गंभीर बिबंधौ ॥
लख्यौ ना तोषार। लष्य अर जीन सहंदौ ॥
राज अग्ग फेरि यहि। जाहि जंगल पति जानहि ॥
चहुआन चामर नरिंद। जोगिनि पुर थानहि ॥
असि ढ्रुग्ग ढ्रुग्ग दल सों जुरिग। सामंतति सत्तह चढ़िग ॥
आलोह सेन लागन विषम। [2]बलीदान बामन बढ़िग ॥
छं० ॥ २०३६ ॥

पंग सेना में से काशिराज का मोरचे पर आना।

दूहा ॥ कासिराज सज्ज्यौ सु दल। फुनि अग्या दिय पंग ॥
गाजे भीर अभीर रनि। बाजे विषम सु जंग ॥ छं० ॥ २०३७ ॥

काशिराज के दल का बल।

कवित्त ॥ कासिराज दल विषम। मद्धि जानु तार बिछुट्टिय ॥
मिरिनि हार जुध धार। अड्ड अड्डह लिय बंटिय ॥
निघनि घात तन बात। घात हय घात अघानिय ॥
जनों जिहाज सायरिय। तिरन तुंगत तिहि बानिय ॥

(१) ए. कृ. को.-मुतं। (२) "मनों" पाठ अधिक है।

बल बंधि बलपति बत्त तिन। छिन छिनदा कमधज्ज दल ॥
भूचाल भूमि जथल पथल। इम सु छचि पहुपंग दल ॥
छं० ॥ २०३८ ॥

काशिराज और हाड़ा हम्मीर का परस्पर युद्ध वर्णन।

भुजंगी ॥ हले पंग छचं, न छिचं निधानं। उवं हड्ड हम्मीर गंभीर बानं॥
[1]हलं हाल भग्गी सु जग्गी जुआनं। रुधी धार उद्धार भूमी भयानं॥
छं० ॥ २०३९ ॥
समं सेल मंद्देह अंद्देह गानं। हयं तानि छंडै न छंडे परानं ॥
बके राइ पंगे बद्दे पीलवानं। नभं गोम गज्जेव जंजीर यानं ॥
छं० ॥ २०४० ॥
निमा एक मेकं समेकं हियानं। दिसा धूरि धुंधी उड़ीगै[2]गिधानं॥
भिरै बीर सामंत तत्ते उतानं। महा भार भुत्ते सु सांई सु तानं ॥
छं० ॥ २०४१ ॥

दोनों का द्वंद युद्ध और दोनों का मारा जाना।

कवित्त ॥ हाड़ाराय हलकि उत। कासिराजह कर वर कसि ॥
जोगिनि पुर सामंत। बहुत कनवज्ज बीर रस ॥
बियौ बीर आहुरिय। धरिय दंतह्वर आवध ॥
नामि बीर निज्जुरिय। करिय केहरि कुस रावध ॥
उड़ि हंस मंस नंसह मुहर। कुहरंति सा बाज्जय सुहर ॥
जग्गयौ नाग तव नाग पुर। होम दुरग धामंक धर ॥छं०॥२०४२॥
दूहा ॥ हाड़ा राय सु हथ्थ धरि। गंभीरा रस बीर ॥
कासिराज दल सम जुरिग। कुल उद्धारिय नीर ॥ छं० ॥ २०४३ ॥
नृप अलसिग अलसिग सुभर अलसिय पंग नरिंद ॥
विलसित काल करंक किय। सह सति तीस गनिदं ॥ छं० ॥२०४४॥

नवमी का चन्द्र अस्त होने पर आधी रात को दोनों सेनाओं का थक जाना।

कवित्त ॥ निसि नवमी ससि अस्त। घटिय सुर बीय स उप्परि ॥

(१) ए. कृ. को.-हथं थाल। (२) मो.-गिधानं।

थकिय हथ्थ सामंत। थकिय पंगुर दल जुप्परि ॥
रुधिर सरित षरहरिय। गिद्ध [1]गोमाय अघाइय ॥
ईस सीस गल दरिद्। बीर बेताल नचाइय ॥
आसुर सु उहटि थट भट रहिग। पंग फेरि सज्जिय सुभर ॥
करि सीस रीस पुच्छिय सुबर। कहिय गहन आयास चर ॥
छं० ॥ २०४५ ॥

पृथ्वीराज का पंग सेना के बीच में घिर जाना।

बर बिपहर निसि पंग। क्रोध बिष बीर साम सब ॥
जीभ लोह दिढ साव। जरिय साहस्स तत्त तब ॥
चित वामंग गारुरी। अमी अंचल चित मंतं ॥
दिष्ट अच्छित उच्चारि। हंकि कढ्ढिग विष [2]गत्तं ॥
[3]अप्पइ जु षल सार सु गरुर। [4]रुद्रमि बेंन सज्जै मिसह ॥
जे चित्त रेष चित्तौ सु बर। सिष संजोग आसा सिगह॥छं०॥२०४६॥

आर्या ॥ पन्नगो ग्रसित सामुद्रं। त्यों पंग सेन ग्रिसतो [5]रायं।
छित सुछित आहूट्टं। नवमी निसो अह उपायं ॥ छं० ॥ २०४७ ॥

मुरिल्ल ॥ पिष्षि जुद्ध [6]कंदल दिव धाया। लग्गे सद्द दसौं दिसि आया ॥
तक्किग रहि गनि साजत बीरं। भग्गिय जुद्ध ग्रह पति धीरं ॥
छं० ॥ २०४८ ॥

रात्रि को सामंतों का सलाह करना कि प्रातः काल राजा को किसी तरह निकाल ले चलना चाहिए।

कवित्त ॥ रेनि मत्त चिंतयौ। प्रात कट्टौं प्रथिराजं ॥
प्रा रष्यौ चहुआन। जाय जुग्गिनिपुर साजं ॥
जब लगि अरि तन बढै। कढै न्रप कूह प्रमानं ॥
च्यार बीस षग षुट्टि। अज्यौं सामंत [7]अघोनं ॥

(१) ए. कृ. को.-गोमय। (२) ए. कृ. को.-गत्रं।
(३) को.-अप्प षलगु सार सु गरुर। ए.-अप्पइ जु पज्जु लज्ज सार सु गरुर
(४) ए. कृ. को.-रुद्रासि। (५) मो.-रयं। (६) ए.-कंद्दल। (७) मो.-सघानं।

जो चढ़ै सामि पइ,पंग कर। तौ सब किंत्ति समप्पनौ ॥
जब लग्गि न्रपति इम हथ्थ है। तब लगि बल सामंत नौ ॥
छं० ॥ २०४९ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि तुम लोग अपने बल का गर्व करते हो। मैं मानूंगा नहीं चाहे जो हो।

सुनिय बयन प्रथिराज। रोस बचननि उच्चारिय ॥
ततो होइ तिन बेर। मंत बहु बहु बक्कारिय ॥
तुम सु ग्रब्ब सामंत। मंत जानौ न अमंतं ॥
मैं भग्गा ग्रिह पंग। लियं ढिल्ली धर जंतं ॥
सै सामि होइ सिरदार भल। तौ काइर बल राह जित ॥
जौ हथ्थ जीय होइ अप्पनौ। सुरब सेन अरियन्न कित॥छं०॥ २०५०॥

सामंतों का कहना कि अब भी न मानोगे तो अवश्य हारोगे।

दूहा ॥ सुनि सामंत उचारि न्रिप। बिय दिन जुद्ध उमाह ॥
अब जीतै प्रभु हारिहै। जौ नहि चल्लै राह ॥ छं० ॥ २०५१ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि जो भाग्य में लिखा होगा सो होगा।

तब जंगलवै [1]बोलि इह। रे भावी समरथ्थ ॥
जौ पैसै लष पंजरै। अंत चढ़ै जम हथ्थ ॥ छं० ॥ २०५२ ॥

दिशाओं में उजेला होना और पंग सेना का पुनः आक्रमण करना।

चौपाई ॥ सामंत मूर उचरि चहुआनं। अचल चित्त अति धीर सु. ध्यानं॥
धनि नरिंद सोमेसुर जायौ। मंडी अंमर पंग बर धायौ ॥
छं० ॥ २०५३ ॥
रवि घटि सर निसि बढि तत मानं। घिनदा चरम रही घन पानं॥

(१) ए. कृ. को.-बालि।

बजि दल दुंदुभि पंग निसानं । रत चित सूर देस रति मानं ॥
छं० ॥ २०५४ ॥

जैचन्द के हाथी की शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ दिसि पुब्बह पहुपंग । बीर ठट्ठौ रचि सेनं ॥
सेत केत गज झंप । सेत दुरि चौर समेनं ॥
सेत धजा आसद्दी । सेत सिंदूक सु छज्जी ॥
सेत अस्व पष्षर प्रमान । नाग मुषी रहि पुज्जी ॥
उज्जल सनाह जस बरन बर । सेत धजा कमधज्ज सब ॥
ओपमा चंद सखन किरन । कै विगसी सु कलेसु रवि ॥
छं० ॥ २०५५ ॥

सामंतों का घोड़ों पर सवार हो कर हथियार पकड़ना ।

चौपाई ॥ मती मंडि सामंत सूर भर । जिहि उपाय संकल्प जतन नर ॥
न्रिप अन जग्गत सबै तुरंग चढ़ि । भान पयान न होत लोह कढ़ि ॥
छं० ॥ २०५६ ॥

चहुआन के सरदारों के नाम और उनकी सज धज का वर्णन

कवित्त ॥ चावद्दिसि पहुपंग । बंधि बन बीर सु ठट्टै ॥
रत्त धजा मारूफ । बंधि वामं दिसि गट्टै ॥
पीत धजा दल स्याम । सोह रट्टौ बर कन्हं ॥
सेत धजा पहुबंध । बीर उब्भौ पहु नन्हं ॥
चौबिह्नि फौज चावद्दिसा । बीर बीर बर बिहुरै ॥
चिंतयौ भान पयान बर । लोह पयानत बिस्तरै ॥ छं० ॥२०५७॥

प्रातःकाल पृथ्वीराज का जागना ।

दूहा ॥ सुष्ष सयन प्रथिराज भौ । तम घटि तम चर बार ॥
घरी एक निसि मुदित हुअ । बजत घरी घरियार ॥ छं०॥२०५८॥

पंगराज का प्रतिज्ञा करना ।

कवित्त ॥ घरिन बजत घरियार । पंग परतंग सु बाहिय ॥

कै तन छंडि तर धरौं। जीति दुरजन दल साहिय ॥
उभै उभै दिसि फौज। साजि चतुरंग चलाइय ॥
चावद्दिसि चहुत्र्यान। चाव चतुरंग हलाइय ॥
पायान भान बरज्जित अरि। लोह पयानन मोह भखि ॥
दिसि रत्त उत्त धररत्त व्है। सिध समाधि जरद्ध पुखि॥छं०॥२०५६॥

प्रातः काल की चढ़ाई के समय पंग सेना की शोभा।

भुजंगी॥ लगी बज्र ताली बजे लोह पुल्ली। धरी एक सिद्धिं समाधिं स भुल्ली ॥
किधौं इन्द्र बेता सुरं जुद्ध बीयं। किधौं तारका जुद्ध सुर सत्ति कीयं॥
छं० ॥ २०६०॥

कहै देव देवाइयं जुद्ध देषी। इसौ बीर अत्तीत भारथ्थ पेषी ॥
भयं कब्बि चंदं सबै बीर सथ्थी। नचै रंग भैरूं ततथ्थं ततथ्थी ॥
छं० ॥ २०६१ ॥

किलं कार कारं रुधं पत्त धारं। पियै जोगिनी जोग माया डकारं॥
भरै लोह लोहं सबै दिस्सि भारी। नचै सट्ठि चव जोगिनी देत तारी॥
छं० ॥ २०६२ ॥

घटं घंट घट्टं सु पिंडं बिचारी। फिरै आदि माया सु आदं कुमारी॥
बहै बान षग्गं छुपिक्का बिरंधं। परे बार पारं दुहूं अंग छिद्रं ॥
छं० ॥ २०६३॥

भये छिन्न छिन्नं सनाहंति छिन्नं। रुधी जट्ठ रंकै तिनं माहि भिन्नं॥
कहै चंद कब्बी (१)उपम्माति रुष्षं। मनो उग्गतं भान जाली मउष्षं॥
छं० ॥ २०६४ ॥

भये अंग अंगं सु रंगे निनारं। भरं उत्तरे मुगति संसार पारं॥
भयौ जुद्ध कवरद्ध कथ्थे कथायं। लही सूर सूरं सबं मुगति पायं॥
छं० ॥ २०६५ ॥

परे पंग लष्षं उलष्षं सु सथ्थं। तुटै सस्त्र सूरं जुटै हथ्थ बथ्थं॥
छं० ॥ २०६६॥

(१) मो. उपमास।

पृथ्वीराज का व्यूहवद्ध होना और गौरंग देव अजमेरपति का मोरचा रोकना ।

कवित्त ॥ उग्गि भान पायान । देव दरबार संष बज्जि ॥
सु बर सूर सामंत । [1]गज्जि निकरे सेन सज्जि ॥
[2]धर हरि बल्लि पांवार । अग्ग कीनं प्रथिराजं ॥
ता पच्छै न्रिप कन्ह । सीस मुक्की बढ़ि लाजं ॥
ता पच्छ बीर निडुर निडर । ता पच्छै दंपति अयन ॥
गौरंग गरुअ अजमेरपति । रष्षि न्रपति पछैं सयन ॥छं०॥२०६७ ॥

पृथ्वीराज की ओर से जैतराव का बाग सम्हालना।

पच्छ भान पायान । लोह पायान अग्गि कढ़ि ॥
धर हरि धर पांवार । कोट धारह सलष्य चढ़ि ॥
बज्जि घाइ आहत्त । सार झरि सारह झड्डौ ॥
नभ सु साम सामंत । जानि बीरं जगि अड्डौ॥
घन देत घत्त अवरत्त असि । उभै सेन बर बर जुटी ॥
घरी अद्ध अध [3]बजि विषम । भारथ्थह पारथ घटी ॥ छं०॥२०६८॥

पृथ्वीराज का घिर जाना और वीर पुरुषों का पराक्रम ।

फिरि रुक्यौ प्रथिराज । परी पारस कमधज्जिय ॥
मुरि सु पंच पल भान । चढ़ी आयस सुर रज्जिय ॥
ठठुकि सेन पहु पंग । चंपि चहुआनन संके ॥
बर बिरंग बिहार । लगी बंभन झुकि झुक्कै ॥
का कुटिल दिट्ठ कनवज्ज पति । सल्ल मंच करि झारयौ ॥
जगि पवित्त जोग मंडल बर । धार तिथ्थ [4]तन पारयौ ॥
छं० ॥ २०६९ ॥

युद्ध के समय श्रोणित प्रवाह की शोभा ।

भुजंगी ॥ चढ्यौ भान घट्टी उभैता प्रमानं । कढे लोह राठौर अरु चाहुआनं॥

(१) ए. कृ. को.गांत्त ।　(२) मो.-धर हरिचल ।
(३) मो.बरती ।　(४) मो- नभ, ए. कृ.-नन ।

सुभौ दीन एकं बिबे पंति बीये । करे एक मेकं तिनं लोह लीये ॥
छं० ॥ २०७० ॥

उठै रुद्धि छिंछं झरै सार सारं । किधों मेघ बुट्ठं प्रबालीन धारं ॥
ढरै रंग जावक्क हेमं पनीरं । गहै अंत गिद्धी उडंती प्रकारं ॥
मनों नभ्भ इंद्रं धनुक्कं पसारी । * * * छं० ॥ २०७१ ॥

हटक्की बरच्छी ठनंकंत घट्टं । षिजे गज्ज बेंबे चल्यौ साथ तट्टं ॥
छं० ॥ २०७२ ॥

कहै चंद कव्वी उपम्माति कल्लं । षचै इंद्र बहू कपी काम फल्लं ॥
निकस्सौ सनेनं झरै रुद्धि धारं । ढरै रंग जावक्क हेमं पनारं ॥
छं० ॥ २०७३ ॥

करै सीस इक्के धरं कंठ रज्जी । मना नट्ट काया पलट्टीति बज्जी ॥
दुहुं दिस्सि रुंधे परें धाइ घट्टं । मनो रत्त डोरी चढ्यौ नट्ट पट्टं ॥
छं० ॥ २०७४ ॥

नहीं सुष्ष दुष्षं न माया न काया । तहां सेवकं सामि रंकं न राया ॥
घटक्की षटक्कीज भूछिद्र कारी । फिरी फेरि चहुआन पारस्स पारी ॥
छं० ॥ २०७५ ॥

घुड़सवारों के घोड़ों की तेजी और जवानों की हस्तलाघवता ।

कवित्त ॥ ठठुकि दिष्षि न्रप सेन । छच धारह जु छच तजि ॥
तत्तो होइ तिहि बेर । तत्त माया सु मुदित तजि ॥
तत्त गत्त सो हथ्थ । तेग तत्ती उभ्भारी ॥
धात षंभ न्रिघात । जानि झल्लरि झल्लारी ॥
असवार सनाहत पष्षरे । कटि पट्टन तुट्टै निबर ॥
जाने कि सिषा तर गिर सिरह । बिहर बार करवत्त भर ॥
छं० ॥ २०७६ ॥

माझी वर मरदान । मान मरदा मिलि तोरन ॥
चाहुआन कमधज्ज । दिष्षि अरुहि रन जोरन ॥
दुनै बीर रस धीर । धाइ लग्गे आभुष्षं ॥
लोह वज्जि अवरत्त । जानि छुट्टै मद सुष्षं ॥

त्रिघाइ घाइ बज्जे घनं। घन निसान सद्दह दुरिय॥
रुधि भग्ग घाइ आभंग अगि। घटि बिबंग जोगां जुरिय
छं० ॥ २०७७ ॥

लोह धार बज्जंत। बज्जि धुरतार भार परि॥
सेस सीस हल धसी। फेरि मुक्की कुंडलि करि॥
करि कुंडलि अध सत्त। परे पिट्टं परिवारं॥
[1]गौ भगि फुनि फुनि फुन्नि। फुन्नि किय चंद निनारं॥
अहि सीस [2]बीस सत कलमले। रास रत्त मेदन दलं॥
चिचकन चित्त विभम्म भुअ। तिहित बेर अहि कलकलं॥
छं० ॥ २०७८ ॥

जैचन्द के भाई वीरम राय का वर्णन।

बंधौ रा जैचंद। रा विजपाल सपुत्तह॥
से रंभौ उर जनम। नाम बीरम रावत्तह॥
सहस तीस सिंधूत। ढाल नेजा सिंदूरिय॥
सिंदुरीव सन्नाह। सेव वारुन संपूरिय॥
दिन महिष एक भुंजै भषनि। विजय द्रग्ग अग्गै न्रपह॥
जीते जुवान हिंदू तुरक। वाम अंग टोडर पगह॥ छं०॥२०७९॥

वीरमराय का चहुआन सेना के सम्मुख आकर सामंतों को प्रचारना।

सुक्रवार अष्टमिय। निंद आने न जुग्ग परि॥
नौमि सनी टरि गइय। सामि संग्राम इंद्र जुरि॥
हय दिष्षत षावास। पाइ गहि सत्त पछारिय॥
रे समग्र मृदंग। जंग जुरि हौन जगारिय॥
आयौ निसंक सामंत जहँ। कर कसंत आलस असन॥
तित्तने सूर साहि सु समर। जनु अगस्ति दरिया ग्रसन॥
छं० ॥ २०८०॥

(१) मो.-गौभग्ग फनं फन फुन्न। (२) मो.-चांस।

दूहा ॥ बसु कट्टिय कंघह धरिग। जब बसीठ परिहार ॥
उभय पान साहिग सनर। गय न्त्रप पंग सु सार ॥छं०॥२०८१ ॥
रा जैचंद नरिंद दल। दरसि धम्म बल काज ॥
में भुज पंजर भिरि गहिग। इन में को प्रथिराज ॥ छं०॥२०८२॥
माया मागति देव जगि। इवि जिम हठिय प्रगट्टि ॥
तिन कट्टारिय कर धरिग। तिन घन सेन निघट्टि ॥ छं०॥२०८३ ॥
भ्रमरावली ॥ घन सैन निघट्टिय पंग दलं। रावत्त बंध्यौ तिहि बीर बलं॥
रुधि पान स वित्त कियौ समरं। घन देषि विमान फिरैं अमरं ॥
छं० ॥ २०८४ ॥
तिन पौरिस राज भये सबरं। दिसि च्यारि फवज्जति पंग करं ॥
दसमी पह फट्टति एह जुरं। इन शुद्ध समावर जोग 'हरं ॥
कविचंद अनुक्रम बात धरं। छं० ॥ २०८५॥
* * * * । * छं०॥ २०८६ ॥

दसमी रविवार के प्रभात समय की सविस्तार कथा का आरंभ।

कवित्त ॥ कट्टिय बर विस्तर्यौ। धाइ लग्गौ धर राजन ॥
जहाँ भीम जुवान। तीर तुंगह भै भाजन ॥
रा रन बीर पविच। सु पति रष्षिय परिहारह ॥
राज काज चहुआन। स्वामि संकेत अहारह ॥
जुध भिरत तिनहि हय गय विहत। गह गह कहैति संभरिय ॥
निसि गइय एक सामंत परि। भयत पीत निस अंमरिय ॥
छं० ॥ २०८७ ॥

नवमी के रात्रि के युद्ध में दोनों दलों का थक जाना।

दूहा॥ निसि नौमिय वित्तिय बिषम। उदित दिवस आदीत ॥
उठहि न कर पल्लव नयन। अस बड़ बित्त कवित्त ॥छं०॥२०८८॥
गहन आस गई पंग न्त्रप। जियन आस चहुआन ॥
सूर षंड मंडन 'रवन। उयौ सु रत्तौ भान ॥ छं० ॥ २०८९ ॥

(१) ए. कृ. कों.-जुरं। (२) ए. कृ. को.-बरन।

कनवज्जै भज्जै सयन । जे भर ढिल्लिय सार ॥
जे घर अंजुलि झल्लरित । उदित आदित वार ॥ छं० ॥ २०९० ॥

कनवज्जह झलकिय किरन । बर तजि न्रपति उरन्न ॥
जिहि गुन प्रगटित पिंड किय । तिहि उत्तरिग सुरन्न ॥छं०॥२०९१॥

राजत म्रित धर केलि सह । लाभ सु कित्तिय पूर ॥
जिहि गुन प्रगटित पिंड किय । तिहि [1]उत्तरि सुर मूर ॥छं॥२०९२॥

संयोगिता का पृथ्वीराज की ओर और पृथ्वीराज का संयोगिता की ओर देख कर सकुचित चित्त होना ।

देषि संजोगिय पिय सु बल । श्रम जल बूंद बदन्न ॥
रति पति अहित पवित्र मुष । जालि प्रजालि मरन्न ॥छं०॥२०९३॥

चंद्रायन ॥ घुरि निसान उगि भान कला कर मुद्दयौ ।
श्रम सामंत नरिंद छिनक धर भुक्कयौ ॥
सविष पंग दल दिट्ठ सरोस निहारयौ ।
अंचल अंमृत सँयोगि रेन मिस भारयौ ॥ छं०॥२०९४ ॥

भ्रमरावली ॥ फिरि देषिय राज रवन्न मुषं । अतिवंत दुषी दुष मानि सुषं ।
भुव बंकम रंकम राज मनं । इष तंनि निहंति समोह घनं ॥
छं० ॥ २०९५ ॥

गुन कट्टनि कट्टति तात कुलं । किय मत्र्य महाभर बीर बरं ॥
अभिराम विराम निमष्य करं । उलरंपि न पिठ्ठन दिठ्ठ हरं ॥
छं० ॥ २०९६ ॥

इहि श्रीय सु पीय सु कीय कुलं । मुष अंपिन कंपिन काम कुलं ॥
* * * * । * छं० ॥ २०९७ ॥

चारों ओर घोर शोर होने पर भी पृथ्वीराज का आलस त्याग कर न उठना ।

दूहा ॥ सुधर विलंबन घरिय [1]पर । रहि टब्बिय घटि तीन ॥

(१) ए. कृ. को.-उतरिग ।　　　　(१) ए. कृ. को.-घर ।

उठहि न अलसित कर सु वर। कछु मन मोह प्रवीन ॥
छं० ॥ २०९८ ॥
उत रुष चंपिय रट्ठ वर। इत मुष संभरि वार ॥
चलत राइ फिरि फिरि परिय। उहित आदित वार ॥छं०॥२०९९॥

सब सामंतों का राजा की रक्षा के लिये सलाह करके कन्ह से कहना।

करि विचार सामंत सब। न्रिप तिहि रष्यत काज ॥
कहै अचल सुन ह्व रहौ। करहु चलन कौ साज ॥छं० ॥२१००॥
तब सामंत अचलेस सौ। बार बीय इम कथ्य ॥
अब तुम कन्ह कविंद मिलि। कहौ चलै न्रप सथ्य ॥छं०॥२१०१ ॥
कहै अचल उरगंत रवि। बीच सुभर अप्पान ॥
चलै राज जीवंत ग्रिह। कहिय अचल सम कान्ह ॥ छं ॥ २१०२॥

कन्ह का कवि को समझाना कि अब भी दिल्ली चलने में कुशल है।

कवित्त ॥ कहै कन्ह चहुआन। अहो बरदाइ चंद वर ॥
जुरत जुद्ध दिन बीय। भये अनभुत्त उभै भर ॥
एक जन पंचास। परे सामंत सूर धर ॥
पंग राव घन सेन। तुट्टि सक मौर धीर थर ॥
थक्के सु हाथ सुब्भर नयन। उट्ठ न करह विश्रम बिरम ॥
पहु चलिग मग्ग रष्षै सुभर। कियौ राज अदभुत्त क्रम ॥
छं० ॥ २१०३ ॥
समौ जानि कविचंद। कहै प्रथिराज राज मुनि ॥
आदि क्रम्म तें करें। तास को सकै गुनिक गुनि ॥
सेस जीह संग्रहै। पार गुन तोहि न पावै ॥
तें जु करिय पहुपंग। मिलिय आरनि थर सावै ॥
नन कियौ न को करिहै न को। जै जै जै लछी तरुनि ॥
ग्रिह जाइ अप्प आनंद करि। बढ़ै कित्ति सब लोग पुनि ॥
छं० ॥ २१०४ ॥

कविचन्द का पृथ्वीराज के घोड़े की बाग पकड़ कर दिल्ली की राह लेना ।

दूहा ॥ इह कहि सु कबि समीप गय । गहिय बग्ग हैराज ॥
चल्यौ षंचि ढिल्ली सु रह । सुभर सु मन्यौ काज ॥छं०। २१०५ ॥
प्रलय जलह जल हर चलिय । बलि बंधन बलि बार ॥
रथ चक्कां हरि करि करिय । परि प्रब्बत पथ्थार ॥ छं० ॥२१०६ ॥
उदय तरुनि नट्ठिग तिमिर । सजि सामंत समूह ॥
न्रिप अग्गै बहै सु इम । चलहु स्वामि करि कूह ॥ छं०॥२१०७॥

पृथ्वीराज प्रति कविचन्द का वचन ।

कवित्त * ॥ बंस प्रलंब अरोपि । इंन घन अंदर कड्डिय ॥
वरत पुरातन बंधि । धरनि द्रिढ लग्गि न षुंटिय ॥
करि साहस चढि नट्ट । द्रुनी देषत कोतूहल ॥
घंटा रव गल करत । महिष उभौ जम संतल ॥
उत्तरन कुसल करतार कर । श्रिया लाभ तौ अलग रहि ॥
ढिल्लीव नाथ ढीलन करौ । लगौ मग्ग कविचंद कहि ॥
छं० ॥ २१०८ ॥

राजा पृथ्वीराज का चलने पर सम्मत होना ।

दूहा ॥ चलन मानि चहुआन न्रप । बज्जे पंग निसान ॥
निमि जु इंद दुहुं दल भयौ । बिह्र सहित बिन भान ॥छं०२१०९॥
हय गय करि अग्गें न्रपति । षिषि चंपे प्रथिराज ॥
मो अग्गें आजुहि रहै । टरिग दीह विय साज ॥छं०॥२११० ॥

सामंतों का व्यूह बांधना धाराधिपति का रास्ता करना और तिरछे रूख पर चौहान का आगे बढ़ना ।

कवित्त ॥ बर द्वादस भारथ्थ । राज परि भीर वाम दिसि ॥
सह दच्छिन न्रप सथ्थ । बीर बर बही बीर असि ॥

* यह छन्द मो.-प्रति में नहीं है ।

बर जोगिनि पुर उदै। सीस धर हर बर [1]जुट्टे॥
मनों जैत ष भ तत्त। मेघ धारा जल बुट्टे॥
तिरछौ तरि उप्परि न्रपति। दइ दुआह धारह धनी॥
जाने कि अग्गि जज्जर बनह। बंस जाल फट्टै घनी॥छं०॥२१११॥

शौचादि से निश्चित हो कर दो घड़ी दिन चढ़े जैचन्द का पसर करना।

दूहा॥ [2]घटी उभै रवि चढ़िय बर। स्नान दान गुर चार॥
पंग फेरि घेरिय सु घन। भर बिंटे सिर भार॥ छं०॥२११२॥

वीर योद्धाओं का उत्साह।

रसावला॥ सांमि विंटे रनं, सूर छोहं घनं। बथ्थ मल्लं जनं, धार कुट्टे मनं॥
छं० ॥ २११३ ॥
सूर चट्टे मनं, लोह तत्ती तनं। सीत चित्तं जनं, विड्डुरेनं मनं॥
छं० ॥ २११४ ॥
चित्त जोतिप्पनं, सो मनं जित्तनं। तेग बंकी झनं, बज्जि अस्सी तनं॥
छं० ॥ २११५ ॥
सूर कीनी रनं, भारथं नंसनं। भ्रंम सासिप्पनं, जीव तुछे गिनं॥
छं० ॥ २११६ ॥
काल भूखं ननं, जम्म छुट्टे मनं। रज्ज कोटं भटं, रुद्दि घुम्मै धटं॥
छं० ॥ २११७ ॥
सूरं चित्तं कारं, दिष्षियं तुंमरं। स्वामि [3]चल्लै षरं, जुद्ध झल्लं भरं॥
छं० ॥ २११८ ॥

सामंतों की स्वामि भक्तिमय विषम बीरता।

दूहा॥ परिग पंच पंचे सु भर। थितनि परिग श्रत पंच॥
कूह जूह लै लै करिय। न्रपति न लग्गी अंच॥ छं०॥ २११९॥
समर स पुट्ठी समर परि। सामि सुमति चल तेन॥
सामंतन रुक्यौ सु दल। लीज [4]मुष्ष मुह जेम॥ छं०॥ २१२०॥

(१) मो.-जूटे। (२) मो.-घरी। (३) मो.-मल्लै। (४) ए. कृ. को.-मुछ।

परिग सूर सोरह सु भर। आदित जुड्ड [1]सरीस॥
बीर पंग फेरिय गहन। करि प्रतंग दिव ईस॥ छं० ॥ २१२१ ॥

पंगराज का अपनी सेना को पृथ्वीराज को पकड़ लेने की आज्ञा देना।

कहै पंगुरौ सु भर भर। आज सु दिन तुम काम॥
गहौ चंपि चहुआन कौं। ज्यों जग रष्षै नाम॥ छं० ॥ २१२२ ॥
दूहा गाहा सरसतिय। न्रप प्रसाद धन सथ्थ॥
दुरजन ग्रह एते तुरत। ग्रहै न पच्छै हथ्थ॥ छं० ॥ २१२३ ॥

पंगराज की प्रतिज्ञा सुन कर सैनिकों का कुपित होना।

इह प्रतंग पहु पंग सुनि। ध्रित कोपिय भ्रम काज॥
परे चंपि चहुआन पर। जानि कुलिग्गन बाज॥ छं०॥ २१२४ ॥
जब देषे सामंत हथ। तब लग्यौ घन ताप॥
जानै बिष ज्वाला तपति। कै प्रलै काल मनि आप॥छं०॥२१२५॥
जितै भ्रंम लच्छी लहै। मरन लहै सुर लोक॥
दोउ सु परि ध्रत सुडरै। [2]परे धाइ धर तोक॥ छं० ॥ २१२६ ॥

पंग सेना का धावा करना तुमुल युद्ध होना और वीरसिंह राय का मारा जाना।

भुजंगी॥ पुरे धाय बीरं रसं पुब्ब दझ्झै। क्रमं पंच धक्के चहुव्वान भज्जे॥
पऱ्यौ पंग पच्छै जुटेढ़ी पठाढौ। दिसं पुब्ब मारूफ बर बंक काढ़ौ॥
छं० ॥ २१२७ ॥
चहूआन सूरं असी बंक भारी। मनों पारधी बिंट बाराह पारी॥
मह माह सूरं प्रचारे सबाहं। [3]तबै बीर बीरं उपम्माति चाहं॥
छं० ॥ २१२८ ॥
पिलै लाज मुक्कै चियं पीय झोरी। मुरे लज्ज बंधं दोउ सेन जोरी
बहै षग्ग मग्गं सु बग्गं निनारे। तिरै जोध माया सरे सार पारे॥
छं० ॥ २१२९ ॥

(१) ए. कृ. को.-सरीर। (२) मो.-परत। (३) ए. कृ. को.-तकै।

बहै षग्ग तुट्टै उड़ै टूक नारे। मनो टूट्टही राति आकास तारे ॥
सहै हथ्थ श्वानं फुरी टोप सथ्थं। किधौं हूरिजं भूलियं राह हथ्थं॥
छं० ॥ २१३० ॥

डरै काइरं चिंति मुष्षं दुरायं। मनो प्रात दीपं बिधं काल्ह गायं॥
तुछं फुट्टि संगं सनाहं न क्रूरं। मनौं जार कढ्ढै मुषं मीन[1] हूरं॥
छं० ॥ २१३१ ॥

मचै घाइ अघ्घाइ छुट्टै हवाई। मनौं [2]टीस ज्यौं डंभरू पंति लाई॥
घरी अद्ध आहत्त बज्जे त्रिषम्मं। पर्‍यौ राव वरसिंघ कित्तीव जम्मं॥
छं० ॥ २१३२ ॥

पंगदल की सर्प से और पृथ्वीराज की गरुड़ से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ पुंग धार पहु पंग। राग सिंधू बज्जाइय ॥
सार मंच संधयौ। बीर आलाप चिघाइय ॥
सेस सुनिव सामंत। कंन मंडत तिहि रग्गा ॥
फन मिसि असिवर धुनिय। ओह कढ्ढी पग लग्गा ॥
गारुरी बीर कमधजक सर। जंच मंच हीनं गनिय ॥
मनि मध्य मेर डस्यो बिषम। सिंगि स्याल गज्जर मनिय ॥
छं० ॥ २१३३ ॥

दूहा ॥ सांमि ध्रंम रत्ते सु भर। चढे क्रोध बिष [3]झाल ॥
दभ्भझौ कायर दूर टरि। मिले गरूर मुँछाल ॥ छं० ॥ २१३४ ॥

पंग सेना के बीच में से पृथ्वीराज के निकल जाने की प्रसंशा।

कुंडलिया * ॥ बार पारि पहु पंग दल। इम निकसिय चहुआन ॥
छाया राषिसनी ग्रसत। पिट्ठ फोरि हनुमान ॥
पिट्ठ फोरि हनुमान। गौन सै साठि कोस मुह ॥
उदधि मज्झि बिस्तारि। [4]गिलन अंतरिष वह तह ॥
रंकार सबद उच्चार करि। ब्रहमंड कि भिदि मुनि गयौ ॥
कहि चंद ध्यान धारत उअर। सागर पारंगत भयौ ॥ छं०॥ २१३५॥

(१) मो.-मैन। (२) ए. कृ. को. ईस। (३) ए. कृ. को.-ज्वाल।
(४) ए.-मिलम। * यह कुंडलिया मो. प्रति में नहीं है।

पुट्ठि बुट्ठि झाला इलह । चलि न सकै चहुआन ॥
सामंतनि करि कोट¹ अउ । यौं निकासे राजान ॥ छं० ॥ २१३६ ॥

दूहा ॥ जे छची अड्डे अरे । ते झुझझै असियान ॥
मानों बुंद समुंद में । परै तत्त पाषान ॥ छं० ॥ २१३७ ॥

पंग सेना का पृथ्वीराज को रोकना और सामंतों का निकल चलने की चेष्टा करना ।

सुभर पंग पिष्षे परत । परत करिय द्रिग रत्त ॥
रवि उदित चढि सत्त घटि । तपित तेज आदित्त ॥ छं०॥ २१३८ ॥

चिभंगी ॥ हग रत्ते सूरं, पंग करूरं, बजि रन तूरं, फिरि पंती ॥
रुष्पे चहुआनं, पंग रिसानं, द्रोन समानं, गुर कंती ॥
उप बज्जिय कंती, धर रंग रत्ती, बीर समत्ती, अलि बीरं ॥
वर बंन करूरं, हुअ नहि सूरं, रोस डरूरं, छुटि तीरं॥छं०॥२१३९॥
असि कड्ढी नीवं, ज्यों ससि बीवं, भै ²अति भीवं, अनसंकं ।
सब ओडन नष्षे, रज रन रष्षे, अरि घर भष्षे, भरि अंकं ॥
वर वर धर मीनं, तन फल छीनं, ज्यौं जल हीनं, फिरि मीनं ॥
झुरो है हल्लैं, करि किन डुल्लैं, बीर सलल्लैं, तन छीनं ॥छं०॥२१४०॥
अंती वर कंती, पें उर झंती, में मत पंती, विच्छूरं ।
उप्पम कवि पूरं, अलंगं भूरं, ³गज्ज हिलूरं, जल घूरं ॥
झुझझे सिर तुट्टं, षग आहुट्टं, उप्पम घट्टं, कविआनं ।
तुट्टे जिम तारं, षह भग झारं, हूत⁴ सबीरं, सम जानं ॥
छं० ॥ २१४१ ॥

भै बीर बिरुद्धं, जटि आरुद्धं, मंति सु लद्धं, मपि सेनं ॥
⁵लुथि लुथि आहुट्टिय, बंधन कुट्टिय, किन्ति स लुट्टिय, कबि तेनं॥
छं० ॥ २१४२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-अर ।　　(२) ए. भित्त, को. कृ.-भति ।
(३) ए. कृ. को.-मज्जहि तुरं ।　　(४) ए. कृ. को.-हूतसबीरं ।
(५) मो.-लुथि लोथि ।

एक पहर दिन चढ़ आने पर इधर से बलिभद्र के भाई उधर से मीरां मर्द का युद्ध करना।

कवित्त ॥ बजिग पहर इक अहर। हथ्थ थक कमान बहि ॥
हैगै नरभर डररि। अमिज थक्कए षग्ग सह ॥
बीय अरी चित लरत। कोउ मानै नन थक्कै ॥
जोगि नींद उग्यौ प्रमान। कूह चतुरंग जटक्कै ॥
है नंषि बंध बलिभद्र कों। पज्जूनो अग्गै सयन ॥
उत निक्करे मीर मीरां मरद। ढुंढारी सम्हौ बयन ॥
छं० ॥ २१४३ ॥

बलिभद्र के भाई का मारा जाना।

दुनें मिले मरदान। कथ्थ पै दीह न मुक्कै ॥
लज्ज मंस बिहु बीच। बिंब केसर बर बक्कै ॥
कट्टारी बर कट्टि। मेछ बाहिय पहु लग्गिय ॥
फुट्टि सीस बरकारी। बांम भग्गा सह अग्गिय ॥
बर मुष्छि घाइ कच ग्रह करे। कट्टारिय गहि दंत कढि ॥
तन फेरि अंग झंझर कियौ। को दिव बंध कबंध चढ़ि ॥
छं० ॥ २१४४ ॥

दो पहर तक युद्ध करके बलिभद्र का मारा जाना।

करि उप्पर बर बीर। बली बलभद्र सु धाइय ॥
दल दल मुष मुष पंग। भई द्रप्पन मुष झाइय ॥
है [1]अंठुन दल पंग। वीर अवरत्त हलाइय ॥
समर अमर कोतिग्ग। ईस नारद रिझाइय ॥
झक झोरि झोरि दल मोरि अरि। बिरह चीर उट्टाय करि ॥
सामंत पंच पंचह मिलिग। टरि न टरै भर बिप्प हर ॥
छं० ॥ २१४५ ॥

(१) ए. कृ. को.-अंठुलि।

हरसिंह का हथियार करना और पंग सेना का छिन्न भिन्न होना ।

भुजंगी ॥ चंपै चाइ चौहान हरसिंघ नायौ । जिसे सेंन में सिंघ गज जूथ पायौ ॥
करै कूह गज जूह सनमुष्ष धायौ । तबै पंग दल समटि चिहुं कोद छायौ ॥
छं० ॥ २१४६ ॥

पंगराज का दो मीर सरदारों को पांच हजार सेना के साथ धावा करने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ बली अली द्वै मीर । उभै बंधव बर बीरह ॥
छत्तिय हथ्थ दुसल्ल । मल्लविद्या साधक सह ॥
षग्ग मग्ग बिन रेह । जुड्ड जानें निरगम गम ॥
डंडा युद्ध छचीस । बट्ट पोइक पाइक सम ॥
भुज लहै कोरि उभ्भै अभय । स्वामि ध्रंम रत्तं सु रह ॥
अनहित्त पंग लज्जी अदब । दल पगार बिर दैत गह ॥
छं० ॥ २१४७ ॥

करिय क्रपा पहुपंग । सहस पंचह दिय मीरह ॥
कुल बिषत्त जुध जुत्त । लहै बर लाज अभीरह ॥
स्याम चमर पष्षर सु । स्याम गज गाह सुनित्तह ॥
भंडे स्याम सु माम । पछय पय पुलै न षित्तह ॥
अग्या सु मंगि पहु पंग पहि । आए मीर पठान पुर ॥
आदित्त जुड्ड हरि उग्ग मनि । आए आतुर सज्जि अरि ॥
छं० ॥ २१४८ ॥

मीरों का आज्ञा शिरोधार्य्य करके धावा करना ।

दूहा ॥ मंग्यौ आयस नंमि सिर । कहै पंग करि पान ॥
जीय सु षंडो षत्त पहु । गहो बहो चहुआन ॥ छं० ॥ २१४९ ॥

मीर मंडली से हरसिंह का युद्ध। पहाड़राय और हरिसिंह का मारा जाना ।

भुजंगी ॥ तबै उप्परी फौज सा राज मीरं । सहस्सं च पंचं बरं बंधि नीरं ॥

किलक्कि किलक्की हके आसुरानं। चवै दीन महमूंद महमूंद मानं॥
छं० ॥ २१५०॥
'बली मीर अली दिसा अप्प भष्षै। तनं अज्ज सांई निजं कज्ज रष्षै॥
करौं पिंड षंड'' निजं स्वामि काजै। गहै चाहुआनं भरं झूझ भाजै॥
छं० ॥ २१५१॥
हके मीर अप्पान लै अप्प नामं। तिनं साथ भष्षै 'कही कंक कामं॥
लही फौज आवंतसा चाहुआनं। हरं सिंघ सिंघं गज्यौ जुद्ध जानं॥
छं० ॥ २१५२॥
नयौ सीस प्रथिराज रजि बीर रस्सं। फिर्यौ संमरे इष्ट अप्पं उक्कस्सं॥
चले बीर किलकार साथे सु गाजै। करं अप्प आवद्ध सावद्ध साजै॥
छं० ॥ २१५३॥
मिल्यौ जुद्ध मंझी समं आइ मीरं। भरं आवधं बज्जियं धार धीरं॥
मिले मुष्ष एकं अनेकं सु धायं। करक्कै सु सीसं परै पूर घायं॥
छं० ॥ २१५४॥
परैं मीर एकं अनेकं सु षंडं। कलं कूह बज्जौ रुरं मुंड रुंडं॥
कलं भूचरं षेचरं सा कहूरं। नचै जंध हीनं कमद्धं दु हूरं॥
छं० ॥ २१५५॥
रमे तेक चहुआन रस रास तारं। फिरै मंडली जेम षल न्रत्य कारं॥
उभै मीर बल्ली अली संघ लष्षै। क्रमे आतपं तप्पि जल जाम झष्षै॥
छं० ॥ २१५५६॥
बली आय प्राहार कीनौ जु जामं। उरं मग्गि तिष्षी निकस्सी परामं॥
चलै सेन सम्मं हयौ षग्ग झारे। हयौ रोह मां तूं भिरें मच्छ कारे॥
छं० ॥ २१५७॥
बली सीस तुट्यौ षगं षंभ थारं। मनौं देवलं इंदु तुट्टौ सु तारं॥
अली आय 'बामं हयौ षग्ग धारं। तुट्यौ सीस उड्यौ षगं भूमि पारं॥
छं० ॥ २१५८॥

(१) मो.-चल्ली। (२) ए. कृ. को. तनं (३) ए. कृ. को.-कहा।
(४) ए. कृ. को.-धष्षे। (५) ए. कृ. को.-बाहे।

गह्यौ तांम [1]अल्ली उरं अप्प चंप्यौ । गयौ अंस उड्डी तिनं तांम [2]लिप्यौ॥
भग्यौ सेन मीरं भरक्कै धु धामं । सयं सत्त ताई परे पंति तामं॥
छं० ॥ २१५९॥

घनं घाइ अघ्घाय पुज्यौ सु पानं।पऱ्यौ सिंघ हरसिंघ करि जीति थानं॥
छं० ॥ २१६० ॥

नरसिंह का अकेले पंग सेना को रोकना और पृथ्वीराज का चार कोस निकल जाना ।

कवित्त ॥ करि जुहार [3]नरसिंघ । नयौ चहुआन पहिल्लौ ॥
बरी अनी सावरी । लष्प सों भिरयौ इकल्लौ ॥
आगम काय हुअ फिरै । धरनि षुर सों षुर षुंदहि ॥
एक लष्प सों भिरै । एक लष्पह रन रुंधहि ॥
असि घाइ झाइ बज्जै [4]विषम । जै जै जै आयास भौ ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया । च्यारि कोस चहुआन गौ ॥छं०॥२१६१॥

नरसिंह के मरते ही पंग सेना का पुनः चौहान को आघेरना ।

दूहा ॥ परत धरनि नरसिंघ कहुं । हकि गयंद दल अब्ब ॥
मनहु जुद्ध जोगिन पुरह । तिन मुक्कयौ सब [5]अब्ब ॥छं०॥२१६२॥
फुनि प्रथिराज सु पच्छ दल । बर रठ्ठौर नरेस ॥
[6]सिर सरोज चहुआन कै । भवर सस्त्र सम भेष ॥ छं० ॥२१६३॥

इस तरफ से कनक राय बड़ गुज्जर का मोरचा रोकना ।

कवित्त ॥ भौ आयस प्रथिराज । कनक नायौ बड़ गुज्जर ॥
हम तुम दुस्सह मिलन । स्वामि दुज्जै सु अप्प घर ॥
हों रबि मंडल भेदि । जीव लगि सत्त न [7]षंडो ॥
षंड षंड करि रुंड । मुंड हर हार सु मंडो ॥

(१) ए. कृ. को.-अली ।　　(२) ए. कृ. को.-लेप्यौ ।
(३) ए. कृ. को.-हरसिंह, परंतु हरसिंह के युद्ध का वर्णन पूर्व छंद में हो चुका है ।
(४) ए. कृ को.-सकल ।　(५) ए. कृ. को.-अब्भ ।　(६) मो.-सिर सराज ।
(७) ए. कृ. को.-छंडों ।

हून बंस भग्गि जानै न को। हों पति ¹कंप अलुभ्भयो ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। कोस षट्ट चहुआन गो ॥ छं० ॥ २१६४॥

वीरमराय का बल पराक्रम वर्णन।

सुअन धाय जैचंद। नाम बीरम बीरम बर ॥
गरुअ लाज गुन भार। जुद्ध जुति जान ग्यान गुर ॥
बंधव सम जै चंद। प्रीति लिष्यवै प्रेम गुन ॥
अगि आदर न्रप करै। गान उत्तंग अंग सन ॥
सह सत्त सत्त सेना सु तस। बरन रत्त बाना धरै ॥
जहं जहं सु राज काजह समथ। तहं तहं परि अग्गें लरै ॥
छं० ॥ २१६५ ॥

दूहा ॥ ऐरावत बीरम पऱ्यौ। औ बीरम सुअ धाइ ॥
सम प्राक्रम पंगुर परषि। दियै सु अग्या ताइ ॥ छं० ॥ २१६६ ॥

उक्त मीर वंदों को मरा हुआ देख कर जैचन्द का वीरम राय को आज्ञा देना।

परे मीर देषे उभै। दिय अग्या तमि पंग ॥
गहौ जाइ चहुआन कौं। हनौ सुभर सब जंग ॥ छं० ॥ २१६७ ॥

वीरम राय का धावा करना वीरमराय और बड़ गुज्जर दोनों का मारा जाना।

भुजंगी ॥ सुने आयसं बीर पंगं नरिंदं। चल्यौ नाइ सीसं मनों जुद्ध इंदं॥
सिरं सज्जि गेनं रची फौज तीरं। कजं जुद्ध ईसं रज्यौ रस्स बीरं ॥
छं० ॥ २१६८ ॥

बजी भेरि भुंकार धुंके निसानं। धरा बोम गज्जे सजे देव दानं॥
बड़ गुज्जरं देषि आवंत फौजं। सनंमुष्ष भ्म्यौ दलं संक नौजं ॥
छं० ॥ २१६९ ॥

जपे इष्ट सा उच्चरे बीर मंचं। गरै बंधियं ह्रून सम्मीर जंचं॥
किलक्के सु बीरं गहक्के सु धीरं। कलं कंपिय कातरं भीत भीरं॥
छं०॥२१७०॥

(१) ए. कृ. को.-पंक।

मिली जोगिनी जोग नंचै चिघाई। फिकारैंतें फेकी पलं पूरि भाई॥
मिल्यौ गुज्जरं मद्धि फौजं सु धायौ। इमै षग्ग षत्तं षलं [1]एक घायौ॥
छं०॥ २१७१॥

परे बिंब षंडं धरं तुंड तुंडं। हकै गिद्धि आषं परे षोनि मुंडं॥
सिरं बीर आवद्ध नंषै अपारं। नचै नारदं देषि कौतिग्ग भारं॥
छं०॥ २१७२॥

तनं गुज्जरं एक देषै अनेकं। मुषें मुष्ष लग्यौ प्रती एक एकं॥
भरी भूतयं बीर नचै अपारं। महावीर लग्गे बरं जुद्ध भारं॥
छं०॥ २१७३॥

धनं धारि उभ्भारि धायौ समुष्षं। मदं मत्त इभ्भं परे इस्स रुष्षं॥
हयौ आइ बड़ गुज्जरं षग्ग धारं। कटे टट्टरं सीस पर्यौ कुठारं॥
छं०॥ २१७४॥

हयौ असि भारं सु बीरम्म तामं। कटे बाहु दूनौ धरं तुट्टि ठामं॥
परे षंड बीरम्म तुट्टे विभग्गं। धमं धन्न जंप्यौ कनक्कूति लग्गं॥
छं०॥ २१७५॥

करं बाम चंप्यौ निजं सीस अप्पं। करे षग्ग धायौ समं रिम्म धप्पं॥
भरी ढाहि ढंढोरि माझी कनक्के। [2]तुरे कोइ ढारं षलक्के सष्षक्के॥
छं०॥ २१७६॥

बरी अच्छरा विंद साचीनि मन्ने। तुर्यौ कनक्कू धार सों षाइ घन्ने॥
सयं पंच सारद्ध बीरम्म सथ्थें। परे षेत षंदे कनक्कू सु हथ्थें॥
छं०॥ २१७७॥

बड़ गुज्जर के मारे जाने पर पृथ्वीराज का निठ्ठुर राय की तरफ देखना।

दूहा॥ बड़ हथ्थह बड़ गुज्जरह। झुझ्झि गयौ बैकुंठ॥
भीर [3]सघन सामित परत। चष निठ्ठुर अरि दिट्ठ॥छं०॥२१७८॥
पर्यौ षेत बड़ गुज्जरह। अप्प पंग दल हक्कि॥
तम्मि सनंमुष नैन करि। दिय आग्या मन तक्कि॥ छं०॥ २१७९॥

(१) मो.-लष। (२) ए. कृ. को.-ढरे कोइ ढारं षळं कइ सक्के। (३) मो.-सघन।

जैचन्द की तरफ से निठ्ठुर राय के छोटे भाई का धावा करना। निठ्ठुर राय का सम्मुख डटना।

कवित्त॥ बीजापुर दिग विजय। करत विजपाल नरिंदं॥
सिंधुर लिय पेसंक। च्यारि जनु रूप करिंदं।
बार सहस को पटो। एक एकह प्रति थप्पिय॥
पष्षर पूरब नाय। राव बलिभद्र सु अप्पिय॥
घन सयन अवर पच्छें करैं। क्रमिय पंग आदेस लहि॥
आवंत देषि बंधव अनुज। राव निडर पग मंडि रहि॥
छं०॥ २१८०॥

युद्ध वर्णन।

रसावला॥ कमद्धंति धप्पं, दिषे चष्ष अप्पं। भ्रम्यौ निठ्ठुरेयं, करी पंग जेयं॥
छं०॥ २१८१॥

सुषं मैन रत्तं, मनों झाल तत्तं। पुली बंब रेनं, हथ्यौ सीअ गेनं॥
छं०॥ २१८२॥

सुभे टोप सीसं, घनं अर्क दीसं। सनाहं सु देही, तिनं मत्ति वेही॥
छं०॥ २१८३॥

मनो नीर मद्धं, सुभै लाज सुद्धं। कसे सस्त्र तोनं, गुरं जानि द्रोनं॥
छं०॥ २१८४॥

छुटे बान हथ्यं, मनों इंद्र पथ्यं। लगै ईष गज्जं, बजै जानि बज्जं॥
छं०॥ २१८५॥

मुठी दिठ्ठ मंडे, लियै जीव छंडे। हने छत्रधारी, लुटै भूमि भारी॥
छं०॥ २१८६॥

छुटै अग्गि हथ्यं, जरै सस्त्र सथ्यं। रुके सेन पंगं, मनो ईस गंगं॥
छं०॥ २१८७॥

दिषे पंग नेनं, मनों काल सेनं। अनी मुष्ष राजं, गजं जुथ्थ साजं॥
छं०॥ २१८८॥

---

(१) मो.-कमी। (२) ए. क को.-ज्वाल। (३) मो.-सासि।

अवै मद्द धारं, न नेनं उघारं। छुटै वाय वेयं, मनों बद्दलेयं ॥
छं० ॥ २१८९ ॥

मुषं चारि धाये, मनों आल आये। हनै पीलवानं, उड़ै घास जानं॥
छं० ॥ २१९० ॥

चवै चारि ढक्कै, पछै और रक्कै। करैं तीर मारं, बहै लोह धारं॥
छं० ॥ २१९१ ॥

मदी ओन पूरं, फिरै गेन छूरं। गजै गैन काली, नचै षप्पराली॥
छं० ॥ २१९२ ॥

रचे ईस अंगं, रसे रोस रंगं। उभै षिचिपालं, बकै बिक्करालं॥
छं० ॥ २१९३ ॥

दुअं तोन षुट्टै, पछै षग्ग जुट्टै। हनै तक्कि मद्दं, परं अद्ध अद्धं॥
छं० ॥ २१९४ ॥

झरै अंग अंगं, दवं जानि दंगं। गजं सीस पानं, परै बीज जानं॥
छं० ॥ २१९५ ॥

दूहा ॥ कमध धपत अरि पंग लिषि। तमकि तमकि बर तेज ॥
जानिक अगि बन घन [1]चरन। उमड़ि वाय घन सेज॥छं०॥२१९६॥

भाई बलभद्र और निठुर राय का परस्पर द्वंद युद्ध होना और दोनों का एक साथ खेत रहना।

भुजंगी ॥ नरे निठ्ठुरं निंद नामंत रायं। बलीभद्र लष्यौ सितं गज्ज गायं॥
सहं नाम बच्चो विधानी करन्नी। छितं छच व्रत्ती सु सामी सरन्नी॥
छं० ॥ २१९७ ॥

उभै दिट्ठ दिट्ठी मिले बाहु बाहं। नियं उत्ति नाही अरी राह राहं॥
प्रियं पीत रतं गैत पंगं नरिंदं। मिल्यौ षग्ग हंसंक याहं बनिंदं॥
छं० ॥ २१९८ ॥

उठी झार सस्त्रं विसस्त्रंति सीसं। रुधी धार धारंति मानंतिदीसं॥
कवीचंद केली [2]कनवज्ज रायं। सयं तात मातं वरं सिंघ जायं॥
छं० ॥ २१९९ ॥

(१) मो.-अरन। (२) ए. कृ. को.- दुराजे सुरायं।

बियं गब्भ थानं सु ग्यानं गुरज्जं । न छुट्टै न षुट्टै न तुट्टै उरभ्भं॥
घरी ईक दीहं तिहं इंति कालं । मनों रत्त आरत्त मैं मत्त मालं॥
छं० ॥ २२०० ॥

परैं अस्व अस्वंग जखंग बीयं । बिए भ्रम्म धारी सु धारी सु नीयं ॥
मनों विंद बिंदान दुरजोध बंधं । कटे गंध वाहं जु बग्गो सु गंधं॥
छं० ॥ २२०१ ॥

भभक्कंत सोंधा तिनं अंग तासं । दुअं घट्टि पंचास कोसं प्रकासं॥
गयंनं गुंजारं करें भोंरभीरं। धत्यौ आतपं जानि रबि छांह गीरं ॥
छं० ॥ २२०२ ॥

भयौ जंग में जंग आवै न बंटैं । उभै सीस ईसं दूग्यारैं उभ्भंटैं॥
रवी चंद नारद्द वेताल रंभा । चवट्ठी जमातं निरष्यो अचंभा ॥
छं० ॥ २२०३ ॥

कवित्त । तिमिर बद्ध रट्ठौर । आय जब पुठ्ठ विलग्गौ ॥
गहु गहु गहु चहुआन। हद्द हिंदवान सु भग्गौ ॥
कर ककस हर सिंघ । सिंघ सम सिंघ न छुव्यौ ॥
जनु कि जंत वैं मुषह । सुभष लद्दो मुष बव्यौ ॥
घन घाय चाय [1]बित्तिय घरिय । करिग आन सामंत सह ॥
बैकुंठ वट्ट लद्धौ विहुन । लरन अप्प अप्पह सु रह ॥छं०॥ २२०४ ॥

जैचन्द का निठ्ठुर राय की लाश पर कमर का पिछौरा खोल कर डालना।

दूहा ॥ भ्रुभिभ्भ षेत निठ्ठुर पत्यौ । दिष्षि दुहुं दल सथ्थ ॥
कटिपट छोरि जैचंद पहुं । ढंकिय अप्पन हथ्थ ॥ २२०५ ॥

निठ्ठुरराय की मृत्यु पर पंग का पश्चात्ताप करना।

कवित्त ॥ तुं कुल रष्षन केलि । बंध बारुन बल बोहिय ॥
तें रष्यौ चहुआन । सांमि संकट सुभ सोहिय ॥
तें आरस अलि अल । उतंग बारधि बल बंध्यौ ॥
जहं जहं हय भर भरंत । तहां फव्यौ सिर संध्यौ ॥

(१) मो.-चिंतिय ।

रंडरी ढाल ढिल्लिय नयर। मरद मयन झुझ्झयौ पुरिस ॥
निठ्ठुर निसंक उप्पर पहुर। बहुरि पंग बोल्यौ सरिस॥छं०॥२२०६॥
दूहा ॥ [1]सम रट्ठौर रठ्ठवर। निठ्ठुर झुझ्झिग जाम ॥
दिनयर दल प्रथिराज कौं। राह पंग भय ताम ॥ छं० ॥२२०७॥

निठ्ठुरराय के मोरचा रोकने पर पृथ्वीराज का आठ कोस पर्य्यन्त निकल जाना ।

कवित्त धर फुट्टै धुरतार। तार तुट्टै सिर उप्पर ॥
तहां नायौ रट्ठि वर। न्त्रिपति प्रथिराज स्वामि छर ॥
षग्गह सीस हनंत। षग्ग षुप्परिय षनं षन ॥
श्रोनित बुंद परंत। पंग किह्नीय घरघघन ॥
बिरचयौ लोह बर सिंघसुत्र। षंड षंड तन षंडयौ ॥
निठ्ठुर निसंक झुझ्झंत रन। अठ्ठ कोस न्टप छिंडयौ ॥
छं० ॥ २२०८ ॥

निठ्ठुर राय की प्रशंसा और मोक्ष ।

अट्ठ कोस अंतरिय। पंग सथ्थरिय परिय भर ॥
परि निठ्ठुर पथ्थरिय। कंस गजराज दंत धर ॥
हय हय है भारथ्थ। धवल बंबरह भिरत हुअ ॥
ब्रह्म लोक सिव लोक। लोक ससि छंडि लोक धुअ ॥
रन घरिय राव आरति अरुन। तरुन अरुन मंडल षिलिय ॥
अट्ठाह कोस चहुआन पर। बहुरि पंग पारस झिलिय ॥
छं० ॥ २२०९ ॥

पंग सेना का पुनः पृथ्वीराज को आघेरना और कन्ह राय का अग्रसर होना ।

झिलि पारस पहुपंग। रंग रंगह घन घेरिय ॥
घन निसान गय घंट। ठनकि ठंठनि बजि भेरिय ॥

(१) ए. कृ. को.-सम रट्ठौर नरिंद वर।

तब विताल धर धरनि। नट्टन गइनह उच्चरयौ॥
तब कन्हा चहुआन। सघन छंछट संभरयौ॥
पट्टन पवंग ओड़ौ उगहि। सु गुर सार मेरिय भरन॥
छुट्टति स्वामि हंसारि हंसि। तजि धमारि बंछिय मरन॥
छं० ॥ २२१० ॥

वीर बखरेत का पंग सेना को रोकना और उसका माराजाना।

छंछट छल रष्यनइ। [1]पवंग पट्टन प्रवेस किय॥
तब लगि हय गय भर। भरंति चहुआन चंपि लिय॥
बलिय बीर [2]बष रेत। पग्ग पोहनि दल [3]रुक्कयौ॥
तब लगि कँह पटनेस। झारि झंझरि झर झुक्कयौ॥
उचित सीस तस अंमरह। समर देषि संपष्यऱ्यौ॥
निठुर निसंक उप्पर पहर। बहुरि पंग पहु उंतऱ्यौ॥छं० ॥ २२११ ॥

छग्गन राय का पंग सेना को रोकना।

दूहा ॥ चंपत अच्छरि रिंढ लगि। चषि अप्पन तन देषि॥
तन तुरंग तिल तिल करन। भयौ कन्ह मन मेष॥छं०॥२२१२ ॥

कवित्त ॥ सुनहु बत्त पषरैत। लेहु ओढ़ौ दल रक्कौ॥
चहूँ ओर चंपंत। अंत ओटह किम चुक्कौ॥
पहु पट्टन पल्लानि। हटकि करि हनौ गयंदह॥
सबर बीर संग्रहौं। भीर नह परैं नरिंदह॥
रुक्कयौ [4]छगन जैचंद दल। सिर तुट्टै असिवर कढ्यौ॥
तब लगि सु तास दल रुक्कयौ। जब लग्गि कन्ह हंवर चढ्यौ॥
छं० ॥ २२१३

छग्गन का पराक्रम और बड़ी वीरता से माराजाना।

हय कट्टत भू भयौ। भये भूपयन पलट्यौ॥
पय कट्टत कर चल्यौ। करहि सब सेन समिट्यौ॥
कर कट्टत सिर भिरयौ। सिरह सनमुष होय फुट्यौ॥

(१) ए. कृ. को.-पवन। (२) ए.-बसरेत (३) मो.-लुक्यौ।
(४) ए. कृ. को.-छिंघ।

सिर फुट्टत धर धर्‍यौ । धरह तिल तिल होय तुर्‍यौ ॥
धर तुट्टि फुट्टि कविचंद कहि । रोम रोम बिंध्यौ सरन ॥
सुर नरह नाग अस्तुति करहि । बलि बलि बलि छग्गन मरन ॥
छं० ॥ २२१४ ॥

छग्गन की पार्थ से उपमा वर्णन ।

गाथा * ॥ पंडव छग्गन पग्गं । सहस गुनं पुज्जियं समरं ॥
कौरव दल कमधज्जं । रुक्कै चहुआन कन्ह मुष अग्गं ॥
छं० ॥ २२१५ ॥

छग्गन का मोक्ष। पृथ्वीराज का ढाई कोस निकलजाना ।

दूहा ॥ लरि छग्गन इचौ सुनहु । लियौ सु हूर विमान ॥
तिन झूझत निरभै गयौ । अढी कोस चहुआन ॥ छं० ॥ २२१६ ॥

कन्ह का रणोद्यत होना, कन्ह के सिर की कमल से और पंग दल की भ्रमर से उपमा वर्णन ।

चढत कन्ह सामंत हय । जय जय करहि सु देव ॥
मनहु कमल कलिमल भ्रमर । कुहर पंग दल सेव ॥ छं० ॥२२१७॥

कन्ह के तलवार की प्रशंसा कन्ह की हस्तलाघवता और उसके तलवार के युद्ध का वाक दृश्य वर्णन ।

भुजंगी ॥ भये आमुहे सामुहे सेन थट्टं। कसे सीस टोपं समाहे सु भट्टं॥
जबै ब्रंद सा द्वंद को कोप जान्यौ। तबै जंगली राव है वर पलान्यौ ॥
छं० ॥ २२१८ ॥
पयानो कियो दिग्गपालं सु कित्ती। सुअं बीर नर सिंह सा हूर पत्ती॥
नराची कढी कन्ह कै हथ्थ सूरी। महा लोह लंबी लसै लोह पूरी॥
छं० ॥ २२१९ ॥
किधौं काल कन्या किधौं काल नग्गी। किधौं धूम केतं किधो ज्वाल (१)जग्गी॥
लषे सत्रु सेना सुअं भंग सोचै। मनो लोह संघार की मींच लोचै ॥
छं० ॥ २२२० ॥

* यह गाथा मो. प्रति में नहीं है । (१) मो.-लग्गी ।

गिराये गुरं षेत घन घाय घोरैं। मद्दा बाहु मैं मत्त मैं मत्त मोरैं ॥
मच्यो मार मारं विजै सार बज्जै। कपै कायरं नारि सा सूर गज्जै ॥
छं० ॥ २२२१ ॥

परी जिरह सन्नाह तें बाहु षंडी। मनों टूक करि कंचुकी नाग छंडी॥
परे अंग अंगं धरं सीस न्यारे। मनों गरूर ने षंडि कै व्याल डारै॥
छं० ॥ २२२२॥

घनं घाय लग्गे धुकै धींग धाये। मनों नालि तें कंज नीचें नवाये॥
लगे सेल सामंत घूमंत ठट्ठै। मनों रंग मज्जीठ में बोरि कट्टे ॥
छं० ॥ २२२३ ॥

उड़ै अग्गि यों दंत दंती सनेनं। गुढ़ी पुच्छ उड्डैं मनों झाल रेनं॥
कहूं दौरि कै अग्गि बाहं उषारें। कहू लाष मायंक के बाक फारें॥
छं० ॥ २२२४ ॥

कहूं वा पचारे कहूं चोट चंडी। कहूं बीरबीराधि ज्यों मोद मंडी॥
कहूं नागिनी सी नवावै न राजी। मनों पिंड कारंड मैं पट्ठि पाजी ॥
छं० ॥ २२२५ ॥

कहू मुंड रुंडं अरुंडं सुपेली। कहू स्रोन के कुंड में मुंड मेली॥
कहुं स्रोन के सार में कंठ मेलै। मनों सिंध की धार सिंदूर ढोलै॥
छं० ॥ २२२६ ॥

झरी तेग तब बीर जमदड्ढ कड्ढी। गढी गाढ मागी किधौं मुट्ठि गड्ढी ।
किधौं सत्रु के प्रान की गैल नामी। किधौं पानि मैं लोह की जेब जामी॥
छं० ॥ २२२७॥

जबै सत्रु के लोल कों धाव घालै। मनो काल की जीभ जाहाल हालै ॥
किधौं छंद छत्ती निरत्ति निकस्सै। किधौं भेदि देही दुआरं दरस्सै ॥
छं० ॥ २२२८ ॥

कहूं ऐंचि तारीन सों अंत ल्यावै। कहुं सत्रु के प्रान को तांकि आवै॥
कहू चंपि दूसासनं भीम मारे। कहुं मुष्टिकं चंपि कीचक प्रहारै ॥
छं० ॥ २२२९ ॥

लगे सेल सामंत लग्गे न जानैं। परै स्रोन कै पंक में सीस सानै ॥
* * * * * * छं० ॥ २२३० ॥

दूहा ॥ ऐ ऐ कन्ह निवत्त कर। धर धर तुट्टिय धार ॥
पहर एक पर हथ्थरे। सिर सिर बुट्टिय मार ॥ छं० ॥ २२३१ ॥

पट्टी छूटते ही कन्ह का अद्वितीय पराक्रम वर्णन।

कवित्त ॥ पट्टै पल छुट्टंत। कन्ह धाराहर बज्ज्यौ ॥
जनुकि मेघ मंडलिय। बीर बिज्जुलि गहि गज्यौ ॥
हय गय नर तुट्टंत। बिरह तुट्टिय तारायन ॥
तुट्टिय षोडनि पंग। राय स्रोनिय भारायन ॥
हल हलिय नाग नागिनि पुरत। नागिन सिर बुठ्यौ रुहिर ॥
आवहि न संग सिंगार मन। समनि सीस मुक्कौ सु धर ॥
छं० ॥ २२३२ ॥

कन्ह का युद्ध करना। राजा का दस कोस निकल जाना।

भुजंगी ॥ जितं सार धारं जु सारंग तुट्टौ। मनों आवनं मेळसं सीस उट्ठौ॥
फटी फौज आवाज सा पंग राई। भगीजानि अद्दै धरै बग्घ धाई॥
छं० ॥ २२३३ ॥

बजी हक्क हंकार भंकार भेरी। भरी रोससेना फिरी लज्ज घेरी॥
धजा बीर बैरष्ष सावं बरैसा। लगै सीस सामंत सा अंमरेसा ॥
छं० ॥ २२३४ ॥

उड़ै गिद्ध आवद्ध तुट्टै उतंगा। किनक्कै सु ताजी चिकै हस्ति चंगा॥
भभक्कै सु धायं सु रायं हवाई। मनो मारुतं मत्त सामंत थाई॥
छं० ॥ २२३५ ॥

फिरी चक्क चहुआन की हक्क बज्जी। मनों प्रौढ़ भर्ता न जढ़ा सु लज्जी॥
इसी कन्ह चहुआन करि[1]केलि रत्ती। फिरै जोगिनी जोग उच्चार[2]मत्ती॥
छं० ॥ २२३६ ॥

दहं कोहसा स्वामि आराम छुट्टौ। पछै पंग रासेन आव्रन उट्ठौ ॥
*　*　*　।　*　*　छं०॥ २२३७ ॥

कवित्त ॥ दिष्षि सेन पहुपंग। आस ढिल्ली ढिल्ली तन ॥
चिंति कन्ह चहुआन। पट्ट छुट्यौ सुभयौ बन ॥

(१) ए. कृ. को. पंतकलो।　　　　(२) ए. कृ. को.-उच्चार मेली।

निपथ अप्प है जनिय। पंग जंपै जीवन गहु॥
सु पृथ सूर सामंत। जीह जीयत सु बैन लहु॥
आहत्त जात धंधो तिनं। सो धंधौ जुरि भंजयौ॥
बज्जियन जीव रुंध्यौ न्त्रिपति। मुकति सथ्थ हैं बज्जयौ॥
छं०॥ २२३८॥

कन्ह का कोप।

पद्धरी॥ कलहंत कन्ह कुप्यौ कराल। फरकंत मुंछ चष चढ़ि कपाल॥
चिंती सु चिंत देवी प्रचंड। कइ कहति कंक कर सूल मंड॥
छं०॥ २२३९॥

गुररंत सिंघ आसन अरोह। वामंग बाह पप्पर सु सोह॥
इहि भंति प्रसन सजि देवि दंद। तहं पढ़त छंद अनेक चंद॥
छं०॥ २२४०॥

रन रंग रहसि ठट्ठो पयंत। बरदाइ बदत बिरदन अनंत॥
पहु प्रगट बिरद जिन नरनि नाह। हंतन हनंत आजानबाह॥
छं०॥ २२४१॥

पोलंत नयन जिहि समर रंग। भारथ्थ कथ्थ भीषम प्रसंग॥
भज्जनह राय संकर पयान। घूनी न षग्ग षडल पयान॥
छं०॥ २२४२॥

देषंत सेन न्त्रप पंग रुक्कि। उद्यान म्रग्ग जनु सिंघ ढुक्कि॥
गहि संग नंग न्त्रिम्मलिय हथ्थ। सोहंत बज्र जनु तात पथ्थ॥
छं०॥ २२४३॥

पलभलिय सेन न्त्रप पंग राइ। उद्यान तपत जनु लग्गि लाइ॥
धर परत धरनि हैं छिनत सून। बाहंत गुरज सिर करत चून॥
छं०॥ २२४४॥

तरफरत तड़ित सम तेज तेग। सम सिलह सहित तुट्टत अछेग॥
बरि अंग अंग तुटि तुच्छ तुच्छ। जन मुकत नीर सर तरफि मच्छ॥
छं०॥ २२४५॥

घन घाय घुम्मि इक रहत थक्कि। बासंत षेलि मतवार जक्कि॥

है कटे च्यारि चहुआन जंग। पंचमह साजि है समर रंग ॥
छं० ॥ २२४६ ॥

चार घोड़े मारे जाने पर कन्ह का पांचवे पट्टन नामक घोड़े पर सवार होना। पट्टन की वीरता। कन्ह का पंचत्व को प्राप्त होना।

कवित्त ॥ तब सु कन्ह चहुआन। तुरिय पट्टन पल्लान्यौ ॥
हिंसि किनकि बर उठ्यौ। मरन अप्पन पहिचान्यौ ॥
उहि कर असिवर लह्यौ। गहिव गज कुंभ उपट्टै ॥
मारै लतानि बहु घाव। षुंदि अरि दंतन कट्टै ॥
वह नर निसंक है वर सु धर। पिष्षहु, चित्त कवित्तयौ ॥
बर मुंड माल हर संट्टयौ। वह रवि [1]स्थलै जुत्तयौ॥छं०॥२२४७॥

दूहा ॥ पट्टन पवंग पालानि पति। चढ्यौ कन्ह चहुआन ॥
कहर कूह कीयौ रनह। रह्यौ पंचि रथ भान ॥ छं०॥२२४८ ॥

मोतीदाम ॥ कुप्यौ कर कन्ह सु कंक कराल। बजै पग हथ्थ दुअं असराल॥
मनों रस बीर बली बिकराल। कुटै असि गड्डुरि कूटत पाल ॥
छं० ॥ २२४९ ॥

फटै सिर सारनि मार विषंड। मनो जगनाथ सु बंटिय हंड ॥
तुटै सिर जाय रहै उत सेन। अजा सुत हंति सिवा बल दैन ॥
छं० ॥ २२५० ॥

परें सब सूर धरप्पर सिंभ। मनों कटि रिम्म महा गुर गिंभ ॥
* * * * । * छं० ॥ २२५१ ॥

कन्ह के रुंड का तीस हजार सैनिकों को संहारना।

दूहा ॥ निकस्यौ न्वप प्रथिराज पहु। रह्यौ कन्ह दल रोकि ॥
हय हय हय म्रतलोक महि। जय जय चवि सुरलोक ॥छं०॥२२५२॥
लरत सीस तुट्यौ सु हर। धर उठ्यौ करि मार ॥
घरी तीन लों सीस बिन। कट्टे तीस हजार ॥ छं० ॥ २२५३ ॥

(१) मो. वह रवि रथ लै जुत्तयौ।

कन्ह का तलवार से युद्ध करना।

चोटक ॥ बिन सीस इसी तरवारि बहै। निघटै जन मावन घास महै ॥
धर सीस निरास हुअंत इसे। सुभ राजनु राह रुकंत जिसे॥
छं० ॥ २२५४ ॥

धर नांचत उट्ठि कमंध धरैं। भगलं जनुं आपस ष्याल करैं ॥
बिब षंड बिहंड सु तुंड तुटै। दुअ फार करारनि सीस फटै॥
छं० ॥ २२५५ ॥

हरदास कमद्धज आय अर्‌यौ। तिन को तन घावन सों जकर्‌यौ ॥
बल वाम इसो न रहै एकल्यौ। मनों नाहर षेटक में निकल्यौ ॥
छं० ॥ २२५६ ॥

कि मनो गजराज छुट्यौ जकस्यौ। कविचंद कहै परलो जु कर्‌यौ॥
असि दोरि दई सु जनेउ उतारि। परयौ हरदास प्रिथी पुर पारि॥
छं० ॥ २२५७ ॥

बिफर्‌यौ रन में कर कन्ह मजें। बिन मावत छुट्टि कि मत्त गजें॥
हहरें हलकै किलकै किलकी। भहरें भरि पच उमा भिलकी ॥
छं० ॥ २२५८ ॥

तिन मैं रुधि धारि चलैं झिलकी। तिन उप्परि पंति फिरैं अलिकी॥
सु [illegible] हथ्थ चुरी पलकी। सु पियें रुधि धार चलै ललकी॥
छं० ॥ २२५९ ॥

[illegible]रें [illegible]गांपति माल गहैं। बहरें बर बावन बीर बहैं ॥
[illegible] घायल घुम्मि इसे। जहरें जनु पाइ ढरंत जिसे ॥
छं० ॥ २२६० ॥

[illegible] कन्ह सु केलि करी। पहरें तरवार सु तुट्टि परी ॥
[illegible]नि मो सुध रहै निबरी। दल पंग भयान लगी अकरी ॥
छं० ॥ २२६१ ॥

तलवार टूटने पर कटार से युद्ध करना।

दूहा ॥ [illegible] टूटी तरवार कर। तब कड्डी जम दड्ड ॥
[illegible] कटारी दुहुन उर। पंच सहस भर बड्ड ॥ छं० ॥ २२६२ ॥

कटार के विषम युद्ध का वर्णन जिससे पंग सेना के पांच सहस्त्र सिपाही मारे गए।

त्रिभंगी ॥ कर कढ्ढि कटारी जम दड्ढारी काल करारी जिय भारी ॥
चंपै चर नारी बारों पारी निकसि निनारी उर भारी ॥
रस सोभत सारी डेढ करारी लंब लंबारी लंबारी ॥
उपजै सुर आरी बजि घरियारी अति अनियारी आहारी ॥
छं० ॥ २२६३ ॥

लग्गै इक आरी छोइ 'दुआरी जानि जियारी जिभ्भारी ॥
लपकै हियलारी बारह बारी भूषी भारी भाहारी ॥
जनु नागिनि कारी कोप करारी अति आकारी सा कारी ॥
भभकै रुधि भारी भभक भरारी भर भर बारी तन ढारी ॥
छं० ॥ २२६४ ॥

गिरि तें झरकारी झिरना झारी झिरै झरारी झर कारी ॥
बबकै बबकारी बीर बरारी नारद तारी दै चारी ॥
मचि कूह करारी अति उभ्भारी अगिनित पारी धर 'ढारी ॥
*　*　*　*　॥　　छं० ॥ २२६५ ॥

दूहा ॥ काल कूट कीनो विषम। पंच सहस भर बट्ट ॥
कहर कहू किन्नौ सु कर। तब तुट्टिय जमदट्ठ ॥ छं० ॥ २२६६ ॥

कटार के टूट जाने पर मल्ल युद्ध करना।

पद्धरी ॥ तुट्टी सु हथ्थ जमदट्ठ जोर। बढ्यौ सु अप्प बल अंग और ॥
गहि पाइ भुम्मि पटकै सु फेरि। धोबी कि वस्त्र सिल पिट्ट सेर॥
छं० ॥ २२६७ ॥

दुअ हथ्थ दोन नर ग्रहै मुंड। छोइ मथ्थ चूर जनु तुंब कुंड ॥
गहि हथ्थ हथ्थ मुर रे सु तोरि। गज सुंड साथ तोरे मरोरि ॥
छं० ॥ २२६८ ॥

भरि रोस हथ्थ पटकंत मुंड। भिरडंत जानि श्रीफल सु षंड ॥

(१) ए. कृ. को.-दुयारी, दुपारी।　　　(२) ए. कृ. को.-भारी।

गहि पाइ दोइ डारंत चीर । कढ़ी सु जानि फारंत भीर ॥[1]
छं० ॥ २२६९ ॥

गहि सीस मौर भंजै सु ग्रीव । फल मोरि मालि तोरै सु तीव ॥
हाकंत मत्त दैलत्त घाइ । डारंत तेव करि हाइ हाइ॥छं०॥२२७०॥
इहि विधि सु कन्ह रिनकेलि किन्न । परि अंग अंग होइ छिन्न भिन्न॥
छं० ॥ २२७१ ॥

चाहुआन का दस कोस निकल जाना ।

कवित्त ॥ चाहुआन सुज्ञानं । भूमि सर सेज्या सूतौ ॥
देषि बिअच्छरि बर । समूह बरनह सानूतो ॥
जनु परि त्रिय परहंस । हंस आलिंगन मुकयौ ॥
भर भारी कन्हह । हनंत अवसान न चुक्कयौ ॥
धर गिरत धरनि फुनि फुनि उठत । भारथ सम [1]जिन बर कियौ ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया । कोस दसह भूपति गयौ ॥ छं० ॥२२७२॥

कन्ह राय की वीरता का प्रभुत्व।कन्ह का अक्षय मोक्ष पाना।

जिम जिम तन जरजर्यौ । विहसि वर धायौ तिम तिम ॥
जिम जिम अंत रुलंत । लष्य दल तिन गनि तिम तिम ॥
जिम जिम करिवर परत । उठत जिम सीस सहित वर ॥
जिम जिम रुधिर झरंत । सघन घन बरषत सझर ॥
जिम जिम सु षग्ग बजयौ उरह । तिम तिम सुर नर मुनि[2]मन्यौ॥
जिम जिम सु चाव धरनी पर्यौ । तिम तिम संकर सिर धुन्यौ॥
छं० ॥ २२७३ ॥

गह गह गह उच्चार । देव देवासुर भज्जिय ॥
रह रह रह उच्चार । नाग नागिनि मन लज्जिय ॥
बह बह बह उच्चार । सु रह असुरन धुनि सज्जिय ॥
चह चह चहतासंत । तुट्टि पायन पर तज्जिय ॥
मुह मुहह मुच्छ कर कन्ह तुछ । चमर छत्र पह, पंग लिय ॥

(१) ए. कृ. को.-जिहि । (२) ए. कृ. को-मन्यौ ।

सिर बंध कंध असिवर ढरिग । पहर एक पट्ट न दिय ॥
छं० ॥ २२७४ ॥

पहर एक पर प्रहर । टोप असि बर बर बज्जिय ॥
बषर पषर जिन मार । पार बट्टन तुटि तज्जिय ॥
रोम रोम बर बिद्द । सिद्ध किन्नर लिन्निय बर॥
अस्त बस्त बज्जी । कपाट दद्धीच हीर हर॥
रुधि मंम हंस हरिबंम नर । दिव दिवंग मिटि अम्मिलित ॥
किन्नर कवंध घटि तंति तिन । सुबर पंग दिष्षिय [1]षिलत ॥
छं० ॥ २२७५ ॥

कन्ह के अतुल पराक्रम की सुकीर्ति ।

भुजंगी ॥ परे धाय चहुआन कन्हा करूरं । भयं पारथं बीर भारथ्थ भूरं॥
बढे सार बज्जे न भज्जै न बग्गं । नहीं नीर तीरं हरं भार लग्गं॥
छं० ॥ २२७६ ॥

हुते लज्ज भारे सु भारथ्थ नीरं । बड़े सूर अब्बं न दीसै सरीरं ॥
तिनं सम्मं भारं सम्मै नाहि हथ्थं । भरै सब्ब सस्त्रं परं बीर बथ्थं॥
छं० ॥ २२७७ ॥

झभक्कंत भारे प्रहारंत सारं । मनों कोपियं इंद्र बुट्ठे अंगारं ॥
जिती भोमि [2]चष्पे षिजै पंग इंदं । लरे लोह दीनं सरेहं गुबिंदं॥
छं० ॥ २२७८ ॥

लगै लोह लोहं पलट्टैति तत्ती । रमं सामि अप्पं न भी सार छत्ती॥
तुटे अस्त बस्तं भयं छीन भंती । असव्वार अस्वं न ढुंढै निरत्ती॥
छं० ॥ २२७९ ॥

परे मंघरे सूर मारंग पाजं । नरी रंग बज्जै कलं प्रान बाजं ॥
इसी कन्ह चहुआन करि केलि रत्ती।फिरै जोगिनी जोग उत्सार मत्ती॥
छं० ॥ २२८० ॥

टरै विप्प छूरं दसें दीन बारं । भयं अश्वमेधं सहं भ्रम्मसारं ॥
छं० ॥ २२८१ ॥

(१) ए. छ. को.-लिषत ।　　　　(२) मो. वषे ।

कन्ह द्वारा नष्ट पंग सेना के सिपाहियों की संख्या।

दूहा ॥ * एक लष्य सित्तर सहस। कट्टि किये अरि नन्ह ॥
दोय दीन भष्षै सु इम। धनि धनि न्रप्प सु कन्ह ॥
छं० ॥२२८२ ॥

धरनि कन्ह परतह प्रगट। उठ्यौ पंग न्रप हक्कि ॥
मनों अकाल संकरह हँसि। गहिय तुट्टि निधि रंक ॥छं०॥२२८३॥

अल्हन कुमार का पंग सेना के साम्हने होना।

तब झुकि अल्हन षग्ग गहि। भयौ अप्प बल कोट ॥
सिर अप्पौ कर स्वामि कों। हनो गयंदन जोट ॥ छं० ॥ २२८४ ॥

अल्हन कुमार का अपना सिर को काट कर पृथ्वीराज के हाथ पर रख कर धड़ का युद्ध करना।

कवित्त ॥ करिय पैज अल्हन। कुमार रह्यौ षग पुत्थै ॥
झरतु धार तन चार। भार असिवर नन डुल्लै ॥
रोहन रन मुंडयौ। बीर बर कारन उट्ठौ ॥
ज्यों अषाढ घन घोर। सार धारह निर बुट्ठौ ॥
पंगुरा सेन उप्पर उझरि। उभै भयन गज मुष्ष दिय ॥
उच्चरे देवि सिव जोगिनिय। इह अचिज्ज सें राज किय॥छं०॥२२८५॥

अल्हन कुमार का अतुल पराक्रममय युद्ध वर्णन। वीरया राय का मारा जाना उसके भाई का अल्हन के धड़ को शान्त करना।

पद्धरी ॥ मह माइ चित चिंतीस आल। जंप्यो सु मंच देवी कराल ॥
आश्रम्म देवि किय निज्ज धाम। कट्टयो सीस निज हथ्थ ताम ॥
छं० ॥ २२८६ ॥

मुक्कयो सीस निज अग्ग राज। हुंकार देवि किय निज्ज गाज ॥
धायौ सु धरह बिन सीस धार। संग्रह्यौ बांह बामै कटार ॥
छं० ॥ २२८७ ॥

* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।

उच्छयौ षग्ग बर दच्छ पानि । संमुहौ धीर धायौ परानि ॥
कौतिग्ग सब्ब देषंत सूर । दिष्यौ न दिठ्ठ कारन करूर ॥
छं० ॥ २२८८॥

माझौ पयठ्ठ सा सेन पंग । बज्जे करूर बज्जंत जंग ॥
कौतिग्ग सूर देषंत देव । नारद रुद्र रस हंस एव ॥छं०॥२२८९॥

षेचर रुहंस चर भूम चार । थक्के सु देषि प्राक्रम करार ॥
महमाइ सुधर उप्पर बयठ्ठ । अरि भार सार मंडिय पयठ्ठ ॥
छं० ॥ २२९० ॥

धर परै धार तुट्टै सु यार । हलहले पंग सेना सु भार ॥
दष्षनिय राय बीरया नाथ । गज चल्यौ जुद्ध सव्वह समाथ ॥
छं० ॥ २२९१ ॥

सूरमा धारह ढहन्न बीर । चंपयौ गज्ज सम्हौ सुधीर ॥
मुष लग्गि आय सम अल्ह जाम । असि झाक हयौ मुष इभ्भ ताम॥
छं० ॥२२९२ ॥

सम अंषि आर तुट्टौ सुदंत । कटि मूल पन्यौ पादप सुमंत ॥
उठ्ठयौ हक्कि बीरया नाथ । आयेव अल्ह सम लग्गि बाथ ॥
छं० ॥ २२९३ ॥

चंपयौ उअर अल्हन तास । नष्पयौ धरनि गय उड़ि उसास ॥
बीरया नाथ लघु बंध धाइ । गज चल्यौ पंग लग्गी सु दाय ॥
छं० ॥ २२९४ ॥

बिंटयौ अब्ब सेना सु धीर । आवद्ध मुक्कि सव सेन बीर ॥
चंपयौ आय गुरु गज्ज जाम । संग्रह्यौ दंत दंती सु ताम ॥
छं० ॥ २२९५ ॥

गय हयौ सीस कट्टार सार । महमाइ हँसिय दीनौ हुंकार ॥
भग्गै सु गज्ज कीनौ चिकार । ढाहयौ सबै मिलि सूर सार ॥
छं० ॥ २२९६ ॥

अल्हन कुमार के रुंड का शान्त होना और उसका मोक्ष पाना ।

कवित्त ॥ सिर तुट्टै रुंध्यौ गयंद । कढ्यौ कट्टारौ ॥
तहां सुमरिय महमाइ । देवि दीनौ हुंकारौ ॥

अमिय सद्द आयास। लयौ अच्छरिय उछंगह ॥
तहां सु भइ परतष्षि। अरित अरि कहत कहंगह ॥
अल्हन कुमार विभ्रम सुभ्यौ। रन कि विमानह मनु मन्यौ ॥
तिहि दरसि तिलोचन गंग धर। तिम संकर सिर धर धुन्यौ ॥
छं० ॥ २२९७॥

दूहा ॥ सघन घाय विझ्झयो सु तन। धरनि ढरयौ परिहार ॥
परे बहुत्तरि सुभर रन। सह्ये अल्हन सार ॥ छं० ॥ २२९८ ॥

अल्हन कुमार के मारे जाने पर अचलेस चौहान का हथियार धरना।

धुनित ईस सिर अल्हनह। धनि धनि कहि प्रथिराज ॥
सुनि कुप्यौ अचलेस भर। मुहि बल देषिव राज ॥ छं०॥ २२९९ ॥
इह चरित्त नट्टिय सु चिर। करिय राज परिहार ॥
अद्भुत क्रम देषहु न्रपति। करौं षेत सर सार ॥ छं०॥२३००॥
पऱ्यौ अलह सामंत धर। गही पंग दल अब्ब ॥
सुभर रज्जि कमधज्ज दल। सुमन राज गुर ग्रब्ब ॥ छं०॥२३०१ ॥

पृथ्वीराज का अचलेस को आज्ञा देना।

कवित्त ॥ तब जंपै प्रथिराज। सुनौ अचलेस संभरिय ॥
इह सु सूर आचरन। नही सामंत संभरिय ॥
मेंन सूर धरि कंध। राह रुंधेत गयौ धन ॥
इह अचंभ आचरन। देव दानव दैतामन ॥
मुनि दानव परहरि पर। अपर जुद्धसंधि पंगुर दलह ॥
संकही सामि संकट परै। सकल कित्ति कित्ती चलह ॥ २३०२ ॥

अचलेस का अग्रसर होना।

सुनत बेंन प्रथिराज। अचल नायौ मरंन सिर ॥
है नच्यौ सु तुरंग। बीर कंपे तुरंगधर ॥
जुद्ध सलिलह परै। लोह लहरी धर तुट्टै ॥
जल विथ्थरि कमधज्ज। घाय लग्गे आहुट्टै ॥

अचलेस अग्गि जग्गंत भर। प्रलै अग्नि वैनेच जिम॥
चहुआन अग्ग उभ्भौ भयौ। राम अग्ग हनमंत जिम॥छं॥२३०३॥

अचलेस का बड़ी वीरता से युद्ध करके मारा जाना।

भुजंगी॥ तबै हक्कियं सेन पंगं नरिंदं। दियौ आयसं जानि काल गज्जि इंदं॥
उठी फौज पंगं करै क्रूह सब्बं। बगे बग्ग कढ्ढी गजे बीर गब्बं॥
छं०॥२३०४॥

करी अचलेसं जु स्वामित्त पज्जं। करौं षंड षंडं पलं तुझ्झ कज्जं॥
नयौ सीस चहुआन अचलेस तामं। मिल्यौ आय सेना रती कंक कामं॥
छं०॥२३०५॥

जपे मंच द्रुग्गा करे ध्यान अंबी। सुने आय आसीस सा देवि लुंबी॥
बलं अचलं रूप अदभुत्त पिष्यो। भयौ मोह सब्बै घटी रुद्र दिष्यौ॥
छं०॥२३०६॥

विरम्मे धुरम्मे धु बज्जे निसानं। मिले रीठि मत्ती सिरं चाहुआनं॥
दिसं मेष लग्गी रयं रत्त भुम्मी। पयं पात जानं सयं गत्त उम्मी॥
छं०॥२३०७॥

उछंगं उछारंत अच्छी निरष्यै। दलं दंग पंगं कुरंगं परष्यै॥
कुला केलि सामंत तत्तं पतंगं। परे जुद्ध मत्ते सरित्ता सु गंगं॥
छं०॥२३०८॥

रहं भान थानं रह्यौ थक्कि रथ्थं। टगं लग्गियं भूच षेचं सु रथ्थं॥
गही पंग सेना भरं षग्ग पानं। मनो हक्कि गोपाल गोधन्न थानं॥
छं०॥२३०९॥

भरक्के धरक्के भरक्के ढरक्के। परे गज्ज बाजं सु कंधं करक्के॥
करे नाम सब्बं परे षग्ग धीरं। करी जूह मझ्झे गजेकं कठीरं॥
छं०॥२३१०॥

पयंसं सरक्कै धरक्कै धरन्नी। परे बिब्बि षंडं सबं मुष्य रन्नी॥
किलक्कारियं देवि सथ्थें सु नंचै। परै षग्ग पानं करै पंज संचै॥
छं०॥२३११॥

कवित्त ॥ करि विपैज अचलेस । सु छल चहुआन पग्गगहि[1] ॥
अरि दल बल संहस्यौ । पूरि धर भरित रुधिर दहि[2] ॥
मच्छति हैवर तिरहि । कच्छ गज कुंभ विराजहि ॥
उभर हंस उड़ि चलहि । हंस मुष कमलति राजहि ॥
चवसट्ठि सद्द जै जै करहि । छचपत्ति परि संचरिय ॥
बोहिथ्थ बीर बाहर तनै । दिल्लीपति चढ़ि उत्तरिय॥छं०॥२३१२॥

दूहा ॥ सुनत घाव बिड्यो सघन। ढन्यौ अचल चहुआन ॥
भयौ मोह कमधज्ज दल । परें पंच सें थान ॥ छं० ॥ २३१३ ॥

विझराज का अग्रसर होना।

अचल अचेत सु षेत हुअ । परिग पंग बहुराय ॥
पट्टन छर अरु पट्ट छर । उठे विंझ विरुझाय ॥ छं० ॥ २३१४ ॥
पन्यौ अचल पिष्यौ अरिय । करिय कोप पहुपंग ॥
अप्प बग्ग कढ्ढिय बिरचि । [3]हनू हनौ चबि अंग ॥ २३१५ ॥

पंग सेना का विषम आतंक वर्णन।

लघुनराज ॥ कढ्ढी सु बग्ग पंगयं । तमक्कि तोन संगयं ॥
बजे निसान नद्दयं । ठनंकि घंट मद्दयं ॥ छं० ॥ २३१६ ॥
रनक्कि भेरि भेरियं । नद्दे भरन्न फेरियं ॥
परक्कि तोन [4]पष्परं । गहक्कि भार सुब्भरं ॥ छं० ॥ २३१७ ॥
धरक्कि धाम सुद्धरं । किनक्कि सीस से सुरं ॥
भरं सु राज पग्गयं । लहंति जुत्ति जंगयं ॥ छं० ॥ २३१८ ॥
कुलं अरेह सब्बसं । अरप्पि सांइ अप्पसं ॥
अमग्ग बट्ट भंगयं । जुरे अनेक जंगयं ॥ छं० ॥ २३१९ ॥
रते सु ध्रंम्म सामयं । करन्न उंच कामयं ॥
पंती सु नेह न्त्रिम्मलं । चले सु स्वामि अचलं ॥ छं०॥२३२०॥
भरन्न तिन्न मातयं । गरूअ गुन्न गातयं ॥
तपे सु आय आइयं । नयौ सु सीस साइयं ॥ छं०॥२३२१॥

---

(१) मो. कढे। (२) ए.-राहि
(३) ए. कृ. को.-हनो। (४) मो.-षप्परं।

दियौ सु पंग आयसं। गहन्न सब्ब रायसं॥
गह्यौ बद्यौ सबैं मिली। सकै न जाइ ज्यौं दिली॥ छं०॥ २३२२॥
सुने सु बज्ज पंगयं। कढे सु षग्ग गज्जयं॥
* * * * * * छं०॥२३२३॥

पृथ्वीराज का विझराज सोलंकी को आज्ञा देना।

कवित्त॥ दल आवत पहु पंग। दिष्षि चहुआन सब्ब सजि॥
बींझराज चालुक्क। दियौ आयेस अप्प गजि॥
अह्यो धीर चालुक्क। सहि अनभंग षग्ग धरि॥
मनमुष सजि षल जूह। तास भर सु भर अंत करि॥
उच्चर्यौ ब्रह्म चालुक्क तहं। अह्यो राज प्रथिराज सुनि॥
पथ्थ धरंनि घन सूर भर। करौं पंग दल [1]दंति रिन॥
छं०॥ २३२४॥

विझराज पर पंगसेना के छः सरदारों का धावा करना। विझराज का सब को मार कर मारा जाना।

भुजंगी॥ तब नम्मि सीसं न्रपं बिंझ राजं। चल्यौ रिम्म सम्हं घनं जेम गाजं॥
जपे मंच अंबीय सा इष्ट सारं। मनं बच्च क्रम्मं धरे ध्यान धारं॥
छं०॥ २३२५॥
दियौ आय अप्पं दरस्सं सु अंबी। चढी जानि सिंघं सु आवद्ध लुंबी॥
सथं सब्ब देवी षगं षप्प रत्ती। मतं झूझ मत्ती झलकंत कत्ती॥
छं०॥ २३२६॥
सबै भूचरं षेचरं षग्ग हक्कै। नचै काल ईसं सु डकं तु हक्कै॥
अगें भूत प्रेतं फिरै भूह कारं। करं जोगिनी पच जंपै जै कारं॥
छं०॥ २३२७॥
चलै अग्ग गिद्धी समं सिद्धि साजं। सिरं सूर कौतिग्ग देषै विराजं॥
रजे देव जानं अधं आय लिष्षै। नचै बीर कौतिग्ग नारद्द दिष्षै॥
छं०॥ २३२८॥

(१) ए. कृ. को.-पंति।

लष्यौ पंग सेना सु विंभं करारं । भयं भीत भीरं सजे सूर सारं॥
मिल्यौ घाव चालुक्क सा सेन मझ्झं।वनं अंबुजं द्रभ ज्यौं आनि लुझ्झं
छं० ॥ २३२९ ॥

परे पुंडीरकं घनं सेन सारं । किनक्कै सुता जीभ जे दंत भारं ॥
धरं मुंड पूरं चलै श्रोन पूरं । पलं कीच मच्च्यौ सबं कूक रूरं॥
छं० ॥ २३३० ॥

समं सीस कट्टै तिनं सीस तुट्टै । मिलै रिन्न वट्ट तिनं आव घट्टै॥
तबै थप्परी पीठ अप्पै अंबाई। अरी हंकि ढाहै धरं घाइ घाई॥
छं० ॥ २३३१ ॥

सिरं दुष्ट आवद्ध नष्पै अपारं । भरक्कंत सेना भगी पंग भारं ॥
दिष्यौ पंग दिष्टी मधी सेना पंती। क्रम्यौ सिंघ जेमं मदं देषि दींत॥
छं० ॥ २३३२ ॥

दिष्यौ सेन दिष्टी करी हंतिकारं । क्रमे षट्ट राजा करे षग्ग धारं॥
क्रम्यौ तोमरं देषि सो क्रिस्नरायं। क्रम्यौ रुद्रसिंघं सु कंठेरि तायं॥
छं० ॥ २३३३ ॥

जयंसिंघ देवं सु जादव्व बंसी। न्रिपं भीम देवं अयौ बंभ अंसी॥
क्रम्यौ सांपुलाराय सो देविदासं। न्रिपं बीरभद्रं सु बग्घेल तासं॥
छं० ॥ २३३४ ॥

बजे आय अड्डे रसं राज बीरं । मिल्यौ पंग सम्मीप सो बिंभ धीरं॥
हयौ झाक सिंगीक बाह्न कमंधं । पऱ्यौ अश्व फुट्टी परे सिंगि उद्धं॥
छं० ॥ २३३५ ॥

न्रिपं चंद्रसेनं स मूरिज्ज बंसी। नरंसिंघ रायं सुनै षड्ड अंसी॥
दुश्रौ आय षंच्यौ भरं पंगतामं। मिले आय अड्डौ घटं न्रिप्प ठामं॥
छं० ॥ २३३६ ॥

हयौ किसन राजं हयं बिंभ राजं। पल्लयौ भोमि उच्च्यौ सु चालुक्क गाजं॥
तिने जुद्धमंतौ महंतं करारं । महा झाक बज्जी समं सार सारं॥
छं० ॥ २३३७ ॥

तिनं तार आवद्ध बज्जै चिघाई। हयौ किस्नराजं जिनै अश्व ढाई॥

असी रुद्रसिंघं हयौ विंझरायं। सिरं ताम तुट्यौ पऱ्यौ भूमि भायं॥
छं० ॥ २३३८ ॥

बिना सीस सों संग्रह्यौ रुद्रसिंघं। फिरक्यौ सु फेऱ्यौ पछाऱ्यौ परिंघं॥
गयो आसु उड्डी तनं तम्मि नंष्यौ। बिना सीस धायो चिघा जुद्ध भुष्यौ॥
छं० ॥ २३३९ ॥

जयं जंपियं देवि सो पुह्प नष्षै। टगं टग्ग लग्गी सवं सेन अष्षै॥
घटी दून सारद्ध बिन सीस झुझयौ। घनं घाय अघ्घाय अंतं अलुझयौ॥
छं० ॥ २३४० ॥

पऱ्यौ विंझराजं रच्यौ रूप जानं। बऱ्यौ मांड चालुक्क सो बंभ थानं॥
इनं देषि पंगं दलं हाय मानी। अहो बीर चालुक्क कित्ती बषानी॥
छं० ॥ २३४१ ॥

सबै छच छची न की हद्द रष्षी। भयौ चंद कित्ती तहां सूर सष्षी॥
* * * * ॥ * छं० ॥ २३४२ ॥

विंझराज द्वारा पंग सेना के सहस्र सिपाहियों का मारा जाना।

दूहा ॥ सहस एक परिपंग दल। धन धन जंपै धीर ॥
जै जै सुर बद्दै सयन। धनि धनि विंझा बीर ॥ छं०॥२३४३ ॥

विंझराज की वीरता और सुकीर्ति।

कवित्त ॥ परत अचल चहुआन। पच्छ गुज्जर रषि लाजं ॥
श्रित्त भाग सामंत। सार न्रप जल तन भाजं ॥
रूप रूप रष्षनह। दैन टट्टी बच्छारं ॥
अरि रुक्की बसि सार। कीव तन भंग प्रहारं ॥
तन तुट्टि सिरह पलचर ग्रस्यौ। बलि विंटीह बिराधि जिम ॥
इम बिटि पंति अच्छरि परी। ससि पारस रति सरद जिम ॥
छं० ॥ २३४४ ॥

कलिन कढ्यौ असियन मिल्यौ। भरहरि नहि भग्गौ ॥
अजसुन धयौ जस बनि भयौ। अमग्ग न लग्गौ ॥
पट्टन लयौ [1]जियन गयौ। अपजस नह सुनयौ ॥

(१) को. कृ.-जियतन।

और न ज्यौंदवरि न गयो। गाइंत न गइयौ॥
गयौ न चलि मंदिर दिसह। मरन जानि भ्रभयौ अनिय॥
बिंभ्र दिय दाग निलकइ मिसइ। बह बह बह भग्गल धनिय॥
छं० ॥ २३४५ ॥

दूहा॥ परत देषि चालुक्क धर। करिग पंग दल कूह॥
जिम सु देव इंद्रह परसि। रहे बौटि अनजूह॥छं०॥२३४६॥

विंझराज के मरने पर पंग सेना में से सारंगदेव जाट का अग्रसर होना।

कवित्त॥ परत बींभ्र चालुक्क। गहकि रा पंग सेन दल॥
जट्टराव सारंगदेव। आयौ तपित बल॥
सहस तीन असवार। धार धारा रस मथ्थं॥
न्रिमल नेह स्वामित्त। सिंघ रन बद्दै सु हथ्थं॥
नाइयौ सीस नंमि पंग कह। दईय सीष पहुउंच कर॥
उप्पारि बग्ग निज सेन सम। भला प्रसंसिय अप्प भर॥
छं० ॥ २३४७ ॥

फिरिय चंपि चहुआन। पंग आयस धाय सु गसि॥
गहौ गहौ उच्चारि। पंग संकर संकर रस॥
देव सोन पद्धरी। लुथ्थि लुथ्थिय आहुट्टिय॥
मरन जानि पावार। सलष संकर रस जुट्टिय॥
बाला सु वृद्ध जोवन पनह। देवल पन जिहि न्रिब्बयौ॥
भयौ ओट मंडि ढिल्लिय न्रिपति। सुबर बीर अड्डौ भयौ॥
छं० २३४८॥

पृथ्वीराज की तरफ से सलष प्रमार का शास्त्र उठाना।

दूहा॥ भयौ सलष पंम्मार जब। बज्जि दुहूं दल लाग॥
हसहि सूर सामंत मुष। मुरि कायर अभ्भाग॥ छं०॥२३४९॥

पंग सेना में से जैसिंह का सलख से भिड़ना और मारा जाना।

चोटक॥ गहि बग्ग फिर्‌यौ पति धार भरं। हय राज धरक्कत पाय धरं॥

समरे निज इष्ट सु बीर बलं। धरि संगि उरंगिनि काल पलं॥
छं० ॥ २३५० ॥

हहकारिय सीस असीस मजं। रस आवरि अप्प सु बीर गजं॥
जपि मंत्रह मंझि पलभ्भिलियं। मिलि देव अयास किलंकि लियं॥
छं० ॥ २३५१ ॥

दिषि रूप सलष्य सुपंच सयं। हहकारि सुरारिय जट्ट रयं॥
बजि आवध झाक सु हाक सुरं। कटि सीस धरड्डर ढारि धरं॥
छं० ॥ २३५२ ॥

नचि बीर सुदेवि किलक्क लियं। हकि सेनह जट्ट हला बलियं॥
जयसिंघ सु आय सनंमुषयं। सम आय सलष्य मिल्यौ रुषयं॥
छं० ॥ २३५३ ॥

बजि आवध झाक करूर सुरं। हय तुट्टि उभै भर स्रोनि ढरं॥
दुअ हक्कि उठे भर बीर बरं। मिलि आवध सावध बंछि भरं॥
छं० ॥ २३५४ ॥

असि झारि सलष्य सु षग्ग झरं। जयसिंघ विषंडस हूअ परं॥
जय सिंघ पर्यौ सब सेन लषं। गहि आवध ताहि सलष्य धषं॥
छं० ॥ २३५५ ॥

मिलि रीठ करार सुधार घरं। मुष लग्गिय भग्गिय भौर भरं॥
हहकारिय धीर दुहथ्थ कियं। पति धार धर्यौ लषि जंपिलियं॥
छं० ॥ २३५६ ॥

हल हल्लिय सेन जटं भजियं। सय तीन परे बिन हंस नियं॥
भर भग्गिय देषि सु पंग न्रपं। हहकारिय हक्किय सेन अपं॥
छं० ॥ २३५७ ॥

सब सेन हलक्किय पंग भरं। ग्रह कोपिय आंनि करूर नरं॥
* * * । * * छं०॥२३५८॥

सारंगराय जाट और सलख का युद्ध और सारंगराय का मारा जाना।

कवित्त ॥ तब सु जट्ट सारंग। सुमन समसेर समाहिय॥
बिरचि पांन करि रीस। सीस सथ्थां पर बाहिय॥

टोप कट्टि बिय टूक। फुट्टि तिम बिचि सिर फट्यो॥
सुमन षांन कम्मांन। बांन लग्गत सिर थट्यो॥
रिंझयौ छूर सुर असुर हूँ। बर बर कहि करिवर धस्यो॥
दुअ हथ्थ मथ्थ दई अहकै। धर बिन सिर धरनी ढस्यो॥
छं० ॥ २३५९॥

सलख का सिर कटना।

गाथा ॥ असि बर सिर बिरहीयं। बांनं संधांन सट्ठीयं तीरं॥
प्राहार भल्लि ढरीयं। छूरा सलहंत वाह वाह धानुष्यं॥
छं० ॥ २३६०॥

कवित्त ॥ सिर ढरंत धर धुक्कि। झुक्कि कट्ठी कट्टारिय॥
बिना कंध आकंध। सुद्ध होइ किद्ध प्रहारिय।
लग्गि सु धर फुटि पार। सुरिम मलंष करि बाह्यौ॥
षग्ग ग्राह्यौ षिझि षेत। घाव अद्धं अध बाह्यौ॥
वाहंत घाव धर धर मिल्यौ। पराक्रम्म पम्मार किय॥
धनि उभय सेन अस्तुति करय। प्रथीराज सों[1] जावु दिय॥
छं० ॥ २३६१॥

राह रूप कमधज्ज। गज्जि लग्गयौ आकासह॥
धार तिथ्थ उर जांनि। न्हान पम्मार फिर्‍यौ तह॥
रुधिर मद्दु जब करिय। जीव तनु तिल्लनि षंड अस॥
जुरित सीस असि गहिय। पांनि सोभिर्यहि केस कुस॥
करि न्रपति सार न्रप पंग दल। अब्बुअ पति जप सब्ब किय॥
उग्गह्यौ ग्रहनु प्रथिराज रवि। सलष अलष भुज दांन दिय॥
छं० ॥ २३६२॥

दूहा ॥ दियौ दान पम्मार बलि। अरि सारंग [2]समषेल॥
मरन जांनि मन मझ्झ रत। लरि लष्यन बघेल॥छं०॥२३६३॥

पंग सेना में से प्रतापसिंह का पसर करना।

कवित्त ॥ बंधव पति कनवज्ज। सिंघ परताप समथ्थह॥
सुत मातुल जैचंद। ब्रह्म चालुक्क सु दत्तह॥

(१) ए.-सों जावांदिय। (२) ए.-सन।

तन उतंग गरु अत्त। गात दीरघ हथ्थ भर॥
सहस घट्ट सेना सुभट्ट। कुल वट्ट जुड्ड जुर॥
कट्टिय सु बग्ग न्रिप नाइ सिर। जनु बद्दल बद्धी अनिय॥
जंप्पी सु अप्प सेना सरस। गह्यौ राज सुभ्भर हनिय॥छं०॥२३६४॥

पृथ्वीराज की तरफ से लष्षन बघेल का लोहा लेना। प्रतापसिंह का मारा जाना।

छंद नाराच॥ द्रिषेव सांमि स्रिम्म सों बघेल मीस नम्मयं।
करे सु वाज सुद्ध स्राज नम्म पाय सम्मयं॥
बघे सु लोल फुल्लि अंग अप्प ईस गज्जियं।
करों सु षंड अप्प स्रिम्म मांइ षेत रज्जियं॥ छं०॥ २३६५॥
करे क्रपांन असमांन धाय संप रहलं।
चिते सु कांम स्वांमि तांम गज्ज औ करुंकलं॥
हनूअ मंच जंपि जंच धारि धीर षग्गयं।
सुचिंति दुष्ट आइ तिष्ठ हक्क हक्क जग्गयं॥छं०॥ २३६६॥
मिल्यौ सु धाइ षेत ताइ धारयं कगारय।
करंत हक्क धक्क डक्क भार धार धारयं॥
परंत षंड सुंड तुंड वाजि दंत बिज्जलं।
उडंत मीस षग्ग दीस दिष्षि राज दुद्दलं॥ छं०॥ २३६७॥
नचै कमंध बीर बंध देवियं किलक्किलं।
करंत घाय एक तेक बिब्बि षंड विद्दलं॥
हलंत ग्रिद्ध नच्चि सिद्ध पंषि संप हक्कियं॥
षेलंति षेच भूचरौर गोमयं गहक्कियं॥ छं०॥ २३६८॥
बरंति बिंद अच्छरी भरं सुचित्त चिंतयं।
करै अचिज्ज कौतिगं सुरं सु जुद्ध मंतियं॥
धरंत षग्ग धाप यों प्रतष्प लष्षि लष्षनं।
भयो बघेल षग्गधार तुट्टि षग्ग तष्षनं॥ छं०॥ २३६९॥
ग्रह्यौ सु हक्किमं बघेलतं हन्यो कटारियं॥
करे सु छिन्न भिन्नयं प्रताप भूमि पारियं॥

करंत हक्क धार षग्ग षग्ग धारि नट्टरे ॥
हने सु राय पंग सेन स्रोनियं परं परे ॥ छं० ॥ २३७० ॥
करी अरूह मज्ज सिंघ लष्षनं गहक्कियं।
ढरंत धार पंग भार भज्जि हक्क हक्कियं ॥
मघन्न घाय बिड्डि ताय मुच्छि लष्षनं ढरं।
पऱ्यौ प्रताप पंग भाय पंच सौ परप्परं ॥ छं० ॥ २३७१ ॥

लषषन बघेल का वीरता के साथ खेत रहना।

कवित्त ॥ जीति समर लष्षन बघेल। अरि हनिग षग्ग भर ॥
तिधर तुट्टि धरनह्नि धुकंत। निबरंत अद्ध धर ॥
तहँ गिद्धारव हरिग। अंत गहि अंतह लग्गिग ॥
तरनि तेज रस वसह। पवन पवनां घन बज्जिग ॥
तिहि नाद ईस मथ्यौ धुन्यौ। अमिय बुंद ससि उल्लस्यौ ॥
बिडस्यौ धवल संकिय गवरि। टरिय गंग संकर हस्यो ॥
छं० ॥ २३७२ ॥

दूहा ॥ मात कमल ससि उप्परह। कन्ह चंद गोयंद ॥
निडुर सलष बरसिंह नर। साष भरै सुर इंद ॥ छं० ॥२३७३ ॥

चौपाई ॥ [1]पारस फिरि सेनं प्रथिराजं। है गै दल चतुरंगी साजं ॥
सो ओपम कविराजह ओपी। ज्यों इंद्र पुरी बलि धूरत कोपी ॥
छं० ॥ २३७४ ॥

लषषन बघेल की वीरता।

कवित्त ॥ दल सु पंग नृप चंपि। राज बिंध्यौ चतुरंगी ॥
तह लष्षन बघ्घेल। षेत संभरि अनभंगी ॥
राज कमाननि षंचि। षग्ग षोलिय षिजि जुट्टिय ॥
कै बड़वानल लपट। बीच सप्पर तें छुट्टिय ॥
करि भंग अग्गि अरि जुग्गि जुरि। मोरि मुहम मूरत्त मन ॥
हय सत्त अंत तिन एक किय। परिन समझि ढूढंत घन ॥
छं० ॥ २३७५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-परि पारस सेनं प्रथिराजं।

पहार राय तोमर का अग्रसर होना ।

दूहा परत वघेल सु मेल किय । रन रट्ठौर सु भार ॥
कनवज ढिल्लिय कंकरह । तोंवर तिह्र पहार ॥ छं० ॥ २३७६ ॥

कवित्त ॥ द्वादस दिन पच्छलौ । घटी पल बीह समग्गल ॥
सविता वासर सेत । दसमि दह पंच विजय पल ॥
मिलिय चंद निज नारि । रारि सज्ज्यौ सु रुद्र रस ॥
रा असोक साहनी । सहस सेना सु अट्ठ तस ॥
स्वामित्त भ्रम्म रत्तौ सु रह । करै प्रीति रा पंग तस ॥
लघ्यो सु जाइ चहुआन दिग । कम्यौ फौज बंधिय उक्कसि ॥
छं० ॥ २३७७ ॥

जैचन्द का असोक राय को सहायक देकर सहदेव को धावा करने की आज्ञा देना ।

पंग देषि साहनी । जात जंगल पहु उप्पर ॥
मनहु सिंघ पर सिंघ । बीर आवरिय स्वामि छर ॥
तब राधा सहदेव । देषि दिसि वाम समग्गल ॥
चषरत्ता हवि जान । अप्प उड्डर जादव कुल ॥
सिर नाइ आइ अघघा सरकि । दिय अग्याँ पहु पंग तसि ॥
संग्रहौ जाइ चहुआन कौं । रा असोक साहाय कमि॥छं०॥२३७८॥

दूहा ॥ नाइ सीस मिलि निज सयन । दिय अग्याँ बर पंग ॥
बंधि अनिय द्वादस सहस । बाजे बज्जे जंग ॥ छं० ॥ २३७९ ॥

सहदेव और असोक राय का पसर करना ।

सजिय अप्प सहदेव दल । अनिय सु राय असोक ॥
मिल्यौ जाइ मध्ये सु भर । अप्प चिंति उधलोक ॥ छं०॥२३८०॥
रा असोक सहदेव रा । मिलि उभ्भय दल येक ॥
सहस बीस दल भर जुरिग । चलें सु तत्ते तेक ॥ छं०॥२३८१॥
प्रथीराज बांई दिसा । [1]आवत षल दल देषि ॥
गहिय बग्ग पाहार सम । तपि दिय आयस तेष ॥छं०॥२३८२ ॥

(१) मो.-आवत देख दिलेस ।

पृथ्वीराज को तोमर प्रहार को आज्ञा देना।

कवित्त ॥ दल सु पंग रठ्ठिवर। जाम चंपिय दिल्लिय भर ॥
तब जंपिय प्रथिराज। पंड वंसह पाहर नर ॥
हरि हथ्थां हरि गहिहि। बांम रष्षै इहि बीरह॥
सेस सीस कंपियै। डट्ठ डुल्लिय भुवि मीरह ॥
कविचंद एह आंपुन्न सुनु। बीर मंच उच्चर भन्यौ ॥
ठठुक्यौ सेन जयचंद दल। जए तोंअर टट्टर धन्यौ॥छं०॥२३८३॥

नाइ सीस प्रथिराज। अप्प कस्स्यौ हय हंसह ॥
तारापति सम तेज। पिचि वाहन हरि वंसह ॥
[1]हंस हंस आपेप। इष्ट मंचं उच्चारिय ॥
चल्यौ जंपि मुष राम। स्वामि भ्रम्मह संभारिय ॥
[2]जोगनी जूह दुअ हुअ। बीर जूह अग्गै सु नचि ॥
निरषंत अमर नारद निगह। अच्छरि रथ सीसह सु रचि ॥
छं० ॥ २३८४ ॥

पहारराय तोमर का युद्ध करना। असोक राय का मारा जाना।

पद्धरी ॥ उप्पारि षग्ग तोमर पहार। गज्जयौ सूर सज्जे सु सार ॥
उद्दंत रूप अरि बीस दिठ्ठ। सौ एक रूप अभिलयंत जिट्ठ ॥
छं० ॥ २३८५ ॥

साहस्स तेग बाहंत ताम। दिष्षे सु षेत षल स्वामि काम ॥
धारा सुधार बाहंत बीर। गज्जयौ सभ्भ मनु करि कंठीर ॥
॥ छं० २३८६ ॥

तुट्टंत सीस उड्डंत रिष्ट। अव मंक बुट्टि मनु उपल वृष्टि ॥
तुट्टंति बाह [2]उडि सघन घाय। उड्डंत चिल्ह मनु पंष पाइ ॥
छं० ॥२३८७॥

धर धर धरव्वर परै भार। कट कट्ट षग्ग बज्जै करार ॥

---

(१) ए.-हंस हेस आयप्प हअ। (२) मो. मनुं।

तुट्टै विषग्ग उड्डै अकास। चमकंत तड़ित मनु मेघभास॥
छं०॥ २३८८॥

परसंत पूर श्रोनं प्रवाह। गहरंत कंठ सट्टी सुबाह॥
आइयौ राय अस्तोक गज्जि। दो हथ्थ करारी संग सज्जि॥
छं०॥ २३८९॥

बेहथ्थ हयौ तोमर पहार। भिट्टयौ न अंग तुट्टी सु सार॥
संग्रह्यौ कंठ तोमर पहार। पच्छारि सीस उप्पर उभारि॥
छं०॥ २३९०॥

करि षंड षंड नंष्यौ धराउ। बिन अंस उड्यो [1]जरनी निहाउ॥
रिन मझ्झ पर्यौ अस्तोक जानि। ओहठ्यौ पेंड पंचह परांनि॥
छं०॥ २३९१॥

कवित्त॥ धरिय भार पाहार। पग दल बल ढंढोल्यौ॥
[2]हय गय नर नर पतिय ताम। बंबर झंझोल्यौ॥
छच पच मारुत महंत। अरि बांन उड़ाइय॥
सार मार संभार चंद। जिम [3]मुष मुष सांइय॥
आनंद केलि कलहंत किय। इय हिलोल दल दुम्भरिय॥
तों अग चिवालमारह सुभर। सिरसुबर अझ्झर झरिय॥
छं०॥ २३९२॥

पहार राय त[illegible] और सहदेव का युद्ध। दोनों का [illegible]मारा जाना।

भुजंगी। तबै राइ सहदेव देवंग वीरं। धरे धाइयौ संग से हथ्थ धीरं।
हयौ राइ पहार सों कंठ मन्नौ। परे फुट्टि उड्डी उकस्सौ सु अन्नौ॥
छं०॥ २३९३॥

ग्रह्यौ सेल संगै सह देवि तामं। [4]चल्यौ बथ्थ हथ्थं उठ्यौ हंस धामं॥
ढरे दून कज्ज बरकू अचेतं। दुनै सूर जुझ्झै उभै स्वामि हेतं॥
छं०॥ २३९४॥

(१) ए. कृ. को.-धरनी। (२) ए. कृ. को.-हय गय नर पतिय पताष।
(३) ए. कृ. को.-सुष। (४) ए. कृ. को.-चप्यौ।

परंतं पहारं उठी श्रोन धारं। उठे बीर मत्ते सु रत्ते करारं॥
सहस्सं सु एकं सयं दून बीरं। करै अस्सि उतंग सा गात धीरं॥
छं०॥ २३९५॥

पंग नेत बंधे किलक्कार उट्ठे। नचै जाम बीरंत रत्ते सु रूट्ठे॥
धरक्कै सु गोमं धरक्कै धरन्नी। भरक्कंत सेना स भग्गौ परन्नी॥
छं०॥ २३९६॥

ग्रहै गज्ज दंतं फिरक्कंत उड्डै। पियै श्रोन धारं गजं पात गुड्डैं॥
भयो पंग सेनं सनेहंति कारं। फिरै जोगिनी सद्द मद्दी फिकारं॥
छं०॥ २३९७॥

भगी सेन रायं भरक्कै सु पंग। धरी एक वित्ती भरं बित्ति जंगं॥
उड़ै बीर अस्सं सु आकास मंगै। पहुं राउ पाहार गौ मुत्ति संगै॥
छं०॥ २३९८॥

दूहा॥ गरजै दल जैचंद गुर। धुर भग्गौढिल्लीस॥
वासर जीजै वेढि थिय। चंद चंद रवि रीस॥ छं०॥ २३९९॥

जंघार भीम का आड़े आना।

तब जंघारो भीम भर। स्वामि सु अग्गे आइ॥
गहि असिवर उभ्भन उससि। कमध कमद्धा धाइ॥ छं०॥२४००॥

कवित्त॥ रा कमधज्ज नरिंद। अड्ड षोहनिय तु[illegible]यि॥
तिन महि अड्डमि जक्क। जीन नग [illegible]गिय॥
तिन छुट्टत हल वलत। साहि सामंत[illegible]ढ़॥
ते थल थक्कवि रहित। चहुआन सु [illegible]न रढ़ि॥
सिथि सिथिल गंग थल वल अबल। परसि प्रांन[1]मुक्किन रहिय॥
जुरि जोग मग्ग सोरों समर। चवत जुद्ध चंदह कहिय॥
छं०॥ २४०१॥

पंग सेना में से पंचाइन का अग्गसर होना।

कुंडलिया॥ सिलहदार पंचाइनौ। करि जुहार पग धार॥
पंग समुद मझ्झहि परिय। वजि धुंम्मरि ग्रह पार॥

(१) ए.कृ. को.-मुक्किय।

वजि धुम्मिरि गह पार । सार जुथ परिय उदक मथि ॥
ज्यों बड़वानल [1]लपट्ट । मध्यि उट्ठंत नरं नथि ॥
सार भार तन झरिग । सीस तुट्टौ धरनी लहि ॥
जोगिनि पुर आवास। मिलन [2]हंहं हय सीलहि ॥ छं० ॥ २४०० ॥

जंधार भीम और पंचाइन का युद्ध ।

कवित्त ॥ दहन पंथ सो इष्ट । देव दाहिन देवं फिरि ॥
घात वज्ज निग्घत्ति । हकि चहुआन मझिझ परि ॥
सुबर बंध कमधज्ज । धाक बज्जे हवकेरव ॥
हय जुट्टें हर हरी । जुड्ड वज्जी जुझझस रव ॥
मिलि सार धार विषमह विमल । कमल सीस नच्चै कि जल ॥
सिव लोक सेत नन मीन धन । सुर सुर कंदल बत्त फल ॥
छं० ॥ २४०१ ॥

पृथ्वीराज का सोरों तक पहुंचना ।

दूहा ॥ पुर सोरौं गंगह उदक । जोग मग्ग तिथ वित्त ॥
अद्भुत रस असिवर भयौ । बंजन बरन कवित्त ॥
छं० ॥२४०२ ॥

किस सामंत के युद्ध में पृथ्वीराज कितने कोस गए ।

कवित्त ॥ बेद कोस हरसिंघ । उभै चियत्त बड़ गुज्जर ॥
काम बान हर नयन । निडर निड्डुर भुमि [3]सुभझर ॥
छग्गान पट्ट पलानि । कन्ह षंचिय द्रग पालह ॥
असह बाल द्वादसह । अचल विग्घा गनि कालह ॥
शृंगार बिंझ मलषह सुकथ। लषन पहारति पंचचय[4] ॥
इत्तने सूर सथ झुझझ तह । सोरौं पुर प्रथिराज अय ॥
छं० ॥ २४०३ ॥

(१) ए. कृ. को.-पल्लट । (२) ए. कृ. को. हंतं ।
(३) ए. कृ. को.-सुझर । (४) मो.-सय ।

अपनी सीमा निकल जाने पर पंग का आगे न बढना और महादेव का दस हजार सेना लेकर आक्रमण करना।

पत्यौ पेषि पाहार। राज कमधज्ज कोप किय॥
पहु सोरों प्रथिराज। निकट दिष्यो सुचिंति हिय॥
गयौ राज जंगलिय। नाथ कनवज्ज मन्नि मन॥
जग्य जोग बिग्गार। लहिय जै पुनि हरिय तिनु॥
आइयौ राइ महदेव तब। नाय सीस बोल्यौ बयन॥
संग्रहों राज प्रथिराज को। सहों पहु जंगल सयन॥
छं० ॥ २४०४ ॥

इम कहि सुत सामंत। देव सजि चल्यौ सेन बर॥
लौल नाम पम्मार। प्रिथक परसंसि अप्प भर॥
जपि वाया जगनाथ। थान उच्चारिय धीरह॥
अनी बंधि दस सहस। अप्प सज्जै पर पीरह॥
ठननंकि घंट भेरिय सबद। पूरि निसान दिसांन सुर॥
महदेव चल्यौ प्रथिराज पर। मिलिय जुद्ध मनु देव दुर॥
छं० ॥ २४०५ ॥

महादेवराव और कचराराय का द्वंद्व युद्ध। दोनों का मारा जाना।

पद्धरी ॥ आवंत देषि महदेव सेन। उप्पारि सीस भर सज्जि गेन॥
मातुलह सयन संयोगि बंध। बर लहन धीर भर जुद्ध नंध॥
छं० ॥ २४०६ ॥

कचराराय चालुक धीर। आवंत देषि दल गज्जि बीर॥
सिरनाइ राज प्रथिराज ताम। बल कलिय बदन उरकंक काम॥
छं० ॥ २४०७ ॥

इक वार पच्छिल लग्गो सु घाय। जित्तए सुभर तिन पंग राइ॥
संजोगि नेंग दिय कंठ माल। पहिराइ कंठ बज्जी भुआल॥
छं० ॥ २४०८ ॥

गज्जियो भीम जिम सुमन भीम । पेषेव जूह मनुहरि करीम ॥
कस्सियो तंग बज्जी सु नेत । संकलपि सीस प्रथिराज हेत ॥
छं० ॥ २४०९ ॥

आयौ समुष्प रिम्मह समथ्थ । चिभाग संग किय सीघ्र हथ्थ ॥
उच्चरिय मंच भैरव कराल । उच्चरिय ध्यान चिपुराइ बाल ॥
छं० ॥ २४१० ॥

किल किलिय किह भैरवह जाम । हुंकार देवि दीनो सु ताम ॥
परदल पयट्ठ उप्पारि बग्ग । षुल्लिय कपाट भर स्वर्ग मग्ग ॥
छं० ॥ २४११ ॥

बाहंत षग्ग भर सीघ्र हथ्थ । कुर सेन मद्धि मनु मिलिय पथ्थ ॥
बाहंत षग्ग आयुध अपार । धर धार धरनि मधि भरनि भार ॥
छं० ॥ २४१२ ॥

किलकार बीर चालुक्क सथ्थ । नाचंत भूत भैरव सु तथ्थ ॥
मुष मुष्प लग्गि चालुक्क [1]घाय । बिबि पंड धरै धर तुट्टि धाय ॥
छं० ॥ २४१३ ॥

कोतिग्ग रास देषंत देव । नारद बिनोद नंचीय एव ॥
बर बरै इच्छ अच्छरिय ताम । पलचर पल पूरै रुहिर काम ॥
छं० ॥ २४१४ ॥

रस रुद्र भयौ भर जुद्ध बीर । पूजंत सब्ब चालुक्क धीर ॥
चालुक्क तेक रस रमै [2] रास । चमकंत षग्ग कर बिज्जु भास ॥
छं० ॥ २४१५ ॥

महदेव सेन हल हलत देषि । ग्रह राह जेम दल ग्रसत [3]पेषि ॥
घन पूरि घाव चालुक्क अंग । बर तत्त सुमत्तन वधिय रंग ॥
छं० ॥ २४१६ ॥

धाइयौ ताम महदेव तम्म । चालुक्क हयौ संगी उरम्म ॥
दुअ लग्गि बीर मिलि विषम घाव । आवद्ध तुट्टि दुअ बीर ताव ॥
छं० ॥ २४१७ ॥

---

(१) मो.-घाइ ।　　(२) मो.-राहु ।　　(३) मो.- देषि ।

लग्गे सु बथ्थ समवय सरूप। दुअ अट्ठ बरष दुअ भ्रम्म भूप॥
लग्गे सु कंठ असि उट्ठि ताम। दुअ भुज्झि भूप दुअ सामि काम॥
छं०॥२४१८॥

दुअ चले मुक्ति मारग्ग सग्ग। विम्मान जानि विधि विचित्र लग्ग॥
अच्छरिय उंच रुधें सु मेव। जय जय चवंत नँषि कुसुम देव॥
छं०॥ २४१९॥

भेदे सु उरध मंडलह दून। बर मुक्ति गत्ति प्रम्मे सु ऊन॥
[1]दुअ ढरे गंग मह जल प्रवाह। उप्रमे ताम गुन बंध थाह॥
छं०॥ २४२०॥

लीलराय प्रमार और उदय सिंह का परस्पर घोर युद्ध करना और दोनों का मारा जाना।

कवित्त॥ लीलराइ पम्मार। राइ महदेव सु सेवं॥
सहस तीन थट सुभट। आय उप्पर बर केवं॥
मार मार उच्चार। मार गज्जे मुष मारह॥
तेन मुष्ष जगदेव। धार बज्जिय पति धारह॥
धरि ब्योम सीस सजि सामि भ्रम। झर उझार दुझ्झरति झर॥
मानों कि बघघ गड्डुर बिचह। झपट लपट लेयंत भर॥
छं०॥ २४२१॥

बेली भुजंग॥ भुरं भार भट्टं बजे घट्ट घट्टं। लगे पंग भट्टं अगी झल्ल पट्टं॥
भगे भट्ट जानं दहं बट्ट मानं। परे गज्ज बानं भरं थान थानं॥
छं०॥ २४२२॥

तमै नील देवं अयौ देव मुष्षं। दुअै बीर बाहं दुअै सामि रुष्षं॥
उदै दीन पुत्तं उदैसिंघ देवं। इतै राव बंभं उतै देव सेवं॥
छं०॥ २४२३॥

दुअंगात उच्चं सिरं उंच धारे। मनो सेन कोटं मझारं मुनारे॥
करं नंषि[2]भ्रंमं पगं दोय हथ्थं। उझारै सु मथ्थं दुअं टोप[3]कथ्थं॥
छं०॥ २४२४॥

(१) ए. कृ. को.-दुअठंर गंगा मझीं। (२) मो.-भ्रमं, को.-चर्म। (३) मो.-कट्टं।

फटै उत्तमंगं टहंनं सुरंगं । गिरं आनि चल्लं रतं धार गंगं॥
घरी एक धारं अपारंति वग्गै । षगं सार तुट्टै जमंदड्ढ लग्गै ॥
छं० ॥ २४२५ ॥
हये जर जरं उनके उनाही । ढरे दोइ कल्लेवरं गंग माहीं ॥
सिरं सुम्मनं देव ब्रष्षा विराजै । पछै सूर धारं बरं रंभ [1]छाजै ॥
छं० ॥ २४२६ ॥
तिनं सीस देवी दियौ सामि काजै। बरं तास कित्ती जगम्मै विराजै॥
जमं ठौर ठेलै गयौ ब्रह्म थानं। जिनै जित्तयौ लोक परलोक मानं॥
छं० ॥२४२७ ॥

कचराराय के मारे जाने पर पंग दल का कोप करके धावा करना ।

कवित्त ॥ गरजे दल जै चंद । सीस पहु देन नरेसर ॥
समर सूर सामंत । सु पुनि झुझ्झ नर सुब्बर ॥
पऱ्यौ भार पम्मार । अंग एकै आचग्गर ॥
वासुर तीजै वेढि । कलह वेयक्कि बाहि करि ॥
जगि देवन दानव देव जगि । पार सार उरवार पनि ॥
थंभयौ कटक षोहनि विकट । [2]देव सु एवं बद्दियनि ॥छं०॥२४२८॥
दूहा ॥ कौन सहस मे तीन सय । सूर धीर संग्राम ॥
बधि पम्मारह बीर बर । दम गै अस्सव ताम ॥ छं० ॥ २४२९ ॥
कवित्त ॥ दुहु पष्षां गंभीर । दुहुं पष्षां छच पत्त ॥
दुहु पष्षै राजान । दुहुं पष्षै रावत्त ॥
दुहु वाहाँ दुज्जरह । मात मातुल सुष लष्षै ॥
कंठमाल सुभ कंठ । नाग [3]साजों गह रष्षै ॥
संकटह स्वामि बंकट विकट । चिघट रुक्कि कमधज्ज दल ॥
अदित वार दसमिय दिवस । गरुअ गंग भ्रंमुंग जल ॥
छं० ॥ २४३० ॥

(१) मो.-साजै । (२) ए. कृ. को.- देव सुए षग वद्दिय ।
(३) ए. कृ. को. नाग सौं जोग सुरष्षै

कचराराय का स्वर्गवास ।

संगराय भानेज । राय कचरा अरि कच्चर ॥
गरुअ ध्रंम स्वामित्त । सार संमुह रन अच्चर ॥
पट्टन सिर अरु पट्ट । गंग घट्टह (१)घन नष्ष्यौ ॥
जै जै जै जपि सह । नह त्रिभुअनपति भष्ष्यो ॥
पष्षरत पलिय वज्जिय बिहर । उग्रराय रट्ठौर धर ॥
चालुक चलंत सुभ स्वरगमन । ब्रह्म अरघ दीनौ सु धर ॥
छं० ॥ २४३१ ॥

कचराराय का पराक्रम ।

दूहा ॥ परें पंच सें पंग भर । परि चालुक सु तप्प ॥
बिलष बदन प्रथिराज भय । बंछिय मरन सु अप्प ॥छं०॥२४३२॥
निसि नौमिय विति्तय लरत । दसमिय पहु रिति च्यार ॥
पंगपहुमि प्रथिराज भिरि । अथ्थिग आदित वार ॥ छं०॥२४३३॥

सब सामंतों के मरने पर पृथ्वीराज का स्वयं कमान खींचना ।

कवित्त ॥ घरिय सत्त आदित्त । देव दसमिय दिन रोहिनि ॥
रुक्यौ तथ्थ प्रथिराज । पंग मध्यह अध षोहनि ॥
पंच अग्ग च्यालीस । सत्त सामंत सु रत्तिय ॥
पंच अग्ग पंचास । मझि सथ्थह सेवक तिय ॥
वामंग तुरंगम राज तजि । तोन सज्जि सिंगिनि सु कर ॥
बंदेव चंद संदेह नह । जीवराज अचरिज्ज नर ॥छं०॥२४३४ ॥

जैचंद का बराबर बढ़ते आना और जंघारे भीम का मोरचा रोकना ।

दूहा ॥ (२)गंग पुट्ठि अग्गै बिहर । ब्रत बंकौ जल किंदु ॥
उव्यौ छत्र न्रप पंग पर । मनु हेम दंड पर इंदु ॥छं०॥२४३५ ॥
गरजे दल जैचंद गुर । धुर भग्गे दिल्लेस ॥

(१) ए. कृ. को.-घट । (२) मो.-मंग ।

वासुर तीजै बेंठितं । चंद चंद रवि नेस ॥ छं० ॥ २४३६ ॥
तब जंघारो भीम भर । स्वामि सु अग्गै आय ॥
गहि असिवर ओड़न उक्कसि । [1]कमध कमद्धा धाय॥छं०॥२४३७॥
कवित्त ॥ जंघारौ रा भीम । स्वामि अग्गै भयौ ओड़न ॥
दुहुं बाहाँ सामंत । दुहूं द्वादस दस को दन ॥
पच्छ सथ्थ संजोगि । कलह कंतिय कोतूहल ॥
मदन रंभ मोहनिय । सुरां अमृत तद्दूलह ॥
दुहुं राय जुद्ध दुंदज भयौ । चाह,आन रट्टौर भर ॥
धरि ध्यारि श्रोन असिवर झल्यौ । मनहु धुम्म अग्गा सु झर ॥
छं० ॥ २४३८ ॥

जंघारे भीम का तलवार और कटार लेकर युद्ध करना ।

भुजंगी ॥ झरं झार झारंति झारंति झारं। ढरं ढार ढारंति ढारंति ढारं॥
तुटै कंध कामंध संधं उसंधं। बहै संगि षग्गं रतं रंभ रंभं ॥
छं० ॥ २४३९ ॥
चवं सूर सेलं सरं सार सारं । लगै कोन अंगं विभंगं विहारं॥
चलै श्रोन सारं [2]विरंतं सुधारं । मनों वारि रुहं अनंतं प्रनारं॥
छं० ॥ २४४० ॥
बजै घट्ट घट्टं सबद्दं सबद्दं । नको हारि मन्नै नको भेटि हद्दं ॥
तुटै षग्ग लग्गै गहै हथ्थ बथ्थं । मनों मल्ल जूझंत बेजानि बथ्थं॥
छं० ॥ २४४१ ॥
बढी श्रोन धारा रनं पूर पूरं । चढ़ी सक्ति ऊभी कमद्धंति सूरं ॥
जयंतं जयंतं चवंसट्ठि सद्दं । असी तार झारं नचे नेम नद्दं ॥
छं०॥ २४४२ ॥
बजै जंगलीसं विडारं विडारं । करं धारि झारं सकत्ती करारं ॥
करी फुट्टि सन्नाह प्रगटंत अच्छी । मुषं भीमरा कंध काढंत मच्छी॥
छं० ॥ २४४३ ॥

(१) मो.-कमधज कमधां धाय । (२) ए. कृ. को.-चिरत ।

धरे बारडं सिंह आघाय घायं। ¹बरं बार सुष्षं अगंमक्क धायं ॥
जिते सेन बिग्घा कटे षग्ग हक्कं। परे कातरंसं भयानंक टक्कं ॥
छं० ॥ २४४४ ॥

लषं चंपियं सीस बहु आन धायं। मनो सिंघ भम्यौ मदं दंति पायं॥
लघं लाघ बंकौ न बाहंत बंकं। मनों चक्क भेदंत सीसं निसंकं॥
छं० ॥ २४४५ ॥

कटे टट्टरं टूव सन्नाह बट्टं। बहै षग्ग झट्टं मनो बीज छट्टं॥
मधे श्रोन फेफं सु डिंभं फरक्कं। मनो मभ्भ नाराज छुट्टंत झक्कं॥
छं० ॥ २४४६ ॥

त्रिपं पोषि धारा धरै धाय धायं। उठै दंग बग्गं मनों लष्षरायं॥
घवं पंग आनं गहन्नं गहन्नं। जगन्माल भम्यौ सुन्यौ सीस धुन्नं॥
छं० ॥ २४४७॥

²करनाटिया राय रुद्रंतिरायं। रवै वाम दच्छिन्न राजंग सायं ॥
बहै बिंभ मालं करीवार सथ्थं। दुअं लग्गि झाकं मनो कोपि पथ्थं॥
छं० ॥ २४४८ ॥

कलेवार गट्टं परे छंदि बंभं। मनों श्रंग पंछी सु उड्डंत संभं ॥
³नरं हक्क बज्जी सु रज्जी सकत्ती। रची पुष्प विष्टं षहं देवि पत्ती॥
छं० ॥ २४४९ ॥

असी झाक बज्जंत रज्जंत सूरं। भयं चक्क जुड्डं भयं देव दूरं ॥
दलं टून धारों ढरै षंड षंडं। बरं संग्रहै ईस सीसंति रुंडं ॥
छं० ॥ २४५० ॥

थनं थोर हू राग सूरं बरंती। रचे माल कंठं कुसम्मं हरंती ॥
सजै सेन ⁴आवन्न वन्नं विमानं। वरं रोहि तथ्थं क्रमं अप्पथानं॥
छं० ॥ २४५१ ॥

जयं सद्द बद्दं पलं श्रोन चारं। थक्यौ सूर नारद्द नच्यौ विहारं॥
घनं घाइ अघघाइ सामंत सूरं। धरे मंडलं सब्ब सामुच्छि जूरं॥
छं० ॥ २४५२ ॥

(२) ए. कृ. को.-मार। (१) मो.-करैं ठाटिया (३) ए. कृ. को. भरं, झरं।
(४) ए. कृ. को.-कावन्न।

दह पंच पंगं परे सूर सारं। भरं राज सामंत हथ्थें हजारं॥
भयं अदभूतं रसं बीरं बीरं। घटी दून जुद्धं बिहानं बिहारं॥
छं० ॥ २४५२ ॥

तब जंघारौ जोगी जुगिंद। कत्ती कट्टारौ॥
असि बिभूति घसि अंग। पवन अरि भूषन हारौ॥
सेन पंग मन मथन। [1]ब्रम्म पग गयंद प्रहानं॥
[2]पलति मुंड उरहार। सिंगि सद बदन बिषानं॥
आसन सु दिट्ठ पग दिट्ठ बर। सिरह चंद अंमृत अमर॥
मंडली राम रावन भिरत। नभौ बीर इत्तौ समर॥छं०॥२४५३॥

जंघारे भीम का मारा जाना।

घरिय च्यार रवि रत्त। पंग दल बल आहुट्यौ॥
तब जंघारौ भीम। भ्रंम स्वामित तन तुट्यौ॥
सगर गौर सिर मौर। रेह रष्षिय अजमेरिय॥
उड़त हंस आकास। दिट्ठ घन अच्छरि घेरिय॥
जंघार सूर अवधूत मन। असि बिभूति अंगह घसिय॥
पुच्छयो सु जान त्रिभुवन सकल। को सु लोक लोकैं बसिय॥
छं० ॥ २४५४ ॥

पंगदल की समुद्र से उपमा वर्णन।

भय समुंद जैचंद। उतरि जै जै कौं पारह॥
अदभुत दल असमान। अन्न बुड्डहि करिवारह॥
तहां बोहिथ हर ब्रह्म। भार सब सिर पर पधर्यौ॥
उद्धरि उद्ध कुमार। धनि जु जननी जिहि जनयौ॥
नन करहि अवर करिहैं नको। गौर बंस अस बुभझयौ॥
सो साहिब सेन निबाहि करि। तब अप्पन फिरि झुज्झयौ॥
छं० ॥ २४५५ ॥

बर छंड्यौ दुहु राय। बरुन छंड्यौ बर बारर॥
सिर यक्यौ [3]सहि सार। बरुन थक्यौ गहि सारर॥

(१) मो.-ब्रह्म। (२) ए. कृ. को. लपत। (३) ए.-सिरमार।

रव थक्यौ रव रवन। रवन थक्यौ मुष मारह ॥
धर थक्यौ धर परत। मनुन थक्यौ उच्चारह ॥
पायौ न पार पौरुष पिसुन। स्वामिनि सह अच्छरि जप्यो ॥
जिम जिम सु सिंह सम्मीर सिव। तिम तिम सिव सिव सिव तप्यो॥

छं० ॥ २४५६ ॥

पृथ्वीराज का शर संधान कर जैचन्द का छत्र उड़ा देना।

एक अंग तिय सकल। [1]विकल उच्चरिय राज मुष ॥
भ्रकुटि अंक बंकुरिय। अंसु तिहि लिषिय मद्धि रुष ॥
थिय विमान उप्पारि। देव डुल्लिय मिलि चल्लिय ॥
भ्रम भ्रमंकि आयास। पत्ति अच्छरि [2]अलि मिल्लिय ॥
एक चवै कवि कमल असि। मुकति भ्रंक करि करिय न्रप ॥
तन राज काज जाजह भिरिग। सु मति सोह भह देव वपि ॥

छं० ॥ २४५७ ॥

चार घड़ी दिन रहे दोनों तरफ शान्ति होना।

घरिय च्यारि दिन रह्यौ। घरिय दुअ वित्तक वित्तौ ॥
नको जीय भय मुक्यौ। नको हार्यौ न को जित्तौ ॥
पंच सहस सें पंच। लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय ॥
[3]लिषे अंक बिन कंक। न को भुज्झयो बिन [4]षुट्टिय ॥
दो घरिय मोह मारुत बज्यौ। करन अंभ बरष्यो निमिष ॥
[5]तिरिगत्त राज तामस बुझयौ। दिषिय पंग संजोगि मुष ॥

छं० ॥ २४५८ ॥

जैचन्द का मंत्रियों का मत मान कर शान्त हो जाना।

[6]मुरझानौ जैचंद चरन। चंप्यो हम बर तर।
उतरि सेन सब पर्यौ। राव कह्यौ हरवं कर ॥
लेहु लेहु न्रप करय। चवन चहुआन बुलायौ ॥

(१) ए.-चिकल। (२) मो.-अरि मोलिय।
(३) ए. कृ. को.-षिले। (४) मो.-कुट्टिय। ए.-नको जित्यौ न विषुट्टिय।
(५) ए. कृ. को.-तिहि लगाता। (६) ए. कृ. को.-मुरझानों।

सूर बीर मंत्री प्रधान। मिलि कै समुझायौ ॥
उत परे सथ्थ इत को गनै। असुगुन भय राजन गिरयौ ॥
घर हुंत पलान्यौ अमत करि। सीस धुनत नर वै फिर्‍यौ ॥
छं० ॥ २४५९ ॥

दूहा ॥ नयन नंषि करि [1]कनक नह। प्रेम समुद्दह बाल ॥
प्रथम सु पिय ओड़न उरह। मनु भुलवति मुद्द मराल ॥
छं० ॥ २४६० ॥

जैचन्द का पश्चात्ताप करते हुए कन्नौज को लौट जाना।

कुंडलिया ॥ दिष्षि पंग संजोगि सुष। दुष किन्नौ दल सोग ॥
जग्य जर्‍यौ राजन सघन। अवरन हुति संजोग ॥
अवरन अहुति संजोगि। किति अग्गी जल लग्गी ॥
ज्यौं पल घट आदर्‍यौ। लोय पुच्चिय छल मग्गी ॥
सुष जीवन अरु लाज। मनहि संकलपि सिलष्षी ॥
[2]निबल एम संकलै। आस लग्गी मय दिष्षी ॥ छं० ॥ २४६१ ॥

दूहा ॥ इह कहि परदच्छिन फिरिग। नमसकार सब कीन ॥
दान प्रतिष्टा तू अबर। मैं दिल्ली पुर दीन ॥ २४६२ ॥
चढि चहुआन दिल्ली रुषह। उड़ी दुहूं दल षेह ॥
छंडि आस चहुआन पहु। गयौ पंग फिरि ग्रेह ॥ छं० ॥ २४६३ ॥

जैचन्द का शोक और दुःख से व्याकुल होना और मंत्रियों को उसे समझाना।

कवित्त ॥ चौ अग्गानी सट्ठि। झुक्कि प्रापीय सुगति रस ॥
छिति छत्री षिति छित्ति। व्रत्त आवरति सूर बस ॥
चौ अग्गानी पंच। राज षावास परिग्गह।
अनी पंच मिलि बीर। पंग जंपियत गहग्गह ॥

(१) मो.-कनवज्ज रह।   (२) ए. कृ. को.-बिबल।

संमूह जुड्ड भारथ्थ मिलि। पंचतत्त मंचह [1]सरिस ॥
तन छोह छेह एकादसी। चंद बत्त वर [2]तच्चरिसु ॥
छं० ॥ २४६४ ॥

फिस्यौ राज कमधज्ज। मुक्ति जीवत चहुआनह ॥
आनि सँजोगि समंध। मग्ग कनवज्ज सु प्रानह ॥
फिरे संग राजान। मानि मत्तौ वर वीरह ॥
मनों पल छंडे सिंह। कोप उर केर सु धीरह ॥
निज चलत मग्ग जैचंद पहु। परे सुभर रिन अप्प पर ॥
किय प्रथुक बन्ह कारन न्रिपति। दीय दाघ जल गंग थर ॥
छं० ॥ २४६५ ॥

समझायौ तिन राइ। पाय लगि बात कहिय जब ॥
जिके सूर सामंत। करौ गोनह न कोइ अब ॥
फिर्यौ न्रपति पहुपंग। सयन हुअ तह घर आयौ ॥
रय ढिल्ली सुरतान। जान आवतह न पायौ ॥
आयौ सु सयन चहुआन कौ। ग्राम ग्राम मंडप छयौ ॥
आयौ नरिंद प्रथिराज जिति। भुअन तीन आनंद भयौ ॥
छं० ॥ २४६६ ॥

पृथ्वीराज का दिल्ली में आना और प्रजा वर्ग का बधाई देना।

दूहा ॥ चली षबर दिल्ली नयर। एकादसि दिन छेह ॥
के रवि मंडल संचरिग। के मिलि मंगल ग्रेह ॥ छं० ॥ २४६७॥

कुंडलिया ॥ बद्धाइय दिल्लिय नयर। अवर सेन जुध मग्ग ॥
घाय घुमत झोरिन घले। श्रवन सुनंतह अग्गि ॥
श्रवन सुनंतह अग्गि। उठी कंचन गिरि अच्छी ॥
कै बड़वानल लपट। निकरि लालन धत गच्छी ॥
कै नाग लोक सुंदरी। सुनि न भारथ कथ्थाई ॥
कै मिलन पीय अंतरह। मिलन आवंग बधाई॥ छं० ॥२४६८॥

(१) ए. कृ. को.-सरिग। (२) ए. कृ. को. उच्चरिय।

जैचन्द का पृथ्वीराज के घायलों को उठवा कर तैंतीस डोलियों में दिल्ली पहुँचाना ।

पद्धरी ॥ परि सकल सूर अघघाइ घाइ । उच्चाइ चंद न्नपराइ थाइ ॥
धरि लियौ बीर चालुक्क भीम । बग्गरी देव अरि चंपि सीम ॥
छं० ॥ २४६९ ॥

पम्मार जैत षीची प्रसंग । भारथ्थ राव भारा अभंग ॥
जामानि राव पाहार पुंज । लोहान षान आजान हुंज ॥
छं० ॥ २४७० ॥

गुज्जरह राव रंघरिय राव । परिहार मदन नाहर सु जाव ॥
जंगलह राव दहिया दुबाह । बंकटह सु पह बधनौर थाह ॥
छं० ॥ २४७१ ॥

जद्दवह जाज रावत्त राज ।बर बलिय भद्र भर स्वामि काज ॥
देवरह देव कन्हरहराव । ढंढरिय टाक चाटा दुभाव ॥
छं० ॥ २४७२ ॥

ओहठी स पहुपह कर प्रहास । कमधज्ज राज आरज्ज तास ॥
देवतिय हरिय बलिदेव सथ्थ । परिहार पीय संग्राम पथ्थ ॥
छं० ॥ २४७३ ॥

अघघाय धाय वर सिंह बीर । हाहुलिय राव हंसह हमीर ॥
चहुआन जाम पंचान मार । लष्यन उचाय पहु पत्ति धार ॥
छं० ॥ २४७४ ॥

भट्टी चलेस गोहिल्ल चाच । सम विजय राज वघ्घेल साच ॥
गुज्जरह चंद्र सेनह सु बीर । ते जल्ल डोड पामार धीर ॥
छं० ॥ २४७५॥

सोढह सलथ्थ उच सच साल । संग्राम सिंह कछ्यि दुआर ॥
परिहार दत्त तारन तरन्न । कमधज्ज कोल रय सिंघ कन्न ॥
छं० २४७६ ॥

सेंगरह साइ भोलन्न तास । साइरहदेव सुष मल्ह नास ॥

अघाय घाय धर धरह ढाइ। लष्षीन मीच जिय कंक साइ॥
छं० ॥ २४७७ ॥

डोलिय सु मद्धि संजोग सार। पट कुटिय मद्धि मनु बसिय मार ॥
उप्पारि सेव वरदाइ ईस। डोलिय सु सज्जि बर तेर तीस ॥
छं० ॥ २४७८ ॥

संक्रम्यौ सेन दिल्ली सु मग्ग। बंधाय धाय चिय पुरनि अग्ग॥
छं० ॥ २४७९ ॥

दूहा ॥ सघन घाय सामंत रिन। उप्पारिग कबि ईस ॥
मध्य अमोलिक सुंदरिय। डोला तेरह तीस ॥ छं० ॥२४८०॥
[1]हमकि हसम हय गय परिग। बाहिर जुग्गिनि नैर ॥
हलकि जमुन जल उत्तरिग। बाल हद्द जु अवेर ॥ छं०॥२४८१॥
इक घर सिंधु असंचरिग। इक घर [2]पन्नर मार ॥
तेरसि अंबक बज्जि बहु। राज घरह गुर वार ॥छं०॥२४८२ ॥

जैचन्द का बहुत सा दहेज देकर अपने पुरोहित को दिल्ली भेजना।

पुर कनवज्ज कमंध गय। अरि उर गंट्रिय अध्य॥
कहै चंद प्रोहित्त प्रति। तुम दिल्लिय पुर जथ्य ॥२४८३ ॥
विधि बिचित्र संजोगि कौ। करहु देव विधि व्याह ॥
हसम हयग्गय सब्ब विधि। जाय समप्यौ ताह ॥२४८४॥
नग अनेक विधि बिधि विचित्र। और गनै कोइ गेउ ॥
विजै करत विजपाल [3]निज। लिय सु वत्तु दिव देउ ॥
छं० ॥ २४८५ ॥

पंगराज के पुरोहित का दिल्ली आना और पृथ्वीराज की ओर से उसे सादर डेरा दिया जाना।

मुरिल्ल ॥ पुर ढिल्ली आयौ प्रोहित्तह। मंन्यौ मन चह आन सुहित्तह ॥
दिय थानक आसन उत्तिम ग्रह। बर प्रजंक भोजन भल भष्पह॥
छं० २४८६ ॥

(१) मो.-हलाकि। (२) ए. कृ. को.-मंदन। (३) ए. कृ. को.-नृप।

दिल्लिय पति दिल्लिय संपत्तौ । फिरि पहु पंग राइ ग्रह जत्तौ ॥
जिम राजन संजोगि सु रत्तौ । सुह दुह करन चंद महि मत्तौ॥
छं० ॥ २४८७ ॥

दिल्ली में संयोगिता के व्याह की तैयारियां।

कवित्त ॥ कनक कलस सिर धरहि । चवहिं मंगल अनेक त्रिय ॥
पाँटबर बहु द्रव्य । सज्जि सब सगुन राज लिय ॥
ढरहि चौर गज गाह । इक आरती उतारहि ॥
इक छोरि करि केस । रेन चरनन की झारहि ॥
इम जंपहि चंद बरद्दिया । मुकताहल पुज्जंत भुअ ॥
घर आइ जित्ति दिल्लिय न्रपति । सकल लोक आनंद हुअ ॥
छं० ॥ २४८८ ॥

दोनों ओर के प्रोहितों का शाकोच्चार करना ।

एक अग्ग तिय सकल । विकल उच्चरिन राजसुष ॥
त्रिगुटि अग्र बंकुरि प्रमान । तहाँ लषित मझ्झ रुष ॥
बीय विवान उच्चरिय । देवि डुल्लिय मिलि चल्लिय ॥
अभ्रम भ्रम किय आइ । सपत अच्छरी सु मिल्लिय ॥
संजोग जोग रचि व्याह मन । गुरु जन सुत अरु निगम घन ॥
प्रोहित्त पंग अरु ब्रह्म रिषि । ग्रसत सुष्य बर दुष्य सन ॥
छं ॥ २४८९ ॥

विवाह समय के तिथि नक्षत्रादि का वर्णन ।

महा नछिच रोहिनी । मेष भुग्गवै अरक बर ॥
भद्र यह परवासु । तिथ्य तेरसि सु दीह गुर ॥
इंद्र नाम वर जोग । राज अष्टमि रवि सिज्जौ ॥
चंद चंद सातमो । बुद्ध सत्तम गुर तिज्जौ ॥
गुर राह सन्नि सुरकेत नव । न्रप बर बर मंगल जनम ॥
तहिनह सुकि चहुआन कौं । [1]छुट्टि पंग पारस घनम॥छं० ॥२४९०॥

(१) ए. कृ. को. घट्टि ।

पंग और पृथ्वीराज दोनों की सुकीर्ति।

पंग राइ उग्रह्यौ। दान है गै भर नर लिय ॥
धाराहर वर तिथ्थ। जपह चहुआन बीर किय ॥
एक गुनै तिहि बेर। दिये पाइल लष गुन्निय ॥
चौसट्ठां कै सट्ट। लच्छि संजोगि सु दिन्निय ॥
ज्यौं भयौ जोइ भारथ्थ गति। सोइ बित्यौ बित्तक जुरि ॥
द्वादसवि पंच सूरहति मुक्कि। आरंन्निय पहु पंग फिरि ॥
छं० ॥ २४९१ ॥

दूहा ॥ दिव मंडन तारक सकल। सर मंडन कमलान ॥
रन मंडन नर भर सु भर। महि मंडन महिलान ॥ छं०॥२४९२॥
महिलन मंडन न्निपति ग्रह। कनक कंति ललनानि ॥
ता उप्पर संजोगि नग। धरि राजन बलवान ॥ छं० ॥ २४९३ ॥
राजन तन सइ प्रिय बदन। काम गनंतिन भोग
सरै न पल लेतें पलनि। न्रपति नयन संजोग ॥ छं० ॥ २४९४ ॥

पृथ्वीराज का मृत सामंत पुत्रों को अभिषेक करना और जागीरें देना।

पद्धरी ॥ वैसाष मास पंचमिय सूर। उपरात पष्य पुष्यह समूर ॥
संतिय सु छित्ति प्रथिराज राज। किन्नौ सनान महुरत्त आज ॥
छं० ॥ २४९५ ॥
मंगल अनेक किन्नौ अचार। बाजे बिचित्र बज्जत अपार ॥
विधि सु विप्र पुज्जे सु मंत। दिय दान भूरि अनेक जंत ॥
छं० ॥ २४९६ ॥
गुन गंठि कब्बि आये सु चंड। दिय अनंत द्रव्य बीजीउ षंड ॥
अह्वाय कीय सब नयर मंत। श्रृंगारि सहर वाने अनंत ॥
छं० ॥ २४९७ ॥
बह्वाम आय सब देस थान। सनमान सीम पति आय जान ॥
बर महल ताम प्रथिराज दीन। सामंत सब्ब तं न्हान कीन ॥
छं० ॥ २४९८ ॥

सामंत सब्ब बोले सु आय। आदरह सब्ब दीनौ सु राय ॥
कमधज्ज बीर चंद्रह सुबोलि। निड्डुरह सुतन सुभ तेज तोलि॥
छं० ॥ २४९९ ॥

दीनौ सु तिलक प्रथिराज हथ्थ। बड्डारि ग्राम दिय बीस तथ्थ ॥
हय पांच गज्ज दीनौ सु एक। बप्पौ सु ठाम समपित्त तेक॥
छं० ॥ २५०० ॥

ईसरह दास कन्हह स पुत्त। चहुआन कम्म बड्ड करन जुत्त ॥
दह पंच ग्राम दीने बधाय। हय अट्ठ गज्ज इक दीन ताय ॥
छं० ॥ २५०१ ॥

बोलाय धीर पुंडीर ताम। सनमानि पित्त दीने सु ग्राम ॥
जिन जिन सु पित्त रिन परे षेत। तेय तेय थप्पि सामंत हेत ॥
छं० ॥ २५०२ ॥

सामंत सिंह गहिलौत बोलि। गोयंद राज सुअ गरुअ तोलि ॥
द्वादस्स ग्राम दीने बधाय। हय पंच दीन पितु ठाम ठाय ॥
छं० ॥ २५०३ ॥

सामंत अवर उव्वरे जेह। दिय दून दून ग्रामह सु तेह ॥
सनमानि सब्ब सामंत सूर। दिय अनत दान द्रब्यान पूर ॥
छं० ॥ २५०४ ॥

आदरह राज गौ उट्ठि ताम। संजोगि प्रीति कारन्न काम ॥
* * * * * ॥ * छं०॥२५०५॥

व्याह होकर दंपति का अंदर महल में जाना और पृथाकुमारी का अपने नेग करना ॥

दूहा ॥ गौ अंदर प्रथिराज जब। भंडि महूरत व्याह ॥
आय प्रिया कहि बंध सम। करहु सु मंगल राह ॥ छं०॥२५०६॥
भुजंगी ॥ रच्यौ मंगलं मास बैसाष राजं। तिथी पंचमी सूर सा पुष्य साजं॥
असित्तं सपुष्यं सुभ्भयौ जोग इंदं। कला पूरनं जोग सा छत्र विंदं॥
छं० ॥ २५०७ ॥

लगन्नं सु गोधन्न सा ब्रष्ष कैयं। पऱ्यौ सत्त मे पंच थानं रवेयं॥
पऱ्यौ नग्ग थानं कला धिष्ट चंदं। तनं ताम सज्झौ निजं उच्च मंदं॥
छं० ॥ २५०८ ॥

तबै आय प्रोहित्त श्रीकंठ नामं। दई आन सो वस्तु अन्नेक नामं॥
रच्यो तोरनं रंन मै उच्च थानं। लहै मोल अन्नेक नालभ्यमानं॥
छं० ॥ २५०९ ॥

गजं गज्ज अट्ठोतरं सौ सिँगारे। तिनं गात उत्तंग ऐराव तारे॥
सहस्सं स पंच हयं तुंगगातं। तिनं नग्ग सा कत्ति साहेम जातं॥
छं० ॥ २५१० ॥

घटं जात रूपं जरे नग्ग उच्चे। गनै कौन मानं तिनं जानि रुच्चे॥
जरे जंबु नद्दं वरं भाज नेयं। गनै कौन ग्रामन्न सा संष तेयं॥
छं० ॥ २५११ ॥

जरे पट्ट पट्टं अनेकं प्रकारं। अग्भूत अन्नेक सा वस्तु भारं॥
ग्रिहं तिथ्थ अन्नेक जे पंग राजं। सबै पट्टई सोइ संजोग साजं॥
छं० ॥ २५१२ ॥

करे साजि संजोगि निठुरं सु ग्रेहं। मुषं जोति इंदं कला पूरि तेहं॥
* * * ॥ * छं० ॥ २५१३ ॥

विवाह के समय संयोगिता का शृंगार और उसकी शोभा वर्णन।

लघुनराज ॥ प्रथम्म केलि मज्जनं। बने निरत्त रंजनं॥
सु स्निग्ध केस पायसं। सु बंधि बेन बासयं॥ छं० ॥ २५१४ ॥
कुसम्म गुंथि आदियं। सु सौस फूल सादियं॥
तिलक्क द्रप्पनं करी। श्रवन्न मंडनं धरी॥ छं० ॥ २५१५ ॥
सु रेष कज्जलं दुनं। धनुष्ष सा गुनं मनं॥
सु नासिका न मुत्तियं। तमोर मुष्ष दुत्तियं॥ छं० ॥ २५१६॥
सुहार कंठ मालयं। नगोदरं विसालयं॥
अनग्घ हेम पासयं। सु पानि मध्य भासयं॥ छं० ॥ २५१७॥
कलस्स पानि कंकनं। मनो कि काम अंकनं॥

बलै सु गाढ़ मुद्रिका। कटीव छुद्र घंटिका॥ छं०॥ २५१८॥
सु कट्टि मेषला भरं। सरीर नूपुरं अुरं॥
तले न रत्त जावकं। सतत्त हंस सावकं॥ छं०॥ २५१९॥
सु बीर चारु सो रसं। सिंगार मंडि षोडसं॥
सुगंध ब्रम्ह ह्म्मयौ। अभूषनंति भिन्नयौ॥ छं०॥ २५२०॥
सु चारु कब्बि भुल्लयौ। नषं सिषंत डुल्लयौ॥ छं०॥ २५२१॥

साटक॥ लज्जमान कटाच्छ लोकन कला, अलपत्तनो जल्पनं॥
रत्ती रित्त, भया सु प्रेम सरसा, गै हंस बुभक्काइनं॥
धीरज्जं च छिमाय चित्त हरनं, गुह्य स्थलं सोभनं।
सीलं नील सनात नीत तनया, षट दून आभूषनं॥ छं०॥२५२२॥

पृथ्वीराज का शृंगार होना।

दूहा॥ करि सिंगार प्रथिराज पहु। बंधि मुकट सुभ सीस॥
मनों रतन कर उप्परै। ज्यौ बाल हरि दीस॥ छं०॥ २५२३॥

विवाह समय के सुख सारे।

पद्धरी॥ सिंगार सकल किय राज जाम। उच्चार बेद किय विप्र ताम॥
बाजिंच बज्जि मंगल अनेव। माननि उचारि सागुन्न गेव॥
छं०॥ २५२४॥

जय जया सद्द सद्दे समूह। सामंत सूर सब मिलिय जूह॥
[1]बद्धाय आव चवरुअ सुहाग। आनंत स्वजन गति उद्ध भाग॥
छं०॥ २५२५॥

गुरु राम बेद मंचइ उचार। अनेक विप्र पढि बेद सार॥
हय रोहि हंस जंगल नरेस। जय जया सद्द जंप्यौ सु देस॥
छं०॥ २५२६॥

उच्छरंत द्रव्य अन्नेक मग्ग। गुन तवन एक अनेक लग्ग॥
निछुरइ ग्रेह तोरनइ जाम। यट्टौ नरेस सम इंद्र ताम॥
छं०॥ २५२७॥

(१) ए. बद्धाथि।

प्रोहित्त पंग रषि ब्रह्म रूप। बह्माय आय नग मुत्ति भूप॥
सिर फिरै बिवह पट कूल राज। दिन्ने सु दत्त वाजिच वाजि॥
छं० ॥ २५२८ ॥

रोकियौ राज बर नेक काम। मत्तौ सु हास रस रास ताम॥
सुन षानि कूर लीला सरूप। प्रोषनह काज किय ताम भूप॥
छं० ॥ २५२९ ॥

नग जटित हेम मंडह अनूप। चौरीस ताम सज्जौ सजूप॥
हिम षचित पट्ट मानिक्क रोह। वासनह छादि सम विषम सोह॥
छं० ॥ २५३० ॥

दंपत्ति रोहि आसनह ताम। किय विप्र सब्ब सुर मुष्य काम॥
गावंत चक्क मानन्नि सुभेव। आवरिय भोम धामरिय तेव॥
छं० ॥ २५३१ ॥

कमधज्ज बीर चंद्रह सु आय। तिहि तथ्यौ विवह प्रथिराज राय॥
नैवेद [1]ताम धन गय तुषार। सम ग्राम मुत्ति माला दुसार॥
छं० ॥ २५३२ ॥

कंसार जाम आहरै राज। वानी [2]अयास सुरताम साज॥
षब बरस अवर सुर मास जोग। सम सचहु साज्व संजोग भोग॥
छं० २५३३ ॥

संभरिय बानि आयास भूप। मन्यौ सु काल बल मनिय कूप॥
बीवाह सेष सब करिय काज। निसि बास धाम पत्तौ सु राज॥
छं० ॥ २५३४ ॥

सुहाग रात्रि वर्णन।

कवित्त॥ निसावास चहुआन। धाम बर राज मँपत्तौ॥
सुष सेज्या निसि मध्य। रहसि क्रीड़ा रस रत्तौ॥
मिलिय सषिय सब नेह। बीस दस अगबिय अष्षनि॥
तिन प्रेरित संजोगि। आनि सम राज ततष्षिन॥
संग्रहिय पानि संजोगि न्रप। अरोहिय निज तलप बर॥

(१) ए. कृ. को.-धाम। (२) मो.-अकास।

संजोगि लष्षि सुष्षम सुतन। मेहन क्रीड़ै काम पर॥छं०॥२५३५॥
निरषत द्रग संजोगि। गयौ प्रथिराज मोह मन॥
उदय सूर उठि राज। काज किन्नौ सु व्याह पन॥
आप पंग प्रोहित्त। दीन सब वस्त संभारिय॥
जे पठई जैचंद। व्याह संजोगि सु सारिय॥
परवेस विंद कारन न्रपति। आए बज्जन बज्ज घर॥
पुंषे सु प्रथ्थ श्रृंगार करि। दीनौ विधि विधि दान भर॥
छं०॥ २५३६॥

व्याह हो जाने पर पृथ्वीराज का प्रोहित को एक मास पीछे विदा करना।

दूहा॥ हेम हयग्गय अंबरह। दासि सहस सत दीन॥
प्रोहित पंग सु ब्रह्म रिषि। व्याहु विहि बहु कीन॥छं०॥२५३७॥
कवित्त॥ करिय सु कारन व्याह। दीय दानह विप्रां कवि॥
प्रोहित पंग नरिंद। तास आदर किन्नौ तबि॥
ता पछै दुअ पष्ष। राषि प्रोहित प्रथिराजह॥
सत सारद हय सु बर। पंचगज दीन सु राजह॥
कोटेक द्रव्य दीनौ न्रपति। जुगल जुगल हय सथ्थ दिय॥
चहुआन चिंति रा पंग सम। बढ़ी प्रीति आनंद जिय॥
छं०॥ २५३८॥
दूहा॥ दयौ द्रव्य संजोगि घन। चलि प्रोहित पुर पंग॥
प्रथम राज सुअ इंद सम। विविध विविध बढि रंग॥छं॥२५३९॥
सुभह रम्य मंडिग न्रपति। दिपति दीप दिव लोक॥
मुकुर मउष अंमृत झरहि। करहिति मनह असोक॥छं०॥२५४०॥
वय वसंत छिति संकिय। श्रम सामंत सु जीव॥
ग्रीषम गढ्ढि सु पिम्म पह। अम्रत सुधारस पीव॥छं०॥२५४१॥

सुख सौनारे की ऋतु से उपमा वर्णन।

चंद्रायना॥ अगर धुम्म मुष गौषह उनयो मेघ जनु॥
तहय मोर मल्हार निरत्तहि मत्त घन॥

सारंग सारंग रंग पइक्कहि पंषि रस ॥
बिज्जुलि कोकल सानि, भमक्कहि आसु मिसि ॥ छं० ॥ २५४२ ॥
दादुर[1]सादर सोर [2]नवष्पुर नारि घन ॥
मिलि सुर मधि मधु हृत्त माधुर मक्कि भ मन ॥
सालक पंच पचीस प्रजंकति इन दस ॥
तहं अथ्थि परवीन सु बीनति दासि दस ॥ छं० ॥ २५४३ ॥
के जुअ जुथ्थ अवादि प्रमादहि मंद गति ॥
केवल अंचल बाय निरूपहि सरद रति ॥
केवर भाष पराक्रत संक्रित देव सुर ॥
केवर बीन बिराजित राजहि बार बर ॥ छं० ॥ २५४४ ॥
इन विधि विलसि बिलास असार सु सार किय ॥
टै सुष जोग संजोगि प्रिथी प्रथिराज प्रिय ॥
ज्यों रति संगम मारन जानैं रयन दिन ।
केतकि कुसुम लुभाय रह्यौ मनुं भमर मन ॥छं० ॥ २५४५ ॥

सखिपरिहास और दंपतिविलास ।

गाथा ॥ अंबा अंबाह पत्ती । कंतौ कंताय दिठ्ठ मा दिट्ठौ ॥
महिला मरम सु मिठ्ठौ । पतौ कंताइ [3]इच्छि सिछांइ ॥
छं० ॥ २५४६ ॥

दूहा ॥ भजै न राज संजोगि सम । अति सुष्छम तन जानि ॥
तब सु सषी पंगानि बर । रची बुद्धि अप्पान ॥ छं० ॥ २५४७ ॥
मधि अंगन नव दल सु तरु । पच भौर घन उट्टि ॥
इक मंजर पर भमर भमि । बास प्रास रस बिट्ट ॥ छं० ॥२५४८॥
भार भमर मंजरिन मिग । तुटत जानि उटि पंषि ॥
कछु अंतर राजन सुनहि । बोलि बयन दिषि अंषि ॥छं०॥२५४९॥
रस घुट्टत लुट्टत मयन । नन डुलि मंजरि याह ॥
भार भगत कथ्थह सुनी । अलियल मंजरि याह ॥ छं०॥ २५५०॥

(१) ए. कृ. को.-साठुर । (२) ए. कृ. को.-नवध्धुर ।
(३) ए. कृ. को.-सिंच्छि, सिछि ।

गाथा ॥ अप्पह आरुहि धंग । मम डरई मह देषि झीनंगं ॥
पत्तली षग्ग धारा । हय मय कुंभस्थलं हनई ॥ छं० ॥ २५५१ ॥
जं केहरि नन झीनं । तं गज मत्त जूथयं दलए ॥
नव रमनी रमि राजं । एक पलं जम्म सुष्यांइ ॥ छं० ॥ २५५२ ॥
दूहा । अलिय अलिय एकत मिलिय । रस सरवर संजोगि ॥
सो कविचँद चय बरस रस । पुह प्रगटित रति भोग ॥छं०॥२५५३॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके कनवज्ज संयोगिता प्रातिष्ठा पूरन राजा जैचंद दल चूरन सामंत जुद्ध दिल्ली आगनन नाम एकसठवों प्रस्ताव संपूरर्णम्॥६१॥